DUE DATE SLIP

GOVT. COLLEGE, LIBRARY

KOTA (Raj)

Students can retain library books only for two weeks at the most

BORROWER S No	DUE DTATE	SIGNATURE

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

२२

आदर्श-

हिन्दी-संस्कृत-कोशः

डॉ० रामसरूप 'रसिकेश'

शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल० (संस्कृत), एम० ए०
पी-एच० डी० (हिन्दी), विद्यावाचस्पति (धर्म०)
पूर्व-प्राध्यापक, डी० ए० वी० कालेज (लाहौर), हंसराज कालेज
(दिल्ली) तथा दिल्ली विश्वविद्यालय



चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी २२१००१

चौखम्बा विद्याभवन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)
चौक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे),
पोस्ट बाक्स नं० ६९
वाराणसी २२१००१

सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण
१९७९



अन्य प्राप्तिस्थान—
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)
के० ३७/११७, गोपाल मन्दिर लेन
पोस्ट बाक्स नं० १२९
वाराणसी २२१००१

मुद्रक—
श्रीजी मुद्रणालय
वाराणसी

THE

VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA

32



ĀDARSA-

HINDĪ-SANSKṚT-KOŚA

By

Dr Ramsarupa 'Rasikesha'

Shastri M A, M O L (San), M A Ph D, (Hindi), Vidyavachaspati (Dharmashastra)

Ex Professor

D A V College (Lahore), Hansraja College (Delhi) and Delhi University



THE

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI

© CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)
Post Box No 69
VARANASI 221001

Second Edition
1979
Price Rs 50.00

Also can be had of
CHAUKHAMBA SURABHARATI PRAKASHAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
K 37/117, Gopal Mandir Lane
Post Box No 129
VARANASI 221001



समर्पणम्

दिवङ्गतां जननीं

सीतां

प्रति

नमस्कृत्य वदामि त्वां यदि पुण्य मया कृतम् ।
अन्यस्यामपि जात्यां मे त्वमेव जननी भव ॥



प्राक्कथन

प्रोफेसर विश्वबन्धु शास्त्री

M A, M O L., d' A Kt. C. T.

आदरणीय संचालक, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

संस्कृत भाषा का विशाल, सर्वतोमुख साहित्य ही, निःसंदेह, वह सर्वोत्तम बपौती है, जो प्राचीन भारत से नवभारत को मिली है। संस्कृत-भाषा अतीव चिरंजीविनी है, वस्तुतः, अमिट और अमर है। सहस्रों वर्ष पूर्व के हमारे पुरखा इसी देववाणी के द्वारा अपना सब वाग्व्यवहार चलाते थे। धीरे-धीरे फिर वह समय आया, जब शिक्षित जन ही इसका शुद्ध प्रयोग कर पाते थे और शेष-सर्व-साधारण लोग इसके अनेक विकृत रूपों का प्रयोग करने लगे थे। वही विकृत रूप, पीछे—पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश कहलाए और बोल-चाल एवं साहित्य-सृष्टि के समुन्नत माध्यम भी बने। परन्तु, उस समय भी, साधारण जनता भले ही शुद्ध संस्कृत न बोल सकती हो, वह, अवश्य, उसे समझ लेती थी। संस्कृत की वही अमिट छाप हमारी आधुनिक भारतीय भाषाओं पर भी पड़ी हुई है, जिसके कारण, हमारे आज के विभिन्न प्रादेशिक वाग्व्यवहार के अन्दर ४०-५० से लेकर ८०-९० प्रतिशत तक, मानो, स्वयं संस्कृत-भाषा ही बोली और लिखी जा रही है। शुद्ध संस्कृत के माध्यम से होने वाली साहित्य-सृष्टि तो कभी रुकी ही नहीं। प्राचीन तथा मध्यकालीन युगों की बात तो अलग रही, आज के युग में भी संस्कृत-भाषा में सभी प्रकार के साहित्य की सृष्टि बराबर चालू है। आशा प्रतीत होती है कि देश की स्वतन्त्रता के साक्षात् फलस्वरूप राष्ट्रीय चेतना इस ओर प्रतिदिन अधिकाधिक जागरूक होती जायेगी।

यह प्रसन्नता की बात है कि देश-भर में जहाँ-तहाँ अभियुक्त जन इस समय संस्कृता-ध्ययन के रङ्ग-ढङ्ग को सरलतर बनाने के प्रयत्न में लग रहे हैं। एतदर्थ कई प्रकार के अभिनव शिक्षण-क्रमों का आविष्कार तथा साधन-भूत सहायक साहित्य का निर्माण किया जा रहा है। प्रस्तुत 'आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोश' उक्त सहायक साहित्य के ही अन्तर्गत एक उत्तम रचना है। इसके सुयोग्य लेखक ने इसे सब प्रकार से उपयोगी बनाने के लिए सफल प्रयास किया है।

एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना सुकर नहीं होता। जब तक दोनों भाषाओं के प्रयोग-स्वारस्य का अच्छा बोध प्राप्त न किया हो, तब तक मक्खी पर मक्खी मारने के अतिरिक्त और कुछ सिद्ध नहीं किया जा सकता। एतदर्थ छात्रों को चाहिए कि दोनों भाषाओं के सत्साहित्य के सागर में स्वतन्त्र रूप से खुला अवगाहन करें। कोई भी व्याकरण या कोश का ग्रन्थ इस प्रधान साधन का स्थान नहीं ले सकता। परन्तु उक्त विस्तृत पठन के साथ-साथ, प्रतिदिन के कार्याभ्यास में प्रस्तुत कोश ऐसे सहायक ग्रन्थों का निश्चय ही अपना स्थान एवम् उपयोग है।

इस कोश में जिन सुविपुल विशेषताओं का आधान करते हुए इसे गुणवत्तर बनाया गया है, इसकी 'प्रस्तावना' में उनका विवरण भली प्रकार से कर दिया गया है। छात्रों को चाहिए कि इसकी 'प्रस्तावना' के पाठ द्वारा उन विशेषताओं का परिज्ञान प्राप्त करते हुए इसका सदुपयोग करते रहें, जिससे उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके।

साधु आश्रम, होशियारपुर
१६-६-५७

—विश्वबन्धु



डॉ० राम सरूप 'रसिकेश'

प्रस्तावना

(द्वितीय संस्करण)

'आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश' की उपयोगिता व लोकप्रियता इसी से प्रमाणित है कि इसका प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया और इसकी माँग, शुक्ल पक्ष के चाँद के समान, निरन्तर बढ़ती ही गई। संस्कृत प्रेमियों, पुस्तक विक्रेताओं, प्रकाशक व लेखक सभी की उत्कट इच्छा थी कि द्वितीय संस्करण यथाशीघ्र प्रकाशित हो, जिससे देववाणी की अधिकाधिक उन्नति हो। परन्तु, इस संसार में परिस्थितियाँ कभी-कभार ऐसा प्रतिकूल रूप धारण कर लेती हैं कि उन पर विजय पाना दुष्कर हो जाता है। यही कारण है कि संस्कृत प्रेमियों को सुदीर्घकाल तक अप्रत्याशित प्रतीक्षा करनी पड़ी, जिसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं। अस्तु।

सभी भाषा प्रेमी जानते हैं कि कोई भी जीवन्त भाषा वर्षों तक एक ही रूप में नहीं रहती। उसके शब्द भण्डार आदि में परिवर्तन होता ही रहता है। इसी नियमानुसार दो दशाब्दियों में हिन्दी शब्द भण्डार का पर्याप्त विस्तार हुआ और परिणामतः हमने भी कोश का परिवर्धित संस्करण ही प्रकाशित करना समीचीन समझा। प्रथम संस्करण में कुछ अशुद्धियाँ भी रह गई थीं। उनका संशोधन भी अपना पवित्र कर्तव्य था। इस कार्य में हमें अपने मित्र प्रो० गोपालदत्त पाण्डेय, पूर्व-उपनिदेशक, शिक्षाविभाग, उत्तर प्रदेश, ने स्तुत्य सहयोग दिया है, जिसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने 'संस्कृत-कोशों का उद्भव और विकास' शीर्षक अनुसन्धानात्मक निबन्ध भी लिखा है, जिसमें संस्कृत प्रेमियों को इस विषय की रोचक व मूल्यवान जानकारी भी उपलब्ध होगी। कोश के सम्बन्ध में जिन विद्युत विद्वानों ने बहुमूल्य सम्मतियाँ प्रदान की हैं उनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। साथ ही कृतज्ञ हैं चौखम्बा विद्याभवन के संचालक श्री वल्लभदास गुप्त के जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी कोश को प्रस्तुत सुन्दर रूप में प्रकाशित किया है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत संस्करण पूर्व की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

पाठकों से निवेदन है कि प्रथम संस्करण की प्रस्तावना को भी सावधानता से पढ़ने की कृपा करें, क्योंकि इसके बिना वे कोश से यथेष्ट लाभ न उठा सकेंगे।

अन्त में, विद्वज्जनों व अध्यापकवर्ग से सादर निवेदन है कि प्रस्तुत संस्करण की त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान अवश्य आकर्षित करें ताकि कोश के आगामी संस्करण शुद्धतर रूप में प्रकाशित हो सकें। धन्यवाद।

डी-१४१
नया राजेन्द्रनगर
नई दिल्ली—११००७०
वैशाखी—२०३६ वि०

विनीत,
रामसरूप

प्रस्तावना

(प्रथम संस्करण)

संस्कृत का अध्ययनाध्यापन करते समय और कभी हिन्दी शब्दों के संस्कृत पर्यायों की जिज्ञासा के समय अनेक बार हिंदी-संस्कृत-कोश की आवश्यकता प्रतीत होती थी। बाज़ार में कोई भी ऐसा कोश प्राप्य न था जो स्कूलों, कालेजों, गुरुकुलों, ऋषिकुलों आदि [illegible] उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों तथा संस्कृताध्ययन के इच्छुक प्रौढ़ सज्जनों और अध्यापकों की आवश्यकताएँ पूर्ण कर सके। यह देखकर दुःख भी होता था और आश्चर्य भी कि सात समुद्र पार से आई हुई अंग्रेजी भाषा के कुछ लाख ज्ञाताओं के लिए तो अंग्रेजी-संस्कृत-कोश प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु करोड़ों हिन्दीप्रेमियों के पास ऐसा कोई कोश नहीं जिससे वे संस्कृताध्ययन में सहायता प्राप्त कर सकें। संस्कृतानुराग और उक्त अभाव की प्रबल प्रेरणा से मैं १९४२ ई॰ में कोश संकलन में लग गया और लगभग चार वर्ष के परिश्रम से इस वृहत्कार्य को सम्पन्न कर पाया। देश का विभाजन न होता तो सम्भवतः यह कोश दस वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो जाता, परन्तु परिस्थितियों की प्रतिकूलता के कारण यह अब प्रकाशित हो रहा है— दैवी विचित्रा गतिः।

जिन दिनों मैं कोश का संकलन आरम्भ करने को था उन दिनों हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी का प्रश्न ज़ोर शोर से छिड़ा हुआ था। प्रत्येक भाषा के प्रेमी स्व-स्व पक्ष की पुष्टि के लिए अनेक युक्तायुक्त युक्तियाँ प्रस्तुत करते थे। तब मेरे समुख प्रश्न यह उठा कि मूल (अनूद्य) शब्दों में विशुद्ध हिन्दी के ही शब्द रखे जाएँ या विदेशी शब्द भी। सोच विचार के पश्चात् मैंने यही उचित समझा कि इसके मूल शब्दों में फ़ारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के भी प्रचलित शब्द अवश्य रखने चाहिए। उसी निश्चय का परिणाम यह है कि कोश के प्राय प्रत्येक पृष्ठ पर पाँच-सात विदेशी शब्द, जो शताब्दियों के प्रयोग से स्वदेशी बन गये हैं, आपको मिल ही जाएँगे। इसका सुफल यह होगा कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा बन जाने और परिणामतः प्रत्येक भारतीय के हिन्दी से परिचित हो जाने के कारण उन अन्यमतावलम्बियों को भी संस्कृत सीखने में अधिक सुविधा हो जाएगी, जिनकी भाषाओं के प्रचलित शब्द इस कोश में संगृहीत कर लिये गये हैं। मूल शब्दों के चुनाव के समय दूसरी समस्या पारिभाषिक शब्दों की थी। प्रत्येक कला और विज्ञान से सम्बन्धित सहस्रों पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग प्राय उन्हीं विषयों के विद्यार्थियों और अध्यापकों तक ही सीमित रहता है। प्रस्तुत कोश में उन सबका संकलन न सम्भव था, न वाञ्छनीय। इसीलिए मैंने भौतिकी, रसायन, भूगोल, गणित, ज्योतिष, वैद्यक आदि के उन्हीं अत्यन्त प्रसिद्ध शब्दों को संगृहीत किया [illegible] जो जन सामान्य या सामान्य शिक्षित जनता द्वारा प्रतिदिन प्रयुक्त होते हैं। कोश के मूल शब्दों की संख्या लगभग ३०००० है जिनमें ४००० के लगभग तथाकथित विदेशी शब्द, पारिभाषिक शब्द तथा मुहावरे भी सम्मिलित हैं।

कई कोशों में सम-रूप विभिन्न शब्द एक ही शब्द के नीचे मुद्रित रहते हैं। प्रस्तुत कोश में ऐसा नहीं किया गया। कारण, जब स्रोत (आकर भाषा) और व्युत्पत्ति पृथक्-पृथक् हो तो शब्दों के पार्थक्य में सन्देह नहीं रहता। ऐसी दशा में उन्हें, केवल रूपसाम्य के कारण, एक ही शब्द के अन्तर्गत रखना मुझे उचित नहीं जँचा। ऐसे समरूप शब्दों के ऊपर १, २, ३, ४ आदि के चिह्न लगा दिये गये हैं जिससे उनमें से किसी की ओर निर्देश करते समय कठिनता न हो, उदाहरणार्थ 'आम' और 'आया' शब्द देखिये। इस कोश में प्रत्येक मूल शब्द को तो स्वतन्त्र स्थान दिया गया है परन्तु उससे बने हुए समस्त शब्दों या मुहावरों को अधिकतर मूल शब्दों के नीचे ही

१९४७ की मई में जब साम्प्रदायिक दंगों के कारण डी ए वी कालेज, लाहौर, पूर्व वर्षों की अपेक्षा कुछ शीघ्र ही बन्द हो गया तब कालेज के छात्रावास को अपने घर से अधिक सुरक्षित समझ मैं कोश की पांडुलिपि को एक बक्स में बन्द कर वहीं छोड़ बैजनाथ (पूर्वी पंजाब) चला आया। बाद में वहाँ जो लूटमार हुई, उसके वृत्त सुन-सुनकर यही विचार आता था कि मेरा 'कोश' भी लुट ही गया होगा। मैं इसकी खोज में, जान जोखिम में डालकर, सितम्बर १९४७ में लाहौर गया परन्तु कुछ पता न चला। दूसरी बार जब दिसम्बर १९४७ में फिर गया तो सौभाग्यवश यह सुरक्षित मिल गया। उन दिनों लाहौर का डी ए वी कालेज और उसका छात्रावास शरणार्थी-कैम्प बना हुआ था। किसी शरणार्थी भाई ने बक्स को तो छोड़ा न था, परन्तु कोश को छेड़ा न था। कैम्प के स्वयंसेवकों ने इसे कोई काम की वस्तु समझ, सँभाल रखा था। इस अवसर पर मैं उस अज्ञात शरणार्थी भाई को जिसने इसे ज्यों-का-त्यों रहने दिया और उन अपरिचित स्वयंसेवकों को जिन्होंने इसे कई मास तक सँभाले रखा, हार्दिक धन्यवाद देना अपना पवित्र कर्तव्य समझता हूँ।

कोश के प्रूफ, मेरे मित्र श्री हरिवल्लभ शास्त्री यदि परिश्रमपूर्वक न देखते तो इस बृहत् शब्दकोश में बहुत त्रुटियाँ रह जातीं। दो परिशिष्टों के सम्पादन में मेरे मित्र प्रो० लाजपतराय एम ए ने मेरा हाथ बँटाया है। इन दोनों सज्जनों के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। अन्त में कोश के प्रकाशकों के प्रति भी अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ जिन्होंने इसे सुन्दर रूप में थोड़े ही समय में प्रकाशित कर दिया है।

मनुष्य को अपनी तथा अपनी कृतियों की त्रुटियाँ स्वभावतः ही कम दिखाई देती हैं। इसी नियम के अनुसार मैं भी प्रस्तुत पुस्तक की न्यूनताओं और भ्रान्तियों से अल्प ही परिचित हूँ। अतः सब ज्ञाताज्ञात भूलों के लिए क्षमा-याचना करता हुआ मैं विद्वद्वृन्द से निवेदन करता हूँ कि वे कृष्णकवि की निम्नांकित सूक्ति—

दोषानिरस्य गृह्णन्तु गुणमस्या मनीषिणः ।
पांसूनपास्य मध्वथा मकरन्दमिवालयः ॥

के अनुसार मिलिन्दवत् अरविन्द के मकरन्द का पान और पराग का परित्याग कर मुझे मेरी त्रुटियों से परिचित करायें तथा ऐसे अमूल्य सुझाव भेजें जिनसे कोश का आगामी संस्करण अधिक निर्दोष और उपयोगी हो सके। प्रभु से प्रार्थना है कि उस देववाणी संस्कृत का भूतल पर अधिकाधिक प्रसार हो जिसकी साहित्य-सुधा का आनन्द आज भारतभूमि के भी इने गिने ही लोग ले रहे हैं।

डी-१४१
शारदानिकेतन
रवीन्द्र नगर, दिल्ली
दीपावली सं० २०१४

विनीत,
रामसरूप

विद्वत्सम्मतिसार

M ANANTHASAYANAM AYYANGAR

SPEAKER LOK SABHA)

I went through a portion of the Hindi-Sanskrit Dictionary prepared by Prof Ram Saroop, Prof of Hindi and Sanskrit, Hans Raj College, Delhi The pages have been taken at random from the middle of the book Almost every word in Hindi in ordinary use and even those that are rarely used has been noticed in this book

There are many Sanskrit-Hindi Dictionaries, but correspondingly there is practically no Hindi-Sanskrit Dictionary. Sanskrit is the mother of Hindi and all the northern Indian Languages Any new expressions have to be coined from Sanskrit source It is therefore necessary that any body who desires to have a proficiency in Hindi should have equally good knowledge of Sanskrit All Hindi writers and those in regional languages have been great Sanskrit scholars In fact they did not read regional language by itself at any time After acquiring proficiency in Sanskrit they automatically and without any special attempt, and with little or no effort, became proficient in their own respective language.

I welcome such a book and I hope and trust that it will be found useful not only by scholars but also by laymen who ought to have a working knowledge of Sanskrit if they want to acquire a good knowledge of Hindi A Dictionary of this type is worth having in every library

Prof VISHVA BANDHU, M A , M O L.

(Director, V. V. R. Institute, Hoshiarpur.)

It has given me real satisfaction to find that he has taken pains in this behalf and succeeded in producing a handy work which should be of great help to those who may be learning the somewhat difficult art of translating modern Hindi originals into the ancient language of gods

Dr SURYA KANT SHASTRI, D Litt , D Phil

(Hindu University, Varanasi)

In my opinion this dictionary will prove of great help to the students of Hindi and Sanskrit, since a dictionary of this type and size is not available in the market

Dr N N CHOWDHURI, M A, D Litt.

(Reader in Sanskrit, University of Delhi)

I have read with great interest a part of the manuscript copy of your Hindi-Sanskrit dictionary A book of this type is urgently needed in these days I congratulate you on this excellent work you have under-taken

श्री एन वी गाडगिल, एम पी

श्री रामसरूप शास्त्री द्वारा सम्पादित 'हिन्दी संस्कृत कोश' के कुछ मुद्रित पृष्ठ पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। सूक्ष्म दृष्टि से उन पृष्ठों को देखकर इस बात से प्रसन्नता हुई कि प्रियवर शास्त्रीजी ने इतना सुन्दर, सुव्यवस्थित और उपयुक्त कार्य किया है कि इस कार्य से वे समाज के ऋण से उऋण ही नहीं हुए, वरन् उन्होंने समाज को उपकृत भी किया है।

लेखक महोदय को इस महत्त्वपूर्ण स्तुत्य कार्य के लिए बधाई देता हूँ।

केदारनाथ शर्मा, सारस्वत

सम्पादक—'संस्कृतरत्नाकर'

मन्त्री, अखिलभारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

श्रीयुत रामसरूप शास्त्री एम ए, एम ओ एल, विद्यावाचस्पति, प्रोफेसर, हंसराज कालेज, देहली द्वारा सम्पादित हिन्दी संस्कृत कोश का कुछ भाग देखने का अवसर मिला है। मैं जो कुछ देख सका उसके आधार पर कह सकता हूँ कि यह इस युग के अनुकूल और आवश्यक प्रयत्न है।

इस समय ऐसे प्रामाणिक कोश का अभाव जबकि देश का ध्यान संस्कृत की ओर आकृष्ट हो रहा हो, बहुत खटक रहा था। मुझे विश्वास है—इस अभाव की बहुत कुछ पूर्ति इस कोश से हो सकेगी। सम्पादक महोदय का यह प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य और श्लाघ्य है। इसके अधिकाधिक प्रयोग और प्रचार की कामना करता हूँ।

महामहोपाध्याय श्री प० परमेश्वरानन्द शास्त्री, विद्याभास्कर

(ओरिएण्टल कालेज, जालंधर, पूर्व प्रिंसिपल, सनातनधर्म संस्कृत कालेज, लाहौर)

प्रोफेसर श्रीरामसरूप शास्त्री, एम ए, एम ओ एल, विद्यावाचस्पति विरचित 'हिन्दी संस्कृत कोश' को देखकर मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मूल हिन्दी शब्दों के संस्कृत में पर्याय देने वाला कोश मेरी दृष्टि में यह पहला ही है। ऐसे कोश की बहुत समय से बड़ी भारी आवश्यकता समझी जा रही थी। संस्कृत के विद्वान अपने छात्रों को अनुवाद की शिक्षा देते हुए बड़ा कठिनाई अनुभव करते थे और करते हैं। संस्कृत भाषा का व्यवहार में प्रचलन न होने के कारण हिन्दी शब्दों के संस्कृत पर्याय ढूँढने में उन्हें बड़ी मुश्किल पड़ती है। इस मुश्किल को विद्यावाचस्पति श्रीरामसरूप शास्त्रीजी ने हिन्दी-संस्कृत कोश की रचना करके बहुत अंशों में हल कर दिया है। इस उपकार के लिए संस्कृत के अध्यापक और उनके शिष्य प्रोफेसर महोदय के अत्यन्त आभारी होंगे, ऐसी आशा है।

हिन्दी माध्यम के द्वारा संस्कृत शिक्षार्थियों के लिये तथा हिन्दी मार्ग में अग्रसर होने के लिए संस्कृत के विद्वानों के लिए भी—यह कोश अत्यन्त उपयोगी है। स्कूल कालेजों में, संस्कृत

पाठशालाओं में संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने में यह कोश अच्छा सहायक सिद्ध होगा—ऐसी मुझे पूर्ण आशा है।

इस कोश ने केवल हिन्दी की ही नहीं, अपितु संस्कृत की भी श्रीवृद्धि की है, अतः दोनों भाषाओं के प्रेमियों की ओर से विद्वान् ग्रन्थकार धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति एम पी

(चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली)

हंसराज कालेज, दिल्ली के प्रो. रामसरूप एम ए, एम ओ एल. ने अपने आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश का कुछ भाग मुझे दिखाया है। कोश में हिन्दी के तीस हजार शब्दों के व्युत्पत्ति-सहित संस्कृत पर्याय दिये गये हैं। अभी तक ऐसे कोश का अभाव था। प्रो रामसरूपजी का यह प्रयत्न उस अभाव की पूर्ति कर देगा। "इसमें सन्देह नहीं कि इतनी ज्ञातव्य बातों से यह कोश अत्यन्त उपयोगी होगा।

श्री० दा० सातवलेकर

(अध्यक्ष, स्वाध्याय मंडल, पारडी जि० सूरत)

आपका यह कोश संस्कृत सीखने वालों के लिए तथा संस्कृत शिक्षकों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा, इसमें सन्देह नहीं है।

पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

(मोतीझील, वाराणसी)

'यह ग्रन्थ संस्कृत के छात्रों तथा अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। हिन्दी से संस्कृत बनाने वालों को बहुत लाभ होगा। इस विषय पर आगे काम करने वालों को भी इससे बहुत सहायता मिलेगी। इससे इस विषय में उत्तरोत्तर उन्नति का मार्ग खुलेगा। इस दृष्टि से इस ग्रन्थ की उपादेयता और बढ़ जाती है।'

प्रो० चारुदेव शास्त्री

एम. ए, एम. ओ. एल.

(पूर्व प्राध्यापक, डी ए वी कालेज, लाहौर)

प्राध्यापकेन श्रीरामसरूपशास्त्रिणा प्रणीतो हिन्दी-संस्कृतकोशो मया केषुचित्स्थलेष्वालोचित । इदम्प्रथमः प्रयास इति प्रशस्य.। महानत्र शब्दराशि सगृहीत.। प्रतिहिन्दीशब्दमनेकं संस्कृतमभिधानमुपन्यस्तम्। तत्रोपन्यासेऽपि प्रसिद्धमपेक्ष्य विशिष्टानुपूर्वी समाश्रिता येनैतदुपयोक्तारः परपरतराञ्छब्दान् विहाय पूर्वंपूर्वतरान् प्रयोक्ष्यन्ते प्रसिद्धिं च नातिक्रमिष्यन्ति। सर्वस्मिन् भारते व्यवहारमवतीर्णायां हिन्द्यामीदृश. कोशोऽत्यन्तमपेक्षितोऽभूदिति स्थाने प्रयत्तं शास्त्रिवर्येण विदांवरेण।

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

(सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय, वाराणसी)

प्रो० रामस्वरूप शास्त्री द्वारा सङ्कलित एवं सम्पादित "आदर्श हिन्दी संस्कृत कोश" के द्वितीय संस्करण को देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। हिन्दी-संस्कृत कोश के क्षेत्र में यही एक ऐसा कोश था जो आकार, शब्दसंख्या एवं उपयोगिता की दृष्टि से सर्वोत्तम था और इसीलिये इसका अभाव बहुत दिनों तक खटक रहा था। मैंने सैकड़ों जिज्ञासुओं को तो वैसे ही इस कोश की सूचना दी होगी पर जब उन्हें यह मालूम हो जाता था कि यह कोश सम्प्रति उपलब्ध नहीं है तो वे हार्दिक दुःख प्रकट करते थे और चाहते थे कि यह कोश किसी प्रकार उन्हें उपलब्ध हो जाय। आज माननीय शास्त्रीजी ने इसका पुनः सम्पादन तथा चौखम्बा विद्याभवन ने इसका प्रकाशन कर जो असंख्य लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति की है इसके लिये ये दोनों हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी संस्कृत कोश का सम्पादन संस्कृत हिन्दी कोश के सम्पादन की अपेक्षा एक कठिन कार्य है। कारण कि आज की हिन्दी में अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी के भी बहुत से शब्द प्रचलित हो गये हैं। इसके अतिरिक्त देशी तथा लोकभाषाओं के शब्दों की भी संख्या कुछ कम नहीं है। फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों का एक विशाल भण्डार अलग ही है। इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द पुरानी संस्कृत में नहीं मिलते अतः उनके लिये नये संस्कृत शब्दों का निर्माण करना पड़ता है जो साधारण विद्वान् से संभव नहीं है।

यही स्थिति उन सभी शब्दकोशों में पाई जाती है जो अंग्रेजी, बँगला, मराठी, गुजराती, तमिल एवं तेलगू आदि भाषाओं से संस्कृत में लिखे गये हैं। मेरे कार्यालय में ऐसे अनेक कोश हैं। इन शब्दकोशों में भी पर्याप्त संख्या में नये संस्कृत शब्द बनाये गये हैं।

अब कठिनाई यह है कि विभिन्न कोशों में जो नये शब्द बनाये गये हैं उनमें एकरूपता नहीं है। लेखकों ने अपने अपने ज्ञान एवं रुचि के अनुरूप शब्दों का निर्माण किया है। किन्हीं-किन्हीं कोशों में उत्तर एवं दक्षिण भारत के प्रादेशिकता का भी प्रभाव परिलक्षित होता है। ऐसी स्थिति में नवीन संस्कृत शब्दों से अन्य भाषाओं के तत्तद् शब्दों के तत्तद् अर्थों का सहज बोध होना या कराना वक्ता एवं श्रोता दोनों के लिये असम्भव या कठिन होता है। संस्कृत के आधुनिक लेखकों एवं वक्ताओं के लिये यह एक समस्या है जिसका समाधान होना परम आवश्यक है।

प्रस्तुत कोश में शास्त्रीजी ने उक्त कठिनाइयों के निवारण के लिये जो प्रशंस प्रयत्न किया है जो उनकी भूमिका पढ़ने से अच्छी तरह विदित होता है। यदि कोई संस्था या शब्द निर्माण समिति विभिन्न कोशकारों द्वारा नवनिर्मित संस्कृत शब्दों के अखिल भारतीय विद्वत्समाज की दृष्टि में सर्वसामान्य और सर्वत्र समानरूप से प्रचलित करने की योजना बनाये तो उसकी सफलता में इस कोश से बड़ी सहायता मिल सकती है। परन्तु जब तक इस प्रकार की कोई योजना नहीं बनती, और जिसके बनने की सम्भावना भी कम ही दीखती है, तब तक इसी कोश को आदर्श कोश माना जा सकता है। इस दृष्टि से इसका "आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश" नाम मैं सर्वथा यथार्थ मानता हूँ।

संस्कृत का प्रत्येक विद्वान् एवं विद्यार्थी इस कोश की एक प्रति अपने पास रखकर और इससे सहायता लेकर संस्कृत बोलने एव लिखने में अबाधगति से आगे बढ़ सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

संकेत-सूची

(क) पदपरिचयसंबंधी संकेत

अ०, अव्य —अव्यय।
उप —उपसर्ग।
क्रि अ —क्रिया, अकर्मक।
क्रि प्रे —क्रिया, प्रेरणार्थक।
क्रि वि —क्रिया विशेषण।
क्रि सं —क्रिया संयुक्त।
क्रि स —क्रिया सकर्मक।
प्रत्य —प्रत्यय।
मु —मुहावरा।
वि —विशेषण।
सं पु —संज्ञा पुंलिंग।
संबो —संबोधन।
सं स्त्री —संज्ञा स्त्रीलिंग।
सर्व —सर्वनाम।

(ख) स्रोतसंबंधी संकेत

(अं = अँगरेजी)
(अ = अरबी)
(अनु = अनुकरणात्मक)
(अप = अपभ्रंश)
(अल्प = अल्पार्थक)
(गु = गुजराती)
(ग्रा = ग्रामीण)
(ता = तातारी)
(तु = तुर्की)
(देश = देशीय)
(पं = पंजाबी)
(पा = पालि)
(पुर्त = पुर्तगाली)
(पु हिं = पुरानी हिंदी
(पूर्व = निर्वचन पूर्ववत्)
(प्रा = प्राकृत)
(फ़ा = फ़ारसी)
(फ्रां = फ्रांसीसी)
(बं = बंगाली)
(यू = यूनानी)
(ले = लैटिन)
(सं = संस्कृत)
(स्पे = स्पेनिश)
(हिं = हिंदी)
(ब्र रिन् = ब्रह्मचारिन् इ)

(ग) धातुसंबंधी संकेत

(अ प से = अदादि परस्मैपदी सेट)
(क्र आ अ = क्र्यादि आत्मनेपदी अनिट)
(चु उ वे = चुरादि उभयपदी वेट)
(जु - - = जुहोत्यादि - -)
(त - - = तनादि - -)
(तु - - = तुदादि - -)
(दि - - = दिवादि - -)
(भ्वा - - = भ्वादि - -)
(रु - - = रुधादि - -)
(स्वा - - = स्वादि - -)
(कर्तृ = कर्तृवाच्य)
(कर्म = कर्मवाच्य)
(ना धा = नामधातु)
(प्रे = प्रेरणार्थक रूप)
(भाव = भाववाच्य)
(सन्न = सन्नन्त रूप)

(घ) शास्त्रीय संकेत

(ज्यो = ज्योतिषशास्त्र)
(धर्म = धर्मशास्त्र
(न्या = न्यायशास्त्र)
(मी = मीमांसाशास्त्र)
(यो = योगशास्त्र)
(रा नी = राजनीतिशास्त्र)
(वे = वेदान्तशास्त्र)
(वै = वैशेषिकशास्त्र)
(व्या = व्याकरणशास्त्र)
(संगी = संगीतशास्त्र)
(सां = सांख्यशास्त्र)
(सा = साहित्यशास्त्र)

(ङ) सामान्य संकेत

अ(ना)वर्षणम् = अवर्षणम्, अनावर्षणम् ।

अप्रचरि(र्जि)त = अप्रचरित, अप्रचर्जित ।

अनु, गमन-करण सरणम् = अनुगमन, अनुकरण, अनुसरणम् ।

क्रोड -डा = क्रोड, क्रोड, क्रोडा ।

स्पष्टी विशदी कृ = स्पष्टीकृ, विशदीकृ ।

वि, लेपन
वि, लेपन } विलेपनम्, लेपनम् ।

राज— = समास का अन्तिम पद अपेक्षित है ।

—परायण = समास का पूर्वपद अपेक्षित है ।

इ = इत्यादि ।

उ = उदाहरण ।

एक = एकवचन ।

दे = देखिए ।

द्वि = द्विवचन ।

ब = बताइए ।

बहु = बहुवचन ।

मि = मिलाइए ।

+ = योगचिह्न ।

= = समानतासूचक ।

* = स्वरचित शब्द ।

(घ) सप्तम परिशिष्ट की संकेत सूची

(विंशति) अवदान ।

(ज़ेन्द) अवस्ता ।

अश्वघोष (बुद्धचरित)

उत्तर (काण्ड, रामायण)

उदयगिरि (चन्द्र तथा स्कन्दगुप्त के शिलालेख)

कालिका (पुराण)

किराता(र्जुनीय)

कूर्म (पुराण)

गरुड (पुराण)

जातक (माला)

त्रिकाण्ड (शेष)

दशकुमार (चरित)

देवी (पुराण)

देवीभा(गवत)

पद्म (पुराण)

पाणिनि (अष्टाध्यायी)

प्रबोध (चन्द्रोदय)

बदरी विशाल (यात्रा)

बृहत्क(था)

बृहत्सं(हिता)

ब्रह्म (पुराण)

ब्रह्मवै (वर्तपुराण)

ब्रह्माण्ड (पुराण)

भवभूति (उत्तररामचरित)

भविष्य (पुराण)

भागवत (पुराण)

मत्स्य (पुराण)

मनुसं(हिता)

मनु(स्मृति)

महा(भारत)

(चन्द्र का) महरौली (अभिलेख)

मेघ(दूत)

रघु(वंश)

राजत(रंगिणी)

रामा(यण)

ललितविस्तर

लिंग (पुराण)

वराह (पुराण)

वामन (पुराण)

विक्रमांक (देवचरित)

विष्णु (पुराण)

शतपथ (ब्राह्मण)

शिव (पुराण)

स्कन्द (पुराण)

स्वयम्भू (पुराण)

हरिवंश (पुराण)

(समुद्रगुप्त की) हरिषेण (प्रशस्ति)

संस्कृत-कोषग्रन्थो का उद्भव एव विकास

संस्कृत-वाङ्मय की अन्य शाखाओ के समान 'कोषविद्या' का भी अपना विशेष महत्त्व है। वैदिक युग से लेकर अद्यावधि कोषग्रन्थो की रचना होते रहना ही इसका ज्वलन्त प्रमाण है। आरम्भ मे कोषग्रन्थो का निर्माण विशेष उद्देश्य को अभिलक्षित कर प्रारम्भ हुआ था। यह उद्देश्य भी व्यावहारिक था। इस कारण शब्दो के समाकलन की इस विधा मे कोषकारो को सफलता मिलती चली आ रही है। जनसाधारण की शब्दज्ञानसम्बन्धी पिपासा को शान्त करने मे कोषग्रन्थों ने सुमधुर स्रोतस्विनी के समान अपनी सार्थकता सिद्ध की है। कोषकारो ने 'शब्द' की इयत्ता निर्धारित करने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु वे इसका अन्त न पासके। 'शब्द' वस्तुत नित्य है। नित्य शब्द का अन्त कहाँ ? 'शब्द' की व्यापकता का एक मात्र कारण उसके विस्तृत प्रयोग का होना है। इस सम्बन्ध मे महाभाष्यकार पतञ्जलि ने इस ओर सकेत भी किया है कि शब्दो के प्रयोग का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। सात द्वीपो से युक्त विशाल भूखण्ड मे भारतीय वाङ्मय का विस्तार कुछ कम नही है। वेदो की ही कई शाखायें हैं। इनमे से यजुर्वेद की १०१ शाखायें हैं। सामवेद की एक हजार शाखाएँ हैं। ऋग्वेद के इक्कीस प्रकार हैं। अथर्ववेद नौ शाखाओ का है। इसके अतिरिक्त इतिहास, पुराण, वैद्यक इत्यादि सभी विषयो मे शब्दो के प्रयोग का ही क्षेत्र है– "महान् हि शब्दस्य प्रयोगविषयः। सप्तद्वीपा वसुमती। त्रयो लोकाः। चत्वारो वेदाः साङ्गाः सरहस्याः बहुधा विभिन्नाः। एकशतमध्वर्युशाखाः, सहस्रवर्त्मा सामवेद, एकविंशतिधा बाह्वृच्यं, नवधाऽथर्वणो वेदः, वाको वाक्यम्, इतिहासः, पुराणम्, वैद्यकम्–इत्येतावान् शब्दस्य प्रयोगविषयः" (महाभाष्य पस्पशाह्निक)।

यह जानते हुए भी प्राचीन समय मे शब्द की इयत्ता निर्धारित करने का प्रयत्न अवश्य किया गया होगा। इसी को पतञ्जलि ने इस अर्थवाद गर्भित वाक्य के द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया है कि शब्द का प्रतिपद पाठ सम्भव नही है। तदनुसार उन्होने इस आख्यान की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि 'बृहस्पति ने इन्द्र को देवो के एक हजार वर्ष तक प्रत्येक शब्द का उच्चारण कर शब्दशास्त्र पढाया, फिर भी शब्द समाप्त नही हुए'। इस प्रसङ्ग मे भाष्यकार ने दूसरा आख्यानक प्रस्तुत करते हुए यह बताया है कि जब बृहस्पति सदृश ख्यातनामा व्याख्याता, इन्द्र जैसा विज्ञ शिष्य, देवो के एक सहस्र वर्ष की अवधि अध्ययन-काल नियत किया गया तो भी शब्दो का अन्त ज्ञात नही हुआ। फिर आजकल की बात ही क्या ? जो सब तरह निरोगी रहकर चिरायु होता है,

अधिक से अधिक वह सौ वर्ष तक जीता है। इसके अतिरिक्त आगे निरूपण करते हुए उन्होंने कहा कि विद्या की सार्थकता चार प्रकार से होती है—(१) गुरुमुख से समझ लेते समय, (२) मनन के समय, (३) दूसरों को सिखाते समय और (४) व्यवहार करने में—"एवं हि श्रूयते। बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच, नान्तं जगाम। बृहस्पतिश्च प्रवक्ता, इन्द्रश्च अध्येता, दिव्यं वर्षसहस्रमध्ययनकाल:, न च अन्तं जगाम। किं पुनरद्यत्वे? य. सर्वथा चिरं जीवति स वर्षशतं जीवति। चतुर्भिश्च प्रकारैर्विद्योपयुक्ता भवति आगमकालेन, स्वाध्यायकालेन, प्रवचनकालेन, व्यवहारकालेनेति।" अत: प्रायोगिक शब्दों के समाकलन को व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी समझ कोषकारों ने उन्हें ग्रन्थों के रूप में प्रस्तुत कर संस्कृत वाङ्मय के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा है। इस प्रकार शब्दों के संग्रह करने में 'कोष' शब्द रूढ़ हो गया है।

वैदिक काल में कोष 'निघण्टु' के नाम से विख्यात रहे। 'निघण्टु' से अभिप्राय उन वैदिक शब्दों के संग्रह से है, जिनमें संज्ञाशब्दों के साथ क्रियापदों को भी एकत्र कर लिया गया था। निघण्टु का उद्देश्य वैदिक शब्दों के अर्थ समझने में सहायता पहुँचाना भी रहा है। इसके विपरीत लौकिक 'कोषों' में अधिकतर संज्ञाशब्दों का समाकलन हुआ है। नामसंग्रह के अनन्तर परिशिष्ट-रूप में अव्ययों के अर्थ का संग्रह भी इन कोषग्रन्थों में उपलब्ध होता है। लौकिक कोष पद्यमय होने के कारण कविजनों के परिश्रम को कम करने में उपयोगी सिद्ध हुए हैं। फलतः कण्ठस्थ करने में सरलता होने के कारण इनका प्रचार होने में बड़ी सुविधा हुई है। अत: विद्यार्थियों को काव्यशिक्षा देने के साथ ही 'कोष' कण्ठस्थ कराने की परिपाटी रही है। अर्थ की दृष्टि से प्राचीन काल में कोषों का विभाजन दो प्रकार से किया गया था—(१) समानार्थक कोष तथा (२) नानार्थक कोष। लिङ्ग-निर्धारण करने की समस्या को कोषकारों ने बड़ी बुद्धिमत्ता से सुलझाया है। इसके लिये उन्होंने कई विधियाँ अपनाई हैं। कहीं-कहीं तो शब्दों के प्रथमान्त प्रयोग से उनका लिङ्ग-निर्देश किया है और कहीं 'पुं' 'स्त्री' 'क्लीब' आदि लिङ्गद्योतक शब्दों का प्रयोग कर इस विशिष्टता का परिचय दिया है। शब्दचयन के भी अनेक सिद्धान्त हैं। समानार्थक कोषों में विषयों के अनुसार शब्दों का संकलन कर पूरे कोषग्रन्थ को अनेक वर्गों में विभक्त कर दिया है। नानार्थ-कोषों में अन्तिम वर्णों के अनुसार शब्दों का संकलन कर कान्त, खान्त, गान्त आदि शब्दों का चयन किया गया है। कहीं आदिम वर्णों को भी महत्त्व दिया गया है। कहीं आदिम तथा अन्तिम दोनों वर्णों को दृष्टि में रखकर शब्द-चयन की प्रक्रिया सम्पन्न की गई है।

निघण्टु—यह 'निघण्टु' ग्रन्थ यास्क से प्राचीन है, क्योंकि इसी के आधार पर यास्क ने 'निरुक्त' लिखा है। महाभारत के अनुसार प्रजापति कश्यप इस निघण्टु के रचयिता हैं। इसमें पाँच अध्याय हैं। आदि के तीन अध्यायों में 'पृथ्वी' आदि के बोधक समानार्थ शब्दों का सकलन है। इस प्रकरण को 'नैघण्टुक-काण्ड' कहा जाता है। चतुर्थ अध्याय में अव्युत्पन्न तथा गूढार्थक शब्दों का चयन किया गया है। इसे 'नैगम-काण्ड' की संज्ञा दी गई है। पाँचवें अध्याय (दैवतकाण्ड) में भिन्न-भिन्न देवताओं के रूप तथा स्थान का विस्तृत निरूपण है। 'निघण्टु' के प्रमुख व्याख्याता देवराज यज्वा हैं। ये सायण से प्राचीन अवश्य हैं, क्योंकि सायण के ऋग्वेद-भाष्य में एक स्थान पर निघण्टुभाष्य के वचनों का उद्धरण मिलता है। देवराज ने अपने भाष्य में क्षीरस्वामी को अपने पूर्ववर्ती भाष्यकार के रूप में स्मरण किया है। क्षीरस्वामी 'अमरकोष' के सुप्रसिद्ध टीकाकार हैं। अतः देवराज यज्वा का समय १२ वीं तथा १३ वीं शताब्दी के मध्य प्रमाणित होता है।

वैदिक कोष—प्राचीन परिपाटी के अनुसार भास्कर राय ने वैदिक-कोष की रचना लौकिक कोषों के ढंग पर की है। इस कोष के सकलित शब्द तो वे ही हैं जो निघण्टु में हैं, किन्तु उन शब्दों का अर्थ 'अनुष्टुप् छन्द' द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। इस कोष का रचना-काल १७७५ ई० है। भास्कर राय ने अपनी गुप्तवती टीका में अनेक स्थलों पर नागेश की सप्तशती-टीका का खण्डन किया है। अतः ये नागेश के समकालीन अथवा उनसे कुछ ही समय के अनन्तर हुए होंगे।

पुरुषोत्तम देव ने अपने लौकिक-सस्कृत के पुराने कोषकारों का उल्लेख 'हारावली' कोष के अन्त में वाचस्पति, व्याडि तथा विक्रमादित्य का नाम लेकर किया है। तदनन्तर केशव ने कात्य, व्याडि, वाचस्पति, भागुरि, अमर, मङ्गल, साहसाङ्क, महेश तथा हेमचन्द्र का नामोल्लेख किया है। इनके अतिरिक्त किसी हस्तलेख के आधार पर १८ प्रसिद्ध कोषों के विषय में परिज्ञान होता है। इस प्रकार अमर-कोष को केन्द्रबिन्दु मानकर सस्कृत वाङ्मय के कोषग्रन्थों को आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय जी ने तीन कालों में विभक्त किया है—(१) अमरपूर्व काल, (२) अमरकाल तथा (३) अमरोत्तर-काल।

अमर-पूर्व-कोषकार—अमर-पूर्व कोषकारों में व्याडि सर्वप्राचीन कोषकार हैं। व्याडि के कोषग्रन्थ का नाम 'उत्पलिनी' था। पुरुषोत्तम ने अपने हारावली कोष के अन्त में इसका उल्लेख किया है। इस कोष में समानार्थ शब्दों की प्रधानता थी। इन्होंने व्युत्पत्ति के द्वारा अर्थानुसन्धान की प्रक्रिया का दिग्दर्शन कराया है। जैसे 'निघण्टु' की व्याख्या इन्होंने इस तरह की है—"अर्थान् निघण्टयन्यस्मात् निघण्टुः परिकीर्तितः"। ये व्याडि कदाचित् पाणिनि के समकालीन सुप्रसिद्ध 'संग्रह' नामक ग्रन्थ के कर्ता ही हों।

कात्य—इनके कोषग्रन्थ का नाम 'नाममाला' था। क्षीरस्वामी, हेमचन्द्र आदि ने इनका उल्लेख किया है। इनके कोष की विशेषता यह थी कि इन्होंने कहीं-कहीं अर्थ का वर्णनात्मक परिचय भी दिया है—"क्षुद्रच्छिद्रसमुपेतं चालनं तितउ पुमान्"। इनका निश्चित समय ज्ञात नहीं हो सका।

भागुरि—यह त्रिकाण्ड-कोष के रचयिता हैं। अमरसिंह ने 'त्रिकाण्ड' की प्रेरणा इन्हीं से प्राप्त की होगी। इन्होंने केवल समानार्थ शब्दों का ही उल्लेख किया है। व्याकरण के प्रसिद्ध ग्रन्थों में भागुरि के मत का अनेक स्थलों पर उल्लेख मिलता है। विशेषत हलन्त वाच्, निश्, दिश् आदि शब्दों को आकारान्त बनाने में इनके नाम का उल्लेख मिलता है "वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयो। आप चैव हलन्ताना यथा वाचा निशा दिशा"। सायण आदि वेदभाष्य-कर्ताओं ने इनके कोष ग्रन्थ से पर्याप्त सहायता ली है।

रत्नमाला के अज्ञात-नामा लेखक का उल्लेख सर्वानन्द ने अपनी "अमरकोष" की टीका मे किया है। तदनुसार इस कोष के परिच्छेदों का वर्गीकरण लिङ्ग के आधार पर था। इसमे समानार्थ-शब्दों का चयन था।

अमरदत्त—इन्होंने 'अमरमाला' नामक कोषग्रन्थ की रचना की। हलायुध ने अपने कोषग्रन्थ का उपजीव्य 'अमरमाला' को माना है। सर्वानन्द ने इस कोष से अनेक उद्धरण अपनी अमर-टीका मे दिये है। इनका समय भी अनिश्चित ही है।

वाचस्पति—यह सुप्रसिद्ध 'शब्दार्णव' कोष के रचयिता थे। यह 'अनुष्टुप्-छन्द' मे विरचित विशाल कोष था। इसकी विशेषता यह थी कि एक शब्द के विभिन्न रूपों का तथा वर्तनी का भी इसमे उल्लेख है। हेमचन्द्र ने इनके कोष से पर्याप्त सहायता ली है। इनका वास्तविक समय भी अज्ञात है।

धन्वन्तरि—यह वैद्यक-निघण्टु के रचयिता हैं। वैद्यक निघण्टुओं में यह कोष सब से प्राचीन है। क्षीरस्वामी ने अपनी अमर-टीका में यह उल्लेख किया है कि अमरसिंह के 'अमरकोष' के वनौषधि-वर्ग का उपजीव्य यही कोष रहा है। विक्रम के नवरत्नों में इनका भी उल्लेख है। उस दृष्टि से तो यह भी अधिक प्राचीन है।

महाक्षपणक—इनके नाम से दो कोष-ग्रन्थ हस्तग्रन्थों मे उल्लिखित मिलते है। ये दोनों अनेकार्थ-ध्वनिमञ्जरी तथा अनेकार्थमञ्जरी नाम से प्रसिद्ध है। ये दोनों ग्रन्थ एक ही होंगे, क्योंकि अधिकतर टीकाकर्ताओं ने 'अनेकार्थमञ्जरी' नाम का ही उल्लेख किया है। 'रघुवंश' की टीका में वल्लभदेव ने 'अनेकार्थमञ्जरी' का अवतरण उद्धृत किया है। महाक्षपणक काश्मीरी थे। इनके समय का भी कोई निर्णय नहीं हो सका है। यदि यह भी विक्रम के नवरत्नों में से एक हो तो विक्रमादित्य अथवा चन्द्रगुप्त द्वितीय के राज्यकाल के आसपास इनकी स्थिति के विषय में अनुमान किया जा सकता है।

अमरसिंह—सुप्रसिद्ध "नामलिङ्गानुशासन" कोष के रचयिता अमरसिंह की ख्याति कोषकर्ता के रूप मे सबसे अधिक है। इनके नाम से ही यह ग्रन्थ अमरकोष प्रसिद्ध हो गया। इनसे पूर्व प्राचीन कोषकारो ने दो प्रकार की शैलियाँ अपनायी थी। कतिपय कोष केवल नामो का ही निर्देश करते थे और कुछ कोष लिङ्गो के ही विवेचन को अपना मुख्य विषय मानते थे। अमरसिंह ने दोनो का समन्वय कर अपने कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया। तीन काण्डो मे विभक्त कर इस ग्रन्थ को 'त्रिकाण्ड' सज्ञा भी दी गई। इसका उपविभाग 'वर्गो' के नाम से किया गया है। 'अमरकोष' पद्यबद्ध रचना है। 'अनुष्टुप्' छन्द के १५३३ श्लोको मे यह रचना सम्पूर्ण हुई है। ग्रन्थ का छठा भाग नानार्थ के वर्णन मे है। शेष भाग मे समानार्थ शब्दो का निरूपण किया गया है। समानार्थ-भाग मे एक विषय के वाचक नामो का एकत्र सकलन है। नानार्थ-खण्ड मे अन्तिम वर्ण के अनुसार पदो का सग्रह है। अव्ययो का वर्णन एक स्वतन्त्र वर्ग मे किया गया है तथा ग्रन्थ के अन्त मे लिङ्गो के साधक नियमो का उल्लेख किया गया है।

अमरसिंह के समय का निर्णय भी एक समस्या बना हुआ है। इतना तो अवश्य निश्चय है कि यह ग्रन्थ छठी शताब्दी से पहले ही रचा गया था। गुणरात द्वारा चीनी भाषा मे इसका अनुवाद किया जाना उस समय की पश्चिम (अन्तिम) अवधि है। इसकी लोकप्रसिद्धि का सबसे अधिक प्रमाण यह है कि इस पर लगभग ४० टीकायें लिखी गई हैं। इनमे क्षीरस्वामी और रामाश्रम (भानुदीक्षित) द्वारा लिखित टीकायें बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं। इन दोनो मे से रामाश्रमी का पदव्युत्पत्ति-प्रदर्शन अधिक सूक्ष्म तथा परिनिष्ठित है। अमरसिंह बौद्ध थे। इनके समय की पूर्वसीमा २२५ ई० के आसपास निर्धारित की जाती है।

कोष ग्रन्थो मे अमरकोष का प्रचलन अद्यावधि सर्वाधिक है। सस्कृत के विद्यार्थियो को बाल्यावस्था मे ही इसे कण्ठस्थ कराया जाता रहा। यह परम्परा अब भी थोडी-बहुत दिखाई पडती है। सरल भाषा एवम् अनुष्टुप्-छन्द मे विरचित होने के कारण इसे हृदयङ्गम करने मे कठिनाई नही होती। अमरकोष के अतिरिक्त शब्द-ज्ञान का लघुभूत उपाय दूसरा कोई नही है। इस प्रकार अमरसिंह अपने पश्चाद्वर्ती कोषकारो के प्रेरणा स्रोत बन गए। इसी कारण उनकी सरणि को अधिक प्रशस्त बनाने मे आगे के कोषकार तत्पर होते हुए दिखाई पडते हैं।

अमरसिंह के पश्चाद्वर्ती कोषकार—बाद के कोषकार शब्दो के वैशिष्ट्य का निदर्शन कराने मे बडे सिद्धहस्त प्रतीत होते हैं। उनके प्रकरण भले ही सीमित हो किन्तु उनका क्षेत्र अधिक विस्तृत है। कतिपय कोषकारो ने केवल नानार्थ-कोषग्रन्थो की ही रचना स्वतन्त्र रूप मे की है, किन्तु उन्होने शब्दों की सूक्ष्म

समीक्षा कर अपने पाण्डित्य तथा अर्थ-निर्णय करने की क्षमता का परिचय दिया है। इस दृष्टि से निम्नलिखित विद्वान् प्रसिद्ध कोषकारों के रूप मे सर्वमान्य हैं।

शाश्वत—इनका समय भी छठी शताब्दी के आस-पास माना जाता है। इन्होने स्वयम् अपने विषय मे यह लिखा है कि मैंने तीन व्याकरणो को देखा तथा पांच लिङ्गानुशासनो का अध्ययन किया। केवल इतना ही नही किन्तु शिष्ट-प्रयोगो के देखने मे भी कोई कमी नही होने दी।[1] इनका विरचित कोष अनेकार्थ-समुच्चय है। इस कोष मे केवल अनेकार्थ शब्दो का विस्तृत चयन है। शब्दो के चयन मे अमरकोष की अपेक्षा अधिक विस्तार तथा प्रौढता दृष्टिगोचर होती है। प्रस्तुत कोष के अन्तिम पद्य से यह सकेत मिलता है कि ग्रन्थकार ने कवि महाबल तथा वराह से भी इस सम्बन्ध मे परामर्श किया था[2]। अनेक विद्वानो के सहयोग से इस कोष की रचना होने के कारण इसमे व्यापकता होना स्वाभाविक है।

धनञ्जय—शाश्वत के लगभग दो शताब्दी पश्चात् धनञ्जय ने 'नाममाला' कोष की रचना की। यह कोष व्यवहार म आने वाले लोकप्रचलित संस्कृत शब्दो का उपयोगी कोष है। इसे लघुकोष कहना ही उचित है। इसमे केवल २०० श्लोक हैं। विशेषता इस बात मे है कि ग्रन्थकार ने शब्दो की रचना के सुन्दर उपाय बताये है। उदाहरणार्थ पृथ्वीवाचक शब्दो में 'धर' लगा देने से पर्वतवाची शब्दो का बोध होता है (मही + धर, पृथ्वी + धर आदि)। इसी प्रकार मनुष्यवाची शब्दो मे 'पति' शब्द जोड देने से राजा के नाम (नर + पति, नृ + पति) तथा वृक्षवाची शब्दो मे 'चर' शब्द जोडने से बन्दर के समानार्थक शब्द बन जाते है (द्रुम + चर, वृक्ष + चर आदि)। इस कोष की यही विशेषता है कि शब्दो के चयन मे लोकव्यवहार को विशेष महत्त्व दिया गया है। 'अनेकार्थनाममाला' इसका पूरक अङ्ग है। कोषकार के अतिरिक्त धनञ्जय कवि भी हैं। इनका 'द्विसन्धान' काव्य द्वयाश्रय काव्यो मे बडा प्रसिद्ध है। इस काव्य मे श्लिष्ट पदो के द्वारा रामायण और महाभारत के कथानको का विशद वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इनका समय आठवी शताब्दी का उत्तरार्ध निश्चित-प्राय है। इस विषय मे वीरसेन स्वामी द्वारा 'षट्खण्डागम' की धवला नामक टीका मे 'अनेकार्थनाममाला' का उद्धृत एक श्लोक ही पर्याप्त प्रमाण माना जा

---

१ दृष्टशिष्टप्रयोगोऽहं दृष्टव्याकरणत्रयः।
अधीती मदुपाध्यायात् लिङ्गशास्त्रेषु पञ्चसु ॥

—शाश्वतकोष—आरम्भ का ६ श्लोक

२. महाबलेन कविना वराहेण च धीमता।
सह सम्यक् परामृश्य निर्मितोऽयं प्रयत्नतः ॥

सकता है। धवला टीका ८७३ विक्रमी संवत् (=८१६ ई०) में लिखी गई थी। अतः धनञ्जय ७४०–७९० ई० के मध्य अवश्य रहे होंगे।

पुरुषोत्तमदेव—धनञ्जय के लगभग ४०० वर्षों के उपरान्त पुरुषोत्तमदेव ने तीन कोष-ग्रन्थों की रचना की। ये ग्रन्थ हैं—(१) त्रिकाण्ड कोष, (२) हारावली तथा (३) वर्णदेशना। इनमें से प्रथम तो 'अमरकोष' का पूरक ग्रन्थ है। इसका क्रम 'अमरकोष' के समान है। तदनुसार इसमें भी तीन काण्ड तथा पच्चीस वर्ग हैं। इसमें भी लोकव्यवहार में प्रयुक्त शब्दों के साथ ही 'अमरकोष' में अनुपलब्ध शब्दों का भी सग्रह किया गया है। हारावली में अप्रचलित तथा असामान्य शब्दों का समाकलन किया गया है। २७० पद्यात्मक 'लघुकोष' होने पर भी यह दो भागों में विभक्त है—(क) समानार्थक तथा (ख) नानार्थक। समानार्थक भाग के तीन अंश हैं—पहले में पूरे श्लोक में समानार्थक शब्द हैं, दूसरे में अर्ध श्लोक में तथा तीसरे में एक चरण में ही। नानार्थक खण्ड की भी यही सरणि है। वर्तनी अर्थात् शब्दों की शुद्धता बतलाना वर्णदेशना का मुख्य ध्येय है। इस ग्रन्थ की उपादेयता इस कारण सुविदित है। स्वयं ग्रन्थकार ने यह उल्लेख किया है कि गौड-लिपि में भिन्नता होने के फलस्वरूप शब्दों के रूपों में भ्रान्ति होना सम्भव है। इसके निराकरण-हेतु 'वर्णदेशना' की उपयोगिता है। अमरसिंह की भाँति पुरुषोत्तमदेव भी बौद्ध थे। इन्होंने सर्वप्रथम बुद्ध को 'मुनीन्द्र' रूप में नमन किया है। इस कार्य में यह अमरसिंह से और आगे बढे। देवताओं के सम्बन्ध में इन्होंने बुद्ध के बाद बुद्ध के पुत्र राहुल का, अनुज देवदत्त का मायादेवी का तथा प्रत्येक बुद्ध का क्रमशः उल्लेख किया है। यह बंगाल के शासक राजा लक्ष्मणसेन ११७०–१२०० के समकालिक थे। इन्हीं के आदेश से पुरुषोत्तम देव ने पाणिनि की अष्टाध्यायी पर 'भाषावृत्ति' नामक वृत्ति लिखी। अतः इनका समय बारहवीं शती का उत्तरार्ध मानना युक्तिसंगत है।

हलायुध—इनकी रचना अभिधान-रत्नमाला के नाम से प्रसिद्ध है। इस कोष में पाँच काण्ड हैं—स्वर्, भूमि, पाताल, सामान्य तथा अनेकार्थ। इनमें से प्रथम चार काण्डों में समानार्थक शब्दों का वर्णन है तथा अन्तिम काण्ड में नानार्थ एवं अव्ययों का। इन्होंने अमरसिंह को ही अपना आदर्श माना है। यह मान्यखेट के राजा कृष्णराज तृतीय ९५० ई० के समकालिक थे। अतः इनका समय दशम शती का उत्तरार्ध माना गया है।

यादवप्रकाश द्वारा विरचित वैजयन्ती कोष बड़ी महत्त्वपूर्ण रचना है। यह दो खण्डों में विभक्त है—समानार्थ तथा नानार्थ। समानार्थ-खण्ड में पाँच भाग हैं—स्वर्ग, अन्तरिक्ष, भूमि, पाताल तथा सामान्य। नानार्थ-खण्ड में तीन भाग हैं, जिनमें ग्रन्थकार द्वारा शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है।

वर्णक्रम से शब्दसग्रह किया जाना इसकी नवीनता है। दूसरी विशेषता यह है कि इसमे वैदिक शब्दो का सकलन भी किया गया है। रामानुजाचार्य (१०५५–११३७ ई०) के यह गुरु थे। अत इनका स्थितिकाल ११ वी शती का उत्तरार्ध निश्चितप्राय है।

महेश्वर—इनका विश्वप्रकाश-कोष नानार्थ-शब्दो का सकलनात्मक ग्रन्थ है। इस कोष मे शब्दो का चयन अन्तिम वर्ण के आधार पर किया गया है। रूपभेद का निर्देश भी इसमे किया गया है। ग्रन्थान्त मे अव्ययो का सकलन विद्यमान है। ग्रन्थकार ने स्वयम् अपना परिचय इस कोष के अन्त मे दिया है। तदनुसार *इस कोष की रचना सन् ११११ ई० मे हुई थी। मल्लिनाथ ने इस कोष का* उपयोग अपनी टीकाओ मे विशेषतया किया है।

अजयपाल—यह बौद्धमतावलम्बी थे। इनकी रचना नानार्थसग्रह नाम से प्रसिद्ध है। इस कोष मे १७३० शब्द हैं। इस कोष मे भी वर्णक्रमानुसार शब्दो का चयन किया गया है। इनके मत का उल्लेख अमरकोष के टीकाकार सर्वानन्द न टीकासर्वस्व (११५९ ई०) मे बहुधा किया है। इसके अतिरिक्त वर्धमान ने अपने व्याकरण ग्रन्थ 'गणरत्नमहोदधि (रचना ११४० ई०) मे इनका बहुधा उल्लेख किया है। फलत यह बारहवी शती से कुछ पहले हुए होगे। इन्होने 'ब' तथा 'व' मे अन्तर नही माना है। इस कारण इनके बगदेशीय होने का अनुमान किया जाता है।

मेदिनिकर—इनका ग्रन्थ 'मेदिनीकोष' के नाम से प्रसिद्ध है। यह भी नानार्थ कोष है। मेदिनिकर ने शब्दो के चयन मे दो प्रकार अपनाये हैं—ककारादि वर्णक्रम तथा अन्तिम वर्णक्रम। मेदिनी ने विश्वप्रकाश को 'बहुदोष' बतला कर अपना महत्त्व सूचित किया है। मेदिनीकोष शब्दो की सख्या मे तथा चयन की व्यवस्था म विश्वप्रकाश की अपेक्षा अधिक विशद एव सुव्यवस्थित है। कविशेखराचार्य (लगभग १३०० ई०) के मैथिली भाषा मे लिखित वर्णरत्नाकर ग्रन्थ मे मेदिनीकर का उल्लेख होने से डा० गोडे ने इन्हे १२००—१२७५ ई० के मध्य माना है।

मङ्ख—इन्होने भी अन्तिम व्यञ्जनो के आधार पर अनेकार्थ-कोष की रचना की है। इसमे १००७ पद्य हैं। इसका विभाजन परिच्छेदो मे नही किया गया है। इनका स्थितिकाल ११२८–११४९ के मध्य माना गया है। यह काश्मीर में राजा जयसिंह के राज्यकाल मे विद्यमान थे। इस कोष मे प्राय. काश्मीर के कवियो द्वारा प्रयुक्त शब्दो का चयन किया गया है।

हेमचन्द्र—कोषग्रन्थो के इतिहास मे यह सर्वाग्रणी हैं। इन्होने चार कोषग्रन्थ *लिखे हैं—अभिधानचिन्तामणि (समानार्थकोष),* अनेकार्थसग्रह (नानार्थ-

कोष), निघण्टुकोष (वैद्यक) तथा देशीनाममाला (प्राकृतकोष)। इनमें से अभिधानचिन्तामणि को छह काण्डों में विभक्त किया गया है—देवाधिदेव, देव, मर्त्य, भूमि, नरक तथा सामान्य। यह कोश नानावृत्तों में निबद्ध १५४२ पद्यों में समाप्त हुआ है। इस पर स्वयं ग्रन्थकार ने ही टीका लिखी है। अनेकार्थसंग्रह भी छह काण्डों में विभक्त है। इसमें १८२९ श्लोक हैं। शब्दों का संग्रह दो प्रकार से है—अन्तिम अक्षरों द्वारा तथा आदिम अक्षरों द्वारा। इन्होंने व्यवहार में आने वाले संस्कृत शब्दों का यथावत् संगृहीत कर उनके प्रति निष्ठा व्यक्त की है। यह ग्रन्थ महाराष्ट्र के राजा सोमदेव के ग्रन्थ मानसोल्लास (रचना ११३० ई०) का समकालिक प्रतीत होता है। हेमचन्द्र का प्रभाव अवान्तरकालीन कोषकारों पर विशेष रूप से पड़ा है।

केशव स्वामी—इनके द्वारा विरचित नानार्णव-संक्षेप नानार्थ शब्दों का सबसे बड़ा कोष है। इसमें लगभग ५८०० श्लोक हैं। अक्षरों की गणना के आधार पर यह कोष भी छह काण्डों में विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड लिङ्ग के अनुसार पाँच भागों में विभक्त है। इसमें वैदिक शब्दों का सकलन भी विद्यमान है। यह ग्रन्थ चोलवंशी नरेश राजराज चोल के आश्रय में रहकर लिखा गया है। इनका समय १२०० ई० के आस पास माना जाता है। इस ग्रन्थ के छह काण्डों में प्रति-काण्ड पाँच अध्याय हैं। काण्डों का विभाजन एकाक्षर से लेकर षडक्षर तक है। अध्यायों का विभाजन लिङ्ग के अनुसार किया गया है—स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, वाच्यलिङ्ग तथा संकीर्णलिङ्ग। प्रत्येक अध्याय में शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है। आधुनिक कोश-ग्रन्थों में यही क्रम स्वीकृत है।

केशव—अद्यावधि ज्ञात समानार्थ कोषों में केशव का कल्पद्रुकोष सबसे विशाल है। इसमें लगभग ४०० श्लोक हैं। इसके तीन स्कन्ध हैं—भूमि, भुव तथा स्वर्ग। प्रत्येक स्कन्ध प्रकाण्डों में विभक्त है। ग्रन्थकार के अनुसार इसकी रचना १६६० में हुई। इस कोष के शब्दचयन में बड़ी विशिष्टता है। अनेक ज्ञातव्य तथ्यों के संग्रह ने इसे विश्वकोष का रूप दिया है। इसमें समानार्थ शब्दों के साथ प्रयुक्त विषयों का विस्तृत वर्णन भी विद्यमान है।

शाहजी—यह विश्वविख्यात छत्रपति शिवाजी के भतीजे थे। तंजौर के इतिहास के अनुसार शाहजी का राज्य-समय (१६८४–१७१२ ई०) विद्योन्नति के लिये प्रसिद्ध रहा है। इनकी सभा में ४७ विद्वान् रहते थे। इनका विरचित शब्दरत्नसमन्वय-कोष शब्दचयन की दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इस कोष में प्रत्येक वर्ग के भीतर अक्षर-क्रम से शब्दों का विन्यास किया गया है। शब्दों का अवान्तर क्रम भी अकारादि क्रम के अनुसार विद्यमान है। यह विशेषता संस्कृत के बहुत कम कोशों में पाई जाती है। इन्होंने 'क्ष' को अलग वर्ण के रूप में

स्वीकार किया हैं। उसमे आरम्भ होने वाले शब्दो को अन्त मे रखा है। इस कोश मे लगभग ३५०० श्लोक हैं। इस कोश का दूसरा नाम राजकोश भी है।

हर्षकीर्ति—इन्होने समानार्थक शब्दो के शारदीयाभिधानमाला नामक कोश की रचना की। यह तीन काण्डो मे विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड को भी वर्गो मे विभक्त किया गया है। प्रथम काण्ड के तीन वर्ग है—देववर्ग, व्योमवर्ग तथा धरावर्ग। द्वितीय काण्ड चार वर्गों मे विभक्त किया गया है—अङ्गवर्ग, क्षयोगादिवर्ग, सगीतवर्ग तथा पण्डितवर्ग। तृतीय काण्ड के पाँच वर्ग हैं—ब्रह्म, राज, वैश्य, शूद्र तथा सकीर्ण। पूरे ग्रन्थ मे केवल ४३५ श्लोक है। कोश के अतिरिक्त हर्षकीर्ति ने अनेक (शास्त्रीय विषयो पर) ग्रन्थो की रचना की। यह जैनधर्मावलम्बी थे। इनके गुरु चन्द्रकीर्ति रहे, जिन्होने जहाँगीर (१७ वी शती) से विशेष सम्मान प्राप्त किया। इन्होने एक दूसरे कोश की भी रचना की। उस कोश का नाम है—शब्दानेकार्थ। इण्डिया आफिस लाइब्रेरी मे इस पुस्तक का रचनाकाल वि० स० १६६५ लिखा है। अत इनका समय सत्रहवी शती का आरम्भिक चरण मानना युक्तिसगत प्रतीत होता है।

नवीन ढंग के कोष

विदेशी भाषाओ के सम्पर्क मे आने पर कुछ विद्वानो ने विशिष्ट कोशो का सस्कृत मे सकलन किया। इस पद्धति का सर्वप्रथम प्रयोग शब्दकल्पद्रुम नामक प्रख्यात कोष मे किया गया। इस कोष को सुप्रसिद्ध मनीषी राजा राधाकान्तदेव ने मान्य पण्डितो की सहायता से अनेक खण्डो मे १८२२ तथा १८५८ ई० के बीच प्रकाशित किया। इसमे शब्दो का चयन वर्णक्रम से है तथा पुराण, धर्मशास्त्र आदि प्रमाण ग्रन्थो के उद्धरणो का समावेश होने से इसकी प्रामाणिकता बहुत बढ गई है। वस्तुत यह सस्कृत का विश्वकोष है। इसमे वैदिक शब्दो का प्राय अभाव है। शब्दो की व्युत्पत्ति देने से इस कोष की उपादेयता बढ गई है। प्रस्तुत कोष मे रचना क्रम से आये हुए शास्त्रोपयोगी शब्दो के प्रसङ्ग मे प्रमाणो के अतिरिक्त उनकी प्रायोगिक उपयोगिता को भी बतलाया गया है। उन पदार्थों के लक्षण, स्वरूप तथा चित्रादि देकर कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया है। इन सब विषयो का समावेश सात काण्डो मे किया गया है। राजा राधाकान्तदेव ने कोष के आरम्भ मे 'सुसम्बन्धन' (भूमिका) लिखते हुए प्रसङ्गवश यह सूचित किया है कि लौकिक कोषो का आदिम स्वरूप 'अग्निपुराण' मे वर्णित कोष-प्रकरण है। इस प्रकरण का क्रम इस प्रकार है—स्वर्गपातालादिवर्ग, अव्ययवर्ग, नानार्थवर्ग, भूवर्ग, पुर-वर्ग, अद्रि-वर्ग, वनौषधिवर्ग, सिंहादिवर्ग, मनुष्यवर्ग, ब्रह्मवर्ग, क्षत्रियवर्ग, वैश्यवर्ग तथा शूद्रवर्ग। इसके अतिरिक्त शेष भाग मे सामान्य नामलिङ्गो का वर्णन है। राधाकान्त देव के

अनुसार अमरकोषकार ने अधिकतर अग्निपुराणोक्तक्रम ही अपनाया है। थोडा-बहुत परिवर्तन कर 'अमरकोष' की पूर्ति की है। जटाधर ने भी अमरकोष का अनुसरण किया है। शब्दकल्पद्रुम मे २९ कोषो का उपयोग किया गया है।

शब्दकल्पद्रुम के ढग पर आगे चलकर दो कोष और बनाये गये। इनमे प्रथम शब्दार्थचिन्तामणि तो उतना विशाल नही है। उसमे केवल चार भाग हैं। उसके रचयिता सुखानन्दनाथ रहे। कोष की रचना १८६४-१८८५ तक हुई। दूसरा कोष वाचस्पत्यम् बडा विशाल है। सर्वप्रथम यह कलकत्ता से २० भागो मे प्रकाशित हुआ (१८७३-१८८४ ई०)। इसके सकलनकर्त्ता तारानाथ तर्कवाचस्पति थे। इसने वैदिक शब्दो का भी समावेश है, किन्तु उनकी व्युत्पत्ति अधिकतर कल्पनाप्रसूत है।

इसी समय राथ तथा बोथलिंक नामक जर्मन विद्वानो द्वारा महान् सस्कृत कोष का प्रणयन हुआ, जिसमे वैदिक शब्दो का भी पूर्ण समावेश है। इसकी रचना भाषावैज्ञानिक रीति पर की गई है। जर्मन विद्वानो ने अनेक पण्डितो की सहायता से शब्दो के प्रयोगस्थलो का भी निर्देश किया है। इसके साथ ही शब्दो के अर्थविकास को अङ्कित करने का भी श्लाघ्य प्रयास किया है। उस समय तक प्रकाशित तथा अप्रकाशित समस्त सस्कृत ग्रन्थो का विधिवत् अनुशीलन कर इस विशाल कोष की रचना की गई है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार डा० राथ ने वैदिक शब्दो का तथा डा० बोथलिंक ने वैदिकेतर शब्दो का विवरण भाषाशास्त्रीय पद्धति पर प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। डा० बोथलिंक ने इसका एक सक्षिप्त सस्करण भी जर्मन भाषा मे प्रकाशित किया था।

इसी क्रम मे डा० मोनियर विलियम्स ने एक सस्कृत-अग्रेजी कोष की रचना की। इनका परिश्रम श्लाघनीय है। शब्दो के चयन तथा अर्थनिर्देश मे बडा परिश्रम किया गया है। केवल कमी इस बात की है कि प्रयोगस्थलो का निर्देश नहीं किया गया है। इस कोष की रचना उपर्युक्त जर्मन कोषो के आधार पर हुई है। यह कोष समानार्थक शब्दो के सम्बन्ध मे बडा प्रामाणिक माना जाता है। इसका दूसरा स्वरूप अग्रेजी से सस्कृत मे भी है।

इस प्रकार के कोषो की रचना मे आगे चलकर भारतीय विद्वान् भी अग्रसर हुए, जिनमें वामन सदाशिव आप्टे का नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। इन्होने भी संस्कृत-अग्रेजी तथा अग्रेजी-सस्कृत कोषो की रचना की। यह कोष विद्वानो तथा छात्रो के लिये समान रूप से उपकारक है। इस कोष मे वर्णक्रमानुसार शब्दो का चयन किया गया है। प्रयोगस्थलो के निर्देश मे पुराण तथा काव्यादि के उद्धरणो का उपयोग किया गया है। शास्त्रीय परिभाषाओ, छन्दो, प्राचीन

भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का विवेचन भी यथास्थान किया गया है। हाल मे इसका नवीन संस्करण तीन खण्डो मे पुणे से प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त छात्रोपयोगी संस्कृत हिंदी लघु संस्करण भी प्रकाशित हुआ है। नवीन संस्करण मे शब्दो के चयन मे सम्पादकों ने वृद्धि की है।

शब्दपरायण की प्रक्रिया को अभिनव रूप देने वालों में महामहोपाध्याय पण्डित रामावतार शर्मा प्रमुख रहे हैं। उन्होंने एक विशाल कोष की रचना की। इस कोष का नाम है—वाङ्मयार्णव। शर्माजी (१८७७–१९२९ ई०) ने इस कोश का प्रारम्भ १९११ ई० में किया। जीवन भर वे इसमे परिवर्तन परिवर्धन करते रहे। आचार्य बलदेव उपाध्यायजी के अनुसार यह कोष नामलिङ्गानुशासन की परम्परा का सार्वभौम ग्रन्थ है। यह नानार्थक कोष है। इसम शब्दो का चयन वैज्ञानिक वर्णक्रमानुसार किया गया है[1]। वैदिक तथा लौकिक दोनो प्रकार के शब्दों का इसमें समावेश है। इस कोष मे प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति के साथ उसके प्रयोगस्थलों का भी समुचित निर्देश किया गया है। इसमे २०,००० शब्द उपन्यस्त हैं। साथ ही इस कोष की रचना पद्यमयी है तथा ६७९९ अनुष्टुपों मे समाप्त हुआ है। ग्रन्थ के आरम्भ मे १६ पद्यों का उपक्रम है एवम् अन्त मे ६ श्लोकों म समापन किया गया है। ग्रन्थकार के निधन के ३८ वर्षों के सुदीर्घ काल के पश्चात् सन् १९६७ ई० मे ज्ञानमण्डल प्रकाशन द्वारा यह प्रकाशित किया गया है।

वर्तमान काल की कोष निर्माण प्रवृत्ति

जर्मन संस्कृत कोष के प्रकाशन के लगभग एक शतक के बाद नवीन वैदिक कोष की आवश्यकता प्रतीत होने पर होशियारपुरस्थ विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान से अनेक विद्वानों के सहयोग से एक बृहद् वैदिक कोष का प्रकाशन हुआ है। इस कोष ने वैदिक संहिताओं के सम्बन्ध मे ऋचाओं के सन्दर्भ की समस्या हल कर दी है। यद्यपि इसे शब्दपारायण की दृष्टि से कोष के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है तथापि इसमे वैदिक शब्दों की सूची विद्यमान होने से वैदिक मूल-शब्दों का परिचय सुलभ हो जाता है। इसके १६ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके

---

१ वर्णानुक्रमाद् यत्नैर्लौकिकैर्वैदिकैरुभयोरपि ।
शब्दैर्बद्धो मयार्थनिर्देशेन सुकृतो महान् ॥
विशेषतश्च सुवैदग्धभूनीनां प्रदेशैर्न ।
सोपयुक्तोदाहृतिभिष्टिप्पणे समलंकृत ॥
सचित्र प्रचुरार्वाच्यवैज्ञानिकपदोच्चय ।
परिशिष्टैश्च बहुभि कोश एष परिष्कृत ॥
(उपक्रम श्लोक ७ ८,९)

अतिरिक्त "संस्कृत का बृहत्तम कोष" प्रकाशन करने की योजना डेक्कन कालेज, पुणे के शोध-विभाग के निदेशक सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० एस० एम० कात्रे ने भी प्रस्तुत की है। उनके साथ अनेक विज्ञ सहयोगी भी इस कार्य मे सलग्न हैं। अब तक इस कोश के ३ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके समग्र भाग प्रकाशित होने पर कोश-साहित्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जायगा। इसकी विशेषता यह है कि शब्दो का अर्थ देने मे भाषा-वैज्ञानिक पद्धति का आश्रय लिया जा रहा है तथा यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अधिकाधिक प्रचलित शब्दो का विधिवत् समाकलन हो जाय।

शब्दराशि को समाकलित करने मे विद्वानो की प्रवृत्ति आज भी देखी जाती है। इस प्रवृत्ति मे शब्दो का प्रयोग एव प्रचलन ही मुख्य कारण है। शब्दो के प्रचलन एवं प्रयोग होने मे देश-काल की परिस्थिति मुख्य रूप से साधक होती है। अतः कोष-रचना की प्रक्रिया बराबर चलती रहती है। इसके फलस्वरूप वाराणसी से श्रीगोपालचन्द्र वेदान्तशास्त्री ने भी बृहत् सस्कृतकोष के प्रकाशन की योजना बनाई है। उसका एक खण्ड प्रकाशित हुआ है। इसके सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर हिन्दी जगत् को संस्कृत-वाङ्मय मे अवगाहन करने के लिए अच्छा अवसर मिलेगा। वर्तमान समय के कोषकारो मे सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० सूर्यकान्त का योगदान भी प्रशसनीय है। उन्होंने सस्कृत हिन्दी-अंग्रेजी कोश की रचना की है। इसके पूर्व चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा का संस्कृतशब्दार्थकौस्तुभ (सस्कृत-हिन्दी) का अच्छा प्रचार हुआ है। इन्होंने कोष लिखकर अनेक विद्वानो को कोष-रचना करने के लिए प्रेरित किया है।

विविध कोश

(क) इस प्रसङ्ग मे सस्कृत के समानान्तर पालि-प्राकृत कोशो पर भी विचार करना आवश्यक है। रचना-क्रम मे पालि-कोश अधिकतर वैदिक निघण्टुओ के समान परिलक्षित होते है। ये कोश श्लोकबद्ध नही हैं। पालिकोशो में सर्वप्रसिद्ध कोष महाव्युत्पत्तिकोश है, जो २८४ प्रकरणो मे विभक्त है। इसमे लगभग ९०० शब्द संकलित है, जिनमे समानार्थक शब्दो के अतिरिक्त धातुरूप भी सगृहीत हैं। इसके अतिरिक्त पालिकोशो मे मोगलान की अभिधानप्पदीपिका नामक कोश अत्यधिक लोकप्रिय है। यह बारहवी शती की रचना है तथा अमरकोष की शैली मे लिखा गया है।

प्राकृत कोषो मे सबसे प्राचीन कोष पाियअ-लच्छिनाममाला है। इसके रचयिता धनपाल हैं। इसे ग्रन्थकार ने ९७२ ई० मे लिखा था। इसमे २७९ गाथायें हैं। हेमचन्द्र ने इस कोष का उपयोग अपने देशी नाममाला मे किया है।

हेमचन्द्र का देशीनाममाला प्राकृत कोश बडा सुन्दर तथा रोचक है। इसमें आठ अध्याय (वर्ग) है। इन अध्यायो मे शब्दो का सग्रह आदिम अक्षर को अभिलक्षित कर किया गया है। पर्यायवाची शब्द के अनन्तर उसी अक्षर से आरम्भ होने वाले नानार्थ शब्द भी रखे गए है। इस ग्रन्थ मे तद्भव शब्दो की प्रधानता होने से प्राकृत शब्दो के ज्ञान मे बडी सहायता मिलती है। इस कोष के अनुशीलन से उस युग (१२वी शती) के रीति रिवाजो का भी पता चलता है।

इस बीच दो प्राकृत कोशो का प्रकाशन बडा उपयोगी सिद्ध हुआ है। ये दो कोश हैं—(१) अभिधान राजेन्द्र-कोश तथा (२) प्राकृत-शब्दमहार्णव। इनमें से प्रथम ग्रन्थ तो जैनधर्म का विश्वकोष ही है, जिसमें जैनधर्म, जैन दर्शन तथा साहित्य के विषयो को अभिलक्षित कर प्राचीन ग्रन्थो के उद्धरणो के साथ बडा साङ्गोपाङ्ग विवेचन है। यह ग्रन्थ विशालकाय है, सात खण्डो मे विभक्त है। इसकी पृष्ठ सख्या १०,००० है। प्राकृतशब्दमहार्णव इसकी अपेक्षा लघुकाय है। इसका आयाम लगभग १५०० पृष्ठो मे सीमित है। यह नवीन शैली का कोश है। इसमे प्रयोगस्थलो का निर्देश बडी सुन्दरता के साथ किया गया है।

(ख) मुगलकाल मे फारसी का प्राधान्य होने के कारण फारसी-सस्कृत कोषो की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसके फलस्वरूप अकबर बादशाह के आदेश से विहारी कृष्णदास मिश्र ने पारसीकप्रकाश ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ मे दो भाग हैं—कोश तथा व्याकरण। २६९ अनुष्टुप् श्लोको मे ग्यारह प्रकरणो का समावेश किया गया है। प्रकरणो का शीर्षक अधिकतर अमरकोष के समान है। इसमे फारसी शब्दो के सस्कृत पर्याय दिये गए हैं। इसी प्रकार का दूसरा ग्रन्थ वेदाङ्गराय द्वारा विरचित पारसी प्रकाश (१६४७ ई०) है। इसमे फारसी तथा अरबी के शब्दो का सस्कृत मे अर्थ दिया गया है। तीसरा ग्रन्थ पारसी-विनोद भी इसी समय लिखा गया। इसके रचयिता व्रजभूषण थे। महाकवि क्षेमेन्द्र का लोकप्रकाश भी इस दृष्टि से उपयोगी है। इसमे भी फारसी के बहुत शब्दो का प्रयोग हुआ है। इस ग्रन्थ मे शाहजहाँ का भी उल्लेख होने से यह विदित होता है कि इसमे कुछ अश सत्रहवी शती मे जोड दिया गया हो।

विशिष्ट-कोष

सस्कृत वाड्मय ने विशिष्ट विषयो को अभिलक्षित कर भी विद्वानो ने अनेक कोष ग्रन्थ बनाये। सगीत में सगीतराज नामक विशालकाय ग्रन्थ का एक भाग कोष के रूप मे प्रख्यात है। उस अश को नृत्यरत्नकोष कहा गया है। इसके लेखक महाराणा कुम्भकर्ण हैं। किसी अज्ञात लेखक ने वस्तुरत्नकोश की रचना भी

विभक्त है। प्रथम भाग सूत्रात्मक है तथा दूसरा सूत्रों तथा तत्सम्बन्धी विवरणों से युक्त है। यह ग्रन्थ सम्भवत. १०००—१४०० ई० के मध्य लिखा गया था।

इस प्रसङ्ग मे वैद्यक-कोशों का उल्लेख करना अत्यावश्यक है। इन कोशों की भी निघण्टु संज्ञा है। इनमें प्रमुख हैं—"(क) धन्वन्तरिनिघण्टु। यह नव खण्डों में विभक्त है। क्षीरस्वामी के अनुसार यह अमरकोष से प्राचीन है। अवान्तर निघण्टुओं में (ख) माधवकर की रत्नमाला (नवी शती) तथा हरिचरण सेन का (ग) पर्यायमुक्तावली ग्रन्थ सुविदित हैं। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त (घ) हेमचन्द्र का निघण्टुशेष, (ङ) मदनपाल का मदनपालनिघण्टु (१३७४ ई०) (च) केशव का सिद्धमन्त्र (१२५० ई० के लगभग), (छ) केशवदेव का पथ्यापथ्यबोधक निघण्टु एव (ज) नरहरि का राजनिघण्टु भी वैद्यक निघण्टुओं में मान्य है। इन सबमें राजनिघण्टु सबसे बड़ा है। इसके लेखक नरहरि नामक वैद्य हैं (१३८० ई० के आसपास)। इन सबके अतिरिक्त नानार्थ-औषधकोशों में (झ) शिवकोश (१६७७ ई०) बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसके रचयिता शिवदत्त मिश्र थे। ग्रन्थकार ने इसकी व्याख्या भी स्वयं लिखी है। यह नानार्थक ओषधि-कोष है। इसमें ऐसे ओषधि-वाचक शब्द सकलित किये गए हैं, जिनके अनेक अर्थ उपलब्ध होते हैं।

इन पृष्ठों में वर्णित कोशग्रन्थों के अतिरिक्त अनेक कोशग्रन्थ हस्तलिखित रूप में हैं तथा अनेक कोश केवल उद्धरणों के रूप में ही ज्ञात हैं। ऐसे कोश-कारों में अजयपाल (धरणीकोश के कर्ता), रन्तिदेव, रभस, आदि अनेक विद्वान् प्रसिद्ध हैं।

अधिकतर कोशों में संज्ञाशब्दों का ही बाहुल्य है। कतिपय कोश क्रिया के अर्थ का निरूपण करने के लिए भी लिखे गए हैं। ऐसे क्रियाकोशों में दो कोश विख्यात हैं—भट्टमल्ल (१२ वीं शति) की आख्यातचन्द्रिका तथा हलायुध का कविरहस्य। इस प्रकार के अन्य ग्रन्थों में ये भी प्रसिद्ध हैं—विद्यानन्द का क्रिया-कलाप, वीरपाण्ड्य की क्रियापदार्थदीपिका, रामचन्द्र का क्रियाकोश, गुणरत्नसूरि का क्रिया-रत्नसमुच्चय तथा दशबल का धातुरूप भेद। इन ग्रन्थों का उल्लेख 'आख्यातचन्द्रिका' की भूमिका में किया गया है। इसी प्रकार उणादि कोष भी रचा गया है। अब तो कोष-ग्रन्थों की व्यापकता इतनी बढ़ गई है कि ग्रन्थविशेष में प्रयुक्त शब्दों के सम्बन्ध में भी कोषग्रन्थों की रचना होने लगी है। कादम्बरी आदि प्रसिद्ध ग्रन्थों के कोष तैयार होने लगे हैं। इसके साथ ही प्रत्येक शास्त्र के पारिभाषिक-कोष एवं शास्त्रीय-कोषों की भी अब बाढ़-सी आ गई है। सार्वजनिक लोकोपयोगी विधि एवं व्यवहार-कोषों की भी रचना हो गई है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसको अभिलक्षित कर कोष-रचना न हुई हो। रामायण-

कोष, महाभारतकोष, पुराणकोष, व्याकरण, साहित्य, धर्मशास्त्र, मीमांसा, न्याय, योग, तन्त्र, सांख्य, वेदान्त, अर्थशास्त्र आदि सभी विषयों के कोष अब उपलब्ध हो चुके है। जो विषय अछूते रह गए हैं उन विषयों पर भी कोशग्रन्थों की रचना शीघ्र हो जायगी। उपनिषदों के आधार पर जैकब का उपनिषद्-वाक्यकोष बहुत पहले ही बन चुका था (१८९१ ई०)।

कोषविद्या के इस संक्षिप्त विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्कृत तथा प्राकृत के विद्वानों ने अपनी शब्दनिधि को सुरक्षित रखने तथा प्रचलित करने के लिये कोषग्रन्थों की रचना कर जो प्रयास किये है वे सर्वथा श्लाघनीय हैं। विश्व में कोषग्रन्थों का इतना विस्तृत एवं प्राचीन परिचय चीनीभाषा को छोड़ कर फिर संस्कृत में ही विद्यमान है। इस धरोहर को सुरक्षित रखना प्रत्येक संस्कृतज्ञ का पवित्र कर्तव्य है।

—गोपालदत्त पाण्डेय



॥ श्रीः ॥

आदर्श-
हिन्दी-संस्कृत-कोशः

अ

अ, देवनागरीवर्णमालाया प्रथम स्वरवर्ण, अकार ।

अ-, (= नञ्), अव्य० (स) तत्सादृश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्पता । अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः । उदाहरणानि—(सादृश्ये) अब्राह्मण = ब्राह्मणसदृश, (अभावे) अभोजनम् = भोजनाभाव, (अन्यत्वे) घटोऽघट = घटभिन्न, (अल्पत्वे) अनुदरी कन्या = कृशोदरी, (अप्राशस्त्ये) अधन धर्मधनम् = अप्रशस्तधनम्, (विरोधे) अधर्म परापकार = धर्मविरोधी ।

अक, स पु (स) चिह्न अभिज्ञानं, लक्षणम् २ संख्याचिह्नम् (१, २, ३ आदि) ३ लेख ४ भाग्यम् ५ रूपकभाग ६ क्रोडम् ७ शरीरम् ।

—गणित, स पु (स न) गणितभेद, अङ्कविद्या ।

—गत, वि, गृहीत, निरुद्ध ।

—पाली, स स्त्री, परिचारिका ।

—शायिनी, स स्त्री, पत्नी, जाया ।

—देना, भरना वा लगाना, मु, आलिङ्ग् (भ्वा, प से), आश्लिष् (दि, प अ) ।

अकन, स पु (स न) चिह्न-लक्षण,-दानम् २ लेखनम्, ३ गणनम् ।

अंकित, वि (स) चिह्नित, लाञ्छित, २ लिखित ।

अकुर, स पु (स) अङ्कुर, प्ररोह, उद्भिद् (पु) ।

अंकुरित, वि (स) स्फुटित, साङ्कुर, उद्भिन्न ।

अकुश, स पु (स) सृ(श्र)णि (स्त्री), अङ्कुश ।

अँकोर, (अँकवार), स पु (स अङ्क) क्रोड -ट-डा, उत्सङ्ग २. उत्कोच, उपायनम् ।

अँखुआ, स. पु, दे 'अकुर' ।

अग, स. पुं (स न) शरीर, देह, काय, २. अवयव, प्रतीक, अङ्गक, अपघनः ३. अश, भाग ४. वेदाङ्गशास्त्राणि [= शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्दस् (न.) ।

—ज, स. पु (स) पुत्र ।

—जा, ▪ स्त्री (स) पुत्री, तनया ।

—खिचना, स पु, आक्षेपक (रोगभेद) ।

—फड़कना, स पु, ताण्डव-नर्तन,-रोग २ अंगस्फुरण (शकुनभेद) ।

—रखा, स पु (स अगरक्षक >) अगरक्षणी ।
—राग, स पु (स) गात्ररञ्जन, विलेपनम् ।
अँगरेज, स पु (पुर्त इगलेज) आग्लदेशीय ।
अँगरेजी, स स्त्री (हि अँगरेज) आग्लभाषा ।
अगार (-रा,) स पु (स) अगार र, दग्धकाष्ठखण्ड अलात, उल्मूकम्, निर्धूमाग्नि ।
अँगिया, स स्त्री (स अगिका) कञ्चुलिका, कञ्चुली, कचूलम्, अगिका, चोलिका, कु (कू) र्पास सक ।
अगी, वि (स गिन्) शरीरिन्, देहिन् २ अवयविन् ३ प्रधान, मुख्य ४ दे 'अँगिया' ।
अगीकार, स पु (स) अगीकरण, स्वीकार, प्रतिग्रह, प्रतिपत्ति (स्त्री) आदानम् ।
—करना, क्रि, स अगी स्वी, कृ (त उ अ), आ दा (जु आ अ), प्रतिपद् (दि आ अ) प्रतिपद् (तु प से) ।
अगीकृत, वि (स) स्वीकृत उररी, कृत, आ सउप, हृत, उपगत ।
अगीठी, स स्त्री (हि अगीठा) अगार, धानिका शकटी, हसनी, हसन्ती ।
अगीय, वि (स) अगदेशीय २ शारीरक, कायिक ।
अगुल, स पु (स) अष्टयवपरिमाणम् ।
अगुली, स स्त्री (स) अगुलि (स्त्री), अगुरी रि (स्त्री), करशाखा ।
—काटना, मु, विस्मि (भ्वा आ अ) चकित (वि) + भू ।
—चटकाना, मु अगुला, मोटन० स्फोटनम् ।
अगुश्ताना, स पु (फा) अगुलित्राणम्, अङ्गुष्ठत्राणम् ।
अगुष्ठ, स पु (स,) वृद्धाङ्गुलि (स्त्री) ।
अगूठा, स पु (स अगुष्ठ) वृद्धाङ्गुलि (स्त्री) ।
—चूमना, मु, चाटुभिः तुष् (प्रे), अधीन (वि)+भू ।
—दिखाना, मु, सावमानप्रत्यादिश् (तु प अ) ।
अँगूठी, स स्त्री (हि अँगूठा) अङ्गुरी (री) य, अङ्गुरी (ली) यक, मुद्रा, ऊर्मिका ।
अगूर, स पु (फा), (बेल) द्राक्षा, स्वादी, मधुरसा, गोस्तनानी २ (फल) द्राक्षाफलम् आदि ।
अगूरी, वि (फा) द्राक्षामय २ द्राक्षावर्ण ।
अगोछा, (पु स हि अग+पोंछना) अगप्रोञ्छनम् ।

अघ्रि स पु (स) चरण, पाद २ वृक्षमूलम् ३ छन्दश्चरणम् ।
अचल स [illegible] दे आँचल ।
अजन, स पु (स न) कज्जल, नेत्ररञ्जनम् ।
अजर पजर, स पु (स पजर रम्) (पसली) पर्शुका, पार्श्व, पार्श्वास्थि (न) २ कङ्काल-लम्, पञ्जर रम् ।
अजली, स स्त्री (स) अञ्जलि, कर-हस्त, सम्पुट ।
अजस, वि (स) सरल अवक्र २ निष्कपट निर्व्याज । (अजसी स्त्री०) ।
अजाम, स पु (फा) परिणाम, फलम्, अन्त, पार ।
अजित, वि (स) सांजन, कज्जलकलित ।
अजीर, स पु (फा) (वृक्ष) अजीर, उदुम्बर जातीया वृक्ष २ (फल) अजीरम् ।
अजुमन, स स्त्री (फा) सभा, परिषद् (स्त्री) ।
अझा, स पु (स अनध्याय) अनध्यायदिवस २ अवकाश, क्षण, कार्यनिवृत्ति (स्त्री) ।
अटिया, स स्त्री (हि अटी) गुच्छ, सघात, लघुभार ।
अँटियाना, क्रि स (हि अटी) छलेन आत्मसात् कृ । स पु, छलेन अपहार, प्रसनम् ।
अटी, स स्त्री (स अष्टि >) ग्रन्थि, शाटि काया कटिलग्न कुञ्चन सीमन्त वा २ अङ्गुलीनां मध्यस्थमन्तरम् ।
अड, स पु (स पु न) मुष्क, वृषण, शुक्र ग्रन्थि २ दे 'अडा' ३ विश्वम्, लोक मण्डल म् ४ वीर्य, शुक्रम् ।
—कोश, स, पु (स) दे. 'अड' ।
—कोश बढ़ना, स पु, मुष्क वृषण कोश, वृद्धि (स्त्री) दोष ।
—ज, स पु, खगसर्पमीनादयो जीवा ।
अट बड, स पु (अनु०) प्रलाप, अनर्थक वचनम् २ वि, व्यर्थ, अव्यवस्थित ।
अडा, स पु (स अण्डम्) पोत द्रा, डिम्ब, पेशी शि (स्त्री) ।
—देना, क्रि स, अण्डानि प्रसू (अ आ अ) ।
—सेना, क्रि स, अण्डेभ्य प्रजोत्पत्तिं कृ ।
अडाकार, [illegible] (स) अण्डाकृति ।
अडी, स स्त्री (स एरण्ड) रुचक, चित्रक, गद २ एरण्डफलस्य बीजम् ३ वस्त्रभेद ।

—विश्वास, स पु (स) निर्विवेक तर्कशून्य, विश्वास प्रत्यय विश्रम्भ ।
अंधा, स पु (स अन्ध) अनयन, अनेत्र, नेत्रहीनजीव । वि०, विवेक विचार, शून्य रहित ।
—धुंध, स स्त्री, घोरान्धकार, अन्धतमस (न) (२) कुप्रबन्ध, अन्याय । वि० विचार -याय, शून्य रहित । क्रि वि, निरहाइ, अन्धवत्, रभसा, साहसेन, असमीक्ष्य ।
अंधेर, स पुं (स अन्धकार >) अन्याय, उपद्रव, अत्याचार, कुव्यवस्था ।
—खाता, स पु अव्यवस्था, अन्यथाचार, कुव्यवस्था ।
—करना, मु, अन्याय्य आचर् (भ्वा प से) ।
अँधेरा, स पु (स अन्धकार) ध्वान्त, तमिस्र, तिमिर, तमस् (न), वि निरालोक, निष्प्रभ तमो, वृत मय ।
घना-, अन्धतमसम् ।
थोड़ा-, अवतमसम् ।
व्यापक-, सन्तमसम् ।
अँधेरे घर का उजाला, मु, एकल सुत, एकाकिपुत्र ।
अँधेरी, स स्त्री (हिं अँधेरा) प्रवस्पन, वात्या, झ झावात २ कृष्णा रात्री, निशन्धा रजनी ।
—कोठरी, स स्त्री, निरालोक कोष्ठ, २ गर्भ ३ रहस्यम् ।
अंध्र, स पु (स बहु०) अन्ध्रराज्यम् २ अ भजना ३ वृक्ष-विशेष ।
अंब, स पु (स आम्रम्) आम्र रसाल, फलम् २ रसाल, आम्र (वृक्ष) ।
अंबक, स पु (स न) नेत्रम्, नयनम् (सं पु) पितृ, जनक ।
अंबर, स पु (स न) आकाश इ, गगनम् । २ वस्त्र, वसनम् । ३ मेघ, जलद ४ सुगन्धिद्रव्यभेद ।
अंबरीष स पुं (स) अयोध्याया वैष्णवनृप विशेष २ विष्णु ३ शिव ।
अंबा, स स्त्री (स) मातृ (स्त्री), जननी २ पार्वती, दुर्गा ।
अंबार, स पु (फा) निकर, राशि, संभार ।
अंबारी, स स्त्री (अ अमारी) परितो (छो) म, प्रवेणी, सज्जना, वस्पना ।
अंबालिका, सं स्त्री (सं) मातृ (स्त्री), जननी २ सन्नारी ३ विचित्रवीर्यपत्नी ।
अंबिका, स स्त्री (स) मातृ (स्त्री) २ पार्वती ३ विचित्रवीर्यजाया ।
अंबु, स पु (स न) जल, पानीयम् ।
—ज, स पु (स न) कमलम् ।
—द, स पु (स) मेघ, जलद ।
—धि,-निधि,-पति,-राशि, स पु (स) सागर ।
अंभ, स पु [स अम्भस (न)] जल, वारि (न) ।
अंभोज, स पु (स न) कमलम् ।
अंभोद, स पु (स) मेघ, अम्बुद ।
अंभोधि, स पु (स) अम्भो, निधि, राशि, समुद्र ।
अंश, स पु (स) वि, भाग, खण्ड इ, शकल लं, प्र, देश अवयव, अङ्गम् २ वृत्तस्य षष्टयधिकत्रिशततमो भाग ३ स्कन्ध ४ भाज्यांक ५ किरण ।
अक्ष- स पु (स) (-Degree of latitude)
देशान्तर, स पु (स) रेखांश (= Degree of longitude)
अंशु, स पु (स) किरण, रश्मि ।
—माली, स पु (स लिन्) अंशुमत्, सूर्य ।
अकंटक, वि (स) निष्कण्टक, कण्टक-शून्य, शून्य २ निर्विघ्न, निरन्तराय ३ शत्रुशून्य ।
अकड़, स स्त्री (स आ × कृ=गर्व करना) गर्व, दर्प २ धृष्टता ३ आग्रह ।
—बाज़, वि (हिं × फा) दृप्त, गर्वित २ धृष्ट ३ आग्रहिन् ।
—बाज़ी, स स्त्री, अभिमानित्व, दृप्तत्वम् ।
अकड़, स स्त्री (स आ+कड्=कड़ा होना) प्रस (सा) र, आतान, आतति (स्त्री) २ दृढता, अनम्यता ३ वक्रता ।
—बाई, स स्त्री, गात्रोपघात, आक्षेप, उद्वेष्टनम् ।
अकड़ना, क्रि अ (स आकडनम्) गर्वं, आ कट् (दोनों भ्वा प से) ।
अकड़ना, क्रि अ (स आकडुनम्) आकड्, (भ्वा प से), दृढी-वक्री, भू ।
अकथ, वि (स अकथ्य) अकथनीय, वर्णनातीत, अनाख्येय ।
अकबक, स स्त्री (अनु०) प्रलाप २, चिन्ता ३ चैतन्यम् । वि चकित, अवाक् ।
अकरणीय, वि (स) अविधेय, अकार्य ।

अकर्म, स पु (स अकर्मन् न) कुकार्यम् २ पापम्।
अकर्मक, वि (स) कर्मरहित (क्रिया, धातु आदि)।
अक्सर, क्रि वि (अ)प्राय, प्रायश, बहुश, सामान्यत (सब अव्य०)।
अक्सीर, स स्त्री (अ) रसायन, इदृशो रसभेदो यो धातून् सुवर्णीकरोति २ सञ्जीव नौषधम्। वि, अमोघ, सिद्धिकर।
अकस्मात्, क्रि वि (स सहसा, एकपदे, अकाण्डे, अतर्कित, दैवात् हठात् (सब अव्य०)।
अकाज, स पु (स अकार्यम्) कार्यहानि (स्त्री), विघ्न, अन्तराय २ कुकार्यम्। क्रि वि, व्यर्थ, निष्प्रयोजनम्।
अकाट्य, वि (स अ + हिं काटना) अखण्ड नीय, अप्रत्याख्येय, अबाध्य।
अकाय वि (स) विदेह, अशरीरिन्।
अकारण, वि (स) निष्कारण, अहेतुक, निर्निमित्त २ स्वयम्भु। क्रि वि, निष्प्रयो जन निष्कारणम्।
अकारथ, वि (स अकार्यार्थ) निष्फल, मोघ। क्रि वि, वृथा, व्यर्थम्।
अकारान्त, वि (स) अदन्त, अवर्णान्त।
अकारादि, अवर्णा वि (स) अवर्ण,-आरम्भ उपक्रम।
अकार्य, वि (स) अकर्तव्य, अकरणीय २ अनुचित। स पु (स न) कु-निन्दित,-कार्य कर्मन् (न)।
अकाल, स पु (स)दुर्भिक्ष, दुष्काल, नीवाक, आहाराभाव २ कुसमय।
—मृत्यु, स स्त्री (स पु) असामयिको मृत्यु।
अकालिक, वि (स) अनवसर, अप्राप्तकाल, असमयोचित।
अकाली, स पु (म लिन्) गुरुनानकमतानु यायिभेद।
अकासी, दे० 'चील'।
अकिंचन, वि (स) निर्धन, निःस्व, दरिद्र, दुर्गत।
अकिंचनता, स स्त्री (स) दारिद्र्य, निर्धनता, दीनता।
अकिंचित्कर, वि (स) अशक्त, असमर्थ, अक्षम।
अकिल, स स्त्री दे 'अक्ल।'
अकिल्बिष, वि (सं) निष्पाप, अनघ, निर्दोष।
अकीदत, स स्त्री (अ) श्रद्धा, निष्ठा।
—मन्द, वि, श्रद्धालु, सनिष्ठ, निष्ठावत्।
अकीदा, स पु (अ) विश्वास, मतम्।
अकीर्ति, स स्त्री (स) अ-अप, यशस् (न), वाच्यता।
अकुलाना, क्रि अ (स आकुल>) त्वर् (भ्वा आ से), आकुली २ आकुली भू, उद्विज् (तु आ अ)।
अकूत, वि (स अ+हिं कूतना) अमित, अगणित।
अकृतज्ञ, वि (स) कृतघ्न (कृतघ्नी स्त्री), अकृतवेदिन्।
अकृत्रिम, वि (स) नैसर्गिक, स्वाभाविक २ यथार्थ, वास्तविक ३ हार्दिक।
अकेला, वि (स एकल) एकाकिन् (नी स्त्री), असहाय २ अनुपम, अप्रतिम।
अकेले, क्रि वि (हिं अकेला) असहायमेव, -मात्र।
अकोतर सौ, वि (स एकोत्तरशतम्) एकाधि कशतम्।
अक्खड़, वि (स अक्षर>) उग्र, उद्धत, उच्छृङ्खल २ कलह कलि, प्रिय, युयुत्सु ३ नि र्भय ४ अशिष्ट ५ जड ६ स्पष्टवादिन्।
—पन, स पु, उग्रता, कलहप्रियता, निर्भयता, असभ्यता जाड्यम्, स्पष्टवादिता।
अक्टोबर, स पु (अ) आंग्लवर्षस्य दशमो मास।
अक्ल, स स्त्री (अ) बुद्धि मति (स्त्री), प्रज्ञा।
—मन्द, वि, बुद्धिमत्, प्राज्ञ।
—मन्दी, स स्त्री, बुद्धिमत्ता, प्राज्ञता।
अक्ष, स पु (स) देवन, पाशक (हिं पाँसा) २ अक्षरेखा ३ द्यूत पाशक क्रीडा ४ रुद्राक्ष ५ व्यवहार (हिं मुकदमा) ६ आत्मन् ७ इन्द्रियम् ८ नयनम्।
—क्रीडा, स स्त्री (स) द्यूत पाशक,-क्रीडा।
—माला, स स्त्री (स) जपमाला, अक्षसूत्रम्।
अक्षत, वि (स) अव्रण, अखण्डित, समग्र। सं पु (सं नित्य बहु) देवपूजार्थं व्रीहय- (बहु०) २- यवा।

—योनि, वि स्त्री (स) पुरुषसंसर्गरहिता (कन्या नारी वा), ब्रह्मचारिणी ।
—वीर्य, वि पु (स) स्त्रीसंसर्गरहित (पुरुष), ब्रह्मचारिन् ।
अक्षम, वि (स) असहिष्णु, क्षमाशून्य, अतितिक्षु २ अशक्त, असमर्थ ।
अक्षमता, स स्त्री (स) असहिष्णुता २ अशक्तत्वम् ।
अक्षय, वि (स) नित्य, अक्षय्य अव्यय, अक्षर, अनश्वर २ कल्पान्तस्थायिन् ।
अक्षय्य, वि (स) दे 'अक्षय' ।
अक्षर, वि (स) अच्युत स्थिर, नित्य । स पु, अकारादयो वर्णा, ध्वनिचिह्नानि ।
—न्यास, स पु (स) लेख, लेखम् ।
—शः, क्रि वि (स) प्रत्यक्षर, सामस्त्येन ।
अक्षि, स स्त्री (स न) नेत्र, नयनं, चक्षुस् (न), लोचनम् ।
—गोलक, स पु (स) अक्षिमण्डलम् ।
—तारा, स स्त्री (स) कनीनिका, तारका ।
—पटल, स पु (स न) नेत्रनयन, च्छद (हिं पलक) ।
अक्षुण, वि (स अक्षुण्ण) अभग्न, समग्र, अच्छिन्न ।
अक्षौहिणि, स स्त्री (स अक्षौहिणी) सख्या विशेषयुक्ता सेना, सम्पूर्णा चतुरंगिणी सेना (=१०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़, २१८७० रथ, २१८७० गज) ।
अक्स, स पु (अ) प्रति, छाया प्रति, बिम्बरूपम् ।
अक्सर, दे 'अकसर' ।
अखंड, वि (स) सम्पूर्ण, समग्र २ सतत, निरन्तर ३ निर्विघ्न, निर्बाध ।
अखंडनीय, वि (स) अभेद्य, अविभाज्य २ पुष्ट, दृढ ।
अखंडित, वि (स) दे अखंड' ।
अखड़ैत, सं पु (हिं अखाड़ा) मल्ल, बाहुयोध ।
अखबार, स पु (अ) समाचार वृत्तमगाद, पत्रम् ।
—नवीस, स पु सम्पादक, समाचार वृत्त—लेखक ।
अखरना, क्रि अ (सं अ + हिं खरा) अप्रीति जन् (प्रे), अपरज् (प्रे), न रुच् (भ्वा आ से) ।
अखरावट (-टी), स स्त्री (स अक्षर >) वर्णमाला २ वर्णमालाक्रमानुसारी पद्यसमूह ।
अखरोट, स पु (स अक्षोट), (वृक्ष) अक्षोट २ (फल) अक्षोटम् ।
अखलाक़, स पु (अ) चरित्रम्, सदाचार । सभ्यता, शिष्टता ।
अखाड़ा, स पु (स अक्षवाट) मल्लभूमि नियुद्धम् (स्त्री) २ साधुमण्डलम् ३ साधु निवास ४ गायकसमुदाय ५ रंगभूमि, नृत्य शाला ६ अंगनम्, आजरम् ।
अखाद्य, वि (स) अभक्ष्य, अनशनार्ह ।
अखिल, वि (स) समग्र, समस्त, निखिल ।
अखिलात्मा, स पु (स—त्मन्) परमात्मन्, विश्वात्मन् ।
अख्खाह, अव्य (अनु) अहह ।
अगड़धत्ता, वि (स अग्रोद्धत >) दीर्घ, आयत २ श्रेष्ठ, उच्च ।
अगड़बगड़, वि (अनु) अक्रम असगत । स पु, प्रलाप २ व्यर्थं कार्यम् ।
अगणनीय, वि (स) सामान्य, साधारण २ असख्य, गणनातीत ।
अगण्य, वि (स) तुच्छ, प्राकृत २ असख्येय, सख्यातीत ।
अगतिक, वि (स) अशरण, निराश्रय, अनाथ ।
अगद, वि (स) नीरोग निरामय, स्वस्थ । स पु (स) औषध, भेषज, भैषज्यम् ।
अगदकार, स पु (स) वैद्य, जीवद ।
अगम वि (स अगम्य) दुर्गम, गहन २ विकट, कठिन ३ दुर्लभ, दुष्प्राप ४ अज्ञेय, दुर्बोध ५ अगाध, गम्भीर ।
अगम्य, वि (स) दे 'अगम ।
अगर, स पु (स अगुरु न) वशिक, राजार्ह, कृमिजम् ।—बत्ती, स स्त्री, (स अगुरुवर्ती) ।
अगर, अव्य (फा) यदि, चेत् ।
—चे, अव्य (फा) यद्यपि, अपि ।
अगल बगल, क्रि वि (फा) इतस्ततः, उभयतः, उभयत्र ।
अगला, वि (स अग्र >) पूर्व, पौरस्त्य २ पूर्ववर्तिन्, प्रथम ३ प्राचीन, पुराण ४ आगामिन् ५ अपर, द्वितीय । सं पु, प्रधान, २ प्राज्ञ ३ पूर्वज ।

अगवाई, स स्त्री (स अग्रे+गमन>) प्रत्युद्गमन, प्रत्युद्गमनम्। स पु, नेतृ, अग्रणी (पु)।
अगवाडा, म पु (स अग्रवा° >) गृहद्वारस्य पुरोवर्तिनी भूमि (स्त्री) २ गृहस्याग्रिमो भाग।
अगवानी, स स्त्री दे 'अगवाई'।
अगस्त, स पु (अ आगस्ट) आंग्लवर्षस्याष्टमो मास।
अगस्त्य, म पु (म) ऋषिविशेष २ नक्षत्रविशेष ३ वृक्षभेद।
अगहन, म पु (स अग्रहायन -ण) मार्गशीर्ष।
अगाऊ, म पु (म अग्र>) अग्रिम, पूर्वदत्त मूल्यांश। वि आग्रम अग्रथ।
अगाडी, क्रि वि (स अग्रे) पुरत, पुरस्तात् २ अनागतवेला, भाव्यत्काल। स स्त्री, अश्वस्याग्रिमा रज्जु (स्त्री)।
अगिनबोट, म पु (स अग्नि+अ) अग्निपोत, वाष्पीयनौ (स्त्री)।
अगुआ, स पु (स अग्र>) अग्रसर, अग्रणी (पु) २ मुरव, नायक, ३ पथप्रदर्शक ४ विवाहसम्पादक।
अगुण, वि (म) निर्गुण मूर्ख। स पु दोष, दूषणम्।
—ज्ञ, वि (म) अनभिज्ञ, अपरीक्षक।
अगुरु, वि (स) लघु, २ अशिष्ट। स पु (स) लघुहस्व, वर्ण ३ दे 'अगर' म पु।
अगोचर, वि (स) इन्द्रियातीत, अतीन्द्रिय, अस्पष्ट, अव्यक्त, अप्रत्यक्ष।
अग्नि, स स्त्री (म पु) अनल, पावक ज्वलन, वह्नि°, दहन, हुताशन, वैश्वानर, कृशानु°, हुतवह, हव्यवाहन, चित्रभानु, विभावसु, शुक, शुचि।
—कर्म, स पु (स न) देवयज्ञ, अग्निहोत्रम्। २ शवदाह°, अन्त्येष्टिसंस्कार, अग्निक्रिया।
—क्रीडा, स स्त्री (म) दे 'आतशबाजी'।
—ज्वाला, म स्त्री (स) अग्नि, जिह्वा शिखा, अर्चिस् (स्त्री, न), कील -ला।
—दाह, स पु (स) प्लोष, ताप, ज्वलन २ शवदाह°।
—परीक्षा, स स्त्री (स) तप्तदिव्यम् २ अग्नौ सुवर्णादिपरीक्षणम्।
—बाण, स पु (स) अनलदहन, शर° सायक।
—विद्या, स स्त्री (स) अग्निहोत्रविधि।
—शुद्धि°, स स्त्री (स) अग्निना शोधनम् २ दे 'अग्निपरीक्षा'।
—संस्कार, स पु (स) दाहकर्मन् (न), शवदाह २ अग्निना शोधनम्।
—सखा, स पु (स खि) वायु°, पवन।
—सेवन, स पु (स न) वह्निनिषेवणम्।
—होत्र, स पु (स न) यज्ञभेद, होम, हवनम्।
—होत्री, स पु (स त्रिन्) आहिताग्नि, याजक, याज्ञिक।
अग्न्यस्त्र, म पु (स न) आग्नेयास्त्रम्।
अग्न्याधान, म पु (स न) विधिपूर्वमग्निस्थापन २ अग्निहोत्रम्।
अग्र, स पु (स न) अग्रभाग, शिखर, प्रान्त, मुख, अणि, (पु, स्त्री)। वि अग्रसर, उत्तम, प्रधान।
—गण्य, वि (स) ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, मान्य।
—गामी, स पु (म मिन्) पुरोग, नायक।
—ज, स प (स) अग्रजन्मन्, ज्यायान् भ्रातृ (पु)।
—णी, स पु (स णी, पु) नायक, नेतृ, पुरोग।
—भाग, स पु (स) पूर्व पुरो-भाग खण्ड।
—यायी, म पु (स यिन्) अग्रसर, पुरोगामिन्।
—वर्ती, वि (स वर्तिन्) अग्रस्थ, पुरःस्थित।
—सर, स पु (स) नायक, अग्रणी (पु), नेतृ।
—अग्रह, स पु (म) अग्रहण्म्, त्याग।
—अग्रानीक, स पु (स न) सेना, मुख, अग्रम।
—अग्राह्य, वि (स)
अग्रामीण, नागरिक २ वन्य, अगृह्य।
अग्राशन, म पु (स न) देवादिदेयो मत्स्याद्यंश।
अग्रासन, स पु (स न) समान—श्रेष्ठ—आसन स्थानम्।
अग्राह्य, वि (स) त्याज्य, परिहार्य, हेय।
अग्रिम, वि (स) भाविन्, आगामिन् २ प्रधान, अग्रथ।

अघ, स पु (स न) पाप, पातक, दुरितम्, एनस् (न) २ दुःखम् ३ व्यसनम्।

अघट, वि (स अ+घट्) अशक्य, असम्भव २ दुर्घट, दुष्कर।

अघट, वि (हिं घटना) अक्षय, अक्षय्य, अव्यय।

अघटित, वि (स) अभूत २ असम्भव ३ कठिन ४ अयोग्य।

अघमर्षण, वि (स) अघ पाप, हारिन् नाशक। स पु, ऋग्वेदस्य पापनाशक सूक्तविशेष।

अघारि, वि (स) पापनाशक २ अघदैत्यस्य नाशक कृष्णो विष्णुर्वा।

अघोर, वि (स) सौम्य शामन, प्रियदर्शन।

—नाथ, स पु (स) शिव, भूतनाथ।

—पथ, स पु (स -पथ) शैवानां सम्प्रदायविशेष।

अघोरी, स पु (स अघोर >) अघोरमता नुयायिन् २ सर्वभक्षक ३ दुर्दशन।

अघोष, वि (स) नीरव, निश्शब्द २ अल्पध्वनियुत ३ गोपहीन। स पु, वर्णमालाया 'क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स' वर्णाः।

अचभा, स पु (स असम्भव >) आश्चर्य, विस्मय २ चमत्कार, कौतुकम् ३ अद्भुत वस्तु (न)।

अचभित, वि (हि अचम्भा) चकित, विस्मित।

अचकन, स पु (स कञ्चुक)।

अचक्षु, वि (स क्षुम्) अध २ निरिन्द्रिय ३ अतीन्द्रिय।

अचर, वि (स) स्थावर, अचल।

अचरज, स पु (स आश्चर्यम्) विस्मय, चमत्कार।

अचल, वि (स) निश्चल, स्थिर २ चिर स्थायिन्, नित्य। स पु (स) पवन, गिरि २ कील, शङ्कु ३ सप्तसंख्या ४ ब्रह्मन् (न) ५ शिव ६ आत्मन्।

अचला, वि (स) स्थिरा, गतिरहिता। स स्त्री (सं) पृथिवी।

अचानक, क्रि वि (सं अज्ञानक>) अकस्मात्, सहसा, एकपदे, अकाण्डे। (*सब अव्य*)

अचार, स पु (फा) सन्धित, सन्धान, तेमन, *निष्ठानम्*।

अचिंतनीय, वि (स) अतर्क्य, अचिन्त्य, अज्ञेय।

अचिंतित, वि (स) अतर्कित, अविचारित, आकस्मिक २ निश्चिन्त।

अचिंत्य, वि (स) अज्ञेय, अतर्क्य, कल्पनातीत २ अतुल ३ आशातीत ४ आकस्मिक।

—आत्मा, स पु *(स —त्मन्) परमात्मन् अतर्क्यस्वरूप*।

अचिकित्स्य, वि (स) अनुपचार, असाध्य *(रोगादि)*

अचिति, स स्त्री (स) अज्ञानम्, अबोध।

अचिर, अव्य, (स) शीघ्र सपदि (अव्य)' २ वर्तमाने ३ किंचित् पूर्वम्। वि क्षणिक, नश्वर २ वर्तमान,—विषयक सम्बन्धिन्।

अचीती, वि (स अचिन्तित) आकस्मिक २ अचिन्त्य।

अचूक, वि (स [illegible] + हि चूकना) अमोघ, सफल। क्रि वि, अवश्य ध्रुवम्।

अचेत, वि (स -तस) अचेतन, निष्प्राण, *निर्जीव* २ *व्याकुल* ३ अनवहित ४ मूढ।

अचेतन, वि (स) विचेतन, जड, निष्प्राण, स्थावर २ निःसंज्ञ, मूर्च्छित। स पु जडद्रव्यम्।

अचैतन्य, वि (स) अचेतन, स्थावर। स पु (स न) निर्जीवता, निष्प्राणता।

अच्छा, वि (स अच्छ=स्वच्छ>) उत्तम, भद्र, श्रेष्ठ २ निर्मल।

अच्छाई, स स्त्री (हिं अच्छा) भद्रता, सौजन्यम्।

अच्छिन्न, वि ([illegible]) निश्छिद्र २ पूर्ण, अखण्डित।

अच्छेद्य, वि (स)अभेद्य अखण्ड्य, अविनाशिन्।

अच्युत, वि (स) अपतित २ दृढ, नित्य ३ अमोघ।

अछूता, वि (सं अछुप्त) अस्पृष्ट २ नव, पवित्र।

अजट, स पु (अं एजेंट) प्रति निधि -हस्त।

अजसी, स स्त्री (अं एजेंसी) प्रतिनिधि,—कार्यालय निवास।

अज, वि (स) स्वयम्भू, जन्महीन। स पु ब्रह्मन् (पु) २ विष्णु ३ शिव ४ कामदेव ५ छाग ६ मेष।

अजगर, स पु शयु, वाहस।

अजगरी, स स्त्री (स अजगर >) आलस्यम्।

अज़दहा, स पु (फा) दे 'अजगर'।

अजनबी, वि (फा) आगन्तुक, विदेशीय अपरिचित।

अजन्मा, वि (स -मन्) अज स्वयम्भू, अनादि।

अजब, वि (अ) अद्भुत, विचित्र विलक्षण।

अज़मत, स स्त्री (अ) प्रताप, प्रभुत्व, महत्त्वम्।

अजय्य, वि (स) अधृष्य, अदम्य, अजेय।

अजर, वि (स) जराहीन, वार्धक्यरहित।

अजवायन, स स्त्री (स यवानिका) ब्रह्मदर्भा।

अजस्र, क्रि वि (स न) सदा, अनवरत, नित्यम्।

अज़हद, क्रि वि (फा) असीम, अत्यधिक।

अजा, वि स्त्री (स) जन्महीना। स स्त्री छागी २ प्रकृति (स्त्री)।

अजात, वि (स) असृष्ट, अनुत्पन्न, जन्महीन।

—शत्रु, वि (स) शत्रुहीन, सर्वमित्रम्। स पु युधिष्ठिर २ शिव ३ मगधराजविशेष।

अजान, वि (स अज्ञान) मूर्ख, मन्द २ अज्ञात, अपरिचित। स पु, अज्ञानिता, अज्ञता।

अज़ाब, स पु (अ) यातना, पीडा।

अजामिल, स पु (स) कश्चित् पापी ब्राह्मणो यो मृत्युकाले नारायणनामकस्य निजसुतस्य नामोच्चार्य मुक्तिं लेभे।

अजायब, स पु (अ 'अजब' का बहु०) अद्भुतवस्तूनि, विलक्षणा व्यापारा।

—घर, स पु अद्भुतालय, संग्रहालय।

अजित, वि (स) अपराजित, स्वतन्त्र। स पु, विष्णु २ शिव ३ बुद्ध।

—इन्द्रिय, वि (स) इन्द्रियलोलुप, विषयासक्त।

अजिन, स पु (स न) मृग-,चर्मन् (न), दृति (पु स्त्री), कृत्ति (स्त्री)।

अजिर, स पु (स न) अङ्गन, प्राङ्गण, चत्वरम्।

अजी, अव्य (सं अयि !) भो, आर्य्य, भद्र (सखे)।

अज़ीज़, वि (अ) प्रिय, तात, वत्स।

अजीत, वि (स अजित) अजेय, अजय्य, अधृष्य।

अजीब, वि (अ) अद्भुत, विलक्षण, विचित्र।

अजीर्ण, स पु (स न) अजीर्णि (स्त्री), मन्दाग्नि, अन्नविकार, अपाक २ आधिक्यम्। वि नव, नूतन।

अजीवन, वि (स) आजीविका-उपजीविका,-रहित-हीन स पु (स न) मृत्यु।

अजूबा, स पु (अ) अद्भुत वस्तु (न), विचित्रवार्त्ता।

अजेय, वि (स) दे 'अजय्य'।

अजैकपाद, स पु (स) रुद्रविशेष २ विष्णु।

अजैव, वि (स) जीवन,-हीन-विरहित (इन-आर्गेनिक)

अज्ञ, वि (स) मूर्ख, मूढ, अज्ञानिन्।

अज्ञता, स स्त्री (स) जाड्य, मौर्ख्य, मूढता।

अज्ञात, वि (स) अविदित, अबुद्ध, अपरिचित।

—वास, स पु (स) गुप्तवास।

अज्ञान, स पु (सं न) अविद्या, जाड्य, मूर्खता।

अज्ञानता, स स्त्री (स) जडता, अबोधता।

अज्ञानी, वि (स -निन्) मूढ, मूर्ख, अबोध।

अज्ञेय, वि (स) अतर्क्य, बोधागम्य, ज्ञानातीत।

अटंबर, स पु (स अट्ट+फा अंबार) राशि (पु), संभार, निचय।

अटक, स स्त्री (हि अटकना) विघ्न, बाधा २ सङ्कोच ३ सिन्धुनदी ४ नगरविशेष ५ हानि (स्त्री)।

अटकना क्रि अ (हि अ + टिकना) १ प्र उप,-राम् (दि प से), विरम् (भ्वा प अ) निवृत् (भ्वा आ से), स्था (भ्वा प अ), निश्चल (वि) + भू। २ पादे पत् (भ्वा प से), जालबद्ध (वि) + भू, निरत आसक्त (वि) + भू ३ स्निह् (दि प से), अनुरञ्ज् (कर्म०), भाव-अभिलाष + बन्ध् (क्र् प अ) ४ विवद् (भ्वा आ से), विप्रलप (भ्वा प से), वैरायते (ना धा)।

अटकल, स स्त्री (स अट + कल >) अनुमान, वि,तर्क, ऊहा, अनुमिति (स्त्री)।

—पच्चू, स पु कपोलकल्पना, अनुमानम्। वि काल्पनिक।

—बाज़, वि, अनुमातृ।

अटकाना, क्रि स (हिं अटकना) अवस्था (प्र), रुध् (रु उ अ) २ पाशेन बन्ध (क्र प ■) जाले धृ (चु) ३ स्नेह पाशे बध।

अटकाव, स पु (हिं अटकना) विघ्न, बाध। २ विलम्ब।

अटन, स पु (स न) भ्रमण, चलन, विचरणम्।

अटपट, वि (अनु०) कठिन, कुटिल, विकट २ जटिल, गूढ ३ असम्बद्ध, असंगत ४ प्रस्खलत्-विचलत् (शतृ)।

अटपटाना, क्रि अ (हिं अटपट) आकुली भू, मुह (दि प से) २ विकल्प विलम्ब्-याशङ्क् (भ्वा आ से)।

अटपटी, स स्त्री (हिं अटपट) सम्भ्रम, व्यामोह विलम्ब, वितर्क।

अटम्बर, स पु (स आडम्बर >) अहंकार, गर्व।

अटल, वि (स अ + हिं टलना) अचल, स्थिर, नित्य, ध्रुव, अवश्यभाविन्।

अटलस, म पु (अ) नानाचित्र-देशालेख्य, प्रत्य।

अटारी, स स्त्री (स अट्टाली) अट्ट द्रु, अट्टाल शिरा, शिरोगेह, चन्द्रशाला तल्पी।

अटाला, स पु (स अट्टाल >) राशि, निचय २ परिच्छद, यात्रासामग्री ३ मासिक सौनिक, वसति (स्त्री)।

अटूट, वि (स अ + हिं टूटना) अच्छेद्य, अखण्डनीय २ अजेय, अगम्य ३ निरन्तर ४ अत्यधिक।

अटेरन, स पु (स अति + इरण >) सूत्रवल यनिर्माणार्थं लघुकाष्ठयन्त्रम्, आवापनम्।

अटेरना, क्रि स (हिं अटेरन) आवापनेन पञ्जी रच (चु)।

अट्टहास, स पु (स) अति प्रउच्चै, हास।

अट्टी, स स्त्री (हिं अटना) पञ्जी।

अट्टालिका, स स्त्री, (स) दे 'अटारी'।

अट्ठा, स पु (स अष्टन् >) अष्टचिह्नयुक्त क्रीडापत्रम्।

अट्ठाईस, वि (स अष्टाविंशति स्त्री)।

—वाँ (-वीं), अष्टाविंश (-शी), अष्टाविंशति तम (-मी)।

अट्ठानवे, वि (स अष्ट (1) नवति स्त्री)।

—वाँ, (वीं) वि, अष्ट (1) नवतितम (मी), अष्ट (1) नवत (-ती)।

अट्ठावन, वि (स अष्ट (1) पञ्चाशत् स्त्री)।

—वाँ, (-वीं), वि अष्ट (1) पञ्चाशत्तम (-मी), अष्ट (1) पञ्चाश (-शी)।

अट्ठासी, वि (स अष्टाशीति स्त्री)।

अट्ठासिवाँ (-वीं), अष्टाशीतितम (-मी), अष्टाशीत (-ती)।

अठकौसल, स पु (स अष्टन् + अ कौसिल) सभा, संसद् परिषद् (स्त्री), गोष्ठी ■ (स्त्री) २ मन्त्रणा-णम्।

अठखेली, स स्त्री (स अष्टकेलि >) चपलता, चाञ्चल्य, कल्लोल। २ मत्तगति (स्त्री), मत्तोद्धतगमनम्।

अठन्नी, स स्त्री (स अष्टन् + आण >) अष्टाणी, अष्टाणकी।

अठपहला, वि (स अष्टन् + फा पहलू) अष्ट, कोण पार्श्व।

अठपाव, स पु दे 'कदम'।

अठवाँसा, वि (स अष्टमास) आष्टमासिक (शिशु) २ सीमन्तोन्नयनसंस्कार।

अठवारा, स पु (हिं आठ + फ़ा बार) अष्टवार, अष्टाह, दिनाष्टकम्। २ सप्ताह, दिनसप्तकम्।

अठहत्तर, वि (स अष्ट (1) सप्तति स्त्री)।

—वाँ (-वीं), वि, अष्ट (1) सप्ततितम (-मी), अष्ट (1) सप्तत (-ती)।

अठारह, वि (स अष्टादश)। -वाँ (-वीं) अष्टादश (-शी)।

अड़गा, स पु (हिं अड़ाना + टाँग) विघ्न, हस्तक्षेप, बाध -धा।

अड़चन, स स्त्री (हिं अड़ना + चलना) विघ्न, कठिनता, आपत्ति (स्त्री)।

अड़तालीस, वि (स अष्ट (1) चत्वारिंशत् स्त्री)

—वाँ (-वीं) वि, अष्ट (1) चत्वारिंशत्तम (-मी), अष्ट (1) चत्वारिंश (-शी)।

अड़तीस, वि (स अष्टात्रिंशत् स्त्री)।

—वाँ (वीं), वि, अष्टात्रिंशत्तम (-मी), अष्टात्रिंश (-शी)।

अड़ना, क्रि अ (सं अड् = रोकना >) दे 'अटकना २ आग्रह न मुच् (तु उ अ) निर्बन्धेन बध् (चु)।

अडवंग, वि (हिं अडना+म वक्र) वक्र, विषम, नतोन्नत २ विकट, दुर्गम ३ विलक्षण।
अडवोकेट, म पु (अ एड्वोकेट) पक्षसमर्थक, दे 'वकील'।
अडसठ, वि (म अष्ट (।) षष्टि स्त्री)।
—वाँ (-वा), वि अष्ट (।) षष्टितम (-मी), अष्ट (।) षष्ट (-ष्टी)।
अडाना, क्रि स, दे 'अटकाना'।
अडिग, वि (म अ+हिं डिगना) निश्चल, स्थिर दृढ।
अडियल, वि (हिं अडना) उद्दण्ड दुर्दम, दुर्विनीत २ अलस, मन्दातु ३ अविनेय स्वैरन् दुराग्रह।
अडी, म स्त्री (हिं अडना) दुराग्रह, हठ, निर्बन्ध, प्रतिनिबन्ध।
अडीठ, वि (म अदृष्ट) अदृश्य, लोचनागोचर २ गुप्त, अन्तर्हित।
अडोल, वि (म अ+हिं डोलना) अचल, निष्कम्प, स्थिर।
अडोम पडोस, म पु (हिं पडोस) मन्निधि, उपकण्ठ, सामीप्य प्रतिवेश।
अडोसी पडोसी, म पु (हिं, अडास पडोस) प्रतिवेश वेश्य -वासिन् वासिन्, निकट-समीप, स्थ वासिन्।
अड्डा, म पु (म अट्टा >) निवेशस्थान, स्थान २ आस्थान (-नी) ३ संकेत-गृह स्थल, समागम सकेत स्थानम् ४ चतुष्पादम्।
अड्रेस, स, पु (अ एड्रेस) अभिनन्दनपत्रम् २ पत्रमज्ञा, निवासमकेत।
अणि, स स्त्री (म) अणी, धारा, अग्र, कोटि (स्त्री), सीमा, प्रान्त।
अणिमा, स स्त्री (म अणिमन् पु) अणुता, सूक्ष्मता २ योगस्याष्टसिद्धिषु प्रथमा, यया यो गिनोऽदृश्या भवन्ति।
अणिमादिक, म स्त्री (=) योगस्याष्टसिद्धय, (= अणिमा महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्वम्, वशित्वम्)।
अणु, स पु (म) लव, लेश, षष्टिपरमाणु मात्र कण, धूलिकण। वि., अतिसूक्ष्म क्षुद्र।
—वीक्षण, म पु (म न) सूक्ष्मदर्शकयन्त्रम्। २ छिद्रान्वेषणम्।
अत, क्रि वि (म) अस्मात् कारणात्, अनेन कारणेन हेतुना, इति हेतो।

अत एव, क्रि वि (म) अस्मादेव कारणात्, अनेनैव हेतुना।
अतर, म पु (अ इत्र) निर्यास, पुष्पसार।
—दान, म पु (अ+फा) पुष्पसारपात्रम्।
अतरसों, क्रि वि (म इतर+श्व >) आगामी गतो वा तृतीयो दिवस।
अतर्कित, वि (म) अविचारित, आकस्मिक (-की स्त्री), अचिन्तित।
अतर्क्य, वि (म) अचिन्त्य, अचिन्तनीय, अविवेच्य, अनिर्वचनीय।
अतल, वि (म) तलहीन, अतिगम्भीर। म पु (म न) सप्तसु पातालेषु प्रथमम्।
—स्पर्शी, वि अतिगम्भीर, अतलस्पृश्।
अतलस, म स्त्री (अ) अतिचिक्कण कौशेय पटभेद।
अतलान्तक, म पु (अ एटलांटिक) अन्धमहा सागर समुद्रविशेष।
अता, म पु (फा) दान, त्याग विसर्जनम्।
—करना, —फरमाना, मु, दे० 'दना'।
अति, वि (म अव्य) अत्यन्त अत्यर्थ अधिक। म स्त्री., आधिक्य, अतिशय, सीमाल्लङ्घनम्।
अतिकथा, म स्त्री (म) अतिरंजित,—कथा——आख्यायिका—वृत्तान्त। २ निरर्थक-व्यर्थ,—आलाप।
अतिकाल, म पु (म) विलम्ब, कालातिपात।
अतिक्रमण, म पु (म न) नियम मर्यादा सीमा-उल्लंघन अतिक्रम।
अतिथि, स पु (म) अभ्यागत, प्राघुण, प्राघुण (णि) क, गृहागत २ सन्यासिन्।
—पूजा, म स्त्री, आतिथ्य, अतिथि-सत्कार सेवा क्रिया।
—यज्ञ, म पु (म) अतिथिपूजा।
अतिरिक्त, क्रि वि (म) विना, ऋते अति रिच्य, विहाय (सब अव्य)। वि (स) अवशिष्ट २ भिन्न, पृथक्।
अतिवेला, म स्त्री (स) दे 'अतिकाल'।
अतिशय, वि (स) बहु अधिक।
अतिसार, म पु (म) प्रवाहिका।
अतीन्द्रिय, वि (म) अगोचर, इन्द्रियातीत, अव्यक्त, परोक्ष।
अतीत, वि (म) गत, व्यतीत २ विरक्त, निर्लेप ३ मृत, दिवंगत।

अतीव, वि (स अव्य) अधिक, बहु, प्रभूत।
अतुल, वि (स) अतुल्य, अतुलित, अनुपम २ अमेय, अत्यधिक।
अत्तार, स पु (अ) गन्धोपजीविन्, गान्धिक, गन्ध, विक्रयिन् वणिज् २ औषधविक्रेता ३ मेव नरार।
अत्यन्त, वि (स) अत्यर्थ, अमित अत्यधिक।
अत्याचार, स पु (स) निठुर कूर निर्दय, धर्मन् (न) कार्यम् २ पाप, दुरितम् ३ पाप पाखण्ड, आडम्बर।
अत्याचारी, वि (स-रिन्) पाप, दुराचारिन् २ निठुर, क्रूरकर्मन् ३ पाखण्डिन्, धर्मध्वज।
अत्युक्ति, स स्त्री (स) वाग्प्रपञ्च, सत्याति क्रम २ अलङ्कारभेद (सा)।
अथ, अव्य (स) मङ्गलसूचकशब्द २ आरम्भ ३ अनन्तरम्। —च, अव्य (स) अन्यच्च, अपर च, अपि च, किंच।
अथर्व, स पु (स अथर्वन्) चतुर्थवेद।
अथर्वणि, स पु (स) अथर्ववेदज्ञ २ पुरोहित।
अथवा अव्य (स) वा, किं वा यद् वा।
अथाह वि (स अ + हिं थाह) अगाध अतल स्पर्श, अतिल (न) गंभीर २ अत्यधिक अतीव ३ गूढ, दुर्बोध।
अदन्त, वि (स) दशन दन्त, विहीन रहित २ अजात दन्त-दशन।
अदद, स पु (अ) संख्या २ संख्यावाचिक संकेतो वा
अदना, वि (अ) तुच्छ, क्षुद्र २ साधारण प्राकृत।
अदब, स पु (अ) शिष्टाचार, शिष्टता विनय।
अदम्य, वि (स) प्रचण्ड अजेय, दुर्दम।
अदरक, स पु (स आर्द्रक) शृङ्गवेरम्।
अदल, स पु (अ) न्याय, धर्म नय।
अदलबदल, स पु (अ) परिवर्त नर्तन वृत्ति (स्त्री), विपर्यय।
अदा, वि (अ) दत्त, शोधित। स स्त्री, लीला विभ्रम २ प्रकार, विधि।
अदालत, स स्त्री (अ) न्यायालय, अधि करण, व्यवहारमण्डप, न्याय धर्म, सभा।
अदालती, वि (अ अदालत) आधिकरणिक, न्यायालयसम्बन्धिन्।
अदावत, स स्त्री (अ) शत्रुता, वैरम्।
अदूरदर्शी, वि (स-र्शिन्) स्थूलबुद्धि अज्ञ।
अदृश्य, वि (स) परोक्ष, अगोचर, अलक्ष्य।
अदृष्ट, वि (स) अन्तर्हित, लुप्त, अलक्षित।
—पूर्व, वि अदृष्ट, अभूतपूर्व, विलक्षण।
अदेह, वि (स) अकाय, अशरीर। स पु, कामदेव, मदन।
अदोष, वि (स) निर्दोष, निष्पाप, निरपराध।
अद्भुत, वि (स) विस्मय आश्चर्य-जनक, अपूर्व, अलौकिक।
अद्यालय, स पु (स) मद्यालय।
अद्वितीय, वि (स) एकल, एकाकिन्, एक २ अनुपम, अतुल्य ३ प्रधान।
अद्वैत, वि (स) दे 'अद्वितीय' (१, २)।
—वाद, स (स) 'ब्रह्मैव सत्य अन्यद सब मिथ्या' इति सिद्धान्त।
अध, अव्य (स) नीचै, अधस्तात् (दोनों अव्य)।
—पतन, स पु (स न) नीचे पतन २ अवनति (स्त्री) ३ दुर्दशा, दुर्गति (स्त्री) ४ विनाश, क्षय।
अध, वि (स अर्द्ध) सामि (समास में ही)।
—कचरा, वि, अपरिपक्व, अपूर्ण २ अदक्ष, अकुशल।
—कपारी, स स्त्री, अर्द्धशिरोवेदना, अर्द्धाव भेदक।
—खिला, वि, अर्द्धविकसित, सामिविकच।
—खुला, वि, अर्द्धविवृत, अर्द्धापावृत २ अर्द्धो न्मीलित।
—पई, स स्त्री, अर्द्धपाद, पादार्द्धम्।
—मरा / —मुआ } मृत, प्राय-कल्प, अर्द्ध सामि, मृत।
—सेरा स पु, अर्द्धसेर, सेरार्द्धम्।
अधन, वि (स) निर्धन, दरिद्र।
अधन्नी, स स्त्री (स अर्द्धाणी) अर्द्धाणकी, अर्द्धाण-क।
अधन्य, वि (स) मन्दभाग्य, गर्ह्य।
अधम, वि (स) नीच, निकृष्ट २ पापिन्, दुष्ट।
—अधम, वि (स) पापिष्ठ, महानीच।
अधमर्ण, वि (स) ऋणिन्, धारक, ऋणग्रस्त।
अधमाग, (स पु (स न) पाद, पद, पदम्।
अधमा सं स्त्री (स) नायिका भेद २ ३ वर्ण शा-अन्त्यजा, नारी।

अधमाई, स स्त्री (स अधम>) नीचता, अधमता।
अधर, स पु (स) अधस्तन ओष्ठ (२) (ऊपर का) ओष्ठ, रद-रदन-दन्त-दशन च्छद।
—अधर, स पु (स) अधस्तन ओष्ठ।
—बिंब, स पु (स न) रक्तौष्ठ।
अधर, स पु (स अ+हिं धरना) आकाश ग अन्तरिक्षम्। वि हेय २ नीच।
अधर्म स पु (स) पाप, पातक अन्याय दुष्कर्मन् (न)।
अधर्मी, वि (स -मिन्) पाप पापिन् पातकिन्।
अधार्मिक, वि (स) दे 'अधर्मी'।
अधिक, वि (स) बहु प्रभूत २ अतिरिक्त शेष।—तर, क्रि वि., प्राय, प्रायश बहुश।
—ता, स स्त्री (स) बहुत्व आधिक्य बाहुल्यम्।
—मास, स पु (स) पुरुषोत्तम-मल-असंक्रान्त मास।
अधिकरण, स पु (स न) आधार, आश्रय २ कारकविशेष (व्या) ३ प्रकरण शीर्षकम्।
अधिकाश, स पु (स) अधिकभाग। वि बहु। क्रि वि प्राय, बहुश।
अधिकाधिक, वि (स) अधिकतम, भूयिष्ठ।
अधिकार, स पु (स) प्रभुत्व, स्वत्व, २ स्वामित्व, आधिपत्यम् ३ क्षमता, योग्यता ४ प्रकरण, शीर्षकम्।
अधिकारी, स पु (स रिन्) प्रभु, स्वामिन् २ स्वत्ववत् ३ योग्य, क्षम। (स्त्री अधिकारिणी, स)।
अधिकृत, वि (स) हस्तगत, उपलब्ध। स पु, अध्यक्ष, अधिकारिन्।
अधिकृति, स स्त्री (स) स्वत्वम्, अधिकार।
अधिक्रमण, स पु (स न) आरोहणम् २ आक्रमणम्।
अधिक्षिप्त, वि (स) तिरस्कृत, अपमानित २ क्षिप्त ३ प्रेषित।
अधित्यका, स स्त्री (स) पर्वतस्योर्ध्व भूमि (स्त्री)।
अधिदेव, स पु (स) इष्ट-कुल-देव।
अधिनायक, स पु (स) अधिकृत, अधिकारिन्, आधिकारिक, कार्यविशेष २ प्रभु, स्वामिन्।
अधिप, स पु (स) स्वामिन् २ अधिकारिन् ३ नृप।
अधिपति, स पु (स) दे 'अधिप'।
अधिवास, स पु (स) निवास, स्थान-स्थान २ परगृहेऽधिको वास।
अधिवेशन, स पु (स न) सभा, सगम, गोष्ठी, समागम।
अधिष्ठाता, स पु (स -तृ) अध्यक्ष निर्वाहक, प्रभु, व्यवस्थापक, अवेक्षक, प्रवर्तक चाल क अधिष्ठात।
अधीन, वि (स) आश्रित वशीभूत, आशानु वर्तिन् विवश, परवश।
अधीनता, स स्त्री (स) परवशता, परतन्त्रता।
अधीर, वि (स) धैर्यरहित उद्विग्न, व्याकुल, विह्वल चञ्चल ३ सतोषशून्य।
अधीश / अधीश्वर स पु (स) स्वामिन् २ नायक ३ नृप।
अधूरा, वि (हिं अध+पूरा) अपूर्ण, अर्द्ध, खण्डित, असमाप्त।
अधेड़, वि (हिं अध) गतयौवन, मध्यमवयस्क।
अधेला, स पु (हिं अध) अर्द्धपण।
अधोगति, स स्त्री (स) पतन, अवपात, विनिपात। - अवनति (स्त्री), क्षय, दुर्दशा।
अध्यक्ष, स पु (स) स्वामिन्, प्रभु २ नायक, अधिकारिन् ३ अधिष्ठातृ।
अध्ययन, स पु (स न) पठन पाठ, अधीति (स्त्री), वाचन, अभ्यास।
अध्ययनीय, वि (स) अध्येतव्य, पठितव्य।
अध्यर्द्ध, वि (स) सार्द्धक।
अध्यवसान, स पु (स न) निश्चय २ प्रयत्न ३ अध्यवसाय।
अध्यवसाय, स पु (स) सततोद्योग, निरन्तरप्रयत्न २ उत्साह ३ निश्चय।
अध्यवसायी, वि (स-यिन्) उद्योगिन्, उद्यमिन्, उत्साहिन्, उद्युक्त।
अध्यापक, स पु (स) शिक्षक, गुरु, उपदेष्टृ, शास्तृ। (स्त्री, अध्यापिका)।
अध्यापकी, स स्त्री (स अध्यापक>) शिक्षण, अध्यापन, पाठनम्, अध्यापक-व्यवसाय।
अध्यापन, स पु (स न) दे 'अध्यापकी'।

अध्याय, स पु (स) पाठ, सर्ग, परिच्छेद, ग्रन्थविभाग ।

अध्येतव्य, वि (स) पठनीय, पठितव्य, अध्ययनार्ह, पाठ्य, अध्येय ।

अध्येता, स पु (स अध्येतृ) पाठक, विद्यार्थिन् ।

अध्व, स पु (स ध्वन्) मार्ग, पथिन् ।

—ग, स पु (स) पान्थ, पथिक, यात्रिक ।

अध्वर, स पु (स) यज्ञ, याग, मख, सत्र क्रतु ।

अध्वर्यु, स पु (स) ऋत्विग्भेद, यज्ञे यजुर्वेद मन्त्रपाठी ब्राह्मण ।

अनग, वि (स) अकाय देहहीन । स पु काम, मदन ।

अनन्त, वि (स) अपार, अशेष, निरवधि २ सतत, अविरत, निरन्तर ३ नित्य, अनश्वर । स पु विष्णु २ शेषनाग ३ आकाश ४ बाहुभूषणभेद ।

अनन्तर, क्रि वि (स १ अव्य) पश्चात्, ऊपर पर (पञ्चमी के साथ, उ नन पर ह) २ सतत । वि, अव्यवहित, सन्निहित, आसन्न ।

अनगिनत, वि (स अगणित) असंख्य, संख्यातीत, बहु ।

अनग्नि, वि (स) अनग्निहोत्रिन् २ अधार्मिक ३ अग्निमान्द्यग्रस्त ४ अविवाहित ।

अनघ, वि (स) निष्पाप, निर्दोष २ शुद्ध, पवित्र । स पु (स न) पुण्य, सुकृतम् ।

अनचीता, वि (स • हिं अन+स चिन्तित) अचिन्तित, अनस्पित २ अनिष्ट, अवांछित ।

अनजान, वि (स अन्+हिं जानना) अज्ञ, अज्ञानिन्, मूर्ख २ अज्ञात, अबुद्ध ।

अनड्वान्, स पु (स अनडुह्) वृष वृषभ, बलद । (स्त्री० अनडुही, अनड्वाही = गौ)

अनदेखा, वि (■ अन्+हिं देखना) अदृष्ट, अनीक्षित ।

अनधिकार, स पु (स) अशक्ति (स्त्री), असामर्थ्यम् ।

अनधिकारी, वि (स रिन्) अधिकार प्रभुत्व,-रहित, अशक्त । स पु, अपात्रम् ।

अनध्याय, स पु (स) अवकाशदिनम् ।

अनन्नास, स पु (ब्राजीलियन, नानस) क्षुपभेद तत्फल च ।

अनन्य, वि (स) एकनिष्ठ २ अनुपम, अद्वितीय ।

—गति, वि (स) एक, आश्रित-गतिक निष्ठ ।

—चित्त, वि (सं) एकाग्र, एकाग्रचित्त, अनन्य,-वृत्ति मनस् ।

अनपढ, वि (स अन्+हिं पढना) निरक्षर, अनक्षर, विद्या ज्ञान, शून्य, अशिक्षित ।

अनबन, स स्त्री (स अन्+हिं बनना) विरोध, वैपरीत्य, विसंवाद, मतभेद ।

अनभिज्ञ, वि (स) अज्ञ, अबोध (अनभिज्ञा स्त्री) ।

अनभिज्ञता, स स्त्री (स) अज्ञता, मौर्ख्य, अपरिचय ।

अनमना, वि (स अन्यमनस्-स्क >) खिन्न, म्लान, विषण्ण, उद्विग्न, अवमन २ रुग्ण, रोगिन् ।

—पन, स पु, खिन्नता, म्लानता २ अन्य मनस्कता ।

अनमिल, वि (स अन् + हिं मिलना) असंगत, असंबद्ध २ भिन्न, अलग्न ।

अनमेल, वि (स अन् + मेल >) असम्बद्ध २ विशुद्ध ।

अनमोल, वि (स अन्+हिं मोल) अमूल्य, महार्घ, बहुमूल्य २ श्रेष्ठ, उत्तम ।

अनर्गल, वि (सं) निरंकुश, उच्छृङ्खल, उद्दाम २ विचार विवेक, शून्य ३ निरन्तर ।

अनर्घ, वि (स) दुष्क्रेय, बहुमूल्य २ सुख क्रेय, अल्पमूल्य ।

अनर्घ्य, वि (स) अपूज्य, अवन्द्य २ बहुमूल्य ।

अनर्जित, वि (स) अनुपार्जित, अश्रमेण प्राप्त २ अप्राप्त, अलब्ध ।

अनर्थ, स पु (स) विपरीत अयुक्त, अर्थ २ कार्यहानि (स्त्री), विकार, उपद्रव, अनिष्ट, आपद् (स्त्री) ३ अन्यायार्जित धनम् ।

अनर्थक, वि (स) निरर्थक, अर्थहीन २ मोघ, व्यर्थ ।

अनर्ह, वि (स) अपात्र, अनधिकारिन्, अयोग्य ।

अनल, स पु (स) दे 'अग्नि' ।

—चूर्ण, स पु (स न) आग्नेयचूर्णम् (= बारूद) ।

अनलस, वि (स) उद्यमिन्, उद्योगिन्, उद्युक्त ।

अनलहक, स पु (अ) अह ब्रह्मास्मि ।
अनल्प, वि (स) बहु, अधिक ।
अनवगाह, वि (स) अगाध, अनलस्पर्श ।
अनवद्य, वि (स) अनिन्द्य, अवाच्य ।
अनवधान, स पु (स न) प्रमाद, चित्तविक्षेप ।
अनवरत, क्रि वि (स न) निरन्तर, सतत सदा ।
अनवस्था, स स्त्री (स) अव्यवस्था २ व्याकुलता ३ दोषभेद (न्याय०) ।
अनशन, स पु (स न) उपवास, अन्नत्याग निराहारव्रतम् ।
अनश्वर, वि (स) नित्य अविनाशिन्
अनसुनी वि स्त्री (स अन्+हिं सुनना) अश्रुत अनाकर्णित ।
अनस्तित्व, स पु (स न) अभाव, अविद्यमानता ।
अनहद नाद, स पु (स अनाहतनाद) दिपितकर्णे योगिभि श्रूयमाण शब्दभेद (योग०)
अनहोनी, स स्त्री (स अन्+हिं होना) अलौकिकघटना, असम्भववार्ता ।
अनागत, वि (स) आगामिन्, भाविन् २ अनुपस्थित ३ अज्ञात ४ अन ५ अद्भुत ।
अनाचार, स पु (स) कदाचार, दुराचार २ कुप्रथा, कुरीति (स्त्री) ।
अनाचारी, वि (स रिन्) दुराचारिन्, भ्रष्ट ।
अनाज, स पु (स अन्नाद्यम्) अन्न, धान्य, शस्य, आहार ।
अनाड़ी, वि (स अनार्य>?) मूर्ख, अज्ञ २ नैपुण्यहीन ।
—पन, स पु, मूर्खता २ नैपुण्याभाव ।
अनाढ्य, वि (स) दरिद्र, निर्धन, अधन ।
अनातप, वि (स) आतपरहित, छायायुत २ शीतल ।
अनाथ, वि (स) नाथ प्रभु, हीन २ मातृपितृहीन ३ असहाय, निराश्रय ४ दीन, परवश ।
अनाथालय, स पु (स) अनाथाश्रम ।
अनादर, स पु (स) अवज्ञा, तिरस्कार, अवधीरणा, अवमान, मानभङ्ग ।
अनादि, वि (स) आदि-जन्म-आरम्भ, शून्य, (उ, ईश्वर, जीव, प्रकृतिश्च) ।
अनादित्व, स पु (स न) अनादिता, आरम्भशून्यता, नित्यत्वम् ।
अनादेय, वि (स) अग्राह्य, अग्रहणीय, अपरिग्राह्य ।
अनाप-शनाप, स पु (स अनाप्त> + अनु) प्रलाप, निस्सार निरर्थक वचनम् ।
अनामिका, स स्त्री (स) उपकनिष्ठिका, अनामन् (पु) ।
अनायास, क्रि वि (स न) परिश्रम विना, सहसा अकस्मात् ।
अनार, स पु (फा) (वृक्ष) कुचफल दन्तक, शुकवल्लभ, दाडि(लि)म -मा दाडक २ (फल) कुचफल दन्तबीज, दाडि (लि)मम् ४ (आतशबाजी का) अग्नि-क्रीडादाडिमम् ।
—दाना, स पु (फा) दाडिमबीजम् ।
अनार्य, स पु (स) दुष्ट, खल, क्षुद्राशय, अधम, जघन्य २ म्लेच्छ ।
अनावश्यक, वि (स) निष्प्रयोजन, अनपेक्षित २ असार, क्षुद्र, उपेक्षणीय ।
अनावृष्टि, स स्त्री (स) अ(ना)वर्षण । अवग्रह (ग्रा) ह, जलशोष, वृष्टिविघात ।
अनाहदवाणी, स स्त्री (स अनाहत >) आकाश-देव वाणी, गिरा-वाणी ।
अनाहार, स पु (स)भोजनत्याग (२) भोजनाभाव । २ अनशनव्रतिन् ।
अनाहूत, वि (स)अनिमन्त्रित, अनाकारित ।
अनित्य, वि (स) नश्वर, विनाशिन् २ भंगुर, अस्थायिन्, २ मिथ्या, असत्य ।
अनित्यता, स स्त्री (स) नश्वरता, भङ्गुरता, अस्थिरता ।
अनिमि(मे)ष, वि (स) निर्निमेष, स्थिरदृष्टि, निमेषरहित । क्रि वि, निर्निमेष, स्थिरदृष्ट्या । स पु (स) देव २ मत्स्य ।
अनियत, वि (स) अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, अनिर्धारित २ अस्थिर, अदृढ ३ अपरिमित ४ विशिष्ट ।
अनियतात्मा, वि (स-त्मन्) अजितेन्द्रिय, लोलचित्त ।
अनियम, स पु (सं) नियमाभाव, व्यतिक्रम ।

अनियमित, वि (स) व्यवस्थारहित, अव्यवस्थित, विधिविरुद्ध २ अनिश्चित, अनियत।

अनियारा, वि , दे 'पैना'।

अनिरुद्ध, वि (स) अरुद्ध २ निर्बाध ३ स्वतन्त्र।

अनिर्दिष्ट, वि (स) अकृतनिर्देश, असंकेतित २ अकथित, अनुक्त ३ अनादिष्ट, अनाज्ञापित।

अनिर्वचनीय, वि (स) अकथनीय, अवर्णनीय, अनिर्वाच्य।

अनिल, स पु (स) वायु, पवन , वात ।

अनिवार्य, वि (स) अवश्यभाविन् , अपरिहार्य, ध्रुव, परमावश्यक।

अनिश्चित, वि (स) अनियत, अनिर्धारित, अनिर्दिष्ट।

अनिष्ट वि (स) अनपेक्षित अवाञ्छित, अनभिलषित। स पु (स न) अमङ्गल, अहित, हानि (स्त्री)।

अनी, स स्त्री (स अणी लि) पूर्व-भाग, प्रान्त भाग ।

अनीक, स पु ([illegible] पु न) सेना सैन्य २ समूह ३ युद्धम्।

अनीकिनी, स स्त्री (स) सेना, सैन्य २ पूर्णसेनाया दशमो भाग ३ नलिनी, कमलिनी।

अनीति, स स्त्री (स) अन्याय, पक्षपात २ उपद्रव , उत्पात , ३ अत्याचार ।

अनु, उपसर्ग (स) सामीप्यमादृश्यादिद्योतक उपसर्ग ।

अनुकंपा, स स्त्री (स) दया, कृपा अनुग्रह २ सहानुभूति (स्त्री), समवेदना।

अनुकरण, स पु (स न) अनुकार , अनुकृति -अनुवृत्ति (स्त्री), अनुसरण २ विडम्बनम्।

अनुकरणीय, वि (स) अनुकरणार्ह, अनुसरणीय।

अनुकूल, वि (सं) हितकर, उपकारक २ सहाय ३ प्रसन्न।

अनुकूलता, स स्त्री (स) अनुग्रह, कृपा २ सहायता ३ प्रसाद।

अनुकृत, वि (सं) अनुसृत २ विडम्बित।

अनुकृति, स स्त्री (स) दे 'अनुकरण'।

अनुक्त, वि (स) अकथित, अनुदित, अभाषित।

अनुक्रम, स पु (स) अन्वय, आनुपूर्व्य, परंपरा।

अनुक्रमण, स पु (स न) अनु, गमन सरण चलनम्।

अनुक्रमणिका, स स्त्री (स) अनु क्रम , परंपरा, सूची चि (स्त्री) २ ग्रन्थभेद ।

अनुक्रोश, स पु (स) अनुकम्पा दया।

अनुक्षण, क्रि वि (स न) प्रतिक्षण २ सततम्।

अनुगमन, स पु (स न) अनु -सरण गति (स्त्री) २ अनुकरण ३ सम्भोग सहवास ।

अनुगामी, वि (स मिन्) अनु -यायिन् वर्तिन् २ अनु कर्तृ कारिन् ३ आज्ञापालक ४ सम्भागिन्।

अनुगृहीत, वि (स) उपकृत २ कृतज्ञ।

अनुग्रह, स पु (स) कृपा, दया, अनुकम्पा।

अनुग्राहक, वि (सं) कृपालु, दयालु, सहायक, उपकारक।

अनुचर, स पु (स) सेवक , किङ्कर , दास २ वयस्य , सहर ।

अनुचित, वि (स) अयुक्त अनर्ह, अयोग्य।

अनुज, वि (स) पश्चादुत्पन्न। स पु (स) कनीयान् भ्रातृ २ स्वकनिष्ठ। (अनुजा स्त्री)।

अनुजीवी, वि (स विन्) अधीन आयत्त, आश्रित। स पु सेवक , दास ।

अनुज्ञा, स स्त्री (स) अनुमति (स्त्री) अनुमतम्। २ आज्ञा, आदेश ।

अनुताप, स पु (स) पश्चात्ताप , अनुशय , अनुशोक २ तपन दाह ३ खेद , दुःखम्।

अनुत्तर, वि (स) निरुत्तर, प्रतिवचनरहित।

अनुदात्त, वि (स) लघु, तुच्छ २ स्वर भेद (व्या)।

अनुदिन, क्रि वि (स न) प्रतिदिनम्।

अनुनय, स [illegible] (स) विनय , प्रार्थना, आवेदनं, याचना, याच्ञा २ प्रसादनं, आराधन, अनुरञ्जनम्।

अनुनाद, सं पुं (स) 'गूंज'।

अनुनासिक, वि (स) मुखनासिकाभ्यामुच्चारणीया वर्णा (ङ, ञ्, ण्, न्, म् तथा अनुस्वार)।

अनुनीत, वि (स) सान्त्वित, प्रसादित २ प्रार्थित, याचित।

अनुपद, क्रि वि (स न) अन्वक्, सद्य, पश्चात्, अव्यवहितोत्तरकालम्।

अनुपदिष्ट, वि (स) अदीक्षित उपदेशशिक्षा —वर्जित।

अनुपपत्ति, स स्त्री (स) समाधानाभाव असंगति -असिद्धि -अप्राप्ति (स्त्री)।

अनुपपन्न, वि (स) असिद्ध, असंपन्न।

अनुपम, वि (स) अप्रतिम निरुपम, अतुल अतुल्य, असदृश, अप्रतिरूप, अद्वितीय अनुपमेय।

अनुपयोगी, वि (स गिन्) निष्प्रयोजन, निरर्थक, निर्गुण, व्यर्थ।

अनुपयोगिता, स स्त्री (स) निरर्थकता व्यर्थता।

अनुपस्थित, वि (स) अविद्यमान, अवर्तमान, दूरस्थ, स्थानान्तरगत।

अनुपस्थिति, स स्त्री (स) असन्निधि, परोक्षता।

अनुपात, स पु (स) सम्बन्धसाम्य, आनुरूप्य २ गणिते त्रैराशिकक्रिया।

अनुपान, स पु (स न) औषधेन सह सेव्य वस्तु (न)।

अनुप्रास, स पु (स) वर्णसाम्यम्, शब्दालंकारभेद (सा, ब कोकिलकुलकलकूजितम् इ)।

अनुबंध, स पु (स) सम्बन्ध, सम्पर्क २ आरम्भपरिणामौ ३ मित्र, सुहृद् ४ इत्संज्ञका वर्णा (व्या) ५ अनुसरण ६ भाविशुभाशुभे।

अनुभव, स पु (स) साक्षात् उपलब्ध ज्ञानम् २ परीक्षया प्राप्त बोध, परीक्षणम्।

अनुभवी, वि (स विन्) परिणतप्रज्ञ, बहुदर्शिन् सानुभव।

अनुभाव, स पु (स) महत्त्व, प्रभाव, महिमन् २ रोमाञ्चकटाक्षादिचेष्टा (सा)।

अनुभावी, वि (स विन्) अनुभाववत्, प्रभावशालिन्। स पु प्रत्यक्षसाक्षिन् २ मृतस्य निकटसम्बन्धिन्।

अनुभूत, वि (स) साक्षाज्ज्ञात, परीक्षित।

अनुभूति, स स्त्री (स) अनुभव, परिज्ञान, बोध।

अनुमति, स स्त्री (स) अनुज्ञा, अनुमत २ आज्ञा ३ चतुर्दशीयुक्ता पूर्णिमा।

अनुमत्त, वि (स) हर्षोन्मत्त, अत्यानन्दित।

अनुमरण, स पु (स न) दे 'सती होना'।

अनुमाता, वि (स — तृ) तर्कयितृ, ऊहितृ।

अनुमान, स पु (स न) वि,तर्क, ऊह, अभ्यूह, अभ्यूहन, अनुमिति (स्त्री)।

—**करना,** क्रि स, ऊह् (भ्वा आ से), अनुमा (जु आ अ अ प अ), तर्क् (चु), उन्नी (भ्वा प अ) अनुमान कृ।

—**सिद्ध,** वि तर्क-अपोह, साधित-दृढीकृत।

अनुमिति, स स्त्री (स) दे 'अनुमान'।

अनुमेय, वि (स) तर्कणीय, अभ्यूहनीय, उन्नेय।

अनुमोदन, स पु (स न) समर्थन, दृढीकरण, उपोद्बलन २ हर्षप्रकाशन, मोदानुभव।

अनुयायी, वि (स यिन्) अनु,-गामिन् कारिन्।

अनुरक्त, वि (स) अनुरागिन्, बद्धानुराग, कृतप्रणय, आसक्तचित्त २ लीन, मग्न।

अनुराग, स पु (स) राग, प्रेमन् (पु न), स्नेह, प्रणय, भाव, प्रीति -आसक्ति (स्त्री)।

अनुरागी, वि (स गिन्) दे 'अनुरक्त'।

अनुरूप, वि (स) सदृश, समान, तुल्य २ योग्य, उपयुक्त, अनुकूल।

अनुरूपता, स स्त्री (स) सादृश्य, सामान्य २ अनुकूलता, उपयुक्तता।

अनुरोध, स पु (स) आग्रह, निर्बन्ध, अभिनिवेश २ प्रेरणा ३ विघ्न।

अनुलेपन, स पु (स न) वि,लेपन, अभ्यञ्जन समालम्भ, उद्वर्तनम्।

अनुलोम, स पु (स) निम्नग अवतरण, क्रम, अवरोह।

—**विवाह,** स पु (स) उच्चवर्णपुरुषस्य हीनवर्णया स्त्रिया विवाह।

अनुवर्तन, स पु (स न) अनु,-गमन-करण सरणम्।

अनुवर्ती, वि (स तिन्) अनु,-गामिन् कारिन् सारिन्। (अनुवर्तिनी स्त्री)।

अनुवाद, स पु (स) भाषान्तरम् २ पुनरुक्ति- (स्त्री), पुनर्वचनम्।

अनुवादक, स पु (स) भाषान्तरकार।

अनुवादित, वि (स) भाषान्तरित, अनूदित, कृतानुवाद ।

अनुवृत्ति, स स्त्री (स) उपजीविका, सेवा मार्ग २ पूर्ववर्तिवाक्यांशस्य अर्थस्पष्टतायै अग्रे योजनम् ।

अनुशासक, वि (स) अनुशासितृ नियन्तृ, अनुशास्तृ, अनुशासितृ २ शिक्षक, उपदेशक ३ दण्डद ।

अनुशासन, स पु (स न) आदेश, आज्ञा २ उपदेश , शिक्षा ३ व्याख्यान, विवरणम् ।

अनुशासित, वि (स) अनुशिष्ट, नियमित २ उपदिष्ट ३ दण्डित ।

अनुशीलन, स पु (स न) चिन्तन मनन, आलोचन २ आवृत्ति (स्त्री), पुनरभ्यास ।

अनुशोक, स पु (स) अनु, ताप -शय, पश्चात्ताप ।

अनुषङ्ग, स पु (स) सम्बन्ध , संसर्ग २ करुणा, दया ।

अनुष्ठान, स पु (स न) कार्यारम्भ २ सविधिसम्पादन ३ फलविशेषाय देवताराधन, पुरश्चरणम् ।

अनुसन्धान, स पु (स न) अन्वेषण णा, निरूपण, मार्गणम् २ प्रयास , प्रयत्न ।

अनुसरण, स पु (स न) अनुगमन सहगमन २ अनुकरण ३ अनुकूलाचरणम् ।

अनुसार, क्रि वि (स न) अनुकूल, सदृश समान (सब अव्य०) ।

अनूचान, स पु (स) साङ्गवेदाध्येता, स्नातक २ विद्यारसिक ३ चरित्रवत् ।

अनुस्वार, स पु (स) स्वरानन्तरमुच्चार्यमाणोऽनुनासिको वर्णविशेष २ अनुनासिक चिह्न ( ) ।

अनूठा, वि (स अनुत्थ >) अपूर्व, विलक्षण विचित्र २ सुन्दर, श्रेष्ठ ।

—पन, स पु वैचित्र्यम् , वैलक्षण्य ।

अनूदित, वि (स) पुन कथित-वाचित २ अनुवादित, भाषान्तरित ।

अनूप,[1] वि (सं) जल, प्राय बहुल । स पु जलप्रायदेश , जलकूल ।

अनूप,[2] वि (स अनुपम) अतुल्य, अद्वितीय २ सुन्दर, स्वच्छ ।

अनेक, वि (सं) एकाधिक, बहु, असंख्येय ।

अनोखा, वि (स अन् + वीक्ष > ?) अद्भुत, विलक्षण २ नूतन, नव ३ सुन्दर, मञ्जु ।

—पन, स पु, विलक्षणता, नूतनता, सुन्दरता ।

अन्न, स पु (स न) भक्ष्यपदार्थ २ दे 'अनाज' ३ पक्वान्न, भक्तम् ।

—जल, [illegible] [illegible] (स न) भोजनपान २ जीविका, वृत्ति (स्त्री) ३ दैव, दैवयोग घटना गति (स्त्री) ।

—दाता, स पु (स तृ) अन्नद, भक्ष्य दायक २ पोषक । (-दात्री स्त्री) ।

—पूर्णा, स स्त्री (स) अन्नाधिष्ठात्री देवी ।

—प्राशन, स पु (स न) शिशूना संस्कारभेद ।

—मयकोश, [illegible] पु (स) स्थूलशरीरम् ।

अन्ना, स स्त्री (स अन्ना > ?) धात्री, उपमातृ (स्त्री), मातृका, अङ्कपाली ।

अन्नाद, स पु (स) अन्नभक्षक २ ईश्वर ३ विष्णु ।

अन्य सर्व (स) अपर, द्वितीय, अनात्मीय, पर, भिन्न ।

—देशीय, वि (स) पर वि, देशीय ।

—पुरुष, स पु (स) भिन्न पर अपर, पुरुष २ प्रथमपुरुष (व्या) ।

—पुष्ट, स पु (स) पिक , कोकिल ।

—मनस्क, वि (स) चिन्तित, विषण्ण, खिन्न ।

अन्यत , अव्य (स) अन्यस्मात् जनात् स्थानात् वा ।

अन्यत्र, अव्य (स) अपरत्र अन्यस्मिन् स्थाने ।

अन्यथा, अव्य (स) इतरथा, २ विपरीत, विरुद्ध ३ असत्यम् ।

अन्यापदेश, [illegible] पु (स) दे 'अन्योक्ति' ।

अन्याय, स पु (स) अधर्म, अनय, अनीति (स्त्री) ।

अन्यायी, वि (स यिन्) अशास्त्रवर्तिन्, अन्यथाचारिन् , क्रूर, पाप धर्मविमुख ।

अन्याय्य, वि ([illegible]) न्याय-धर्म,-रहित-विपरीत विरुद्ध ।

अन्योक्ति, स स्त्री (स) अन्यापदेश, अलंकारभेद (सा) ।

अन्योन्य, क्रि वि (स न) परस्पर, मिथ, इतरेतर २ वि परस्पर ।

—आश्रय, सं पुं (स) अन्योऽन्यापेक्षा, परस्पराश्रय २ सापेक्षज्ञानम् ।

अन्वय, स पु (स) परस्परसम्बन्ध २ संयोग, संसर्ग ३ पदपदार्थानां यथावाक्यवत् स्थापनम् ४ अवकाश, शून्यस्थान ५. कार्यकारणसम्बन्ध ६ वंश, कुलम्।

अन्वर्थ, वि (स) अर्थानुसारिन्, सार्थक।

अन्वित, वि (स) युक्त, सहित, सगत।

अन्वीक्षण, स पु (स न) ध्यान, भावन, विमर्श २ दे 'अनुसन्धान'।

अन्वेषण, स पु (स न) दे 'अनुसन्धान'।

अन्वेषी, वि (स-षिन्) अन्वेषक, अन्वेष्टृ (पु), गवेषक, अनुसन्धातृ।

अन्वेष्टव्य, वि (स) अन्वेषणीय, अनुसन्धेय, विचेय।

अपंग, वि (स अपाङ्ग) हीनांग, व्यंग, न्यूनांग २ पंगु, अशक्त (हीनांगी, पंगू स्त्री)।

अपठित, वि (स) अज्ञ, मूर्ख, निरक्षर।

अप, उप (स) वैपरीत्यविरोधविकारवियोगवर्जनादिद्योतक उपसर्ग।

अपकर्ता, वि (स-र्तृ) अनिष्ट-हानि-अहित,-कर्तृ-कर-कारक।

अपकर्ष, स पु (स) नीचैः कर्षण, पातन २ अवनति (स्त्री), क्षय ३ अपमान, अनादर।

अपकार, स पु (स) अभद्र, अहित, अनिष्टसाधन, हानि अपकृति (स्त्री)।

अपकारक, वि (स) अपकारिन्, हानिकारक।

अपकीर्ति, स स्त्री (स) दुष्कीर्ति, अयशस् (न) वाच्यता, कलंक, निन्दा।

अपकृष्ट, वि (स) पतित, भ्रष्ट २ अधम, निन्द्य ३ घृणित।

अपच, स पु (स >) अपाक, अजीर्ण, अजीर्णि (स्त्री), मन्दाग्नि, अन्नविकार।

अपचय, स पु (स) क्षति हानि (स्त्री) २ व्यय, नाश।

अपढ़ वि (स अपठ) निरक्षर, अशिक्षित, पठनलेखनासमर्थ २ मूर्ख।

अपत्य, स पु (स न) सन्तान, सन्तति प्रसूति (स्त्री), प्रजा, प्रसव, तोकम्।

अपथ, स पु (स पु न) कुविकट, मार्ग, कुपथ।

अपथ्य, वि (स) कुपथ्य, रोगजनक, स्वास्थ्यनाशक २ अहितकर।

अपना, वि (स आत्मन.) स्वीय, स्वकीय, स्वक, आत्मीय, निज, स्व, आत्मन्।

—**पन**, स पु, आत्मीयता, ममता २ आत्माभिमान।

अपनाना, क्रि स (हिं अपना) आत्मसात् कृ, स्वाधीन स्वायत्त (वि)+कृ २ स्वीकृ, अंगीकृ, प्रतिपद् (दि आ अ), अभ्युपगम् ३ ग्रह (क्र प मे)।

अपभ्रंश, स पु (स) पतन अवनति (स्त्री) २ विकार ३ विकृतशब्द ४. प्राकृतभाषाभेद। वि विकृत।

अपमान, स पु (स) अनादर, अवमान, अवज्ञा, अवधीरणा, उपेक्षा, तिरस्कार, परिभव।

—**करना**, क्रि, स, अवमन् (दि आ अ), उपेक्ष् (भ्वा आ से), अवज्ञा (क्र उ अ), अवगण (चु), तुच्छी लघू,-कृ।

अपमानित, वि (स) अनादृत, अवमानित, अवज्ञात, अवधीरित, अवगणित।

अपमानी, वि (स निन् >) तिरस्कर्तृ, अवज्ञातृ अवगणयितृ।

अपमृत्यु, स पु (स) कुमृत्यु २ अकाल असमय, मृत्यु।

अपयश, स पु (स शस् न) दे 'अपकीर्ति'।

अपरंच, अ०य (सं) अन्यच्च २ पुन, पुनरपि।

अपरंपार, वि (स अपरपार >) अनन्त, असीम, अमित, निरवधि।

अपर, वि सर्व (स) प्रथम, अग्रिम २ अन्तिम, अन्त्य ३ अन्य, भिन्न ४ आत्मीय, स्वकीय।

—**पक्ष**, स पु (स) असितकृष्ण, पक्ष २ प्रतिवादिन्।

अपरा, स स्त्री (स) लौकिक पदार्थ विद्या २ पश्चिमदिशा। वि अन्या।

अपराग, स पु (स) द्वेष, वैरम् २ अरुचि (स्त्री) ३ असन्तोष।

अपराजित, वि (स) अजित, दे 'अजीत'।

अपराजेय, वि (स) अजेय, दे 'अजय्य'।

अपराध, स पु (स) दोष, प्रमाद, स्खलित, छिद्र, पाप, वाच्यम्।

—करना, कि अ, विभ्रम् (भ्वा दि, प से), अपराध् (दि स्वा प अ), उत्पथ या (अ प अ), स्खल् विचल्-व्यतिचर (भ्वा प से), प्रमद् (दि प से प्रमाद्यति)।

—हीन, वि (स) अनिर, दोष, अनघ, अनवद्य।

अपराधी, वि (स विन्) सापराध, दोषिन्, दोषवत्, वाच्य निन्द्य, सावद्य। (अपराधिनी स्त्री)

अपराह्न स पु (स अपराह्न,) पराह्न, विकाल, दिवसस्य तृतीयो याम।

अपरिग्रह, स पु (स) अरखी अनली, कार्, दानत्याग २ विराग, सगत्याग।

अपरिचित, वि (स) अज्ञात, पर, पारक्य, अन्यजन २ परिचयरहित अज्ञ।

अपरिमित, वि (स,) असीम, अमित, अनन्त। २ असंख्य, अगणित।

अपरिमेय, वि (स) अमेय, अपरिमाण, दुर्मेय, महत्, बहु।

अपरिवर्तनीय, वि (स) स्थिर, ध्रुव २ अपरिहार्य, अवश्यभाविन् ३ अविनिमेय।

अपरिवर्तित, वि (स) अविकृत, परिवर्तन रहित।

अपरीक्षित, वि (स) अकृतपरीक्ष, अननुभूत, अप्रहित।

अपरेशन, स पु (अ आपरेशन्) शल्य, क्रिया कर्मन् (न), उपाय-उपचार चिकित्सा।

अपर्याप्त, वि (स) न्यून, अल्प, हीन, क्षीण।

अपवर्ग, स पु (स) मोक्ष, वि, मुक्ति (स्त्री) निस्तार, निर्वाण २ त्याग, दानम्।

अपवाद, स पु (स) विरोध, प्रतिवाद २ निन्दा, अपकीर्ति (स्त्री) ३ दोष, पाप ४ बाधकशास्त्र, विशेष।

अपवादी, वि (स दिन्) अपवादक, निन्दक २ बाधक, विरोधिन्।

अपवित्र, वि (स) पाप, अधार्मिक २ अशुद्ध, मलिन, दूषित, अशुचि।

अपवित्रता, स स्त्री (स) धर्महीनता, पाप शीलता २ मलिनता, अशुचिता।

अपव्यय, स पु (स) मुक्तहस्तत्व, अति बहु अमित-व्यय, अर्थोत्सर्ग।

अपव्ययी, स पु (स-यिन्) मुक्तहस्त, उत्सर्गिन्, व्ययपर।

अपशकुन, स पु (स पु न) कु अशुभ दुर्, लक्षण, अजन्य, दुश्चिह्नम्।

अपशब्द, स पु (स) गाली, अपवाद २ अशुद्धपद ३ निरर्थकशब्द ४ अपान अन्त्र, वात वायु।

अपसव्य, वि (स) दक्षिण सव्येतर २ विप रीत ३ दक्षिणस्कन्धेन यज्ञोपवीतधारणम्।

अपस्मार, स पु (स) भ्रामर, अपविकृति (स्त्री), भूतविक्रिया। दे 'मिरगी'।

अपहरण, स पु (स न) अपहार, मोषण, विलुण्ठनम् २ सगोपन, लोप्त्रम्।

अपहृत, वि (स) चोरित, बलात् नीतम्।

अपह्नुति, स स्त्री (स) अपह्नव, गोपन, प्रच्छादन तिरोधानम्। २ व्याज, कपट, छल, अपदेश।

अपाङ्ग, स पु (सं पु न) नेत्रकोण, नयनो पान्त २ कटाक्ष। वि व्यङ्ग, अङ्गहीन।

अपात्र, वि (स न) गुणहीन, अनर्ह, अयोग्य २ कुभाण्ड, कुपात्रम्।

अपादान, स पु (स न) पृथक् अपा-करणम् २ पञ्चम कारकम् (व्या)।

अपान, स पु (स) नासिकया बहिः क्षिप्य माणो वायु २ अन्त्र गुदस्थ, वायु ३ गुद, मलद्वारम्। वि दुग्धपानाशक्त (इश्वर)।

—वायु, स स्त्री (स पु) पञ्चप्राणेषु अन्य तम २ अन्त्र गुदस्थ, वायु।

अपाप, स पु (स न) पुण्यम्। वि निष्पाप, धार्मिक।

अपाय, स पु (स) प्रस्थानम् २ पार्थक्यम् ३ लोप ४ नाश ५ विपत्ति (स्त्री) ६ हानि (स्त्री)

अपार, वि (स) असीम, अनन्त २ असंख्य, बहु।

अपार्थिव, वि (स) अभार्तिक, अमृन्मय २ अभौम ३ दिव्य, अलौकिक।

अपावन, वि (स) अशुद्ध, अपवित्र, मलिन।

अपावरण, स पु (स न) अपावृति (स्त्री), उद्घाटनम् २ आ प्रा समाच्छा दनम् ३ परिवेष्टनम्, परिवारणम्।

अपाहिज, वि (स अपभज्>) विकलाङ्ग (-गी स्त्री) विकल, -पङ्ग, हीनाङ्ग।

अपि, अव्य (स) १ (= भी) = अपि च, पुनश्च, अपर च। २ (= ही) केवल, एव, मात्र।
—च, अपि च, पुनश्च।
—तु, किंतु, परन्तु २ प्रत्युत।
अपील, स स्त्री (अ अप्पील) पुनर्विचार-प्रार्थना २ निवेदन ३ प्रार्थनापत्रम्।
अपीलांट, स पु (अ) निवेदक, विचारार्थ प्रार्थिन्।
अपुत्र, वि (स) निरपत्य, निरसन्तान २ पुत्रहीन।
अपूत¹, वि (स) अपवित्र, अशुद्ध।
अपूत², वि (स अपुत्र दे)। स पु, कुपुत्र।
अपूप, स पु (स) पूप, पिष्टक।
अपूर्ण, वि (स) असमाप्त, सावशेष २ न्यून।
अपूर्व, वि (स) अभूत-अदृष्ट, पूर्व २ अद्भुत, अलौकिक ३ अनुपम, श्रेष्ठ।
अपूर्वता, स स्त्री (स) विलक्षणता, लोकोत्तरता।
अपेक्षा, स स्त्री (स) आकांक्षा, इच्छा, अभिलाष २ आवश्यकता ३ तुलनया, अपेक्षया (दोनों तृतीयान्त)।
अपेक्षित, वि (स) अभीष्ट, आवश्यक।
अप्रचरि(लि)त, वि (स) अप्रयुक्त अव्यवहृत।
अप्रतिपत्ति, स स्त्री (स) बोधासामर्थ्य २ निश्चयाभाव।
अप्रतिभ, वि (स) अप्रगल्भ, प्रतिभा-स्फूर्ति-शून्य २ निर्बुद्धि ३ अलस ४ लज्जावत, सलज्ज।
अप्रतिम, वि (स) अतुल्य, अप्रतिरूप, दे 'अतुल'।
अप्रतिरथ, वि (स) अनुपम-अतुल्य वीर २ अनुपम, अप्रतिम।
अप्रतिष्ठ, वि (स) कुख्यात, अपमानित २ अस्थिर, चचल।
अप्रतिष्ठा, स स्त्री (स) अपमान, असमान, निरस्कार २ अस्थैर्य, चाचल्यम्।
अप्रत्यक्ष, वि (स) परोक्ष, गुप्त, इन्द्रियातीत।
अप्रयुक्त, वि (स) अव्यवहृत, अप्रचरि(लि)त।
अप्रसन्न, वि (स) कुपित, क्रुद्ध २ अप्रीत, अतुष्ट ३ खिन्न, शोकाकुल।
अप्रसन्नता, स स्त्री (स) प्रीति प्रसाद, अभाव २ रोष ३ खेद, विमनस्कता।
अप्रसिद्ध, वि (स) अविश्रुत, अविख्यात २ गुप्त।
अप्रस्तुत, वि (स) अनुपस्थित, अविद्यमान २ अप्रासंगिक ३ अनुचित ४ गौण।
—प्रशंसा, स स्त्री (स) अलंकारभेद (सा)।
अप्राप्त, वि (स) अलब्ध, २ अनधिगत २ दुर्लभ ३ अप्रस्तुत ४ अनागत।
अप्राप्य, वि (स) अलभ्य, अनधिगम्य, अप्राप्तव्य।
अप्रामाणिक, वि- (स) अवैध, प्रमाणशून्य २ अविश्वसनीय।
अप्रासंगिक, वि (स) असम्बद्ध, अप्रस्तुत, प्रकरणासंगत।
अप्रिय, वि (स) अनिष्ट, अरुचिकर, अनभिमत। स पु, शत्रु।
अप्रेंटिस, स पु (एप्रेंटिस) अन्तेवासिन्, शिष्य, शिल्पविद्यार्थिन्।
अप्रैल, स पु (अ एप्रिल) आंग्लवर्षस्य चतुर्थमास।
—फूल, स पु वैशेषोपहास्य, मधुमासमूर्ख।
अप्सरा, स स्त्री (स) अप्सरस (स्त्री बहु), स्वर् स्वर्ग, वेश्या, नाकनर्तकी।
अफयूम, स स्त्री (फा) दे 'अफीम'।
अफरना, क्रि अ (स स्फार = प्रचुर >) सम्परि, तृप-तुप (दि प अ) २ स्फाय (भ्वा आ से), प्र-वृध्, चि (आ वा प्रची यते ३) ३ दे 'ऊबना'।
अफरा, स पु (सं स्फार) उदर, स्फीति (स्त्री)-उपचय २ अजीर्णवातादिभि उदर वृद्धि (स्त्री)।
अफरातफरी, स स्त्री (अ अफरात तफरीत) सक्षोभ, अव्यवस्था २ संभ्रम, आकुलत्वम्।
अफरीका, स पु (अ एफ्रिका) कालद्वीपम्।
अफल, वि (स) निष्फल, मोघ, व्यर्थ।
अफवाह, स स्त्री (फा) जन, प्रवाद, जन श्रुति (स्त्री), किंवदन्ती, लोक वाद वार्ता।
अफसर, स पु (अ ऑफिसर) दे 'अधिकारी'।
अफसरी, स स्त्री (हिं अफसर) अधिकारिता २ शासन।
अफसाना, स पु (फा) कथा, आख्यायिका।
अफसोस, स पु (फा) दुःख, क्लेश २. पश्चात्ताप, अनुशय, अनुशोक, खेद।

अफारा, स पु (हिं अफरना) आध्मानम् (उदररोग)।
अ(ए)फीडेविट, स पु (अ) शपथ पत्रम्।
अफीम, स स्त्री (यू ओपियन, अ ओपियम) अहिफेन अफेनम्।
अफीमी | स पु (हिं अफीम) अफेन अहि
अफीमची | फेन, भक्षक-व्यसनिन्।
अब, क्रि वि (स अथ, अद्य ?) अधुना, इदानीं, सम्प्रति, साम्प्रत, वर्तमाने।
—का, वि, आधुनिक, साम्प्रतिक।
अबज़रवेटरी, स स्त्री (अ आवजर्वेटरी) मानमन्दिर, वेधशाला।
अबतर, वि (फा) भिन्दिन, मई २ विकृत।
अबतरी, स स्त्री (फा) विकार, विकृति (स्त्री)।
अबरक, (-ख) सं पु (स अभ्रक)गिरिजा मल, शुभ्र, बहुपत्रम्।
अबरी, स स्त्री (फा) चिक्कणपत्रभेद २ पीतपाषाणभेद।
अबरू, स स्त्री (फा) भ्रू (स्त्री), भ्रूलता।
अबला, स स्त्री (स) नारी, रमणी।
अबाध, वि (स) निर्विघ्न, निर्बाध २ असीम।
अबाध्य, वि (स) उच्छृङ्खल, उद्दाम २ अनि वार्य, अप्रतिकार्य, दुर्निवार।
अबाबील, स स्त्री (फा) कृष्णा, कृष्ण चटकभेद।
अबीर, स पु (अ) दे 'गुलाल'।
अबूझ, वि (हि अबुद्ध) मूर्ख, अज्ञ, अबुध।
अबे, अव्य, (सं अयि ?) अरे, हे।
अबोध, स पु (स) अज्ञान, मौर्ख्यम्। वि, मूर्ख, अज्ञ।
अब्ज, स पु (स न) कमल, पद्मम् २ जलजात पदार्थ ३ शख ४ चन्द्र ५ धन्वन्तरि ६ कर्पूर र ७ शत कोटय।
अब्जा, स स्त्री (स)लक्ष्मी (स्त्री), रमा।
अब्द, स पु (सं) वर्ष पं, हायन, वत्सर २ मेघ ३ कर्पूर र ४ आकाश शम्।
अब्धि, स पु (स) समुद्र २ तडाग ३ समेति सख्या।
अब्बा, स पु (फा) पितृ, जनक।
अब्र, स पु (फा , स अभ्रम्) मेघ, घन।
अब्रह्मण्यम [illegible] (स न) अब्राह्मणोचित कर्मन् (न) २ हिंसादिकर्मन्।
अब्राह्मण, स पु (सं) अविप्र, अभूसुर, ब्राह्मण विप्र-इतर। वि ब्राह्मणरहित।
अभग, वि (स) पूर्ण, सकल २ नित्य, अनश्वर ३ अनवरत, निरन्तर।
अभगुर | वि (स) दृढ, अखण्ड
अभंजन | २ अनश्वर।
अभक्त, वि (स) भक्ति-श्रद्धा, हीन-रहित २ अखण्ड, सम्पूर्ण।
अभक्ष्य, वि (स) अखाद्य, अभोज्य।
अभद्र, वि (स) अशुभ, अमांगलिक २ तुच्छ।
अभय, वि (स) निर्भय, अभीत। स पु (स न), भय-त्रास, अभाव।
—दान, स पु (स न) रक्षा शरण, वचन प्रतिज्ञा २ रक्षणं, शरणदानम्।
—पद, स पु, (स न) मुक्ति (स्त्री)।
अभर्तृका, स स्त्री (स) विधवा, रंडा २ कुमारी, कन्या।
अभव्य, वि (स) अशुभ, अमागलिक २ कुदर्शन, कुरूप ३ अभवितव्य ४ अद्भुत ५ अशिष्ट।
अभागा, वि (स अभाग) अ मन्द, भाग्य, प्रारब्ध भाग्य, हीन।
अभागी, वि (स गिन्) भाग्यहीन २ भाग हीन, अदायाद।
अभाग्य, स पु (स न) दुर्दैव, मन्द-दौर, भाग्यम्।
अभाजन, स पु (स न) अपात्र, कुपात्र, दुष्ट।
अभाव, स पु (स) सत्ताऽभाव, अविद्यमानता।
अभावनीय, [illegible] (सं) अचिन्तनीय।
अभि, उप (स) सामीप्यदूरताऽभिमुख्य वीप्सादिद्योतक उपसर्ग।
अभिक्रमण, स [illegible] (स न) दे 'आक्रमण'।
अभिख्या, सं स्त्री (सं) शोभा, श्री (स्त्री) २ यशस (न) कीर्ति (स्त्री)।
अभिगमन, स पु (स न) उपसर्पण २ मैथुनम्।
अभिगामी, वि (स मिन्) उपसर्पक २ सभोगकर्तृ।
अभिचार, स पु (स)मत्रैर्मारणोच्चाटनादिक्रिया।
अभिचारक, वि (सं) अभिचारिन्।

अभिजन, स पु (स) कुल, वंश, २ जन्मभूमि (स्त्री) ३ कुले वृद्धतम पुरुष ४ ख्याति (स्त्री)।

अभिजात, वि (स) कुलीन, सुकुलोत्पन्न २ बुध, पण्डित, ३ योग्य ४ मान्य ५ सुन्दर।

अभिज्ञ, वि (स) ज्ञात, विज्ञ २ निपुण, कुशल।

अभिज्ञान, स पु (स न) स्मृति (स्त्री), अनुबोध २ लक्षण, स्मारकचिह्नम्।

अभिताप, स पु (स) अतिशय अत्यधिक ताप-दाह २ पीडा, वेदना।

अभिधा, स स्त्री (स) शब्दस्य वाच्यार्थ प्रकाशिका शक्ति (स्त्री, सा)।

अभिधान, स पु (स न) संज्ञा, नामन् (न) २ कथन, ३ शब्दकोश (-श)व (वन्)।

अभिधायक, वि (स) नामकारक २ वक्तृ ३ परिचायक।

अभिधावन स पु (स न) आक्रमणम्, अभिद्रव।

अभिधेय, वि (स) वाच्य, प्रतिपाद्य। स पु (स न) नामन् (न), संज्ञा।

अभिध्यान, स पु (स न इच्छा, वाञ्छा २ लोभ ३ चिन्तनम्।

अभिनन्दन, स, पु (स न) प्रशंसा २ आनन्द ३ संतोष ४ प्रोत्साहन ५ प्रार्थना।

—पत्र, [illegible] (स न) प्रशंसा प्रतिष्ठा, पत्रम्।

अभिनन्दनीय, वि (स) स्तुत्य, वन्दनीय।

अभिनय स पु (स) नाट्य, अंगविक्षेप २ अवस्थानुकृति (स्त्री) ३ नाटकक्रीडा।

—करना, क्रि स, नट् निरूप (चु), अभिनी (भ्वा प अ), प्रयुज (चु)।

अभिनव, वि (स) नव, प्रत्यग्र।

अभिनिविष्ट, वि (स) प्रविष्ट २ उपविष्ट ३ मग्न, लीन।

अभिनिवेश, स पु (स) प्रवेश २ मनोयोग, एकाग्रचिन्तनम् ३ दृढसंकल्प ४ मृत्युभयक्लेश।

अभिनीत, वि (स) उपनीत २ अलंकृत ३ रूपित, नाटित ४ उचित।

अभिनेता, सं पु (स -नेतृ) नट, नर्तक, कुशीलव, शैलूष (अभिनेत्री, नटी, नर्तकी स्त्री)

अभिनेय, वि (स) नाटयितव्य, रूपणीय, अभिनयार्ह।

अभिन्न, वि (स) अविभक्त, संलग्न, संसृष्ट।

अभिप्राय, स पु (स) आशय, भाव अर्थ, तात्पर्य, प्रयोजनम्।

अभिप्रेत, वि (स) इष्ट, अभिलषित।

अभिभव, स पु (स) पराजय २, अवज्ञा, तिरस्कार।

अभिभावक, वि (स) अभिभाविन्, पराजेतृ तिरस्कर्तृ (२) वशिन् (३) संरक्षक।

अभिभाषण, स पु, (स न) सभापति (लिखित)भाषणम् २ व्याख्यानम् ३ कथनम्।

अभिभूत, वि (स) पराजित, विजित २ पीडित ३ वशीभूत ४ व्याकुल।

अभिमन्त्रण, स पु (स न) मंत्रैः पवित्रीकरण-संस्करणम् २ आवाहनम्।

अभिमत, वि (स) इष्ट, मनोनीत, वाञ्छित २ सम्मत। स पु, मत, मति (स्त्री) २ विचार ३ अभीष्टपदार्थ।

अभिमन्यु, स पु (स) अर्जुनसुत।

अभिमान, स पु (स) अहंकार, गर्व, मद, दर्प, उत्सेक, अवलेप, मान, अहमान।

अभिमानी, वि (स -निन्) गर्वित, दृप्त, मत्त, उत्सिक्त अहंकारिन्, मानिन्, अवलिप्त।

अभिमुख, क्रि वि (स) अभि स, मुख मुखे, पुर, पुरत, पुरस्तात्, समक्ष, अग्रे।

अभियुक्त, वि (स) प्रत्यर्थिन्, प्रतिवादिन्।

अभियोक्ता, वि पु (स -क्तृ) अर्थिन्, वादिन्, अभियोगिन्।

अभियोग, स पु, (स) व्यवहार, कार्य, अक्ष २ आक्रमण ३ उद्योग ४ मनोयोग।

अभिराम, वि (स) आह्लादक, मनोहर, सुन्दर, रम्य।

अभिरुचि, स स्त्री (स) रुचि प्रवृत्ति (स्त्री), काम, अभिलाष, छन्द, इच्छा।

अभिरूप, वि (स) मनोहर, रमणीय।

अभिलषित वि (स) वाञ्छित, ईप्सित, इष्ट।

अभिलाषा, स स्त्री (स -ष) वाञ्छा, काङ्क्षा, स्पृहा, ईहा।

अभिलाषी, वि (सं-षिन्) इच्छु ईप्सु, अभिलाष(पु)क, वाञ्छक।

अभिवादन, स पु (स न) प्रणाम, नमस्कार २ स्तुति (स्त्री)।

अभिव्यञ्जक, वि (स) प्रकाशक, सूचक, बोधक।

अभिव्यक्त, वि (स) प्रकटित, दर्शित स्पष्टीकृत।

अभिव्यक्ति, स स्त्री (सं) प्रकाशन, आविष्कार, साक्षात्कार।

अभिव्याप्ति स स्त्री (स) सर्व-व्यापकता व्यापिता २ समावेश।

अभिशप्त, वि (स) आकृष्ट, शापग्रस्त, अभिशप्त २ मिथ्यादूषित।

अभिशस्ति, स स्त्री (स) अभि, शाप, आक्रोश २ विपत्ति-आपत्ति (स्त्री)।

अभिशाप, स पु (सं) शाप, आक्रोश २ दोषारोप मिथ्याभियोग।

अभिशापित, वि (स) दे 'अभिशप्त'।

अभिषङ्ग, स पु (स) पराजय २ निन्दा ३ मिथ्यापवाद ४ आलिङ्गन ५ शपथ ६ [illegible]लम् ७ भूतावेश।

अभिषव, स पु (स), सोमस्य निष्पीडनम् २ सोमपानम् ३ यज्ञ ४ यज्ञस्नानम्।

अभिषिक्त, वि (स) स(आ)सिक्त, प्रक्षालित २ सिंहासने उपवेशित ३ यथाविधि नियुक्त।

अभिषेक, स पु (स) अभिषेचन, प्रोक्षण, आ अव-सेक २ मार्जन ३ सिंहासने स्थापन ४ यज्ञान्तर शान्त्यै स्नानम्।

अभिष्यन्द स पु (स) स्रव, क्षरण, प्रवाह २ नेत्ररोगभेद।

अभिसन्धि, स स्त्री (स पु) अभिसन्धान, प्रतारणा, वञ्चना २ कुचक्र, षड्यन्त्रम्।

अभिसार, स पु (सं) अभिसरण, नायक नायिकयो निश्चितस्थाने गमन २ आश्रय, साहाय्य ३ युद्धम्।

अभिसारिका, सं स्त्री (स) अभिसारिणी।

अभिसारी, स पु (स-रिन्) अभिसारक।

अभिहित, वि (स) उक्त, कथित, उदित।

अभी, क्रि वि (हिं अब+ही) साम्प्रतमेव, अधुनैव, अचिरात्।

अभीर, सं पु (स आभीर) गोप गोपाल।

अभीष्ट, वि (स) वाञ्छित, अभिलषित २ अभिप्रेत ३ मनोनीत। स पु, मनोरथ।

अभूत, वि (स) अघटित २ वर्तमान ३ विलक्षण।

—पूर्व, वि (स) अघटितपूर्व २ अपूर्व, अद्भुत।

अभेद, स पु (स) भेदाभाव, एकत्व, अभिन्नता २ समानता। वि, भेदरहित समान।

अभेद्य, वि (स) अच्छेद्य अखण्डनीय, अभेदनीय।

अभोज्य, वि (स) दे अभक्ष्य।

अभौतिक, वि (स) अप्राकृतिक २ अगोचर।

अभौम, वि (स) अपार्थिव, अभूमिज।

अभ्यङ्ग, स पु (स) लेप, लेपन २ तैल मर्दन, स्नेहनम्।

अभ्यञ्जन, स पु (स न) दे 'अभ्यङ्ग' २ नेत्रयो कज्जलनिक्षेप ३ अङ्गराग।

अभ्यन्तर, स पु (स न) मध्य, मध्य, भाग देश, गर्भ २ हृदयम्।

अभ्यर्थना, स स्त्री (स) प्रार्थना याचना २ प्रत्युद्गमनम्।

अभ्यर्थनीय, वि (स) याचित य २ प्रत्युद्गमनीय।

अभ्यर्दन, स पु (स न) उत्पीडनम् दे।

अभ्यसित, अभ्यस्त, वि (स अभ्यस्त) नित्य, अनुष्ठित आचरित, असकृत् पौन पुन्येन व्यावर्तित सेवित कृत।

अभ्यागत, वि (स) उपस्थित। स पु, अतिथि।

अभ्यास, स पु (स) अभ्यसन, आवृत्ति (स्त्री), अनुशीलनम् २ (=आदत) शील, नित्यव्यवहार, वृत्ति (स्त्री)।

—करना, क्रि स, अभ्यस (दि प से) पुन पुन विधा (जु उ अ) कृ सतत अनुष्ठा (भ्वा प अ), असकृत् सेव् (भ्वा आ से)।

अभ्यासी, वि (सं सिन्) साधक, अभ्यास आवृत्ति-कर्तृ-कारक।

अभ्युत्थान, स पु (स न) उत्थानम् २ प्रत्युद्गम ३ समृद्धि उन्नति (स्त्री) ४ आरम्भ, उदय।

अभ्युदय, स पु (स) सूर्यादीनामुदय २ प्रादुर्भाव ३ मनोरथसिद्धि (स्त्री) ४ शुभावसर ५ उन्नति (स्त्री)।

अभ्युपगम, स पु (स) समीपगमन, प्राप्ति (स्त्री) २ स्वीकार, वार ।

अभ्र, स पु (स न) मेघ, जलद २ आकाश ३ अभ्रक ४ सुवर्णम् ।

अमंगल, वि (स) अशुभ अभद्र, अशिव । स पु (स न) अशुभ अभद्र, दौर्भाग्य अनिष्टम् ।

अमचूर, स पु (स आम्रचूर्ण) आम्रक्षोद ।

अमन, स पु (अ) शान्ति (स्त्री), उपद्रवाभाव ।

—अमान, —चैन, स पु, सुखशान्ति, मंगल, भद्रम् ।

अमर, वि (स) अमर्त्य, नित्य । स पु, देव, देवता (स्त्री) २ पारद, रस ३ अमरसिंह (कोशकार) ।

—बेल, स स्त्री, अमरवल्ली आकाशवल्लरी ।

अमरत्व, स पु (स न) मुक्ति (स्त्री) २ देवत्व ३ चिरजीवनम् ।

अमरस, स पु (स आम्ररस) रसाल्द्रव २ आम्र, पर्पट पट्टी (हि अमपापड) ।

अमरांगना, स स्त्री (स) देवांगना, देवी, अमरी ।

अमरा, स स्त्री (स) अमरावती, दे ।

अमराई, स स्त्री (स आम्रराजी) आम्र-वन वाटिका ।

अमरावती, स स्त्री (स) इन्द्रपुरी, स्वर्ग ।

अमरीका, स पु (अमेरिका) महाद्वीपविशेष ।

अमरूत (द), स पु (स अमृत >) पेरुक, दृढबीज, मामलम् ।

अमरेश्वर, स पु (स) दे 'इन्द्र' ।

अमर्ष, स पु (स) क्रोध, रोष २ क्षमाऽभाव, असहिष्णुता ।

अमल[1], वि (स) स्वच्छ, निर्मल २ निर्दोष । स पु, (स न) अभ्रक, गिरिजामलम् ।

अमल[2], स पु (अ) व्यवहार, आचरण, चरितम् २ अधिकार, शासन ३ मद, माद, शौण्डता ४ शील, वृत्ति (स्त्री), स्वभाव ५ प्रभाव ६ समय ।

—करना क्रि स, व्यवहृ (भ्वा प अ), आचर (भ्वा प से), विधा (जु उ अ), कृ ।

—में आना, क्रि अ, वृत् (भ्वा आ से), भू ।

—दारी, स स्त्री (अ + फा) शासन, राज्यम् ।

अमलतास, स पु (स अम्ल) वृक्षप्रकार ।

अमलबेत, स पु [स अ (आ) अम्लवेतस] वेतसाम्ल, वीर राज रस,-आम्ल ।

अमला, स स्त्री (स) लक्ष्मी (स्त्री) २ सातलावृक्ष ।

अमला, स पु (अ) कार्याध्यक्ष ।

—फैला, स पु, न्यायालयकर्मचारिगण ।

अमली, वि (अ) व्यवहारविषयक २ कर्मण्य ३ मद्यप, पानासक्त, मादकद्रव्यसेविन् ।

अमहर, स स्त्री (स आम्र >) शुष्काम्रशल्कम् ।

अमा, स स्त्री (स) अमावस्या २ गृह ३ इहलोक ।

अमात्य, स पु (स) सचिव, मन्त्रिन् ।

अमान, स पु (अ) रक्षा, त्राण २ शरण, आश्रय ।

अमानत, स स्त्री (अ) स्थाप्य, निक्षेप, न्यास, उपनिधि ।

—रखना, क्रि स, निधा (जु उ अ), निक्षिप (तु प अ), न्यस (दि प स), आधी कृ ।

—दार, वि, न्यासधारिन्, निक्षेपग्राहक ।

—दारी, स स्त्री, प्रत्यय, विश्वास ।

—में ख़यानत, स स्त्री, स्थाप्यापहरण दुर्विनियोग ।

अमानिता, स स्त्री (स) अमानित्वम्, नम्रत्व, नम्रता ।

अमानी, वि (स निन्) नम्र, विनीत, निरभिमान ।

अमानुष, वि (स) अपौरुषेय, अमानवीय, अनिमर्त्य २ पाशव, पैशाचिक । स पु, मनुष्येतरो जीव २ राक्षस ३ देव । (अमानुषी = अपौरुषेयी स्त्री) ।

अमारी, स स्त्री (अ) वरण्डक ।

अमावट, स स्त्री (हि आम >) दे 'अमरस' ।

अमावस, स स्त्री [स अमाव (ा) स्या] अमावासी, कृष्णपक्षस्यान्तिमतिथि (पु स्त्री), दर्श, सूर्येन्दुसमागम ।

अमिट, वि (स अ + हि मिटना) अनाश्य, अमार्ज्य, शाश्वत (-ती स्त्री) ।

अमित, वि (स) असीम, अपरिमित २ अत्यधिक ।

अमित्र, स पु (स) शत्रु । वि मित्रहीन ।

अमीन, स पु (अ) अधिकरणस्य कर्मचारिभेद।
अमीर, स, पु (अ) अधिकारिन् २ धनिक ३ उदार।
अमीरी, म स्त्री (अ) धनाढ्यता, समृद्धि (स्त्री)।
अमुक, वि (स) सङ्केतित, निर्दिष्ट।
अमूर्त, वि (स) मूर्त्ति प्रतिमा, रहित,निर कार, निरवयव।
अमूल्य, वि (स) अनघ, अनर्घ्य, २ बहुमूल्य, महार्घ।
अमृत, म पु (स न) सुधा, पी (पे) यूष, निजर, समुद्रनवनीतक २ जल ३ घृत ४ अन्न ५ मोक्ष ६ दुग्ध ७ विष ८ सुवर्ण ९ द्रवपदार्थ १० मधुरद्रव्यम्।
—कर, म पु (स) चन्द्र।
—फल, स पु (स पु न) पारावत पटोल, वृक्ष फल।
—बान, स पु श्लक्ष्णीकृत मृद्भाण्ड, चिक्कण कुट।
—सार, स पु, नवनीत, घृतम्।
अमृतत्व, स पु (स न) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री)।
अमृतांशु, स पु (स) शीतांशु, चन्द्र, सोम।
अमृता, स स्त्री (स) मद्य, सुरा २ आमलकी ३ हरीतकी ४ तुलसी।
अमृत्यु, वि (स) अमर, अमरण। स्त्री अमरत्वम्। पु विष्णु।
अमेध्य, वि स अपवित्र, अयज्ञार्ह, निन्द्य।
अमेय, वि (स) असीम २ अज्ञेय।
अमोघ, वि (स) सफल, सार्थक, फलवत्।
अमोनिया, स पु (अ) तिक्तादि (स्त्री)।
अमोल, अमोलक, वि (स अमूल्य दे०)।
अमौलिक, वि (स) निर्मूल, वितथ, मिथ्या।
अम्माँ, स स्त्री (स अम्बा) माता, जननी।
अम्मामा, स पु (अ) महोष्णीष-षम्।
अम्ल, म पु (स) रसभेद। वि अम्ल शुक्त।
अम्लता, स स्त्री (स) अम्लत्व, शुक्तत्वम्।
अम्हौरी, म स्त्री (स अम्भस>) घर्मकण्टक कम्।
अयन, स पु (स न) गति (स्त्री) २ सूर्य चन्द्रयोर्गतिभेद ३ ज्योति शास्त्रम् ४ सेना गति ५ मार्ग ६ आश्रम ७ स्थान ८ गृह ९ काल १० अंश ११ यज्ञभेद १२ अंशस्(न)।
अयश, स पु (स शस् न) अपकीर्ति (स्त्री)।
अयस, म पु (स अयस न) दे 'लोहा'।
अयस्कान्त, स पु (स) कान्तायस, कान्त, कान्तलोहं।
अयाँ, वि (अ) प्रकट २ स्पष्ट।
अयान, वि (हिं अज्ञान) अज्ञ, मूर्ख।
अयाल[1], म पु स्त्री (तु० याल) केश (स) २, सटा।
अयाल[2], स पु (अ) सन्तति (स्त्री)।
—दार, वि गृहिन्, गृहस्थ।
अयि, अन्य (स) हे, अरे, भो।
अयुक्त, वि (स) अनुचित २ असंश्लिष्ट, भिन्न ३ युक्तिशून्य।
अयुग, वि (स) विषम, अयुग्म।
अयुग्म, वि (स) अयुग, विषम २ एकल, एकाकिन्।
अयुत, वि (स न) सहस्रदशकम्।
अयोग, वि (स अयोग्य) अनुचित, अयुक्त।
अयोग्य, वि (स) अनर्ह, अनुपयुक्त। २ पारवश्य ३ अशक्त ४ अपात्रम् ५ दे 'अयोग'।
अयोध्या, म स्त्री (स) साकेत, नगरीविशेष।
अयोनि वि (स) अज, नित्य।
अयोनिज, वि (स) अगर्भज २ स्वयम्भू ३ अदेह, अकाय।
अयौक्तिक, वि (स) युक्तिविरुद्ध, अनुपपन्न, असंगत।
अयौगिक, वि (स) अव्युत्पन्न, रूढ (-ढा)।
अरड, स पु, दे 'एरड'।
अर, स पु (स पु न) चक्राङ्ग २ कोण- ३ शैवाल।
अरक स पु (अ) आसव २ रस ३ प्रस्वेद।
—निकालना, क्रि स सु स्यन्द् (प्रे), अभि,-सु (स्वा उ अ)।
—अरक होना, मु, (प्र) स्विद् (दि. प अ)।
अरक्षित, वि (स) अत्राण, अत्रान अपान।
अरगजा, म पु (स अगरु+जा>) पीत वर्ण सुगन्धिद्रव्यभेद।
अरगनी, स स्त्री (स आलग्न>) वसना लम्बनी, वस्त्रालम्बनाय रज्जु (स्त्री) वंशो वा।

अरगल, स पु (स न) अरगला, कपाटा वष्टम्भकमुसलम् ।

अरगवानी, स पु (फा) रक्तवर्ण, लोहित रग । वि रक्त-लोहित,-वर्ण २ नीललोहित, धूम्रवर्ण ।

अरघा, स पु (स) ताम्रमयोऽर्घ्यपात्रभेद २ शिवलिङ्गाधारपात्रम् ।

अरणि, णी स स्त्री (स पु स्त्री) निर्मन्थ्य दारु (न), अग्निमन्थनकाष्ठम् ।

अरण्य, स पु (स न) वन, जङ्गलम् ।

—गान, स पु (स न) सामवेदस्य गानविशेष ।

—रोदन, स पु (स न) अरण्यरुदित, व्यर्थविलाप काननक्रन्दनम् २ व्यर्थवचनम् ।

अरत्नि, स स्त्री (स पु स्त्री) कूर्पूर, कफ (फो) णि (पु स्त्री), २ मुष्टि (पु स्त्री), मुष्टी ३ बाहु ४ कूर्परात् मध्यमाङ्गुली पर्यंत मानम् ।

अरथी, स स्त्री (स रथ >) शवयान, खाट, खाटी ।

अरदल[1], स पु (देश०) वृक्षभेद ।

अरदल[2], स स्त्री (अ ऑर्डर) आज्ञा, नियोग ।

अरदली, स पु (अ ऑर्डरली) परिचारक, किंकर, प्रेष्य ।

अरदास, स स्त्री (फा अर्जदाश्त) उपहार, प्रीतिदान २ उपासना, आराधना, प्रार्थना ।

अरधग, दे० 'अर्द्धांग' ।

अरध (र्धां) गी, स स्त्री (स अर्द्धांगिनी) पत्नी, भार्या, अर्द्धांगम् ।

अरना, स पु (स अरण्य >) वन्यमहिष, वन्यसैरिभ ।

अरनी, स स्त्री, दे 'अरणि' ।

अरब[1], स पु (स अर्बुद -द) शतकोटिसंख्या ।

अरब[2], स पु (स अर्वन्) घोटक २ इन्द्र ।

अरब[3], स पु (अ) मरुदेशविशेष, अरबदेश २ अरबदेशीयोऽश्वो जनो वा ।

अरबी, वि (फा) अरबदेशीय । स पु १—२ अरबदेशीयाऽश्व उष्ट्र वाद्यभेदो वा । स स्त्री, अरबदेशस्य भाषा ।

अरमान, स पु (तु) लालसा, आकांक्षा ।

अरर, अव्य (स अरे) आश्चर्यघृणादिसूचक शब्द ।

अरराना, क्रि अ (अनु) पुरुष ध्वन् स्वन् (भ्वा प से) २, सहसा पत् (भ्वा प से)

अरविंद, स पु (स न) कमल, पद्मम् ।

अरविंदिनी, स स्त्री (स) नलिनी, कमलिनी २ कमलसमूह ३ पद्माकर ।

अरवी, स स्त्री, दे 'कचालू' ।

अरस, वि (स) नीरस, विरस २ असभ्य ३ अलस ४ निर्बल ५ अयोग्य ।

अरसा, स पु (अ) समय २ विलम्ब ।

अरहट, स पु (स अरघट्ट) अरघट्टक ।

अरहर, स स्त्री (स आढकी) तुवरी, तुव-रिका, वृत्तबीजा ।

अराजक, वि, (स) राजहीन शासकरहित ।

अराजकता, स स्त्री (स) राजहीनता । २ शासनाभाव ३ उपद्रव, अशान्ति (स्त्री) ।

अराति, सं पु (स) शत्रु २ कामक्रोधलोभ मोहमदमात्सर्याणि (न बहु) ३ ज्योतिःशास्त्रे कुण्डल्या षष्ठ स्थानम् ।

अरारूट, स पु (स (अ ऍरोरूट) अरारूट, कन्दभेद २ अरारूटचूर्णम् ।

अरिदम, वि (स) शत्रुघ्न, अभित्रघातिन् २ विजयिन् ।

अरि, स पु (स) शत्रु, वैरिन् ।

—मर्दन, वि (स) रिपु, सूदन-दमन, शत्रुघ्न ।

अरित्र, स पु (स न) क्षि (क्ष) पणी णि (स्त्री), नौ नौका,-दण्ड ,केनिपातक ।

अरिष्ट, स पु (स न) कलश २, विपद् (स्त्री) ३ दुर्भाग्य ४ अपशकुन ५ लशुन ७ निम्ब ८ काक ९ गृध्र १० फेनिल ११ मद्यभेद १२ क्वाथ १३ भूकम्पादय उत्पाता १४ मथित १५ प्रसूतिगृह । वि अनश्वर २ शुभ ३ अशुभ ।

अरिष्टक, स पु (स) फेनिलवृक्ष । (स न) फेनिलबीजम् (रीठा) ।

अरिहा, वि (स -हन्) रिपुदमन, रिपुजय । स पु शत्रुघ्न ।

अरी, अव्य (सं अरे) अयि ।

अरुंतुद, वि (स) मर्म, भेदिन् स्पृश २ दुःख दायक ३ कटुभाषिन् । (स पु) शत्रु ।

अरुंधती, स स्त्री (स) वसिष्ठपत्नी २ दक्ष पुत्री ३ नक्षत्रविशेष ।
अरु, अव्य , दे 'और' ।
अरुई, स स्त्री दे 'कचालू' ।
अरुचि, स स्त्री (स) इच्छाऽभाव २ अग्नि मान्द्य ३ घृणा ।
—कर, वि बीभत्स, गर्ह्य, उद्वेगकर ।
अरुचिर, वि (स) अप्रिय, अरुचिकर, असभ्य, बीभत्स ।
अरुज, वि (स अ) नीरोग, स्वस्थ ।
अरुण, वि (स) रक्त लोहित । स पु सूर्य २ सूर्यसारथि ३ सन्ध्याप्रकाश ४ प्रभात ५ कुंकुम ६, गुड़ ।
—उदधि, स पु (स) समुद्रविशेष ।
—उदय, स पु (स) प्रभात, दिनमुखम् ।
—उपल, स पु (स) पद्मराग, शोणरत्नम् ।
—चूड़, स पु (स) कुक्कुट ।
अरुणा, स स्त्री (स) मञ्जिष्ठा २ कदम्ब ३ रक्तवर्णा गौ ४ उषस (स्त्री) ।
अरुणाई, स स्त्री (स अरुण >) रक्तता, अरुणिमन् ।
अरुणात्मज, स पु (स) शनि, शनैश्चर, सौरि २ यम ३ सुग्रीव ४ कर्ण ५ जटायु ।
अरुणिमा, स स्त्री (स णिमन् पु) रक्तिमन्, लोहित्यम् ।
अरूप, वि (स) अमूर्त निराकार ।
अरे, अव्य (स) हे, अयि, अये, भो २ अहो (सब अव्य०) ।
अरोड़ा, स पु (स आरट्ट >) पश्चनदप्रान्तीय जातिविशेष ।
अर्क, स पु (स) सूर्य २ इन्द्र ३ स्फटिक ४ विष्णु ५ मन्दार ६ अग्रज ७ रविवार ८ उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रम् ९ द्वादश इति सख्या १० पण्डित । वि (स) पूज्य, अर्चनीय ।
—मंडल, स पु (स न) सूर्यबिंबम् ।
अर्क, स पु (अ) दे 'अरक' ।
अर्कज, स पु (स) सूर्यपुत्रा [१ यम २ शनैश्चर ३ अश्विनौ (द्वि) ४ सुग्रीव ५, कर्ण]
अर्कजा, स स्त्री (स) सूर्यपुत्री (यमुना तापी च नद्यौ) ।

अर्गल, स पु (स न) अर्गला, कपाटाव ष्टम्भकमुसल २ कपाट ३ अवरोध ४ कल्लोल ५ सन्ध्या घना ।
अर्गला, स स्त्री (स) दे 'अर्गल' २ (चिटकनी) कील -ल ३ गजबन्धनशृङ्खला ४ अवरोध ।
अर्घ, स पु (स) पूजाविधिभेद २ पूजा सामग्री ३ हस्तधावनार्थ जल, तद्दान वा ४ मूल्य ५ उपहार ६, सम्मानार्थं जलेन सेक ।
—देना, उदकादिदानेन तृप् (प्रे०), निषिच् (तु प अ)
—पात्र, स पु (स न) शङ्खाकारं ताम्र पात्रम् ।
अर्घट, स पु दे 'राख' ।
अर्घा, स पु (स अर्घ >) दे 'अर्घपात्र' ।
अर्घ्य, वि (स) पूज्य २ बहुमूल्य । स पु (स न) पूजाद्रव्यम् २ मधुभेद ।
अर्चक, वि (स) पूजक, उपासक ।
अर्चा, स स्त्री (स) पूजा २ प्रतिमा, मूर्त्ति (स्त्री) ।
अर्चि, स स्त्री (स) अर्चिस् (न, स्त्री) शिखा २ तेजस (न) ३ किरण ।
अर्चित, वि (स) पूजित २ सत्कृत ।
अर्चन, स पु (स न) पूजा, अर्चा, अर्चना २ सत्कार ।
अर्चनीय, वि (स) पूजनीय २ सत्कार्य ।
अर्चिष्मान्, वि (स मत) भास्वर, कान्तिमत् शिखा-ज्वाला-युत अग्नि । स पु (स) अग्नि २ सूर्य ३ विष्णु ।
अर्ज़, स स्त्री (अ) प्रार्थना, याचना २ विस्तार, परिणाह ।
—करना, क्रि स, याच (भ्वा उ से) सविनय निविद् (प्रे) ।
अर्जन, स पु (स न) उपार्जन, सचय, सग्रह, उपादानम् ।
—करना, क्रि स, उप, अर्ज् (चु) सग्रह् (क्र प से)
अर्जित, वि (स) उपार्जित, संगृहीत, सचित ।
अर्ज़ी, स स्त्री, (अ) प्रार्थना-निवेदन,-पत्रम् ।

अर्जी—दावा, स पु (अ) अभियोग-भाषा, पत्रम्।

अर्जुन, स पु (स) धनंजय, पार्थ, कपिध्वज, गुडाकेश, गाण्डीविन् २ सहस्त्रार्जुन ३ वृक्षभेद ४ मयूर। वि श्वेत २ स्वच्छ।

अर्जुनी, स स्त्री (स) शुक्ला गौ (स्त्री) २ कथा ३ कुट्टनी

अर्णव, स पु (स) समुद्र २ सूर्य ३ अन्तरिक्ष ४ चतुर इति संख्या।

अर्त्तिका, स स्त्री (स) अग्रजा, (अत्तिका) ज्येष्ठभगिनी।

अर्ति स स्त्री (स) पीडा, व्यथा २ चापाग्रम्।

अर्थ, स पु (स) शब्दाशय २ प्रयोजन ३ कर्मन् (न) ४ इन्द्रियविषय ५ धनम्।

—देना, कि स अभि धा (जु उ अ) सूच् (चु), द्युत (प्रे)।

—बताना, कि स, व्या-ख्या (अ प अ), विद् (स्वा उ से), व्याचक्ष (अ आ से) अर्थ प्रकाश (प्रे)।

—कर, वि (स) लाभप्रद, फलावह। (-करी स्त्री)।

—दण्ड, स पु (स) धनदण्ड।

—पति, स पु (स) कुबेर २ नृप।

—पिशाच, वि (स) कृपण, कोमिन्।

—वाद, स पु (स) विविधवाक्येषु अन्यतमम् (न्या)।

—वेद, स पु (स) शिल्पशास्त्रम्।

—शास्त्र, स पु (स न) धनप्राप्तिरक्षावृद्ध्याद्युपायदर्शक शास्त्रम्।

—सचिव, स पु (स) अर्थमन्त्रिन्।

अर्थात्, अ० (स) अथ आशय, दे 'यानीने'।

अर्थान्तर, स पु (स न) अन्य भिन्न द्वितीय, अर्थ।

—न्यास, स पु (स) अर्थालंकारभेद (सा)।

अर्थापत्ति, स स्त्री (स) प्रमाणभेद (न्या) २ अलंकारभेद (सा)।

अर्थालंकार, स पु (स) अर्थचमत्कारयुतोऽलंकार (सा)।

अर्थी, वि (स र्थिन्) इच्छु, इच्छुक, इच्छक, अभिलाषिन् २ कार्यार्थिन्। (अर्थिनी स्त्री) स पु, वादिन्, अभियोक्तृ २ सेवक ३ धनिक।

अर्दन, स पु (स न) पीडन, हिंसा २ याचनम्।

अर्दित, वि (स) पीडित २ हत ३ याचित ४ गत।

अर्द्ध, वि (स) सामि—। स पु, अर्द्ध -र्द्ध, अर्द्ध, भाग -अंश।

—चन्द्र, स पु (स) अष्टम्याश्चन्द्र २ चन्द्रक, मयूरपक्षस्थचन्द्रचिह्न ३ नखक्षत ४ चन्द्रबाण (ॅ) ५ बहिष्काराय ग्रीवायां ग्रहणम् ६ त्रिपुण्ड्रभेद।

—भाग, स पु (स) अर्द्ध – र्द्ध, अर्द्धांश।

—मागधी, स स्त्री (स) प्राकृतभाषाभेद (यह कभी मथुरा से पटना तक बोली जाती थी)।

—वृत्त, स पु (स न) वृत्तार्द्ध, अर्द्धमंडलम् २ वृत्तपरिधेरर्द्धभाग।

—समवृत्त, स पु (स न) छन्दोभेद।

अर्द्धांग, स पु (स न) अर्द्ध,-भाग -अंश २ पक्ष,-आघात -वायु ३ शिव।

अर्द्धांगिनी, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या।

अर्द्धांगी, स पु (स -गिन्) शिव। वि, अर्द्धांगरोगग्रस्त,पक्षवायुपीडित।

अर्पण, स पु (स न) उपहरण, उपनयन, दान २ उपायन, उपहार ३ स्थापनम्।

—करना, कि स, उपहृ-उपनी (भ्वा प अ) उपस्था (प्रे) ऋ (प्रे अर्पयति)।

अर्पित, वि० (स) दत्त, उद्-वि,-सृष्ट।

अर्बुद, स पु (स पु न) दशकोटिसंख्या २ अरावलीपर्वत ३ मेघ ४ मांसकीलरोग ५ द्वैमासिको गर्भ।

अर्वा, वि (अ०) चतुर्।

अर्भक, वि (स) अल्प, लघु, २ मूर्ख ३ कृश। स पु, बालक, वटु।

अर्य्य, स पु (स) स्वामिन् २ ईश्वर ३ वैश्य। वि श्रेष्ठ। (अर्या, अर्याणी,अर्यी स्त्री)।

अर्य्यमा, स पु (स -मन्) सूर्य २ आदित्यविशेष ३ विशिष्ट पितर (बहु०) ४ उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रम्।

अर्वाक्, अव्य (स) पश्चात्, इदानींतने काले, नातिचिरात् प्राक्, अचिर २ समीप पे, निकट दे।

अर्वाचीन, वि (स) नूतन नातिपुराण, आधुनिक (—नी स्त्री), अभिनव।

अर्श, स पु (स—र्शस् न) गुदकीलक, गुदांकुर।

अर्श, स पु (अ) आकाश -श २ स्वर्ग।

अर्हत, स पु (स) जिन २ बुद्ध ३ शिव वि मान्य।

अर्ह, वि (स) पूज्य २ योग्य।

अर्हणीय, वि (स) पूज्य, समान्य, पूजनीय।

अर्हत्, वि (स) मान्य, अर्चनीय।

अर्हित, वि (स) पूजित, समानित।

अल, अव्य, दे 'अलम्'।

अलंकार, स पु (स) आभरण, मण्डन, वि,भूषण २ शब्दार्थयोश्चमत्कारविशेष (सा०)।

अलंकृत, वि (स) वि,भूषित, मंडित, धृताभरण २ मस्कृत, परिष्कृत।

—करना, क्रि स, वि, भूष (चु०), अलंकृ, परिष्कृ, सस्कृ, मण्ड् (चु०), प्रसाध (प्रे०)।

अलंघनीय, वि (स) अलंघ्य, दुरतिक्रम, दुस्तर।

अल, स पु (स न) (=बिच्छू का डंक) लूम, अ(आ)लिदश, प्र(प्रो)ण, कण्टक—शङ्कु। १ हरिताल २ विष, विषम्।

अलक, स पु (स) कुरल, चूर्णकुन्तल = केश, पाश -कलाप।

अलकतरा, स पु दे कोलटार'।

अलकनन्दा, स स्त्री (स) नदीविशेष।

अलकली, स स्त्री (अ) क्षार।

अलका, स स्त्री (स) कुबेरनगरी, 'यक्षपुरम्'।

—पति, स पु (स) कुबेर।

अलकावलि, स स्त्री (स) केशकलाप।

अलकोहल, स पु (अ) सुरा।

अलक्त, अलक्तक, स पु (स.) ला (रा) क्षा, जतु (न), याव, रक्ता, द्रुमामय २ लाक्षानिर्मितरंगभेद।

अलक्षित, वि (स) अदृष्ट, अवीक्षित २ अदृश्य ३ अज्ञात ४ गुप्त।

अलक्ष्य, वि (स) अदृश्य २ अतीन्द्रिय।

अलख, वि (स अलक्ष्य) दे 'अलक्ष्य'।

—धारी, स पु (स अलक्ष्यधारिन्) गोरक्षनाथानुयायिन साधव (बहु०)

—जगाना, मु, भिक्षायाचनम्।

अलग, वि (स अलग्न) पृथक् (अव्य) वि, भिन्न, वियुक्त, विच्छिन्न, असलग्न।

—करना, क्रि स, पृथक् कृ, विघट् विश्लिष् (प्रे), वियुज् (चु०)।

—होना, क्रि अ, पृथक् भू, वियुज् (आ० ना) विश्लिष् (दि प अ)।

अलगनी, स स्त्री (स आलग्न>) वसनालंबनी।

अलगोझा, स पु (अ) मुरली वंश वेणु, भेद।

अलज्ज, वि (स) निर्लज्ज, धृष्ट, विघात।

अलपाका, स पु (स्पे० पलपाका) जन्तुभेद २ तस्य कर्णा ३ तदूर्णानिर्मित सूक्ष्म वस्त्रभेद।

अलफ, स पु (अ अलिफ) अरबीवर्णमाला या प्रथमवर्ण।

अलबत्ता, अव्य (अ) निरस देह, निस्संशयम् २ आम, सत्यम् ३ किन्तु, परन्तु।

अलबम, स पु (अ) चित्रपञ्जिका।

अलबेला, वि (स अलभ्य> ?) वेषाभिमानिन्, छैल, रूपगर्वित, दर्शनीयमानिन् २ अद्भुत ३ कामचारिन्, मनवहित।

अलब्ध, वि (स) अप्राप्त, अनधिगत, अहस्तगत।

अलभ्य, वि (स) अप्राप्य २ दुर्लभ ३ अमूल्य।

अलम्, अव्य (स) यथेष्ट, पर्याप्त, प्रचुरम्।

अलम, स पु (अ) शोक, दुख २ ध्वज।

अलमनक, स पु (अ) पञ्चांग, पञ्जिका।

अलमस्त, वि (फा) मत्त, क्षीव २ निश्चिन्त।

अलमारी, स स्त्री (पुर्त० अलमारियो) उत्थितपिटक।

अलमास, स पु (फा) हीरक, वज्र-ज्रम्।

अललटप्पू, वि (देश०) दैवाधीन, आकस्मिक।

अलवान, स पु (अ) ऊर्णप्रावार ।
अलस, वि (स) मन्द, मन्थर आलस्य शील ।
अलसान नि, स स्त्री (स आलस्यम्) मान्द्यम्, तन्द्रिका ।
अलसाना, क्रि अ, (हि अलसान) शिथिलायन (ना धा), शिथिलीभवी मन्दी, भू ।
अलसी, स स्त्री (स अतसी) उमा, क्षुमा । (बीज उमा अतसी-बीजम् ।
अलहदगी, स स्त्री (अ०) पृथक्ता पार्थक्यम्
अलहदा, वि (अ) अन्य, भिन्न, पृथक् ।
अलात, स पु (स न) अङ्गार २ ज्वलत् काष्ठ, उल्का ।
—चक्र, स पु (स न) उल्कापूर्णनन चक्रम् ।
अलान, स पु (स आलान) गजबन्धनस्तम्भ २ हस्तिबन्धनशृङ्खला ३ बन्धन, निगड ।
अलानिया, अ० (अ०) प्रकट, निर्भय, निशङ्कम् ।
अलाप, स पु दे 'आलाप' ।
अलापना, क्रि स (स आलापनम्) आलप् (भ्वा प मे), स्वरलयम् उत्पद् (प्रे०) २ गै (भ्वा प अ गायति) ।
अलामत, स स्त्री (अ) लक्षण, चिह्न, अभिज्ञानम् ।
अलार्म घड़ी, स स्त्री (अ एलार्म+स घटी) प्रबोधन घटी घटिका ।
अलाव, स पु (स अलात >) अग्निराशि, अङ्गारनिकर ।
अलावा, क्रि वि (अ) विना, ऋते २ दे 'अतिरिक्त' ।
अलिंग, वि (स) लिङ्ग-लक्षण चिह्न, रहित हीन । स पु, ईश्वर २ विहायस ।
अलिंजर, स पु (स) (बड़ा घड़ा) अलञ्जर, मणिक ? (झज्झर) कर्करी, गलन्तिका, आलु (स्त्री) ।
अलिंद[1], स पु (स अलिन्द) भ्रमर द्विरेफ ।
अलिंद[2], स पु (स) आलीन्द प्रघ (घा) ण, प्रघ (घा) न, २ बहिर्द्वारप्रकोष्ठ ।
अलि, स पु (स) भ्रमर, शिलीमुख २ पिक ३ काक ४ वृश्चिक ५ कुक्कुर ६ दे 'अली' ।
अली[1], स स्त्री (स आलि) सखी, सहचरी २ श्रेणी, पंक्ति (स्त्री) ।
अली[2], स पु (स अलि) षट्पद, भ्रमर ।
अलीक, वि (स) असत्य, अनृत, वितथ ।
अलील, वि, (अ) रोगिन्, रुग्ण ।
अलुमीनम, स पु (अ एलुमीनियम) स्फटयातु (न) ।
अलूचा, स पु (फा आलूच) अलुचम् ।
अलेख[1], वि (स) अज्ञेय २ अगणित ।
अलेख[2], वि (स अलेख्य) अदृश्य ।
अलेख्य, वि (स) लेखानर्ह ।
अलोन ना, वि (स अलवण) लवणहीन २ नीरस (अलोनी स्त्री) ।
अलोल-कलोल, स स्त्री (स लोल कल्लोल) क्रीडा, लीला, रङ्ग ।
अलौकिक, वि (स) लोकोत्तर, लोकबाह्य २ अपूर्व, अद्भुत, ३ अति,-मर्त्य मानुष, अमानुषिक ।
अल्टिमेटम स पु (अ) अन्तिमेत्थम्, अन्तिम,-उपन्यास अभिसन्धि (पु) ।
अल्ट्रावायोलेट रे, स स्त्री (अ) अतिनील रुगरश्मि ।
अल्प, वि (स) स्वल्प, स्तोक, दभ्र, न्यून, क्षुद्र अल्प-लघु, परिमाण २ ह्रस्व, खर्व, वामन ।
—आहार, स पु (स) मितभोजनम् ।
—आहारी, वि (स रिन्) मितभुज्, अल्पाशन ।
—आयु, वि (स -युस) अचिर,-जीवन जीविन् । स पु, बाल, छाग ।
—जीवी, वि (स विन्) अचिरायुष्य ।
—ज्ञ, वि (स) स्तोकज्ञ, अल्पविद् २ मन्दबुद्धि ।
—ज्ञता, स स्त्री (स) स्तोकज्ञता २ अज्ञता ।
—प्राण, स पु (स) अल्पप्राणाचार्या वर्णाः (क्, ग, ङ, च्, ज्, ञ्, आदि ।)
—बुद्धि, वि (स) मूर्ख, मूढ, दुर्मति, जड ।
—वयस्क, वि (स) अप्राप्त,-व्यवहार वयस्क, बाल ।
अल्पता, स स्त्री (स) न्यूनता त्व, अल्पत्व २ लघुता त्व ।
अल्पशः, अव्य (स) स्तोकशः, अल्पाल्प २ शनैः शनैः, क्रमशः (सब अव्य)

अल्ल, स पु (अ आल) वंशनामन् (न), उपगोत्रनामन् (दुब्बे, चौबे आदि)।

अल्लम-गल्लम, स पु (अनु) प्रलाप, दे 'अंडबंड'।

अल्लाह, स पु (अ) ईश्वर।

—ओ अकबर, वाक्य (अ) ईश्वरो हि महान्।

अल्हड़ वि (स अल = बहुत + लल = ललना >) विलासिन्, विनोदिन् २ अनवधान ३ अल्पवयस्क ४ उद्धत ५ अज्ञ। स पु नवजातवत्स।

—पन, स पु, विनोदिता २ अनवधानता ३ अल्पवयस्कता ४ उद्धतता ५ अज्ञता।

अवंति-न्ती, अवन्तिका, स स्त्री (स) उज्जयिनी नगरी।

अव, उप (स) निश्चयानादरन्यूनतानिम्नता व्याप्तिसूचक उपसर्ग।

अवकलन, स पु (स न) दर्शन, ईक्षण, वीक्षणम् २ अवगमन, ज्ञानम् ३ ग्रहणम्।

अवकाश, स पु (स) स्थानं, स्थल, प्र, देश २ गगन ३ दूरता ४ अवसर ५ विश्राम।

अवकिरण, स पु (स न) विकिरण, विक्षेपण, प्रासनम्।

अवकीर्ण, वि (स) प्रविभा, कीर्ण, प्रविसृत, विक्षिप्त २ ध्वस्त, नाशित ३ स, चूर्णित।

अवकीर्णी, वि (स र्णिन्) क्षतव्रत, नष्टवीर्य।

अवकुंचन, स पु (स न) मोटन, वक्रीकरण, व्यावर्तन, आकुंचनम्।

अवकुंठित, वि (स) कातर, क्लीब, भीरु।

अवकृष्ट, वि (स) बहिष्कृत २ निष्कासित ३ नीच। स पु दास।

अवकेशी, वि (स-शिन्) निष्फल २ निस्सन्तान।

अवक्रय, स पु (स) मूल्य, अर्घ २ (किराया) भाटक, भाटि, आनर ४ कर।

अवक्रोश, स पु (स) आक्रोश, शाप, गर्हा।

अवगत, वि (स) विदित, ज्ञात, बुद्ध परिचित २ निगत, पतित।

अवगति, सं स्त्री (स) ज्ञान, बोध, अवगमन २ कुगति निगति (स्त्री)।

अवगाढ, वि (स) निबिड, गुप्त २ निमग्न, प्रविष्ट।

अवगाहन, स पु (स न) जले प्रविश्य स्नान, निमज्जन २ प्रवेश ३ मथन विलोडन ४ अनुसन्धान ५ मनन, विचारणा।

अवगीत, वि (स) निन्दित, लाञ्छित। स पु (स न) निन्दा, अपवचनम्।

अवगुंठन, स पु (स न) आवरण, व्यवधान, आच्छादन, संवरण २ (घूंघट) आवरक वस्त्रम्।

अवगुंफन, स पु (स न) सम्प्रथन, वि, रचन, तन्त्रीभिर्गुणैर्वा बन्धनम्।

अवगुण, स पु (स) दोष, व्यसनं २ अपराध, स्खलितम्।

अवग्रह, स पु (स) विघ्न, प्रतिबन्ध २ अनावृष्टि (स्त्री) ३ सेतु वप्र, बन्ध, वप्र ४ सन्धिविच्छेद (व्या०) ५ शाप।

अवघट, वि (स अव + घट्ट >) विकट, दुर्गम।

अवघर्षण, स पु (स न) दे 'रगड़ना' तथा 'पीसना'।

अवचन, स पु (स न) निःशब्दता, तूष्णींभाव। २ निन्दा।

अवचनीय, वि (स) अकथनीय, अश्लील २ अनिन्द्य, अगर्ह्य।

अवचय, स पु (स) उत्पाटन, उद्धरण, उल्लुञ्चनम्।

अवच्छिन्न, वि (स) पृथक्कृत, विश्लेषित २ ससीम, ३ सविशेषण, विशिष्ट।

अवच्छेद, स पु (स) भेद, पृथग्भाव २ इयत्ता ३ अवधारण, निश्चय ४ परिच्छेद, विभाग।

अवच्छेदक, वि (स) विभाजक, भेदक २ इयत्ताकारक ३ अवधारक ४ निश्चायक। स पु, विशेषणम्।

अवज्ञा, स स्त्री (स) अव अप, मान, अनादर, अवधीरणा २ आज्ञोल्लंघन ३ पराजय ४ अलंकारभेद (सा)।

अवज्ञात, वि (स) अवधीरित, अपमानित, तिरस्कृत।

अवतंस, स पु (स पुं न) भूषण, अलंकार २ शिरोभूषण ३ कर्णभूषण ४ मुकुट ५ श्रेष्ठजन ६ माला, हार ७ आतृव्य ८ पाणिग्राहक।

अवतरण, स पु (स न) अवरोहण, अधोगमन २ पारगमन ३ शरीरधारण, जन्मग्रहण ४ प्रतिलेख, प्रतिलिपि-प्रतिकृति (स्त्री), ५ प्रादुर्भाव ६ घट्ट, सोपान ७ घट्ट।

अवतरणी णिका, स स्त्री (स) ग्रन्थ पुस्तक, प्रस्तावना भूमिका-उपोद्घात २ रीति (स्त्री)।

अवतार, स पु (स) पुराणमतानुसार देव विशेषस्य जीवविशेषस्य वा शरीरधारणम्। (विष्णु जी के २४ अवतार—ब्रह्मा, वाराह, नारद, नर-नारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ, पृथु मत्स्य, कूर्म, धन्वन्तरि, मोहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, वेदव्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध कल्कि, हंस, हयग्रीव)।

—लेना, कि, अ, अवतॄ (भ्वा प से), अवरुह् (भ्वा प अ), शरीरं धृ (प्रे)।

अवतारण, स पु (स न) नीचैर्नयन २ अनुकरण ३ उद्धरणम्।

अवतारी, वि (स-रिन्) अवरोहिन्, अधोगामिन् २ देवांशधारिन्, अलौकिक।

अवदात, वि (स) श्वेत, शुभ्र २ शुद्ध ३ गौर ४ पीत।

अवदान, स पु (स न) सुकर्मन् (न) २ खण्डन ३, पराक्रम ४ शोधन ५ कढ़ीर रम्।

अवदारण, स पु (स) क्रकचेन छेदन-पाटनम् २ विभाजन ३ खदानम् ४ दे 'कुदाल'।

अवदीर्ण, वि (स) क्रकचेन पाटित २ विभाजित ३ खात।

अवद्य, वि (स) अधम, पाप, २ निन्द्य, कुत्सित।

अवध, स, पु (स अयोध्या >) कोशल (स) देश (बहु) २ अयोध्या।

अवधं, त्रि (स अवध्य) रक्ष्य, न मारने योग्य।

अवधान, स पु (स न) मनोयोग, अवेक्षा, सतर्कता।

अवधार, स पु (स) निश्चय, निश्चितता २ सीमा, अवधि (पु)।

अवधारण, स पु (स न) निर्धारण, निश्चय।

अवधारित, वि (स) निर्धारित, निश्चित।

अवधार्य्य, वि (स) निर्धारणीय, निश्चेतव्य।

अवधि, स स्त्री (स पु) सीमा, पराकाष्ठा, पर्यन्त २ नियत,-काल-समय ३ मृत्युकाल। अव्य (स) यावत् (उ अद्यावधि = अद्य यावत् = आज तक)।

अवधी, वि (हि अवध) कोशल (स) सम्बन्धिन् २ कोसल (स) प्रान्तस्य भाषा।

अवधीरणा, स स्त्री (स) दे, 'अवज्ञा'।

अवधीरित, वि (स) अवज्ञात, तिरस्कृत।

अवधूत, स पु (स) संन्यासिन्, योगिन् साधु। वि (स) कम्पित २ विनष्ट।

अवधेय, वि (स) विचारणीय, ध्येय २ प्रदेय ३ ज्ञातव्य।

अवनत, वि (स) नीच, निम्न, नत, नीचस्थ २ पतित ३ न्यून।

अवनति, स स्त्री (स) ह्रास, क्षय, हानि (स्त्री) २ अधोगति (स्त्री) ३ नम्रता।

अवनि नी, स स्त्री (स) पृथिवी, भूमि (स्त्री)

—इन्द्र, ईश, स पु (स) नृप।

—तल, स पु (स न) भू, पृष्ठ तलम्।

—पति, पाल, स पु (स) भूप।

अवबोध, स पु (स) जागरण २ ज्ञानम्।

अवभृथ, स पु (स) यज्ञशेषकर्मन् (न) २ यज्ञान्तस्नानम्।

अवम, वि (स) अधम, अन्तिम २ रक्षक, परिरक्षक २ नीच, निन्दित। स पु (स) पितृगणविशेष २ मलमास।

अवमत, वि (स) अवधीरित, तिरस्कृत।

अवमति, स स्त्री (स) अपमान तिरस्कार।

अवमर्दन, स पु (स न) पीडन, मर्दन, उपमर्द।

अवमर्श, स पु (स) स्पर्श २, संपर्क ३ सन्धिविशेष (सा०)

अवमर्ष, स पु (स) सम्-, आलोचन-ना २ सन्धिविशेष (सा०) ३ आक्रमणम्।

अवमर्षण, स पु (स न) असहिष्णुता, दे, 'असहनशीलता' २ अपमार्जन, विलोपनम्।

अवमान, स पु (स) दे 'अवमति'।

अवमानना, स स्त्री (स) अवधीरण, तिरस्कार।

अवयव, स पु (स) अङ्ग, भाग २ अङ्ग, गात्र, शरीरैकदेश ३ न्याये पञ्च दश वा

वाक्यांश (=प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनयन, निगमन, जिज्ञासा, संशय, शक्य प्राप्ति प्रयोजन, संशय-व्युदास)।

अवयवी, वि (सं विन्) अङ्गिन्, सावयव २ पूर्ण, समग्र। सं पु, सावयव पदार्थ ३ देह।

अवर, वि (सं) अन्य, अपर २, अधम, नीच।

अवराधक, वि (सं आराधक) पूजक।

अवराधन, सं पु (सं आराधन) पूजा, अर्चा।

अवरुद्ध, वि (सं) उप प्रति, रुद्ध, प्रतिहत, प्रतिबाधित २ आच्छादित, गूढ।

अवरूढ, वि (सं) अवतीर्ण, अधोगत।

अवरेब, सं पु (सं अव+रेव् >) वक्र निर्यग्, गति (स्त्री) २ वस्त्रस्य तिर्यक् कर्तनम्।

—दार, वि, तिर्यक्कृत।

अवरोध, सं पु (सं) विघ्न, व्याघात २ अवरोध ३ निरोध ४ अनुरोध ५ अन्तःपुरम्।

अवरोधन, सं पु (सं न) निवारण २ अन्तःपुरम्।

अवरोपण, सं पु (सं न) उन्मूलन, उत्पाटनम्।

अवरोह, सं पु (सं) अवतार, पतनम् २ अवनति (स्त्री) अलंकारभेद (सा) स्वरावतार (संगीत)।

अवरोहण, सं पु (सं न) अवतरण, नीचे गमनम्।

अवर्ण, वि (सं) रंगरहित, वर्णविहीन २ कुवर्ण, कुरंग ३ वर्णधर्मशून्य। सं पु, अष्टादशविधोऽकार (व्या)।

अवर्ण्य, वि (सं) अवर्णनीय, अनिर्वाच्य, अकथनीय, वर्णनाविषय। सं पु, उपमानम्।

अवलंब, सं पु (सं) आश्रय, शरण, आधार, अवष्टम्भ।

अवलंबन, सं पु (सं न) दे 'अवलंब'। २ धारण, ग्रहणम्।

अवलंबित, वि (सं) आश्रित, अधीन, आयत्त -विघ्न,-तंत्र (समासान्त में)।

अवलंबी, वि (सं-बिन्) दे 'अवलंबित' २ आश्रयद (अवलंबिनी आश्रिता स्त्री)।

अवलक्ष, वि (सं) श्वेत-सित,-रंग-वर्ण। सं पु (सं) श्वेत,-रंग-वर्ण।

अवलिप्त, वि (सं) गर्वित, दृप्त २ अक्त, दिग्ध ३ लीन।

अवली, सं स्त्री (सं आवली लि स्त्री) पंक्ति, तति, राजी-जि (सब स्त्री) २ समूह, राशि।

अवलीढ, वि (सं) आ,-परि-सं-लीढ। २. भक्षित, भुक्त, ग्रस्त।

अवलेप, सं पु (सं) दर्प, गर्व २ वि-प्र-अनु,-लेप।

अवलेपन, सं पु (सं न) अभ्यञ्जन, विलेपन २ उद्वर्तन, गात्रानुलेपनी ३ अहंकार ४ दूषणम्।

अवलेह, सं पु (सं) लेह्य पदार्थ २ लेह्य मौषधम्।

अवलेहन, सं पु (सं न) जिह्वाग्रेण स्पृष्ट्वा स्वादनम्।

अवलोकन, सं पु (सं न) वि-ईक्षण, दर्शन, निरूपण २ निरीक्षण, अवेक्षणम्।

—करना, क्रि स, अव-वि-आ,-लोक् (भ्वा आ से, चु) प्र-वि-अव,-ईक्ष् (भ्वा आ से)।

अवलोकनीय, वि (सं) दर्शनीय, ईक्षणीय।

अवलोकित, वि (सं) ईक्षित, दृष्ट, निरूपित।

अवश वि (सं) वि-पर,-वश, अशक्त।

अवशिष्ट, वि (सं) अवशेष, उद्वृत्त।

अवशेष, वि (सं) अवशिष्ट, उद्वृत्त २. समाप्त। सं पु (सं) अवशिष्ट, शेषभाग २ अन्त, समाप्ति (स्त्री)।

अवश्यभावी, वि (सं-विन्) अपरिहार्य, *अनिवार्य*।

अवश्य, क्रि वि (सं अवश्यम्) नियत, ध्रुव, असंशय, नून, नाम, खलु (सब अव्यय)।

अवश्य[2], वि (सं) उच्छृङ्खल, दुर्दमनीय, दुर्निग्रह, अविधेय, दुर्निवार। (अवश्या = दुर्दमनीया स्त्री)।

अवश्यमेव, क्रि वि, दे 'अवश्य'।

अवश्याय, सं पु (सं) तुषार, प्रालेय, हिमजलम् २ अभिमान, गर्व।

अवष्टम्भ, सं पु (सं) आश्रय २ स्तम्भ ३ धृष्टता।

अवसन्न, वि (सं) विषण्ण, म्लान, खिन्न, शोकार्त २. विनाशोन्मुख ३ अलस।

अवसर, स पु (स) समय, काल २ अव काश, क्षण ३ दैव, दैवगति (स्त्री)।

अवसर्जन, स ■ (स न) वि उत्-सर्जनम् उज्झन, त्यजनम्।

अवसर्पण, म पु (स न) अवरोहण, अधो गमनम्।

अवसाद, स पु (स) नाश, क्षय २ विषाद ३ दैन्य ४ भ्रान्ति (स्त्री) ५ निर्बलता।

अवसान, स पु (स न) विराम, यानवि वृत्ति (स्त्री), विश्रम्म २ समाप्ति (स्त्री), अन्त ३ मृत्यु ४ सीमा ५ सायकाल ।

अवसाय, स पु (स) अन्त समाप्ति (स्त्री) २ अवशिष्ट ३ पूर्ति (स्त्री) ४ सकल्प ५ निर्णय ।

अवसित, वि (स) समाप्त २ ज्ञात ३ परि पक्व ४ निश्चित ५ सम्बद्ध ।

अवसृष्ट, वि (स) त्यक्त २ दत्त ३ निष्का सित ।

अवसेचन, स पु (स न) प्रोक्षण, अभिप्ला प्लावन २ प्र, स्वेदन ३ जलूकादिभि रक्त निष्कासनम्।

अवस्कन्द, स पु (स) सैन्यावास, शिबिरम् २ अवतास, वरयात्रावास ।

अवस्कर, स पु (स) विष्ठा, गूथ -थम्) २ [गुह्याङ्गम्, लिंगम्, योनि (क्रमश न स्त्री) गुदम्] ३ उच्छिष्टम्, निस्सारवस्तुसमूह ।

अवस्था, स स्त्री (सं) दशा, गति (स्त्री) २ समय ३ वयस्-आयुस् (न) ४ स्थिति (स्त्री)।

अवस्थान्तर, स पु (■ न) अन्यावस्था, दशापरिवर्तनम्।

अवहित, वि (स) सावधान, एकाग्र, अनन्य वृत्ति ।

अवहित्था, स स्त्री (स) आकारगुप्ति (स्त्री) लज्जादिवशात् चातुर्येण हर्षादि गोपन, भाव भेद (सा)

अवहेलन, स पु (स न) दे 'अवहेलना'।

अवहेलना, म स्त्री (स) अवज्ञा, अपमान २ आज्ञोल्लघन ३ उपेक्षा।

—करना, क्रि स, निक्रृ, अव-अव,-मन् (प्रे), अवज्ञा (कृ उ अ) २ आज्ञाम् अतिक्रम् (भ्वा प से) ३ उपेक्ष् (भ्वा आ से)।

अवहेलित, वि (स) तिरस्कृत, उपेक्षित ।

अवान्तर वि (सं) अन्तर्गत, मध्यवर्तिन् । स पु (स न) अन्तर, अभ्यन्तर, उदर, गर्भः।

—दिशा, ■ स्त्री,(सं) विदिशा, मध्यमदिशा।

—भेद, स ■ (स) भागस्य भाग, अन्त र्गतभेद ।

अवाक्, वि (स अवाच्) मौनिन्, तूष्णीक, नि शब्द २ स्तब्ध, चकित ।

—रहना,—होना, क्रि अ, तूष्णीं-भूष,-आस् (अ आ से), वाच यम् (भ्वा प अ)।

अवाङ्मनसगोचर, वि (स अवाङ्मनो गोचर) अवर्णनीय, अचिन्त्य (ईश्वर)।

अवाङ्मुख, वि (स) अधो-नत,-मुख। (-खी स्त्री) २ लज्जित ।

अवाची, स स्त्री (स) दक्षिणा, दक्षिणदिशा।

अवाच्य, वि (स) विशुद्ध, निर्दोष २ निन्द्य, गर्ह्य। स पु (स न) गाली, दुर्वचनम्।

अवात, वि (सं) निर्वात, वायु-पवन,-रहित।

अवाप्त, वि (सं) प्राप्त, अधिगत, लब्ध ।

अवार, स पु (सं पु न) अर्वाक्,-तीर- तटम्।

—पार, सं पु (सं) सागर, अब्धि ।

अवारणीय, वि (स) अनिवार्य अपरिहार्य, अवश्यभाविन्।

अवि, सं पु (सं) मेष, एडक २ छाग ३ सूर्य ४ मन्दार ५ पर्वत ६ मूषिक । सं. स्त्री, मेषी, एडका, उरणी ।

—पाल, स पु (स) मेषपालक ।

अविकल, वि (सं) अक्षीण, अनपचित २. समग्र, पूर्ण ३ निश्चल।

अविकल्प, वि (सं) निश्चित २ असंदिग्ध।

अविकारी, वि (स -रिन्) निर्विकार २ अप रिणत ।

अविकृत, वि (सं) शुद्ध २ अपरिणत।

अविगत, वि (स) अज्ञात २ अज्ञेय ३. विद्य मान ।

अविचल, वि (सं) ध्रुव, स्थिर ।

अविच्छिन्न, वि (स) निरन्तर, अविरत, सतत ।

अवितथ, वि (सं) सत्य, यथार्थ, तथ्य । सं. पु (स न) सत्य, ऋतम्।

अविद्यमान, वि (स) अनुपस्थित २ असत् ३ असत्य।

अविद्य, वि (स) निरक्षर, अज्ञ।

अविद्या, स स्त्री (स) अज्ञान, अबोध २ माया (वे) ३ कर्मकाण्ड ४ प्रथम क्लेश (योग)। -जन्य, वि (स) मोहज, अज्ञानजनित।

अविनाशी, वि (स) अनश्वर, अक्षय, अक्षर, अव्यय, चिरस्थायिन् २ नित्य शाश्वत।

अविनीत, वि (स) उद्दंड २ दुर्दान्त ३ धृष्ट।

अविभाज्य, वि (स) अनंशनीय, अखंडनीय।

अविमुक्त, वि (स) अमुक्त, संश्लिष्ट।

अविरत, वि (स) सतत, विरामरहित २ आसक्त, अनिवृत्त। क्रि वि (स न) सतत, अनवरतम्।

अविरल, वि (स) संलग्न २ निबिड, घन।

अविराम, वि (स) सतत, अनवरत २ अविश्रान्त।

अविवक्षित, वि (स) अनभिप्रेत, अनुद्दिष्ट २ वक्तुमनिष्ट, अनिष्टकथन।

अविवाहित, वि (स) अनूढ, कुमार, अकृत -पाणिग्रह-उपयाम-उद्वाह, अपरिणीत।

अविवेक, स पु (स) सदसद्विवेचनराहित्य, विचाराभाव २ अज्ञान ३ अन्याय ४ मिथ्या ज्ञानम् (सां)।

अविवेकी, वि (स-किन्) विवेकशून्य, अज्ञानिन्, अतत्त्वज्ञ २ विचारशून्य ३ मूर्ख ४ अन्यायकारिन्।

अविश्रान्त, वि (स) विश्रान्तिशून्य २ सतत, अविराम।

अविश्वसनीय | **अविश्वस्त** } वि (सं) विश्वासानर्ह, प्रत्ययायोग्य।

अविश्वास, स पु (स) अप्रत्यय, विश्वासाभाव।

अविश्वासी, वि (स-सिन्) शंकामग्नाय,-शील बुद्धि आ-,शंकिन् २ दे 'अविश्वस्त'।

अवेक्षण, स पु (स न) दर्शन, अवलोकन २ निरीक्षण, परीक्षणम्।

अवेक्षणीय, वि (स) दर्शनीय २ निरीक्षितव्य, परीक्षितव्य।

अवेद्य, वि (स) अज्ञेय २ अलभ्य।

अवेद्या, वि स्त्री (स) अवोढव्या, विवाहानर्हा।

अवैतनिक, वि (सं) निर्वेतन, भृतित्यागिन्, आदरवृत्ति।

अवैदिक, वि (स) वेदविरुद्ध, वेदाविहित।

अव्यक्त, वि (स) परोक्ष अतीन्द्रिय गोचर, अज्ञात, अनिर्वचनीय। स पु (स) विष्णु २ शिव ३ मदन ४ प्रकृति (स्त्री), ५ आत्मन् ६ परमेश्वर ७ मायोपाधिक महान् (न)।

अव्यपदेश्य, वि (स) अकथनीय २ अनिर्देश्य ३ निर्विकल्प (न्या०)।

अव्यय, वि (स) निर्विकार, अक्षय, नित्य, व्ययशून्य। स पु (स) परब्रह्मन् (न) २ विष्णु ३ शिव। (स न) सर्वविभक्तिलिंगवचनेषु एकरूप शब्द (उ० सदा, अप आदि, न्या०)।

अव्ययीभाव, स पु (स) समासभेद (उ० प्रतिदिन आ)।

अव्यलीक, वि (स) सत्य, यथार्थ २ प्रिय कृत्य।

अव्यवस्था स स्त्री (स) अक्रम क्रमभंग, व्यतिक्रम व्यस्तता, सक्षोभ २ अवधि ३ दुर्निर्वाह, दुर्णय।

अव्यवस्थित, वि (स) अक्रम, क्रमशून्य, २ निर्मर्याद ३ अनियतरूप ४ चपल।

—चित्त, वि (स) चंचल, चित्त मानस।

अव्यवहार्य, वि (स) व्यवहारायोग्य, उपयोगानर्ह २ पतित, पंक्तिच्युत।

अव्यवहित, वि (स) संलग्न, संसक्त, व्यवधानशून्य।

अव्यवहृत, वि (स) अप्रयुक्त, अप्रचरित (लि) त।

अव्याकृत, वि (स) अस्पष्ट, अविकसित स पु (स न) आदिम-तत्त्वम्।

अव्याप्ति, स स्त्री (स) असम्पूर्णव्यापन, व्याप्त्यभाव २ लक्षणस्य दोषभेद (न्या०)।

अव्याहत, वि (स) व्याघातशून्य, अप्रतिरुद्ध २ सत्य।

अव्युत्पन्न, वि (स) अज्ञ, मन्दमति २ व्याकरणानभिज्ञ ३, व्युत्पत्तिरहित (शब्द)।

अव्वल, वि (अ) प्रथम, आदिम २ उत्तम, श्रेष्ठ। स पु प्रारम्भ, उप-प्र-प्र-, क्रम।

अशंक, वि (सं.) निर्भय, निःशङ्क। क्रि वि. (सं. न.) निःशङ्कम्।
अशकुन, सं. पु (सं. पु. न.) अपशकुनः न, अजन्य, अव अशुभ-दुर्-लक्षणम्।
अशक्त, वि (सं.) निर्बल, अबल, २ अक्षम।
अशक्य, वि (सं.) असाध्य, अनिष्पाद्य, असम्भव।
अशन, सं. पु (सं. न) भोजन, अन्न, २. भक्षण, खादनम्।
अशरण, वि (सं.) अनाथ, निराश्रय।
अशरफ़ी, सं. स्त्री (फ़ा.) स्वर्णमुद्रा २ पुष्पभेद।
अशराफ़, सं. पु (फ़ा. शरीफ़ का बहु०) सज्जना आर्याः महानुभावाः (सब पु बहु०)
अशरीरी, वि. (सं.-रिन्) अकाय, अशरीर, अदेह २. अपार्थिव। सं. पु देव।
अशांत, वि (सं.) व्याकुल, व्यग्र, विह्वल, उद्विग्न, चपल, चचल।
अशांति, सं. स्त्री. (सं) अशमः, उद्वेगः, व्याकुलता, क्षोभः, व्यग्रता, सन्तोषाभावः।
अशास्त्रीय, वि. (सं.) शास्त्रविरुद्ध २. शास्त्र बाह्य।
अशिक्षित, वि. (सं.) अनक्षर, निरक्षर, अविद्य अज्ञ, अव्युत्पन्न।
अशिर, सं. पु. (सं.) अग्निः २. सूर्यः ३. वायुः। (सं. न.) हीरा, वज्र-त्रम्।
अशिर, वि. (सं -रस्) शीर्ष-मस्तक,-रहित सं. पु कबन्धः, रुण्डः-ण्डम्।
अशिष्ट, वि. (सं.) असभ्य, अविनीत, अभद्र, अनार्य।
अशिष्टता, सं. स्त्री (सं.) असभ्यता, धृष्टता दुःशीलता, विनयाभावः।
अशुद्ध, वि (सं.) अशुचि, अपवित्र २. अशोधित, असंस्कृत ३ भ्रान्त, वितथ।
अशुद्धता, सं. स्त्री. (सं.) अपवित्रता, अशुचिता, २. मलिनता ३. त्रुटिः-भ्रान्तिः (स्त्री)।
अशुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अशुद्धता'।
अशुभ, सं. पु (सं. न) अमगल, अहितं, अहितं २. पाप, अपराधः। वि. अमगल, अभद्र, अहित।
—सूचक, वि. (सं.) उत्पात-अनिष्ट, दर्शिन्।
अशेष, वि. (सं.) निःशेष, सर्व, समग्र, सकल, संपूर्ण, २. अनन्त, असीम, अगणित, बहु, ३. समाप्त, अवसित।
अशोक, वि. (सं.) दुःख-शोक,-रहित। सं. पु. (सं.) विशोकः, रक्तपल्लवः (वृक्ष) २. पारदः ३ शोकाभावः ४ नृपविशेषः।
—वाटिका, सं. स्त्री. (सं.) विशोकवाटः २. रावणस्य विशोकोद्यानम्।
अशौच, सं. पु (सं. न) अमेध्यता, अपवित्रता, अशुद्धता।
अश्क, सं. पु. (फ़ा.) अश्रु (न.), नेत्रजलम्।
अश्रद्धा, सं. स्त्री. (सं.) अविश्वासः, अप्रत्ययः, भक्तिनिष्ठा-अभावः।
अश्रान्त, वि. (सं.) स्वस्थ, अक्लान्त। क्रि. वि. (सं. न.) सततम्।
अश्रु, सं पु (सं. न) अस्रु (न.) वाष्पं, नयनाम्बु (न)।
—पात, सं. पु. (सं.) रुदित, रोदनम्।
—मुख, वि (सं) सास्र अश्रुलोचन, सबाष्प।
अश्रुत, वि. (सं.) अनिशान्त, अनाकर्णित २. अननुभवगम्य।
—पूर्व, वि. (सं.) अनाकर्णितपूर्व २. अद्भुत।
अश्रौत, वि. (सं.) अवेदोक्त, अवैदिक।
अश्लिष्ट, वि. (सं.) श्लेषरहित, एकार्थक २. असम्युक्त ३. असंगत।
अश्लील, वि. (सं.) व्रीडावह, ग्राम्य, कुत्सित, बीभत्स, अग्राम्य, अवाच्य।
अश्लीलता, सं. स्त्री. (सं.) ग्राम्यता, अवाच्यता।
अश्व, सं पुं. (सं.) तुरगः, घोटकः।
—आरोहण, सं पुं. (सं. न.) अश्वेन विहरणं, घोटकारोहणम्।
—आरोही, वि (सं.-हिन्) सादिन्, तुरगिन्,।
—गंधा, सं. स्त्री. (सं.) हय-वाजि,-गन्धा।
—तर, सं. पु. (सं.) वेगसरः (सचर)। (-तरी = वेगसरी स्त्री.)
—पति, सं. पु. (सं.) तुरगराजः २. सादिन् २. भरतमातुलः ३. नृपविशेषः।
—पाल, सं. पु (सं.) घोटकरक्षकः।
—मेध, सं. पु. (सं.) वाजिमेधः, क्रतुभेदः।
—शाला, सं. स्त्री (सं.) मन्दुरा, वाजिशाला।
अश्वत्थ, सं. पु. (सं.) चलदलः पिप्पलः।

अश्वत्थामा, सं पु (स मन्) द्रौणि, द्रोणायन, कृपीसुत, द्रोणाचार्यपुत्र ।

अश्वस्तन, वि (स) अश्वस्तनिक अघतन अघतनीय २ दरिद्र ।

अश्विनी, स स्त्री (स) घोटिकी, वडवा २ प्रथमनक्षत्र, दाक्षायणी ।

—कुमार, स ▮ (स रो द्वि०) अश्विनीसुतौ देवचिकित्सकौ, दस्रौ, स्ववैद्यौ ।

अषाढ़, सं पु., दे 'अषाढ़' ।

अषाढ़ी, स स्त्री (स आषाढी) आषाढमासस्य पूर्णिमा ।

अष्ट, वि तथा स पु (स अष्टन्) दे 'आठ'

—अंग, स पु (स न) योगस्याष्टांगानि (= यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) २ आयुर्वेदस्य अष्टविभागा (शल्य इ०) ३ शरीरस्याष्टांगानि यैः प्रणामो विहित (= जानुपाद हस्तवक्षशिरोवचनदृष्टिबुद्धय) ४ अष्टद्रव्य घटितधूपोपकरणभेद । वि (स) अष्टावयव २ अष्ट-भुज पार्श्व ।

—अध्यायी, स स्त्री (स) पाणिनीय व्याकरणम् ।

—कोण, स पु (स) अष्टास्र, अष्टकोण कृति (स्त्री) २ कुण्डलभेद । वि अष्टास्र, अष्टास्रिय ।

—धातु, स स्त्री (स पु) धात्वष्टकम् (= सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जसता, सीसा, लोहा, पारा) ।

—पदी, स स्त्री (स) अष्टपदसमूह २ छन्दोभेद ।

—पहर, स पु (स-प्रहरा) दिनस्याष्ट यामा । क्रि वि, अहर्निशं दिवानिशम् ।

—भुजा, स स्त्री (स) दुर्गा विन्ध्याचलवासिनी देवी ।

—मूर्ति, स पु (स) शिव २ शिवस्य अष्ट मूर्तय (= पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, यजमान, सूर्य, चन्द्र अथवा शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान, महादेव) ।

—वर्ग, सं पु (स) औषधविशेषाष्टकम् (= ऋषभ, जीवक, मेद, महामेद, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली) ।

अष्टक, स ▮ (स न) अष्टवस्तुसमुदाय (उ० शिवाष्टक) २ अष्टपद्यात्मककाव्यम् ३ ऋग्वेदस्याष्टमो भाग ४ अष्टाध्यायी ।

अष्टमी, स स्त्री (सं) तिथिभेद । वि स्त्री (स) ।

अष्टादश, वि तथा स पु (स शन्) दश अष्टौ च तद्बोधकावली (१८) च ।

असंख्य, वि (स) असंख्येय, असंख्यात, अगणित, संख्या-गणना,-अतीत, अगण्य ।

असंग, वि (स) एकल, एकाकिन् २ निर्लिप्त ३ भिन्न ।

असंगत, वि (स) पूर्वापरविरुद्ध, असम्बद्ध, अप्रासंगिक २ अन्याय्य, अनुचित, अयुक्त ।

असंगति, स स्त्री (स) अनन्वय सम्बन्धाभाव २ अनौचित्यम् ३ अलंकारभेद, (सा०) ।

असंतुष्ट, वि (स) संतोषरहित २ अतृप्त ३ खिन्न ।

असंतोष, स पु (स) असंतुष्टि (स्त्री), सन्तोषाभाव २ अतृप्ति (स्त्री) ३ खेद, ग्लानि (स्त्री) ।

असंबद्ध, वि (स) सम्बन्धरहित, असंश्लिष्ट २ स्वतन्त्र ३ असंगत, पूर्वापरसम्बन्धरहित ।

असंबाध, वि (स) विस्तीर्ण, सम्कीर्ण २ शून्य, निर्जन ३ सावकाश ४ निर्बाध ।

असंभव, वि (स) असाध्य, अशक्य, अघटनीय । स पु, अलंकारभेद (सा०) ।

असंभावित, वि (स) आकस्मिक, अतर्कित ।

असंभाव्य, वि (स) अतर्क्य अविचार्य, २ दु ।

असंभाष्य, वि (स) अकथ्य अवाच्य २, वार्तालापायोग्य (स न) कुवचनम् ।

असंयत, वि (स) अनर्गल, निरंकुश, उच्छृंखल २ नियमरहित, अनियत ३ अक्रम ।

असंशय, वि (स) निर्विकार, सन्देह-संशय रहित २ सत्य । क्रि वि (स न) निस्सन्देहम् ।

असंस्कृत, वि (स) असभ्य, अमसृण, अविनीत, अपरिष्कृत ।

असगंध, स स्त्री (स अश्वगन्धा) हयगंधा, गन्धा, प्रियकारी, रमादनी, कुष्ठघातिनी ।

असती, स स्त्री (स) कुलटा, पुंश्चली।
असत्, वि (स) मिथ्या (अव्य.), असत्य २ अविद्यमान, सत्ता अस्तित्व, हीन ३ असद्, दुष्ट।
असत्य, वि (स) अनृत, वितथ, अतथ्य, अयथार्थ, अलीक मृषा-, मिथ्या-।
—वादी, वि (स-दिन्) मिथ्या-मृषा अनृत, वादिन् भाषिन्।
असत्यता, स स्त्री (स) अनृतत्व, असत्यत्व, वितथता।
असन, स पु (स अशन दे०)।
असबाब, स पु (अ) परिच्छद उपस्कर, वस्तुजात यात्रासामग्री, वस्त्र पात्र, सम्भार।
असभ्य, वि (स) अशिष्ट, असंस्कृत, ग्रामीण २ असमासद्, असदस्य।
असभ्यता स स्त्री (स) अशिष्टता, असंस्कृति (स्त्री) ग्रामीणता।
असमञ्जस, स पु (स न) सन्देह, संशय, द्वैधीभाव, निश्चयाभाव २ विघ्न ३ (स पु) सगरपुत्र। वि., असंगत, अनुपयुक्त।
—में पड़ना, क्रि अ, आकुल विह्वल विकल्प (भ्वा आ ते), मुह् (भ्वा आ ते), मनसा दोलायते (ना धा)।
असम, वि (स) अतुल्य, असदृश असदृक्ष २ अयुग्म, विषम ३ उन्नतानत, असमरेख। (स [illegible]) अलङ्कार-भेद (सा०)।
असमत, स स्त्री (अ) सतीत्वम्, पातिव्रत्यम्
—फरोश, वि कुलटा, व्यभिचारिणी।
फरोशी, स स्त्री व्यभिचार, सतीत्व-विक्रय।
असमय, स पु (स) अकाल, कुसमय, विपत्काल। क्रि वि अकाले, अस्थाने, अयथाकालम्। वि अनवसर, अ (का) कालिक, असमयोचित।
असमर्थ, वि (स) बल-शक्ति हीन, अशक्त, दुर्बल, २ अक्षम अयोग्य।
असमर्थता, स स्त्री (स) अशक्तता, अक्षमता।
असम्मत, वि (स) विमत, विरुद्ध २ अस्वीकृत।
असम्मति, स स्त्री (स) वैमत्य विमति (स्त्री) मतभेद विरोध।
असमान, वि (स) विभिन्न, अतुल्य।
असमाप्त, वि (स) असंपन्न, अनवसित, अ पूर्ण।
असमाहित, वि (स) चलचित्त, लोलबुद्धि, अधीर।
असर, स पु (अ) प्रभाव, प्रताप, प्रतिष्ठा २ फल, गुण, परिणाम।
—करना क्रि स, प्रभाव जन् (प्रे०), फल उत्पद् (प्रे०)।
—होना, क्रि अ, परिणाम जन् (दि आ ते) फल निष्पद् (द आ, अ)
असल, वि (अ) अकृत्रक, अकृत्रिम, निष्कपट २ उत्कृष्ट ३ शुद्ध, अमिश्रित। स पु, मूल, तत्त्वम् ४ मूल धन द्रव्यम्।
असलह, स पु (अ० 'सिलाह' का बहु०) शस्त्रास्त्रम् २ कवच -चम्।
असलियत, स स्त्री (अ) सत्यता, वास्तविकता २ मूल, तत्त्वं, सार।
असली, वि (अ) दे 'असल' वि०।
असह, वि (स असह्य दे०)।
असहन, वि (स) दे 'असहनशील'।
—शील, वि (स) असमर्थ, अक्षमिन्, असहिष्णु, असहन, अक्षम।
—शीलता, स स्त्री (स) असहिष्णुता, क्षमा मर्षण तितिक्षा,-अभाव।
असहनीय, वि (स) दे 'असह्य'।
असहयोग, स पु (स) असहकारिता, असाहाय्य, असहोद्योग।
—आंदोलन, स पु (स न) असहकारिता व्यापार।
असह्य, वि (स) असहनीय, असोढव्य, सहनायोग्य, दुःसह, दुर्विषह।
असहाय, वि (स) निराश्रय, निरावलम्ब, अगतिक, अशरण।
असहिष्णु, वि (स) [illegible] 'असहनशील'।
असहिष्णुता, स स्त्री (स) दे असहनशीलता।
असाम्प्रत, वि स (स) अशोभन, अनुचित २ असामयिक ३ वर्तमानासम्बद्ध।
असाम्प्रदायिक, वि (स) अमतवादिन्, उदार २ परम्पराविरुद्ध।
असा, स पु (अ) दण्ड, लगुड, यष्टि (पु स्त्री)।
असाढ़, स पु (स आषाढ़) वर्षस्य चतुर्थमासः।

असाढ़ी, वि (हिं असाढ) आषाढसम्बन्धिन्। स स्त्री आषाढोत्पन्न शस्य २ आषाढपूर्णिमा।

असाधन, वि (स) साधन उपाय,-हीन-रहित, निरुपाय, निःसाधन।

असाधारण, वि (स) विशेष, विलक्षण, अद्भुत (—णी स्त्री)।

असाध्य, वि (स) अशक्य, अनिष्पाद्य २ दुस्साध्य, दुष्कर ३ अचिकित्स्य, दुरुपचार, निरुपाय, अप्रतिकार्य।

असामयिक, वि (स) अनवसर, असमयोचित, अ(का)कालिक (—की स्त्री) असामय काल, अस्थान।

असामर्थ्य, सं स्त्री (स न) दे 'असमर्थता'।

असामी, सं पु (अ आसामी) जन, पुरुष २ कृषक ३ प्रत्यर्थिन्, प्रतिवादिन् ४ अपराधिन्, दण्ड्य ५ मित्र सखि (पु)। स स्त्री, परकीया २ वेश्या ३ दासवृत्ति (स्त्री) ४ रिक्तस्थानम्।

खरा—, स पु, ऋणशोधक।

डूबा— स, पु, ऋणशोधाक्षम।

मोटा—, स पु, धनाढ्य।

शीचड़—, सं पु बद्धमुष्टि, अदित्सु।

असार, वि (स) निस्सार, फल्गु, निष्फल २ रिक्त ३ तुच्छ। स पु, एरण्ड २ अगरु।

असारता, स स्त्री (स) निस्सारता, तत्त्वराहित्यम् २ मिथ्यात्व ३ तुच्छता।

असालत, स स्त्री (अ) कुलीनता २ सत्यता।

असालतन्, क्रि वि (अ) स्वय, स्वत (दोनों अव्यय)।

असावधान, वि (स) प्रमत्त, प्रमादिन्, मन्दादर, अनवधान, अनवहित।

असावधानता, स स्त्री (स) प्रमाद, मनोयोगाभाव अनवधान उपेक्षा।

असावधानी, स स्त्री दे 'असावधानता'।

असावरी, स स्त्री (स अ(आ) शावरी) रागिणीभेद।

असासा, स पु (अ) सम्पत्ति (स्त्री), विभव।

असि, स स्त्री (स पु) खड्ग २ नदीविशेष।

असिक, स पु (स न) चिबुकाधरयो मध्यभाग।

असिक्नी, स स्त्री (स) नदीविशेष (चना) २ अन्त पुरचारिणी अवृद्धा दासी।

असित, वि (स) कृष्ण, नील, श्याम, मेचक २ दुष्ट ३ वक्र।

असितांग, स पु (स) शिव। वि, कृष्ण,= अग रूप देह।

असिता, स स्त्री (स) दे 'यमुना'।

असिद्ध, वि (सं) अनिष्पन्न २ अपक्व ३ अपूर्ण ४ निष्फल ५ अप्रमाणित।

असिद्धि, स, स्त्री (स) निष्फलता, विफलता २ अपूर्णता, अपक्वता।

असिस्टेंट, वि (अ) सहायक, सहाय, उप-।

—एडिटर, स पु, उपसम्पादक।

असी, स स्त्री (स असि पु असी) काशी दक्षिणवर्तिनी नदी।

असीम, वि (स) निस्सीम, निरवधि २ अमित ३ अपार ४ अगाध।

असील वि (अ असल) दे 'असल'।

असीर, स पु (अ) ग्रहक, कारागुप्त।

असीरी, स स्त्री (फा) कारावास, आसेध, निरोध।

असीस, स स्त्री (स आशिस् स्त्री) आशीर्-, वाद वचन, मगलशब्द।

असु, स पु (स) प्राणा असव (दोनों बहुवचन)।

असुविधा, स स्त्री (स >) कठिनता, सौकर्याभाव २ विघ्न।

असुर, स पु (सं) दैत्य, राक्षस २ रात्रि, ३ दुर्जन ४ पृथिवी ५ सूर्य ६ मेघ ७ राहु ८ उन्मादभेद।

—अरि, स पु (सं) विष्णु २ देवता।

—गुरु, स पु (स) शुक्राचार्य।

असूया, स स्त्री (स) परगुणेषु दोषारोप २ सचारिभावभेद (सा)।

असूर्यंपश्या, वि स्त्री (स) अवरोध-अन्त पुर-, वर्तिनी, अवगुण्ठनवती, अतिलज्जावती।

असूल, स पु, दे 'उसूल' २ द 'वसूल'।

असेसर, स पु (अ असेस्सर) सभ्य, सभासद्।

असोज, स पु (स अश्वयुज्>अ) आश्विनमास।

असोसियेशन, स स्त्री (अ) सभा, समाज।

असौम्य, वि (स) कुरूप, कुदर्शन २ अप्रिय, अरुचिर।

असौष्ठव, स पु (स न) कुरूपता, सौन्दर्या भाव । वि, कुरूप, असुन्दर।

अस्त, वि (स) गुप्त, तिरोहित २ अदृष्ट, लुप्त ३ नष्ट, ध्वस्त । स पु, तिरोधान, लोप, अदर्शनम्।

—गत, वि, (स अस्तगत) लुप्त, अस्तमित, अदर्शनगत ।

अस्तबल, स पु (अ) मन्दुरा, अश्व-वाजि-घोटक -शाला ।

अस्तमन, स पु (स न) अदर्शन, तिरोधान २ सूर्यादीनामस्तोऽस्तमयो वा ।

—वेला, साय, सायकाल, दिनावसान, प्रदोष ।

अस्तमित, वि (स) अस्तगत, अदृष्ट, तिरोहित २ नष्ट, मृत।

अस्तर, स पु (फा) अन्तराच्छादन वस्त्र पट ।

—कारी, स स्त्री (फा) सुधालेप २ (पल स्तर) उपनाह उपदेह ।

अस्त व्यस्त, वि (स) स प्र-वि-आ,-कीर्ण, सकुल, अव्यवस्थित।

अस्ताचल, स पु (स) अस्त-पश्चिम,-गिरि-पर्वत ।

अस्तित्व, स पु (स न) भाव, सत्ता, विद्यमानता ।

अस्तु, अव्य (स) यद् भवि तद् भवतु २ बाढ भवतु भद्रम् (सब अव्य)।

अस्तेय, स पु (स न) स्तेय मोष-चौर्य स्तैन्य-त्याग ।

अस्त्र, स पु (स न) प्रहरण, आयुध, क्षिपणी (स्त्री) २ शस्त्रम्।

—चिकित्सक, स पु (स) शल्यशास्त्रज्ञ, शस्त्रवैद्य, शल्यतन्त्रविद्।

—चिकित्सा, स स्त्री (स) शल्य, शस्त्रवैद्यक, शल्यशास्त्रम् ।

—विद्या, स स्त्री (स) युद्धशास्त्र साङ्ग्रामिक, आयुध रण विद्या ।

—वेद, स पु (स) धनुर्वेद ।

—शाला, स स्त्री (स) अस्त्र आयुध, आगार, शस्त्रगृहम्।

अस्थि, स स्त्री (स न) कीकस, कुल्य, मेदोजम्।

—पंजर, स पु (स) कंकाल, करक, देहास्थिसमूह ।

अस्थिर, वि (स) चपल, चंचल, तरल २ चल चित्त, लोलमति ।

अस्थिरता, स स्त्री (स) चाञ्चल्य, तारल्य, अस्थैर्यम् २ चलचित्तता, मनोलौल्यम्।

अस्पताल, स पु (अ हॉस्पिटल) आतुरालय, चिकित्सालय, रुग्णागार आरोग्यशाला २ औषधालय ।

अस्पष्ट, वि (स) अप्रकट, अस्फुट, अविशद २ दुर्बोध, सदिग्ध।

अस्पृश्य, वि (स) स्पर्शायोग्य २ अस्पर्शनीय, अन्त्यज, हीनवर्ण, दुष्कुलीन ।

अस्पृह, वि (स) निस्स्पृह, लोभरहित, अलोलुप।

अस्फुट, वि (स) अस्पष्ट, अव्यक्त, गुप्त, परोक्ष।

अस्बाब, स पु दे 'असबाब'।

अस्मार्त, वि (स) स्मरणातीत २ अवैध, आर्षशास्त्रविरुद्ध।

अस्मिता, स स्त्री (स) क्लेशभेद (यो) २ अहंकार ।

अस्र, स पु (स) कोण २ केश ।

अस्र, स पु (स न) रक्त, रुधिर २ अश्रु (न), नयनजलम्।

अस्ल, दे 'असल'

अस्वस्थ, वि (स) रुग्ण, व्याधित, रोगिन् २ व्यथित ।

अस्वाभाविक, वि (स) अनैसर्गिक, निसर्ग प्रकृति सहजक्रम, विरुद्ध २ कृत्रिम, कृतक ।

अस्वास्थ्य, स पु (स न) रोग, व्याधि, गद, आमय ।

अस्सी, वि (स अशीति स्त्री) । स पु उक्ता सख्या, तद्बोधकाङ्कौ (८०) च ।

अह, सर्व (स०) । स पु अह,-कार -कृति (स्त्री) भाव पूर्विका, आरम्भिमान ।

अहंकार स पु (स) गर्व, दर्प मद, माद, आटोप, मान, उत्सेक अह,-मान भाव-कृति (स्त्री) २ अन्तःकरणस्य भेदविशेष (वे) ३ महत्तत्त्वजातो द्रव्यविशेष (सा) ४ अस्मिता ५ ममत्वम्।

अहंकारी, वि (स रिन्) दृप्त गर्वित, अव लिप्त, उद्धत, मत्त, उत्सेकिन्, अभिमानिन्।

अहवाद, स पु (स) आत्मश्लाघा, अहङ्कारोक्ति (स्त्री), विकत्थनम्।

अह, स पु (स, अहन् न) दिनं, दिवस २ सूर्य ३ विष्णु।

अहे, अव्य (स अहह अव्य) आश्चर्यखेदक्लेशादिबोधकमव्ययम्।

अहद, स पु (अ) प्रतिज्ञा, स-प्रति,-अव-धि ४ सङ्कल्प ३ शासनकाल।

—नामा, स पु, प्रतिज्ञा समय, पत्र लेख्यम २ सन्धिपत्रम्।

—शिकन, स पु, प्रतिज्ञालंघिन्, असत्यसन्ध।

—शिकनी, स स्त्री, प्रतिज्ञाभंग, असत्यसंधत्वम्।

अहन्, स पु (स न) दिन दिवस।

अहनिसि, अव्य दे 'अहर्निश'।

अहबाब, स पु (अ, 'हबीब' का बहु०)

अहम, वि (अ) महत्त्वपूर्ण, अत्यावश्यक।

अहमक, वि (अ) जड़, मूढ, मूर्ख।

अहमहमिका, स स्त्री (स) अहमहमिका प्रति, स्पर्धा।

अहम्मति, स स्त्री (स) अहंकार २ अविद्या।

अहर, स पु (स आहर >) जलाशय।

अहरन, स स्त्री (स आ+घरण <) सूर्मं, सूर्मी, सूर्मिका, स्थूणा सूर्मि (पु स्त्री)।

अहरह, अव्य (स) प्रति अनु दिन, प्रत्यह, दिने दिने।

अहरा, स पु (स आहर >) गोमयपिंडराशि २ गोमयाग्नि ३ पथिकाश्रम ४ प्रपा।

अहरी, स स्त्री (हिं अहरा) प्रपा २, जलाधार।

अहर्निश, क्रि वि (स अ) दिवानिश, रात्रिदिवम् २ नित्यम् (सब अव्य)।

अहलकार, स पु (फा) राज,-पुरुष -भृत्य २ प्रतिनिधि, प्रतिहस्त।

अहलमद स पु (फा) अधिकरणलेखक।

अहल्या, वि (स) कर्षणायोग्या (भूमि)। स स्त्री गौतमपत्नी।

अहसान, स पु (अ) उपकार, हित २ कृपा ३ कृतज्ञता।

—फरामोश, वि (फा) कृतघ्न (-घ्नी स्त्री), अकृत, ज्ञ-वेदिन्।

—फरामोशी, स स्त्री (फा) कृतघ्नता, उपकारविस्मरण, अकृतवेदिता।

—मद, वि (फा) कृतज्ञ, कृतवेदिन्।

—मदी, स स्त्री (फा) कृतज्ञता उपकारज्ञता।

अहह, अव्य (स) आश्चर्यखेदक्लेशशोकादिसूचकमव्ययम्।

अहाँ, अव्य (अनु) मा, नो, न।

अहा, अव्य (स अहह) हर्षप्रशंसादिसूचकमव्ययम्।

अहाता, स पु (अ) परिसरभूमि (स्त्री), प्रांगण (-न) २ प्राकार, प्राचीरम्।

अहार, स पु, दे 'आहार'।

अहार्य, वि (स) अचोरणीय, अमोषणीय। २ धनच्छद्मादिभि अवहर-अहर्य।

अहाहा, अव्य (स अहह) हर्षसूचकाव्ययम्।

अहिंसक, वि (स) अहिंस्र, अघातुक (-की स्त्री) २ अद्रुह।

अहिंसा, सं स्त्री (स) हिंसा-अपकार-द्रोह वैर,-त्याग।

अहिंस्र, वि (स) दे 'अहिंसक'।

अहि, स पु (स) सर्प २ वृत्रासुर ३ भूमि (स्त्री) ४ सूर्य ५ राहु ६ खल।

अहित, वि (स) वैरिन्, द्रोहिन् २ हानिकर (-री स्त्री)। स पु (स न) अमंगल, अभद्रम्।

अहिफेन, स पु (स पु न) सर्पविष, सर्पमुखलाला २ (अफीम) अफेन, अहिफेनम्।

अहिम, वि (स) तप्त, उष्ण।

—कर, स पु (स) सूर्य।

अहिवात, स पु (स अभिवाद >?) सौभाग्य, सधवात्व, सभर्तृकात्व, पतिमत्ता।

अहिवातिन,-ती, (हि अहिवात) सौभाग्यवती सधवा, सभर्तृका।

अहीर, स पु (स आभीर) गोप गोपाल, गोपालक गोमत्स्य, वल्लव।

अहीरिन,-री, स स्त्री (स आभीरी) गोपी, गोपिका, दोहिनी, गोदोहिनी।

अहीश, स पु (स) शेषनाग, सर्पराज २ शेषावतार (लक्ष्मणबलरामादय)।

अहुत, स पु (स) जप, ब्रह्मयज्ञ, वेदपाठ।

अहे, अव्य (स) हे, अयि, भो।

अहेतुक, वि (स) अकारण, निष्कारण, निर्निमित्त, २ व्यर्थ, निष्फल।
अहेर, स पु (स आखेट) मृगया, मृगयम् २ वध्यजन्तव, (बहु०)।
अहेरिया, अहेरी, म पु (हि अहेर) व्याध, लुब्धक मृगयु आखेटक।
अहो, अव्य (स) हे, अरे २ करुणखेदहर्षप्रशंसासूचकमव्ययम्।
अहोभाग्य, म पु (स न) सौभाग्य, पुण्योदय, भाग्योपचय।
अहोर बहोर, क्रि वि (हि बहुरना) भूयो भूय, वार वार (दोनो अव्य०)।
अहोरात्र, स पु (स पु न) दिवानिश अहर्निश दिवारात्र नक्तदिवम् (सब अव्य)।

आ

आ, देवनागरीवर्णमालाया द्वितीय स्वरवर्ण, आकार।
आ, अव्य (स) स्वीकारयनुकम्पाकोपशोकस्मरणादिसूचकमव्ययम्।
आँक, स पु (सं अक) चिह्न, अभिज्ञानम् २ सख्याचिह्न, अक ३ वर्ण, अक्षरम् ४ सिद्धान्त ५ अश, भाग ६ वश ७ पासा, क्रोडम् ८ रेखा ९ मूल्यसकेत।
आँकडा, स पु (हि आँक) सख्याचिह्नम् अक २ ध्यावर्तनकील (पेंच)।
आँकडे, पु (हि आँक) अका।
आँकना, क्रि स (स अकनम्) अक (चु, (भ्वा आ से), चिह्नयति मुद्रयति (ना धा) कल (भ्वा प से), २ ऊह (भ्वा आ से), तर्क (चु)।
आँकुस, स पु, दे 'अकुश'।
आँख, स स्त्री (स अक्षि न) चक्षुस (न), वि-लोचन नेत्र, नयन, ईक्षण, दृश दृष्टि (दोनों स्त्री)। नयनाकार चिह्नम् ३ सूचीछिद्रम् ४ कृपा ५ विवेक ६ निरीक्षणम्।
—अजनी, म स्त्री (स अक्षि + अजनम् >) पक्ष्मपिटिका।
—का गोला म पु, अक्षिगोलकम्।
—का पर्दा, म पु अक्षिपटलम्।
—मिचौली, स स्त्री, अक्षिमैचनी, बालक्रीडाभेद।
—लगी, म स्त्री, उपपत्नी, भुजिष्या।
—आना, मु, नेत्रपाक।
—उठाकर न देखना, मु, आदराभाव-अवधीर (चु)।
—उठाना, मु, दृश् (भ्वा प अ) २ अपकर्तुं यत् (भ्वा आ से)।
—का काजल चुराना, मु चौर्यपाटवम्।
—का तारा, मु, तारका, कनीनिका २, स्नेहभाजनम् २ एकल पुत्र।
—की मैल, म स्त्री, दूषिका, अक्षिमलम्।
आँखें चार करना, मु, परस्परावलोकनम्।
—चुराना या छिपाना, मु, निली (दि आ अ) २ परदर्शन परिहृ (भ्वा प अ)।
—झपकना, मु, निद्रावश (वि) भू २ निमिष (तु प से), निमील (भ्वा प से)।
—ठढी करना, मु, दर्शनेन प्रसद् (भ्वा प अ)।
—डबडबाना, मु, साश्रुनयन (वि) भू।
—दिखाना, मु, सरोष वीक्ष् (भ्वा आ से) २ भी नम (प्रे)।
—नीची होना, मु, लस्ज् त्रप् (भ्वा आ स)।
—नीली पीली करना, मु, अत्यन्त क्रुप् (दि प से)।
—पर पर्दा पडना, मु, विमुह् (दि प से)।
—पर बैठाना, मु अत्यन्त समन् (प्रे)।
—फडकना, मु, नेत्र स्फुर् (तु प से)।
—फेर लेना, मु, अवमन् (दि आ मे) २ प्रतिकूल (वि) बन् (हि आ स)।
—बद करलेना, मु मृ (तु आ अ)।
—बिछाना, मु, प्रेम्णा प्रविश (प्रे) २ सस्नेह प्रतीक्ष (भ्वा आ से)।
—भर आना, मु, साश्रुनेत्र (वि) जन्।
—मटकाना, मु, सहाव वीक्ष(भ्वा आ से)।
—मारना, मु, निमेषेण सूच् (चु)।
—मिच जाना, मु, मृ (तु आ अ) २ दे 'झपकना।
—मिलाना, मु, सहाव दृश (भ्वा प अ)।
—मीचना, नत्र निमील् (भ्वा प स)।
—म घर करना, मु, हृदये वस (भ्वा प अ)।
—में चरबी छाना, मु, दर्पान्ध (वि) जन् (दि आ से)।
—म धूल झोंकना, मु, प्रतॄ (प्रे)।
—लगना, मु, स्वप् (अ प अ) २ बद्धभाव (वि) भू।

—सेंकना, मु, सौन्दर्यदर्शनेन प्रसद् (भ्वा प अ)।

—से गिरना, मु, अवगण् अवमन् (कर्म)।

आंग, वि (स) शारीरिक, दैहिक २ अगिन्, अवयविन् ३ अगदेशन।

आँगन, स पु (स अगन णम) अजिर, प्रांगणम्।

आंगिक, वि (स) शारीरिक दैहिक, कायिक (-की स्त्री) स पु, अभिनयभेद।

आँच, स स्त्री (स अर्चिस स्त्री, न०) ताप, दाह, उष्णता, ऊष्म २ अग्नि,-ज्वाला शिखा जिह्वा ३ अग्नि अनल ४ हानि (स्त्री) ५ विपत्ति (स्त्री)।

—आना या खाना या पहुँचना या लगना, कि अ, तप (दि आ अ), उष्णी भू।

—देना, कि स तप् (प्रे)।

—न आने देना, [illegible], कष्टात् त्रै (भ्वा आ अ)।

आँचल, स पु (स अचल लम्) पटान्त, वस्त्रप्रान्त २ प्रान्तभाग।

—देना, मु स्तन्य दा (जु उ अ)।

—में बाँधना, मु, स्मरणार्थं पटप्रान्ते ग्रथिदानम् २ निरय पार्श्वे स्थापनम्।

—आँजन, स पु, दे 'अजन'।

आजनेय, स पु (स) हनुमत्, मारुति पवनपुत्र।

आँट स स्त्री (हिं अटी) करतले अगुष्ठतर्जन्योर्मध्यस्थानम् २ पण, ग्लह (दाँव) ३ विरोध ४ नीवी, बन्धनम् ५ पोटलिका।

—सोट, स स्त्री, सहकारिता २ सम्बन्ध ३ कुमन्त्रणा।

आँटी, स स्त्री (अंटिका) लघुतृणपोटलिका २ सूत्र पञ्जी पञ्जिका ३ बालक्रीडोपयोगी काष्ठखण्डभेद ४ शाटीग्रन्थि (पु)।

आँठी, स स्त्री (स अष्ठि स्त्री) फल, बीज दृम २ ग्रन्थि ३ नलोद्गमन।

आड, वि (स) अण्ड,-ज-उद्भव। स पु (स) हिरण्यगर्भ,

आँत, स स्त्री (स अन्त्रम्) पुरीतत् (पु न) परितत् (पु न)।

—उतरना, मु, अन्त्रस्रंसेन अन्त्रवृद्ध्या वा पीड् (कर्म)।

, क्षुद्रान्त्रम्।

—बड़ी, बृहदन्त्रम्।

आंतर, वि (स) आभ्यन्तर, अन्तर्गत, अन्तरग।

आंतरिक, वि (स) अन्तर्गत, अन्तःस्थ, आन्तर, आभ्यन्तर (-री स्त्री), अन्त (उ अन्तर्वेदना) २ मानसिक, हार्दिक, आत्मिक।

आंदोलन, स पु ([illegible] न) चेष्टा, प्रवृत्ति (स्त्री) २ असकृत्कम्पनम् ३ क्षोभ, विप्लव, प्रकोप।

आँधी, स स्त्री (स अन्धम् >) वात्या, चण्ड महा-अति वात, प्रभञ्जन, प्रकम्पन।

आँध्र, स पु (स आन्ध्रः) दक्षिणापथे प्रान्तविशेष २ आन्ध्रवासिन्।

आँय बाँय, स स्त्री (अनु०) प्रलाप, जल्पितम्।

आँव, स स्त्री (स आम >) श्लेष्मन् (पु)।

—गिरना, कि अ आमातिसारेण पीड् (कर्म)।

आँवल, स पु (स उल्बम्) कलल (पु न), जरायु (न)।

नाल, स स्त्री, नाभि, नाल नाडी।

आँवलगट्टा, स पु (हिं आँवला + गाँठ) शुष्कामलकम्।

आँवला, स [illegible] (स आमलक-कम् की) अमृता, शिवा, शान्ता, धात्री, श्रीफला।

आँवाँ स पु (स आपाक) कुम्भकारपात्रपाकस्थानम्।

आंशिक, वि (स) आंशिक, भागिक, खाण्डिक।

आँसू, स पु (स अश्रु न) बाष्प, अस्र, नेत्र-नयन,-जल-वारि-उदकम्

—गिराना, कि स, रुद् (अ प से)।

—पी जाना, मु, अश्रूणि अव[illegible]मि, रुध् (रु उ अ)।

—पोंछना, मु, आ समा-श्वस् (प्रे)

आँहाँ, अ (अनु) न, नो, मा (सर्व अव्य)।

आइसक्रीम, स स्त्री (अ) हिम्, सघानी शर।

आई, स स्त्री (हिं आना) मृत्यु। कि अ आयाता।

आईन, स पु (अ) विधि, विधानम्, नियम २ संविधानम्।

आईना, स पु (फा) मुकुर, दर्पण।

आक, स पु (स अर्क) मन्दार, क्षीरदल, तूलफल सूर्याह्व, सदापुष्प।

—की बुढ़िया, [illegible], मन्दारपुष्पम् २ अतिवृद्धा नारी।

आकर, सं पु (सं) ख(खा)नि नि (स्त्री) वस्तूत्पत्तिस्थानम् २ निधि, भाण्डागारम् ३ प्रकार, भेद ।

—भाषा, म स्त्री मूलप्राचीनभाषा (उ०) हिन्दी की आकरभाषा संस्कृत, उर्दू की फारसी।

आकर्षक, वि (स) आकर्षणकर २ मनोहर।

आकर्षण, स पु (स न) आकर्ष, आवर्जनम्, अनुकर्ष अनुकर्ष अनुकर्षणम्।

—करना, क्रि स, आ समा, कृष (भ्वा प आ), आवृज (चु) २ विमुह (प्रे०)।

आकर्षित, वि (स) कृताकर्षण २ प्रलोभित।

आकलन, स पु (स न) ग्रहणम् २ सचय ३ गणनम् ४ अनुष्ठानम् ५ निरीक्षणम्।

आकस्मिक, वि (स) अकाण्ड, अचिन्तितपूर्व, हठाज्जात।

आकांक्षा, स स्त्री (स) इच्छा, अभिलाष, स्पृहा, वाञ्छा २ अपेक्षा ३ अनुसंधानम् ४ वाक्ये शब्दस्य शब्दान्तराश्रितत्वम्।

आकांक्षी, वि (स क्षिन्) इच्छुक, अभिलाषिन्, ईप्सु, सस्पृह।

आकार, स पु (स) आकृति मूर्ति (स्त्री), रूपम् २ कायपरिमाणम् ३ अवयवसंस्थानम् ४ चिह्नम् ५ चेष्टा ६ 'आ' इति वर्ण ७ आह्वानम्।

—गुप्ति, स स्त्री (स) अवहित्था।

आकारण, स पु (स न) आह्वानम्, आमन्त्रणम् २ दे 'चुनौती'।

आकारवान् वि (स-वत्) साकार, मूर्तिमत् विग्रहिन्।

आकालिक, वि (स) असामयिक।

आकालिकी, स स्त्री (स) दे 'बिजली'

आकाश, स पु (स पु न) गगन, नभस्, वियत्, व्योमन् (सब न), अबर, अन्तरिक्ष, ख, नाक, दिव्, द्यो (दोनों स्त्री), विहायस (पु न), विहायस, अभ्र, पुष्कर, अनन्त, विष्णुपद, तारापथ ।

—कुसुम, स पु (स न) खपुष्प, शश, विषाण-शृङ्गम्, असम्भव वस्तु (न)।

—गंगा, स स्त्री (स) मन्दाकिनी, स्वर्णदी।

—चारी, वि (स रिन्) खचर, नभश्चर (-चरी स्त्री)। स पु सूर्यादिग्रहा २ वायु ३ खग ४ देव ५ राक्षस।

—बेल, स स्त्री (सरी-वही) अमरवल्ली, खवल्ली, व्योमलतिका।

—भाषित, सं पु (स न) गगनभाषितम्, नाट्ये भाषणभेद ।

—वाणी, स स्त्री (स) देववाणी, अशरीरिणी वाक् (स्त्री)।

—वृत्ति, स स्त्री (स) अनियतो धनागम ।

—चूमना, मु, अभ्रंलिह् (अ० प अ), गगन चुम्ब (भ्वा प से)।

—पाताल एक करना, मु, अत्यर्थं प्रयत् (भ्वा आ से)।

—पाताल का अन्तर, मु, महदन्तर, महान् भेद ।

आकुंचन, स पु (स न), सकोचन, समाकर्ष, सकोचन, प्रसृतस्य संक्षेपण, वक्रत्वसम्पादनम्।

आकुंचित, वि (स) सकोचित २ वक्र।

आकुल, वि (स) व्याकुल, उद्विग्न, व्यग्र, क्षुब्ध, अशान्त, -यस्त, विह्वल, कातर २ समाकीर्ण, सकुल।

आकुलता, स स्त्री (स) उद्वेग, क्षोभ, अशान्ति (स्त्री)।

आकूति, स स्त्री (स) अभिप्राय, आशय २ उत्साह ३ सदाचार ।

आकृति, स स्त्री (स) आकार, रूप, मूर्ति (स्त्री) २ मुख, आननम् ३ अवयवसंस्थान, शरीररचना ४ मुद्रा, चेष्टा ५ जाति । (स्त्री न्या)।

आकृष्ट, वि (स) आकर्षित, कृताकर्षण।

आक्रंद, स पु (स) रोदन, रुदितम्, चीत्कार २ युद्धघोष ३ तुमुलयुद्धम्।

आक्रमण, स पु (स न) आक्रम, अवस्कन्द, अभिद्रव, अभिप्रयाण, आपात २ रोधन, अव-उप,-रोध ३ आक्षेपण, निन्दनम्।

आक्रांत, वि (स) अभिद्रुत, अभिप्रयात, २ अभि-परा-वशी,-भूत ३ परिवेष्टित ४ व्याप्त, आकीर्ण।

आक्रामक, स पु (स) अभियातृ, अभियायिन्, आक्रमणकारिन्।

आक्रोश, स पु (स) शाप, आक्षेप, गालीदानम्।

आक्षेप, स पु (स) अपवाद, दोषारोप २ पातन, प्रासनम् ३ कटूक्ति (स्त्री) ४ अंगकम्पयुतो वातरोगभेद ।

आक्साइड, स पु (अ) जारेयम् ।

आक्सिजन, स पु (अ) जारक, ओषजनम् ।

आखण्डल, स पु (स) इन्द्र ।

—सूनु, स पु (स) अर्जुन ।

आखत, स पु (स अक्षता) अखण्डितव्रीहय । वि, अखण्डित ।

आखर, स पु दे अक्षर ।

आखिर, वि (अ) अन्तिम अन्त्य २ समाप्त । स पु अन्त, अवसानम् २ परिणाम, फलम् । क्रि वि, अन्तत २ विवश (वि) भूत्वा ३ अवश्यम् ४ कथञ्चित् ।

—कार, क्रि वि, अन्ते, अन्तत ।

आखिरी, वि (फा) अन्तिम, अन्त्य, चरम ।

आखेट, स पु (स) मृगया, दे 'शिकार' ।

आखेटक, स पु (स) व्याध, आखेटिन् ।

आख्या, स स्त्री (स) नामन् (न), संज्ञा २ यशस् (न), कीर्ति (स्त्री) ३ विवरण, व्याख्या ।

आख्यात, वि (स) विख्यात, प्रसिद्ध २ कथित ३ तिङन्तक्रिया ।

आख्यान, स पु (स न) कथा, आख्यायिका २ वर्णन वृत्तान्त ।

आख्यायिका, स स्त्री (स) कथा, वृत्तान्त, आख्यानम् २ आख्यानभेद ।

आगन्तुक, वि (स) आयात, आगत २ २ अतिथि, अभ्यागत ।

आग, स स्त्री (स अग्नि) अनल, पावक, दहन, ज्वलन, वह्नि कृशानु, हुताशन, हुतवह, उषर्बुध, हव्यवाहन, चित्रभानु, शुक्र, शुचि २ ताप ३ कामाग्नि ४ वात्सल्यम् ५ ईर्ष्या । वि, अत्युष्ण २ क्रुद्ध ।

—का पुतला मु क्रोधिन् २ चपल ३ निपुण ।

—खाना अँगार हगना, मु, दुष्कृतस्य फल विपद् (स्त्री), यो यत् वपति बीजं हि सोऽपि तत्लभते फलम् ।

—पानी (फूस) का बैर, मु, सहज वैरम्, शाश्वतिको विरोध ।

—बबूला (बगूला) होना मु, नितरां कुप् (दि प से) ।

—भड़काना, मु, वैरोद्दीपनं, क्रोधोद्दीपनम् ।

—लगना, मु, ज्वलनम् २ कुप् ३ ईर्ष्य् (भ्वा प से) ४ वस्तूनां बहुमूल्यता ।

—लगाना, मु, आवेशवर्धनम्, क्रोधोत्पादनम् २ नाशनम् ।

—लगा कर पानी को दौड़ना, मु, कलिमुत्पाद्य शान्तये प्रयत्न ।

—लगने पर कुआँ खोदना, मु, सदीप्ते भवने कूपखननम् ।

—लगा कर तमाशा देखना, मु, कलिमुत्पाद्य मनोविनोदनम् ।

—होना, मु, अत्यर्थं कुप ।

पानी में आग लगाना मु, अशक्यकरण, खपुष्पत्रोटनम् । पेट की आग, मु क्षुधा, बुभुक्षा ।

आगत, वि (स) प्राप्त, उपस्थित २ अतिथि ।

—स्वागत, स पु (न) आतिथ्य, सत्कार ।

आगम, स पु (स) आगमन, प्राप्ति (स्त्री) २ भावि-आगामि,-काल ३ मान्य, दैवम् ४ संगम, समागम ५ आय ६ प्रकृतिप्रत्ययानुपघाती आगन्तुको वर्ण (व्या) ७ उत्पत्ति (स्त्री) ८ शब्दप्रमाणम् (यो) ९ वेद, शास्त्रम् १० तन्त्रशास्त्रम् ११ नीतिशास्त्रम् ।

—ज्ञानी, वि (स-ज्ञानिन्) पूर्ववादिन्, अग्रनिरूपक, सिद्ध, आदे (न्+द्+) =हृ ।

आगमन, स पु (स न) आगति (स्त्री), आगम २ आय, लाभ ।

आगमापायी, वि (स-यिन्) अनित्य, अध्रुव, अ मरणशील ।

आगर१, स पु (स आकर) खन (खा) नी-नि (स्त्री) २ समूह ३ निधि ४ लवणगर्त ।

आगर२, स पु (स अर्गल ला) द्वारविष्कम्भ ।

आगर३ स पु (स आगारम्) गृहं सदनम्

आगर४, वि (स अग्रय) श्रेष्ठ, उत्तम २ दक्ष ।

आगस्ती, स स्त्री (स) दक्षिणदिशा दक्षिणा, याम्ी ।

आगा, स पु (स अग्रम्) अग्र पुरो,-भाग २ उरस, वक्षस् (दोनों न) ३ मुखम् ४ मस्तकम् ५ जननेन्द्रियम् ६ यजुरादी नामग्रभाग ७ सेनाग्रम् ८ नौकाग्रभाग ९ गृहाग्रवर्ति अंगनम् १० अचल म्म ११ आगामिकाल १२ परिणाम ।

—पीछा, म पु (पु अग्र+पश्च>) संशय, विमर्श २ परिणाम ३ अग्रपश्चभागौ।
—पीछा करना, मु, दोलायते (ना ध्वा)।
—पीछा सोचना, मु, परिणामचिन्तनम्।
आगाज़, स पु (फा) आरम्भ, उपक्रम, आदि।
आगामी, वि (स-मिन्) भाविन्, भविष्यत्।
आगार, स पु (स न) अगार, गृह, गेहम् स्थानम् २ कोष।
आगाह, वि (फा) ज्ञात, नोदप्त, अभिज्ञ।
आगे, क्रि वि (स अग्रे) अग्रत, पुरत, पुरस्तात् (सब अव्य) २ समक्ष, अभिमुखम्, मुखम्, सम्मुखम् (सब अव्य) ३ जीवनकाले, उपरिष्टात् ४ आगामिसमये ५ अनन्तर, तदनु ६ पूर्वं ७ क्रोडे।
—आना, मु, प्रत्युद्गम् (भ्वा प अ)।
—निकलना, मु, अतिशी (अ आ से)।
—पीछे, मु, आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वेश २ प्रत्यक्ष परोक्ष च (वा) ३ पूर्वं पश्चाद् वा ४ यथा यथावाम् ५ अक्रमम्।
आग्नेय, वि (स) अग्नि,-मय-सम्बन्धिन् २ अग्निदेवताक ३ दाहक। स पु, (स न) सुवर्ण २ रुधिर ३ घृत ४ दीपनौषधम्। स पु (स पु) कार्तिकेय २ अगस्त्य ३ देशविशेष ४ अग्निपूजक ५ ब्राह्मण ६ अग्निकोण ७ ज्वालामुखम्।
—अस्त्र, स पु (स न) अग्निवर्षकोऽस्त्र भेद।
आग्नेयी, स स्त्री (स) अग्ने पत्नी २ अग्नि दीपनमौषधम् ३ दक्षिणपूर्वा दिशा।
आग्रह, स पु (स) अति, निर्बन्ध, अभि,-याचना-प्रार्थना २ तत्परता, परायणता ३ बल, आवेश।
आग्रहायण, स पु (स) मार्गशीर्षमास।
आग्रहणयी, स स्त्री (स) आग्रहायन मार्गशीर्ष,-पूर्णिमा।
आग्रही, वि (स-हिन्) अविनेय, निर्बन्धवत्, दुराग्रह, स्वैरिन्।
आघर्षण, स पु (स न) आघर्ष, मर्दन, संघर्षण, चूर्णनम्।
आघात, स पु (स) प्रहार, आक्रमणम् २ प्रसारण, प्रक्षेप ३ वधस्थानम्।
आघ्राण, स पु (स न) गन्धग्रहणम् २ अतितृप्ति (स्त्री), पूर्णकामता।
आचमन, स पु (स न) उपस्पर्श, आंच (चा) म, अल्पपानम्।
—करना, क्रि स, आचम् (भ्वा प से,) आचामति।
आचमनी, स स्त्री (स आचमनीय>) आचमनोपयोगी चमसभेद।
आचरण, स पु (स न) अनुष्ठान २ आचार, व्यवहार ३ स्वच्छता ४ रथ।
आचरणीय, वि (स) अनुष्ठानीय २ कर्तव्य।
आचरित, वि (स) कृत, विहित, अनुष्ठित।
आचार, स पु (स) व्यवहार २ चरित, चरित्र, चरित्र, वृत्त, शीलम् ३ शौच, शुद्धि (स्त्री) ४ स्नानम् ५ आचमनम्।
—भ्रष्ट, वि (स) दुर्वृत्त, चरित्रहीन, अनाचार।
—विचार, स पु (स-रौ) चरित्र मनोभावश्च २ चारित्र्यम्, दे 'आचार'।
आचार्य, स पु (स) उपनेतृ गुरु २ वेदाध्यापक ३ यज्ञे कर्मोपदेशक ४ पुरोहित ५ उपाध्याय, अध्यापक ६ ब्रह्मसूत्राणां चत्वार प्रधानभाष्यकारा सर्वश्रीशंकररामानुजमध्ववल्लभाचार्या ६ वेदभाष्यकृत् ७ प्रकाण्डपण्डित।
—कुल, स पु (स न) गुरुकुलम्।
आचार्या, स स्त्री (स) मन्त्रोपदेष्ट्री, वेदभाष्य कर्त्री, वेदाध्यापिका।
आचार्यानी, वि स्त्री (स नी) आचार्यपत्नी।
आचार्यी, वि स्त्री (स) आचार्यसम्बन्धिनी।
आच्छन्न, वि (स) आच्छादित, आवृत २ गुप्त, तिरोहित।
आच्छादक, वि, (स) आवरक, पिधायक, वेष्टक।
आच्छादन, स पु (स न) आवरण, पुट, वेष्टन, अवगुंठन, पिधान २ प्रच्छदपट ३ ३ आवरणक्रिया।
आच्छादित, वि (स) आवृत, पिहित, तिरोहित।
आच्छोटन, स पु (स न) अंगुली, मोटन स्फोटनम्।
आज, क्रि वि (स अद्य अव्य) वर्तमाने दिने २ अद्यत्वे, अस्मिन् काले। स पु, वर्तमानो दिवस २ संप्रति, साम्प्रतम्।

—कल, क्रि, वि (स अद्यकल्यम्) एतेषु दिनेषु २ अद्यश्वे, अद्य श्वो (कल्ये), वा ।

—तक, क्रि वि अद्य यावत् पर्यन्तम्, अधुना इदानीं यावत् पर्यन्तम् ।

—कल करना, मु, व्याक्षिप (तु उ अ) ।

—कल का मेहमान, मु मरणासन्न, आसन्न निधन, मुमूर्षु ।

आजन्म, क्रि वि (स) यावज्जीवम् २ जन्मन प्रभृति ।

आज़माइश, स स्त्री (फा) परीक्षा अनुयोग २ परीक्षार्थे प्रयोग ।

आजा, स पु (स आर्य >) पितामह ।

आज़ाद, वि (फा) दे 'स्वतन्त्र' ।

आज़ादी, स स्त्री (फा) दे 'स्वतन्त्रता' ।

आजानु, वि (स) जानु अष्ठीवत् पर्यन्त ।

—बाहु, वि (स) जानुस्पर्शबाहु २ दीर्घबाहु ३ वीर, शूर ।

आजीवन, क्रि वि (स न) दे 'आजन्म' ।

आजीविका, स स्त्री (स) आजीव, वृत्ति (स्त्री), उप, जीविका ।

आज्ञा, स स्त्री (स) आ नि, देश, शासन, नियोग २ स्वीकृति अनुमति (स्त्री) ।

—देना, क्रि स, आ नि सम, दिश (तु उ अ), आज्ञा (प्रे आज्ञापयति) ।

—मानना, क्रि स, आज्ञां अनुवृत (भ्वा आ से)-पा, (प्रे पालयति) ।

—कारी, वि (स रिन्) आज्ञा वचन, अनु वर्तिन् ग्राहिन् सेविन् पालक ।

—पत्र, स पु (स न) निदेश आदेश, पत्रम् ।

पालक, वि (स) दे 'आज्ञाकारी' ।

—पालन, स पु (स न) आज्ञा, अनुवर्तन कारिता ।

—भंग, स पु (स) आज्ञातिक्रम, आज्ञोल्लंघनम् ।

आज्य, स पु (स न) घृतम् ।

आटविक, स पु (स) अरण्य-वन्-वासिन्, आरण्यक २ मार्ग दर्शक ।

आटा, स पु (स अट्टम् वा अट >) गोधूम चूर्ण, अन्न, चूर्ण, क्षोद, पिष्टान्न, गुण्डिक ।

—गीला होना, (गरीबी में), म, दारिद्र्ये कष्टान्तरापात ।

आटे दाल की फ़िक्र, मु, आजीविकाचिन्ता ।

आटे दाल का भाव मालूम होना, मु व्यवहारज्ञानम् ।

आटोक्रैट, स पु (अ) निरकुश -नृप शासक २ स्वेच्छाचारि-स्वैरि,-मानव ३ असीमाधिकारसम्पन्नो जन ।

आटोक्रैसी, स स्त्री (अ) निरकुश नृप शासनम् २ निरकुशता, स्वेच्छाचारिता ।

आटोप, स पु (स) आच्छादनम् २ आडंबर ३ दर्प ४ उदरगुडगुडाशब्द ।

आठ, वि (स अष्टन्) । स पु, उक्ता सख्या, तद्बोधकोऽक (८) च ।

—आठ आँसू रोना, मु, अश्रुधारापातनम् ।

आठों प्रहर, मु, अहर्निश, दिवानिशम् (अव्य)

आठवाँ, वि (हि आठ) अष्टम (मी स्त्री) ।

आडंबर, स पु (स) गभीरशब्द २ तूर्यरव ३ गजगर्जनम् ४ कपटवेष, दम्भ, मिथ्याटोपजनम् ५ आच्छादनम् ६ पटमण्डप ७ पटह ।

आड़, स स्त्री (स अल् = रोकना >) व्यवधान, तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, ज(य)वनिका २ आश्रय, शरणम् ३ प्रतिबन्ध, विघ्न ४ इष्टकास्तम्भ ५ स्थूणा, स्तम्भ ।

आड़ा, स पु (स आली >) रेखायुतो वस्त्रभेद २ (पोतस्य) स्थूल मुद्गर,-काष्ठम् । वि, अनुप्रस्थ, तिर्यक् असम, समस्थ २ तिर्यञ्च्, जिह्म ।

आड़े आना, मु, बाध् (भ्वा आ से) २ विपत्तौ साहाय्य दा (जु उ अ) ३ द्विष् (अ उ अ) ।

आड़े हाथों लेना, मु, निभर्त्स (चु) ।

आढ़, स पु (स आढक-कम्) चतुःप्रस्थपरिमाणम्, द्रोणचतुर्थांश ।

आढ़त, स स्त्री (हि आढ़ना = ज़मानत देना) परार्थविक्रय २ परार्थविक्रयभृति (स्त्री) ।

आढ़ती, स पु (हि आढ़त) परार्थविक्रेतृ ।

आढ्य, वि (स) सम्पन्न, धनिन् २ युक्त ।

आतंक, स पु (स) भय, त्रास २ प्रताप, गौरवम् ३ रोग, ज्वर ४ मुरजध्वनि ।

आततायी, स पु (स यिन्) अग्निद २ गरद, विषद ३ शस्त्रपाणि ४ धनापह ५ क्षेत्रहारिन् ६ दारापहारिन् । (-यिनी स्त्री) ।

आतप, स पु (स) दिनज्योत्स्ना (न), सूर्यालोक, प्रकाश २ उष्णता ३ ज्वर ।

आतपत्र, स पु (स न) छत्र, आतपधर्म, वारणम् ।

आतपोदक, स पु (स न) मरीचिका मृग, जल तृष्णा ।

आतिश, स स्त्री (फा) अग्नि ।

—बाजी, स स्त्री (फा) अग्निक्रीडनवालि (न बहु), अग्निक्रीडा ।

आतशक, स पु (फा) उपदंश मेढ्ररोगभेद ।

आतशी, वि (फा) आग्निक, आग्नेय, २ अग्निज ३ अग्निजनक ।

—शीशा, स पु अग्नि, काच स्फटिक ।

आतिथ्य, वि (स) अतिथि-सेवक-पूजक ।

आतिथ्य, स पु (स न) अतिथिसेवा २ अतिथ्यर्थवस्तु (न) ।

आतिशय्य, स पु (स न) अतिशयत्व, आधिक्य, बहुत्वम् ।

आतुर, वि (स) आकुल, व्याकुल, व्यग्र, उद्विग्न, अधीर २ उत्सुक, उत्कण्ठित ३ दु खित ४ रोगिन् ।

आतुरता, स स्त्री (स) व्याकुलता, व्यग्रता २ त्वरा, संभ्रम ।

आतुरालय, स पु (स) चिकित्सालय, दे० 'अस्पताल' ।

आत्म, वि (स आत्मन्>) स्व, निज, स्वीय स्वकीय ।

—अभिमान, स पु (स न) स्वप्रतिष्ठा स्वगौरवम् ।

—अवलंबी, वि (स विन्) आत्मविश्वासिन्, स्वाश्रित ।

—उद्धार, स पु (स) मुक्ति (स्त्री) मोक्ष ।

—उन्नति, स स्त्री (स) आत्मकल्याणम् २ स्वाभ्युदय ।

—घात, स पु (स) आत्म स्व निज, हत्या मान वध, प्राण जीवित, त्याग उत्सर्ग ।

—घात करना, कि स, आत्मानं हन् (अ प अ) ।

—घाती, वि (स) आत्म, घातक घातिन् नाशिन् हन् ।

—ज, स पु (स) पुत्र २ कामदेव ३ रुधिरम् ।

—ज्ञान, स पु (स न) ब्रह्म-जीव, ज्ञानम् २ ब्रह्मसाक्षात्कार ।

—त्याग, स पु (स) परहिताय स्वार्थत्याग ।

—दर्शन, स पु (स न) समाधिना जीवेश्वरदर्शनम् ।

—निवेदन, स पु (स न) आत्मसमर्पण, सर्वस्वार्पणम् २ स्वविषये कथनम् ३ भक्तिभेद ।

—प्रशंसा, स स्त्री (स) आत्मश्लाघा, स्वस्तुति निजस्तुति (दोनों स्त्री) ।

—भू, वि (स) निजशरीरज २ स्वयंभू । स पु पुत्र २ कामदेव ३ ब्रह्मन् (पु) ४ विष्णु ५ शिव ।

—विश्वास, स पु (स) स्व निज, प्रत्यय विश्रम्भ

—विद्या, स स्त्री (स) ब्रह्मविद्या अध्यात्म विद्या, आत्मज्ञानम् २ मोहनविद्या (= मैस मरिज्म) ।

—हत्या, स स्त्री दे 'आत्मघात' ।

—आत्मक, वि (स) अन्वित, रूप, युक्त, मय (उ तत्वात्मक = तत्व-रूप-मय) ।

आत्मा, स स्त्री (स आत्मन् पु) जीव, चेतन, जीवात्मन् २ चित्तम् ३ बुद्धि (स्त्री) ४ अहङ्कार ५ मनस् (न) ६ ब्रह्मन् (न) परमात्मन् (पु) ७ देह ८ धृति (स्त्री) ९ स्वभाव, धर्म १० सूर्य ११ अग्नि १२ वायु ।

आत्मिक, वि (स) अध्यात्म-(समास में) आत्म, विषयक सम्बन्धिन् २ स्वीय ३ मानसिक ।

आत्मीय, वि (स) स्वीय, स्वकीय । स पु, स्वजन, बन्धु, मित्रम् ।

आत्मीयता, स स्त्री (स) बन्धुत्व सौहार्दम् ।

आत्यन्तिक, वि (स) अनन्त, असीम, अत्यधिक ।

आत्रेय, वि (स) अत्रिगोत्र, अत्रिसम्बन्धिन् । स पु अत्रिपुत्र ।

आत्रेयी, स स्त्री (स) अत्रिपत्नी २ अत्रिपुत्री ३ आत्रगोत्रजनारी ४ रजस्वला नारी ।

आथर्वण, स पु (स) अथर्ववेदज्ञो ब्राह्मण, पुरोहित २ अथर्वपुत्र ३ अथर्ववेदे विहित कर्मन् (न) ।

आदत, स स्त्री (अ) शील स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) २ अभ्यास, नित्यप्रवृत्ति (स्त्री) ।

आदम, स पु (अ) आदिम, प्रजापति (इस्लाम) २ मनुष्य ।
आदमियत, सं स्त्री (अ) मानवता, मनुष्यत्व २ सभ्यता, शिष्टता।
आदमी, स पु (अ) मनुष्य, मनुष्यजाति (स्त्री) २ दास ।
—बनना, मु सभ्यता सीखना (स्वा आ से)। —फी क्रि वि, प्रतिमनुष्यम्, प्रतिजनम्।
आदर, स पु (स) सम्मान, सत्कार, सत्क्रिया, प्रतिष्ठा, अर्हणा अर्चा।
—करना, क्रि स, आदृ (द्+ऋ)(तु आ अ), सत्कृ, पूज् अर्च् (चु) सम्मन्, नम् (प्रे)।
—पाना, क्रि अ, सत्पुरस्, कृ (कर्म), आदृ-(द्+ऋ) पूज् मेव (कर्म)।
—से, क्रि वि, सादर, सप्रश्रयम्, आदरेण।
आदरणीय, वि (स) मान्य, माननीय पूज्य, सत्कार्य, पूजनीय ।
आदर्श, स पु (स) मुकुर दर्पण, आत्मदर्श २ प्रतिरूप, प्रतिमा, प्रतिमानम् ३ टीका, भाष्य व्याख्या ४ अतुल्य, अनुपम ।
आदात, स स्त्री (अ० 'आदत' का बहु०) दे 'आदत' ।
आदाता, वि (स-तृ) ग्रहीतृ ग्राहक, प्रापक।
आदान, स पु (स न) ग्रहण, स्वीकार, स्वीकरणम् ।
—प्रदान, स पु (स न) ग्रहणवितरण, दानादान २ परस्परतितिक्षा, न्याय्याचरणम्।
आदाब, स पु (फा 'अदब का बहु०) दे 'अदब' ।
आदि, वि (स) प्रथम अग्रिम, आदिम, आद्य। स पु, उपक्रम, आरंभ २ मूल, उत्पत्तिहेतु । अ य -प्रभृति, -आद्य (समासान्त में)।
—कवि, स पु (स) वाल्मीकि ।
—कारण, स पु (स न) मूलकारणम् (प्रकृति ईश्वरो वा)
—से अन्त तक, क्रि वि, आद्यन्तम्, आदितो ऽन्त यावत् ।
आदिक, अव्य (स वि)-आदि,-आद्य, -प्रभृति (सब समासान्त में)।
आदित्य, स पु (सं) अदितिपुत्र २ देव ३ सूर्य ४ इन्द्र ५. वामन ६ वसु ७ विश्वे देवा ८ मन्दारवृक्ष ।
—वार, स पु (स) रवि भानु,-वार वासर'
आदिम, वि (स) प्रथम, आद्य, आदि ।
—निवासी, स पु, (स सिन्) आदिवासिन्।
आदिष्ट, वि (स) आज्ञप्त, आज्ञापित, लब्धाज्ञ, प्राप्तादेश ।
आदी, वि (अ) अभ्यस्त, अभ्यासिन् ।
आदृत, वि (स) सत्कृत, सम्मानित, पूजित।
आदेय, वि (स) ग्रहणीय, परि-प्रति, -ग्राह्य ।
आदेश, स पु (स) आज्ञा, निदेश, शासन, नियोग, देशना २ उपदेश ३ प्रणाम ४ ग्रहफलम् ५ वर्णस्य वर्णान्तरोत्पत्ति (स्त्री, -त्या)।
आदेशक, वि (स) आज्ञापक, निदेशक, नियोजक, शासक।
आदेशी, वि (स-शिन्) दे० 'आदेशक' २ दैवज्ञ, ज्योतिर्विद्।
आद्यन्त, क्रि वि (स न) दे 'आदि से अन्त तक'।
आद्य, वि (स) प्रथम, आदिम, आदि २ अग्रय, प्रधान।
आद्या, स स्त्री (स) दुर्गा २ प्रतिपदा।
आद्योपांत, क्रि वि, दे 'आदि से अन्त तक'।
आध, वि (स अर्द्ध) सामि-(अव्य व सामिभुक्त)।
—आना, सं पु, अर्द्धाण ।
आधा, वि (स अर्द्ध) सामि। स पु, अर्द्ध, अर्द्धम्, अर्द्ध,-भाग -अश ।
—आना, स पु, अर्द्धाण णक ।
—सीसी, स स्त्री, अर्द्धावभेदक, सूर्यावर्त्त, अर्द्धशिरोवेदना।
—तीतर आधा बटेर, मु विचित्रविचित्र असगत ।
आधान, स पु (स न) स्थापन २ न्यसनम्।
आधार, स पु (स) आश्रय, अवलम्बनम् २ आलवालम् ३ पात्रम् ४ गृह भित्ति मूल, वेश्मभू (स्त्री) ५ आश्रयदायक पालक ।
—आधेय संबंध, स पु (स) आश्रयाश्रयि संबंध (व घृतपात्रयो)।
—होना, मु-, स्तोका तुष्टि (स्त्री) भू।
आधि, स स्त्री (स पुं) मानसी व्यथा, चिन्ता २ बधक, -न्यास, निक्षेप।

आधिकारिक, स पु (स न) मूलकथावस्तु (न) २ कर्मचारिन्। त्रि अधिकारयुक्त।
आधिक्य, स पु (स न) बाहुल्य, प्राचुर्य, अतिशय।
आधिदैविक, वि (स) देवप्रेरित देवकृत (उ अतिवृष्टि)।
आधिपत्य, स पु (स न) स्वामित्व, प्रभुत्व, अधिकार, शासनम्।
आधिभौतिक, वि (स) मनुष्यपश्वादिप्रेरित (उ सर्पदंशदु खम्)।
आधीन, वि दे 'अधीन'।
आधी रात, स स्त्री (स अर्द्धरात्र) मध्यरात्र, निशीथ, रात्रिमध्यम्।
आधुनिक, वि (स) नूतन, नवीन अधुना तन इदानींतन, अर्वाचीन, सांप्रतिक।
आधृत, वि (स) आश्रित, अवलंबित।
आधेय, स पु (स न) आधारस्थ वस्तु (न), आश्रित पदार्थ। वि स्थापनीय न्यसनीय।
आधोरण, स पु (स) हस्तिपक, हस्तिक।
आध्मान वि (स) उच्छून, वायुपूरित २ दृप्त, गर्वित ३ दग्ध ४ ध्वनित।
आध्यात्मिक, वि (स) ब्रह्मजीवविषयक, देह चित्तजीवसंबंधिन् (उ ज्वरमोहशोकादय)।
आनंद, स पु (स) आह्लाद, मुदा, आ-प्र-मोद समद, हर्ष प्रमद, शान्ति (स्त्री), सुखम्, प्रसन्नता। वि, आनंदित, प्रसन्न।
—करना, क्रि स, नन्द् (भ्वा प से) मुद् (भ्वा प से)।
—देना, क्रि स, आह्लाद्-नन्द-प्रमुद् (प्रे)।
—बधाई, स स्त्री अभिनन्दनम् २ मंगलो त्सव।
—मंगल, स पु (स न) आनन्द, मोद, कुशलम्।
आनन्दित, वि (स) प्रमुदित, सानन्द, सुखिन्।
आन स स्त्री (स आणि पु स्त्री) शोभा, मर्यादा २ शपथ, समय ३ विजयघोषणा ४ प्रतिज्ञा, स-प्रति-श्रव।
—रखना, मु, प्रतिज्ञां पा (प्रे पालयति)।
आन, स स्त्री (फा) छवि (स्त्री), सौंदर्यम् २ अभि-, मान ३ लज्जा, संकोच।
—बान, स स्त्री, वैभव, शोभा, हावभावा।
—बान वाला, वि, सुवसन, सुरूप।
आन, स स्त्री (अ) क्षण, पल, निमेष।
—की आन में, मु सद्य, झटिति, आशु (सब अव्यय)।
आनक, स पु (स) पटह, भेरी, मृदंग २ स्तनयित्नुर्मेघ।
आनन, स पु (स न) आस्य, मुख, वदनम्।
आनन-फानन, क्रि वि (अ) क्षणेन, क्षणात्।
आनरेबल, वि (अ) मान्य।
आनरेरी, वि (अ) अवैतनिक, आदरवृत्ति।
—मैजिस्ट्रेट, स पु (अ) अवैतनिको दण्डाध्यक्ष।
आना, स पु (स आणक) रूप्यकस्य षोड-शोंऽश २ कस्यचिद् वस्तुन षोडशो भाग।
आना, क्रि. अ (स आगमनम्) आगम् (भ्वा प अ) आया (अ प अ) आव्रज् (भ्वा प से) स पु, आयात, उपस्थान, आगमनम्।
आई-गई, (बात) वि, अतीता, विस्मृता (वार्त्ता)।
आए दिन, क्रि वि, अन्वह, प्रतिदिनम्।
आ धमकना क्रि अ, अकस्मात् आगम।
आनाकानी, स स्त्री, अप-व्यप, देश छलेन परिहरणम् २ अनवधानम् ३ कर्णे जपनम्।
आनाकानी करना, क्रि अ, अप-व्यप, दिश (तु उ अ), छलेन परिहृ (भ्वा उ अ)।
—जाना, स पु, गतागतम् २ पुनर्जन्म (न)।
आनीत, वि (स) आ-उप-हृत, उपस्थापित, उपनीत।
आनुकूल्य, स पु, (स न) 'अनुकूलता' दे।
आनुपूर्वी, स स्त्री (स) अनुक्रम, आनुपूर्व्य, परंपरा।
आनुमानिक, वि (स) अनुमान-तर्क-सिद्ध, समान्य, काल्पनिक।
आनुषंगिक, वि (स) प्रासंगिक, गौण।
आन्वीक्षिकी, स स्त्री (स) तर्कविद्या, न्याय २ आत्मविद्या।
आप, सर्व (स आत्मन् >) स्वय स्वत (अव्य), २ भवत् (भवती स्त्री)।
—बीती, स स्त्री स्वानुभूत, प्रत्यक्षीकृत।
आप, स पु (स आप स्त्री बहु) पानीय, जलम्।

आपगा, स स्त्री (स) नदी, तटिनी।
आपत्काल, स पु (स) दुष्काल दुस्समय २ विपत्ति (स्त्री)।
आपत्ति, स स्त्री (स) दुःख,क्लेश २ विपत्ति, विपद्, आपद् (सब स्त्री) ३ कुसमय ४ दोषारोपणम् ५ आक्षेप, अपवाद।
आपद्, स स्त्री (स) दे 'आपत्ति'।
—ग्रस्त, वि, आ-वि,-पन्न आर्त्त दुर्गत।
—धर्म, स पु (स) विपत्कर्तव्य, कुसमय धम।
आपदा, स स्त्री, दे 'आपत्ति'।
आपन्न, वि (स) आपद्ग्रस्त २ प्राप्त।
आपस, स पु (हिं आप+से) सम्बन्ध। भ्रातृत्व बन्धुत्वम्।
—का, वि, आत्मीयानां, बन्धूनाम् २ पर स्परस्य, अन्योऽन्यस्य, मिथ (अव्य), इतरे तरस्य।
—में, क्रि वि, परस्पर अन्यो न्य मिथ।
आपसी, वि (हिं आपस) पारस्परिक।
आपा, स पु (हिं आप) आत्मत्व, स्वमत्ता २ गर्व ३ चैतन्य चेतना।
—धापी, स स्त्री, स्वार्थपरता, स्वस्वहितचिंता २ सघर्ष,अहमहमिका, अह, पूर्विका प्रथमिका।
—पंथी, वि कुमार्गिन्, कुपथगामिन्।
आपे में आना, मु, चैतन्यलाभ।
आपे में न रहना, मु, क्रोधादिभि बुद्धि-मति-नाश।
आपात स पु (स) पतन, अवनति (स्त्री) २ अकस्मात् उपागम ३ आरम्भ ४ अ त।
आपातत, क्रि वि (स) अकस्मात्, सहसा अकाण्डे २ अ ते, अ तत।
आपाती, वि (स -तिन्) पतन अवतरण उन्मुख २ आक्रामक ३ भाविन्।
आपाद, स पु (स) प्राप्ति -अवाप्ति (स्त्री) २ पुरस्कार ३ पारिश्रमिकम्। अव्य आच रणम्, पादपर्यन्तम्।
आपेक्षिक, वि (स) सापेक्ष २ पराश्रित, परावलम्बिन्।
आप्त, वि (स) अधिगत प्राप्त, लब्ध २ कुशल, दक्ष ३ साक्षात्कृतधर्मन्, आप्तिन्। स पु, ऋषि २ शब्दप्रमाणम्।
—काम, वि (स) पूर्णकाम, तृप्त, सतुष्ट।
आप्ति, स स्त्री (स) लाभ, प्राप्ति (स्त्री)
आप्लुत, वि (स) स्नात, कृतस्नान २ सिक्त, उक्षित, आर्द्र २ स पु, स्नातक, गृहिन्।
आफ़त, स स्त्री (अ) दे 'आपत्ति' (१-३)।
—का परकाला, स पु, लोककटक, कुचेष्टक २ क्षिप्रकारिन्।
आफ़िस, स पु (अ) कार्यालय।
आब, स स्त्री (फा) कान्ति द्युति (स्त्री), २ उत्कर्ष ३ शोभा श्री (स्त्री)। स पु, आप (स्त्री बहु) जलम्।
—कारी, स स्त्री (फा) मद्यनिर्माणशाला, शुंडा, सभानी २ मादकद्रव्यनिरीक्षको शासन विभागविशेष।
—ताब, स स्त्री (फा) शोभा, विभूति (स्त्री)।
—दाना, स पु (फा) अन्न-जल, जीविका २ जन्म न अन्नजलम्।
—पाशी, स स्त्री (फा) जलसेक, प्लावनम्।
—शार, स पु (फा) निर्झर, जलप्रपात।
आबेहयात स पु (फा) अमृत, सुधा।
आबोहवा, स स्त्री (फा) जलवायु (न)।
आबद्ध, वि (स) निगृहीत, नियमित।
आबनूस, स पु (फा) कोविदार, युगपत्रक।
—का कुन्दा, मु अतिकृष्णो मनुष्य।
आबाद, वि (फा) लोकाध्युषित जनाकीर्ण २ उर्वर, बहुशस्यद ३ सपन्न।
आबादी, स स्त्री (फा) जनाकीर्णस्थानम् २ जनसख्या ३ शस्यदा भूमि (स्त्री)।
आबाध, स पु (स) कष्ट, वेदना २ क्षति - हानि (स्त्री)।
आबी, वि (फा) जलीय, जलमय २ जल वर्ण, इषन्नील।
आब्दिक, वि (स) वार्षिक सांवत्सरिक (की स्त्री)।
आभरण, स पु (स न) अलंकार, मडन भूषणम् २ पोषण, संवर्द्धनम्।
आभा स स्त्री (स) कान्ति दीप्ति (स्त्री) २ प्रति बिम्बच्छाया।
आभाष्य, स पु (स) लावनि (स्त्री)।
आभार, स पु (स) उपकार २ गार्हस्थ्य भार ३ भार, भर।
आभारी, वि (स रिन्) कृतज्ञ, कृतवेदिन्।

आभास, स पु (स) प्रति बिंब छाया २ संकेत ३ मिथ्याज्ञानम्।
आभिचारिक, वि (स) ऐन्द्रजालिक मायात्मक, मायामय मायिक
आभीर, स पु (स) गोप।
आभूषण, स पु (स न) दे 'आभरण'।
आभ्यंतर, वि (स) अंतःस्थ आंतर, गर्भस्थ, अंतर्गत आभ्यन्तरिक।
आभ्युदयिक, वि (स) मांगलिक शुकर शुभ।
आमंत्रण, स पु (स न) आह्वानम् २ निमन्त्रणम्।
आमंत्रित, वि (स) आकारित आहूत २ निमंत्रित।
आम[1], स पु (स आम्र-त्र) १ (वृक्ष) आम्र रसाल सहकार, कामांग मन्मथदूत कोकिलोत्सव २ (फल) आम्र अम्र रसाल सहकार फलम्।
—के आम, गुठली के दाम, मु उभयतो लाभ।
—खाने से काम या पेड गिनने से, मु, आम्रैः प्रयोजनं न तु वृक्षगणनया।
आम[2], वि (स) अपक्व, दे 'कच्चा'।
आम, स पु (स न) अपक्वश्लेष्मन् (पु) २ अजीर्णरोगभेद।
—अतिसार, स पु (स) अतिसारभेद, ग्रहणी।
आम[3], वि (अ) सामान्य, प्राकृत अवर, २ विख्यात, प्रसिद्ध।
—फहम, वि (अ) सुबोध, सुविज्ञेय।
आमद, स स्त्री (फा) आगमन २ आय।
आमदनी, स स्त्री (फा) आय, धनागम।
आम (मा) मस्य, स पु (स न) शोक २ दुःख वेदना।
आमना सामना, स पु (हिं सामना) समागम।
आमने सामने, क्रि वि (हिं सामना)। परस्परस्य पुरतः अन्योऽन्यस्य सम्मुखम्।
आमय, स पु (स) रोग, व्याधि।
आमयावी, वि (स विन्) रुग्ण, रोगिन् २ अजीर्ण अपच प्रस्त।
आमरण, क्रि वि (स न) मृत्यु यावत्, निधनावधि, आमृत्यो।
आमलकी, स स्त्री (स) लघु-क्षुद्र, आमलकः।
आमला, स पु दे 'आँवला'।
आमाशय, स पु (स) अन्नाशय, जठरम्।
आमिष, स पु (स पु न) मांस २ भोग्य पदार्थ ३ लोभ ४ उत्कोच।
आमी, स स्त्री (हिं आम) आम्रकम्।
आमुख, स पु (स न) रूपकप्रस्तावना।
आमोद, स पु (स) आनन्द, मनोविनोद २ सुगन्ध।
—प्रमोद, स पु, आह्लाद, हर्ष २ हास्य विनोदं नर्मालाप।
आम्र, स पु (स) दे 'आम'।
आयँती पायँती, स स्त्री (अनु + फा पाय ताना) खट्वायाः शीर्षपादभागौ।
आय, स स्त्री (स पु) धन अर्थ, आगम लाभः।
—व्यय, स पु (स व्ययौ) आगमोत्सर्गौ।
—व्ययिक, स पु (स न) व्याकरण (–बजट)।
आयत[1], वि (स) विस्तृत, विशाल।
आयत[2], स स्त्री (अ) इंजील कुरान, वाक्यम्।
आयसु, स स्त्री (स आदेश) आज्ञा।
आया, क्रि अ (हिं आना) आगत।
—गया, स पु, अतिथि।
आया[1], स स्त्री (पुर्त) धात्री, मातृका।
आया[2], अव्य (फा) किम्, यद्।
आयात, स पु (स न) विदेशादानयनम् २ विदेशादानीत पण्यसमूह।
आयास, स पु (स) प्रयत्न २ श्रम।
आयासक, वि (स) श्रम, जनक उत्पादक। कष्टक्लेश प्रद।
आयु, स स्त्री (स आयुस न) वयस (न), जीवितकाल नियम, चिरजीवितम्।
आयुक्त, वि (स) नियुक्त २ प्रयुक्त।
आयुध, स पु (स न) अस्त्र शस्त्र, प्रहरण, हेति (स्त्री)।
आयुधागार, स पु (स न) शस्त्र अस्त्र,-आगार गृहम्।
आयुर्वेद, स पु (स) वैद्यक, वैद्यशास्त्र, चिकित्साशास्त्रम्।
आयुष्मान्, वि (स) (स मत्) चीर दीर्घ, जीविन्। (आयुष्मती स्त्री)।

आयुष्य, वि (स) पथ्य। स पु वयस (न)।

आयोजन, स पु (स न) द्रव्यासादन सामग्रीसंपादनम् २ नियुक्ति (स्त्री) ३ उद्योग ४ सामग्री।

आयोडीन, स स्त्री (अ) जम्बुकी, नीलीनम्।

आरंभ, स पु (स) उपक्रम, प्रारंभ, आदि २ उत्पत्ति (स्त्री)।

—करना, क्रि स, आ प्रा रभ, प्र उप, क्रम् (सक भ्वा आ प)

आर[१], स पु (स न) मुद, लौह आयसम् २ पित्तलम् ३ तट टटी टा ४ कोण ५ अर अरम्।

आर[२], स स्त्री (स अकम्=डंक) वृश्चिका दीनां दंश, दंशाञ्चु २ अंकुश ३ कील।

आर[३], स स्त्री (स आरा) चर्मप्रभेदिका।

आर[४], स पु (हिं अड) आग्रह निर्बन्ध।

आर[५] स स्त्री (अ) संकोच, लज्जा।

आरक्त, वि (स) ईषद्रक्त २ लोहित।

आरण्य, वि (स) वन्य, वनजात वनसंबंधिन्।

आरण्यक, वि (स) दे आरण्य। स पु (स न) ग्रन्थभेद।

आरती, स स्त्री (स आरात्रिकम्) नीराजना नम्, देवमूर्तिपरितो दीपचालनम् २ नीरा जनापात्रम् ३ नीराजनारनोत्रम्।

आरपार, स पु (स आरपारम् >) तटद्वयी, पारावार रौ रे। क्रि वि आवारपारम्, अवारात् पारं यावत् आद्यन्त, समग्रम्।

आरब्ध, वि (स) उपक्रान्त, कृतारम्भ।

आरभटी, स स्त्री (स) क्रोधाद्युग्रभावानां चेष्टा २ रूपके यमकबहुलो वृत्तिभेद

आरसी, स स्त्री (स आदर्श) दर्पण, मुकुर २ दक्षिणहस्तांगुष्ठभूषणभेद।

आरा, स पु (स आरा >) क्रकच चम्। करपत्र, पत्रदारण २ चर्मप्रभेदिका ३ अर, अरम्।

—कश, स पु (फा) क्राकचिक, दारुदारण।

—कशी, स स्त्री क्रकचेन काष्ठविपाटनम्

आराइश, स स्त्री (फा) परिष्कृति (स्त्री), अलंक्रिया, परिष्क्रिया सज्जा।

आराधक, वि (स) उपासक, पूजक।

आराधन, स पु (स न) भक्ति (स्त्री) सेवा, परिचर्या २ तर्पण, तोषण, प्रसादनम्।

आराधना, स स्त्री (स) दे आराधन।

—करना, क्रि स, पूज (चु), उपास (आ से) अभि, अर्च (भ्वा प स), आराध (प्रे)।

आराधनीय, वि (स) आराध्य सेवनीय, पूजनीय, अर्चनीय।

आराम[१], स पु (स) उपवन उद्यान पुष्प वाटिका।

आरामाधिपति, स प (स) उपवन उद्यान अधिकारिन् आधिकारिक।

आराम[२], स पु (फा) सुखम् २ विश्राम ३ स्वास्थ्यम्।

—करना, क्रि अ, १ कार्यात् निवृत् (भ्वा आ से) २ विश्राम (दि प से) ३ शी (अ आ से)।

—कुरसी, स स्त्री, विश्रामासन्दी।

—तलब, वि, अलस सुखेच्छुक।

आरास्ता, वि (फा) अलंकृत परिष्कृत सज्ज।

आरी, स स्त्री (हिं आरा) लघुक्रकच क्रकचक करपत्रकम् २ दंडाग्रलग्नो लौहकील ३ आरा चर्मप्रभेदिका।

आरूढ, वि (स) अधिरूढ अध्यासीन कृतारोहण २ दृढ, स्थिर।

—होना, क्रि अ, आ अधि रुह (भ्वा प अ), अध्यास (अ आ से)।

—करना, क्रि स आ अधि रुह (प्रे आरोपयति)।

आरोग्य, वि (स आरोग्यम् >) नीरोग, स्वस्थ। स पु (स न) दे आरोग्यता।

आरोग्यता, स स्त्री (स आरोग्यम्) स्वास्थ्य नीरोगता, अनामयम्।

आरोप, स पु (स) आरोपण संस्थापनं स्थिरीकरणम् २ स्थानान्तरे आरोपण स्थापन वा ३ भ्रम ४ वस्तुनि वस्त्वन्तरधर्मकल्पनम्।

आरोपना, क्रि स (स आरोपणम्) (स्थानान्तरे) आरुह् (प्रे आरोपयति) निविश (प्र) सम्प्रति स्था (प्र)

आरोपित, वि (स) स्थापित निहित, निवेशित।

आरोह, स पु (स) उद्गम, उदय, अधिरोहणम् २ आक्रमणम् ३ गजादिपृष्ठेऽधिरोहणम् ४ उत्तमयोनिप्राप्ति (स्त्री) ५ कारणात् कार्यप्रादुर्भाव ६ विकास ७ स्वरोत्कर्ष ८ नितम्ब ।

आरोहण, स पु (स न) उद्गमन अधिरोहणम् २ अंकुरप्ररोहणम् ३ सोपान, नि:श्रेणी ।

आरोही, वि (स हिन्) आरोहक उद्गामी २ उन्नतिशील । स पु उत्कर्षोन्मुख स्वर २ आरूढ, अश्वादिपृष्ठस्थ ।

आर्जव, सं पु (स न) ऋजुता सरलता निष्कपटता २ सुकरता ३ व्यवहारशुद्धि (स्त्री)।

आर्जुनि, स पु (स) अर्जुनपुत्र अभिमन्यु ।

आर्ट, स पु (अ) कला, शिल्प २ कौशल, नैपुण्यम् ।

आर्टिकल, स पु (अ) निबन्ध, लेख २ धारा नियम ।

आर्टिस्ट, स पु (अ) कलाकार, कलाविद् २ चित्रकार ।

आर्डर, स पु (अ) आदेश, आज्ञा २ वस्तुनिर्माण पदार्थप्रेषण, आदेश ।

आर्डिनेंस, स पु (अ) अध्यादेश २ शुल्काज्ञप्ति (न बहु)।

आर्त्त, वि (स) व्यथित, पीडित २ दुर्गत ३ रुग्ण ।

—नाद, स पु, आर्तध्वनि, आर्तस्वर ।

आर्ति स स्त्री (स) पीडा, व्यथा २ आपद् विपद् (स्त्री)।

आर्थिक, वि (स) धन-द्रव्य वित्त, विषयक मौद्रिक ।

आर्द्र, वि (स) क्लिन्न, सन्न, उन्न, सिक्त ।

आर्द्रता, स स्त्री (स) क्लिन्नता, सरसता ।

आर्द्रा, स स्त्री (स) षष्ठनक्षत्रम् २ आषाढारम्भ ३ आर्द्रकम् ।

आर्य, वि (स) श्रेष्ठ भद्र २ मान्य, पूज्य ३ कुलीन सत्कुलज (आर्या स्त्री)। स पु (स) सज्जन, कुलीनमानव २ पूज्यमनुष्य ३ स्वामिन् ४ श्वशुर ५ जातिविशेष ६ आर्यजातीय ७ गुरु ८ मित्रम् ।

—आवर्त स पु (सं) विन्ध्यहिमाचलयोर्मध्यदेश २ भारतवर्षम् ।

—पुत्र, स पु (स) श्रेष्ठस्य पुत्र २ पति ।

—समाज, स पु (स) महर्षिदयानन्द संस्थापित समाजविशेष ।

आर्या, स स्त्री (स) पार्वती २ श्वश्रू (स्त्री) ३ पितामही ४ छन्दोभेद ।

आर्ष, वि (स) १ २ ऋषि, सम्बन्धिन् प्रणीत सेवित ४ वैदिक ।

—प्रयोग स पु (स) प्राचीनग्रन्थानाम् अर्वाचीनव्याकरणविरुद्धा प्रयोगा ।

आलंकारिक, वि (स) अलंकारविषयक २ अलंकारयुत ३ अलंकारविद् ।

आलंब, स पु (स) अवलम्ब, आश्रय २ गति (स्त्री), शरणम् ।

आलंबन, स पु (स न) अवलम्ब, आश्रय २ रसोत्पत्ती विभावभेद (सा) ३ कारण, साधनम् ।

आलन, स पु (?) लेपनाय कर्दममिश्रित तृणादिकम् २ शाकादिमिश्रित चणकादिचूर्णम् ।

आलमारी स स्त्री, दे 'अलमारी'।

आलय, स पु (स) गृहम् २ स्थानम् ।

आलवाल, स पु (स न) आवाल, आवाप ।

आलस, स पु, दे 'आलस्य'।

आलसी, वि (हिं आलस) अलस, तन्द्रिल, तन्द्रालु, शीतक, उद्यमविमुख, उद्योगविमुख ।

आलस्य, सं पु (स न) मान्द्य, तन्द्रिका, जाड्य, कार्यद्वेष ।

आला, स पु (स आलय >) भित्तिस्तम्भादिषु दीपकाद्यर्थं स्थानम् २ काष्ठफलक ।

आला, वि (अ) उत्तम, श्रेष्ठ ।

आलान, सं पु (स न) गजबन्धन, स्तम्भ रज्जु (स्त्री) २ बंधन, रज्जु ।

आलाप, स पु (स) संलाप, सम्भाषण, कथोपकथन, वार्तालाप २ तान, सप्तस्वरसाधनम् (संगीत)।

आलापना, क्रि स (स आलपन >) गै (भ्वा प अ)।

आलिंगन, स पु (स न) परि (रि) रम्भ, परिष्वङ्ग, सश्लेष, उपगूहन श्लिष्टा ।

—करना, क्रि स, आलिंग (भ्वा प से), आश्लिष् (दि प अ), उपगुह (भ्वा उ से, उपगूहति)।

आलि, स स्त्री (स) वयस्या, सखी सहचरी २ पंक्ति (स्त्री) ३ सेतु ४ रेखा।
आलि, स पु (स) वृश्चिक २ भ्रम।
आलिखित, वि (स) लिखित २ अंकित ३ चित्रित।
आलिप्त, वि (स) प्र वि लिप्त, दिग्ध, भक्त।
आलिम, वि (अ) पंडित, विद्वस, बहुश्रुत, बहुधीत।
आली, स स्त्री (स) सखी वयस्या २ पंक्ति, तति (स्त्री)।
आलू, स पु (स आलु) मुकन्द शुभालु, क्षुद्रकन्द दम्।
—बुखारा, स पु, आलूक, आलुक, रक्तफल मस्तकम्।
आलूचा, स पु (फा) आलूक वृक्षभेद २ आलूकम्, फलभेद।
आलेख, स पु (स) लेख, लेख्य, लिखितम् २ लिपी लिपि (स्त्री)।
आलेख्य, स पु (स न) चित्र प्रतिरूप। वि लिखाई।
आलोक, स पु (स) भा, आभा प्रभा प्रकाश २ विषय दीप्ति कान्ति (सब स्त्री)।
आलोचक, वि (स) समालोचक समीक्षक २ दर्शक।
आलोचन, स पु (स न) गुणदोष परीक्षण निरूपण परीक्षा, सम्, आलोचना २ दर्शनम्।
आलोचना, स स्त्री (स) दे 'आलोचन'।
आलोडन, स पु (स न) मथन मंथ २ प्रगाढविचार।
आलोडित, वि (स) मथित २ सम्मोहित ३ विचारित।
आल्हा, स पु (देश) वीरच्छन्दस् (न) २ महोबाख्यो प्राचीनो वीरविशेष ३ विस्तृत वर्णनम्।
आवभगत, स स्त्री (हिं आना+स भक्ति) सत्कार, उपचार सेवा, पूजा।
आवरण, स पु (स न) आच्छादनं पुर्ट २ आच्छादनवस्त्र प्रच्छदपट ३ तिरस्करिणी, व्यवधान ४ कोश, कोष, वेष्टनम् ५ चर्मन् (न) फलकम् (हिं ढल)।
—पत्र, स पु (स न) मुख पृष्ठ पत्रम्।
आवर्त, स पुं (स) जलभ्रम, भ्रमरक भ्रमि (स्त्री) २ अवृष्टजलो मेघ ३ राजा वर्त रत्नभेद।
आवर्तक, वि (स) आ परिवर्तमान, घूर्णायमान।
आवर्तन, स पु (स न) परि भ्रामण, व्या परि वर्तनम् २ विलोडनम् ३ पुन पुन योग आवृत्ति (सब स्त्री)।
आवर्तनी, स स्त्री (स) मुषा २ स्वर्ण मुषा ३ चमस सम।
आवलित, वि (स) ईषद्वक्र वक्रीभूत।
आवली, स स्त्री (स) आवलि पंक्ति तति (सब स्त्री)।
आवश्य, स पु (स स) आवश्यकता २ ३ अनिवार्य कार्य-फलम्।
आवश्यक, वि (स) अवश्यकर्तव्य, शीघ्रकार्य, गुर्वर्थ २ अनिवार्य।
आवश्यकता स स्त्री (स) आवश्यकत्व, अपेक्षा ३ प्रयोजनम्।
आवश्यकीय, वि, दे 'आवश्यक'।
आवा, स पु दे 'आँवा'।
आवागमन, स पु (हिं आना+स गमनम्) पुनरुत्पत्ति (स्त्री), पुनर्जन्मन् (न०), प्रेत्यभाव, देहान्तरप्राप्ति (स्त्री)।
आवाज़, स स्त्री (फा) शब्द, नाद स्वन, ध्वनि घोष २ गलस्वर ३ उच्चस्वर।
—उठाना, मु, विपरीत वद् (भ्वा प से)।
—बैठना, मु, स्वरभङ्ग ब्रू (दि आ से)।
आवारा, वि स्त्री (फा) परिभ्रमक, अकर्मण्य २ अज्ञातनिवास ३ दुर्वृत्त जाल्म।
आवास, स पु (स) गृह गेह सदनम्।
आवाहन स पु (स न) मन्त्रैर्देवाह्वानम्, आमन्त्रणम् २ निमन्त्रणम्।
आविर्भाव, स पु (स) प्रकाशनं प्रकटनं, विवृति (स्त्री) ३ उत्पत्ति (स्त्री)।
आविर्भूत, वि (स) प्रकटित प्रकाशित २ उत्पन्न।
आविष्कर्ता, वि (स कर्तृ) आविष्कारक, प्रदर्शयितृ प्रकाशक वर्तक।
आविष्कार, स पु (स) अज्ञातानामप्रकाशनम् २ अपूर्ववस्तुनिर्माणम् ३ प्रकाश, प्राकट्यम्।
आविष्कारक, वि (स) दे 'आविष्कर्ता'।
आविष्कृत, वि (स) प्रकटित, प्रकाशित २ प्रथमं निर्मित रचित।

आविष्ट, वि (स) भूतप्रेतादिपीडित २ अभिभूत ।

आवृत, वि (स) प्रसमा आ, च्छादित, मवृत पिहित २ परिवृत, वलयित ।

आवृत्ति, स स्त्री (स) अभ्यास क्रिया सातत्य प्रबन्ध २ अध्ययनम् ।

आवेग, स पु (स) आवेश चित्तोद्वेग, उत्तेजन, उद्दीपनम् २ त्वरा ३ सचारिभाव भेद (सा) ।

आवेज़ा, स पु (फा) प्रालम्ब, लोलक ।

आवेदक, वि (स) निवेदक, प्रार्थिन् । (स पु) अभियोगिन् वादिन् ।

आवेदन, स पु (स न) दे निवेदन ।

आवेश, स पु (स) आवेग, आतुरता २ व्याप्ति (स्त्री), सचार ३ प्रवेश ४ भूतबाधा ५ अपस्माररोग ।

आवेष्टन, स पु (स न) गोपन, निगूहनम् २ अवगुण्ठन, पिधान पुट, कोश ।

आवेष्टित, वि (स) अवगुण्ठित, आवृत ।

आशका, स स्त्री (स) सदेह, सशय २ अनिष्टभावना ३ भय त्रास ।

आशकित, वि (स) भीत, त्रस्त ३ सदेहात्मक ।

आशसा, स स्त्री (स) अपेक्षा आशा २ इच्छा, वाञ्छा ३ कथनम्, चर्चा ।

आशसित, वि (स) अपेक्षित, आकाङ्क्षित, इष्ट २ कथित, वर्णित ।

आशसी, वि (स सिन्) आशायुक्त अपेक्षी, आकाङ्क्षक, प्रत्याशिन् ।

आशना, वि (फा) परिचित, अभिज्ञ । स पु जार, प्रणयिन् । स स्त्री प्रेयसी, कान्ता ।

आशनाई, स स्त्री (फा) मैत्री सख्यम् । २ प्रणय, अनुराग ।

आशय, स पु (स) तात्पर्य, अभिप्राय, अर्थ २ वासना ३ स्थान आधार ४ गर्त ।

आशा, स स्त्री (स) आशसा आकांक्षा, अपेक्षा २ स्पृहा, वाञ्छा, मनोरथ ३ दिशा ४ दक्षप्रजापते पुत्री ५ रागभेद ।

—करना, क्रि स, आशस (भ्वा आ से) उद् प्रति अर, इष् (भ्वा आ से), आशास (अ आ से) ।

—अतीत, वि (स) आशसाधिक ।

—वाद, स पु (स) सदाशावत्तासिद्धान्त ।

—वान्, वि (स) साश, आशान्वित ।

आशिक़, वि (अ) प्रणयिन्, अनुरागिन्, आसक्त, अनुरक्त ।

आशिष, स स्त्री (स आशिस) दे 'आशीर्वाद' ।

आशीर्वाद, स पु (स) आशिस (स्त्री) आशीर्वचन, हिताशसन, मङ्गलप्रार्थना, आशास्य, शुभकामना ।

—देना, क्रि स आशिष दा (जु उ अ), टि प्राय लोट व आशीर्लिङ के रूपों से (उ पुत्र आप्नुहि आप्या वा) ।

आशु, क्रि वि (स) शीघ्र द्रुत, सत्वर (सब अव्य) ।

—कवि, स पु (स) सद्य काव्यकार ।

—तोष, स पु (स) शिव ।

आशुग, वि (स) शीघ्र द्रुत तीव्र गामिन् । स पु (स) वायु २ बाण ।

आश्चर्य, स पु (स न) विस्मय, कौतुक, चमत्कार, चित्र, अद्भुतम् ।

—करना, क्रि अ, विस्मि (भ्वा आ अ) ।

—जनक, वि (स) विस्मापक, अद्भुत, विचित्र ।

आश्रम, स पु (स) तपोवन मुनिवसति (स्त्री) २ मठ, विहार ३ विश्रामशाला ४ मनुष्यायुष चत्वारो विभागा (ब्रह्मचर्य गृहस्थवानप्रस्थसन्यासाश्रमा) ।

आश्रय, स पु (स) अव आ,-लम्ब आधार २ अवष्टम्भ, उपघ्न ३ शरण, गति (स्त्री) गृह, सदनम् ।

—दाता, वि (स तृ) रक्षक, रक्षितृ, त्रातृ ।

आश्रित, वि (स) आश्रयप्राप्त, अवलम्बित २ अधीन, शरणागत । स पु, सेवक, दास ।

आश्वासन, स पु (स न) सान्त्वन, आशाप्रदान, समाश्वासन, प्रोत्साहन, उत्तेजनम् ।

आश्विन, स पु (स) आश्वयुज शारद, इष ।

आषाढ, स पु (स) अषाढ, शुचि ।

आस, स स्त्री (स आशा) आशसा २ लालसा ३ आश्रय ४ दिशा ।

आसक्त, वि (स) तत्पर, लीन, मग्न, प्रमित २ अनुरक्त बद्धराग प्रणयिन् ।

आसक्ति, स स्त्री (स) तत्परता, लीनता, मग्नता २ अनुराग, प्रेमन्, काम ।

आसन, स पु (स न) उपवेशनप्रकार

२ स्थिति (स्त्री) ३ अष्टांगयोगस्य तृतीयमंगम् ४ उपवेशनाधार, पीठ ५ साधुवसति ६ नितम्ब ७ शत्रुदुर्गादीनवरुध्य स्थिति ।
—डोलना, मु, चंचो विकृ (कर्म)।
आसन्न, वि (स) समीप, निकट, निकटस्थ।
—प्रसवा, वि स्त्री (स) निकटप्रसूति (स्त्री)
—भूत, स पु, वर्तमानसमृक्तो भूतकाल ।
आस पास, क्रि वि (अनु आस+स पार्श्व) परित अभित (दोनों क्रियाओं के साथ), समन्त, समन्तात्, विष्वक, सर्वत (सब अव्य)।
आसमान, स पु (फा, स अस्मान >) गगन, दे आकाश' २ स्वर्ग ।
—के तारे तोड़ना, मु, असम्भवानिकार्याणि कृ।
—को चूमना, मु गगनं चुम्ब (भ्वा प से),
—से बातें करना, मु अभ्र वच (भ्वा प से)।
आसमानी, वि (फा) आकाशीय २ ईषन्नील।
आसरा, स पु (स आश्रय) अवलम्ब, आधार २ भरणपोषणाशा ३ आश्रयद ४ शरण, गति (स्त्री) ५ प्रतीक्षा ६ आशा ।
—देना, क्रि स, रक्ष (भ्वा प से)।
—लेना, क्रि अ, आश्रि (भ्वा उ से), शरण गम्।
आसव, स पु (स) मद्यभेद २ सुरा, मदिरा ३ औषधप्रकार ४ दे 'अरक'।
आसा, स स्त्री दे० 'आशा'।
आसा, स पु (अ असा) सुवर्णदंड रजतयष्टि (पु स्त्री)।
आसाइश, स स्त्री (फा) सुख, सौख्यम्।
आषाढ, स पुं दे 'आषाढ'।
आसादन, स पु (स न) प्राप्ति उपलब्धि (स्त्री) २ निधानम् ३ आक्रमणम् ४ पदवाद्गम्य प्रापणम्।
आसादित, वि (स) प्राप्त, लब्ध २ निहित, स्थापित ३ आक्रान्त ४ पदवाद्गम्य गृहीत।
आसान, वि (फा) सुकर सुगम, सुखसाध्य।
आसानी, स स्त्री (फा) सुकरता सुगमता।
आसाम, स पु (स असम>) कामरूपा, असमप्रान्त भारतस्य प्रान्तविशेष ।
आसामी वि (हिं आसाम) असमप्रदेश, विषयक सम्बंधिन्। स पु असम कामरूप, वासिन् वास्त य। स स्त्री असमीया भाषा असमी।

आसावरी, स स्त्री (सं आशावरी) श्रीरागस्य रागिणीभेद ।
आसीन, वि (स) निषण्ण उपविष्ट।
आसीस, स स्त्री, दे आशीर्वाद'।
आसुर, वि (स) राक्षस, पैशाच, असुरसंबन्धिन्। स पु (स) असुर ।
आसुरी, वि स्त्री (स) असुरसंबन्धिनी, राक्षसी, पैशाची।
—चिकित्सा, स स्त्री, शस्त्रचिकित्सा।
—माया, स स्त्री पैशाच छलम्।
—संपद्, स स्त्री (स द्) पैशाची वृत्ति (स्त्री)।
आसोज, स पु (स आश्वयुज) दे 'आश्विन'।
आस्तरण, स पु (स न) कुथ, गजपृष्ठस्थ चित्रकम्बलम् २ शय्या, कुशासनम्।
आस्तिक, वि (स) ईशवेदपरलोकविश्वासिन्। २ ईश्वरसत्तावादिन् ३ श्रद्धालु।
आस्तिकता, स स्त्री (स) ईशवेदपरलोकेषु विश्वास २ ईश्वरप्रत्यय ।
आस्तीन, स स्त्री (फा) पिप्पल, चोलस्य कञ्चुकस्य वा बाहुभाग ।
—का साँप, मु गूढशत्रु, गुप्तवैरिन्।
आस्था, स स्त्री (स) श्रद्धा, भक्ति (स्त्री), अर्हणा, आदर २ सभा आस्थानम् ३ आलम्बन, अपेक्षा।
आस्थान, स पु (स न) उपवेशनस्थल, सभामंडप २ सभा।
आस्थित, वि (स) स्थित, कृतवास २ आश्रित ३ लब्ध ४ वेष्टित।
आस्पद, स पु (स न) स्थानम् २ कार्यम् ३ प्रतिष्ठा ४ वंश कुलम्।
आस्य, स पु (स न) वदन, मुखम् २ मुखमंडल, मुखम्।
आस्वादन, स पु (स न) स्वादनं, रसनम्।
आह अव्य (सं अहह) कष्ट हा, हंत, आ, हा, अहो (सब अव्य)।
आह, स स्त्री (फा) नि श्वास, उच्छ्वास, दीर्घश्वास ।
—भरना क्रि अ, दीर्घं उद् नि श्वस् (अ प से)।
आहट, स स्त्री (हिं आना+हट प्रत्य) पादशब्द, चरणनिक्षेपध्वनि २ विद्यमानता सूचकध्वनि ।

आहत, वि (स) क्षत व्रणित, विद्ध, भिन्नदेह २ गुणयसरया ३ परस्परविरुद्ध (वाक्य) ४ सद्य क्षालित ५ जीर्ण ६ कथित। स पु, पटह ।

आहरण, स पु (स न) आच्छेदन, सहसा आकर्षणम् २ अपनयनम् ३ आनयनम् ४ ग्रहणम् ।

आहवन, स पु (स आहननम्>) भूमि (स्त्री), इर्मा स्थूणा ।

आहाँ, अव्य (अनु) मा न नो, नहि

आहा, अव्य (स अहह) अहो, हो आ ।

आहार, स पु (स) भक्षण, भोजन, जेमन, अभि (स्त्री) २ खाद्य भक्ष्य, सामग्री ।

—विहार, स पु (-रौ) चर्या, वर्तन वृत्त आचारव्यवहारौ ।

आहार्य, वि (स) भक्ष्य, खाद्य २ अधीनस्थ ३ आहरणीय ४ कृत्रिम । स पु, चतुर्थोऽ नुभाव (सा) ।

अभिनय, स पु (स) वचनचेष्टारहिताऽ भिनय (सा)।

आहिस्ता, क्रि वि (फा त) शनै, मन्दम् ।

—आहिस्ता, क्रि वि, शनै शनै, मन्द मन्दम्।

आहुति, स स्त्री (स) हवन, देवयज्ञ होम, होत्रम् २ हवनसामग्री ३ सामग्र्या सकृद् होतव्या मात्रा ।

—देना, क्रि स, हु (जु उ अ), यज् (भ्वा उ अ) ।

आहु, स पु (फा) मृग, हरिण ।

आहूत, वि (स) आकारित, आ नि, मन्त्रित ।

आहूति, स स्त्री (स) आकारण, आमन्त्रणम् ।

आह्निक, वि (स) दैनिक, दैनंदिन, प्रात्यहिक । क्रि वि अहरह, अनु प्रति दिनम् । स पु, दिनस्य कार्यम् २ महाभाष्यखण्ड ३ अध्या पक ४ दैनिकी भृति (स्त्री) ।

आह्लाद, स पु (स) आनन्द, हर्ष, मोद ।

आह्लादक, वि (स) आह्लादप्रद हर्षजनक, आनन्ददायक ।

आह्लादित, वि (स) प्रसन्न, मुदित ।

आह्वान, स पु (स न) आहूति (स्त्री), आकारण, आमन्त्रणम् २ आह्वानपत्रम् (= सम्मन) ३ यज्ञे देवताकारणम् ।

—करना, क्रि स, आह्वे (भ्वा उ अ) आहू (प्रे) २ देवतां आवह् (प्रे) ।

इ

इ, देवनागरीवर्णमालाया तृतीय स्वर, इकार ।

इक, स स्त्री (अ) मषी, मषी, मसी ।

इगला, स स्त्री (स इडा) मानवशरीरे वाम पार्श्वस्था वक्रा नाडी ।

इंगलिश, वि (अ) आंग्लदेशीय । स स्त्री आंग्लभाषा ।

इंगलिस्तान, स पु (अ इंग्लिश+फा स्तान) आंग्लदेश ।

इंगित, स पु (स न) इङ्ग, संकेत आकार, दैहिकचेष्टा । वि संकेतित ।

इंगुदी, स स्त्री (स) तापसतरु, गुडारि ।

इंच, स पु (अ) अङ्गुल २ अत्यल्प स्थानमात्रम् ।

इंजन, स पु (अ एंजिन) यन्त्रम् २ वाष्प शकटीकर्षकयन्त्रम् ।

इंजीनियर, स पु (एंजीनियर) यन्त्रकार, यन्त्रकर्माभिज्ञ, वास्तुविद्याविशारद ।

इंजेक्शन, स पु (अ) सूचीभरणम् ।

इंट्रेंस, स पु (अ) (ए०स) द्वार २ प्रवेश ३ आङ्ग्लविद्यालयस्य नवमदशमकक्षे (द्वि)

—परीक्षा, स स्त्री, प्रवेशिका परीक्षा ।

इंडुवा, स पु (स गेण्डुक >) घटाद्याधार भूत शीर्षस्थ वर्तुलवस्त्रम् ।

इंतजाम, स पु (अ) सुविधा, प्रबन्ध ।

इंदिरा, स स्त्री (स) पद्मा, कमला दे 'लक्ष्मी' ।

इंदीवर, स पु (स न) नील-कमल उत्प लम् २ कमलम् ।

इंदु, स पु (स) चन्द्र २ कर्पूर रम् ।

इंद्र, वि (स) समर्थ २ श्रेष्ठ । स पु, देव राज, पाकशासन, पुरंदर, शक्र, वज्रिन्, सुरपति, शचीपति, आखण्डल, सहस्राक्ष, नाकनाथ वज्रपाणि २ सूर्य ३ विद्युत (स्त्री ४ नृप ५ ज्येष्ठानक्षत्रम् ६ चतुर्दशसंख्या ७ व्याकरणस्य आदिम आचार्य ८ जीव, प्राणा ।

—का अखाड़ा, स पु १ इन्द्रसभा २ संगीतसभा ।

—जाल, स पु (स न) मायाकर्मन् (न), कुहकम् ।

—जाली, वि (स लिन्) मायाविन्, कुहक चरिन् ।

—जीत स पु (स जित) मेघनाद ।

—जौ, स पु (स यव) कुटज शक्र-बीजम् ।

—धनुष, स पु (स धनुस न) १ इन्द्रचाप सुरधनुस ।

—नील, स पु (स) नील उपल मणि (नीलम)।

—नीलक, स पु (स) मरकत अश्मगर्भ हरि मणि (= जमुर्रद)।

—प्रस्थ, स पु (स न) युधिष्ठिरनिर्मापित दिल्लीसमीपवर्ति नगरम् ।

—लोक, स पु (स) नाक स्वर्ग ।

इन्द्रा, स स्त्री (स) दे इन्द्राणी ।

इन्द्राणी, स स्त्री (स) शची ऐन्द्री पौलोमी महेन्द्री पुलोमजा २ स्थूलैला ३ सूक्ष्मैला ४ निर्गुण्डी ।

इन्द्रानुज, स पु (स) विष्णु ।

इन्द्रायन, स पु (स इन्द्राणी) सुरमा निर्गुण्डी सिंदुवार ।

—का फल, मु , बड़ी रम्योऽ नर्दुष्ट ।

इन्द्रायुध, स पु (स पु न) १ इन्द्रचाप २ वज्र पवि ।

इन्द्रिय, स स्त्री (स न) करण अक्ष हृषीक, ग्रहण, विषयिन् (न) २ जननेन्द्रियम् ३ वीर्यम् ४ पञ्च इति संख्या ।

—अर्थ, स पु (स) इन्द्रियविषय (रूप रसादि)

—जित्, वि (स) जितेन्द्रिय हृषीकेश ।

—निग्रह, स पु (स) इन्द्रिय दमन जय, दम

—वश, वि (स) विषयिन्, विषयवश ।

इंधन, स पु (स न) इध्म एध एधस (न)।

इं(ए)पायर, स पु (अ) साम्राज्यम्, आधिराज्यम् ।

इंपीरियलिज्म स पु (अ) साम्राज्यवाद २ सम्राट्शासनम् ।

इंपोर्ट, स पु (अ) दे आयात ।

इंसाफ, स पु (अ) न्याय धर्म २ निर्णय विवेक

इंस्टिट्यूट, स स्त्री (अ) संस्थानम् ।

इंस्टिट्यूशन, स स्त्री (अ) शिक्षालय विद्यालय २ धर्मशाला ३ रीति (स्त्री)

इन्स्ट्रूमेंट, स पु (अ) उपकरण यन्त्रम् २ साधनम् ।

इन्स्पेक्टर, स पु (अ) निरीक्षक, द्रष्टृ ।

इक, वि, दे एक ।

इकट्ठा, वि (स एकस्थ) एकीकृत, समवेत, गणीभूत ।

—करना, क्रि स, एकत्र भ नि, चि (स्व स अ)।

इकट्ठे, क्रि वि (हिं इकट्ठा) एकीभूय, सम्भूय मिलित्वा ।

इकतार, क्रि वि (स एकतार >) सतत, निरन्तरम् ।

इकतारा, स पु (स एकतार >) एक तार तन्त्रीक वाद्यभेद ।

इकतीस, वि (स एकत्रिंशत् स्त्री एक) स पु उक्ता संख्या, तद्बोधकाङ्कौ (३१) च ।

इकरार, स पु (अ) प्रतिज्ञा, संगर प्रतिश्रव २ अङ्गीकार, कार ।

—नामा, स पु (फा) प्रतिज्ञा समय, पत्र लेख्यम् ।

इकलौता, स पु (स एकल >) भगिनीभ्रातृहीन, पित्रो एकल पुत्र ।

इकसठ, वि (स एकषष्टि स्त्री एक) स पु उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (६१) च ।

इकसार, वि (स एकसार >) समान, सदृश ।

इकहत्तर, वि (हिं इक + सत्तर) एकसप्तति (स्त्री एक) स पु उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (७१) च ।

इकहरा, वि (स एकस्तर) दे एकहरा ।

इकाई, स स्त्री (हिं इक) एका व्यक्ति (स्त्री) २ एकाङ्क ३ त्रैराशिकम् (= इकाई का कायदा)।

इकानवे, वि (हिं इक + नवे) एकनवति (स्त्री एक) स पु उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (९१) च ।

इकावन, वि (स एकपञ्चाशत् स्त्री एक) स पु उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (५१) च ।

इक्यासी, वि (हिं इक + अस्सी) एकाशीति (स्त्री एक) स पु उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (८१) च ।

इकोतर, वि (स एकोत्तर) एकाधिक ।

इक्का, वि (स एक) एकाकिन्, एकल ।

२ अतुल्य, असम । स पु, वाहन यान प्रव हण भेद २ एकांकयुक्त क्रीडापत्रम् ३, एकाकी योध ।

—दुक्षा वि विरल २ मार्गाकृष्ट ३ यूथभ्रष्ट ।

इक्षु, स पु (स) मधु गुड, तृण, महारस, रसाल, पयोधर ।

—रस, स पु (स) मधुतृण सार द्रव निर्यास ।

—सार, म पु (स) गुड ।

इक्ष्वाकु, स पु (स) वैवस्वतमनो पुत्र सूर्यवंशीय प्रथमनृप ।

—नंदन, स पु (स) श्रीरामच द्र ।

इख्तियार, स पु (अ) प्रभाव अधि कार २ अधिकारक्षेत्रम् ३ सामर्थ्यम् ४ स्वामित्वम्

इच्छा, स स्त्री (स) स्पृहा, आकांक्षा, ईहा वाञ्छा, अभिलाष, मनोरथ इष्ट, अभीष्ट, ईप्सित, कामना ।

—करना, क्रि म इष (तु प से), अभि लष, वांछ (दोनों भ्वा प से) कम् (भ्वा आ से, कामयते), स्पृह (चु, चतुर्थी के साथ), (सन्नत रूपों से भी, उ पढने की इच्छा करता है=पिपठिषति)।

—अनुकूल, क्रि वि (स न) यथारुचि, यथेच्छ, यथेष्ट, यथाकामम्।

—भेदी, स पु (स—दिन्) यथष्टविरेचक मौषधम् ।

इच्छित, वि (स) अभीष्ट वांछित, अभि लषित ।

इच्छुक, वि (स) इच्छु अभिलाषिन्, आकां क्षिन् । (टि सन्नत रूपों से भी उ० पढने का इच्छुक-पिपठिषु । तुमुन्नत रूप के बाद 'काम' या 'मनस' लगाकर भी उ० जाने का इच्छुक-गन्तु-काम मना) ।

इजराय, स पु (अ) प्रचालन २ अनुष्ठानम् ।

—डिग्री, स पु (अ+अ डिक्री) राजा ज्ञासाधनम् ।

इजलास,स पु (अ) अधिवेशनम् २ न्याया लय ।

इज़हार, स पु (अ) प्रकाशनम् २ साक्ष्यम् ।

इजाज़त, स स्त्री (अ) अनुमति (स्त्री), अनुज्ञा २ आज्ञा, आदेश ।

इज़ाफा, स पु (अ) वृद्धि (स्त्री), दे ।

इज़ार, स स्त्री (अ) दे 'पाजामा'।

—बन्द, स पु (अ+फा) दे 'नाडा

इजारा, स पु (अ) पण, समय २ पट्ट, पट्टोल्लिका ३ स्वत्वम् ।

इजारे (र) दार, स पु (अ+फा) पणकर्तृ, नियमकृत ।

इज्जत, स स्त्री (अ) म,मान, आदर ।

—उतारना, मु , लघू कृ ।

—रखना, मु, अपमानात् रक्ष (भ्वा प स)।

इज्या, स स्त्री (स) यज्ञ, याग, होम २ पूजा, अर्चा ।

इटा(टै)लिक्स, स पु (अ) वक्रमुद्राक्ष राशि (न बहु)

इटालियन, स पु (अ) इटलीवासिन् २. इटलीज, आयत वस्त्रभेद ३ इटलीभाषा । वि इटलीसम्बन्धिन् ।

इठलाना, क्रि अ (हिं ऐंठ) सगर्व चष् (भ्वा आ से) २ हावदृश (प्रे) ३ पर क्लेशाय अज्ञवत् आचर् (भ्वा प से)।

इठलाहट, स स्त्री (हिं इठलाना) आटोप, गर्व २ हावभाव ।

इडा, स स्त्री (स) भूमि (स्त्री) २ गौ (स्त्री) ३ वाणी ४ स्तुति (स्त्री) ५ ७ यह पात्रदेवता आहुति, विशेष ८ अन्न, हविस (न) ९ नमोदेवता १० दुर्गा ११ पार्वती १२ कश्यप पत्नी १३ वसुदेवपत्नी १४ बुधपत्नी १५ स्वर्ग १६ नाडीभेद ।

इतना, वि [स एतावत् या हिं ई (यह)+ तना (प्रत्य)] एतावत्, एतन्मात्र, इयत् (स्त्री, एतावती, इयती)।

इतने में, क्रि वि एतावन्मध्ये, मन्नान्तरे २ अ स्मिन्नेव समये ।

इतमीनान, स पु (अ) तोष स शान्ति (स्त्री)।

इतमीनानी, वि (अ) विश्वसनीय, विश्वास्य ।

इतर, स पु (अ इत्र) दे 'अतर'।

इतर, वि (स) अन्य, अपर, पर २ नीच ३ सामान्य, साधारण ।

—इतर, क्रि वि, परस्पर अन्यो य, मिथ (सब अव्य)।

इतराश्रय, स पु (सं) अन्योन्याश्रय ।

इतराना, क्रि अ (स उत्तरण>) गर्व् (भ्वा प से) प्रगल्भ (भ्वा आ से)।

इतवार, स पु (अ आदित्यवार) रवि आदि त्य भानु वार वासर ।

इति, अव्य (स) इति शम् इत्योम्, समाप्तिसूचकमव्ययम् । स स्त्री, अवसानं, अन्त समाप्ति (स्त्री)।

—कर्तव्यता, स स्त्री (स) कर्मानुष्ठानविधि (पु)।

—वृत्त, स पु (स न) पुरावृत्त, (पुरानी) कथा ।

—श्री, स स्त्री (स) अन्त, समाप्ति (स्त्री)

इतिहास, स पु (स) पुरावृत्त, पूर्ववृत्तान्त, पुराभूतम् ।

इत्तफाक, स पु (अ) सघटन ना, सघट्टन ना २ सौहार्दम्, सामञ्जस्यम् ३ अवसर, अव काश ।

इत्तला, सं स्त्री (अ) विज्ञापन, ख्यापन, सूचना बोधनम् ।

इत्थं, क्रि वि (स) एव अनेन प्रकारेण।

इत्थम्भूत, वि (स) ईदृश, एतादृश ।

इत्यादि, अव्य (स) आदि, प्रभृति, आद्य (सब समासा त में, ब पिकाकादय)।

इत्यादिक, वि (स) दे 'इत्यादि'।

इत्र, स पु (अ) दे 'अतर'।

इधर, क्रि वि (स अत्र) इत, एतत्स्थान प्रति २ अत्र, इह, अस्मिन् स्थाने ।

—उधर, क्रि वि, इतस्ततः, अत्र-तत्र अनि यतस्थले २ उभयत, उभयत्र ३ अभित, परित (दोनों के साथ द्वितीया), सर्वत, विश्वत, समन्तत, समन्तात् ।

—उधर की बात, मु, अन, प्रवाद श्रुति (स्त्री)।

—की उधर लगाना, मु, कलह् अहो (प्रे)।

—की दुनिया उधर होना, मु, असम्भव भवेद् चेद् ।

इन सर्व, (हि इस) एतद्, इदम् ।

—दिनों, क्रि वि, वर्तमाने, अद्यत्वे ।

इन, स पु (स) सूर्य २ स्वामिन् ।

इनकमटैक्स, स पु (अ) आयकर ।

सं पु (अ) वृहत्परिवर्तन, ... । २ राज्यविप्लव, प्रजाक्षोभ ।

इनकार, स पु (अ) प्रत्याख्यान, प्रति नि, षेध ।

—करना, क्रि स, प्रति नि षिध् (भ्वा प वे)

इनकिशाफ, सं पु (अ०) आविर्भाव, प्राकाश्य, प्राकट्यम् ।

इनकिसार, स पु (अ०) विनय, नम्रता ।

इनफ्लुएञ्जा, स पु (अ) शीतज्वर ।

इनसान, स पु (अ) मनुष्य ।

इनसानियत, स स्त्री (अ) मनुष्यत्वम् २ सज्जनता, शिष्टता ।

इनहिसार, स पु (अ) अवलम्ब, आश्रय ।

इनाम, स पु (अ इनआम) पुरस्कार, पारितोषिकम् ।

इनायत, स स्त्री (अ) कृपा २ उपकार ।

इने गिने, वि (अनु० इन+हि गिनना) कतिचन, स्तोका २ अल्पसंख्याका ।

इबारत, स स्त्री (अ) लेख २ लेखशैली ।

इमरती, स स्त्री (स० अमृतम् >) कुण्डली, मिष्टान्नभेद ।

इमली, स स्त्री (स अम्लिका) आम्लि (ली)- का, चिञ्चा, तिंतिडि (डी) का २ अम्लिका चिंचा, फलम् ।

इमाम, स पु (अ) पुरोहित २ नेतृ ।

—बाड़ा, स पु (अ + हि) मुहर्रमपर्वानुष्ठा नवाट ।

इमारत, स स्त्री (अ) भवन, गृहम् ।

इम्तहान, स पु (अ) परीक्षा ।

इमला, स स्त्री (अ) श्रुतलेख २ अक्षर वर्ण, विन्यास ।

इयत्ता, स स्त्री (स) सीमा, परिमाणम् ।

इरादा, स पु (अ) सङ्कल्प, निश्चय ।

इरावती, स स्त्री (स) कश्यपसुता २ नदी विशेष (= रावी) ३ ओषधिभेद (- प वरचट)।

इर्द गिर्द, क्रि, वि (अनु० इर्द+फा गिर्द) परित अभित, सर्वत २ उभयत, इतस्तत ।

इलज़ाम, सं पु (अ) अभियोग, दोष, आरोप ।

इलहाम, स पु (अ) देववाणी ।

इला, स स्त्री (स) पृथिवी २ पार्वती ३ वाणी ४ बुद्धिमती नारी ५ गौ (स्त्री)।

इलाका, स पुं (अ) प्रदेश, भूभाग । २ सम्बन्ध ।

इलाज, स पु (अ) चिकित्सा, उपचार । २ औषध, औषधि (स्त्री) ३ युक्ति (स्त्री) प्रती (ति) कार ।

इलायची, स स्त्री (स एला) (बड़ी) एला भद्रवाला बहुला, त्रिदिवा २ (छोटी) त्रुति त्रुटि (स्त्री) नदिनी ।

—दाना, स पु (हिं+फा) एलाबीजम् २ कणिबीजम् ३ एलबीजयुक्तो मिष्टान्नभेद ।

इलाही, वि (अ) देव, ईश्वरीय । स पु, ईश्वर ।

इल्म, स पु (अ) विद्या, ज्ञानम् ।

इल्लत, स स्त्री (अ) रोग २ बाधा ३ अपराध ४ व्यसनम् ।

इव, अव्य (स) यथा, तुल्य, सदृश, समान-वत् ।

इशारा, स पु (अ) सकेत इगितम् २ सांक्षिप्तकथनम् ३ गुप्तप्रेरणा ।

इश्क, स पु (अ) अनुराग, प्रणय ।

इश्तहार, स पु (अ) विज्ञापन, विज्ञप्ति (स्त्री) २ घोषणा, ख्यापनम् ।

इषु स पु (स) बाण, सायक ।

इषुधी, स पु (स धि) तूणीर, तूणी

इष्ट, वि (स) वाञ्छित, अभिलषित, आकांक्षित २ अभिप्रेत ३ पूजित । स पु, (स न) धर्मकृत्य, अग्निहोत्रादिकर्माणि २ कुलदेव ३ मित्रम् ४ अरिष्ट, ५ इष्टका ।

—देव, स पु (स) कुलदेवता ।

—देवता, स स्त्री (सं) आराध्यदेव ।

इष्टापूर्त, स पु (स न) यज्ञखातादिकर्मन्(न) ।

इष्टि, स स्त्री (स) अभिलाष २ यज्ञ ३ पतञ्जलिकृता व्याकरणनियम ।

इस, सर्व (स एष) एतद्, इदम् ।

इसपञ्ज, स [redacted] (अ स्पञ्ज) छिद्रदेहाङ्ग २ पराग्रपुष्प ।

इसबगोल, स पु (फा यशबगोल) स्निग्ध, जीरक ।

इसरार, स [redacted] (अ) आग्रह, द० ।

इस्लाम, स पु (अ) मोहम्मदीयधर्म । २ ईश्वरेच्छा स्वीकार ।

इस्लामी, मोहम्मदीयधर्मसम्बधिन् ।

इसे, सर्व (हिं इस) १ (इसको) एन (पु), एना (स्त्री), एतद् (न) इम (पु), इमा (स्त्री), इदम् (न) २ (इसके लिए) एतस्मै (पु न), एतस्यै (स्त्री) अस्मै (पु न), अस्यै (स्त्री) ।

इस्तरी, स स्त्री (स स्तरी >) स्तरणी, रजकलोह दण्ड् ।

इस्तिकबाल, स पु (अ) प्रत्युद्गमन, प्रत्युद्व्रजनम् । स्वागतम्, सत्कार ।

इस्तिगासा, अभियोग, भाषापाद ।

इस्तीफा, स पु (अ इस्तैफा) त्यागपत्रम् ।

इस्तेमाल, स पु (अ) उपयोग, व्यवहार, प्रयोग ।

इह, क्रि वि (स) अत्र २ भूलोके । स पु, भूलोक ।

—लीला, स स्त्री (स) जीवनम् ।

इहाता, स पु (अ) वाटिका, प्रांगण न, परिसरभूमि (स्त्री) ।

ई

ई, देवनागरीवर्णमालाया चतुर्थ स्वरवर्ण, ईकार ।

ईंगुर, स पु (स हिंगुल-लम्) हिङ्गुलि, हिङ्गुलु (पु न), सिन्दूरम् ।

ईंट, स स्त्री (स इष्टका) इष्टिका । (पक्की) इष्टका, पक्वेष्टका, अपक्वेष्टका २ इष्टकाकारो धातुखण्ड ।

—से ईंट बजाना, मु, ध्वस् उन्मूल विनश निपत (सब प्रे) ।

—पत्थर, मु, न किमपि, न किंचित् ।

डेढ़ या ढाई ईंट की मस्जिद अलग बनाना, मु, असामान्य आचर (भ्वा प से) ।

ईंधन, स पु, दे 'इंधन' ।

ईक्षक, स पु (स) दर्शक वीक्षक २ चिन्तक ।

ईक्षण, स पु (स न) अवलोकन, दर्शनम् २ नेत्रम् ३ विवेचनम् ।

ईक्षा, स स्त्री (स) दर्शन वीक्षणम् । विवेचन, पर्यालोचनम् ।

ईख, स स्त्री दे 'इक्षु' ।

ईज़ा, स स्त्री (अ) कष्ट, क्लेश ।

ईजाद, स स्त्री, दे 'आविष्कार' ।

ईठि, स स्त्री (सं इष्टि) सख्य, सौहार्दम् २ प्रयत्न ।

ईति, सं स्त्री (सं) कृषेः षट् उपद्रवाः (यथा अतिवृष्टिः, अनावृष्टिः, शलभाः, मूषिकाः, खगाः, शत्रोराक्रमणम्) २ विघ्नः ३ दुःखम्।

ईथर, सं पु (अं) दधु (न), आष्ट्रम्।

ईद, सं स्त्री (अ) यवनोत्सवभेदः।

—का चाँद, मु, दिवाप्रदीप, दुर्लभदर्शन।

ईदृश, क्रि वि (सं न) इत्थं अनेन प्रकारेण। वि, दे 'ऐसा'।

ईप्सा, सं स्त्री (सं) इच्छा, अभिलाष।

ईप्सित, वि (सं) अभिलषित, इष्ट।

ईमान, सं पु (अ) धर्म २ सत्यम्। ३ आस्तिक्यबुद्धि (स्त्री) ४ श्रद्धा।

—दार, वि (अ + फा) धार्मिक, न्यायवर्तिन् २ निष्कपट ३ आस्तिक ४ विश्वसनीय।

ईरान, सं पु (फा) पारसीक।

ईरानी, वि पारस (—सी स्त्री)। सं स्त्री, पारसी, पारसीकभाषा। सं पु, पारसीका, पारसीकवासिनः (बहु)।

ईर्ष्या, सं स्त्री (सं) मत्सर, मात्सर्य, परोत्कर्षासहिष्णुता, असूया।

ईर्ष्यालु, वि (सं) मत्सरिन्, असूयक, ईर्ष्यिन्, परोत्कर्षासहन।

ईश, सं पु (सं) प्रभु, पति, स्वामिन् २ परमेश्वर ३ नृपः ४ शिव ५ 'एकादश' इति संख्या।

ईशान, सं पु (सं) स्वामिन्, प्रभुः २ महादेव, ३ पूर्वोत्तरदिक्कोण।

ईश्वर, सं पु (सं) परमेश्वर, परमात्मन्, जगदीश्वरः, परमेश २ स्वामिन् ३ शिव। वि, आढ्य।

—प्रणिधान, सं पु (सं न) ईश्वरे भक्त्यातिशय, स्वकर्मणामीश्वरार्पणम्।

ईश्वरीय, वि (सं) दिव्य, दैव, ईश्वरसंबंधिन्।

ईषत्, अव्य (सं) अल्प स्तोक, न्यूनम्।

ईसवगोल, सं पु, दे 'इसबगोल'।

ईसवी, वि (फा) खिस्तसंबंधिन्।

—सन्, सं पु (फा + अ) खिस्ताब्द।

ईसा, सं पु (अ) खिस्त, जीसु।

ईसाई, वि (फा) खिस्तानुयायिन्।

ईहा, सं स्त्री (सं) चेष्टा २ उद्योग ३ अभिलाष ४ लोभ (हि)।

उ

उ देवनागरीवर्णमालायाः पंचम स्वरवर्ण, उकार।

उँकुण, सं पु (सं) मत्कुण, रक्तकीट ओकण।

उँगली, सं स्त्री (सं अंगुली) अंगुल, अंगुरी, करशाखा (उँगलियों के क्रमशः नाम—अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा अनामिका, कनिष्ठा)।

—का पटाखा, सं पु, अंगुलीमोटन, छुटकी।

उँगलियों पर नचाना, मु, यथेच्छं कृ (प्रे)।

—उठाना, मु, निन्द् (भ्वा प से), अधिक्षिप् (तु प अ) २ मनागपि अपकृ।

छोटी—, सं स्त्री, कनिष्ठा।

कानों में उँगली देना, मु, औदासीन्येन पर वचनानि न श्रु (भ्वा प अ)।

दाँतों तले उँगली दबाना, मु, अत्यर्थं विस्मि (भ्वा आ अ), चकितचकित (वि) भू।

पाँचों उँगलियाँ घी में होना, मु, सर्वथा समृध् (दि प से)।

उँघन, सं स्त्री (सं उद्घननम् >) खट्वायाः पादभागस्था रज्जु (स्त्री)।

उचास, वि, दे 'उनचास'।

उछ, सं स्त्री (सं पु) उत्पादितशस्याद् क्षेत्रात् शेषाद्चयनम्, उञ्छनम्।

—वृत्ति, सं स्त्री (सं) उञ्छेन जीवननिर्वाह। वि, उञ्छशील।

उँजियारी, उँज्यारी, सं स्त्री (हि उजारा) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना। वि स्त्री, चन्द्रिका प्रकाश-युक्ता।

उँजेरा, उँजेला, सं पु, दे 'उजाला'।

उँडेलना, क्रि स (सं अव + हि डालना ?) अ, सृ (प्रे) निर्गल् (प्रे), प्रस्यन्द् (प्रे), च्युत (प्रे)।

उदन, सं पु (सं) क्लेदन, आर्द्रीकरणम्।

उंदुर, सं पु (सं उंदरु) मूष (षि) क।

उँह, अव्य (अनु) घृणानिषेधपीडादिसूचकमव्ययम्, धिक्, न, नहि, आः, हा इ०।

उऋण, वि (सं उत्+ऋण) अनृण, ऋणमुक्त।

उकडूँ, सं पु (सं उत्कुटक) उपवेशनप्रकारविशेष।

—बैठना, क्रि अ, अवनतसक्थि आस् (अ आ से)।

उकताना, क्रि अ (सं उत्क>) खिद्—निर्विद् (दि आ अ) उद्विज् (तु आ अ)।

उकताया हुआ, वि खिन्न, निर्विण्ण ।

उकसना, क्रि अ (सं उत्कषण>) स-वि,-क्षुभ (दि प स) उत् स, तप (दि आ अ) २ उद्गम्, उन्नम (भ्वा प अ) ३ प्ररुह (भ्वा प अ) ४ विश्लिष (दि प अ)। स पु, सक्षोभ, संताप, उद्गम, प्ररोह, विश्लेष ।

उकसाना, क्रि स (हिं उकसना) उत्तिज, उद्दीप, प्रोत्सह स-वि-क्षुभ्, प्रचुद (सब प्रे) २ उत्था-उद्गम् (प्रे) ३ अपसृ (प्रे)। स पु, उत्तेजन, उद्दीपन उत्थापन, अपसारणम् ।

उक्त, वि (स) कथित, उदित, भाषित, लपित, व्याहृत, उदीरित ।

उक्ति, स स्त्री (स) कथन, वचनम् २ अद्भुत वाक्यम् ३ संमति (स्त्री)।

उक्थ स पु (स न) सामवेद २ स्तोत्र ३ प्राण

उक्षा, स पु (स उक्षन्) वृषभ २ सूर्य ।

उखड़ना, क्रि अ (स उत्खननम्) उन्मूल्, उत्खन्, समूल उद्हृ (सब कर्म) २ (दृढ स्थित) पृथक् भू ३ संधेः चल (भ्वा प से) वा त्रुट (दि प से) ४ स्वर ताल,-च्युत (वि) भू (संगीत) ५ अपसृ (भ्वा प अ), विद्रु (भ्वा प अ) ६ सीवन त्रुट स पु, उन्मूलन, उत्खनन, संधिस्खलन, स्वर-ताल,-भंग अपसरण, सीवनत्रोटनम् ।

दम—, मु, स्वरभंग २ प्राणनिष्क्रमणम् ।

पैर—, मु, विद्रवण, पलायनम् ।

उखड़वाना, क्रि प्रे (हिं उखड़ना) अन्येन उन्मूल्—उत्पट—उत्खन्—व्यपरुह्—उच्छिद् (सब प्रे)।

उखली, स स्त्री (स उदूखलम्) उदूखलम् ।

उखा, स स्त्री, (स) स्थाली दे 'देग'।

उखाड़, स स्त्री (हिं उखाड़ना) उन्मूलन, उत्पाटन, उत्खननम् ।

उखाड़ना, क्रि स (हिं उखड़ना) उन्मूल्-उत्पट्-उत्खन्-व्यपरुह्-उच्छिद् (सब प्रे) २ संधि चल् (प्रे) ३ वि-परा,-जि (भ्वा आ अ) ४ अपसृ (प्रे) ५ विनश् (प्रे)

गड़े मुर्दे—मु विस्मृतकलहान् पुनः उद्दीप् (प्रे)।

उगना, क्रि अ (स उद्गमनम्) उद्गम् (भ्वा प अ), उदि (= उत् + इ अ प अ), उदय (= उत् + अय्, भ्वा आ से) २ स्फुट् (तु प से), उद्भिद् (कर्म) प्ररुह् (भ्वा प अ) ३ उत्पद् (दि आ अ), जन् (दि आ से) । स पु उद्गम, उदय, उद्भेद, प्ररोह, प्र , स्फुटनम्, उत्पत्ति (स्त्री)।

उगा हुआ, वि, उद्गत, उदित, उद्भिन्न, प्ररूढ, प्र , स्फुटित, उत्पन्न ।

उगलना, क्रि स (स उद्गिरणम्) उद्गॄ (तु प से), वम् (भ्वा प से), छर्द् (चु)। २ अन्यायप्राप्तधन प्रतिदा (जु उ अ) ३ गोपनीय प्रकाश (प्रे) ४ बहिष्कृ (त उ अ)।

जहर—, मु, अरुंतुद वचन वद् (भ्वा प से)

उगलवाना, क्रि प्रे (हिं उगलना) वम् उद्गॄ (प्रे) २ अपराध स्वीकृ (प्रे) ३ अन्यायलब्ध धन प्रतिदा (प्र प्रतिदापयति)।

उगाना, क्रि स, (हिं उगना) प्ररुह (प्रे), (अन्नादिक) उत्पद् (प्र) ३ प्रहाराय शस्त्रादिक उन्नम् (प्रे)।

उगार, स पु (सं उद्गार>) निपीडित-निर्गलित-निर्गालित,-जलम् ।

उगाल, स पु (स उद्गार) मुखस्राव, लाला २ कफ, श्लेष्मन् (पु) ३ जीर्ण वस्त्रम् ।

—दान, स पु, प्रतिग्राह, पतद्ग्रह ।

उगालना, क्रि स (हिं उगलना) उद्गॄ (तु प से) २ रोमन्थायते (ना धा)।

उगाहना, क्रि स (स उद्ग्रहणम्>) (कर ऋण वा) समाहृ (भ्वा उ अ), संग्रह (क्र्या उ अ), अव वि स नि, चि (स्वा उ अ)।

उगाही, स स्त्री (हिं उगाहना) (धनस्य) समाहार, संभरण, संग्रहण, समुच्चयनम् २ संभृत धनम् ३ भूमिकर ४ ऋणादिकस्य अंशशः संग्रहणम् ५ कुसीद, वार्धुष्यवृत्ति (स्त्री)।

उग्र, वि (स) प्रचंड, तीव्र, प्रबल, घोर, रौद्र। स पु (स) शिव २ विष्णु ३ सूर्य ।

उग्रता, स स्त्री (सं) प्रचण्डता, भयकरता, निर्दयता, उद्दण्डता।

उग्रसेन, सं पु (सं) कंसजनक ।

उग्रा, सं स्त्री (स) दुर्गा, महाकाली २ कर्कशा नारी ३ वचा ४ छिक्किकौषधम्।

उघड़ना, क्रि अ (सं उद्घटनम्) उद्घट् (कर्म) अपा वि,-वृ (कर्म) २ नग्नी विवस्त्री भू ३ प्रकाश्(भ्वा आ से) ४ रहस्य भिद् (कर्म)।

उघाड़ना, क्रि स (हिं उघड़ना) उद्घट (प्रे) अपा वि, वृ (स्वा उ से) २ नग्नी विवस्त्री -कृ ३ प्रकट् (प्रे) ४ रहस्य भिद् (प्र)।

उघाड़ा, वि (हिं उघाड़ना) विवस्त्र, नग्न २ प्रत्यक्ष ३ प्रकाशित।

उचकन, स पु (हिं उचकना) आधार, अवलम्ब, पात्रादिकस्याधारभूत प्रस्तरखण्ड।

उचकना, क्रि अ (स उच्चकरण>) प्रपदेन उत्स्था (भ्वा प अ), पादाग्रेण काय उन्नम् (प्र) २ उत्प्लु (भ्वा आ अ)।

उचकाना, क्रि स (हिं उचकना) उचकना के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप।

उचक्का, स पु (हिं उचकना) वचक, प्रतारक, धूर्त २ ग्रथि,-छेदक -चोर।

उचटना, क्रि अ (सं उच्चाटनम् >) विश्लिष् (दि प अ), विरद् (भ्वा आ से), वियुज् (कर्म) २ विरज् (कर्म), उपेक्ष् (भ्वा आ से)।

उचरना, क्रि स, दे 'बोलना'।

उचटाना, क्रि स (स उच्चाटनम् >) विश्लिष् विघट् विच्छिद् (प्रे)।

उचाट, स [illegible] (सं उच्चाट >) विरक्ति (स्त्री), वैराग्य, औदासीन्य, अ यमनस्कता। वि, उदासीन, विरक्त।

—होना, क्रि अ निर्विद् खिद् (दि आ अ)।

उचण्ड, वि (स) प्रचण्ड, अत्युग्र २ क्रुद्ध, कुपित ३ अधीर।

उचित, वि (स), युक्त, सगत, उपपन्न।

उच्च, वि (स) उन्नत उच्छ्रित, उत्तुङ्ग, उद्गत २ उत्तम, श्रेष्ठ।

उच्चय, स पु (स) निचय, निकर २ चयनम् ३ अभ्युदय।

उच्चता, सं स्त्री (सं) उच्छ्र (च्छा) य, आरोह, उत्सेध, तुङ्गता २ श्रेष्ठत्व, महत्त्वम्।

उच्चाटन, स [illegible] (स न) विश्लेषण पृथक करणम् २ उत्पाटन, उन्मूलनम् ३ तान्त्रिका भिचारभेद ४ विरक्ति (स्त्री)।

उच्चार, स पु (स) भाषण २ पुरीषम्।

उच्चारण, सं [illegible] (सं न) उदीरण, भाषणम् २ भाषणविधि।

—करना, क्रि स, उच्चर्-उदीर् (प्रे), व्याह (भ्वा प अ), गद्-वद् (भ्वा प से)।

उच्चारित, वि (स) उदीरित, उदित, भाषित, व्याहृत।

उच्चावच, वि (सं) उत्तमाधम, उत्कृष्टापकृष्ट, उत्तराधर, उन्नतावनत।

उच्चित, वि (स) सगृहीत, सचित।

उच्चैःश्रवा, सं पु (स -श्रवस्) समुद्रमथनज श्वेतघोटक २ एट, ईषद्-, बधिर।

उच्छलन, स पु (स न) उद् -पतन-प्लवन, वल्गनम्।

उच्छिन्न, वि (स) खण्डित, लून २ उन्मूलित ३ नष्ट।

उच्छिष्ट, वि (स) भुक्तावशिष्ट, जुष्ट २ व्यवहृतचर। सं पु भुक्तावशिष्टवस्तु (न), जुष्ट २ मधु (न)।

उच्छू, स पु (अनु) जलादिरोधन कासभेद।

उच्छृंखल, वि (सं) निरकुश, स्वैरिन्, उद्दाम, उद्दण्ड, अशिष्ट, अविनीत २ उन्मूत्र, विधि-क्रम नियम, विरुद्ध।

उच्छेद, स पु (स) उन्मूलन, उत्पाटन, विश्लेषण, खण्डनम् २ नाश, ध्वस।

—करना, क्रि स, उन्मूल्-उत्पट् विश्लिष् नश् (प्रे)।

उच्छेदन, स पु (स न) दे 'उच्छेद'।

उच्छ्वास, स पु (सं) आहर, श्वास २ श्वास ३ ग्रन्थपरिच्छेद।

उछल, स [illegible] (स उच्छल) क्रोडम् २ हृदयम्।

उछल-कूद, सं स्त्री (हिं उछलना-कूदना) क्रीडा, खेला, विहार, कूर्दनं, क्रीडाकूर्दनम् २ चापल्य, अधीरता।

उछलना, क्रि अ (स उच्छलनम्) उच्छल् वल्ग्(भ्वा उ से) उत्प्लु (भ्वा आ अ), उत्पत् (भ्वा प से) २ अत्यन्तं प्रसद्

(भ्वा प अ) ३ नृ (भ्वा प से)। सं पु, उच्छलन, उत्पतन, उत्, प्लवन, वल्गिन, प्लव, झप पा।

उछाल, स स्त्री (सं पु) दे 'उछलना' स पु। १ प्लवनावधि, प्लुतिसीमा ३ वमनम्।

उछालना, क्रि स (सं उच्छालनम्) उच्छल् (प्रे), उत्क्षिप् (तु प अ) २ प्रकट् (प्रे)।

उछाह, स पु (स उत्साह) उत्सुकता, व्यग्रता २ हर्ष आनन्द ३ उत्सव ४ रथयात्रा।

उजड़ना, क्रि अ (स अवनटनम्>) विनन-निर्जन (वि) भू २ नि-अव, पत् (भ्वा प से), ध्वस-भ्रश (भ्वा आ से) ३ क्षय या (अ प अ)।

उजड्ड, वि (स उद्+जड>) जड, मूढ, अज्ञ २ असभ्य, अशिष्ट ३ उद्दण्ड, निरंकुश।

उजबक, स पु (तु) जातिविशेष २ मूर्ख।

उजरत, स स्त्री (अ) भृति (स्त्री), वेतनम् २ कर्मण्या, निष्क्रय।

उजलत, स स्त्री (अ) शीघ्रता, त्वरा।

उजला, वि (स उज्ज्वल) श्वेत, शुक्ल, शुभ्र, धवल, सित, धौत, गौर २ स्वच्छ, निर्मल ३ दीप्त, दिव्य, प्रकाशमान।

उजागर, वि (स उद्+जागरित>) प्रकाशमान २ प्रसिद्ध।

उजाड़, स पु (हिं उजड़ना) जीर्ण-शीर्ण, स्थानम् २ निर्जन विनन-स्थानम् ३ वनम्, अरण्यम्। वि, जजर, जीर्ण २ शून्य, विजन ३ एकान्त, विभृत।

उजाड़ना, क्रि स (हिं उजड़ना) निर्जनी शून्यी-कृ, अवसद् (प्रे) २ नि-अव, पत् (प्रे) वि प्र-नश (प्रे), प्र वि, ध्वस् (प्रे), उन्मूल्-उत्पट् (चु)।

उजाड़ू, वि (हिं उजाड़ना) अतिव्ययिन् २ मुक्तहस्त।

उजाला, स पु (स उज्ज्वाल) प्रकाश, आलोक, द्युति-दीप्ति (स्त्री)। वि, उज्ज्वल, प्रकाशमान।

उजाली, सं स्त्री (हिं उजाला) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना। वि उज्ज्वला, दीप्ता।

उजाम, सं पु (हिं उजाला) आलोक, प्रकाश।

उजियारी, सं स्त्री (हिं उजारा) चन्द्रिका २ प्रकाश ३ सती नारी।

उज्जयिनी, सं स्त्री (सं) अवन्ती, विशाला, मालवराजधानी।

उज्ज्वल, वि (सं) देदीप्यमान, प्रदीप्त, रुचिर, भासुर २ विशद, निर्मल ३ श्वेत, सित ४ निष्कलङ्क, अकलुष।

उज्ज्वलता, स स्त्री (सं) दीप्ति-कान्ति (स्त्री) २ स्वच्छता ३ धवलता ४ निष्कलङ्कता।

उटंग, वि (स उत्तुङ्ग>) क्षुद्रपरिमाण (वस्त्र)।

उटज, सं पु (स पु न) पर्ण, शाला-कुटी, कुटीर।

उठना, क्रि अ (स उत्थानम्) उत्था-समुत्था (भ्वा प अ) २ उदय् (भ्वा आ से), उद्-इ (अ प अ), ३ उच्छल (भ्वा उ. से) ४ जागृ (अ प से) ५ उत्पद् (दि आ अ) ६ सहसा आरभ (भ्वा आ अ) ७ सज्जीभू, उद्यत् (भ्वा आ से) ८ परिस्फुट (वि) भू ९ फेनायते (नाधा) १० निष्पद्-समाप् (कर्म) ११ (रीति आदि) विलुप् (दि प से) १२ व्यय्-विनियुज् (कर्म) १३ विक्री (कर्म) १४ भित्त्यादय क्रमश निर्मा (कर्म) १५ गोमहिष्यादीना गर्भधारणेच्छा। सं पु उत्थान, उदय, उत्पात, उद्गम, ऊर्ध्वगमन, अधिरोहण, उच्छलन, जागरण, सहसा आरम्भ, सिद्धता, सज्जता, स्फुटन, फेनक, समाप्ति (स्त्री), पिधान, विलोप, व्यय, विक्रय, भाटकेन नियोग।

उठती जवानी, स स्त्री, यौवनारम्भ।

उठते-बैठते, क्रि वि, प्रतिक्षण, सर्वदा।

उठना-बैठना, सु, आचार, व्यवहार, शालम्।

उठवाना, क्रि प्रे (हिं उठना) अन्येन उत्था-उद्गम्-उन्नम् (प्रे)।

उठाईगीरा, सं पु (हिं उठाना+फा गीर>) चौर, मोषक २ धूर्त, कितव।

उठान, स स्त्री (स उत्थानम्) समुत्थान, उद्गमनम् २ वृद्धि (स्त्री) ३ आरम्भ ४ व्यय।

उठाना, क्रि स (हिं उठना) उठना के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप बनाएँ ।

उठाव, स पु (हिं उठाना) व्यय २ उन्ताश ।

उठौनी, स स्त्री (हिं उठाना) उन्नयन, उत्क्षपणम् २ उत्थापनमूल्यम् ३ प्राग्दत्त मूल्यम् ४ वर्धिग्भि उद्धार ५ देवपूजार्थ पृथग्धृत धनम् ६ मृतस्यास्थिचयनरीति (स्त्री) ६ मृत्योर्द्वितीये तृतीये वा दिने सवधिपुरुषस्य उष्णीषपरिधापनरीति (स्त्री)।

उड़क्कू, वि (हिं उड़ना) गगनगामिन् २ चल।

उड़द, स पु (स ऋद्ध>) दे 'उरद'।

उड़नखटोला, स पु (हिं उड़ना+खटोला) विमानम्, वायुयानम् ।

उड़नछू, वि (हिं उड़ना) लुप्त, अदृष्ट ।

उड़ना, क्रि अ (स उड्डयनम्) उद्, डी (भ्वा तथा दि आ स), उत्पत् (भ्वा प से), खे विसृप (भ्वा प अ) २ सत्वर गम् ३ तिरोभू, अन्तर्धा (कर्म) ४ (सुरङ्गादि) महाशब्देन विभिद् (कर्म) ५ वि प्र सृप् (भ्वा प अ) ६ प्रचल् प्रचर् (भ्वा प से) ७ अभिमन् (दि आ अ) ८ उत् वि सृज् (कर्म) ९ मलिनी भू १० वायौ इतस्ततः स्फुर (तु प से) ११ सहसा विच्छिद् (कर्म) १२ वञ्च् (चु) १३ वल्ग् (भ्वा प से)। स पु, दे 'उड़ान'।

उड़ती खबर, स स्त्री (हिं+अ) किंवदन्ती ।

उड़ाऊ, वि (हिं उड़ाना) दे, 'उड़क्कू' २ अतिव्ययिन्, अतिमुक्तहस्त ।

उड़ाका, वि (हिं उड़ना) दे, 'उड़क्कू' २ वायुयानचालक ।

उड़ान, स स्त्री (स उड्डयनम्) डयन, उत्पतन, खे विसर्पणम् २ प्लुति (स्त्री) ३ पलायनम् ४ प्रकोष्ठ ।

उड़ाना, क्रि स (हिं. उड़ना) 'उड़ना' के धातुओं के प्रे रूप। २ चुर् (चु) ३ अपस (प्रे) ४ अपव्यय् (चु) ५ तड् (चु) ६ वाक्छल कृ ७ ध्मा (भ्वा प अ) ८ विलुभ् (प्रे)।

उड़िया, वि (हिं उड़ीसा) उत्कल २ उत्कल प्रान्तवासिन् ३ उत्कलभाषा ।

उड़ीसा, स पु (स ओड्रदेश) उत्कल, उत्कलप्रान्त ।

उडुंबर, स पु (सं) दे 'गूलर' २ देहली, गृहावग्रहणी ३ क्लीव नपुंसक ४ कुष्ठरोगभेद ।

उडु, स पु (स स्त्री न) नक्षत्र, तारका २ तारासमूह, राशि ३ पक्षिन् ४ नाविक ५ जलम्।

—गण, स पु (स) तारासमूह ।

—पति,—राज, सं पु (सं) चन्द्र, इन्दु ।

उडुप, स पु (सं उडुप पम्) प्लव, तरण, तारण, तारक २ नौका ३ चन्द्र ।

उड़ेलना, क्रि, स दे 'उँडेलना'।

उड्डयन, स पु (स न) नभोगति (स्त्री), दे 'उडान'।

उड्डीयमान, वि (स) उड्डयनविशिष्ट, खे विसर्पत् (शतृ)।

उतंग, वि (स उत्तुंग) उच्छ्रित २ श्रेष्ठ।

उतना, वि (हिं उस>) तावत् (-ती स्त्री)। क्रि वि, तावत् (न), तावन्मात्रम् ।

—भी, तावदपि, तावन्मात्रमपि ।

उतरन, स स्त्री (स अवतरण>) जीर्ण अवतारित,-वस्त्रम् ।

उतरना, क्रि अ (स अवतरणम्) अवतॄ-अवपत् (भ्वा प से) अधोगम् अवरुह् (भ्वा प अ) २ परिक्षि (कर्म०) ह्रस (भ्वा प से) ३ (नस आदि का) मथ स्खल (भ्वा प से), विसन्धा (कर्म०) ४ (रंग) विवर्णी भू, म्लै (भ्वा प अ) ५ (क्रोधादि) शम् (दि प से) व्यपगम् ६ (डेरा करना) वस्-स्था (भ्वा प अ) ७ (तस्वीर) आलेख्येन अङ्क् (कर्म०) ८ सहसा विश्लिष् (दि प अ) ९ (वस्त्रादि) उन्मुच्-अवतॄ-अपनी (कर्म) १० जन् (दि आ से), अवतार ग्रह् (प्रे) ११ (पकना) पच् (कर्म)। क्रि स, (सं उत्तरणम्) स-उत्, तॄ, उत्, लङ्घ् (भ्वा आ से)। स पुं, अवतार, अवतरण, अधोगमन, ह्रास, विसन्धान, विवर्णीभाव, ग्लानि (स्त्री), उपशम, आलेख्याङ्कन, सहसा विश्लेष अपनयनं देहधारण, पचन, सम्-उत्,-तरणं लङ्घनम् ।

उतरकर, वि हीन अल्प ।

चित्त से—, मु विस्मृ (कर्म) २ अप्रिय (वि) भू ।

चेहरा—, मु म्लानमुख (वि) भू ।

उतरा, वि (हिं उतरना) अवतीर्ण २ म्लान ३ छिन्न ४ धृतत्यक्त (वस्त्र) ।

उतराई, सं स्त्री (हिं उतरना) अवतरण, अधोगमन २ उत्तरणम् ३ आतार, तरपण्यम् ४ अवसर्पिणी भूमि (स्त्री) ५ गिरि नितम्ब ।

उतराना, क्रि अ (स उत्तरणम्) प्लु (भ्वा आ अ), तॄ (भ्वा प से) २ क्वथ्-तप्-पच (कर्म) ३ निरन्तर अनुगम् ४ भास (भ्वा आ से) ५ अन्वेन+अवन आदि के प्रे रूप ।

उतरायल, वि (हिं उतारना) अवतारित त्यक्त, जीर्ण (वस्त्रादि) ।

उतान, वि (स उत्तान) ऊर्ध्वमुख (–खी स्त्री), अवपृष्ठशायिन्, उत्तानशय ।

उतार, सं पु (अवतार) अवतरण नीचैर्गमनम् २ प्रावण्य, अवसर्पिणी भू (स्त्री) ३ अवतरणोचित स्थानम् ४ क्रमशः क्षय ५ तीर्थम् ६ क्षीयमाणा वेला ७ निकृष्ट ८ शान्तिकर व्यवहार ९ प्रतिविषम् ।

—चढ़ाव, स पु, आरोहावरोहौ २ लाभालाभौ ३ पातोत्पातौ ४ अस्थैर्यम् ।

उतारन, स पु (हिं उतारना) दे 'उतरायल' २ निकृष्ट-तुच्छ-त्याज्य,-वस्तु-पदार्थ ।

उतारना, क्रि स (हिं उतरना) उतरना' के धातुओं के प्रे रूप ।

उतारा, सं पु (स अवतार) निवेश, समावास २ अव-स, स्थिति (स्त्री) ३ उद्, स्थन ४ अवतरण-निवेश,-स्थानम् ५ प्रेतबाधानाशक उपचारभेद, तदर्थ वस्तुजात वा ।

उतारू, वि (हिं उतरना) सन्नद्ध, सज्ज, सिद्ध ।

उतावला, वि (सं. उत्वर) आशुकारिन्, सत्वर, अविलम्बिन्, २ अविमृश्यकारिन् ३ उत्सुक ।

उतावली, स स्त्री (सं त्वरा) त्वरा, तूर्ण (स्त्री), शीघ्रता, क्षिप्रता, वेग २ व्यग्रता, चाञ्चल्यम् । वि, स्त्री, सत्वरा, आशुकारिणी २ असमीक्ष्यकारिणी ३ उत्सुका ।

उतृण, वि, दे 'उऋण' ।

उत्कंठा, सं स्त्री (सं) उत्कलिका, लालसा, तीव्राभिलाष २ सञ्चारिभावभेद (सा) ।

उत्कंठित, वि (सं) उत्क, उन्मनस, उत्सुक ।

उत्कंठिता, स्त्री (स) प्रियमिलनोत्सुक नायिका ।

उत्कंधर, वि (सं) उत्कण्ठ, उद्ग्रीव ।

उत्कट, वि (सं) तीव्र, प्रचंड, उग्र, दुःसह ।

उत्कर्ष, स पु (सं) महिमन् (पु), महत्त्व, २ श्रेष्ठता ३ समृद्धि (स्त्री) ४ व्याक्षेप-विलम्ब, ५ अतिशय ।

उत्कल, सं (स) दे 'उड़ीसा' २ व्याध ।

उत्कीर्ण, वि (स) उद्, लिखित २ छिन्न, विद्ध ३ पाषाणकाष्ठादिषु लिखित ।

उत्कृष्ट, वि (स) प्रकृष्ट प्रशस्त, उत्तम, श्रेष्ठ ।

उत्कृष्टता, सं स्त्री (स) महत्त्व, श्रेष्ठता, प्रकर्ष ।

उत्कोच, स पु (सं) दे 'घूँस' ।

उत्तप्त, वि (सं) परि प्र-स,-तप्त, अत्युष्णीकृत २ क्षुब्ध, दुःखित ३ क्रुद्ध ।

उत्तम, वि (सं) श्रेष्ठ, विशिष्ट, वरेण्य, प्रवर (टि इसी अर्थ में समासान्त में पुंगव, ऋषभ, व्याघ्र, सिंह, शार्दूल, इन्द्र आदि, जैसे—नरों में उत्तम = नर, पुंगव शार्दूल इ) ।

उत्तमता, सं स्त्री (सं) श्रेष्ठता उत्कृष्टता, गुणातिशय, विशिष्टता ।

उत्तमर्ण, स पु (स) ऋणद, ऋणदातृ ।

उत्तमा, वि स्त्री (स) भद्रा, साध्वी, श्रेष्ठा । सं स्त्री (स) १-२ नायिका-दूती,-भेद ।

उत्तमांग, स पु (सं न) शिरस (न) दे 'सिर' ।

उत्तमार्द्ध, र्ध, स पु (स पु न) उत्कृष्ट,-अर्द्ध-अर्द्धम् २ उत्तर,-अर्द्ध-अर्द्धम् ।

उत्तमोत्तम, वि (स) सर्वोत्तम, महत्तम ।

उत्तर[1], स पु (सं उत्तरा) उदीची, उत्तर,-दिशा-आशा, कौबेरी ।

—अयन, (–उत्तरायणम्) स पु (स न) माघादिषण्मासात्मक 'सूर्यस्योत्तरदिग्गमनकाल' २ कर्कसंक्रान्ति (स्त्री) ।

—की ओर, क्रि वि, उत्तराभिमुख, उत्तरेण, उत्तरदिशि, उत्तरत (षष्ठी के साथ), उत्तर (पंचमी के साथ) ।

—की ओर मुखवाला, वि, उदङ्मुख (-खी स्त्री)।
—पश्चिम, सं पु, उत्तरपश्चिमा, वायवी (दिशा)।
—पश्चिमी, वि, वायव, वायुदिक्स्थ।
—पूर्व, स पु, उत्तरपूर्वा, पूर्वोत्तरा, प्रागुत्तरा, प्रागुदीची, ऐशानी।
—पूर्वी, वि पूर्वोत्तर, प्रागुत्तर, प्रागुदीचीन, पूर्वोत्तरस्थ।
—संबंधी, वि उदीच्य, उदीचीन, उत्तरस्थ।
उत्तर¹, स पु (सं न) प्रतिवचन, प्रतिवाक्य, प्रत्युक्ति प्रतिवाच् (स्त्री) २ प्रत्युत्तरम् ३ प्रति (ती) कार ४ अलंकारभेद (सा)।
—दायित्व, सं पु (सं न) प्रतिवाच्यता, प्रष्टव्यता, भार, अनुयोज्यता।
—दायी, वि (सं यिन्) प्रष्टव्य, अभियोक्तव्य अनुयोज्य, प्रतिवाच्य, उत्तरदातृ।
उत्तर², वि (सं सर्व) पर, अपर, अवर, अन्य २ अन्तिम, चरम ३ उक्तरोक्त ४ गरीयस, ज्यायस्।
—अधिकार, सं पु (सं) अंशित्व, दायादत्व, रिक्थहरत्वम्।
—अधिकारी, सं पु (सं रिन्) दायाद, रिक्थ, हर भागिन्, रिक्थिन्, अंशहर, अंशिन्। (स्त्री दायादा, अंशहरी)।
—अर्द्ध, सं पु (सं पु न) अपर-पर अवर, अर्द्ध-अर्द्धम्।
—उत्तर, क्रि वि (सं न) आधिकाधिक, २ क्रमेक्रमे ३ अनुपूर्वशः, आनुपूर्व्येण ४ क्रमशः ५ निरन्तरम् ६ प्रतिदिनम्।
—पक्ष, स पु (सं) सिद्धान्त, समाधि।
—मीमांसा, सं स्त्री (स) वेदान्तदर्शनम्।
उत्तरण, सं पु (सं न) संतरणम्, उल्लंघनम्, समुत्तरणम्, पारायणम्।
उत्तरा, सं स्त्री (सं) उत्तरा दिक् (स्त्री), कौबेरी, उदीची, २ अभिमन्युपत्नी।
—खंड, सं पु (सं पु न) हिमालयसमीपवर्ती भारतवर्षस्योत्तरभाग।
उत्तराभास, स पु (स) असत्योत्तर, मिथ्या प्रतिवचनम्। २ व्याज, मिष, छलम्।
उत्तरीय, स पु (स न) बृहतिका, सव्यान, प्रावा(व)र। वि, उपरिस्थ, ऊर्ध्व, उपरितन २ दे 'उत्तरसंबंधी'।
उत्तान, वि (सं) दे 'उतान' २ गाम्भीर्यरहित ३ ऊर्ध्वतल।
—पाद, सं पु (सं) ध्रुवपितृ।
उत्तीर्ण, वि (सं) पारगत २ मुक्त ३ परीक्षाया सफल।
उत्तुंग, वि (स) अत्युच्च, अतीवोन्नत, प्रांशु, अत्युच्छ्रित।
उत्तेजक, वि (सं) उद्दीपक, प्रोत्साहक, प्रवर्तक, प्रेरक २ विकारोत्पादक ३ संक्षोभक।
उत्तेजन, स पु (सं न) दे 'उत्तेजना'।
उत्तेजना, सं स्त्री (स) प्रेरणा, प्रोत्साह, उद्दीपन २ संक्षोभणम् ३ मनोवेगोत्पादनम्।
उत्तोलन, सं पु (सं न) उत्थापन, उत्कर्षणम् २ तोलन, तुलया भारबोधनम्।
उत्थान, सं पु (सं न) उद्गमन, उत्पतनम् २ आरम्भ ३ उन्नति (स्त्री) ४ सैन्यम् ५ युद्धम् ६ पौरुषम् ७ हर्ष।
उत्थापन, सं पु (सं न) उत्तोलन, उन्नयनम् २ विधूननम्, वेष्टनम् ३ विप्र-बोधनम्।
उत्थित, वि (सं) कृतोत्थान, उद्गत २ उत्पन्न ३ प्रोथित ४ वृद्धिमत् ५ जागरित।
उत्पत्ति, सं स्त्री (स) उद्गम, उद्भव, जन्मन् (न) २ संसार ३ आरम्भ।
उत्पन्न, वि (स) जात, उद्भूत।
उत्पल, सं पु (सं न) कमलम् २ नील कमल, कुवलय, कुवल, कुवेल, रात्रिपुष्प ३ जलजपुष्पसामान्यम् ४ पुष्पम्।
उत्पलिनी, स स्त्री (सं) कमल-उत्पल-निकर-समूह २ कमलिनी।
उत्पाटन, सं पु (सं न) उन्मूलनम्।
उत्पाटित, वि (सं) उन्मूलित २ अपनीत ३ सिंहासनात् अवपातित।
उत्पात, सं पु (सं) अजन्य, उपद्रव, आपद् (स्त्री) २ कोलाहल, डमर ३ विप्लव।
उत्पाती, सं पु (सं तिन्) उत्पात-उपद्रव संक्षोभ-कर कारिन्, कुचेष्ट, लोककण्टक।
उत्पादक, वि (सं) जनक, उत्पादयितृ।
उत्पादन, सं पु (स न) जननं, प्रसव, प्रसूति (स्त्री)।

उत्पीडन, सं पु (सं न) पीडन, अर्दन, बाधन, निकार।

उत्प्रेक्षा, सं स्त्री (सं) आरोप उद्भावना २ अर्थालंकारभेद (सा) ३ अनवधानम्।

उत्फुल्ल, वि (सं) विकसित २ प्रसन्न।

उत्स, सं पु (सं) प्रस्रवण, दे 'झरना'।

उत्संग, सं पु (सं) अंक, क्रोडम् २ मध्य भाग ३ सानु ४ सौधादीनामुपरिभाग ५ विरक्त।

उत्सर्ग, सं पु (सं) परि, त्याग, विसर्जनम् २ दान, वितरणम् ३ समाप्ति (स्त्री) ४ व्यापकनियम।

उत्सर्जन, सं पु (सं न) दे 'उत्सर्ग'।

उत्सव, सं पु (सं) मह, क्षण उद्धव यात्रा, पर्वन् (न)।

उत्साह, सं पु (सं) क्रियदेतिका, औत्सुक्य, व्यग्रता २ उद्यम, अध्यवसाय ३ साहस, वीर्यम्।

उत्साही, वि (सं, ह्नि्) सोत्साह, उत्साहवत्, अत्युत्सुक २ उद्यमिन्, अध्यवसायिन् ३ शूर, वीर।

उत्सुक, वि (सं) उत्कंठ, सोत्कंठ, लालस, सोत्साह, विलम्बासहिष्णु।

उत्सुकता, सं स्त्री (सं) औत्सुक्य, कुतूहल, व्यग्रता, लालसा, कौतुकम्।

उत्सृष्ट, वि (सं) त्यक्त, समुज्झित।

उथल-पुथल, सं स्त्री (हि उथलना) क्रमभंग, व्यतिक्रम, व्यस्तता, विपर्यय, अव्यवस्था। वि, क्रम-व्यवस्था-हीन, अव्यवस्थित, विपर्यस्त।

उथला, वि (सं उत्स्थल) गाध, उत्तान, अल्पगाध, जल-तोय।

उदंत, सं पु (सं) समाचार, वृत्तान्त, वार्ता २ सज्जन।

उदक, सं पु (सं न) जल, पानीयम्।

—क्रिया, सं स्त्री (सं) तिलाञ्जलि २ तर्पणम्।

उदक्रान्त, सं पु (सं) तीर, तटम्।

उदधि, सं पु (सं) समुद्र, सागर २ घट ३ मेघ।

—सुत, सं पु (सं) चन्द्र २ अमृतम् ३ शंख ४ कमलम् ५ सागरज (पदार्थ)।

—सुता, सं स्त्री (सं) लक्ष्मी २ शुक्तिका।

उदय, सं पु (सं) ऊर्ध्वगमन, उद्गम, उदयनम्, उत्थानम्।

—होना, क्रि अ, उद्-या-उद् इ (अ प अ), उद् अय (भ्वा आ से), उद्गम्।

—अचल, सं पु (सं) उदय, गिरि-अद्रि, पूर्व-पर्वत-अचल।

उदयास्त, सं पु (सं स्त्री) अस्तोदयौ, उदयास्तमने। क्रि वि प्रातरारभ्य सायं यावत्, सर्वं दिनम्।

उदर, सं पु (सं न) तुन्द, कुक्ष कुक्षि, पिचिंड २ आमाशय, पक्वाशय, ३ मध्य-भाग-देश, अन्तर, गर्भ।

—ज्वाला, सं स्त्री (सं) जठर-अनल-अग्नि २ क्षुधा, बुभुक्षा।

उदात्त, वि (सं) उच्चैरुच्चारित (स्वर) २ सदय, कृपालु ३ दातृ, उदार ४ श्रेष्ठ ५ विशद, स्पष्ट ६ समर्थ। सं पु (सं) वेदमन्त्रोच्चारणे उच्चस्वर २ अलंकारभेद (सा)।

उदार, वि (सं) दान-शील-शौंड, बहुप्रद, वदान्य, त्यागशील २ श्रेष्ठ ३ महाशय ४ सरल।

उदारता, सं स्त्री (सं) वदान्यता, त्यागिता, औदार्य, त्याग २ माहात्म्यम् ३ सुशील, ऋजुता।

उदास, वि (सं) खिन्न, अवसन्न, म्लान, विषण्ण २ उदासीन, विरक्त ३ तटस्थ, निष्पक्ष।

—होना, क्रि अ, विषद् (भ्वा प अ), दुर्मनायते (ना धा)।

उदासी, सं स्त्री (सं उदास>) अवसाद, म्लानि-ग्लानि (स्त्री) खेद, दौर्मनस्यम् २ विराग, वैराग्यम् ३ निष्पक्षता, तटस्थता। सं पु, संन्यासिन्, विरक्त, साधुसम्प्रदायभेद।

उदासीन, वि (सं) विरक्त, निस्स्पृह, प्रपञ्चरहित २ मध्यस्थ, तटस्थ, समभाव ३ रूक्ष, निस्स्नेह।

उदासीनता, सं स्त्री (सं) विरक्ति (स्त्री) २ तटस्थता ३ खेद, अवसाद।

उदाहरण, सं पु (सं न) निदर्शन, दृष्टान्त।

उदाहृत, वि (सं) वर्णित, कथित २ दत्त दृष्टांत।

उदित, वि (स) उद्गत, उत्थित ३ उदयित २ प्रकट स्पष्ट ३ उज्ज्वल, विशद ४ कथित उक्त।

उदीक्षण, स पु (स न) ऊर्ध्वावलोकनम्, २ वीक्षणम्।

उदीची, स स्त्री (स) उत्तरदिशा।

उदीच्य, वि (स) उत्तरदिग्वासिन् २ दे उत्तरसम्बन्धिन्।

उदीप, स पु (स) सप्लव, जलविप्लव।

उदीयमान, वि (स) उद्गच्छत्, उद्यत्।

उदुंबर, स पु (स) क्षीरवृक्ष, सदाफल, जन्तुफल दे 'गूलर' २ क्षीरवृक्षफलम् ३ देहली ४ नपुंसक ५ कुष्ठभेद।

उद्गत, वि (स) उदित, उत्थित २ प्रकट ३ व्याप्त ४ वान्त ५ लब्ध।

उद्गम, स पु (स) उदय, उत्थान, उद्गमन आविर्भाव ऊर्ध्वगमन २ उद्गमस्थान प्रभव योनि (स्त्री)।

उद्गाता, स पु (स तृ) सामवेदग, सामगायक ३ सामवेदज्ञ।

उद्गार, स पु (स) तरलपदार्थस्य सहसा निस्सरणं उद्गमनं स्रावो वा। २ वमन, प्रच्छर्दिका ३ सवेग निःसृत तरलपदार्थ, वान्तवस्तु (न) ५ लाला मुखस्राव ६ उद्यम उत्क्षेप, ७ आधिक्यम् ८ घोर[illegible] शब्द ९ हृद्गतभावाना उद्घाट प्रकाशनम् १० हृदय प्रकाशिका भाषा।

उद्गीथ, स पु (स) सामगानविशेष २ ओंकार ३ सामवेद।

उद्घाटन स पु (स न) अपावरणम्, उन्मुद्रण निर्मोचनम् २ प्रकाशन प्रकटीकरणम्।

उद्दंड, वि (स) उद्धत दुःशाठ, अविनीत, साहसिक, तीक्ष्णकर्मन् २ कलहप्रिय।

उद्दाम, वि (स) बन्धबन्धन पाश रहित २ निरंकुश, अनर्गल, उच्छृंखल ३ स्वतंत्र।

उद्दालक, स पु (स) ऋषिविशेष २ व्रत प्रकार।

उद्दिष्ट, वि (स) निर्दिष्ट संकेतित २ लक्ष्य अभिमत।

उद्दीपक, वि (स) उत्तेजक, प्रेरक संक्षोभक २ दाहक, तापक, दीपन।

उद्दीपन, स पु (स न) उत्तेजन, प्रोत्साहन, प्रकोपन प्रेरणम् २ उत्तेजकपदार्थ ३ विभावभेद (सा) ४ तापन, दहनम्।

उद्दीप्त, वि (सं) भासुर भास्वर २ प्रज्वलित। स पु गुग्गुलु, देवधूप।

उद्देश, स पु (स) इच्छा, अभिलाष २ आशय, अभिप्राय ३ कारण हेतु ४ प्रतिज्ञा (न्या)।

उद्देश्य, वि (स) लक्ष्य, काम्य, स्पृहणीय। स पु (स न) प्रयोजन अभिप्रेतोऽर्थ २ यदुद्दिश्य विधेयप्रवृत्ति भवति तत् (न्या)।

उद्धत, वि (स) उग्र चंड, दे 'उद्दंड'। २ प्रगल्भ, विशिष्ट।

उद्धरण, स पु (स न) उत्थान, उद्गमनम् २ मुक्ति (स्त्री) ३ उन्नति (स्त्री) ४ पाठस्यावृत्ति (स्त्री) ५ उद्धृतवाक्यम् ६ उन्मूलनम् ७ उत्थापनम् ८ वमनम्।

उद्धव, स पु (स) दे 'उत्सव' २ श्रीकृष्ण मित्रम्।

उद्धार, स पु (स) निर्वाण, मुक्ति (स्त्री) २ दुःखनिवृत्ति (स्त्री) ३ उन्नति (स्त्री) ४ ऋणमुक्ति ५ दायस्यांशविशेष (मनु) ६ ऋणम् ७ युद्धे उद्धितद्रव्यस्य राजग्राह्य षष्ठोऽंश ८ चुल्ली।

—करना, क्रि स, उद् हृ (भ्वा प अ), मोक्ष् (चु), निस्तॄ (प्रे) उन्नी (भ्वा उ अ)।

—होना, क्रि अ मुच् (कर्म)।

उद्धृत, वि (स) अवतारित, उपन्यस्त, उन्नीत, उदाहृत २ उन्नीत, उत्थापित ३ उद्गीर्ण।

—करना, क्रि स उपन्यस् (दि प से) उद् हृ (भ्वा प अ)।

उद्बुद्ध, वि (स) विकसित प्रफुल्ल २ ज्ञानिन् ३ जागरित।

उद्बोधन, स पु (स न) ज्ञापनम् २ प्रकाशनम् ३ उत्तेजनम् ४ जागरणम्।

उद्भट, वि (स) प्रबल, उग्र २ श्रेष्ठ ३ महात्मन्।

उद्भव, सं पु (सं) उत्पत्ति-सृष्टि (स्त्री) जन्मन् (न) २ वृद्धि-स्फीति (स्त्री)।

—स्थान, सं पु (सं न) योनि (स्त्री), प्रभव।

उद्भाव, सं पु (सं) उद्भव २ कल्पना ३ औदार्यम्।

उद्भावना, सं स्त्री (सं) उद्भावन, कल्पन, कल्पित, उद्भावित, कल्पना २ उत्पत्ति (स्त्री)।

उद्भास, सं पु (सं) कान्ति-शान्ति (स्त्री) २ प्रकाश, आलोक।

उद्भिज्ज, सं पु (सं) तरुगुल्मादि, उद्भिद् (पाँच प्रकार के उद्भिज्ज-तरु, गुल्म, लता, वल्ली, तृणम्)।

उद्भिद्, (सं पु) अंकुर, प्ररोह २ ओषधि ५ (स्त्री), वृक्ष ३ जलप्रवाह, निर्झर ४ नलयन्त्रम्।

उद्भूत, वि (सं) जात, उत्पन्न।

उद्भेदन, सं पु (सं न) भेदन, भञ्जनम् २ उद्भिद निर्गमनम्।

उद्यत, वि (सं) सज्ज, उद्युक्त, सिद्ध, उपक्रान्त, सन्नद्ध २ उत्थापित।

उद्यम, सं पु (सं) उद्योग, उत्साह, अध्यवसाय, प्रयत्न, आयास २ आजीव, जीविका।

—करना, क्रि स, चेष्ट प्रयत् (भ्वा आ से) उद्यम् (भ्वा प अ), व्यवसो (दि प अ)।

उद्यमी, वि (सं-मिन्) उद्योगिन्, उद्युक्त, व्यवसायिन्।

उद्यान, सं [illegible] (सं न) उपवन, आराम।

उद्योग, सं पु, (सं) दे 'उद्यम'।

उद्योगी, वि (सं गिन्) दे 'उद्यमी'।

उद्योत, सं पु (सं उद्द्योत) आलोक २ द्युति (स्त्री)।

उद्रेक, सं पु (सं) वृद्धि-उन्नति (स्त्री) २ आधिक्य, बहुत्वम् ३ अलङ्कारभेद (सा)।

उद्वाह, [illegible] पु (सं) विवाह।

उद्विग्न, वि (सं) आकुल, व्याकुल, उद्भ्रान्त, अधीर, व्यस्त-विक्षिप्त, चित्त, व्यग्र, कातर।

उद्वेग, सं पु (सं) उद्विग्नता, व्याकुलता २ मनोवेग, आवेग ३ विरहजदुःखम्।

उधड़ना, क्रि अ (सं उद्धरणम् >) स्फुट् (तु प से), भिद्-विद् (कर्म) २ सीवन भिद् (कर्म)।

उधर, क्रि वि (सं अमुत्र ?) तत्र, तत्स्थाने २ तत्स्थान प्रति।

उधार, सं पु (सं उद्धार) ऋण, धनप्रयोग २ आविहितकालात् द्रव्यप्रयोग ३ मुक्तिः (स्त्री)।

—चुकाना, क्रि स ऋणं शुध् (प्रे), आनृण्य गम्।

—लेना, क्रि स, ऋणं कृ अथवा भृ (क्र उ से)।

उधेड़ना, क्रि स, (हिं उधड़ना) स्तर निर्दॄ (भ्वा उ अ) २ सीवन भिद् (रु उ प) ३ विकृ (तु प से)।

उधेड़-बुन, सं स्त्री (हिं उधेड़ना+बुनना) चिन्ता, विमर्श, ऊहापोह २ उपायकल्पना।

उन, सर्व (हिं उन) तद्-अदस् (सर्व)।

उनचास, वि (सं ऊनपञ्चाशत् स्त्री एक) एकोनपञ्चाशत्-एकान्नपञ्चाशत्-नवचत्वारिंशत् (स्त्री एक)। सं पु, उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (४९) च।

उनतालीस, वि (सं ऊनचत्वारिंशत् स्त्री एक) एकोनचत्वारिंशत्-नवत्रिंशत् (स्त्री)। सं पु, उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (३९) च।

उनतीस, वि (सं ऊनत्रिंशत् स्त्री एक) एकोनत्रिंशत्-नवविंशति (स्त्री)। सं पु, उक्ता संख्या तदङ्कौ (२९) च।

उनसठ, वि (सं ऊनषष्टि स्त्री एक) एकोनषष्टि नवपञ्चाशत् (स्त्री एक)। सं पु, उक्ता संख्या तदङ्कौ (५९) च।

उनहत्तर, वि (सं ऊनसप्तति स्त्री एक) एकोन (एकान्न)-सप्तति-नवषष्टि (स्त्री एक)। सं पु, उक्ता संख्या तदङ्कौ (६९) च।

उनासी, वि दे 'उन्यासी'।

उनींदा, वि (सं उन्निद्र) निद्रा, आकुल-वश-अभिभूत।

उन्न, वि (सं) आर्द्र, क्लिन्न, जलसिक्त २ दयार्द्र, दयालु।

उन्नत, वि (सं) उद्गत, उत्तुङ्ग, उच्च, तुङ्ग २ समृद्ध ३ श्रेष्ठ।

उन्नति, सं स्त्री (सं) उच्छ्राय, तुङ्गता २ समृद्धि (स्त्री), अभ्युदय।

उन्नाव, सं पु (अ) कोल, कुवल, सौवीरम्।

उन्नायक, वि (सं) उन्नेतृ, उत्कर्षक २ वर्द्धक, अभ्युदयकारक।

उन्नासी, वि (स उनाशीति स्त्री एक) एकोनाशीति नवसप्तति (स्त्री एक)। सं पु, तत्ता सख्या, तदकौ (७९) च।

उन्निद्र वि (स) निद्रारहित २ विकसित, प्रफुल्ल।

उन्नीस, वि (सं ऊनविंशति स्त्री एक) एकोनविंशति, नवदशन् (बहु)। सं पु, तत्ता सख्या तदकौ (१९) च।

—बिस्वे, पु, प्राय, प्रायश, प्रायेण (सब अव्य)।

उन्मज्जक, वि (सं) जलाद् बहिरागन्तृ।

उन्मज्जन, सं पु, (सं न) जलाद् बहि आगमनम्।

उन्मत्त, वि (सं) उन्मादिन्, वातुल, विक्षिप्त चित्त २ क्षीब, मदोन्मत्त, मदोद्धत ३ लज्जा रहित, नष्टमद, विचेतन।

—प्रलाप, सं पु, निरर्थकवचनानि (न बहु)।

उन्मन, वि (सं अन्यमनस्) अन्यमनस्क, अन्यचित्त, अनवधान।

उन्मयूख, वि (स) प्रकाशमान, भासुर, भास्वर।

उन्माद, स पु (सं) मतिभ्रश, चित्तविभ्रम, मानसरोगभेद २ सचारिभावभेद (सा)।

उन्मादी, वि (सं दिन्) उन्मत्त, वातुल।

उन्मार्ग, सं पु (सं) उत्-का-कु वि, पथ-मार्ग।

उन्मीलन, स पु (सं न) उन्मेष, उन्मेषण २ विकसन, विकास।

उन्मीलित, वि (सं) विवृत, उन्मिषित, उद्घाटित २ विकसित, प्रफुल्ल।

उन्मुख, वि (स) उद्‌ऊर्ध्वं, मुख २ उत्कण्ठित, उत्सुक ३ उद्यत।

उन्मूलन, स पु (सं न) निर्मूलन, उत्पाटन, उन्मननम् २ विध्वसन, विनाशनम्।

उन्मूलित, वि (स) उत्खात, उत्पाटित २ विनाशित।

उन्मेष, सं पु (स) उन्मीलनम् २ विकास ३ अल्पप्रकाश।

उप, उप (सं) अनुगत्याधिक्यन्यूनतासामीप्यव्याप्त्यादिबोधक उपसर्ग।

उपकंठ, सं पु (सं पु न) सामीप्यम्। वि, निकट। क्रि वि, निकटे।

उपकरण, स पु (स न) साधन, सामग्री, परिच्छद, यन्त्र, साधकद्रव्यम् २ छत्रचामरादीनि राजचिह्नानि।

उपकार, सं पु (सं) हित, दया, कृपा, परोपकार, उपकृति (स्त्री) २ लाभ।

—करना, क्रि स, उपकृ, अनुग्रह (क्र उ से), हित कृ।

—मानना, क्रि स, उपकृत स्मृ (भ्वा प अ) कृत विद् (अ प से)।

उपकारी, वि (सं रिन्) उपकारक, उपकर्तृ, परोपकारपर, परहितेच्छुक, अनुग्रहिन्, दानशील।

उपकार्या, सं स्त्री (सं) (राजकीय) पट-मडप-गृहम् २ राज-भवन प्रासाद।

उपकुल्या, सं स्त्री (सं) उप-सरणी प्रणाली, २ परिखा, खातम्।

उपकूप, सं पु (सं) कूपक, लघुकूप, उपखात।

उपकृत, वि, (सं) अनुगृहीत, कृतवेदिन्।

उपक्रम, सं पु (स) उपायज्ञानपूर्वकारम्भ २ प्रथमारम्भ ३ भूमिका ४ चिकित्सा।

उपक्रमणिका, सं स्त्री (सं) भूमिका, प्रस्तावना, वाङ्मुखम् २ विषयसूची।

उपगत, वि (सं) उपस्थित, पुर स्थित २ विदित ३ स्वीकृत।

उपग्रह, स पु (सं) ग्रहण, धरण, निरोध २ कारा-वास निरोध प्रवेश ३ कारागार, रुद्ध ४ लघुग्रह।

उपघात, सं पु (सं) विध्वस, विनाश २ रोग ३ इन्द्रियवैकल्यम् ४ पातकसमूह ५ अपकार।

उपचय, स पु (सं) वृद्धि-उन्नति (स्त्री) २ सचय, सग्रह।

उपचर्या, स स्त्री (सं) सेवा २ चिकित्सा।

उपचार, सं पु (सं) रोगप्रतिकार, चिकित्सा, उपचर्या २ रोगिपरिचर्या ३ प्रयोग, विधानम् ४ धर्मानुष्ठानम्।

५ भूपदीपादीनि पूगानि (न ब) ६ चाटूक्ति (स्त्री) ७ उत्कोच।
उपचारक, वि (सं) चिकित्सक २ सेवक ३ विधायक।
उपज, सं पु (हिं उपजना) उत्पन्न फल शस्य वा २ उद्भावना, नवकल्पना ३ कल्पित वार्ता।
उपजना, क्रि अ (सं उपजननम्>) उपजन् (दि आ से) उत्पद् (दि आ अ), प्ररुह् (भ्वा प अ) २ मनसि स्फुर (तु प मे)।
उपजाऊ, वि (हिं उपज) उर्वर, शस्यप्रद, बहुफलप्रद।
उपजाना, क्रि स (हिं उपजना) उपजन् उत्पद प्ररुह् (प्रे)।
उपजीवी, वि (सं विन्) पराश्रित, अनुजाविन्, पराधीनवृत्ति।
उपताप, सं पु (स) रोग, व्याधि २ त्वरा, सम्भ्रम ३ उत्ताप, ऊष्मन् (पु) ४ पीडा ५ दुर्भाग्यम्।
उपत्यका, स स्त्री (सं) पर्वतनिकटभूमि (स्त्री) अधित्यका भू (स्त्री)।
उपदंश, सं पु (स) मेढ्रोगभेद।
उपदर्शक, स पु (स) पथ-मार्ग-दर्शक २ द्वारपाल ३ साक्षिन्।
उपदर्शन, स पु (स न) टीका, टिप्पणी-नी।
उपदा, स स्त्री (स) उपायन, दे 'भेंट'।
उपदिशा, स स्त्री (स) उप,-आशा-काष्ठा-ककुभ् (सब स्त्री) [टि चार उपदिशाएँ ये हैं—ऐशानी, आग्नेयी, नैऋती, वायवी]।
उपदिष्ट, वि (स) शिक्षित, अध्यापित, २ निर्दिष्ट ३ दीक्षित।
उपदेश, स पु (स) अनुशासन, बोधन, शिक्षा २ दीक्षा, गुरुमन्त्र ३ धर्मव्याख्यानम्।
—देना, क्रि स उपदिश् (तु प अ) अनुशास् (अ प से), शिक्ष्-बुध्-ज्ञा (प्रे), २ दीक्ष् (भ्वा आ से)।
उपदेशक, स पु (स) उपदेष्टृ, धर्मप्रचारक, प्रवक्तृ।
उपद्रव, सं पु (सं) दे 'उत्पात' (१ ३) ४ रोगऽऽन्तरविकार।
—करना, क्रि स, उत्पातम् उत्था (प्रे)।
उपद्रवी, वि (सं विन्) दे 'उत्पाती'।
उपधा, सं स्त्री (स) कपटम् २ उपान्त्याक्षरम् ३ उपाधि।
उपधान, सं पु (सं न) शिरोधानम्, उपबर्ह २ अवलम्बनम्।
उपनयन, स पु (सं न) यज्ञोपवीतसंस्कार २ समीपे नयनम् ३ शिष्यस्य गुरुनिकटे नयनम्।
उपनाम, स पु (सं मन् न) प्रचलित-अन्य उपाधि,-नामन् (न) २ उपाधि, मानपदम्, पदवी।
उपनिधि, स स्त्री (स) न्यास, उपन्यस्त वस्तु (न)।
उपनिवेश, सं पु (स) अधिनिवेश, वासित प्रदेश।
उपनिषद्, सं स्त्री (स) ब्रह्मविद्यानिरूपका ग्रन्था २ (गुरो) समीपे उपवेशनम्।
उपनीत, वि (सं) कृतोपनयन २ आनन्त, उपागत।
उपनेता, स पु (सं तृ) उपनयनसंस्कारकर्तृ, आचार्य, गुरु २ निकटे प्रापक।
उपन्यास, स पु (सं) कल्पित, कथा, कथा प्रबन्ध, प्रबन्धकल्पना २ वाक्योपक्रम ३ निक्षेप, न्यास।
उपपति, स पु (स) जार, दे 'यार'।
उपपत्ति, सं स्त्री (स) हेतुना वस्तुस्थितिनिश्चय २ सिद्धि (स्त्री), प्रतिपादनम् ३ सगति (स्त्री) ४ युक्ति (स्त्री), हेतु।
उपपत्नी, स स्त्री (सं) उप, भार्या-जाया कलत्रम्।
उपपद, स पु (सं न) पूर्वोक्त पूर्वलिखित, पद-शब्द २ समासस्य पूर्वशब्द ३ उपाधि (पु), पदवी।
उपपन्न, वि (सं) प्राप्त, उपागत २, शरणागत ४ लब्ध, अधिगत ५ युक्त ६ उपयुक्त।
उपपादन, स पु (स न) साधन, प्रतिपादन युक्तिभि समर्थनम् २ सपादन, निष्पादनम्।
उपपुराण, स पु (स न) लघुपुराण (ये अठारह हैं)।
उपप्लव, स पु (सं) जल, विप्लव प्रलय २ उत्पात ३ भूकम्पादिघटना ४ भयम् ५ विघ्न ६ राहु ७ झञ्झावात।

उपभुक्त, वि (सं) प्रयुक्त २ उच्छिष्ट ।
उपभोग, सं पु (सं) सुख,-आस्वाद, आस्वादनम् २ प्रयोग, व्यवहार ३ सुखसामग्री ।
उपमन्त्री, स पु (स त्रिन्) उपलेखनसचिव २ उपामात्य, अमात्यसहाय ।
उपमा, स स्त्री (सं) सादृश्य, साम्यम् २ अर्थालंकारभेद (सा) ।
—देना, क्रि स उपमा (जु आ अ), समीकृ ।
उपमाता, स स्त्री (सं मातृ) धात्री, दे 'धाय' ।
उपमान, स पुं (स न) सादृश्यज्ञानसाधन, साम्यप्रतियोगिन्, अप्रस्तुत, उपवर्ण्यम् २ प्रमाणभेद' ।
उपमित, वि (स) समी-सदृशी,-कृत ।
उपमिति, स स्त्री (स) उपमा २ सादृश्य जनित ज्ञानम् ।
उपमेय, वि (स) वर्ण्य, वर्णनीय, उपमातव्य, प्रस्तुत ।
—उपमा, स स्त्री (सं) अर्थालंकारभेद (सा) ।
उपयुक्त, वि (स) उचित, उपपन्न, संगत, युक्त, योग्य, यथायोग्य, यथार्ह ।
उपयुक्तता, स स्त्री (स) औचित्य औचिती, युक्तत्व, योग्यता ।
उपयोग, स पुं (स) प्रयोग, व्यवहार २ लाभ, फलम् ३ प्रयोजन, आवश्यकता ४ योग्यता ।
उपयोगिता, सं स्त्री (सं) व्यवहार्यता, लाभकारिता, उपकारकता ।
उपयोगी, वि (स गिन्) प्रयोजनीय, हित साधन २ उपकारक, लाभदायक ३ अनुकूल ।
उपरक्त, वि (स) विपद्ग्रस्त, दुःखित २ ग्रहणयुक्त, उपप्लुत (सूर्यादि) ३ विषयासक्त ।
उपरत, वि (स) विरक्त, उदासीन २ मृत ।
उपरति, स स्त्री (स) विरति (स्त्री) वैराग्य, औदासीन्यम् २ मृत्यु ।
उपरना, स पु (हिं ऊपर) चेल, चेलम् २ उत्तरीय, आच्छादनम् ।
उपरम, स पु (स) विरति- (स्त्री), वैराग्यम् २ निवृत्ति विश्रान्ति (स्त्री) ३. मृत्यु ।
उपरान्त, क्रि वि (सं उपरि + अन्त >) पर, तत पर, तदनन्तर, तदनु ।
उपराग, स पु (सं) सूर्य-चन्द्र, ग्रहण, ग्रह पीडन, २ आपत्ति (स्त्री) ३ वर्ण, रंग ४ प्रतिच्छाया ५ विषयानुराग ।
उपराज, स पु (स) राजप्रतिनिधि, उप, भूप-नृप' ।
उपराम, सं पु (सं) निवृत्ति विरति (स्त्री), वैराग्यम् २ विश्राम, कार्यनिवृत्ति (स्त्री) ३ मोक्ष ।
उपरि, क्रि वि (सं) दे 'ऊपर' ।
उपरूपक, सं पु (सं न) त्रोटकसट्टकादयो रूपकभेदा ।
उपरोक्त, वि (हिं ऊपर + सं उक्त) दे 'उपर्युक्त' ।
उपर्युक्त, वि (सं) प्रागुक्त पूर्वोक्त, प्राक्-पूर्व, वर्णित निर्दिष्ट ।
उपल, सं पु (सं) पाषाण, प्रस्तर २ रत्नम् ३ मेघ ४ करका ५ बालुका ६ सिता, शर्करा ।
उपलक्षण, सं पुं (स न) स्वस्यान्यस्य च बोधक शब्द २ संकेत ३ शब्दशक्तिभेद (सा) ।
उपलक्ष्य, सं पु (सं न) संकेत चिह्न, अभिज्ञानम् २ दृष्टि (स्त्री) उद्देश्यम् ।
—में, विचारेण, उद्दिश्य, निमित्तीकृत्य ।
उपलब्ध, वि (सं) अधिगत, प्राप्त, गृहीत २ ज्ञात ।
उपलब्धि, सं स्त्री (स) प्राप्ति (स्त्री) अधिगम २ ज्ञानम् ।
उपलभ्य, वि (सं) प्राप्य, प्राप्तव्य २ समादरणीय, पूज्य ।
उपला, स पुं (सं उपल >) गोमय, गोमय पिण्डम् ।
उपलालिका, सं स्त्री (सं) तृषा पिपासा ।
उपला, स पुं (हिं ऊपर) उपरितन स्तर, ऊर्ध्वभाग ।
उपवन, स पुं (स न) आराम २ लघु वनम् ।
उपवास, सं पुं (सं) लंघन, अनाहार' उपोषणं, आक्षपणं, अनशनं, उपोषितम् ।
—करना, क्रि अ., उपवस् (भ्वा प अ) ।

उपविष, सं पु (सं न) चार, गर, फल विषम्।

उपविष्ट, वि (सं) आसीन, कृतोपवेशन।

उपवीत, सं पु (सं न) यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत २ उपनयनसंस्कार।

उपवेद, सं पु (सं) प्रधानवेदातिरिक्त चत्वार गौणवेदा (= धनुर्वेद, आयुर्वेद, गन्धर्ववेद, स्थापत्यवेद)।

उपवेशन, सं पु (सं न) निषदन, आसन, स्थिति (स्त्री)।

उपशम, सं पु (सं) दमन, शान्ति (स्त्री) २ तृष्णाक्षय ३ इन्द्रियनिग्रह ४ प्रतिकार, उपचार।

उपशमन, सं पु (सं न) सान्त्वन २ प्रतिविधानम्।

उपशिष्य, सं पु (सं) शिष्यस्य शिष्य।

उपसम्पादक, सं पु (सं) सम्पादकसहाय, सहायकसम्पादक।

उपसंहार, सं पु (सं) परि-,अवसान, समाप्ति (स्त्री) २ ग्रन्थादिकस्य अन्तिम प्रकरणम् ३ मारण ४ शस्त्रादीनां वारणम्।

उपसर्ग, सं पु (सं) क्रियायोगे प्रादयनिपाता (प्र, परा, अप, सम्, इ०)। २ अपशकुनम् ३ आधिदैविक उत्पात।

उपसागर, सं पु (सं) लघुसमुद्र २ वङ्क, खातम्।

उपस्थ, सं पु (सं) लिङ्ग, मेढ्र २ भग, योनि (स्त्री) (१४) अधो,-मध्य,-भाग ५ क्रोडम् ६ वङ्क्षस् (न)। वि सनीपोपविष्ट।

उपस्थान, सं पु (सं न) समीपागमनम् २ पूजार्थं उपागमनम् ३ उत्थाय पूजनम् ४ पूजास्थानम् ५ सभाज।

उपस्थापक, वि (सं) उपनायक, उपनिधायक २ स्मारक।

उपस्थापन, सं पु (सं न) समीपे-पुरत-उपनिधानम्, उपानयनम् २ उपस्थिति (स्त्री) ३ परिचर्या ४ स्मारणम्।

उपस्थित, वि (सं) निकटस्थ, उपसन्न, उपागत, सन्निहित।

—करना, क्रि स, पुरस्कृ, समक्ष नी (भ्वा उ अ)।

—होना, क्रि अ, उपस्था (भ्वा प अ), प्रविश् (तु प अ)।

उपस्थिति, सं स्त्री (सं) सन्निधान सान्निध्य, वर्तमानता विद्यमानता।

उपस्वेद, सं पु (सं) प्रस्वेद, घर्म,-उदक-जलम् २ बाष्प,-धूम् ३ आर्द्रता, क्लन्नता।

उपहत, वि (सं) नाशित ध्वस्त २ दूषित ३ पीडित ४ अपवित्र।

उपहार, सं पु (सं) उपायन, उपदा।

उपहास, सं पु (सं) परि (री) हास, प्रहसन, नर्मन् (न), क्रीडाकौतुकम् २ निन्दा, आक्षेप।

—आस्पद, वि (सं न) उपहास्य, उपहासार्ह २ निंदनीय।

उपांग, सं पु (सं न) अवयव, अंगभाग। २ आपूरक वस्तु (न)। (वेद के चार उपांग= पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र)।

उपांत, सं पु (सं) अन्तसमीपभाग २ प्रान्तभाग ३ लघुतटम्।

उपान्त्य, वि (सं) अन्त्यात् पूर्ववर्तिन्।

उपाकर्म, सं पु (सं -र्मन् न) संस्कारपूर्वको वेदाध्ययनारम्भ।

उपाख्यान, सं पु (सं न) प्राचीनकथा, आख्यानम् २ कथान्तर्गतकथा ३ वृत्तान्त, उदन्त।

उपादान, सं पु (सं न) प्राप्ति -उपलब्धि (स्त्री) २ बोध ३ प्रत्याहार ४ समवायिकारणम्।

उपादेय, वि (सं) ग्राह्य, ग्रहीतव्य, स्वीकार्य २ श्रेष्ठ, उत्तम।

उपाधि, सं स्त्री (सं पु) छल, कपटम् २ स्वधर्मस्य अन्यत्र तथा प्रकाशक वस्तु (न) ३ उपद्रव ४ कर्तव्यचिन्ता ५ प्रतिष्ठासूचक पदम्।

उपाध्याय, सं पु (सं) वेदवेदाङ्गाध्यापक २ शिक्षक, अध्यापक ३ ब्राह्मणोपजाति (स्त्री)।

उपाध्याया, सं स्त्री (सं) अध्यापिका, विद्योपदेशिका।

उपाध्यायानी, सं स्त्री (सं) उपाध्याय-शिक्षक-गुरु, पत्नी।

उपाध्यायी, सं स्त्री (सं) अध्यापिका २ उपाध्यायपत्नी।
उपानत्,-नह्, सं पु (सं उपानह् स्त्री) पादत्राणम् २ पादुका।
उपाय, सं पु (सं) साधन, उपकरण, करण, सामग्री, युक्ति (स्त्री) २ शत्रुविजययुक्ति (= साम, दाम, भेद, दंड)।
उपायन, सं पु (सं न) उपदा, उपहार।
उपार्जन, स पु (सं न) धनादिकम्याहरणम्, अर्जनम्, लाभ।
—करना, क्रि स, उप ,अर्ज् (चु), उपादा (जु आ अ)।
उपार्जित, वि (सं) सगृहीत, अर्जित।
उपावर्तन, सं पु (सं न) प्रत्या,-वर्तन-भ्रमन-गमनम् २ उपा-गमन-यानम् ३ भ्रामणम्।
उपालभ, सं पु (सं) आ-अधि, क्षेप, भर्त्सन ना, गर्हा, परिवाद २ दुःखनिवेदनम्।
उपासक, वि पु (सं) पूजक, सेवक, आरा धक, अर्चक।
उपासना, सं स्त्री (सं) समीपे उपवेशनम् २ आराधना, अर्चा।
—करना, क्रि स, उपास् (अ आ से), पूज् (चु) उपस्था (भ्वा आ अ)।
उपास्य, वि (सं) उपासनीय, आराध्य, पूज्य, भजनीय।
उपेंद्र, स पु (सं) विष्णु, वामन, कृष्ण।
उपेक्षणीय, वि (सं) उपेक्ष्य, त्याज्य २ गर्ह्य घृणार्ह।
उपेक्षा, सं स्त्री (सं) औदासीन्य, नि स्पृहता, नि ममता, विरक्ति (स्त्री) २ घृणा, गर्हा।
उपेक्षित, वि (सं) अवगणित, अवधीरित, त्यक्त तिरस्कृत।
उपोद्घात, सं पु (सं) भूमिका, प्रस्तावना।
उफ, अव्य (अ) हा, अहह, हन्त, कष्टम्।
—ओह, अव्य, अहो, ही।
उफनना, क्रि अ (स उद्+फेन>) उद्गम् (भ्वा प से), क्वथ् तप्-पच् (कर्म) २ फेना यते मदायन (ना धा) ३ उद्रिच् (कर्म), अत क्षुभ् (दि प से)।
उफान, स पु (सं उद्+फेन>) उत्क्षेप, फेनोद्गम, उद्रेक।
उबकना, क्रि अ (अनु) दे 'कै करना'।
उबकाई, सं स्त्री दे 'कै'।
उबटन, सं पु (स उद्वर्तनम्) अभ्यग, अभ्यजन, उत्सादन, अनु वि,-लेप, समालभ।
उबरना, क्रि अ (स उद्वारणम्>) मुच् मोक्ष्-उद्धृ (कर्म) २ अव-परि-उत्, शिष् (कर्म)।
उबलना, क्रि अ (सं उद्वलनम्>) फेना यते (ना धा) क्वथ्-तप् (कर्म) २ वेगात् निस्सृ (भ्वा प अ)।
उबार, सं पु (हिं उबरना) निस्तार, मोक्ष, त्राण, रक्षा।
उबारना, क्रि स, (हिं उबरना) वि निर्, मुच (प्रे) निस्तॄ (प्रे), रक्ष् (भ्वा प से)।
उबाल, सं पु (हिं उबलना) दे 'उफान' २ उद्वेग, आवेश।
—आना, क्रि अ, दे 'उफनना'।
—बिंदु, सं पु, बुद्बुदांक।
उबालना, क्रि स (हिं उबलना) उत्क्वथ् (भ्वा प से), श्रा (अ प अ)।
उबासी, सं स्त्री (स उद्+श्वास>) जृम्भ, जृम्भा।
उभरना, क्रि अ (सं उद्भरणम्>) श्वि (भ्वा प से), स्फाय् वृध् (भ्वा आ से) आध्मा विस्तॄ (कर्म) २ दे 'उठना' ३ परि वह् (भ्वा उ अ) ४ गर्व् (भ्वा प से) ५ उत्पद् (दि आ अ) ६ अपा वि, वृ (कर्म) ७ समृध् (दि प से) ८ अपगम् ९ यौवन आप् (स्वा उ अ) १० बहिर्लम् (भ्वा आ से) ११ भार मुक्त (वि) भू।
उभरा, वि (हिं उभरना) स्फीत, शून २ निर्गतभार।
उभारना, क्रि स (हिं उभरना) उत्तेजन, उद्दीपनम् २ उत्थापनम् ३ प्रोत्साहन, प्रेरणम्।
उभार, सं पु (हिं उभरना) उन्नता, उच्छ्राय २ वृद्धि उन्नति (स्त्री) ३ शोफ, शोथ ४ स्फीति (स्त्री) पीनता ५ प्रल्वना।
उमंग, सं स्त्री (हिं उमगना) उल्लास, आनन्द २ चित्ततरंग, लहरी ३ आधिक्यम् ४ उत्साह, औत्सुक्यम्।

उमगना, क्रि अ (सं उन्मगनम् >) दे 'उभरना', 'उमड़ना' २ उल्लस् (भ्वा प से), प्री (कर्म)।

उमड़ना, क्रि अ (सं उन्मड्नम् >) परिवृद्ध् (भ्वा उ अ), प्रवृध् (भ्वा आ से) २ वेगात् प्रवृत् (भ्वा आ से) ३ मनसबाध (वि) भू ५ क्षुभ् (दि प से)।

—घुमड़ना, परिभ्रम्य तन् (कर्म)।

उमदा, वि (अ) उत्तम श्रेष्ठ।

उमर, स स्त्री (अ उम्र) वयस (न) बाल्याद्यवस्था २ जीवितकाल, आयुस (न)।

उमरा, स पु (अ०, 'अमीर' का बहु०) धनिनः २ पुरोगा, नायका ३ सामन्ता (सब बहु०)।

उमस, स स्त्री (स ऊष्मन् पु) ऊष्म, निर्वा तता, धर्म।

उमा, स स्त्री (स) पार्वती २ दुर्गा ३ कीर्ति (स्त्री) ४ कान्ति (स्त्री) ५ महाविद्या।

उमाहना, क्रि अ, दे 'उमड़ना'।

उमेठना, क्रि स (सं उद्वेष्टनम् >) मुट्-मुड् (तु), आकुच् (प्रे), पर्यावृत (प्रे.), मपुटी पिंडी-कृ।

उमेठवाँ, वि (हिं उमेठना) कुञ्चित, अराल।

उम्मेद, सं स्त्री (फा) आशा, आशंसा २ प्रतीक्षा, उदीक्षा, ३ आश्रय, अवलंब ४ विश्वास, विश्रंभ।

—वार, स पु (फा) आशान्वित, आशावत् २ याचक, पदान्वेषिन्, प्रत्याशिन्।

—होना, मु, प्रसव प्रतीक्ष् (कर्म)।

उम्र, स स्त्री (अ) दे 'उमर'।

उर, स पु (स उरस न) हृदय, चित्तम्, मनस (न) २ क्रोड, वक्षस (न), वक्ष स्थलम्।

—लाना, मु, आलिंग् (भ्वा प से) २ विचर (प्रे)।

उरग, स पु (सं) सर्प।

उरगारि, स पु (स) गरुड।

उरज, उरजात, सं पु, दे 'उरोज'।

उरद, स पु (स ऋद्ध >) माष, कुरुविंद, मासल, धान्यवीर, वृषांकुर, बलाढ्य, पितृ भोजन।

उरला, वि (सं अपर >) अपर, अवर २ पृष्ठस्थ, पश्चिम ३ उत्तर, अपरोक्ष।

उरश्छद, सं पुं (सं) उरस्त्राणम्, वक्षस्त्रा णम्।

उरसिज, सं पु (स) स्तन, उरोज।

उरसिल, वि (स) विशालवक्षस्, वक्षम् उरम।

उरु, वि (सं) आयत, विस्तीर्ण, विशाल, विपुल।

उरु, सं पु (स ऊरु) सक्थि (न)।

—क्रम, वि (स) बलवत् २ द्रुतगति। सं पु, वामनावतार २ सूर्य।

उरोज, स पु (स) कुच, स्तन।

उर्दू, सं स्त्री (तु ओर्दू) अरबीपारसीतुरुष्क भाषाशब्दै मिश्रिता पारसीलिप्यां लिखिता हिंदीभाषा, उर्दू (स्त्री) २ शिविरहट्ट।

उर्फ, सं पु (अ) उपनामन् (न), उपाख्या।

उर्वरा, सं स्त्री (सं) बहुफलदा भूमि (स्त्री) २ पृथिवी। वि स्त्री, फलदा, शस्यप्रदा।

उर्वी, सं स्त्री (सं) पृथिवी, धरणी।

उलझन, स स्त्री (हिं उलझना) विघ्न, प्रतिबंध, बाधा २ समस्या, चिंता विवाद, विषय।

उलझना, क्रि अ (सं अवरुध् >) संश्लिष् सम्ग्रन्थ् (कर्म), जटिली भू २ सम्बन्ध् समिभ् (कर्म) ३ दे 'लिपटना' ४ व्यापृत (वि) भू ५ स्निह (दि प वे) ६ विवद् (भ्वा आ से), वैरायते-कलहायते (ना धा) ७ सकष्टे पत् (भ्वा प से) ८ वक्री-कुण्डली, भू।

उलझाना, क्रि स (हिं उलझना) संश्लिष् (प्रे), सग्रन्थ् (चु) २ व्याप्तृ प्रयुज् विनियुज् (प्रे) ३ वक्रीकृ।

उलटना, क्रि अ (स उलुठनम् >) परि परा-वृत् (भ्वा आ से), विपर्यस व्यत्यस् (कर्म) अधोमुखी भू २ परि भ्रम् (भ्वा दि प से), घूर्ण (तु प से) ३ दे 'उमड़ना' ४ सकरी-संकुली भू ५ विपरीत विरुद्ध (वि) भू ६ कुप् (दि प अ) ७ मृ (तु आ अ), मूर्छ् (भ्वा प से) ८ पत् (भ्वा प से)। क्रि स, परि परा-वृत्

(प्रे), अधोमुखी कृ २ निपत् (प्रे) ३ क्षिप् (तु प अ) ४ सकरी-सकुटी-कृ ५ विपरीत कृ ६ उत्तरप्रत्युत्तर दा (जु उ अ) ७ नि मश मूर्च्छित (वि) कृ ८ दे 'कैंडे ल्ना' ९ ध्वस-नश (प्रे)।

उलट प (पु) ल्ट, स स्त्री (हिं उलटना पुलटना) विपर्यास, व्यत्यास, परिवर्तनम् २ व्यतिहार, विनिमय ३ क्रमभग, व्यतिक्रम। वि, विपर्यस्त, अव्यवस्थित, अक्रम, अस्तव्यस्त।

उलटफेर, स पु, दे 'उलट पुलट' सं स्त्री।

उलटा, वि (हिं उलटना) व्यत्यस्त, विपर्यस्त, अधरोत्तर, अधोमुख २ क्रमरहित, अव्यवस्थित ३ विरुद्ध, विपरीत ४ अनुचित, अन्याय। क्रि वि, व्यतिक्रमेण, विपर्ययेण, अन्यथातम् २ अनुचित, अनुक्रम्।

—जमाना, मु, विपरीतकाल, न्यायरहित समय।

—तवा, मु, अति कृष्ण श्याम नील।

उलटी खोपड़ी का, मु, मूढ जड।

—गंगा बहाना, मु, असाध्य साध् (स्वा प अ)।

—पट्टी पढ़ाना, मु, कुपथे प्रवृत् (प्रे)।

—माला फेरना, मु, अमगल कम् (भ्वा आ से)।

—साँस चलना, मु, मरणासन्न (वि) जन् (दि आ से)।

—सीधी सुनाना, मु, निर्भर्त्स् (चु आ से)।

—पाँव फिरना, मु, झटिति प्रतिनिवृत् (भ्वा आ से)।

—छुरे से मूँड़ना, मु, अतिसधाय स्वप्रयोजन साध (स्वा प अ)।

उलटाना, क्रि स (हिं उलटना) दे 'उलटना' क्रि स। २ प्रति ऋ (प्रे प्रत्यर्पयति) ३ अवस्था ▇।

उलटापुलटा-टी, वि, दे 'उलटपलट'।

उलटी, स स्त्री (हिं उलटना) वम, वमन, वमि (स्त्री), छर्दिका।

उलटे, क्रि वि (हिं उलटना) विपरीततया, विपर्ययेण।

उलथा, सं पु (स उत्स्थलम् >) नृत्यभेद २ विपर्यस्तप्लुतम्।

उलफत, सं स्त्री (अ) अनुराग, प्रमन् (न)।

उलार, वि (हिं ओलरना = लेटना) पृष्ठ भागे भारवत् (शकटादि)।

उलाहना, स पु (सं उपालम्भनम्) उपालम्भ, दुःखनिवेदनम्, आ-अधि-क्षेप, (सविलाप) विज्ञापना।

—देना, क्रि स, उपालभ् (भ्वा आ अ), निन्द् (भ्वा प से)।

उलीचना, क्रि स (स उल्लुंचनम्) उल्लुंच् (भ्वा प से), हस्तादिभि जल बहि क्षिप् (तु उ अ)।

उलूक, स पु (सं) घूक, दे 'उल्लू' २ इन्द्र ३ कणाद।

उलूखल, सं पु (सं न) उदूखलम् २ गुग्गुलु।

उल्का, स स्त्री (सं) खोल्का, उत्पात, पत नक्षत्र २ प्रकाश ३ अग्निशिखा ४ अग्नि ५ दीपिका ६ प्रदीप, दीपक ७ अग्नि काष्ठ, अलातम्।

—पात, स पु (स) तारा-तारका नक्षत्र उडु, पात पतनम्।

उल्था, स पु (हिं उलथना) अनुवाद, दे।

उल्मुक, स पु (स) ज्वलत्काष्ठम्, उल्का।

उल्लघन, सं पु (सं न) व्यतिक्रम, अति, क्रम-क्रमणम्, भग, अतिपात २ आकाल्पन, प्रतीपाचरणम् ३ उत्प्लव।

उल्लवित, वि (स) दे० 'सड़ा'।

उल्लास, स पु (स) हर्ष, आनन्द २ प्रकाश ३ अलकारभेद (सा) ४ ग्रन्थपरिच्छेद।

उल्लिखित, वि (सं) उत्कीर्ण पाषाणादिषु अभिलिखित २ यन्त्रेण तष्ट ३ लिखित ४ उपरिलिखित, उपर्युक्त ५ चित्रित, आलिखित।

उल्लू, सं पु (सं उलूक) पेचक, काकारि, कौशिक, दिवान्ध, दिवाभीत, घूक, निशाटन २ मूर्ख।

—का पट्ठा, स पु, जड, बालिश।

—बनाना, मु, व्यामुह् (प्रे)।

—बोलना, मु, निर्जनी भू।

उल्लेख, स पु (स) लेख, लिखितम्, लेखनम् २ वर्णनं, निरूपणम् ३ अलंकारभेद (सा)।

उल्लेखनीय, वि (सं) लेखार्ह, उत्, लेख्य २ वर्णनीय, निरूपणीय ३ अद्भुत।
उल्व, सं. पु (सं न) जरायु २ गर्भाशय।
उल्व (ल्ब) ण, वि (सं) स्पष्ट, विशद २ प्रबल, दृढ ३ अधिक, अतिशय।
उशना, स पु (स नस) शुक्राचार्य।
उशरा, स पु (अ) वृक्षभेद।
उशीनर, स पु (स-रा) गान्धारदेश २ गान्धारवासिन् ३ शिविनृप।
उशीर, स पु (स पु न) वीरणमूल, अभय, नलद, सेव्यम्।
उषा, स स्त्री (स) उषस (स्त्री न), प्रभात, अरुणोदय, दिङ्मुख, रात्रिशेष, ब्राह्मवेला। २ अरुणोदयकालिकम् (पु) ३ बाणासुर कन्या, अनिरुद्धपत्नी।
उष्ट्र, स पु (स) क्रमेलक, दे 'ऊँट'।
उष्ण, वि (स) स-उद्, तप्त २ उद्योगिन्, सोद्योग, परिश्रमिन्, क्षिप्रकारिन्, दक्ष ३ उष्णप्रकृति।
रा पु, ग्रीष्म २ नरकविशेष ३ पलाण्डु।
—कटिबंध, सं पु (सं) भूमे उष्णतम मध्यप्रदेश।
उष्णता, सं. स्त्री (सं.) सं-उत् परि,-ताप, ताप, उ (ऊ) ष्मन् (पु), उष्णत्वम्।
उष्णीष, सं. पु (सं. पु न) शिरोवेष्टन २ मुकुट, किरीटम्।
उष्म, सं पु (स.) दे 'उष्णता' २ आतप, सूर्यालोक ३ ग्रीष्म।
उष्मा, सं स्त्री (स ष्मन् पु) दे 'उष्णता' २ आतप ३ क्रोध।
उस, सर्व (हि वह) तद्, अदस्।
उसाँस, स स्त्री (सं उच्छ्वास) दीर्घश्वास, उच्छ्वसितम् २ श्वास, निश्वास ३ (दुःख दिसूचक) दीर्घनिश्वास।
उसार, स पु (सं अवसार) विस्तार।
उसूल, स पु (अ) नियम, सिद्धान्त।
उस्तरा, स पु (फा उस्तुरा) क्षुर, नापितास्त्रम्।
उस्ताद, सं पु (फा) अध्यापक, गुरु। वि, कपटिन् २ चतुर।
उस्तादी, स स्त्री (फा) अध्यापकत्वम् २ नैपुण्यम् ३ वञ्चन, विप्रलम्भ।
उस्तानी, सं स्त्री (फा) अध्यापिका २ गुरुपत्नी ३ मायाविनी।

ऊ

ऊ, वर्णमालाया षष्ठ स्वरवर्ण, ऊकार।
ऊ, अव्य (अनु) आ, हा, कष्टम्।
ऊँघ, सं. स्त्री (सं अवाङ्>) तन्द्रा, ईषत् स्वल्प, निद्रा।
ऊँघना, क्रि अ (हि ऊँघ) ईषत् स्वप् निद्रा (अ प अ), स्वप् के सन्नन्त रूप (सुषुप्सति आदि)।
ऊँच, वि (सं उच्च) उच्छ्रित २ श्रेष्ठ ३ कुलीन।
—नीच, वि, कुलीनाकुलीन, उच्चावच। सं पु हानिलाभौ, भद्राभद्रं (द्वि)।
ऊँचा, वि (सं उच्च) सम्, उच्छ्रित, उद्गत, प्रांशु, ऊर्ध्व, तुंग, उदग्र, सोच्छ्राय २ श्रेष्ठ, मुख्य, अग्र्य, परम, महा, प्रधान, ३ प्रबल, तीव्र।
—नीचा, वि, विषम, असम, नतोन्नत। सं. पु, हानिलाभौ २ भद्राभद्रे।
—बोल बोलना, मु, विकत्थ् (भ्वा आ से)।
—सुनना, मु, किंचिद् बधिरत्वम्।
ऊँचाई ऊँचान, सं स्त्री (हि ऊँचा) उच्छ्(च्छ्रा) य, आरोह, उत्सेध, उद्, तुंगता, उच्चता, उत्कर्ष, उन्नति (स्त्री) २ महत्त्व, गौरवम्।
ऊँचे, क्रि वि (हि ऊँचा) उच्चै, उपरि, ऊर्ध्वं, उच्चम्।
ऊँट, सं. पु (सं उष्ट्र) क्रमेलक, महाग, मय, दीर्घगति, दासेरक, धूसर, लंबोष्ठ, दीर्घग्रीव, क्षीर्द, महापृष्ठ, महाग्रीव।
—कटा (टी) रा, स पु (सं. उष्ट्रकंटक कम्) उष्ट्रप्रिय कंटकिनो गुल्मभेद, करालु, उत्कटक।
ऊँटनी, सं स्त्री (हि ऊँट) उष्ट्री, लंबोष्ठी, महागा।
ऊँहूँ, अव्य (अनु) न, नो, नो नो, न कदापि।
ऊ, सं. पु (सं) शिव २ चन्द्र ३ रक्षक।

अ०, अपि। सर्व० स, सा, तद् तत् (न)।
ऊख, पु (स इक्षु) दे 'गन्ना'।
ऊखल, स पु (स उलूखलम्) उदूखलम्।
ऊजड, वि, दे 'उजाड'।
ऊटक नाटक, स पु (स उत्कट+नाटक>) अनर्थक निरर्थक कार्यम्।
ऊटपटांग, वि (अनु अटपट+स अंग) असबद्ध, असगत २ मोघ, निरर्थक।
—बात, स स्त्री, निरर्थक वचनम्।
ऊढ, वि (स) सपत्नीक, परिणीत, दे० 'विवाहित'।
—कंकट, वि (सं) सन्नद्ध, कवचधारिन्।
ऊढा, वि स्त्री (सं) परिणीता, उपयता, सभर्तृका, सधवा, सुवासिनी, पतिवत्नी २ पर कीयानायिकाभेद।
ऊढि, स स्त्री (सं) वहनम्, नयनम २ विवाह, परिणय।
ऊत, वि (स अपुत्र) निस्सतान, निरपत्य, निरन्वय २ मूढ, निर्बुद्धि।
स पु, मूर्ख २ पत्नीरहित ३ अपुत्र ४ प्रेतभेद।
ऊद, सं पु (स उद्र) दे 'ऊदबिलाव'।
ऊदबिलाव, स पु (स उद्बिडाल) उद्र, जल मार्जार बिडाल।
ऊदा, वि (अ ऊद अथवा फा कबूद) नील लोहित, धूम्र, धूमल, धूमवर्ण।
ऊधम, सं पु (सं उद्धम>) उपद्रव, उत्पात कोलाहल, तुमुल, कलह।
—मचाना, क्रि स, उपद्रव उत्था (प्रे)
ऊधमी, वि (हिं ऊधम) उत्पातिन्, उपद्रविन्, दुष्ट।
ऊधो, स पु (सं उद्धव) श्रीकृष्णस्य मित्र विशेष।
—का लेना न माधव का देना, मु, विरक्तता, उदासीनता गतसगता।
ऊन[1], स स्त्री (स ऊर्णा) ऊर्णा, मेषादिरोमन् (न)।
ऊन[2], वि (सं) न्यून, अल्प, क्षुद्र-अल्प-स्तोक सूक्ष्म तर २ क्षुद्र, तुच्छ।
ऊना, वि, दे 'ऊन[2]'।
ऊनी, वि (हिं ऊन) लोमन, मेषलोमज, ऊर्णामय (-यी स्त्री), और्ण (र्णी स्त्री)।
ऊपर, क्रि वि (स उपरि अव्य) ऊर्ध्वं उपरिष्टात्, सप्तमी विभक्ति में भी। २ अधिकम् अतिरिक्तम् ३ बहि, बहिर्भागे ४ तटे, तीरे ५ प्रतिकूल, विरुद्धम्। स पु, अग्र, अग्रम्।
—तले, क्रि वि, उपर्यध।
—से, क्रि वि उपरिष्टात्, बाह्यत।
ऊपरी, वि (हिं ऊपर) ऊर्ध्व, उत्तर, उपरितन (-नी स्त्री) २ बाह्य, बहिर्वर्तिन् ३ अतियन ४ आपातरमणीय, साडबर।
—आमदनी, स स्त्री, वेतनातिरिक्त आय।
ऊबड़-खाबड़, वि (अनु) विषम, नतोन्नत।
ऊबना, क्रि अ (स उद्वेजनम्) उद्विज् (तु आ से), निर्विद् खिद् (दि आ अ)।
ऊभासांसी, स स्त्री (हिं ऊभना+साँस) श्वास प्राण-कृच्छ्रम्, उच्छ्‌वास, दुश्वास।
ऊमर, स पु, दे 'गूलर'।
ऊमस, स स्त्री, दे 'उमस'।
ऊरु, सं पु (सं) सक्थि (न), जानूपरि भाग।
ऊर्ज, सं पु (सं ऊर्ज् स्त्री) बल, शक्ति (स्त्री)। २ रस ३ भोजन ४ जलम्।
ऊर्जस्वी, वि (स-स्विन्) ऊर्जस्वल, ऊर्जित, बलिन्, शक्तिमत्।
ऊर्ण, स पु (सं न) ऊर्णा, दे, 'ऊन'।
—नाभ, सं पु (स) ऊर्णनाभि, मर्कटक, दे 'मकडी'।
ऊर्णा, स स्त्री (सं) ऊर्ण, दे 'ऊन'।
ऊर्ध्व, क्रि वि (स ऊर्ध्वम्) उपरि, उपरिष्टात्।
—आरोहण, सं पु (सं न) देहान्त।
—गामी, वि (सं-मिन्) उन्नत् २ मुक्त।
—मूल, स पु (सं) ससार।
—रेता, वि (सं-तस्) ब्रह्मचारिन्, वीर्य रक्षक।
सं पु, महादेव २ भीष्म ३ हनुमत्।

—श्वास, स पु (स) उच्छ्वास २ कृच्छ्रो च्छ्वास ।
ऊर्मि, स स्त्री (स पु स्त्री) तरग, कल्लोल २ वेदना ३ वस्त्रसकोचरेखा।
—माली, स पु (स ल्लिन्) समुद्र ।
ऊल-जलूल, वि (देश) अक्रम २ अस ३ असभ्य।
ऊषर, स पु (स पु न) अनुर्वर-क्षार-अस स्यप्रद भूमि (स्त्री), मरुस्थल-स्ली। वि मोघ निष्फल ।
ऊषा, स स्त्री (स) दे उषा ।
ऊष्म, स पु (स) उत्ताप, घर्म २ वाष्प ३ ग्रीष्म। वि उत्तप्त, उष्ण।
—वर्ण, स पु (स) श, ष, स, ह वर्ण ।
ऊष्मा, स स्त्री (स ऊष्मन् पु) दे 'ऊष्म'।
ऊसर, स पु दे ऊषर'।
ऊह, अव्य, (अनु) (पीडा) आ, हा, २ (आश्चर्य) अहह, अहो।
ऊह, स पु (स) अनुमान, वि, तर्क २ युक्तिः (स्त्री) हेतु ।
—अपोह, स पु (स -ह) तर्कवितर्क, विमर्श, विचारणा पक्षप्रतिपक्षचिन्तनम् ।

ऋ

ऋ, देवनागरीवर्णमालाया सप्तम स्वरवर्ण, ऋकार ।
ऋक्, स स्त्री (स ऋच्) वेदमन्त्रभेद २ ऋग्वेद ।
ऋकूण, वि (स) आहत, वि, क्षत ।
ऋक्थ, स पु (स न) धनम् २ स्वर्णम् ३ दायधनम् ४ दायभाग ।
ऋक्ष, स पु (स) भल्लूक २ नक्षत्र ३ मेषा दिराशय ।
—पति, स पु (स) चन्द्र २ जाम्बवत् (पु)।
ऋग्वेद, स पु (स) वेदविशेष ।
ऋग्वेदी, वि (स दिन्) ऋग्वेद-ज्ञ-पाठक।
ऋचा, स स्त्री (स ऋच् स्त्री) छन्दोमयो मन्त्र २ वेदमन्त्र ३ स्तोत्रम्।
ऋजु, वि (स) सरल, समरेख प्रगुण, अजस २ सुकर, सुख-साध्य-सपाद ३ निर्व्याज, निष्कपट ४ प्रसन्न अनुकूल।
ऋजुता, स स्त्री (स) सरलता, समरेखता २ सुकरत्व सुखसाध्यता ३ निष्कपटता ।
ऋण, स पु (स न) पर्युदचन, उद्धार ।
—चुकाना, कि स, ऋण शुध् (प्र)।
—लेना, कि स, ऋण कृ अथवा ग्रह् (क्र उ से)।
—ग्रस्त, वि (स) ऋणिन्, अधमर्ण, खातक, धारक।
—मुक्त, वि (स) ऋण-उद्धार पर्युदचन, विमुक्त।
ऋणी, वि (स णिन्) दे 'ऋणग्रस्त' २ अनुगृहीत, उपकृत।
ऋत, स पु (स न) उञ्छवृत्ति (स्त्री) २ मोक्ष ३ जलम् ४ कर्मफलम् ५ यज्ञ ६ सत्यम् ।
वि, दीप्त २ पूजित ३ सत्य ।
ऋतु, स स्त्री (स पु) मासद्वयात्मक प्रकृति परिवर्तनयुक्त काल (षट् ऋतव-वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर) समय २ आर्तव पुष्प-रज,-काल ।
—काल, स पु (स) रजोदर्शनानन्तर गर्भ योग्यानि षोडशदिनानि।
—गमन, स पु (स न) ऋतुकाले मैथुनम्।
—चर्या, स स्त्री (स) ऋत्वनुकूल आहार विहारौ।
—दान, स पु (स न) गर्भाधानम्, निषेक।
—मती, वि स्त्री (स) रजस्वला, पुष्पवती।
—राज, स पु (स) वसन्त ।
ऋत्विज, स पु (स -ज्) पुरोहित याजक ।
ऋद्ध वि (स) सपन्न समृद्ध ।
ऋद्धि, स स्त्री (स) समृद्धि वृद्धि (स्त्री)। २ पार्वतीप्रिया, ओषधिभेद ।
—सिद्धि, स स्त्री (स) समृद्धिसाफल्ये।
ऋभु, स पु (स) देव अमर २ गणदेव विशेष ३ देवानुचरवर्गविशेष ४ शिल्पिन।

ऋषभ, सं पु (स) वृष, दे 'बैल' २ सगीते द्वितीयस्वर ३ समासान्ते श्रेष्ठता वाचक (उ नरर्षभ)।

—देव, स पु (सं) विष्णोरवतारो नाभि राजपुत्र २ प्रथम तीर्थंकर (जैन)।

—ध्वज, स पु (स) शिव ।

ऋषि, स पु (सं) सत्यवचस्, शापास्त्र, मन्त्रद्रष्टृ, मुनि, तत्त्वविद्, सिद्ध, ब्रह्मज्ञ ।

—ऋण, स पु (स न) गुरुद्धार (टि यह वेदों के पठनपाठन से उतरता है)।

ए

ए, हिन्दीवर्णमालाया अष्टम स्वरवर्ण, एकार ।

एँच पेँच, स पु (अनु + फा पेच) वक्रता, कुटिलता ।

एंडी, स स्त्री, कौशेयकोश, भेद २ तस्य कीट ३ कौशिकवस्त्रभेद ।

एम्परर, स पु (अ) सम्राज्, महाराज, राजाधिराज, अधिराज ।

एम्पायर, स पु (अ) अ(आ)धिराज्यम्, साम्राज्यम् ।

एम्प्रेस, स स्त्री (अ) सम्राज्ञी, राजाधिराज महाराज पत्नी, अधीश्वरी ।

एम्बुलेंस, स स्त्री (अ) चलच्चिकित्सालय २ क्षत रुग्ण-वाहन शकटी ।

एकंगा, वि (स एकाङ्ग) एक-पक्षीय देशीय २ असमभार ।

एक, वि (स स) एक, एका, एकम् २ अतुल्य, अनुपम ३ कश्चन, कश्चित्, काचन, किंचन ४ तुल्य, समान ।

स पु, एका सख्या, तदंक (१) च ।

—करना, क्रि स, सगम् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, सघट् (भ्वा आ से)।

—तरफा, वि, एक-पक्षीय देशीय ।

—बार, क्रि वि, सकृत् २ एकदा ३ पूर्वं, पुरा, प्राक् ।

—बारगी, क्रि वि, युगपत्, समम् ३ साकल्येन ।

—मत, वि, एक-सम, चित्त २ सधर्म ।

—मत होकर, क्रि वि, साम्मत्येन ऐकमत्येन ।

—आँख देखना, मु, समदृश् (भ्वा प अ)।

—एक, मु, सर्व, सकल २ पृथक्-पृथक् ३ क्रमश ।

—एक करके, मु, आनुपूर्व्या, आनुपूर्व्येण ।

—और एक ग्यारह होना, मु, सघेन वर्द्धते बलम् ।

—टक, मु, निर्निमेषम्, अनिमिषम् ।

—तो, मु प्रथम तावत् ।

—दम, मु, निरन्तरम् २ झटिति, सपदि ३ सहसैव ४ सर्वथा ।

—दूसरे को, मु, अन्योन्य, परस्पर, इतरेतरम् । वि मिथ (अव्य), परस्पर, इतरेतर ।

—पेट के, मु, सोदर, सहोदर, सोदर्य ।

—बात, मु, सत्य प्रतिज्ञा २ यथार्थवचनम् ।

—सा, मु, तुल्य, सदृश, सम ।

—स्वर से कहना, मु, ऐकमत्येन वद् (भ्वा प से)।

केवल—, वि, असहाय, अद्वितीय ।

कोई—, कश्चित्, काचित्, किंचित् ।

दो में से—, वि, अन्यतर, एकतर, अन्यतरा, अन्यतरत् (न)।

बहुतों में से—, अन्यतम, एकतम, एकतमा, एकतमत् (न)।

एकचित्त, वि (स) अवहित, स्थिरचित्त २ अभिन्नहृदय ।

एकचित्तता, स स्त्री (स) अवधान, मनोयोग २ ऐकमत्य, समति (स्त्री)।

एकछत्र, वि (स) एकशासकाधीन । क्रि वि ऐकाधिपत्येन ।

एकड़, स पु (अ) क्षेत्रपरिमाणभेद, एकडम् (१६ बीघा—४८४० वर्गगज)।

एकतरफा, वि (फा यकतरफ) एकपक्षीय २ सपक्षपात ३ एकपार्श्वसम्बन्धिन् ।

—डिगरी स स्त्री (फा + अ) एकपक्षध्वनि देश ।

एकता, स स्त्री (सं) सघटन, ऐक्यम्, संहति (स्त्री), सगम, समवाय २ साम्य, तुल्यता ।

एकतान, वि (सं) एकाग्रचित्त, मग्न, लीन ।
एकतारा, स पु (हिं एक+तार) एकतार, वाद्यभेद ।
एकत्र, क्रि वि (स) एक-स्थले-स्थाने ।
—करना, क्रि स, संग्रह (क उ से)।
—होना, क्रि अ, समिल (भ्वा प से)।
एकत्रित, वि (स एकत्र >) सघीभूत सचित, समृहीत ।
एकत्व, स पु (स न) दे 'एकता' ।
एकदत, स पु (स) गणेश, लम्बोदर ।
एकदा, अव्य (स) सकृत (अव्य) २ पूर्व, पुरा प्राक् (सब अव्य)।
एकदेशीय, वि (स) एकदेश्य एकस्थानीय ।
एकनिष्ठ, वि (स) एकोपासक ।
एकरग, वि (स) समान सवर्ण २ शुद्धा त्मन् ।
एकरस, वि (स) तुल्य, सदृश २ अव्यय, अपरिणामिन्, परिवर्तनरहित ।
एकरूप, वि (स) स-सम-समान -रूप, तुल्य, समान ।
एकवचन, स पु (स न) एकवाचकं वचनम् (व्या)।
एकवाक्यता, स स्त्री (स) सांमत्य, ऐक मत्यम् ।
एकसर, अ, आपादम्, आपादमस्तकम् । २ सकृत् (अव्य) वि एकाकिन्, असहाय ।
एकहरा, वि (स एकस्तर) एकास्तर, एक फलक २ एक, सूत्र-गुण ३ तनु, सूक्ष्म ।
—बदन, स पु कृशदेह ।
एकांकी, स पु (स किन्) रूपकभेद २ एकाक्युक्त रूपकम् ।
एकांग, वि (स) एकावयव, एकभाग २ विकलांग । स पु अगरक्षक २ विष्णु ३ बुधग्रह ४ चन्दन-नम् ५ शिरस् (न)।
एकांगी, वि (स गिन्) एकपक्षीय २ दुर्दम ।
एकांत, वि (स) अत्यन्त २ एकाकिन्, पृथक्स्थित । स पु (स) विजन, विविक्तम् ।
—वास, स पु (स) ससर्गाभाव ।
—वासी, वि (स सिन्) निर्जन विजन, वासिन् ।
एका, स पु (हिं एक) सहति (स्त्री), ऐक्यम्, सघटनम् ।
एकाएक, क्रि वि (सं एक+एक >) अक स्मात् एकपदे, सहसा, अकांडे ।
एकाकार, सं पु (स) तादृप्य, साम्यम् वि, सरूप, सम, समान ।
एकाकी, वि (स किन्) एकल, दे 'अकेला' ।
एकाक्ष, वि (स) काण, चन्द्रलोचन । सं पु, काक २ शुक्राचार्य ।
एकाक्षर, वि (स) एक-अक्षरिन् वर्ण । सं पु (स न) ओंकार ।
एकाग्र, वि (स) स्थिरबुद्धि, धीर २ अनन्य चित्त एकतान, एकाग्रवृत्ति ।
—चित्त, वि, दे 'एकाग्र' २ ।
एकाग्रता, स स्त्री (स) अनन्य चित्तता मनस्कता, एकतानता ।
एकात्मता, स स्त्री (स) एकत्व, एकता, एकरूपता, ऐक्य, भेदाभाव ।
एकादशी, स स्त्री (स) हरि, दिन दिवस वासर ।
एकाधिक, वि (स) बहु, बहुल, अनेक, बहुसंख्यक, भूरि ।
एकाधिकार, सं पु (सं) एक,-व्यापार व्यवसाय २ अनन्यसाधारणोऽधिकार ।
एकाधिपति, स पु (सं) अधीश्वर, अधि राज, सम्राज् महाराज ।
एकाधिपत्य, स पु (सं न) एक, प्रभुत्व स्वामित्वम्, पूर्णप्रभुत्वम् ।
एकार्थक, वि (स) सम समान-तुल्य, अर्थक । स पु, पर्यायशब्द ।
एकावली, स स्त्री (स) अलकारभेद (सा) २ एकयष्टिका, एकतारो हार ।
एकीकरण, स पु (स न) एकतासाधन, एकत्वसंपादनम् ।
एकीभाव, स पु (स) सघटन, सयोग, मेलप ।
एकीभूत, वि (स) सयुक्त, मिश्रित, सहत ।
एक्का, वि (स एक >) एक विषयक-सबधिन् २ एकाकिन्, एकल । स पु यूथभ्रष्ट प्राणिन् २ एकपशुवाह्यो द्विचक्रो वाहनभेद ३ सैनिक भेद ४ एकचिह्नयुक्त क्रीडापत्रम् ।
एक्कावान, स पु (हिं एक्का) सारथि, सूत, हयकष ।

एक्की, स स्त्री (हिं एक्का) एकवृषभवाह्य शकटम्, वृषवहनम् ।
एक्जामिनर ■ पु (अ) दे 'परीक्षक' ।
एक्जामिनेशन, स पु (अ) दे 'परीक्षा' ।
एक्सरे, स स्त्री (अ) एक्सरश्मि ।
एजेंट, स पु (अ) प्रतिनिधि, प्रतिहस्त २ दे 'आढ़तिया' ३ कारक ।
एजेंसी, स स्त्री (अ) परद्रव्यक्रयविक्रयस्थानम् २ प्रातिनिध्यम् ३ कारकत्वम् ।
एटम, स पु (अ) अणु ।
—बम, स पु अणुबम्बम् ।
एटर्नी, स ■ (अ) परकार्य, साधक सपादक, प्रति, पुरुष हस्त ।
एड, स स्त्री [स एडु (ड) कम्] पार्ष्णि (पु स्त्री) पाद, मूल तलम्, गोहिरम् ।
—लगाना, मु, घोटकादीन् पाष्णर्या प्रणुद् (प्रे) २ उत्तेज् (प्रे) ३ बाध (भ्वा आ से)।
एडवोकेट, स पु (अ) दे 'अदवोकेट' तथा 'वकील' ।
एडिटर, स पु (अ) सपादक ।
एडिटरी, स स्त्री (अ एडिटर >) सपादकता।
एडी, स स्त्री [सं एडु (ड) क] दे 'एड' ।
—रगड़ना, मु, सुदीर्घकाल कष्ट सह् (भ्वा आ से) २ चिररोगेण पाड् (कर्म)।
—से चोटी तक, मु, आपादशीर्षम्, आद्यन्तम्।
एतबार, स पु (अ) विश्वास, प्रत्यय ।
एतराज, सं पु (अ) आपत्ति (स्त्री), बाध, विरोध, आक्षेप, प्रत्यवाय ।
एरड, सं पु (स) चित्रक, पचांगुल दीर्घ पत्रक, गन्धर्वहस्तक ।
एलची, स पु (तु) राज,दूत, सदेशहर ।
एला, स स्त्री (स) वालुः हिमा, चन्द्रिका, बहुलगधा, ऐन्द्री, द्राविडी ।
एलान, स ■ (अ) घोषणा, विज्ञप्ति (स्त्री)।
एलेक्टरेट, स पु (अ) निर्वाचकसमूह २ निर्वाचनक्षेत्रम् ।
एवं, क्रि वि (सं) इत्थ, अनया रीत्या २ अपि, च ।
एव, अव्य (सं) केवलम्, मात्र २ अपि, च, अपि च ।
एवज, स पु (फा) प्रति (ती) कार, प्रति, क्रिया-अपकार २ हृति निष्कृति (स्त्री)- पूरणम् ३ प्रतिनिधि ।
एशिया, स पु (यू इब असु = पूर्वदिशा >) पचमहाद्वीपेषु अ यतम ।
एशियाई, वि (अ एशिया >) एशियासबंधिन् ।
एषणा, स स्त्री (स) आकाक्षा, स्पृहा, वाछा, इच्छा ।
एहतियात, स स्त्री (अ) अवधान, अवेक्षा २ अल्पाहार ।
एहसान, स पु (अ) कृपा, उपकार २ कृतज्ञता ।
—मद, वि, कृतज्ञ कृतवेदिन् ।

ऐ

ऐ, हिन्दीवर्णमालाया नवम स्वरवर्ण ऐकार ।
ऐं, अ य (अनु) किं यथ, ननु २ अहो, अद्भुत, आश्चर्यम् ।
ऐंग्लो, वि (अ समास के आरभ में) आग्ल ।
—इडियन, स (अ) आंग्लभारतीय ।
—वर्नाक्यूलर, वि (अ) आग्ल-(विद्यालय) स्वदेशीय ।
ऐंच, स स्त्री (हिं ऐंचना) आकर्षण-कर्षणम्, प्रसार, आयाम, वितति (स्त्री) ।
ऐंचना, क्रि स (हिं खचना) कृष (भ्वा प अ) २ विस्तॄ (प्रे), वितन् (त उ से) ३ अप-अव-कृष् ।
ऐंचाताना, वि (हिं ऐंचना + तानना) वक्रदृष्टि, केकर, केदर, वलिर ।
ऐंचातानी, सं स्त्री (पूर्व) उभयत कर्षण २ सघर्ष, स्पर्धा, अहमहमिका ।
ऐंठ, स स्त्री (हिं ऐंठना) गर्व दर्प आटोप २ सगर्वगति ३ द्वेष, मात्सर्यम् ४ दे 'ऐंठन'।
ऐंठन, स स्त्री (पूर्व) व्यावर्तन, भा, कुचन, वक्रता २ भ्रूण, वक्रभग ३ आकर्षणम् ४ गात्रोपघात, उद्वेष्टनम् ।
ऐंठना, क्रि स (स आवेष्टनम्) व्या परि-वृत् (प्रे), मुट् मुट् (चु), आकुञ्च् (भ्वा प से) २ पीडयित्वा आदा (जु आ अ), बलेन निष्कृष् (भ्वा प अ) ३ छलेन आदा । क्रि अ, आकुच् (कर्म) व्यावृत् (भ्वा आ से) २ प्र वि-तन् (कर्म) ३ गर्व् (भ्वा

प से) ४ प्रलय् (ब्रा प से) ५ दे 'मरना'।

ऐंठू, वि (हि ऐंठना) गर्वित, दृप्त।

ऐंठ, स पु (हि ऐंठ) दे 'ऐंठ' (१)। २ आवर्त भ्रम । वि, निर्गुण, अकिंचित्कर।

—दार, वि (हि + फा) सगर्व, अहमानिन् २ उज्ज्वल।

—ऐंठना, क्रि अ (हि ऐंठना) व्यावृत् (ब्रा आ से) दर्पात् आनम् (त उ से) ३ गव (ब्रा प से)। क्रि स, दे 'ऐंठना क्रि स (१)।

ऐंड़ाना, क्रि अ (ऐंठना) अर्गानि आतन् (त उ से) २ साव चल् (ब्रा प से)।

ऐंदव, वि (स) चान्द्र चान्द्रिक, चान्द्रमस, सौमिक। स पु चान्द्रमास।

ऐंद्र, वि (स) इन्द्र शक्र विषयक, पौरन्दर। स पु, ऐन्द्रि, इन्द्रपुत्र।

ऐंद्रजालिक, स पु (स) मायिन्, मायिक, कुहुकजीविन्।

ऐंद्रि, स पु (स) इन्द्रपुत्रो जयन्त २ अर्जुन ३ बालि ४ काक।

ऐंद्रिय, वि (स) ऐन्द्रियक, इन्द्रिय विषयक, ग्राह्य-सम्बन्धिन्।

ऐं, अव्य (स अपि) को, हे, अरे।

ऐक, वि (स) एक विषयक-सम्बन्धिन्।

—पत्य, स पु (स न) एकतन्त्रशासनम् २ पूर्ण, प्रभुत्व-स्वामित्वम्।

—भाव्य, स पु (स न) १ २ स्वभाव-उद्देश्य, ऐक्यम्।

—मत्य, स पु (स न) मतैक्यम्, साम्मत्यम्।

—राज्य, स पु (स न) एकतन्त्रशासनम्।

ऐकांतिक, वि (स) सिद्ध, सम्पन्न २ सम्पूर्ण ३ निर्दोष ४ अनन्यसम्बद्ध।

ऐक्ट, स पु (अ) अधिनियम २ रूपक नाटक, अङ्क ३ कृति (स्त्री)।

—करना, क्रि स, अभि नी (ब्रा प अ), नट् (चु)।

ऐक्टर, स पु (अ) नर्तक, नट, शैलूष, कुशीलव, अभिनेतृ।

ऐक्ट्रेस, स स्त्री (अ) नटी, नर्तकी, अभिनेत्री।

ऐक्य, स पु (स न) एकता, एकत्वम् २ दे 'एका'।

ऐच्छिक, वि (स) वैकल्पिक (-की स्त्री), स्वेच्छातन्त्र, स्वाधीन, सविकल्प।

ऐड्वोकेट, स पु (अ) पक्षसमर्थक, परार्थ वक्तृ।

ऐतिहासिक, वि (स) इतिहास, विषयक सम्बन्धिन् २ इतिहासज्ञ पुरावृत्तवेत्तृ।

ऐतिह्य, स पु (स न) पारम्पर्योपदेश, प्रमाण भेद (न्या)।

ऐन¹, स पु दे 'अयन'।

ऐन², वि (अ) न्याय्य उचित २ सम्पूर्ण। स स्त्री नेत्र, नयनम्।

ऐनक, स स्त्री (अ ऐन >) उपनेत्र ने, नेत्रकाचौ।

ऐब, स पु (अ) दोष, विकार २ व्यसन, अवगुण।

ऐबी, वि (अ) दोषिन्, व्यसनिन् २ कुचेष्टक।

ऐयार, स पु (अ) मायाविन्, धूर्त, छलिन्।

ऐयारी, स स्त्री (अ) कपटित्व, धूर्तता, मायाविता।

ऐयाश, वि (अ) भोगिन्, विलासि २ कामुक, लम्पट।

ऐयाशी, स स्त्री (अ) विलासिता २ कामुकता।

ऐरागैरा, स पु (अ गैर + अनु ऐर) पर, अपरिचित २ तुच्छजन।

ऐरावत, स पु (स) इन्द्रगज चतुर्दन्त, सदादान, अभ्रमातङ्ग २ विद्युद्युक्तो मेघ ३ इन्द्रचाप।

ऐरावती, स स्त्री (स) ऐरावतभार्या २ विद्युत् (स्त्री) ३ पञ्चनदप्रान्त नदीविशेष (= रावी)।

ऐश, स पु (अ) विलास, इच्छा, भोग २ सुखसाधनम्।

—व आराम, स पु, सुखभोगौ, आमोद प्रमोदौ।

ऐश्वर्य, स पु (स न) धन, अर्थ द्रव्य, वित्त विभव, सम्पत्ति (स्त्री) २ अणिमाद्यो योगसिद्धय (स्त्री बहु) ३ प्रभुत्व, आधिपत्यम्।

ऐश्वर्यशाली, वि (सं लिन्) ऐश्वर्यवत्, धनिक, धनाढ्य, सम्पन्न ।
ऐसा, वि (स ईदृश) एवविध, एतत्तुल्य एतादृश । (स्त्री, ईदृशी, एतादृशी) ।
—वैसा, मु, तुच्छ, साधारण ।
ऐसे, क्रि वि (हिं ऐसा) इत्थ, एव, अनेन प्रकारेण ।
ऐहिक, वि (स) सासारिक व्यावहारिक, लौकिक ।

ओ

ओ, हिंदीवर्णमालाया दशम स्वरवर्ण, ओकार ।
ओं, अव्य (स) आ, एव, एवमेव, बाढम्, अथ किं, तथा, तथास्तु, अस्तु ।
ओं, स पु (सं अव्य) प्रणव, ओंकार ।
ओंकार, स पु (स) ओम् इति शब्द, प्रणव ।
ओंठ, सं पु (ओष्ठ) दत-रदन-दशन रद, छद पट । (ऊपर का) ऊर्ध्वोष्ठ । (नीचे का) अधर ।
—चबाना मु, कुप् (दि प से) ।
ओंड़ा, वि, ग(ग)भीर, अगाध । सं पु गर्तं, गर्तम्, अवट ।
ओ, अव्य (अनु) भो, अयि, हे, अरे २ च, अपि च ३ अहो, ही ४ स्मरणानुकपादि सूचकमव्ययम् ।
ओक, स पु (स ओकस् न) गृह, आलय २ शरण, आश्रय ।
ओक, स स्त्री (अनु) वमनेच्छा, विवमिषा ।
ओक्ण, स पु (स) मत्कुण दे 'खटमल' ।
ओकना, क्रि अ (हिं ओक) उद्,वम् (भ्वा प से) २ महिषीव रैभ (भ्वा आ से) ।
ओकाई, स स्त्री (हिं ओकना) वमन २ वमनेच्छा ।
ओखल, स पु, दे 'ओखली' ।
ओखली, स स्त्री (स उलूखलम्) काष्ठमय पाषाणमय वा उदू (लू) खलम् ।
ओघ, सं पु (स) समूह, राशि २ घनत्व, सान्द्रता ३ प्रवाह, धारा ।
ओछा, वि (स तुच्छ) क्षुद्र, अधम, लघुचेतस्, कापुरुष २ गाध, अल्पजल ३ ह्रस्व, ससह्य ४ अपर्याप्तत्व ।
—पन, स पु, तुच्छता, क्षुद्रता, नीचता ।
ओज, सं पुं (स ओजस् न) तेजस्, प्रताप, मुखकाति (स्त्री) २ प्रकाश ३ उत्साह (सा) ४ देहस्थरसाना साराश ।
ओजस्विता, सं स्त्री (सं) काति (स्त्री) । तेजस् (न) ।
ओजस्वी, वि (सं विन्) तेजस्विन्, कातिमत्, प्रभावशालिन्, शक्तिमत् ।
ओजोन, सं पु (अ) प्रजारक, दाहनम्, वातिभेद ।
ओझरी, स स्त्री (स जठरम्) कुक्षि, तुदं, पक्व २ आमाशय, अन्नाशय, जठरम् ।
ओझल, सं पु (स अवरुन्धनम् >) आवरण, आच्छादनम् । वि, अदृश्य, अतरित ।
ओझा, स पु (सं उपाध्याय >) ब्राह्मण जातिभेद २ भूतबाधाहर, कुहक ।
ओट, सं स्त्री (स उटम् घास फूस >) व्यवधान, तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, जवनिका २ शरण, आश्रय ।
ओटना, क्रि स (स आवर्तनम् >) यत्रेण कार्पासबीजानि पृथक् कृ २ पुन पुन वद् (भ्वा प से) ।
ओटनी, स स्त्री (हिं ओटना) कार्पास बीजपृथक्करणयन्त्रम्, बेलनी ।
ओठ, स पु, दे 'ओंठ' ।
ओड, स पु, गर्दभवाहक, जातिभेद ।
ओड़ा, स पु (?) करड, मञ्जूषा २ दुर्भिक्ष, आहाराभाव ।
ओड्र, स पु (स) दे 'उड़ीसा' २ ओड्र उत्कल-वासिन् ।
ओढ़ना, क्रि स (सं आ+ऊढ >) परिधा (जु उ अ) प्रा-आ-वृ (स्वा उ से) । स पु, आवरणं, प्रावार, वसन, पुरम्, २ उत्तरच्छद, प्रच्छद ।
ओढ़नी, सं स्त्री (हिं ओढ़ना) नारीणां उत्तर, वेष्टन प्रावारक ।
—बदलना, मु, सखीत्व भगिनीत्व वा स्था (भ्वा प से) ।

ओढ़ाना, क्रि स (हिं ओढना) 'ओन्ना' के धातुओं के प्रे रूप।
ओत, वि (स) गुम्फित, ग्रथित।
—प्रोत, वि (स) सुमिश्रित, सुसम्पृक्त ससृष्ट, परस्पर सुग्रथित। स पु, तन्त्रवाणी (द्वि), तन्त्रप्रतितन्त्र (द्वि)।
ओथ, स स्त्री (अ) शपथ, दिव्य समय, प्रत्यय।
—कमिशनर, स पु (अ) शपथ दिव्य आयुक्त।
ओदन, स पु (स पु न) भक्त अन्न, पक्व व्रीहि।
ओदा, वि (स उदन् >) उन्न, उत्त, आर्द्र।
ओप, स स्त्री (हिं ओपना) कान्ति द्युति दीप्ति (स्त्री), सुषमा, सौन्दर्यम्।
ओफ, अव्य (अनु) पीडाशोकाश्चर्यखेदसूचक मव्ययम्, आ, हा, अहह, अहो।
ओम्, स पु (स अव्य) प्रणव, ओंकार, ईश्वरसंज्ञा २ ईश्वर।
ओर, स स्त्री (स अवार >) दिशा दिश (स्त्री) काष्ठा, आशा २ पक्ष, पार्श्व। स पु, अन्त, प्रान्त, तत्त्म् २ आरम्भ, आदि।
इस—, क्रि वि, इत, अस्यां दिशि, अत्र।
उस—, क्रि वि, तत, तत्र, तस्यां दिशायाम्।
चारों—, क्रि वि सर्वत समन्तात्, समन्तत, अभित, परित।
ओल, स पु (स) सूरण, दे 'जिमींकन्द'।
ओला, स पु (स उपल) इन्द्रोपल पयोघन, करका, घनकफ, वर्षशिला २ शर्करोपल। वि, उपरुशीतल।
सिर मुँडाते ही ओले पड़े, मु, प्रथमे ग्रासे मक्षिकापात।
ओवरकोट, स पु (अ) स्वरचुक।
ओवरसियर, स पु (अ) अधिदर्शक।
ओषधि-धी, सं स्त्री (स) हरितक, शाक क, शिग्रु २ अगद, औषध, भेषजम्, भैषज्यम्।
—ईश, स पु (स) चन्द्र, सोम।
ओष्ठ, स पु (स) दे 'ओंठ'।
ओष्ठ्य, वि (स) ओष्ठसम्बधिन् २ ओष्ठो च्चार्य (प, फ आदि वर्ण)।
ओस, स स्त्री (स अवश्याय) तुषार, प्रालेय हिम रात्रि—रस,-जलम्, नीहार, तुहिनम्।
—पड़ जाना, मु, म्लै-म्लै सद् (भ्वा प अ) २ लज्ज् (तु आ से)।
ओसार, स पु, विस्तार, प्रसार २ दे 'ओसारा'। वि विस्तृत विस्तीर्ण।
ओसारा, सं पु, प्रघ (घा) ण, अलिंद।
ओह, अव्य (अनु) (आश्चर्य) अहो, ही। (दु ख) अहह, हा आ।
ओहदा, स पु (अ) पद, पदवी, अधिकार।
ओहदेदार, स पु (अ + फा) पदाधिकारिन्, अधिकृत।
ओहो, अव्य, (अनु) अहो, ही, हहो।

औ

औ, हिन्दीवर्णमालाया एकादश स्वरवर्ण औकार।
औंधा, वि (स अधोमुख) अवाङ्मुख, अधोमुख, विपर्यस्त, विलोम।
औंधी खोपड़ी का मु, मूर्ख, जड।
औंस, स पु (अ) (सपादतोलकुम्यात्मक) तोलविशेष ^ औंसम्।
औ, अव्य (हिं और) च। दे 'और'।
औकात स स्त्री एक (अ वक्त का बहु) शक्ति (स्त्री), सामर्थ्यम्। स पु, काल, समय।
औगुन, स पु, दे 'अवगुण'।
औघड़, स पु (स अघोर) अघोरमतानु यायी पुरुष २ असमीक्ष्यकारी मनुष्य ३ अपशकुन। वि, (स अव + हिं घड़ना) विवेकहीन २ असबद्ध।
औचक, क्रि वि, दे अचानक'।
औचित्य, स पु (स न) औचिती, उपयुक्तता, न्याय्यत्वम्, सामञ्जस्यम्।
औजार स पु (अ वज्र का बहु) यन्त्राणि, उपकरणानि, साधनानि (सब न बहु)।
औटना, क्रि अ, दे 'उबलना'।
औटाना, क्रि स, 'उबलना' के धातुओं के प्रे रूप।

औत्सुक्य, स पु (सं न) उत्सुकता, दे० ।
औदरिक, वि (सं) उदर-जठर, विषयक २ अत्याहारिन् , बहुभुज् , घस्मर ।
औदार्य, स [illegible] (स न) उदारता दे ।
औद्धत्य, स पु (स न) उद्धतता, अविशिष्टता, ग्राम्यता २ अनार्यता, धृष्टता ।
औद्योगिक, वि (स) उद्योग-व्यवसाय, सबंधिन् ।
औद्वाहिक, वि (स) वैवाहिक, उद्वाह उपयम परिणय, विषयक ।
औना-पौना वि (स ऊन पादोन) न्यूनाधिक, ईषद्वद्‌ । क्रि वि, न्यूनाधिकतया ।
औने-पौने करना, मु, हान्या लाभेन वा यथा कथाचद विक्रयणम् ।
औपचारिक, वि (स) लाक्षणिक, गौण, उपचारविषयक ।
औपनिवेशिक, वि (सं) आधिनिवेशिक उपनिवेश-अधिनिवेश,-सबधिन् ।
—स्वराज्य, स पु (स न) आधिनिवेशिक स्वातन्त्र्यम् ।
औपन्यासिक, वि (सं) उपन्यास कल्पित कथा,-सबधिन् २ उपन्यासे वर्णनीय ३ अद्भुत, विलक्षण । स पु उपन्यास,-कार लेखक ।
औपपत्तिक, वि (स) तर्क-युक्ति,-साध्य ।
और, अव्य (स अपर>) च अपि च, अन्यच्च, किंच, अपर च । वि, अन्य, अपर, भिन्न २ अधिक, भूयस ।
—का और, मु, विपरीत, विरुद्ध, असगत ।
औरत, सं स्त्री (अ) नारी, रामा २ पत्नी, भार्या ।
—की जात, स स्त्री, स्त्री-नारी, जाति (स्त्री) ।
औरस, स पु (स) धर्मपत्नीज पुत्र ।
औरेब, स पु (स अव+रेब>) वक्र तिर्यग्, गति (स्त्री) २ वस्त्रस्य तिर्यक्कर्तनम् २ जटिलत्व, सश्लिष्टता ३ छल, कपटम् ।
—दार, वि, कितव, वचक ।
औलाद, स स्त्री (अ) प्रजा, सतति प्रसूति (स्त्री), सतान, तोक, अपत्यम् ।
औलिया, स पुं (अ 'वली' का बहु) सिद्धा, पुण्यजना ।
औवल, वि (अ) प्रथम, आदिम २ प्रमुख, प्रधान ३ सर्वोत्तम । स पु आरभ, उपक्रम ।
औषध, स पु (स न) भेषज, भैषज्य, अगद २ हरितक, शाक, ओषधि (स्त्री) ।
औषधालय, स पु (स) भेषजालय, औषधशाला ।
औसत, सं पु (अ) मध्यमा, मध्यप्रमाणम् । वि मध्यम, सामान्य ।
औसान, स पु (फा) चेतना, चैतन्य, सज्ञा, बोध ।
—खता होना, मु, मतिभ्रम, धैर्यनाश, सभ्रम ।

क

क, देवनागरीवर्णमालाया प्रथमव्यजनवर्ण, ककार ।
कंक, स पु (स) आमिषप्रिय, क्रूर, दीर्घ पाद, खगभेद ।
कंकड़, सं पु, दे 'ककर' ।
कंकण, स पु (स पु न) कटक -क, वलय -य, आवापक -क, पारिहार्य -र्यम् ।
कंकणी,-णीका, स स्त्री (स किंकणी) किंकिणी किंकि(क)णीका २ क्षुद्रघटिका ।
ककत, स [illegible] (स पु न) कङ्कतिका, कंकती ।
कंकती, स स्त्री (स) दे 'ककत' तथा 'कघी' ।
कंकर, स [illegible] (स कर्कर) उपलखड, शर्करा अश्मगुटिका, अष्ठीला (बहु) ।
ककरीट, [illegible] स्त्री (अ कान्क्रीट) लोष्ठलेप ।
कंकरीला, वि (हि ककर) शर्करावृत, कर्करमय ।
कंकाल, सं [illegible] (सं पुं न) अस्थिपजर, करक ।
कगन, स पु, दे 'कंकण' ।
कगनी, स स्त्री (स कगुनी) प्रियगु, पीत तडुल, कगु-गू (स्त्री) ।
कँगला, वि (स ककाल >) दरिद्र, अकिंचन, निर्धन, दीन ।
कगाल, वि, दे 'कँगला' ।
कगाली, स स्त्री (हि कगाल) दरिद्रता, निर्धनता, दारिद्र्यम् ।

कँगूरा, स पु (फा कुँगरा) शिखर, भट्टम्।
कघा, स पु (स कङ्कत) कङ्कतम्।
कघी, स स्त्री भ (म कङ्कती) कङ्कतिका, केशमार्जनी, प्रसाधनी।

कचन, स पु (स काचनम्) सुवर्णम् २ सम्पत्ति (स्त्री)।

कचनी, स स्त्री (हिं कचन) वेश्या, नर्तकी।

कचुक, स पु (स) स्त्र, निचोल-प्रावारक २ अगिका, कञ्चुलिका ३ कवच-चम् ४ वस्त्रम् ५ दे कचली।
कचुकी, स पु (स, किन्) अन्तःपुरचारी वृद्धब्राह्मण सौविदल्ल सौविद २ द्वारपाल ३ सर्प ४ द केचुल स स्त्री अगिका, कञ्चुलिका।
कँचेरा, स पु (हिं काँच) काच, कार थमक।
कज, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ केश। (स न) कमलम् २ अमृतम्।
कजई, वि (हिं कजा) धूम्र, धूमल।
कजड़ (र), स पु (दश या कालिंजर) जातिविशेष।
कजन, स पु कामदेव, मदन २ रागभेद।
कजा, स पु (स करज) कटकिनीवृक्ष २ तस्य बीजम्। वि, करजवर्ण धूमल २ धूम्र नयन।
कजूस, वि (स कण + हिं चूसना) कृपण कदर्य अमुक्तहस्त किंपचान।
कजूसी, स स्त्री (हिं कजूस) कार्पण्य, कदर्यता, अमुक्तहस्तत्वम्।

कटक, स पु (स पु न) शल्यम् २ विघ्न ३ विघ्नकर ४ सूच्यग्रम् ५ शत्रु ६ रोमाञ्च ७ कवच-चम्।
—अशन, स पु (स) उष्ट्र, क्रमेलक।
कटकित, वि (स) सकटक कण्टपूर्ण २ सविघ्न ३ रोमाञ्चित।
कँटिया, स स्त्री (हिं काँटी) कील, शकु २ बडिशी, धरणी ३ भूषणभेद।
कँटीला, वि (हिं काँटा) कण्टकित २ सविघ्न।
कठ, स पु (स) गल गर, निगरण २ स्वर ३ शुकादीनां कण्ठरेखा ४ दे 'कठा'।
—अग्र, वि (स) दे 'कठस्थ'।
—गत, वि (स) निर्गमनोन्मुख (प्राण)।
—माला, स स्त्री (सं) गण्डमाला, कण्ठरोग भेद।
कठस्थ, वि (सं) कण्ठाग्र, कण्ठगत, मुखाग्र, मुखस्थ।
कंठा, स पु (स कठ >) कण्ठी, सुवर्णगुटिका निर्मित कण्ठालकार २ शुकादीनां गलरेखा।
कठी, स स्त्री (स) कठ, गल २ अश्वकण्ठ रश्मि (पु) ३ लघुगुटिका-कण्ठी। ४ तुलसी बीजमाला।
कठ्य, वि (स) कण्ठोच्चार्य २ कण्ठजात ३ कण्ठोपकारक।
कडा, स पु (स स्कन्दन >) द 'उपला'।
कडी, स स्त्री (हिं कडा) लघुगोमयम् २ मलगुटिका।
कडील, स स्त्री (अ कन्दील) कर्गलादि निर्मितो दीपकोष।

कडु, कडू, स स्त्री (स) कडूति (स्त्री), दे खुजली'।
कत, स पु (सं कान्त) प्रिय, वल्लभ, रमण २ पति, धव ३ ईश्वर।
कथा, स स्त्री (स) भिक्षुकर्पट, दे 'गुदड़ी'।
कथी, स पु (स कथा >) भिक्षुक, कथा धारिन्।
कंद, स पु (स पु न) गोलमूल, खाद्य मूलम् २ लशुनम् ३ मेघ ४ सूरण।
कंद, स पु (फा) सिताखण्ड खण्डमोदक।
कदर, स पु (स पु न) गह्वर, गुहा, दरी।
कदरा, स स्त्री (स) दे 'कदर'।
कदर्प, स पु (स) मदन, कामदेव।
कदा, वि (फा) उत्कीर्ण तष्ट।
कदुक, स पु (स) गेन्दु, गेण्डु २ उपधान, गण्डु ३ पूगफलम्।
कधा, स पु (स स्कन्ध) अस, भुजमूल, दोःशिखर, क सन्धरम्।
कधार, स पु (स गाधार) नगर प्रदेश, विशेष।
कप, स पु (स) दे 'कँपकँपी'।
कँपकँपी, स स्त्री (हिं काँपना) प्र, कप, वेपन, वेपथु, स्पन्द, कायकम्प।
कपनी, स स्त्री (अ) समवाय, समव्यवसायि सघ २ सैन्यगुल्म ३ गण ४ साहचर्यम्।

कपाउंडर, स पु (अ) *समिश्रक, योगविद्, वैद्यसहाय ।

कपाउडरी, स स्त्री, समिश्रक, व्यवसाय-कर्मन् (न)।

कँपाना क्रि स (हिं कापना) कप्, वेप, वेल स्पद्, एज के प्र रूप।

कपायमान, वि (स कपमान) एजमान, कपन वप्र स्पदमान।

कपास, स पु (अ) दिग्दर्शकयन्त्रम्।

कंपित, वि (स) कपमान, चचल २ भीत, त्रस्त।

कपू, स पु (अ कैंप) शिविर, स्कन्धावार २ सेना ३ दे 'डेरा ।

कमबख्त, वि (फा कमबख्त) भाग्यहीन, दुर्दैव।

कबल, स पु (स) रल्लक, आविक ऊर्णायु, औरभ्र, नीशार ।

कबु, स पु (स) दे शख'।

कस, स पु (स) कृष्णमातुल । (स न) कांस्य, ताम्रार्द्धम् २ पानभाजन, चषम्।

—ताल, स पु दे 'झाँझ'।

क, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ सूर्य ३ अग्नि ४ विष्णु ५ यम ६ वायु ७ मदन ।

कई, वि (स कति) कतिपय एकाधिक, अनेक बहु, प्रभूत।

—बार, क्रि वि बहुधा, पुन पुन, मुहुर्मुहु, भूयोभूय, बहुवारम् ।

ककड़ी–री, स स्त्री (स कर्कटी) रोमशा स्थूला तोयफला गजदन्तफला चिर्भटी मूत्रला।

ककहरा, स पु [क+क—ह+रा (प्रत्य)] प्राथमिकज्ञानम् २ वर्णमाला ३ पूर्वकार्य समूह ।

ककुद, स पु (स ककुद् स्त्री) ककुद्म द, असकूट गडु स्कन्ध २ राजचिह्नम् (छत्रादि)।

ककुभ, स पु (स) अर्जुनवृक्ष २ दे 'दिशा'।

कक्ष, स पु (स) बाहुमूलम्, दे बगल २ दे 'लाँग' ३ कच्छ दे कछार' ४ तृणम् ५ शुष्क–, वनम् ६ भूमि (स्त्री) ७ भित्ति (स्त्री) ८ कोष्ठ ९ दोष १० दे कछराली' ११ श्रणी कक्षा १२ दे 'आँचल ।

कक्षा, स स्त्री (स) परिधि, परिवेश प २ ग्रहमार्ग ३ साम्यम् ४ वर्ग, श्रेणी ५ दे 'ड्योढ़ी' ६ बाहुमूलम् ७ दे 'कछराली' ८ गृह, भित्ति (स्त्री)-पक्ष ९ दे 'लाँग' १० हस्तिरज्जु (स्त्री)।

कगर, स पु [स क(=जल)+अग्र>] उच्छित,-तीर तटम् २ सीमा ३ प्राकार शृगम्।

कगार, स पु (हिं कगर) उन्नताग्रम् २ उच्छिन्न,-कूल-तीरम्।

कच, स पु (स) केश कुन्तल, कचा, शिरसिज, शिरोरुहा (सत्र बहु) २ समूह ।

कचकच, स स्त्री (अनु) प्रलाप २ वाग्युद्धम्।

कचनार, स पु (स काचनार) कोविदार, पाकारि, स्वल्पकेसर ।

कचपच, स पु (अनु) सबाध, सम २ दे 'कचकच'।

कचपचिया, कचपची, स स्त्री (हिं कचपच) कृत्तिकानक्षत्रम् २ मस्तकतारा भूषणभेद ।

कचर कचर, स स्त्री (अनु) आमफलचर्वण ध्वनि २ दे० 'कचकच'।

कचरा, स पु (हिं कच्चा) अपक खर्बूज-दशाङ्गुलम् २ अपक्वचित्रवल्ली ३ चर्भट । दे 'कूड़ाकरकट'।

कचहरी, स स्त्री (हिं कचकच) धर्म-न्याय-सभा व्यवहारामडप, न्यायालय, धर्म-, अधिकरणम् २ राजसभा।

कचाई, स स्त्री (हिं कच्चा) आमता, अपक्वता, २ पाटव-दाक्ष्य अनुभव हीनता।

कचायँध, स स्त्री (हिं कच्चा+गध) आम-अपक,-गध ।

कचालू, स पु (हिं कच्चा+आलू) आलुकी, कचु (स्त्री) कच्वी, तीक्ष्णकन्द, गजकर्ण ।

कचीची, स स्त्री (अनु कच) हनु (पु स्त्री), हनू (स्त्री)।

कचूमर, स पु (हिं कुचलना) निष्पिष्ट पदार्थ, चूर्णितवस्तु २ मृदुसार, मज्जा।

कचूर, स पु (स कर्चूर) दुर्लभ, गधमूलक, गधसार, जटाल ।

कचौरी, स स्त्री (हिं कचरी) माषगर्भा, सुपिष्टिका, कर्चरिका।

कच्चा, वि (स कषण) अपक, हरितनीरस (फलादि) २ अश्रृत, अश्राण, असिद्ध (भोज नादि) ३ अपरिणत, अपूर्णकाल, अप्राप्तकाल,

अपरिपुष्ट (आयु आदि) ४ विकारिन्, अस्थिर ५ निस्सार, अप्रामाणिक (बात इ०) ५ प्रचलितमानात् न्यून ६ संस्कार-संशोधन,-अपेक्षिन् (बही इ) ७ नियम विधि,-विरुद्ध (दस्तावेज इ) ८, पक्वनिर्मित (घर आदि) ९ अभ्युत्पन्न (व्यक्ति) १० कुलिखित, असम्बद्ध (अक्षर इ)।

—चिट्ठा, सं पु संशोधनापेक्षिगणना २ सत्य-यथार्थ, वृत्तान्त ३ गुप्त गोप्य,-वार्ता ४ न्यूनपक्ष ५ पापमक्लया।

—पक्का, वि, अर्ध सामि,-पक्व-शृत-श्राण।

—ब्रह्म, स पु, शिशव (बहु) २ गर्भ।

—माल, स पुं, सामग्री।

कच्ची, वि स्त्री (हिं कच्चा) 'पक्का' के शब्दों के स्त्रीलिंग के रूप, जैसे-अपक्वा, अश्राना इ।

—ईंट, सं स्त्री, अपक्व-, इष्टका।

—उमर, स स्त्री, अवयस्कता, अप्राप्तव्यवहारता २ बाल्यम् ३ शैशवम्।

—रसोई, सं स्त्री, जलपक्वमन्नम्।

—सड़क, सं स्त्री, मृण्मयो मार्गः।

—सिलाई, सं स्त्री, स्थूलस्यूति (स्त्री)।

कच्छ, सं पु (स पु न) अनूप-प, जलप्रायदेश २ नद्या सरसो वा प्रांतभाग ३ प्रदेशविशेष।

कच्छप, सं पु (सं) कूर्मः, दे 'कछुआ' २ अवतारविशेष।

कच्छा, स पु (सं कच्छ>) नौकाभेद २ दे 'कछनी'।

कच्छी[1], वि (स कच्छ>) कच्छीय, कच्छ,-विषयक-सम्बन्धिन्। सं पु., कच्छवासिन् २ कच्छाश्व।

कच्छी[2], सं स्त्री, दे 'कछनी'।

कच्छू, सं पु, दे 'कछुआ'।

कछनी, सं स्त्री (हिं काछना) जानुलम्बिवस्त्रिवसनम्।

कछरा(वा)री, सं स्त्री (स कक्ष>) कक्षा।

कछार, सं पुं (सं कच्छ) दे 'कच्छ' (१,२)।

कछुआ, स पु (सं कच्छप) कमठ, कूर्मः, 'चतुर्गति' (पु), पञ्चगूढ, सुपृष्ठः। (स्त्री कमठी, दुली, कूर्मी दुली)।

कछौटा, सं पु (हिं काछ) लघुशाटिका २ दे 'कछनी'।

कजरारा, वि (हिं कजरा) सांजन, अंजनयुत, सकज्जल २ काल, श्याम।

कजली, स स्त्री (सं कज्जल>) कालिमन्, कालुष्य, कल्क २ पर्वविशेष ३ कृष्णाक्षी गौ (स्त्री) ४ वर्षासु गेयो गीतभेद।

कजा, स स्त्री (अ) मृत्यु, निधनम्।

कज्जाक, स पु (तु कज्जाक) दस्यु, लुण्टाक।

कज्जाकी, स स्त्री (तु कज्जाकी) लुंठन, अपहरणम्।

कजावा, पु (फा) उष्ट्रपर्याणम्।

कजिया, स पु (अ) कलह, विग्रह।

कजी, स स्त्री (फा) वक्रता २ दोष।

कज्जल, स पु (स न) अंजन, नेत्ररंजन, लोचक २ यामुन, सौवीर, दे 'सुरमा' ३ कालिमन्।

कज्जाक, स पु (तु) तुरुष्कजातिभेद। २ दस्यु, लुण्ठक।

कट, स पु (स) गजगंड २ कपोल ३ देव स्थूल,-नाल, घासभेद ४ देवनालनिर्मित-, कट, कलिंज, आस्तरणम् ५ उशीरकाशादि घासा ६ शव ७ शवयान, दारु टी ८ श्मशान ९ अक्षपातविशेष १० मांडफलक कम् ११ समय, अवसर १२ दे 'टट्टी'। वि बहु, भूयस् २ उत्कट, उग्र।

कटक, सं पु (सं पु न) शिबि (बि) र, निवेश, सैन्यनिवास २ सेना ३ कंकण णम् ४ पर्वतमध्यभाग ५ पादकटक ६ चक्रम् ७ नगरविशेष ८ समूह।

कटकट, सं स्त्री (अनु) दंतघर्षणशब्द, कटकटायितम् २ कलह।

कटकटाना, क्रि स (हिं कटकट) दंतान् घृष् (भ्वा प से)।

कटना, क्रि अ (सं कर्तन) अवछिद्-कृत्-लू-व्रश्च (कर्म) २ व्यय या (अ प अ) ३ क्षम्-मृष (कर्म) ४ लज्ज (तु आ से) ह्री (जु प पु) ५ उपरुध् (कर्म) ६ गुदे दृन् (कर्म) ७ ईर्ष्य् (भ्वा प से) ८ मुह् (दि प वे) ९ घृष (कर्म)।

कटनीस, सं पु (देश) दे 'नीलकंठ' (पक्षी)।

कटनी, स स्त्री (हिं कटना) विकर्त २ शस्यकर्तनम्।

कटपीस, सं पु (अ) कृत्तपट ।

कटरा, सं पु (हिं कठहरा) चतुष्कोण लघुहट्ट २ महिष्या वत्स ।

कटवाना, क्रि प्रे, 'काटना' के धातुओं के प्रे रूप ।

कटसरैया, स स्त्री (स कटसारिका) सैरेय, सैरेयक, श्वेतपुष्प । (पीली) कुरटक, पीतपुष्पक । (नीली) नीलपुष्पी, आर्त्तगल । (लाल) कुरवक ।

कटहरा, स पु (हिं काठ+घर) काष्ठगृहम् । २ बृहत्पञ्जरम् ।

कटहल, स पु [स कटक (कि) फल] (वृक्ष) पनस फणस, चपालु । २ (फल) पनस, पणस स् ।

कटाई, स स्त्री (हिं काटना) कर्तन, छेदन, लवनम् २ शस्य, लवन समय ३ लवन छेदन, भृति (स्त्री) ।

कटाकट, स स्त्री (हिं अनु) कलह २ कट कटायितम् ।

कटाकटी, स स्त्री (हिं काटना) हत्या, वध युद्धम् २ वैरम् ३ कटकटशब्द ।

कटाक्ष, सं पु (सं) नयनविलास, हावपूर्णा दृष्टि (स्त्री) २ आक्षेप, दोषप्रकाशनम् ।

कटार-री, सं स्त्री (स कट्टार) असि-पुत्रिका, कृपाणिका ।

कटारा, स पु (स कट्टार) असि, कृपाण २ दे ऊँटकटारा ।

कटाव, सं पु (हिं काटना) कर्तन छेदनम् २ नदीतट ३ कर्तित्वा निर्मित पुष्पपत्रम् ।

कटि, स स्त्री (स) कटी ।

—बंध, सं पु (स) भूवलय, भूमे पंचभागेषु अन्यतम २ दे कमरबंद' ।

—बद्ध वि (स) सज्ज, सन्नद्ध उद्यत, बद्ध परिकर, सिद्ध ।

कटियाना, क्रि अ (हिं काँटा) कंटकित पुलकित रोमांचित (वि)+भू ।

कटीला, वि (हिं काटना) निशित, तीक्ष्णाग्र २ मोहक, प्रभावशालिन् ।

कटु, वि (स) कटुक २ तिक्त, तीक्ष्ण ३ अप्रिय, अनिष्ट ।

कटुता, स स्त्री (स) कटुत्व, कटुकता, काटवम् २ तिक्तता ३ अप्रियत्वम् ।

कटोरा, स पु (सं स्त्री) कटोरम् ।

कटोरी, स स्त्री (हिं कटोरा) कटोरिका, कचोल ।

कटौती, सं स्त्री (हिं कटना) उद्धार, उद्धृतभाग ।

कट्टर, वि (हिं काटना) धर्मान्ध, मतान्ध, अंधविश्वासिन् ।

कट्ठा, वि (हिं काठ) वज्रदेह, दृढांग, मांसल, वीर्यवत् । स पु, हनु ।

कठघरा, सं पु (स काष्ठगृहम्) काष्ठावेष्टन, काष्ठशालाकावृति (स्त्री) शकुनालय २ बृहत्काष्ठपञ्जरम् ।

कठपुतली, स स्त्री (स काष्ठपुत्तलिका) पुत्रिका, पुत्तली, पाञ्चालिका २ मूढगो बाला ।

कठफोड़वा, सं पु (हिं काठ+फोड़ना) काष्ठकूट, दार्वाघाट, शतच्छद, शतपत्रक ।

कठबाप, स पु (हिं काठ+बाप) मातुर्द्वितीय पति ।

कठला, स पु (स कंठ >) कंठभूषा ।

कठिका, स स्त्री (स) दे 'खड़िया' ।

कठिन, वि (स) दुष्कर, दुस्साध्य, कष्टसाध्य, गहन २ घन, कीकस, कक्खट ३ दुर्बोध, दुर्ज्ञेय, दुरवगम ।

कठिनता, स स्त्री (स) दुष्करता, दुस्साध्यता २ घनता, कीकसता ३ दुर्बोधता, दुर्ज्ञेयत्वम् ।

कठिनाई, स स्त्री (स कठिन >) दे 'कठिनता' ।

कठोर, वि (सं) निर्दय, क्रूर, नृशंस, निर्घृण, परुष २ घन, कीकस ३ कर्कर, कक्खट ।

कठोरता, स स्त्री, (स) निर्दयता, क्रूरता, पारुष्य, निर्घृणता, नृशंसत्वम् २ घनता, कीकसता ।

कठौता, स पु (स काष्ठपात्र >) बृहत्काष्ठभाजन, बृहद्दारुपात्रम् ।

कठौती, स स्त्री (हिं कठौता) लघुकाष्ठभाजन, दारुभाजनकम् ।

कड़क, स स्त्री (अनु) महा,-शब्द -रव -निनाद २ मेघगर्जनम्, घनध्वनि, गर्जितम् ३ वज्र,-निर्घोष निर्घातस्वन ४ विराव, ध्वनि ५ उद्वेगजनको निनाद ।

कड़कड़, स पुं (अनु) कड़कड़शब्द, कड़कड़ायित २ भग स्फुटन,-शब्द ।

कड़कड़ाना, क्रि अ (हिं कड़कड़) सशब्द भन् भिद्-द् (कर्म), स्फुट् (तु प से) २ उच्चैः ध्वन् (भ्वा प से) ३ क्षुद् (प्र), चूर्ण् (चु)।

कड़कड़ाहट, स स्त्री (हिं कड़कड़) कड कड़ात्कार, गर्जन, दे 'कड़क'।

कड़कना, क्रि अ (हिं कड़क) कड़कड़शब्द कृ गज् (भ्वा प से) २ महारवेण भन् (कर्म) ३ स्फुट (तु प से) ४ उच्चै वद् (भ्वा प से)।

कड़का, स पु (हिं कड़क) विजय-युद्ध, गीतम् २ सौदामिनी ३ गर्जनम्।

कड़खा, स पु (हिं कड़क) युद्धगीतम्।

कड़खैत, स पु (हिं कड़खा) युद्धगीत गायक, चारण, वैतालिक।

कड़बड़ा, वि, (स कर्बुर) दे 'चितकबरा'। स पु, कर्बुरकूर्च।

कड़वा, वि, दे 'कड़ु'।

कड़ा, वि (स कक्खट>) घन, सान्द्र, कक्खट, कीकस, दृढ, कर्कर, अनम्य २ निष्ठुर, निर्दय ३ दुर्बोध, दुर्ज्ञेय, कठिन।

कड़ा, स पु (सं कटक) कटक, कंकण -ण, २ केयूर -र, अंगद -दम्।

कड़ाई, स स्त्री (हिं कड़ा) दृढता, कीक सता २ निर्दयता ३ क्लिष्टता।

कड़ाका, स पु (अनु कड़ाक) भग-भञ्जन-भेदन-त्रोटन,-शब्द-नाद २ अनशन, अना हार।

कड़ाके का, मु, भीषण, घोर, तीव्र, चट।

कड़ाहा, स पु (स कटाह) तैलादिपाक-पात्रम्।

कड़ाही, स स्त्री. (हिं कड़ाह) कटाही।

कड़ी, स स्त्री (हिं कड़ा) शृङ्खला,-सन्धि-ग्रन्थि २ गीतचरणम् ३ दीर्घ-स्थूणा -काष्ठ-दारु (न)। वि स्त्री, कठिना, कीकसा।

कड़ुआ, वि, दे 'कड़ु'।

—तैल, स पु, सर्षपतैलम्।

कढ़ाई, स स्त्री (हिं, काढ़ना) सूचीशिल्पम् २ सूचीशिल्पस्य भृति (स्त्री) ३ दे 'कड़ाही'।

कढ़ी, सं स्त्री (हिं कढ़ना) क्वथिता, चणक चूर्णनिर्मितव्यञ्जनभेद।

कण, स पु (सं) लव, लेश, अणु।

कणाद, स पु (स) वैशेषिकदर्शनकार ऋषि।

कतरन, स स्त्री (हिं कतरना) खण्डानि, कृत्तखण्डानि (दोनों बहु)।

कतरना, क्रि स (स कर्तनम्) कर्तर्या कृत् (तु प से)।

कतरनी, स स्त्री (हिं कतरना) कर्तनी, कर्त्रिका, कर्तरिका, कर्तरी।

कतर ब्योंत, स स्त्री (हिं कतरना + ब्योंत) अवच्छेद, अस्वीकरणम् २ परिवर्तन, विनि मय ३ चिंता, विमर्श ४ अपहरण, मोष ५ युक्ति (स्त्री), उपाय।

कतरा[1], स पु (हिं कतरना) खण्ड, अंश, शकल।

कतरा[2], स पु (अ) कण, बिंदु, लव, द्रप्स।

कतराई, स स्त्री (हिं कतरना) कर्तन,-मूल्या-भृति (स्त्री) २ कर्तन,-कार्य-कर्मन् (न)।

कतराना, क्रि प्रे, 'कतरना' के धातुओं के प्रे रूप २ निभृत-सलज्ज-ससय अपया (अ प अ), नैपुण्येन परिहृ (भ्वा उ अ)।

कतल, स पु (अ कत्ल) हत्या, वध।

कतला, स पु (अ कतल>) कृत्तम्, दे 'फांक'।

कतलाम, सं पु (अ कत्ले आम) व्यापक,-नरसंहार -लोकहत्या।

कतवार, सं पु, दे 'कूड़ा'।

कताई, स स्त्री (हिं कातना) कर्तनम् २ कर्तनभृति (स्त्री)।

कताना, क्रि प्रे, 'कातना' के धातुओं के प्रे रूप।

कतार, स स्त्री (अ) पंक्ति-श्रेणि (स्त्री) २ निकर, समूह।

कतिपय, वि (स) दे 'कुछ'।

कतीरा, स पु (देश) गुल्लूवृक्षनिर्यास।

कतौनी, स स्त्री (हिं कातना) तान्तव, सूत्रतननम् २ तान्तव-सूत्रतनन,-भृति (स्त्री)-मूल्या। ३ कालक्षेप, विलम्बनम्, दीर्घीकरणम्।

कत्तल, स पु (हिं कतरना) इष्टकाखण्ड, पाषाणशकल।

कत्थक, स पु (स कथक) संगीतव्यवसायिनी जाति (स्त्री)।
कत्था, स पु (स क्वाथ >) खदिर, खदिर सार रंग, रंगद ।
कथक, स पु (स) कथावाचक कथोप जीविन् ।
कथन, स पु (स न) वचन, उक्ति (स्त्री), निवेदन, निर्देश, उपन्यास ।
कथनीय, वि (स) वचनीय वर्णनीय, वक्तव्य उच्चार्य, रूपनीय ।
कथा, स स्त्री (स) उप आख्यान, आख्या यिका आख्यानकम् २ वृत्तान्त, उदन्त ३ धर्मोपदेश ।
—वार्ता, स स्त्री (स) धर्मोपदेश, व्याख्यान।
—वस्तु, स स्त्री (स न) कथासार, आख्या नस्य रूपरेखा ।
कथानक, स पु (स न) कथा २ उपाख्या नम्, लघुकथा ।
कथित, वि (स) उक्त भाषित भणित उदीरित।
कथोपकथन, स पु (स न) संभाषण, संवाद, संलाप, वार्तालाप ।
कंदुष, स पु (स) भृङ्गवर्त्म, विपत्र, व्रण हारक, नीप, मदिरागंध २ समूह ।
कद, स पु (अ) आकार, प्रांशुता, देहोच्चता।
कदन, स पु (स न) वध, हत्या २ छुरिका।
कदन्न, स पु (स न) कुत्सितान्नम्।
कदम, स पु (अ) पाद पद, चरण ण, क्रमण, अंघ्रि (पु) २ अल्पान्तर पदम्।
कदर, स स्त्री (अ) आदर, सम्मान २ मात्रा, परिमाणम्।
—दान, वि (अ + फा) गुणग्राहक ।
कदर्य, वि (स) कृपण मितपच ।
कदली, स स्त्री (स) दे 'केला'।
कदा, अव्य (स) कस्मिन् काले।
कदाचित्, अव्य (स) स्यात्, सम्भवेत् २ कदापि।
कदापि, अव्य (स) कदाचित् २ एकदा, पुरा, प्राक।
कद्दू, स पु (फा कद्दू) अलाबु, अलाबु (पु स्त्री), अलाबुका तुम्ब, तुम्बी, तुम्बिका, पिंड फला,-फला ।
—कश, स पु, अलाबुकष ।
—दाना, स पु, उदरकृमिभेद ।
कन, स पु (स कण) अणु, क्षुद्रांश, कणिका, कणी, लेश २ अन्नकणिका ३ जुष्ट, उच्छिष्टम् ४ भिक्षान्नम् ५ अन्नकणखण्ड ।
कनक¹, स पु (स न) स्वर्ण, सुवर्ण कांचन, हाटकम् २ दे 'धतूरा' ३ दे टेसू ।
कनक², स स्त्री (स कणिक >) गोधूम, प्रशस्त सुमन, म्लेच्छभोज्य २ गोधूमचूर्णम्।
कनकटा, वि (स कर्ण+हिं कटना) छिन्न कर्ण २ कर्णच्छेदक ।
कनकना, वि (स कणकण>) भिदुर, भंगुर २ क्रोधन कोपन।
कनकौवा, स पु, दे 'पतंग'।
कनखजूरा, स पु (स कर्णखर्ज >) कर्णकीटी, शतपदी, कर्णजलूका चित्रांगी ।
कनखी, स्त्री (हिं कोना+आँख) कटाक्ष अपांगदर्शन, साचिवीक्षणम् २ नेत्रसंकेत ।
कनछेदन, स पु (स कर्णच्छेदनम्) कर्णवेध संस्कार ।
कनटोप, स पु (स कर्ण + हिं टोपी) कर्ण शिरस्त्रम्।
कनपटी, स स्त्री (स कर्णपट्ट >) गंड, गल, स्थल-ली ।
कनपेड़ा, स पु (स कर्ण + हिं पेड़ा) पाषाणगर्दभ ।
कनफटा, स पु (स कर्ण + हिं फटना) गोरक्षनाथानुयायी साधु २ विद्धकर्ण ।
कनफूँका, वि (स कर्ण + हिं फूकना) दीक्षादायक २ दीक्षित। स पु, आचार्य २ शिष्य ।
कनमनाना, क्रि अ (अनु) निद्रायामंगानि क्षिप (तु प अ)-प्रास (दि प से) २ शनैः विरोधं प्रकटयति (ना धा)।
कनरसिया, स पु (स कर्णरसिक) संगीत-अनुरागिन्-शुश्रुषु ।
कनवौसा, स पु, दौहित्रपुत्र, पुत्रीपौत्र ।
कनवोकेशन, स स्त्री (अ) दीक्षान्तमहोत्सव, उपाधिवितरणोत्सव २ सभा।
कनस्तर, स पु (अ कैनिस्टर) धातुमय समुद्गक ।

कनाई, सं स्त्री (हिं कना) तनुसूक्ष्म, शाखा विटप ।
कनागत, सं पु (सं कन्यागत >) पितृपक्ष, आश्विनमासस्य कृष्णपक्ष २ श्राद्धम् ।
कनात, स स्त्री (तु) पटमण्डपभित्ति (स्त्री)।
कनियारी, स स्त्री (स कर्णिकार) परिव्याध, द्रुमोत्पल २ कर्णिकारपुष्पम् ।
कनिष्ठ, वि (स) अल्पिष्ठ, लघिष्ठ, यविष्ठ २ निकृष्ट, तुच्छ, क्षुद्र ।
कनिष्ठा, स स्त्री (स) कनिष्ठिका, कनीनी, दुर्बलांगुलि (स्त्री) २ यविष्ठा पत्नी ।
कनी, स स्त्री (सं कणी) हीरकादुल्लादीना सूक्ष्मखंड कम् २ बिंदु, द्रप्स ।
कनीनिका, सं स्त्री (सं) तारा, तारका २ कनिष्ठा ।
कनेठी, स स्त्री (हिं कान + ऐंठना) कर्ण,-कर्षण मोटनम् ।
कनेर, स पु (सं कणेर) करवीर, अश्व मारक,- वीर, कुंद, प्रचंड ।
कनौज, स पु (स कान्यकुब्जम्) कन्याकुब्ज, गाधिपुर, कौदम् ।
कनौड़ा, वि (हिं काना) काण, एकाक्ष २ हीनांग ३ अपमानित ४ क्षुद्र ५ उपकृत ।
कन्ना, सं पु (स कर्ण >) उड्डीनक्रीडनकस्य वेधसूत्रम् २ अग्र, कोटि (स्त्री)।
कन्नी, स स्त्री (हिं कन्ना) उड्डीनक्रीडनक पार्श्वौ (द्वि व) २ अग्र, कोटि (स्त्री) ३ शाटिकादीनामंचल ।
—काटना, मु, दर्शन परिह (भ्वा प अ)।
कन्या, स स्त्री (सं) कन्यका, कुमारी, बाला, बालिका, दारिका २ दुहितृ, पुत्री, सुता, तनया, तनुजा, आत्मजा ३ राशिविशेष ।
—राशी, वि (सं-राशि >) कन्याराशिज २ निर्वीर्य ३ दुष्ट ।
कन्याट, वि (स) कन्या,-बाधक-पीडक-सन्तापक ।
कन्सरवेटिव, वि (अ) प्राचीनतासमर्थक, नवीनता विरोधिन् ।
कन्हाई, कन्हैया, सं पु (स कृष्ण) श्रीकृष्ण २ सुंदरबालक ३ प्रियपुरुष ।
कप, सं पु (स) वरुण २ दैत्यजातिप्रकार ।
कप, सं पु (अ) चषक-क, शराव २ पुरस्कारचषक-कम् ।
कपट, सं पु (स न) छल, कैतव, वंचना, प्रतारणा, छद्मन् (न), दंभ, पाखंड, व्याज, शाठ्यम् ।
कपटी, वि (स-टिन्) छलिन्, पाखंडिन्, शठ, कितव, दंभिन्, प्रतारक, वंचक ।
कपड़छन, सं पु (हिं कपडा + छानना) पटपवनम् २ वसनपूतम् ।
कपड़ा, सं पु (स कर्पट) वसन, वस्त्र, अंबर, अंशुक, पट, वासस् (न) २ परिधान, वेश,-ष, नेपथ्यम् ।
—पहिनना, क्रि स, वस्त्राणि परिधा (जु उ अ) -धृ (चु)-वस (अ आ से)।
—ऊनी, रोमज-ऊर्णामय,-वस्त्रम् ।
—पुराना, कर्पट, चीर, जीर्णवस्त्रम् ।
—महीन बढ़िया, दुकूलम् ।
—रेशमी, कौशेय, कौशांबर, क्षौम, कौशम् ।
—सूती, तूलांबर, फाल, कार्पास, बादरम् ।
कपर्द, सं पु (सं) शिवजटाजूट २ वराटक ।
कपर्दिका, स स्त्री (स) दे 'कौड़ी'।
कपाट, सं पु (स पु न) दे 'किवाड़'।
कपाल, सं पु (सं पु न) दे 'खोपड़ी'।
—क्रिया, स स्त्री (स) शवकपालस्य वेणुना कपालभेदनम् ।
कपाली, स पु (सं. कपालिन्) भैरव, उमापति ।
कपास, स स्त्री (सं कार्पास) तूल ल, भरद्, पिचु, पिचुल । (पौदा) कर्पासवृक्ष, कार्पासी, सूत्रपुष्पा, बदरी-रा पटद, छादन ।
कपि, सं पु (स) वानर, मर्कट २ गज ३ सूर्य ।
—ध्वज, सं पु (सं) अर्जुन ।
कपिल, स पु (स) मुनिविशेष २ अग्नि । वि, कपिश, पिंगल ३ श्वेत ।
कपिला, सं स्त्री (सं-) शुक्ला विनेया,-गौ (स्त्री)
कपिश, वि (स) पाण्डुवर्ण, पिशंग, पिंगल, कपिल ।
कपीश, सं पु (स) सुग्रीव (२) हनुमत् ।
कपूत, स पु (स कुपुत्र) कुतनय, कुसूनु ।
कपूर, सं पु (स कर्पूर-रम्) घनसार, सिताभ, हिमवालुका, चंद्र, सोम, सिताभ्र ।

कपूरी, वि (सं कर्पूर) घनसार-कर्पूर,-वर्ण-रग।
कपोत, सं पु (सं) दे 'कबूतर'।
कपोल, स पु (सं) दे 'गाल'।
—कल्पना, स स्त्री (सं) मिथ्या कथा, कल्पित वृत्तान्त।
कप्तान, सं पु (अ कैप्टेन) दलनायक, अग्रग २ सैन्याधिपति, सेनानी ३ नौकाधिपति, पोताध्यक्ष।
कफ[1], सं पु (स) श्लेष्मन् (पु), खटक, बलास २ शि (सि) घाण, सिंहाण-न। ३ हृदयकंठादिस्थो धातुभेद (वैद्यक)।
कफ[2], सं पु (फा) फेन, डिंडीर २ लाला, मुखस्राव, द्राविका।
कफ[3], स स्त्री (अ) कर-हस्त,-तल तल्म्।
कफ[4], स पु (अ) पिप्पलाम्र, अग्र भाग।
कफन, स पु (अ) शववसन, मृतकवस्त्र, प्रेतपरिधानम् २ शव,-भाजन-पेटक।
कफनी, स स्त्री (अ कफन>) शवग्रीवा वस्त्रम् २ साधूना ग्रीवावसनम्।
कबंध, स पु (सं) अमुण्ड शरीर, रुण्ड -ड, छिन्नमस्तको देह २ राहु ३ मेघ ४ राक्षसविशेष।
कब, क्रि, वि (सं कदा) करिमन् काल।
—तक, क्रि वि, कियत्,-काल-चिर, कदा पर्यन्तम्।
—से, क्रि वि कदारभ्य, कदाप्रभृति।
कबड्डी, स स्त्री (देश) बालक्रीडाभेद।
कबर, स स्त्री (अ कब्र) प्रेतावट, शवगर्त, समाधि।
कबर (रि) स्तान, स पु (फा कब्रिस्तान) प्रेतभूमि (स्त्री), समाधिक्षेत्रम्।
कबरा, वि (स कर्बुर) चित्र, कल्माष, शार।
कबाड़, स पु (स कर्पट>) अवस्कर, तुच्छ वस्तुसमूह २ व्यर्थकार्यम्।
कबाड़िया, कबाड़ी, स पु (हिं कबाड़) अवस्करविक्रयिन्, व्यर्थवस्तुवणिज् (पु)।
कबाब, स पु (अ) भृष्टमास, शूल्पिक, शूल्य मांसम्।
कबाबी, वि (अ कबाब>) मांसभक्षक २ मांसविक्रेतृ।
कबाहत, स स्त्री (अ) अशुभ, कष्ट, विघ्न, अनिष्टम्।
कबित-त्त, सं पु (सं कविता>) हिन्दी काव्यस्य छन्दोभेद २ काव्य, कविता।
कबीला, सं पु (अ) पत्नी २ परिवार ३ वंश, गोत्रम्।
कबूतर, स पु (फा) कपोत, कलरव, पारावत, छेद, रक्तलोचन।
—खाना, स पु, कपोतविलम् २ (छत्री) कपोतपालिका, विटङ्क।
कब्ज, स स्त्री (अ) मलावरोध, विड्भङ्ग, बद्धकोष्ठ।
—कुशा, वि, वि-,रेचक, सारक। सं पु, रेचक, सारकम्।
कब्जा, स पु (अ) स्वामित्व, अधिकार २ मुष्टि (स्त्री), वारग ३ द्वारसंधि।
कभी, क्रि वि (हिं कब+ही) कदाचित्, कदापि, कस्मिंश्चित् काले, कर्हिचित् २ पुरा, प्राक्, एकदा।
—का, क्रि वि, चिरात्, चिरम्।
—न कभी, क्रि वि, कदाचित्, अद्य श्वो वा।
कमंडल, स पु (स कमण्डलु) करक, करक -क, कुण्डी।
कमंद, स स्त्री (फा) गुण-रज्जु,-पाश-बंधनम् २ गुण-रज्जु,-अधिरोहणी-निश्रयणी।
कम, वि (फा) अल्प, दहर, दभ्र, स्तोक, लघु, ह्रस्व २ ऊन, न्यून, अल्पतर, अल्पीयस्, लघीयस, क्षोदीयस्। क्रि वि अल्प, स्तोक, ईषत्, किंचित्, मनाक्।
—उम्र, वि, अल्पवयस्क, बाल।
—कीमत, वि अल्पमूल्य, सुलभेय।
—खर्च, वि, अल्प-मित, व्ययिन् २ कृपण।
—जोर, वि, अल्प,-बल-शक्ति, दुर्बल।
—बख्त, वि, हत-मन्द,-भाग्य, दुर्दैव।
—खर्च बाला नशीन, मु, अल्पव्ययेन गौरव लाभ।
—सुनना, मु, उच्चै श्रु (भ्वा प अ)।
कमची, स स्त्री (तु) कंचिका, वेणुशाखा, कुंचिका २ नम्यतनुयष्टि (स्त्री)।
कमठ, सं पु (स) कूर्म, कच्छप।
कमनीय, वि (सं) सुन्दर, मनोहर, रम्य।
कमनैत, सं पु (फा कमान>) धनुर्धारिन्।

कमनैती, स स्त्री (हिं कमनैत) धनुर्विद्या ।
कमर, स स्त्री (फा) कटी-टि (स्त्री), काचीपद, मध्य मध्य, मध्याग, वलग्न -न ।
—कस, स पु पलाशनिर्यास ।
—बंद, स पु मेखला रशना ।
—कसना या बाँधना, मु परिकर बध् (क प अ) ।
—टूटना, मु , इतोत्साह (वि) भू ।
—सीधी करना, मु विश्राम् (दि प से) सविश् (तु प अ) ।
कमरख, स पु (स कर्मरग)(वृक्ष) कर्म्मार कर्मार, मुद्गर । (फल) कर्मरग इ ।
कमरा, स पु (लै कैमेरा) म , कोष्ठ शाला, कक्षा २ छायाचित्रारोपकयत्र आलोकग्राहय त्रनम् ।
अदर का—, गर्भागार, अन्त कोष्ठ ।
ऊपर का—, शिरोगृह, चन्द्रशाला ।
कमरी-ली, स स्त्री (स कबल >) लघु, कबल रल्लक -आविक , कम्बलकम् ।
कमर्शल, वि (अ) वाणिज, वाणिज्य सम्बन्धिन् विपणक, वाणिनिक ।
कमल, स पु (स न) अब्ज अम्बुज अम्भोज, अरविन्द, कज, नल नलिन, पकज, पयोरुह, पद्म शत सहस्र पत्रम् , सरसिज सरोज सरोरुह, मासम् ।
—का पौदा, स पु मृणालिनी, पद्मिनी, कमलिनी नलिनी ।
—गट्टा, स पु कमलाक्ष पद्मबीजम् ।
—डड, स पु, कमलनाल ।
—नयन, वि पद्माक्ष राजीवाक्ष (-क्षी स्त्री) । स पु विष्णु २ राम ३ कृष्ण ।
—नाभ, स पु विष्णु ।
—नाल, स पु, दे 'कमलडड' ।
—नैनी, वि स्त्री पद्माक्षी कजनयनी ।
—योनि, स पु ब्रह्मन् (पु) ।
कमला, स स्त्री (स) पद्मा, लक्ष्मी श्री (स्त्री) इन्दिरा मा रमा, हरिप्रिया २ धनम् ३ नारग ४ वरनारी ।
—पति, स पु, विष्णु ।
कमलासन, स पु (स न) पद्मासनम् २ (स पु) ब्रह्मन् (पु) ।
कमलाकर, स पु (स) तडाग , दे 'सरोवर' ।
कमलाकार, वि (स) पद्म जलज,-आकार सदृश-रूप ।
कमलाक्ष, वि (स) पद्म,-नयन नेत्र ।
कमलिनी, स स्त्री (स) पद्माकर , पद्मिनी, सकमलो जलाशय २ लघुकमलम् ।
कमाई, स स्त्री (हिं कमाना) उपजीविका, वृत्ति (स्त्री) २ उपार्जित अर्जितधनम् ।
कमाऊ, वि (हिं कमाना) उप-,अर्जक, धनसग्राहक २ उद्योगिन् , उद्यमिन् ।
कमान, स स्त्री (फा) धनुस (न) शरासनम् , चाप ।
कमानिया, स पु (फा कमान >) धन्विन् (पु) धानुष्क धनुर्धर ।
कमाना, क्रि स (हिं काम) उप-,अर्ज् (चु , भ्वा प से) परिश्रमेण प्राप (स्वा उ अ) २ (चमडा इ) उपयोगार्ह विधा (जु उ अ) ।
कमानी, स स्त्री (फा कमान) स्थिति-स्थापकत्वविशिष्टो यन्त्रावयव ।
कमाल, स पु (अ) नैपुण्य, दक्षत्व २ विलक्षणकृत्यम् । वि श्रेष्ठ ।
कमिशनर, स पु (अ) आयुक्त ।
कमिशनरी, स स्त्री (अ कमिशनर >) मडलपाल ।
कमी, स स्त्री (फा कम >) न्यूनता, न्यूनता, अल्पता, अपूर्णता अपर्याप्तता ।
कमीज, स स्त्री (अ कमीज) चेल , चोलक , उरोवस्त्रम् ।
कमीना, वि (फा -न) अधम अवम क्षुद्र तुच्छ २ दुष्कुलीन हीन,-वर्ण-जाति ।
कमीशन, स पु (अ) परार्थ विक्रय २ आयोग ३ उपधनभाग ।
कम्युनिज़्म, स पु (अ) साम्यवाद समष्टिवाद ।
कम्युनिस्ट, स पु (अ) साम्यवादिन्, समष्टिवादिन् ।
कयाम, स पु (अ) निवेश अवस्थिति (स्त्री), विश्राम २ निवेशस्थानम् ।
कयामत, स स्त्री (अ) प्रलय २ विपत्ति (स्त्री) ।
करज, स पु (स) पडग्रथ , रोचन ।
करड, स पु (स) मधुकोष २ खड्ग ३ कारडव (पक्षी) ।

करक, स पु (सं) हस्त, हाथ, पञ्चशाख, पाणि २ शुल्क-दा, शुल्कार ३ किरण, अंशु ४ राजस्व, शुल्क -क।

करक, स स्त्री (हिं कसक) पीड़ा वेदना २ मूत्रकृच्छ्रम् ३ क्षताङ्क, क्षतचिह्नम्।

करकट, स पु (हिं खर+सं कट >) अवस्कर, अवकर, अपस्कर, मल, उच्छिष्टम्।

करकरा, स पु (स कर्करेटु) सारसभेद। २ दे 'खुरदरा'।

करका, स पु (सं स्त्री) दे 'ओला'।

करघा, सं पु, दे 'कघा'।

करछा, स पु (सं करच्छद >) 'करछी' के वाचक शब्दों के पूर्व 'बृहत्' लगाएँ।

करछी, स स्त्री (हिं करछा) कम्बी-वि (स्त्री), कवि (का) का, खजाकिका, दर्वी, दर्विका, तर्दू दूर् (स्त्री), पाणिका, दारुहस्तक।

करज, स पु (स) १ नख २ अङ्गुली ३ करञ्ज।

करट, स पु (स) काक, वायस २ गजगण्ड ३ नास्तिक ४ निन्द्यजीवनम्।

करटक, स पु (स) वायस, काक २ चौर्यविज्ञानप्रवर्तक आचार्यविशेष।

करटी, स पुं (स-टिन्) द्विप, गज, हस्तिन् (पु)।

करण, स पु (स न) यन्त्र, उपस्कर, साधनम् २ कारकभेद (व्या) ३ अङ्ग, शस्त्र ४ इन्द्रियम् ५ देह ६ क्रिया, कार्यम् ७ स्थानम्।

करणीय, वि (स) कर्तव्य, अनुष्ठेय, निष्पाद्य, विधेय, सम्पादनीय।

करतब, स पु (स कर्तव्यम्) कर्मन् (न), कार्य कृत्यम् २ कला, कौशल, शिल्पम्।

करतबी, वि, (हिं करतब) कुशल, दक्ष, युक्तिमत् २ कर्मठ ३ ऐन्द्रजालिक।

करतल, स पुं (स पु न) दे 'हथेली'।

करताल, स पुं (स न) वाद्यभेद, करताली २ करतलध्वनि (पुं) ३ दे 'झाँझ'।

करती, स स्त्री (स कृति >) सुगपूर्णकविनिमय वम, न्यूनांक।

करतूत, स स्त्री (स कर्तृत्वम्) कृत्य, कर्मन् (न) २ गुण, कला ३ कुकर्मन्।

करद, वि (स) कर-बलि-राजस्व-शुल्क,-द-प्रद-दायक-दातृ २ अधीन, परवश ३ शरणदायक।

करधनी, स स्त्री (स कटिधानी >) मेखला, रशना, काञ्ची, सारसनम्।

करनफूल, स पु (स कर्णफूलम् >) कर्णिका, ताल्पत्र, उत्तम, कर्णावतंस।

करना¹, स पु (स कर्ण) सुदर्शन, श्वेतपुष्पो वृक्षभेद।

करना², स पु (स करुण) बृहज्जम्बीरभेद, पनस जीर। (स्त्री) पर्वत जीरम्।

करना³, क्रि स (स करणम्) कृ (त उ अ), निष्पद्-निर्वह्-निर्वृत्-साध् (प्र), विधा (जु उ अ), अनुष्ठा-प्रणी (भ्वा प अ), आचर् (भ्वा प अ)।

स पु कृता भाव, करण, निष्पादन, सम्पादन निर्वर्तन, साधन, विधान, अनुष्ठान, आचरणम्।

—योग्य, वि निष्पाद्य, विधेय, साध्य, कार्य कर्तव्य, आचरणीय।

—वाला, स पु कर्तृ कारक, विधातृ, सम्पादक, निष्पादक अनुष्ठातृ।

किया हुआ, वि, कृत, अनुष्ठित, निष्पादित विहित।

करनाली, स पु (हिं करनाल) कर्णाटशानवादनव्य २ ऐन्द्रजालिक।

करनी, स स्त्री (हिं करना) कृति (स्त्री) कर्मन् (न), कार्य, कृत्यम् २ अन्त्येष्टिक्रिया।

करनैल, स पु (अं कर्नल) व्यूहदल, पति अध्यक्ष।

करभ, स पु (स) मणिबन्धात् कनिष्ठापर्यन्त करस्य बहिर्भाग २ गजशावक ३ उष्ट्रशावक ४ कटी-टि (स्त्री)।

करभोरु, स पु (स) गजशुण्डोरु। वि, वामोरु (पु) वामोरू (स्त्री)।

करम, स पु (अ कर्मन् न) कार्य, सेवा २ भाग्य, दैवम्।

करमकल्ला, स पु (अ करम+हिं कल्ला) दे 'बंद गोभी'।

करमाली, स पु (स-लिन्) सूर्य भानु।

करवट¹, स स्त्री (स करवर्त) पार्श्व पार्श्व, भाग, पक्ष २ वामपार्श्वतो दक्षिणपार्श्वतो वा शयनम्।

करवट², सं पु (सं करपत्रम्) क्रकच, पत्रदारक।

—लेना, मु, मोक्षलाभाय क्रकचेन स्वशीर्षच्छेदनम्।

करवाल, सं स्त्री (सं पु) खड्ग, असि।

करश्मा, सं पु (फा) चमत्कार, कौतुक, आश्चर्य।

करहाट—टक सं पु (सं) कमलमूलम् २ कमलानस्य छत्रम् ३ मदनवृक्ष।

कराना, क्रि प्र (हि करना) 'करना' के धातुओं के प्र रूप।

करामात, सं स्त्री (अ 'करामत' का बहु) दे करश्मा।

करामाती, वि (अ करामात>) अलौकिक चमत्कारिन्, अद्भुत।

करार¹, सं पु (अ) शान्ति (स्त्री), दम २ धैर्य स्थैर्यम्।

करार², सं पु (अ इकरार) दे 'प्रतिज्ञा'।

करारा¹, सं पु (सं करालः>) नद्याः उच्चं पार्श्वं वा तटम् २ उच्छ्रिततीरम् ३ क्षुद्र पर्वत।

करारा², वि (सं कराल) दृढ, घन, सदृढ २ क्रूर, दारुण ३ शुष्क, क्षुद्र ४ तीक्ष्ण उग्र ५ उदग्र, बलवत् ६, मधुर, भिदुर।

कराल, वि (सं) भीषण, भयंकर, घोर, दारुण।

कराला, सं स्त्री (सं) भीषणाकारा दुर्गा।

कराह, सं स्त्री (दे कराहना) आर्ति पीडा, ध्वनि (पु)-शब्द-स्वर।

कराहत, सं स्त्री (अ) घृणा जुगुप्सा।

कराहना, क्रि अ (हि करना+आह) आर्त स्वरेण कूजन स्वन् (भ्वा प से)।

करिणी, सं स्त्री (सं) हस्तिनी।

करी, सं पु (सं करिन्) गज हस्तिन्।

करीना, सं पु (अ) सुव्यवस्था, रचना (स्त्री), सौष्ठवम्।

करीब, क्रि वि (अ) समीपे, निकट २ प्रायः, प्रायेण।

करीर, सं पु (सं-र) दीर्घकण्टक, ककर, गूढपत्र, क्रकच।

करुण, वि (सं) दयार्द्र, कारुण्य २ दुःखजनक। सं पु रसविशेष (सा) २ परमेश्वर ३ करुणा, अनुकम्पा।

करुणा, सं स्त्री (सं) अनुकम्पा दया कृपा, २ शिवविशेषोत्र दुसन्।

—निधान वि (सं) करुणाकर दयानर, कृपा-करुणा-दया, निधि-सागर।

करेणु, सं पु स्त्री (सं पुं स्त्री) हस्तिन् २ हस्तिनी।

करेला, सं पु (सं कारवेल्ल) कटुक, कटु कटुकः, कठिल्लक।

करैत, सं पु (हि काला) मातुलान, मातुलाहि, कृष्णसर्पभेद।

करोड़, वि (सं कोटि स्त्री) शतलक्ष। सं पु, कोटिसंख्या दशलक्ष (१०००००००)।

करौली, सं स्त्री (सं करपाली) छुरी छुरिका, आम्छुनिका।

कर्क, सं पु (सं) कर्कट, कुलीर २ राशिविशेष ३ अग्नि ४ कुक्कुर।

कर्कश, वि (सं) कठोर, रूक्ष। २, उग्र, प्रचंड ३ सकण्टक।

कर्कशा, वि सं (सं) कलह-विवाद-प्रिया (नारी)।

कर्घा, सं पु (फा कारगाह=कार्यस्थान>) तन्तुवायानां यन्त्रं २ तन्तुकाराणां वेम-वाय दण्ड-तन्त्रम् ३ पटनिर्माणयन्त्रम्।

कर्ज, सं पु (अ) दे 'ऋण'।

कर्ण, सं पु (सं) श्रवण-न, श्रुति, श्रोत्र, श्रवस् (न) श्रुति (स्त्री), शब्दग्रह। २ अंगराज, राधेय, कानीन ३ दे 'पतवार'।

—कटु, वि (सं) विस्वर, कर्कश, दुःश्रव्य।

—धार, सं पु (सं) नाविक, पोतवाह २ कर्णिन् सुकानिक।

—परम्परा, सं स्त्री (सं) श्रुतिपरम्परा।

—पुट, सं पु (सं न) श्रुतिमंडलम्।

—पुर, सं पु (सं न) चम्पानगरी (भागलपुर)।

—पूर, सं पु (सं) अशोक २ नीलोत्पलम्।

—फूल, सं पु (सं-पुष्पम्>) कर्णिका, ताटंक, तालपत्र, कर्णभूषणम्।

—वेध, सं पु (सं) संस्कारभेद।

कर्णाट, सं पु (सं) दक्षिणभारते प्रान्तविशेष।

कर्णाटी, सं स्त्री (सं) रागिणीभेद २ कर्णाट देशस्थ भाषा नारी वा।

कर्णिका, सं स्त्री (सं) ताटक, दलपत्र, कर्ण भूषणभेद २ करमध्यांगुली ३ लेखनी।

कर्त्तन, सं पु (सं न) (कर्न था) छेदन, लवन, कृन्तनम् २ तन्तुसर्जनम्।

कर्त्तनी, सं स्त्री (सं) दे 'कतरनी'।

कर्त्तरी, सं स्त्री (सं) दे 'कतरनी' २ दे 'छुरा'।

कर्त्तव्य, सं पु (सं न) धर्म, विधेय, अनुष्ठेयम् २ दे 'करणीय'।

—विमूढ़, वि (सं) कर्तव्यमभ्रान्त।

कर्त्ता, सं पु (सं कर्तृ) विधातृ, स्रष्टृ, अनुष्ठातृ २ प्रभु, ईश्वर।

कर्त्तार, सं पु (सं कर्तार >) परमेश्वर, विधातृ, विश्वसृज्।

कर्तृत्व, सं पु (सं न) कारकत्वम् १ कर्तृधर्म।

कर्दम, सं पु (सं) चिक्किल, पङ्क २ पाप ३ छाया।

कर्पट, सं पु (सं पु न) चीर, पटखण्ड, पटच्चर जीर्णवस्त्रम्।

कर्पूर, सं पु (सं) दे 'कपूर'।

कर्बुर, सं पु (सं न) स्वर्णम् २ धुस्तूरवृक्ष ३ जलम्। (सं पु) राक्षस २ पाप ३ कर्चूर। वि नानावर्ण, चित्र, कल्माष, शबल।

कर्म, सं पु (सं कर्मन् न) कार्य, कर्तव्य, क्रिया, कृति (स्त्री), प्रवृत्ति (स्त्री) २ दैव भाग्यम् ३ द्वितीय कारकम् (व्या)।

—काण्ड, सं पु (सं न) धर्मकृत्य, यज्ञादि कार्यम् २ कर्मविधायक शास्त्रम्।

—कार, सं पु (सं) लोहकार २ स्वर्णकार ३ सेवक।

—चारी, सं पु (सं-रिन्) राज,-भृत्य-पुरुष, अधिकारिन् २ कार्यकर्तृ।

—भोग, सं पु (सं) कर्मफलम् २ पूर्वकर्मणां परिणाम।

—योग, सं पु (सं) चित्तशुद्धिकर वैदिक कर्मन् (न) २ निष्कामकर्मणाऽऽत्मज्ञानम्।

—रेख, सं स्त्री (सं-रेखा) भाग्यांका २ भाग्यं, दैवम्।

—विपाक, सं पु (सं) पूर्वकर्मणां फल, कर्म परिणाम।

—शील, वि (सं) कर्मवत् २ उद्योगिन्, उद्यमिन्।

—सन्यास, सं पु (सं) कर्मत्याग २ कर्म फलत्याग।

—हीन, वि (सं) मन्द-हत,-भाग्य, दुर्दैव २ शास्त्रोक्तकर्मणाम् अकर्तृ।

—जागना, मु, भाग्य-पुण्य,-उदय।

—फूटना, मु कर्मदुर्विपाक, भाग्यविपर्यय।

कर्मठ, वि (सं) कर्मण्य, कर्मशील, उद्यमिन्।

कर्मण्य, वि (सं) दे 'कर्मठ'।

कर्मधारय, सं पु (सं) समानाधिकरण तत्पुरुषसमास।

कर्मिष्ठ, वि (सं) कार्यकुशल २ क्रियावत्।

कर्मी, वि (सं कर्मिन्) कार्यकर्तृ २ फलेच्छया कर्मसंपादक।

कर्मेन्द्रिय, सं स्त्री (सं न) क्रियासाधक करणम्। (हाथ, पाँव आदि)।

कर्षक, सं पु (सं) कर्षणकर २ क्षेत्रिन्, क्षेत्राजीव।

कर्षण, सं पु (सं न) आकर्ष, आकर्षणम् २ भूमिदारणम् ३ कृषि (स्त्री)।

कर्षणी, दे 'सिरनी'

कर्षी, वि (सं) अा,-कर्षक-कर्षिन्। सं पु, हालिक, हल,-वाह, कृक, लाङ्गलिन् (पु)।

कलंक, सं पु (सं) दोष, दूषण, छिद्रम् २ लांछन, अपवाद ३ लक्षण, चिह्नम्।

कलंकित, वि (सं) दूषित, निंदित, आक्षिप्त, लांछित।

कलंकी[1], वि (सं-किन्) दे 'कलंकित'।

कलंकी[2], सं पु (सं कल्कि) विष्णोर्दश मावतार।

कलण्डर, सं पु (अ केलेंडर) पञ्चांग, तिथिपत्रम्।

कलन्दर, सं पु (अ) यवनभिक्षुभेद २ वान रादिनर्तयितृ।

कल[1], सं पु (सं) मधुरास्फुटध्वनि। वि, मनोज्ञ, अभिराम २ मधुर, कोमल।

कल[2], सं स्त्री (सं कल्य >) स्वास्थ्यम् २ सुखम् ३ संतोष।

कल[3], सं स्त्री (सं कला) उपाय, युक्ति (स्त्री) २ यंत्र, उपकरणम् ३ यन्त्रावयव।

कल[१], क्रि वि (सं कल्यम्) श्व (अव्य), आगामिदिनम् । २ आगामिकाले ३ ह्यः (अव्य), गतदिनम् ।
—का, वि श्वस्तन (-नी स्त्री), श्वस्त्य (-त्या स्त्री) २ ह्यस्तन, ह्यस्त्य ।
कलई, स स्त्री (अ) रङ्ग, वङ्ग, त्रपु, कस्तीरम् २ रङ्ग-वङ्ग,-लेप ३ स्वर्णादिधातुभिर्लेप ४ कान्तिकरो लेप ५ सुधालेप ६ आडंबर ।
—गर, स पु (फा) धातु सुधा-लेपक ।
—खुलना, मु , गोप्य रहस्य वा आविर्भू ।
कलकंठ, वि (स) प्रियवद, सुस्वर, मधुरभाषिन् स पु कोकिल २ कपोत ३ हंस ।
कलक, स पु (अ) दुःख, शोक ।
कलकल, स पु (स) निर्झरादीनां शब्द २ कोलाहल ३ विवाद ।
कलगी, स स्त्री (तु) पक्ष, पिच्छम् २ चूडाल कारभेद ३ मुकुटस्था सुपक्षा ४ भवन शृंगम् ।
कलत्र, स पु (स न) पत्नी, भार्या ।
कलदार, स पु (हिं कल) यन्त्ररचित रूप्यकम् २ यन्त्रयुक्त ।
कलधौत, स पु (स न) सुवर्णम् २ रजतम् ।
कलन, स पु (स न) उत्पादन, रचन, जननम् २ ग्रहणम् ३ धारण परिधानम् ४ आचरणम् ५ सम्बन्ध ६ ग्रास, कवल ७ गणनाक्रिया ८ वेतस वेत्र ।
कलप, स पु (स कल्प >) मंड, मंडम् २ केश, राग-रंग ३ दे 'कल्प' ।
कलपना, क्रि अ (सं कल्पन्>) शुच् (भ्वा प से) पीड् खिद्-तप-दु क्लिश (कर्म) व्यथ-उत्कण्ठ् (भ्वा आ से), दुर्मनायते (ना धा) उत्सुक (वि)+भू ।
कलपाना, क्रि स, 'कलपना' के धातुओं के प्रे रूप ।
कलफ, स पु (स कल्प >) मंड , मंडम् ।
—लगाना, क्रि स, मंडेन लिप (तु प अ) ।
कलबल[१], स पु (स कल बल्म्) उपाय , युक्ति (स्त्री) ।
कलबल[२], स पु (अनु) कोलाहल , कलकल ।
कलबूत, स पु (फा कालबुद) आकार साधनम् २ आधार , उपष्टम्भ ।
कलभ, स पु (स) गजशावक , उष्ट्रशावक ।
कलम, सं पु स्त्री (सं पु) लेखनी, अक्षर तूलिका, वर्णिका, वर्णमातृ (स्त्री) २ अन्यत्र रोपणाय कृत्ता शाखा ३ अन्यवृक्षे निवेशिता शाखा ४ गडरोमाणि (न बहु) ५ तूलिका, वर्तिका ६ तक्षणसाधनम् ।
—दान, स पु , कलम-लेखनी, धानम् ।
—लगाना, मु , वृक्षान्तरे देहान्तरे वा निविश (प्रे) ।
कलमलाना, क्रि अ, दे० 'कुलबुलाना' ।
कलमा, स पु (अ) यवनधर्ममूलमंत्र २ वाक्यम् ३ शब्द ।
—पढ़ना, मु यवनी भू ।
कलमी, वि (फा) हस्त-,लिखित २ वृक्षान्तरे आरोपित ३ स्फटिकरूपेण घनीभूत ।
—आम, स पु (पेड़) राजाम्र , नृपवल्लभ । (फल) राजाम्रम् ।
—शोरा, स पु , घनीकृतो यवक्षार ।
कलमुहाँ, वि (स कालमुख >) कृष्ण,-वदन-आस्य २ लांछित, कलुषित ।
कलरव, स पु (स) मधुरमदध्वनि, कल,-स्वन-रुतम् । २ कपोत ३ कोकिल ।
कलल, स पु (स पु न) भ्रूण , गर्भ, पुत्रन , गर्भस्थशिशो प्रथमावयव । २ गर्भाशय ।
कलवरिया, स स्त्री (हिं कलवार) सुरालय, मदिरालय, मजा ।
कलवार, स पु (स कल्यपाल) शौंडिक , सुराजीविन् , सुराकार २ सुराविक्रयी उप जाति (स्त्री) ।
कलविंक, स पु (स) गृहनीड , चित्रपृष्ठ, चटक २ चिह्नम् ।
कलश, स पु (स) कलश शी, कलस-सी-सम् , घट, कुट , निप २ शिखा, शृंगम् ।
कलसा, स पु , दे 'कलश' ।
कलहंस, स पु (स) राजहंस , कादंब, कलनाद, मराल २ नृपोत्तम ३ परमेश्वर ।
कलह, स पु (स) कलि, विवाद, द्वन्द्व, वाग्युद्धम् , विसंवाद ।
—प्रिय, वि (स) विवादप्रिय, कलहकारिन्, कलहिन् ।
कला, स स्त्री (स) अंश , भाग २ चन्द्रस्य षोडशांश ३ सूर्यस्य द्वादशांश ४ अग्नि मंडलस्य दशमांश ५ त्रिंशत्काष्ठात्मक समय

विभाग ६ शिल्प, शिल्पविद्या ७ कौशल, निपुणता ८ शरीरस्थ षोडशाध्यात्मविभाग (=५ ज्ञानेन्द्रियाँ, ६ कर्मेंद्रिय, ५ प्राण, मन) ९ नृत्यभेद १० मात्रा (छन्द) ११ विभूति (स्त्री) १२ शोभा, प्रभा १३ कौतुक, लीला १४ छल, कपटम् १५ मिष, व्याज १६ युक्ति (स्त्री), उपाय १७ नटलीला भेद १८ यन्त्रम् १९ प्रकृति (स्त्री, जैन), २० वर्णवृत्तभेद ।

—कंद, सं पु (फा) मिष्टान्नभेद ।

—कौशल, स [illegible] (स न) कला, शिल्पम् २ कलापाटवम् ।

—निधि, स पु (सं) कलाधर, चन्द्र ।

—बाजी, स स्त्री (सं + फा) विपर्यस्त प्लुति (स्त्री)।

—वत, सं पुं (सं कलावत्) संगीतकुशल, गायक २ रज्जुनर्तक । वि, कलाकुशल ।

कलाई, स स्त्री (सं कलाची) कलाचिका, प्रकोष्ठ, मणिबंध ।

कलाप, सं पु (स) समूह, गण, निकर २ जनसंघ, लोकनिवह ३ इषुधि ४ चन्द्र ५ कटिबंध, मेखला ६ गुच्छ ७ मयूर पिच्छम् ८ आभूषणम् ।

कलापिनी, स स्त्री (सं) मयूरी २ रात्रि (स्त्री)।

कलापी, स पुं (सं -पिन्) मयूर, बर्हिन् २ कोकिल । वि, तूणयुक्त ।

कलाबत्तू, सं पु (तु कलाबतून) कौशेयसूत्रो व्यावर्तित सुवर्ण-रजत,-तार ।

कलाम, स पु (अ) वचन, उक्ति (स्त्री) २ वार्तालाप ३ प्रतिज्ञा ४ आक्षेप ।

कलार-ल, सं पु, दे 'कलवार'।

कलारिन, स स्त्री (हि कलार) शौण्डिकी, मद्यविक्री ।

कलावती, वि (स) कला-शिल्प,-ज्ञा वेत्री, शिल्पिनी २ सुन्दरी ।

कलिंग, [illegible] पु (सं -गा) प्रान्तविशेष (=उड़ीसा) १ इंद्रयव-कुटज,-वृक्ष ३ दे 'तरबूज'। वि चतुर, धूर्त ।

कलिंगड़ा, स पु रागभेद ।

~ सं पुं (सं) पर्वतविशेष २ सूर्य ।

~ ।, स स्त्री (सं) यमुना कालिंदी ।

कलि, सं पु (सं) चतुर्थ-तुरीय-अन्त्य,-युगम् (यह ४३२००० वर्षों का होता है) २ कलह, विवाद ३ युद्धम् ४ शूर ५ क्लेश ६ पापम् ७ शिव ८ इषुधि ।

—कर्म, सं पु (सं -कर्मन् न) संग्राम ।

—काल, सं पुं (सं) कलियुगम् ।

कलिका, सं स्त्री (सं) दे 'कली'।

कलित, वि (सं) ज्ञात, विदित २ प्रसिद्ध ३ प्राप्त ४ शोभित ५ सुन्दर ।

कलियाना, क्रि अ (सं कली >) स्फुट् (तु प से) विकस्-फुल् (भ्वा प से)।

कली[1], सं स्त्री (सं) कलिका, कोरक -क, मुकुल -लं, कुड्मल, कोश -ष २ त्रिकोणो वस्त्रखंड ३ धूमपानयन्त्राधोभाग ।

दिल की कली खिलना, मु, मुद् (भ्वा आ से)।

कली[2], सं स्त्री (अ कलई) चूर्णजलम् २ तप्तचूर्णम् ।

कलील, वि (अ) न्यून, स्तोक २ लघु, ह्रस्व।

कलुष, सं पु (सं न) मल, मालिन्यम् २ पाप, दोष ३ क्रोध ४ महिष ।

वि, मलिन, पंकिल २ निंदित ३ पापिन् ।

कलुषित, वि (सं) पंकिल, मलीमस २ अप वित्र, अमेध्य ३ आतुर ४ कृष्ण, काल ।

कलूटा, वि (हिं काला) काल, कृष्ण, श्याम ।

काला—, वि अति,-कृष्ण-काल ।

कलेजा, सं पुं (सं कालेयम्) यकृत् (न), कालखण्ड, कालकम् २ हृदय, हृद् (न), ३ उरस्, वक्षस्, क्रोड (सब न) ४ साहस, उत्साह, वीर्यम् ।

—काँपना, मु, भी (जु प अ), उद्विज् (तु आ से) स वि,-त्रस् (दि प से)।

—चलनी होना, मु, हृदय व्यध् (कर्म)।

—टूक टूक होना, [illegible], हृदय स्फुट् (तु प से)।

—थाम कर रह जाना, मु, संताप स-नि,-यम् (भ्वा प अ)।

—धड़कना, मु, (भयादिभि) हृदय वेप् (भ्वा आ से)।

—फटना, मु, (शोकमात्सर्यादिभि) हृदय भिद् (कर्म)।

—से लगाना, मु, आलिंग् (भ्वा प से)।

कलेवर, स. पुं (सं. न) शरीर, देह ।

—बदलना, क्रि अ, पुन जन् (दि आ से) २ नववस्त्राणि परिधा (जु उ अ)।

कलेवा, सं पु (सं कल्यवर्त) प्रातराश, प्रातर्भोजन, कल्यजग्धि (स्त्री), जलपानम्।

कलोल, सं स्त्री (सं कल्लोल >) क्रीडा, खेला, केलि (पु स्त्री), लीला, विलास।

कलौंजी, स स्त्री (स कालाजाजी) पृथुका, दिरवा, कारवी।

कल्क, सं पु (सं पु न) घृततैलादिशेष २ दम्भ ३ विष्ठा ४ किट्टम् ५ पापम् ६ वस्तुन चूर्णम् ७ अवलेह।

कल्कि, स पु (सं) विष्णोर्दशमावतार।

कल्प, स पु (स) धर्मकृत्यविधायको वेदाग-भेद २ ब्रह्मदिनम्, देवसहस्रयुगम् (= ४३२०००००० वर्ष) ३ महाप्रलय, सृष्टि संहार ४ विधान, कृत्यम् ५ प्रात काल ६ रोगनिवृत्तियुक्ति (स्त्री) ७ प्रकरण, विभाग ८ विकल्प, पक्ष ९ सदेश १० निश्चय ११ उद्देश। वि, तुल्य, सदृश।

—तरु, स पु (स) कल्प, वृक्ष-पादप द्रुम।

कल्पना, सं स्त्री (सं) उद्भावना-न, कल्पन, मन कल्पना २ रचना, विधानम् ३ प्रसाधन, मडनम् ४ तर्क, ऊहा ५ अध्यारोप ६ मन सञ्जीकरण।

—करना, क्रि अ, उत्प्रेक्ष ऊह् (भ्वा आ से), तर्क् (चु), मनसा कल्प् (प्रे), सम्भू (प्रे)।

कल्पित, वि, (सं) रचित, विहित २ सुव्यव स्थित ३ वि-म भावित ४ उद्भावित, वासना भावना,-सृष्ट, मानस, काल्पनिक ५ असत्य, निर्मूल ६ कृत्रिम, कृतक।

कल्मष, स पु (सं न) अघ, पापम् २ मल मालिन्यम्।

कल्य, स पु (स न) प्रत्यूष, प्रभातम् २ मधु (न) ३ सुरा ४ श्व (अव्य), आगामिदिनम्। वि, स्वस्थ, निरामय २ मूक बधिर।

कल्या, स स्त्री (स) मद्यम्, सुरा २ कल्याण स्वस्ति,-वचन वच (न), अभिनन्दनम्।

कल्याण, सं पु (सं न) सुख, मगल, हित, शिव, कुशल, क्षेम, भद्र, सुस्थिति (स्त्री) २ सुवर्णम् ३ रागभेद। वि शिव, मगल, शकर।

—कारी, वि (सं रिन्) सुख मगल हित, कारक।

कल्याणी, वि स्त्री (सं) मगलकारिणी, सुन्दरी। स स्त्री (सं) गौ (स्त्री) २ माषपर्णी।

कल्यावर्त, सं पु (सं) प्रातराश, कल्यवर्त, जलपानम्।

कल्ल, वि (सं) बधिर, अकर्ण।

कल्लर, सं पु (देश) ऊपर-र, वन्ध्या भूमि (स्त्री)।

कल्लाँच, वि दुर्वृत्त, दुराचारिन् २ दरिद्र, निर्धन।

कल्ला, सं पु (स करीर-र>) प्ररोह, किसलय, उद्भिद्।

कल्लोल, सं पु (स) महातरग, उल्लोल, महोर्मि २ दे 'कलोल'।

कल्लोलिनी, सं स्त्री (सं) नदी, तटिनी।

कवच, सं पु (सं पु न) सन्नाह, कचुक, वर्मन् (न), तनु-त्राण-त्रम् २ भेरी, दुदुभि ३ रक्षाकरड।

—पत्र, सं पु (सं न) भूर्जपत्रम्।

कवर, सं पु (स पु स्त्री न) केश-बन्ध पाश २ ग्रास, कवल, पिण्ड।

कवरी, सं स्त्री (सं) केशविन्यास, वेणी गि (स्त्री), धम्मिल्ल २ वनतुलसी।

कवर्ग, स पु (सं) ककारादिवर्णपञ्चकम्।

कवल, स पु (सं) ग्रास, पिंड डम्।

कवलगट्टा, स पु (स कमलग्रथि >) कमलाक्ष, पद्मबीजम्।

कवलित, वि (स) भक्षित, निगीर्ण, भुक्त २ गृहीत, आदत्त।

कवायद, सं पु (अ 'कायदा' का बहु) नियमा विषय (बहु) २ व्यायाम ३ सेना व्यायाम ४ व्याकरणनियमा।

कवि, सं पु (सं) काव्यकर, सूरि, सत्सार २ ऋषि ३ सूर्य ४ ब्रह्मन् (पु)।

—राज, स पु (स) कवीन्द्र, महाकवि २ वैतालिक ३ वैद्योपाधि।

कविता, सं स्त्री (सं) काव्य, काव्यप्रबन्ध,

काव्यबंध २ काव्यरचना, कवित्व, कविता कला।
कवित्त, स पु (सं कवित्वम्>) काव्य कविता २ हिन्दीछन्दोभेद ।
कवित्व, स पु (स न) काव्यरचनाशक्ति (स्त्री) २ काव्यगुण ।
कवींदु, स पु (स) वाल्मीकि, प्राचेतस, कविश्रेष्ठ ।
कवींद्र, वि (स) कविश्रेष्ठ, श्रेष्ठकवि, कविराज ।
कशा, स पु, दे 'कशा ।
कशमकश, स स्त्री (फा) सवर्ष, प्रतिस्पर्द्धा २ जनौघ ३ संशय ।
कशा, स स्त्री (स) कषा प्रतोद, प्रतिष्कश -ष ।
कशिश, स स्त्री (फा) दे 'आकर्षण'।
कशीदा, स पु (फा) सूची, शिल्प-कर्मन् (न)।
—काढ़ना, क्रि स सूच्या पुष्पादिक चित्र् (चु)।
कश्ती, स स्त्री (फा) दे 'नौका'।
कश्मल, स पु (स न) मोह, मूर्च्छा २ पाप अघम्। वि मलिन, आविल।
कश्मीर, स पु (स) काश्मीरदेश शाखा शिल्पिन् ।
कष, स पु (स) कषपट्टिका, निकष निकष, उपल पाषाण २ शाण गी ३ परीक्षण, परीक्षा।
कषण, स पु (स न) निकषेण स्वर्णादिकस्य परीक्षणम्।
कषाय, वि (स)तुवर, कुवर २ सुवास सुगंधि ३ रंजित, रंगवत् ४ गैरिकवर्ण रक्तश्याम। स पु गोंद २ क्वाथ ३ कुवर, रसभेद ।
कष्ट, स पु (स न) दुःख, क्लेश, पीडा व्यथा २ आपद्, विपद्, आपत्ति, विपत्ति (सब स्त्री)।
—साध्य, वि (स)दुस्साध्य, दुष्कर, कष्ट।
कस[1], स पु (स कष)निकष कषपट्टिका २ परीक्षणम् २ खड्गगुरुत्वनीयता।
स[2], स पुं (हिं कसना)बल, शक्ति- (स्त्री) निग्रह, निरोध ३ विघ्न।
कस[3], सं पुं (फा) नर, जन व्यक्ति (स्त्री)।
फी—, क्रि वि, प्रतिपुरुष, प्रतिजनम्।
बे—, वि, असहाय, अनाथ।
कसक, स स्त्री (स कष = हिंसा >) वेदना, पीडा, व्यथा २ चिर, वैर विरोध ३ अभिलाष ४ सहानुभूति (स्त्री)।
—निकालना, क्रि स, चिरवैरं शुध् (पै)।
कसकना, क्रि अ (हिं कसक) व्यथ् (भ्वा आ से) पीड् (कर्म)।
कसकुट, स पु दे 'काँसा'।
कसना, क्रि स (स कर्षणम्) दृढीकृ नियम् (भ्वा प अ) दृढयति (ना धा) २ बध् (क्र् प अ) ३ पीड् (चु) ४ परीक्ष् (भ्वा आ से) ५ सज्जीकृ ६ सूक्ष्म कृष (प्रे)।
क्रि अ दृढीभू, नियम् (कर्म) २ बध्, नियन् (कर्म) ३ पिंडीभू।
स पुं, दृढीकरण, नियमनम् २ बंधनम् ३ पीडनम् ४ परीक्षणम् ५ सज्जीकरणम्।
कसनी, स स्त्री (हिं कसना) दृढीकरण नियमन-रज्जु (स्त्री) २ अंगिका ३ निकष ४ परीक्षा ५ दे 'हथौड़ी'।
कसब, स पु (अ) व्यवसाय वृत्ति (स्त्री) २ गणिकावृत्ति (स्त्री)।
कसबी, स स्त्री (अ कसब >) वेश्या, गणिका २ कुलटा, पुंश्चली।
कसम, स स्त्री (अ) शपथ, प्रतिज्ञा, समय।
—खाना, क्रि अ, शप् (भ्वा दि उ अ)।
कसमसाना, क्रि अ, (अनु०) दे 'कुलबुलाना'।
कसमसाहट, स स्त्री, शनैः सर्पणम् २ व्याकुलता।
कसमि (मी) या, अ (अ०) सशपथ, ससमय शपथपूर्वम्।
कसर, स स्त्री (अ) न्यूनता, अल्पता २ अभाव, हीनता ३ दोष ४ वैरम् ५ हानि (स्त्री)।
—निकालना, मु, क्षतिं पूर् (चु), प्रतिफलं दा (जु उ अ)।
कसरत[1], स स्त्री. (अ) बाहुल्य, प्रचुरता, आधिक्यम् २ बहुतरभाग, अधिकसंख्या।

—राय, सं स्त्री, बहुमत, मताधिक्यम्।

कसरत, सं स्त्री (अ) व्यायाम, परिश्रम २ अभ्यास, आवृत्ति (स्त्री)।

कसरती, वि (अ कसरत>) व्यायामिन्, दृढांग।

कसा, वि (हिं कसना) गाढ, दृढ, सुसहत २ दृढबद्ध।

कसाई, सं पु (अ कस्साब) सौ (शौ) निक २ घातक, घातक, विशसिन्। वि, क्रूर, निर्दय।

कसाना, क्रि अ (हिं काँसा) कषाय-विकृत स्वाद (वि) भू।

कसाला, सं पु (स कष—पीडा>) दुःख, कष्टम् २ आयास, परि-,श्रम।

कसाव, सं पु (स कषाय >) कषायता, रूक्षता।

कसी, सं स्त्री (स कर्षणम्>) खनित्र, खनित्रम्।

कसीदा, सं पु, दे 'कशीदा'।

कसीस, सं पु (स कासीसम्) शोधन, शुभ्र, धातुशेखरम्, खेचरम्।

कसूर, स पु (अ) अपराध, दोष, स्खलितम्।

—वार, वि, अपराधिन्, दोषिन्।

कसेरा, स पु (हिं काँसा) कांस्यकार, धातुलेहकार।

कसैला, वि (हिं कसाव) कषाय, तुवर, तुवर।

कसैली, सं स्त्री (हिं कसैला) दे 'सुपारी'। वि स्त्री कषाया, रूक्षा।

कसोरा, स पु (हिं काँसा)(कांस्य-) चषक शराव भाजन पात्रम्। २ मृण्मय मात्रिक, चषक।

कसौटी, सं स्त्री (सं कषपट्टी) नि, कष, कषपट्टिका, निकषोपल २ परीक्षा, प्रमाणम्।

—पर कसना, मु, परीक्ष् (भ्वा आ से)।

कस्टम, सं पु (अ) रीति (स्त्री), व्यवहार, अभ्यास, नियम।

कस्टमर, स पु (अ) ग्राहक, क्रेतृ (पु)।

कस्टम्स, सं पु (अ) शुल्क-कं, कर, राजस्वम्।

कस्तूरी, सं स्त्री (सं) कस्तूरिका, मृग,-नाभि मद, अण्डजा, वातामोदा, गन्धचूलि (स्त्री)।

—मृग, सं पु (सं) गन्धमृग।

कस्बा, सं पु (अ-ब) बृहद्-महा,-ग्राम, लघु,-नगर पुरम्।

कहकहा सं पु (अ अनु) अट्टहास, उच्चै हास, अति प्र,हास।

कहत, सं पु (अ) दुर्भिक्ष, नीवाक, आहाराभाव, अकाल।

कहना, क्रि स (सं कथनम्) गद्-वद्-भाष् (भ्वा प से), ब्रू (अ उ), वच् (अ प अ) उद्-उदीर (प्रे), वद-व्या, हृ (भ्वा प अ) २ कथ (चु), शंस (भ्वा प से), आचक्ष् (अ आ), नि-आ, विद् (प्रे), ख्या, ख्या (अ प अ), वर्ण-निरूप (चु), अभिधा (जु उ अ) ३ आज्ञा (प्रे आज्ञापयति) ४ शप् (भ्वा आ से) ५. प्रकाश् (प्रे) ६ उपदिश (तु प अ)। सं पु, वचन, भाषण, कथन, व्याहरण, उदीरणम् २ आज्ञा, आदेश ३ उपदेश, अनुशासनम् ४ दे 'कहावत'।

—योग्य, वि गदनीय, वदनीय, कथनीय, भणितव्य, वक्तव्य।

—वाला, सं पु, वाचक, वक्तृ, वादिन्, व्याहर्तृ, अभिधातृ।

—हुआ, वि, गदित, उदित, भणित, उक्त, कथित, उच्चारित, उदीरित।

कहने को, मु, नाममात्रम्।

कहर, सं पु (अ) विपत्ति (स्त्री)।

कहरवा, स पु (हिं कहार) (१-३) ताल गीत-नृत्य,-भेद।

कहरी, वि (अ० कह्र>) क्रूर, निर्दय, अत्याचारिन्।

कहलाना, क्रि प्रे, 'कहना' के धातुओं के प्रे रूप।

कहवा, सं पु (अ) वृक्षभेद २ तस्य बीजानि (बहु) ३ तेषां पेयम्।

कहाँ, क्रि वि (सं कुह) क्व, कुत्र, कस्मिन् स्थाने।

—का, वि, क्वत्य, कुत्रत्य, किंदेशीय।

—तक, क्रि वि, कियद्दूर-रे, कियत्कालेन, कियत्कालम्।

कहा, सं पु (हिं कहना) कथन, वचन, उक्ति (स्त्री), आज्ञा, उपदेश।

कहानी, सं स्त्री (सं कथानिका) कथा, आख्या-यिका, आख्यानम्, आरव्यायिका, वृत्तान्त ।

कहार, सं पुं [सं क (=जल)+हार] कहार, जल-उद वाह, दृतिहार । २ शिविका नरयान, वाह ३ पात्र, क्षालक मार्जक ।

कहावत, सं स्त्री (हिं कहना) आभाणक, लोकवाद जनप्रवाद जनोक्ति लोकोक्ति (स्त्री)।

कहासुनी, सं स्त्री (हि कहना+सुनना) कलह, विवाद, वाग्युद्धम्।

कहीं, क्रि वि (हिं कहाँ) क्वापि क्वचित्, कुत्रापि, कुत्रचित्, यत्रकुत्रचित्। २ न न कदापि ३ यदि, चेद् ४ अत्यन्तम्।

—कहीं, क्रि वि, क्वचित् क्वचित्, यत्र कुत्र चिदेव ।

—न कहीं, क्रि वि, अत्र अन्यत्र वा ।

काँइयाँ, वि (अनु कांव) धूर्त्त कितव ।

काँ काँ, सं स्त्री (अनु) काका, शब्द ध्वनि २ काकरुतम्।

काँक्षा, सं स्त्री (सं) अभिलाष, कामना।

काँख, सं स्त्री (सं कक्ष) कक्षा, बाहुमूल, भुजकोटर -र, दोर्मूलम्।

काँखना, क्रि अ, (अनु) भारवहनमलत्या गादिकाले आर्तनाद कृ।

काँगड़ी, सं स्त्री,* मल इसनी-हसन्ती, अगार धानिका प्रकार ।

कांग्रेस, सं स्त्री (अं) महासभा, प्रतिनिधि सभा, समाज ।

काँच¹, सं स्त्री (सं कक्ष) कच्छ -च्छा, कच्छा, टी टिका। २ गुदावर्त, गुदचक्रम्।

काँच², सं पुं (सं काच) स्फटिक ।

कांचन, सं पुं (सं न) स्वर्णम्, सुवर्ण कनकम् २ धन, सम्पत्ति (स्त्री)। (सं पु) धुस्तूर २ चम्पक ३ कोविदार ४ काञ्च नाल ।

—मय, वि सुवर्णमय, हैम (-मी स्त्री)।

कांची, सं स्त्री (सं) रसना, मेखला २ कांजिवरम्।

कांजिव (वा) रम्, सं पुं, (सं कांची) कांची, पुरी नगरी ।

काँजी, सं स्त्री (सं) गृहाम्ल, रक्षोघ्न, सुवीराम्ल कावि(जी)कम्।

काँजी हौद, सं पु (अं काइन हाउस) पशु-शाला गुप्ति (स्त्री), गोगृह, अवरोध ।

काँटा, सं पुं (सं कण्टक -कम्) तरु-द्रुम-, नख, शिताग्र, शल्यम् २ पृष्ठवंश, कशेरुका ३ नख रा, नखर -रम् ४ लघु तुला-धट ५ नासा भूषणम् ६ मयूरकुक्कुटादीनां नख । ७ शुल,-जिह्वा सूची ८ बडिश, मत्स्यवेधनम् ९ मत्स्यास्थि (न) १० निष्ठोद्भेद ११ शल, शल्लम् १२ घटीसूची १३ कूपकटय १४ रोमाञ्च ।

—खटकना, मु, (हृदय) कण्टकमिव व्यथ् (दि प अ)

—होना, मु, अतिकृश (वि) भू।

काँटे बोना मु पीड् (चु)।

काँटों में घसीटना, मु, मिथ्यास्तु (अ प अ)।

रास्ते में काँटे बिखेरना, मु, विघ्नयति (ना धा)।

काँटी, सं स्त्री (हिं काँटा) क्षुद्रकण्टक २ लघु-क्षुद्र,-धरणी आकर्षणी ३ क्षुद्रतुला ४ क्षुद्रकील ५ धर्मासमल्लम्।

कांड, सं पु (सं पु न) अध्याय, उच्छ्वास, प्रकरण, परिच्छेद, स्कन्ध २ वि-, भाग, खंड -ण्डम् ३ दण्ड, यष्टि (स्त्री) ४ बाण ५ शरवृक्ष ६ अवसर ७ तृणादिगुच्छ ८ तरस्कन्ध ९ समूह १० वंशादे पर्वन् (न) ११ शाखा १२ व्यापार घटना १३ नालम्।

काँडी, सं स्त्री (सं काण्ड >) दीर्घ स्थूण-काष्ठम्, गृहस्थूणा, तुला।

कांत, सं पु (सं) पति, भर्तृ २ अयस्-लोह, कान्त चुम्बक ३ चन्द्र ४ वसन्त ५ श्रीकृष्ण । वि, मनोरम, शोभन ।

कांता, सं स्त्री (सं) पत्नी, भार्या २ दयिता, प्रिया ३ सर्वांगसुन्दरी नारी।

कांतार, सं पुं (सं पुं न) महावन, बृहद् गहन, अरण्यानी २ वेणु, वंश ३ विलं, छिद्रम्।

कांति, सं स्त्री (सं) द्युति -दीप्ति -छवि (स्त्री), भा, अभिख्या २ सौन्दर्य, लावण्यम्।

काद्व, सं पु (सं न) कटाहीभृष्ट-कन्दुमर्जित, वस्तु (न)-पदार्थ ।

कादिशीक, वि (स) भय त्रास, पलायिन अपद्रुत धावित ।

काँप, स स्त्री (स कपा) (१-२) गज वराह,-दन्त २ वंशकाशादीना शलाका ३ कर्णभूषणभेद ।

काँपना, क्रि अ (स कम्पनम्) कप् स्पन्द् वेप् (भ्वा आ से) स्फुर् (तु प से) २ विचल् वेल्ल् (भ्वा प से) ३ दे, 'डरना' ।

काम्बोज, वि (स) कम्बोजदेश, विषयक सम्बन्धिन् । सं पु कम्बोजवासिन । २ कम्बोजाश्व ।

काँव-काँव, स स्त्री (अनु) द 'काँ काँ' २ प्रलप, विप्रलाप ।

काँवर, स स्त्री दे 'बहँगी'

काँस, सं पु (सं काश) अमरपुष्पक, वन हासक, काशा-शी २ कल्ह ।

काँसा, स पु (स कांस्यम्) कंस, कंसास्थि (न) ताम्रार्द्धम्, दीप्ति पीन,-लोहम्, घोषम् ।

कांस्यकार, सं पु (सं) कंसकार दे 'कसेरा' ।

का, प्रत्य (सं प्रत्य 'क') षष्ठी वा समास द्वारा । (उ॰ राम की पुस्तक = रामस्य पुस्तक, रामपुस्तकम्) ।

काई, स स्त्री (स शैवालम्) शैव (वा) ल, शैव (वा) ल ल, जलनीली २ अयोमलम् ३ मलम् ।

काक[1], स॰ पु (सं) वायस, ध्वाङ्क्ष ।

—तालीय, वि (स) आकस्मिक-यादृच्छिक (-की स्त्री), अतर्कित ।

—पक्ष, सं पु (स) शिखण्ड-क, अलक, चूर्णकुन्तल वेशकलाप ।

—पद, स पु (स न) हस्तलेखेषु उज्झित वर्णद्योतकचिह्नम् (= ∧) ।

—वन्ध्या, स स्त्री (स) एकापत्यजननी ।

काक[2], सं पु (अ कार्क) पिधान, कूपी छिद्रपिधानम् २ रोधनी, स्तम्भनी ।

काकली, सं स्त्री (स) सूक्ष्ममधुरास्फुटध्वनि ।

काका, स पु (फा काका = बड़ा भाई >) पितृव्य, पितृ भ्रातृ २ (प) बाल, शिशु ।

काकी, स स्त्री (फा काका >) पितृव्या, पितृव्यपत्नी २ (प) कन्यका, बालिका ।

काकु, सं पु (स) भिन्नकण्ठध्वनि २ आक्षेप, व्यङ्ग्यवचन आ-अधि,-क्षेप ३ अलङ्कारभेद (सा) ४ जिह्वा ।

काकुत्स्थ, स पु (सं) श्रीरामचन्द्र ।

काकुल, सं पु (फा) काकपक्ष शिखण्डक ।

काग, सं पु दे 'काक' १, २

कागज, स पु (अ) कागद -द, पत्र, कर्गलम् ।

—पत्र, स पु (अ + सं) लेख्यपत्राणि, पत्रकाणि, लेख्यानि (सब बहु) ।

—की नाव, मु क्षणभङ्गुर, विनश्वर ।

कागजी, वि (अ कागज >) कागद-पत्र,-मय २ सूक्ष्मत्वच् ३ प्रतनु । सं पु, पत्रविक्रयिन् २ श्वेतकपोत ।

—घोड़े दौड़ाना, मु, पत्रै व्यवह् (भ्वा प अ) ।

काच, स पु (सं) स्फटिक २ नेत्ररोगभेद (स न) काचलवणम् २ सिक्थकम् ।

काछ, स स्त्री (स कक्षा >) कटी-जघन,-वस्त्रम् ।

काछना[1], क्रि सं (स कक्षा >) धौताप्रान्त पृष्ठे निक्षिप् (प्रे) ।

काछना[2], क्रि स (सं कषणम्) फेन अपनी (भ्वा उ अ) ।

काछनी, सं स्त्री (हिं काछना) कटवसन, सक्थिवस्त्रम् ।

काछा, स पु, दे 'काछनी' ।

काछी, सं पु (स कच्छ >) शाक,-उत्पादक विक्रेतृ २ जातिभेद ।

काज[1], सं पु (स कार्यम्) कृत्य, कार्य, कर्मन् (न), कृति (स्त्री) २ वृत्ति (स्त्री), आजीविका ३ उद्देश्य, प्रयोजनम् ४ विवाह ।

काज[2], स पु (अ काजना >) गण्डाधार, कुड्मलाधार (= बटन का छेद) ।

काजल, स पु (सं कज्जलम्) लोचक, दीपकिट्ट, अञ्जनम् ।

—की कोठरी, मु, निन्द्यस्थानम् ।

काजी, स पु (अ) न्यायाधीश, धर्माध्यक्ष (इस्लाम) ।

काट, स स्त्री (हिं काटना) छेदन, कर्तन, लवन, कृन्तन, व्रश्चनम् २ कर्तनरीति (स्त्री) ३ व्रण, क्षतम् ४ खण्ड -ड, लव ५ छल, कपटम् ।

—छाँट, स स्त्री, सक्षेपण २ शोधनम् ।

काटन, सं पु (अ) कार्पास, तूल -लम् २ कार्पास, तूलाम्बरम्, बादरम्।

काटना, क्रि स (सं कर्तनम्) कृत् (तु प से) लू (क्र उ से), छिद् (रु प अ), श्रथ (तु प वे) २ तुद् (तु प अ), व्रण् (चु) ३ छन् (चु), सङ्क्षिप (तु प अ) ४ हन् (अ प अ) व्यापद् (प्रे) ५ दे 'कतरना' ६ सर्पि दुद् (प्रे) ७ विफलीकृ ८ दश (भ्वा प अ) ९ अल्पाश उदधृ (भ्वा प अ) १० अतिक्रम् (भ्वा प से)।

सं पु तथा भाव, दे 'काट'।

—योग्य, वि, कर्तनीय, छेदनीय, छेत्तव्य, लवनीय।

—वाला, सं पु छेदक, लावक, कर्तनकर।

काटा हुआ, वि, कृत्त, लून, कृत्त, छिन्न।

काटने दौड़ना, मु निर्जन (वि) दृश् (कर्म)।

काटो तो खून नहीं, मु, स-, स्तब्ध।

काठ, सं पु (सं काष्ठम्) दारु (न) २ इध्म, इंधन ३ काष्ठनिगड -डम् ४ दे 'शहतीर'। वि क्रूर २ मूर्ख।

—का उल्लू, सं पु जड़धी, मूढ़, अज्ञ।

—की हाँडी, सं, आपातरमणीय वस्तु।

—मारना, मु, काष्ठनिगडेन बध् (क्र् प अ)।

काठड़ा, सं पु, दे 'कठौता'।

काठिन्य, सं पु (सं न) दे 'कठिनता'।

काठी, सं स्त्री (हिं काठ) पर्याण, पर्ययण, पल्ययनम् २ शरीर,-रचना-संस्थानम् ३ असिकोष।

काढ़ना, क्रि स (सं कर्षणम्) निष्-आ, कृष (भ्वा प अ), निष-स,-पीड् (चु), निर उद,-ह (भ्वा प अ) २ सूच्या पुष्पादिक सिव (दि प से) ३ काष्ठपाषाणादिषु पुष्पादिक उल्लिख-उत्क् (तु प से) ४ पृथक् कृ, वियुज-विश्लिष (प्रे) ५ क्वथ् (भ्वा आ से)।

काढ़ा, सं पु (हिं काढ़ना) क्वाथ, कषाय, निर्यास।

काणेली, सं स्त्री (सं) कुल्टा, व्यभिचारिणी, पुंश्चली २ अनूढ़ा, अविवाहिता।

कातना, क्रि स (सं कर्तनम्) तन्तून् सृज् (तु प अ), कृत् (रु प से)।

सं पु तथा भाव, कर्तन, तन्तुनिर्माणम्।

—योग्य, वि, कर्तनीय, कर्तनार्ह।

—वाला, सं पु, कर्तक, तन्तुकार।

काता हुआ, वि, कृत्त।

कातर, वि (सं) व्याकुल, विह्वल २ भीत, त्रस्त ३ भीरु ४ आर्त्त।

कातरता, सं स्त्री (सं) व्याकुलता, धैर्याभाव २ भय, त्रास ३ भीरुता, कातर्यम् ४ अवसाद विषाद।

कातिब, सं पु (अ) लेखक २ अक्षरचञ्चु।

कातिल, सं पु (अ) घातक, हन्तृ।

कादम्ब, सं पु (सं) (१-३) कदंब,-वृक्ष -पुष्प फलम् ४ कलहंस ५ इक्षु ६ बाण ७ कदम्बसुरा।

कादम्बरी, सं स्त्री (सं) कोकिला २ मदिरा ३ सरस्वती ४ बाणरचितो गद्यकाव्यविशेष।

कादंबिनी, सं स्त्री (सं) मेघमाला, जलदावली।

कान, सं पु (सं कर्ण) श्रोत्र, श्रवण, श्रुति (स्त्री) श्राव, शब्दग्रह।

—में कहना, क्रि, स, कर्णे जप् (भ्वा प से)।

—का परदा, सं पु, कर्ण,-पटह -दुंदुभि।

—का बहना, सं पु, कर्णस्राव।

—का मैल, सं पु, कर्ण,-मल-गूथ, पिंजूष।

—की सांय-सांय, सं स्त्री, कर्णप्रणाद।

—उमेठना, मु, दंडरूपेण कर्णौ मुद् (चु)।

—का कच्चा, मु, विश्वासिन्।

—काटना, मु, अतिशी (अ आ से), अतिरिच् (कर्म)।

—खड़े होना, मु, विस्मि (भ्वा आ अ)।

—खा जाना, मु, कोलाहल कृ।

—पकड़ना, मु, पश्चात्तापेन कर्णौ स्पृश् (तु प अ)।

—पर जूँ न रेंगना, मु, निश्चिन्त, स्वस्थचित्त (वि) स्था (भ्वा प अ)।

—फूकना, मु, कर्णे उद्दीप् (प्रे)।

—भरना, मु, पृष्ठतो द्वेष जन् (प्रे)।

—में उँगली दिये रहना, मु, दे 'कान पर जूँ न रेंगना'।

कानन, सं पुं (सं न) वनम् २ गृहम्।

कानफरेंस, सं स्त्री (अ) सम्मेलनम् ।

कानस्टेबिल, सं पु (अ) रक्षिन्, शान्ति रक्षक, रक्षापुरुष ।

काना, वि पु (सं काण) एकाक्ष, चन्द्रचक्षु ।

कानाकानी, सं स्त्री, (सं कर्ण >) कर्णेजपन, उपांशुवाद २ वार्ता, जनप्रवाद ।

कानाफूसी, सं स्त्री, (सं + अनु) दे 'कानाकानी' ।

कानि, सं स्त्री (देश) लोकलज्जा, मर्यादा ।

कानी, वि स्त्री (सं) काणा, एकाक्षा, एकनेत्रा, काणेयी, काणेरी ।

—उँगली, सं स्त्री कनिष्ठा कनिष्ठिका, कनीनिका, दुर्बलाङ्गुली लि (स्त्री) ।

—कौड़ी, मु, दे 'कौड़ी' के नीचे ।

कानी हाउस, दे 'काँजी हौद' ।

कानीन, सं पु (सं) कन्यापुत्र, कुमारी तनय ।

कानून, सं पु (अ) अधिनियम २ राज, नियम, विधि ३ आचार, व्यवहार ।

—गो, सं पु ग्रामगणकाध्यक्ष ।

—दाँ, सं पु, व्यवहारनिपुण, विधिज्ञ ।

कानूनी, वि (अ कानून >) वैध, राजनियम विषयक २ विधिज्ञ ३ धर्म्य, शास्त्रविहित ४ कुतर्किन् ।

कान्ह, सं पु (सं कृष्ण) श्रीकृष्णचन्द्र २ पति ।

कापालिक, सं पु (सं) शैवतान्त्रिकसाधु २ वर्णसंकरजातिभेद ।

कापुरुष, सं पु (सं) कु त्सित-कातर,-जन ।

काफिया, सं पु (अ) अन्त्यानुप्रास ।

—तंग करना, मु, अतीव संतप्-उद्विज्-अर्द् (प्रे) ।

काफिर, सं पु (अ) अयवन (इस्लाम) २ नास्तिक, अनीश्वरवादिन् ३ क्रूर ४ दुष्ट ।

काफिला, सं पु (अ-ल) सार्थ, यात्रिक-समूह ।

काफी, वि (अ) पर्याप्त, अन्यूनाधिक, समर्थ, उचित, अलम् (अव्य चतुर्थी के साथ) ।

काफी, सं स्त्री (अ) दे 'कहवा' ।

काफूर, सं पु (फा) कर्पूर २, घनसार ।

—होना, मु, तिरो भू ।

काबिज, वि (अ) अधिकारिन्, प्रभु २ मलावरोधक, गरिष्ठ ।

काबिल, वि (अ) योग्य, समर्थ ।

काबू, सं पु (तु) अधिकार, प्रभुत्व, वश ।

—करना, क्रि स, वश नी (भ्वा उ अ) ।

काम[1], सं पु (सं) इच्छा, अभिलाष, मनोरथ, आकांक्षा २ शिव ३ मदन, कामदेव ४ मैथुनेच्छा ५ इन्द्रियाणां विषयप्रवृत्ति (स्त्री) ६ चतुर्वर्गेऽन्यतम ।

—आतुर, वि (सं) कामार्त्त, अनंगग्रस्त, विधुर ।

—केलि, सं स्त्री (सं पु स्त्री) कामक्रीडा, विहार, विलास ।

—तरु, सं पु (सं) कल्पवृक्ष ।

—देव, सं पु (सं) काम, मदन, स्मर, कंदर्प, अनंग, मन्मथ, मनसिज, मनोज, कुसुमबाण, पंचशर, मार, मीनकेतन, मकरध्वज, पुष्पधन्वन्, आत्मभू ।

—धेनु, सं स्त्री (सं) कामदुघा, कामदा ।

—रिपु, सं पु (सं) कामारि, शिव ।

—रूप, सं पु (सं) प्रान्तविशेष, असम प्रान्त । वि, स्वेच्छारूप २ सुरूप ।

—शास्त्र, सं पु (सं न) वात्स्यायनप्रणीतो ग्रंथविशेष २ कामविज्ञानम् ।

काम[2], सं पु (सं कर्मन् न) कार्य, कृत्य, क्रिया २ व्यापार, व्यवसाय ३ उद्यम, उद्योग ४ प्रयोजनम्, उद्देश्यम् ५ उपयोग, व्यवहार ।

—आना, क्रि अ, प्र उप,-युज् (कर्म), व्यवहृ-व्याप्तृ (कर्म) । मु, वीरगतिं प्राप् (स्वा उ अ) ।

—काज, सं पु, कार्य, अर्थ, व्यवसाय ।

—काजी, वि, उद्यमिन्, उद्योगिन् ।

—चलाऊ, वि, उपयुक्त, उपयोगिन् ।

—चोर, वि, अलस, कर्त्तव्यविमुख ।

—तमाम करना, मु, नि षूद्-नश-व्यापद् (प्रे), हन् (अ प अ) ।

कामना, सं स्त्री (सं) इच्छा, आकांक्षा ।

कामयाब, वि (फा) सफल, कृतकार्य ।

कामयाबी, सं स्त्री (फा) सफलता, कृतकार्यता ।

कामरी, सं स्त्री, दे 'कंबल' ।

कामला, स पु (सं कामल) पाण्डु, पाण्डु रोग ।
कामिनी, स स्त्री (सं) सुन्दरी, नारी २ सुरा ३ कामबहुला नारी ।
कामिल, वि (फा) सं-पूर्ण २ दक्ष, योग्य ।
कामी, वि (स कामिन) लपट, कामासक्त, कामाध, कामन, अभीक, कामातुर, कामुक २ अनुरक्त, आसक्त, सस्नेह,-सेविन् (समासान्त में) ४ इच्छुक, स्पृ, सस्पृह ।
स पु, अभि (मी) क, क (का) मन, वक्र, कामुन २ चन्द्र ३ कपोत ४ चक्रवाक ५ चटक ।
कामुक, वि (स) दे 'कामी' वि, 'कामी' स पु (१)।
कामेडियन, सं पु (अ) हास्यरसाभिनेतृ (पु), वैहासिक ।
कामेडी, सं स्त्री (अ) सुखान्त-सयोगान्त,-रूपक नाटकम्, प्रहसनम्, भाणिका, दुर्महिका ।
कामोद, स पु (स) रागभेद ।
कामोद्दीपक, वि (सं) वाजीकर, कामाग्नि दीपन ।
काम्य, वि (स) स्पृहणीय, वाञ्छनीय २ सुन्दर, मनोज्ञ ।
काम्या, स स्त्री (सं) इच्छा, कामना, वाञ्छा ।
काय, सं स्त्री (सं पु) शरीर, देह २ समुदाय ।
कायदा, सं पु (अ) नियम, व्यवस्था, रीति (स्त्री), शिष्टाचार ।
कायम, वि (अ) निश्चल, स्थिर, नैश्चेष्ट २ स्थापित ३ निर्धारित।
—मुकाम, स पु (अ) प्रतिनिधि, प्रतिपुरुष २ उत्तराधिकारिन् । वि, स्थानापन्न ।
कायर, वि, दे 'कातर'।
कायल, वि (अ) छिन्नसंशय, जातप्रत्यय ।
कायस्थ, स पु (स) परमेश्वर २ जीव ३ जातिभेद । वि, शरीरस्थ ।
काया, स स्त्री (स काय पु) शरीर, देह, विग्रह, कलेवरम् ।
—कल्प, स पु (स) पुनर्यौवनोत्पादनम् २ पुनर्यौवनोत्पादनचिकित्सा ।
—पलट, सं पु, बृहत्परिवर्तन, महापरिवर्त २ शरीररूपरेखापरिवर्तनम् ।
कायिक, वि (स) शारीर (-री स्त्री), शारीरिक-दैहिक (-की स्त्री)।
कार¹, स पु (स) कार्य, क्रिया २ कर्तृ, अनुष्ठातृ ३ अक्षरवाचकप्रत्यय (उ च=चकार) ४ ध्वनिवाचकप्रत्यय (उ फूत्कार)।
कार², स पु (फा) कार्य, व्यवसाय ।
—करना, क्रि स, नियोग अनुरुधा (व्याप अ)।
—खाना, सं पु, शिल्प,-शाला-गृहम्, पण्य निर्माणस्थानम् ।
—बार, स पु, व्यवसाय, व्यापार ।
—रवाई, स स्त्री, क्रिया, कार्यम् २ गुप्त चेष्टा-क्रिया ।
—साज, वि, कुशल, दक्ष ।
कारक, वि (सं) कर्तृ, अनुष्ठातृ विधातृ २ क्रियया सबधसूचक शब्दरूपभेद (उ कर्तृ कारक इ व्या)।
कारचोब, स पु (फा) सूचीकर्मोपजीविन् २ सूचीकर्माधार ।
कारचोबी, वि (फा) सूचीकर्म युक्त । (सं पु) सूचीकर्मन् (न), शिल्पम् ।
कारटून, स पु (अ) हासकरमालेख्यम्, हास्यजनक चित्र, उपहासचित्रम् ।
कारण, सं पु (स न) हेतु, निमित्त, मूल, बीज, योनि (स्त्री) निदानम् २ साधनम् ३ कर्मन् (न) ४ प्रमाणम् ५ विष्णु ६ शिव ७ पूजान्ते मद्यपानम् (तान्त्रिक)।
कारतूस, स पु (पुर्त कारटूश) गुलि (स्त्री) गुलिका, आग्नेयचूर्णनाडी-हि (स्त्री)।
कारनिस, स स्त्री (अ) भित्तिदन्तक, कुड्य प्रगम् ।
कारा, स स्त्री. (स) निरोध निरोधनम्, बन्धन, आसेध, प्रग्रह २ क्लेश, पीडा ।
कारागार, स पु (स पु न) कारा, बन्धनालय, बंदि,-शाला गृहम्, कारागृह, चार, चारक, गुप्तिस्थानम् ।
कारावास, सं पु (स) दे 'कारागार'।
कारिंदा, स पु (फा) कारकर, परकार्य साधक, प्रति,-हस्त निधि २ कर्मचारिन्, राजपुरुष, अधिकारिन् ।

कारी[1], सं. पु. (सं-रिन्) कारक, कर्तृ।
कारी[2], वि (फ़ा) घातक, प्राणहर।
कारीगर, सं. पु. (फ़ा.) शिल्पिन्, कारु, शिल्पकार। वि., शिल्पकुशल।
कारीगरी, सं. स्त्री (फ़ा) कारुता, शिल्प कौशल, दक्षता २ मनोहररचना।
कारुणिक, वि (सं) दे 'करुणामय'।
कारूँ, सं पु (अ) मूसानामकस्य सिद्धस्य धनाढ्यकृपणः पितृव्यपुत्रः। वि, कृपण, कदर्य।
—का खज़ाना, सं पु, असीमधन, अमित-सम्पद् (स्त्री)।
कारूरा, सं पु (अ) मूत्रम् २ मूत्रपात्रम्।
कारोबार, सं पु, दे 'कारबार'।
कार्क, सं पु (अ) कूपी-, पिधानम्।
कार्कश्य, सं पु (सं न) कर्कशता, कठोरता २. दृढ़ता, दृढत्वम् ३ निर्दयता, क्रूरता।
कार्ड, सं पु (अ) पत्रम् २. स्थूलकर्गलम्।
कार्तवीर्य, सं पु (सं.) कृतवीर्यपुत्र सहस्रबाहुः, अर्जुन।
कार्तस्वर, सं. पु (सं. न) कनक, सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्यम्।
कार्तिक, सं पु. (सं.) बाहुल, ऊर्ज, कौमुदः।
कार्तिकेय, सं पु (सं.) स्कन्दः, कुमारः, शिखिवाहनः, द्वादशलोचनः।
—प्रसू, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, गिरिजा।
कार्बन, सं. पु. (अ.) अङ्गारः, कार्बनम्।
कार्बोनिक, वि (अ.) आङ्गारिक, कार्बनिक।
—एसिड गैस, सं. स्त्री, कार्बनिकाम्लवातिः (रू)।
कार्मुक, सं. पु (सं न) चापः, दे 'धनुष'।
कार्य, सं. पु (सं न) कर्मन् (न) कृत्य, क्रिया २. व्यवसायः ३. परिणामः ४. प्रयोजनम्।
—अध्यक्ष, सं पु. (सं.) अधिकारिन् २. कर्मनियुक्तः।
—कर्ता, सं. पु (सं—र्तृ) कर्मचारिन् २. राजभृत्यः।
कार्रवाई, सं. स्त्री., दे 'काररवाई'।
काल, सं. पु. (सं.) समयः, वेला, दिष्टः, अनेहस् (पु.) २. मृत्युः ३. यमः, यमदूतः ४. अवसरः, प्रसङ्गः ५. दुर्भिक्ष, दुष्कालः ६ कृष्णसर्पः ७ शनैश्चरः ८. शिवः ९. लोहः १० ऋतुः।
—कूट, सं. पु (सं. पु न.) घोरविष, प्राणहरगरलम्।
—कोठरी, सं. स्त्री, कालकोष्ठः।
—क्षेप, सं पु (सं) समयातिपातः, व्यर्थक्षेपः २. निर्वाहः।
—चक्र, सं. पु (सं. न.) समयपरिवर्तः २. भाग्यचक्रम् ३. कालभेदः।
—ज्ञ, सं. पु. (सं.) कालविद्, २ दैवज्ञः ३ कुक्कुटः।
—यापन, सं पु (सं. न) दे 'कालक्षेप'।
—रात्रि, सं. स्त्री. (सं.) भीषणा कृष्णा च निशा २ प्रलयरात्रिः ३ मृत्युनिशा ४. दीपावलीनिशा ५ मनुष्यजीवने सप्तसप्ततिवर्षसप्तमाससप्तदिनानन्तरभवा रात्रिः।
—सर्प, सं. पु (सं.) महाविषः, कृष्णसर्पः, कृष्णसर्पविशेषः।
काला, वि (सं. काल) कृष्ण, श्याम, असित, नील २ अन्धकारमय, तिमिरावृत, ३. दूषित ४. घोर ५. भयकर।
—आज़ार, सं. पु., कालज्वरः।
—कलूटा, वि. अतिकृष्ण।
—चोर, सं. पु., महातस्करः २. अतिदुष्टपुरुषः।
—जीरा, सं. पु., कृष्णजीरकः, कारवी, कृष्णा।
—नमक, सं. पु., कृष्णलवणम्, सौवर्चलम्।
—नाग, सं. पु., कृष्ण,नागः-सर्पः २. प्राणहरः दुष्टः।
—पानी, सं. पु., द्वीपान्तरे निर्वासनम् २. अण्डमानाख्यो द्वीपविशेषः।
कालेकोसों, क्रि. वि., अतिदूरम्-रे।
—मुँह होना, मु., निन्द्-अभिशिप् (कर्म०)।
कालातीत, वि. (सं.) असमयज, असमयोचित।
कालापन, सं. पु. (हि. काला) कृष्णता, श्यामता, मेचकता।
कालिंदी, सं. स्त्री. (सं) यमुना, कलिन्दतनया।
कालिक, वि. (सं.) सामयिक, कालविषयक २. समयोचित, प्राप्तकाल ३. ऋतुकाल, नियतकाल।
कालिका, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, चण्डी २. मसी-षी ३. कनीनिका ४. श्यामघनघटा।
कालिख, सं. स्त्री (सं. कालिका) कज्जल,

मषि -सि (स्त्री) २ कल्क, लाञ्छन, दोष ।

कालिदास, सं पु (सं) संस्कृतकविशिरोमणि, रघुकार, विक्रमसभाया रत्नम्।

कालिमा, सं स्त्री (सं कालिमन् पु) कृष्णिमन् (पु), कालता, श्यामता २ मसी ३ लाञ्छन, दोष ४ अंधकार ।

कालिय, सं पु (सं) यमुनावासिकृष्णसर्प-विशेष ।

—मर्दन, सं पु (सं) श्रीकृष्ण ।

काली, स स्त्री (सं) चण्डी, दुर्गा २ पार्वती, *गिरिजा* ३ मसी । सं पु दे 'कालिय' । वि स्त्री, कृष्णा, श्यामा ।

—खाँसी, सं स्त्री, कालकास ।

—घटा, सं. स्त्री, (स) कादम्बिनी, श्याम-घनश्रेणि (स्त्री)।

—दह, सं पु (सं.+हिं) यमुनाया जलाश-यविशेष ।

—मिर्च, सं. स्त्री (सं कालमरि (री) चम्) कृष्ण, कफण, कालक, वेल्लजम् ।

—कालीन, वि (सं) समय वेला-काल,-भव-धिन् २ सामयिक, प्रास्ताविक । (टि यह शब्द समासान्त में ही प्रयुक्त होता है)।

कालौंछ, सं स्त्री (हिं काला) कृष्णता, श्यामता २. मसी ३ कज्जलम् ।

काल्पनिक, वि (सं.) सङ्कल्पज, मन कल्पित, उद्भावित, कृत्रिम, कृतक ।

काल्य, वि (सं) काल-समय-अवसर,-उचित-योग्य-अनुकूल, सामयिक । सं पु, प्रभात, विभात, प्रत्यूष ।

काल्या, स स्त्री (स) १-२ गर्भाधानार्हा नारी धेनु (स्त्री)।

कावा, सं पु (फा) वृत्ते अश्वभ्रामणम् २ मण्डल, वृत्तम्।

कावेरी, सं स्त्री (सं) दक्षिणभारतस्य प्रसिद्ध नदी २ वेश्या ३ हरिद्रा, पीतिका ।

काव्य, सं. पु (स-न) कविता, कवि-कृति (स्त्री), सरसप्रबन्ध २ रसात्मकं वाक्यम् ३ कविताग्रन्थ ।

काश[1], अव्य (अ) अपि नाम, प्रार्थये, कामये ।

काश[2], सं. पु (सं-पु न) काश, अमर-पुष्पक, वनहासक २. कास, क्षवथु ।

—घास, सं. पु, दे 'दमा' ।

काशिका, वि (सं.) प्रकाशिका । स स्त्री (सं) काशी २ अष्टाध्यायीवृत्ति (स्त्री.)।

काशी, सं स्त्री (सं.) शिवपुरी, वाराणसी, तप स्थली।

—फल, सं. पु (सं न) कूष्माण्ड -ण्डक, पीत, पुष्पा-फला ।

काश्त, सं. स्त्री (फा) कृषि (स्त्री), कर्षण, कृषिकर्मन् (न)।

—कार, सं. पु (फा) कर्षक, कृषाण ।

काषाय, वि (सं.) गैरिक रक्तधातु, वर्ण । सं. पु, गैरिकरञ्जितवस्त्रम् ।

काष्ठ, सं. पु (सं. न) दे 'काठ' ।

—कीट, सं पु (सं) घुण ।

काष्ठा, सं. स्त्री (सं) दिशा, दिश् (स्त्री) २ सीमा ३ शिखर-र ४ चन्द्रकला ५ अष्टादशनिमेषात्मक काल ।

कास, स-पु (सं.) क्षवथु २ काश, वनहासक ।

कासनी, स स्त्री (फा) गुल्मभेद २. तस्य बीजम् ३ नील श्याम,-वर्ण ।

कासार, सं पु (सं.) सरोवर, महाजलाशय ।

कासीस, सं. पु (सं न) धातुशेखर, शोधनम्।

कास्टिक, वि (अ) दाहक ।

—सोडा, सं पु (अ) दाहकक्षार ।

क्रिसमस ? सं. स्त्री (अ) खृष्टदिन ।

काहिल, वि (अ) अलस, मंद ।

किंकर, सं. पु (सं.) भृत्य, सेवक, प्रेष्य, चेट २. क्रीतदास ।

किंकर्तव्यविमूढ, वि (सं.) सम्भ्रान्तमनस्, व्याकुलचित्त ।

किंकिणी, सं स्त्री (सं) क्षुद्र, घंटी-घंटिका २ काञ्ची वि (स्त्री), रशना।

किंचित्, वि (सं) स्तोक, अल्प ।

किंजल्क, सं पुं (सं) पद्म-कमल,-केसर २ *कमलरज, कल्मरजस् (न)* ३ नागकेसर ।

किंतु, अव्य (सं.) परन्तु, तु, पुन २ अपि तु, प्रत्युत, पुन, परन्तु ।

किंनर, सं. पु (सं.) किंपुरुष, तुरगवदन, अश्वमुख ।

किंपुरुष, सं पु (सं.) किन्नर २ कुपुरुष ३ वर्णसंकर ।

किंवदंती, स स्त्री (सं) जन प्रवाद श्रुति (स्त्री) कर्णोपकर्णिका।

किंवा, अव्य (स) वा, अथवा यद्वा, किमुत।

किंशुक, स पु (स) पलाश दे 'ढाक'।

किं, क्रि वि (स किम्) कथं केन प्रकारेण।

कि, अव्य (फा) यत् यथा, इति।

किचकिच, स स्त्री (अनु) प्रलाप प्रजल्पनम् २ कलह।

किचकिचाना, क्रि अ (अनु) दन्तैर्दन्तान् निष्पीड् (चु) घृष (भ्वा प से)।

किट्ट, स पु (स न) धातुमलम् २ तैलादीना मलम् ३ कर्ण मल शथम्।

कितना, वि (स कियत्) किंपरिमाण किंमात्र २ अधिक बहु।

कितने, वि पु (स कति) किंसंख्याका।

कितव, स पु (स) द्यूतकार, अक्षदेविन् २ वंचक ३ दुष्ट।

किताब, स स्त्री (अ) पुस्तक ग्रन्थ २ पत्रिका, पाजका।

—का (किताबी) कीड़ा, स पु, ग्रंथ पुस्तक, कीट। २ सदापाठिन्।

किताबत, स स्त्री (अ) लेख लेखनम्। खत व—, स स्त्री पत्रव्यवहार।

किधर, क्रि वि, (स कुत्र) क्व कस्मिन् स्थले २ का दिशा प्रति, कस्यां दिशि।

किन, सर्व ('किम' का बहु) के (पु), का (स्त्री) कानि (न)।

किनका, स पु (स कणिका) कणी, कणा क्षत तडुल धान्यम्।

किनारा, स पु (फा) तीर, तटम् २ उपांत, प्रान्त ३ वस्त्रप्रान्त, अञ्चल ४ पार्श्व, पक्ष ५ सीमा ६ अन्त।

—करना, मु दूरे स्था (भ्वा प अ) परित्यज (भ्वा प अ)।

किनारी, स स्त्री (फा किनारा>) स्वर्ण-रजत, जालाभरणम्।

किनारे, क्रि वि (फा किनारा) तीरे, तटे २ सीमायाम् ३ पृथक्, दूरे।

—किनारे, अनु, कूल तट तीरम् २ सीमाम् अनु।

—लगाना, मु, समाप्-संपद् (प्र)।

किन्नर, स पु (स) किंपुरुष, देवयोनिभेद।

किन्नरी, स स्त्री (स) किन्नरजातिनारी।

किफायत, स स्त्री (अ) मितव्यय, अमुक्तहस्तत्वम्।

किबला, स पु (अ) प्रतीची २ मक्कानगरी ३ पूज्यजन ४ पितृ।

—नुमा, स पु (अ+फा) दिग्दर्शकयन्त्रम्, दिग्घटी दिग्घटिका।

किरकिरा, वि (स कर्करम्>) शार्करिल, सिकतिल।

किरकिरी, स स्त्री (स कर्करम्>) नेत्रपतितो धूल्यादिकण २ त्रसरेणु अणुरणु।

किरच, स स्त्री (स कृति>) अनिखसङ्ग, अग्रबलमसत्का छुरिका २ काचकाचादीना तीक्ष्णाग्र शकलम्।

किरण, स स्त्री (स पु) रश्मि मरीचि, दीधिति, मयूख, कर, अंशु अभीशु।

—माली, स पु (स -लिन्) सूर्य

किरमिच, स पु (अ कैन्वस) शाण, शणपट, स्थूलवस्त्रभेद।

किरांची, स स्त्री (अ कैरेज>) वहन शकट -टम्।

किरात, स पु (स) अशिष्ट असभ्य,-जन २ वन्यजातिभेद।

—पति, स पु (स) शिव।

किरातार्जुनीय, स पु (स न) भारविप्रणीत महाकाव्यम्

किराना, स पु (स क्रयणम् अथवा कीर्ण>) वाणिज्य, वणिक्कर्मन् (न) २ गन्धद्रव्याणि।

किराया, स पु (अ) वहनमूल्य, तार, आतर (तार) २ भाट, भाटकम् ३ भृति (स्त्री), भृत्या।

—नामा, स पु, भाटकपत्रम्।

किराये का टट्टू, स पु, वैतनिक, सवेतनो दासेर।

किरायेदार, स पु (फा -यादार) भाटकवासिन्।

किरीट, स पु (स) दे 'मुकुट'।

किलक, स स्त्री (हि किलकना) हर्ष-ध्वनि नाद-स्वन, किलकिला २ कलम, नड नल।

किलकना, क्रि अ (स किलकिला>) किलकिला-राव कृ, हर्षध्वनि कृ।

किलकारना, क्रि अ, दे 'किलकना'।

किलकिलाना, क्रि अ (स किलकिला>) १ दे 'किलकना' २ कोलाहल कृ ३ वाक्कलह कृ।

किलनी, स स्त्री (हिं कीड़ा)। कुक्कुर, यूक यूका।

किला, स पु (अ) दुर्ग, कोट।

—दार, स पु दुर्गाध्यक्ष, कोटपाल।

—बंदी, स स्त्री, दुर्गनिर्माणम् २ व्यूहरचना।

किलकारी, स स्त्री (हिं किलकना) किलकिला, हर्षनाद २ कोलाहल ३ चीत्कार।

किल्लत, स स्त्री (अ) न्यूनता।

किल्ला, स पु (स कील>) बृहत्-स्थूल, कील शङ्कु २ बृहत्, शूल-स्थूणा शलाका।

किल्ली, स स्त्री (हिं किल्ला) अर्गल, अर्गलत्राण २ कील, कीलम् ३ शूल स्थूणा।

किल्विष, स पु (स न) पापम् २ अपराध ३ रोग।

किवाड़, स पु (स कपाट) कपाट टी, अररम् २ द्वार, द्वार् (स्त्री)।

—खटखटाना, क्रि स, कपाटम् अभिहन् (अ प अ)।

किशमिश, स स्त्री (फा) शुष्क, द्राक्षा गोस्तनी।

किशलय, स पु (स पु न) किसलय-य, पल्लव व, अङ्कुर, प्ररोह २ मञ्जरी।

किशोर, स पु (स) एकादशावधिपञ्चदशवर्षपर्यन्तवयस्को बाल २ बालक ३ पुत्र।

किशोरी, स स्त्री (स) तरुणी, बाला, बालिका, कन्या, युवती ति (स्त्री)।

किश्ती, स स्त्री (फा) नौका २ दीर्घचतुरस्रपात्रम् ३ मञ्जूषा, क्षुद्रकोष।

किस, सर्व (सं कस्य>) 'किम्' के रूपों से।

—तरह, क्रि वि, कथ, केन प्रकारेण, कया रीत्या।

किसलय, स पु, दे 'किशलय'।

किसान, स पु (सं कृषाण) कर्षक, कृषिक, कृषीवल, क्षेत्रिक, क्षेत्राजीव, क्षेत्रिन्।

किसानी, स स्त्री (हिं किसान) कृषि (स्त्री), कृषिकर्मन् (न)।

किसी, सर्व (हिं किस) 'किम्' के रूपों के साथ चित्, चन वा अपि लगाकर। [उ० किसी ने—कश्चित्, कोऽपि, कश्चन (पु), काचित् (स्त्री), किंचित् (न) इ।]

—तरह, क्रि वि येन केन प्रकारेण, कथंचित्।

किसे, सर्व (हि किस) क वा किम् (द्वितीया), कस्मै, कस्यै, कस्मै (चतुर्थी)।

किस्त, स स्त्री (अ) देयभाग, ऋणांश, खण्डिका।

—करना, क्रि स, अंशाशः ऋण परिशुध् (प्र)।

—वार, क्रि वि, अंशश, अंशाशः।

किस्म, स स्त्री (अ) प्रकार, भेद, जाति (स्त्री) २ प्रकृति (स्त्री), स्वभाव।

किस्मत, स स्त्री (अ) भाग्य, भागधेय, दिष्ट, दैवम् २ प्रान्त,-भाग खण्ड।

खुश—, वि, धन्य, पुण्यवत्।

बद—, वि, अधन्य, दैवहतक।

—आजमाना, मु, भाग्य परीक्ष् (भ्वा आ से)।

किस्सा, स पु (अ) कथा २ वृत्तान्त ३ कलह।

की, प्रत्य ('का' का स्त्री) दे 'का'।

कीक, स स्त्री (अनु) चीत्कार, उत्क्रोश।

कीकट, स पु (स कीकटा) मगधप्रदेश २ तत्रत्यानार्यजाति (स्त्री) वि०, निर्धन २ कृपण।

कीकर, स पु (सं किंकिरात) दीर्घकण्टक।

कीकस, स पु (स न) अस्थि (न), हड्डम् २ कीटभेद। वि, दृढ, कठिन।

—मुख, स पु (स) खग, पक्षिन्।

कीचक, स पु (सं) सरन्ध्रो वंश, सच्छिद्रो वेणु। २ विराटराजस्य श्याल।

कीचड़, स पु (स चिक्किल) पङ्क-क, कर्दम, जम्बाल, अवकीट, कदम, शाद, निषद्वर।

कीट, स पु (स) कीटक, कृमि, क्रिमि, कीटाणु।

कीट, सं स्त्री (स किट्टम्) घृततैलादीनां मलम्।

कीड़ा, स पु (स कीट) दे 'कीट'। २ सर्पगतीका, सरीसृप ३ सर्प, अहि (पु) ४ रक्तपा, जलौका।

—लगना, क्रि अ, कीटै भक्ष् (कर्म)।

कीड़ी, स स्त्री (हिं कीड़ा) क्षुद्रकीट २ पिपीलिका ३ चल्का।

कीना, स पु (फा) द्वेष वैर, द्रोह।

कीप, स स्त्री (अ कीफ) निवाप ।

कीमत, स स्त्री (अ) मूल्य अर्घ ।

कीमती, वि (अ) महार्घ बहुमूल्य।

कीमा, स पु (अ) कृत्तमांसम्।

कीमिया, स स्त्री (फा) रसायनम्, रस, विद्या शास्त्र तन्त्रम्।

कीर, स पु (स) शुक दे 'तोता'।

कीर्तन, स पु (स न) गुणकथनम् २ यश गुणगानम्।

कीर्ति, स स्त्री (स) यशस् (न), विख्याति विश्रुति (स्त्री) अभिख्या समाख्या।

—मान्, वि (स-मत्) यशस्विन्, विश्रुत, विख्यात।

कील, स स्त्री (स पु) कीलक, शङ्कु, लोह, कील शङ्कु २ लवङ्गनामक नासिकाभूषणम् ३ मुखस्फोटक ।

कीलक, स पु (स) कील, कीला २ नाग दान, भारयष्टि (स्त्री) ३ महाकील, शूल ४ स्थाणु, स्थूणा ५ अन्यमन्त्रप्रभावनाशको मन्त्र ।

कीलना, क्रि स (स कीलनम्) कील् (चु) कीलैः बन्ध् (क् प म) २ अभिचारप्रभाव नाश (प्र) ३ (सर्पादि) वशीकृ।

कीला, स पु (स) दे 'कील'।

कीलाल, स पु (स न) अमृतम् २ जलम् ३ रक्तम् ४ मधु (न)।

कीलित, वि (स) (कीलैः) बद्ध, दृढीकृत, पिनद्ध।

किल्ली, स स्त्री (स कील >) कर्णी, व्यावर्तनकील, दन्तकीलक २ कुञ्चिका, उद्घाटकम् ३ विवर्तनकील ४ कील ५ अश्रु रसा, अश्रु ।

कीश, स पु (स) कपि २ खग ३ सूर्य ।

कुँअर, स पु (स कुमार) पुत्र, सूनु (पु) २ बालक ३ राजकुमार ४ युवराज।

कुँआरा, वि पु (स कुमार) अकृतविवाह । [-री (स्त्री) -अपरिणीता, अनूढा कुमारी।]

कुइ, स स्त्री, दे 'कुमुदिनी'।

कुंकुम, स पु (स न) काश्मीरज, दे 'केसर' २ दे 'रोली'।

कुंचन, स पु (स न) सङ्कोच, सङ्कोचनम्, संक्षेपणम्।

कुंचिका, स स्त्री (स) ताला, तालिका, साधारणी ।

कुंचित, वि (स) दे आकुंचित ।

कुंज, स पु (स पु न) निकुञ्ज-ञ्ज, लता, गृह मंडप ।

—कुटीर, स स्त्री (स पु) लतागृह पर्णशाला, कुञ्जगृहम्।

—विहारी, स पु (स रिन्) श्रीकृष्ण ।

कुंजड़ा, स पु (स कुञ्ज >) हरितकविक्रय जातिविशेष २ शाकविक्रयिन्।

कुंजर, स पु (स) गज, द्विप २ केश। (नि समासान्त में 'कुंजर' श्रेष्ठतावाचक है— नरकुंजर – श्रेष्ठपुरुष)।

कुंजी, स स्त्री (स कुञ्चिका) ताली, उद्घाटकम्, अर्गल, साधारणी। २ टीका, व्याख्या।

कुंठ, वि (स) कुंठित, धाराहीन, तीक्ष्णता रहित २ मूर्ख।

कुंठित, वि (सं) कुंठीकृत, हततैक्ष्ण्य २ निष्प्रभीकृत ३ अनुपयोगक्।

कुंड, स पु (स कुण्ड -ड-डी) पल्वल-ल, अल्पसरस (न), वेशन्त, क्षुद्रजलाशय २ अग्नि-यज्ञ-हवन,-कुण्डम् ३ स्थाली ४ विशालमुखनातिगभीरपात्रम् (हिं मटका) ५ सधवाया जारजपुत्र ६ लौहशिरस्त्रम् ७ मानभेद ।

कुंडल, स पु (स पु न) कर्णभूषण वेष्टन, कर्णभूषणभेद २ बन्ध ३ परिवेष ८, तेजोमण्डलम् ४ आवेष्टनम्, व्यावर्तनम्।

—करना वा मारना, क्रि स, वर्तुली कृ, (ह), व्यावृत् परिवेष्ट (प्रे)।

कुँडलिया, स स्त्री (स कुण्डलिका) मात्रिक छन्दोभेद ।

कुंडली, स स्त्री (स) मिष्टान्नभेद (हिं जलेबी) २ कुण्डल, चूर्णकुन्तल ३ जन्मपत्र, पत्रिका ४ सर्पस्य वर्तुलाकारास्थिति (स्त्री)।

कुंडा, सं पु (सं कुण्ड) जीवति भर्तरि जारज ।

कुदा², म पु (सं कुद्दालम् >) लोह-खनित्री भरणी २ अर्गल -दस्ताली ।

कुंडा³, म पु (स कुण्ड -कम्) विशालमुख मतिगम्भीरपात्रम् (हिं मटका)।

कुंडिन, म पु (स न) विदर्भराजधानी ।

कुंडी¹, स स्त्री (म) कुण्डी, स्थाली ।

—डंडा, म पु, कुण्डीदण्डौ ।

कुंडी², स स्त्री (हिं कुण्डा) द्वार-शृङ्खला २ अर्गल दस्ताली ३ सूक्ष्म मधि आदि ।

कुन्त, स पु (स) प्रास, तोमर ।

कुन्तल, म पु (म) केश शिरोरुह ।

कुन्तिभोज, स पु (स) भोजप्रदेशशासक, कन्या पाण्डुपितृ (पु)।

कुन्ती, स स्त्री (स) पृथा, पाण्डुपत्नी, युधिष्ठिर जननी ।

कुन्द¹, स पु (स पु न) मदापुष्प, वन हास २ कमलम् ।

कुंद², वि (फा) कुण्ठ, तीक्ष्णतारहित २ मन्द, जड ।

—जहन, वि (फा) मन्दमति, मूढ ।

कुन्दन, म पु (स कुन्द >) विशुद्ध सुवर्णम् वि भास्वर २ पवित्र ३ नीरोग ।

कुन्दा, स पु (फा) बृहत्-स्थूल-काष्ठम् २ अग्न्यस्त्रस्य काष्ठमयो मागः ३ काष्ठनिगड ४ मुष्टि (स्त्री), वारण ।

कुंदी, म स्त्री (फा कुन्दा >) मुद्गरैर्वस्त्राघातनम् २ ताडनम् ।

कुम्भ, स पु (स) घट, घर्म, कलश ग्राह, २ गजकुम्भ, हस्तिशिरस पिण्डद्वयम् ३ कुम्भकप्राणायाम ४ द्वादशवार्षिक पर्व विशेष ५ राशिविशेष (क्यो)।

—कर्ण, स पु (स) रावणानुज ।

—योनि, म पुं (स) अगस्त्यो मुनि ।

कुंमक, स पु (स) कुम्भ, प्राणायामे वायु स्तम्भनम् ।

कुम्भी, स स्त्री (स) कुम्भ-कुम्भ घट ।

—पाक, स पु (म) नरकविशेष ।

कुंभी, स पु (स कुम्भिन्) गज २ नक्र ३ विषकीटभेद ।

कुंवर, स पु, दे 'कुँअर'।

कु, अव्य (स) पापकुत्साल्पत्वादिद्योतक मव्ययम् (उ कुकर्म=पापकर्म इ)।

कुआँ, म पु (सं कूप) अन्धु, प्रहि, अवट, खात अवत, कवट ।

—खोदना, मु, परान् पीड (यु)।

कुआर, स पु (स कुमार >) आश्विन, इष, आश्वयुज ।

कुइयाँ, स स्त्री (हिं कुआँ) कूपी, कूपक, खानक, अन्धुक ।

कुई, म स्त्री, दे 'कुमुदिनी'।

कुक, स पु (अ) पाचक, सूद, वल्लव, रन्धक ।

कुकड़ी स स्त्री (स कुक्कुटी) ताम्रचूडी २ तन्तुपिण्ड ३ सूत्रवर्ती, तन्तुगुच्छ ।

कुकर, स पु (अ) पचन पात्र यन्त्रभेद, कुकरम् ।

कुकर्म, स पु (स न) कु-कार्य-कृत्य-कृति (स्त्री) दुराचार, पाप दुष्टता ।

कुकर्मी, वि (म -र्मिन्) दुर्वृत्त, पापिन्, पाप, दुरात्मन् ।

कुकुरमुत्ता, स पु (म कुक्कुरमूत्रम् >) छत्रक ।

कुक्कुट, म पु (स) ताम्रचूड चरणायुध, चरणायुध, कृकवाकु, शिखण्डिक ।

कुक्कुर, स पु (म) श्वन्, दे 'कुत्ता'।

कुक्षि, स स्त्री (म पु) उदर, जठर, तुन्दम् २ गर्भाशय, गर्भस्थानम् ३ पदार्थान्तर्भाग ४ गुहा ।

कुगति, स स्त्री (स) दुर्दशा, दुर्गति (स्त्री)।

कुच, स पु (स) स्तन, उरोज २ चूचुक-स्तनाग्रम् ।

कुचकुचाना, क्रि स (अनु कुचकुच) व्यध (दि प अ) भिद् (रु)।

कुचक्र, म पु (स न) कूट-कपट, व्याज, उपजाप, कपट-षड्यन्त्र प्रयोग ।

कुचक्री, वि (सं -क्रिन्) षड्यन्त्रकर्तृ, कपट प्रयोक्तृ ।

कुचलना, क्रि स (अनु) क्षुद् (रु प से) २ मृद् (क्र प से) पिष् (रु प अ) ३ भृशं तुद् (तु) ४ पादतलेन आहन् (अ प अ)।

कुचला, स पु (स कचीर) विषतिन्दु, विष तिंदु, रम्यफल, कुपीलु, कालकूट ।

कुचाल, स पु (स कु + हिं चाल) दुराचार, कुचर्या कदाचरणम् ।

कुचाली, वि (हिं कुचाल) दुराचारिन्, दुर्वृत्त।
कुचेष्टा, स स्त्री (स) दुश्चेष्टा, हानिकरीयत्न।
कुचैला, वि (स कुचेल) मलिनवेष, कुवसन।
कुछ, वि (स किंचित्) (मात्रा) अल्प, स्वल्प, स्तोक, ईषत्, २ (संख्या) कतिचित्, कति पय, ३ किमपि, यत्किंचन, ४ 'किम्' के तीनों लिंगों के रूपों के साथ चित्, चन, अपि लगाने हैं, उ केचित्, काश्चित्, कानि चित् इ।
—कर देना, मु, रम्बै वशीकृ।
कुत्त, स पु (म) मगम्यह २ वृष।
कुजाति, स स्त्री (स) हीन-नीच-निकृष्ट जाति वर्ण। स पु, दुष्कुलीन, अन्त्यज, नीच।
कुट¹, स पु (स कुष्टम्) ग्दाद, कौवेरम्।
कुट², स पु (स) दुर्ग, कोट २ गृहम् ३ पर्वत ४ कलश।
कुटनी, स स्त्री (स कुट्टनी) दूती, मध्यक, भाषिका, वचनचञ्चिका।
कुटनपन, स पु (स कुट्टनी >) दूतीवृत्ति (स्त्री) २ उपजाप, भेदवर्द्धनम्।
कुटना, स पु (हिं कुटना) मगमसेवक, सचारक, कुटादिन् २ पिशुन।
कुटनी, स स्त्री (स कुट्टनी) कुट्टिनी, दूती, दूतिका, सचारिका नमली, रतताली।
कुटिया, स स्त्री (स कुटी) उटज –, पर्ण शाला, पर्णकुटी दि (स्त्री) कुटीर।
कुटिल, वि (स) वक्र, जिह्म, अराल, भुग्न, न्युब्ज २ वञ्चक, प्रतारक, कपटिन्, धूर्त।
कुटिलता, स स्त्री (स) कौटिल्य, वक्रता, जिह्मता २ छल, कपट, प्रतारणा।
कुटी, स स्त्री (स) } क्षुद्रगृहम्,
कुटीर, स पु (स) } दे 'कुटिया'।
कुटुम्ब, स पु (स पु न) गृहजन, पुत्र कलत्रादय, ज्ञाति (स्त्री), बान्धवा, सतति (स्त्री) २ कुल, वंश, जाति (स्त्री)।
कुटुबी, स पु (स-बिन्) गृहस्थ, गृहपति, गहन् २ ज्ञाति (स्त्री), बन्धु, बान्धव।
कुटुम्बिनी, स स्त्री (स) गृहिणी, गेहिनी, भार्या, कुटिनी, पुरन्ध्री।
कुटेव, स स्त्री (स कु+हिं टेव) कुप्रवृत्ति (स्त्री), व्यसन, दुगुण।
कुट्टनी, स स्त्री (स) दे 'कुटनी'।
कुट्टी, स स्त्री (हिं काटना) तृणखण्डा २ बाल्येषु मैत्रीविच्छेद।
कुठला, स पु (स कोष्ठ >) क्षुद्रधान्यकोष्ठ, मृन्मय लघुधान्यागारम्।
कुठार, स पु (स) परशु, कुधार, वृक्षादनी, वृक्षभेदिन्, परश्वध।
कुठाराघात, स पु (स) परशुप्रहार २ ताम्र प्रहार।
कुठाली, स स्त्री (स कु+स्थाली >) तैजसा वर्तनी मुषा मी।
कुठौर, स पु (स कु+हिं ठौर) कुस्थानम् २ अनवसर, असमय।
कुड़कुड़ी, स स्त्री (अनु) दे 'गुड़गुड़ाना'।
कुड़बुड़ाना, क्रि अ दे 'कुढ़ना'।
कुडल, स पु, (रक्तालतया) भ्रम,-व्यावर्तन माकुचलन्।
कुडुक, स स्त्री (फा कुरक) कुक्कुटीरतम् २ अनवदा कुक्कुटी। वि, व्यर्थ, निरर्थक।
कुडौल, वि (स कु+हिं डौल) दुर्दर्शन, कदाकार, कुरूप।
कुढंगा, वि पु (स कु+हिं ढग) अशिष्ट, असभ्य, दुःशील।
कुढ़न, स स्त्री (हिं कुढ़ना) मनस्ताप, चित्तव्यथा।
कुढ़ना, क्रि अ (स क्रुध >) दुर्मन यते (ना धा), क्षुभ् (दि प से), मनसा परितप् (दि आ अ)।
कुढब, वि (स कु+हिं ढब) कुरूप, दुर्दर्शन २ कष्टद ३ कठिन।
कुढ़ाना, क्रि स (हिं कुढ़ना) सतप्-उद्विज् (प्रे) २ प्रकुप्-क्षुभ (प्रे)।
कुतरना, क्रि स (स कर्तनम्) चर्वन कृत् (तु प से), दन्तै खण्ड् (चु)।
कुतर्क, स पु (स) हेत्वाभास, मिथ्याहेतु, वितण्डा, प्रजल्प, विवाद।
कुतर्की, वि (स र्किन्) वितण्डावादिन्, मिथ्याहेतुवादिन् २ वाचाल, वावदूक।
कुतिया, स स्त्री (हिं कुत्ती) सरमा, कुक्कुरी, शुनी, सारमेयी, भषी।
कुतुब, स पु (अ) ध्रुव, ध्रुवतारा।
—नुमा, स पु, दे 'दिक्सूचक यंत्र'।

कुतूहल, स पु (स न) उत्कण्ठा कौतूहल, कुतुक, कौतुक, जिज्ञासा २ अपूर्व दुर्लभ-अदृष्ट,-वस्तु (न) ३ विनोद ४ आश्चर्यम्।

कुत्ता, स पु (दश) कुक्कुर, श्वन्, शुनक, कौलयक, भषक, सारमेय, मृगदंशक, भषण, वक्रलांगूल वृकारि, ग्रामसिंह, शयालु।

कुत्ते की दुम(ल)क, स स्त्री आलर्क, जल त्रास, अलर्काभिभव।

कुत्ती, स स्त्री (हिं कुत्ता) दे 'कुतिया'।

कुत्सित, वि (स) अधम, अवम, गर्ह्य निन्दित।

कुदरत, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री) माया, ईश्वरशक्ति (स्त्री) २ अधिकार, प्रभुत्वम् ३ संसार जगत् (न) ४ रचना।

कुदरती, वि (अ) नैसर्गिक प्राकृतिक मायामय २ स्वाभाविक सहज ३ दिव्य ऐश्वर (री स्त्री)।

कुदाँव, स पु (स कु+हिं दाँव) छल, विश्वासघात २ कुस्थिति (स्त्री) ३ कुस्थानम्।

कुदान¹, स पु (स न) गर्ह्यदानम् २ कुपात्र दानम्।

कुदान², स स्त्री (हिं कूदना) कूर्दन, झम्प २ कूर्दनभूमि (स्त्री) झम्पान्तरालम्।

कुदाना, क्रि स, 'कूदना' के धातुओं के प्रे रूप।

कुदाल, स पु (स कुद्दाल) कुठार, अव दारण, स्तम्भघ्न, खनित्रम् २ टंक, पाषाणदारण।

कुदिन, स पु (स न) आपत्काल, विपत्ति समय २ दुर्दिनम्, ऋतुविपरीत दिनम्।

कुदृष्टि, स स्त्री (स) पापदृष्टि (स्त्री) २ अमंगलदृष्टि।

कुधर, स पु (स) पर्वत २ शेषनाग।

कुनकुना, वि (स कदुष्ण) ईषदुष्ण, कोष्ण कवोष्ण मन्दोष्ण।

कुनबा, स पु, दे 'कुटुम्ब'।

कुनाम, स पु (स -मन् न) अप, ख्याति कीर्ति (स्त्री)।

कुपन्थ, स पु (स कुपथ) कापथ, कुमार्ग २ निषिद्धाचरणम् ३ कुमितमप्रदाय।

कुपन्थी, वि (हिं कुपन्थ) कुपथिन्, कुमार्गिन्, कदाचारिन्।

कुपथ, स पु (स) दे 'कुपन्थ'।

—गामी, वि (स मिन्) दे 'कुपन्थी'।

कुपथ्य, स पु (स न) रोगजनको आहार विहारौ।

कुपात्र, वि (स न) अयोग्य अनर्ह, निर्गुण अनधिकारिन्।

कुपित, वि (स) क्रुद्ध, रुष्ट।

कुपुत्र, स पु (स) दे 'कपूत'।

कुप्पा, स पु (स कुतुप) कूपक कुतू (स्त्री) चर्ममय स्नेहपात्रम्।

—होना, मु आप्यायम्, स्फाय् (भ्वा आ मे) पीनीभू०।

कुप्पी, स स्त्री (हिं कुप्पा) चर्मकूपी लघु कुतुप -कुतू (स्त्री))

कुफर, स पु (अ कुफ्र) यवनेतरसम्प्रदाय २ यवनमतविरोधिवाक्यम्।

कुफल, स पु (अ) ताल, द्वारयन्त्रम्।

कुब, स पु (स कुब्ज >) ककुद ल, कुद (स्त्री)।

कुबड़ा, वि (स कुब्ज) कुब्जक, न्युब्ज, वक्र पृष्ठ गडुल २, गडु। स पु कुब्ज ३।

कुबड़ी, स स्त्री (हिं कुबड़ा) नतशीर्षा यष्टि (स्त्री) २ दे 'कुब्जा'।

कुबानि, स स्त्री, दे 'कुटेव'।

कुबुद्धि, वि (स) मूर्ख, मन्दमति। स स्त्री, मौर्ख्य मूढता।

कुबेर, स पु (स कुबेर) धनद, यक्षराज, वैश्रवण, राजराज इच्छावसु नरवाहन निधीश्वर।

कुबेला, स स्त्री (स कुवेला) कु,-समय काल २ अनवसर, अयोग्यकाल।

कुब्ज, वि (स) दे 'कुबड़ा'।

कुब्जा, स स्त्री (स) कंसदासी २ मन्थरा नाम्नी कैकेयीदासी। वि वक्रपृष्ठा, कुब्जा।

कुभा, स स्त्री (स) काबुलनदी २ भूमिच्छाया।

कुमक, स स्त्री (तु) मैत्र्य, सहायता।

कुमकुम, स पु (स कुंकुमम्) केसर रक्त, काश्मीरजम्।

कुमकुमा, स पु (तु० म) लाक्षा,-गोल - वर्तुल २ अलंकरणोपयुक्त काचगोल ३ संकीर्णमुख-कमण्डलु -करक।

कुमाच, सं पु (अ कुमाश) कौशेयवस्त्रभेद ।
कुमार, सं पु (सं) बाल, बालक २ पुत्र ३ राजपुत्र ४ युवराज ५ कार्त्तिकेय ६ अप्राप्तयौवन ८ सनकादय ऋषय ७, भारतवर्ष -र्षम् । वि, दे 'कुआरा' ।
कुमारबाज, सं पु (अ + फा) चतकार, कितव ।
कुमारी, सं स्त्री (स) बाला, बालिका, कन्या २ पुत्री, ३ राजपुत्री ४ द्वादशवर्षा कन्या ५ सहा, घृतकुमारी ६ सीता ▪ पार्वती । वि दे 'कुँआरी' ।
कुमार्ग, सं पु (स) दे 'कुपथ' ।
कुमुद, सं पु (सं न) कैरव, चन्द्रकान्त, कह्लार, शीतलक, इन्दुकमल, चन्द्रिकाम्बुज, गन्धसोम, कुवलयम् २ कर्पूर -र ३ रूप्यम् ।
—बन्धु, स पु (सं) चन्द्र २ कर्पूर -रम् ।
कुमुदिनी, सं स्त्री (स) दे 'कुमुद' २ कुमुदवत् सरस् (न) ।
—पति, सं पु (स) चन्द्र ।
कुमेरु, सं पु (सं) दक्षिणध्रुव ।
कुमोदिनी, सं स्त्री, दे 'कुमुदिनी' ।
कुम्मैत, स पु (तु) पिंग,-वर्ण -रग २ पिंगाश्व ।
कुम्हड़ा, सं पु (स कूष्माण्ड) दे 'काशीफल' ।
कुम्हलाना, क्रि अ (स कुम्लान) म्लै-म्लै (भ्वा प अ), विमृ (कर्म), विशीर्णी भू ।
कुम्हार, स पु (स कुम्भकार) कुलाल, चक्रिन् ।
कुम्हारिन, सं स्त्री (हिं कुम्हार) कुलाली, कुम्भकारी, चक्रिणी ।
कुरंग¹, स ▪ (स) हरिण, मृग २ कृष्णसार ।
कुरंग², वि कुवर्ण, निम्नरंग ।
कुरंगी, सं स्त्री (स) मृगी, हरिणी ।
कुरंड, स पु (स कुरुविन्दम्) कावलवणम् २ माणिक्यम् ।
कुरकुरा, वि (अनु कुरकुर) भंगुर, भिदुर ।
कुरवान, वि (अ) इष्ट, हुत, बलित्वेन दत्त ।
कुरवानी, सं स्त्री (अ) यज्ञ, याग २ बलि, उत्सर्ग, आलभ ३ समर्पण, परित्याग ।
कुरसी, स स्त्री (अ) आसंदी, पीठ, आसनम् २ ४ स्तम्भ प्राकार भवन, मूलम् ५ वंशपरंपरा ।
—नामा, सं पु (अ + फा) वंश, वृक्ष -परंपरा ।
आराम—, सं स्त्री (फा + अ) विश्रामासंदी ।
कुरा, सं पु (अ) दे 'पाँसा' ।
कुरान, स ▪ (अ) यवनधर्मपुस्तकम् ।
कुराह, सं स्त्री (स कु + फा राह) दे 'कुपथ' ।
कुरीति, सं स्त्री (स) कुप्रथा, कदाचार, कुव्यवहार ।
कुरु, सं पु (सं) नृपविशेष २ प्रान्तविशेष ३ कुरुवंशज ।
—क्षेत्र, स पु (स न) महाभारतसंग्राम भूमि (स्त्री) ।
कुरूप, वि (सं) विरूप, कदाकार, दुर्दर्शन । स पु (सं न) वैरूप्य, कदाकार ।
कुरूपता, सं स्त्री (सं) दे 'कुरूप' सं पु ।
कुरेद (ल) ना, क्रि स (सं कर्तनम् ?) उद् वि, लिख् (तु प से), तक्ष् (भ्वा प से), तुद् (तु प मे), घृष् (भ्वा प से) त्वक्ष् (भ्वा प वे) उत्खन् (भ्वा प से) ।
कुर्क, वि (तु) ऋणहेतो अपहृत ।
—करना, क्रि स ऋणहेतो अपहृ (भ्वा उ अ) ।
—अमीन, स पु (तु + फा) ऋणनिर्देनो द्रव्यापहर्ता, राजकर्मचारिन् ।
कुर्की, स स्त्री (तु कुर्क >) (राजाज्ञया) सम्पत्तिहरणम् ।
कुर्ता, स पु (तु) चोल, उरोवस्त्रम् ।
कुर्ती, स स्त्री (तु, कुर्ता >) आंगिक -क, कूर्पासक -कम् ।
कुर्पर, स पु [स कु (कृ) पर] जानु (न) चक्रिका २ कफोणि (पु स्त्री) कफणी ।
कुर्वानी, दे 'कुरवानी' ।
कुर्री, स स्त्री (देश) कोमलास्थि (न) ।
कुर्स, स पु (अ), गुटिका, गुलिका, वटिका ।
कुर्सी, दे 'कुरसी' ।
कुलंग, स ▪ (अ) रक्तशीर्षो धूसर खगभेद । २ कुक्कुट ३ दीर्घ -ग्रीवो मनुष्य ।
कुलंजन, सं ▪ (सं) कुलन, कुर्णन, गंध मूल २ नागवल्लीलता, मूलम् ।
कुल, सं पु (सं न) वंश, अन्वय, वंशावली लि (स्त्री) २, जाति (स्त्री) ३ समूह ४ गृहम् ५ वाममार्ग ।

—कलंक, सं पु (सं) कुलांगार, कुलपांसल ।
—कानि, सं स्त्री (सं+हिं) कुल, गौरव मर्यादा।
—तारण, सं पु (सं) वंशोद्धारक ।
—पति, सं पु (सं) गृहस्वामिन् २ दश सहस्रच्छात्राणां पोषकोऽध्यापकश्च ३ विश्वविद्यालयस्य उपप्रधानाधिकारिन् (अं० वाइस चांसलर)।
—वती, सं स्त्री (सं कुलवती) कुलीना, सद्वंशीया, आर्या।
कुल, वि (अ) सकल समस्त निखिल।
कुलकुलाना, क्रि अ (अनु) कुलकुलध्वनिं कृ।
आँतें—, मु अतीव क्षुध (वि प अ)।
कुलक्षण, सं पु (सं न) अपलक्षण, दुश्चिह्न २ कदाचार, गर्ह्याचरणम्। वि दुराचारिन्।
कुलचा, सं पु (फा कुलीचा) सर्पिष्णोऽपूप २ दे 'पूरी'।
कुलटा, सं स्त्री (सं) व्यभिचारिणी, पुंश्चली, बन्धकी असती, स्वैरिणी निशाचारी, जारिणी।
कुलथ, सं पु (सं कुलत्था) चक्षुष्या, लोचनहिता, दृक्प्रसादा।
कुलथी, सं स्त्री (सं कुलत्थ) वन्यकुलत्थ (धान्यभेद)।
कुलफ, सं पु (अ कुफ्ल) दे 'ताला'।
कुल्फा, सं पु (फा खुर्फा) बृहल्लोणी, घोलिका, शाकभेद। २ दे 'कुल्फी'।
कुल्फी, सं स्त्री (हिं कुल्फ) धूमपान यन्त्रस्य भुग्ननाली २ हिमसन्तानीनिर्माणपात्रम् ३ हिमसन्तानी, घनमधुरदुग्धम्।
कुलबुलाना, क्रि अ (अनु कुलबुल) इतस्ततः अमानि भ्रम (भ्वा प अ) २ अत्रापि गभीर स्वन् (भ्वा प से) ३ विसृप्, सृप् (भ्वा प अ) ४ व्याकुल (वि) भू ५ दे 'कुलकुलाना'।
कुलबुलाहट, सं स्त्री (पूर्व) शनैः सर्पणं, कृमिमद्दशी चेष्टा २ चञ्चलता चञ्चुरता।
कुलाह, सं पु (फा कुलाह) शवाकार शिरस्कम्।
कुलही, सं स्त्री (हिं कुलह) शिशुशिरस्कम्, दे 'कनटोप'।
कुलाँच, सं स्त्री (तु कुलाच) दे 'छलाँग'।
कुलाबा, सं पु (अ) लोहपुट २ बडिश, मत्स्यवेधनम् ३ द्वारसंधि (पु) ४ शृङ्खला, अदू ट (स्त्री) ५ अर्गलम् ६ जलमार्ग, नाली।
कुलाल, सं पु (सं) कुम्भकार २ वनकुक्कुट ३ उलूक।
कुलिक, सं पु (सं) कलाविद् (पु) २ शिल्पिन् ३ कुलीन ४ कुलपति।
कुलिश, सं पु (सं) वज्र-ज्र, पवि २ विद्युत् (स्त्री) ३ कुठार।
कुली, सं पु (तु) भार, वाह हर, भारिक २ कर्मक (का) र श्रमजीविन्।
कुलीन, वि (सं) महाकुल, अभिजात आर्य, सभ्य, सत्कुलज।
कुलीनता, सं स्त्री (सं) आभिजात्य आर्यता।
कुलेल, सं स्त्री (सं कल्लोल) क्रीडा, खेला, विहार केलि (पु स्त्री), विलास, लीला।
कुल्या, सं स्त्री (सं) क्षुद्रकृत्रिमनदी २ क्षुद्रनदी ३ पयःप्रणाली ४ कुलस्त्री।
कुल्ला, सं पु (सं कवल>) चलु, चलुक, चुलुक।
कुल्हड़, सं पु (सं कुल्हरिका) करक, क्षुद्र मृत्पात्रम्।
कुल्हाड़ा, सं पु (सं कुठार, दे)।
कुल्हिया, सं स्त्री (हिं कुल्हड़) क्षुद्रकरक, अतिक्षुद्रमृत्पात्रम्।
कुवलय, सं पु (सं न) नील,कुमुद कैरव-शशिरंजितम् २ नील, कमल-उत्पलम् ३ भूमण्डलम्।
कुवाच्य, वि (सं) अश्लील, अशिष्ट, अवाच्य। सं पु (सं न) गाली, कुवचन अपशब्द।
कुवेणी, सं स्त्री (सं) मत्स्यकरंडी २ कुग्रथितवेणी।
कुवेर, सं पु (सं) कुबेर, दे।
कुश, सं पु (सं) कुथ, दर्भ पवित्रम् २ जलम् ३ रामपुत्र ४ फाल।
कुशान, सं पु (अ) उपधान, उपबर्ह, उपबर्हणम्।
कुशल, वि (सं) दक्ष, चतुर, प्रवीण, निपुण, विशारद, विचक्षण २ श्रेष्ठ, भद्र। सं पुं (सं न) मंगलं क्षेम, मंगलम्, भद्रं, शिवम् २ कुशमाहिन् ३ दिर।

—क्षेम, स पु (सं न) कुशल, क्षेम। मङ्गलम्।
कुशलता, सं स्त्री (स) पाटव, चातुर्य, निपुणता।
कुशा, स स्त्री (सं कुश) दर्भ, कुश, पवित्र, याज्ञिक हस्तकर्म, दर्भः (पु न)।
कुशाग्र, वि (स) तीक्ष्ण, सूक्ष्म, तीव्र प्रखर।
—बुद्धि, वि (सं) तीक्ष्णमति। सं स्त्री, तीव्र-मति (स्त्री)।
कुशादगी, स स्त्री (फा) विशालता २ विस्तार, विस्तृति (स्त्री)।
कुशादा, स पु (फा) विस्तृत आवरण रहित।
कुशासन¹, स पु (स कुश+आसन) कुशासनम्, दर्भासनम्।
कुशासन², स पु (स कु+शासन) कुशासनम्, दुःशासनाव्यवस्था।
कुशील, वि (सं) दुराचार, दुर्वृत्त, दुःस्वभाव।
कुश्ता, स पु (फा-न) धातुभस्मन् (न)।
कुश्ती, सं स्त्री (फा) नियुद्ध, मल्लयुद्ध-, युद्धम्।
कुष्ठ, स पु (सं न) किल श्वेत, ... दुश्चर्मन् (न) २ दे 'कूट'।
—नाशन, स पु (सं) वाराहीकन्द २ गौर सर्षप ३ क्षारीवृक्ष।
कुष्ठी, वि (स कुष्ठिन्) श्वित्रिन्।
कुष्माण्ड, स पु (स) दे 'कुम्हड़ा'।
कुसंग, स पु (स) कुसंग, कुसंगति (स्त्री)।
कुसमय, सं पु (स) दुष्काल, अशुभसमय २ अनवसर, असमय ३ विपत्काल।
कुसाइत, स स्त्री (स कु+अ साअत) अशुभमुहूर्त, अनवसर, कुसमय।
कुसीद, स पु (सं न) वार्धुष्य, वृद्धि (स्त्री)।
—जीवी, दे 'सूदखोर'।
—पथ, दे 'सूदखोरा'।
कुसुम्भ, स पु (स न) महारजन, महारजनम् २ दे 'केसर'।
कुसुम्भा, स पु (स कुसुम्भम्>) कुसुम्भ रा... २ अहिफेनभङ्गानिर्मित मादकद्रव्यम्।
कुसुम, सं पु (स न) पुष्प, प्रसून, सुम, सून, मणीवक, सुमनस (स्त्री, केवल बहु) २ लघुवाक्यमयगद्यम् ३ स्त्रीरजस् (न)।

—पुर, सं पु (सं न) पाटलिपुत्रम्।
—बाण, सं पु (सं) कामदेव।
कुसुमांजलि, स स्त्री (स पु) पुष्पाञ्जलि।
कुसुमित, वि (स) पुष्पित, प्रफुल्ल, पुष्पित।
कुसूर, सं पु (अ) अपराध, स्खलितम्।
—वार, वि अपराधिन, दोषिन्।
कुहक, स पु (सं न) माया, अभिचार, इन्द्रजालम् २ ऐन्द्रजालिक ३ वंचक।
कुहकना, क्रि अ (अनु कुहू) कुहरव कृ, कूज (भ्वा प से)।
कुहनी, स स्त्री (स कफोणि पु) कफणि (पु स्त्री), कफणा, कु(कू)र्पर।
कुहर, स पु (स न) छिद्र, विवर, बिल, रन्ध्रम्।
कुहरा, स पु (स कुहडी) तुषार, खबाष्प, धूमिका, कुहडिका, कुज्झटिका।
कुहराम, स पु (अ कहर+आम) विलाप, आक्रन्दन, परिदेवना २ महत् सङ्कुलम्।
कुही, स स्त्री (स कुधि) श्येन, ..., शशादन, कपोतारि।
कुहुक, पु, दे कुहू (२)।
कुहुकना, क्रि अ, दे 'कुहकना'।
कुहू, स स्त्री (स) अमावस्या २ कोकिल-मयूर-आलाप।
कूँचा, सं पु (सं कूर्च) शोधनी, सम्मार्जनी, कूर्चकम्।
कूँची, स स्त्री (हिं कूँचा) लघु-क्षुद्र-शोधनी-कूर्चम् २ लोममयी मार्जनी ३ तूलिका, वर्ण-तूली-तूलिका।
कूँज, स पु (स क्रुञ्च-ञ्चा) क्रौञ्च-ञ्चा, कलिक, कालिक।
कूँड, सं पु (सं कुण्ड) सेचन नी २ सीता, हलरेखा ३ 'खोद'।
कूँडा, स पु (सं कुण्ड), (जलार्थ) वृहद् मृत्पात्रम् २ द्रोणी-णि (स्त्री) ३ कुसुम पात्रम्।
कूँडी, सं स्त्री (हिं कूँडा) लघुपाषाणद्रोणी-णि (स्त्री) २ पाषाणचषक-कम्।
कूक, स स्त्री (अनु) कोकिलकूजितम् २ केका, मयूरध्वनि ३ दीर्घमधुरध्वनि।
कूकना, क्रि अ (हिं कूक) कूज् (भ्वा प से), कुहरव कृ, केका कृ।

कूकर, स पु (सं कुक्कुर दे)।
कूच, सं पु (तु) प्रस्थान, प्रयाण, अपक्रम २ कटस्याग ३ यात्रा।
—करना, क्रि अ, प्रस्था (भ्वा आ अ) प्रया (अ प अ)।
कूचा, स पु (फा च) वीथी, दे 'गली'।
कूजन, सं पु (स न) कूजित, कलरव, खगध्वनि, विरुत, गुंजनम्।
कूजना, क्रि अ (सं कूजनम्) कूज् (भ्वा प से) क (अ प अ), वि-रु (अ प से) २ गुंज (भ्वा प से), कुकू।
कूजा, स पु (फा) सनालीक करक।
—मिसरी, स स्त्री, अर्द्धगोलाकारा घनीकृता सिता।
कूजित, वि (स) ध्वनित, स्वनित, गुंजित शब्दित, कलरवपूर्ण।
कूट, सं पु (स न) छल, कपट-ट, माया, वञ्चना, प्रतारणा २ अमरम ३ शृंग विषाणम् ४ उच्चशिखरम् ५ राशि ६ गूढार्थवार्ता, सनिंद उपालम्भ ७ प्रहेलिका, गूढप्रश्न ८ लौहमुद्गर ९ हरिणजालम् १० प्रस्तर-प्रवेरम् ११ नगरद्वारम् १२ भग्नशृंगो वृषभ।
वि, असत्यवादिन् २ प्रवञ्चक ३ कृत्रिम ४ श्रेष्ठ ५ निश्चल।
—नीति, स स्त्री (सं) कौटल्यधर्मम् (न)
—युद्ध, सं पु (सं न) कपटसंग्राम।
—योजना, स स्त्री (स) कुचक्रम्।
—साक्षी, स पु (स -क्षिन्) मिथ्यासाक्षिन्।
कूट, स स्त्री (हिं काटना या कूटना) कर्तन, कृन्तनम् २ ताडन, कुट्टनम्।
कूटक, स पु (स न) छल, कपटम् २ उत्सेध, उच्चता ३ फाल-ल, कुशिकम्।
कूटना, क्रि स (स कुट्टनम्) कुट्ट-चूर्ण-यत (चु), पिष् (रु प अ) २ प्रहृ-तड (चु)।
स पु तथा भाव, कुट्टन, चूर्णन, खण्डनम्, पेषणम् २ ताडन, प्रहरणम्।
—योग्य, वि, कुट्टनीय, चूर्णयितव्य।
—वाला, सं पु कुट्टक, पेषक, ताडयितृ।
कूटा हुआ, वि., कुट्टित, पिष्ट, ताडित।
कूटस्थ, वि (सं) शिखरस्थ २ निश्चल ३ नित्य ४ गूढ।
कूटाक्ष, स पु (सं) कूट पाश-अक्ष-देवन-सार।
कूटाख्यान, स पु (स न) गुप्तार्थ-गूढार्थ-कथा-उपाख्यानम्।
कूड़ा, स पु (स कूट = राशि >) अवकर, उच्छिष्ट, मल, निस्सारवस्तुसमूह।
—करकट, स पु, दे 'कूड़ा'।
कूद, स स्त्री (हिं 'कूदना') प्लव, उत्-, प्लुति (स्त्री) प्लवन झप-पा, वल्गनं, उत्प्लव।
—फाँद, स स्त्री कूर्दनप्लवनं, झपवल्गनम्।
कूदना, क्रि अ (सं कूर्दनम्) कूर्द् (भ्वा आ से), उत्प्लु (भ्वा आ अ), वल्ग (भ्वा प स) २ प्रमुद् (भ्वा आ से)।
स पु, दे 'कूद'।
—फाँदना, क्रि अ, इतस्ततः वल्ग। २ व्यायाम कृ।
कूप, सं पु (स) दे 'कुआँ' २ छिद्र, रन्ध्रम्।
—मण्डूक, स पु (सं) व्यवहारानभिज्ञ, अपक्वबुद्धि, अल्पदर्शिन् २ अनुभव।
कूपन, स पु (अ) पत्रिका, कूपनम्।
कूपी, स स्त्री (सं) कूपक, कलश १ दे 'कुप्पी' ३ नाभि (पुं स्त्री), नाभी, तुन्दिका।
कूबड़, स पु (स कूबर >) ककुद-दम्।
कूर, वि (स क्रूर) निर्दय, निर्घृण, नृशंस २ भयंकर ३ दुष्ट ४ अलस ५ मूर्ख ६ कुलक्षण।
कूर्म, स पु (स) कच्छप, दे 'कछुआ' २ विष्णो कच्छपावतार ३ पृथिवी ४ ऋषि प्राण-नाडी-आसन, विशेष।
कूल, स पुं (स न) तट, तटी, तीरम् २ समीप, निकट ३ कुल्या ४ सरस् (न)।
कूल्हा, स पु (सं क्रोडम् >) नितम्बास्थि (न)।
कूष्माण्ड, स पु (स) दे 'कुम्हड़ा'।
कृच्छ्र, सं पुं (स न) दुःख, कष्टम् २ पापम् ३ मूत्रकृच्छ्ररोग ४ व्रतभेद। वि, दुष्कर, दुस्साध्य।

कृत, वि (स) विहित अनुष्ठित रचित संपादित, निर्मित । स पु सत्ययुगम् २ चतुर इति संख्या ।
—कार्य, वि (स) सफल सिद्धार्थ ।
—कृत्य, आप्तकाम सफलमनोरथ ।
—युग, स पु (स न) सत्ययुगम् ।
—विद्य, वि (स) विद्वान, पंडित, बहुश्रुत ।
कृतक, वि (स) कृत्रिम, अनैसर्गिक अस्वाभाविक २ अनित्य (न्याय०) ।
—पुत्र, स पु (स) दत्तक, दत्रिम सुत ।
कृतघ्न, वि (स) कृतज्ञतारहित अकृतवेदम् ।
कृतघ्नता, स स्त्री (स) अकृतवेदिता उपकारविस्मरणम्, कृतज्ञताराहित्यम् ।
कृतज्ञ, वि (स) उपकारज्ञ कृतविद्, कृतवेदन् ।
कृतज्ञता, स स्त्री (स) उपकारज्ञता, उपकारस्मरण, कृतवादरवम् ।
कृतांक, वि (स) सचिह्न चिह्नित, अंकित, मार्क ।
कृतांजलि, वि (स) बद्धांजलि, बद्धकर ।
कृतांत, स पु (स) मृत्यु २ यम ३ पापम् ४ देवता ५ पूर्वजन्मकर्मफलम् ६ सिद्धांत ७, शनैश्चरवार ।
कृतार्थ, वि (स) पूर्णकाम, दे 'कृतकार्य' २ संतुष्ट ३ निपुण ४ मुक्त ।
कृतास्त्र, वि (स) सशस्त्र सास्त्र सन्नद्ध २ अस्त्रविद्, शस्त्रनिपुण ।
कृति, स स्त्री (स) चेष्टा, क्रिया २ कर्मन् (न) कार्यम् ३ इन्द्रजालम्, माया ४ रचना, ग्रंथ ७ प्रहार ८ क्षति (स्त्री) ।
कृती, वि (स कृतिन्) कुशल, दक्ष पटु २ पुण्यात्मन्, सुचरित्र ।
कृतोदक, वि (स) स्नात, कृतस्नान, कृताभिषेक
कृत्ति, स स्त्री (स) मृगचर्मन् (न) २ त्वच (स्त्री) ३ भूर्ज ४ दे 'कृत्तिका' ।
—वासा, स पु (स -वासस) शिव ।
कृत्तिका, स स्त्री (स) बहुला, आग्नेयदेवा, नक्षत्रविशेष ।
कृत्य, स पु (स न) अनुष्ठेय, कर्तव्य, विधेय धर्म, आवश्यक कार्यम् २ कर्मन् (न) ।
कृत्रिम, वि (स) कृतक, अनैसर्गिक ।
कृदंत, स पु (स) कृत्प्रत्ययान्तशब्द (उ पाचक, भोक्तृ इ) २ कृत्प्रत्ययविषयक व्याकरणप्रकरणम् ।
कृपण, वि (स) कदर्य, दे 'कंजूस' २ क्षुद्र ।
कृपणता, स स्त्री (स) कदर्यता, दे 'कंजूसी' ।
कृपया, क्रि वि (स) सदय, सकृप, सानुकंप, सानुग्रहम् ।
कृपा, स स्त्री (स) करुणा दया, अनुग्रह, प्रसाद उपकार, अनुकंपा २ क्षमा, मर्षणम् ।
—निधान, स पु (स न) दयानिधि । वि अत्यंतकृपालु ।
—पात्र, स पु (स न) प्रसादभाजन, अनुग्राह्य दयार्ह ।
—सिंधु, स पु (स) दयासागर अति दयालु ।
कृपाण, स पु (स) खड्ग असि २ दे 'कटार' ३ दण्डकवृत्तभेद (छन्द) ।
कृपालु, वि (स) दयालु कारुणिक, कृपामय ।
कृपालुता, स स्त्री (स) दयालुता, कारुणिकता ।
कृमि, स पु (स) कीट, नीलांग, क्रिमि (पु) २ लाक्षा ।
—कोश, स पु (स) पट्टकीट, कोष -गृह ।
—नाशक, वि (स) कृमिघ्न, कृमिहर ।
कृमिक, स पु (स) कीटक, लघु-कृमि-क्रिमि ।
कृमिज, स पु (स न) अगुरु (न) राजार्ह २ कौशेय ३ दे 'हिरमिजी ।
कृमिजा, स स्त्री (स) कीटजा, लाक्षा ।
कृमिल, वि (स) कृमिकुल चित-पूर्ण, कृमिमय ।
कृमिला, स स्त्री (स) बहुप्रसू (स्त्री), बहुप्रजा ।
कृश, वि (स) क्षीण, क्षाम, तनु क्रशांग (-गी स्त्री) प्र तनु, दुर्बल २ अल्प, स्तोक, क्षुद्र, सूक्ष्म, अणु लघु ।
कृशता, स स्त्री (स) क्षीणता, क्षामता, दुर्बलता २ अल्पता, सूक्ष्मता ।
कृशांगी, स स्त्री (स) तन्वंगी, क्षीणांगी, तन्वी ।
कृशानु, स पु (स) अनल, अग्नि (पु) २ चित्रक ।

कृशोदरी, वि स्त्री (स) तनुक्षीण, मध्या मध्यमा।

कृषक, स पु (स) कृषीवल, कृषिक, कृषाण।

कृषि, स स्त्री (स) कर्षण, हलभृति (स्त्री)।

कृष्ण, स पु (स) वासुदेव, केशव, चक्रपाणि (पु) चक्रिन् (पु), जनार्दन, पीताम्बर, माधव, मधुसूदन, हृषीकेश, गोपाल, गोवर्धनधारिन् (पु) गोविंद, दामोदर, मुरारि (पु), राधारमण। २ कोकिल ३ काक ४ कृष्णपक्ष। वि, काल, असित, २ नील मेचक, श्याम ३ तिमिर, निष्प्रभ।

—जटा, स स्त्री (स) जटामांसी, सुगन्धित मूलभेद।

—जीरक, स पु (स) कृष्णा, काला, बहुगन्धा।

—द्वैपायन, स पु (सं) वेदव्यास, महाभारतकार।

—पक्ष, स पु (स) असितपक्ष, प्रतिपदा अमावस्या तानि पञ्चदश दिनानि।

—लवण, स पु (स न) रुचक, अक्ष, सौवर्च्चल।

—लोह, स पु (स न) अयस्कान्त, चुम्बक।

—सार, —सारंग, —सार, स पु (स) मृगभेद।

कृष्णता, स स्त्री (सं) कृष्णिमन् (पु), कालिमन् (पु), नीलत्व, श्यामत्व।

कृष्णा, स स्त्री (स) द्रौपदी, पांचाली २ कालीदेवी ३ दक्षिणदेशे नदीविशेष ४ कृष्णजीरक ५ कृष्णद्राक्षा ६ नयनतारा।

कृष्णाष्टमी, स स्त्री (स) श्रीकृष्णजन्मदिवस, जन्माष्टमी, भाद्रमासस्य कृष्णपक्षस्याष्टमी तिथि।

कृष्णी, स स्त्री (स) कृष्ण, रजनी रात्रि (स्त्री)।

कृष्य, वि (स) कर्षणीय, कृषियोग्य।

केंचुआ, स पु (स किंचुलुक) महीलता, गण्डूपद, किंचिलिक।

केंचुल, स स्त्री (स कञ्चुक) निर्मोक, अहिभुजग-सर्प-त्वच् (स्त्री)।

केंचुली, वि (हिं केंचुल) कंचुक-सदृश-तुल्य। स स्त्री दे 'केंचुल'।

केंद्र, स पु (स न) मध्य स्थ, मध्यभाग २ उदर, गर्भ ३ मुख्य प्रमुख, स्थानम्।

केंद्री, वि (स केन्द्र>) मध्यम, मध्यस्थ, मध्य, गत वर्तिन्, मध्य, केन्द्रीय।

—करण, स पु (स न) मध्यवर्तिन कृ, एकतन्त्री कृ।

कैंसर, स पुं (अ) कर्कट कर्कटिका, रोग, कर्कस्फोट।

के, प्रत्य (हिं का) दे 'का'।

केकड़ा, स पु (स कर्कट) कर्कटक, कुलीर।

केकय, स पु (स) १ वर्तमानकाश्मीरात् पश्चिमप्रदेशविशेष २ दशरथश्वशुर।

केकयी, स स्त्री (स कैकेयी)।

केका, स स्त्री (स) मयूरवाणी।

केकी, स पु (स किन्) मयूर, शिखिन्।

केत, स पु (स) भवन, गृह २ स्थान ३ ध्वज, केतन ४ बुद्धि (स्त्री) ५ संकल्प ६ मंत्रणा ७ अन्नम्।

केतक, स पु (स) केतकीवृक्ष २ तत्पुष्प।

केतक, वि (स कति+एक) दे 'कितने', 'कितना', बहुत'।

केतकी, स स्त्री (स) सूचीपुष्प, केतक, क्रकचच्छद, विफला, क्रकचा, गन्धपुष्पा।

केतन, स पु (स न) भवन, गृहम् २ स्थान ३ चिह्न ४ ध्वज ५ निमंत्रण, आह्वानम्।

केतली, स स्त्री (अ केटल) उखा, स्थाली, लोहा लोहभू (स्त्री)।

केतित, वि (स) आमन्त्रित, आहूत, भावित २ जनाकीर्ण लोकाध्युषित।

केतु, स पु (स) ग्रहविशेष २ उल्का, उत्पात ३ ज्ञान ४ दीप्ति (स्त्री) ५ ध्वज ६ चिह्नम् ७ राक्षसविशेषस्य कबन्ध।

—तारा, स पु (स स्त्री) धूमकेतु (पुं), उल्का।

—मान्, वि (स मत्) तेजस्विन् २ ध्वजिन् ३ बुध।

—माल, सं पु (सं न) जम्बूद्वीपस्य नववर्षान्तर्गतखण्डविशेष।

—रत्न, स पुं (सं न) वैदूर्यमणि (पुं)।

केथीटर, स पु (अ) मूत्रशलाका।

केलसियम, सं पुं (अ) चूर्णातु (न), खटिकम्।

केदार, सं पुं (सं) ब्रीहिक्षेत्र २ हिमालये

तीर्थविशेष २ आलवाल ४ मेनराज्पुत्र ५ मनुष्य क्षत्रभाग ।
केन, म पु (स-, 'किं' का तृतीया एकवचन) उपनिषद्विशेष ।
कैमरा, म पु (अ) छायाचित्रपेटिका ।
केमिस्ट्री, म स्त्री (अ) रसायनम् ।
केयूर, म पु (म पु न) अंगद-द, वलय य ।
केराना, स पु दे 'किराना' ।
केराना, म पु (अ क्रिश्चियन >) मारो पाय २ लखक, कायस्थ, लिपिकार ।
केराया, म पु दे 'किराया' ।
किराये की गाड़ी, स स्त्री पण्य साधारण वाहन-द्य ।
केला, मं पु (म कदल), (वृक्ष) कदली, रंभा, मोचा, काष्ठीला, सकृत्फला, गुच्छफला, निस्सारा, कलम्भा, मो(रो) लो ,चक-, वारणवल्लभा । (फल) कदलीफल, मोच इ ।
केलि, म स्त्री (स) क्रीड़ा, सल्ल २ रति (स्त्री), मैथुन ३ नर्मन् (न), परि (री) हास ४ पृथ्वी ।
—कला, स स्त्री शारदावीणा २ रतिविज्ञान ।
केलौरी, म स्त्री (अ) उष्म् ।
केवट, स पु (स कैवर्त) नाविक, पोत वाह, औडुपिक २ धीवर, कैवर्त नाविक, मत्स्याजीव ।
केवटी, म स्त्री (हि केवट) मिश्रद्विदल, वर्णसंकर ।
केवड़ा, म पु (स केतकिका) केतकी, कदिका, क्षुरि (पु), महागन्धा सूचकच्छमा २ केवी पुष्प ३ महागन्धासव ।
केवल, वि (स) एक, अद्वितीय २ विशुद्ध ३ श्रेष्ठ । क्रि वि, एव, केवल,-मात्र (समास में) २ सामस्त्येन, सपूर्णतया ।
केवलात्मा, म पु (स-त्मन्) परमेश्वर, ब्रह्म दीश्वर २ शुद्धसत्त्वमनुष्य, पुण्यात्मन् ।
केवली, म पु (स लिन्) मोक्षाधिकारी साधु २ तीर्थंकर (जैन) ।
केवाँच, स स्त्री (स कच्छु >), (लता) कपिकच्छू (स्त्री) स्वआत्म गुप्ता, कण्डूरा, मर्कटी २ (फली)कपिकच्छू-बीजकोश शिंबी ।
केवाड़, स पु, दे 'किवाड़' ।

केश, म पु (स) बाल, कच, कुन्तल, चिकुर शिरोरुह, शिरसिज मूर्धज वृजिन २ किरण ३ वरुण ४ विष्णु ५ सूर्य ६ विश्व (७८) अश्व-सिंह,-स्कन्धकेश ।
—कर्म म पु, केशकर्मन् (न), क्षौर, विन्यास प्रसाधनम् ।
—कलाप-पाश, म पु (स) प्रसाधितकेशा, अलक, करल ।
—प्रसाधनी, म स्त्री } कङ्कतिका दे 'कंघी' ।
—मार्जक, स पु
—विन्यास, म पु (म) दे 'केशकर्म' ।
केशक, वि (म) केशकर्म-केशविन्यास कुशल, केशप्रसाधक ।
केशरी, म पु (स-रिन्) सिंह श्रेष्ठ २ घोटक (३-४) पुन्नाग नागकेशर वृक्ष ।
केशाकेशी, म स्त्री [स-शि(न)] अन्योन्य केशग्रहणपूर्वकप्रवृत्त युद्ध ।
केशिनी, स स्त्री (स) सुकेशी नारी सुकची- ना ।
केशी, स पु (स केशिन्) सिंह २ घोटक ३ सुकेश (पुरुष) ३ राक्षसविशेष ।
केस, म पु-, दे 'केश' ।
केस, स पु (अ) व्यवहारपद, न्याय २ दुरवस्था ३ कोष, पुट ।
केसर, म पु (म पु न) काश्मीर्य, काश्मीर रज, कुङ्कुम अग्निशिख, वर, वाह्नि (ही) क, पीतन, गौर, रक्त, लोहितचन्दन, वर्ण्य, सकोच, धीर, घुसृण, धोरम् २ नागकेशरवृक्ष ३ अश्व-सिंह,-स्कन्धबाला ४ स्वर्ण ।
केसराचल, स पु (स) मेरु, सुमेरु, हेमाद्रि ।
केसरिया, वि (म केसर >) घनपीत, कुङ्कुमवर्ण ।
—बाना, स पु-, कुङ्कुमवर्ण घनपीत, वेश - वेष ।
केसरी, म पु (स -रिन्) दे 'केशरी' ।
केसू, सं पु (स किंशुक) पलाश, रक्त पुष्पक ।
केहा स पु (स केका >) मयूर, दे 'मोर' ।
केहरी, स पु (स केसरिन्) सिंह २ अश्व ।
कैंची, स स्त्री (तु) दे 'कतरनी' ।
—करना, मु-, अग्रांघ्रि निरुद्ध (कु प से)-रुद्ध (कु च से)-अवच्छिद् (रु प अ) ।

—सी जबान चलना, मु, शीघ्र-सत्वर-वेगेन नद् (भ्वा प से)-भाष (भ्वा आ से)।
कँचुली, स स्त्री, दे 'केंचुली'।
कै, वि (स कति) दे 'कितने', 'कितनी'।
अव्य, वा, अथवा, यद्वा २ अन्यतर।
—दफा,-बार,—बेर, कतिकृत्व (अव्य), प्रतिवार।
कैंप, स पु (अ) दे 'कैम्प'।
कै, स स्त्री (अ) छर्दि, वमनोद्गार २ वमन, वम, वमि (स्त्री), प्रच्छर्दिका, वमथु (पु)।
—आना, क्रि अ, वमनेच्छया पीड् (कर्म), विवमिषति (सन्नन्त)।
—करना, क्रि स छर्द,-वम् (भ्वा प से) छर्द (चु), उत्क्षिप् (तु प अ), उद्गृ (तु प से)।
कैतव, स पु (सं न) छल, कपट, वचन २ द्यूत ३ वैदूर्यमणि (पु) ४ धुस्तूर।
वि, छलिन्, कापटिक २ शठ, धूर्त ३ अक्ष देविन्, कितव, (–वी स्त्री)।
कैथ-था, स पु (स कपित्थ) दधित्थ, मन्मथ, दधि-पुष्प-कुच-गन्ध-दन्त,-फल।
कैद, स स्त्री (अ) बन्धन, निग्रह, निरोध २ कारा,-निरोध -बन्धन-प्रवेश -वास, बंदी करण, प्रग्रह, आमेध ३ नियम, समय, प्रतिज्ञा, संकेत।
—करना, क्रि स, कारागृहे निक्षिप् (तु प अ)-बन्ध् (क्र्या प अ)-निरुध् (रु उ अ), बन्दीग्राह ग्रह (क्र्या प से), बंदीकृ।
—होना, क्रि अ, कारायां निक्षिप्-बन्ध्-निरुध् बन्दीकृ (सब कर्म)।
—खाना, स पु (फा) कारा, कारागार २, कारावास, बन्दि,-शाला-गृह, बन्धनालय, चार, चारक, गुप्तिस्थान।
—तनहाई, स स्त्री (अ+फा) एकान्त-विजन-निर्जन,-आसेध।
—महज, स स्त्री (अ) सरल सुगम, प्रग्रह आसेध।
—सख्त, स स्त्री (अ + फा) विषम-दुःसह, आसेध, इ।
कैदी, स पु (अ) बंदी दि (स्त्री), बन्दिन् (पु), कारागुप्त, ग्रहक, प्रग्रह, बद्ध।
कैप, स पु (अ) दे 'टोपी'।
कैपिटल, पु (अ) मूल-धन द्रव्यम्, २ धन, पुञ्ज-राशि, पुञ्जि (स्त्री) ३ राजधानी।
कैपिटलिस्ट, स पु (अ) धनिक, कोटीश्वर, पुञ्जिपति।
कैबिनेट, स पु (अ) मन्त्रिमण्डलम् २ कोष्ठकः ३ मन्त्रणागृहम्।
कैफियत, स स्त्री (अ) अवस्था, स्थिति (स्त्री), दशा २, विवरण, वर्णन ३ आश्चर्योत्पादकघटना।
कैरव, स पु (स न) कुमुद २ सितोत्पल, श्वेतकमल। (स पु) कितव २ शत्रु।
कैरी, स स्त्री (देश) दे 'अंबिया'।
—आंख, स स्त्री, कपिल पिंगल,-नयन-नेत्र।
कैलास, स पु (स) पर्वतविशेष, शिव-कुबेर, निवास।
—नाथ, पति, मं पु (स) शिव।
—वास, स पु (स) मृत्यु।
कैवर्त, स पु (सं) दे 'केवट'।
कैवल्य, स पु (स न) एकत्व, असम्पृक्तता २ अपवर्ग, मुक्ति (स्त्री) ३ उपनिषद्विशेष।
कैसर, स पु (रो० सीजर) सम्राज, राजाधिराज, अधिराज, अधीश्वर।
कैसा, वि (स कीदृश) कीदृश, किंरूप, किंविध, किमाकार।
कैसी, वि स्त्री (सं कीदृशी) कीदृशी, किंरूपा, किमाकारा, किंविधा।
कैसे, क्रि वि (हिं कैसा) कथं, केन प्रकारेण, कया रीत्या।
कोंकण, स पु (स) दक्षिणदिशि प्रान्तविशेष।
कोंपल, सं स्त्री (स कोमल >) पल्लव, अंकुर, प्ररोह, किस (श) लय य, उद्भिद (पुं), उद्भिज्ज।
—निकलना या फूटना, क्रि अ, प्ररुह् (भ्वा प अ), स्फुट् (तु प से) उद्भिद् (कर्म) फुल्ल् विकस् (भ्वा प से)।
को, प्रत्य (यह कर्म और सम्प्रदान कारक का प्रत्यय है, इसका अनुवाद प्रायः द्वितीया और चतुर्थी के रूपों से होता है। (राम को कह = उ, राम ब्रूहि, ब्राह्मण को दे = विप्राय देहि)।
कोआ, स पुं (स कोश-ष), (पट्टकीट-) कोश-ष २ दे 'कोया'। ३ पनसखंड ४ दे 'महुआ' (फल)।

कोई, सर्व (स कोऽपि) कश्चन, कश्चित् (पु), का,-अपि-चन चित् (स्त्री) किं,-अपि-चन चित् (न)।

—कोई, वि स्तोका, कतिपया, परिमिता ।

—चीज, सं स्त्री किमपि (वस्तु)।

—दम में, क्रि वि, सपदेव, तत्काले, झटिति, द्राक् (सब अव्य)।

—दम का मेहमान, स पु, मुमूर्षुः, आसन्न, मरण-मृत्यु, मरणाभिमुख, मरणोन्मुख।

—न कोई, एष वा परो वा, य कश्चिदपि, कश्चित्।

—नहीं, न कोपि-कापि किंचिदपि इ ।

कोक[1], सं पु (स) चक्रवाक, द्वन्द्वचर, रथाङ्ग, चक्र २ भेडक ३ विष्णु (पु) ४ वृक ५ खर्जूरीवृक्ष । [कोकी (स्त्री), चक्रवाकी, रथाङ्गी इ]।

कोक[2], स पु (अ) व्यवहार ।

—शास्त्र, स पु (सं न) कोकपण्डितरचितो रतिविधानग्रन्थ ।

—शास्त्री, स पु, सुरतव्यवहार ।

—क्रीड़ा, सं पु रतिव्यवहार ।

कोकनद, स पु (स न) रक्तोत्पल २ रक्त कुमुदम्।

कोकनी, वि (दश) क्षुद्र, लघु।

कोका, स पु (अ) वृक्षभेद ।

कोका, स [redacted] स्त्री (तु) धात्री-उपमाता, पुत्र - पुत्री, धात्रेय यी ।

—बेली, बैरी, स स्त्री (सं कोकनद + हि बेला) नीलकुमुद ।

कोकाह, सं पु (स) श्वेत, श्वेतघोटक ।

कोकिल, स स्त्री (सं पु) पिक, पर, भृत - पुष्ट, काल, गन्धर्व, मधुगायन, कलकण्ठ, कुहूरव, काकलीरव, वसन्तदूत, वनप्रिय, ताम्राक्ष । दे 'कोकिला'।

—बैनी, वि स्त्री (स + हि) सुकण्ठी, मधुर भाषिणी।

कोकिला, स स्त्री (स) मदनशलाका, पर, भृता पुष्टा, वनप्रिया, कलकण्ठी, ताम्राक्षी, वसन्त दूती।

कोकिलावास, सं पु (स) कोकिलोत्सव, आम्र, रसाल ।

कोकी, सं स्त्री (सं) चक्रवाकी, चक्री, रथाङ्गनाम्नी।

कोकीन, सं स्त्री (अ कोकेन) कोकापत्र निर्मितमादकपदार्थ * कोकीनम् ।

कोको, [redacted] स्त्री (अनु) काक, वायस २ काल्पनिकभयदवस्तु (पु)।

कोख, स स्त्री (सं कुक्षि) गर्भाशय, गर्भ कोश प ।

—जली, बन्ध्या, वि, वन्ध्या, सन्तानहीना ।

—की आँच, स स्त्री, अपत्यप्रेमन् (पु), वात्सल्य, मातृस्नेह ।

—मारी जाना, [redacted], च्युतगर्भा भू, गर्भ पत् (भ्वा प से) च्यु (भ्वा आ अ)।

—खुलना, मु सन्तान उत्पद् (दि आ अ)।

कोचना, क्रि स, दे 'चुभाना', 'धँसाना'।

कोचबक्स, स पु (अ कोचबाक्स) सूतासन।

कोचवान, सं पु (अ कोच>) सारथि (पु), सूत, वाहक ।

कोजागर, सं पु (सं) आश्विनी पूर्णिमा, कौमुदी, शारदी, शरत्पर्वन् (न)।

कोट[1], स पु (सं) दुर्ग २ प्राचीर ३ राज प्रासाद ।

—पाल, स पु, कोटपाल, दुर्गाध्यक्ष ।

कोट[2], सं पु (अ) प्रावार रक, कञ्चुक ।

कोटर, स पु (स पु न) निष्कुह, तरु विवर, प्राकार २ कोटरावण, रक्षार्थं कृत्रि मवन ।

कोटि, सं स्त्री (सं) शतलक्षसंख्या, दे 'करोड़' २ धनुरग्र ३ अस्त्रादि कोण ४ वर्ग, श्रेणी।

कोटिक, वि (स कोटि स्त्री) कोटी टि (स्त्री) लक्षशतक २ असंख्य, अगणित। स स्त्री, उक्ता संख्या तदङ्कश्च ।

कोटिश, क्रि वि (स) बहुधा-बहुधा २ अनेक-कोटिवार । वि, बहुसंख्याक, अनेक ।

कोटीश्वर, सं पु (सं) कोट्यधीश, अति धनाढ्य।

कोठरी-ड़ी, सं स्त्री (हिं कोठा) लघु क्षुद्र, कोष्ठ शाला, अन्त कोष्ठ, गर्भागार।

कोठा, स पु (सं कोष्ठ) गृह, सदन, आनि, वास, वेश्मन् सद्मन् (न) २ प्र, कोष्ठ, शाला ३ पण्यागार, पण्यस्थान ४ धान्यागार, कुसूल

1 आ० हि०

५ चन्द्रशाला, अट्टालिका ६ पटल, छदिस् (स्त्री) ७ उदर ८ आमाशय ९ अन्त्राणि (न बहु) १० निभृतागार ११ पत्रभाग १२ गर्भाशय ।

—बिगड़ना, मु अजीर्णरोगेण पीड (कर्म)।

कोठार, स पु (हिं कोठा) दे 'भंडार'।

कोठरी, स पु (हिं कोठा) दे 'भंडारी'।

कोठी, स स्त्री (हिं कोठा) भवन, गृह, हर्म्य २ एकभूमिक हर्म्य ३ पण्य,-आगार-आधान ४ धान्यागार ५ भांडार, कोष ६ वणिग्जनसमवाय ७ बृहदापण, महती विक्रयशाला ८ गर्भाशय ९ गुलिकाक्षपण्या माग्नेयचूर्णाधान १० मृण्मय बृहद्धान्यपात्र ११ लोहमय ताम्रमय वा बृहज्जलपात्र ।

—वाल, स पु, श्रेष्ठिन् (पु) वाणिजश्रेष्ठ ।

कोढ़ना, क्रि स, दे 'खोदना'।

कोड़ा, स पु (स कवर >) प्रतोद, कशा-शा, प्रतिष्कष-श, ताडनरज्जु (स्त्री)।

—मारना, क्रि स, कशया प्रतोदेन वा प्रहृ (भ्वा प अ)-तड् तुद्-दण्ड (सब चु)-आहन् (अ प अ)।

कोड़ी, स स्त्री (अ स्कोर) विंशति (स्त्री), विंशतिवस्तुसमुदाय ।

कोढ़, स पु, दे 'कुष्ठ'।

—में खाज निकलना, मु, रन्ध्रोपनिपातिनोऽनर्थाः, छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति, गण्डे स्फोटकसजननम्।

कोढ़ी, वि, दे 'कुष्ठी ।

कोण, स पु (स) दे 'कोना'।

कोणि, वि (स) वक्र आभुग्न-कर हस्त ।

कोतल, स पु (फा) दर्शनीयघोटक २ राजाश्व ।

कोतवाल, स पु (सं कोटपाल) पुररक्षक ।

कोतवाली, स स्त्री (हिं कोतवाल) कोटपाल पुररक्षक,-कार्यालय ।

कोताह, वि (फा) न्यून, अल्प, २. लघु, ह्रस्व ३ सकीर्ण, सङ्कुचित।

—हिम्मत, वि, अल्प साहस विक्रम।

कोताही, स स्त्री (फा) त्रुटि (स्त्री), न्यूनता २ प्रमाद ।

कोथला, स पु (हिं गूथल) बृहत् पुट कोष प्रसेव २ आमाशय ।

—भरना, मु उदर पूर् (चु)।

कोदण्ड, स पु (सं न) धनुस् (न)। (स पु) भ्रू (स्त्री) २ देशविशेष ।

कोदो दों, स पु (स कोद्रव) कोरदूष, कुद्रव, कुद्दाल ।

कोन, सं पु, दे 'कोना'।

कोना, सं पु (सं कोण) अस्र २ कोटि-अश्रि पालि (स्त्री) ३ निभृतस्थान ४ चतुर्थभाग ।

—दार, वि, अस्रोपेत, कोणविशिष्ट, अश्रिम्।

—कचोना, सं पु, प्रत्यस्र सर्वे कोणा ।

कोप, स पु (स) क्रोध, रोष ।

कोपन, वि (स) समन्यु, सरोष, क्रोधिन्।

कोपिनी, वि स्त्री (स) दे 'क्रोधिनी ।

कोपी, वि पु (स पिन्) दे 'क्रोधी'।

कोपीन, स पु, दे 'कौपीन'।

कोमल, वि (स) मृदु, मृदुक, स्निग्ध, श्लक्ष्ण, मसृण, सुखस्पर्श २ मृदुल, पेलव, सुकुमार, सौम्य ३ अपरिपक्व, अप्रौढ ४ मनोहर, अभिराम। (स पु) स्वरभेद (सगीत०)।

कोमलता, स स्त्री (स) मृदुता, स्निग्धता, सुकुमारता, पेलवता, अपरिपक्वत्व, मनोहारिता इ।

कोयल, स स्त्री दे 'कोकिल' २ लताभेद ।

कोयला, स पु (स कोकिल) कोकिल, दग्धकाष्ठ, अङ्गार ।

—लकड़ी का, स पु काष्ठ,-कोकिल अङ्गार ।

—पत्थर का, स पु, प्रस्तर-अश्म, कोकिल ।

कोया, स पु (सं कोण >) अपाङ्ग नाक, चक्षु कोण, नयनोपान्त ।

कोर, स स्त्री (स कोण) उपान्त प्रान्त, परिसर, उपकण्ठ २ कोण अस्र ३ द्वेष ४ दोष, अवगुण ५ अस्त्रादीनां धारा। ६ पङ्क्ति (स्त्री), श्रेणि णि (स्त्री)।

—कसर, सं स्त्री (हिं + फा कसर) वैकल्य, दोष, छिद्र, न्यूनता २ न्यूनाधिकता।

कोरक, स पु (स) कलिका, दे 'कली २ मृणाल ३ चरनामकगन्धद्रव्यम्।

कोरा, वि (स केवल) अभि, नव, नवीन, नूतन, अव्यवहृत, अप्रयुक्त २ अधौत, अक्षालित ३ अरंजित ४ अचित्रित ५ अलि

रिक्त ६ वञ्चित, रहित, विहीन ७ निष्कलंक ८ मूर्ख ९ निर्धन १० केवल।

—जवाब, सं पु, एकांत अस्वीकृति, निराकरण प्रत्याख्यान निषेध।

—बचना, मु० अत्यन्त निर्दोष मुच् विमुच (कर्म)।

—रहना, मु भग्नाशा-अकृतार्थ मनोहत (वि) स्था (भ्वा प अ)।

—कोरा सुनाना, मु, स्पष्ट वद् (भ्वा प से), २ भर्त्स् (चु आ से), आ-अधि, क्षिप (तु प अ)।

कोरि, वि, दे 'कोटि'।

कोरी, सं पु (सं कौल->) आर्य, पटकार कुविंद।

कोर्ट, स पु (अ) न्यायालय, धर्माधिकरणम् २ राज-नृप सभा ३ न्यायासनम्।

—आव् वार्ड्स, स पु, बालकविषयादि संपत्तिप्रबंधक विभाग।

—फीस, स स्त्री, न्यायशुल्क-कम्।

—मार्शल, सैनिकन्यायालय २ सैनिक न्यायेन दण्डनम्।

—शिप, स स्त्री, विवाह, अनुनय-याचना।

कोल[1] स पु (स) शूकर (सू) वर, किरि (पु) २ उपगूह, आलिंगन ३ क्रोड, अंक ४ वन्यजातिविशेष ५ कृष्णमरिच ६ दे 'तोला' ७ बदरीफलभेद ८ दक्षिणदिशि देशविशेष।

कोल[2], स पु (अ) अंगार, कोकिल।

—गैस, स स्त्री (सं) अंगारवाति (स्त्री)।

—टार, स पु (स) कोलतार, तारकोलम्।

चार—, स पु, काष्ठांगार।

स्टीम—, स पु, वाष्पांगार।

कोलाहल, स पु (स) कलकल, कोलाहल, तुमुल, उत्क्रोश, निनाद, विराव।

—मचाना, क्रि स, कोलाहल-कलकल, कृ, आ वि,-कुश (भ्वा प अ)।

कोली, स पु (स कोल->) तन्तुवाय, पटकार।

कोल्हू, स पु (हिं कूल्हा?) १ चक्र, तैलपेषणी, तिलपेषणयन्त्र २ इक्षु-रसाल, पेषणी।

—काट कर मुँगरी बनाना, मु, अल्पलाभाय बहुहानिं कृ।

—का बैल, मु परम-उद्यमिन्-उद्योगिन्।

—में पिरवा देना, मु अत्यंत पीड् (चु)।

कोविद, सं पु (स) विद्वस् (पु), पंडित।

कोश, स पु (स कोश प), अभिधान, शब्दसंग्रह २ खड्गादेः वेष्टन पुट कोष कोश ३ आवरण, पुट, पिधान, आच्छादन ४ अंड, पेशी शि (स्त्री) ५ मञ्जूषा, संपुटक ६ कलिका, मुकुल ७ मद्यपान, पात्र चषक ८ पुटक, स्यूत ९ संचितधन १० समूह ११ अंडकोष १२ योनि (स्त्री) १३ पट्टकीटगृहम् १४ मानवपञ्चावेष्टनानि (वेदान्त) १५ आकरोत्थ अभिनव सुवर्ण रजत वा १६ निधि (पु), निधान।

—कार, स पु (स) अभिधान शब्दसंग्रह, कार संपादक २ पट्टकीट।

—पाल, स पु (स) कोश(पा) ध्यक्ष, कोशाधीश।

कोशक, स पु (सं) अण्ड, पेशी २ अण्डकोष।

कोशल, स पु (स) देशविशेष २ अयोध्या।

कोशलिक, स पु (स न) दे 'कौशलिक'।

कोशागार, सं पु (स पु न) कोशगृह, भांडागार २।

कोशिका, स स्त्री (स) चषक, शराव। २ कंस, गल्वर्क।

कोशिश, स स्त्री (फा) यत्न, उद्योग, परिश्रम।

कोष, स पु (स) दे 'कोश'।

—अध्यक्ष, सं पु (स) दे कोष पाल-अधीश।

कोष्ठ, स पु (स) उदरमध्य २ गर्भाशयादय आवरणविशिष्ट अवयवा ३ गृहमध्य ४ प्राकार ५ धान्यागार रम् ६ परिवेष्टित स्थानम्।

—बद्धता, स स्त्री. दे 'कब्ज'।

कोष्टक, स पु (स) परिवेष्टकपदार्थ (दीवार, रेखादि) २ सारणी, अनेकगृहयुत चक्र अंक अक्षर,-जाल ३ अर्द्धचंद्रद्वय [उ ( ), [ ], { },] ४ सारणीवर्ग।

कोस, स पु (स क्रोश) सहस्रधनुस् (न), चतुःसहस्र (अष्टसहस्र) हस्तपरिमाण, द्विसहस्रदंड, गव्यूत, मील-द्वय-युग्म।

कोसों दूर, क्रि वि, अति, दूर दूरे-दूरत, सुदूर।
कोसों दूर रहना, मु, सुदूर-पृथक् स्था (भ्वा प अ)।
कोसना, क्रि स, (सं क्रोशन >) आक्रुश (भ्वा प से), गर्ह् (भ्वा आ से), अभिशप (भ्वा प से), शप् (भ्वा उ अ)।
पानी पी पी कर कोसना, मु, अत्यन्त आक्रुश् इ।
कोह, सं पु (फा) पर्वत, गिरि।
—नूर, स पु (फा + अ) हीरकविशेष।
कोहनी, स स्त्री, दे 'कुहनी'।
कोहरा, सं पु, दे 'कुहरा'।
कोहान, स पु (फा) उष्ट्रक्रमेलक, ककुद् ककुदम्।
कोहिस्तान, सं पु (फा) पर्वतीयप्रदेश, शैली स्थली।
कोहिस्तानी, वि (फा) पर्वतीय, शैल (ली स्त्री), पर्वतमय (यी स्त्री), नगप्राय, सपर्वत। सं पु, पर्वत गिरि-अद्रि, वासिन्, शैलाट।
कौंच, सं स्त्री [स कच्छु (स्त्री)>] रोमवल्ली, शूकशिंबी, कण्डुरा, २ तस्या बीजकोष।
कौंची, सं स्त्री (सं कञ्चिका) वेणुशाखा, कुञ्चिका।
कौंध, सं स्त्री (हिं कौंधना >) विद्युद्विलास, तडिद्द्युति, (स्त्री) चचलास्फुरण।
कौंधना, क्रि अ (स कनन = चमकना + अध >) विद्युत् (भ्वा आ से) विद्युत् विस्स् (भ्वा प से), सहसा प्रकाश (भ्वा आ से) स्फुर् (तु प से)।
कौंधा, सं पु, दे 'कौंध'।
कौंसिल, स स्त्री (अ) सभा, ससद्, सदस् (सद स्त्री)।
कौआ, सं पु दे 'कौवा'।
कौच, सं पु (अ) खट्टिका, सन्दी, निषद्या, पेचक।
कौटिल्य, सं पु (सं) चाणक्य, चन्द्रगुप्तमौर्यस्य महामन्त्रिन्। (स न) वक्रता, कुटिलता २ दुष्टता, छल, कपटम्।
कौटुंबिक, वि (सं) कुटुब-गृहजन परिवार, सम्बन्धिन् विषयक, कौल, पारिवारिक, गृह्य।
कौड़ा, स पु (सं कपर्दक) वराट, बाल क्रीडक।
कौड़ी, सं स्त्री (सं कपर्दिका) वराटिका, काकिनी णी। २ द्रव्य, धन ३ अक्षि नयन, गोल -गोल ४ मासग्रंथि (पु) ५ कृपाणाग्र ६ अधीननृपतिभ्यो ग्राह्य कर ७ उरोऽस्थि (न)।
(दो)—का,—काम का नहीं, मु अल्पमूल्य, तृणप्राय, निरर्थक, असार।
—भर, मु, अत्यल्प, किंचिद्, स्वल्प।
——को मुहताज या तग होना, मु, अकिंच नत्व, अत्यतदारिद्र्य, नितान्तनिर्धनता।
——चुकाना, मु, ऋण नि शेष परिशुध् (प्रे)-अपाकृ।
——जोड़ना, मु, धन सचि (स्वा प अ)-सग्रह् (क्र्, प से)।
कानी या फूटी कौड़ी, मु अत्यल्प,-किंच द्रव्यम्।
कौड़ियों के मोल, मु, अत्यल्पमूल्येन।
कौतुक, स पु (स न) कु(कौ)तूहल, कुतुक, जिज्ञासा २ आश्चर्य ३ विनोद, नर्मन् (न) ४ हर्ष ५ खेला, क्रीडा।
कौतुकी, वि (सं-किन्) सलील, सोल्लास, क्रीडाप्रिय, विनोदप्रिय, नर्मगर्भ।
कौतूहल, सं पु, दे 'कुतूहल'।
कौन, सर्व (स को नु) 'किं' के तीनों लिंगों के रूप (क, का, किं इ)।
—कौन, ब क (?)। दो में से—,कतर, कतरा, कतरत् (पु सं न) बहुतों में से—, कतम, कतमा, कतमद् (पु स्त्री न)।
कौप, वि (सं) कूप-अवट, विषयक सम्बन्धिन्।
कौपीन, सं पु (सं न) कक्षपट, धटी, घटिका, कच्छा, कच्छटिका, २ गुह्येंद्रिय, गुह्याङ्गानि ३ पाप ४ अकार्यम्।
कौबेरी, स स्त्री (सं) उत्तरदिशा, उदीची।
कौम, सं स्त्री (अ) वर्ण, जाति (स्त्री) २ कुल, वश ३ देश, राष्ट्र, विषय।
कौमार, सं पु (सं न) कुमारावस्था (५ अथवा १६ वर्ष पर्यंत), बाल्यत्वम्।
कौमारिक, वि (सं) कुमार, विषयक सम्बन्धिन्। सं पु, कन्यानामेव जनक।

कौमारिकेय, सं पु (सं) अनूढाकुमारी कन्या पुत्र तनय ।
कौमियत, सं स्त्री (अ) राष्ट्रियता, जातीयता।
कौमी, वि (अ) राष्ट्रि (ष्ट्री) य, देशीय जातीय।
—हुकुमत, सं स्त्री, राष्ट्रियशासन, स्वराज्य।
कौमुदी, सं स्त्री (सं) ज्योत्स्ना, दे 'चाँदनी'।
कौर, सं पु (सं कवल) ग्रास, गुडक, पिंड ।
कौरव, सं पु (सं) कुरुराजसंतान ।
—पति, सं पु, दुर्योधन ।
कौल, वि (सं) दे 'कुलीन'।
कौल, सं पु, दे 'कौर'।
कौल, सं पु (अ) प्रतिज्ञा, समय २ उक्ति (स्त्री)।
कौवा, सं पु (सं काक) वायस, ध्वांक्ष, मौकुलि (पु), एकाक्ष उलूकारि (पु), करट कुण, द्रोण २ अलिजिह्वा, शुंडिका, लंबिका ३ धूर्त ४ वंचक ।
—परी, सं स्त्री, अतिकुरूपिणी नारी।
—उड़ाना, मु बालशुंडिका उत्स्था (प्रे)।
कौशल, सं पु (सं न) चातुर्य, दाक्ष्य, नैपुण्य २ कुशल, मंगलम्।
कौशलिक, सं पु (सं न) उत्कोच, ढौकन लम्बा।
कौशिक, सं पु (सं) इंद्र २ गाधिनृप ३ विश्वामित्र ४ कोषाध्यक्ष ५ कोशकार ६ उलूक ७ नकुल ८ कौशेयवस्त्र ९ मज्जा १० उपपुराणविशेष ।
कौशे(षे)य, वि (सं) कौश(ष), कौशि(षि)क। सं पु (सं न) क्षौम, चीनांशुक पट्ट दु, पट्टांशुक, दुकूल, चीनवासस् (न)।
कौस्तुभ, सं पु (सं) विष्णुवक्षस्थो मणि (पु)।
क्या, सर्व (सं किम्)।
वि, कियत्, २ अत्यधिक ३ कीदृश विचित्र ४ अत्युत्तम।
अव्य किन्।
—कहना है या—बात है, मु, साधु साधु साधु सुष्ठु, उत्तम (सब अव्य)।
—खूब, मु, साधु, सुष्ठु इ ।
क्यारी, सं स्त्री (सं केदार) राजिका।
क्यों, क्रि वि (सं किम्) किं, केन हेतुना-कारणेन, किंनिमित्त, किमर्थं, कुत, कस्मात् २ कया रीत्या, कथम्।
—कर, कथ, केन प्रकारेण २ किमर्थं, किम्।
—कि,—यत, यत्, यस्मात्।
—नहीं, नि संदेह, नि संशय, अवश्य, ध्रुवम्।
क्रंदन, सं पु (सं न) रोदन, रुदित, अश्रुपात २ परिदेवना न, आ वि, क्रोश ।
क्रतु, सं पु (सं) यज्ञ, याग २ संकल्प ३ अभिलाष ४ विवेक ५ इंद्रिय ६ जीव ७ विष्णु ८ आषाढ ९ श्रीकृष्णपुत्र ।
क्रम, सं पु (सं) अनुक्रम, आनुपूर्वी-र्व्यं, पारंपर्य, परंपरा, विन्यास, व्यवस्था, संविधान, विरचन २ प्रकार, विधि (पु) रीति (स्त्री) ३ पादविन्यास ४ काव्यालंकारभेद।
——करके या से, क्रि वि, अनुक्रम, यथाक्रम, अनुपूर्वश आनुपूर्व्येण २ शनै शनै, अल्पाल्पश, उत्तरोत्तरम्।
क्रमण, सं पु (सं) पाद, चरण २ अश्व, घोट। (सं न) गमन चलनम् २ उल्लंघनम्, अतिक्रमणम्।
क्रमश क्रि वि (सं) दे 'क्रम क्रम करके'।
क्रमांक, सं पु (सं) क्रम, संख्या-गणना।
क्रमागत, वि (सं) क्रम आनुपूर्व्येण, आगत प्राप्त २ आनुवंशिक, परंपरा प्राप्त।
क्रमानुसार, क्रि वि (सं-रम्) क्रमश, यथाक्रम आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वश (सब अव्य)।
क्रमिक, वि (सं) क्रम परम्परा, आगत आयात, अनुपूर्व, क्रमबद्ध, आनुक्रमिक (-की स्त्री) २ परम्परीयण पैतृक (-की स्त्री), पित्र्य।
क्रमुक, सं पु (सं) दे 'सुपारी'।
क्रय, सं पु (सं) दे 'खरीद'।
—विक्रय, सं पु, दे 'खरीद फरोख्त'।
क्रव्य, सं पु (सं न) दे 'मांस'।
क्रव्याद, सं पु (सं) राक्षस, पिशाच २ सिंह ३ श्येन ४ मांसाशिन् (पु)।
क्रान्ति सं स्त्री (सं) महत्परिवर्तन, परिवर्त, २ चरणन्यसन ३ सूर्यभ्रमणमार्ग ४ राजद्रोह विरोध, राजविप्लव प्रजाक्षोभ ।
क्रिकेट, सं पु (अ) पट्टगेन्दुकम्।

क्रिया, सं स्त्री (सं) कर्मन् (न), कार्य, व्यापार २ चेष्टा ३ आरम्भ ४ व्यापार निर्देशक शब्द (व्या) ५ नित्यकर्मन् (न) ६ श्राद्धादिकर्मन् ७ चिकित्सा ।

—कर्म, सं पु (सं न) अन्त्येष्टि मृतक-, क्रिया कर्मन् ।

—विशेषण, सं पु (सं न) क्रियाया भाव कालरीत्यादिद्योतक शब्द (व्या)।

—इन्द्रिय, सं स्त्री (सं न) दे 'कर्मेन्द्रिय'

क्रिस्टल, सं [illegible] (अ) स्फटम् ।

क्रिस्ता(स्टा)न, सं पु (अ क्रिश्चियन्), खिस्तानुयायिन् ।

क्रीडा, सं स्त्री (सं) खेला, लीला, कूर्दन, खेलन, विहार २ कौतुक, विनोद विलास ।

क्रीत, वि (सं) कृतक्रय, मूल्येन लब्ध ।

क्रीतक, सं [illegible] (सं) क्रीतपुत्र ।

क्रुद्ध, वि (सं) कुपित, रुष्ट, कोपिन्, सामर्ष, सकोप, सरोष, समन्यु, क्रोध-कोप,-युक्त ।

क्रूर, वि (सं) निर्दय, कठोर, नृशंस, पाषाण कठिन, हृदय, निघृण, क्रूरकर्मन्, निष्करुण २ परपीडक ३ कठिन ४ तीक्ष्ण ५ उग्र ६ नीच ७ घोर ।

—कर्मा, वि (सं मन्) घोर, निर्दय, दारुण ।

क्रूरता, सं स्त्री (सं) निर्दयता, कठोरता, नृशंसता इ । २ रौद्रता, तीक्ष्णता ३ दुष्टता ।

क्रोड, सं पु (सं न) बाहोर्मध्य, भुजान्तर, उपस्थ, उत्सङ्ग, भोग, अङ्क २ उरस्-वक्षस् (न), उरसम् ।

—पत्र, सं [illegible] (सं न) परिशिष्ट, अवपत्र, पूरकपत्रम् ।

क्रोध, सं पु (सं) कोप, रोष, अमर्ष, मन्यु (पु), प्रतिघ, भीम, क्रुधा, रुषा, रुष्-क्रुध् (स्त्री) दे 'गुस्सा' ।

—करना, क्रि अ, क्रुध् (दि प अ), कुप् (दि प से)।

क्रोधित, वि (सं) दे 'क्रुद्ध' ।

क्रोधी, वि (सं-धिन्) कोपिन्, रोषिन्, अमर्षिन्, दे 'क्रुद्ध' ।

क्रोश, सं पु (सं) दे 'कोस' ।

क्रौंच, सं पु ([illegible]) कुंच चा, क्रौंचा, क्रुञ्च् (पु), कलिक, कालि(ली)क ।

क्लब, सं पु (अ) गोष्ठीगृहम् ।

क्लर्क, सं पु ([illegible]) लिपि पञ्जी, कार, लेखक, कायस्थ, चोर(ल)क ।

क्लान्त, वि (सं) म्लान, खिन्न, परि, श्रान्त, जातखेद, आयस्त ।

—मना, वि (सं-नस) दुर्मनस्क, विमनस्क, खिन्न ।

क्लान्ति, सं स्त्री (सं) श्रम क्लम, आयास, श्रान्ति (स्त्री), खेद अवसाद ।

क्लास, सं पु (अ) कुड्य-भित्ति,-घटी ।

—टावर, सं पु, घटा,-आलय -गृहम् ।

क्लिष्ट, वि (सं) दुःखित, क्लेदित, आर्त, पीडित २ दुष्कर, कठिन, दुस्साध्य ।

क्लीब, सं पु (सं) ष (श) ढ, सण्ड, शण्ड, नपुंसक, पुरुषत्वहीन २ दे 'कायर' ।

क्लीबता, सं स्त्री (सं) श(ष)ण्ढता, नपुंसकता २ कातरता ।

क्लेद, सं पु (सं) आर्द्रता, स्तेम, तेम । २ प्रस्वेद ।

क्लेश, सं पु (सं) दुःख, कष्ट, पीडा, व्यथा, वेदना, चिंता, आस्रव, आदीनव ।

क्लेशित, [illegible] (सं) दे 'क्लिष्ट' (१)।

क्लैब्य, सं पु (सं न) दे 'क्लीबता' ।

क्लोम, सं पु (सं न) क्लोम, क्लोमन् (न), तिलक, पुप्फुस, दे 'फेफडा' ।

क्लोरीन, सं स्त्री (अ) नीरजी, हरिनम् ।

क्लोरोफार्म, सं पु (अ) मूर्च्छेषम्, सशल्ये पक्रम् (औषधभेद)।

क्वणित, वि (सं) ध्वनित, मरव, सशब्द । सं पु (सं न) शब्द, स्वन ।

क्वथित, वि (सं) श्राण, शृत, क्वथित ।

क्वाथ, सं पु (सं) दे 'काढा' ।

क्वारंटाइन, सं पु (अ) निषिद्धसंसर्गगृह, २ संसर्गप्रतिबन्ध,, गमनागमननिषेध ।

क्वारा, वि (सं कुमार) दे 'कुंवारा' ।

क्वार्टर, सं पु (अ) (राज्यसंस्थादिनिर्मित) गृह, गेह, सदनं, भवनम् । २ पाद, चतुर्थांश ३ त्रिमासम्, वर्षपाद ।

क्वीन, सं स्त्री (अ) राज्ञी, राजपत्नी ।

क्षतव्य, वि (सं) क्षमार्ह, मर्षणीय, सोढव्य ।

क्षण, सं पु ([illegible]) अत्यल्पसमय, मुहूर्त, निमेष, पल, त्रिंशत्कलापरिमितकाल २ समय ३ अवसर ४ उत्सव ।

—प्रभा, स स्त्री , विद्युत (स्त्री), चचला ।
—भगुर, वि , विनश्वर, क्षणिक, अस्थिर ।
—भर, क्रि वि , क्षणमात्र, मुहूर्त पल, मात्रम् ।
क्षणिक, वि (सं) क्षणस्थायिन् , अनित्य, अस्थिर, विनश्वर, निस्सार, अस्थायिन् ।
क्षत, वि (सं) व्रणित, भिन्नदेह, ताडित, क्षतियुक्त, आहत ।
सं पु (स न) व्रण , क्षति (स्त्री), अरुस (न), आघात , ईर्म २ स्फोट , पिटक ।
—योनि, वि स्त्री (सं) समुक्ता, भुक्तसहवासा ।
—विक्षत, वि (सं) अतीव व्रणित विद्ध आहत ।
क्षति, स स्त्री (सं) क्षय , नाश २ अपचय , हानि (स्त्री) ३ व्रण , ईर्मम् ।
क्षत्र, सं पु (सं न) बल, शक्ति (स्त्री) २ राज्य ३ धन ४ शरीर ५ जल ६ तगर वृक्ष । (सं पु) क्षत्रिय ।
—पति, सं पु , नृप ।
क्षत्राणी, सं स्त्री (सं क्षत्रियाणी) (क्षत्रिय जाति की स्त्री) क्षत्रिया, क्षत्रिय(यि)का, क्षत्रियाणी २ (क्षत्रिय की पत्नी) क्षत्रियाणी, क्षत्रियी ।
क्षत्रिय, स पु (सं) वर्णविशेष २ राजन्य , बाहुज , मूर्धाभिषिक्त, क्षत्र ३ योध , भट , वीर ।
क्षत्री, स पु दे 'क्षत्रिय' ।
क्षपणक, स पु (सं) दिगम्बरयति २ बौद्ध भिक्षु ३ कविविशेष । वि , निर्लज्ज ।
क्षपा, सं स्त्री (सं) रात्रि (स्त्री), निशा, यामिनी ।
—कर,-नाथ, सं पु (सं) चन्द्र , सोम ।
क्षम, वि (सं) शक्त, समर्थ, उपयुक्त, योग्य ।
क्षमता, सं स्त्री (सं) योग्यता, सामर्थ्य, शक्ति (स्त्री) ।
क्षमा, सं स्त्री (सं) क्षांति (स्त्री) तितिक्षा, सहिष्णुता, मर्षण, सहनशीलता २ पृथिवी ३ खदिरवृक्ष , ४ दक्षकन्या ५ दुर्गा ६ वेत्रवती नदी ७ राधिकासखी ८ वर्णवृत्तभेद ।
—करना, क्रि स , क्षम् (भ्वा आ वे, दि प वे), सह् (भ्वा आ से), मृष् (दि उ से) ।
—शील, वि (सं) क्षमिन् , क्षमावत, क्षमितृ, सहिष्णु, सहन, क्षन्तृ, तितिक्षु, क्षमायुक्त ।
क्षमावान, वि (सं वत्) दे 'क्षमाशील' ।
क्षम्य, वि (सं) क्षन्तव्य, क्षमार्ह, क्षमोचित, मर्षणीय, सोढव्य ।
क्षय, सं पु (सं) अपचय , ह्रास २ कल्पात प्रलय ३ नाश , प्रध्वस ४ गृह ५ यक्ष्म , यक्ष्मन् (पु), राजयक्ष्मन् (पु) ६ रोग ७ अंत , अवसान, क्षयरोग , शोष , रोगराज , गदाग्रणी (पु), अतिरोग, रोगाधीश नृपामय ।
—कास, स पु (सं) क्षयथु , यक्ष्मकास (पु) ।
—मास, सं पु (सं) मलिम्लुच , मल अधिक, मास ।
—रोग, सं पु , दे 'क्षय' (५) ।
—रोगी, सं पु (सं गिन्) क्षयिन् , यक्ष्मिन् , रोगराज शोप,-ग्रस्त ।
क्षयी, वि (सं यिन्) अपचयिन् , ह्रासिन् २ शोपिन् , यक्ष्मिन् , रोगराजपीडित ।
—रोग, सं पु , दे, 'क्षय' (५) ।
क्षर, वि (सं) नश्वर, अनित्य ।
क्षरण, सं पु (सं न) शनै शनै बिंदुश बिन्दुक्रमेण गमन स्यदन स्रवणम् ।
क्षांत, वि (सं) क्षमाशील, क्षमावत , क्षमिन् २ सहिष्णु, सहनशील ।
क्षांति, सं स्त्री (सं) दे 'क्षमा' (१) ।
क्षार, सं पु (सं) सर्जिका, विडलवण २ लवण ३ दे 'शोरा' ४ दे 'सुहागा' ५ भस्मन् (न) ।
क्षिति, सं स्त्री (सं) भूमि (स्त्री), पृथिवी २ क्षय , ह्रास , नाश ।
—पाल, सं पु (सं) नृप ।
क्षितिज, सं पु (स न) दिक्-चक्र तट, दिगन्त , दिङ्मडल, अवरात , आकाशकक्षा । २ मगलग्रह , कुज ३ वृक्ष ४ दे 'केंचुआ' ।
क्षिप्त, वि (सं) त्यक्त, विसृष्ट, प्रास्त २ विदीर्ण ३ अवज्ञात ४ पतित ५ वातरोगग्रस्त ।
क्षिप्र, क्रि वि (सं न) द्रुत, सपदि, द्राक्, दे 'शीघ्र' ।
वि , त्वरित, सत्वर, जवन, वेगवत् , शीघ्र ।
—हस्त, वि (सं) शीघ्रकारिन् , आशुकर्तृ ।
क्षीण, वि (सं) सूक्ष्म, प्र ,तनु, श्लक्ष्ण २ कृशांग, कृश, क्षाम, क्षीण शुष्क, मास ३ नष्ट, ध्वस्त, क्षयगत ।

क्षीणता, स स्त्री (स) दुर्बलता, निःशक्तता २ सूक्ष्मता, तनुता ३ कृशता क्षामता ४ ह्रास, अपचय नाश।

क्षीर, स पु (स न) दुग्ध पयस् (न) २ जल ३ पायस स।

—निधि, स पु (स) सागर।

—नीर, स पु आलिंगन २ मिश्रणम्।

—सागर, स पु (स) क्षीराब्धि (पु) दुग्ध,-सागर समुद्र, क्षीरोद।

—सार, स पु, दे 'मक्खन'।

क्षीरज, स पु (स) चंद्र २ शंख ३ कमल ४ दधि (न)।

क्षीरजा, स स्त्री (स) दे 'लक्ष्मी'।

क्षीरधि, स पु (स) सागर, समुद्र।

क्षीरोद, स पु (स) दे 'क्षीरसागर'।

क्षीव, वि (स) उन्मद, समद, मदोन्मत्त।

क्षुण्ण, वि (स) प्रहत, चूर्णीकृत, खंडशो भिन्न।

क्षुद्र, वि (स) अधम, निकृष्ट, नीच २ अल्प, स्तोक ३ कृपण ४ कुटिल ५ दरिद्र।

क्षुद्रता, स स्त्री (स) तुच्छता, निकृष्टता २ कुटिलता ३ दरिद्रता।

क्षुधा, स स्त्री (स) दे 'भूख'।

क्षुधातुर
क्षुधार्त
क्षुधित } वि (स) दे 'भूखा'।

क्षुप, स पु (स) ह्रस्वक, ह्रस्वशाख गुल्म -भ।

क्षुब्ध, वि (स) व्याकुल, विह्वल आतुर, उद्विग्न २ चंचल ३ भीत, त्रस्त ४ क्रुद्ध।

क्षुर, स पु (स) नापितस्य लोमच्छेदकशस्त्र क्षौरी, क्षुरी क्षुरः २ शफ, गवादीनां पादाग्रम्।

क्षुरी, स पु (स रिन्) नापित, क्षौरिक मुंड, क्षुरिन्।

क्षुल्लक, वि (स) स्वल्प, स्तोक २ दुष्ट, दुर्वृत्त ३ निर्धन, दरिद्र। स पु, बाल, बालक।

क्षेत्र, स पु (स न) खेत (दा) २, भूमि (स्त्री) वप्र प्र। २ समभूमि ३ उत्पत्ति स्थान, उद्भव, उद्गम ४ प्रदेश ५ तीर्थस्थान ६ राशि (पु, मेषादि) ७ पत्नी ८ शरीर ९ अंतःकरण १० रेखावेष्टित स्थानम्।

—गणित, स पु (स) गणितशास्त्रभेद।

—फल, स पु (स न) वर्गपरिमाणम्।

क्षेत्रज, स पु (स) नियोगजपुत्र (धर्मशास्त्र)।

क्षेत्रज्ञ, स पु (स) जीव २ ईश्वर ३ कृषक। वि चतुर दक्ष, निपुण।

क्षेप, स पु (स) क्षपण, प्रेरण, प्रसन विसर्जन २ निन्दा ३ यापन ४ दूरता।

क्षेपक, वि (स) क्षेप्तृ, प्रासक, प्रेरक २ मिश्रित ३ निन्दनीय। स पु, नाविक २ प्रक्षिप्त निवेशित, लेख।

क्षेपण, स पु (स न) दे 'क्षेप' (१२)।

क्षेपणी, स स्त्री (स) अस्त्रविशेष २ नौकादंड, क्षेपणि (स्त्री)।

क्षेम, स पु (स पु न) लब्धरक्षण प्राप्तरक्षा २ मंगल, कुशल ३ अभ्युदय ४ आनंद ५ मुक्ति (स्त्री)।

क्षोणि, स स्त्री (स) क्षोणी पृथिवी।

—पति,—पाल, स पु (स) नृप, भूप।

क्षोद, स पु (स) चूर्ण, पिष्ट २ पेषण ३ जल।

क्षोभ, स पु (स) अशान्ति अनिर्वृति (स्त्री), चित्तचांचल्य व्यग्रता, उद्वेग, व्याकुलता २ भय ३ शोक ४ क्रोध।

क्षोभित, वि (स) दे 'क्षुब्ध'।

क्षोणी, स स्त्री (स) क्षोणि (स्त्री) पृथिवी।

क्षौद्र, स पु (स न) मधु (न) २ जल ३ क्षुद्रता। (स पु) चंपकवृक्ष ४ वर्णसंकरविशेष।

क्षौम, स पु (स पु न) अट्ट, अट्टालिका (२४) पट्ट अतसी शणज,-वस्त्र।

क्षौर, स पु (स न)
—कर्म, स पु (स मन् न) } दे 'हजामत'।

क्षौरिक, स पु (स) दे 'नाई'।

क्ष्मा, स पु (स) पृथिवी, अवनी।

क्ष्वेड, स पु (स) ध्वनि, शब्द २ विष ३ कर्णरोगभेद।

ख

ख, देवनागरीवर्णमालाया द्वितीयव्यंजनवर्णः, खकार।

खं, स पु (स न) शून्यस्थानं २ छिद्र ३ आकाश ४ इंद्रिय ५ बिंदु (पुं), शून्य ६ स्वर्ग ७ सुख ८ मकान् (न)।

खंख, वि (स) रिक्त शून्य २ निर्जन, वन्य।

खँखरा, वि, दे 'खोखर'।

खँखार, स पुं, दे 'खखार'।

खगर, स पु (देश) स्वीभूतोन्नतिवल्वेष्ट नावक। वि, अतिशुष्क।

खँगालना, क्रि स, (सं क्षालन) ईषत् धाव (भ्वा, चु उ से)-प्रक्षल् (चु)।

खग, सं पु (सं) खोर, खोर, खोद, खोट, विकलगति २ पादरोगभेद ।

खजन, सं पु (सं) खञ्जरीट, खञ्जन, मुनिपुत्रक, रत्ननिधि (पु), तूनीह ।

खंजर, स पु (फा) दे 'कगर'।

खजरी, स स्त्री (सं खञ्जरीट = एक ताल >) लघु, डमरु डिंडिम ।

खञ्जरीट, सं पु (सं) दे 'खञ्जन'।

खँड, स पु (सं खण्ड) दे 'खाँड'।

खड, स पु (सं पु न) स्व, शकल, दल, अंश, विभाग वि, दल, भिन्न २ देश ३ नवमसंख्या ४ रत्नदोषभेद ५ अध्याय ६ पाक्य, कृष्णलवण ७ दिशा । वि, अल्प, लघु, अपूर्ण ।

—करना, क्रि सं खण्ड-खण्डश छिद् (रु प अ)-लू (क्र उ से)-कृत् (तु प से)।

—काव्य, सं पु (सं न) लघुप्रबन्धकाव्यम् ।

—प्रलय, स पु (सं) ब्रह्माण्डस्य एकदेशीय आंशिक-नाश विध्वस क्षय ।

खडन, स पु (सं न) भजन, भेदन, छेदन, कर्तन, भोग्नम् २ प्रत्याख्यान, निराकरण, निरसनम् ।

खडनीय, वि (स) भेत्तव्य, छेत्तव्य २ प्रत्या ख्येय, निरसनीय ।

खडहर, सं पु (स खण्ड + हिं घर) ध्वसाव शेष, जर्जर-जीर्ण-शीर्ण-गृह नगरम् ।

खडरिच, सं पु, दे 'खञ्जन'।

खडशः, अ (स) विभागश, अशश, अव यवश (सब अर्थ)।

खडहर, सं पु, दे 'खंडर'।

खडित, वि (सं) भग्न, त्रुटित, लून, छिन्न २ असमग्र, अपूर्ण ।

खदक, सं स्त्री (अ) परिखा, खेय, राजधा न्यादिवेष्टनखात, २ वृहत्-श्वभ्र-गर्त-अवट ।

खंदा, वि (फा) छहास, हासक । स पु, हास, हास्यम् ।

—पेशानी, वि स्मेरानन, हास्ययुक्त

खंबा, खभ, खंभा, सं पु (सं स्तम्भ) स्तम्भ, स्तम, अवष्टम, स्थाणु (पु), स्थूणा ।

ख, सं पु (स न) गर्त-र्ता, अवट २ रिक्त स्थान ३ निर्गम ४ बिल, विवर ५ इन्द्रिय ६ कूप ७ शून्य ८ चक्रनाभिछिद्र ९ आकाश १० स्वर्ग ११ बिंदु (पु), शून्य १२ ब्रह्मन् (न) १३ शब्द १४ कण्ठस्थ प्राणनाडी १५ सुख १६ क्षेत्र १७ पुर । (सं पु) सूर्य ।

खकरा, स पुं (अनु) अट्टहास, उच्चैर्हास, प्र-अनि-हास ।

खक्खा, सं पु (हिं खत्री का 'ख') पाचनद क्षत्रिय २ अनुभवी पुरुष ३ महाराज ।

खखार, स पु (अनु) कफ, श्लेष्मन् (पु), सघाण, सौम्यधातु (पु), धन ।

खखारना, क्रि अ (अनु) कफ निस् (प्रे)-उद्गॄ (तु प से), निष्ठिव् (भ्वा दि प से)।

खखोंडर, स पु (स ख + कोटर >) तरुकोटर स्थ स्थ खगनीड -ड २ उलूक, निलय कुलाय ।

खग, सं पु (स) पक्षिन् (पु), अडज, नीडज २ गन्धर्व ३ देव ४ बाण ५ ग्रह ६ मेघ ७ सूर्य ८ चंद्र ९ वायु (पु)।

—पति, सं पु (सं) खगेश, वैनतेय, गरुड, खगकेतु (पु), खगराज ।

खगोल, स पु (सं) आकाश-गगन, मण्डल, गगनाभोग ।

—विद्या, स स्त्री (सं) ज्योतिःशास्त्र, ज्योतिष ।

खचखच, स स्त्री (अनु) पङ्के चरणध्वनि (पु)।

खचना, क्रि अ (स खचन) खच्-निवेश्, प्रतिवप् (कर्म) २ अंकित-चित्रित (वि) + भू ।

खचर, स पु (स) सूर्य २ मेघ ३ ग्रह ४ नक्षत्र ५ वायु ६ पक्षिन् (पु) ७ बाण ८ राक्षस । वि नभश्चर, गगनचारिन् ।

खचरा, वि (हिं खचर) वर्णसंकर, मिश्रज २ दुष्ट, शठ ।

खचाखच, क्रि वि (अनु) निविड, गाढ, अविरल, निरंतर । वि जनाकीर्ण, जनसकुल ।

—भरना, क्रि अ, स आपॄ (कर्म), परिपॄ (कर्म), सकुल समाकुल (वि) + भू ।

खचित, वि (सं) निवेशित, प्रत्युप्त २ लिखित, चित्रित ।

खच्चर, सं पु (देश) वेगसर, वेस (श) र, अश्वतर (स्त्री अश्वतरी)।

खज, सं पु (सं) मन्थ, मथन, तक्राट २ मथन, मथ ३ युद्ध, संग्राम ४ कर्छी (स्त्री)।

खज़ानची, सं पु (फा) कोषधन-अध्यक्ष अर्थाधिकारिन्।

खज़ाना, सं पु (अ) कोश ष, निधान, निधि (पु), द्रव्य, राशि (पु)-सग्रह २ वित्त, द्रविण ३ कोशागार, भांडागार, कोश (प) गृहम्।

खजिल, वि (फा) लज्जित, व्रीडित, लज्जित।

खजुली, सं स्त्री (सं खर्जू स्त्री) दे 'खुजली'।

खजूर, सं पु स्त्री (सं खर्जूर) (वृक्ष) खर्जूरी, दुष्प्रधर्षा, दुरारोहा, यवनेष्टा, हरिप्रिया २ (फल) खर्जूर, खर्जूरीफलम्। ३ मिष्टान्न भेद, खर्जूरिका।

खजूरी, वि (हिं खजूर) खर्जूर,-विषयक-सम्बन्धिन्, खार्जूर २ वेणीरूपेणग्रथित, -व्यावर्तित।

खटक, सं स्त्री (अनु) भय, त्रास २ चिंता।

खट[1] वि (सं षट्) दे 'छः'।

खट[1], सं पु (अनु) संघट्टजो ध्वनि (पु), खटितिशब्द, खटात्खटाशब्द।

—से, क्रि वि, सपदि, झटिति, क्षणेन।

खटकना, क्रि अ (अनु) खटखटायते (ना धा), खटखटा शब्द कृ २ मुहु मुहु पीड् (कर्म)-टीप् (दि आ से) ३ अयुक्त-असमीचीन अनुचित (वि)+प्रति इ (कर्म) ४ भी (जु प अ), त्रस् (दि प से) ५ वैरायते-कलहायते (ना धा), विवद् (भ्वा आ से) ६ अनिष्ट-अपकार आशंक् (भ्वा आ स)।

खटका, सं पुं (हिं खटकना) खटखटा, शब्द-नाद ध्वनि २ भय, त्रास, आशंका ३ चिंता ४ कील-क ५ अर्गल, तोलक ६ पादशब्द।

—लगाना, क्रि अ, त्रस् (दि प से), चिंतित-व्यग्र (वि)+भू।

खटकाना, क्रि स, दे 'खटखटाना'।

खटकीड़ा, सं पु (सं खट्वाकीट) दे 'खटमल'।

खटखट, सं स्त्री (अनु) खटखटा,-शब्द ध्वनि (पु) नाद २ कलह, विवाद ३ दे 'झंझट'।

खटखटाना, क्रि स (अनु) तीव्र अभिहन् (अ प अ)-तड् (चु) प्रह (भ्वा प अ) खटखटाशब्द कृ २ स्मृ (प्रे)।

खटगीर, सं पु, दे 'खटमल'।

खटखप्पर, सं पु, दे 'मसहरी'।

खटना, क्रि स, दे 'कमाना'।

खटपट, सं स्त्री (अनु) कलह, विवाद २ खटखटाशब्द, शब्द, घोष शिञ्जितम्।

खटबुना, सं पु (हिं खाट+बुनना) खट्वा, वाय-वाप, मंच-पर्यंक,-वाय-वाप।

खटमल, सं पु (सं खट्वामल>) उद्दंश, मत्कुण, ओकण, ओकोदनी।

खटमीठा, वि (हिं खट्टा+मीठा) अम्ल मधुर, शुक्तमिष्ट।

खटराग, सं पु (सं षड्रागा) मेघदीपकादय षड्रागा २ कलह ३ विस्वरता, विसंवाद ४ व्यर्थवस्तुजातम्।

खटाई, सं स्त्री (हिं खट्टा) अम्लता, शुक्तता २ अम्ल, द्रावक ३ अम्ल-शुक्त,-पदार्थ।

—पड़ना, सं पु, अम्लरोग (अजीर्णभेद)।

—में पड़ना, मु, चिरायते मन्दायते (ना धा), व्याक्षिप् (कर्म), अनिर्णीत (वि) स्था (भ्वा प अ)।

खटाका, सं पु (अनु) खत्कार, खटिति शब्द, महा-शब्द-रव।

खटखटा, सं पु (अनु) दे 'खटखट' २ शिंजित, क्वणित। क्रि वि, सखटखटाशब्दं २ अनवरत, सपदि।

खटापटी, सं स्त्री दे 'खटपट' २।

खटाव[1], सं पु (देश) नौकाबन्धनकील-कम्।

खटाव[2], सं पु, दे 'निर्वाह'।

खटास[1], सं पुं (सं खट्टास-श) गंधमार्जार, वनेचमन।

खटास, सं स्त्री (हिं खट्टा) अम्लता, शुक्तता।

खटिक, सं पुं, फलाहारविक्रतृजातिभेद, *खटिक।

खटिया, सं स्त्री (हिं खाट) लघु खट्वा पर्यंक-मंच, खट्विका, खट्वाका।

खटीक, सं पु (सं खट्टिक) सौनिक, शौनिक २ व्याध, लुब्धक, नास्तिक ३ दे 'खटिक'।

खटोलना, सं पु, दे 'खटिया'।

खटोला, सं पु (हिं खाट) दे 'खटिया'।

खट्टा, वि (स कटु>) अम्ल, शुक्त।
सं पु, बीज-फल,-पूर, दतशठ, जम्भक, जम्भल छोलग।

—चूक, वि, अति आयन्त, अम्ल शुक्त।

—मीठा, वि, दे, 'खटमीठा'।

—सा, वि, ईषदम्ल, आशुक्त।

जी—होना, मु, गतस्पृह-निर्विण्ण वितृष्ण (वि)+भू।

खट्टास, सं स्त्री (हिं खट्टा) दे 'खटास' (२)।

खट्टू, सं पु (प खटना) धनार्जक, वित्तोपार्जक २ कर्म, कर-कार।

खट्वा, सं स्त्री (सं) दे 'खाट'।

खड, सं (सं खात) गर्त-र्ता, अवट बिल, विवर २ दरी, उपत्यका।

खड़कना, क्रि, अ (अनु) खटखटा शब्द कृ। दे 'खटकना'।

खड़का, सं पु, दे 'खटका'।

खड़काना, क्रि स
खड़खड़ाना, क्रि स } दे 'खटपटाना'।

खड़खड़ाहट, स स्त्री (हिं खड़खड़) खड़खड़ा,-शब्द रव ध्वान २ तुमुलरव ३ कटु कर्कश परुष, ध्वनि (पु)।

खड़खड़िया, सं स्त्री (हिं खड़खड़) दे 'पालकी'।

खड़ग, सं पु (स खड्ग) असि, दे 'तलवार'।

खड़गी, वि (सं खड्गिन्) आसिक, खड्गधर २ खड्गमृग, दे 'गैंडा'।

खड़बड़ाहट, स स्त्री दे 'गड़बड़ाहट'।

खड़बड़ी, सं स्त्री दे 'गड़बड़ी'।

खड़मडल, स पु दे 'गड़बड़ी'।

खड़सान, स पु दे 'खरसान'।

खड़ा, वि (सं खडक=खम्भा>) (दडवत्) स्थित, उत्थित २ उच्छ्रित, उन्नत, उत्तान, ऊर्ध्व, स्तम्भरूप, रामध्य, वर्तिन् वर्धिन् ३ स्थिर, अचल, स्तब्ध, निश्चल, निश्चेष्ट ४ उपस्थित, प्रस्तुत ५ सज्ज, सनद्ध, उद्यत ६ निर्मित, रचित ७ अपक्व, असिद्ध ८ अनुत्खात, अलून ९ समस्त, समग्र [खड़ी (स्त्री) = स्थिता इ]।

—करना, क्रि सं, 'खड़ा होना' के प्रे रूप।

—रहना, क्रि अ, अचल-रुद्धगति (वि)+स्था इ)।

—होना, क्रि अ (पद्भ्या) स्था (भ्वा प अ), उद् स्था, २ विरम् (भ्वा प अ), निवृत् (भ्वा आ से), स्तम्भ (कर्म), स्थिरी निश्चली, भू ३ उपकृ, सहाय्य कृ ४ उच्छ्रित-उन्नत उत्तान (वि)+भू ५ निर्मा विरच (कर्म) ६ निधा निवेशू (कर्म)।

खड़े-खड़े, क्रि वि, स्थित एव २ झटिति, सपदि, सद्य (सब अव्य)।

खड़ाऊँ खड़ाँव, सं स्त्री (अनु खड+हिं+पाँव) कोशी-षी, (काष्ठ-) पादुका।

खड़ाका, स पु (अनु) खटखटा, शब्द ध्वान'।

खड़िया, स स्त्री (सं खड़िका) खड़ी, कठिनी दे 'चाक'।

खड़ी, स स्त्री (स खड़ी) दे 'खड़िया'।

खड़्ग, म पु (सं) दे 'खड़ग'।

खड़गी, स पु तथा वि, (स खड्गिन्) दे 'खड़गी'।

खड्ड, खड्डा, स पु (स खात) दे 'खड'।

खड्डी, स स्त्री (स खात>) तन्त्रवाप प, वाय(प) दण्ड, वेम, वेमन् (पु न), वान दण्डक, वाणि (स्त्री)।

ख़त, स पु (अ) सदेश, पत्र-लेख्य लेख २ हस्तलेख, स्वहस्ताक्षर ३ अक्षरसस्थान, लिखित, लिपि वि (स्त्री) ४ रेखा, लेखा, रेख ५ मुखरोमन् (न), श्मश्रु (न), कूर्च ६ क्षौर मुण्डनम्।

—आना, क्रि अ, प्रथमत मुखरोमाणि उद्भू।

—खींचना, क्रि स, रेखा आ-अभि लिख् (तु प से)।

—बनाना, क्रि स, मुड् (भ्वा प से, चु) क्षुरेण कृत् (तु प से)-छिद् (रु प अ) लू (क्र उ से)।

—किताबत, स स्त्री, (अ) पत्र-व्यवहार-विनिमय।

—शिकस्ता, सं पु (अ+फा) वक्रलेख।

ख़तना, सं पु (अ) शिश्नत्वक्छेद (इस्लाम)।
ख़तम, वि (अ ख़त्म) समाप्त, पूर्ण।
—करना मु, मृ (प्र), हन् (अ प व)।
—होना, मु, मृ (तु आ अ)।
ख़तर, स पु (अ) दे भय, त्रास।
—नाक, वि भयानक, भयङ्कर।
ख़तरा, स पु (अ) भय, भीति (स्त्री), दे 'भय' २ संशय, सन्देह।
खतरानी, स स्त्री, दे 'क्षत्राणी'।
ख़ता, स स्त्री (अ) अपराध, दोष २ छलें वञ्चना ३ प्रमाद, स्खलितम्।
—वार, वि (अ + फा) अपराधिन्, दोषिन्।
खतियाना, क्रि. स (हि खाता) आयव्यय पत्रिकायां यथास्थानं लिख् (तु प से)।
खतियौनी, स स्त्री (हि खतियाना) (वृहत्) *आयव्ययपत्रिका २ तत्र यथास्थान लेख* ३ क्षेत्रपतिसूचीपत्रम्।
खत्ता, स पु (सं खात) अवट, गर्त २ धान्यागारम् ३ निधि (पु) ४ राशि (पु)।
ख़त्म, वि, दे 'ख़तम'।
खत्री, स पु (स क्षत्रिय) पञ्चनदप्रान्ते आर्याणामुपजातिविशेष २ दे 'क्षत्रिय'।
खदबदाना, क्रि अ (अनु) बुद्बुदायते (ना धा) मन्द क्वथ् (कर्म) दे 'उबलना'।
ख़दशा, स पु (अ) भय, आशङ्का।
खदान, स स्त्री, दे 'खान'।
खदिर, स पु (स) सारद्रुम, कुष्ठारि (पु), गायत्री, दन्तधावन, बाल-तनय पत्र, यज्ञाङ्ग, कुशल्य, बकक्रन्द १ २ दे 'कत्था' ३ चन्द्र ४ इन्द्र।
खदेड़, स स्त्री (हि खदेड़ना) अनुधावनं, सत्त्वरं आच्छोदनम्।
खदेड़(र)ना, क्रि स (हि खदना) निरस्-स (प्रे), बहिष्कृ, निष्क्रम्-निर्गम (प्रे) २ अनुगम्, अनुधाव् (भ्वा प से), मृग (चु आ से)।
खद्दर, दे० 'खादी'।
खद्योत, स पु (सं) प्रभाकीट, दे 'जुगनूँ' २ सूर्य
खनक, स पु (स) दर्दुर (पु), मूष(षि)क २ खनित्स्वर ३ अवदारक, खातक ४ आकर, ख(खा)नि नी (स्त्री) ५ भूतत्ववेत्तृ (पु)। सं स्त्री (अनु) ध्वनि, शिञ्जितम्।
खनकना, क्रि अ (अनु) शिञ्ज् (अ आ से, चु), क्वण् (भ्वा प से), झणझणायते खणखणायते (ना धा)।
खनकाना, क्रि स, 'खनकना' के प्रे रूप।
खनखनाना, क्रि अ तथा क्रि स, दे 'खनकना' तथा 'खनकाना'।
खनना, दे 'खोदना'।
खनिज, वि (सं) धातु (पु), आकरज पदार्थ।
खनित्र, सं पु (सं न) अवदारणम्।
खपची, सं स्त्री, दे 'खपाच'।
खपड़ा(रा), सं पु (स खर्पर) १ कर्पर २ मृत्तालिका ३ भिक्षापात्रम्।
खपड़ी(री), सं स्त्री (सं खर्पर) धान्यभर्जनार्थं मृत्पात्रम्।
खपत, खपती, सं स्त्री (हि खपना) समावेश, व्याप्ति (स्त्री) २ विक्रय, पणन ३ व्यय, विनियोग।
खपना, क्रि अ (सं क्षपण >) प्र-उप-युज् (कर्म), व्यवहृ-व्याप् (कर्म) २ क्षि परिहा (कर्म), नश् (दि प से) ३ क्लिश्-तप्-पीड् (कर्म)
खपरै(है)ल, सं स्त्री (हि खपड़ा) मृत्पट्टिकाभि खर्परै वा आच्छादित पटल २ तादृशपटलयुक्त गृहम्।
खपाच, सं स्त्री (तु कमची) (काष्ठ-) खण्ड-डः, वंशस्य शकल-लं, २ कृशाङ्गः पुरुष।
खपाना, क्रि स (हि खपना) प्र-उप-युज् (रु आ अ, चु), उपयुज्य-उपभुज्य निरवशेषीकृ, व्यवहृ-व्याप् (प्रे) २ व्यय्-विनियुज् (चु) ३ वि-नश् (प्रे) ४ ताप्-पीड् (प्रे)।
खपुर, स पु (स न) गगनस्थो दैत्यनगरविशेष २ गगनस्था हरिश्चन्द्रनगरी।
खपुष्प, सं पु (स न) गगनकुसुम, असम्भव असाध्य वस्तु (न), दे, विषाण-शृगन्।
खप्पर(ड़), सं पु (सं खर्पर) मृत्पात्रभेद

२ खाल्या रुधिरपानपात्र ३ भिक्षाभाजन ४ कपाल-लम्।
खफगान, सं पु (अ) हृत्कम्पन २ (स्त्री रिया) गर्भाशयोन्माद, वातोन्माद, हर्षमोद।
खफ्गी, सं स्त्री (अ) प्रमाद प्रीति-अभाव २ कोप, क्रोध।
खफा, वि (अ) रुष्ट, कुपित, क्रुद्ध २ विषण्ण।
खफीफ, वि (अ) अल्प, न्यून २ लघु ३ क्षुद्र ४ लज्जित।
खफीफा, स स्त्री (फा) लघु-न्यायालय धर्माधिकरणम् २ कुल्टा, व्यभिचारिणी।
खबर, सं स्त्री (अ) समाचार, उदंत, वृत्तान्त वृत्त, वार्ता, प्रवृत्ति (स्त्री) २ ज्ञान, बोध ३ संदेश ४ संज्ञा, चैतन्य ५ जनप्रवाद।
—करना, देना या पहुँचाना, क्रि सं, विज्ञा (प्रे), नि-आ विद् (प्रे), संदिश (तु प अ), बुध्-अवगम् (प्रे)।
—लगाना, क्रि स, दे 'ढूंढना'।
—देने वाला, स पु, विज्ञापक, आवेदक, सूचक।
—ले जाने वाला, सं पु दूत, वार्ता-संदेश-हर।
खबरगीरी, सं स्त्री (अ+फा) अवेक्षा, रक्षण, चिंता २ सहानुभूति (स्त्री), सहायता।
खबरदार, वि (अ+फा) दे 'सावधान'।
खबरदारी, स स्त्री (अ+फा) दे 'सावधानता'।
खबीस, स पु (अ) मयस्क, रक्ष।
खब्त, सं पु (अ) उन्माद, चित्त, विप्लव भ्रम २ उत्सुकता, सामान्यविरोध।
खब्ती, वि (अ) उन्मादिन् २ अमूत्र, लोकबाह्य।
खब्बा, वि (प, स सर्व्य) वाम, सव्य, दक्षिणेतर २ वामहस्त, सव्यसाचिन्।
खम, स [illegible] (फा) वक्रता, जिह्मता, आभुग्नता कुटिलता।
—दम, सं पु, शौर्य, विक्रम।
—दार, त्रि, आनमित, आभुग्न, कुञ्चित।
खमसा, वि (अ) पञ्च, विषयक सम्बन्धिन्।
सं पु, पंचकम् २ पद्यभेद ३ अंगुली पंचकम्।
खमियाजा, सं [illegible] (फा) प्रतिफल २ दण्ड ३ कष्टम् ४ हानि (स्त्री)।
खमीदा, वि (फा) वक्र, निम्न, अराल।
खमीर, सं पु (अ) किण्व, जगल, मासर, मेदक, कारोत्तर, नग्नहू (पु)।
—उठाना, क्रि स किण्वेन संमिश्र (चु)। स पु किण्वन, किण्वीकरण।
खमीरा, वि (अ) किण्व-जगल, मिश्रित २ घनमधुक्वाथ ३ तमाखुभेद।
खयानत, [illegible] स्त्री (अ) सकपटाहरण, दुर्विनियोग २ चौर्य, वञ्चना।
—करना, क्रि स कपटेन आत्मसात् कृ अथवा विनियुज (रु आ अ)।
खयाल, स पु दे 'ख्याल'।
खयाली, वि, दे 'ख्याली'।
खर, स पु (सं) गर्दभ, रासभ २ अश्वतर, वेसर ३ बक ४ काक ५ रावणभ्रातृ (पु) ६ तृण, घास। वि, कठोर, परुष, कठिन २ तीक्ष्ण ३ स्थूल ४ अमंगल, अमांगलिक ५ निशित ६ प्रवण, तिर्यंच।
खर, स पु (फा) गर्दभ, रासभ।
—दिमाग, वि, जड़, अज्ञ, खरमति।
खरखर, स स्त्री (अनु) घर्घर, घर्घर-रव-शब्द।
—करना, क्रि स, घर्घरायते (ना धा), घर्घरध्वनिं कृ।
खरखरा, वि दे 'खुरखुरा'।
खरगोश, स पु (फा) शश, शशक, शूलिक क्षुद्ररोमन् (पु), रोमकर्ण।
खरच, स पु, दे 'खर्च'।
खरचना, क्रि स (फा खर्च) व्यय (चु), उत् वि, सृज (तु प अ), विनियुज (रु आ अ, चु), क्षय-व्यय-कृ।
खरचा, [illegible] पु दे 'खर्चा'।
खरज, सं [illegible] दे 'षड्ज'।
खरब, वि (सं खर्वम्) स पु, अर्बुदशतम् (१०००००००००००) २ अर्बुदशकम् (१००००००००००)।

ख़रबूज़ा, सं पु (सं खर्बूज) दशांगुल, षड्भुजा गुन रेखा मुखा, वृत्तकर्कटी ।

ख़रमस्ती, स स्त्री (फा) दुष्टता, कुचेष्टा ।

खरमास, स पु, दे 'खरवाँस' ।

खरल, स पु (स खल्ल) उदू (खू) खल, औषधमर्दनभाजनम् ।

—करना, क्रि स चूर्ण् (चु), चूर्णीकृ, पिष् (रु प अ), क्षुद् (रु उ अ) ।

खरवाँस, स पु (स खरमास >) पौषचैत्रौ । (इनमें मांगलिक कार्य वर्जित हैं) ।

खरसान, स स्त्री (स खरशाण) शाण- शाणी, भेद ।

खरहरा, सं पु (हिं खर = तिनका + हरना) अश्वमार्जनी ।

—करना, क्रि स, अश्व मृज् (अ प वे) ।

खरहा, स पु, दे 'खरगोश' ।

खरही, स स्त्री (हिं खर = घास) (घासादि) राशि (पु) २ घासभेद ।

खरा, वि (स खर = तीक्ष्ण) तिग्म, तीक्ष्ण १ अशिथिल, अविकृत, स्वच्छ, विशुद्ध, पवित्र, उत्तम ३ भगुर, भिदुर ४ निष्कपट, निश्छल ५ स्पष्ट यथार्थ, वादिन् वक्तृ ६ भूरि, बहु ६ कठिन, कीकस । खरी (स्त्री), विशुद्धा इ ।

—खेल, सं पु निष्कपटव्यवहार, सरलाचरण ।

—पन, स पु विशुद्धता, पवित्रता, उत्तमता, ऋजुता, निष्कपटता इ ।

खराई, स स्त्री दे 'खरापन' ।

ख़राद, स पु (अ खर्रात से फा खर्राद) भ्रमयन्त्र, कुन्द-द, भ्रम, भ्रमि (स्त्री), चक्र यन्त्रकम् ।

ख़रादना, क्रि स कुन्देन संस्कृ ।

ख़रादी, स पु (फा खर्राद) कुन्दिन्, चक्रिन् ।

ख़राब, वि (अ) निकृष्ट, गर्ह्य, निन्द्य, हीन २ दीन, दुर्गत ३ पतित, च्युत ४ दुष्ट, पापिन् ।

—करना, क्रि स मलिनी-कलुषी आविली, कृ २ स पथात् भ्रंश् (प्रे) कुमार्गे प्रवृत् (प्रे) ।

ख़राबात, स पु (अ) मदिरालय २ द्यूतगृहम् ३ वेश्यावीथी ।

ख़राबाती, सं पु (अ) मद्यप २ द्यूतकार, कितव ४ वेश्यागामिन् ।

ख़राबी, स स्त्री (अ) दोष, अवगुण २ दुष्टता, नीचता ३ दुर्दशा, दुर्गति (स्त्री) ।

खरारि(री), सं पु (स रि पु) रामचन्द्र २ श्रीकृष्ण ३ विष्णु ।

ख़राश, स स्त्री (फा) दे 'खरोंच' ।

खरिया, सं स्त्री, दे 'खड़िया' ।

खरिहान, सं पु दे 'खलियान' ।

खरी, सं स्त्री (सं) गर्दभी, रासभी ।

ख़रीद, सं स्त्री (फा) क्रय, मूल्येन ग्रहण २ क्रीतपदार्थ ।

—व फरोख़्त, सं स्त्री (फा) क्रयविक्रयौ (द्वि) ।

ख़रीदना, क्रि स (फा ख़रीदन) क्री (क्र् उ अ) मूल्येन अधिगम् अथवा लभ् (भ्वा आ अ) ।

ख़रीदार, स पु (फा) क्रयिक, क्रेतृ (पु), ग्राहक २ इच्छुक, अभिलाषिन् (पु) ।

ख़रीदारी, स स्त्री (फा) क्रय, मूल्येनादान ।

खरीफ, स स्त्री (अ) शारद शारदीय शरत्कालीन शस्य ।

खरोंच, स स्त्री (सं क्षुर् = खुरचना >) ईषत्क्षत, त्वग्व्रण ।

खरोंचना, क्रि स (पूर्व) क्षुर क्षुर् (तु प से) वि-अव-कृ (प्रे), (नखैन) क्षण् (त उ से) भर् (चु) लिख् (तु प से) ।

खरोट, स स्त्री, दे 'खरोंच' ।

खरोटना, क्रि, स दे 'खरोंचना' ।

ख़र्च, स पु (अ ख़र्ज) व्यय, धन, त्याग व्यय उत्सर्ग, विनियोग २ मूल्य, अर्घ, अर्हा ।

—करना, क्रि, स दे 'खरचना' ।

—होना, क्रि, अ, व्यय विसृज् विनियुज् (सब कर्म) क्षय-व्यय या (अ प अ) ।

ख़र्चना, क्रि स दे 'खरचना' ।

ख़र्चा, स पु (अ ख़र्ज) दे 'ख़र्च' २ अभियोग कार्य व्यवहारपद, व्यय ।

खर्चीला, वि (हिं ख़र्च) व्ययशील, अति व्ययिन्, अमितव्यय ।

खर्जूर, स पु (स) दे 'खजूर' २ वृश्चिक, दोष । (स न) रजत २ दे 'हरताल' ।

खर्पर, सं पु (सं) दे 'खप्पर'।
खर्ब, सं पु, दे 'खरब २ दे 'खर्व'।
खर्बूजा, स पु, दे 'खरबूजा'।
खर्राटा, सं पु (अनु) घर्घर ।
—भरना, भरना या लेना, क्रि अ, घर्घ रायते, घर्घरशब्द कृ, प्रगाढ स्वप् (अ प अ)।
खल, वि, (स) क्रूर, नृशंस २ अधम, नीच ३ दुष्ट, दुर्वृत्त ४ पिशुन ५ निर्लज्ज ६ छद्मिन् ।
सं पु, दुर्जन २ सूर्य ३ तमालवृक्ष ४ पृथिवी ५. स्थान ६ खल् (दू) खल ७ ८ दे 'खल्यान' तथा 'तलछट'।
ख़लक, सं पु (अ) जीवा प्राणिन (बहु) २ जगत् (न), ससार ।
ख़लकत, सं स्त्री (अ) सृष्टि (स्त्री), ससार २ जनौघ, जनसमर्द ।
खलड़ी, स स्त्री (हि खाल) त्वच् (स्त्री), त्वचा, त्वच, त्वचस् (न), छदिस (स्त्री), मांसादनी, असृग्धरा २ (पशुओं की) चर्मन् (न) ३ (मरे पशुओं की) अजिन, दृति, कृत्ति (स्त्री) ४ शिश्नाग्रचर्मन् (न)।
खलता, स स्त्री (सं) कुचेष्टा, दुष्टता, दुर्वृत्तता, खलत्वम् ।
खलना, क्रि अ (स खर = तीक्ष्ण >) अनु चित-अयुक्त-अयोग्य-अनुपपन्न (वि) प्रतिभा (अ प अ)-दृश (कर्म)।
खलबल, सं स्त्री (अनु) क्षोभ, विप्लव, अशान्ति-अनिर्वृति (स्त्री), प्रकोप, कलह, २ कोलाहल, उत्क्रोश ३ दे 'कुलबुलाहट'।
खलबलाना, क्रि अ (हि खलबल) बुद्बुदायते (ना धा), दे 'उबलना' २ क्षुभ (दि प से, क्र् प से), क्षुब्ध विह्वल (वि)+भू ३ दे 'कुलबुलाना'।
खलबली, स स्त्री, दे 'खलबल'।
ख़लल, सं पु (अ) विघ्न, अन्तराय, बाधा।
खलास, सं पु (अ) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) उद्धार । वि, मुक्त, उद्धृत, निस्तीर्ण २ अव सित, समाप्त ।
खलासी, स स्त्री (अ) उद्धार, निस्तार, मोक्ष । सं पु, पटमंडपरोपक २ भारवाह ३ पोतभृत्य ।
खलियान, सं पु (सं खल+स्थान) धान्यधान खल पु २ धान्यागार, कुशूल ३ राशि (पु) चय ।
खलियाना[1], क्रि स (हि, खाल) निस्त्व चयति (ना धा) निस्त्वचीकृ, चर्मन् (न) अपनी निह (दोनों भ्वा उ अ)।
खलियाना[2], क्रि स (हि खाली) शून्यी रिक्ती-कृ, रिच (रु उ अ)।
खलिश, स स्त्री (फा) वेदना पीडा २ वैर, द्वेष ।
खलिहान, स पु, दे 'खलियान'।
खली-ली, स स्त्री (सं खली) तैलकिट्ट, तिलकल्क पिण्याक, खलि (पु)।
ख़लीज़, स स्त्री (अ) दे 'खाड़ी'।
खलीफ़ा, स पु (अ) अध्यक्ष, अधिकारिन् २ यवननृपवंशविशेष ३ वृद्धजन ४ सूद, पाचक ५ सौचिक सूचिक ६ नापित ।
खलु, अव्य (स) निश्चयनिषेधजिज्ञासानुन यादिबोधकमव्ययम् ।
खलेल, स पु (सं खलितैल) सुगन्धतैल किट्टम्।
ख़लक, स स्त्री, दे 'खलक'।
ख़लल-मल्ल, दे 'गड़बड़'।
खल्ल, स पु (स) दे 'खरल' २ चर्मन् (न) ३ गर्त ४ चातक ५ दृति (स्त्री)।
खल्वड, स पु (स) चर्मन् (न) २ अजिन जलमशक ३ वृद्ध, जरठ, स्थविर ।
खल्ला, स पु (स खल्ल =चमड़ा >) जीर्णो पानह (स्त्री), पुराणपादुकम् ।
खल्वि (ल्ली)ट, खल्वाट, वि (सं) दे 'गंजा'। स पु, दे 'गंजापन'।
खवा, स पु, दे 'कंधा'।
खवैया, स पु (हि खाना) भक्षक, खादक भोक्तृ (पु)।
खश, स पु दे, खस'।
ख़शख़(खा)श, सं पु दे 'खसखस'।
खस, स स्त्री (फा खस) उशीर र, नलद, वलवास, वीरणमूल, सेव्य, शीत सुगन्धि, मूलक वीर, वीरभद्र, हरिप्रियम् ।
खसकना, क्रि अ (अनु) दे खिसकना'।
खसकाना, क्रि स, दे 'खिसकाना'।

खसखस, स स्त्री (सं खस्खस) खसतिल, सूक्ष्म, तडुल-बीज, सुबीज ।
—रस, स पु (स) दे 'अफीम'।
खसखसा, वि (अनु) शुष्कचूर्णरूप, सिकतिल, शर्करिल ।
खसखास, स स्त्री, दे 'खसखस'।
खसम, स पु (अ) पति (पु) भर्तृ (पु) २ स्वामिन् (पु) सेव्य, नाथ ।
खसरा', स पु (अ) क्षेत्रसूची, केदार लेख्यम् ।
खसरा', स पु (फा खारिश) रोमान्तिका, त्वग्रोगभेद २ खर्जू-कडूति भेद ।
खसलत, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री), स्वभाव, २ दे 'आदत'।
खसारा, स पु (अ) हानि क्षति (स्त्री), दे 'घाटा' ।
खसिया, वि (अ खस्सी) लुप्तवृषण छिन्नमुष्क । स पु, क्लीब, षढ २ अज ।
खसोट, स स्त्री (हिं खसोटना) बलात् अकस्मात् सहसा ग्रहण-अपहरण-आच्छेदन २ बलात् उत्पाटन-उन्मूलनम् ।
खसोटना, क्रि, स (स कुट >) असम्यक उन्मूल् उत्पट् (चु)-लुञ्च् (भ्वा प अ) २ बलात्-सहसा अपहृ (भ्वा उ अ)-आच्छिद् (रु प अ) ग्रह् (क्र उ से)।
खसोटी, स स्त्री, दे 'खसोट'।
खस्ता, वि (फा खस्त) भिदुर, भगुर, भिदेलिम २ क्षत, त्रुटित ।
—कचौड़ी, स स्त्री, भिदुर स्निग्ध सुपिष्टिका शष्कुली ।
—दिल, वि भग्न, खिन्न हृदय ।
—हाल, वि, दुर्गत, दरिद्र, दुर्गत ।
खस्सी, स पु (अ) छिन्नमुष्क अज-छाग २ षढ, क्लीब । वि, लुप्तवृषण, छिन्नमुष्क ।
—करना, क्रि स, वृषणौ छिद् (रु प अ) उत्पट् (चु)।
खाँ, स पुं (तातारी, काल सरदार) स्वामिन् (पु), अधीश २ पठानानां उपाधि (पुं)।
—साहब,-बहादुर, स पु, उपाधिभेदौ ।
खाखर, वि (सं स-छिद्र>) सच्छिद्र, सरध्र २ रिक्त-शून्य,-गर्भ, अन्त-शून्य ।
खागड-ढा, वि (स खड्ग >) शृंगिन्, विषाणिन् २ सशक्त ३ सबल ४ उद्दण्ड ।
खाँचा, स पु (स कर्षणम् >) महा-पिटक करड कंडोल २ वृहद्, नर पञ्जरम् ।
खाड, स स्त्री (स खण्डम्) अशोधित असस्कृत, सिता-शर्करा ।
खाडव, स पु (स न) कुरुक्षेत्रप्रदेशे वन विशेष ।
—प्रस्थ, स पु (स) प्राचीननगरविशेष ।
खाँडा', स पु (स खड्ग >) हिथार, खड्ग असि निस्त्रिंश कृपाण ।
खाडा', स पु (स खड-ड) भाग, अश ।
खाँसना, क्रि अ (स कासन) कास् (भ्वा प से), क्षु (अ प से)।
खाँसी, सं स्त्री (स कास) काश, उत्काश, क्षवथु (पु)।
खाई, स स्त्री (स खानि >) परिखा, खात, खातकम् ।
खाऊ, वि (हिं खाना) अत्याहारिन्, ▓▓ भोजिन्, अघार, घस्मर ।
—उड़ाऊ, वि मुक्तहस्त अर्थनाशिन् ।
खाक, स स्त्री (फा) धूलि (पु स्त्री), धूली, पांशु सु, रजस् (न), रेणु २ भस्मन् (न) भसित भूति (स्त्री)।
—रोब, स पु, खल्पू (पु), समार्जक ।
—सार, वि, नम्र, विनीत ।
—सारी, सं स्त्री, नम्रता, विनय ।
खाका, स पु (फा) बाह्यरे(ले)खा, बाह्याकार २ अपरिष्कृतालेख्य, पाण्डुलेख्य ३ प्रतिरूप, प्रतिमान ४ सकलन, सख्यानम् ।
—उड़ाना, मु उप-अव-हस् (भ्वा प से)।
खाकी, वि (फा) मार्तिक, मृण्मय २ धूलि रजो-वर्ण रंग ३ स स्त्री, जलहीन-अनासिक्त, भूमि (स्त्री)।
खाज, सं स्त्री [स खर्जु (पु)] खर्जू (स्त्री), कडु-कडूति (स्त्री), खस, पामा, विचर्चिका ।
—होना, क्रि अ, कडूतिं खस अनुभू ।
कोढ की खाज, मु, क्षते क्षार, गंडे स्फोटक ।
खाजा, स पुं (स खाद्य) भक्ष्य भोज्य खाद्य वस्तु (न)-पदार्थ २ भोजन ३ मिष्टान्नभेद ।
खाट, स स्त्री (खट >) खट्वा, शयनम् ।

—खटोला, सं पु गृह-उपस्करः-परिच्छदः, पारिच्छदम्।

खाड़ी, सं. स्त्री (सं खात>) समुद्र-, वक्र-, कलात्मनम्।

खात, सं पु (सं. न) खनन, अवदारण २ परिखा, खान, खातन ३ गर्त ४ कूप ५ कासार ६ पुरीषादिगर्ते।

ख़ानमा, सं पु (फा) स्नातिः (स्त्री) २ वस्तु।

खाता^१, सं पु (अ खत>) गणना-गणस्थान, लेखिका २ विषय-, विभाग।

खाना^२, सं पु (सं खात>) कुद्दू (म्) ए, धान्यकोष्ठ कहोल।

ख़ातिर, सं स्त्री (अ) सम्मान-, आदर। क्रि वि, हेतो, अर्थे, हेतो।

—ख़्वाह, क्रि वि (अ +फा) यथोचित, यथेष्ट यथेष्टम्।

—जमा, सं स्त्री (अ)सन्तोष-, सान्त्वनम्।

—दारी, सं स्त्री (अ +फा) आदर,

खान^२, सं. स्त्री. [सं खनिः (स्त्री)] आकर, खनि (खा)नी निः (स्त्री) २ उपस्थिति-स्थान ३ कोषः।

ख़ान, सं. पु., दे 'ख़ाँ'।

खानक, सं. पु (सं)खानकः, खनकः, खनित् (पु), आखनिक २ कुम्भकार ३ गृह, कारक-भेदकः, चण्ड-, ऐरकार।

ख़ानक़ाह, सं स्त्री (अ) यवनभिक्षुविहारः।

ख़ानगी, वि (फा)गृह्य, कौटुम्बिक।

ख़ानदान, सं पु (फा) वंश, अन्वय, कुलम्।

ख़ानदानी, वि (फा) सत्कुल-उद्भवः, अभिजन् २ दिव्य, पैतृक।

खानपान, सं पु (सं न) अशनम्, भक्ष्य पेय २ खादनपान शुचिनीति (न) ३ शुचि रीतिविधि (पु) ४ परस्परमेलन, सम्बन्ध (स्त्री)।

ख़ानसामा, सं पु (फा) (यवनादीनां)

खाया पिया निकालना, मु, तीव्र परुष तद् (तु) ग्रह (भ्वा प अ)-अभिहन् (अ प अ)।
मुँह की खाना, मु, पूर्णतया पराजि परिभू (कर्म)।
खाना, स पु (फा) गृह, सदन् (न), आलय २ (मेज आदि का) सपुट, निष्कर्षणी, चलसमुद्गक ३ कोष पुट ट ४ कोष्ठक, सारणी चक्र, विभाग।
—खराब, वि (फा) विनाशक, अनिष्टोत्पादक, क्षयकर (री स्त्री)।
—जगी, स स्त्री (फा) पारस्परिकविग्रह, गृहयुद्धम्।
—तलाशी, स स्त्री (फा) गृहान्वेषणम्।
—दारी, स स्त्री (फा) गार्हस्थ्यम्।
—पुरी, स स्त्री (फा + हिं पूरना) कोष्ठक पूरणम्।
—बदोश, वि (फा) अस्थिर अनियतधाम, य(या)यावर। स पु अस्थानिन्, नित्यविहारिन्।
—शुमारी, स स्त्री (फा) जनसंख्यानम्।
खानि, स स्त्री (स) दे 'खान' २ प्राचुर्य ३ राशि (पु) ४ कोष ५ प्रकार ६ दिशा।
खानिक, स स्त्री, दे 'खान'।
खाबड़-खूबड़, वि (अनु०) विषम, नतोन्नत।
खाम वि (फा) अपक्व, आम २ अयुक्त अदृढ ३ अननुभवशाली।
खामखाह, क्रि वि (फा ख्वाह म ख्वाह) बलात्, हठात् २ अवश्य, ध्रुवम्।
खामी, स स्त्री (फा) आमता, अपक्वता २ अनुभवहीनता ३ न्यूनता।
खामोश, वि (फा) नि शब्द, नीरव।
खामोशी, स स्त्री (फा) नीरवता मौनम्।
खार, स पु (स क्षार) १ दे 'क्षार' २ दे 'सज्जी' ३ दे 'भस्म' ४ धूलि (स्त्री) ५ गुल्मभेद।
खार, स पु (फा) दे 'काँटा' २ ईर्ष्या, असूया, द्वेष।
—दार, वि, कटकिन्, सकट।
—खाना, मु, ईर्ष्य्-ईर्ष्य् (भ्वा प से) असूय् (ना धा), स्पर्ध् (भ्वा आ से)।
खारा, वि पु (स क्षार) क्षार, विशिष्ट-युक्त २ ईषल्लवण, ३ लवण, लवणगुणविशिष्ट ४ कटु अरुचिकर (—री स्त्री)।
खारा, स पु (स क्षारक) करड, कटोल, पटक २ घासादिबधनजाल ३ विवाह सस्कारोपयुक्तासनभेद।
खारि, स स्त्री (स) दे 'खारी'।
खारिज, वि (अ) बाह्यकृत, अपास्त २ निराकृत प्रत्याख्यात।
—करना, क्रि स, बहिष्कृ, अपास् (दि प से) २ निराकृ, प्रत्याख्या (अ प अ)।
—होना, क्रि अ, बहिष्कृ-अपास् (कर्म) प्रतिक्षिप् प्रत्याख्या (कर्म)।
खारिजा वि (अ) बाह्य, बाहीक बहिस्थ, विदेशीय।
खारिश, खारिश्त, स स्त्री (फा) दे 'खुजली'।
खारी, स स्त्री (स) षोडश-चतुर, द्रोण परिमाणम्।
खारी, स स्त्री (हिं खारा) ऊषरज, ऊषरलवण, क्षारलवण। वि स्त्री, दे 'खारा' के स्त्री रूप।
—पानी, स पु, क्षार, पानीय जलम्।
खाल, स स्त्री (स क्षाल >) दे 'चमड़ी' (१ २) २ आवरण ३ शव ४ भस्त्रा स्त्री।
—उड़ाना, मु०, निर्दय परुष-चड निष्ठुर तड् (चु)-प्रह (भ्वा प अ)।
—उधेड़ना या खींचना, मु त्वच अपनी (भ्वा प अ)-निर्हृ निष्कुष (भ्वा प अ), निस्त्वचयति (ना धा)।
खाल, स स्त्री (स खात) निम्नभू (स्त्री) २ रिक्तस्थान अवकाश ३ दे 'खाड़ी' ४ गाम्भीर्यम्।
खाल, स पु (अ) तिल, तिलक तिल, कालक अङ्क।
खालसा, वि (अ खालिस) एकाधिकृत, एकाधिष्ठित २ राजकीय। स पु, शिष्य (सिक्ख) जातिविशेष।
खाला, वि (हिं खाली) निम्न, अवनत, अवच।
—ऊँचा, वि उच्चावच, नतोन्नत, विषम।

ख़ाला, सं स्त्री (अ) मातृस्व(ष्व)सृ (स्त्री), मातृभगिनी।
—ज़ाद, वि पु, मातृष्वसीय, मातृष्वसेय (स्त्री,-सीया,-सेयी)।
—जी का घर, मु, सुकर कर्मन् (न)।
ख़ालिक़, सं पु (अ) स्रष्टृ विधातृ-सृष्टि कर्तृ (पु)।
ख़ालिस, वि, (अ) दे 'खरा' (२)।
ख़ाली, वि (अ) रिक्त, शून्य २ अनधिष्ठित ३ रहित, हीन ४ अव्यापृत, निष्क्रिय ५ अधिक, उद्वृत्त ६ निष्फल, व्यर्थ। क्रि वि, केवलम्।
—करना, क्रि स, रिच् (रु प अ), परित्यज (भ्वा प अ), उत्सृज (तु प अ)।
—होना, क्रि अ रिच परित्यज्-उत्सृज (कर्म)।
—हाथ, मु, अकिंचन, दरिद्र २ नि शस्त्र।
ख़ालू, स पु (अ) मातृष्वसृधव।
ख़ाविंद, स पु (फा) पति, भर्तृ २ स्वामिन् प्रभु (पु)।
—करना, मु, अपर पति विद् (तु प वे) वृ (स्वा उ से), द्वितीय विवाह कृ।
ख़ास, वि (अ) स, विशेष, विशिष्ट, विलक्षण, असाधारण २ रहस्य, संवरणीय, गोप्य ३ स्वकीय आत्मीय ४ पवित्र ५ प्रधान, मुख्य।
—कर, क्रि वि, विशेषत, विशेषेण।
—व आम, सं पु, जनता, लोक।
ख़ासा, वि (अ ख़ास) उत्तम, उत्कृष्ट २ स्वस्थ ३ मध्यवर्गीय ४ सुंदर ५ परिपूर्ण।
ख़ासा, स पु (अ) नृपभोजन, भूपाहार २ राज्ञो गजोऽश्वो वा। ३ श्वेतवस्त्रभेद ४ पुरिकाभेद।
ख़ासि(सी)यत, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री), स्वभाव २ गुण, धर्म।
ख़ास्सा, स पु (अ) दे 'ख़ासियत'।
खिंचना, क्रि अ (स कर्षण>) आ-म, कृष् (कर्म), २ दृढीकृ नियम् (कर्म) ३ बद्, नी (कर्म) ४ (चित्रादि) वर्ण्-आलिख् (कर्म) ५ उद् गुप् (दि प अ) नि-आ पा (कर्म) ६ स्तु (भ्वा प अ), क्षर (भ्वा प से)।
खिंचवाना, क्रि प्रे } व 'खींचना' के प्रे
खिंचाना, क्रि. प्रे } रूप।
खिंचाई, सं स्त्री, } १ आकर्षण,
खिंचाव, स पु, } २. आकर्ष
खिंचावट, खिंचाहट, सं स्त्री } ३ दृढीकरण, ४ नियमन ५ घनता, सुमसक्ति- (स्त्री) मा, हति (स्त्री) ६।
खिंडना, क्रि अ, दे 'बिखरना'।
खिचड़ी, सं स्त्री (सं कृसर) कृशर, मिश्रौदन न, कृसरा, वैदलोदन न, खेचरान्न। २ मिश्रितद्रव्य, प्रकीर्णक विविधवस्तुमिश्रणम्।
—करना, मु, एकीकृ, सं, मिश्र (चु)।
—होना, मु, मसृज्-संपृच् (कर्म), एकीभू।
खिजना, क्रि अ (स खिद्) दे 'चिढ़ना'।
ख़िज़्र, ख़िज़्र, स पु (अ) देवदूत विशेष (इस्लाम), २ पथप्रदर्शक, मार्ग-दर्शक।
खिजलाना, क्रि स तथा क्रि अ, दे 'चिढ़ाना' तथा 'चिढ़ना'।
ख़िज़ाँ, स स्त्री (फा) शिशिर, दे 'पतझड़' २ अवनतिकाल।
ख़िज़ाब, स पु (अ) केश-बाल-मूर्धज, लेप रग-राग वर्ण।
—करना या लगाना, क्रि स, केशान् रंज् वर्ण (चु)।
ख़िजालत, स स्त्री (अ) लज्जा त्रपा, व्रीडा।
खिझना, क्रि अ (स खिद्) दे 'चिढ़ना'।
खिझाना, क्रि स, दे 'चिढ़ाना'।
खिड़की, स स्त्री (स खट(ड)क्किका) वातायन, ल्पुद्वार, गवाक्ष। २ अररी, कपाटम्।
ख़िताब, स पु (अ) उपाधि (पु), मानपदम्।
ख़ित्ता, स पु (अ) प्रदेश, भूभाग।
ख़िदमत, स स्त्री (अ) सेवा, परिचर्या।
—गार, सं पु (अ + फा) सेवक, परिचारक।
—गारी,-गुज़ारी, स स्त्री (अ + फा) सेवा, परिचर्या।
खिन, स पु, दे 'क्षण'।
खिन्न, वि (स) दु खित, पीडित २ सचिंत, चिंतित ३ विषण्ण, शोकमग्न, ३. दीन निराश्रय। ४ श्रांत, क्लांत।
ख़ियानत, स स्त्री, दे 'ख़यानत'।
खिरनी, स स्त्री (स क्षीरिणी) हैमी, हिमजा, हिमदुग्धा (वृक्षभेद) २ तत्फलम्।
ख़िराज, स पु. (अ) दे 'कर' (टैक्स)।

खिल, सं० पु (सं पु न) ऊसर-र २ रिक्त-स्थान-स्थलम् ३ परिशिष्ट ४ शेषांश ५ विष्णु ६ ब्रह्मन् (पु)।

खिलअत, सं स्त्री (अ) सम्मानवेश च।

खिल्कत, सं स्त्री, दे 'खल्कत'।

खिलखिल, स स्त्री (अनु०) हास, हसित हसनम्।

खिलखिलाना, क्रि अ (अनु) उच्चै सशब्द हस् (भ्वा प से), अट्टहास कृ।

खिलना, क्रि अ (सं स्खलन अथवा किरण ?) विकस प्रफुल्ल (भ्वा प से), स्फुट् (तु प से), भिद् (कर्म) २ प्रसद् (भ्वा प अ) ३ शुभ् (भ्वा आ से) ४ पृथक् भू। सं पु, विकसन, फुल्लन, प्रस्फुटन इ०।

खिला हुआ, वि, विकसित, उद्भिन्न, प्रस्फुटित।

खिलवत, स स्त्री (अ) निर्जन विजन-स्थानम्।

खिलवाड़, सं पु (हिं खेलना) खेला, लीला, क्रीडा, मनोविनोद, विहार।

खिलवाड़ी, वि, दे 'खिलाड़ी'।

खिलवाना, क्रि प्रे, अन्येन+'खाना' धातुओं के प्रे रूप।

खिला, सं स्त्री (अ) शून्यकम्।

खिलाई[1], स स्त्री (हिं खिलाना) अन्नदान, पोषण २ भक्षण, खादनम्।

—पिलाई, स स्त्री, भुक्तपीत, खादनपान, खानपान २ अन्नपानदान, पोषण २ पोषणार्थ।

खिलाई[2], स स्त्री (हिं खिलाना) अंकपाली, शिशुपालिका।

खिलाड़, खिलाड़ी, वि (हिं खेलना) क्रीडा खेला लीला, परशील। स पु, क्रीडक, खेलक २ ऐन्द्रजालिक मायाविन् (पु) ३ धूर्त।

खिलाना[1], क्रि प्रे, 'खाना' के प्रे रूप।

खिलाना[2], क्रि प्रे, खाना के प्रे रूप।

खिलाना[3], क्रि प्रे, 'खिलना' के प्रे रूप।

खिलाफ, वि (अ) विरुद्ध विपरीत।

खिलाफत, स स्त्री (अ) देवदूत-नृप प्रतिनिधित्व-उत्तराधिकारित्वम्।

खिलौना, स पु (हिं खेलना) क्रीडाद्रव्य, क्रीडनक, क्रीडनीयक २ क्षुद्राकार।

खिल्य, वि (सं) परिशिष्ट वर्णित लिखित।

खिल्ली, सं स्त्री (हिं खिलना) हेला, नर्मन् (न), विनोद।

—बाज, वि, विनोदशील, नर्मप्रिय।

—बाजी, सं स्त्री, विनोदशीलता, नर्मप्रियता।

खिश्त, स स्त्री, (फा) दे 'ईंट'।

खिसकना, क्रि अ (अनु) शनै सृप (भ्वा प अ) चल (भ्वा प से) २ प्र, स्खल् (भ्वा प से) ३ सत्वर-अलक्षित निभृत अपया (अ प अ) अपसृ (भ्वा प अ) गम्। सं पु, शनै-मृदु-सर्पण, स्खलन, अलक्षित गमन अपसरण इ०।

खिसकाना, क्रि स, 'खिसकना' के प्रे० रूप।

खिसलना, क्रि अ, दे 'फिसलना'।

खिसलाव, सं पु } दे 'फिसलाव' तथा
खिसलाहट, स स्त्री } 'फिसलाहट'।

खिसारा, सं पु (अ) हानि क्षति (स्त्री)।

खिसिआ(या)ना, क्रि अ (हिं खीस= दाँत) लज्ज् (तु आ से), त्रप (भ्वा आ वे) व्रीड (दि प से) २ क्रुध (दि प अ), कुप् (दि प से)। वि, लज्जित, हीण, हीत।

खींच, स स्त्री (हिं खींचना) कर्ष, कर्षणम्।

—तान, स स्त्री, प्रतिस्पर्धा, विजिगीषा २ अर्थान्तरकल्पना।

खिसियाहट, स स्त्री, दे 'खीस'।

खींचना, क्रि स (स कर्षण) आ-कृष् (भ्वा, प अ), बलात् दिशाविशेषे प्रेर् (प्रे)-नी (भ्वा उ अ) प्रवृत् (प्रे) ३ हृ (भ्वा उ अ) दे 'घसीटना' ३ निश्वस (प्रे), बहिर अप, नी। ४ उद् भच (भ्वा उ से), पर्युदच। ५ शुष (प्रे) ६ स्रु स्यद् (प्रे) ७ वर्ण (चु), आ-अभि लिख (तु प से) ८ रुध् (रु उ अ)। स पु, आकर्ष, आकर्षण, नयन, हरण, निश्वासन, उद्धरण, शोषण स्रावण, आलेखन, रोध।

खींचने योग्य, वि आ, कर्षणीय, नेय, हर्तव्य, इ।

खींचाखींची, }
खींचातान, } स स्त्री, दे 'खींचतान'।
खींचातानी, }

खीज, खीझ, स स्त्री (हिं खीजना) दे 'चिढ़'।

खीज(झ)ना, क्रि अ (स खिद) दे 'चिढ़ना'।

खीमा, सं ▮ (अ) दे 'खेमा'।

खीर, स स्त्री (स क्षीर रा>) पायसं, परमान्न, क्षीरिका २ दुग्ध, पयस (न), क्षीर, स्तन्यम्।

—चटाई, सं स्त्री अन्नप्राशनसंस्कार (कर्म)।

खीरा, स पु (स क्षीरक) (लता) पीतपुष्पा, त्रपुककर्कटी, बहु-कोष-तुन्दिल,-फला, कण्टकिलता। (फल) त्रपुष, कण्टकिफल, सुशीतल, सुधावासम्।

—ककड़ी, मु, तुच्छवस्तु (न)।

खीरी, स स्त्री (स क्षीर-र>) उधस्-अधम ओधस (न) आपीनम्।

खील, सं स्त्री (हिं खिलना) धाना (स्त्री, बहु) लाजा' (पु, स्त्री, बहु)।

खीली, स स्त्री (हिं खील) बीटी टि (स्त्री), वीटिका, ताम्बूलम्।

खीस, सं स्त्री (हिं खीज) प्रीति प्रसाद,-अभाव २ क्रोध, रोष ३ लज्जा, त्रपा। ४ कुस्मित, कुहस।

खीसा, सं पु (फा कीसा) पुट ट, प्रसेव, स्यूतपुट २ शुक्ति, कोष श।

खुक्ख, खुख, वि (सं शुष्क>) रिक्तहस्त, अकिंचन।

खुखड़ी, सं स्त्री (देश) सूत्र-कूर्चा, पिंड पिंड (२) असि-खड्ग, धेनुका पुत्रिका।

खुगीर, स पु (फा) दे 'जीन'।

खुच (खु) र, स स्त्री (स कुक्कर>) दोष, न्यूनता २ छिद्रा वेषिता, पुरोभागि(ग)ता।

खुजलाना, क्रि स (सं खर्जन>) नखै स्तवर्षे घृष (स्वा प से)। क्रि अ, कण्डू खस खर्जु अनुभू। कण्डूयति ते (ना धा)।

खुजलाहट, सं स्त्री (हिं खुजलाना) दे 'खुजली'।

खुजली, स स्त्री (हिं खुजलाना) (शरीरी) कडु (पु, स्त्री) कडू-कडूति (स्त्री), कडू यन, कण्डूया, खर्जु -जू (स्त्री) २ (रोग) कच्छु च्छू (स्त्री), पामा, पामन् (पु), विचर्चिका।

—उठना या चलना, क्रि अ, दे 'खुजलाना' (क्रि अ)।

खुजाना, क्रि. स, क्रि अ., दे 'खुजलाना'।

खुटका, स पु, दे 'खटका'।

खुटपन-ना, स पु (हिं खोटा) दोष, अवगुण', क्षुद्रता, दुष्टता।

खुटाई, सं स्त्री, दे 'खुटपन'।

खुट्टी, स स्त्री (अनु) दे 'रेवड़ी' २ (प = वटन का सूराख) गड-कुड्य,-आधार'।

खुड्डी, सं स्त्री, दे 'सुरण्ड'।

खुड़ला, स पु (देश) कुक्कुटालय २ चट कालय।

खुड्डी, खुड्ढी, स स्त्री (स खुड>) शौच कूपगर्त २ शौचकूपे पादाधानम्।

खुतबा, स पु (अ) प्रशंसा, स्तुति (स्त्री), प्रशस्ति (स्त्री)।

खुद, अव्य (फा) स्वय, स्वत, स्वेच्छया (समास के आदि में 'स्व' तथा 'आत्मन्' भी प्रयुक्त होते हैं। उ स्वार्थ, आत्महत्या)।

—कुशी, स स्त्री (फा) आत्म-स्व-निज, घात हत्या वध।

—गर्ज, वि (फा) स्वार्थ,-पर परायण।

—गर्जी, स स्त्री (फा) स्वार्थ, परता पराय णता।

—मुख्तार, वि (फ) स्वतन्त्र, स्वच्छन्द।

—मुख्तारी, स स्त्री फा) स्वातन्त्र्य, स्वाधी नता।

खुदना, क्रि अ (हिं खोदना) खन्-उत्कृ-तक्ष् (कर्म), मवद् भिद् (कर्म)।

खुदरा, स पु (स क्षुद्र>) क्षुद्र-साधारण,-वस्तु (न)। वि, दे 'खुरदरा'।

खुदवाई, सं स्त्री (हिं खुदवाना) अन्य कृत,-खनन-खाति (स्त्री) २ खनन, मृत्या-भृति (स्त्री)।

खुदवाना, खुदाना, क्रि प्रे, 'खोदना' के प्रे रूप।

खुदा, स पु (फा) स्वयभू (पु), दे 'ईश्वर'।

—न ख्वास्ता, मु, ईशो न कुर्यात्।

—परस्त, वि, ईश्वरपूजक, आस्तिक।

—खुदा कर के, मु, येन केन प्रकारेण, अति, कष्टेन कृच्छ्रेण, यथाकथञ्चित्।

—की मार, मु, ईश्वर दैव, प्रकोप।

खुदाई, ▮ स्त्री (फा) ईश्वरत्व २ सृष्टि(स्त्री)।

खुदाई, स स्त्री (हिं खोदना) खाति (स्त्री) २ खननक्रिया ३ खननभृति (स्त्री)।

खुदाताला, सं पु (अ) परमेश्वर', परमेश'।

खुदावंद, सं पु (फा) ईश्वर २. स्वामिन्(पुं) ३ भगवत् श्रीमत् (■), आर्य, मिश्र (सब सम्मानसूचक शब्द)।

खुदी, सं स्त्री (फा) अहम्भाव, अहङ्कार २ अभिमान, दर्प ।

खुद्दी, सं स्त्री (सं क्षुद्र>) चैदल्तण्डुला दीनां कण ।

खुनक, वि (फा) शीत, शीतल, हिम।

खुनकी, सं स्त्री (फा) शैत्यम्।

खुनखुना, सं पु (अनु) झणझण, रणरण, क्रीडनकभेद ।

खुनस, सं स्त्री (सं खिन्नमनस् >) कोप, क्रोध ।

खुनसाना, क्रि अ, दे 'क्रोध करना'।

खुनसी, वि, (हि खुनस) कोपन, क्रोधन, रोषण।

खुनाक, सं पु दे 'डिफथीरिया'।

खुफिया, वि (फा) गूढ, गुप्त, निभृत।

—पुलिस, सं स्त्री (फा+अं) प्रच्छन्न गुप्त गूढ, रक्षिण (बहु), अपसर्पा, चरा, स्पशा ।

खुभ(भ)ना, क्रि अ (अनु) आ प्र विश् (तु प अ), व्यध् (दि प अ) छिद् (रु प अ), छिद्र प्रवेश कृ।

खुमार, सं पु (अ) म(मा)द, क्षीवता, शौण्डता २ तन्द्रा, निद्रालुत्व ३ निशाजागरज शैथिल्यम्।

खुमारी, सं स्त्री, दे 'खुमार'।

खुरंड, सं पु (सं खुर्=खुरचना >) शुष्क व्रणत्वच् (स्त्री), हर्मिछाही २ किलास, सिध्मम्।

खुर, सं पु (सं) शफ-क, विख, निघृष्व, क्षुर २ खट्वादीनां पादुकम्।

—दार, वि, खुरिन्, शफिन्।

खुरखुर, सं स्त्री (अनु) खुरखुर घरघर, शब्द आदि ।

खुरखुरा, वि (सं खुर्=खुरचना >) दुःस्पर्श, असम, विषम, श्लक्ष्णताशून्य।

खुरचन, सं स्त्री (हि खुरचना)• खुरित, पय पात्रखुरित २ खुरित, मिष्टान्न-वर्दित,-भेद ।

खुरचना, क्रि स (■ खुरण) खुर् क्षुर् (तु प से), उद् वि, लिख् (तु प से) २ अप म्ला,-मृश् (अ प के), विलुप् (प्रे)।

खुरचनी, सं स्त्री (हि खुरचना) उल्लेखनी, निर्घर्षणी २ काष्ठकुद्दाल, खनित्र ३ दुग्धपात्र खुरितम्।

खुरजी, सं स्त्री (फा) दे. 'थैला'।

खुरदरा, वि नतोन्नत २ असम, विषम, पिण्ड कादृत, श्लक्ष्णता स्निग्धता परिष्कार,-शून्य।

खुरपा, सं ■ (सं क्षुरप्र) घासछेदनशस्त्र, लघु,टंग टंग-खनित्र २ चर्मकारोपकरणभेद ।

खुरमा, सं पु (फा) खर्जूर, खर्जूरी फलम् २ दे 'छुहारा' ३ मिष्टान्नभेद ।

खुरली, स स्त्री (सं) शस्त्राभ्यास २ शस्त्राभ्यास स्थलम्।

खुरॉट, वि, दे 'खुर्राट'।

खुराक, सं स्त्री (फा) भोज्य, भक्ष्य, खाद्य, आहार, भोजन २ (औषध) मात्रा, भाग ।

खुराकी, वि (फा) औदरिक, अद्मर, घस्मर। स स्त्री, (दैनिक) भोजनव्यय।

खुराफात, स स्त्री (अ) अश्लील ग्राम्य-अशिष्ट, वचनानि (बहु) २ ग्राम्य दुर्वचनानि (बहु) ३ कलह ।

खुरी, सं स्त्री (सं खुर >) शफ चिह्न, चिह्न २ दे 'पत्ती'।

—करना, मु, अतिक्षिप्र चल (भ्वा प से)।

खुर्द, वि (फा) लघु, अल्प, सूक्ष्म।

—बीन, स स्त्री (फा) सूक्ष्मदर्शकयन्त्र, अण्वीक्षणयन्त्रम्।

—बुर्द, वि, (फा) नष्टभ्रष्ट २ समाप्त।

खुर्राट, वि (देश) धूर्त, कुटिल, शठ २ वृद्ध ३ अनुभविन्।

खुलना, क्रि अ (सं खुड् तोडना >) (द्वारादि) वि अपा वृ (कर्म), निरर्गली भू, अमुद्रत-उद्घाटित (वि)+भू २ (कली आदि) विकस्-दल् फुल्ल् (भ्वा प से), भिद् (कर्म) ३ (आँख) उन्मिष् (तु प से), उन्मील् (भ्वा प से) ४ (दाग) प्रसृ (भ्वा प अ), विनश् (कर्म) ५ (मुख) व्यादा (कर्म), विजृम्भ् (भ्वा आ से) ६ (रहस्यादि) प्रकटी-व्यक्ती-आविर्-+भू, प्रकाश् (भ्वा आ से) ७ प्रारभ्, प्रस्तु (कर्म) ८ उद्ग्रथ् (कर्म), शिथिलीभू, उन्मुच् (कर्म) ९ (भूमि आदि विद्-भिद् (कर्म)।

खुल खलना, मु , व्यक्त प्रकाश-अनिभृत निर्मय (मिध्दित् कार्य) कृ अथवा विषयासक्त (वि)+भू ।

खुलवाना, कि प्रे , 'खोलना' के प्रे रूप ।

खुला, वि (हिं खुलना) उद्दाम, उद्ग्रथित, उत्सृष्ट मुक्त, बन्धनहीन २ शिथिल, प्रस्रंस, विगलित ३ शिथिलसन्धि, विरल ४ स्पष्ट प्रकट, व्यक्त ५ अनावृत व्यावृत, असवृत ६ विस्तृत, विस्तीर्ण, विशाल । खुलना के धातुओं के क्तांत रूप ।

खुले आम | **खुले खज़ाने** | **खुले मैदान** | **खुल्लम खुल्ला** — क्रि वि, प्रत्यक्ष, प्रकट प्रकाश व्यक्त निर्मय, नि शङ्कम् ।

खुल्वा, कि प्रे , 'खोलना' के प्रे रूप ।

खुलासा, स पु (फा) साराश , सक्षेप ।

खुश, वि (फा) प्रसन्न, प्रमुदित, प्रहृष्ट ।

—होना, कि अ , आनन्द् (भ्वा प से), मुद् (भ्वा आ से), हृष् (दि प से) परि-म-तुष् (दि प अ), दे 'प्रसन्न होना' ।

—किस्मत, वि (फा) सौभाग्यशालिन् ।

—किस्मती, स स्त्री (फा) सौभाग्यम् ।

—ख़त, वि (फा) लिपिन, सुलेखक ।

—ख़ती, स स्त्री (फा) सुलेखन-कौशल नैपुण्य विद्या ।

—ख़बरी, स स्त्री (फ) शुभ-सु समाचार वार्ता वृत्त-उदन्त ।

—गवार, वि (फा) रुचिर, हृद्य, आ नदक ।

—दिल, वि (फा) प्रसन्नमनस , सनोषिन् ।

—नसीब, वि (फा) सौभाग्यवत्, धन्य ।

—नसीबी, स स्त्री (फा) सौभाग्यवत्ता ।

—नुमा, वि (फा) सुदर्शन, मनोहर, सुन्दर ।

—बू, स स्त्री (फा) दे 'सुगध', सुवास ।

—बूदार, वि (फा) सुगन्धित, सुगन्धि ।

—रंग, वि (फा) सुरंग, सुवर्ण ।

—हाल, वि (फा) समृद्ध, सपन्न ।

—हाली, स स्त्री (फा) अभ्युदय , समृद्धि (स्त्री) ।

खुशामद, स स्त्री (फा) चाटु (पु न), चाटूक्ति (स्त्री) अति मिथ्या-स्तुति (स्त्री), प्रशसा, चाटुवाद ।

—करना, कि स, मिथ्या-अतिमात्र अतीव प्रशस (भ्वा प से)-स्तु (अ प अ)-नु (अ प से), अभि परि-स स्तु, चाटूक्तिभि सात्व-उपलल्-उपछद (चु), चाटूनि वद् (भ्वा प से) ।

खुशामदी, वि (फा खुशामद) मिथ्या प्रशसक, चाटुकार, प्रियवद, चाटुवादिन् (पु) ।

—टट्टू, स पु , अत्यनुरोधिन् चाटुपटु ।

खुशी, स स्त्री (फा) हर्ष , प्रसन्नता, मोद , आनन्द प्रमोद , आह्लाद , सन्तोष उल्लास , चित्तप्रसाद , प्रीति तुष्टि (स्त्री) ।

—मनाना, कि अ दे 'खुश होना' ।

खुश्क, वि (फा , स शुष्क,) शुष्क, अनल, निर्जल, वान, नीरस २ रूक्ष, स्नेहशून्य, अदिग्ध ३ म्लान, म्लान विशीर्ण ।

—साली, स स्त्री (फा) अनावृष्टि (स्त्री), २ दुर्भिक्षम् ।

खुश्का, स पु (फा) जलपक्वौदन नम ।

खुश्की, स स्त्री (फा) शुष्कता, निर्जलता, २ रूक्षता ३ स्थल ४ दे 'पलेथन' ।

खुसरफुसर, स स्त्री (अनु) दे 'कानाफूसी' ।

खुसिया, स पु (अ) मुष्क , वृषण, शुक्र ग्रंथि ।

—बरदार, वि चाटु कार-वादिन् ।

खुसूसियत, स स्त्री (अ) विशेषता, विशिष्टता, विलक्षणता ।

खूँख़ार, वि (फा) रक्त रुधिर, प्रिय, जिघांसु, हिंस्र । २ भीषण ३ निर्दय ।

खूँट, स पु (स खड –ड) अश, भाग । २ अस्र , कोण ३ अन्त ४ पार्श्व दर्वे ५ कर्णमलम् ।

खूँटा, स पु (स क्षोड) शङ्कु, कील कीलक पुष्पल २ नागदन्त भारयष्टि (स्त्री) ३ काष्ठस्थूणा ।

खूँटी, स स्त्री (हिं खूँटा) लघु-कील -कीलक , २ नागदन्त -तक ३ तनुरुह-लोम, मूल ४ शस्यलवनानतर क्षेत्रस्थ काडमूलम् ।

खूँद, स स्त्री (हिं खूँदना) अश्वादीना खुरेण भूमिलेखनम् ।

खूँदना, कि स (क्षुण्ड् तोडना >) (अश्वादय) खुरेण पृथिवी आहन् (अ प अ)-घृष् (भ्वा प से)-लिख् (तु प से) ।

खुद, खूदड, खूदर, स स्त्री (म क्षुद्र>) दे 'कूड़ा'।

खून, स पु (फा) रुधिर, रक्त, लोहित शोणित, असृज् (न), अस्र २ वध, हत्या।

—करना, क्रि स, वध घात हत्या कृ, हन् (अ प अ), मृ-व्यापद् (प्रे) ३ प्रमादेन नश् अवसद् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, दैवात् हन् मार्-व्यापद् (कर्म)।

—खराबा, स पु, (फा) खून-खराबा, वध हत्या, रक्त, पात स्राव।

—ख्वार, वि दे 'खूँख्वार'।

—थूकना, स पु, रक्तष्ठीवनम्।

—आँखों में उतर आना, मु, कोपारुणनयन (वि)+भू।

—उबलना या खौलना, मु, अतीव कुप् (दि प से)।

—का प्यासा, मु, जिघांसु, वधोद्यत।

सवार होना या चढ़ना, मु, वधाय हत्यायै सज्ज-उद्यत (वि)+भू।

खूनी, स पु (फा) घातक, हत् (पु)। वि, हन्तुकाम, वधैषिन्, जिघांसु।

खूब, वि (फा) अच्छा, भद्र, उत्तम, श्रेष्ठ। क्रि वि, सम्यक्, साधु, शोभनम्।

—रू, वि (फा) सुमुख (सुमुखी स्त्री)।

—सूरत, वि (फा) सुन्दर, सुरूप।

—सूरती, स स्त्री (फा) सुन्दरता, सुरूपता।

खूबी, स स्त्री (फा) अच्छता, उत्तमता २ गुण, विशेष, विलक्षणता।

खूसट, स पुं (स कौशिक) दे 'उल्लू' २ जरठ, स्थविर। वि, रसिकताशून्य, शुष्क हृदय २ जड ३ कुदर्शन।

खेचर, स पु (स) गगनविहारिन्, व्योमग २ ग्रह, नक्षत्र ३ वायु (पुं) ४ देव ५ विमान नं ६ खग ७ मेघ ८ भूतप्रेत ९ राक्षस १० विद्याधर ११ शिव १२ १३ दे 'पारा' तथा 'कसीस'।

खेचरान्न, स पु (स न) दे 'खिचड़ी'।

खेटक, स पु (स) मृगया, आखेट २ कर्षक ग्राम ३ नक्षत्र ४ बलदेवगदा ५ यष्टि (स्त्री) ६ ढाल, फलकम्।

खेटकी, स पुं, दे 'शिकारी'।

खेड़ा[1], स पु (स खेट) लघुग्राम, ग्रामटिका।

—पति, स पु ग्रामणी (पु)।

खेड़ा[2], स पु (देश) विविधान्नयोग।

खेत, स पु (स क्षेत्र) केदार, भूमि (स्त्री), वप्र प्रं, वल्ज, निष्कुट, राजिका, पाटीर २ शस्य, कृषिफल ३ रण-युद्ध-समर, भूमि ४ खड्ग, फल पत्र। ५ उत्पत्तिस्थान ६ (पशुना) जाति (स्त्री)।

—आना या रहना, मु, वीरगति, आप् (स्वा प अ), युद्धे हन् (कर्म)।

—छोड़ना, मु, युद्धात् पलाय् (भ्वा आ से)

खेतिहर, स पु, दे 'किसान'।

खेती, सं स्त्री (हि खेत) दे 'कृषि' २ शस्य, कृषिफलम्।

—बारी, सं स्त्री, दे 'कृषि'।

खेद, सं पुं (सं) अनुशोक, अनुताप, २ दुःख, शोक, आधि (पु), आ(अ)र्ति (स्त्री), क्लेश ३ ग्लानि क्लान्ति श्रान्ति (स्त्री)।

—जनक, वि (स) अनुशोकप्रद, दुःखदायक, क्लेशकर, आर्तिजनक।

खेदना, क्रि स स (खेद >) दे 'खदेरना'।

खेदा, स पु (हि खेदना) गजादिबन्धनपञ्जरम्। २ दे 'शिकार'।

खेदित, वि (सं) खिन्न, अनुतप्त २ श्रान्त, क्लान्त।

खेना, क्रि स, (सं क्षेपण >) नौदण्डेन सचल् प्रेर् प्रनुद् प्रणुद् (प्रे)। २ नौका वह् प्रेर् (प्रे) ३ दे 'बिताना'।

खेप, सं स्त्री (सं क्षेप >) सकृद्वाह्यो भार २ पोतस्थ द्रव्य ३ नौकादीनां सकृत् यात्रा।

खेपना, क्रि स (स क्षपण) दे 'बिताना'।

खेम, स पु, दे 'क्षेम'।

खेमा, स पु (अ) पट-वस्त्र, मण्डप-गृह वेश्मन् (न), दूष्य श्यम्।

—गाड़ना, क्रि स, दूष्य रच् (चु) -उप क्लृप् (प्रे)।

खेल, स पु (स खेला) क्रीडा, केलि (स्त्री), खेलन, लीला २ कुत्र्, चरित ३ सुकर क्षुद्र, कार्य ४ कामक्रीडा, सम्भोग ५ अभिनय, नाटक ६ कौतुक, विचित्रकार्य ७ (पशुओं के लिए) जलद्रोणि (स्त्री)-णी।

—समझना, मु, सुकर मन् (दि आ अ)।

खेलना, क्रि अ (स खेलन) खेल विल्स क्रीड् (भ्वा प से), विह् (भ्वा प अ) २ मभोग-रतिक्रिया कृ ३ विवर चल् (भ्वा प से) ४ भूतावेश आगमनि चल (प्र) क्रि स नटरूप (चु) अभिनी (भ्वा प अ)। (जुआ आदि) दिव (दि प से) ग्लह् (चु उ से)।

खेलनी, स स्त्री (म) चातुरंगक्रीडाण २ शार शारि (पु)।

खेलवाड़, स पु, दे 'खिलवाड़'।

खेलवाड़ी, वि, दे 'खिलाड़ी'।

खेलवाना, क्रि प्र, 'खेलना' के प्रे रूप।

खेला, स स्त्री (स) क्रीडा लीला।

खेलाड़ी, वि, दे 'खिलाड़ी'।

खेलाना, क्रि प्रे, 'खेलना' के प्रे रूप।

खेलि, स स्त्री (स) क्रीडा लीला। स पु पशु २ खग ३ सूर्य ४ शर ५ गीतम्।

खेवक, स पु
खेवट, स पु } (हिं खेना) दे 'केवट'।

खेवट, स पु (हिं खेव+वट प्रत्य) क्षेत्र पत्रिलेख।

खेवना, क्रि स, दे 'खेना'।

खेवा, स पु (हिं खेना) तार्य, तरपण्य, आतर तारिक २ नौकया नदीलंघन ३ वार, अवसर, पर्याय ४ माराक्रान्ता नौ (स्त्री)।

खेवैया, स पु (हिं खेना) दे 'केवट'।

खेस, स पु (देश) अवस्तर, आस्तरपट।

खेसारी, स स्त्री (स क्षार>) कलायभेद।

खेह (र) स स्त्री (स क्षार) रजस् (न), धूलि (स्त्री) २ भस्मन् (न) असितम्।

खैंचना, क्रि स, दे 'खींचना'।

खैंचवाना, क्रि प्रे, 'खींचना' के प्रे रूप।

खैंचाखैंच-ची
खैंचातान-नी } स स्त्री, दे 'खींचतान'।

खैर, स पु (स खदिर) सारद्रुम, यज्ञाग कुष्ठारि (पु), दंतधावन २ (हिं कत्था) खादिर, खादरसार ३ खगभेद।

ख़ैर, क्रि वि (अ) अस्तु, एव, साधु भद्र, सुष्ठु (सब अव्य) २ का चिंता।

स स्त्री, कुशल, मंगलम्।

—आफियत, स स्त्री (अ) कुशलक्षेमम्।

—ख्वाह, वि (अ+फा) शुभचिंतक, हितैषिन्।

—ख्वाही, स स्त्री (अ+फा) शुभचिंतकता, हितैषिता।

खैरा, वि (हिं खैर) खदिरवर्ण। स पु, खादिरवर्ण कपोतो अथो बको वा २ मत्स्य-मीन।

ख़ैरात, स स्त्री (अ) दान, त्याग।

ख़ैराती, वि (अ) धर्मार्थ, पुण्यार्थ २ वदान्य, उदार।

ख़ैरियत, स स्त्री (अ) मंगलम्, कुशलम्।

खों (खं) खाह, स पु (स खगाह तथा खोंगाह) श्वेतपिंगलाश्व।

खों खों, स स्त्री (अनु) कास-ध्वनि शब्द।

खोंच, स स्त्री (स कुच-लकीर डालना>) कीलादिभि वस्त्र विदर विदल-भग्न् २ दे 'खरोंच'

—आना या लगाना, क्रि अ, कीलादिभि दृ (कर्म, दीर्यते)।

खोंचना, क्रि स, दे 'खरोंचना'।

खोंचा, स पु (स कुच-जोड़ना>) खग बन्धनदण्ड २ दे 'खोंच' ३ दे 'खरोंच' ४ आघात, प्रहार ५ पूरणम्।

—खोंची, स स्त्री, परस्परकलह, मिथ प्रहार।

खोंची, स स्त्री (स कुच>) पूर २ पदार्थान्तरनिवेशितवस्तु (न) ३ क्षुद्रवस्तुक्रय।

खोंटना, क्रि स (स खुट् तोड़ना>) अङ्गुलाभि पत्रपुष्प कुट् (प्रे), उद्धृ-उत्कृष् (भ्वा प अ)।

खोंटा, वि, दे 'खोटा'।

खोंड़र, स पु (स कोटर) निष्कुह।

खोंड़ा, वि (स खण्ड) विकला, विकल, खंज, पशु २ दंतहीन।

खोंता, खोंथा, स पु दे 'घोंसला'।

खोंपा, स पु दे 'खोपा'।

खोंसना, क्रि स (स कोश>) पूर, नि धा, वेष्टन, निधानम्।

खोआ, स पु, दे 'खोया'।

खोखला, वि (हिं खुक्ख) शून्य रिक्त, गर्भ-उदर-मध्य।

खोखा, सं पु (हिं खुक्ख) भनार्पणादेशपत्र । (व) बाल [खोखी (स्त्री) = बालिका] ।

खोज, सं स्त्री (हिं खोजना) अन्वेषणणा, गवेषणणा, मार्गणणा, अनुसंधान, शोध २ चिह्न, लक्षण ३ चक्रपाद, चिह्नम् ।

—करना, क्रि स दे 'खोजना' ।

—खाज, सं स्त्री, पृच्छा, अनुयोग २ अनुसंधान, विचारणणा ३ अन्वेषणम् ।

खोजना, क्रि स (सं खुज्=चुराना >) अन्विष (दि प से), निरूप मार्ग (चु०), मृग (चु आ से) अनुसंधा (जु उ अ) विचि (स्वा उ अ), अव निर ईक्ष (भ्वा आ से) ।

खोजवाना, खोजाना, क्रि प्रे 'खोजना' के प्र रूप ।

खोजा, सं पु (फा ख्वाज) सौविद, सौविदल्ल, कञ्चुकिन्, २ सेवक ३ आर्य, महाशय, मिश्र, नायक ।

खो जाना, क्रि अ, दे 'खोना' (क्रि अ) ।

खोजी, खोजिया, सं पु (हिं खोजना) अन्वेषक, निरूपक, निराक्षक, अनुसंधायक, २ चर, चार, अपसर्प ।

खोट, सं स्त्री (सं क्षोट् >) दोष, वैकल्य, वैगुण्य, दूषण २ मिश्रण, ३ मिश्रधातु (पु), कुप्य, अपद्रव्यम् ।

—मिलाना, क्रि स, अपद्रव्येण मिश्र् (चु) ।

खोटा, वि (सं क्षोट >) दूषित, सदोष, दोषिन्, विकल २ (अपद्रव्येण) मिश्रित, कूट, छद्मिन् ३ दुष्ट, खल ४ छद्मिन्, अधार्मिक ।

खोटी खरी सुनाना, मु, निर्भर्त्स् गर्ह् (चु), अधिक्षिप् (तु प अ), निंद् (भ्वा प से) ।

खोटाई, सं स्त्री, दे 'खोटापन' ।

खोटापन, सं पु (हिं खोटा) दुष्टता, क्षुद्रत्व २ छल, कपट ३ दोष, वैगुण्य ४ अपद्रव्यमिश्रणम् ।

खोड, वि (सं) विकलाग, अगहीन, विकलेन्द्रिय, पोगड ।

खोड, सं स्त्री (हिं खोट) देव भूत प्रेत, दोष २ रोग ३ कुसुकूर्नर्त ४ दोष, विकलता ५ चंदनकाष्ठखड हम् ।

खोडरा, सं पु, दे 'कोटर' ।

खोदा, सं पु दे 'हथकड़ी' ।

खोद,¹ सं पु (फा खोद) खोल्क, लौह धातुमय, शिरस्त्राण शीर्षण्य शिरस्कम् ।

खोद,² सं पु (हिं खोदना) पृच्छा २ निरीक्षणम् ।

—विनोद, सं पु, अतीव अनुयोग अवेषण विचारणम् ।

—कर पूछना, मु, निभृत रहस्य-गूढ प्रच्छ (तु प अ)-अनुयुज् (रु आ अ) ।

खोदना, क्रि स (सं खुद्-तोड़ना >) खन् (भ्वा उ से), (भूमि) अवदॄ (प्रे), भिद् (रु प अ) । २ उत्पट-उन्मूल् (चु) ३ उत्कॄ (तु प से), तक्ष् त्वक्ष् (भ्वा प से), मुद्र (चु) ४ उत्खन्, निर्भिद् (रु प अ) ५ यष्ट्यादिभि सं आ पीड् (चु) ६ उत्तेज-उत्तिज (प्रे) । सं पु, खनन, खाति (स्त्री), अवदारण, भेदन, उत्पाटन, उन्मूलन, उत्किरण, तक्षण इ ।

—योग्य, वि, खननीय, खेय, अवदारयितव्य, उत्पाटनीय, उन्मूलयितव्य ।

—वाला, सं पु खनक (–की स्त्री), अवदारक, उन्मूलक उत्पाटक ।

खोदा हुआ, वि, खात, अवदीर्ण, उन्मूलित, उत्पाटित इ ।

खोदनी, सं स्त्री, (हिं खोदना) लघु खनित्र ख्ण ।

कन—, सं स्त्री, श्रवणशोधनी, कर्णकण्डूयनी ।

दत—, सं स्त्री, रदनशोधनी दन्तोल्लेखनी ।

खोदवाना, क्रि प्रे, 'खोदना' के प्र रूप ।

खोदाई, सं स्त्री, दे 'खुदाई' ।

खोन्चा, सं पु (फा ख्वान्च) भाण्डवाह भाजन, क्षुद्रवस्तुविक्रेतृ पात्रम् ।

खोना, क्रि स (सं क्षेपण >) हा (जु प अ) त्यज् (भ्वा प अ) २ अपव्यय् (चु) वृथा क्षेपम् (प्रे) । ३ विप्रकृ, नश् (प्रे) । क्रि अ, मार्गात् भ्रश् भ्रम (भ्वा आ से) सभ्रम् (दि प से) २ नश् (दि प से), च्यु (भ्वा आ अ) ।

खोपड़ा, खोपरा, सं पु (सं खर्पर) कपाल ल, कर्पर २ शीर्ष, शिरस् (न) ३ शष्कल, नारिकेल-खल, कौशिलफल ४ अपक्व नारिकेर, बीजगर्भ ५ भिक्षापात्रम् ।

खोपड़ी, सं स्त्री (हिं खोपडा) दे 'खोपडा' (१, २)।
अंधी या औंधी–का, मु जड, अज्ञ, मंदमति।
—खाना या चाट जाना, मु, वाचालतया उद्विग्न-संतप्-अर्द् (प्रे)।
—गंजी करना, मु अत्यधिक तड (प्रे)।
खोपा, सं पु (स खर्पर) नारिकेल,-बीज -गर्भ २ तृणागारकोण ३ मार्गाभिमुखो गृह कोण ४ ब्रह्मरन्ध्र, त्रिकोण केशविन्यास। ५ वेणी-कबरी-केश बंध जूटकम्।
खोया¹, स पु (स क्षोद ~) घनी-स्त्यानी सान्द्रा-कृत दुग्ध विकार २ इक्षु शेष देय हतरस इक्षु ३ इष्टकालेप।
खोया², वि (हिं खोना) नष्ट, भ्रष्ट, मज्ञान।
खोर, वि (सं) पङ्गु खञ्ज, श्रोण, खोड खोर।
खोरा, सं पु (अ खोरूक या फा आबखोर) चषक -क, पात्रम्। दे 'कटोरा'।
खोरी, स स्त्री, दे 'कूचा'।
खोल, स पु (स खोल>) कोष -श, वेष्टन, आवरण २ कीटत्वच (स्त्री) ३ पुट-टक ४ उत्तरीय, चेलम्।
खोलक, स पु, (स) शिरस्त्राणम् २ कपाल ३ कञ्चुक-भूर्जत्वच (स्त्री) ४ वल्मीकः -क ५ सर्पबिलम्।
खोलना, क्रि स, (स खुड=भेदन>) (द्वारादि) उद्घट् (प्रे), वि-अपा वृ (स्वा उ से), निरर्गलीकृ। (आँखें) उन्मील, उन्मिष्-चकास् (प्रे)। (मुख) व्यादा (जु प अ), उद् वि। जृम्भ (प्रे), (रहस्यादि) आविस्-व्यक्ती प्रकटी-कृ। २ शिथिलयति (ना धा), मोक्ष (चु), उन्मुच् (प्र) ३ विसृ विस्तृ (प्रे) ४ अपा वि वृ, उच्छिद् (प्रे) ५ विवरण कृ ६ व्याकृ, व्याख्या (अ प अ)। स पु, उद्घाटन, विवरण, उन्मीलन, विकास, स्फुटन, विजृम्भण, आविष्करण, उन्मोचन इ।
खोलने योग्य, वि, उद्घाटनीय, उन्मीलितव्य, उज्जृम्भणीय इ।
खोवा, [illegible] पु, दे 'खोया'।
ख़ोशा, स पु (फा) गुच्छ, गुत्स, स्तबकः।
खोसना, क्रि स, दे 'छीनना'।
खोह, सं स्त्री (सं गोह) कंदर -रा, गुहा, गह्वर, दरी २ विवर -र, बिल, कुहरम्।
खौं, सं स्त्री (सं खन्>) गर्त, अवट, बिलम् २ कुसूल, धान्यकोष्ठ।
खौंचा, स पु (स षट्+च) सार्द्धषडभि गुणनतालिका।
खौंसड़ा, स [illegible] (प० खुसना ~) जीर्ण, उपानह् (स्त्री) -पादत्रम्।
ख़ौफ़, स पु (अ) भय भीति (स्त्री), त्रास।
—नाक, वि (अ + फा) भयकर, भीतिजनक।
खौर, स स्त्री (स क्षुर=लकीर डालना>) अर्द्धचंद्राकार चन्दनादितिलक २ स्त्रीमस्तक भूषणभेद।
खौरहा, वि (हिं खौरा) (पशु) पामा सिध्म, पीडित, पामन।
खौरा, (पशुओं का खुजली-रोग) स पु (स क्षौर या फा खारखोर >) पामन् सिध्मन् (पु), पामा। वि दे 'खौरहा'।
खौरु, स पु (देश) वृषभ,-गर्जना निनाद २ कलह।
खौलना, क्रि अ, दे 'उबलना' २ बुद्बुदायते फेनायते (ना धा) ३ प्रतप (दि प मे), भ-वि क्षुभ् (भ्वा आ से)।
खौलाना, क्रि प्रे, 'खौलना' के प्रे रूप।
खौहा, वि (हिं खाना) औदरिक, अद्मर, घस्मर, बहुभक्षिन्।
ख्यात, वि (स) प्रसिद्ध, विश्रुत।
ख्याति, स स्त्री (सं) प्रसिद्धि-कीर्ति (स्त्री)।
ख्यापन, स पु (स न) प्रकाशन, घोषणा, प्रचारणम्।
ख्याल, सं पु (अ) विचार-रणा मत, म, मति (स्त्री) २ स-स्मृति (स्त्री), स्मरण, धारणा ३ अनुमान, वि,तर्क, अभ्यूह इत ४ आदर, सम्मान ५ गीतिभेद।
—से उतरना, मु, विस्मृ (कर्म), स्मृतिपथात् भ्रंश (भ्वा आ से)।
ख़्याली, वि (अ ख्याल) काल्पनिक, कल्पित, कल्पनात्मक, अवास्तविक, वितथ।
—पुलाव पकाना, मु, गगनकुसुमानि खपुष्पाणि वा चि (स्वा उ अ)।
ख्रिष्टान, स पु (इं ख्रीष्ट) दे 'ईसाई'।

ख्रीष्ट, सं पु (अ क्राइस्ट) दे 'इसामसीह'।

ख्वाजा, सं पु (फा) स्वामिन्, प्रभु २ अध्यक्ष, नायक ३ सौविद-दल्ल ४ श्रेष्ठ यवनभिक्षु ([illegible]) ५ आर्य, मिश्र ।

ख्वाब, सं पु (फा) निद्रा २ स्वप्न ।

ख्वार, वि (फा) नष्ट, ध्वस्त, क्षीण २ अनादृत, अपमानित ।

ख्वारी, सं स्त्री (फा) विध्वंस, विनाश २ अनादर, तिरस्कार ।

ख्वाह, अव्य, (फा) वा, अथवा, आहोस्वित् (सब अव्य) ।

—मख्वाह, क्रि वि, मताग्रहेण, मताभिमानेन २ अवश्य, निर्विकल्पम् ।

ख्वाहिश, सं स्त्री (फा) अभिलाष, आकांक्षा, इच्छा ।

—मंद, वि (फा) आकांक्षिन्, इच्छुक ।

—करना या रखना, क्रि स, इष् (तु प से), वाञ्छ् आकाङ्क्ष् अभिलष् (भ्वा प से) ।

ग

ग, देवनागरीवर्णमालाया तृतीयव्यञ्जनवर्णः, गकार ।

गंगाम्बु सं पु (सं न) जाह्नवी, गंगा, जल वारि (न), २ वृष्टे स्वच्छजलम् ।

गंग, गंगा, सं स्त्री (सं गंगा) जाह्नवी, त्रिपथगा, भागीरथी, मंदाकिनी, सुरसरित् (स्त्री), विष्णुपदी, खापगा, हरशेखरा ।

—जमनी, वि (सं गंगा + हिं जमुना >) मिश्रित, संकर, द्विवर्ण २ स्वर्णरजतमय ३ शुक्लकृष्ण, सितासित ।

—जल, सं पु (सं न) भागीरथीतोय २ श्वेत सूक्ष्मवस्त्रभेद ।

—जली, सं स्त्री (सं गंगाजल >) गंगाजल पात्रम् ।

—जली उठाना, मु गंगोदकेन शप् (भ्वा उ अ) ।

—पुत्र, सं पु (सं) भीष्म, गांगेय २ प्रेतवाही जातिविशेष ३ तीर्थवासी विप्रभेद ।

—सागर, सं पु (सं) गंगामुख २ कलश, उदकपात्रभेद ३ वंगेषु तीर्थविशेष ।

गंगाल, सं पु (सं गंगालय >) बृहज्जलपात्र ।

गंगोदक, सं पु (सं न) गंगा भागीरथी, जल तोयम् ।

गंज, सं पु (फा, सं) कोश ग २ राशि (पु) ३ नियता वाणिज्यस्थान ४ समूह ।

गंज, सं पु (सं कज-केश>) खाल्त्य, खल्वाटता, विकेशता ।

गंजन, सं पु (सं न) अवज्ञा, तिरस्कार २ नाश, ध्वंस ३ पीडा, व्यथा ।

गंजा, वि (सं कज =केश >) खल्वाट, विकेश (शी, स्त्री), खलति, खल्लीट ।

गंजी, सं स्त्री (सं गज), राशि (पु), निकर, समूह २ दे 'शकरकंद' ३ दे 'बनियायन' ।

गंजीफा, सं पु (फा) पत्रखेलाभेद । २ क्रीडापत्रचय ।

गंजेड़ी, गंजल, वि (हिं गांजा) गंजापायिन्, गंजाप ।

गँठकटा, सं पु (हिं गाँठ + काटना) ग्रंथिभेदक, चौर ।

गँठजोड़ा, सं पु (हिं गाँठ + जोड़ना) दे 'गठबंधन' ।

गँठबंधन, सं पु ([illegible] ग्रंथिबंधन) ग्रंथि-ग्रंथिका, बंधन योजन-संश्लेषण । (वैवाहिकरीतिभेद) ।

गंड, सं पु (सं) गल्ल, कपोल २ हस्ति कपोल, कट, करट ३ दे 'कनपटी' ४ स्फोटक, पिटक ५ रेखा, चिह्न ६ ग्रंथि (पु) ७ खड्गिन्, गंडक ८ रक्षाकरंड ९ गंडु (पुं) ।

—माला, सं स्त्री (सं) गलगंड, कंठमाला, गलरोगभेद ।

—स्थल, सं पुं (सं न) दे 'कनपटी' ।

गंडक, सं पुं (सं) कंठधार्यो रक्षाकरंड २ ग्रंथि (पुं) ३ स्फोटकरोगभेद ४ खड्गिन् (पुं) ५ चिह्न [illegible] देशविशेष ।

गंडकी, सं स्त्री (सं) नदीविशेष २ खड्गिनी, खड्गमृगी, तुंगमुखी ।

गंडा, सं पु (सं गडक=गाठ) १ कठधार्यो रक्षाकरड २ चतुष्क, चतुष्टय ३ कपर्दिका पण,-चतुष्टय ४ वलय, चक्र ५ हयकठभूषण ६ इक्षु (पु)।
—तावीज सं पु, मत्रयत्रम्।
—तावीज करना, कि म, रक्षाकरडै भूतप्रेतान् निष्कम (प्रे) दूरी कृ।
गँडा(डा)सा, सं पु (हिं गेडी+स असि >) यवस-घास-छेदनी २ लघु,-परशु (पु) परश्वध।
गडूप, सं पु (सं) गडूषा, चुलुक चुलुक। २ शुडाग्र, शुडाग्रम्।
गँडेरी स स्त्री (हिं गडा) इक्षु, खण्डक-कम्।
गदगी, सं स्त्री (फा) मल ल, अव (प) स्कर, कल्क-कक, किट्ट, कर्दम २ मालिन्य कालुष्य ३ अपवित्रता, अशुचिता।
गँदला, वि, दे 'गदा'।
गदा, वि (फा) मलिन, मलीमस, समल, कलुष, आविल २ अशुद्ध, अपवित्र ३ कुत्सित, गर्ह्य, अश्लील।
—करना, कि स, कलुषयति मलिनयति (ना धा), दुष (प्रे दूषयति), कलुषी आविली,-कृ। [गदी (स्त्री)=मलिना इ]
गदी बातें, अश्लील, ग्राम्य-अवाच्य-वचनानि।
गदा विरोजा, स पु (सं गध+दे बिरोजा) कुद-न्दु, कुदुर-रु, पालकी, बहु-तीक्ष्ण-गध, श्रीवास सक, सरल, द्रव निर्यास।
गदुम, स पु (फा, सं गोधूम), सुमन, म्लेच्छभोज्य, प्रवट।
गदुमी, वि (फा गदुम) गोधूम (समास में), गोधूम-सुमन,-वर्ण, प्रवटमय।
गध, स स्त्री (स पु) आमोद, वास २ घ्राणग्राह्य पृथिवीगुण (पु) ३ सुगध, सुवास।
—बिलाव, स पु (स गधबिडाल) गध मार्जार, खट्टास।
—राज, **—सार**, स पु (सं) चदनम्।
गधक, स स्त्री (स पु) गधि(ध)क, गधाश्मन्, सौगधिक।
—का तेजाब, स पु, गधकाम्ल।
गधकी, वि (सं गधक >) गधक,-गर्भ-युक्त २ ईषत्पीत।
गधन, स पु (सं न) गन्धप्रसारणम् २ व्रीहिभेद ३ अध्यवसाय ४ आघात प्रहार ५-दोषप्रदर्शनम् ६ समूचनम्।
गधर्व, सं पु (स) स्वर्गगायक, दिव्यगायन, गातु (पु), देवभेद २ गायक। [-र्वी स्त्री]
—नगर, स पु (सं न) स स्थले वा ग्राम नगरादीना मिथ्याभास, गातु-गधर्व, पुर २ माया, प्रपच, इन्द्रजालम्।
—विद्या, सं स्त्री (स) सगीत, सगीत वाद्य, विद्या शास्त्रम्।
—विवाह, स पु (स) विवाहभेद (धर्म) पित्रोरनुमति विना स्वेच्छातो विवाह।
गधवती, स स्त्री (स) पृथिवी धरणी। २ व्यास जननी, सत्यवती ३ सुरा ४ जातिभेद।
गधार, स पु (स गाधार) भारतवर्षस्यो त्तरस्या दिशि देशविशेष २ तृतीयस्वर (सगीत)।
गधी, स पु (स गधिन् >) गाधिक, गध, विक्रयिन् उपजीविन् वणिज् २ ३ घास-कीट, भेद।
गधारी, स स्त्री, दे 'गाधारी'।
गभीर, वि (स) ग (न) भीर, स्व, अगाध, निम्न २ गहन, निबिड ३ दुर्बोध, निगूढार्थ ४ मद्र, घन (शब्द) ५ शात, सौम्य।
गभीरता, स स्त्री (स) गाभीर्य, गौरव, धीरता, निम्नता, गहनता, दुर्बोधता, सौम्यता इ।
गँवाऊ, वि (हिं गँवाना) अपव्ययिन्, विक्षपिन्, दे 'उजाड़'।
गँवाना, कि स (स गमन >) अपव्यय (चु) वृथा से हम (प्रे) २ हा (जु प अ), त्यज् (भ्वा प अ) ३ (समय) या अतिवह् (प्रे)।
गँवार, वि (हिं गाँव) ग्रामीण, ग्रामिक, ग्रामिन् (पु), ग्राम्य २ मूर्ख, जड ३ अनार्य, असभ्य।
—पन, स पु, ग्रामीणता, मूर्खता, अस भ्यता इ।
गँवारू, वि (हिं गँवार) ग्रामीय, असस्कृत, प्राकृत २ अशिष्ट, असभ्य।

गँसीला, वि (हिं गाँसी) ग्रथित, ग्रंथिपर्वं, मय २ वेधक, छेदक।

गऊ, स स्त्री, दे 'गौ'।

गगन, स पुं (स न) आकाश-शम्।

—भेदी, वि (सं दिन्) आकाश व्योम, वेधक वेधिन् भेदिन् (शब्दादि) २ (भवनादि) गगन व्योम, स्पृश चुम्बिन्, अभ्रलिह्, नभोलिह्।

गगरा, स पु (स गर्गर-दधिमथनपात्र>) धातु कुंभ कलश घट, गर्गर।

गगरी, स स्त्री (स गर्गरी-दधिमथनपात्र>) धातुमयलघु कलश घट कुंभ, गर्गरी।

गच, स पु (अनु) पके चरनज,-शब्द २ खड्गादिवेधसोत्थ शब्द ३ लेप, सुधा, ४ गृहभूमि भू (स्त्री) ५ सुधालिप्ततल, कुट्टिम मम्।

—कारी, स स्त्री (हिं गच+फा कारी>) सुधा लेप,-कार्य कर्मन् (न)।

गचपच, वि दे 'गिचपिच'।

गज़द, स पु (फा) आघात, प्रहार २ हानि क्षति (स्त्री) ३ कष्टम्, क्लेश।

गज, स पुं (स) हस्तिन्, कुम्भिन्, करिन्, कुंभिन्, दन्तिन्, रदिन्, शुण्डिन् (सब पुं), दे 'हाथी'।

—आनन, स पु (स) गजमुख, गणेश, गजवदन।

—कुंभ, स पुं (स) करिकुंभ, गजशिर पिंड।

—गति, स स्त्री (स) *गज कुंजर,-गमन गति*।

—गामिनी, वि स्त्री (स) इभ वारण, गामिनी-चारिणी (सुंदरी)।

—दंत, स पु (सं) हस्ति करि, दंत रद रदन २ गणेश।

—दान, स पुं (स न) गजमद २ करि वितरणम्।

—पति, स पु (सं) करीन्द्र (यूथनाथ, यूथप)।

—पाल, स पुं (सं) हस्तिप पक, आधोरण, निषादिन् (पुं) महामात्र।

—मोती, स पुं (सं गजमौक्तिक) गजमुक्ता, गजमणि (पुं)।

—मुख, सं पुं (सं) दे 'गजानन'।

—राज, स पुं (सं) दे 'गजपति'।

—वदन, स पुं (सं) दे '-आनन'।

—वान, सं पुं (सं गज>) दे 'गजपाल'।

—शाला, स स्त्री (सं) द्विप हस्ति,-शाला गृहम्।

गज़, स पुं (फा) गज (माप) २, आग्नेय चूर्णं प्रणोदनी यष्टि (स्त्री) ३ सारंगवादन यष्टि, वादन वाद्य वादित्र,-दण्ड ४ इषुभेद।

गज़क, स स्त्री (फा कज़क) व्यञ्जन, उपस्कर, उप अंत, दश २ तिलशर्करा (मिठाई) ३ उपाहार ४ प्रातराश।

गज़ट, स पु (अं) राजपत्रम्।

गजनी, स स्त्री (सं गज>) मृत्तिका-मृद्, भेद।

गज़ब, स पुं (अ) रोष, क्रोध २ विपद् विपत्ति (स्त्री) ३ अन्याय, अत्याचार ४ विलक्षणवृत्तांत।

—करना, क्रि स, अन्यायेन अधिष्ठा (भ्वा प अ) शास् (अ प से) २ विस्मयजन् (प्रे)।

—का, वि अद्भुत, आश्चर्य।

—नाक, वि, रुष्ट, क्रुद्ध, कुपित।

गजर, स पु (स गर्ज, हिं गरज) चतुरष्ट द्वादशवादनसमयेघटानाद २ प्रात घटानाद। स स्त्री, खवेतरक्तगोधूममिश्रणम्।

—दम, क्रि वि, प्रात, प्रभाते, मंक्षुति प्रत्यूषे।

—बजर, स पु (अनु) अनुचितमिश्रणम्। २ खाद्याखाद्य, भक्ष्याभक्ष्यम्।

गजरा, स पु (सं गज-डेर>) माला, माल्य, स्रज् (स्त्री) २ वलय, कटक-क, करभूषण ३ कौशेयवस्त्रभेद।

गजरी, स स्त्री (हिं गजरा) कलाची मणि बंध, भूषण आभरणम्।

गजरी, स स्त्री (हिं गाजर) लघु क्षुद्र,-गाजर गर्जरम्।

गज़ल, स स्त्री (फा) शृंगारकविता।

गज़ी, स स्त्री (फा) स्थूलसौत्रवस्त्रभेद।

गजी, स स्त्री (स) हस्तिनी, करिणी।

गजेन्द्र, स पुं (सं) दे 'गजपति'।

गटकना, क्रि स (अनु गट) खाद् (भ्वा प से) २ निगॄ (तु प से), ग्रस् (चु) ३ अन्यायेन अपहृ (भ्वा प अ)।

गटगट, सं पु (अनु) गटगटा,-शब्द ध्वनि (पु) गटगटायितम्। क्रि वि, सगटगटा शब्दम्।

गटपट, स स्त्री (अनु) रति (स्त्री) मैथुनं, सहवास २ घनमैत्री। (वि) मैथुनासक्त।

गटरगूं, सं स्त्री (अनु) कपोत, शब्द-रुत कूजित, घूत्कार।

गट्ट, सं पु (अनु) निगरणध्वनि (पु)।

गट्टा, सं पु (सं ग्रथ>) मणिबंध घन, पाणिमूल २ गुल्फ घुट ३ जानु (पु न), नल कील ४ रोधना, अवष्टम्भ ५ ग्रंथि (पु) ग्रन्थिका ६ संधि (पु) पर्वन् (न), अस्थि संधि (पु) ७ बीज ८ मिष्टान्नभेद।

गट्टी, सं स्त्री (हिं गट्टा) आवापन, ततुकील।

गट्ठर, सं पु (हिं गाँठ) पोटलिका, भार, कूर्च, संधान, गुच्छ।

गट्ठा, सं पु (हिं गाँठ) काष्ठादीनां भार २ दे 'गट्ठर' (३-४) पलाडु लशुन, ग्रंथि (पु)।

गट्ठी, सं स्त्री (हिं गट्ठा) दे 'गठरी'।

गठ, सं स्त्री (हिं गाँठ, दे)।

—**कटा**, वि पु, दे 'गँठकटा'।

—**जोड़ा**, सं पु, दे 'गँठबंधन'।

गठन, सं स्त्री (सं ग्रथन) घटना, रचना, विधान, निर्माणम्।

गठना, क्रि अ (सं ग्रथन) सम्‌ग्रथ-गुफ (कर्म), गुणे-नहुभि बध (कर्म) २ सम्यक रच-निर्मा (कर्म) ३ स्नेहात्तयो विद् (दि आ अ) ४ षड्यन्त्र सृज (कर्म)।

गठरा, सं पु, दे 'गट्ठर'।

गठरी, सं स्त्री (हिं गठरा) लघु पोटलिका भार-कूर्च २ सचितधनम्।

—**चोर**, सं पु, कृपण, कदर्य।

गठवाना, } क्रि प्रे, 'गाँठना' के प्रे रूप।
गठाना,

गठाव, सं पु (हिं गठना) संबंध, संश्लेष २ दे 'गठन'।

गठित, वि [सं ग्र(ग्र)थित] गुफित, बद्ध २ रचित, निर्मित।

गठिया, सं स्त्री (हिं गाँठ) दे 'गठरी' २ वात, रक्तशोणित, ग्रंथिवात, दे 'वातरोग'।

—**घात**,—**बाव**, सं स्त्री (हिं + सं वात तथा वायु) संधि-वात वायु २ वात, वायु, वातरोग।

गठीला, वि (हिं गाँठ) ग्रन्थि पर्व-संधि-मय (-मया स्त्री) ग्रन्थिल, पर्ववत् ग्रंथिमत् (ती स्त्री)।

गठीला, वि (हिं गठना) वज्र दृढ़-देह-ग, स्फूर्तिमत् (-ती स्त्री) २ दृढ ३ सबल री (स्त्री) = दृढांगी, सबला इ]।

गठौत-ती, सं स्त्री (हिं गठना) मैत्री, सौहार्द २ कुमन्त्रणा, उपजाप, कूट टन्।

गड़त, सं स्त्री (हिं गाड़ना) अभिचाराय निखात निहित, वस्तु (न), •निखानम्।

गड़कना, क्रि अ (अनु) गडगडायते (ना धा), गडगडा, शब्द नाद राव कृ।

गड़गज, सं पु, दे 'गरगज'।

गड़गड़, सं स्त्री (अनु) गर्जित, स्तनित, गटगटायित २ कर्दन, आन्त्रशब्द शूलशब्द ३ धूम्रपानयन्त्रशब्द।

गड़गड़ा, सं पु (अनु) धूम्रपानयन्त्रभेद, •गड़गड़।

गड़गड़ाना, क्रि अ (अनु) गर्ज-गर्ज-स्तन् (भ्वा प से) गडगडायते (ना धा) २ नद्-रस (भ्वा प से)।

गड़गड़ाहट, सं स्त्री, (हिं गडगडाना) दे गड़गड़'।

गड़गूदड़, सं पु (अनु गड + हिं गूथन>) जीर्ण शीर्ण जर्जरित-वस्त्र पट, चीर, कर्पट। २ असार मलम्।

गड़ना, क्रि अ (सं गर्त>) त्वा प्र विश (तु प अ), विध् (तु प से), निर्-, भिद् (रु प अ) २ (भूमौ) निधा-निक्षिप् (कर्म) ३ पीड (कर्म), व्यथ (भ्वा आ से) ४ नि, मस्ज (तु प अ), अव नि सद् (भ्वा प अ)।

गड़ जाना, मु, लज्ज (तु आ से), त्रप (भ्वा आ वे)।

गड़प, सं स्त्री (अनु) निगरण, ग्रसनम्।

गड़पना, क्रि स, (अनु गडप>) सत्वर निगॄ (तु प से)-पा (भ्वा प अ) २ अन्यायेन आत्मसात् कृ।

गड़प्पा, सं पु (अनु) गह्वर, गर्त-गर्त-अन्ट।

गड़बड़, वि (हिं गड = गड्ढा + बड़-ऊँचा) असम, विषम, नतोन्नत २ अस्तव्यस्त, अक्रम। सं पु अव्यवस्था, क्रमभंग २ विप्लव, संक्षोभ, कोलाहल ३ रोग, आमय।

—**अध्याय**, सं पु } दे 'गड़बड़' सं पु।
—**झाला**, सं पु

गड़बड़ाना, क्रि अ (हिं गडबड) आकुली भू, मुह् (दि प वे), भ्रान्त्या मग् (दि

आ ■)। कि स, वि-सं, भ्रम्-मुम (प्रे), मुह् (प्रे), आकुली कृ।

गड़बड़ाहट, गड़बड़ी, स स्त्री, दे 'गड़बड़' स पु।

गड़बड़िया, वि (हिं गड़बड़) मोहक, मोहन २ क्रम-व्यवस्था भजक-नाशक, उपद्रविन।

गड़मड़, वि (अनु) संकुल, संकीर्ण, व्यत्यस्त, अव्यवस्थित।

—करना, क्रि स, मकरी मकुली कृ, क्रम मञ्ज (क प अ)।

गड़रिया, स ■ (स गड्डरिका >) अवि गड्डर मेष पाल।

गड़वा, स पु (स गडुक) गडु (पु), गडुक, गडडुक २ पुष्पपात्रभेद।

गड़वाना, कि प्रे, 'गड़ना' के प्रे रूप।

गड़हा, स पु (स गर्त तै) गर्त, अवट, बिल, विवर, खात, पतर।

गड़ाना, कि स 'गड़ना' के प्रे रूप।

गड़ारी, ■ स्त्री (अनु) उच्चायणचक्र,२ मंडल, वृत्त, चक्रम् ३ मंडलाकार गोल, रेखा।

गड़ि (रि) यार, वि (हिं गड़ना) धृष्ट, दुर्दान्त २ मंथर।

गड्डु, वि (स) कुब्ज, वक्रपृष्ठ। स पु (स) अर्बुद, गंडुद्‌म् २ गडुक जलपानभेद ३ किंशुलुक, गड्डपद।

गड्डुआ, स पु (स गडुक) सनालीक लघु पानपात्रम्।

गडेरिया, स पु, दे 'गड़रिया'।

गड्ड, स पु (स गण) नि स,-चय, निकर, स्तोम ओघ।

गड्डमड्ड, गड्डमड्ड, स ■ (अनु) संकर, अक्रम, क्रमभग। वि, विपर्यस्त, व्यस्तस्त, भग्नक्रम।

गड्डा, स पु (स शकट) शकट टिका, वाहन, प्रवहणम्।

गड्डाम, वि (अ गाड+श्याम) नीच, अधम, जघन्य।

गड्डी, स स्त्री (हिं गड्ड) (एक ही वस्तु का) स नि, चय, संधान २ राशि, समूह।

गड्ढा, स पु दे 'गड़हा'।

गढ़त, वि (हिं गढ़ना) कृत्रिम, कल्पित २ दे 'गढ़न'।

मन—, वि कपोल मन,-कल्पित, मानसोद्‌भावित, काल्पनिक, कल्पनात्मक।

गढ़, सं ■ (सं गड) परिखा, खात, गर्त नी २ दुर्ग, कोट।

—पति, स पु (स) दुर्गपाल।

गढ़न, ■ स्त्री (हिं गढ़ना) दे 'गठन'।

गढ़ना, कि स (स घटन) घट् (चु) घट्ट रच् (चु) निर्मा (अ प अ, जु आ अ), कल्प् साध सपद् (णे), ३ तद् (चु) ३ मिथ्या कल्प् (प्रे), मनसा सृज् (तु प अ)।

गढ़ा, स पु, दे 'गड़हा'।

गढ़ाई, स स्त्री (हिं गढ़ना) घटन, निर्माण, रचनम् २ घटन-रचन, मूल्य भृति (स्त्री)-निर्वेश।

गढ़ाना, कि प्रे 'गढ़ना' के प्रे रूप।

गढ़ी, स स्त्री (हिं गढ़) लघु दुर्ग कोट २ कोटाकार दृढभवनम्।

गण, स पु (स) समूह, वर्ग, समुदाय, वृन्दम् २ श्रेणी, कोटि (स्त्री) ३ त्रिगुल्मात्मक सेना विभाग (=२७ हाथी, २७ रथ ८१ घोड़, १३५ पैदल) ४ परिचारक परिजन ५ पक्ष पाति अनुयायि वर्ग ६ सभा, समाज ७ गणाधिष्ठिता शिवसेवका ८ मगण यगणादय वर्णमात्रासमूहा (छद) ९,१० धातु शब्द समूह (व्या) ११ नक्षत्रसमूहविशेषा (ज्यो)।

—अधिप—नाथ,—नायक,—पति, स पु दे 'गणेश'।

—द्रव्य, स पु (स न) सर्वजनीन पदार्थ २ द्रव्यसमूह।

गणक, स ■ (स) दैवज्ञ, ज्योतिर्विद् २ गणितज्ञ

गणकी, स स्त्री (स) १ २ गणितज्ञ दैवज्ञ, पत्नी।

गणन, ■ पु (स न) संख्यान, गणना।

गणना, ■ स्त्री (स) गणन, संख्यान २ संख्या ३ अलंकारभेद (सा)।

—करना, क्रि स, दे 'गिनना'।

गणनीय, वि (स) संख्येय गण्य २ दे 'प्रसिद्ध'।

गणिका, स स्त्री (सं) वेश्या, भोग्या पण्यस्त्री।

गणित, स पु (स न) गणित,-शास्त्र विद्या गणना मात्रा-संख्या परिमाण, विद्या शास्त्रम् २

अंक, विद्या गणितशास्त्रम् । वि, सङ्ख्यात, संकलित ३ चिंतित, निरूपित ।
—कार, सं पु (सं) गणितज्ञ २ ज्योतिर्विद् (पु) ।
—विद्या, सं स्त्री (सं) दे 'गणित' (१ २) ।
अंक—, सं पु (सं न) अंक, विद्या-शास्त्रम् ।
बीज—, सं पु (सं न) गणितविद्याभेद ।
रेखा—, सं पु (सं न) रेखागणना, भूज्या, मिति (स्त्री) ।
गणेश, सं पु (सं) गज, आस्य मुख-वदन आनन, लम्बोदर, गणाधिप, विनायक, आखुग शूर्पकर्ण, विघ्नेश, परशुपाणि (पु) ।
गोबर—, सं पु, जड मूढ ।
गण्य, वि (सं) सङ्ख्येय गणनार्ह, गणनीय २ प्रतिष्ठित, पूज्य, मान्य ।
—मान्य, वि (सं) दे 'गण्य' ।
गत, वि (सं) अतीत, अतिक्रान्त, व्यतीत, २ मृत ३ हीन, रहित ४ लब्ध, प्राप्त । सं स्त्री (सं गति स्त्री) दशा, अवस्था २ रूप, आकृति (स्त्री) ३ उपयोग व्यवहार ४ दुर्दशा, नाश ५ नृत्यभेद ६ प्रेतक्रिया ।
गतका, सं पु (सं गदा) चर्मावृतयष्टि (स्त्री) २ क्रीडा-खेल, भेद ।
गतांक, सं पु (सं) पत्रपत्रिकाऽतीताङ्क इताङ्क अतीताङ्क अव्यवहितपूर्वाङ्क ।
गतांक्ष, वि (सं) अन्ध, अनयन, अनेत्र ।
गतागत, सं पु (सं न) गमनागमनम् २ पुनर्जन्मन् (न), जन्ममरणम् ।
गतानुगतिक, वि (सं) अन्धानुयायिन्, अन्धविश्वासिन् ।
गति, सं स्त्री (सं) गमन, चलन, व्रजन, अयन, यान, सरण २ स्फुरण, कम्पन, स्पन्दन ३ चेष्टा, व्यापार ४ दशा, अवस्था ५ प्रवेश ६ प्रयत्नसीमा ७ अवलम्ब ८ माया, लीला ९ रीति (स्त्री), विधि (पु) १० देहांतर प्राप्ति (स्त्री) ११ मुक्ति (स्त्री) १२ ताल स्वरानुसाराङ्गचालन (सं न) १३ प्रेत कर्मन् ।
—बनाना, मु, निर्दय तड् (चु) प्रहृ (भ्वा प अ) ।
—होना, मु, प्रत्युत्पन्न (कर्म) २ निर्दय ताड् (कर्म) ३ मुक्ति लभ (भ्वा आ अ) ।
गत्ता, सं पु (देश) मसृणपत्रं, गुरुपत्रम् ।

गद, सं पु (सं) रोग, आमय २ श्रीकृष्णानुज ३ ४ वानर असुर, विशेष । (सं न) विष, गरलम् ।
गदका, सं पु, दे 'गतका' ।
गदगद, वि, दे 'गद्गद' ।
गदर, सं पु (अ) प्रजा प्रकृति, कोप-क्षोभ, २ सैन्य सेना, द्रोह क्षोभ प्रकोप ३ विप्लव, सम्प्लव, समर्द ।
—करना या मचाना क्रि अ (राजे) द्रुह् (दि प वे), राजशासन लंघ (भ्वा आ से) इ ।
गदला, वि (फा गदा) सपङ्क, सकर्दम, समल, पङ्किल, मलिन ।
—करना, क्रि स, कलुषयति पङ्किलयति-आविलयति (ना धा), मलिनी कृ ।
—पन, सं पु, मालिन्य, पङ्किलत्व आविलता ।
गदहपचीसी, सं स्त्री (हिं गदहा + पचीस) आषोडशात् आपञ्चविंशते आयुषो भाग । २ अनुभवहीनता, माध्य, मौर्ख्यम् ।
गदहा, सं पु (सं गर्दभ) रासभ, खर, वालेय, भारग, धूसर, ग्राम्याश्व २ मूर्ख, अज्ञ [गदही (स्त्री) = रासभी, खरी, गर्दभी] ।
—पन, सं पु, मौर्ख्य, जडता ।
गदा, सं स्त्री (सं) लोहमयशस्त्रभेद ।
—धर, सं पु (सं) कृष्ण २ विष्णु । वि, गदाधारिन् ।
गदेला, सं पु, दे 'गद्दा' ।
गद्गद, वि (सं) प्रहृष्ट, आनंदपुलकित, परम मुदित, सुप्रसन्न २ अस्पष्ट, असम्बद्ध, अस्फुट (अक्षरस्वरादि) ।
गद्दा, सं पु (हिं गद्द से अनु) तूलस्तर, तूल ।
गद्दी, सं स्त्री (हिं गद्दा) (तूल) आसन, तूलिका २ पिचुलविष्टर ३ उपधान, उपबर्ह ४ पर्याण, पल्यान ५ सिंहासन, नृपासन ५ अधिकारपद ६ ७ कर-चरण,-तलम् ।
—पर बैठना, क्रि [illegible], सिंहासन आरुह् (भ्वा प अ), राज्येऽभिषिच् (कर्म) ।
—पर बैठाना, क्रि स, अभिषिच् (तु प अ), सिंहासने उपविश् (प्रे) ।
—से उतारना, क्रि स, सिंहासनात् च्यु अव रुह् भ्रंश् अवपत् (प्रे) ।

—नशीन, वि (हिं+फा) सिंहासन-आसीन आरूढ २ उत्तराधिकारिन् ।

—नशीनी, सं स्त्री, अभिषेक, राज्याभिषेक ।

गद्य, सं पु (सं न) छन्दोहीनरचना, अपाद पदसन्तान ।

गधा, स पु, दे 'गदहा'।

गधी, गधैया, } स स्त्री, दे 'गदही, ('गदहा' के नीचे)।

ग़नीम सं पु (अ) शत्रु, रिपु २ दस्यु (पु), लुण्ठक ।

ग़नीमत, सं स्त्री (अ) लोत्र, लोप्त्र, अप हृतधन २ अयत्नलब्ध धन ३ सतोषविषय, धन्यत्वम् ।

गन्ना, स पु (सं काड-ड>) रसाल, इक्षु, काड दंड, दे 'ईख'।

गप[1], सं स्त्री (सं कल्प अथवा अनु) किंवदती, लोक जन, श्रुति (स्त्री) प्रवाद वार्त्ता २ जल्प, प्रलाप ३ मिथ्या-असत्य, वृत्तान्त वृत्त समाचार ४ विकत्थन, गर्वोक्ति (स्त्री)।

—मारना,—हाँकना, कि अ, प्रल्प् जल्प् (भ्वा प से)।

—शप, स स्त्री, वृथा,-कथा सलाप ।

गप[2], स पु (अनु) निगरण-ग्रसन, ध्वनि (पु)।

गपागप, क्रि वि, सत्वर, झटिति, शीघ्रम् ।

गपकना, क्रि सं, दे 'निगलना'।

गपड़चौथ, सं स्त्री (हिं गपोड़ा+चौथा) वृथा निरर्थक, सलाप-आलाप-संवाद २ दे 'गड़बड़ी'।

गपड़शपड़, सं स्त्री, दे 'गपड़चौथ'।

गपागप, अव्य (अनु) सत्वर, शीघ्र, आशु झटिति (सब अव्य)।

गपोड़ा, सं पु दे 'गप'।

गप्प, स स्त्री, दे 'गप'।

गप्पी, स [illegible] (हिं गप) वावदूक, जल्प (पा)क २ मिथ्याभाषिन्, अनृतवादिन् (पु) ३ आत्मश्लाघिन् (पुं)।

गप्फा, सं पु (अनु गप>) बृहद्-कवल ग्रास पिंड २ लाभ ।

गफ़, वि (सं ग्रप्स=गुच्छा अथवा गुफ्=बुनना>), अविरल, घन, सांद्र, सून ।

ग़फ़लत, सं स्त्री (अ) अनवधानता, प्रमाद २ स्खलित, अपराध ।

ग़बन, सं पु (■) कपटेन आत्मसात्करण अपहरण-उपयोग ।

—करना, कि स, कपटेन आत्मसात्कृ।

गबरू, सं पु (फा ख़ूबरू) (नव) युवक, युवन् (पु), तरुण २ पति (पु), वर । वि, सरल, अमाय।

गभस्ति, सं पु । (सं) किरण, रश्मि (पु) २ सूर्य ३ बाहु (पु) ४ हस्त ।

—पाणि—मान्—हस्त, सं पु (सं) सूर्य ।

गभीर, वि (सं) दे 'गम्भीर'।

ग़म, सं पु (अ) शोक, विषाद, दुःख २ चिन्ता, रणरणक कम्।

—गीन, वि (अ+फा) विषण्ण, सचिन्त।

—खाना, मु, क्षम्, (भ्वा आ से), क्षम् (दि प वे, क्षाम्यति)।

गमक[1], वि (सं) गम, याप्, २ सूचक, बोधक।

गमक[2], सं स्त्री (अनु) पटह भेरी, नाद २ सुगन्ध ।

गमन, स पु (स न) यान, प्रचलन, चलन, प्रस्थान २ मैथुनम्।

—आगमन, स पु (सं न) यानायान, यातायात, गतागतम्।

गमला, स पु (पुर्त गैमेलो) प्रसून पुष्प, पात्र भाजन २ पुरीष, उच्चार, पात्रम्।

गमी, सं स्त्री (अ गम) शोक, विलाप २ मृत्यु ।

गम्य, वि (स) प्राप्य, लभ्य २ यातव्य, अवनीय ३ साध्य, शक्य ४ सम्भोगार्हं।

गयद, सं पु (स गजेन्द्र) गज, पति (पु) -राज ।

गय, सं पु (स गज) द्विरद, द्विप, करिन्, कुम्भिन्।

गया[1], स स्त्री (स) मगधपु गयरानर्षिपुरी, तीर्थविशेष ।

गया[2], वि (सं गत) यात, प्रस्थित ।

—गुज़रा,-बीता, वि, नष्ट, मृत, २. निकृष्ट, तृणप्राय।

गर, स पुं (सं) विष, उपविष २ रोग ।

गरक़, वि, दे ग़र्क़।

गरक़ाब, वि, दे 'ग़र्क़ाब'।

गरकी, सं स्त्री, दे 'गर्की'।

गरगज, सं पु (हिं गढ+सं गज) दुर्ग प्राचीरशृंग। २ उद्‌बन्धनयन्त्र, घातशिला।

गरगरा, स पु, दे 'गराडी'।

गरज, स स्त्री (सं गर्ज) गर्जन-ना, गर्जित स्तनित, महा-दीर्घ-गम्भीर, शब्द नाद।

गरज़, स स्त्री (अ) आशय, प्रयोजन, अर्थ, स्वार्थ २ आवश्यकता ३ अभिलाष।
क्रि वि, अतो, अन्ततः, अन्ततो गत्वा २ अस्तु, एव (अव्य)।

—मन्द, वि (अ+फा) स्वार्थलिप्स, स्वला भापेक्ष। २ इच्छुक, ईप्सु।

—मन्दी, स स्त्री, स्वार्थलिप्सा, स्पृहा, अपेक्षा।

ब— वि (फा+अ) निष्काम, निःस्पृह, निःसंग।

गरजना, क्रि अ (स गर्जन), गर्ज्, गर्ज्‌-विस्फूर्ज् नद् नर्द् स्तन्-रस् (भ्वा प से), महा-दीर्घ-गम्भीर,-नादं कृ।
स पु दे 'गरज'।

गरज़ी, वि (अ गरज़) दे 'गरज़मन्द'।

खुद—स स्त्री (फा+अ) स्वार्थपरता, स्वहितनिष्ठा।

गरण, स पु (स न) निगरण, निगलनम्, ग्रसन २ अवमेचन, प्रोक्षण ३ विषम्।

गरदन, दे 'गर्दन'।

गरदनिया, स पु (हिं गरदन) ग्रीवा-कण्ठ, ग्रहण,-ग्रह, अर्धचन्द्र।

गरदा, स पु, दे 'गर्द'।

गरदान, स पु (फा) शब्द धातु,-रूपसाधन (व्या)।

—करना क्रि स शब्दरूपाणि वद् (भ्वा प से)।

गरनाल, स स्त्री (हिं गर+सं नाल) उरु वदनी नालिका।

गरम, वि, (फा गर्म, स घर्म) उष्ण, तप्त, स-उद्, आतपाक्रान्त, सोष्ण। २ उग्र, प्रचण्ड, क्रोधिन् ३ तीक्ष्ण, तीव्र ४ उत्साहिन्, सोत्साह।

—करना, क्रि सं, परि प्र स,-तप् (प्रे), उद्, दीप् (प्रे), उष्णीकृ। मु, उत्तिज् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, उष्णीभू, तप् (भ्वा प अ, दि आ अ) २ क्रुध (दि प अ)।

—कपड़ा, सं पु, ऊर्ण-ऊर्णामय,-वस्त्रम्।

—ख़बर, स स्त्री अभिनव-इदानींतन समाचार।

—मिज़ाज, वि, सरम्भिन्, क्रोधिन्।

—सर्द, वि, कोष्ण, कवोष्ण, मन्दुष्ण।

गरमागरम, वि (हिं गरम+गरम) अत्युष्ण, सुतप्त, २ अभिनव, प्रत्यग्र।

गरमाना, क्रि अ क्रि स (हिं गरम) दे 'गरम होना' तथा 'गरम करना'।

गरमी, स स्त्री (फा, सं घर्म) स-उद परि, ताप, उष्णता, दाह, उ(ऊ)ष्मन् (पु), उष्म। २ उग्रता, चण्डता ३ कोप ४ उत्साह ५ ग्रीष्म, ग्रीष्म समय-काल, निदाघ ६ उपदंश।

—दाना, स पु, दे 'पित्त' (प)।

गरल, स पु (स न) गर, विष २ सर्पविष ३ तृणपूलकम्।

गराँ, वि (फा) भारिक, भारवत्, गुरु २ बहुमूल्य, महार्घ।

गराडी (री), स स्त्री (अनु गरर) दे 'गडारी'।

गरारा, स पु (अनु अथवा अ गरगरा) जल, च (चु) लुक। २ कुल्लोषधम्।

—करना, क्रि स जलेन कंठ (गण्ड) धाव् (भ्वा प से)-क्षल् (अ प से)।

गरिमा, स स्त्री (सं मन् पु) गुरुत्व, भारवत्व २ महिमन् (पु), गौरव, महत्व ३ अहंकार ४ आत्मश्लाघा ५ सिद्धिविशेष (योग)।

गरिष्ठ, वि (स) गुरुतम, भारवत्तम, अतिभारवत् २. मलावरोधक, मलावष्टम्भक।

गरी, सं स्त्री (स =गुलिका >) नारिकेल (र), सार गोल।

गरीब, वि (अ) अकिंचन, दरिद्र, निर्धन २ नम्र, विनत।

—खाना, स पु (अ+फा.) कुटी, कुटीर २ दरिद्र-अनाथ,-आलय -गृहम्।

—नि(नि) वाज़, —परवर } वि (अ+फा) दीन,-बन्धु दयालु-वत्सल नाथ पालक पोषक।

ग़रीबी, सं स्त्री (अ ग़रीब) दारिद्र्य, निर्धनत्व, अकिंचनता २ नम्रता।
गरुड़, स पु (स) वैनतेय, खगेश्वर, सुपर्ण, विष्णुरथ, नागान्तक।
—आसन,-केतु,-ध्वज, स पु (स) विष्णु।
—पुराण, स पु (स न) पुराणविशेष।
ग़रूर, स पु (अ) अभिमान, दर्प, गर्व।
गरेबान, स पु (फ़ा) निचोलगल।
गरोह, स पु (फा) समुदाय, समूह।
ग़र्क़, वि (अ) जलमग्न स परि, प्लुत, जले तिरोहित २ नष्ट, ध्वस्त ३ कार्ये व्यापृत लीन मग्न।
ग़र्क़ाब, वि (अ+फा आब) जलमग्न, आ स परि, प्लुत २ अति, लीन निरत व्यापृत आसक्त।
ग़र्क़ी, सं स्त्री (अ) सप्लव, आप्लाव। २ निमज्जन, जले तिरोधान ३ दे 'लँगोटी'।
गर्ग, स पु (स) ऋषिविशेष २ वृषभ।
गर्गर, स पु (स) दे 'गगरा' २ ३ वाद्य मत्स्य, भेद।
गर्गरी, स स्त्री (स) मथनी, मथनपात्रम् २ दे 'गगरी'।
गर्ज, स स्त्री, दे 'गरज'।
ग़र्ज़, स स्त्री, दे 'गरज'।
गर्जन, स पु (स न) दे 'गरज'।
गर्त, स पु (स) दे 'गड़हा' २ दे 'दरार' ३ जलाशय ४ नरकविशेष।
गर्द, स स्त्री (फा) धूली लि (स्त्री), रेणु, पांशु, पांसु, क्षोद, रजस् (न)।
गर्दन, स स्त्री (फ़ा) ग्रीवा, कन्धरा, शिरोधरा शिरोधि, कवि (पु) २ पात्रकंठ।
—की अकड़न, स स्त्री, ग्रीवावात।
—तोड़ बुख़ार, स पु शीर्षावरणप्रदाह, मस्तिष्कवशेरुक ज्वर।
—हिलाना, क्रि स, शिर मस्तक चल् कम्प् (प्रे)।
—उठाना, मु, अभिद्रुह् (दि प अ, द्वितीया के साथ) व्युत्था (भ्वा आ अ) द्रुह् (चतुर्थी के साथ)।
—उड़ाना या काटना, मु, शिर कृत् (तु प से) छिद् (रु प अ)।
—झुकाना, मु, नम्या इ (दोनों अ प अ)।
—पर सवार होना, मु, दे 'विवश करना'।
—मरोड़ना, मु गलहरतयति (ना धा), गलनिष्पीडनेन व्यापद् (प्रे) गल निष्पीड (चु)।
—मारना, मु, दे 'उड़ाना या काटना'।
—में हाथ देना या डालना, मु, अर्धचन्द्र दत्त्वा निष्क्रम् (प्रे)।
गर्दभ, स पु (स) दे 'गदहा' (स न) श्वेतकुमुदम्।
गर्दभी, स स्त्री (स) दे 'गदही'।
गर्दा, स पु, दे 'गर्द'।
गर्दिश, स स्त्री (फा) परिवर्तन, घूर्णन, परिभ्रमण, चक्र २ आपद् विपद् (स्त्री)।
—करना, क्रि अ परिवृत् (भ्वा आ से), दे 'घूमना'।
गर्भ, स पु (स) भ्रूण, पिंड कलल, उदरस्थशिशु (पु) २ दे 'गर्भाशय' ३ अभ्यन्तर, अंतर्भाग।
—गिरना, क्रि अ, गर्भ स्रु (भ्वा प अ) पत् (भ्वा प से)।
—रहना या होना, क्रि स, गर्भ धृ (चु) आधा (जु उ अ) गर्भवती अंतर्वत्नी भू।
—पात,-स्राव, स पु (स) गर्भ भ्रूण,-च्युति (स्त्री)-पतनम्।
—दास, सं पु (स) दासी चेटी भुजिष्या पुत्र।
गर्भवती, स स्त्री (स), गर्भिणी, सगर्भा, ससत्त्वा।
गर्भस्थ, वि (स) गर्भाशयस्थ, उदरस्थ।
गर्भांक, स पु (स) अंकस्थांक (हा), दृश्यम्।
गर्भागार, स पु (स न) गर्भ,-आशय कोष २ प्रसूतिगृहम् ३ गर्भगृहम्, ४ शयनागारम्।
गर्भाधान, स पु (स न) संस्कारभेद, निषेकसंस्कार २ सेक, निषेक ३ गर्भधारणम्।
गर्भाशय, स पु (स) गर्भकोश ष, योनि (पु स्त्री)।
गर्भिणी, स स्त्री (स) गर्भवती, अन्तर्वत्नी, सगर्भा, ससत्त्वा, धृत-रूढ गृहीत,-गर्भा।
गर्भित, वि (स) सगर्भ, गर्भयुक्त २ पूर्ण, पूरित, व्याप्त।

गर्मे, दे 'गरम'।

गर्माहट, स स्त्री, दे 'गरमी'।

गर्व, स पु (स) (उचित) अभिमान २ (अनुचित) अहंकार, दर्प, मद, माद, आरोप, अह, मान औद्धत्य, अवलेप, उत्सेक, स्मय।

—करना, क्रि अ गर्व (भ्वा प से), प्रगल्भ (भ्वा आ से), दृप (दि प वे)। २ अभिमन (दि आ अ)।

गर्वित, वि (स) (उचित) अभिमानिन् २ (अनुचित) दृप्त सदर्प, मानवं, अवलिप्त, उल्सिक्त, उद्धत, उत्सेकिन्, साटोप, साहंकार।

गर्वी, वि (स गर्विन्) } दे
गर्वीला, वि (हि गर्व >) } 'गर्वित'।

गर्हणीय, वि (स) गर्ह्य निंद्य अधम।

गर्हा, स स्त्री (स) निंदा, गर्हण, आक्षेप, निर्भर्त्सना।

गर्हित, वि (स) निंदित, आक्षिप्त, उपालब्ध।

गर्ह्य, वि (स) दे 'गर्हणीय'।

गल, स स (स) कंठ, कृकः, निगरण २ दे 'ग्रीवा' ३ ४ मत्स्य वाद्य,-भेद।

—गंड, स पु (स) कंठपिंड,-श्वयथु-शोथ। २ गडु (पु)।

—बाही, स स्त्री (स गल + हि बाह) आलिंगन, परिरंभ, परिष्वंग।

—माल, स स्त्री (स) माला, माल्य, शेखर, हार, स्रज् (स्त्री)।

—शुंडी, स स्त्री (स) गलशुंडिका, घंटिका, गलरोगभेद।

गलतकिया, स पु (स गल + फ़ा) गलो पधान, कपोलपवई।

गलफड़ा, स पु (हि गल + हि फड़ना) जलजन्तूनां श्वासेंद्रियम्।

गलफूला, वि (स गल + हि फूलना) स्थूलास्य, पीनवदन।

गलमुच्छे, स स्त्री [स गल्लश्मश्रुणि (न बहु)] गल्ललोमानि (न बहु)।

गलगल, स स्त्री (देश) बृहत्,-जंबीर(मी)र अम्लफलम्। २, ३ पक्षि-चूर्णलेप,-भेद।

गलत, वि (अ) अशुद्ध, भ्रांत, सदोष, वितथ। २ असत्य, अनृत, मिथ्या।

—फहमी, स स्त्री (अ + फा) भ्रम, भ्रांति (स्त्री), मिथ्याबोध।

गलतंस, स पु (स गलितवंश) सन्तान अपत्य-हीन-रहित, निस्सन्तान, निरपत्य।

गलताँ, वि (फा) वि,आकुल, व्यग्र, उद्विग्न।

गलती, स स्त्री (अ) स्खलित, दोष, प्रमाद, अपराध २ भ्रम, भ्रांति (स्त्री), व्या,मोह।

—करना, क्रि अ, अपराध् (दि स्वा प अ), विभ्रम् (भ्वा दि प से) स्खल् (भ्वा प से), प्रमद् (दि प से)।

गलतुलआम, स पु (अ) अशुद्धोऽपि प्रचलित प्रयोग (व्या)।

गलना, क्रि अ (स गलन) वि, द्रु (भ्वा प अ), विली (क प अ, दि आ अ) गल् क्षर (भ्वा प से) द्रवी आर्द्री भू। २ पच (कर्म), सिध् (दि प अ) ३ पूतीभू, विगल, ४ परिक्षि परिहा भपचि (कर्म)। स पु, गलन विद्रव-वण, विलयन, क्षरण पचन परिक्षय इ।

गलने योग्य, गलनीय, विद्रवणीय पचनीय इ।

गलने वाला, वि,द्राव्य, विलेय, विलाप्य इत्यादि।

गला हुआ, वि, वि द्रुत, गलित, द्रवीभूत इ।

गल्बा, स पु (अ) वि,जय २ प्राबल्यम्, प्रभुत्वम्।

गला, स पु (स गल) कंठ, कृक, निगरण २ ग्रीवा, कधरा, शिरोधि, वधि।

—की सोजिश, स स्त्री कण्ठ, प्रदाह-शोथ।

—काटना, मु, कंधरां कृत् (तु प से) २ अतीव पीड् (चु)।

—घोंटना, मु, गल निष्पीड् (चु), गलहस्तयति (ना धा)।

दबाना, मु, कंठ निपीड्य अथवा श्वास निरुध्य मृ (प्रे)।

—बैठना, मु, कंठ रूक्ष अथवा कर्कश भू।

गले पड़ना, मु अपरिहार्य (वि) भू।

गले लगाना, मु, आलिंग (भ्वा प से), आश्लिष् (दि प अ), परिष्वज् (भ्वा आ अ), उपगुह् (भ्वा उ वे)।

गलाऊ, वि (हि गलना) वि,द्राव्य, विलाप्य।

गलाना, क्रि स, 'गलना' के प्रे रूप।

गलाव, स पु } (हिं गलना) दे 'गलना'।
गलावट, स पु } स पु २ द्रावक द्रावण।

गलित, वि (स) द्रवीभूत, वि द्रुत, २ जीर्ण, शीर्ण ३ नष्ट, भ्रष्ट, ४ परि, पक्व पुष्ट ५ पतित, च्युत।

—कुष्ठ स पु (स न) गलत्कुष्ठम्।

—यौवना, स स्त्री (स) क्षीण विगत यौवना।

गली, स स्त्री (स गल >) वीथी थि (स्त्री), सकट सबाध, पथ मार्ग।

—कूचा, स पु, (हिं + फा) सकीर्णमार्ग।

—गली मारे मारे फिरना, मु व्यर्थमितस्तत परिभ्रम् (भ्वा दि प से) २ आजीविका न्वेषणाय सर्वत्र पर्यट् (भ्वा प से) ३ सर्वत्र उपलभ् (कर्म)।

गलीचा, स पु (फा गालीचा, तु कालीन से) तौरुष्क, कुथ -आस्तरणम्।

ग़लीज़, वि (अ) मलिन, आविल २ अपवित्र।

गल्प, स स्त्री (स कल्प >) आख्यायिका, उपाख्यान, उपकथा।

गल्ल, स पु (स) कपोल, गण्ड।

गल्ला[1], स पु (फा) व्रज, निवह, यूथ, वृन्द, पालकम्। (यह शब्द पशुओं के लिए ही प्रयुक्त होता है)।

—बान, स पु (फा) अवि, मेष, पाल गोपाल।

गल्ला[2], स पु (अ) अन्न, धान्य २ शस्यम्।

—फरोश, स पु (अ + फा) अन्न धान्य, विक्रेतृ (पु)।

गवय, स पु (स) गवाल्क, वलभद्र, महागव, वनगो (पु)।

गवयी, स स्त्री (स) वनधेनु (स्त्री) भिल्लगवी।

गवर्नमेंट, स स्त्री (अ) शासन, पद्धति (स्त्री)-प्रणाली २ शासक, मण्डल-वर्ग।

गवर्नर, स पु (अ) भोगपति (पु) प्रान्ताध्यक्ष, राज्यपाल २ शासक, शासितृ।

—जनरल, स पु (अं) राष्ट्राध्यक्ष।

गवर्नरी, स स्त्री (अ गवर्नर >) प्रान्ताध्यक्षता, राज्यपालत्वम् । वि राज्यपाल प्रान्ताध्यक्ष, सम्बधिन्।

गवाक्ष, स पु (स) वातायन, आलोकम्।

गवाना, क्रि स, 'गाना' के प्रे रूप।

गवारा, वि (फा) अनुकूल, अभीष्ट।

—करना, क्रि स, सह् (भ्वा आ से)।

गवाह, स पु (फा) साक्षिन् (पु)।

चश्मदीद—, स पु (फा) प्रत्यक्ष साक्षिन् दर्शन दर्शिन्, देश्य । प्रत्यक्षिन्।

गवाही, स स्त्री (फा गवाह) साक्ष्य, प्रमाण, प्रामाण्य, निदर्शनम्।

—देना, क्रि स, साक्षी भू, साक्ष्य दा २ क्रियापाद (धर्म.)।

गवीश, स पु (स) गो, पति स्वामिन् । २ गोप, पाल पालक, आभीर ३ वृषभ वृषन्।

गवेषणा, स स्त्री (स) दे 'खोज'।

गवैया, स पु (पू हिं गावना) गायक, गायन, गातृ (पु), गायक, गेष्णु गय।

गव्य, वि (स) गोसम्बधिन् (दुग्धगोमयादि)।

गव्यूति, स स्त्री (स) क्रोशयुगल, द्विसहस्र धनुस् (न)।

गश, स पु (अ गशी) मूर्च्छा, मोह।

—आना, क्रि अ, मूर्छ् (भ्वा प से) मुह् (दि प वे) प्र विन्स्था।

ग़शी, स स्त्री (अ) दे 'गश'।

गश्त, स पु (फा) भ्रमण, पर्यटनम्।

—लगाना, क्रि अ, रक्षायै परिभ्रम् (भ्वा दि प से)।

गश्ती, वि (फा) पर्यटन-परिभ्रमण-शील। स स्त्री, कुलटा व्यभिचारिणी, स्वैरिणी।

गहगहाना, क्रि अ (अनु गहगह) प्रसद् (भ्वा प अ), प्रहृष् (दि प से) २ दे 'लहलहाना'।

गहन[1], वि (स) ग (ग) भीर, अगाध, दे 'गहरा २ दुर्गम, दुर्भेद्य ३ दुर्बोध, कठिन ४ घन, निबि(वि)ड । स पु (स न) गांभीर्य २ दुर्गमस्थान ३ वन ४ गह्वर ५ दुःख ६ जम्म्।

गहन[2], स पु (स ग्रहण) आदान २ उपराग, ग्रहपीडन ३ कल्क ४ विपत्ति (स्त्री) ५ न्यास, बंधक।

गहना, स पु (स ग्रहण >) अलंकार, वि आ, भूषण, आभरण, मंडनम् २ न्यास, निक्षेप । क्रि स, दे 'पकड़ना'।

गहरा, वि (स गभीर) गभीर, निम्न, अगाध, अतलस्पर्श २ अत्यधिक, घोर (निद्रादि) ३ दृढ कठिन ४ गाढ, घन।

—असामी, स पु (हि+अ) सपन्न, धनिन् (पु)।

गहरे लोग स पु (बहु) विचक्षणा विदग्धा

गहराई स स्त्री। (हि गहरा) गाम्भीर्य,
गहराव स पु निम्नत्व, अगाधता।

गहवारा, स पु (फा) (शिशु) प्रेखा-दोला।

गह्वर, स पु (स न) गुहा, (अकृत्रिम) बिल देवखात (कृत्रिम) दरी कदर रा ॰ तम पूर्ण गूढस्थान ३ छिद्र विवर ४ दुर्भेद्य विषम-स्थान ५ गुल्म स क्षुप ६ वन ■ दम्भ ८ रोदन ॰ अनेकार्थ वाक्य १० जटिलविषय ११ जल। (स पु) लतागृह निकुञ्ज वि दुर्गम २ गुप्त।

गाग, वि (स) गगा, सम्बन्धिन्-विषयक। स पु भीष्म २ कार्तिकेय ३ सुवर्ण, हिरण्मय ४ धत्तूर, शिवप्रिय।

गागेय, स पु (स) भीष्म।

गाँजा, गाँझा, स पु (सं गञ्जा) मादिनी, मोहिनी हर्षिणी।

गाठ, स स्त्री (स ग्रथि पु) ग्रथिका बध बन्धन गड २ सधि (पु) पर्वन् (न), आस्थ ग्रथि-सधि ३ पोटलिका, भार ४ आर्द्रक खड-क ५ विघ्न ६ भ्रान्ति (स्त्री) ७ कूपरभूषणभेद।

—खोलना, क्रि स ग्रथि-बध उन्मुच (प्र) मोच (चु), उद्ग्रथ (क्र प से)। (मु) धन कोष मञ्जिका शिथिलयति (ना धा) द्वेष दूरी कृ।

—देना, बाँधना या लगाना, क्रि स, ग्रथि दा अथवा बध (क्र प अ)। (मु) स्मृ (भ्वा प अ)।

—पडना, क्रि अ, संश्लिष (दि प अ) ग्रथ (कर्म ग्रथ्यते)। (मु) विद्वेष उत्पद् (कर्म)।

—कट, स पु, ग्रथिछेदक, चौर।

—गोभी, स स्त्री, दे 'गोभी' के नीचे।

—दार, वि ग्रथिल, ग्रथि पर्व मय (-मयी स्त्री)।

—काटना, मु, ग्रथि छित्त्वा अपहृ (भ्वा प अ), ग्रथि छिद् (रु प अ)।

—का पूरा, मु, सपन्न, धनाढ्य।

—जोडना, मु, वैवाहिक-औद्वाहिक ग्रथि बध् (क्र प अ)।

—से, ■, स्वीय स्वकीय, धनात्।

गाँठना, क्रि स (स ग्रथन) ग्रथ (क्र प से), ग्रथि बध (क्र प अ) दा २ सयुज (रु उ अ चु), सधा समाधा (जु उ अ) सश्लिष (प्र) ३ ससिव (दि प से) ४ अनुकूल याय (ना धा) स्वपक्षपातिन विधा (जु उ अ) ५ आत्मसात् कृ, वशानी (भ्वा उ अ)।

गाडीव, स पु (स पु न) गाडि (डी) व म, अर्जुनधनुस (न)।

गाडीवी, स पु (स विन् पु) अर्जुन, गाडीवधर २ अर्जुनवृक्ष।

गाधर्व, वि (स) गधर्व, विषयक-सबधिन् जातीय। स पु (स न) गान। (स पु) दे 'गधर्व'।

—वेद, स ■ (स) सामवेदस्योपवेद २ सगीतम्।

गाधार, स ■ (स) भारतवर्षस्योत्तरदिशि देशविशेष २ तृतीयस्वर (सगीत)। (स न) गधरस।

गाधारि, स पु (स) दुर्योधनमातुल शकुनि, सौबलक।

गाधारी, स स्त्री (स) दुर्योधनजननी।

गाधारेय, स पु (स) दुर्योधन, धृतराष्ट्र ज्येष्ठपुत्र।

गाधी, स पु (स गाधिन्) गधवणिज गध विक्रयिन्-उपजीविन्-वणिज-आजीव २ गुजरप्रान्ते वैश्योपजातिविशेष ३ महात्मा गाधिन्।

गाभीर्य, स पु (स न) दे 'गभीरता'।

गाँव, स पु (स ग्राम) नि स, वसथ, हट्टादि शून्यवसति (स्त्री)।

गाँस, स स्त्री (हि गाँसना) नियन्त्रण, बन्धन, प्रतिरोध २ द्वेष, मनोमालिन्य ३ रहस्य, गुप्तवार्ता ४ ग्रन्थि (पु) ५ शस्त्राग्र ६ अवेक्षा, पर्यवेक्षणम्।

गाँसना, क्रि स (स ग्रन्थन > ?) व्यध (दि प अ), निर्भिद् (रु प अ) २ स नि यम् (भ्वा प अ), दम्, (प्रे दमयति) ३ वशीकृ ४ अतिशयेन-अत्यधिक पूर् (प्रे)।

गाइड, स ■ (अ) पथ मार्ग-भ्रन, प्रदर्शक

प्रदर्शिन् (पु)-उपदेशक २ नायक, नेतृ (पु) ३ निर्देशकग्रन्थ ।

गाउन, स पु (अ) कञ्चुक ।

गागर, स स्त्री (सं गर्गर>) दे 'गगरा'।

गागरी, स स्त्री (स गर्गरी>) दे गगरी ।

गाज, स स्त्री (स गर्ज) दे 'गरज' २ वज्रपातध्वनि (पु), वज्रनिर्घोष ३ वज्र-अ, अशनि (पु स्त्री), ह्रादिनी ।

—मारा, वि, वज्राहत, अशनिताडित ।

गाजर, स स्त्री (स न) गजर, पीतकद, पीतमूलक सुपीत, सुमूलकम् ।

—मूली, स स्त्री, गाजरमूलक, तुच्छवस्तु (न)।

गाजी, स पु (अ) धर्मवीर (इस्लाम), वीर, योध ।

गाड़ना, क्रि स (हिं गाड=गड्ढा) निखन् (भ्वा प से), (श्मशाने=पृथिव्या) निधा (जु उ अ), निगुह् (भ्वा उ वे) २ रुह् (प्रे रोपयति)-स्था (प्र स्थापयति) निविश (प्रे) ३ गुप् (भ्वा प वे गोपायति), तिरोधा-अन्तर्धा (जु उ अ)।
स पु, निखनन, श्मशाने स्थापन, रोपण, निवेशन गोपनम् ।

गॉड, स पु (अ) ईश्वर, परमात्मन् २ देव, सुर ।

गाडर, स स्त्री (स गड्डरी) मेषी, एडका ।

गाडी, स स्त्री (स गार्त=रथ) शकट-ट, शकटिका, यान, वाहन, प्रवहण, रथ २ बाष्प शकटी, लौहाश्वगत्री ।

—जोतना, क्रि स, शकटे अश्वं वृषभं युज् (प्रे)।

—वान, स पु (हिं गाडी) सारथि (पु), सूत, यन्तृ (पु), शाकटिक ।

गाढ, वि (स) अधिक, प्रचुर, बहु २ दृढ, प्रबल ३ गम्भीर, अगाध ४ दुर्गम, विकट ।
स पु, (स न) आपत्ति (स्त्री)।

गाढा, वि (स गाढ) कठिन, स्थूल, सघात बद्ध, घ्न, सहत २ घन ३ (मित्रादि) अभिन्न हृदय, दृढ ४ सबल ५ कठिन ।
स पु, स्थूलवस्त्रभेद ।

गाढ़ी कमाई, स पु, घोरपरिश्रमोपार्जित धनम् ।

गाढ़े दिन स पु, दुर्दिनानि, कुसमय ।

गाणपत्य, स पु (स) गणपति-गणेश-पूजक भक्त २ गणेश पूजा भक्ति (स्त्री) ३ गणनायकत्वम् ।

गाणेश, स पु (सं) गणेश, भक्त पूजक ।

गात, स पु, दे 'गात्र'।

गातव्य, वि (सं) गेय, गानार्ह ।

गाता, स पु (स-तृ) गायक, गायन, गातृ ।

गाती, स स्त्री (स गात्र>) गात्रीय, गलवस्त्रभेद ।

गात्र, स पु (स न), तनु तनू (स्त्री), देह, काय, दे 'शरीर' २ अग, अवयव ।

गाथक, स पु (स) गातृ (पु), गायक २ पुराणकथक । (गाथिका स्त्री)।

गाथा, स स्त्री (स) स्तुति-नुति (स्त्री) २ श्लोक, पद्य ३ पालिमिश्रितसंस्कृतभाषा ४ गीत ५ कथा, वृत्तान्त ६ पारसीकधर्मग्रन्थभेद ।

गाद, स स्त्री (सं गाध>) दे 'तलछट'।

गाध, वि (स) सुखोत्तरणीय, गाम्भीर्यरहित, उत्तान २ न्यून, अल्प ।
स पु (स न) स्थान, २ गाम्भीर्यशून्यो जलप्रदेश ३ लिप्सा, लोभ ४ वृष ५ तल, अधोभाग ।

गान, स पु (स न) गीत, गीतिका, गेय २ सस्वर, पठन-उच्चारण, कीर्तनम् ।

—विद्या, स स्त्री (स) सगीत, सगीत-शास्त्र, शास्त्र विद्या ।

गाना, क्रि अ (स गान) गै (भ्वा प अ), सस्वर उच्चर् (प्रे), सुमधुर आलप् (भ्वा प से) २ (पक्षियों का) कूज् (भ्वा प से) ३ वर्ण् (चु) ४ स्तु (अ प अ), नु (अ प से)।
स पु, गीत, गीति-तिका (स्त्री) गान २ सस्वर-आलपन-उच्चारणम् ।

गानेवाला स पु, गातृ-ता, गायक, गायन, गातृ (पुं)। (-वाली=गायिका गात्री, गायनी)।

—बजाना, स पु, गानवादन, सगीत, सगीत विद्या, शास्त्रम् ।

गाफिल, वि (अ) अनवधान, अनवहित, प्रमादिन्, उपेक्षक ।

गाभ, स स्त्री (सं गर्भ) पशुगर्भ २ अंकुर, प्ररोह ।

गाभा, स पु (स गर्भ >) बिस(श)ल्य य, पल्लव -व, प्ररोह २ शस्यम् ।

गाभिन, स स्त्री (स गर्भिणी) गर्भवती, (केवल पशुओं के लिए) ।

गामिनी, वि स्त्री (स) चलित्री, यात्री ।

गामी, वि (स गामिन्) गन्तृ, यातृ ।

गाय, स स्त्री (स गो स्त्री) धेनु (स्त्री), मातृ (स्त्री), शृङ्गिणी, अघ्न्या-दोग्ध्री, भद्रा, अनडुहा, अनडवाही, कल्याणी, पावनी, गौरी, सुरभि (स्त्री) २, सरल ऋजु मनुष्य ।

गायक, स पु (स) दे 'गाने वाला'।

गायत्री, स स्त्री (स) वैदिकछन्दोभेद २ वैदिक मन्त्रविशेष (तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात् । ऋग्व ३।६२।१०) सावित्री ३ गंगा ४ दुर्गा ।

गायन, स पु (स) दे 'गानेवाला' २ गान, सम्वरालापन ३ गीत गीतिका ।

गायब, वि (अ) लुप्त, अन्तर् तिरो, हित, २ अदृष्ट, भाविन्, भविष्यत् ।

—करना, क्रि स, चुर (चु), तिरो धा (जु उ अ) ।

—होना, क्रि अ, तिरोभू, अदृश्य (वि) +भू, अन्तर तिरो, धा (कर्म) ।

गायिका, स स्त्री (स) गायनी, गात्री ।

गार, स पु (अ) गुहा, कन्दरा २ विवरम् ।

गारत, वि (अ) नष्ट, ध्वस्त ।

गारद, स स्त्री (अ गार्ड) रक्षक रक्षि-वर्ग गण २ अगरक्षक ३ रक्षा, गुप्ति (स्त्री) ।

गारना, क्रि स, (स गालन >)दे 'निचोड़ना'।

गारा, स पु (हिं गारना) कर्दम, पङ्क, उत्त-उन्न, मृद् (स्त्री)-मृत्तिका, लेप ।

गारुड, स पु (स न) विषमन्त्र २ सुवर्ण ३ गरुडपुराणम् ।

गारुडी, स पु (स डिन्) विषवैद्य, गारुडिक जाङ्गुलिक २ मोहिन् (पु), कुहकक़ार ३ प्रतिविषविक्रेतृ (पु) ।

गार्गी, स स्त्री (स) काचित् ब्रह्मवादिनी विदुषी नारी (उपनिषद्) ।

गार्ड, स पु (अ) रक्षक, रक्षिन् (पु) २ वाष्पशकट्या रक्षक ।

गार्डी—, स पु (अ) शरीर अंग,-रक्षक ।

गार्डेन, स पु (अ) उद्यान, आराम ।

—पार्टी, स स्त्री (अ) उद्यान-आराम, भोज ।

गार्हपत्य, स पु (स न) गृहपति,पद प्रतिष्ठा ।

—अग्नि, स पु (सं) यज्ञाग्निभेद ।

गार्हमेध, स पु (स) पंचमहायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, भूतयज्ञ) ।

गार्हस्थ्य, स पु (स न) गृहस्थाश्रम २ गृह स्थकृत्यानि ३ पञ्चमहायज्ञाः ।

गाल, स पु (स गल्ल) कपोल गंड २ मुखम् ।

—पर गाल चढ़ना, मु, पनीभू, आप्यै (भ्वा आ से) ।

—पिचकना, मु कृशीभू, विशु ष्कि (कर्म) ।

—फुलाना, मु, कुप (दि प से), क्रुध् (दि प अ) ।

—बजाना या मारना, मु, आत्मान श्लाघ् विकत्थ (भ्वा आ से) ।

गालव, स पु (स) गन्धमुनिपुत्र (विश्वामित्रशिष्यविशेष) २ लोध, लोध्र ३ पाणिनिपूर्ववर्ती वैयाकरणविशेष ।

गाला, स पु (हिं गाल) धूतकर्पासपिंड क, २ हिममूल्म्, हिम-तुषार,-पिण्डम् ३ चक्रीक्षिप्त मुष्टिमात्रमन्नम् ४ ग्रास, कवल ।

गालिबन, क्रि वि (अ) सम्भवत, प्राय, प्रायेण, प्रायश, स्यात्, किल, नाम (सब अव्य) ।

गाली, स स्त्री (स गालि स्त्री) आक्रोश, अपवाद, अपभाषण, अधिक्षेप, परुषोक्ति (स्त्री) ।

—खाना, क्रि, अ, आ-अधि क्षिप (कर्म), अप भाष अभिशप्-अपवद् (कर्म) ।

—देना, क्रि स, अधि आ क्षिप (तु प अ), अभिशप् (भ्वा उ अ), अभिशाम-अपवद् (भ्वा प से) ।

—गलौज, स स्त्री, परस्पर, अधिक्षेप -अपभाषण गालिदानम् ।

गालीचा, स पु, दे 'गलीचा'।

गाव, सं पु (गौ, पु स्त्री, फा गाव) दे 'गाय' २ दे 'बैल'।

—कुशी, स स्त्री (फा) गो, घात वध हत्या।
—घप, स स्त्री, छलेन अपहार उपयोग, ग्रसनम्।
—घप करना, क्रि स, कपटेन आ ममात् कृ।
—ज़बान, स स्त्री (फा) गोजिह्वा, अध पुष्पी, खरपत्री।
—तकिया, स पु (फा) महोपबर्ह, बृहद् पधानम्।
—दी, स पु (फा +सं धी >) जड, मूर्ख।
—दुम, वि (फा) गोपुच्छाकार, शुण्डाकृति। सूच्याकार, शराकृति।

गाहक, स पु (स ग्राहक) क्रेतृ, क्रयिन् २ गुणग्रहीतृ (पु), गुणज्ञ।

गाहकी, स स्त्री (हिं गाहक) ग्राहकत्व, क्रतृत्व २ गुणज्ञता।

गाहन, स पु (स न) वि-अव,-गाहनम्, निमज्जन, स्नान २ विलोडनम्।

गाहना, क्रि स (स गाहन) अव वि गाह् (भ्वा आ से), निमस्ज् (तु प अ) २ मथ्, मथ् (भ्वा प से), विलोड् (प्रे) ३ निस्तु पीड़, पृ (क् उ से) २ पादाभ्यां पीड (चु)-मृद् (क प से) ४ दे 'खोजना'। स पु (स न) अव वि-गाहन विलोडन, मदन, निस्तुषीकरण अन्वेषणम्।

गिंडुरी, स स्त्री, दे 'इडुरी'।

गिचपिच, गिचिरपिचिर, वि (अनु) अवाच्य, अव्यक्ताक्षर २ अस्पष्ट, अविशद ३ अक्रम, अस्त-व्यस्त।

गिज़ा, स स्त्री (अ) खाद्य, भक्ष्य, अन्न, भोजनम्।

गिटपिट, स स्त्री (अनु) अपार्थक निरर्थक व्यर्थ, वचन-शब्द।
—करना, क्रि स, आंग्लभाषायां वद् (भ्वा प से)।

गिड़गिड़ाना, क्रि अ (अनु) अतिनम्रतया अभि प्र अर्थ् (चु आ से), कृपणतया क्षुद्र तया याच् (भ्वा उ से)।

गिड़गिड़ाहट, स स्त्री (हिं गिडगिडाना) अतिनम्रप्रार्थना, दीनवत् याचनम्।

गिद्ध, स पु (स गृध्र) दूरदर्शन, वज्रतुड, दाक्षाय्य।

गिनती, स स्त्री (हिं गिनना) गणन, सख्यान २ सख्या, गणना ३ अकमाला।
—के, मु, कतिचित्, स्तोका।

गिनना, क्रि स (स गणन) गण्-सकल् (चु), परि, सख्या (अ प अ) २ मन् (दि आ अ), गण। स पु, गणन सख्यान, सकलनम्।

गिननेयोग्य, वि, गणनीय, सख्येय।

गिनने वाला, वि, गणक, सख्यातृ।

गिना हुआ, वि, गणित, सख्यात।

दिन—, मु, यथाकथंचित् काल या (प्रे याप यति)।

गिनवाना, गिनाना, क्रि प्रे, व 'गिनना' के धातुओं के प्रे रूप।

गिन्नी, स स्त्री (अ) आग्लदेशीया स्वर्णमुद्रा, गिनी।

गिरगिट, स पु (देश अथवा स गल गति >?) सरट इ, कृक (कु) लास, म, प्रतिसूर्य यक।
—की तरह रग बदलना, मु, स्वार्थ स्व-सिद्धातात् परिवृत् (प्र)।

गिरजा, स पु (पुर्त इग्रिजिया) ख्रिस्टधर्म मदिरम्।

गिरना, क्रि अ (स गलन) नि अव पत (भ्वा प से) स्खल्-गल् (भ्वा प से), स्रस् (भ्वा आ से), च्यु (भ्वा आ अ) २ ह्रि ध्रु (कर्म), ह्रस (भ्वा प से) क्षय-लय, इ या (अ प अ) ३ अधिकारात् अवरुह् (कर्म), अवरुह् (भ्वा प अ), च्युभू। ४ युद्धे हन् (कर्म) ५ अकस्मात् यदृच्छया घट् (भ्वा आ से) अथवा आ-स पद्। स पु, पतन, स्खलन, गलन, अवरोहण, पद, भ्रश च्युति (स्त्री)।
—वाला, वि, पतयालु, पतन शील-उन्मुख, पातिन्, पातुक, पिपतिषु।

गिरा हुआ, वि, पतित, च्युत, स्रस्त, गलित।

गिरते पड़ते, मु, यथाकथचित्, येन केन प्रकारेण।

गिरफ़्त, स स्त्री (फा) दे 'पकड'।

गिरफ़्तार, वि (फा) गृहीत, धृत, बद्ध, निरुद्ध।

—करना, क्रि सं, निरुध् (रु उ अ), आसिध (भ्वा प वे), ग्रह् (क्र् प से)।
—होना, क्रि अ निग्रह-धृ वध निरुध् (कर्म)।
गिरफ्तारी, सं स्त्री (फा) आसेध, बंधन, निग्रहण, धरण, निरोध।
गिरमिट, सं पु (अ एग्रीमेंट), दे 'इकरार नामा'।
गिरमिटिया, स पु (अ एग्रीमेंट >) प्रतिज्ञा बद्ध अनुबद्ध, कर्मकर श्रमक।
गिरवाना, क्रि प्रे, व 'गिरना' के प्रे रूप।
गिरवी, वि (फा) आधी-न्यासी, कृत, निक्षिप्त, आहित।
—रखना, क्रि स, न्यस (दि प से), निक्षिप (तु प अ), न्यासी आधी-कृ।
—दार, स पु (फा) आधि ग्रास-बंधक, ग्राहिन् (पु)-ग्राहक।
—रखने वाला, स पु, निक्षेप्तृ, आधातृ।
गिरह, स स्त्री (फा) दे 'गाँठ' (१-३) २ दे 'जेब' ३ दे 'उल्टबाजी' ४ गजस्य मानस्य षोडशांश।
—बाँधना, क्रि स, दे 'गाँठ देना'।
—कट, स पु, दे 'गाँठकट'।
—दार, वि, दे 'गाठदार'।
गिरा, स स्त्री (स) वाक्शक्ति गिर वाच (स्त्री), वाणी २ सरस्वती, भारती, वाग्देवी ३ जिह्वा, रसना ४ वचन, उक्ति (स्त्री)।
गिराना, क्रि स, व 'गिरना' के प्रे रूप।
गिरानी, स स्त्री (फा) महार्घता, बहुमूल्यता २ दुर्भिक्ष, दुष्काल ३ गुरुत्व, भारवत्त्व ४ अजीर्णम्।
गिरावट, स स्त्री (हिं गिरना) पतन, च्यवन अवरोहण, अवनति (स्त्री)।
गिरि, सं पु (स) पर्वत, शैल, अचल, नग २ परिव्राजकोपाधि (पु)।
—धर, सं पु (स)
—धारी, स पु (स धारिन्) } श्रीकृष्णचन्द्र।
—नन्दिनी, स स्त्री (स) पार्वती, उमा।
—नाथ, सं पु (सं) शिव, शङ्कर।
—राज, स पु (स) हिमालय २ गोवर्धन पर्वत।
—सुता, स स्त्री (स) पार्वती।
गिरिजा, स स्त्री (स) पार्वती, गौरी।
गिरींद्र, स पु (सं) महापर्वत २ हिमालय ३ शिव।
गिरी, स स्त्री (हिं गरी) अष्ठि (स्त्री), अष्ठीला, बीज, गर्भ, फल-बीज, गर्भ। (२-३) दे 'गिरि' तथा 'गिरी'।
गिरीश, स पु (स) शिव, महेश २ हिमालय ३ कैलाश ४ महापर्वत।
गिरो, वि (फा) दे 'गिरवी'।
गिर्द, अव्य (फा) अभित, परित, सर्वत, समन्तत, समन्तात् (सब अव्य)।
इर्द—
गिर्दागिर्द, } अव्य (फा) दे 'गिर्द'।
गिर्दावर, स पु (फा) पर्यटक, परिभ्रामक।
गिल, स स्त्री (फा) मृत्ति (स्त्री), मृत्तिका, मृदा, मृद (स्त्री) २ उत्तम-उग्र-मृत्ति।
—कार, स पु, मृल्लेपक, लेपकर, सुधा जीविन्।
—कारी, स स्त्री मृल्लेप।
गिलगिला, वि (फा गिल = गारा) पङ्किल, श्यान।
गिलट, सं पु (अ गिल्ट) सुवर्णरंजन, हेम च्छद २ गिल्टाख्यो धातुविशेष।
—करना, क्रि स, सुवर्णयति (ना धा), हेम, रसेन द्रवेण लिप (तु प अ)।
गिलटी, स स्त्री (स ग्रन्थि पु) मांस, पिंड, अधिमांस २ वि, स्फोट टक., शोथ, श्वयथु, व्रण ण, मांसार्बुदम्।
गिलना, क्रि स (स गिरण) दे 'निगलना'।
गिलबिलाना, क्रि स (अनु) अस्पष्ट गद्गद वाचा वद् (भ्वा प से)।
गिलहरी, स स्त्री (स गिरि (स्त्री) = चुहिया) काष्ठ-बिडाल मार्जार, चरमपुच्छ, वृक्षशायिका।
गिला ह्ला, स पु (फा) दे 'उपालम्भ'।
गिलाई, गिलाय, स स्त्री, दे 'गिलहरी'।
गिलाफ, स पु (अ) उपधान-उपबर्ह-कोष श २ तूला-तूलिका कोष ३ कोष, पुट, आवेष्टन ४ असिकोष।
गिलास, स पु (अ ग्लास) कंस, कुन्तल, गल्वर्क, पानपात्रम्। २ बदराकार आङ्ग्ल फलम्।
गिली-डंडा, स स्त्री, दे 'गुल्ली'।

गिलो, गिलोय, स स्त्री (फा) गुडू(ड)ची, अमृता, अमृत सोम ,वल्ली लता वल्लरी, रसायनी ।

गिलोला, स पु (फा गुल्ला) मृद् ,-वटिका गुटि(लि)का ।

गिलौरी, स स्त्री (देश) दे 'पान का बीडा'।

गिल्टी, स स्त्री दे 'गिल्टी'।

गिल्लड, स पु (स गल >) गल्लगण्ड , गण्डु ।

गीत, स पु (स न) गीति (स्त्री), गीतिका, गान, गेय २ यशस (न), महिमन् (पु)।

—गाना, मु, प्रशस (भ्वा प से) स्तु (अ प अ)।

गीता, स स्त्री (स) श्रीमद्भगवद्गीता २ ज्ञानमयोपदेश २ वृत्तान्त ३ छन्दोभेद ।

गीती, स स्त्री (स) } दे 'गीत' २ छन्दोभेद ।
गीतिका, स स्त्री (स) }

गीदड, स पु (स गृध्र—लालची अथवा फा गादी भीरु) क्रोष्टा, फेरु , शिवालु , गोमायु (पु) शृ(स)गाल , जम्बु(बू)क फेरव , मृगधूर्तक , भूरिमाय , वञ्च(चु)क । वि , कायर, भीरु ।

—भभकी, स स्त्री , विभीषिका ।

—बोलना, मु अपशकुन न भू २ निर्जनीभू ।

गीदडी, स स्त्री (हिं गीदड) शिवा, शृगाली, क्रोष्ट्री ।

गीध, स पु , दे 'गिद्ध'।

गीला, वि (फा गिल् = गारा) आर्द्र उन्न, उत्त क्लिन्न स्तिमित, जलसिक्त । (गीली (स्त्री) = आर्द्रा इ०)।

—करना, कि स , उन्द् (रु प से), क्लिद् (प्र), आर्द्रीकृ ।

—पन, स पुं (हिं गीला) आर्द्रता, उन्नता ।

गुञ्चा, स पुं (अ) मुकुल -लं, कोरक -कं, कलिका २ विहार , ३ संगीतम् ।

गुंज, स स्त्री (स गुञ्ज) गुञ्जन, गुञ्जित, गुनगुन्ध्वनि (पुं) झंकार , कलरव । २ आनन्दध्वनि (पु) ३ दे 'गुंजा' ४ दे 'गूंज'।

गुंजन, स पुं (स न), दे 'गुंज'(१)।

गुंजना, कि अ (स गुञ्जनं), गुञ्ज , मधुर ध्वन् , अस्पष्ट निस्वन् (सब भ्वा प से)।

गुंजरना, कि अ , दे 'गुंजना' २ दे 'गरजना'।

गुंजा, स स्त्री (स) रक्तिका, रक्ता, वन्या, २ गुंजाबीज इ० ।

गुंजाइश, स स्त्री (फा) अवकाश , स्थान, धारण ग्रहण, शक्ति (स्त्री) सामर्थ्य २ लाभ ३ योग्यता ।

गुंजान, वि (फा) घन निविड, गाढ ।

गुंजायमान, वि (स गुञ्ज् >) गुञ्जत् , मधुर ध्वनत् (शत्रन्त)।

गुंजार, स [illegible] दे 'गुंज'(१) ।

गुंजारना, कि अ , दे 'गुंजना'।

गुंडा, वि (स गुण्डक = मैला >) दुर्वृत्त, दुराचारिन् (पु), व्यसनिन् , लंपट २ रूपगर्वित, छेक , वेषाभिमानिन् । (गुंडी स्त्री)।

—पन, [illegible] पु , दुराचार , स्वैरिता, लंपटता ।

गुँथना, कि अ (हिं गूथना) ग्रन्थ् सन्दृभ् सूत्र् गु (गु) फ (कर्म) ।

गुँथवाना, कि प्रे , व 'गूथना' के प्रे रूप ।

गुँधना, कि अ (स गुध् = क्रीडा करना >) (हस्ताभ्यां) मृद् संपीड् (कर्म) २ दे 'गुँथना'।

गुँधवाना, कि प्रे , व 'गूधना' के प्रे रूप ।

गुँधाई, गुँधावट, स स्त्री (हिं गूधना) १ कराभ्यां मर्दन २ मर्दनवेतन ३ ग्रथन ४ ग्रथन, भृति -(स्त्री)-भृत्या ।

गुंफ, स पु (स) संकुलता, व्यतिकर, संकर २ गुच्छ स्तबक ३ श्मश्रु (न), ओष्ठलोमन् (न) ४ कूर्चम् ।

गुंफन, स पु (स न) संग्रथनम्, संदर्भणम्, संसूत्रणम् ।

गुंफित, वि (स) सं परि आ श्लिष्ट, सं-आसक्त २ ग्रथित, सूत्रित ३ उप्त, उत्त ।

गुंबज, स पु दे 'गुंबद'।

गुंबद, स पुं (फा) गोल, पटल छदि (स्त्री)।

गुइयाँ, स पुं तथा स्त्री (हिं गोहन साथ >)। १ सहचर , संगिन् (पु), सखि (पुं) २ सहचरी, सखी ।

गुग्गुल, स (स) गुग्गुलु , कालनिर्यास, देवधूप , रक्षोघ्नक ।

गुच्ची, स स्त्री (अनु) गुलीण्ड-क्रीडार्थ भूविवर, खानि (स्त्री)।

गुच्छ गुच्छक, स पुं (स) स्तव , स्तबकः गुत्स सक २ मयूरपुच्छ ३ द्वात्रिंशद् यष्टिकहार ।

गुच्छा, स पु (स गुच्छ दे) २ आभूषण भेद।
गुच्छेदार, वि (हि+फा) गुच्छिन्, सगुच्छ।
गुच्छी, स स्त्री (सं गुच्छ >) अरिष्ट, माल्य, गुच्छफल २ व्यजनोपयुक्तपुष्पभेद, •गुच्छी।
गुज़र, सं पु (फा) उप अभि-गम, उपसर्पण प्रवेश २ निर्गम, गमि (स्त्री) ३ निर्वाह, जीवनम्।
—जाना, मु, दे 'मरना'।
गुज़रना, क्रि अ (फा गुजर) इ या (अ प अ), गम् २ अति-व्यति, इ अति क्रम् (भ्वा प से) ३ भू, घट (भ्वा आ से) ४ मृ (तु आ अ), प्राणान् मुच (तु उ अ)।
गुजरात, स पु (स गुर्जरराष्ट्र) भारत वर्षस्य प्रान्तविशेष, गुर्जराष्ट्रप्रान्त।
गुजराती, वि (हि गुजरात) गुर्जरराष्ट्रीय, गुर्जरराष्ट्र, वासिन-सबधिन् २ गुर्जरराष्ट्रीय भाषा।
गुज़रान, स पु (फा गुजर) निर्वाह, कालक्षेप।
गुज़श्ता, वि (फा) •व्यतीत, गत, अतिक्रात।
गुज़ारना, क्रि स (हि गुजरना) गम् या (प्र)।
गुज़ारा, स पु (फा) निर्वाह, कालक्षेप २ जीवन, प्राणधारण ३ वृत्ति भृति (स्त्री) ४ तार्य, तरपण्यम्।
गुज़ारिश, स स्त्री (फा) निवेदन, प्रार्थना।
गुटकना, क्रि अ (अनु) कपोतवत् कूज (भ्वा प से) २ दे 'निगलना'।
गुटका, स पु (सं गुटिका >) लघु-ग्रन्थ पुस्तकम् २ दे 'गुटिका'।
गुटरगूँ, स स्त्री (अनु) कपोतकूजित, पारावतरुतम्।
गुटिका, स स्त्री (स) गुल्मिका, वटिका, वटि (स्त्री)।
गुट्ट, स पु (स गोष्ठ >) समूह, दलम्।
गुट्टा, स पु (देश) सर्व, वामन २ दे 'गोटी'।
गुट्टल, वि (हि गुठली) स्थूलास्थि-युत वत् २ मदमति, जड ३ अष्ठीलाकार। स पु ग्रन्थि (पु) २ मासपिंड-कम्।
गुठली, सं स्त्री (स गुटिका >) अष्ठि (स्त्री), अष्ठीला, फलबीजम्।
गुड़ंबा, स पु (स गुडाम्र)।
गुड़, स पु (स) इक्षुसार, रसज, गुडज, मधुर, मोदक, शिशुप्रिय, गुल, स्वादु।
गुड़गुड़, स स्त्री (अनु) गुडगुड, शब्द ध्वनि (पु) धूमपानयन्त्रशब्द।
गुड़गुड़ाना, क्रि अ (अनु) गुडगुडायते (ना धा) गुडगुड, ध्वनि शब्द कृ।
गुड़गुड़ी, स स्त्री (हि गुडगुडाना) लघु धूमपानयन्त्रम्।
गुड़च, स स्त्री (स गुडूची) दे 'गिलो'।
गुड़धनिया, गुड़धानी, (स गुडधाना स्त्री बहु)।
गुड़ाकू-खू, स पु (स गुड+तमाखू >) गुडतमाखु।
गुडाकेश, स पु (स) शिव २ अर्जुन।
गुड़िया, स स्त्री (स गुडिका) पुत्तलिका, पुत्रिका, कुरुटी, पाञ्चालिका।
गुड़ियों का खेल, मु, सुकर कार्यम्।
गुड़च, स स्त्री, दे 'गिलो'।
गुडूची, स स्त्री (स) दे 'गिलो'।
गुड्डा, स पु (स गुड) गुडक पुत्रक, पुत्तल।
गुड्डी, स स्त्री (गुडिका >) विहगसदृश पत्रक्रीडनक, चित्राभास २ दे 'गुड़िया'।
गुण, स पु (स) धर्म, स्वभाव, विशेष २ सत्त्व, रजस (न), तमस् (न), गुण त्रयी ३ रूपरसगन्धस्पर्शादय द्रव्यधर्मा (वै) ४ चातुर्य, दक्षता ५ प्रभाव, फल ६ शील, सत्स्वभाव ७ लक्षण, विशेषता ८ 'त्रि' इति सख्या ९ सन्धिविग्रहयानासनसंश्रयद्वैधीभावा (राजनीति) १० प्रकृति (स्त्री) (छान्दोग्य) ११ 'अ, ए, ओ'-वर्णा (व्या) १२ सूत्र, रज्जु (स्त्री) १३ ज्या, मौर्वी १४ माधुर्यौज प्रसादा (काव्य) १५ आवृत्तिसूचक प्रत्यय (त्रिगुण इ)।
—कर, वि (स) हितकर, उपयोगिन् (गुणकरी स्त्री)।
—कारक, वि (स) हित, उपकर्तृ। (कारिका स्त्री)।

—कारी, वि (स, रिन्) उपयुक्त, उपकारिन् (-कारिणी स्त्री)।

—ग्वान, वि, (स ग्वानी) बहुगुण-उपेत अन्वित सम्पन्न।

—गान, स पु (स न) स्तुति नुति (स्त्री) प्रशंसा।

—गौरी, स स्त्री (सं) पतिव्रता, सती, एकपत्नी २ सधवा, समर्तृका।

—ग्राहक, वि (स) गुण-सेविन्, गुणग्राहिन् २ दे 'गुणज्ञ'।

—दायक, वि (स) दे 'गुणकर'।

—दोष, स पु (स) गुणावगुणौ हानि लाभौ (द्वि)।

—निधान, वि (स) } गुण, राशि निधि
—सागर, वि (स) } (पु)।

—हीन, वि (स) अगुण, निर्गुण, सामान्य, साधारण।

गुणक, स पु (स) गुणकाक।

गुणज्ञ, वि (स) गुण ग्राहिन् ग्राहक, मर्मज्ञ।

गुणज्ञता, स स्त्री (स) गुणग्राहकत्व, मर्मज्ञता।

गुणन, स पु (स न) आघात, हनन, अभ्यास २ गणन, गणनम्।

गुणमय, वि (स) } दे० 'गुणी'
गुणवत, वि (स वत्) }
गुणवान, वि (स वत्) } गुण, मती वती स्त्री।

गुणाक, स पु (स) गुण्य गुण्याक।

गुणा, स पु (स गुण) (समासान्त में, व दो गुणा द्विगुण इ)। दे 'गुणन'।

—करना, गुणयति (ना धा), आ नि, हन् (भ्वा प अ अथवा प्रे घातयति), पूर् (चु)।

गुणातीत, वि (स) सत्त्वादिगुणप्रभावशून्य, निर्लिप्त, शुद्ध। स पु, ईश्वर।

गुणानुवाद, स पु (स) प्रशंसा, स्तुति (स्त्री)।

गुणित, वि (स) गुणीकृत, आहत, पूरित।

गुणी, वि (स गुणिन्) गुणवत्, गुण, सपन्न उपेत-आढ्य-युक्त निधि सागर। २ दक्ष, कुशल ३ पुण्य, शील आत्मन्।

गुणीभूत, वि (स) मुख्यार्थरहित २ गौणी भूत।

—व्यग्य, स पुं (स न) अप्रधानव्यंग्यार्थं काव्यभेद।

गुणेश्वर, स पु (सं) परमेश्वर २ चित्रकूट पर्वत।

गुण्य, स पु (स) गुण्याक, गुणाक।

गुत्थमगुत्था, स पु (हिं गुथना) सश्लिष्टता, सकुलता २ बाहु बाहवि-युद्ध, द्वद्वम्।

गुत्थी, स स्त्री (हिं गुथना) दे 'उलझन'।

गुथना, क्रि अ, (स गुथ्-परिवेष्टन अथवा ग्रथ्) (वेणीरूपेण-) ग्रथ् (कर्म), वेणीकृ (कर्म)। २ गु(गुं)फ्, सदृभ् (कर्म)-स ग्रथ (कर्म) ३ बाहुबाहवि युध् (दि आ अ)।

गुथवाना, क्रि प्रे, व 'गुथना' के प्रे रूप।

गुथ(थु)वाँ, वि (हिं गुथना) (वेणी रूपेण) ग्रथित गुम्फित।

गुद, स स्त्री (स न) अपान, पायु (पु) गुह्यम्।

—अकुर,—कील, स पु (स) दे 'बवासीर'।

—ग्रह, स पु (स) दे 'कब्ज'।

गुदगुदा, वि (हिं गुदा) मासल, मेदस्विन् २ मृदु, सुखस्पर्श, कोमल।

गुदगुदाना, क्रि स (हिं गुदगुदा) कुत कूनयति कड्डयति (ना धा), कडू नद् (प्रे), मनोविनोदाय क्षुभ् (प्रे)।

गुदगुदाहट, गुदगुदी, स स्त्री (हिं गुद गुदाना) कुतकुत कडूति (स्त्री)।

गुदड़ी, स स्त्री (हिं गूथना) कथा, स्यूतकर्पट, २ जीर्ण-शीर्ण वस्त्रम्।

—में लाल, मु, चीरे रत्न (मु)।

—का लाल, मु, चीररत्न (मु)।

गुदा, स स्त्री दे 'गुद'।

गुदाज़ वि (फा) मृदु, कोमल, सुखस्पर्श।

—दिल, वि हृदयद्रावक, मार्मिक मर्म स्पर्शिन्।

गुनगुना, वि (अनु) कोष्ण, कदुष्ण मदोष्ण २ नासानादिन्।

गुनगुनाना, क्रि, अ (अनु) गुणगुणायते (ना धा) २ नासिकया वद् (भ्वा प से) ३ अस्फुट गै (भ्वा प अ) ४ असतोषात् परिदेव् (चु आ से) ५ दे 'गुजना'।

गुन(ना)हगार, वि (फा) पापिन्, पातकिन २ अपराधिन्, दोषिन्।

गुना, स पुं, दे 'गुणा'।

गुनाह, स पुं (फा) पाप २ अपराध।

गुनिया, सं पु (सं कोण >) कोणिक-साधन, तक्षकोपकरणभेद (१)।

गुपचुप, क्रि वि (सं गुप्त+चुप् >) निभृत, सुगूढ, रहसि, मौन (सब अव्य)। सं स्त्री, (१-३) मिष्टान्न-बालक्रीडा-क्रीडनक, भेद।

गुप्त, वि (सं) गूढ, निभृत, निलीन, प्रच्छन्न, अव्यक्त, अप्रकट २ दुर्बोध ३ रक्षित ४ अदृश्य। सं पु, वैश्योपाधि २ प्राचीन राजवंशविशेष।

—होना, क्रि अ, अन्तर्धा निली (कर्म)।

—चर, सं पु (सं) अपसर्प, चर(चा)र, प्रणिधि।

—दान, सं पु (सं न) दातृनामनिर्देश विना दान।

गुप्ता, सं स्त्री (सं) परकीयाभेद २ उप-पत्नी-भार्या ३ वर्णसूचकोपाधि (पु), गुप्त।

गुप्ति, सं स्त्री (सं) गूहन, गोपन, संवरण, प्रच्छादन २ रक्षण ३ कारागार ४ गुहा ५ यमा (योग)।

गुप्ती, सं स्त्री (सं गुप्त >) गुप्तासि (पु), खड्गयष्टि (स्त्री), गुप्ति (स्त्री)।

गुफा, सं स्त्री (सं गुहा) कन्दर-रा, गह्वर, -री, विवर-रम्।

गुफ्तगू, सं स्त्री (फा) वार्तालाप, आलाप, संलाप।

गुबरैला, सं पु (हिं गोबर) गोमयकीट, गोमयकीट।

गुबार, सं पु (अ) धूलि (स्त्री), २ प्रच्छन्न वैराविकम्।

गुब्बारा, सं पु (हिं कुप्पा) विमान, ख व्योम,-यान २ विमानाकार, अग्निक्रीडनकम्।

गुम, वि (फा) लुप्त, भ्रष्ट, नष्ट, च्युत २ गुप्त, छन्न ३ अविख्यात।

—करना, क्रि स, वियुज् हिहा परिहा (कर्म, तृतीया के साथ) २ दे 'छिपाना'।

—होना, क्रि अ, नश् (दि प वे), भ्रंश् (भ्वा आ से दि प से)।

—नाम, वि (फा) अप्रसिद्ध, अविदित।

—राह, वि (फा) प्रभ्रष्ट नष्ट,-पथ, विपथ उन्मार्ग,-गामिन्, पथभ्रष्ट, भ्रान्त।

—राही, सं स्त्री (फा) भ्रान्ति (स्त्री), भ्रम २ कुमार्ग।

गुमटी, सं स्त्री (फा गुंबद) (सोपानादीनां) उच्छदि (स्त्री)।

गुमड़ा, सं पु (फा गुंबद) गड शोथ, शोफ।

गुमरी, सं स्त्री, दे 'घुमरी'।

गुमान, सं पु (फा) अनुमान २ दर्प।

गुमानी, वि (फा) दृप्त, गर्वित, सदर्प।

गुमाश्ता, सं पु (फा) प्रतिनिधि (पु) प्रतिहस्त स्तक, नियोगिन् (पु), नियुक्त, प्रतिपुरुष।

—गीरी, सं स्त्री (फा) नियोगि प्रतिनिधि, पद कार्य २ प्रतिनिध्य, नियुक्तत्वम्।

गुम्मट, सं पु (फा गुंबद दे)।

गुर, सं पु (सं गुरुमन्त्र >) सूत्र, मूलमन्त्र, सार, संक्षिप्तविधि (पु)।

गुरगा, सं पु (सं गुरुग) शिष्य २ सेवक ३ गुप्त,-चर।

गुरगाबी, दे 'गुर्गावी'।

गुरिया, सं स्त्री (सं गुलिका) गुली, गुटिका।

गुरु, सं पु (सं) बृहस्पति, देवगुरु २ बृहस्पतिग्रह ३ पुष्यनक्षत्र ४ मन्त्रोपदेशक ५ आचार्य ६ अध्यापक, शिक्षक ७ पुरोहित ८ द्विमात्रिकवर्ण (छन्द) ९ बल विद्यादिषु स्वतोऽधिक।

वि, बृहत्, महत्, विशाल, विपुल विस्तीर्ण, २ भारवत् ३ दुर्जर, दुष्पच, गरिष्ठ ४ पूज्य, मान्य।

—आई, सं स्त्री, गुरुता, गुरुधर्म २ गुरुकृत्य, मन्त्रोपदेश ३ धूर्तता।

—कुल, सं पु (सं न) आचार्यकुल, विद्यालय, शिक्षालय।

—घंटाल, सं पु, धूर्त वञ्चक शठ कितव, राज।

—जन, सं पु (सं) पूज्य वृद्ध,-जन।

—दक्षिणा, सं स्त्री (सं) आचार्योपायनम्।

—द्वारा, सं पु (सं गुरुद्वार >) शिष्यमत मंदिर, गुरुद्वारम्।

—भाई, सं पु (—+हिं भाई) सतीर्थ्य, सगुरुक, सह, पाठिन्-अध्यायिन्।

—मुख, वि (सं >) दीक्षित।

—मुखी, सं स्त्री लिपिविशेष, गुरुमुखी।

—वार, सं पु (सं) गुरु-बृहस्पति, वार वासर।

गुरुच, स स्त्री, दे 'गिलो'।
गुरुतर, वि (स) महत्तर, आवश्यकतर २ भारवत्तर, गरीयस ३ पूज्यतर।
गुरुता, म स्त्री (स) } भार
गुरुत्व, स पु (स न) } तोल, मान २ महत्ता, गौरव, गरिमन (पु)।
—आकर्षण स पु (स न) भारवत्त्व,-आकृष्टि पातुकत्वम्।
गुरुवाइन, स स्त्री (स गुरु >) गुरु, आचार्य पत्नी आचार्यानी, गुर्वी २ उपाध्यायानी, उपाध्यायी ३ उपदेशिका, अध्यापिका, शिक्षिका।
गुरू, स पु, दे 'गुरु'।
गुर्गा, स पु (स गुरुग) शिष्य, अनुगामिन् २ सेवक, अनुग ३ गुप्तचर।
गुर्गाबी, स स्त्री (फा) पादू (स्त्री), पादुका।
गुर्ज, स पु (फा) गदा, शस्त्रभेद।
गुर्जर, सं पु (स) गुर्जरराष्ट्र, गुर्जरप्रान्त १ गुर्जरवासिन् ३ जातिविशेष।
गुर्दा, स पु (फा) वृक्क का न, वृक्क का क गुड, गुद, वृक्य। २ शौर्य, साहसम्।
—का दर्द, स पु वृक्कशूलम्
—की पथरी, स स्त्री वृक्काश्मरी।
गुर्राना, क्रि अ (अनु) घुर्घुरायते (ना धा), घुर्घुरध्वनिं कृ २ गर्ज (भ्वा प से)।
गुर्विणी, स स्त्री (स) दे 'गर्भिणी'।
गुर्वी, म स्त्री (स) दे 'गर्भिणी' २ गुरुपत्नी, आचार्यानी ३ गौरवयुक्ता ४ गायत्री।
गुल, स पु (फा) ओड्र-जपा जवा, पुष्प २ पुष्प ३ दग्धवर्ती ति (स्त्री) ४ शुक्ल, नेत्ररोगभेद ५ तप्तलोहाङ्क।
—अब्बास, स पु, कृष्ण कलि (स्त्री)-केलि (स्त्री)।
—कंद, स पु (फा) पुष्प-जपा, खण्ड।
—कारी, स स्त्री (फा) पुष्प कार्य, कर्मन्।
—गुर्रा, म पु सिद्ध,-आस्य नाथ ईश्वर।
—दास्ता, स पु (फा) पुष्पगुच्छ, कुसुम पुञ्ज, गुच्छ स्तबक।
—दान, स पु (फा) पुष्प, धान धानी।
—दुपहरिया, स पु, सूर्यभक्त, अर्कदयित, माध्याह्निक, बन्धुजीवक।
—परी, म स्त्री सुपुष्पा, शल्योदरी, बर्हपुष्पा।
—बदन, स पु (फा) कौशेयवस्त्रभेद।
—बूटा, स पु, दे 'गुल्कारी'।
—मखमल, म पु, स्थूलपुष्पा, श्लक्ष्णक।
—करना, मु, दे 'बुझाना'।
—होना, मु, दे 'बुझना'।
—खिलना, मु, अतर्कित अद्भुत घट् (भ्वा आ से) अथवा आ-स पत् (भ्वा प से) २ उपद्रव उत्पद् (दि आ अ)।
—खिलाना, मु, व 'गुल्खिलना' के प्रे रूप।
गुल, स पु (फा) कोलाहल, कलकल ध्वनि (पु)।
—गपाड़ा, स पु, दे 'गुल'।
गुल्गुला[1], वि (हिं गुदगुदा) कोमल, मृदुल।
गुल्गुला[2], स पु (हिं गोल+गोल) गोल गोल मिष्टान्न पक्वान्न भेद २ गण्ड, कपोलपट्टी।
गुलचला, स पु (हिं गोला+चलाना) दे 'तोपची।
गुलछर्रा, स पु (फा गुल+अनु) आनन्द, मोद, २ विलास, भोग।
—(रें) उड़ाना, मु, स्वच्छन्द रम् (भ्वा आ अ)।
गुलज़ार, स पु (फा) उद्यान, वाटिका। वि, शोभन, अभिराम।
गुलझट टी ड़ी, म स्त्री (म गोल+झट = उलझना) सूत्रसंश्लेष, ग्रन्थिबन्धम्। २ वली कि (स्त्री)।
गुलशन, म पु (फा) उद्यान, वाटिका।
गुलाब, स (फा) चारुकेसरा, लाक्षापुष्पा, तरुणी, शतपत्री, भृङ्गेष्टा, गन्धाढ्या, जपा, जवा २ जपाजलम्।
—जल, म पु, जपा-जवा, जलम्।
—जामुन, स पु, विलाट,-जंबु (न)-जावक। २ वृक्षभेद। ३ तत्फलम्।
—दान ी, स स्त्री, जपाधानी।
गुलाबी, वि (फा) पाटल, जपावर्ण २ लघु, अत्यल्प ३ कौसुम्भ, आर्द्र। स स्त्री, (१-२) पानपात्र राग मिष्टान्न, भेद। ४ जपारंग।
गुलाम, स पु (अ) क्रीत, दास २ सेवक ३ दासाकारयुत क्रीडापत्र, दास।

गुलामी, सं स्त्री (अ गुलाम) दासत्व २ सेवा ३ परतन्त्रता।
गुलाल, स पु } (फा गुलाल) दे 'अबीर'।
गुलाली, वि
गुलिस्ताँ, स पु (फा) उद्यान, उपवनम्।
गुलूबंद, स पु (फा) गलबन्ध २ ग्रैवेय-यकम्।
गुले(लै)ल, स स्त्री (फा गिलूल) वटिका क्षेपणी, गुल्किास।
गुलैला, स पु (फा गुलूला) गुलिका, वटिका २ दे 'गुलल'।
गुल्फ, स पु (स) घुटिक, घुट घुत्य, चरणग्रन्थि (पु)।
गुल्म, स पु (स) उदररोगभेद २ सेना विभागभेद (= ९ हाथी ९ रथ, २७ घोड़े ४५ पैदल) ३ प्लीहा ४ नाड़ी धमनी शोथ, ५ स्तम्ब, क्षुप गुल्म मम्।
गुल्मी वि (स मिन्) गुल्मरोगपीडित।
गुल्ला, स पु (स गोल >), दे 'गुलेला'।
गुल्लाला, स पु (फा गुल्लाल) रक्तपुष्प भेद, लालापुष्पम्।
गुल्ली, स स्त्री (स गुली >) फल-गर्भबीज, २ गुलादण्डक्रीडायां लघुकाष्ठखण्ड, •गुली, वीणा ३ शाग मी ४ सारिकापक्षिभेद, ५ इक्षुखण्ड ६ अभ्र, पातक।
गुसल, स पु, दे 'गुस्ल'।
गुसाईं, स पु दे 'गोस्वामी'।
गुस्ताख, वि (फा) धृष्ट, विनयरहित अशिष्ट।
गुस्ताखी, स स्त्री (फा) धार्ष्ट्य, वैयात्य, अशिष्टता।
—करना, क्रि अ, धाष्टर्य द्दश् (प्रे) अशिष्ट वत् व्यवहृ (भ्वा उ अ)।
गुस्ल, स पु (अ) स्नान, अवगाहनम्।
—करना, क्रि अ, स्ना (अ प अ)।
—खाना, स पु (अ+फा) स्नानागार, अवगाहनस्थानम्।
गुस्सा, स पु (अ) कोप रोष, द 'क्रोध'।
—आना, करना चढ़ना या होना, क्रि अ, रुष्-कुप (दि प से), क्रुध् (दि प अ)।
—उतरना, मु, कोप शम् (दि प से, शाम्यति)।
गुस्सीला, गुस्सैल, वि (अ गुस्सा) कोपन, क्रोधन, रोषण, अमर्षण।

गुह[1], स पु (सं) कार्तिकेय २ अश्व ३ गुहा ४ रामसुहृद् (पु) ५ हृदयम्।
गुह[2], स पु (स गूथ) दे 'गूह'।
गुहाँजनी, स स्त्री (स गुह्य+अञ्जन >) पक्ष्म, पिटिका-चर्चिका।
गुहा, स स्त्री (स) दे 'गुफा'।
गुहार, स स्त्री, दे 'गोहार'।
गुहिन, सं पु (स न) वन, काननम्, अरण्यम्।
गुह्य, वि (स) गुप्त, अन्तर्हित २ गोपनीय, संवरणीय ३ दुर्बोध गूढ़।
स पु, छल २ कूर्म ३ गुह्याग ४ विष्णु ५ शिव।
गुह्यक, स पु (स) यक्षभेद।
—पति, स पु (स) कुबेर।
गूँगा, वि (फा गुंग) मूक, वाग् रहित हीन, अवाच।
गूंग का गुड मु, अवर्ण्यवार्ता।
गूँज, स स्त्री (स गुंज) दे गुंज'(२) २ प्रति, नाद ध्वनि (पु)-शब्द-रव गर्जन श्रुति (स्त्री) ३ अनु रसित-नाद।
गूँजना, क्रि अ (स गुंजन) दे 'गुंजना' २ प्रति, नद् ध्वन् स्वन् रस (सब भ्वा प से) ३ अनु,-नद-रम, प्रतिशब्द कृ र।
गूँथना, क्रि स (स ग्रथन) वेणारूपेण ग्रथ (क प से) वेणी कृ २ सग्रथ, सदृम् (चु उ से), गुम्(गु)म्-दृम् (तु प से), सूत्र (चु) ३ सिव (दि प से,), (सूच्या) सञ्चि (प्रे)।
गूँधना, क्रि स (स गोधन क्रीडा करना >) (जल मिश्रयित्वा हस्ताभ्या) मृद् (क्र प से अथवा प्रे)-सम्पीड (चु) २ ३ दे 'गूथना' (१, २)।
गूग(गु)ल, स पु, दे 'गुग्गुल'।
गूजर, स पु (स गुर्जर) गोप, गोपाल, आभीर २ जातिविशेष।
गूजरी, स स्त्री (स गुर्जरी) गोपी, गोपपत्नी २ चरणाभरणभेद ३ रागिणीविशेष।
गूढ़, वि (स) दुर्बोध, कठिन २ गुप्त, प्रच्छन्न ३ गम्भीर, सारगर्भित।
—पुरुष, स पु (स) दे 'गुप्तचर'

गूढ़ता, सं स्त्री (सं) दुर्बोधता, गम्भीरता, प्रच्छन्नता।
गूढ़ाग, स पु (सं) कच्छप, कमठ, कूर्म।
गूढ़ाघ्रि, स पु (स) अहि, सर्प, उरग, पन्नग।
गूथ स पु (स पु न) दे 'गूह'।
गूथना, क्रि स, दे 'गूँथना'।
गूदड़ स पु (हि गूथना) कर्पट, जीर्ण वसन २ अवस्कर मल ३ तृण, तूलिका।
गूदड़ी, न स्त्री (हिं गूदड़) (भिक्षुकस्य) तूला २ पोट्टली लिका।
गूदा, स पु (स गोर्द) मस्तिष्क, गोर्द, मस्तकस्नेह २ फल,-सार मज्जा वसा ३ बीज, सार गर्भ ४ सारभाग।
गूधना, क्रि स दे गूँथना'।
गून, स स्त्री (स गुण) नौकर्षणरज्जु (स्त्री)।
गूमडा, स पु (स गुल्म म >) वि,स्फोट, पिटक २ शोथ शोफ।
गूमड़ी स स्त्री (हिं गूमडा) पिटिका क्षुद्र व्रण रक्तवटी।
गूलर, स पु, उदुम्बर, यज्ञाग, जन्तुफल, हेमदुग्धक पुष्पशून्य।
—का कीड़ा, मु कूपमण्डूक अनुभवहीन।
—का फूल, मु, दुर्लभवस्तु (न)।
गूह, स पु (स गूथ थ) पुरीष, मल उच्चार, विष्ठा, अव(व)स्कर, विष् (स्त्री)।
गृध्र स पु (स) दे 'गिद्ध'।
गृह, स पु (स न) गृहा (पु बहु) गह, ह, वेश्मन् सद्मन् (न) निकेत तन, सदन भवन अ(आ)गार, मंदिर, निलय, आलय, शाला, स-आ ति अधि वास, आवसथ, उदवसित, निकाय्य २ •परिवार, कुटुम्ब•, गृहा।
—पति, स पु (स) गृहिन्, गेहिन्, कुटुम्बिन् २ कुक्कुर ३ अग्नि।
—पत्नी, स स्त्री (स) शालिना, गृहिणी, गहिनी, कुटुम्बिनी।
—युद्ध, स पु (स न) जनप्रकोप, प्रकृति क्षोभ, २ कौटुम्बिककलह।
—लक्ष्मी, स स्त्री (स) सुगृहिणी, सुशील गृहपत्नी।
गृहस्थ, स पु (स) गृहमेधिन्, ज्येष्ठ श्रमिन्, दे 'गृहपति'।
—आश्रम, स पु (सं) वैवाहिकजीवनं २ द्वितीयाश्रम।
गृहस्थी, स स्त्री (स गृहस्थ >) गृहस्थ, आश्रम कर्तव्यानि (न बहु) २ गृहव्यवस्था ३ कुटुम्ब, परिवार ४ गृह,-उपस्कार सामग्री ५ गृहकार्यकुशलता।
गृहिणी, स स्त्री (स) शालिनी, दे 'गृह पत्नी।
गृही, स पु (स गृहिन्) गृहस्थ, दे 'गृहपति'।
गेंडली, स स्त्री (स कुडली >) मण्डल आवेष्टन व्यावर्तनम्।
—मारना, क्रि स, मण्डली पुटी वल्ली, कृ व्यावृत् (प्रे)।
गेंडुरी, स स्त्री, दे 'इडुरी'।
गेंद स पु (स गेंदुक) कदुक, गेण्डु (डू) क, गोल्क, गोल लक २ मडल, वर्तुल, गोल कम्।
—बल्ला, स पु, गेंदुकपट्ट, पट्टेन्दुकम्, आग्लक्रीडाभेद।
गेंदुआ, स पु (स गेंदुक >) (गोल) उपबर्ह उपधानम्।
गेंदा, स पु (स गेंदुक) बृहत्,-कदुक गोलक २ पुष्पभेद।
गेरना, क्रि स, दे 'गिराना' तथा 'उँडेलना'।
गेरू, स स्त्री (स गवेरुक) गैरिक रक्त गिरि, धातु (पु) रक्तोपल, गिरिज, गिरि-स्त्री रक्त, सुरक्तिरा, वनाल्तकम्।
गेरुआ, वि (हिं गेरू) गवेरुरंजित २ गिरिजवर्ण।
गेह, स पु (स पु न) दे गृह'।
गेहुअन, स पु (हिं गहूँ) गोधूमक, फणिभेद।
गेहूँ, स पु (स गोधूम) सुमनस (पु), बहुदुग्ध, यवन, म्लेच्छभोजन, सितशूक, निस्तुष, क्षीरिन्, अपूप, रसाल २ नागरंग।
गेहुँआ, वि (हिं गहूँ) गोधूम, वर्ण-रग, २ गोधूममय, गोधूम (समास में) ३ धाम भेद।

गेंडा, स पु (स गड) गडक, खड्गिन्, वज्रचर्मन् (पु), कुम-कोटी-मुख, वार्ध्री (भी)गस, खड्गमृग ।
गेंन-ती, स स्त्री (देश) दे 'कुदाल' ।
गेज़, स पु (अ) अति कोप क्रोध रोष ।
गेंब, स पु (अ) परोक्ष तिरोहित, पदार्थ । वि गुप्त, तिरोहित ।
—दाँ, वि, परोक्षविद्, सर्वज्ञ
गेवर, स पु (स गजवर) गजोत्तम, गजेन्द्र करीन्द्र ।
गैबी, वि (अ गैब) गुप्त, प्रच्छन्न, अज्ञात ।
गैया स स्त्री दे 'गाय' ।
गैर, वि (अ) अन्य इतर, पर, अपर २ भिन्न, व्यतिरिक्त । स पु आगन्तुक अभ्यागत ।
— मताव, वि, निर्जन, समतिशून्य ।
—मनकूला, वि, स्थिर स्थावर, अचर न
—मामूली, वि विशिष्ट, असाधारण विशेष ।
—मुनासिब,—वाजिब, वि, अनुचित, अयोग्य ।
—मुमकिन, वि, असभव अशक्य ।
—शख्स, स पु पर, अनात्मीय ।
—हाज़िर, वि, अनुपस्थित, अविद्यमान ।
—हाज़िरी, वि, अनुपस्थिति (स्त्री) अविद्यमानता ।
गैरत, स स्त्री (अ) लज्जा त्रपा ।
गैरिक, स पु (स न) दे गेरू' ।
गैरीयत, स स्त्री (अ) अन्यता, परता इतरता, अपरता ।
गैल, स स्त्री, दे 'गली' ।
गैलन, स पु (अ) गेलनम्, द्रवद्रव्यपरिमाण भेद, अर्द्ध प्रस्थ ।
गैस स स्त्री (अ) वाति (स्त्री), वाष्प ।
गोंडा, स पु (स गोष्ठ) व्रज, अवरोधशाला २ ग्राम ३ ग्रामसीमा ४ अजिरम्
गोंद, स पु (स कुन्द, अथवा हिं गूदा) निर्यास ।
—दानी, स स्त्री निर्यासधानी ।
गोंदीला, वि (हिं गोंद) निर्यास, मय तुल्य, सान्द्र, श्यान ।
गो, स स्त्री (स) दे 'गाय' २ किरण ३ इन्द्रिय ४ वाच् (स्त्री) ५ सरस्वती ६ नेत्र ७ विद्युत् (स्त्री) ८ पृथ्वी ९ दिशा १० जननी ११ जिह्वा । स पु (स) वृषभ २ नदीगण ३ घोटक ४ सूर्य ५ चन्द्र ६ बाण ७ गायक ८ आकाश ९ स्वर्ग १० जल ११ लोमन् (न) १२ शब्द १३ वज्र ।
—कर्ण, स पु (स) धेनुश्रवण २ शैवतीर्थ विशेष । ३ अश्वतर ४ सर्पभेद ५ किष्कु वितस्ति (पु स्त्री) (हिं बित्ता) ६ मृग भेद । वि, लम्बकर्ण ।
—कुल, स पु (स न) गोसमुदाय २ गोष्ठ ३ ग्रामविशेष ।
—ग्रास, स पु (सं) गो-कवल (-ल) पिंड ।
—घात, स पु (स) गो हत्या-वध-मारणम् ।
—घातक, स पु (स) गोघातिन्, गोघ्न ।
—चर, वि (स) इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियगम्य । स पु रूपादिविषया २ शाद्वल, तृणाढ्य भूमि (स्त्री) ३ प्रान्त देश ।
—चरी, स स्त्री (स गोचर) भिक्षावृत्ति (स्त्री) ।
—तीत वि, अगोचर अतीन्द्रिय इन्द्रियातीत, इन्द्रियागोचर ।
—दान, स पु (स न) धनु-गो,-विसर्जन त्याग ।
—धू(ली)लि, स स्त्री (स) सध्या-साय काल समय-वेला ।
—धेनु स स्त्री (स) दुग्धवती गौ (स्त्री) ।
—पाल, स पु (स) गोप, गोपालक । २ श्रीकृष्ण ।
—मय, स पु (स न) गो, मल पुरीष विष्ठा ।
—मुख, स पु (स न) धेनुवदन २ वाद्यभेद । ३ दे नरसिंहा' ४ गोमुखी, जपमालाकोष । ५ चतुरस्र कुड्यरन्ध्रम् ।
—मूत्र स पु (स न) गो-जल प्रस्राव द्रव निष्यन्द ।
—मेद-मेदक, स पु (स) राहुरत्न, पुष्पराग, पीताश्मन् (पु) ।
—मेध, स पु (स) यज्ञभेद ।
—रस, स पु (स) दुग्ध २ दधि (न) ३ तक्र ४ इन्द्रियसुखम् ।
—रोचन, स पु (स-चना) शुभा, शोभा, शोभना, रोचनी, शिवा, मगला, पीता, राचना ।

—लोक, सं पु (स) श्रीकृष्णस्य नित्यधामन् (न)।
—वर्द्धन, स पु (सं) व्रजभूमौ पर्वतविशेष ।
—वर्द्धनधर, सं पु (सं) गोवर्धनधारिन् श्रीकृष्ण ।
—विंद, सं पु (सं) श्रीकृष्ण ।
—शाला, सं स्त्री (सं) गोष्ठ, गोगृह, व्रज ।
—साईं, सं पु, दे 'गोस्वामी'।
—स्वामी, सं पु (सं मिन्) गोपति २ प्रभु ।
—हत्या, सं स्त्री (स) दे 'गोघात'।
गो[२], गो कि, अव्य (फा) अपि, यद्यपि ।
गोका, स स्त्री (सं) स्तु, गौ धेनु (दोनों स्त्री) २ वनधेनु (स्त्री), मिहगवी ।
गोखरु, स पु (सं गोक्षुर) त्रिकट टक, गोक्ष्र टक (क्षुपविशेष) २ नम्य कण्टक ३ कटक वलय, प्रव र ।
गोखना, गोखनी, स पु म स्त्री (हिं गोडू+ चना) गोधूमचणक पम्, गोचण णो ।
गोज, स पु (फा) अपानवायु, पर्द ।
गोजर, सं पु दे 'कनखजूरा'।
गोजरा, स पु (हिं गेहूं+जव) गोधूमयवा ।
गोझा, सं पु (स गुह्यक) पक्वान्नभेद । २ वडाकाड, कोल ३ दे 'नेव' ४ घासभेद ।
गोट[१], सं स्त्री (गोष्ठ > ?) वसनप्रदशा (स्त्री बहु), वसनप्रान्त ।
गोट[२], सं स्त्री (सं गुटिका) शार, शारि (पु), खल्नी ।
गोटा, सं [redacted] (हिं गोट) सुवर्ण रजत, वाला मरणं-वस्त्राभरणम् ।
गोटी, सं स्त्री (गुटिका) पाषाणखण्ड, शर्करा २ दे 'गोट[२]' ३ मसूरी रिका, शीतलारोग ।
गोठ, स स्त्री (स गोष्ठ) गोशाला २ पर्यटन, भ्रमण ३ श्राद्धभेद ।
गोड़ना, क्रि स दे 'खोदना'।
गोड़ा, सं [redacted] दे 'कुल्ला'।
गोणी, स स्त्री (स) स्यूत, कोष पुट, स्यू (स्यो)न, प्रसेव २ द्रोणीपरिमाणम् ।
गोत, सं पु (सं गोत्र) दे 'गोत्र' २ गण, समूह ।
गोता, स पु (अ) निमज्जन, अवगाह ।
—देना, क्रि. म., ब 'गोता मारना' के प्रे रूप ।
—मारना, क्रि अ नि-अव-गाह् (भ्वा आ वे) निमज्ज् (तु प अ)।
—खोर, सं पु (अ + फा) अवगाहक, निमज्जक (पु)।
गोत्र, सं पु (सं न) कुल, वंश, अन्वय २ समूह ३ संपत्ति (स्त्री) ४ बन्धु ५ जातिविभाग ।
—भिद्, सं पु (सं) इन्द्र, देवराज ।
गोदंत, सं पु (स न) हरितालम् ।
गोद, सं स्त्री (स क्रोड) अंक, उत्संग ।
—लेना, मु, पुत्रीकृ, (पुत्रत्वेन) परिग्रह (क्र्य प से)।
गोदना, क्रि स (हिं खोदना) सूच्या त्वच व्यध् (प्रे), त्वचमनुविध्य पत्ररेखा निविश् (प्रे) २ गोवीजं निविश् (प्रे) ३ सूच्यग्रेण व्यध् (दि प अ) ४ असकृत् प्रणुद् प्रचुद् (प्रे)। सं पु, त्वचि सूचीखननम् कृष्णचिह्नम् ।
गोदनी, सं स्त्री (हिं गोदन) वेधनी, सूचि -ची (स्त्री)।
गोदाम, सं पु (अ गोडाउन) पण्य-अगार आधान, भाण्डागारम् ।
गोदावरी, सं स्त्री (स) गोदा, गौतमी ।
गोदी, स स्त्री, दे 'गोद'।
गोधा, सं स्त्री (स) तला, तल, ज्याघातवारणा २ गोधिका, निहाका ।
गोधुम, गोधूम, सं पु (स) दे 'गेहूं' २ नागरंग ।
गोन, सं स्त्री, दे 'गोणी'।
गोनिया, सं पु., दे 'गुनिया'।
गोप, स पु (सं) आभीर, गोपाल, २ नृप ३ उपकारक ।
गोपन, सं पु (स न) गूहन, गोहनं, प्रच्छा दन, संवरणम् ।
गोपनीय, वि (स) गुह्य, संवरणीय, रहस्य, गोप्य ।
गोपिका, सं स्त्री (स) दे गोपी ।
गोपी, स स्त्री (स) गोपिका, गोपपत्नी, आभीरी, गोपालिका ।
गोफन-ना, स पुं (सं गोफणा) सृग, भिंदि(द)पाल ।

गोबर, स पुं (स गोमय) दे 'गोमय'।

—गणे(ने)श, वि , कुदर्शन, कुरूप । स पु, मूर्ख, जड ।

गोबरी, स स्त्री (हिं गोबर) गोमयलेप ।

—करना, क्रि स , गोमयेन लिप् (तु प अ)।

गोबरैला, } स पु (हिं गोबर) दे
गोबरौंदा, } 'गुबरैला'।

गोभी, स स्त्री (स गोभी = घासविशेष >) गोभी ।

गांठ—, ग्रंथिगोभी ।

पात—, }
बद—, } मुकुलपत्र,गोभी ।

फूल—, मध्यपुष्पा बृहद्दला पुष्पगोभी।

गोया, क्रि वि (फा) इव, यथा, मन्ये (दि आ अ)।

गोरखधंधा, स पु (हिं गोरख+धंधा) गहन जटिल-कार्य २ कूट, प्रहेलिका ३ असाध्यनिर्गम प्रदेश ।

गोरखा, स पु (स गोरक्षक) नयपालदेशी प्रान्तविशेष २ तत्प्रान्तवासिन् ।

गोरखाली, स स्त्री (सं हिं गोरखा) नयपालदेशस्य जातिविशेष, गोरखाली २ गोरक्षाणीजातिभाषा, गोरखाली ।

गोरा, वि (स गौर) शुद्ध, श्वेत, सित, विशुद्ध । स पुं , गौर , शुभ्र, श्वेत, सित , २ युरोपादिवासिन् , गौर ।

गोराई, स स्त्री (हिं गोरा) गौरता, शुभ्रता, श्वेतता, सितता।

गोरिल्ला, स पु (अफ्री) वानरभेद, वनमानुषप्रकार ।

गोरी, स स्त्री (स गौरी) गोरा, शुभ्रा, श्वेता, सुरूपिणी, सुन्दरी ।

गोलंदाज, स पुं (फा) शतघ्नीचालक , गोलक्षेपक ।

गोल[1], वि (स)वर्तुल,निस्तल,वृत्त,वृत्त मंडल चक्र-वलय आकार-आकृति रूप २ अस्पष्ट, सादृश्य, अनिश्चित । स पुं , घर २ मूर्ख ।

—गप्पा, स पु (+अनु गप) गोलगप्प।

—मटोल, वि , पीनवामन, सर्वस्थूल ।

—मिर्च, स स्त्री [स गोलमरि(री)च] मरिच कोल, कोलकम् ।

—माल, मु , अस्तव्यस्तता, क्रमभंग ।

—माल करना, मु , छलेन आत्मसात् कृ २ व्यवस्था नश्(प्रे)।

गोल[2], स पुं (अ) गण, समुदाय ।

गोलक, सं पुं (स) पिण्ड-सपुट-मंजूषा, प्रकार भेद २ निष्कर्षणी (हिं दराज) ३ पत्यौ मृते जारजपुत्र ४ कंदुक ५ महत् स्याल ६ कनीनिका ७ नेत्रगोल ८ निधि, राशि ९ टकशिका ।

गोला, स पु (स गोल) गोला-ल, वर्तुल-ल २ चक्र, मंडल, वृत्त ३ आयस, गोल, बन्ध ४ नारिकेल र ५ वातुगोल उदर रोगभेद ६ धान्य, हट्ट विपणी ७ पशुवृन्द ८ सेतुबंध ९ धान्यकुम्भ ।

—मारना, क्रि स गोले बद्ध ध्वंस (प्र)-चूर्ण (चु)।

गोलाई, स स्त्री (स गोल >) वृत्तता, वर्तुलता, गोलत्व, मंडलत्वम् ।

गोलाकार, वि (स) दे 'गोल[1]'।

गोलार्द्ध, स पुं (स न) अर्द्धगोल ।

गोली, स स्त्री (हिं गोला) लघुगोल , गोलक २ सीसकगुलिका ३ गुटिका, वटिका, गुलिका ४ काचमर्मरोपल, गुलिका ।

—मारना, क्रि स , गुलिकाक्षेपेण हन् (अ प अ)-क्षण (त उ से)।

गोल्ड, स पु (अ) सुवर्ण, स्वर्ण, कनकम् ।

गोल्डन, वि (अ) दे 'सुनहला'।

गोविंद, स पु (स) श्रीकृष्ण ।

गोशा, स पु (फा) कोण २ दिशा ३ रह स्थान, विविक्तम् ।

गोश्त, स पुं (फा) मांस, आमिषम् ।

—खोर, स पुं, मांस-आमिष-भक्षिन् आदि भक्षक ।

गोष्ठ, स पु (स पुं न) गो, स्थान शाला गृह, व्रज २ वृंद, समूह ३ विमर्श, मन्त्रणा ।

गोष्ठी, स स्त्री (स) गोष्ठि समिति (स्त्री), सभा, समाज, २ वार्तालाप ३ विमर्श ।

गोस्तना-नी, (स) द्राक्षा, मृद्वीका ।

गोह, स स्त्री (स गोधा) गोधिका, निहाका २ (गोह का बच्चा) गौधार , गौधेर , गौधेय ।

गोहरा, सं पुं (स गोइल्ल >) दे 'उपला'।

गोहूँ, स पुं, दे 'गेहूँ'।

गोखुर, सं पुं दे 'गोखरू'।

गौं, स स्त्री (स गम >) प्रयोजन, अर्थ, कार्य २ अवसर, कार्यकाल, अवकाश ।
गौ, स स्त्री, दे 'गाय' तथा 'गौ' ।
गौगा, स पु (अ) कोलाहल २ जनश्रुति (स्त्री) ।
गौड, स पु (स) वगप्रान्तस्य भागविशेष २ ३ ब्राह्मण-कायस्थ, भेद ४ गौडवासिन् ।
गौण, वि (स) अप्रधान, द्वितीय, अवर २ सहायक । (गौणी स्त्री) ।
गौतम, स पु (स) ऋषिविशेष २ बुद्ध ।
गौतमी, स स्त्री (स) अहल्या २ कृपाचार्य पत्नी ३ गोदावरी ४ दुर्गा ।
गौनहार, स स्त्री (हिं गौन) नवोढासहगा मित्री ।
गौनहारी, स स्त्री (हिं गाना) गात्री, गायनी, गायिका, गायकी ।
गौना, स पु (स गमन >) द्विरागमन वध्वा पतिगृहे गमनम् ।
गौर, वि (स) दे 'गोरा' (वि) । स पु १ २ रक्तपीत रंग ३ चद्र ४ सुवर्ण ५ कुकुमम् ।
गौर, स पु (अ) विचार, चिंतन, ध्यानम् ।
—करना, क्रि स विचार् (प्रे), चिंत् (चु)
गौरव, स पु (स न) महत्त्व महिमन् (पु) २ गुरुता, भारवत्त्व ३ आदर, सम्मान ४ अभ्युत्थानम् ।
गौरवान्वित, वि (स) गौरवित, सगौरव सम्मानित आदृत ।
गौरांग, स पु (स) विष्णु २ कृष्ण ३ चैतन्यदेव । वि सित, श्वेत शुद्ध २ यूरोपीय ।
—महाप्रभु, स पु (स) चैतन्यदेव ।
गौरी, स स्त्री (स) पार्वती, गौरा, गिरिजा २ ३ शुभ्रा (नारी अथवा गौ) ।
—शंकर, स पु (स) शिव २ हिमालयस्य उत्तम शिखरम् ।
गौहर, स पु (फा) दे 'मोती' ।
ग्यान, स पु, दे ज्ञान' ।
ग्यारह, वि (स एकादशन्) । स पु, उक्ता सख्या तदको (११) च ।
ग्यारहवा, वि, एकादश (पु), एकादश (न) (वीं (स्त्री) = एकादशी) ।

ग्रथ, स पु (स) पुस्तक, शास्त्र २ ग्रथन ३ धनम् ।
—चुंबन, स पु (स न) क्षिप्र त्वरित, पठन अध्ययन, शीघ्रपाठ ।
—सधि, स स्त्री (स पु) अध्याय परिच्छेद ।
—साहब, स पु, शिष्यमतधर्मग्रथ ।
—कार, स पु (स) पुस्तक ग्रथ लेखक सपादक कर्तृ प्रणेतृ ।
ग्रथन, स पु (स न) ग्रथन गुम्फन २ प्रणयन, निबंधनम् ।
ग्रथि, स स्त्री (स पु) दे 'गाँठ' ।
—बधन, स पु (स न) दे 'गाँठ जोडना'
ग्रथित, वि (स) ग्रथित गु(गु)म्फित २ ग्रथिमत्, ग्रथिल ।
ग्रसन, स पु (स न) भक्षण, निगलन, २ ग्रहण, धरण ३ सूर्यादि ग्रहण, उपराग ।
ग्रसना, क्रि स (स ग्रसन) (इत्यतेन) ग्रु (भ्वा उ अ, चु) ग्रस्-अवलब् (भ्वा आ से) ग्रह् (क्र् उ से) ।
ग्रसित,| वि (स ग्रस्त) धृत गृहीत उपात्त
ग्रस्त, | २ पीडित ३ भक्षित, निगीर्ण ।
ग्रह, स पु (स) नक्षत्रभेद ।
ग्रहण, स पु (स न) उपराग, ग्रह, ग्रास, ग्रहपीडन २ आदान, अगीकरणम् ।
ग्राफ, स पु (अ) बिंदुरेखाचित्रम् ।
ग्राम, स पु (स) दे 'गाव' ।
ग्रामीण, स पु (स) ग्रामिक ग्रामिन्, ग्रामवासिन् ।
ग्रामोफोन, स पु (अ) ध्वनिविस्तारवाद्यम् ।
ग्राम्य, वि (स) ग्रामीण, ग्रामिक ग्रामीय २ असभ्य अशिष्ट ।
ग्रास, स पु (स) कवल पिंड ।
ग्राह, स पु (स) अवहार, जलहस्तिन् ।
ग्राहक, स पु (स) क्रेतृ (पुं) क्रयिन्, क्रयिक ।
ग्राह्य, वि (स) उपादेय, स्वीकार्य, २ देय ।
ग्रीवा, स स्त्री (स) दे गर्दन' ।
ग्रीष्म, स पुं (स) ग्रीष्म समय-काल, निदाघ, उष्ण काल तप, तापन, ऊष्मा, उपगम आगम-काल ।
ग्रीस स पुं (अं) यवनदेश ।

ग्रेटब्रिटेन, सं पु (अ) आङ्ग्लद्वीपसमूह ।
ग्रेविटी, सं स्त्री (अ) भ्याकृष्टि (स्त्री) ।
स्पेसिफिक—, आपेक्षिकभार ।
ग्रेविटेशन, सं पु (अ) गुरुत्वाकर्षणम् ।
ग्रेजुएट, स पु (अ) स्नातक ।
ग्लाईसेरिन, सं पु (अ) शर्कराजनम् ।
ग्लानि, स स्त्री (सं) विषाद, अवसाद, ग्लानि (स्त्री) खेद ।
ग्लूकोज़ सं पु (अ) द्राक्षौजम् ।
ग्लोब, सं पु (अ) गोलम् ।
ग्वार ग्वाला, सं पु (सं गोपाल) गोप, आभीर ।
ग्वालिन, सं स्त्री (हिं ग्वाला) गोपी, गोपिका, आभीरी ।

घ

घ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्थो व्यञ्जनवर्ण, घकार ।
घगोलना, घघोरना, घघोलना, क्रि स, (हिं घना+घोलना) विलो(प्रे विलापयति ते), विद्रु (प्रे) २ आविली कलुषी-कृ ।
घट, सं पु (स घट) कुम्भ ।
घंट, घटा, स पु (सं घण्टा) कांस्यनिर्मित वाद्यभेद २ घंटा, शब्द-रव ३ होरा, नाडिका, अहोरात्रस्य चतुर्विंशतितमो भाग ४ महाघटी ।
—घर, सं पु, घटालय, घटागृहम् ।
घटिका स स्त्री (स) क्षुद्रघण्टा २ किंकि(क)णी ।
घंटी, स स्त्री (हिं घंटा) घर्घरा, घर्घरिका, क्षुद्रघण्टा, घटिका, २ घटिकाशब्द ३ किंकिणी गीवा ४ नूपुर ५ कृकाट, स्वरयन्त्रम् ६ अलिजिह्वा, लम्बिका ।
घंडु, सं पु (स) ताप, दाह, २ प्रकाश, आलोक, ३ मत्तगज ।
घघरा, स पु (अनु) बृहद्घघटालय कम् ।
घघर, स स्त्री (हिं घघरा) चलनी, क्षुद्र, चलनक -क, घर्घरी ।
घचाघच, स स्त्री (अनु) घचाघच, शब्द ध्वनि (पु) । वि, स्थूल, पीन ।
घट¹, स पु (सं) कुम्भ, कलश कु(स स्त्री), पृथुग्रीव, घटी, कलशी, कुम्भ, निप २ शरीर ३ हृदयम् ।
घट², सं स्त्री (हिं घटना) न्यूनता, अल्पता ।
—बढ, सं स्त्री, न्यूनताधिकता ।
घटक, स पु (सं) मध्यस्थ, माध्यमिक, मध्यवर्तिन् २ कुलाचार्य ३ योजक ४ घट ५ परविवाहसाधक ।
घटका, सं पु (अनु) मरणोन्मुखस्य कृच्छ्र, श्वास -प्रसित श्वासप्रश्वासम् ।

घटती, सं स्त्री (हिं घटना) न्यूनता, अवनति (स्त्री), क्षीणता २ अनादर, मानहानि (स्त्री) ।
घटन, सं पु (स न) उपस्थिति (स्त्री), उपगम २ रचन, निर्माणम् ।
घटना¹, क्रि अ (सं घटन) घट् वृत् (भ्वा आ से), उपस्था (भ्वा उ अ), समापद् (दि आ अ), उपनम् (भ्वा प अ) २ युज् (कर्म), उपपद् (दि आ अ) । स स्त्री (स) प्रसग, वृत्त, वृत्तान्त, व्यतिकर । ३ दुर्घटना ।
घटना², क्रि अ (हिं घटना) परिक्षि अपचि (कर्म) क्षम (भ्वा प से), न्यूनी अल्पी, भू ।
घटनावली, सं स्त्री (सं) वृत्तावली, घटना समूह ।
घटबढ, सं स्त्री (हिं घटना+बढना) न्यूनताधिकते, अपचयोपचयौ, हानिलाभौ (सब द्वि) । वि न्यूनाधिक, हीनातिरिक्त ।
घटवारल, सं पु (हिं घाटवाला) तरपण्य दायद, ग्राहिन् २ नाविक, औडुपिक, घट्ट जीविन् ।
घटा, स स्त्री (सं >) कादम्बिनी, मेघमाला, घनपटली २ समूह, वृन्दम् ।
घटाटोप, सं पु (सं. >) दे 'घटा' (१) २ शिविकाच्छादन ३ शकटावरणम् ।
घटाना, क्रि स, (हिं घटना) न्यूनी अल्पी, कृ, ऊन् (चु), ह्रस् (प्रे), लघूकृ, अपचि (स्वा उ अ) २ वियुज् विश्लिष्-व्यवकल् (चु) ३ गर्व हृ-(भ्वा प अ), अपकृष् (भ्वा प अ) ।
घटाव, सं पु (हिं घटना) न्यूनता, अल्पता, हीनता २ अवनति (स्त्री), अपचय ।

घटवाना, क्रि प्र (हिं घटना) व 'घटना' के प्रे रूप ।

घटिका, स स्त्री (स) क्षुद्र-लघु-कुम्भ घट । २ कालमानयंत्र, यामनाली घटी ३ चतुर्विंशतिपलात्मक काल, मुहूर्तार्धम् ।

घटित, वि (स) निर्मित, रचित, सम्पादित ।

घटिया, वि (हिं घटना) अवर अपर नि अप कृष्ट नधन्य २ सुलभ अल्पमूल्य ।

घटी, स स्त्री (स) दे 'घटिका' २ ३।

घड़न, स स्त्री दे 'गठन' ।

घड़ना, क्रि स, दे 'गढ़ना'

घड़ा, स पु (स घट) दे 'घट' (१)।

घड़ाई स स्त्री दे गढ़ाई ।

घड़ाना, क्रि प्रे दे 'गढ़ाना' ।

घड़िया, (स घटिका >) तैजसावर्तनी, मू (मु)षा घी २ मधुकोश करड ३ गर्भाशय ४ मूच्छाक ।

घड़ियाल, स पु, दे 'घटा' (१)।

घड़ियाल, स पु, दे 'ग्राह' ।

घड़ी, स स्त्री (स घटी) घटिकायामनाली कालमानयन्त्र २ दे 'घटिका' (३) ३ दे 'घटिका' (२) ४ समय ।

—घड़ी, क्रि वि मुहुर्मुहुः, पुन पुन असकृत् (सब अव्य)।

—दिआ स पु (हिं घड़ी + दिआ) •घटीदीप, मृतक रातिविशेष ।

—भर, क्रि वि, मुहूर्त भाग, क्षण मुहूर्त, मात्रम्।

—साज़, स पु (हिं + फा) घटी घटिका, कार ।

घतिया, स पु (स घात >) दे 'घाती' ।

घन, स पु (स) मेघ, जलद, पयोद २ लोहमुद्गर, अयोघन, ३ दे 'घटा' (१) ४ समानीयांकत्रयस्य पूरण (गणित, उ २×२×२ – ८ घन) ५ समूह ६ शरीरम् । वि सान्द्र, निविड २ कठिन, सहत, स्थूल, ३ अधिक, प्रचुर ।

—गरज, स स्त्री (+ हिं) गर्जित, स्तनित २ शतघ्नी-तोप, भेद ।

—घोर, वि (सं) अति, सान्द्र निविड २ भीषण, भयावह । स पु भीषण, रव ध्वनि २ स्तनित, गर्जितम् ।

—घोर घटा, सं स्त्री (स) अविरलमेघावली, नीरप्रवाहिनी ।

—चक्कर, स पु (स घनचक्र >) चचल अस्थिर, मति-बुद्धि २ मूर्ख ३ परिभ्रमिन्, यथेच्छविहारिन् ४ कृच्छ संरम्भ ।

—नाद, स पु (स) दे 'घनगरज' ।

—फल, स पु (स न) दे 'घन' (४)।

—मूल, स पु (स न) पूरितसमानीयांकत्रयस्याङ्क, घनपद (उ आठ का घन मूल दो)।

—श्याम, वि (स) अन्दनील, मेघमेचक । स पु, श्रीकृष्ण ।

—सार, स पु (स) कर्पूर २ पारद ।

घनता, स स्त्री (स) सान्द्रता निबिडता ।

घनत्व, स पु (स न) स्थूलता सहति (स्त्री) २ पदार्थस्य आयामविस्तारस्थूलत्वानि (बहु)।

घना, वि (स घन) सान्द्र, निविड, महत, नीरन्ध्र २ गाढ, निकटवर्तिन् ३ अत्यधिक, अतिशय ।

घनाक्षरी, स स्त्री (स) दण्डकवृत्त कवित्ताख्य छन्द (छन्द)।

घनिष्ठ, वि (स) अत्यन्त अति, सान्द्र निविड घन २ प्रगाढ, अतिनिकटस्थ ३ अत्यधिक, अतिशय ।

घनेरा, वि (हिं घना) अत्यधिक अतिशय (बहु, घनेरे = असंख्य, अनेक)।

घनोदय, स पु (स) मेघागम, वर्षाकालारम्भ ।

घनोपल, दे 'ओला' ।

घपला, स पु (अनु) छल, कपट २ (असावधान) स्खलित, भ्रान्ति (स्त्री) ३ क्रमभग ४ संकुल, प्रभ्रम, कीर्णत्वम् ।

घबरा(ड़ा)ना, क्रि अ तथा क्रि स दे 'व्याकुलाना' ।

घबराहट, स स्त्री (हिं घबराना) व्याकुलता, अशान्ति (स्त्री), उद्वेग २ व्यामोह, किंकर्तव्यमूढता, चित्तविक्षेप ३ त्वरा, तूर्णि (स्त्री) संरम्भ (न) संभ्रम ।

घमंड, स पु (स गर्व ?) अहंकार, गर्व, दर्प, आटोप, मद, अवलेप ।

—करना, क्रि अ, गर्व (भ्वा प से), प्रगल्भ (भ्वा आ से) दृप् (दि प वे)।

घमडी, वि (हिं घमड) अवलिप्त, दृप्त, गर्वित, अहमानिन्, अहकारिन्, उत्सिक्त।

घमघमाना, क्रि अ (अनु) घमघमायते (ना धा), ध्मार स्वन् (भ्वा प से)। क्रि स (तुम्बिम) तट (चु०)।

घमम, स स्त्री | घमसा, स ‖ } (स घर्म>) दे 'उमस'।

घमसान, स पु (अनु) घोर-दारुण-क्रूर, युद्ध सग्राम-रण-समर।

घमाका, स पु (अनु घन) घनिति-शब्द ध्वनि (पु) प्रहारज शब्द।

घमाघम, स पु (अनु) घनघनध्वनि (पु), घन-मथित, घनघनमारण्ध २ लोहकुट्टर घन, शब्द ३ आडबर, श्री (स्त्री), शोभा।

घमासान, स पु दे 'घमसान'।

घर, स पु (स गृह) दे 'गृह' २ जन्म, भूमि (स्त्री)-स्थान ३ कुल, वश ४ कार्यालय ५ कोष्ठ, आगार ६ खाप, आवेष्टन ७ मूल, कारण ८ गृहरेखि-छद ९ छिद्र, विवर्म्।

—आबाद करना, मु, वि-उद्-वह् (भ्वा उ अ), परिणी (भ्वा प अ)।

—करना, मु, वस् (भ्वा प अ) २ स्थिरीभू।

—का आदमी, मु, विश्वसनीयमनुष्य २ सबधिन्।

—का न घाट का, मु, निर्गुण, निरर्थक, कुत्सित, अधम २ अस्थिरवास।

—फूक तमाशा देखना, मु आमोदप्रमादयु स्वधन अपव्यय् (चु)।

—फोडना, मु, गृहकल्ह जन् (प्र)।

—बसाना, मु, दे 'आबाद करना'।

—बारी, मु, गृहस्थ, गृहिन्।

—में डालना, मु, उपपत्नीत्वेन धारय् (र उ से)।

—में पडना, मु, उपपत्नी भू।

—वाला, मु, पति २ गृहिन्।

—वाली, मु, पत्नी २ गृहिणी।

—सिर पर उठाना, मु, कोलाहल कृ।

ऊँचा—, मु, उच्च मु-कुल, सद्वश।

बड़ा—, मु, समृद्ध-सपन्न आम्य-कुल २ कारागृहम्।

घरट, स पु (स) घरट्टक २ पेषणी चक्री।

घरणी, नी, स स्त्री (स गृहिणी) गृहपत्नी, भार्या, कलत्रम्।

घरफोरी, स स्त्री (हिं, घर + फोडना) गृहभेदिनी वशविनाशिनी।

घराट, स पु, दे 'घरट्ट'।

घराती, स पु (हिं घर) 'बराती' का अनुकरण) (विवाह) वधू-कन्या पक्षीय सम्बन्धिन्।

घराना, स ‖ (हिं घर) वश कुल, कन्या।

घरेलू, वि (हिं घर) गृह्य गृह, निर्मित सबधिन् २ नैज, आत्मीय ३ दे 'पालतू'।

घर्घर, (स पु) गद्गद घर्घर, शब्द स्वन।

घर्घराना, क्रि अ (स घर्घर>) घर्घररव कृ, गद्गद नद् (भ्वा प से), घर्घरायते (ना धा)।

घर्घराहट, स स्त्री (हिं घर्घराना) दे 'घघर'।

घर्म स पु (स) सूर्य, आतप आलोक २ उष्णता, दाह, ताप ३ ग्रीष्म ४ प्रस्वेद। वि, तप्त, उष्ण।

घर्राटा, स पु (अनु) घर्घर, घर्घररव।

घर्षण, स पु (स न), अभ्यजन, मर्दन २ सघट्ट, समाघात।

घसना, क्रि अ तथा क्रि स, दे 'घिसना'।

घसियारा, स पु (स घास>) घास हारिन्, घासविक्रेतृ (पु) २ घास लू, छेदक-लावक। (रिन (स्त्री)-घासहारी रिणी इ)।

घसीट, स स्त्री (हिं घसीटना) शीघ्र द्रुत लिखित, लि(लि)खन ३ द्रुत शीघ्र-लिखित लेख लेखन ३ (भूमौ) कर्षणम्।

घसीटना, क्रि स (स घृष्) आ वि-कृष् (भ्वा प अ) वलात् हृ (भ्वा उ अ) ३ शीघ्र-सत्वर, लिख (तु प से) ६ बलात् समाविश (प्रे)।

घस्सा, स पु, दे 'घिस्सा'।

घहर(रा)ना, क्रि अ (अनु) दे 'गरजना'।

घाई, स स्त्री (स गभस्ति >) अगुली मध्य, गभस्तिकोण २ क्षादद्वारामध्य।

घाई ‖ स्त्री (हिं घाव) आघात, प्रहार ३ छल, कपटम्।

घाऊघप, वि (हिं खाऊ+घप्पु) औदरिक, घस्मर, गृध्नु २ गूढचित्त, गुप्तभाव।

घाग, घाघ, वि (एक प्रसिद्ध अनुभवी पुरुष था) बहुदर्शिन् अत्यनुभविन् (नी स्त्री), बहुदृश्वन् (वरी स्त्री) २ मायाविन्, कापटिक (की स्त्री) सं पु, जरठ, वृद्ध।

घाघरा, सं पु, (सं घर्घर) १ सरयूनदी २ दे 'घघरा'।

घाट, सं पु (सं घाट) घट्ट, घट्टी, तट, तट स्थान, स्थल २ तीर्थ, अवतार ४ पर्वत ५ दिशा ६ विधि (पु) प्रकार ७ असिधारा।

—घाट का पानी पीना, मु अनेकविकार्य द्वारा भ्रमण भ्रम् (भ्वा प से) ६ अनुभवातिशय प्राप् (स्वा प अ)।

—मारना, मु, प्रतिषिद्धमार्गानि आ, नी इ (भ्वा उ अ.)।

घाटा, सं पु (हिं घटना) हानि क्षति (स्त्री), क्षय, अपचय, अत्यय।

—उठाना या पड़ना, मु, विद्युत्निहा परिहा (कर्म)।

—भरना, हानिं सम् प्रतिसमा, धा (जु उ अ), हानिं ■ वि परि पुष् (प्रे)।

घाटिया, सं पु (हिं घाट) गंगापुत्र, तीर्थपुरोहित।

घाटी, सं स्त्री (हिं घाट) संकट मार्ग, पथ मा २ दरी, द्रोणी, उपत्यका।

घात, सं पु (सं) आ अभि निर, घात, प्रहार २ वध, हत्या ३ अहित, अमङ्गल ४ गुणनफल (गणित)। सं स्त्री, सुयोग, सदवसर, सुवेला २ निभृतावस्थिति (स्त्री) ३ छल कूटोपाय।

—में बैठना, मु, (वधाय लुण्ठनाय वा) मार्गे निभृत मनीष (भ्वा आ से), पथि अव स्कन्द (भ्वा प अ)।

घातक, सं पु (सं) अपकारिन्, मारक, मारयितृ हन्तृ (पु) २ शत्रु, अरि, ३ वधक, दण्डपाशिक। वि, प्राणहर, अनकर।

घातिनी, सं स्त्री (सं) हन्त्री, घातिका, मारयित्री।

घाती¹, सं पु (सं घातिन्) दे 'घातक'।

घाती², वि (हिं घात) विश्वासघातिन्, अवसरसाधक २ मायाविन्।

घातुक, वि (सं.) नाशक, हिंसक, मारक। (घातुकी स्त्री)।

घात्य, वि (सं) हननीय, हन्तव्य, मारणीय, वधार्ह।

घान, } सं ■ } (सं घन)।
घानी, } सं स्त्री } स्थालीयन्त्रादिषु सकृत्क्षेपणीया मात्रा।

घाम, सं पु (सं घर्म) सूर्य, आतप आलोक २ सूर्य-ताप दाह।

घामड़, वि (हिं घाम) मूर्ख, अज्ञ, मूढ, २ अलस, कर्मविमुख ३ घर्मातप, पीड़ित (पशु)।

घायल, वि (सं घात >) क्षत, व्रणित, विद्ध, भिन्नदेह, आहत, प्रहृत।

—करना, क्रि सं, व्रण् (चु०), आ-अभि हन् (अ प अ), क्षण् (त उ से), तुद् (तु उ अ)।

—होना, क्रि अ, व उपर्युक्त धातुओं के कर्म रूप।

घार, सं पु (सं) आसेक प्रोक्षणम्, वण निकरणम्।

घाल, सं पु (■ घार >) घार, ग्राहकाय मूल्य विना दत्त वस्तु (न)।

घालक, सं पु (हिं घालना) घातक, मारक, २ नाशक, ध्वंसक।

घाव, सं पु (सं घात) क्षति (स्त्री), व्रण, आघात, प्रहार, ईर्म, अरुस् (न)।

—करना, क्रि स, दे 'घायल करना'।

—खाना, क्रि अ, दे 'घायल होना'।

—भरना, क्रि अ, व्रण, रुह् (भ्वा प अ)।

घास, सं स्त्री (सं पु) य(य)वस, यव (वा)स, शाद, तृणम्।

—पात, सं पु (सं घासपत्र) तृणपत्र २ दे 'कूड़ा-करकट'।

—फूस, सं पु, पलाल २ दे 'कूड़ाकरकट'।

—काटना या खोदना, मु, व्यर्थ क्षुद्र तुच्छ, कार्य कृ।

घिग्घी, सं स्त्री (अनु) हिक्का, हिध्मा २ गद्गदवाच् (स्त्री), स्खलद्वाक्य, स्वरभंग।

—बंध जाना, क्रि अ, (भयशोकादिभि) हिक्क् (भ्वा उ से), सगद्गद वद् (भ्वा प से)।

घिघियाना, क्रि अ (हिं घिग्घी) करुण

प्राध् (चु आ से,), सदाप निविद् (प्रे), दे 'गिड़गिड़ाना'।

घिचपिच, स स्त्री (स घृष्टपिष्ट अथवा अनु०) स्थानसंकीर्णता, अवकाशाल्पत्वम्। वि०, सकुल, वैदग्ध्य, अस्पष्ट।

घिन, स स्त्री, (स घृणा दे)।

घिनाना, क्रि अ, दे 'घृणा करना'।

घिनावना, घिनौना, वि (हिं घिन) घृणाई, गर्हित, गर्हणीय, बीभत्स, अरुचिकर, कुत्सित, उद्वेगकर (-नी स्त्री)।

घिया, स पु दे 'कद्दू'।

—कश, स पु दे 'कद्दूकश'।

—तोरी, स स्त्री, महाकोशातकी, हस्तिघोषा महाफला, घोषक, हस्तिपर्णी।

घिरना, क्रि अ (स ग्रहण>) परि, इ क्षिप् गम् वेष्ट् (कर्म) २ एकत्र मिल् (तु प से), सनिपद् (भ्वा प से)।

घिरनी, सं स्त्री (स घूर्णि) १ घूर्णि (स्त्री), घूर्णन, भ्र(-भ्रा)मर २ परिभ्रमण, परिवर्त ३ रज्जुव्यावर्तनचक्र ४ दे 'गड़ारी'।

घिसघिस, स स्त्री (हिं घिसना) मान्द्य, दीर्घसूत्रता, कार्यजडता, कालक्षेप।

घिसना, क्रि अ (स घर्षण) जर्जरीभू, जॄ (दि प से), (सघर्षणेन) अपचि क्षि (कर्म), सघृष् (भ्वा प से), सघट (भ्वा आ से)। क्रि स, घृ (प्रे), मृद् (क प से वा प्र) अभि, अञ्ज् (र प वे), लिप् (तु प अ)। स पु, घर्षण, मर्दन, अभ्यञ्जनम्।

घिसवाना, घिसाना, क्रि प्र व 'घिसना' (क्रि स) के प्रे रूप।

घिसाई, स स्त्री (हिं घिसना) घर्षण, मर्दन २ घर्षण मर्दन, मृत्या भृति (स्त्री)।

घिसाव, स पु) (हिं घिसना) सघर्ष, पर
घिसावट, स स्त्री) स्पर, घर्षण मर्दन, समर्द, सघट्ट।

घिस्सा, सं पु (हिं घिसना) घर्ष, सघट्ट, समर्द २ प्रसारण, प्रचोदना ३ बाल्क्रीडा भेद।

घी, सं पु (स घृत त) आज्य, आ-, आयुस् सर्पिस् (न), पवित्र, अमृत, अभिघार, होम्य, तैजस, नवनीतकम्।

—के चिराग या दिये जलना, मु, सफलमनोरथ, पूर्णकाम-कृतकृत्य, (वि) + भू।

—खिचड़ी होना, मु, प्रगाढ घनिष्ठ, मैत्री अनुराग भू।

पाँचों उंगलियाँ घी में होना, मु, उत्सव कृ (भ्वा आ से), स था समृद्ध (वि) अस् (अ प)।

घीकुवाँर, स पु (स घृतकुमारी) कुमारी, तरुणी, गृह-कन्या कन्यका, अजरा, अमरा।

घुँइयाँ, स स्त्री (देश) दे 'कचालू'।

घुँघ(ग)ची, स स्त्री, (स गुजा) गुञ्जिका, रक्तिका, रक्ता, कृष्णला, काक, चिंचिका चूडामणिका। २ गुञ्जा-रत्ता,-मान द्र।

घुँवची, स स्त्री (अनु) मर्जिताद्रचणकादि।

घुँघराले ले, वि, दे 'घुँघरवाल'।

घुँघरू, स पु (अनु घुन) घर्घरा रिका, क्षुद्र, घटा घटिका, क्षुद्रिका, भषणी, नीका, किंकिणी २ मजीर र, नुपुर-र। ३ मरणासन्नस्य कठे घर्घरशब्द।

घुड़ी, सं स्त्री (स ग्रथि पु) १ दे 'गाँठ'। २ वलमय, गड -कुसुप।

घुग्घी, स स्त्री (देश) दे 'पडुक' २ त्रिकोण रूपेण व्यावर्तित कबल।

घुग्घू, घुघुआ, स पु (सं घूक) दे 'उल्लू'।

घुघुआना, क्रि अ (अनु) घूघू शब्द कृ। उलूकवत् घूकरव रु (अ प से) -क्रुश् (भ्वा प अ)।

घुटकना, क्रि स (अनु) कवलश पा (भ्वा प अ) २ दे 'निगलना'।

घुटना¹, स पु (स घुट -दपुना>) जानु (न) ऊरु, पर्वन् (न) सधि (पु), अष्ठीवत् (पु न), चक्रिका।

घुटना², क्रि अ (हिं घूँटना) कण्ठ -श्वास रुध् (कर्म)।

घुटना³, क्रि अ (हिं घोटना) चूर्ण् पिष् (कर्म) २ सम्यक पच (कर्म) ३ श्लक्ष्णी भू ४ सत्य जन् (दि आ से) ५ स्निग्धालापे व्याप् (तु आ अ) ६ केशा मूलन मुण्डु क्षुर् (कर्म) ७ अभ्यस् (कर्म)।

घुटा हुआ, मु धूर्त, दक्ष, विचक्षण।

घुटना, सं पु (स घुट >) घुटनाह, पादायाम।

घुटाई, स स्त्री (हिं घोटना) चूर्णन, पेषण, मर्दन २ श्लक्ष्णीकरण ३ चूर्णन श्लक्ष्णीकरण, भृत्या ४ क्षौर, मुंडन ५ आवर्तन, अभ्यास ।
घुट्टी, सं स्त्री, दे 'घूँटी' ।
घुड़, स पु (स घोट) घोटक ।
—चढ़ा, स पु, दे 'घुड़सवार' ।
—चढ़ी, स स्त्री, अश्वारूढा (नारी) २ अश्वारोहण वैवाहिकरीतिभेद ३ तालभेद ।
—दौड़ स स्त्री, अश्व घोटक चर्या धावन २ जवाश्व जवन, धावन, धवभेद ३ चर्याभूमि (स्त्री) ।
—बहल, स पु, घोटक रथ स्यन्दन ।
—सवार, स पु सादिन्, तुरगिन्, हय तुरग-अश्व आरूढ रथ ।
—सवारी, स स्त्री, अश्व रोहण कौशल विद्या ।
—साल, स स्त्री (स घोटशाला) मन्दुरा, वाजि अश्व शाला ।
घुड़कना, क्रि स (स घुर्) भर्त्स् (चु आ से) वाचा दण्ड (चु), अव अधि क्षिप् (तु उ अ) ।
घुड़की, स स्त्री (हिं घुड़कना) अधिक्षेप, क्षेप, वाग्दण्ड, भर्त्सन ना ।
घुणाक्षर, स पु (सं) घुणलिपि (स्त्री), घुणवल्मीकादिभि पत्रकाष्ठादिषु कृता रेखा ।
घुन, स पु (स घुण) काष्ठ-वेधक कीट भेदक
—लगना, क्रि अ, घुणै अद् (कर्म) ।
घुनघुना, स पु (अनु) दे 'झुनझुना' ।
घुन्ना, वि (अनु घुनघुनाना) तूष्णीक, गूढ सद्भाव, मान (घुन्नी स्त्री) ।
घुप, वि (स कूप >) निविड सूचीभेद (अन्धकार) ।
घुमड़ना, क्रि अ (हिं घूम+स अटन >) मेघा आकाश आच्छद् (चु) ।
घुमरी, स स्त्री (हिं घूमना) भ्र(भ्रा)मर, भ्रमि घूर्णि, (स्त्री) ।
घुमाना, क्रि स (हिं घूमना) व 'घूमना' के प्रे रूप ।
घुमाव, स पु (हिं (घूमना) परि, भ्रम, घूर्णि (स्त्री), -या-परि वा-वर्त ।
घुरघुराना, क्रि अ (अनु) घुरघुरायते (ना धा), घुर् (तु प से) ।
घुलना, क्रि अ (सं घूर्णन >) वि प्र, ली (दि आ अ), द्रवीभू, क्षर्, गल् (भ्वा प से), क्लिद् (भ्वा प अ) २ पूतीभू, दुर्गंध (वि) भू, विगल् ३ कृश क्षीणमांस (वि) भू ४ गले परिहा (कर्म) । स पु, विलयन, द्रवीभाव, पूतीभवन, क्षय इ ।
घुलने योग्य, वि, विलेय, क्षरण विलयन-शील, विद्राव्य ।
घुलवाना, क्रि प्र } व 'घुलना' के प्रे रूप ।
घुलाना, क्रि स }
घुलाव, स पु } दे 'घुलना' स पु ।
घुलावट, स स्त्री }
घुषित, **घुष्ट**, वि (स) प्रकाशित, प्रकटीकृत, आ-उद् वि, घोषित, प्रख्यापित ।
घुसड़ना, क्रि अ, दे 'घुसना' ।
घुसना, क्रि अ (स कोसन या घर्षण > ?) (बलात्) आ प्र, विश् (तु प अ), (अत) पद कृ अथवा निधा (जु उ अ), आगम् २ भिद्, छिद् (रु प अ), व्यध् (दि प अ) । स पु, प्रवेश, आगमन, निर्भेदन इ ।
घुसाना, } क्रि स, व 'घुसना' के प्रे रूप ।
घुसेड़ना, }
घूँघट, स पु (स गुण्ठन >) अवगुण्ठन ठिका, मुखावरक-कम् ।
—काढ़ना, या **मारना**, क्रि स, अवगुण्ठ् (चु) मुखमाच्छद् (चु) ।
—वाली, स स्त्री, अवगुण्ठनवती ।
घूँघर, स पु (हिं घुमरना) अलक, कुरल, चूर्णकुन्तल ।
—वाले, वि आकुञ्चित जिह्मी वक्री, भूत, कुन्तलाकीर्ण, कुरलिन् (प्राय केशों के लिए) ।
घूँट, स पु (अनु घुट घुट) गण्डूषमात्रं पेय, चलु, च(चु)लुक ।
—लेना या **पीना**, क्रि स, आचम् (भ्वा प से) उपस्पृश् (तु, प अ), अल्पशः इषद् पा (भ्वा प अ) ।
घूँटना, क्रि स, दे 'घूँट लेना' ।
घूँटी, स स्त्री (हिं घूँट) शिशुभेषज, बालौषधम् ।
घूँस, स स्त्री, दे 'घूस' ।
घूँसमघूँसा, सं पुं (हिं घूँसा) मुष्टीमुष्टि (अव्य), मुष्टियुद्ध, बाहूबाहवि (अव्य) ।

घूसा, स (हिं घिस्सा) मुष्टि (पु स्त्री), मुष्टी, बद्धमुष्टि २ मुष्टि, घात प्रहार ।

—लगाना या मारना, क्रि स, मुष्टिना प्रहृ (भ्वा उ अ) तड (चु)।

घूआ, स पु (देश) कासादारकाण्डादीनां पुष्पम् २ कर्दमस्थकीटभेद ३ खग्वाछिद्रम्।

घूक, सं पु (स) दे 'उल्लू'। (घूकी स्त्री)

घूघ, स पु, दे 'रौद्र'।

घूघू, स पु (स घूक) दे 'उल्लू' २ जड, मन्दमति ।

घूम, स स्त्री, दे 'घुमाव'।

घूमना, क्रि अ (स घूर्णन) परि भ्रम्-अट (भ्वा प से), स वि-चर (भ्वा प से) २ वि-धा आ परि वृत् (भ्वा आ से), चक्रवत् भ्रम्, वि परि घूर्ण (तु प से) ३ नि प्रतिनि प्रत्या वृत्, पुनर्, या इ (अ प अ)। स पु, परि भ्रमण-अटन, परिवर्तन, घूर्णन, प्रतिनिवर्तन, चक्र, आवर्त गति (स्त्री)।

घूमने वाला, वि, पर्यटन भ्रमण शील, चक्रावर्तिन्, चक्रगति, परिवर्तिन्, परिभ्रमिन्।

घूमघूमेला, वि (हिं घूम घूम) दे 'घूमनेवाला'।

घूरना, क्रि स (स घूर्णन>) कटाक्षेण तिर्यक साचि ईक्ष् (भ्वा आ से) दृश् (भ्वा प अ) २ सकोप निर्निमेष अवलोक (भ्वा आ से चु)।

घूराघारी, स स्त्री (हिं घूरना) कटाक्ष, कटाक्ष-अवेक्षण, दर्शनम्, अपाङ्ग-वीक्षणम् अवलोकनम्।

घूस, स स्त्री (हिं घुसना या घूँसा) उत्कोच, उपायनम्।

—खोर, स पु (हिं + फा) उत्कोचग्राहिन्।

घृणा, स स्त्री (स) अरुचि, कुत्सा, गर्हा, जुगुप्सा, वि,द्वेष निर्वेद ।

घृणित, वि (स) अरुचिकर-उद्वेगकर (—करी स्त्री) २ कुत्सित, गर्ह्य, बीभत्स।

घृत, स पु (स न) दे 'घी'।

घेरना, क्रि स (ग्रहण>) परिवेष्ट (भ्वा आ से, प्रे), परिवृ (स्वा उ से म), पार इ (अ प अ) २ अव-उप, रुध् (रु उ अ)। स पु, परिवेष्टन, परिवारण, उपरोध इ ।

घेरने वाला, स पु, परिवेष्टक, उपरोधक ।

घेरा, स पु (हिं घेरना) परिधि (पु), परि, वेष वेश-आवृत, मण्डल २ प्राचीर, प्राकार, वेष्टन, वरण ३ परिवृतस्थान ४ मण्डल ५ अव उप, रोध ।

—डालना, मु, परिवेष्ट् (प्रे), दे 'घेरना' (२)।

घेवर, स पु (स घृतवर) घृतपूर, घार्तिक ।

घैंया, स स्त्री (हिं घी) स्तननिर्गत-दुग्धधारा २ प्रत्यग्र-दुग्धनवनीतम्।

घोंघा, स पु (देश) शम्बूक, कोष कवच-स्थ, कीटभेद २ शुक्ति (स्त्री)। वि, जड, स्थूलबुद्धि।

घोंटना, क्रि स, दे 'घोटना'।

घोंपना, क्रि स (अनु धुप) प्र नि विश् (प्र) निर्भिद्-व्यध (प्रे)।

घोंसला, स पु (स कुशालय अथवा हिं घुसना) कुलाय, नीड-ड, खगालय, पक्षिगृहम्।

घोख(क)ना, क्रि स (स घोषण>) कण्ठस्थ (वि) कृ, स्मृतिपथं नी (भ्वा उ अ), अभ्यस (दि उ से)।

घोट, घोटक, स पु (स) दे 'घोड़ा'।

घोटना, क्रि स (स घोटन>) क्षुद् पिष् (रु प अ), चूर्ण्-खण्ड (चु), मृद् (क्र प से) २ मृद् (चु), क्षुर् (तु प से) ३ घर्षणेन श्लक्ष्णीकृ ४ गलहस्तयति (ना धा), गल निष्पीड्य व्यापद् (प्रे), कण्ठ निष्पीड (चु) ५ दे 'घोखना'।

स पु पेषण, मर्दन, लुण्ठन, श्लक्ष्णीकरण इ । २ क्षुर(रा) इ, (पेषण) दण्ड ।

घोटनी, स स्त्री (हिं घोटना) मर्दनी, मुसलकम् ।

घोटवाना, क्रि प्र, व, 'घोटना' के प्र रूप।

घोटा, स पु (हिं घोटना) मार्जक, घर्षक २ मार्जितवस्त्र ३ घर्षण ४ मुसल, दण्ड ५ पेषण ६ क्षौर, केशवपनम्।

घोटाला, स पु (देश) दे 'गड़बड़' स ।

घोड़साल, स पु (स घोटशाला) दे 'घुड़' के नीचे 'घुड़साल'।

घोड़ा, स पु (स घोट) घोटक, तुरग, तुरंग, गम, अश्व, वाह, हय, वाजिन्, अर्वन् (पु),

सैंधव, सप्ति (पु), गन्धर्व, जवन। २ चतुरंग शार शारि (पु) ३ अश्वचक्रयोग।

—गाड़ी, स स्त्री, अश्व हय, रथ शकट।

घोड़े बेच कर सोना, मु गाढ निद्रा स्वप् (अ प अ)-शी (अ आ, से,)-मविश (तु प अ)।

घोड़िया, स स्त्री (हिं घोड़ा) घोटक, अश्वक, लघु अश्व घोट २ नागदन्त, -नक।

घोड़ी, स स्त्री (स घोटी) अश्वा, वडवा, तुरगी वाजिनी वामिनी, घोटिका २ वडवा रोहण वैवाहिकरीतिभेद ३ विवाहगीतिका।

—चढ़ना, मु, वरो वडवामारुह्य वधूगृहं गम्।

—डण्डा, स पु बालक्रीडाभेद, घोटीकन्दनम्।

घोणा, स स्त्री (स) नासा, नासिका, गन्ध वहा। २ शूकर अश्व प्रभृतिमुखाग्रभागस्यम्। ३ छिक्का धुन-आवह बालकभेद।

घोणी, स पु (स गिन्) शूकर, वराह, रोमश।

घोर, वि (स) भयङ्कर, भीषण, भीम २ दुर्गम, गहन निबिड ३ परुष, कर्कश, ४ गाढ, दृढ ५ निकृष्ट, अधम ६ अत्यन्त, अत्यधिक।

—निद्रा, सं स्त्री (सं) गाढनिद्रा, सुनिद्रा।

घोलघुमाव, सं पु, दे 'टालमटोल'।

घोलना, कि सं (हिं घुलना) विद्रु विली नम् (प्रे)।

घोलमेल, सं पु (हिं घुलना + स मेल >) मिश्रण, संसर्ग, सम्पर्क।

घोष, सं पु (सं) शब्द, नाद, रव, स्वन, ध्वनि (पु) २ गर्जित, स्तनित ३, आभीर वसति (स्त्री) ४ आभीर, गोप ५ गोष्ठ, गोशाला ६ तट तटी ७ शब्दप्रयत्नभेद (व्या)।

घोषणा, सं स्त्री (स) प्रख्यापन, ज्ञापन, प्रकाशन २ घोष, -षण, उच्चैर्नद ३ नाद, ध्वनि, शब्द।

—पत्र, स पु (स न) विज्ञप्ति (स्त्री), सूचनापत्रम्।

घोसी, स पु (स घोष >) यवन, गोप आभीर।

घ्राण, स पु (सं न) नासिका, नासा, नसा २ आघ्राण, गन्धग्रहण ३ आघ्राणशक्ति (स्त्री)।

—इन्द्रिय, सं स्त्री (स न) दे, 'घ्राण' (१ ३)

ङ

ङ, देवनागरीवर्णमालाया पञ्चमो व्यञ्जनवर्ण ङकार।

च

च, देवनागरीवर्णमालाया षष्ठो व्यञ्जनवर्ण, चकार।

चंक्रमण, स पु (स न) चंक्रम -आ, परि, भ्रमण अटनम्, विहरणम्, विचरणम्। शनै शनै मन्दगत्या वा गमनम्।

चंग¹, स स्त्री (फा) डिंडिमप्रकार, -चङ्ग २ नया रा मकार ? ३ गंजीफाक्रीडाया रङ्गभेद।

चंग², स स्त्री (स च चँद + गम् >) दे 'गुड्डी' (१)।

—पर चढ़ाना, मु, अनुकूलयति (ना धा) २ अभिमानिनं विधा (जु उ अ)।

चंगा, वि (स चङ्ग) सुस्थ, स्वस्थ, नीरोग, निरामय २ शोभन, सुन्दर ३ निर्मल, शुद्ध।

—करना, कि स, व्याधे मुच् (प्रे), शम् (प्रे शमयति)।

—भला वि, कुशलिन्, नीरुज् २ भद्र, अच्छ।

चंगुल, स पु (हिं चौ = चार + अंगुल) नख रा नखर -र, २ धरण, ग्रहण, हस्तग्राह।

चंगेर री, सं स्त्री (स चङ्गेरिका) स्थाल्याकार करण्ड २ पुष्पकरण्डोल, पुष्पकरण्ड ३ भाजन, आधार ४ चषक, इति (पु) ५ हिंदोल, दोल।

चंगोली, स स्त्री, दे 'चंगेरी'।

चंचरीक, सं पु (स) भ्रमर, षट्पद।

चंचल, वि (स) चल, चलाचल, चपल, तरल, लोल, प(पा)रिप्लव, चटुल, २ व्याकुल, पर्या कुल, अशान्त, अनिर्वृत ३ अधीर, अस्थिर, चलचित्त, लोलबुद्धि ४ विनोदिन्, लीलापर। स पु, वायु २ कामुक।

चंचलता, स स्त्री (स) चापल्य, चाञ्चल्य,

लौल्य, चटुलता, तरलता २ कुचेष्टा हित, मलौल्य, लीलापरता।

चचला, स स्त्री (सं) लक्ष्मी (स्त्री), इंदिरा २ विद्युत (स्त्री), सौदामिनी। वि, स्त्री, अशांता, चलचित्ता।

चचलाहट, सं स्त्री, दे 'चचलता'।

चंचु, सं स्त्री (सं) चञ्चुका, चञ्चू (स्त्री), चोंटी।

चट, वि (सं चण्ड >) चतुर, दक्ष २ धूर्त, मायाविन्।

चंड, वि (स) क्रूर, रौद्र (-द्री स्त्री), दारुण, भैरव, (-वी स्त्री), भीषण, उग्र २ कोपिन्, क्रोधिन्, सरभिन्, अमर्षिन् ३ परुष प्रखर, तीव्र, तीक्ष्ण, घोर ४. बलवत्, दुर्दमनीय ५ कठिन, कठोर।

—कर, सं पु (सं) सूर्य, चण्डाशु।

—कौशिक, स पु (सं) (१३) मुनि-नाटक सर्प, विशेष।

चडता, सं स्त्री (सं) उग्रता, भीषणता, क्रूरता २ तीक्ष्णता, प्रखरता, तीव्रता।

चंडा, सं स्त्री (सं) रुद्राणी, चडा, दुर्गा, २ नायिकाभेद ३ शतपुष्पा, मधुरा। वि स्त्री (स) निष्ठुरा, कर्कशा, उग्रा, कठोरा।

चंडाल, सं पु (स) चाण्डाल, मातग, दिवाकीर्ति (पु) निषाद, श्वपच च (पु), पुक्कस-श प। वि क्रूर-पाप, कर्मन् २ दुष्कुलीन, हीन-जाति वर्ण।

—चौकडी, सं स्त्री, चण्डालचतुष्क दुष्ट चतुष्टयम्।

चडालिन, चडालिनी, चडानी, स स्त्री (स चण्डाली) चाण्डाली, मातगी, निषादी २ पापिनी, दुष्टा।

चंडिका, स स्त्री (स) दुर्गा २ विवादशीला नारी ३ गायत्रीदेवी।

चंडी, चडा, स स्त्री (सं) पार्वती २ कोपिनी नारी ३ कलहप्रिया कामिनी।

चंडू, स पु (स चंड तीक्ष्ण >) अहिफेन निर्मितमादकद्रव्यभेद, चण्डू (पु)।

—खाना, सं पु (हिं+फा) चडू, गृह-शाला।

—बाज़, सं पु (हिं+फा) चंडूप, चडू, पायिन्-सेविन्।

चडूल, सं पु (देश) भ(भा)रद्वाज, मारय, व्याघ्राट।

चद[1], सं पु (सं चन्द्र) दे 'चद्र'। २ हिंदीकविविशेष।

—मुखी, सं स्त्री (सं चद्रमुखी) शशिवदनी, चद्रानना।

चद[2], वि (फा) दे 'कुछ'।

चदन, स पु (स पु न) मलयज, श्रीखण्ड, गधसार, सुगंध, सर्पावास, शीतल, गंधाढ्य, शीतगंध। २ चदनकाष्ठ ३ चदनलेप।

—लाल, रक्त-पु-चदन, रक्त पत्राङ्गम्।

—सफेद, नैलपर्णिक, श्वेतचदनम्।

चदला, वि पु (हिं चाद = खोपड़ी) खल्वाट, विकेश (-शी स्त्री)।

चँदवा, स पु (हिं चद) उल्लोच, वितान आच्छादन, पिधानम्।

चदवा[2] सं पु (सं चद्रक) मयूरपिच्छनेत्र मेचक २ वर्तुलवस्त्रखण्ड ३ मत्स्यभेद।

चदा स पु (फा चद) धनसहायता, आर्थिकसाहाय्य २ धनभाग अर्थांश। ३ स्वाश, उद्धार।

—करना, क्रि स, अर्थांश समाह (क्र प से)।

—देना, स्वभाग दा (जु उ अ)।

चँदिया, सं स्त्री (हिं चांद) शीर्ष शिरो मस्तक, मध्य, मुकुट २ कपाल क, शिरो शिख (न) ३ (अन्त्य-) रोटिका।

चद्रिर, सं पु (स) चद्र सुधाशु ? गज द्विप ३ कर्पूर ४, घनसार।

चद्र, स पु (स) सोम, शशाक, शशिन्, विधु रजनी निशा शर्वरी क्षपा, कर नाथ पति, मृगाक, कलानिधि (पु), ग्लौ (पु), हिम शीत शुभ्र सुधा-अंशु दीधिति (पु), इदु (पु), चद्रमस् (पु), शशधर। २ जल ३ सुवर्ण ४ कर्पूर ५ 'एक' इति सख्या ६ चद्रक, मयूरनेत्रम्।

वि, आह्लादक, आनंदप्रद २ सुदर।

—आनन, वि (स) दे 'चद्रमुख'।

—कला, सं स्त्री (सं) चद्र, रेखा लवः।

—कांत, सं पु (सं) चद्र, मणि (पु)- रत्न-उपल।

—किरण, सं पु (सं) चद्रपाद, शशिकर।

—ग्रहण, सं पु (सं न), विधु इन्दु-चद्र, ग्रहण ग्रह ग्रास -उपराग ।
—प्रभा, स स्त्री (स)दे 'चद्रिका'।
—बिंदु, स पु (स) अनुनासिकचिह्नम् (ँ)।
—भागा, पु स्त्री (स) चद्रभागी, चद्रिका, पचनदप्राते नदीविशेष ।
—मुख, वि (स) चद्रानन, विधु शशि, वदन । (मुखी (स्त्री) = चद्रमुखा, चद्र शशि विधु वदना वदनी आनना आननी)।
—रे(ले)खा, स स्त्री (स)दे 'चद्रकला'।
—वश, स पु (स) सोमकुलम् ।
—शाला, स स्त्री, शिरोगृह, वडभी ।
—शेखर, स पु (स) चद्र, मौलि (पु)-भूषण धर, शिव ।
—हार, स पु (स) वर्तुलस्वर्णहार ।
चद्रक, स पु (सं) १ 'चद्र' २ चद्रिका, कौमुदी ३ कर्पूर २ ४ बर्हनेत्र, चद्रिका ५ मत्स्य-खम् ।
चद्रमा, सं पु [स चद्रमस् (पु)]दे 'चद्र'।
चद्रहास, स पु (स) असि, खड्ग २ रावणखड्ग ।
चद्रातप, स पु (सं) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना कौमुदी २ दे 'चँदवा'
चद्रिका, स स्त्री (स) ज्योत्स्ना, शशि चद्र, प्रभा-काति (स्त्री) कौमुदी, चद्र -आलोक प्रकाश २ चद्रक, बर्हनेत्र (दे ४) स्थूल सूक्ष्म, एला ।
—उत्सव, स पु (स) शरत्पूर्णिमोत्सव ।
चद्रोदय, स पु (स) चद्र सोम,-उदय उद्गम -उद्गमनम् ।
चपई, वि (हिं चपा) चपक पीत, वर्ण-रग ।
चपक, स पु (स) (पौधा) चापेय, दीप स्वर्ण स्थिर पीत, पुष्प पुष्पक, शीतल, सुभग, भृङ्गमोहिन् वनदीप । (फूल) हेमपुष्प, चपक २ । (म न) कदलीफलभेद ।
चपा, स पु (म 'चपक' दे)।
—कली, स स्त्री, म चपककलिका, चपक कोरक २ कठाभरणभेद, चपकवल्ली ।
चपत, वि (स चप्) तिरो अन्तर्, हित, लुप्त, गूढ अपसृत ।
चपू, स पु (म स्त्री) गद्यपद्यमय काव्यम् ।
चमेली, स स्त्री, दे 'चमेली'।
चमच, स पु, दे 'चमचा ।
चँवर, सं पु (सं चमर) चामरम् ।
चक, सं पु (स चक्र) बृहत्क्षेत्र, महाभूखड २ ग्रामटिका, लघुग्राम ३ स्थान, मडल, चक्र ४ पट्ट, पट्टोलिका, भूमिकरग्रहणव्यवस्थापक पत्रभेद ।
चकई, स स्त्री, दे 'चकवी'।
चकई, स स्त्री (हिं, चक) चक्रकी, क्रीडनकभेद । वि, गोल, वर्तुल ।
चकचौंध, स स्त्री, दे 'चकाचौंध'।
चकचौंधना, क्रि अ, दे 'चुँधियाना'।
चकछूँदी, स स्त्री, दे 'छछूँदर'।
चकत्ती, सं स्त्री (स चक्रवर्ती >) वस्त्र-चर्म, खड -खड शकल -शकलम् ।
बादल में-लगाना मु, असभव साधु (स्वा प अ)।
चकता, स पु (स चक्रवर्त >) त्वचिह्नक, चर्म, काष्ठ चिह्न । २ दतक्षतम् ।
—भरना या मारना, मु, दश् (भ्वा प अ)।
चकनाचूर, वि, (हिं चिकना + स चूर्ण वि <) सुचूर्णित, शकली चूर्णी, कृत भूत, सूक्ष्मखडश कृत २ भृशश्रात, अति, क्लात आयस्त ।
—करना, क्रि स, चूर्ण (चु) खडश भज (भ प, अ)-क्षुद् (रु आ सै)।
—होना, क्रि, अ, अणुश क्षुद-चूर्ण भज् (कर्म)।
चकपक, वि (स चक >) चकित, विस्मित २ सभ्रान्त, व्यामूढ ।
चकपकाना, क्रि अ(हिं चकपक) दे 'चौंकना ।
चकम(मा)क, स पु (तु) अग्निग्रावन् (पु) पावकप्रस्तर ।
चकमा, स पु, दे 'धोखा'।
चकराना, क्रि अ, (स चक्र>) (शीर्ष) भ्रम् (भ्वा दि प से), घूर्ण (भ्वा आ से तु प से,) २ व्यामुह् (दि प य), आकुली भू ३ चकित (वि)+भू । क्रि स, चकित (वि)+कृ ।
चकरानी, स स्त्री (फा चाकर) सेविका, परिचारिका।
चकरी, स स्त्री (स चक्री) पेषणी, पेषण, यत्र चक्र २ चक्री, पट्ट-पट्टं ३ दे 'चकई'।
चकला, स पु (स चक्र>) चक्रक

वेश्यावीथी, गणिकाहट्ट ३ दे 'जिला'। वि, विस्तीर्ण, परिणाहवत्।

चकलाना, क्रि स प्रष्ट विस्तॄ (प्रे०), प्रथ (चु)।

चकली, सं स्त्री (हिं चकला) चक्री दे 'गराड़ी' २ चक्री, चक्रिका, गोलपट्टिका, घर्षणी।

चकल्लस, सं स्त्री (अनु० चक) कलह, विवाद २ परिहास, विनोद, कौतुकम्।

चकवा, स पु (स चक्रवाक) कोक, चक्र, रथाग-आह्वय नामक, द्वंद्वचारिन्, कामिन्, कामुक।

चकवी, स स्त्री (हिं चकवा) चक्रवाकी, कोकी, चक्री, रथागनाम्नी इ।

चकाचक, स स्त्री (अनु) दे 'चचाचच' वि, (स चक्=तृप्ति) सम्यक सिक्त, परिपूर्ण। क्रि वि, भृश, भूरि प्रचुर (सब अव्य)।

चकाचौंध, स स्त्री (स चक्=चमकना, चौ=चारों तरफ, अध>) चाकचक्येन नेत्रतेज प्रतिघात, अतिशयदीप्त्या दृष्टेरस्थैर्यम्।

चकित, वि (स) विस्मित, आश्चर्यान्वित, विस्मयाकुल, साश्चर्य, विस्मय,-उपहत-अन्वित। २ सभ्रांत, व्यामूढ, व्याकुल, ३ सशंक, त्रस्त।

चकोटना, क्रि स, (हिं चिकोटी) अङ्गुल्य ग्रेण पीड् (चु)।

चकोतरा-त्रा, स पु (स चक्र>) (वृक्ष) मधुकर्कटी, मातुलुङ्ग, सुगधा, सदाफल, महाजमीर। (फल) मधुकर्कटिक, मातुलुगम् इ।

चकोर, स पु (स) कौमुदीजीवन, चन्द्रिकापायिन्।

चकोरी, स स्त्री (स) चन्द्रिकापायिनी।

चक्कर, स पु (स चक्र) रथाग, मडल २ गोल ल वृत्त वलय य ३ वात-आवर्त भ्रम, वात्या ४ जल आवर्त, जलगुल्म। ५ उभयसमव, विकल्प ६ सभ्रम, व्यामोह ७ कृच्छ, सकट ८ कौटिल्य, वक्रत्व ९ पर्यटन, वि-आ वर्त १० भ्रमि घूर्णि (स्त्री), भ्रामरम्।

—खाना, मु, परिभ्रम् (भ्वा दि प से), घूर्ण् (तु प से)।

—मारना, मु, विचर् पर्यट (भ्वा प से)।

—में आना, मु, कृच्छ्रे पत् (भ्वा प से), सकटे मस्ज (तु प अ)।

—में डालना, मु, कृच्छ्रे-सकटे, पत् मस्ज् (प्रे)।

चक्का, स पु (स चक्र) दे 'चक्कर' (१, २)। ३ बृहद्वर्तुलखड-ड ४ इष्टक प्रस्तर, राशि (पु)।

चक्की, स स्त्री (स चक्री) यन्त्रपेषणी, दे 'चकरी' (१-२) ३ जानुफलकम्।

—पीसना, क्रि स, चक्र्या पिष् (रु प अ)-क्षुद् (रु उ अ) चूर्ण् (चु)। मु, घोर अत्यधिक परिश्रम् (दि प से)-श्रम् (भ्वा प अ)।

चक्कू, स पु दे 'चाकू'।

चक्र, स पु (स न) दे 'चक्कर' (१-४)। ५ तैलपेषणी ६ कुलाल-कुम्भकार,-चक्र पट्ट ७ अस्त्रभेद ८ गण, समूह।

—धर, स पु (स)
—धारी स पु (स रिन्)
—पाणि, स पु (स) } विष्णु, चक्रभृत्।

—वर्ती,—स पु (स तिन्) राजाधिराज, मडलेश्वर, सम्राज् (पु), अधि, राज ईश्वर।

—वाक, सं पु (स) दे 'चकवा'।

—वृद्धि, स स्त्री (स) चक्रवाद्धुष्यम्।

—व्यूह, स स (स) मडलाकार सैन्य सनिवेश।

—हस्त, स पु (स) विष्णु।

चक्राक स पु (स) (भुजादिषु) चक्र, चिह्न-लक्षणम्-अभिज्ञानम्।

चक्राकित, वि (स) चक्रचिह्नयुक्त, सचक्र चिह्न। स पु वैष्णवसम्प्रदायभेद।

चक्राकार, स पु (स) गोल, मडलाकृति।

चक्री, स पु (स क्रिन्) चक्र,-धर धारिन् २ विष्णु ३ कुलाल ४ गुप्तचर ५ तैलिक, तैलिन् ६ सर्प ७ चक्रवाक ८ चक्रवर्तिन्।

चक्षु, स पु [सं चक्षुस् (न)] नेत्र, नयनम्।

चखना, क्रि स (स चषण) आ, स्वाद् (भ्वा आ से) चष् (भ्वा उ से), रस् (चु), रस परीक्ष् (भ्वा आ से), रसनया स्पृश् (तु प अ)।
स पु, आस्वादनं, चषण, रसन, ईषदशनम्।

चखाना, क्रि प्रे, व 'चखना' के प्रे रूप ।

चगल्ना, क्रि स (अनु चग> अथवा चर्वण +गिलन>) क्षुधा विना भक्ष् (चु) ।

चचा, सं पु दे 'चाचा' ।

चची, स स्त्री, दे 'चाची' ।

चचेरा, वि (हिं चचा) पितृव्यसंबन्धिन् ।

—भाई, स पु, पितृव्यपुत्र, पितृव्यज ।

चचेरी बहिन, स स्त्री, पितृव्यपुत्री, पितृव्यजा ।

चचोड़ना, क्रि स (अनु) दन्तैः निपीड्य आ,-चूष (भ्वा प से), बलवत् स्तन्य धे (भ्वा प अ) ।

चट, क्रि वि }
चटपट, ,, }
चटसे ,, } (स झटिति) क्षणन, क्षण निमेष,-मात्रेण, सपदि, द्राक्, अजस्रा, क्षणात्, सद्य, एव, तत्क्षण-म-णात् ।

—करना, मु, अशेष निगल् (भ्वा प से) २ परद्रव्यमात्मसात् कृ ।

—पट करना, क्रि अ, त्वर् (भ्वा प से), आशु कृ ।

चटक, स स्त्री (स चटुल>) शोभा, श्री कान्ति द्युति-दीप्ति (स्त्री) ।

—मटक, स स्त्री, प्रसाधन, अलङ्करण, मडन २ हावभावा, विलसित, विलास ।

चटक(ख)ना, क्रि अ (अनु चट) स्फुट् (तु प से), दृ भज् भिद् (कर्म) वि, दल् (भ्वा प से) । स पु, चपेट टिका ।

चटकनी, स स्त्री (अनु चट) कील ल, अर्गल, तीलकम् ।

चटकाना, क्रि स (हिं चटकना) व 'चटकना' के ▯ रूप २ अगुली स्फुट् (प्रे) ।

जूतियाँ—' मु, व्यर्थं दारिद्र्येण वा भ्रम् (भ्वा दि प से) ।

चटकारा वि दे 'चटकीला' २ चपल, चचल ।

चटकीला, वि (हिं चटक) भासुर, उज्ज्वल प्रभावत् २ चित्र, नानावर्ण ३ दे 'चटपटा' ।

चटनी, स स्त्री (हिं चाटना) अवलेह, उप-अव,-दश, व्यजन, उपस्कर ।

चटपटा, वि (हिं चाट) स्वादु, सुरस, सरस, रुच्य, रुचिकर २ तीक्ष्ण तिक्त ।

चट(टा)पटी, स स्त्री (हिं चटपट) त्वरा, तूर्णि (स्त्री), शीघ्रता, क्षिप्रता । २ उत्सुकता आकुलता ।

चटर्जी, स पुं (व) चट्टोपाध्याय, वगप्रान्तीयब्राह्मणभेद ।

चटवाना, क्रि प्रे, व 'चाटना' के प्रे रूप ।

चटशाल, चटसार-ल, स स्त्री, (हिं चट्टा = चेला + स शाला) पाठशाला, विद्यालय ।

चटाई, स स्त्री (स कट ?) किलिञ्जक, किलिञ्ज, तृणपूली, पादपाशी, आस्तर ।

चटाक, चटाका-खा, स ▯ (अनु) विराव, सशब्द, भग स्फोटन, चटचटस्वन, चटाक, शब्द ध्वनि (पु) ।

चटाचट, स स्त्री (अनु) चटपटा,-शब्द नाद, चटचटायित, चटचटात्,-कार -कृति (स्त्री) कृतम् ।

चटाना, क्रि प्रे, व 'चाटना' के प्रे रूप ।

चटुल, वि (स) चपल, चपल, लोल २ सुदर ।

चटोर रा, वि (हिं चाटना) भक्षर, घस्मर, अत्याहारिन्, बहुभोजिन् २ स्वादरस प्रिय लोलुप, जिह्वालोल ।

चटोरपन, स पु (हिं चटोर) घस्मरता, औदरिकता २ स्वादलोलुपता, जिह्वालौल्यम् ।

चट्टा, स पु (स चेट>) छात्र, शिष्य ।

—बट्टा, स पु (हिं चट्ट + बट्टा) क्रीडनकसमूह ।

एक ही थैली के चट्टे बट्टे, मु समस्वभावा तुल्यशीला मानवा ।

चट्टान, स स्त्री (हिं चट्टा = चकत्ता) शिलोच्चय, स्थूलशिला, शैल, महाप्रस्तर ।

चट्टी[1], स स्त्री (अनु चटचट) पादत्र, पादुका, पादू (स्त्री) ।

चट्टी[2], स स्त्री (हिं चोट) हानि क्षति (स्त्री) २ दड, अपकारशुद्धि क्षतिनिष्कृति (स्त्री) ।

चट्टू, स पु (हिं अनु चट) पाषाणमय वृहदुदू(लू)खलम् ।

चड्डा, स पु (देश) जघामूल करूमधि (पुं) विदूषक । वि मदबुद्धि, मूर्ख ।

चढ़ना, क्रि, अ (स उच्चलन) उद्-उपा (अ प अ), उपरि उद्, गम्, अधि-आ रुह् (भ्वा प अ), अधिक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ ▯) २ उत्था (भ्वा प अ), समुत्था (भ्वा आ ▯) ३ सं,-क्रम् (दि

प से), उप प्र-श्री (कर्म) ४ आक्रम्, अभिद्रु-अवस्कद् (भ्वा प अ) ५ उत्पद् (भ्वा प से), उड्डी (भ्वा आ से) ६ उपहारी-उपायनी-कृ (कर्म), उपहृ निवप् (कर्म) ७ प्रवृत् (भ्वा आ से) । सं पु उदयन, उद्गमन, अधिरोहण, उत्थान, आक्रमण, उड्डयन इ ।

चढ़ने योग्य, वि उदेतव्य, आरोहणीय आक्रमणीय ।

चढ़ने वाला, सं पु उदेतृ-अधिरोढृ-अभिद्रावक ।

चढ़ा हुआ, वि, उदित, उद्गत, अधिरूढ, आक्रान्त ।

चढ़वाना, क्रि प्रे, व 'चढ़ना' के प्रे रूप ।

चढ़ाई, सं स्त्री (हिं चढ़ना) उद्गमन, आरोहण २ उद्गम, उदय ३ आरोह ४ आक्रम, अवस्कन्द ।

चढ़ाउतरी, सं स्त्री (हिं चढ़ना + उतरना) असकृत् आरोहणावरोहण-णं ।

चढ़ाऊपरी, सं स्त्री (हिं चढ़ना + ऊपर) प्रतिस्पर्द्धा, अहपूर्विका ।

चढ़ाचढ़ी, सं स्त्री (हिं चढ़ना) दे 'चढ़ा ऊपरी' ।

चढ़ाना, क्रि स, व 'चढ़ना' के प्रे रूप ।

चढ़ाव, सं पु (हिं चढ़ना) आरोह, उद्गम, उत्थान २ वृद्धि (स्त्री), उपचय ।

—उतार, सं पु आरोहावरोहौ, उद्गमावगमौ ।

चढ़ावा, सं पु (हिं चढ़ाना) उपहार, उपायन, उत्सर्ग, बलि (पु) २ दे 'बढ़ावा' ।

चढ़ैत, सं [illegible] (हिं चढ़ना) आ अधि रोहिन्, रोहक-रोढृ ।

चढ़ैता, सं पु, (हिं चढ़ना) हय-अश्व-आरोह आरोहिन्, सादिन्, तुरगिन् ।

चणक, सं पु (सं) दे 'चना' ।

चतुःशाल, सं पु (सं न) शरीर, देह, काय, तनु-नू (स्त्री)

चतुरंग, सं पु (सं न) अक्षक्रीडाभेदः २ चत्वारि सैनाङ्गानि (हस्त्यश्वरथपदातय) इति ३ चतुरंगिणी सेना । वि, अंगचतुष्टयवत् ।

चतुरंगिणी, सं स्त्री (सं) हस्त्यश्वरथपदातिरूपिणी सेना । वि स्त्री, अंगचतुष्टयवती ।

चतुर, वि (सं) निपुण, दक्ष, प्रवीण, कुशल, विचक्षण, विशारद २ धीमत्, बुद्धिमत्, प्रज्ञ, प्राज्ञ ३ कापटिक-छाद्मिक [की (स्त्री)] कितव, धूर्त ।

चतुरता, सं स्त्री (सं) नैपुण्य, दाक्ष्य, कौशल, प्रावीण्य २ बुद्धिमत्त्व, प्राज्ञता ३ कैतव, कापट्य इ० ।

चतुराई, सं स्त्री, दे 'चतुरता' ।

चतुरानन, सं पु (सं) चतुर्मुख, ब्रह्मन् (पु) ।

चतुर्थ, वि (सं) तुर्य, तुरीय ।

चतुर्थी, वि स्त्री (सं) तुर्या, तुरीया २ पक्षस्य तुरीया तिथि ३ दे 'चौथा' ।

चतुर्दिक्, सं पु, दे 'चतुर्दिश' ।

चतुर्दिश, सं पु (सं न) दिक्चतुष्टयम्, चतुर्दिक्समूह । क्रि वि, चतुर्दिक्षु, सर्वत, समन्तत, विश्वत, समन्तात्, सर्वत्र (सब अव्य) ।

चतुर्भुज, वि (सं) चतुर्बाहु, चतुर्हस्त २ चतुष्कोण, चतुरस्र । सं पु (सं) विष्णु २ चतुष्कोण, चतुरस्र-स्र ३ चतुर्भुज, वर्ग, सम, चतुर्भुज चतुरस्र ।

चतुर्मुख, सं [illegible] (सं) दे 'चतुरानन' । क्रि वि, सर्वत, परित, समन्तात् (सब अव्य) ।

चतुर्युग, सं पु (सं न) युग-चतुष्क चतुष्टयम् ।

चतुर्युगी, सं स्त्री (सं) दे 'चतुर्युग' ।

चतुर्वर्ग, सं पु (सं) धर्मार्थकाममोक्षा ।

चतुर्वर्ण, सं पु (सं) ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रा, चातुर्वर्ण्य, वर्ण-चतुष्टय चतुष्कम् ।

चतुष्कोण, वि (सं) चतुरस्र, चतुरश्र, चतुर्भुज २ सम, चतुर्भुज-चतुरश्र । सं पु (सम-) चतुर्भुज-चतुरश्र ।

चतुष्टय, सं पु (सं न) चतु सख्या, चतुष्क, चतुर्वस्तुसमूह, चतुष्कम् ।

चतुष्पथ, सं पु ([illegible] पु न) दे 'चौराहा' ।

चतुष्पद, सं पु तथा वि (सं) दे 'चौपाया' ।

चद्दर, सं स्त्री (फा चादर) शयनाम्बरण शय्याच्छादन, प्रच्छद, पट वस्त्र प्रच्छद उत्तरच्छद २ (धातका) फलक क, पत्रम् ।

चना, सं पु (सं चण) हरि, मथ मथक मथज, सुगध, वाजिभोज्य, वाजिभक्ष्य, कचुकिन्, कृष्णचचुक ।

नाकों चने चबवाना, मु, अत्यन्त परि-तप् (प्रे) ।

लोहे का चना, मु, दुष्कर कर्मन् (न) ।

चनाब, स स्त्री (सं चन्द्रभागा) चान्द्र चन्द्रभागा भागी ।

चपरन, स पु (हिं चिपकना) कञ्चुक उत्तरीय, भेद ।

चपकना, दे 'चिपकना' ।

चपकलश, स स्त्री (तु) खड्ग असि-कृपाण, युद्धम् २ कलह, उपद्रव ।

चपटा, वि, दे 'चिपटा' ।

चपड़चपड़, सं स्त्री (अनु) चपड़चपड़ ध्वनि (पु) ।

चपड़ा, स पु (हिं चपटा) अलक्त-लाक्षा, रा(ला)क्षा २ लाक्षा-अलक्त, पत्र ३ रक्तकीट भेद ।

चपत, स पु (स चपट)चपेट टिका, चपट करतल, आघात प्रहार २ क्षति हानि (स्त्री)।

चपनी, स स्त्री (स चपन = दबाना >) पुट टी, छद, छदन, पिधान २ शराव, वर्धमानक ३ जानुफलकम् ।

चपरास, स स्त्री (फा चप = बायाँ + रास्त = दायाँ) • प्रेष्य, पट्ट पट्टक ।

चपरासी, स पु (हिं चपरास) प्रेष्य, भृत्य, नियोज्य, किंकर, चोलकिन् ।

चपल, वि (स) दे 'चंचल' (१-४)५ क्षणिक, अचिरस्थायिन् ६ शीघ्र आशु कारिन्, अविलम्बिन् ७ शीघ्र, तूर्ण, क्षिप्र, द्रुत ८ मायाविन्, समाय ९ चतुर, अवसरज्ञ १० धृष्ट, निर्लज्ज ।

चपलता, स स्त्री (स) दे 'चंचलता' (१-२) ३ धृष्टता, धाष्टर्य, वैयात्यम् ।

चपला, स स्त्री (स) लक्ष्मी (स्त्री), कमला २ विद्युत् (स्त्री), चञ्चला ३ जिह्वा ४ पुंश्चली, कुल्टा । वि स्त्री, चंचला २ शीघ्रकारिणी ।

चपली, स स्त्री (हिं० चपटी) पदत्रा, पदत्री ।

चपाती, स स्त्री (स चर्पटी) पोली, पोलिका, रोटी(स्त्री)का ।

चपेट, स स्त्री (स चपेट) दे 'चपत' (१ २) ३ आघात, प्रहार ।

चप्पन, स पु दे 'चपनी'(१) ।

चप्पल, स पु (हिं चपटा) पादू (स्त्री), पादुका कोशी की ।

चप्पा, स पु (स चतुष्पाद्-द >) चतुर्थांश तुर्य तुरीय, भाग, २ अङ्गुलीचतुष्टयपरिमाण ३ किष्कु (पु स्त्री), वितस्ति (पु) ४ अल्पांश ।

चप्पी, स स्त्री (स चप = दबाना >) स, वाह वाहनं वाहना, चरणसेवा ।

चप्पू, सं पु (हिं चाँपना) नौकानौ, दण्ड, क्षेपणी णि (स्त्री) ।

—मारना, क्रि स, क्षेपण्या चल्-वह (प्रे) ।

चबवाना, क्रि प्रे व 'चबाना' के प्रे रूप ।

चबाना, क्रि स (स चर्वण) चर्व् (भ्वा प से), सदश् (भ्वा प अ), दन्तैः निष्पिष् (रु प अ) । स पु, चर्वण, दन्तैः निष्पेषण सदशनम् ।

चबा चबा कर बात करना, मु, मद स्वरं च वद् (भ्वा प से) ।

चने को चबाना, मु, पिष्टपेषण, चर्वितचर्वणम् ।

चबूतरा, स पु (स चत्वरम् >) वेदि (स्त्री)-दिका, वितर्दि (स्त्री)र्दी र्दिका, उन्नत स्थली २ दे 'कोतवाली' ।

चबेना, स पु (हिं चबाना), भृष्ट भ्रष्ट, अन्न धान्य, चर्वणम् ।

चबेनी, स स्त्री (हिं० चबेना) भृष्टान्नोपहार २ जलपानसामग्री ।

चभक, स पु (अनु) निमज्जन ध्वनि शब्द ।

चमक, स स्त्री (हिं चमकना) कान्ति दीप्ति-द्युति रुचि (स्त्री), आभा, प्रभा २ आलोक, प्रकाश ३ कटिशोणी, पीड़ा ।

—दमक, स स्त्री, अतिशय, शोभा श्री -कान्ति दीप्ति -द्युति विभूति (स्त्री) ।

—दार, वि उज्ज्वल, भासुर, भास्वर, अति महा, तैजस शोभन-दीप्तिमत् प्रभ ।

चमकना, क्रि अ (स चमत्करण) प्रकाश् विद्युत् भास् शुभ् भ्राज् भ्राश् भ्लाश् (भ्वा आ से), प्र, भा (अ प अ) च्चास (अ प से) दीप् (दि आ से), दिल्स (भ्वा प से) २ समृद्धिवृद्ध या (अ प अ), स, ऋध (दि तथा स्वा प से) ३ अकस्मात् कम्प् स्पन्द् (भ्वा आ से) सत्रस्त-भयचकित (वि) भू ।

स पु, प्रकाशन, विद्योतन, विस्फुरण, समृद्धि (स्त्री), प्रकम्प,-न्पन, सहसा स्पन्दन-कम्पनम् ।

चमकाना, क्रि प्रे, व 'चमकना' के प्रे रूप ।

चमकारा, सं पु (हिं चमक) कान्ति दीप्ति

द्युति (स्त्री) २ चाकचक्य, तीव्र, आलोक प्रकाश।

चमकी, स स्त्री (हिं चमक) आपातरमणीय वस्तु (न)।

चमकीला, वि (हिं चमक) दे 'चमकदार'।

चमको, स स्त्री (हिं चमकना) कुल्टा, पुंश्चली २ कलह-कलि-कारी-कारिणी स्त्रिया।

चमचिड़ी, स स्त्री
चमगा(गी)दड़, स पु
चमगिदड़ी, स स्त्री
(स चर्मचटी) चर्मचट(टि)का, चतु(तू)का,जतु नी चर्मपत्रा,अ जिनपत्रिका चा मिं (स्त्री)।

चमचम, स स्त्री (देश) चमचमाख्य मिष्टा प्रभेद। वि, दे 'चमकदार'।

चमचमाना, क्रि अ, दे 'चमकना' (१)।

चमचमाहट, स स्त्री, दे 'चमक' (१-२)।

चमचा, स पु (स चमस-स) कला वि (स्त्री), खज, खजाका। (लकड़ी का) दारु हस्तक, तर्दू तर्दू (स्त्री)।

—**भर**, क्रि वि, चमस मात्र परिमाणम्।

चमचिचड़, वि (हिं चाम+चिचड़ी) अत्याग्रहिन्, प्रतिनिविष्ट, अत्याग्रहशील।

चमड़ा, स पु [स चर्मन् (न)] त्वच्-रोमभूमि (स्त्री) त्वच-चा, असृग, धरा वरा, छली ली। (मृत प्राणी का) अजिन, कृत्ति -दृति (स्त्री)।

—**उधेड़ना**, क्रि स, निरत्वचीकृ, त्वच-चर्म अपनी निहँ (भ्वा प अ)।

चमड़ी, स स्त्री (हिं चमड़ा) दे 'चमड़ा'।

चमत्कार, स पु (स) विस्मय, आश्चर्य, अद्भुत चमत्कृति (स्त्री) २ अलौकिक-अति मानुष-लोकोत्तर-कर्मन् (न)।

चमत्कारक, वि (स) आश्चर्य विस्मय,-जनक उत्पादक, अतिमानुष (षी स्त्री), दिव्य विलक्षण अद्भुत, आश्चर्य, चमत्कारिन्।

चमत्कृत, वि (स) आश्चर्य विस्मय, अन्वित आपन-उपहृत विस्मित।

चमन, स पु (फा) कुसुमाकर, पुष्प,वन वाट वाटिका।

चमर, स पु (स) चमरगौ (पु) धेनुग, वालधिप्रिय, वन्य, व्यजनिन् २ च(चा)मरम्।

चमरस, स पु (स चर्मरस >) चर्मपादुका जनित चरणव्रण, *चर्मरस।

चमरी, स स्त्री (स) चमरगवी, गिरिप्रिया, दीर्घवाला २ च(चा)मर ३ मञ्जरी।

चमरौट, स पु (हिं चमार) शस्ये चर्म कारभाग।

चमस, स पु (सं पु न) दे 'चमचा'।

चमार, स पु (स चर्मकार) चर्मकृत्, चर्मर (पु) २ पादू पादुका -कृत् कार ३ पादुकासधातृ (पु)। [चमारी रिन (स्त्री) = चर्मकारी ई]

चमेली, स स्त्री [स चम्पकवेल्लि (स्त्री)] (पौधा) मनोहरा, मनोज्ञा, जाती, मालती, सुकुमारा, सुरभि हद्य,-गंधा २ (फूल) जाती मालती, पुष्पम्।

चमोटा, स पु
चमोटी, स स्त्री
(हिं चाम) क्षुरतेजनी, चर्मपट्टी।

चय, स पु (सं) समूह गण, राशि (पु) २ मृत्तिकाचय, क्षुद्रपर्वत ३ दुर्ग ४ प्राकार, वप्र प्र ५ वेदी दिका ६ चरण पाद, पीठ पीठ ७ गृह-भित्ति,मूल, पोट।

चयन, स पु (स न) समाहरण, समाहरण, राशी-एकत्र,-करणम्।

चर,[१] स पु (सं) चार, स्पश, प्रणिधि (पु) गूढपुरुष २ मंगलग्रह, कुज ३ खञ्जन ४ कपर्दक।
वि अस्थिर, जंगम, चल २ प्राणिन्, चेतन, सजीव।

—**अचर**, वि, चलाचल, जङ्गमाजङ्गम, स्थावरजङ्गम २ जडचेतन, सजीवनिर्जीव, सप्राणनिष्प्राण।

चर,[२] स पु (अनु) वस्त्रादिविदरणध्वनि (पु) चरितिशब्द।

चरक, स पु (स) मुनिविशेष २ तत्कृत वैद्यग्रन्थ ३ दे 'चर' (१)। ४ अभ्यग, यात्रिन् ५ भिक्षुक।

चरकटा, स पु (हिं चारा+काटना) यवस घास -कर्तक -छेदक। २ क्षुद्र, नीच, अल्प।

चरका, स पु (फा चरक) इषत्क्षत क्षुद्र, व्रण व्रण २ हानि (स्त्री) ३ छलम्।

चरखा, स पु (फा चर्ख) तातरचक्र, चक्र २ आवापनम्।

—कातना, कि स, ततून् कृत (रु प से)-सृज् (तु प अ), तानवचक्र चल् भ्रम् (प्रे)।

चरख़ी, स स्त्री (हिं चरखा) स्त्रुचक, चक्री, चक्रिका २ ४ दे 'गराड़ी' तथा 'बेलन'।

चरचर, स (स्त्री) चरचराशब्द, चरचराधिन २ व्यर्थ अनर्थक, आलाप, प्रजल्प पत्म्।

चरचराहट, स स्त्री, दे 'चरचर'।

चरट, दे 'खनन'।

चरण, स पु (स पु न) पाद, पद-द, पद् पाद् (पु), वि,-क्रम, क्रमण, चलन, अंघ्रि (पु)। २ चरण, पद (छन्द) ३ चतुर्थांश ४ गमन, चलन ५ आचार ६ (गुण-) भक्षण ७ अनुष्ठान ८ विहरण स्थल ९ सूर्यादि किरण १० क्रम।

—चिह्न, स पु (सं न) पाद पद,-मुद्रा चिह्न लक्षणम्।

—दासी, स स्त्री (स) भार्या, पत्नी २ उपा नह (स्त्री), पादुका।

—सेवा, स स्त्री (सं) परि-उप, चर्या, शुश्रूषा।

—छूना, मु, पादयो पत् (भ्वा प से) चरणौ स्पृश् (तु प अ)।

चरणामृत, स पु (स न) चरणोदक, पादो दकम्।

—लेना, मु, चरणामृत आचम् [भ्वा प से, आच मा)मति]।

चरना, कि स (स चरण) यवस तृण खाद् (भ्वा प से)-भक्ष (चु)-भुज् (रु आ ■), चर् (भ्वा प से)। २ पर्यट् भ्रम् (भ्वा प से)।

चरनी, स स्त्री (हि चरना) दे 'नाँद' (२) २ गो,-चर प्रचार।

चरपट, स पु दे 'चपत'।

चरपरा, वि (अनु) तिक्त, उष्ण, तीव्र, तीक्ष्ण।

चरबी, स स्त्री (फा) मास, सार-स्नेह, वपा, वसा सा, मेदस (न)।

—की झिल्ली, स स्त्री, (१२) गर्भ-अन्त, आवेष्टनम्।

—चढ़ना, मु, दे 'मोटा होना'।

—छाना, मु, मदान्ध अतिगर्वित (वि) भू।

चरम, वि (स) अन्तिम, अन्त्य, पश्चिम, अवम।

—काल, सं पु (सं) निधन मृत्यु, समय काल।

—सीमा, सं स्त्री (स) परिनिष्ठा, परमा वधि (पु)।

चरवाई, सं स्त्री (हिं चरवाना) पशुचारण मूल्य वेतन २ पशुचारण, गोचारणम्।

चरवाना, क्रि प्रे, व 'चरना' के प्रे रूप।

चरवाहा, सं पु (हिं चरना) पशु-गो चारक पालक पाल रक्षक।

चरस, स पु (स चर्मन् >) १ चर्म, द्रोणी सेचनी २ चर्ममय महा, पुर -कोष ३ गञ्जा निर्यास, मादकद्रव्यभेद।

चरसा, स पु (हिं चरस) गोमहिषादे चर्मन् (न), २ ३ दे 'चरस' (१ २)।

चरसी, स पु (हिं चरस) चरस प पायिन् २ चर्म, सेचक सेक्तृ (पु)।

चराई, स स्त्री (हिं चरना) चरण, यवस तृण, भक्षण २ ३ दे 'चरवाई' (१ २)।

चराग़, दे 'चिराग़'।

चराग़ान, स पु (फा) दीपोत्सव।

चरागाह, ■ स्त्री (फा) गोप्रच(चा)र पय सक्षेत्र, शाद्वल, तृणावृतभूमि (स्त्री)।

चराचर, वि (■) दे 'चर' के नीचे।

चराना, कि, प्रे (हिं चरना) व 'चरना' के प्रे रूप २ मुह् वञ्च् (प्रे), ■ विप्र-लुभ् (प्रे)।

चरिंदा, स पु (फा) तृणभक्षक यवसाद, पशु।

चरित, स पु (स न) दे 'चरित्र'।

चरितार्थ, वि (स) कृतार्थ, कृतकृत्य, पूर्ण मनोरथ, सफल २ उचित, योग्य, अनुरूप।

चरित्र, स पु (स न) आचार, आचरण, चरित, वृत्त, वृत्ति (स्त्री) चारित्र्य, शील, सौजन्य २ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ३ कार्य, कर्मन् (न), चेष्टित ■ जीवन,-चरित चरित्र, जीवनी।

—नायक, सं पु (स) प्रधानपुरुष, चरित नायक।

चरित्रवान्, वि (सं ,वत्) सदाचार', रिन् , आचारवत् ।

चरी, स स्त्री (हिं चरना) घास , यवस , स , जवस -स, तृणादिकम् ।

चर्च, स पु (अ) दे 'गिरजा' २ सम्प्रदाय ।

चर्चरी, स स्त्री (स) गीतिभेद २ होलि कोत्सव ३ करतलध्वनि (पु) ४ आमोद प्रमोदा ५ वाद्यभेद ।

चर्चा, स स्त्री (स) चर्च, अभिधान, आख्यान, कथन, कीर्तन, निर्देश, वर्णन २ वार्ता, आलाप , स, भाषण कथा, कथाप्रसंग ३ किंवदन्ती, जनप्रवाद , ४ लेपन, अभ्यंजनम् ।

—करना, क्रि स, समाघ (भ्वा अ से), सवद् (भ्वा प से)

चर्चित, वि (स) अभ्यक्त, लिप्त २ विचारित ।

चर्म, स पु (स चर्मन्) दे 'चमड़ा' ।

—कार, स पु (स) दे 'चमार' ।

—दंड पु पु (स) दे 'चाबुक' ।

चर्मी, वि (स चर्मिन्) चर्म, मय निर्मित म•भिन् , चर्मण्य । स पु चर्मधारि फलकभृद् योध ।

चर्य, वि (स) गमनीय, गन्तव्य (स्थानादि) २ आचरणीय, करणीय ।

चर्य्या, स स्त्री (स) कृत्यानुष्ठान, कर्म•पालन २ चलन, गमन, ३ आचार, आचरण ४ सेवा ५ आजीविका, वृत्ति (स्त्री) ।

चर्राना, क्रि अ (अनु) चरचरायते (ना धा) चरचरशब्द कृ २ तप (कर्म), व्यथ् (भ्वा आ से) ३ अत्यन्त अभिलष् (भ्वा उ से)।

चर्वण, स पु (स न) सदशन, दन्तै निष्पे षण २ च यपदार्थ ३ दे 'चबेना' ।

चर्वणा, स स्त्री (स) चर्वण, दन्तै निष्पेषण, सदशनम् २ रसास्वादन, रसानुभूति (स्त्री) ३ चर्वण दन्त -रद ।

चर्वित, वि (स) दन्तनिष्पिष्ट, सदष्ट ।

चर्व्य, वि (स) चर्वणीय, दन्तै निष्पेषणीय । स पु (स न) भृष्ट,-अन्न भा यम् ।

चर्स, स पु, दे 'चरस' ।

चल, वि (स) चर, चरिष्णु, जगम, गमन शील २ चचल, अस्थिर, अधीर । स पु, शिव २ विष्णु ३ पारद', रस ।

—चलाव, स पु , यात्रा, प्रस्थान, २ महा प्रस्थान, मृत्यु (पु) ।

—चित्त, वि (स) लोल-अस्थिर चचल, मति-बुद्धि चित्त ।

—विचल, वि (स) अव्यवस्थित, अक्रम ।

चलता, वि (हिं चलना) चलत्-गच्छत् चरत् (शत्रत) गतिमत् २ प्रचलित, सर्व समत ३ समर्थ, शक्तिमत् ४ व्यवहारकुशल, कार्यदक्ष । [चलती (स्त्री) = चलती, प्रच लित इ] ।

चलती, स स्त्री (हिं चलना) प्रभाव , अधिकार ।

चलन, स पु (स चलन) गति (स्त्री), गमन, यान, प्रस्थान २ रीति (स्त्री), क्रम , अनुसार ३ व्यवहार , उपयोग , प्रचार ।

—सार, वि चिर ,स्थायिन् , दीर्घ चिर,-काल स्थायिन् २ प्रचलि(रि)त ।

चलना, क्रि अ (सं चलन) चल-चर् व्रज (भ्वा प से), या इ (अ प अ), गम् , २ सक्रिय-सचेष्ट-सगतिक (वि) भू , स्फुर् (तु प से), कप् (भ्वा आ से) ३ स,सृप् (भ्वा प अ) ४ (पद्भ्यां पादाभ्यां) चल-चर्-गम् या, परि ,क्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ) ५ प्र,वह् (भ्वा उ अ), प्र,सृ (भ्वा प अ) ६ वा (अ प अ) वह ७ प्रवृत् (भ्वा आ से), स्था (भ्वा प अ) ८ उपयुज्-व्यवह (कर्म) ९ कटकटायते (नाम धा), दिव् (भ्वा आ से) १० सफलीभू , कृतार्थ कृतकृत्य(वि)भू । सं पु, चलन, चरण, गमन, प्रस्थान, स्फुरण वहन इ ।

चलने वाला, स पु , चलितृ-गन्तृ यातृ (पु) इ ।

चल पड़ना, मु , प्र,स्था (भ्वा आ अ), चल्-या ।

चल बसना, मु , मृ (तु आ अ), पचत्व या ।

चले चलना, मु चल्-गम् ।

चलनी, स स्त्री , दे 'छलनी' ।

चलवाना, क्रि प्रे , व 'चलना' के प्रे रूप ।

चला, स स्त्री (स) पृथिवी २ दामिनी ३ लक्ष्मी (स्त्री) ।

चलाऊ, वि (हिं चलना) दीर्घ चिर, कालस्थायिन् , दृढ, स्थिर ।

चलाचल, वि (सं) चपल, चंचल, लोल २ जडचेतन ३ स्थावरजंगम।

चलाचली, सं स्त्री (हिं, चलना) प्रस्थान प्रयाण-त्वरा-संभ्रम २ प्रस्थान, प्रयाण, अप, यान गम ३ प्रस्थान, काल समय ४ प्रयाणोपकल्पनम्।

च(चा)लान, सं स्त्री पु (हिं चलना) प्रचलन, प्रस्थान, प्रयाण, अप, यान गम गमन २ प्रचालन, प्रस्थापन, प्रेषण णा, प्रयापण न ३ अभियोक्तृत्व, अभियुक्त अधिकरणे प्रेषणम्।

चलाना, क्रि स, 'चलना' के प्रे रूप। २ (गोली आदि) लोह, गोलान् गुलिका प्रक्षिप् विसृज् (तु प अ) ३ प्रारम्भ् (भ्वा आ अ), प्रवृत् (प्रे)।

चलायमान, वि (हिं चलना) चलत् गच्छत्-सर्पत् (शतृ) २ चचल, अस्थिर।

चलाव, सं पु (हिं चलना) प्रस्थान, प्रयाण २ यात्रा ३ रीति (स्त्री), क्रम।

चलित, वि (सं) दे 'चलायमान' (१-२) ३ प्रचलित।

चवन्नी, सं स्त्री [हिं चौ (= चार)+आना] चतुराणी, रूप्य।

चवर्ग, सं पु (सं) चकारादय पचवर्णा।

चवाई, स पु (हिं औ+बाई = हवा) निंदक, अप परि, वादक २ पिशुन, कर्णे जप।

चवालीस, वि (स चतुश्चत्वारिंशत्)। स पु उक्ता सख्या, तदङ्को (४४) च।

चवालिसवा, वि, (हिं चवालीस) चतुश्चत्वारिंशत्तम (मी मम्)।

चश्म, स्त्री (फा) नेत्र, नयनम्।

—दीद, वि (फा) दृष्ट, अवलोकित, प्रत्यक्ष।

—दीद गवाह, स पु (फा) प्रत्यक्ष-साक्षिन् दर्शिन् प्रत्यक्षिन् देदय।

चश्मा, स पुं (फा) दे 'ऐनक' २ उत्स, निर्झर, प्रस्रवणं, स्रोतस् (न) ३ कुल्या, नदी सरित् (स्त्री)।

चषक, सं (सं पु न) मद्यपानपात्रम्, अनुतर्षं, सरक, गल्वर्क २ मधु (न)।

चषण, स पुं (सं न) भक्षण, खादनम् २ हननं, मारणम्।

चसक, स स्त्री (देश) दे 'कसक'।

चसकना, क्रि अ दे 'कसकना'।

चसका, स पु (सं चषक >) आ, स्वाद, रस, प्रवृत्ति (स्त्री) अभि, रुचि (स्त्री)। बुरा—, व्यसनम्।

चस्पाँ, वि (फा) लग्न, संश्लिष्ट।

चहक, स्त्री (हिं चहकना) कूजन, कूजित, कलरव, चुकार, राग, विरुत विराव।

चहकना, क्रि अ (अनु) कूज् (भ्वा प से), विरु (अ प से)।

चहचहा, सं पु, दे 'चहक'।

चहचहाना, क्रि अ (अनु) दे 'चहकना'।

चहचहाहट, सं स्त्री दे 'चहक'।

चहबच्चा, स पु (फा चाह = कूप + हिं बच्चा) कूपक, जल-कुण्ड आशय।

चहल, स स्त्री (अनु चहचह) आनन्दोत्सव।

चहलकदमी, सं स्त्री (हिं चहल+फा कदम) विचरणं, विहार, परि, क्रमणं भ्रमण अटनम्।

चहल पहल, सं स्त्री (अनु) आनन्द, उत्सव, उल्लास, प्र मोद हर्ष।

चहारदीवारी, सं स्त्री दे 'चारदीवारी'।

चाँई, वि (देश चाँई = वञ्चक जाति) अपहरणशील, चौर्यवृत्ति। धूर्त, छलिन्।

चाँचल्य, स पु (सं न) दे 'चचलता'।

चाँटा, सं पु (अनु चट) दे 'चपत'।

चाँडाल, पु (स) दे 'चडाल'।

चाँडाली, स स्त्री (स) दे 'चडाली'।

चाँद, स पु (चन्द्र) दे 'चन्द्र' २ चन्द्रकलाकार आभूषणभेद, •चन्द्र ३ मास ४ लक्ष्य शर-व्य। स्त्री, शिरोऽग्र, कपालशिखरं २ शिरोऽस्थि (न), कपाल लम्।

—मारी, स पु, लक्ष्यवेध, शरव्यनिर्भेद।

चाँदना, स पु (हिं चाँद) आलोक, प्रकाश २ दे 'चन्द्रिका'।

—पारा, स पुं पूर्वोक्त शुद्ध सित, पक्ष।

चाँदनी, (हिं चाँदना) दे 'चन्द्रिका' २ श्वेत सित, प्रच्छद। ३ शुद्धो लोच ४ तगराख्य पुष्पम्।

—चौक, स पुं (हिं+स चतुष्क) मुख्य मार्ग, प्रधानहट्ट, २ दिल्लीनगरस्य प्रधान हट्ट, • चन्द्रिकाचतुष्कम्।

—रात, स स्त्री , ज्योतिष्मती, ज्योत्स्नी ।
चाँदी, स स्त्री , (हिं चाँद) रजत, रूप्य, दुवर्ण, श्वेत, कलधौतम् । २ धन, वित्त ३ आधिकलाभ ४ दे 'चाँद', (स स्त्री) ।
—का, वि, रजत-रौप्य [-ती,-प्यी (स्त्री)] रजत-रूप्य, निर्मित-रचित, राजत ।
—सा, वि , रूप्योपम, रजतवर्ण, अतिधवल ।
—का जूता, मु , दे 'घूस' ।
चाँद्र, वि (स) चांद्रमस [-सी(स्त्री)] ऐंदव [-वी (स्त्री)] चद्र, सोम ।
—मास, स पु (स) चद्र सोम-विधु, मास ।
—वत्सर, स पु (स) सौम्य चान्द्रिक चान्द्र मस, वर्ष अब्द -हायन ।
चान्द्रमस, वि (स) चान्द्र, चान्द्रिक सौम्य, सौमिक (स्त्री चान्द्री, चान्द्रिकी, सौम्या, सौमिकी) ।
चान्द्रायण, स पु (स न) व्रतभेद , इन्दुव्रतम् ।
चाँप, स स्त्री (हिं चपना) नि, पीडन, निर्बंध, अतिभार २ प्रेरण-णा, प्रचोदना ३ लोहनाडी-आग्नेयास्त्र-,ताल्क ४ चरण पाद, शब्द ।
चाँपना, क्रि स दे 'दबाना' ।
चाँयँ चायँ चाँवँ चावँ, स स्त्री (अनु) प्रलाप , प्रलपित, प्रजल्प पित, वाल, आलाप भाषणम् ।
चाक, स पु (फा) विदर , रंध्र, भेद ।
—करना, क्रि स , विदॄ (प्रे), छिद् (र प अ) ।
चाक², स पु (अ) खटी, खटिका, कठिनी ।
चाक³, वि (तु) सबल, स्वस्थ, दृढतनु ।
—चौबद, वि , हृष्टपुष्ट, पुष्टांग [गी (स्त्री)] २ भतद्र, क्षिप्रकारिन् , लघु ।
चाक⁴ स पु (स चक्र) कुलाल-कुम्भकार चक्रि -चक्र २ रथांग, मडल ३ दे 'गडारी ४ पेषणचक्र, पेषणीपाषाण ५ शाण -णी ।
चाकचक, वि (तु चाक) सुदृढ, सुरक्षित, दुर्गम ।
चाकचक्य, स स्त्री (स न) आभा, प्रभा, द्युति कान्ति (स्त्री) २ सौन्दर्य, शोभा ।
चाकना, क्रि स (हिं चाक) रेखाभि परिवृ परिवेष्ट (प्रे)
चाकर, स पु (फा) किंकर, दास, सेवक ।
चाकरानी, स स्त्री (फा चाकर) दासी, सेविका ।
चाकरी, स स्त्री (फा चाकर) सेवा, परिचर्या ।
चाकसू, स पु (स चक्षुष्या) कुलाली, (अरण्य) कुलत्थिका, लोचनहिता, दृक प्रसादा । २ चक्षुष्याबीजम् ।
चाकी, स स्त्री (हिं चाक) दे 'चक्की' ।
चाकू, स पु (फा) छुरिका, कृपाणिका असि, पुत्रिका, धेनुका, शस्त्री, शस्त्रिका ।
चाक्षुष, वि (स) नेत्र,-सबधिन् विषयक २ चक्षुर-नेत्र,-ग्राह्य ।
चाचर, स पु } (स चर्चरी) चर्चरिका,
चाचरि, स स्त्री } राग-गीति,-भेद २ होलि कोत्सव ३ आमोदप्रमोद ४ उपद्रव , क्षोभ , कलह ।
चाचा, स पु (स तात >) पितृव्य, पितृ सोदर २ (छोटा) खुल्लतात ।
चाची, स स्त्री (हिं चाचा) पितृव्या, पितृव्यपत्नी ।
चाट, स स्त्री (हिं चाटना) स्वादलोलुपता, रसलालसा २ दे 'चसका' ३ लालसा, उत्कटाभिलाष ४ दे 'आदत' ५ अव-उप, दश , व्यसनम् ।
—लेना, दे 'चाटना' ।
चाटना, क्रि स (अनु चपट) अव-आ परि-स , लिह् (अ उ अ) २ ग्रस-भक्ष् (भ्वा आ से) ।
चाटी, स स्त्री (देश) मथनी, गर्गरी, दधि मथनपात्रम् ।
चाटु, स पु (सं पु न,) चाटूक्ति (स्त्री), चाटुवाद, प्रिय मधुर,-वचन, मिथ्या, प्रशंसा सस्ताव-स्तव -स्तुति (स्त्री), उपलालनम् ।
—कार, स पु (स) मिथ्याप्रशंसक , चाटु वादिन् ।
—कारी, स स्त्री (स चाटकार >) चाटु वादित्व, सान्त्ववादित्व, दे 'चाटु' ।
चाणक्य, स पु (स) कौटिल्य , विष्णुगुप्त , द्रौमिण , अंगुल , चद्रगुप्तमौर्यस्यामात्य , चणकात्मज ।
चातक, स पु (स) मेघजीवन , तोकक , स्तोकक , सा(शा)रंग ।

चातकानन्दन, स पु (स) मेघ, जलद, वारिद २ प्रावृष (स्त्री) मेघागम, वर्षाकाल ।

चातुरी, स स्त्री (स) दे 'चतुरता'।

चातुर्य्य, स पु (स न) दे 'चतुरता'।

चादर, स स्त्री (फा) दे 'चद्दर'।

चाप[1] स पु (स) धनुष् (न), इष्वास २ अर्द्धवृत्तम् (गणित)।

चाप[2], स स्त्री दे 'चाप' (१, ४)।

चापड़, स स्त्री (स चर्पट >) कठिन कोकस भूमि (स्त्री)। वि, समतल सपाट।

चापना, क्रि स, दे 'दबाना'।

चापलूस, स पु (फा) दे 'चाटुकार'।

चापलूसी, स स्त्री (फा) दे 'चाटुकारी'।

चाबना, क्रि स, दे 'चबाना'।

चाबी भी, स स्त्री (हिं चाप – दबाव) मुद्धारणी, कूचिका, तालिका, ताली, कुंचिका, अकुट, उद्घाटक ।

—**देना**, क्रि स, कुंचिकां आ परि वृत् (प्रे) कुच कुच (भ्वा प से)।

चाबुक, स पु (फा) अश्वताडनी कशा पा, प्रतिष्कश ष, प्रतोद ।

—**मारना**, क्रि स कशया तड चुद् दड(चु)।

—**सवार**, स पु, वाजिविनेतृ (पु), अश्व शिक्षक ।

चाम, स पु [स चर्मन् (न)] दे 'चमड़ा'।

चामर, स पु (स पु न) चमर, चामरा री।

चामीकर, स पु (स न)सुवर्ण २ धुस्तूर ।

चाय, स स्त्री (चीनी चा), चा, चविका ।

—**पानी**, पु स्त्री जलपान, प्रातराश, अल्प स्तोक आहार कल्यवर्त ।

चार, वि (स चतुर) [सदा बहु चत्वार (पु) चतस्र (स्त्री) चत्वारि (न)]। २ अनेक बहु ३ कतिपय। स पु, उक्ता सख्या तद्बोधको अङ्क (४) च।

—**का समूह**, चतुष्टय यी, चतुष्कम् ।

—**कोना**, वि चतुष्कोण, चतुरस्र श्र।

—**खाना**, वि चित्र, वर्णित। स पु, वर्णित चित्रित वस्त्रम् ।

—**गुना**, वि, चतुर्गुण णित ।

—**दीवारी**, स स्त्री, वप्र प्र, वरण, प्राकार ।

—**प्रकार से**, क्रि वि, चतुर्धा, प्रकारचतुष्टयेन।

—**बार**, क्रि वि, चतु (अव्य), चतुर्वारम् ।

—**आँख**, मु समागम, सम्मिलनम् ।

—**आदमी**, मु, जन ना, लोक का ।

—**दिन की चाँदनी**, मु क्षणिकसुखम्, नश्वरानन्द ।

चारज, स पु (अ चार्ज) कार्यभार, उत्तरदायित्व, २ रक्षण, अवेक्षा।

चारजामा, स पु (फा) दे 'जीन'।

चारण, स पु (स) ब(व)न्दिन्, मागध, वैतालिक, स्तुतिपाठक, सस्तावक ।

चारपाई, स स्त्री (स चतुष्पाद् >) खट्वा, मचिका, पर्यंकिका ।

—**पर पड़ना**, मु, व्याधित-रोगग्रस्त(वि) भू ।

चारवाक, स पु (स चार्वाक) अनीश्वरवादी आचार्यविशेष ।

चारा, सं पु (हिं चरना) दे 'चरी'।

चारा, स पु (फा) उपचार उपाय, प्रति(ती)कार ।

—**जोई**, स स्त्री (फा) अभियोग, व्यवहार ।

—**जोई करना**, क्रि स, राजकुले निविद् (प्रे), अभियुज् (रु आ अ चु)।

चारित्र, स पु (स न) चारित्र्यम्, चरित्रम्, वृत्त, चरितम्, दे 'चरित्र'।

चारु, वि (स) सुंदर, मनो-हर रम, रुचिकर।

चारों तरफ, क्रि वि, चतुर्दिश, समन्तात्, समतत, परित, सर्वत्र।

चाल, स स्त्री (स चाल >) गमन, चलन, स्पन्दन, स्फुरण, सरण २ प्र,गति (स्त्री), चार, गमनप्रकार ३ आचार, व्यवहार ४ उपाय, युक्ति (स्त्री) ५ छल, कपट ६ विधि (पु), प्रकार। ७ रीति (स्त्री), सप्रदाय ८ पर्याय, वार, परिवृत्ति (स्त्री)।

—**चलन**, स पु, चरित्र, आचरण, वृत्त, आचार ।

—**ढाल**, स स्त्री, आचार, चरितम् ।

—**बाज़**, वि (हिं + फा) मायाविन्, कापटिक।

—**बाज़ी**, स स्त्री, कपट, माया, वचनं ना।

—**चलना**, मु, वञ्च् (चु), व्यामुह् (प्रे)।

—**में आना**, मु, वञ्च्-व्यामुह् विप्रलभ् (कर्म)।

चालना, क्रि स, दे 'छानना'।

चाल्नी, स स्त्री (स) दे 'छलनी'।
चाला, स पु (स चाल >) प्रस्थान, गमन २ यात्रामुहूर्ते नवोढाया प्रथमवार पतिगृहे तत पितृगृहे वा गमनम्।
चालाक, वि (फा) धूर्त, मायिक २ निपुण, दक्ष।
चालाकी, स स्त्री (फा) धूर्तता, कापट्य २ नैपुण्य, चातुर्यम्।
चालान, स पु दे 'चलान'।
चालीस, वि (स चत्वारिंशत्)। स पु, उक्ता सख्या, तद्बोधकावली (४०) च।
चालीसवाँ, वि (हिं चालीस) चत्वारिंश [शी (स्त्री)] चत्वारिंशत्तम [मी (स्त्री)]।
चालीसा, सं पु (हिं चालीस) चत्वारिंशत्पद्यसमूह २ चत्वारिंशद् दिवसा वर्षाणि वा ३ चत्वारिंशत्पद्यात्मकग्रन्थ।
चाव, स पु (हिं चाह) अभिलाष, लालसा, उत्कंठा २ अनुराग, प्रेमन् (पु न) ३ अभिरुचि (स्त्री) ४ उत्साह ५ लालनम्।
—चोचला, स पु, रूप,लालन, परिष्वग।
—निकालना, मु, अभिलाष इच्छा पूर् (चु)- निवृत् (प्रे)
चावड़ी, स स्त्री दे 'पड़ाव'।
चावल, स पु (स तंडुल) धान्यास्थि (न), धान्य शालि, सार दे 'धान', 'भात' २ गुंजाया अष्टमभागमित तोल।
—का धोवन, स पु, तण्डुलोदकम्, तण्डुलोदम्।
चाशनी, स स्त्री (फा) गुड-सिता शर्करा, रस २ दे 'चसका'।
चाह, स स्त्री (स इच्छा) दे 'चाव' (१ २)। ३ आदर, प्रतिष्ठा ४ आवश्यकता, प्रयोजनम्।
चाहता, वि (हिं चाह) दयित, प्रिय, कांत।
चाहना, क्रि स (हिं चाह) अभिलष् (भ्वा दि प से), इष् (तु प से), इच्-कम् (भ्वा आ से, कामयते), (सन्नत या '-काम' से भी अनुवाद करते हैं, उ वह जाना चाहता है – स गंतुकाम अथवा जिगमिषति) २ स्निह् (दि प वे), अनुरञ्ज् (कर्म), अनुरागवद्-मोहित (वि) भू ३ प्र-यत् (भ्वा आ से,) ४ दे 'ढूँढना'।
स स्त्री, अभिलाष, इच्छा, अनुराग, स्नेह, आवश्यकता इ।
चाहनेयोग्य, वि, अभिलषितव्य, स्पृहणीय, दयित, प्रिय इ।
चाहनेवाला, वि, इच्छु-च्छुक, अभिलाषिन्, अनुरागिन्, स्नेहिन।
चाहिए, अव्य (हिं-चाहना) उचित, उपयुक्त, न्याय्य। (-तव्य,-अनीय, ण्यत् आदि से भी इसका अनुवाद करते हैं, उ करना चाहिए-कर्तव्य करणीय, कार्य इ)।
चाही, वि (फा चाह) कूप, सिक्त सबंधिन्।
चाहे, अव्य (हिं चाहना) यथाकाम, यथाभिलाष, स्वैर, स्वच्छंद २ वा, अथवा, यद्वा।
चिउँटा, स पु (हिं चिमटना) पिपीलक, पीलक।
चिउँटी, स स्त्री (हिं चिउँटा) (पु) पिपील, पीलुक, पिपीलिक। [पिपीली, पिपीलिका (स्त्री)]।
—की चाल, मु, मद-मथर,-गति (स्त्री)।
—के पर निकलना, मु, आसन्नमृत्यु, निधनोन्मुख।
चिंघाड़, सं स्त्री (स चीत्कार) बृंहित २ महानाद, तुमुलध्वनि (पु)।
चिंघाड़ना, क्रि अ (हिं चिंघाड़) बृंह् (भ्वा प से,)२ उच्चै नद् (भ्वा प से)।
चिंचा, स स्त्री (स) अम्लिका, तिंतिडि(डी)-का २ अम्लिका बीज,-फलम् ३ रक्ता, गुंजा।
चिंतक, वि (स) विचारक, विवेचक, ध्यातृ। स पु (स) तत्त्वज्ञ, दार्शनिक।
चिंतन, स पु (स न) चिंतना, ध्यान, स्मरण २ विचारण, विवेचनम्।
चिंतनीय, वि (हिं) चिंताप्रद, उद्वेगकर (-री स्त्री), २ ध्येय, भावनीय ३ विचार्य, विवेचनीय।
चिंता, स स्त्री (स) उद्वेग, औत्सुक्य, व्यग्रता, रणरणक, आकुलता, उत्कलिका, मनस्ताप २ आ,ध्यान चिंतनम्।
—आतुर, वि (स) सचिंत, चिंतित, चिंतामग्न, उद्विग्न, व्याकुल।
—जनक, वि, चिन्ता-आकुलता, प्रद-उत्पादक।
—मणि, स पुं (स) स्वर्गमणि।

चिंतित, वि (स) दे 'चिंतातुर' २ विचारित, ध्यात ।
चिंत्य, वि (स) दे 'चिन्तनीय' (२ ३)
चिंदी, स स्त्री (देश) खंड, खण्ड ।
चिंपाजी, सं पु (अ) अफ्रीकामहाद्वीपस्थ वनमानुषभेद ।
चिक, स स्त्री (तु चिक) तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, व्यवधा, व्यवधान, आवरण, मासिक, विशसितृ, शौ (सौ) निक ।
चिक, स पु (अ चेक) देयादेश ।
चिक, सं स्त्री (अनु) आकस्मिकी कटिव्यथा ।
चिकन, स पु (फा) मार्मिकवस्त्रभेद, •चिकणम् ।
चिकना, वि (स चिक्कण) तैलमय (-यी स्त्री), तैलाक्त, तैल, युक्तवत् २ स्निग्ध, मसृण, श्लक्ष्ण ३ परिष्कृत, संस्कृत ४ पिच्छिल, मेदुर ५ सम, सपाट । [चिकनी (स्त्री) चिक्कणा इ] ।
—घड़ा, स पु, निर्लज्ज अपत्रप, मनुष्य ।
—मिट्टी, स स्त्री, मृत्तिका, मृद् (स्त्री) ।
—चुपड़ी बातें करना, मु, चाटुवादं वच् (जु)-प्रवृ (प्रे) ।
चिकनाई, स स्त्री (हिं चिकना) चिक्कणता, स्निग्धता, श्लक्ष्णता २ समता, सपाटता ३ घृताद्य स्निग्धपदार्था ।
चिकनापन, सं पु } (हिं चिकना) दे
चिकनाहट स स्त्री } चिकनाई (१ २) ।
चिकित्सक, सं पु (स) वैद्य, पक, रोग, हृद् हारिन् (पु), अगदकार, भिषज् (पु) ।
चिकित्सा, स स्त्री (स) औषध, उपचार, उपक्रम, रोगप्रतीकार २ वैद्यक ३ औषध, भेषजम् ।
चिकित्सालय, स पुं (स) आतुरालय ।
चिकुटी, स स्त्री, दे 'चुटकी' ।
चिकुर, स पु (स) केश, मूर्धज, शिरसिज २ पर्वत ३ काष्ठमार्जार, दे 'गिलहरी' ।
चिक्कण, वि (स) दे 'चिकना' ।
चिखुरी, स स्त्री (स चिकुर >), 'गिलहरी' ।
चिचड़ी, स स्त्री (देश) पशुयूका, कीटभेद ।
चिचिंडा, स स्त्री (स चिचिंड) अहिफला, दीर्घफला, सुदीर्घ, गृहकूलक ।
चिट, स स्त्री (स चित्र >) पत्रखंड इ २ वस्त्रशकल लम् ।
—नवीस, स पु (हिं + फा) लेखक, कायस्थ, लिपिकर ।
चिटकना, कि अ (अनु) स्फुट् (तु प स)द् भज भिद् (कर्म) २ सचिटचिटशब्द ज्वल् (भ्वा प से) ३ दे 'खीझना' ।
चिटकाना, कि स, व 'चिटकना' के प्रे रूप ।
चिट्टा, वि (स सित) श्वेत, शुक्ल, धवल २ दे 'रुपया' ।
चिट्ठा, सं पु (हिं चिट) आयव्यय देयादेय, पत्रि (स्त्री)-पत्री पत्रिका, दे 'बही खाता' २ व्ययसूची ३ सूची ४ लाभालाभ हानिलाभ,-पत्रम् ।
कच्चा—, स पु, गुप्त गुप्त, वृत्तात ।
चिट्ठी, स स्त्री (हिं चिट्ठा), (सदेश-) पत्र, लेख २ २ लिखित पत्रखंड ३ प्रमाणपत्र ४ ५ आज्ञा निमंत्रण, पत्रम् ।
—पत्री, स स्त्री, पत्रव्यवहार, पत्र विनिमय सवाद ।
—रसाँ, स पु (हिं + फा) पत्रवाहक, लेखहार क ।
चिड़, स स्त्री दे 'चिढ़' ।
चिड़चिड़ा, वि (हिं चिड़चिड़ाना) शीघ्र कोपिन्, सुलभकोप, कोपन, कोपन ।
चिड़चिड़ाना, कि अ (अनु) इवद् कुप् रुष् (दि प से)-क्रुध (दि प अ), सतप् क्लिश् (कर्म) ।
चिड़चिड़ाहट, स स्त्री (हिं चिड़चिड़ाना) सुलभकोपता, दुर्मनायित, कोपनता ।
चिड़वा, स पुं (स चिपिट) चिपट, पृथुक, चिपि(पु)ट क ।
चिड़ा, स पु (स चटक) कलविक्र, गृहनीड, विशपृष्ठ, कामुक ।
चिड़िया, स स्त्री (हिं चिड़ा) पक्षिन्, खग, २ क्रीडापत्रभेद ३ दे 'चिड़ी' ।
—घर, स पु, जन्तुशाला, प्राणिशाला २ पक्षिशाला, पञ्जरम् ।
चिड़ी, स स्त्री (हिं चिड़ा) चटक(टि)का, चटका, कलविकी ५ २ दे 'चिड़िया' (१ २) ।
—का बच्चा, सं पुं, चाटकैर ।

—की बच्ची, सं स्त्री, नग्नका।

—मार, स पुं, जालिक, शाकुनिक, लुब्धक, पक्षिग्राहक।

चिढ़, स स्त्री (हिं चिढ़चिढ़ाना) घृणा, अरुचि (स्त्री), जुगुप्सा, विद्वेष।

चिढ़ना, क्रि अ, दे 'चिढ़चिढ़ाना'।

चिढ़ाना, क्रि स, दे 'चिढ़चिढ़ाना' के प्रे रूप।

चित[1], स पुं (स चित्त) मानसम्।

—चोर, स पु, मनोहर चित्ताकर्षक २ प्रिय, दयित, कांत।

—लगना या लगाना, मु, अवहित (वि) भू, अवधा (जु उ अ)।

—से उतरना, मु, विस्मृ (कर्म) दे 'भूलना'।

चित[2], वि (स चित >) उत्तान, उत्तान अवयुद्ध,-दाय शायिन्।

—करना, मु, (शत्रु मल्लयुद्ध) अवपृष्ठशायिनं कृ विजि (भ्वा आ अ)।

—होना, मु, मूर्छ (भ्वा प से)।

चित, वि (स >) उत्तान, ऊर्ध्वास्यशयित।

चितकबरा, वि (स चित्र+कर्बुर >) चित्र, कर्बुर, चित्रविचित्र, कर्बुरित, चित्रित, शबल, चित्रांग (-गी स्त्री)।

चितला, वि दे 'चितकबरा'।

चितवन, स स्त्री (हिं चेतना) दृक् नयन दृष्टि, पात, आलोकित, वीक्षित, २ कटाक्ष, अपांगदृष्टि (स्त्री), नयनापांग सारि, विलोकितम्।

चिता, स स्त्री (स) चित्या, चिती ति (स्त्री), चित्य, चैत्य, चिताचूडक, शवासठी।

—भूमि, सं स्त्री (स) श्मशान, पितृ वन काननम्।

—साधन, स पु (स न) श्मशाने मंत्रानुष्ठानम्।

चिताना, क्रि स (हिं चेतना) (पूर्व प्रार) प्रबुध् (प्रे)-अनुज्ञाम् (अ प स), उप दिश् (तु प अ) २ अनु,स्मृ (प्रे), उद् अनु-बुध् (प्रे)।

चितावनी, स स्त्री, दे 'चेतावनी'।

चितेरा, स पुं [स चित्रक(का)र] चित्रक, रङ्गजीवक, रंजक, सरसार, चित्र,-लक्षक कृत् (पुं), आलेखक, तौलिक।

चितेरी स्त्रि, स स्त्री (हिं चितेरा) चित्र, करी-ऽसिका, तौलिकी २ चित्रकारपत्नी।

चित्त, स पुं (स न) अंतःकरण, चेतस मनस् हृद् (न), हृदय, मानसं २ धी बुद्धि मति (स्त्री), प्रज्ञा, शेमुषी ३ अवधानं, मनोयोग, अवेक्षा ४ स्मृति (स्त्री), धारणा।

—उद्रेक, स पुं (स) गर्व, दर्प, मद, अहंकार, अहमान।

—विक्षेप, स पुं (स) मनश्चांचल्य, मन क्षोभ।

—विभ्रम, स पुं (स) चित्तव्यामोह, मनोभ्रांति (स्त्री) २ उन्माद।

—वृत्ति, स स्त्री (स) मनो,गति वृत्ति (स्त्री), चित्तावस्था।

—करना, मु, अभिलष् (भ्वा प से), इष (तु प से)।

चित्ति, स स्त्री (स) बुद्धि (स्त्री) प्रज्ञा २ चिंतनम् ३ ख्याति (स्त्री) ४ कर्मन् (न) ५ भक्ति (स्त्री) ६ प्रयोजनम्।

चित्ती, स स्त्री (स चित्रं<) बिंदु (पुं), अंक, चिह्न २ चित्रा, चित्रसर्प ३ द्यूत, चिह्न-अंक।

—दार, वि (हिं +फा) बिंदुचिह्नित, चित्र।

चित्र, स पुं (सं न) प्रति,कृति (स्त्री), छंदस् च्छाया,-रूप, आलेख्य, प्रतिमा। वि, कर्बुर, शबल, विविधवर्ण।

—कला, स स्त्री दे 'चित्रकारी'।

—कार, स पुं (स) दे 'चितेरा'।

—कारी, स स्त्री (स चित्रकार<) चित्र, कला क्रिया कर्मन् (न)-विद्या २ आचित्र, रंजनम्।

—मय, वि (सं) सचित्र, चित्रबहुल, चित्रांकित।

—वत, वि (स) चित्र आलेख्य, तुल्य सम सदृश २ निश्चल, स्तब्ध, स्थिर।

—विचित्र, वि (स) शबल, कर्बुर, बहुरंग।

—शाला, स स्त्री (स) आलेख्य, शाला भवनम्।

चित्रक, स पुं (स) चित्र, काय, व्याघ्र, मृगांतक, क्षुद्रशार्दूल, उपव्याघ्र, २ दे 'चितेरा'।

चित्रकूट, सं पुं (सं) पर्वतविशेष।

चित्रगुप्त, स पु (स) यमलेखक ।
चित्रा, स स्त्री (स) चतुर्दशनक्षत्र । वि, कर्बुर, शबल ।
चिथड़ा, स पु (हिं चीथना) चीर, चीवर कर्पट, नक्तक ।
चिनक, स स्त्री (हिं चिनगी) सदाहा पीडा २ मूत्रनाड्या पीडा ।
चिनगारी, स स्त्री (स चूर्ण+अगार >) क्षुद्रांगार २ अग्नि ज्वलन,-कण-कणिका, वि ,स्फुलिंग न या ।
चिनगी, स स्त्री (हिं चिनगारी) दे 'चिनगारी' चपलबाल ।
चिनाई, स स्त्री (हिं चिनना) इष्टका चयन । २ ३ भित्ति गृह, निर्माणम् ।
चिन्मय, वि (स) ज्ञानमय । स पु परमेश्वर ।
चिन्ह, स पु दे 'चिह्न'।
चिन्हित, वि, दे 'चिह्नित'।
चिपकना, क्रि अ (अनु चिपचिप) सश्लिष् (दि प अ), सञ्ज् (भ्वा प से) अनु आ म-सज्ज (कर्म)।
चिपकाना, क्रि स, व 'चिपकना' के प्रे रूप।
चिपचिप, स स्त्री (अनु) चिपचिपशब्द ।
चिपचिपा, वि (अनु) श्यान, सांद्र, मल्लशील ।
चिपचिपाना, क्रि अ (अनु चिपचिप) मल्लशील सांद्र(वि)भू २ दे चिपकना' ।
चिपचिपाहट, स स्त्री (हिं चिपचिपाना) मल्लशीलता, श्यानता सांद्रता।
चिपटना, क्रि अ (स चिपिट) दे, 'चिपकना' २ आलिङ्ग (भ्वा प से) परिस्वज (भ्वा आ अ)।
चिपटा, वि (स चिपिट<) अनुच्च, समरेख, सम समस्थ, सपाट।
चिपटाना क्रि स, व 'चिपटना' के प्र रूप।
चिबुक, स पु (स चिबु(बु)क) दे 'ठोढी'।
चिमटना, क्रि अ (हिं चिपटना) दे 'चिपटना (१ २)।
चिमटा, स पुं (हिं चिमटना) सदंशक, वंक मुख वदनम्।
चिमटाना, क्रि स, व 'चिपटना' के प्र रूप।
चिमटी, स स्त्री (हिं चिमटा) सदंशिका, लघु,कङ्कमुख क्षम्।
चिमड़ा, वि, दे 'लचीला'।
चिमनी, स स्त्री (अं) धूम, नालो-रंध्र २ अग्निकुण्ड,चुल्ली दिल (स्त्री)।
चिरजीव, वि (स) दीर्घ-चिर, जीविन् आयुष २ दीर्घायु भव।
चिरंतन, वि (स) चिरंतन [-नी (स्त्री)], पुरातन [-नी (स्त्री)] प्राचीन, प्राक्तन [-नी (स्त्री)]।
चिर, वि (स) दीर्घ चिर,-कालिक-कालीन २ चिरकाल-दीर्घकाल, स्थायिन् ३ दे 'चिरंतन'।
—काल, स पु (स) दीर्घसमय, महान् काल ।
—कालिक,—कालीन, वि (स) दे 'चिरंतन'। (रोग) अविसर्गिन्, कालिक, दीर्घस्थायिन्।
—जीवी, वि (स-विन्) दे 'चिरजीव'।
—स्थायी, वि (स-यिन्) दीर्घकाल, ध्रुव, स्थिर, अक्षीणनाशिन्।
चिरकना, क्रि अ (अनु०) अल्प-स्तोक हद (भ्वा आ अ) २ असकृत् अल्पमल उत्सृज् (तु प अ)।
चिरकुट, (स चीरम्) दे चिथड़ा'।
चिरचिरा, वि, दे 'चिड़चिड़ा ।
चिरंतन, वि (स) पुराण, पुरातन, प्रत्न, प्रत्न।
चिरना, क्रि अ (स चीर्ण>) स्फुट (तु प से), विद् विभिद् भज् (कर्म) ।
चिरवाई, स स्त्री (हिं चिरवाना) विदलन, विदारणं, विपाटन, २ विदारण वेतन मूल्य।
चिरवाना, क्रि प्र, व 'चीरना के प्रे रूप।
चिराइता, स पु, दे चिरायता' ।
चिराई, स स्त्री (हिं चिराना) दे चिरवाई ।
चिराग, स पुं (फा चराग) दीप, दीपक ।
—दान, स पुं, दीप आधार वृक्ष ।
चिराना क्रि प्रे, व 'चीरना' के प्रे रूप।
चिरायँध, स स्त्री (स चर्म ग ध) चर्मकेशादि ज्वलनगंध, दुर्-पूति-गंध ।
चिरायता, स पुं (स चिरतिक्त) भूनिंब, क्षु, तिक्तक, किरातक ।

चिरायु, वि (सं चिरायुस्) दे 'चिरजीव' (१)।

चिरौंजी, सं स्त्री (सं चारबीज>) (वृक्ष) चार, चारक, खरस्कंध, बहुवल्कल, प्रियाल २ तस्य फल ३ तद्बीजगर्भ।

चिलक, स स्त्री, दे १ 'चमक' २ 'टीस'।

चिलकना, क्रि अ, दे 'चमकना' २ दे 'टीस मारना'।

चिलगोज़ा, स पु (फा) जलगोजक, निकोचक, चारुफल, सकोचम्।

चिलम, स स्त्री (फा) धूमपानचषक।

चिलमची, स स्त्री (फा) हस्तधावनी कर क्षालनी।

चिलमन, स स्त्री (फा) दे 'चिक'(१)।

चिल्लपों, स स्त्री (हिं चिल्लाना+अनु) कोलाहल, उत्क्रोश, वि राव, कलकल।

चिल्ला¹, स पु (फा) चत्वारिंशद्दिनात्मक काल २ चत्वारिंशद्दिनव्रतम्

चिल्ला², स पु (देश) ज्या, मौर्वी, प्रत्यंचा, धनुर्गुण।

—चढ़ाना, क्रि स, चाप अधिज्य कृ, धनुषि मौर्वी आरुह (प्रे आरोपयति)।

चिल्लाना, क्रि अ (अनु चिलचिल) कलकल कोलाहल कृ, वि, रु (अ प से), उत्क्रुश् (भ्वा प से) २ चीत्कार कृ, उच्चै आक्रन्द् (भ्वा आ से) ३ दे 'रोना'।

चिल्लाहट, स स्त्री (हिं चिल्लाना) दे 'चिल्लपों'।

चिल्लिका, स स्त्री (स) झिल्ली, झिल्लि, भृङ्गारी २ शाकराज, राजशाक ३ विद्युत् तडित् (स्त्री)।

चिह्न स पु (स न,) लक्षण, लाञ्छन, लिंग अभिज्ञान, अंक।

चिह्नित, वि (स) अंकित, स, चिह्न लक्षण लाञ्छन।

चींटा, स पु, दे 'चिउंटा'।

चींटी, स स्त्री, दे 'चिउंटी'।

चीकट, स स्त्री (हिं कीचड़) तैलमल, दे 'तलछट'। वि, तैलमय [यी (स्त्री)]।

चीख़, स स्त्री (स चीत्कार) उत्क्रोश, आक्रंदित, उच्चकरस, रव राव।

चीखना, क्रि स (सं चषण) दे 'चखना'।

चीख़ना, क्रि अ (सं ची करण) दे 'चिल्लाना'। (२) उच्चै वद् लप (भ्वा प से)।

चीज़, स स्त्री (फा) वस्तु (न), द्रव्य, पदार्थ।

—वस्तु, स स्त्री (फा+सं) वस्तुजात, सामग्री २ गृहोपस्कर ३ आभूषणादिकम्।

चीड़-ढ़, स पु (स चीडा) दारुगन्धा, मङ्कल्या, भूतमारी, गन्धद्रव्यभेद २ चीरपर्ण शाल, सर्ज, दीर्घशाख (वृक्ष)।

चीतल, वि, (स चित्रल) दे 'चितकबरा'। स पु, चित्रमृग २ चित्रसर्प, अजगरभेद।

चीता¹, स पु (स चित्रक) दे 'चित्रक'।

चीता², वि (हिं चेतना) विचारित, चिंतित।

चीत्कार, स पु (स) दे 'चीख' २ दे 'चिल्लपों'।

चीथड़ा, स पु, दे 'चिथड़ा'।

चीथना, क्रि स (स चीर्ण>) दे 'फाड़ना' तथा 'पीसना'।

चीन, स पु (स) देशविशेष २ अंशुकभेद ३ मृगभेद।

चीनी, वि (स चीन) चीन, चीनिन् सबधिन्, चैन। स स्त्री, सिता, शुक्ला।

चीपड़, स पु (अनु चिप) दूषी वि (स्त्री), दूषिका, पिंचोडक, पिंज(जे)र नेत्रमलम्।

चीफ़, स पु (अ) पुरोग, प्रधानपुरुष, नायक, अध्यक्ष। वि, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, विशिष्ट।

—एडिटर, स पु (अ) मुख्य प्रधान, सम्पादक।

—कमिश्नर, स पु (अ) मुख्यायुक्त।

—कोर्ट, स पु (अ) मुख्यन्यायालय।

—जज, स पु (अ) मुख्यन्यायाधीश।

—जस्टिस, स पु (अ) मुख्यन्यायाधिपति।

चीमड़, वि (हिं चमड़ा) दे 'लचीला'।

चीर¹, स पु (स न) जीर्णवस्त्रखंड, कर्पट, नक्तक, चीवर २ वसन, वस्त्र ३ वृक्षत्वच् (स्त्री) ४ मुनि, भिक्षु वस्त्रम्।

चीर², स पु (हिं चीरना) दीर्ण, छेद भेद स्फोट भिदा।

—फाड़, स स्त्री, अंगच्छेद, व्यवच्छेद।

चीरना, क्रि स (स चीर्ण) क्रकचेन छिद् (रु प अ)-द्रृ (क प से, प्र)-पट (चु) २ विदृ (क प से) रद् (चु), भिद् (रु प अ)। स पुं, विदारण, छेदन, भेदन, स्फोटनम्।

चीरने वाला, स पु, विदारक, छेदक इ।

चीरा हुआ, वि, विदारित, छेदित, भेदित, चीर्ण विदीर्ण।

—फाड़ना, स पु, भगच्छेदन, व्यवच्छेदनम्।

चीरा, स पु (हिं चीरना) शस्त्र, उपचार-उपाय कर्मन् (न)-क्रिया २ व्रण, णम्।

—देना, क्रि स, शस्त्रेण उपचर् (भ्वा प से)-साध (प्रे)।

चीरा, स पु (स चीर>) चित्रोष्णीष, चीरम्।

चीर्ण, वि (स) विदारित, छेदित, दीर्ण २ अनुष्ठित-कृत, सम्पादित।

—पर्ण, स पु (स) खजूर, दुरारोहा, यवनेष्टा २ निम्ब, अरिष्ट, तिक्तक।

चील, स स्त्री (स चिल्ह) चिल्ला, आतापिन्, शकुनि (पुं), कंठनीडक, चिरमण, सकाण्ड।

—का मूत, स पु, दुर्लभ-अप्राप्य, वस्तु (न)।

चीवर, स पु (स न) दे 'चीर' (१, २ ४)।

चीस, स स्त्री, दे 'टीस'।

चुगड़, स पु दे 'चगुल'।

चुंगी, स स्त्री (हिं चुंगल) नगर,-कर शुल्क घ २ किंचिन्मात्र-अल्पपरिमाणं वस्तु (न)।

—खाना, स पु, शुल्कशाला।

चुचुना, स पुं, दे 'चुनचुना'।

चुंधला, स पु (हिं चुंधलना) निमेषक, निमीलक।

चुंधलाना, क्रि अ (हिं चौ चार+स अध>) चाकचक्येन अस्पष्ट मन्द ईषद् दृश् (भ्वा प अ), स्मर (भ्वा आ से), नेत्रनेज प्रतिहन् (कर्म)।

चुंधा, वि (हिं चौ+स अध>) ईषदध, मद दृष्टि २ चिर, पिल्ल ३ दे 'चुंधला' ४ क्षुद्र नयन।

चुंधियाना, क्रि अ, दे 'चुंधलाना'।

चुंबक, स पुं (स) निसक, चुंबितृ निसितृ [-त्री (स्त्री)] २ कामुक, लम्पट ३ धूर्त ४ चुंबक, प्रस्तर मणि (पु) लोह, कांत चुम्बक, अयस्कांत, अयोमणि।

चुंबन, स पुं (स न) चुम्ब-बा २ निंसम, अधरपानम्।

चुंबा, स स्त्री (स) दे 'चुम्बन'।

चुंबित, वि (स) निंसित, ओष्ठस्पृष्ट २ लालित ३ स्पृष्ट।

चुंबी, वि (स चुम्बिन्) चुम्बक, निंसक २ स्पर्शक, स्पर्शिन्। (प्राय समासांत में, ज गगनचुम्बी इ)।

चुकंदर, स पुं (फा) कन्दभेद।

चुकता, वि (हिं चुकना) समाप्त, निःशेष।

चुकती, स स्त्री (हिं चुकना) समाप्ति भव सिति (स्त्री)।

चुकना, क्रि अ (स च्युत+कृ>) पूर्ण समाप् अवसो (कर्म अवसीयते), अन्त-समाप्ति गम्, निष् सपद् (दि आ अ)। २ दे 'चूकना'।

चुकाना, क्रि स (हिं चुकना) ऋण ■ शुध् (प्रे) २ (विवाद) प्र शम् (प्रे, शम यति), स समाधा (जु उ अ) ३ स निष्पद् (प्रे), सपूर् (चु) अवसो (प्रे, अवसाययति)।

चुकौता, स पु (हिं चुकना) ऋण परि शोध शुद्धि (स्त्री) २ सं समाधान ३ निर्धारण, णा, निश्चय।

चुक्र, स पु (स न) तिंतडीक, वृक्षाम्ल, महाम्ल, चुकक २ दे 'कांजी' ३ अम्लता।

चुगना, क्रि स (स चयन) चञ्च्वा आदा (जु आ अ)-ग्रह् (■ प से) भक्ष (चु) २ चंच्वा ग्रह (भ्वा प अ)-अभिहन् (अ प अ)। स पुं, चञ्च्वा आदान ग्रहणं तुण्डेन ग्रहणम्।

चुगलखोर, स पु (फा) पिशुन, पृष्ठमांसाद, परोक्षे निंदक परिवादपर, कर्णेजप।

चुगलखोरी, स स्त्री (फा) चुगलखोर) पैशुन्य, पिशुनता, परोक्ष, निंदा परिवाद, कर्णजाप।

चुगली, स स्त्री (फा) दे 'चुगलखोरी'।

करना या खाना, क्रि स, परोक्षे पृष्ठत निंद् अथवा अप-परि-वद् (दोनों भ्वा प से)-अधि-आ क्षिप् (तु प अ)।

चुगवाना, क्रि प्रे, व 'चुगना' के प्रे रूप।
चुग्गा, चुग्गा, स पु (हिं चुगना) खग, पक्षि भक्ष्य-खाद्यम्।
चुगाई, स स्त्री (हिं चुगाना) चच्वा आदापन-आग्राह २ तस्य भृत्या वेतन वा।
चुगाना, क्रि स, व 'चुगना' के प्रे रूप। पक्षिभ्य अन्नकणान् विकॄ (■ प से)।
चुचाना, क्रि अ दे 'टपकना'।
चुटकला, स पु दे 'चुटकला'।
चुटकी, स स्त्री (अनु चुट चुट) छोटिका, मु(तु)चुटी २ अङ्गुलीपीडन ३ चरणांगुलीयकम्।
—बजाना, मु, छोटिकां कृ अथवा दा।
—बजाते, मु, आशु, द्राक, सपदि, सद्य (सब अव्य)।
—भर, मु क्षुद्रदय किञ्चिन्मात्रम्।
—भरना, मु, छोटिकया पीड (चु)।
चुटकियों में उड़ाना, मु, सुकर-साधारण परिहासमिव मन् (दि आ अ)।
—लेना, मु, मन्द-उप हस (भ्वा प से)।
चुटकुला, म पु (हिं चुटकी) नर्मन् (न), परिहास-नर्म-वाक्य-उक्ति (स्त्री) आला-भाषण २ अमोघ विशिष्ट योग-वस्त ।
चुटिया, स स्त्री, दे 'चोटी'।
चुटीला, } वि (हिं चोट) आहत, क्षणित,
चुटैला, } क्षत।
चुड़िहारा, स पु (हिं चूड़ी) चूडाहार, वलयविक्रायम् २ चूडा-वलय कार ।
चुड़ैल ■ स्त्री (स चूडा>) पिशाची चिका, डाकिनी, शाकिनी, भूतभार्या, प्रेतपत्नी, २ कुरूपिणी, अरसी, स्थविरा ३ चडी, कोपनी क्रूरा (नारी)।
चुनचुना, स पु | (हिं चुनचुनाना) विट
चुनचुनी, स स्त्री | उदर-कृमि गुन्कीटक ।
चुनचुनाना, क्रि अ (अनु) तीक्ष्णव्यथा अनुभू व्यथ (भ्वा आ से), तप (कर्म)।
चुनट-न, } स्त्री (स चुन>) वस्त्र, मा पुट-
चुनन, } भगी गि (स्त्री), ऊर्मि (स्त्री)।
चुनना, क्रि स (स चुण तथा चि) (फूलादि) चुण् (तु प से), चि (स्वा उ अ), आदा (जु आ अ), उद्धृ समाहृ (भ्वा प अ), छिद् (रु प अ) २ पृथक् कृ, उद्धृह् (क प से) उद्धृ। ३ वृ (स्वा उ से), नियुज् (रु आ अ चु), निरूप् (चु), निधृ ४ यथाक्रम रच (चु)-स्था (चु स्थापयति) ५ अलङ्कृ, मड (चु) ६ (दीवारादि) निर्मा (जु आ अ, प्रे निर्मापयति), विरच (चु)। स पु, चयन, उद्धरण, पृथक्करण, वरण, यथास्थान स्थापन, अलकरण, निर्माण ६। दे 'चुनाव'।
चुनने योग्य, वि, चेय, समाहार्य, उद्ग्राह्य वरणीय स्थाप्य, अलङ्कार्य, निर्मेय ६ ।
चुनने वाला, स पु, चेतृ, समाहर्तृ, वरितृ, पृथक्कर्तृ ६ (सब पु)।
चुना हुआ, वि, चित, समाहृत, वृत, रचित २ श्रेष्ठ उत्तम।
चुनरी, स स्त्री (स चुन>) चित्र-रागवल कवुर वसनम्।
चुनवाँ, वि (हिं चुनना) वृत, अभीष्ट चित २ उत्तम, श्रेष्ठ।
चुनवाना, चुनाना, क्रि प्रे, व 'चुनना' के प्रे रूप।
चुनाई, स स्त्री (हिं चुनना) दे 'चुनना' स पु २ कुड्य-भित्ति-निर्माण ३ चयन, वेतन-भृत्या।
चुनाव, स पु (हिं चुनना) चिति समाहृति (स्त्री), उद्ग्राह, उद्धार (२) वृति पृथक् कृति (स्त्री), निर्धारणम्।
चुनावट, ■ स्त्री, दे 'चुनट'।
चुनिंदा, वि (फा चुनीदा) दे 'चुनवाँ'।
चुनौटी, स स्त्री (हिं चूना) चूर्णपुट।
चुनौती, स स्त्री (हिं चुनना) समर, आह्वान, अभियोग २ उत्तेजन उद्दीपन, उत्थापनम्।
चुन्नट-न, स स्त्री, दे 'चुनट'।
चुन्नी[1], स स्त्री (स चूर्ण>) क्षुद्र, माणिक्य पद्मराग २ रत्न, खण्ड-लव, रत्नक ३ कन, कण-कणिका ४ काष्ठचूर्णम्।
चुन्नी[2], स स्त्री, दे 'चुनरी'।
चुप, वि (स चुप् निश्शब्द गमन>) अवाक, निश्शब्द, मौन, मौनिन्, तूष्णीक, अनालापिन्। स स्त्री, मौनता, दे 'चुप्पी' २ निस्तब्धता।

—करना या होना, क्रि अ , वाच यम् (भ्वा प अ) निरुध (रु उ अ) मौन आकल् (चु)-भज (भ्वा उ अ) ।

—रहना, क्रि अ , मौन तूष्णीं जोष आस् (अ आ से) स्था (भ्वा प अ) ।

—चाप, *क्रि, वि , जोष, तूष्णीं, निःशब्द, मौन* २ गुप्त गूढ, निभृत, प्रच्छन्नम् ।

चुपका, वि (हिं चुप) दे 'चुप' (वि) ।

चुपके से, क्रि वि , दे 'चुपचाप' ।

चुपकी, स स्त्री (हिं चुप) दे 'चुप्पी' ।

चुपड़ना, क्रि स (अनु चिपचिप) अञ्ज (रु प से), वप, दिह (अ प अ) लिप (तु प अ), अनु आ वि २ दोष गुह् (भ्वा उ से)-प्रच्छद् (चु) ३ दे 'खुशामद करना' । स पु , अंजन, उपदेहन, लेपनम् इ ।

चुपड़ा, वि (हिं चुपड़ना) (घृतादिभि) उपलिप्त, अभ्यक्त, दिग्ध ।

चुप्पा, वि (हिं चुप) वाचयम, अल्प मित, भाषिन वाग्यत ।

चुप्पी, स स्त्री (हिं चुप) निःशब्दता, *नीरवता, मौन, तूष्णींभाव* २ निःस्तब्धता, निश्चलता, निश्चेष्टता ।

चुभकी, स स्त्री दे 'डुबकी' ।

चुभना, *क्रि* अ (अनु) सलग् (भ्वा प से), सञ्ज् (कर्म), अनु आ स , सलग्नी-ससक्तीभू , व्यध् निर्भिद् (कर्म) ।

चुभना, चुभोना, क्रि स (हिं चुभना) व्यध् (दि प अ), निर्भिद् (रु प अ), तुद् (तु प अ) नि प्र विश् (प्रे) । स पुं , वेध धन, छेद -दन, निर्भेद दनम् ।

चुभानेवाला, स पुं , वेधक, छेदक, निर्भेदक इ ।

चुमकार, स स्त्री (हिं चूमना+सं कार >) चुचुत्कार , चुंबनध्वनि (पु) ।

चुमकारना, क्रि स (हिं चुमकार) सचु चुत्कार उपलल्-उपच्छन्द् (चु) ।

चुरचुरा, वि दे 'चुरमुरा' ।

चुर(रु)ट, सं पु , दे 'सिगार' ।

चुरमुर, सं पु (अनु) चुरमुरशब्द. ।

चुरमुरा, वि (हिं चुरमुर) भङ्गुर, भिदुर, भिदेलिम ।

चुरवाना, क्रि स , (१-२) व 'चुराना' तथा 'पकाना' के प्रे रूप ।

चुराना, क्रि स (स चोरण) चुर्-स्तन् (चु), अपहृ (भ्वा प अ), मुष (क्र प से) २ गुह् (भ्वा उ से), प्रच्छद् (चु) । स पु , चोरण, मोषण, अपहरण गूहन, प्रच्छदन, दे 'चोरी' ।

चुराने योग्य, वि , चोरयितव्य, मोषणीय ।

चुराने वाला, स पु , दे 'चोर' ।

चित्त चुराना, मु , मनो हृ (भ्वा प अ), वि परि मुह (प्रे) ।

चुरि, चुरी, स स्त्री (स) कूपक , तालक, लघु, कूप -अवट ।

चुल, स स्त्री , दे 'खुजली' ।

चुलबुल, स स्त्री (अनु) दे 'चचलता' ।

चुलबुला, वि (पूर्व) दे 'चचल' तथा 'नटखट' ।

चुलबुलाना, क्रि अ (पूर्व) चपल-चञ्चल (वि) भू ।

चुलबुलापन, सं पु
चुलबुलाहट, स स्त्री } दे 'चचलता' ।

चुलाना, क्रि स , व 'टपकना' के प्रे रूप ।

चुलाव, स पु , अमांस निर्मांस,-ओदन -नम् ।

चुल्ली, स स्त्री (स) दे 'चूल्हा' २ चिता ।

चुल्लू, स पु (स चुलुक) चुलुक , अजलि (पु), चलुक , गडूष था ।

—भर, वि चुलुक-चुलुक, मात्र, अजलि गडूष, मात्र (जलादि) ।

—भर पानी में डूब मरना, मु , अत्यत लज्ज् (तु आ से)-त्रप् (भ्वा आ वें) ।

चुवाना, क्रि, स , व 'टपकना' के प्रे रूप ।

चुसकी, स स्त्री (हिं चूसना) गडूष, चुलुक, चुलक २ ईषद् शनैः शनैः, पान ३ तमाखुधूमकर्ष ।

चुसनी, स स्त्री , दे 'चूसनी' ।

चुसवाना, क्रि स ,
चुसाना, क्रि प्रे } व 'चूमना' के प्रे रूप ।

चुस्त, वि (फा) उत्साहिन्, उद्योगिन्, क्षिप्रका रिन्, स्फूर्तिमत् २ जागरूक, दक्ष ३ आलस्य शैथिल्य,-शून्य, सुसहत ४ दृढांग, सबल ।

—चालाक, वि , दक्षानलस, चतुरातन्द्र ।

चुस्ता, सं पुं (फा) अजमेषशावकानां आमा शय २ मलाशय ३ दे 'सिल्वट' ।

खुस्ती, सं स्त्री (फा चुस्त) क्षिप्रकारिता, स्फूर्ति (र्ती), उद्यम, उद्योग २ शैथिल्या भाव, सुराहति (स्त्री) ३ दृढता, सम्बन्धा।

खुहचुहाना, कि अ (अनु) दे 'चहचहाना' २ रसवत् दीप् (दि आ से)-प्रकाश् (भ्वा आ से)।

खुहचुही, स स्त्री (अनु) फुलचुही, *चुहचुही, कृष्णचटकाभेद पुरुलशिखिनी।

खुहल, स स्त्री (अनु चुहचुह >) हास्य, परिहास, विनोद, कौतुक, प्रमोद, विलास, मनोरंजनम्।

खुहिया, स स्त्री (हिं चूहा) गरिका, बालमूषिका, क्षुद्र मूषक आखु (पु) २ दे 'चूही'।

खुहुटना, कि. अ, तथा वि दे 'चिपकना' तथा 'चिपचिपा'।

चूँ, स पु (अनु) चुकार, चुकृति (स्त्री)।

—चा, सं पु दे 'चूँचरा'।

—करना, मु, किमपि वद् (भ्वा प से) २ विरुद्ध वद् अथवा प्रतिवद्।

चूँकी, अव्य (फा) यत, यत, यस्मात्, हि।

चूँगी, स स्त्री, दे 'चुंगी'।

चूँचरा, स पु (फा) प्रतिवाद प्रत्याख्यान, विरोध २ आपत्ति (स्त्री), अपवाद ३ व्याज, मिषम्।

चूँचूँ, सं स्त्री, (अनु) चुकार, चुकृति (स्त्री), चाटकैरशब्द २ कलरव, विरुत ३ चूँ-चूँ शब्द ४ क्रीडनकभेद।

चूक¹, सं स्त्री (हिं चूकना) अपराध, स्खलित, दोष, प्रमाद २ मार्गभ्रश, व्यतिक्रम।

चूक², स पु (स चुक्र) अम्ल २ अम्लद्रव्यभेद ३ चुकर्क चुक्रिका, अम्लशाकभेद। वि, अत्यम्ल, अतिशुक्त।

चूकना, कि अ (स च्युत कृ >) अपराध (दि, स्व प अ), स्खल् (भ्वा प से), प्रमद् (दि प से, प्रमाद्यति) २ लक्ष्यात् सत्पथात् भ्रश् (भ्वा आ से)-भ्रश (दि प से) ३ सदवसर या (प्रे यापयति)-अतिवह् (प्रे)।

चूका, सं पु, दे 'चूक' (२)।

चूची, सं स्त्री (सं चूचुक) चूचुक, चुचुक, कुचाग्र, कुचानन, स्तनवृत २ स्तन, कुच, पयोधर।

—पीना, मु स्तन स्तन्य पा (भ्वा प से)।

चूज़ा, स पु (फा) कुक्कुटशाव वक। वि, अल्पवयस्क।

चूडांत, सं पु (सं) चरम, सीमा-अवधि (पु) अ, अत्यधिक, अत्यन्त वि, परम, महत्, उत्कट।

चूडा, स स्त्री (सं) शिखा, जु(जू)टिका, केशपाशी २ मयूरशिखा ३ शिखर, अग्र ४ कूप, ५ चूडाकरणसस्कार। सं पु (सं स्त्री) वलय य, कङ्कण २ वलयावली, चूडावली।

—करण, स पु (स न) चूडाकर्म मुडन, सस्कार।

—मणि, सं पु (सं) शिरोरत्न, शीर्षपुरत्नम्। २ प्रधान, अग्रगण्य ३ गुंजा।

चूडी, स स्त्री (स चूडा) वलय य, करभूषण, कौतुकम्।

—दार, वि, (हिं + फा) पुटीकृत, वलीयुत, सकुचित।

चूड़ियाँ पहनना, मु, क्लीबवत् आचर् (भ्वा प से)।

चूत, स पु (स) रसाल, आम्र, कोकिलोत्सव २ (स न) अपान न, गुद, च्युति चुलि (स्त्री)। (हिं) योनि (स्त्री) भग, नारीगुह्यम्।

चूतड, स पु (सं चूत >) नितब, कटि(टी)-प्रोथ, स्फिच चा (स्त्री), पुत, पुलक, स्थिक।

चून, स पु (स चूर्ण) दे 'आटा' तथा 'चूना'।

चूनरी, स स्त्री, दे 'चुनरी'।

चूना¹, स पु (स चूर्ण र्ण) चूर्णकम्।

चूने का पानी, सं पु चूर्णकजल, चूर्णोदकम्।

—दानी, स स्त्री, चूर्णाधानी, चूर्णपुटक।

अनबुझा—, अशान्तचूर्णकम्।

बुझा—, शान्तचूर्णकम्।

चूने की भट्ठी, स स्त्री, चूर्ण,-आपाक पाकपुटी।

चूना², कि अ (स च्यवन) दे 'टपकना'। वि, सच्छिद्र, स्फुटित, सरध्र।

चूनी, स स्त्री (स चूर्णिका) धान्य-अन्न,-कण णी णिका २ रत्न मणि,-कण -कणिका।

चूमना, कि स (सं चुबनं) (मुख) चुब् (भ्वा प से), निस् (अ आ से) २ ओष्ठा-

म्या स्पृश् (तु प अ) २ (ओठ) अधर अधररसं पा (म्वा प अ) ४ (सिर) शिर आ-उपा समा घ्रा (म्वा प अ)। सं पु, चुंबन, निंसन, अधरपान, शीर्षाघ्राणम्।

चूमने योग्य, वि, चुंबनीय, निसितव्य।

चूमने वाला, सं पु, चुंबक, चुंबिन्, निंसक, निंसितृ (पु)।

चूमा हुआ, वि दे 'चुम्बित'।

—चाटना, ■, उप, लल् (चु) चुब।

चूमा, सं पु, चुंबन, चुंब -ना।

—चाटी, स स्त्री, विलास, विहार, क्रीडा।

चूर, स पु (स चूर्ण र्ण) क्षोद, पिष्ट, रजस (न), कणा -कणिका अणव स्वा (बहु)। वि, मग्न, लीन, परायण, अभिनि नि, विष्ट २ मत्त, क्षीब, मदोन्मत्त ३ श्रांत, खिन्न, क्लान्त।

—चूर, वि, चूर्णित, पिष्ट, क्षुण्ण।

चूरन, स पु (स चूर्ण र्ण) दे 'चूर्ण' २ चूर्ण, अग्निवर्द्धक पाचक-चूर्णम्।

चूरमा, स पु (स चूर्ण र्ण) मिष्टान्नभेद, मिष्टचूर्ण।

चूरा, सं पु (स चूर्ण र्ण) क्षोद, पिष्ट। दे 'चूर' (स पु)।

—करना, क्रि सं, चूर्ण् (चु), चूर्णीक, पिष् क्षुद् (रु प अ)।

चूर्ण, सं पु (स पु न) क्षोद, पिष्ट २ दे 'चूरन' ३ रजस् (न), धूलि- (स्त्री)।

—कुंतल, सं ■ (सं) अलक, कुरल।

चूर्णक, सं पु (स) भृष्टपिष्टान्नम् २ सक्तुक, भृष्टयवचूर्णम् ३ (स न) सुगन्धि-सुगन्धित, चूर्णम् २ कठुवर्णरहितम् अल्पसमासयुक्त गद्यम्।

—चूर्णन स पु (स न) पेषण, मर्दनं, खडनम्।

चूर्णित, वि (सं) पिष्ट, क्षुण्ण, चूर्णीभूत।

चूल, सं पुं (स चूल) केश, शिखा।

चूल, स स्त्री (देश)विवर्तनकील २ काष्ठाग्रम्।

चूलें ढीली होना, मु, अत्यत श्रम-आयम् (म्वा दि प से)-खिद् (दि आ अ)-श्रम् (दि प ■)।

चूल्हा, सं पु | चूल्ही, स स्त्री } [स -चुल्ली हि (स्त्री)] अंति(दि)का, अधिश्रयणी, उद्धान, उध्मान, अश्मन, अश्मतक -कम्।

चूसना, क्रि स (स चूषण) आ, चूष (म्वा प से), पा (म्वा प अ) २ उच्चुष् (प्रे), आ-नी पा (म्वा प अ)। स पु, चोषणं, चोष, उच्चोषणम्।

चूसने योग्य, वि, चूष्य, चोष्य, उच्चोष्य।

चूसनी, सं स्त्री (हिं चूसना) चोषणी, क्रीडनकभेद २ चूचुकवती काचकूपी २ चोष यष्टि (स्त्री)।

चूहड़ा, स पुं, दे 'भंगी'।

चूहड़ी, स स्त्री, दे 'भगन'।

चूहा, स पु (अनु चू) आखु उंदु(रु)र (पु), खनक, बिलेशय, मूष(षि, षी)क, मूष, मूषिकार।

—दन्ती, सं स्त्री, कंकणभेद, मूषदती।

—दान,—दानी, सं पु, सं स्त्री, मूषपिंजर, मूषकपंजर रम्।

—मार, स पु, मूषमार ५ श्येन, खगान्तक।

चूही, सं स्त्री (हिं चूहा) मूषा, मूषिका। २ दे 'चुहिया'।

चेंचला, स पुं (अनु चेंचें) पक्षिशाव -चक।

चें चें, स स्त्री, दे (अनु) चुकार, कुहृति (स्त्री) २ प्र,जल्प अविपतम्।

चेंबर, स पुं (अ) कोष्ठ, कक्षा, शाला २ सभागृहम् २ परिषद् (स्त्री)।

चेयर, स स्त्री (अ) दे 'कुर्सी'।

—मेन मैन, स ■ (अं) प्रधान, सभा, पति अध्यक्ष।

चेक, ■ पुं (अ)देशादेश २ दे 'चारखाना'।

चेचक, ■ स्त्री (फा) मसूरी रिका, वसंतरोग, शीतला स्त्री।

चेट, सं पुं (स)दास, सेवक २, पति, भर्तृ। २ भट विदूषक।

चेटक, सं स (स) चेट, दास २ जार, उपपति ३ इन्द्रजाल, माया २ सदेशहर, दूत ५ दे 'चसका'।

चेटी, सं स्त्री (सं)दासी, सेविका, परिचारिका।

चेत, स पुं [सं चेतस् (न)] चेतना, चैतन्य, सज्ञावेदन २ ज्ञान, बोध ३ अवधान, साव धानता ४ स्मरणं, स्मृति (स्त्री) ५ चित्त।

चेतन, सं पु (स) आत्मन् (पु), जीव २ मनुष्य ३ प्राणिन्, जीवधारिन् ४ परमेश्वर ५ मनस् (न), चित्तम्। वि, चेतनावत्, चेतोमत्, प्राण, धारिन् भृत्, जीविन्, सजीव।

चेतनता, स स्त्री, (स) सजीवता, चेतोमत्ता, दे 'चेतना'।

चेतना, स स्त्री (स) संज्ञा, चैतन्य २ ज्ञान, बोध ३ स्मृति (स्त्री) ४ मनोवृत्ति (स्त्री)। क्रि अ, संज्ञा-चेतना लभ् (भ्वा आ अ) आ प्रति पद् (दि आ अ), प्रकृतिं आपद्, प्रकृतिस्थ (वि) भू २ सावधान अवहित (वि) भू।

चेतावनी, स स्त्री (हिं चेतना) प्राक्-पूर्व, सूचना प्रतिबोध उपदेश।

चेप, स पु (अनु चिपचिप) निर्यास, रस २ श्यान सांद्र-वस्तु (न) ३ पूय, पूय-य, पूयरक्त, कुणपम्।

—दार, वि (हिं + फा) निर्यासमय [-यी (स्त्री)] २ श्यान, सान्द्र ३ सपूय।

चेला, स पु (सं चेटक >) शिष्य, अन्तेवासिन्, छात्र, विद्यार्थिन् २ अनुयायिन्।

—मूँड़ना, मु, दयनी (भ्वा प अ), दीक्ष् (भ्वा आ से) दीक्षां दा (जु उ अ)।

चेलिन, चेली, स स्त्री (हिं चेला) शिष्या, अन्तेवासिनी, छात्रा, विद्यार्थिनी २ अनुयायिनी।

चेष्टा, स स्त्री (स) कायिकव्यापार, चेष्टित, हस्तादिचालन, इंगित, अंगविक्षेप २ उद्योग, प्रयत्न ३ कार्य, कर्मन् (न) ४ परिश्रम।

चेस, स पु (अ) दे 'शतरंज'।

चेहरा, स पु (फा) आनन, मुख, वदन २ पुरो-अग्र, भाग ३ कपट-मुख, मुख-सदनम्।

—मोहरा, सं पु, आकार, आकृति (स्त्री), रूपम्।

—उतरना, मु, मुख-वदन,-म्लानि (स्त्री)-म्लानता-कान्तिक्षय-विवर्णता।

—बिगाड़ना, मु, अत्यधिक नट (चु)-प्रहृ (भ्वा प अ)।

—(रे) पर हवाइयाँ उड़ना, मु मयादिभि वैवर्ण्यं विवर्णता।

चैक, स पु, दे 'चेक'।

चैत, सं पु (सं चैत्र) चैत्र(त्रि)क, चैत्रि (पु) चैत्रिन्, मधु (पु) २ चैत्रशस्यम्।

चैतन्य, स पु (स न) आत्मन् (पु), जीवात्मन् २ ज्ञान, बोध ३ परमेश्वर ४ प्रकृति (स्त्री)। वि, चेतनावत्, सजीव ५ सावधान, अवहित।

चैत्य, स पु (स न) गृह, भवन, सद्मन् (न) २ मंदिर ३ यज्ञशाला। (सं पु) बुद्ध २ बुद्धमूर्ति (स्त्री) ३ अश्वत्थवृक्ष ४ बौद्धभिक्षु (पु) ५ भिक्षुविहार।

चैत्र, स पु (स) दे 'चैत' २ बौद्धभिक्षुक ३ यज्ञभूमि (स्त्री) ४ मंदिरम्। वि, चित्रा, सम्बन्धिन् विषयक

चैन, स पु (स शयन >) सुख, सौख्य, सुस्थता, आनंद, मोद, विश्राम, निर्वृति (स्त्री)।

—उड़ाना या करना, मु, सानंद-सुखं जीव् (भ्वा प से), मुद् (भ्वा आ से), नंद् (भ्वा प से)।

—पड़ना, मु, सुखं निर्वृतिं लभ् (भ्वा आ. अ)।

चोंच, स स्त्री [स चञ्चु-चू (स्त्री)] त्रोटी टि (स्त्री), तुंड, चञ्चुका, सृपाटिका। २ मुखम्।

चोंचला, स पु, दे 'चोचला'।

चोआ, सं पु (हिं चुआना) गंध, गांधिक, गंधद्रव्यम्।

चोकर, स पु (हिं चून = आटा + कराई = छिल्का) कडंगर, तुष, धान्यत्वच् (स्त्री), बुसम्।

चोखा, वि (स चोक्ष) शुद्ध, केवल, पवित्र २ शुचि शुद्धात्मन् ३ तीक्ष्ण, निशित ४ दे- 'भरता' ५ उत्कृष्ट, उत्तम।

चोगा, स पु (हिं चुगना) खगखाद्य, पक्षिभक्ष्य, विहगाशनम्।

चोग़ा, स पु (तु) कंचुक, प्रावार-रक।

चोचला, स पु (हिं चोंच) विभ्रम, विलास, ललिताभिनय, लीला, हाव।

चोज, स पु (हिं चोंच) सुभाषित, वैदग्ध्य, नर्मालाप २ हास्य, परिहास।

चोट, स स्त्री (स चुट् = काटना >) अभिघात निर्-घात, प्रहार, आहति (स्त्री), ताडन पात। २ व्रण, क्षत ३ हानि-क्षतिः

(स्त्री) ४ वेदना, मनोव्यथा ५ विश्रम विश्राम -घात भंग ६ सव्यंग्यो विवाद ।
—करना, क्रि स, प्रहृ (भ्वा प अ), क्षिप् (स्वा प अ), तुद् (तु प अ) आहन् (अ प अ)।
—खाना, क्रि अ, आहन् प्रहृ तुद् (कर्म)।
—पर चोट, मु, सततापाता, प्रहारपरंपरा, २ क्रम विपद्, परंपरा ।
चोटा, स पु (हि चोआ) मत्स्यक्षीरस ।
चोटी, स स्त्री (स चूडा) चु(चू)टिका, शिखा, शिखण्डक २ शिखर, शृंग, सानु (पु, न) अग्र शिखा मूर्धन् (पु) ३ शिखंड, शेखर ४ वेणीबंधनसूत्र ५ वेणी, रज्जु (स्त्री)।
—का मु, अग्रग, अग्रगण्य, उत्तम श्रेष्ठ ।
चोटीदार, वि (हि + फा) शिखावत, सानुमत् २ सूच्याकार, शंकाकृति ।
चोट्टा, स पु, दे 'चोर'।
चोब, स स्त्री (फा) पटमंडप स्थाणु स्थूणा २ यष्टि (स्त्री) दंड ।
—चीनी, स स्त्री, काष्ठौषधभेद ।
—दार, स पु (फा) वेत्र-दंड यष्टि धर पाणि (पु)-हस्त २ दौवारिक, दण्डपाशुल ३ रक्ष-दंड, पुरुष ।
चोया, स पु, दे 'चोआ'।
चोर, स पु (स) चौर, कुंभीर(ल)क, कुंभील, ऐकागारिक, तस्कर, दस्यु, प(पा)टच्चर, परास्कंदि (पु), मोषक, स्तेन ।
—खिड़की, स स्त्री, पक्षद्वार, पक्षकम्।
—घकार, स पुं, दे 'चोर'।
दरवाज़ा, स पु, प्रच्छन्न-अन्तर गुप्त-गूढ द्वारम्।
—सीढ़ी, स स्त्री, उप प्रच्छन्न-गूढ सोपानम्।
चोरटा, स पु, दे 'चोर' (चोरटी, स्त्री)।
चोरी, स स्त्री (हि चोर), मोषणं, अपहरण २ चौर्य, चो(चौ)रिका, चोरण स्तेय स्तैन्य, मोष ।
—करना, क्रि स, दे 'चुराना'।
—का माल, स पु, चोरित अपहृत-लुंठित, द्रव्यम्।
—चोरी, क्रि वि, अप्रकाश, निभृत, रहस (सब अव्य)।
—यारी, स स्त्री, निंदितकर्मन् (न), पापन्।
—से, क्रि वि, अलक्षित, प्रच्छन्नम्।
चोल, स पु (स) दक्षिणपथे प्रांतविशेष चोला २ तत्रत्य जन ३ ४ दे 'चोला चोली' ५ कवच ६ वल्कलम्।
चोला, स पु (स चोल) स्थूल,कूर्पासक युतक २ दे 'चोली' ३ कंचुक, प्रावारक ४ नांबूल्करक ५ शरीरम्।
—छोड़ना, मु, तनु त्यज् (भ्वा प अ)।
—बदलना, मु, देहान्तर प्राप् (स्वा प अ) प्रेत्य भू।
चोली, स स्त्री (स) चोलक, चोड-डी क(कु)चुली लिका, कंचुक, कूर्पासक कम्। २ दे 'चोला' (१)।
—दामन का साथ, मु, अगाढ, सत्य सौहार्द मित्रता प्रणय ।
चोषण, स पु (स न) चूषण, चूषा, चोष २ स्तन स्तन्य क्षीर, पानम्।
चोष्य, वि (स) चूषणीय, चूष्य ।
चौंक, स स्त्री (हि चौ+स कंप), (आकस्मिक) कंप पन, साध्वसात्कंप, सहसा स्फुरणन्।
—उठना या पड़ना, क्रि अ, सहसा कंप स्पद् (भ्वा आ से)-स्फुर (तु प से)।
चौंकना, क्रि अ (हि चौंक) दे 'चौंक उठना' २ सहसा अवबुध् (दि आ अ) जागृ (अ प से) ३ विस्मि (भ्वा आ अ)-आश्चर्यचकित (वि) भू।
चौंकाना, क्रि स, व 'चौंकना' के प्रे रूप।
चौंतरा, स पु, दे 'चबूतरा'।
चौंतीस, वि (स चतुस्त्रिंशत्) स पु, उक्ता संख्या, तद्बोधकाङ्को (३४) च।
चौंती(ति)सवाँ, वि, (हि चौंतीस) चतुस्त्रिंशत्तम मी म, चतुस्त्रिंश शी शम्।
चौंध, स स्त्री, दे 'चकाचौंध'।
चौंधियाना, क्रि अ, दे 'चुँधलाना'।
चौंर, स पुं (स चामर) चमरम्।
चौंरी, स स्त्री (हि चौंर) अवचूलक-क रोमगुच्छ २ दे 'चमरी'।
चौंसठ, वि (स चतुःषष्टि स्त्री) स पुं, उक्ता संख्या, तद्बोधकाङ्को (६४) च।
चौंसठवाँ, वि (हि चौंसठ) चतुःषष्टितम मी म, चतुःषष्ट ष्टी ष्टं (पुं स्त्री न)।

चौ—, वि (स चतुर) केवल समास के आदि में।

—कोना—कोर, वि, दे 'चारकोना'।

—खूँट, स पु, चतुर्दिश, दिकचतुष्टय यी २ भूमण्डल, पृथिवी। क्रि वि, दे 'चारों तरफ'।

—खूँटा, वि, दे 'चारकोना'।

—गिर्द, क्रि वि, दे 'चारों तरफ'।

—गुना, वि चतुर्गुण णा ण, चतुर्गुणित-ता तम्

—पर्त, वि चतुष्पुट, चतुर -आवृत्त आवर्तित

—पहल, वि, चतुर्भुज चतुष्पार्श्व चतुर्बाहु।

—पहिया वि, चतुश्चक्र। स स्त्री, चतुश्चक्र वाहनम्।

—मासा, स पु, चतुर्मास, वर्षा (स्त्री बहु) प्रावृष (स्त्री)।

—मुखा, वि, चतुर्मुख, चतुरानन। स पु, ब्रह्मन् (पु)।

—राहा स पु, चतुष्पथ थ, चतुष्कम्।

—हद्दी, स स्त्री, सीमाचतुष्टय-यी।

चौक, स पु (स चतुष्क) प्रवण, चतुष्पथ -थ, शृंगाटक, संस्थान। २ मुख्य प्रधान,-आपण निगम हट्ट ३ अजिर, अगन ण, चत्वर र ४ चतुरस्रवेदि (स्त्री) ५ पुरोभागिदन्तचतुष्टयम्।

चौकड़ी, स स्त्री (हिं चौ=चार+स कला =अग>) प्लुत गि (स्त्री) वल्गनम्। २ नरचतुष्ट्य यी ३ चतुरश्व वाहनम्।

—भरना, क्रि अ, वल्ग् (भ्वा प से), हरतु (भ्वा आ अ)।

चडाल—, स स्त्री, चडाल-दुष्ट-चतुष्टयी, धूर्त, मडल मडली।

भूलना, मु, किंकर्तव्यविमूढ (वि), नर् (नि आ से), आकुली भू।

चौकन्ना, वि (हिं चौ-चार+स कर्ण>) अवहित, सावधान, जागरूक, प्रमादशून्य।

—रहना, क्रि अ, अवहित-जागरूक (वि) स्था (भ्वा प अ)।

चौकस, वि (हिं चौ-चार+कस—कसा हुआ>) दे 'चौकन्ना' २ उद्यमिन्, उद्योगिन् ३ यथार्थ, यथातथ।

—रहना, क्रि अ, सावधान-अप्रमत्त (वि) स्था (भ्वा प अ)।

चौकसी, स स्त्री (हिं चौकस) जागरूकता, सावधानता, दक्षता।

चौका, स पु (स चतुष्क) चतुष्टय, वस्तु चतुष्टयी २ पाक, शाला गृह, महानस, रसवती ३ भोजन, शाला-गृह-अगार ४ अग्रय दन्तचतुष्टय ५ अगन ण ६ चतुरस्रशिला ७ शीर्षफुल्ल (गहना)।

चौकी, स स्त्री (स चतुष्की) आसन, चरण पाद, पीठ पीठ, *चतुष्की २ दे 'कुर्सी' ३ निवेशस्थान, दे 'पड़ाव' ४ हविस (न) ५ रक्षिनिवास, प्रहरिशाला ६ ग्रैवेयक, कठाभूषणभेद ७ जागरूकत्व, सावधानता।

—देना, क्रि अ, आमया उपविश् (प्रे) २ रक्ष् (भ्वा प से)।

—दार, स पु (हिं+फा) गृह, प पाल, प्रहरिन्, रक्षक २ वैतालिक, वैबोधिक।

—दारी, स स्त्री, रक्षा, गुप्ति (स्त्री), अवेक्षण, प्रहरित्व २ रक्षा प्रहरित्व,-वेतन शुल्कम्।

चौखट, स स्त्री (हिं चौ-चार+काठ>), *कपाटलग्न, चतुष्काष्ठ २ देहली-लि (स्त्री), द्वारपिंडी, गृहावग्रहणी ३ द्वारम्।

चौखटा, स पु (हिं चौखट) *चतुष्काष्ठक, *चित्र-दर्पण, परिवेष्टन-वलनम्।

चौगान, स पु (फा) एतन्नामक क्रीडाभेद २ सादिदण्डक्रीडाक्षेत्रम्।

चौड़ा, वि (हिं चौ+पाट) उरु, परिणाह वत् [ती (स्त्री)], पृथु, विशाल, विस्तृत, वितत, विस्तीर्ण।

—करना, क्रि स, प्र वि, तन् (त उ से), प्रथ (प्रे), विस्तृ (क्र् उ से था प्रे), प्रथ (चु)।

चौड़ाई, **चौड़ान**, स स्त्री (हिं चौड़ा) तर्यक्ता त्व, विस्तार, विशालता, पृथुता, पार्श्व, परिणाह, विस्तीर्णता।

चौतरा, स पु, दे 'चबूतरा'।

चौताला, वि, (हिं चौ+स ताल>) चतुस्ताल। स पु, होलिकागीति (स्त्री) २ चतुस्ताल।

चौथ, स स्त्री (स चतुर्थी) शुक्ला चतुर्थी २ कृष्णा चतुर्थी ३ चतुर्थांश ४ करभेद।

चौथा, वि (स चतुर्थ) तुर्य, तुरीय। स पु, चतुथक, मृतकरोनिभेद।

चौथाई स स्त्री (हिं चौथा) चतुर्थ-तुर्य तुरीया अश भाग, पाद, तुर्य, तुरीय, चतुर्थम्।

चौथिया, (हिं चौथ) चतुर्थकज्वर २ चतुर्था शाधिकारिन्।

चौथी, वि स्त्री (स चतुर्थी) तुर्या, तुरीया। स स्त्री, वैवाहिकरातिभेद, *चतुर्थी।

चौथे, क्रि वि (हिं चौथा) चतुर्थस्थाने।

चौदस, स स्त्री (स चतुर्दशी) १ २ शुक्ल-कृष्ण-चतुर्दशी।

चौदह, वि (स चतुर्दशन्) स पु, उक्ता सख्या, तद्द्योतकाको (१४) च।

चौदहवाँ, वि (हिं चौदह) चतुर्दश शी शम्।

चौधराई, स स्त्री (हिं चौधरी) मुख्यत्व नेतृत्व प्रधानत्वम्।

चौधरानी, स स्त्री (हिं चौधरी) मुख्या, प्रधाना, नेत्री।

चौधरी, स पु (स चतुर्धुरीण > अथवा स चतुर=दक्षिया+धारिन् >) अग्रणी (पु), नायक, पुरोग, धुरीण।

चौपई, स स्त्री (स चतुष्पदी) छन्दोभेद।

चौपट[1], वि (हिं चौ = चार+पट किवाड़ा) अरक्षित, आवरण-आच्छादन-हीन, प्रकट, अपावृत।

चौपट[2], वि (हिं चौ = चार+स पाट चौड़ाई) नष्ट वि, ध्वस्त, क्षीण उच्छिन्न, नाशित।

—करना, क्रि स, उच्छिद् (रु प अ) विध्वम नाश (प्रे), उत्सद् (प्रे)।

चौपड़, स स्त्री (स चतुष्पट ? >) चतुष्पट, अक्षक्रीडाभेद २ तस्य पट अक्षा च।

चौपाई, स स्त्री (स चतुष्पादी >) छन्दोभेद।

चौपाल, स पु, दे 'चौपाल'।

चौपाया, स पु (स चतुष्पाद) चतुष्पद, चतुष्पाद् (पु) २ पशु (पु)।

चौपाल, स पुं (हिं चौबार ?) गोष्ठी सभा-गृह, आस्थान नी।

चौबच्चा, स पु, दे 'चहबच्चा'।

चौबा, स पुं (स चतुर्वेद) ब्राह्मणजाति भेद २ मथुरावासी पुरोहित।

चौबाइन, स स्त्री (हिं चौबा) चतुर्वेद-भार्या पत्नी।

चौबारा,[1] स पु (हिं चौ+बार = द्वार) अट्ट, अट्टाल, चद्रशाला, शिरोगृह, कूटा। २ दे 'चौपार'।

चौबारा,[2] क्रि वि (हिं चौ+बार -वार) चतुर्थवारम्।

चौबीस, वि [सं चतुर्विंशति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता सख्या तदको (२४) च।

चौबीसवाँ, वि (हिं चौबीस) चतुर्विंशति तम-मी म, चतुर्विंश-शी शम्।

चौबे, स पु दे 'चौबा'।

चौबोला, स पु (हिं चौ+बोल) मात्रिक छन्दोभेद।

चौभड़, स पु, (हिं चौ-दाढ़) चर्वण-दन्त, दष्ट्रा, दाढा।

चौमंजिला, वि (हिं चौ-फा मंजिल) चतुर्भूमिक।

चौमुहानी, स स्त्री, दे 'चौक' (१)।

चौर, स पु (स) दे 'चोर'।

चौरस, वि (हिं चौ+(एक) रस तुल्य) सम, समस्थ, समरेख, सपाद २ चतुर्भुज, वर्गाकार।

चौरा, स पु, दे 'चबूतरा'।

चौरानवे, वि [स चतुर्नवति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या तदको (९४) च।

चौरासी, वि [स चतुरशीति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदको (८४) च। स स्त्री, चतुरशीतिलक्षयोनय (बहु)।

चौरेठा, स पु (हिं चावल+पीठा) पिष्ट चूर्णित तण्डुल धान्यास्थि (म)।

चौर्य, स पु (स न) स्तेय, स्तैन्य, चोरिका, चोरणम्।

—रत, स पुं (स न) गुप्त, मैथुन रति (स्त्री)।

चौलकर्म, स पु (स-र्मन् न) चौड, चौल, मुण्डन चूडाकरण, सस्कार।

चौलड़ा, वि (हिं चौ+लड़) चत सृष्, चतुर्गुण (हार इ)।

चौला, स पु, दे 'लोबिया'।

चौला(रा)ई, सं स्त्री, तडुलीय, पथ्य शाक, बहुवीर्य, मेघनाद।

चौवन, वि [स चतु पञ्चाशत् (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (५४) च।

चौसठ, वि [स चतु षष्टि (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (६४) च।

चौसर, स पु (स चतुस्सारि) दे 'चौपड़'।

चौहट्टा, स पु (हिं चौ+स हट्ट) दे 'चौक' (२)।

चौहत्तर, वि [स चतु सप्तति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (७४) च।

चौहरा, वि (हिं चौ) चतुर्गुण-णित २ चतुष्पुट, चतुरावृत्त, चतुरावर्तित।

च्यवन, स पु (स) ऋषिविशेष। (स न) क्षरण, स्रवणम्।

—**प्राश**, स पु (स) अवलेहभेद (आयुर्वेद)।

च्युत, वि (स) स्रुत, क्षरित २ पतित, भ्रष्ट ३ विमुख, पराङ्मुख ४ पदभ्रष्ट, अधिकारभ्रष्ट।

च्युति, स स्त्री (स) पतन, स्खलन २ अधिकारभ्रंश, पदहानि (स्त्री) ३ दोष, स्खलितम्।

छ

छ, देवनागरीवर्णमालाया सप्तमो व्यञ्जनवर्ण, छकार।

छगा, छगुरा, वि (हिं छ +अगुरी) षड़गुल, षडगुरि।

छँगुलिया, छँगुली, स स्त्री, दे 'छिगुनी'।

छटना, क्रि अ (हिं छाँटना) वृ-उद्‌वह चि उद्‌ग्रह (कर्म), २ वद् छिद् (कर्म) ३ अप-इ (अ प अ), पृथग् भू ४ क्षि-विशृ (कर्म), कृशी भू।

छँटा हुआ, मु, धूर्त, चतुर, दक्ष, निपुण।

छँटवाना, क्रि प्रे, व 'छाँटना' के प्रे रूप।

छँटाई, स स्त्री (हिं छाँटना) वरण, उद्‌ग्रहण, चयन २ अवच्छेद, निकृन्तन ३ पृथक्करण ४ अवच्छेदन पृथक्करण-वेतन भृति (स्त्री)।

छन्द, स पु [स छन्दस (न)] वृत्त २ वेद, छति (स्त्री) ३ छन्दशास्त्र ४ अभिलाष, कामना ५ स्वच्छन्दता, स्वैरिता ६ कपट, छल ७ युक्ति (स्त्री), उपाय ८ अभिप्राय ९ पद्य, श्लोक।

—**शास्त्र**, स पु, छन्दश्शास्त्र, वृत्तविज्ञानम्।

छ, छः, वि [स षट् (नि)]। स पु, उक्ता सख्या, तदङ्क (६) च।

छई, स स्त्री, दे 'क्षयी'।

छकड़ा, स पु (स शकट) प्रवहण, यान, वाहन, शकटिका २ वृषभवाहन, बलीवर्दशकट, गन्त्री।

छकना¹, क्रि अ (स चकन) चक् (भ्वा उ से), तुष् (दि प अ), परि-सन्तृप् (दि प अ) २ क्षीव् (भ्वा दि प से), मद् (दि प से, माद्यति)।

छकना² क्रि अ (स चक) विस्मि (भ्वा आ अ), चकित विस्मित (वि) भू २ वच् प्रतार (कर्म)।

छकाछक, वि (हिं छकना) तृप्त, तुष्ट २ परिपूर्ण ३ क्षीब, मत्त।

छकाना, क्रि, स, व 'छकना' (१, २) प्रे रूप।

छक्का, स पु (स षट्क) बिन्दुषट्कयुत क्रीडापत्र २ षड्वस्तुसमूह ३ ४. अक्ष कपर्द, भेद ५ द्यूत, अक्षक्रीडा, देवन ६ सज्ञा, चैतन्यम्।

—**पजा**, मु, कूटोपाया, कपटप्रबन्धा।

—**पजा करना**, मु प्रतृ (प्रे), वच् (चु)।

छक्के छूटना, मु, धैर्य लुप् (तु उ अ), अधीर भग्नोत्साह (वि) भू।

छगड़ा, स पु (स छागल) अज, छुगल।

छगन, स पु (स छगल) शिशु, स्तनन्धय।

—**मगन**, स पु (बहु) स्तनन्धया, शिशव (दोनों बहु)।

छगुनी, स स्त्री, दे 'छिगुनी'।

छछुन्दर, स स्त्री (स छुछुन्दर-री) गन्धमुखी, दिवान्धिका, दीर्घतुण्डी २ अग्निक्रीडनकभेद।

छजना, क्रि अ, दे 'फबना'।

छज्जा, स पु (हिं छाजन) नीभ, पटलप्रान्त पट, चाल, नीम, वलीक ५ २ प्रग्रीव, वरण्ड, वितर्दी दि (स्त्री)।

छटपटाना, क्रि अ (अनु) दे 'तड़फड़ाना' २ अनिर्वृत अशांत व्याकुल (वि) भू ३ अत्यंत अभिलष (भ्वा उ से)।

छटपटी, स स्त्री (हिं छटपटाना) अधीरता, आकुलता २ लालसा, तीव्रोत्कंठा।

छटाँक, स स्त्री ([illegible] षटङ्क) सेटक-सेर षोडशांश ।

छटा[1]**,** स स्त्री (स) कांति दीप्ति द्युति (स्त्री) प्रभा २ चारुता शोभा सौन्दर्य रूप ३ दामिनी, विद्युत (स्त्री)।

छटा[2]**,** वि दे 'छठा'।

छठा, वि (स षष्ठ ष्ठी ष्ठम्)।

छठी, स स्त्री (स षष्ठी) जन्मतः षष्ठे दिवसे षष्ठीदेवीपूजा।

—का दूध याद दिलाना, मु, अनुशास् (अ प से) दण्ड (चु)।

छड़, स स्त्री पु (स शर >) (१ २) धातु काष्ठ दंड १ एक, यष्टि (स्त्री) लगुड ।

छड़ा[1]**,** स पु (हिं छड़) पादभूषणभेद ।

छड़ा[2]**,** वि (हिं छाँड़ना) एक, एकाकिन्, असहाय, अद्वितीय एकल ।

छड़िया, स पु (हिं छड़ी) द्वारपाल, दौवारिक ।

छड़ी स स्त्री (हिं छड़) यष्टि (स्त्री) दण्ड २ वेत्र वेत्रयष्टि

छत, स स्त्री (स छत्र >) छदिस (न), छदि (स्त्री) पटल २ अन्तःपटल, अन्तश्छादन, पटल ३ वितान उल्लोच ।

छतरी, स स्त्री (स छत्र) शतशलाका, आतपत्र, आतपवारण, छायामित्र, पटोटज २ मंडप प ३ कपोतानां वेणुच्छत्रम् ।

छतीसा, वि (हिं छत्तीस) धूर्त मायिक मायिन्, छलिन्, कापटिक।

छतीसी वि स्त्री (हिं छतीसा) छलिनी, मायिन्, कापटिकी, २ कुलटा, पुंश्चली।

छत्ता, स पु (स छत्र) करंड, मधुकोश, चषाल, छत्रक २ गण, समूह ३ छत्र, आतपत्रम्।

छत्तीस, वि [स षट्त्रिंशत् (नित्य स्त्री)] स पु उक्ता संख्या, तदंकौ (३६) च।

छत्तीसवाँ, वि (हिं छत्तीस) षट्त्रिंशत्तम [illegible]

छत्र, स पु (स न) दे 'छतरी' २ राजच्छत्र ३ भूच्छत्र ४ (खुमी) छत्रक-कम्।

—छाँह, [illegible] स्त्री, छत्रच्छाया, शरण, आश्रय।

—धारी,—पति, [illegible] पु, नृप, भूप ।

छत्री, स पु, दे, 'क्षत्रिय', २ दे 'छतरी'।

छदाम, स पु (हिं छ+दाम) पणचतुर्थ, दे दमड़ी'।

छद्म, स पु [स छद्मन् (न)] छल, कपट २ गोपन गूहन ३ व्याज, मिषम्।

छन, स पु (अनु) छणिति, शब्द ध्वनि (पु) सीत्कार २ क्वणित, शिंजितम्।

छन, स पु, दे 'क्षण'।

छनक, स स्त्री (अनु) छणच्छण झणझण शब्द निनद, छणच्छणायित, झणझणायित, दे 'छन्' (१ २)।

छनकना, क्रि अ (अनु छनछन) छणच्छणायते झणझणायते (ना धा), छणच्छण शब्द कृ, क्वण (भ्वा प से), शिंज (अ आ से) २ सीत्कार कृ।

छनकमनक, स स्त्री (अनु) शिंजित, रणित २ दे 'साजबाज'।

छनकाना, क्रि स, व 'छनकना' के प्र रूप।

छनछनाना, क्रि अ स, दे 'छनकना', छनकाना ।

छनना, क्रि अ (स क्षरण) तितउना शुध् (दि प अ), निर्गल् क्षर् (भ्वा प से) २ क्षतविक्षत (वि) भू।

छनवाना, छनाना, क्रि प्रे, व छानना' के प्रे रूप।

छनाक-का, स पु (अनु) दे 'छनक'।

छन्न, वि (स) आ प्र-सम्म, छन्न आ प्र म, वृत, निगूढ, पिहित २ लुप्त, तिरोहित, अदृष्ट।

छप, स स्त्री (अनु) आस्फालन, ध्वनि (पु)-शब्द २ आस्फालन, विक्षेप ।

छपका, स पु (अनु) जल-आस्फाल विक्षेप २ पिटकपिधानम्।

छपछपाना, क्रि अ (अनु) छपछपायते (ना धा), छपछपशब्दं कृ २ ईषत् नृ (भ्वा प से)।

छपना, क्रि अ (हिं चपना = दबना) अङ्क् लांछ (कर्म), मुद्रांकित चिह्नित (वि) [illegible]

छपरख(खा)ट, स स्त्री (हिं छप्पर+खाट) •मशहरीखट्वा।

छपवाना, क्रि प्रे, व 'छापना' के प्रे रूप।

छपाई, स स्त्री (हिं छापना) (मुद्राक्षरैः) अंकन, मुद्रण २ अंकन-मुद्रण, प्रकार।

छपाका, स पु (अनु) जलास्फालनशब्द २ तोयास्फाल।

छप्पन, वि [स षट्पञ्चाशत् (नित्य स्त्री)] स पु उक्ता संख्या, तदंको (५६) च।

छप्पय, स पु (सं षट्पद) हिंदी छन्दोभेद।

छप्पर स पु (हिं छोपना) तृण, छदि (स्त्री) पटल २ उटज ज, कुटीर।

—खाट, स स्त्री दे 'छपरखाट'।

—छाना या डालना, क्रि स, तृणादिभि वा छद (चु)।

छबड़ा, डी स पु स्त्री (देश) दे 'टोकरा-री'।

छबि, स स्त्री, दे 'छवि'।

छबीला, वि (हिं छब) सुंदर [-री (स्त्री)] शोभन [-नी (स्त्री)] रूपवत्-कांतिमत् [-ती (स्त्री)]।

छब्बीस, वि [स षड्विंशति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता संख्या, तदंको (२६) च।

छब्बीसवाँ, वि (हिं छब्बीस) षड्विंशति तम मी मम्, षड्विंश शी शम्।

छमड, स पु (स) मातृपितृ-जनक, हीन बालक, अनाथ।

छमक, स स्त्री (अनु) दे 'ठसक'।

छमकना, क्रि अ, (अनु० छम) दे छम छमाना।

छमछम, स स्त्री (अनु) धारासार धारासपात, शब्द २ छमछम, रणित निनद, छमछमा यित, छणत्कार, झणत्कार। क्रि वि, सछण (म)त्कारम्।

छमछमाना, क्रि अ (अनु) छमछमायते (ना धा) छमछमनिनदं कृ २ दे 'चमचमाना'।

छमा, दे 'क्षमा'।

छमाछम, स स्त्री (अनु) दे 'छमछम'।

छरकना, क्रि अ (अनु छर) सछरछरशब्द विक्षिप्, विकॄ (कर्म), छरछरायते (ना धा)।

छरना, क्रि अ (स क्षरण) दे 'टपकना'।

छरहरा, वि (हिं छड) कृश, तनु, कृशाग [-गी (स्त्री)] २ उद्यमिन्, उद्योगिन्।

छर्दन, स पु (स न) प्र, छर्दि(दी) का, वम मि (स्त्री), वमन, वमथु (पु), वांति (स्त्री), उद्गार, उत्कासिका।

छर्रा, स पु (अनु छर) लोह-सीसक, गुलिका २ दे 'ककडी' ३ वेगक्षिप्त जलकण समूह।

छल, स पु (स पु न) कूट, कपट, कैतव, छद्मन् (न), प्रतारणा, प्र,वचना अतिसंधान २ व्याज, मिष ३ चतुर्दश पदार्थ (न्या)।

—बल, स पु, कूट,-उपाय कल्पना प्रबंध।

—कपट, स पु, दे 'छल' (१ २)।

—छिद्र, स पु, दे छल (१)।

छलक, स स्त्री (हिं छलकना) परिवाह, उपरिस्राव।

छलकना, क्रि अ (अनु छल) उपरि स्रु परिवह् (भ्वा प अ), अतिसिच् (कर्म), प्रवृध् (भ्वा आ से), स्फीत-वृद्ध, जल (वि) भू।

छलकाना, क्रि स, व 'छलकना' के प्रे रूप।

छलछलाना, क्रि अ (अनु) छलछलायते, (ना धा), सछलछलशब्द स्रु (भ्वा प अ)।

छलना, क्रि स (स छलन) छलयति(ना धा), अति अभि, सधा (जु उ अ), प्र वञ्च् (प्रे), वध् (चु)। स स्त्री, दे 'छल' १।

छलनी, स स्त्री (स्त्री चालनी) तितउ।

—करना, मु, अनेकच्छिद्र निर्भिद् (रु प अ)-व्यध (दि प अ)।

छलाँग, स स्त्री (हिं उछल+स अंग) प्लव, प्लवन, प्लुत ति (स्त्री), हाप झपा, वल्गितम्।

ऊँची—, स स्त्री, उद्, प्लव प्लुति (स्त्री)-पतन इ।

लंबी—, स स्त्री, प्र, प्लव प्लुति इ।

—मारना, क्रि स, (ऊँची)उत्पत्(भ्वा प स), उत्प्लु (भ्वा आ अ)। आगे(आगे) वल्ग् (भ्वा प से), प्लु। (नीचे) अवप्लु।

छलावा, स पु (स छल>) मिथ्या, अनल अग्नि (पु)-दीप्ति (स्त्री), दीप्त्याभास, २ मायादृश्य, इन्द्रजालम्।

छलित, वि (स) विप्रलब्ध, वंचित, प्रतारित।

छलिया, वि दे 'छली'।

छिछला, वि , (हिं तुच्छ) अल्प-गाध, जल, गा(गा)मीर्यशून्य, उत्तान, गाध ।

छिछलाई, सं स्त्री (हिं छिछला) गाधता, गभीरताऽभाव ।

छिछली, सं स्त्री (हिं छिछला) घटदाक लनारण, बालक्रीडाभेद ।

छिछोरा, वि (हिं छिछला) क्षुद्र, अधम, अधम, तुच्छ, गाम्भीर्यशून्य ।

छिछोर(रा)पन, स पु (हिं छिछोरा) क्षुद्रता, गभीरताऽभाव , अधमता, तुच्छता ।

छिटकना, कि अ, (सं क्षिप्त >) अवा-आ प्र वि-कृ (कर्म), विक्षिप (कर्म), प्रसृ (भ्वा, प अ) २ प्रकाश विपुल (भ्वा आ हे) ।

चाँदनी का—,स पु कौमुदीप्रसार, ज्योत्स्ना विस्तार ।

छिटकाना, कि स, व 'छिटकना' के सकर्मक रूप ।

छिड़कना, क्रि स (हिं छिटकना) २ अव भा नि, सिच (तु प अ) अभि प्र सम-उक्ष (भ्वा प से), वि-दूर-क्षणात् विक्षिप् (तु प अ)-किॄ (तु प से) ।

छिड़कवाना, छिड़काना, व 'छिड़कना' के प्रे रूप ।

छिड़काव, सं पु (हिं छिड़कना) अव भा, सेक , प्रोक्षणम् ।

छिड़ना, कि अ (हिं छेड़ना) आ प्र रभ् (कर्म), उप प्र क्रम् (कर्म) ।

छितरना, कि अ , दे 'बिखरना' ।

छित्ति, स स्त्री (स) छेदन, लवन, कृन्तनं, व्रश्चनम् ।

छिदना, कि अ , व 'छेदना' के कर्म रूप ।

छिदरा, वि (स छिद्र >) विरल, सच्छिद्र पेलव, तनु २ जीर्ण शीर्ण ।

छिदाना, कि प्र व 'छेदना' के प्रे रूप ।

छिदि, स स्त्री (स) कुठार, परशु । २ वज्र -ज्र, कुलिश, पवि ।

छिद्र, स पु (स न) विवर, सुषिर, रन्ध्र, बिल २ दोष , वैकल्य, न्यूनता ।

छिद्रान्वेषण, सं पुं (सं न) पुरोभागित्व, दोषग्राहित्व, निंदकत्वम् ।

छिद्रान्वेषी, वि (सं सिन्) पुरोभागिन् , दोषैकदृश् (पु), दोषग्राहिन् निंदक ।

छिद्रित, वि (सं) सच्छिद्र, सरन्ध्र, सविवर, २ विद्ध ।

छिन, स पुं दे 'क्षण' ।

छिनना, कि अ, व 'छीनना' के कर्म रूप ।

छिनरा, वि पु , (हिं छिनरी) व्यभिचारिन्, परदारगामिन् ।

छिनरी, वि स्त्री (स छिन्न+नारी >) कुल्टा, व्यभिचारिणी ।

छिनवाना, छिनाना, कि प्रे , व 'छीनना' के प्रे रूप ।

छिनाल, स स्त्री , दे 'कुल्टा' ।

छिन्न, वि (स) कृत्त, लून, दात, दित, छात, छित, वृक्ण ।

—भिन्न, वि (सं) अवा आ प्र वि-कीर्ण, निरस्त २ लून, कृत्त, खण्डित ३ ३ भस्त व्यस्त ।

छिपकली, छिपकी, सं स्त्री (हिं चिपकना) गृहगोधा पिका, क्ष्वेडा धी, मुसली, गृहालिका, कुड्यमत्स्य २ तन्वी (नारी) ३ कर्णभूषण भेद ।

छिपटी, स स्त्री (स चिपिट >) तष्ट दारु दारुलम् ।

छि(छु)पना, कि अ, [स क्षिप्+(परदा आदि) डालना] तिरोभू , अन्तर् इ (अ, प अ) ली (दि आ अ), अन्तर्-तिरो,धा (कर्म) अदृश्य प्रच्छन्न-अपवारित (वि) भू ।

छिपा, वि (हिं छिपना) अन्तरित, तिरो, हित भूत ।

छिपा रुस्तम, वि पुं , अज्ञात अप्रसिद्ध-अवि ख्यात-गुणिन् ।

छिपे छिपे, कि वि गूढं, गुप्त, निभृत, प्रच्छन्नम् ।

छिपाना, कि स , हिं (छिपना) अन्तर् तिरो,धा (जु उ अ), अपवृ (प्रे), गुह (भ्वा उ से), प्रच्छद (प्रे) । स पु , अंतर्धानं, तिरोधान, गू(गो)हनं, गोपन, संवरणम् ।

छिपाव, स पुं (हिं छिपाना) दे 'छिपाना' सं पुं ।

छियानवे, वि तथा स पुं , दे, 'छानवे' ।

छियालिस, वि [स षटचत्वारिंशत् (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदकौ (४६) च।

छियासठ, वि [स षट्षष्टि (नित्य स्त्री)] स पु उक्ता सख्या, तदकौ (६६) च।

छियासी, वि, [स षडशीति (नित्य स्त्री)]। स पु उक्ता सख्या, तदकौ (८६) च।

छिल्का, स पु (स शल्क) (फलादि का) त्वच (स्त्री) २ वल्क -ल्क, वल्कल ल ३ तुष, बुष, बुसम्।

—उतारना, कि स, दे 'छाल उतारना'।

छिलना, कि अ, व 'छीलना' के कर्म रूप।

छिलवाना, छिलाना, कि प्र, व 'छीलना' क प्र रूप।

छिहत्तर, वि [स षटसप्तति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदकौ (७६) च।

छींक, स स्त्री (स छिक्का) क्षुत ना, क्षव, क्षवथु (पु) क्षुत ति (स्त्री)।

छींकना, कि अ (हिं छींक) क्षु (अ प से), क्षुत क्षव छिक्का कृ।

छींट, स स्त्री (स क्षिप्त >) (जलादिका) कण णिका, बिंदु (पु), शीकर, पृषत २ वस्त्रभेद, चित्रवसनम्।

छींटा, स पु (हिं छींट) दे 'छींट' १ शीकरवर्ष, पृषतपात २ जल, आस्फाल विक्षेप ४ अक, लाछन ५ व्यग्याक्षेप।

—देना या मारना, कि स, पृषतै शीकरै क्लिद् (प्रे)-आर्द्रयति (ना धा)।

छी, अव्य, दे 'छि'।

—छी करना, मु, गुप् (पचमी के साथ सन्नत रूप, जुगुप्सते), कुत्स्, (चु आ से), गर्ह (चु उ से)।

छीका, स पु (स शिक्या) शिक्यम्।

छीछालेदर, स स्त्री (अनु छी छी) दुर्दशा, दुर्गति (स्त्री)।

छीज, स स्त्री (स क्षय) अपचय, ह्रास।

छीजना, कि अ (स क्षयणम्) क्षि विशृ (कर्म), ह्रस् (भ्वा प से)।

छीट, स स्त्री दे 'छींट'।

छीनना, कि स, (स छिन्न>) आच्छिद् (क्र प अ), झटिति कृष् (भ्वा प अ), आक्षिप्य ग्रह् (क्र् प से)-हृ (भ्वा प अ) आच्छिद्य-बलात् अपहृ ग्रह्।

छीपी, स पु (हिं छापना) वसनमुद्रक वस्त्रचित्रक।

छीर, स पु दे 'क्षीर'।

छीलना, कि स (हिं छाल) दे 'छाल उतारना' २ तनू कृ, त्वक्ष-तक्ष (भ्वा प से) ३ अप-व्या-मृज (अ प वे सु) विलुप् (प्रे)

छुआछूत, स स्त्री (हिं छूना) अस्पृश्य स्पर्श अशुचिसंसर्ग २ स्पृश्यास्पृश्यविचार।

छुईमुई, स स्त्री दे 'लज्जावती'।

छुछुदर, स पु, दे 'छछूदर'।

छुटकारा, (हिं छूटना) (दु खादि से) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) मोचन २ वर्जन, रहितत्व ३ निश्चिंतता निर्वृति (स्त्री)।

—पाना, कि अ, वि-निर्-मुच (कर्म), मोक्ष् तद्धृ विसृज (कर्म)।

छुट्टी, स स्त्री (हिं छूटना) दे 'छुटकारा' २ अवकाश, क्षण, कार्यनिवृत्ति (स्त्री) ३ अनध्याय अनध्यायदिवस, विश्रामदिवस ४ विश्राम, काल समय।

छुड़वाना, छुड़ाना, कि प्रे, व 'छोड़ना' के प्रे रूप।

छुद्र, वि, दे 'क्षुद्र'।

छुधा, स स्त्री, दे 'क्षुधा'।

छुपना, छुपाना, क्रमश कि अ तथा कि स, दे 'छिपना' तथा 'छिपाना'।

छुरा, स पु (स क्षुर) कृपाण, बृहच्छुरिका।

छुरी, स स्त्री (स) क्षुरी, छुरिका, कृपाणी णिका, असि धेनुका पुत्रिका।

—मारना, कि स, छुरिकया व्यध (दि प अ), छुर (तु प से), क्षण् (त प से)।

छुवा(ला)ना, कि प्रे, व 'छूना' के प्रे रूप।

छुहारा, स पु (स क्षुध+हार >) खर्जूर भेद, छोहारा २ पिंडखजूरफल, गोस्तनाकार पिंड, खर्जूरी, खर्जूरी।

छू, स स्त्री (अनु) मत्रपाठानतर-फूत्कार फूत्कार।

—मतर होना, मु, झटिति तिरोभू।

छूछा, वि (स तुच्छ) नि सार, असार २ रिक्त शून्य, शून्यगर्भ ३ निर्धन।
छूट, सं स्त्री (हिं छूटना) दे 'छुटकारा' (१, २) ३ अवकाश, क्षण ४ ऋणमोक्ष ५ स्वातंत्र्य स्वच्छंदता ६ प्रमाद, स्खलितम्।
छूटना, कि अ (स छोटन=काटना>) वि, मुच (कर्म), मो-रक्ष् (कर्म), दे 'छुटकारा पाना' २ (पदार्थ) च्यु (भ्वा आ अ)-अपास् (कर्म) ३ वियुज् (कर्म), विछिद् (दि प अ)। ४ प्रचल् (भ्वा प से), प्रस्था (भ्वा आ अ) ५ (प्रमादात्) न अनुष्ठा विधा (कर्म)।
शरीर—, मृ, दे 'मरना'।
छूत, सं स्त्री (हिं छूना) म, स्पर्श, ससर्ग, सपर्क २ अस्पृश्य, स्पर्श ससर्ग ३ मालिन्य, दूषण, अशौचम्।
—का रोग, स पु, ससर्गज-सासर्गिक सक्रामक, रोग।
छूना, कि, स (छोपन) छुप्-स्पृश परामृश (तु, प अ), हस्तेन मालभ् (भ्वा आ अ), स स, सपर्क, ससर्ग, स,-स्पर्श, स्पृष्टि (स्त्री), परामर्श, आलम्भनम्।
छूने योग्य, वि, स्पृश्य, छोपनीय, परामर्शार्ह।
छूनेवाला सं पु, स, स्पर्शक, स्पृष्ट स्पर्ष्टृ (पु)।
छुआ हुआ, वि, स्पृष्ट, ससृष्ट, आलब्ध, छुप्त, परामृष्ट।
आकाश—, मु, गगन चुम्ब (भ्वा प से.) नभ स्पृश्, अत्युच (वि) वृत (भ्वा आ से)।
छूँक, छूँकाव, स पु, दे 'जब्ती'।
छूँकना, कि स (स छो=काटना>) निरुध् (रु उ अ), निवार् (चु) २ आच्छद् (चु), व्याप् (स्वा उ अ) ३ नि रुध् (वि) वृ, सर्वस्व दह (चु) आच्छिद् (रु प अ) ४ परिवृ (प्रे), परि, वेष्ट (प्रे)। ५ अव-वि-लुप् (प्रे) निर् अस (दि प से),
छेक, सं पु (स छेक >) विवर, विवर, छिद्र २ छेद, भेद ३ वि, भाग।
—अनुप्रास, स पु (स) अनुप्रासाल्कारभेद, वर्णाना सकृदावृत्ति (स्त्री) (उ० पावन पवन)
छेड़, स स्त्री (हिं छेड़ना) कोपोद्दीपन, प्रकोपनं २ परिहास व्यङ्ग्योक्ति (स्त्री) ३ लीला, विलास, हाव ४ कलह, कलि (पु)।
—छाड़, सं स्त्री, दे 'छेड़' (१, ४)।
छेड़ना, कि स (हिं छेड़ना) कुप् कुध् रुष् (प्र) २ दे 'छूना' ३ आ प्र-रभ् (भ्वा आ अ), उप प्र-क्रम् (भ्वा आ अ) ४ अर्द्, आयस् (प्रे), उपरुध् (रु उ अ) ५ अव परि हस (भ्वा प से) ६ कलह कृ। सं पु, 'छेड़'।
छेत्ता, वि (स-तृ) छेदक, लावक, छेदकर, छिद्। सं पु, वनच्छिद, काष्ठच्छिद्।
छेत्र, सं पु, दे 'क्षेत्र'।
छेद, सं पु (स) छिद्र, बिल, विवर, रन्ध्र, शुषि (षि) रं, कुहर, रोक, निर्व्यथन, वपा, सुषि (स्त्री) २ वि, नाश, वि, ध्वस ३ दोष, न्यूनता ४. वि, भाजक (गणित)।
छेदक, वि (सं) वेधक, भेदक, छेत्तृ, भेत्तृ, वेधिन् २ नाशक, ध्वसकर ३ विभाजक। स पु, वेधनी।
छेदन, स पु (सं न) वेध, वेधन छिद्रकरणं २ वि,-नाशन ध्वसन, वि, नाश ३ कर्तनं, भेदन, लवनम्।
छेदना, कि स (स छेदन>) व्यध् (दि प अ), छिद्र विधा (जु उ अ)-कृ, छिद्रयति (ना धा), निर्भिद् (रु प [illegible]), उद् समुत्-कृ (तु प से)। स पुं, दे 'छेदन'।
छेदने योग्य, वि, छेत्तव्य, छेदनीय, वेध्य।
छेदनेवाला, दे 'छेदक'।
छेदा हुआ, वि, छिद्रित, छिन्न, विद्ध, निर्भिन्न।
छेदा, सं पुं (हिं छेदना) घुण काष्ठकीट २ छिद्र, रन्ध्रम् ३ घुण अन्नच्छेद।
छेदी, वि (सं दिन्) दे 'छेदक'।
छेना, सं पुं (स छेदन>) मिष्टान्नभेद
छेनी, स स्त्री (स छेदनी) तक्षणी, टंक, भ्रश्चन २ शिलाभेद।
छेम, स पुं, दे 'क्षेम'।
छेरी, सं स्त्री, दे 'बकरी'।
छेव, स पुं (स छेद) आघात, प्रहार २ व्रण ३ आगामिविपद् (स्त्री) ४ काष्ठखड।

छैल ला, स पुं (स छवि >) सुभगमन्य, ऐर, रूपगर्वित, सुवेशमानिन्, वेषाभिमानिन्।
—चिकनिया, स पु, दे 'छैल'।
छोकरा-ड़ा, स पु (स शावक >) कुमार रक, दारक बाल लक, माणवक।
छोकरापन, स पु (हिं छोकरा) बाल्य, कौमार २ चपलता, मौर्ख्यम्।
छोकरी-ड़ी, स स्त्री (हिं छोकरा) कुमारी रिका, बाला लिका, कन्या, दारिका, माणविका।
छोटा, वि (स क्षुद्र) अणु, तनु, लघु महत्त्व गौरव, रहित २ अल्प क्षुद्र, तनु शरीर ३ अनुज, अवरज, कनीयस् यवीयस् ४ अवरपद मात्र, अवर।
—बड़ा, वि, विविध, बहुविध २ उच्चावच, लघुगुरु, अणुमहत् ३ कनिष्ठज्येष्ठ।
छोटाई, स स्त्री (हिं छोटा) अणुता, लघुता लाघव, अणिमन् लघिमन् (पु), २ क्षुद्रता, नीचता।
छोटापन, स पुं, दे 'छोटाई'।
छोड़ना, क्रि स (स छोरण) उत् वि, सृज् निर्मुच् (तु प अ), उज्झ् (तु प से), त्यज् (भ्वा प अ), हा (जु प अ), परिहृ (भ्वा प अ), रह् अर्ज् (चु) २ क्षम् सह् (भ्वा आ से), क्षम् मृष् (दि प से, क्षाम्यति), तिज् (सन्नन्त = तितिक्षते) ३ क्षिप् (तु प अ), अस् (दि प से) ४ प्रमादात् न कृ अथवा अनु स्था (भ्वा प अ) ५ मोक्ष मुच (प्रे)। सं पुं, वि उत् सर्जन, त्यजन, उज्झन, परिहरणं, उत्सर्ग त्याग, परिहार इ।
छोड़ने योग्य, वि, त्याज्य, उत्स्रष्टव्य, परिहार्य।
छोड़नेवाला, स पु, विसृष्ट त्यक्तृ परिहर्तृ (पु)।
छोड़ा हुआ, वि, उत् वि-सृष्ट, त्यक्त इ।
छो(छु)ड़ाना, छोड़वाना, क्रि प्रे, व 'छोड़ना' के प्र रूप।
छोत, स स्त्री, दे 'छूत'।
छोप, स पुं, दे 'लेप'।
छोभ, स पुं, दे 'क्षोभ'।
छोर, स पुं (हिं ओर का अनु) प्रान्त, प्रात, पर्यंत, समंत, परिसर, सीमन् (पुं), सीमा २ तट टी टम्।
छोलदारी, स स्त्री (देश) क्षुद्रपटवास, लघु दूष्य-ष्य, पटगृहकम्।
छोला, स पु (हिं छोलना = छीलना) हरित, चण चणक।
छोह, सं पुं (सं क्षोभ >) स्नेह, प्रेमन् (पुं), २ दया, कृपा।
छौंक, छौंकन, सं स्त्री (अनु) दे 'बघार'।
छौंकना, क्रि स, दे 'बघारना'।
छौना, स पुं (स शाव) शाव, शावक, डिंभ, पोत, अर्भक।
छौर, स पुं, दे 'क्षौर'।

ज

ज, देवनागरीवर्णमालाया अष्टमो व्यंजनवर्ण, जकार।
जंक्शन, स पुं (अं) संयोजन, लोहपथ संगम।
जंग, स स्त्री (फा) युद्ध, संग्राम।
जंग, स पु (फा) अयोमल, अयोरस, मण्डूरं, किट्ट, सिंहाणम्।
—लगना, क्रि अ, सकिट्ट समण्डूर (वि) भू। मण्डूरेण दुष् (दि प अ)।
जंगम, वि (स) चर, चल, चरिष्णु, चलन गमन-शील २ चेतन, प्राणिन्, सजीव।
जंगल, स पु (स न) अटवी वि (स्त्री), अरण्य, कानन, वन, विपिन, कांतार २, गहन ३ मरुस्थल, मरु (पुं)।
जंगला, स पुं (पुर्त जेंगिला) काष्ठलोह शलाकावृति (स्त्री), काष्ठ-लोह गोधोलि (पु), काष्ठ अयो, जाल २ गवाक्ष, जालम्।
जंगली, वि (स जंगल) आरण्यक, अरण्यज, वन्य, वनोद्भव, जांगल [ली (ला)], अरण्य, वन २ क्रूर, हिंस्र ३ असभ्य, अशिष्ट, दुःशील। स पु, वनवासिन्, वनेचर, वनौकस् (पुं), आटविक, आरण्यक।

जगार ल, स पु (फा र) ताम्र विट् मलम् ।
जगी, वि (फा) साग्रामिक सामरिक [की (स्त्री)] युद्ध रण -सबंधिन २ क्षात्र (त्री स्त्री) आयुधिक (की स्त्री)
—जहाज, स पु रणपोत ।
—बुखार, स पु समरज्वर ।
जघा, स स्त्री (स) प्रसृता टकिका टका क २ ऊरु (पु) सक्थि (न)
जघाल, वि (स) शीघ्र द्रुत -गामिन् यायिन् धावक । स पु (स) दूत, सन्देशवाहक २ मृग ।
जघिल, वि (स) प्रनविन्, प्रधावक द्रुत गामिन् ।
जचना, क्रि अ (हि जाँचना) निरीक्ष परीक्ष (कर्म) २ दृश (कर्म) ३ उचित (वि) प्रति इ (कर्म) ।
जचवैया, स पु (हिं जाँचना) दे भाडिटर'
जंजाल, स पु (स जगद्+जाल >) कृच्छ्र कष्ट सकट दु ख बाधा २ व्यामोह चित्तविक्षेप सभ्रम ३ आवन जलगुल्म ४ बृहज्जालम् ।
जजाली, वि (हिं जजाल) उपद्रविन् कलहप्रिय ।
जजीर, स स्त्री (फा) शृङ्खला ए, निगड पाश बन्धन २ अर्गल कलाली ।
जतर, स पु, दे 'यत्र'।
जंतु, स पु (स) प्राणिन्, जीव जन्तु, भूत २ पशु, चरि, मोक ।
जत्र, स पु, दे 'यत्र'।
जंत्री, स स्त्री (हिं जत्र) यन्त्री तारकर्षणी २ पचांग, तिथिपत्रम् ।
जद, स पु (फा 'यद स छदस>) पारसी काना धर्मग्रथविशेष २ तस्य भाषा ।
जबीर, जबीरी नीबू, स पु (स जम्बीर) जम्भ जभल, जभीर दत कर्षक हृषक हर्षण ।
जबु, स पु (स स्त्री) (वृक्ष) जबू -बु (स्त्री)। (फल) जबु (बु)-फल वाविलम् ।
जबुक, स पु (स) शृगाल दे 'गीदड' २ नीच अपसद, जाल्म ।
जबुद्वीप, स पु (स) भूमे सप्तद्वीपेष्वन्यतम ।
जबू स स्त्री (स) दे जबु' २ काश्मीरदेशे नगरविशेष ।
जभ, स पु (स) हनु (पु स्त्री) २ राक्षस विशेष ३ दे 'जभाई ।
जभारि, स पु (स) इ द्र, सुरपति २ इन्द्र वज्र ज, ३ अग्नि ।
जभाई, स स्त्री (हिं जभाना) जभा, जभका जृम्भण जृम्भिका जृम्भ मा, जृम्भित हाफिका ।
जभाना, क्रि अ (स जभन) ज(जृ)म्भ् (भ्वा आ से) वि जृम्भ (भ्वा आ से) ।
जई, स स्त्री (हिं जौ) यवसदृशधान्यभेद, यवी २ यवाकुर ।
ज़ईफ, वि (अ) दे बूढा ।
ज़ईफी, स स्त्री (अ) दे बुढापा' ।
ज़क, स स्त्री (फा) पराजय २ हानि (स्त्री) ३ लज्जा ।
जकड़ना, क्रि स, (स युक्त+करण>) गाढ दृढ बध (क्र् प अ) द्रढयति (ना धा) दृढीकृ ।
ज़कात, स स्त्री (अ) दान त्याग, २ कर, शुल्क -कम् ।
ज़ख़ीरा, स पु (अ) कोष निधि, भांडार २ समूह सचय समार ३ वृक्षसवर्धन स्थानम् ।
ज़ख़्म, स पु (फा) दे घाव ।
—ताज़ा या हरा होना, मु, अतीत दुःख पुन आवृत् (भ्वा आ से) स्मृ (कर्म) ।
ज़ख़्मी, वि, दे घायल' ।
जग¹, स पु [स जगत् (न)] जगती संसार २ लोका जना ।
जग², स पु, (स यज्ञ) याग, मख क्रतु ।
जगण, स पु (स) छन्द शास्त्रे गणभेद गुरुमध्यग' गण (उ० महेश) ।
जगत, स पु [स जगत् (न)] भुवन, ब्रह्माड चराचर विश्व जगती, संसार सृष्टि (स्त्री) निविष्टप, लोक २ वायु (पु) ३ शिव ।
जगती, पु स्त्री (स) ब्रह्माड विश्व २ पृथिवी २ वैदिकछंदोभेद ।
—तल, स पु (स न) भूतल पृथिवी ।
जगदंबा यिका, स स्त्री (स) दुर्गा उमा, पार्वती ।
जगदाधार, स पु (स) ईश्वर २ पवन ।

जगदीश, स पु (स) परमेश्वर, जगन्नाथ, जगत्पति (पु) २ विष्णु।

जगदीश्वर, स पु (स) दे 'जगदीश' (१)।

जगद्गुरु स पु (स) ईश्वर २ शिव ३ नारद ४ सुपूज्यपुरुष ५ उपाधिभेद।

जगद्दीप, स पु (स) परमेश्वर परमात्मन् २ सूर्य रवि।

जगना, क्रि अ (हिं जागना) दे 'जागना २ अवहित सावधान (वि) भू ३ सवेग उद्भू ४ दे 'चमकना'।

जगन्नाथ, स पु (स) जगदीश २ विष्णु ३ पुरी विष्णुमूर्ति (स्त्री) ४ पुरीनामक तीर्थम्

जगमगा, वि (अनु) प्रकाशित २ दीप्तिमत्।

जगमगाना, क्रि अ (अनु) दे 'चमकना' (१)।

जगमगाहट, स स्त्री, दे 'चमक' (१ २)।

जगह, स स्त्री (फा जायगाह) स्थान, स्थल, प्रदेश २ अवकाश प्रसर, अन्तर ३ अवसर, समय ४ पद, पदवी वि (स्त्री)।

जगाना, क्रि स, दे 'जागना' के प्रे रूप।

जघन, स पु (स न) स्त्रीकट्या पुरोभाग २ नितम्ब

—कूपक, स पु (स) कुकुन्दर, ककुन्दरम्।

जघन्य, वि (स) अन्त्य, अन्तिम, चरम २ गर्ह्य, त्याज्य ३ क्षुद्र, निकृष्ट, अधम।

जचना, क्रि अ, दे 'जँचना'।

जच्चा, स स्त्री (फा) प्रसूता-तिका माता, परया, प्रजाता।

—खाना, स पु (फा) अरिष्ट, सूति-सूतिका, गृहम्।

जजमान, स पु, दे 'यजमान'।

जज, स पु (अ) न्यायाधीश, धर्मन्याय, अध्यक्ष ३ (आ) प्राड्विवाक, धर्माधिकारिन्, निर्णेतृ २ परीक्षक, विवेकिन्।

जजिया, स पु (अ) कर-राजस्व-भेद (इस्लाम)।

जज़ीरा, स [illegible] (अ) दे 'द्वीप'।

जटा, स स्त्री (स) जटा-ट, जटी-टि (स्त्री), जूट, जूटक २ जटामासी, जटिला, लोमशा, जटाला (सुगन्धितद्रव्यम्)।

—जूट, सं पु (सं) जटासमूह २. शिवजटा।

—धारी, वि (स रिन्) जटाधर, सजूट। २ शिव ३ गुल्मभेद।

—मासी, सं स्त्री, दे 'जटा' (२)।

जटायु, स [illegible] (सं) दशरथसख, जटायुस (पु)।

जटाल, वि (स) जटा, धर धारिन्।

जटित, वि (सं) अनुविद्ध, खचित, प्रस्तुत, प्रणिहित।

जटिल, वि (स) जटालक, जटिक, जटाधर, जटिन् २ अस्पष्टार्थ, दुर्बोध, गहन, गूढ़, कठिन, क्लिष्ट ३ क्रूर, हिंस्र। (स पु) सिंह २ अज, छाग ३ शिव ४ ब्रह्मचारिन् ५ परिव्राजक।

जटिलता, स स्त्री (स) दुर्बोधता, गहनता, गूढ़ता, कठिनता।

जटी, वि (स टिन्) दे 'जटिल १'। सं पु, शिव २ प्लक्ष।

जठर, स पु (सं पु न) उदर, कुक्षि (पु), तुन्द २ अन्न-आम पक्व,-आशय, कोष्ठ, पिचण्ड ३ उदररोगभेद ४ शरीरम्। वि, वृद्ध २ कठिन।

—अग्नि, स पु (स) जठरानल।

—आमय, स पु (सं) जलोदररोग २ अती(ति)साररोग।

जड़, वि (सं) अचि,-चेतन, निर्जीव, प्राण-हीन निष्प्राण २ स्तब्ध, निश्चेष्ट, हतेन्द्रिय ३ मन्दबुद्धि, मूर्ख ३ हिमग्रस्त ४ शीतल ५ मूक ६ बधिर ७ मलभिज्ञ, अबोध ८ मूढ़, मोहग्रस्त। स पु (स न) जल २ सीसकम्।

जड़, स स्त्री (स जटा) मूल, अंघ्रि (पु), बुध्न, मर्म २ आधार, उपष्टम्भ मूल ३ कारण, हेतु (पु)।

—उखाड़ना, उत्पा, उन्मूल (चु), उत्पाट्। (भ्वा प से), व्यपरुह् (प्रे) समूल उद् हृ (भ्वा प अ) उच्छिद् (रु प अ)।

—जमना, क्रि अ, दृढमूल-बद्धमूल (वि) भू, मूल बन्ध् (क्र प अ)।

जड़ता, स स्त्री (स) अचेतनता, निर्जीवता,
जड़त्व, स पु (स न) निष्प्राणता २ मूर्खता,

जड़ता २ अचलता, स्तब्धता, ४ हिमग्रस्तता, शीतलता।

जड़ना, क्रि स (सं जटन) जट् (प्रे), अनुव्यध् (दि प अ), उत्खच् (चु), प्रणिधा (जु उ अ), प्रनिबध् (क्र प अ) २ आ नि धा, अवरुद्ध निविश (प्रे) ३ प्रह (भ्वा प अ), आहन् (अ प अ) ३ परोक्षे आ-अभि क्षिप (तु प अ)। स पु, जटन, उत्खचन, अवरोपण प्रहरण इ।

जड़ने योग्य, वि जटयितव्य, उत्खचनीय इ।

जड़नेवाला, स पु, रत्न अनुवेधक, मणि, प्रणिधायक, जटयितृ।

जड़वाना, जड़ाना, क्रि प्रे, व 'जड़ना' के प्रे रूप।

जड़ाई, स स्त्री (हिं जड़ना) जटन, वेतन भृति (स्त्री) २ दे 'जड़ना' सं पु।

जड़ाऊ, वि (हिं जड़ना) रत्न, खचित-जटित अनुविद्ध।

जड़ावर, सं पु (हिं जाड़ा) उष्ण ऊर्णामय ओर्ण, वस्त्राणि-वासांसि (न बहु)।

जड़िमा, सं स्त्री (सं मन् पु) दे 'जड़ता'।

जड़िया, सं [illegible] (हिं जड़ना) २ रत्न मणि, कार १ रत्न, जटक-खचक। दे 'जड़ने वाला'।

जड़ी, सं स्त्री (हिं जड़>) ओषधी-औषध, मूलं, काष्ठौषधम्।

—बूटी, सं स्त्री, ओषधी भि (स्त्री), रोगहर हरितक, आरण्यौषधम्।

जतन, स [illegible], दे 'यत्न'।

जतलाना, जताना, क्रि स (स ज्ञात>) वि, ज्ञा (प्रे ज्ञापयति), बुध-अवगम् (प्रे) २ (पूर्व) अनु प्र बुध (प्रे), उपदिश (तु प अ)।

जती, स पु (स यतिन्) यति, जितेन्द्रिय, सन्यासिन्।

जतु, स पु (स न) जतुक-लाक्षा, राक्षा।

जत्था, स पु (स यूथ) गण, संघ, समूह।

जतुक, स पु (स न) जतुक, ग्रीवास्थि (न)।

जदीद, वि (अ) नव, नवीन।

जन, [illegible] (सं) मानव, मनुष्य २ लोक, जना ३ प्रजा ४ सेवक ५ समूह ६ भवन ७ ८ लोक-व्याप्तिनि, विरोध।

जनक, सं पु (स) जन्मद, जनयितृ, उत्पादक २ पितृ जनितृ, (पु), तात, बीजिन, वप्तृ ([illegible]) ३ मिथिलाराजवंशोपाधि (पु) ४ सीरध्वजो जनक।

—पुर, स पु (स न) मिथिलाया राजधानी।

—नंदिनी, स स्त्री (स) सीता, वैदेही।

जनता, सं स्त्री (स) जन ता, लोक का, प्रजा-जा, प्रकृतय (बहु)।

—वाद, सं पु ([illegible]) किंवदन्ती जन प्रवाद।

—वासा, म पु (स स) वरयात्रागृहम्।

—श्रुति, स स्त्री (स) दे 'जनवाद'।

—सत्या, स स्त्री ([illegible]) मनुष्य प्रजा लोक, सत्या।

जनना, क्रि स (स जनन) प्रसू (अ आ से), उत्पद् (प्रे), जन् (प्र जनयति)।

जननी, स स्त्री (स) दे 'माता' २ उत्पादिका।

जननेन्द्रिय, स स्त्री (स न) लिंग, मेढ़ २ योनि (स्त्री), भग।

जनपद, स पु (सं) देश २ लोक।

जनम, स पु, दे 'जन्म'।

जनमना, क्रि. अ, दे 'जन्म लेना'।

जनयिता, वि (सं तृ) जन्मद, उत्पादक। स पु (सं) तात, पितृ, बीजिन्, जनक।

जनयित्री, स स्त्री (स) जननी, मातृ (स्त्री), दे 'माता'।

जनरल, स पु (अ) सेनानायक। वि, सामान्य, साधारण।

जनवरी, स स्त्री (अ जेनुअरी) पौषमाघ, आंग्लवर्षस्य प्रथममास।

जनान्तिक, अव्य, (स अव्य) रंगमंचे अभिनेतु रहस्य वच कथनम् (मा०) अपवार्य (अव्य)।

जनाई, स स्त्री (हिं जनाना) सूतिका, दे दाइ' २ गर्भमोचनभृति (स्त्री)।

जनाज़ा, स [illegible] (अ) दे 'अरथी' २ शव।

ज़नानखाना, स पु (फा) अन्त पुर, अवरोध।

जनाना, क्रि म (हिं जानना) दे 'जतलाना'।

जनाना, क्रि प्रे (हिं जनना) व 'जनना'। के प्रे रूप।

जनाना, वि (फा) स्त्रैण, स्त्रीजातीय। सं पु, अंतःपुर २ नारी ३ पत्नी।
जनानी, वि स्त्री (फा) स्त्रैणी, स्त्रीसदृशी। सं स्त्री, नारी २ पत्नी।
जनाब, सं पु (अ) महाशय, महोदय, श्रीमत् पु।
—आली, सं पु (अ) मान्यवर, महाशय महोदय।
—मन, सं पु (अ + फा) प्रियमहाशय।
जनित, वि सं उत्पादित २ जात, उत्पन्न।
जनिता, सं पु सं जनितृ जनयितृ जनक, पितृ पु।
जनित्री, सं स्त्री सं जनयित्री, जननी।
जनी[1]नि, सं स्त्री सं नारी २ मातृ (स्त्री) ३ पुत्रवधू स्त्री ४ जननम्।
जनी[2], सं स्त्री (सं जन दासी, सेविका २ पुत्री। वि स्त्री, जनिता उत्पादिता।
जनेऊ, सं पु, दे 'यज्ञोपवीत'।
जनेत, सं स्त्री (सं जन) बरयात्रा।
जन्म, सं पु [सं जन्मन् (न)] उद्‌भव, जनि (स्त्री), जनी, जनिका, उत्पत्ति प्रभृति (स्त्री), जनुः जनु (स्त्री)। २ जीवनम्।
—अंतर, सं पु (सं न) अन्य अपर पुनर्, जन्मन् (न)।
—अंध, वि (सं) जात्यंध, जन्मांध।
—अष्टमी, सं स्त्री (सं) श्रीकृष्णजन्मदिवस, भाद्रपदमासस्य कृष्णाष्टमी तिथि (स्त्री)।
—दाता, सं पु (सं दातृ) पितृ (पु) २ ईश्वर।
—दिन, सं पु (सं न) जन्म जनि जनु, दिवस।
—पत्र, सं पु (सं न) / —पत्री, सं स्त्री (सं) जन्म, पत्रिका-योगपत्रम्।
—भूमि, सं स्त्री (सं) जन्मदेश, स्व-देश राष्ट्र-विषय।
—रोगी, वि, (सं गिन्) सदारोगिन्।
—स्थान, सं पु (सं न) जन्म-जनि, भूमि (स्त्री)।
जन्मी, सं पु (सं मिन्) प्राणिन्, जीव।
जन्मी, वि (सं जन्मन् >) सहज, स्वभावज, स्वाभाविक नैसर्गिक [की (स्त्री)]।
जन्मेजय, सं पु (सं जनमेजय) विष्णु २ ३ नृपनाम, विशेष।
जन्मोत्सव, सं पु (सं) जनि जनु-पर्वन् (न)-क्षण।
जन्य, सं पु (सं) पितृ (पु), जनक २ वरपक्षीय ३ साधारणो जन ४ किंवदंती। (सं न) जन्मन् (न) २ उत्पन्न वस्तु (न) ३ देह ४ हट्ट ५ युद्ध ६ निंदा ७ राष्ट्र ८ जाति (स्त्री) ९ लोका, प्रजा। वि, जात, उद्‌भूत, उत्पन्न २ जन विषयक लौकिक ३ देहीय, राष्ट्री(ष्ट्रि)य, जातीय ४ जनयितव्यमाण।
जन्या, सं स्त्री (सं) जननीसखी २ वधूसखी ३ आनन्द, मोद ४ प्रीति (स्त्री), स्नेह।
जप, सं पु (सं) मुहुर्मुहुर्मंत्रोच्चारणम्।
—तप, सं पु [सं जपतपस् (न)] धर्मक्रिया, उपासना, सध्यावंदनम्।
जपना, क्रि सं (सं जपन) जप् (भ्वा प से), जाप कृ, मुहुर्मुहुर्मंत्र उच्चर् (प्रे)।
जपनी, सं स्त्री (हिं जपना) जपमाला, जपनी २ जपनीकोष, गोमुखी।
जपी, सं पु (सं जपिन्) जापक, जपितृ (पु)।
—तपी, सं पु (सं जपतपस् >) उपासक, भक्त, पूजक।
जफा, सं स्त्री (फा) दे 'अत्याचार'।
—कश, वि (फा) सहिष्णु, सहनशील २ परिश्रमिन्।
जब, क्रि वि (सं यावत् >) यदा, यस्मिन् काले।
—कभी, यदाकदाचित्, यदापि।
—कि, यदा, यावत्।
—जब, यदा यदा।
—तक,-तलक, यावत्, यदापर्यन्तम्।
—तक तब तक, यावत् तावत्।
—तब, यदा तदा, काले काले, कदापि, कदाचित्।
—देखो तब, सदा, सर्वदा।
—से, यदा प्रभृति, यस्मात् कालात्।
—होता है तब, प्रायः, प्रायशः, प्रायेण।
जब(म)डा, सं पु (सं जम) हनु (पु. स्त्री), हनू (स्त्री)।

निचला—, कुब्ज, चिबु (पु) पीचम् ।

ज़बर, वि (फा) बलिन्, शक्तिमत् २ दृढ ।

—दस्त, वि (फा) दे 'जबर' ।

—दस्ती, सं स्त्री (फा) अत्याचार, अन्याय । क्रि वि, बलात्, हठात्, प्रसभ, प्रसह्य ।

—दस्ती करना, क्रि स, पीड् (चु), अर्द् (प्रे) बाध् (भ्वा आ से) ।

ज़बरन्, क्रि वि (अ जब्रन्) दे 'जबरदस्ती' क्रि वि ।

ज़िबह, सं पु (अ) हिंसा, हत्या, घात ।

—करना, क्रि स, विशस (भ्वा प से), हन् (अ प अ), व्यापद् (प्रे) ।

ज़बान, सं स्त्री (फा) जिह्वा, रसज्ञा, रसना २ शब्द, वाक्य ३ प्रतिज्ञा ४ भाषा ।

—दराज़, वि, जल्प(पा)क, वावदूक ।

—दराज़ी, सं स्त्री, जल्पकता, वावदूकता ।

—बंदी, सं स्त्री, मौन, वाग्यम २ भाषण निरोध ३ जिह्वास्तम्भ (रोगभेद) ।

—का मीठा, मु, मधुरभाषिन्, मधुजिह्व ।

—को मुँह में रखना, मु, जोष-तूष्णीं स्था (भ्वा प अ), मौन भज् (भ्वा उ अ) ।

—देना या हारना, मु, दे 'प्रतिज्ञा करना' ।

—पकड़ना, मु भाषणात् निवृत् (प्रे)-नि विनि-वृ (प्रे) ।

—बंद करना, मु, मौन लम् (प्रे, लम्भयति) २ निरुत्तरी कृ ।

—बंद होना, वक्तुं न पार् (चु), तूष्णीं स्था ।

ज़बानी, वि (फा जबान) शाब्द [-ब्दी (स्त्री)], शाब्दिक [-की (स्त्री)], वाचिक वाचनिक मौखिक [-की (स्त्री)] । क्रि वि, स्मृत्या-वाचा (तृ एक) मुखेन, अभि खिनम् ।

—पढ़ना, क्रि स, स्मृत्या पठ् (भ्वा प से) उच्चर् (प्रे) ।

—जमा खर्च, मु, प्रजल्प-पन, निरर्थक वचनानि (बहु) ।

ज़बून, वि (फा) निकृष्ट, गर्ह्य, निन्द्य २ अबल, निर्बल ।

ज़ब्त, सं पु (अ) निग्रह, निरोध, संयम २ दण्डरूपेण अपहरणं ३ राजसात्करणम् ।

—करना, क्रि स, राजसात् कृ, दण्डरूपेण अपहृ (भ्वा प अ) ।

—होना, क्रि अ, राजसात् भू, दण्डरूपेण अपहृ (कर्म) ।

ज़ब्ती, सं स्त्री (अ जब्त) सर्वस्व-अपहार-दण्ड, दे 'जब्त' (२) ।

जब्र, सं पु (अ) क्रौर्य, नैष्ठुर्य, अत्याचार ।

—करना, क्रि स, अर्द् (प्रे), पीड् (चु) ।

जब्रन, जब्रिया, क्रि वि, दे 'जबरन्' ।

जब्री, वि (अ) बलात् कारित, अनिवार्य ।

जम, सं पु, दे 'यम' ।

जमघट, सं पु (हिं जमना+घट्ट) जनौघ, जनसमर्द, संकुल, लोकमय ।

जम-जम, अव्य (सं जन्मन्>) सदा, सर्वदा, नित्यम् ।

जम-जम, सं पु (अ) काबासमीपस्थ कूप विशेष ।

जमना[1], क्रि अ [सं जन्मन् (न)>] प्ररुह् (भ्वा प अ), उद्भिद् (कर्म) २ जन् (दि आ से), उत्पद् (दि आ अ) ।

जमना[2], क्रि अ (सं यमन जकड़ना>) घनी पिंडी ठोसी, भू, संहन् (कर्म) दृढी (भ्वा आ अ) २ संमिल् (तु प से), समागम् (भ्वा प अ) ३ अनुषक्त समक्त (वि) भू, सल्ग् (भ्वा प से) ४ स्थिरभू, निवास स्थिरीकृ ५ प्रतिष्ठित बद्धमूल-(वि) भू ६ उपपद्-युज् (कर्म) सुसंगत वि) भू ७ निर्दयेन बद् (भ्वा प स) । सं पु, घनी-ठोसी पिंडी,-भाव संमेलन संसक्ति (स्त्री) स्थिरीभाव इ ।

जमना[3], सं स्त्री (सं यमुना) कालिन्दी ।

जमराज, सं पु, दे 'यमराज' ।

जमा, वि (अ) संगृहीत, संचित संगृहीत २ निक्षिप्त, न्यस्त, निहित । सं स्त्री, मूल, मूल, द्रव्य धन २ धन, संपद् (स्त्री) ३ भूमि-कर ४ योग, पिंड, सकल-लन (गणि०) ५ बहुवचन (व्या) ।

—करना, क्रि स, संचि (स्वा, उ अ), संग्रह् (क्र् प से) २ निधा (जु उ अ), निक्षिप् (तु प अ) ३ दे 'जोड़ना' (२) ।

—होना, क्रि अ, संचि-संग्रह् (कर्म) २ निधा निक्षिप्-न्यस् (कर्म) ।

—खर्च, सं पु (फा) आय व्ययौ २ आय व्ययलेख ।

—जथा, सं स्त्री, सचिन, धन द्रव्यम्।
—जमाई, स पु [स नामात् (पु)] दुहितृ पुत्री, पति।
जमात, स स्त्री (अ जमाअत) कक्षा, श्रेणी २ जनौघ, जनसमर्द ३ गण संघ।
जमादार, स पु (फा) नायक, राशिमुख्य।
ज़मानत, स स्त्री (अ) (द्रव्य) आधि (पु) निक्षेप, न्यास, प्रातिभाव्य। (पुरुष) प्रतिभू (पु) बधक, लग्नक।
—देना, कि स, निक्षेप लग्नक दा अथवा दत्त्वा मुच (प्र)।
—नामा, स पु (अ + फा) प्रातिभाव्यपत्रम्
ज़मानती, वि (अ जमानत >) निक्षेपाह, प्रातिभाव्याह २ प्रतिभू (पु) लग्नक-बधक।
ज़माना, स पु (फा न) समय, काल २ चिरकाल, सुदीर्घसमय ३ जगत् (न)।
—साज़, वि (फा) कालानुवर्तिन्, समया नुरोधिन्।
—साज़ी, स स्त्री (फा) कालानुवर्तन, स्वार्थपरता।
जमाना, कि स, व 'जमना' के प्रे रूप।
जमाल, स पु (अ) सौन्दर्य, सुषमा मनो ज्ञता लावण्यम्।
जमालगोटा, स पु (स जयपाल + गोटा >) (वृक्ष) जयपाल सारक, रेचक २ (बीज) जयपाल-कर्मी-दन्त गोधनी, बीज, बीजरेचनम्।
जमाव, स पु (हिं जमना) जनौघ जनसमर्द २ दे 'जमना' स पु।
ज़मींदार, स पु (फा) क्षत्रपति (पु), भूस्वामिन्।
ज़मींदारी, स स्त्री (फा) भूमि (स्त्री), भूमिरिक्थ क्षत्र २ क्षेत्रपतित्व भूस्वामित्वम्।
ज़मींदोज़, वि (फा) आतर्भौम (मी स्त्री), भूगर्भवर्तिन्, भूगृह।
ज़मीन, स स्त्री (फा) भूमि (स्त्री), पृथिवी स्त्री २ भू-पृष्ठ-तल ३ वस्त्रपादे तल ४ क्षेत्र भूरिक्थम्।
—आसमान एक करना, मु, अत्यधिक परिश्रम् (दि प से)।
—आसमान का फर्क, मु महदन्तर, महद्वै षम्य सभूभेद।
—आसमान के कुलाबे मिलाना, मु, अत्यु क्त्या वर्ण् (चु) प्रतिपद् (प्रे)।
जमुना, स स्त्री, दे 'यमुना'।
ज़मीमा, स पु (अ) अतिरिक्त-क्रोड, पत्रम्।
ज़मुर्रद, स पु (फा) दे 'पन्ना'।
जमैयत, स स्त्री (अ) जन, समुदाय समूह २ परिषद् (स्त्री) सभा।
जयत, स पु (स) इन्द्रपुत्र २ कार्तिकेय। वि [स जयत् (शत्रत)] विजयिन् जैत्र (स्त्री स) जिष्णु, जेतृ जित्वर [-री स्त्री)] २ दे 'बहुरूपिया'।
जयती, स स्त्री (स) केतन, केतु (पु), ध्वज २ दुर्गा ३ जन्मोत्सव ४ स्थापना दिवसोत्सव।
जय, स स्त्री (स पु) वि, जय, वि जिति (स्त्री)।
जय (जय जय) कार, स पु (स) जय, ध्वनि (पु) नाद-स्वन शब्द।
जयजयकार करना, कि स जयध्वनिं कृ, जयजयेति नद् (भ्वा प से)।
—पत्र, स पु (स न) विजय-पत्र-लेख २ आधिकरणिकस्य मुद्रितनिर्णयपत्रम् (धर्म)।
—माल, स स्त्री (स-ला) जय विजय-माला स्रज (स्त्री) माल्यम्।
—स्तभ, स पु (स) विजयस्थूणा।
जयमा (वा) न, जयवत, जयी, वि, दे 'नदन' वि।
ज़र, स पु (फा) सुवर्ण, काचन, २ धन, वित्तम्।
—खरीद, वि (फा) वित्तक्रीत।
—खेज़, वि (फा) उर्वर, शस्यद, फलप्रद।
—खेज़ी, स स्त्री (फा) उर्वरता, फलप्रदता।
—दार, वि (फा) धनिक, धनाढ्य।
—दोज़, स पु (फा) कार्मिकवस्त्रकृत् (पु), सूचीकर्मोपजीविन्।
—दोज़ी, स स्त्री (फा) शिल्प सूचीकर्मन् (न)।
जरनल, स पु (अ) दैनिक वृत्तपत्र-समाचार पत्रम् २ पत्रिका ३ आयव्ययपञ्जी पञ्जि (स्त्री)।
जरनलिज़्म, स पु (अ) पत्रकारिता पत्रकार व्यवसाय।
जरनलिस्ट, स पु (अ) पत्रकार।
जरनैल, स पु, दे 'जनरल' स पु।

ज़रब, सं स्त्री (अ) आघात, प्रहार, २ व्रण ३ अभ्यास", आघात, गुणन, हनन ४ अंक, मुद्राचिह्नम्।
—देना, क्रि स, गुणयति (ना धा), आ नि, हन् (स प अ, या प्रे, घातयति), पुर (चु)। सु, प्रह (भ्वा प अ) तड् (चु)।
ज़रर, स पु (अ) क्षति हानि (स्त्री) २ प्रहार ३ आपत्ति (स्त्री)।
जरस, स पु (अ) घंटा, घनम्।
ज़रा, वि (अ जर्रे) अल्प, न्यून। क्रि वि, किंचित्, ईषत्।
जरा, स स्त्री (स) दे वार्द्धक्यम्।
—ग्रस्त, जीर्ण, वि (स), वृद्ध, जरठ।
ज़राअत, स स्त्री (अ) कृषि (स्त्री) कर्षण, हलभृति (स्त्री)।
—पेशा, वि, कर्षक, कृषिजीविन्, क्षेत्रिक।
जरातुर, वि (स) वृद्ध, जरठ, स्थविर, पलित, जीर्ण।
जरायु, स पु (स) उल्व कलल, २ गर्भाशय।
जरायुज, वि (स) गर्भाशयजात (मनुष्य, गौ आदि)।
जरासंध, स पु (स) चंद्रवंशीयनृपविशेष, कंसश्वशुर।
ज़रिया, स पु (अ) दे 'साधन'।
ज़री, स स्त्री (फा) ताशाख्य वस्त्र २ सौवर्ण कार्मिकवस्त्रम्।
ज़रीफ़ वि (अ) विनोद परिहास, शील, प्रिय।
जरीब, स स्त्री (फा) पंचपंचाशद्गजात्मक क्षेत्रमानभेद", जरीब २ यष्टि (स्त्री)।
—कश, स पु (फा) भू क्षेत्र, मापक।
—कशी, स स्त्री भू क्षेत्र मापनम्।
ज़रूर, क्रि वि (अ) अवश्य, अपरिहार्यतया, निश्चयेन, नि संदेह, नि संशयम्।
ज़रूरत, स स्त्री (अ) आवश्यकता, प्रयोजनम्।
ज़रूरी, वि (फा) अपेक्षित, आकांक्षित २ आवश्यक [-की (स्त्री)], अपरिहार्य अनिवार्य, अवश्यकरणीय।
ज़र्क बर्क, वि (फा) उज्ज्वल, भासुर, भास मान।
जर्जर, जर्जरित, वि (स) जीर्ण शीर्ण, सच्छिद्र २ भग्न, खंडित ३ वृद्ध।
ज़र्द, वि (फा) पीत, दे 'पीला'।
ज़र्दी, सं स्त्री (फा) पीतिमन् (पु) दे 'पीलाई' २ अंडपीतिमन् (पु)।
जर्म, सं पु (अ) जीवाणु, रोगकीटाणु।
ज़र्रा, स पु (अ) अणु, परमाणु २ द्व्यणुक, त्र्यणुक ३, कण लोशिका, लव।
जर्राह, स पु (अ) शल्यचिकित्सक, शस्त्रवैद्य।
जर्राही, स स्त्री (अ) शल्य, शस्त्र चिकित्सा।
जलधर, स पु, दे 'जलोदर'।
जल, स पु (स न) पानीय, आप (स्त्री, नित्य बहु)। पयस अंभस-अंबु वारि (न), सलिल, अमृत, जीवन, उदक, तोय, नीर, घनरस।
—कूपी, स स्त्री (स) कूपगर्त, पुष्करिणी।
—क्रीडा, स स्त्री (स) क्षर, पान, पत्रिका, व्यात्युक्षी, जलविहार।
—चर, वि (सं) वारिचर, जलचारिन्।
—जंतु, स पु (स) यादस् (न) जलजीव।
—जात, स पुं (स न) कमल, पद्मम्।
—तरंग, स पु (स) वाद्यभेद २, लहरी।
—धर, स पु (स) मेघ, जलद २ समुद्र।
—धारा, स स्त्री (स) वारिप्रवाह।
—पक्षी, स पु (स क्षिन्) जलशकुन।
—पान, स पु (स न) उपाहार, लघु भोजनम्।
—प्रपात, स पु (स) निर्झर।
—प्लावन, स पु, (स न) जलोपप्लव, तोयविप्लव।
—मार्जार, स पु (स) उद्र, जलनकुल, जलबिडाल।
—यान, स पु (स न) नौका, पोत, वाष्पपोत।
—शायी, स पु (स यिन्) वरुण।
—सेना, स स्त्री (स) नौ समुद्र, सेना नैचम्।
जलज, स पु (स न) कमल, वारिजम्।
ज़लज़ला, स पु (फा) भूकंप, भूचाल।
जलडमरूमध्य, स पु (स न) सामुद्रधुनी।
जलद, स पु (स) मेघ, वारिद।
जलधि, स पुं (स) अब्धि (पुं), सागर।
जलन, स स्त्री (स ज्वलन) ताप, दाह, २ पाक (चिकित्सा, उ नेत्रपाक), ३ ईर्ष्या

र्ष्या, सापत्न्य, मात्सर्य ४ गात्रदाह (रोग भेद)।

जलना, क्रि अ (सं ज्वलन) ज्वल (भ्वा प से) तप दह् (कर्म) दीप (दि आ से) २ असूयति (ना धा) ईर्ष्य (भ्वा प से) परोत्कर्ष न सह् (भ्वा आ से) भृष (दि प से चु)। स पु, ताप, ज्वलन, दहन, दाह, प्लोष इ।

जले पर नोन छिड़कना, मु क्षते क्षार क्षिप (तु प अ)।

जलरुह, स पु (सं न) जलरुह (पु), कमलम्।

जलवा, स पु (फा स्त्री (स्त्री) प्रभा शोभा।

जलसा, स पु (अ) उत्सव, महोत्सव समैत्मन सुहृदभिवेशन २ सभीनोत्सव ३ सभोजनम्।

जलाञ्जलि, स स्त्री (सं पु) अञ्जलि-करपुट-मात्र जलम् २, तर्पणम्, प्रेततर्पणजलम्।

जलाकर, स पु (सं) समुद्र, सागर २ जल तोय-राशि ३ कूप ४ निर्झर, उत्स।

जलाखु, सं पु (सं) दे 'ऊदबिलाव'।

जलातंक, स पु (स) अलर्कविषम, आलर्क, जलत्रासाख्यो रोग (हिं हल्क)।

जलात्यय, स पु (स) शरदृतु, वर्षा वसान, मेघान्त।

जलाना, क्रि स (हिं जलना) उष (भ्वा प से), ज्वल (प्रे ज्वलयति), तप (भ्वा प अ, प्रे)। दह (भ्वा प अ), दीप (प्रे), प्लुष (भ्वा प से) २ ईर्ष्या-असूया मात्सर्य जन् (प्रे), ३ पीड् (प्रे) तुद् (तु प अ)। स पु, दहन तापन, प्लोषण, दीपन इ।

जलाने योग्य, वि, ज्वलयितव्य, दग्धव्य, दीपनीय, तपनीय।

जलानेवाला स पु, तापक, दाहक इ।

जलाया हुआ, दग्ध, ज्वलित, दीपित।

जला भुना वि, कुपित, क्रुद्ध, क्रुद्ध, शील, दुष्प्रकृति।

जलार्द्र, वि (स) क्लिन्न, उत्त, उन्न।

जलावतन, वि (अ) निर्वासित, विवासित।

जलावतनी, सं स्त्री (अ) निर्वि, वासनम्।

जलाशय, सं पु (सं) जल तोय-आधार, तडाग-ग, वापी।

ज़लील, वि (अ) नीच, क्षुद्र, जघन्य। (२) अपमानित, तिरस्कृत।

—करना, क्रि स, अपकृष (भ्वा, प अ), न्यूकृ।

जलूस, सं पु (अ) उत्सव यात्रा, *सप्रचलनम्।

जलेबी, स स्त्री (देश) कुण्डली, मिष्टान्नभेद।

जलौका, सं स्त्री (सं) दे 'जोंक'।

जलोदर, स पु (सं न) जठरामय।

जल्द, क्रि वि (अ) अचिरात्, अचिरेण, झटिति, द्राक्, अविलम्ब, आशु, शीघ्र २ जवेन, वेगेन, सत्वरम्।

—बाज़, वि (अ + फा) अविमृश्य असमीक्ष्य-भिन्न-कारिन्, साहसिन्।

—बाज़ी, सं स्त्री, अविमृश्य-असमीक्ष्य, कारिता-कारित्व, साहसम्।

जल्दी, स स्त्री (अ) शीघ्रता, त्वरा, क्षिप्रता।

—करना, क्रि अ, त्वर् (भ्वा आ से), आशु शीघ्र त्वरित कृ अथवा चल् (भ्वा प से)।

जल्प, स पु (सं) कथन, वदन २ प्रलपन, प्र, जल्पन, वृथा-आलाप-कथा, व्यर्थवार्ता ३ वादभेद (न्या०)।

जल्पक, वि (स) जल्पाक, वाचाट, वाचाल, वावदूक।

जल्लाद, स पु (अ) घातक, दण्डपाशिक, मातंग, वधाधिकृत। वि, क्रूर, निर्दय।

जलसा, स पु, दे 'जल्सा'।

जव, स पु (स) वेग, त्वरा रहम् (न)।

जवन, स पु, दे 'यवन'।

जवनिका, स स्त्री, दे 'यवनिका'।

जवाँमर्द, वि (फा) वीर, शूर, पराक्रमिन्।

जवाँमर्दी, स स्त्री (फा) वीरता, शूरता।

जवाखार, स पु (स यवक्षार) यवाह, यवनालज।

जवान, वि (फा) युवन्, तरुण, अभिनव वयस्क, कुमार २ वीर, शूर। स पु, पुरुष, मनुष्य सैनिक ३ वीर।

जवानी, स स्त्री (फा) कौमार, तारुण्य, यौवन, अभिनव-पूर्व प्रथम वयस (न)।

जवाब, स पु (अ) उत्तर, प्रति, वचन वाच् (स्त्री), प्रत्युक्ति (स्त्री) प्रत्युत्तर २ प्रतिक्रिया, प्रतीकार, ३ कारभ्रशादेश, ४ पद च्युति (स्त्री), अधिकारभ्रश।

—दावा, स पु (अ) उत्तरम्, उत्तर, पक्षपाद।

—देह, वि (अ + फा) उत्तर, दातृ दायिन, अनुयोज्य प्रष्टव्य।

—देही, स स्त्री (अ + फा) उत्तरादायित्व, प्रष्टव्यता, भार।

—सवाल, स पु प्रश्नोत्तराणि (बहु), वाद विवादौ (द्वि)।

—देना, मु, पदात् अवरुह च्यु (प्रे)। कि स, दे 'उत्तर देना'।

—मिलना, मु, अधिकारात् च्यु (भ्वा आ अ), पदभ्रष्ट (वि) भू।

जवाबी, वि (अ) उत्तरापेक्षिन्।

—कार्ड, स पु, उत्तरापेक्षि-उत्तरणीय, पत्रम्।

—तार, स पु, उत्तरापेक्षी तडित्सदेश।

जवार, स पु, दे 'ज्वार'।

जवारा, स पु (हिं जव) यव,-अकुर प्ररोह।

जवाल, स पु (अ) क्षय, ह्रास २ विपद (स्त्री)।

जवास-सा, स पु (स यवास) यास, दुस्पर्श, रोदनी, दुरालभा।

जवाह(हि)र, स पु (अ) रत्न, मणि।

जवाह(हि)रात, स पु (अ, बहु) रत्नानि मणय (बहु)।

जशन, स पु (फा) धार्मिकोत्सव २ उत्सव, क्षण ३ आनद, हर्ष ४ सगीतोत्सव।

जसामत, स स्त्री (अ) स्थूलता पीनता, पीवरता।

जसीम, वि (अ) पीन, पीवर, स्थूल।

जस्टिस, स पु (अ) उच्चन्यायालयस्य धर्म अधिकारिन्-अध्यक्ष, २ न्याय, दडयोग।

जस्त, जस्ता, स पु (स यशद) कुधातु (न)।

जहन्नुम, स पु (अ) नरक, निरय २ तीव्रपीडास्थानम्।

ज़हमत, स स्त्री (अ) कष्ट, आपद (स्त्री), २ व्यामोह, चित्तविक्षेप।

ज़हर, स पु (फा गड) गरल, विष म्। वि, घातक, प्राणहर २ अतिहानिकर [री (स्त्री)]।

ज़हरदार, वि (फा) विषाक्त, गरलदिग्ध।

ज़हरबाद, स पु (फा) विसर्प।

ज़हरमोहरा, स पु (फा जहरमुहरा) विषघ्न प्रस्तरभेद।

जहरीला, वि (फा जहर) दे 'जहरदार'।

जहाँ, कि वि (स यत्) यस्मिन् देशे स्थाने।

—कहीं, कि वि, यत्रकुत्र चित् अपि, यत्र यत्र।

—का तहाँ, कि वि, तत्रैव, पूर्वस्मिन्नेव स्थले।

—तक, कि वि, यावत्।

—तहाँ, कि वि, इतस्तत, अत्र तत्र २ सर्वत्र।

—से, कि वि, यत, यस्मात् स्थानात्।

जहाँ, स पु (फा) जगत्, ससार।

—दीद,—दीदा, वि (फा) अनुभविन्।

—पनाह, स पु (फा) जगद्रक्षक, प्रभु २ प्रभुचरणा, देवपादा।

जहाज, स पु (अ) तरणि (पु) बृहन्नौका, पोत व, बोड।

जहाजी, वि (अ जहाज)। स पु, नाविक, नौ पोत, वाह, समुद्रग।

—डाकू, स पु, सागरतस्कर, समुद्रदस्यु (पु)।

—बेड़ा, स पु (रण) पोतगण।

जहान, स पु (फा) जगत् (न), सृष्टि (स्त्री)।

जहालत, स स्त्री (अ) अज्ञानम्, मूर्खता।

ज़हीन, वि (अ) कुशाग्रबुद्धि २ मेधाविन्।

ज़हूर, स पु (अ) आविर्भाव प्रकाश।

जहेज, स पु (अ) शुल्क, यौतक, वाहनिक, स्त्रीधनम्।

जह्नु, स पु (स) नृपविशेष, सुहोत्रपुत्र।

—कन्या—तनया, स स्त्री (स) गगा।

जागल्ली, वि (स जागल) आरण्यक, वन्य, २ अशिष्ट, क्रूर।

जाँघ, स स्त्री (स जघा) ऊरु (पु), सक्थि (न)।

जाँघिया, स पु (हिं जाँघ) चण्डातक, ऊरुच्छद दे 'काछा'।

जाँच, स स्त्री (हिं जाँचना) परीक्षण क्षा, विचारण णा २ अनुसंधान, गवेषणा ।

जाँचना, क्रि स (स याचन>) परीक्ष (भ्वा आ से), विमृश (तु प अ), परि पर्यालोच (चु), अनुसंधा (जु उ अ), निरूप (चु) विचर् (प्र) ।

जाम्बूनद, स पु (स न) सुवर्ण, काञ्चन, हिरण्यम् ।

जा, स स्त्री (फा) स्थान प्रदेश वि, उचित, योग्य संगत

—बजा, क्रि वि, सर्वत्र

—बेजा, वि उचितानुचित सभ्यासभ्य ।

जाई, स स्त्री (स जा = जाता) पुत्री दुहितृ (स्त्री) ।

जाग, स पु (स यज्ञ) मख, क्रतु ।

जाग, स स्त्री (हिं जागना) जागरण प्रजागर जागर ।

जागना क्रि अ (स जागरण) जागृ (अ प से) प्र वि-बुध (दि आ अ) स पु, दे 'जागरण' ।

जागनेवाला, स पु, जागरक, जागरितृ (पु) । अवहित जागरूक ।

जागरण, स पु (स न) प्र जागर, प्र, बोध धन निद्राऽभाव अस्वाप २ अवधान दक्षता ।

जागरित, वि (स) उन्निद्र, विनिद्र, प्रबुद्ध । २ जागरूक सावधान । स पु, (स न) दे 'जागरण' ।

जागरूक, वि (स) जागरितृ जागरक जागरिन् २ अवहित, दक्ष, सावधान ।

जागर्ति, स स्त्री (स) जागर्या, जागरिया, निद्राऽभाव प्रबोध २ दक्षता ।

जागीर, स स्त्री (फा) अग्रहार २ भूसंपद् (स्त्री) ।

—दार, स पु (फा) अग्रहारिन् २ भूस्वामिन् ।

जाग्रत, वि (स जाग्रत) दे 'जागरूक' ।

जाग्रति, **जागृति**, स स्त्री, दे 'जागर्ति' ।

जाजरूर, स पु (फा जा+अ) दे 'पाखाना' ।

जाजिम, स स्त्री (तु जाजम) चित्रितास्तरण, तल्पच्छादनम् ।

जाज्वल्यमान, वि (स) प्रज्वलत्, दह्यमान २ तेजस्विन्, कान्तिमत् ।

जाट, स पु (स जर्त) आर्येषु जातिविशेष २ जड, मूढ ३ ग्रामीण, ग्रामीय, ग्रामिन् ।

जाठ, स पु [स यष्टि (स्त्री)] तैल इक्षु, पेषणीयष्टि

जाठर, वि (स) जठर-उदर,-सम्बन्धिन् विषयक, औदर, जठर, जठरस्थित-वर्तिन् । स पु, जठराग्नि २ बाल ।

—अग्नि, स पु (स) जठरानल, जठराग्नि ।

जाड़ा, स पु (स जाड्य) शीतता, शीतलता, शैत्य २ शिशिर, शीतकाल, हिमागम, शीतर्तु (पु) ।

जाड्य, स पु (स न) जडता मूढता, मूढता २ मन्दता, मंथरता ।

जात¹, वि (स) उत्पन्न, प्रसूत, संभूत २ प्रकट, व्यक्त ३ प्रशस्त, प्रशस्त ४ नवजात

जात², स स्त्री, दे 'जाति' ।

जात, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री), स्वभाव २ देह ३ व्यक्ति (स्त्री) ।

जातक, स पु (स) वत्स, बाल २ शिशु नवजात (पु) ३ भिक्षु (पु) याचक ४ बुद्धस्य पूर्वजन्मकथा (स्त्री बहु) ।

जातकर्म, स पु (स र्मन् न) जातक्रिया, संस्कारभेद (धर्म) ।

जातपाँत, स स्त्री, दे 'जातिपाँति' ।

जाता, स स्त्री (स) बाला, कन्या, कुमारी २ पुत्री, सुता तनुजा ।

जाति, स स्त्री (स) वर्ण २ कुल, वंश ३ वंशावली, गोत्र ४ भेद, प्रकार ५ वर्ग, श्रेणी ६ ७ समाज, जनसमूह ८ सामान्य ९ जातिफल १० मालती ।

—से खारिज करना, क्रि स, जाते समाजाद बहिष्कृ या च्यु अव (द्वे) ।

—च्युत, वि (स) जातिहीन, अपांक्तेय, बहिष्कृत ।

—पाँति, स स्त्री, जातिवर्णौ (स्त्री द्वि) ।

—स्वभाव, स पु (स) सहज, प्रकृति (स्त्री) स्वभाव ।

जाती, वि (अ जात) वैयक्तिक २ स्वीय, नैज।

जाती, सं स्त्री (सं) सुरभिगंधा, सुरभिया, चेतकी, मालती।

—पत्री, सं स्त्री (सं) जातिकोषी, मालती पत्रिका।

—फल सं पु (सं न) जाति(ती)कोश श्र पत्र।

—रस, सं पु (सं न) बोल।

जातीय, वि (सं) जातिभव, जातिसंबंधिन् २ राष्ट्रीय, देशीय ३ सामाजिक।

जातीयता, सं स्त्री (सं) जाति, प्रेमन् (पु) अनुराग २ राष्ट्रीयता ३ सामाजिकता।

जातुधान, सं पु (सं) निशाचार, राक्षस।

जादू, सं पु (फा) अभिचार, इन्द्रजाल कार्मण, कुसृति (स्त्री) कुहक-क माया, मोह, मंत्रयोग।

—करना, क्रि स, अभिचर् (प्रे), मंत्रैर्वशीकृ वा मुह् (प्रे), मायां कृ।

जादूगर, सं पु (फा) कौसुतिक सौभिक, ऐं(इ)न्द्रजालिक, कुहकाजीविन्, मायाकार।

जादूगरी, सं स्त्री (फा) ऐन्द्रजालिकता, दे 'जादू'।

जान, सं स्त्री (सं ज्ञान) बोध, उपलब्धि (स्त्री), विचार २ अनुमान, ऊह, तर्क।

—कार, वि, ज्ञातृ, ज्ञानिन्, वेत्तृ ३, अभिज्ञ (समासांत में) २ दक्ष, कुशल।

—कारी, सं स्त्री, परिचय, अभिज्ञता २ नैपुण्य, दाक्ष्यम्।

—बूझ कर, क्रि वि, कामतः, ज्ञानबुद्धि विचार, पूर्वकम्।

—पहिचान, सं स्त्री, परिचय परिचिति (स्त्री)।

जान, सं स्त्री (फा) प्राण, जीव बल श्वास २ बल, सामर्थ्य ३ सार, उत्तमांश ४ प्रिय, प्रियः।

—जोखों, सं स्त्री, प्राण, संकट संशय भयम्।

—दार, वि (फा) प्राणिन्, सप्राण।

—फिशानी, सं स्त्री (फा) परमोद्योग, घोरपरिश्रम।

—किसी पर देना, मु अत्यन्त रिनह् (दि प से, सप्तमी के योग में)।

—खाना, मु, दु (स्वा प अ), बाध् (भ्वा आ से)।

—छुड़ाना, मु, अपसृ अपसृप् (भ्वा प अ)।

—में जान आना, मु, आ समा-श्वस् (अ प से), सुस्थ निर्वृत (वि) भू।

जानकी, सं स्त्री (सं) सीता, वैदेही, जनकतनया।

जानना, क्रि स (सं ज्ञान) ज्ञा (क्र् उ अ), अव इ (अ प से) अवगम्, बुध् (भ्वा उ से), विद् (अ प से) २ मन् (दि आ अ), ऊह् (भ्वा आ से) वितर्क (चु)। सं पु, दे 'ज्ञान'।

जानने योग्य, वि, दे 'ज्ञातव्य'।

जाननेवाला, सं पु दे 'ज्ञाता'।

जानपद, सं पु (सं) ग्रामवासिन्, ग्रामिन ग्रामीण, ग्राम्यजन २ जनपदग्रामकर वि जनपदग्राम सम्बन्धिन्।

जानवर, सं पु (फा) जीव प्राणिन्, चर, चेतन २ पशु, जन्तु (पु)। वि, जड, मूर्ख।

जानशीन, सं पु (फा) उत्तराधिकारिन्।

जाना क्रि अ (सं यान) या (अ प अ), गम् (भ्वा प अ), चर वज् व्रज् (भ्वा प से) पद् (दि आ अ), ऋ (भ्वा जु प अ) २ प्रस्था (भ्वा आ अ) प्रया, प्रचल, निर्गम्। सं पु, गमन, यान, प्रजन, प्रस्थान, प्रव्रजन [illegible]।

जाने योग्य, वि, गमन्य, यातव्य।

जानेवाला सं पु, गन्तृ यातृ, चलितृ (पु) इ।

गया हुआ, वि, गत, यात, इत, चलित इ।

जाने देना, मु, दे 'क्षमा करना'।

जानी, वि (फा जान) प्राणसंबंधिन्। सं स्त्री, प्रिया, दयिता।

—दोस्त, सं पु, अभिन्नहृदय सुहृद् (पु)।

—दुश्मन, सं पु अंतरंग प्राणहर शत्रु (पु)।

जानु, सं पुं (सं न) ऊरुपर्वन् (न), अष्ठीवत् (पु न), जानुसंधि (पु), चक्रिका।

जाने अनजाने, क्रि वि (हिं जानना) ज्ञानतोऽज्ञानतो वा, कामतोऽकामतो वा, बुद्धिपूर्वमबुद्धिपूर्वं वा।

जानो, अव्य, दे, 'मानो'।

जाप, स पु (सं) दे 'जप'।

जापक, सं पु (सं) दे 'जपी'।

जाफ्त, सं स्त्री (अ जियाफत) सद्भम, भोजनम्।

जाफरान, सं पु ([illegible]) दे 'केसर'।

जाफरानी, वि (अ) दे 'केसरिया'।

जॉब, सं पु (अ) कर्मन् (न), कार्यम् २ वैतनिक,-कार्यम् कर्मन।

जाब्ता, स पु (अ) नियम, व्यवस्था, विधि (पु)।

—दीवानी, स पु, व्यवहारसंहिता।

—फौजदारी, स पु, दण्डसंहिता।

बेजाब्ता, वि नियम विधि, विरुद्ध, अवैध।

बजाब्तगी, सं स्त्री, अनियम, उत्सूत्रता।

जाम[1], स पु (स याम) दे 'पहर'।

जाम[2], स पु (फा) चषक कम्।

जामदग्न्य, स पु (स) जमदग्निपुत्र परशुराम।

ज़ामन, सं पु (हिं जमाना) द्र(द्रा)प्स, न(द्र)स्प्सम्।

जामन, स पु दे 'जामुन'।

जामा, स पु (फा) वसन, वस्त्र २ कञ्चुक, प्रावारक।

जामे से बाहर होना, मु, अत्यत क्रुध् (दि प अ)।

जामे में फूला न समाना, मु, भृश हृष् (दि प से)।

जामाता, सं [illegible] दे 'दमाद'।

जामिन, सं पु (अ) प्रतिभू (पु) बधक, रक्षक।

ज़ामिनी, [illegible] स्त्री, दे 'जमानत' (द्रव्य)।

जामिनी, सं स्त्री, (सं यामिनी) दे रात्रि (स्त्री), निशा।

जामुन, स [illegible] (स. जम्बु) (वृक्ष) जम्बू [illegible] (स्त्री)। (फल) जम्बु (न), जम्बु जम्बू (स्त्री), जम्बुफल, जाम्बवम्।

ज़ायक़ा, सं पु (अ) स्वाद, रस।

जायकेदार, वि (अ + फा) स्वादु, सरस, रसवत्।

जायज, वि (अ) उचित, युक्त, सगत।

जायदाद, सं स्त्री (फा) रिक्थ, दाय, भूमि सपत्ति (स्त्री)।

जायफल, सं [illegible] [सं जाति(ती)फल] जाति-कोष सार-शस्य, कोश(ष)म्, मघुदम्।

जाया[1], सं स्त्री (सं) पत्नी, भार्या, पाणिगृहीती।

—पती, सं [illegible] (सं) दम्पती जम्पती, (पु द्वि)।

जाया[2], सं पु (स जात) पुत्र, सुत। वि, उत्पन्न, जात।

ज़ाया, वि (फा) नष्ट, निरर्थक।

जार, स पु (सं) उपपति, परदारलम्पट।

—ज, स [illegible] (सं) उपपतिसन्तान।

जारिणी, सं स्त्री (सं) कुलटा पुंश्चली, अधमचपला।

जारी, वि (अ) प्रवहत्, प्रवाहिन २ वर्तमान, प्रचलत्, प्रचलित।

जालंधर, स [illegible] (स) (१ ४) नगर नृप मुनि दैत्य, विशेष।

जाल[1], सं पु (सं न) जालक, पाश, आनाय, वागुरा २ समूह, निकर ३ लता लतिका,-जालम्।

जाल[2], सं पु (अ जअल) छल, कपट, माया।

—साज, सं पु (अ + फा) धूर्त, शठ, मायिक।

—साजी, सं स्त्री, धूर्तता, कापट्य, शाठ्यम्।

जाला, स [illegible] (सं जाल) लूता लूतिका, जाल २ जालदृष्टि (स्त्री) नेत्ररोगभेद ३ वासा दिवस्त्रार्थ जालम्।

जालिक, स पु (सं) धीवर कैवर्त २ ऐन्द्रजालिक, कुहककार ३ उर्ण तन्तु, नाम।

जालिम, वि (अ) घोर, क्रूरकर्मन्, आततायिन्, पापिष्ठ।

जालिया, दे 'जालसाज'।

जाली[1], सं स्त्री (सं जाल >) छिद्रप्राय वस्त्र, जालिका २ काष्ठादिपट्टेषु छिद्रसमूह ३ सूचीकर्मभेद जालिकाकर्मन्।

जाली[2], वि (अ जअल) कृत्रिम, कृतक।

जावा, सं पु (सं यवद्वीप प) द्वीपविशेष।

ज़िल्लत, स स्त्री (अ) अपमान अवज्ञा, तिरस्कार, अनादर २ दुर्गति (स्त्री) दुर्दशा।
जिस, सर्व (स य >) यत्।
जिस्म, स पु (फा) शरीर, देह।
जिहन स पु (अ) बुद्धि-मति (स्त्री)।
जिहाद स पु (अ) धर्मयुद्धम्।
जिह्वा, स स्त्री (स) रसना, रसज्ञा दे 'जीभ'
जी, स पु (स जीव >) चित्त मानस चेतस्-मनस् (न) २ साहस, पौरुष ३ संकल्प विचार।
—आना (किसी पर), अनुराग बन्ध (क्र प अ) लिह् (दि प से सप्तमी के साथ)।
—करना मु इष् (तु प से)।
—का गुबार निकलना, मु रोदनजल्पना दिभि मनोवेगा शम् (दि प से)।
—खट्टा होना, मु, निर्विद् (दि आ अ तृतीया के साथ) विरक्त (वि) भू।
—खोल कर, मु, निस्संकोच २ यथेच्छम्।
—चुराना, मु, परिहृ (भ्वा प अ, द्वितीया के योग में)।
—छोटा करना, मु, विषद् (भ्वा प अ) २ औदार्यं हा (जु प अ)।
—बहलना, मु, मनोविनोद जन् (दि आ से)।
—बिगड़ना, मु, वम् (सन्नन्त, विवमिषति), वमनेच्छा जन्।
—भरना, मु, तृप् (दि प अ)।
—भर कर, मु, यथेच्छ, यथाकामम्।
—मचलाना या—मतलाना, मु, दे 'जी बिगड़ना'।
—में आना, मु वाञ्छ् (भ्वा प से)।
—लगना, मु, दे 'जी आना'।
जीजा, स पु (हिं जीजी) भगिनीपति, आवुत्त।
जीजी, स स्त्री (अनु) जीजी (ज्यायसी) भगिनी, स्वसृ (स्त्री)।
जीत, स स्त्री (स जितम्) जय, विजय २ लाभ ३ साफल्य, कृतकार्यता।
—हार, स स्त्री, जयाजयौ, जयपराजयौ।
जीतना, क्रि स (हिं जीत) जि (भ्वा प अ), वि परा जि (भ्वा आ अ) अभि परा भू २ वशीकृ, दम् (प्रे) ३ स्वायत्ती-आत्मसात् कृ। स पु, दे 'जीत' स स्त्री।
—योग्य, वि, वि, जेय, जेतव्य, जयनीय, अभि परा-भवनीय दमनीय वशीकार्य इ।
—वाला, स पु, वि, जेतृ अभिभाविन्, अभि भाव(वु)क।
जीना, वि (हिं जीना) जीवित, सजीव, जीवोपेत सप्राण।
जीतेजी मु यावज्जीव, जीवनपर्यन्त, जीवना वधि (न)।
ज़ीन स पु (फा) पल्ययन, पर्याणम्।
ज़ीनत, स स्त्री (फा) शोभा छवि (स्त्री), आभा।
जीना, क्रि अ (स जीवन) जीव् (भ्वा प से) प्र अन् (अ प से), श्वस् (अ प से)। स पु जीवन, प्राणधारणम्।
ज़ीना, स पु (फा) सोपान, आरोहण, अधिरोहि(ह)णी।
जीभ, स स्त्री (स जिह्वा) रसा, लोला, रसज्ञा, सुधास्रवा, रसिका, रसाका, रसना।
—चाटना, मु, गृध् (दि प से), अभिलष् (भ्वा प से), लुभ् (दि प से)।
जीभी, स स्त्री (हिं जीभ) जिह्वा रसना, मार्जनी शोधनी २ जिह्वा रसना मार्जन शोधनम् ३ लघु जिह्वा रसा-रसला ४ कल मात्रम्, लेखनीचञ्चु (स्त्री) ५ पशुरोगभेद।
जीमना, क्रि स (स जेमन) अद् (अ प अ), खाद् (भ्वा प से)।
जीमूत, स पु (स) मेघ, वारिवाह, अभ्र २ पर्वत, नग।
—वाहन, स पु (स) इन्द्र, वज्रिन् (पु)।
जीरा, स पु (स जीर) दीपक, दीप्य, जीरक, जरण।
जीर्ण, वि (स) शीर्ण, गलित २ परिपक्व, परिणमित।
जीर्णा, वि (स) वृद्धा, स्थविरा, पलिता, पाल्क्नी।
जीर्णोद्धार, स पु (स) नवीकरण, सधान, उद्धार।

जीवत, वि (स जीवत्) सप्राण, जीवित, सजीव, जीवोपेत।

जीव, स पु (स)। जीव, आत्मन् (पु), शरीरिन्, देहिन्।

—दान, स पु (स न) प्राणदान, जीवन रक्षणम्।

—दण्ड, स पु (स) प्राणदण्ड, मृत्युदण्ड २ वध मारण हननम्।

जीवक, स पु (स) प्राणिन् जीवधारिन् २ सेवक दास ३ अ(आ)हितुण्डिक काल्माहिन् ४ कुसीद-वक वार्द्धुषिक, कुसीदिन्।

जीवन, स पु (स न) प्राणधारण, चैन य सप्राणता।

—चरित, स पु (स न) जीवन, चर्या वृत्तान्त-चरित्रम्।

जीवनवृत्त,-वृत्तान्त, स पु (स) दे 'जीवन चरित'।

जीवनवृत्ति, स स्त्री (स) आजीविका व्यवसाय, उपजीविका, जीवनोपाय, जीवन साधनम्।

जीवात्मा, स पु (स त्मन्) दे 'जीव'।

जीविका, स स्त्री (स) दे 'जीवनवृत्ति'।

जीवित, वि (स) दे 'जीता'।

जुआ, स पु (स द्यूत) पण पणन-देवन मा, द्यूत अक्ष-क्रीडा।

—खेलना, क्रि अ, दिव् (दि प से) (अक्षै) क्रीड् (भ्वा प से)।

जुआरी, स पु (हिं, जुआ) धनवार, कितव, अक्षदेविन्, देविन्

जुकाम, स पु (अ) प्रतिश्याय, श्लेष्म स्राव।

जुग, स पु (स युग) कालमानभेद २ युगल, द्वन्द्वम्।

जुगनू, स पु (हिं जुगनुगाना) खद्योत, ज्योतिरिङ्गण, दीप्तिकीटु प्रभाकीट, उप सूर्यक, तमोमणि।

जुगल, स पु (स युगल) दे 'युगल' या 'जुग (२)'।

जुगालना, क्रि अ (स उद्गिलनम् >) रोमन्थ इ, रोमन्थायते (ना धा)।

जुगाली, स स्त्री (हिं जुगालना) रोमन्थ पुनश्चर्वणम्।

जुगुप्सा, स स्त्री (स) बीभत्स, घृणा गर्हा, अरुचि (स्त्री)।

जुटना, जुड़ना, क्रि, अ (स युक्त) स, युज् (कर्म) सश्लिष (दि प अ) समिल (तु प से)।

जुटाना, जुड़ाना, क्रि प्रे, व 'जुटना' के प्र रूप।

जुतना, क्रि अ (स युक्त >) युग योक्त्र वह् (भ्वा उ अ)।

जुदा, वि (फा) पृथक, भिन्न।

—करना, क्रि स वियुज् (रुध उ अ) पृथक्-कृ।

—होना, क्रि अ, पृथग्भू, विश्लिष् (दि प अ)।

जुदाई, स स्त्री (फा) वियोग पार्थक्यम्।

जुद्ध, स पु (स युद्ध) समाम।

जुमा, स पु (अ) शुक्र-भृगु, वार-वासर।

जुरअत, स स्त्री (फा) माहसिक्य, साहस, उत्साह।

जुरमाना, स पु (फा) दम, अर्थदण्ड।

जुर्म, स पु (अ) अपराध, दोष।

जुर्माना, स पु (फा) दे 'जुरमाना'।

—करना, क्रि अ, दण्ड् (चु द्विकर्मक)।

—देना, क्रि अ, दण्ड-दम दद् (भ्वा उ अ)।

—मुआफ करना, क्रि स, दण्ड-दम क्षम् (भ्वा आ से)।

जुलाब, स पु (अ जुलाब) रेचन, विरेचन उदरशोधन २ रेचक-क, विरेचक-कम्।

—देना, क्रि स, विरिच् (प्रे)।

—लेना, क्रि अ (उदर) विरिच (रु प अ)।

जुलाहा, स पु (फा जौलाह) तन्तुवाय, वय, कुविन्द, तन्त्रवाय, पटकार।

जुल्म, स पु (अ) दे 'ज़ुल्म'।

जुल्फ, स स्त्री (फा) कुटिल-घूर्ण-कुन्तल अलक २ द्विपार्श्वबद्ध चिकुर।

ज़ुल्म, स पु (अ) अत्याचार, क्रूर घोर, कर्मन् (न)।

ज़ुल्मत, स स्त्री (अ) अन्धकार तिमिर, तमस् (न) २ तिमिर-अन्धकार,-कालिमन् (पु) कृष्णिमन् (पु) श्यामता।

जुल्मी, वि (अ जुल्म>) पापिष्ठ, आततायिन, अत्याचारिन, क्रूर।
जुवा, स पु (हिं जुआ) दे 'जुआ'।
जुवारी, वि (हिं जुआरी) दे० 'जुआरी'।
जुष्ट, वि (स) भुक्तशिष्ट, उच्छिष्ट २ प्रिय इष्ट प्रीत प्रेष्ठ ३ युक्त, अन्वित युत ४ सेवित।
जुस्तजू , स स्त्री (फ़ा) अन्वेषणा गवेषणा मार्गणा।
जुही, स स्त्री (स यूथी) (सफेद) यूथिका, बाल्पुष्पी, वासन्ती, (पीली) पीत सुवर्ण यूथी हेमयूथिका, कनकप्रभा, हेमपुष्पिका
जूँ, स स्त्री (स यूका) केशटः केशकीट, स्वेदसमवा यूकःका, षट्पद्-दी।
जूआ, स पु (स युग्म) योक्त्र धुर्वी, प्रासग इयानबन्धन, धुर (स्त्री)।
जूवा, स पु, दे जुआ'।
जूठ-जूठन, स स्त्री (हिं जूठा) भुक्तशेष, उच्छिष्ट, अवशिष्टम्।
जूठा, वि (स जुष्ट) उच्छिष्ट, भुक्तशेष।
जूड़ा, स पु (स जूट) जूटक केशबन्ध, जटाग्रन्थि।
जूत-जूता, स पु (स युक्त>) पादत्राण, उपानह (स्त्री)।
—मारना, मु, पादत्राणेन तड (चु) २ तिरस्कृत।
—खाना, मु, तिरस्कार लभ् (भ्वा आ अ)।
जूती, स स्त्री, दे 'जूता'।
जूथ, स पु, दे 'यूथ'।
जूनियर, वि (इ) अवर, अधर, अवरपदवान्।
जूही, स स्त्री, दे 'जुही'।
जृम्भा, स स्त्री (स) जृम्भः, जृम्भण, जृम्भिका, जंभा, जमका।
जेठ, स पु, दे 'ज्येष्ठ'।
जेठा, स पु (स ज्येष्ठ) प्रथमज, अग्रज।
जेठानी, स स्त्री, दे 'जिठानी'।
जेब, स पु (फ़ा) (चोलकञ्चुकादीना)कोश।
—कतरा, स पु, चिराम, ग्रन्थिच्छेदक।
जेर, स स्त्री (स जरायु) उल्ब, कलल।
जेल, स पु (अ) कारा,-गृह-आगार, बन्दि, गृह-शाला।
—ख़ाना, स पु (अ फ़ा) दे 'जेल'।
जेवर, स पु (फ़ा) वि-आ, भूषण, आभरण, अलंकार, अलंकरणम्।
जेहन, स पु (अ) दे 'जिहन'।
जैन, स पु (स) जैनमतावलम्बिन् २ जैन, मत-सम्प्रदाय।
जैनी, स पु (स जैन) दे 'जैन' (१)।
जैसा, वि (स यादृश) यादृश(श), यत्प्रकारक [जैसी (स्त्री)=यादृशी]।
—का तैसा, मु, पूर्ववत्, यथापूर्वम्।
—चाहिए, मु, यथोचित, यथार्ह, यथायोग्यम्।
जो, सर्व (स य) यः (पु) या (स्त्री), यत् (न)।
—कुछ, यत्किञ्चित्।
—कोई, यः कश्चित्-कश्चन कोऽपि।
जोंक, जौंक, स स्त्री (स जलौका) जलुका, रक्तपा पायिनी, जलाका, जलजन्तुका।
जोखों, स स्त्री, सकट, विपद् (स्त्री)।
जोग, स पु (स योगक्षेम ?) दे 'योग'।
जोगिया, वि (हिं जोगी) परिव्राजक, योगिसम्बन्धिन्, २ गैरिकरागयुक्त, गैरकाक्त, गैरिकवर्ण।
जोगी, स पु (स योगिन्) दे 'योगी'।
जोगिन, स स्त्री, दे 'योगिनी'।
जोजन, स पु (स योजन) दे 'योजन'।
जोड़, स पु (स जोट) बन्धन, मेलन २ योग, सकल, परिसंख्या, पिंड ३ अग सन्धि, अगग्रन्थि।
जोड़ना, क्रि स (स जोडन) एकत्र कृ, समिल् (प्रे) जुड़ (भ्वा प से) युज् (रुध उ अ), संश्लिष् (प्रे) २ सकल (चु), परिसंख्या (अ प अ)।
जोड़ा, स पु (हिं जोड़ना) युगल, युग्म २ द्वन्द्व, मिथुन ३ उपानद्युगल ४ वेष श।
जोड़ी, स स्त्री (हिं जोड़ा) दे 'जोड़ा' (१ २)।
जोत[१], स स्त्री [स ज्योतिस् (न)] प्रकाश, आभा, द्युति।
जोत[२], स स्त्री (हिं जोतना) चर्मपट्ट, वरत्रा, वध्री।
जोतना, क्रि स (स युक्त>) योक्त्रयति (ना धा), युज् (चु) २ कृष् (भ्वा प अ), हल् (भ्वा प से)।
जोतिष, स पु, दे 'ज्योतिष'।

जोतिषी, स पु, दे 'ज्योतिषी'।

जोधा, स पु (स योद्धृ) योध, भट।

ज़ोफ, स पु (अ) दुर्बलता निर्बलता।

जोबन, स पु (स यौवन) तारुण्यम्।

ज़ोम, स पु (अ) गर्व, दर्प अहमान, अहंकार।

ज़ोर, स पु (फा) बल, शक्ति २ वश, अधिकार ३ वृद्धि-समृद्धि (स्त्री) ४ वेग, आवेश ५ आश्रय ६ परिश्रम ७ व्यायाम।

ज़ोरावर, वि (फा) बलिष्ठ शक्तिशालिन्।

ज़ोरदार, वि (फा) प्रबल, बलवत् २ अवाच्य, अलङ्घ्य।

ज़ोराज़ोरी, अव्य (फा जोर >) बलात्, हठात्, प्रसभं, प्रसह्य (सब अ य०)।

जोरू, स स्त्री (हिं जोडा) भार्या, पत्नी, गेहिनी।

जोलाहा, स पु, दे 'जुलाहा'।

जोश, स पु (फा) उत्तापन ना उत्साह, व्यग्रता, चण्डता, मनोवेग, आवेश।

—देना, क्रि स, प्रोत्सह (प्रे), उत्तिज (प्रे) २ पच् (भ्वा प अ), क्वथ् (भ्वा प से)।

जोशांदा, स पु (फा) क्वाथ, कषाय, निर्यास।

जोशीला, वि, व्यग्र उग्र उत्साहिन्, उत्साहवत्, प्रचण्ड।

जोहड, स पु (देश) जलाशय ह्रद, पल्वलम्।

जौ, स पु (स यव) प्रवेट शीर्ष सित, शूक, अश्वप्रिय, महाशुस।

जौहर, स पु (अ) रत्न, मणि (पु, कभी स्त्री) २ सार, तत्त्वम्।

जौहरी, स पुं (फा) मणिकार, रत्नकार २ रत्नपरीक्षक।

ज्ञातव्य, वि (स) ज्ञेय, अवगन्तव्य, बोद्धव्य।

ज्ञाता, वि (स ज्ञातृ) वेत्तृ ज्ञानिन्, बोद्धृ।

ज्ञाति, स पु (अ) सगोत्र, बन्धु, बान्धव स्व, स्वजन, सकुल्य, अंशक, दायाद।

ज्ञान, स पु (सं न) बोध, प्रतीति (स्त्री)।

ज्या, स स्त्री (स) मौर्वी, शिञ्जिनी, गुण।

ज्यादती, स स्त्री (फा) आधिक्य, प्राचुर्य, अधिकता २, अत्याचार।

ज्यादा, वि (फा) अधिक, महत्, बहु।

—तर, वि बहुसंख्यक, अधिकतर, भूयस।

ज्येष्ठ स पु (स) अग्रज, प्रथमज १ भर्तृ ज्यायान् भ्रातृ ३ ज्येष्ठ (मास)। वि, वृद्ध २ श्रेष्ठ।

ज्यों, क्रि वि (स य + इव यथा,) येन प्रकारेण।

—का त्यों, मु, यथापूर्वम्।

—त्यों, मु, यथा तथा।

ज्योति, स स्त्री [स ज्योतिस् (न)] प्रकाश, प्रभा, द्युति (स्त्री)।

ज्योतिष, स पु (स न) ज्योतिर्विद्या, ज्योति शास्त्र, नक्षत्रविद्या।

ज्योतिषी, स पु (स ज्योतिविन्) दैवज्ञ, ज्योतिर्विद, ज्योतिषिक।

ज्योत्स्ना, स स्त्री (स) चन्द्रिका, कौमुदी।

ज्वर, स पु (स) ज्वरि, ज्वरा जूर्ति (स्त्री), महागद, तापक।

थोडी थोडी देर बाद होनेवाला—, स्वल्पविरामज्वर।

दौरेवाला—, पौन पुनिकज्वर।

प्रतिदिन होनेवाला—, अन्येद्युष्कज्वर।

रुक रुककर होनेवाला—, सविरामज्वर।

सदा—, रक्तवृद्धि (स्त्री)।

हर तीसरे दिन होनेवाला—, तृतीयकज्वर।

हर चौथे दिन होनेवाला—, चतुर्थकज्वर।

ज्वलंत, वि (स ज्वलत्) उद्दीप्त, प्रकाशित।

ज्वलन, स पु (स न) दाह, ताप २, अग्नि ३ ज्वाला।

ज्वार¹, स स्त्री (स यावनाल) अन्नविशेष, वृत्ततण्डुल, क्षेत्रेक्षु।

ज्वार², स पु (देश) वेलावृद्धि (स्त्री)।

—भाटा, स पुं, वेलाया वृद्धिक्षयौ (द्वि)।

ज्वाला, स स्त्री (स) शिखा, अर्चि (न)।

—मुखी, स पुं (स) अग्निपर्वत।

झ

झ, देवनागरीवर्णमालाया नवमो व्यञ्जनवर्णः, झकार ।

झ, झंकार, स पु स्त्री (अनु) झणत्कार, झणझणध्वनि शिञ्जितम् ।

झंखाड़, स पु (हिं 'झाड़' का अनु) कट गुल्म स कण्टकगुल्म ।

झंझट, स स्त्री, (अनु) कृच्छ्रम्, आयास क्लेश वैषम्यम् ।

झनझनाना, क्रि अ (अनु) झणझणायते (ना धा) झणझणध्वनि उत्पद् (प्रे) ।

झनझनाहट, स स्त्री (अनु) दे 'झनकार' ।

झंझा, स स्त्री (स) झञ्झावात, सवृष्टिको वात ।

झंझोड़ना क्रि स (स झञ्झनम्) क्षुभ (प्र), सरभस कम्प (प्र) ।

झंड, स पु (हिं झंडा) शिशो अमुण्डिता केशा, सहज-जन्मज-केशा कचा (पु बहु) ।

झंडा, स पु (हिं झण्डी) ध्वज, केतु, केतनम् ।

—बरदार, स पु पताकिन्, ध्वजिन्, वैजयन्तिक, ध्वजपताका धारिन् वाहिन् ।

—गाड़ना, मु, स्वायत्तो आत्मसात् कृ, अभि परा, भू ।

झंडी, स स्त्री (स जयन्ती) वैजयन्ती, पताका, दे 'झंडा' ।

झंडूला, वि (हिं झंड) अमुण्डित, अनुप्त-अकृत्त अच्छिन्न, केश मूर्धज ।

झप, स पु (स) झषा प्लुतगति (स्त्री) २ अश्वगलभूषणम् ।

झक, स स्त्री (अनु) आवेश, अभिनिवेश, आग्रह, निर्बन्ध २ प्रलाप असम्बद्धभाषण, प्रजल्प ।

—मारना, क्रि स, प्रलप् प्रजल्प् (भ्वा प से), निर्विवेक भाष (भ्वा आ से) ।

झकझक, स स्त्री (अनु) दे 'झक' ।

झकना, क्रि अ, प्रलप् प्रजल्प् (भ्वा प से), विवद् (भ्वा आ से) ।

झक्की, स पु (हिं झक) वावदूक, प्र, जल्पक, वाचाल २ हठाग्रहिन् ।

झख, स स्त्री (अनु) दे 'झक' ।

झगड़ना, क्रि अ (हिं झकझक) विवद (भ्वा आ से) विप्रलभ् (भ्वा प से), कलह कृ, कलहायते (ना धा) ।

झगड़ा, स पु (हिं झगड़ना) वाग्युद्ध, कलि, कलह, विवाद ।

झगड़ालू, वि (हिं झगड़ा) विवादिन्, कलहप्रिय ।

झट, क्रि वि (स झटिति) तत्क्षण, अनुपद, शीघ्रम् ।

—पट, क्रि वि, तत्कालमेव, सत्वरम् ।

झटकना, क्रि स (हिं झट) (सहसा) क्षेप्-कम्प (प्रे) २ छलेन बलेन वा अपहृ (भ्वा प अ) ।

झटका, स पु (हिं झटकना) हस्तादिकेन प्रचालन वेगेन प्रणोदन, धक्का-आघात प्रहार २ सहसा वध हननम् ।

झड़, स स्त्री (हिं झड़ना) दे 'झड़ी' ।

झड़झड़ाना, क्रि स (अनु) दे 'झंझोड़ना' ।

झड़ना, क्रि अ (स क्षरणम्>) पत् क्षर् (भ्वा प से) शॄ (कर्म) २ धाव् निर्णिज् (कर्म) ।

झड़प, स स्त्री (अनु) कलह २ कोप ३ आवेश ।

झड़बेरी, स स्त्री (हिं झाड़+बेरी), (फल) वन्यबदरम् (वृक्ष) भूबदरी, वन्यबदर, शबराहार ।

झड़ी, स स्त्री (हिं झड़ना) सतत क्षरण पतन २ सततवृष्टि (स्त्री) ।

झड़वाना, क्रि स (झाड़ना) क्षुध्-मृज् (प्रे) २ अपवह् (प्र) व 'झाड़ना के (प्रे) रूप ।

झड़ाना, क्रि स (झाड़ना) दे 'झड़वाना' ।

झपक, स स्त्री (हिं झपकना) नेत्रनिमीलन, पक्ष्मसकोच, निमेष, तन्द्रा, ईषन्निद्रा २ पल, क्षण-णम् ।

झपकना, क्रि स (अनु झप्) निमील् (भ्वा प से) नेत्र सकुच (भ्वा प से), निमिष् (तु प से) । क्रि अ, निमील्, निमिष्

२ अल्प निद्रा (अ प अ)-स्वप् (अ प अ)।

झपकाना, क्रि स , दे 'झपकना' क्रि स ।

झपट, सं स्त्री (हिं झपटना) आच्छेद आकस्मिकग्रहण २ सहसाक्रमण, आकस्मिक प्रहार ।

झपटना, क्रि स अ (स झप >) आच्छिद् (रु प अ), सहसा आ कृष (भ्वा प अ) २ आक्रम् (हिं प से)।

झपट्टा, स पु , } दे 'झपट'।
झपेट, स स्त्री , }

झबरा, वि (अनु) सघनकेश, लोमश दीर्घलोमन् ।

झबरीला, वि , दे 'झबरा'।

झमक, स स्त्री (हिं चमक) द्युति (स्त्री) आभा, कान्ति (स्त्री)।

झमझम, } स स्त्री (अनु) धारासार,
झमाझम }
धारापात , झञ्झा २ झणत्कार , झणझणशब्द ।

झमेला, स पु (अनु झाँव) दे 'झंझट'।

झरना, क्रि अ (स क्षरण>) क्षर् (भ्वा प से), स्रु (भ्वा प अ), प्रपत् (भ्वा प से)। स पु , प्रपात , स्रोतस (न) निर्झर , उत्स ।

झरोखा, स पु (अनु झरझर+हिं गोखा) गवाक्ष , वातायनम् ।

झलक, स स्त्री (स झल्लिका) आभा, द्युति (स्त्री), प्रकाश २ प्रतिबिम्ब ब, प्रतिच्छाया, प्रतिफलम् ।

झलकना, क्रि अ (हिं झलक) प्रकाश विद्युत् (भ्वा आ से) २ प्रतिफल (भ्वा प से) सक्रान्त प्रतिबिंबित प्रतिफलित (वि) भू , प्रतिमा (अ प अ)।

झलकाना, क्रि स , व 'झलकाना' के प्र रूप ।

झलझलाना, क्रि स , दे 'चमकना' क्रि स , दे 'चमकाना'।

झलझलाहट, स स्त्री , दे 'चमक'।

झलना, क्रि स (हिं झलझल) वीज् (चु), व्यजन धूर्ण (प्रे)।

झलमलाना, क्रि अ (अनु झलमल) सकम्प प्रकाश (भ्वा आ से)।

झलवाना, क्रि प्रे , व 'झलना' के प्रे रूप ।

झल्लाना, क्रि अ (हिं झल = क्रोध) प्रकुप् (दि प से), क्रुध (दि प अ)। क्रि स , व उक्त धातुओं के प्रे रूप ।

झष, स पु (स) मत्स्य , मीन ।

—केतु, स पु (स) काम , मार , रतिपति , मनोज ।

झाँई, स स्त्री (स छाया) प्रतिबिम्ब -म्, प्रति-,च्छाया फल-रूप २ अधकार २ छलम् ।

झाँकना, क्रि अ (स झष अथवा अध्यक्ष) आलमार्गेण दृश् (भ्वा प अ) २ लगु निरूप (चु)।

झाँकी, स स्त्री (हिं झाकना) ईषद् अभिव्यक्ति (स्त्री) २ ईक्षण, निरूपण ३ दृश्य ४ गवाक्ष ।

झाँझ, स स्त्री (अनु झनझन) झझर, झल्लरी, कांस्यकरतालम् ।

झाँझन, स स्त्री (अनु) नूपुर -रम् ।

झाँझरी, स स्त्री दे 'झाँझ' तथा 'झाँझन'।

झाबा, स पु (स झामकम्) दग्धेष्टका २ क्रोध ३ कुचेष्टा ।

झासा, स पु (स अध्यास >) छल कपट, प्रतारणा ।

—देना, झासना, क्रि स , वञ्च (चु), प्रलृ (प्रे), छलयति (ना धा)।

झाऊ, स पु (स झावु) पिचुल , झाबु क्षुपभेद ।

झाग स पु (हिं गाज) फेन , डिंडीर , अम्बुकफ , मल कम् ।

झाड़, स पु (स झाट >) क्षुद्रगुल्म म, कटस्तम्ब । (झाडी स्त्री)।

—झखाड़, स पु , गोक्षुर , क्षुपगुल्म ।

झाड़, स पु , गुल्मगहन, निर्भर्त्सना ।

—पोंछ, स स्त्री , मार्जन, शोधनम् ।

—फानूस, स पु , काचदीपिका ।

—फूँक, स स्त्री यत्रमत्रम् , मत्रयोग

झाडन, स पु (हिं झाडना) नक्तक , मार्जनपट ।

झाडना, क्रि स (हिं झडना) रेणु अपमृज् (अ प वे), निर्धूलीकृ ।

—पोंछना, क्रि स , प्रोञ्छ (भ्वा प से)।

झाड़ा, सं पु (हिं झाडना) वस्त्र-वसन , अन्वेषणा-निरीक्षा २ गूथ -थ, मल, पुरीषम् ।

झाड़ू, सं. स्त्री. (हिं. झाड़ना) समार्जनी, शोधनी।
—देना क्रि. स., सम्मृज् (अ. प. वे.) शुध् (प्रे.)।
झामा, सं. पु. (सं. ध्यामक) दग्धेष्टका।
झालर, सं. स्त्री. (सं. झल्लरी) दशा (स्त्री. बहु.), वस्त्रप (स्त्री. पु. बहु.) वस्त्रप्रान्त।
—दार, वि., झल्लरीयुक्त प्रान्तोदेव।
झिझक, सं. स्त्री. (हिं. झिझकना) आशंका, विकल्प: सन्देह।
झिझकना क्रि. अ. (अनु.) आशंक-विकल्प (भ्वा. प. से.), दोलायते-चिरायते (ना. धा.) शङ्क् (भ्वा. आ. से.)।
झिड़क सं. स्त्री. (हिं. झिड़कना) भर्त्सन आक्रोश: अधिक्षेप:।
झिड़कना क्रि. स. (अनु.) आकुश् (भ्वा. प. अ.) अधिक्षिप् (तु. प. अ.) निर्भर्त्स् (चु. आ. से.)।
झिड़की, सं. स्त्री. (हिं. झिड़कना) दे. 'झिड़क'।
झिलमिल, सं. स्त्री. (अनु.) प्रकम्पमान: प्रकाश:।
झिल्ली[1], सं. स्त्री. (सं.) चिल्ली, झिरी, झिरिका, झिल्लिका, भृङ्गारी।
झिल्ली[2], सं. स्त्री. (सं. चैल>) सूक्ष्म त्वच (स्त्री.)-चर्मन् (न.) २ जरायु:, उल्बम्।
झींकना, झींखना, क्रि. अ. (हिं. खीजना) अनुशुच् (भ्वा. प. से.), अनुतप् (दि. आ. अ.), पश्चात्ताप कृ। सं. पु., पश्चात्ताप:, विप्रतीसार:, अनुताप:, अनुशय:।
झींगुर, सं. पु. (अनु. झीं-झीं) दे. 'झिल्ली'(१)।
झीना, वि. (सं. जीर्ण>) सूक्ष्म, विरल, तनु।
झील, सं. स्त्री. (सं. क्षीर>) सरोवर:, जलाशय सरसी सरस (न.)।
झीवर, सं. पु. (सं. धीवर) नाविक:, औडुपिक: २ कैवर्त:, मत्स्याजीव:।
झुंझलाना, क्रि. अ. (अनु.) कुप् (दि. प. से.), क्रुध् (दि. प. अ.)।
झुंझलाहट, सं. स्त्री. (हिं. झुंझलाना) कोप:, क्रोध, रोष, अमर्ष।
झुट, सं. पु. (सं.) अस्कन्धवृक्ष:, ह्रस्वकाण्डतरु:।
झुंड, सं. पु. (सं. झुण्ट>) समुदाय:, समूह:, गण:, वृन्द:, कदम्बकम्।

झुकना, क्रि. अ. (सं. युज्>) अव, नम् (भ्वा. प. अ.), नम्रीभू २ वक्रीभू।
झुकाना, क्रि. स. (हिं. झुकना) नम् (प्रे.), वक्री कृ।
झुकवाना, क्रि. प्रे. (हिं. झुकना) दे. 'झुकाना'।
झुकाव, सं. पु. (हिं. झुकना) प्रवणता, नति: (स्त्री.) २ वक्रता ३ प्रवृत्ति (स्त्री.)।
झुकावट, सं. स्त्री. (हिं. झुकना) दे. 'झुकाव'।
झुटपुटा, सं. पु. (अनु. झुटपुट) सायंकाल:, अहोरात्रसंयोगसमय: सन्ध्या।
झुठलाना, झुठालाना, झुठाना, क्रि. स. (हिं. झूठ) मिथ्यावादित्व प्रमाणयति (ना. धा.), निराकृ, प्रत्याख्या (अ. प. अ.)।
झुठाई, सं. स्त्री. (हिं. झूठ) असत्यता, अनृतत्व, अलीकता, मिथ्यात्वम्।
झुनझुन, सं. स्त्री. (अनु.) झणत्कार:, झात्कार:, झणझणध्वनि: (पु.)।
झुनझुना, सं. पु. (अनु.) झुनझुनक:।
झुनझुनी, सं. स्त्री. (अनु.) झुनझुनी, अङ्गजाड्यानुभूति: (स्त्री.)।
झुमका, सं. पु. (हिं. झूमना) ताडपत्रम्।
झुरमट, झुरमुट, सं. पु. (सं. झुट>) समुदाय:, समूह: २ स्तम्ब:, गुल्म:।
झुर्री, (हिं. झुरना) वली-लि: (स्त्री.), चर्मसंकोच: २ पुट:, भङ्ग:।
झुलसना, क्रि. अ. (सं. ज्वलन) ईषद् दह्, प्लुष् (कर्म.)।
झुलसाना, क्रि. स., ईषद् दह् (भ्वा. प. अ.), प्लुष् (भ्वा. प. से.)।
झुलाना, क्रि. स. (हिं. झूलना) प्रेंख् (प्रे.) इतस्तत: चल् (प्रे.)।
झूट, झूठ, सं. पु. (सं. अयुक्त) असत्य, अनृतं, अलीकं मिथ्यावचनं, असत्यभाषणम्। वि., मिथ्या-मृषा-(समासके आदिमें) असत्य, अतथ्य, वितथ।
झूटा, झूठा, वि. (हिं. झूठ) मिथ्या असत्य, असत्यवादिन् मिथ्याभाषिन्।
झूम, सं. स्त्री. (हिं. झूमना) तन्द्रा, आलस्य २ आन्दोलन, प्रेंखणम्।
झूमना, क्रि. अ. (सं. भ्रम) अथवा 'घूम' का (अनु.) इतस्तत: चल् (भ्वा. प. से.)।
झूल, सं. स्त्री. (हिं. झूलना) कुथ-था, प्रवेणी (स्त्री.), परिस्तोम:, सज्जना।

झलना, कि अ (सं दोलन)दोलायते(ना धा), प्रेंख्(भ्वा प से)।
झूला, सं पु (स दोला-स्त्रि का)प्रेंखा, हिंदोल, आन्दोल।
झेलना, कि स (स क्षेलन >)सह्(भ्वा आ से), धृ(दि उ से)।
झोंकना, कि स (हिं झुकना)अग्नौ क्षिप (तु उ अ) २ प्रेर्(चु) प्रणुद्(प्रे)।
झोंक देना, कि स., दे 'झोंकना' (२)।
झोंका, सं पु (हिं झोंकना,) वायुवेग, पवनप्रहार, वातगुल्म।
झोंपड़ा, स पु (हिं छोपना?) उटज, कुटीर २ कुटी, कुटीरकः, पर्णशाला।
झोल, स पु (हिं झूलना) शैथिल्य, संकोच २ संवरण, व्यवधान ३ रञ्जनं, लेपनम्।
—फेरना, लिप्(तु उ अ), रञ्ज(प्रे)।
झोला, स पु (हिं झूलना)पुटक, प्रसेव कोष(झोली स्त्री = लघुपुटः इ)।

ञ

ञ, देवनागरीवर्णमालाया दशमो व्यञ्जनवर्णं, ञकार।

ट

ट, देवनागरीवर्णमालाया एकादशो व्यञ्जनवर्णं, टकार।
टंक, स पु (स) ग्रावदारण, पाषाणभेदन २ प्रभञ्जन, खनित्री ३ परशु, कुठार ४ खड्ग ५ चतुर्माषकात्मक चतुर्विंशतिरक्तिकात्मको वा तोलभेद ६ क्रोध ७ अभिमान ८ जंघा ९ खनित्र १० कोष, निधि ११ मुद्रा, नाणकम्।
टंकना, कि अ (स टंकण) व 'टाँकना' के कर्म के रूप।
टकवाई, सं स्त्री (हिं टकवाना) १-३ टंकन-सीवन-लेखन, भृत्या-भृति (स्त्री)।
टकवाना, कि प्रे, व 'टाँकना' के प्रे रूप।
टका, सं स्त्री (सं) श्वा, प्रसूता।
टँकाई, स स्त्री (हिं टाँकना) दे 'टकवाई'।
टँकाना, कि प्रे, दे 'टकवाना'।
टकार, स स्त्री (सं पु) ज्या-मौर्वी-घोष शब्द, शिञ्जिनीशिञ्जित २ टणत्कार, रणिति ३ झण झण, रणितनिनद।
टकारना, कि स (स टंकार >) ज्यां धुष् (चु), मौर्वी आस्फल् (प्रे) टंकारयति (ना धा)।
टंकी, सं स्त्री (सं टंक)तोयाधार, वापिका २ द्रोणी-णि (स्त्री)।
टंग, स पु (सं पु न)ग्रावदारण, पाषाणभेदन २ परशु ३ चतुर्माषात्मक तोलभेद ४ दे 'टाँग'।
टँगना, कि. अ, दे 'लटकना'।
टटा, सं पु (अनु टन टन) उपद्रव, कलह २ प्रपंच, आडंबर।
टक, स स्त्री (स टक – बाँधना >) अनिमेष बद्ध-स्थिर-दृष्टि (स्त्री)।
—बाँधना, मु, अनिमि(मे)षनयन (वि) दृश् (भ्वा प अ)।
—लगाना, मु प्रतीक्ष्(भ्वा आ से)।
टकटकी, स स्त्री, दे 'टक'।
—बाँधना, मु, बद्ध-स्थिर-दृष्ट्या अवलोक् (चु)।
टकराना, कि अ (हिं टक्कर) संघट्(भ्वा आ से), अभि-आ प्रति, हन् (अ प अ), अभि-स-पत् (भ्वा प से) कि. स उक्त धातुओं के प्रे रूप।
टकसाल, स्त्री (स टंकशाला), मुद्रांकण शाला।
टकसाली लिया, स पुं (हि टकसाल) टंक अध्यक्ष पति (पु), नैष्किकः। वि., टंक शालासंबन्धिन् २ शुद्ध, निर्दोष ३ सर्वसम्मत ४ प्रामाणिक, परीक्षित।
टका, स पु (स टंक >) अर्धाणी पणद्वयं २ रूप्य-ख्यं, कार्षिक, टंक ३ धनम्।
—सा जवाब देना, मु., प्रतिहन् नि प्रति-निषिध् (भ्वा प से)-प्रत्याख्या (अ प अ)।
—सा मुँह लेकर रह जाना, मु., त्रप् (भ्वा आ से), लज्ज् (तु आ से)।
टकोर, सं स्त्री. (स टंकारः) दे 'टंकार' (२), २ आघात, प्रहार ३ पटहप्रहार ४ दुंदुभि-

पटह, ध्वनि॰ (पु)५ ■,स्वेदन, (उष्ण-जलादिना) सेक ।

टकोरना, क्रि स (हि टकोर) भेरीं आहन् (अ प अ) २ प्रह (भ्वा प अ) ३ (उष्णजलादिभि) सिच (तु प अ), लिप् (तु प अ), प्र ,स्विद (प्रे) ।

टक्कर, सं स्त्री (अनु टक) मघट्ट, समर्द, ममा प्रति, घात २ विग्रह॰, सग्राम , सप्रहार ३ हानि (स्त्री) ४ मस्तक शीर्ष-,आघात ।

—का, मु , सम, समान, तुल्य ।

—खाना, मु , दे 'टकराना' क्रि अ ।

—मारना, मु , व 'टकराना' के प्रे रूप २ विरुध (रु उ अ) ३ यत् (भ्वा आ मे) ।

टखना, सं पु (सं टक = टाग>) गुल्फ, घुटिक , घुटी, घुण्ट , खुड्क ।

टटोल, सं स्त्री (हि टटोलना) स्पर्श , सम्पर्क, परामर्श॰, स्पर्शनो बोध ।

टटोलना, क्रि स (स त्वक्+तोलन>) स्पर्शेन परीक्ष (भ्वा आ से)निरूप् (चु), स्पृश्,परामृश् (तु प अ) २ अधकारे अन्विष् (दि प से)निरूप् परामृश।

टट्टी, सं स्त्री (सं स्थात्री ?) (वंशतृणादि रचित) कपा(वा)ट ट टी, २ प्रतिसीरा, तिरस्करिणी ३ सूक्ष्मभित्ति (स्त्री) ४ शौच कूप, मलालय ५ मल, उच्चार ।

—जाना, ■ , पुरीषोत्सर्गाय गम् ।

—की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना, मु , प्रच्छन्न प्रह (भ्वा प अ), निभृत पाप माचर् (भ्वा प से) ।

टटहू, सं पु (अनु) क्षुद्रपोटक अश्वशावक ।

टन, सं पु (अनु) घंटाध्वनि॰ (पु), टण त्कार , टणिति ।

—टन, सं पु , टणटण, निनद रणित, टणटण त्कार कृति (स्त्री) ।

टन, स पु (अ) अष्टाविंशतिमणकल्प , तोल भेद , ॰नम् ।

टनकना, क्रि अ (अनु) टणटणायते (ना धा), टणत्कार कृ २ घर्मेण शिर पीड् (कर्म) ।

टनटनाना, क्रि स (अनु) घटा नद्-वद् (प्रे) । क्रि अ , दे 'टनकना' ।

टनाटन, सं स्त्री (अनु) निरन्तर टणटण त्कार ।

टप¹, स पु (हि तोपना = ढांकना) प्रवहणा दीनाम् आच्छादन-आवरण-छत्रम् ।

टप², सं पु (अ टब) द्रोणी णि (स्त्री) ।

टप³, स स्त्री (अनु) बिंदुपातध्वनि (पु), टप् इति शब्द ।

—से, मु झटिति, आशु, शीघ्रम् ।

टपक, स स्त्री , दे 'टपकाव' ।

टपकना, क्रि अ (अनु टप) कणश बिंदु क्रमेण क्षर् गल् (भ्वा प से)-स्रु (भ्वा प अ)-स्यन्द् (भ्वा आ ■) २ (फलादि) झटिति नि-अव पत् (भ्वा प से) ३ परिस्रु, क्षर् ४ दे 'टीसना' ।

टपका, स पु (हि टपकना) स्वय पतित पक्वफलम् ।

—टपकी, स स्त्री , शीकर,-वर्ष पात २ सतत फलपात ।

टपकाना, क्रि स , व 'टपकना' के प्रे रूप ।

टपकाव, स पु (हि टपकना), (कणश) क्षरण-गलन-स्यन्दन-स्राव ।

टपना, क्रि, अ , दे 'कूदना' ।

टपाटप, क्रि वि (अनु) सतत, निरतर, अविरतम् ।

टप्पा, सं पु (अनु) प्लव , प्लवन, प्लुत ति (स्त्री), डप पा २ गीतिकाभेद ।

—खाना, क्रि अ, उत्पत् (भ्वा प से), उत्प्लु (भ्वा आ अ) ।

टब, सं पु (अ) दे 'टप'² ।

टब्बर, स पु, दे 'कुटुम्ब' ।

टमकी, सं स्त्री (अनु॰ टमक) डिंडिम॰, लघुपटह ।

टमटम, सं स्त्री (अ टैंडम) अश्वयानभेद , ॰टमटमम् ।

टमाटर, सं पु (अ टमैटो) आरक्तोय-रक्त, वृन्ताकम् ।

टर, स स्त्री (अनु) टरशब्द॰, अप्रिय-कर्कश कर्णकटु, शब्द २ भेकरव ३ दर्पोक्ति॰ (स्त्री) ४ दुराग्रह , प्रतीपता ५ तुच्छवचनम् ।

—टर, सं स्त्री , वृथालाप , प्र-,जल्प पित २ भेकरुतम् ।

—टर करना, क्रि अ , दे 'टरटराना' ।

टरकना, क्रि अ, दे 'टलना' तथा 'टरटराना'।
टरकाना, क्रि स, दे 'टालना'।
टरटराना, क्रि अ (अनु टरटर) प्रलप् प्रजल्प् (भ्वा प से) २ अविनयेन भू (भ उ से) टरटरायते (ना धा)।
टर्रा, वि (अनु टरटर) वावदूक, वाचाल इ २ धृष्ट, निर्व्रीड।
टर्राना, क्रि अ (अनु टर) साभिमान वद् (भ्वा प से) धार्ष्ट्येन भू (भ उ से), कटु वद्।
टलना, क्रि अ (स टलन>) विचल् (भ्वा प से), अपसृ (भ्वा प अ) २ स्थानान्तर या (अ प अ) प्रस्था (भ्वा आ अ) ३ वि,नश् (दि प वे), लुप् (दि प अ) ४ व्याक्षिप् (कर्म), विलम्ब (भ्वा आ से) ५ अन्यथा भू ६ (समय) व्यति इ (अ प अ), गम्।
टस, स स्त्री (अनु) गुरुद्रव्यसरणशब्द, टस् इति शब्द।
—से मस न होना, मु, ईषदपि न विचल्।
टसक, सं स्त्री (हिं टसकना) दे 'टीस'।
टसकना, क्रि अ (हिं टस) अप, गम् सृ (भ्वा प अ), अपया (अ प अ) २ दे 'टीसना'।
टसकाना, क्रि स, व 'टसकना' के प्रे रूप।
टसर, स पु (स त्रसर >) क्षौमभेद, •टसरम्।
टसर-मसर, स पु (हिं टस+मस) विलम्ब, व्याक्षेप।
टसुआ, स पु (हिं आँसुआ) मिथ्याश्रु (न), वितथबाष्प।
टहना, स पु (स तनु >) विटप, शाखा।
टहनी, सं स्त्री (हिं टहना) तनु-सूक्ष्म, विटप-शाखा।
टहल, स स्त्री, दे 'सेवा'।
टहलना, क्रि. अ (सं तत्+चलन ?) परि, अट् भ्रम् (भ्वा प से), विह (भ्वा प अ), इतस्ततः चर् (भ्वा प से), परिक्रम् (भ्वा प से, भ्वा अ, अ)।
टहलनी, सं. स्त्री, दे 'नौकरानी'।
टहलाना, क्रि स, व 'टहलना' के प्रे रूप।
टहलुआ-वा, टहलू, स पु, दे 'नौकर'।
टहलुई, स स्त्री, दे 'नौकरानी'।
टाँक[1], सं स्त्री (स टक) चतुर्माषकात्मक तोलभेद २ अर्थगणना, मूल्यनिरूपणम्।
टाँक[2], स स्त्री (हिं टाँकना) लेख, लिखन, लिपि (स्त्री) २ दे 'निब'।
टाँकना, क्रि स (स टङ्कन) टङ्क् (भ्वा प से, चु), कीलादिभि सधा (जु उ अ)-सयुज् (रु उ अ) २ सिव (दि प से), वे (भ्वा उ अ) ३ पादुका सधा ४ नक्षिप (प्रे) सयुज् ५ पत्रिकादिषु लिख (तु प से) ६ शिलादीनि दन्तुरयति (ना धा)।
टाँका, स पु (हिं टाँकना) सधायक-सयोजक,-कील शङ्कु २ सी(से)वन, अंश भाग ३ सी(से)वन, स्यूति (स्त्री) ४ पट वस्त्र,-खण्ड ५ टङ्कन, सधायक, धातु ६ व्रणसेवनम्।
टाँकी, सं स्त्री (सं टङ्क) तक्षणी, प्रक्षन २ खर्बूजादिषु कृत छिद्र ३ दे 'टाँका'।
टाग, स स्त्री (स टगा) टङ्क कन्धा जघा, प्रसृता, पाद।
—अड़ाना, मु, परकार्याणि चंच (चु प से, चु आ से)-निरूप् (चु)।
—तले से निकलना, मु, स्वपराजय स्वीकृ।
—पसार कर सोना, मु, नि शङ्क निर्भय स्वप् (अ प अ)-शी (अ आ से) २ सानन्द जीवन या (प्र)।
टाँगना, क्रि स, दे, 'लटकाना'।
टागा, स पु (हिं टँगना) अश्ववाहनभेद।
टांगी, स स्त्री, दे 'कुल्हाड़ी'।
टाँच, सं स्त्री (हिं टाँकी) कार्यबाधक,-उक्ति, (स्त्री)-वचनम्।
टाँचना, क्रि स, दे 'टाँकना'।
टाँड, स स्त्री [स स्थाणु (पु)>] मञ्च २ दे 'परछत्ती'।
टाँयटाँय, स स्त्री (अनु) कर्कश कटु-शब्द ध्वनि (पु) २ प्रलाप, प्रजल्प।
—फिस, मु, निष्फल आडंबर, व्यर्थ प्रयास।
टाइप, सं पुं (अं) मुद्राक्षर २. टङ्कणयन्त्रम्।

टाइफस बुखार, स पु (अ+अ) मोहज्वर", •यूकाज्वर ।
टाट, स पु (स नतु" >) शाण पट वस्त्र शाण बराशि सि (पु)।
टाप स स्त्री (अनु) अश्व-खुर खुर शब्द इत्यन् २ अश्वपादशब्द"।
टापना, क्रि अ (हिं टाप) खुरेण अभिहन (अ प अ)-विलिख (तु प से) २ अधीर व्यग्र (वि) भू ३ व्यर्थ परिश्रम् (भ्वा प से) ४ दे 'कूदना'।
टापू, स पु, दे 'द्वीप'।
टारना, क्रि स, दे 'टालना'।
टारपीडो, स पु (अ) अन्तर्जलाभिनालिका अस्त्रभेद", •तारपीडु"।
टार्च, स स्त्री (अ) विद्युद्दीपिका।
टाल¹, स स्त्री (स अट्टाल" >) चय", राशि (पु), ढलिर, चिति" (स्त्री) २ (काष्ठ बीजा) हट्ट -आपण विपणि (स्त्री)।
टाल², स स्त्री (हिं टालना) अप-व्यय-देश, छलेन परिहरण, निह्नव ।
—टूल, —मटो(टू टो)ल, } स स्त्री, अप नि, ह्नव" अप-व्यप-देश, विलम्ब, व्याक्षेप"।
—करना, क्रि अ, अनिषद (प्र) विलम्ब् (तु प अ) व्याक्षिप (तु प अ)।
टालना, क्रि स (हिं टलना) वक्रोक्त्या छलेन परिह (भ्वा प अ), अप-व्यप दिश (तु प अ), अप नि ह्नु (अ आ अ) २ दे 'टलना' (१ ६) के प्रे रूप।
टायर, स पु (अ) (चक्र—) वलय यम्।
टिंचर, स पु (अ टिंक्चर) कषाय", निर्यास, फाण्ट ।
टिंडा, स पु (स टिण्डिश) रोमशफल", टिंडिश, डिण्डिश ।
टिकट, स पु (अ) अनुज्ञा निर्देश प्रवेश, पत्रकम्।
टिकटिकी¹, स स्त्री, दे 'टकटकी'।
टिकटिकी², स स्त्री, दे 'टिकठी'।
टिकठी, स स्त्री (हिं तीन+काठ) त्रिकाष्ठी, २ त्रिपादी।
टिकना, क्रि अ (सं स्थित+कृ>) वस् स्था (भ्वा प अ), वृत् (भ्वा आ. से) २ विरम् (भ्वा प अ) अवस्था (भ्वा आ अ)।
टिकली स स्त्री (हिं टीका) धातुतारा चक्रकम्।
टिकस, स पु (अ टैक्स) कर" राजस्व, शुल्क क बलि (पुं)।
टिकस, स पु, दे 'टिकट'।
टिकाऊ, वि (हिं टिकना) चिर स्थायिन्, दृढ, ध्रुव, स्थिर, अक्षय।
टिकाना, क्रि स व 'टिकना' के प्रे रूप।
टिकाव, स पु (हिं टिकना) स्थिरता, चिरस्थायिता २ स्थिति" (स्त्री) विराम ३ दे 'पड़ाव'।
टिकिया, स स्त्री (स वटिका) चक्रिका वटी, २ अपूप, पूप, पिष्टक ।
टिकुली, स स्त्री, दे 'टिकली'।
टिकैत, स पु (हिं टीका) दे 'युवराज'।
टिक्कड, स पु (हिं टिकिया) स्थूल हद्द, पूप ।
टिक्का, स पु (देश) दे 'टीका'।
टिक्की, स स्त्री, दे 'टिकिया'।
टिघलना, क्रि अ, दे 'पिघलना'।
टिचन, वि (अ अटेन्शन) सज्ज, सन्नद्ध, उद्युक्त २ सिद्ध, उपस्कृत, आयोजित।
टिटकारना, क्रि स (अनु) (अश्वादीन्) सटिकटिकशब्द प्रोत्सह् प्रणुद् (प्रे)।
टिटिह, हा, हरा, स पु (स टिट्टिभ") टिट्टिभक, टीटिभक, टिटिभ" ।
टिटिहरी, स स्त्री (हिं टिटिहरा) टिटि(ट्टि)-भी, टिट्टिभकी।
टिड्डा, स पु (स टिट्टिभ >) शर(ल)भ", पतंग" ।
टिड्डी, स स्त्री (हिं टिड्डा) टिरि (पु), शर(ल)भ ।
—दल, स, विपुलवृन्द, असंख्यसमूह ।
टिपटिप, स स्त्री (अनु) बिंदुपातध्वनि (पु) टिपटिपशब्द"।
टिप्पणी भी, स स्त्री (स) टीका, भाष्य, वृत्ति (स्त्री), व्याख्या।
टिप्पस, स स्त्री (देश) उपाय", युक्तिः (स्त्री)।
टिव्वा, स पुं., दे 'टीला'।

टिमटिमाना, क्रि अ (स निम्=ठढा होना>) स्फुर (तु प से) तरल मद सकप दीप् (दि आ से) द्युत् प्रकाश (भ्वा आ से) प्रभा (अ प अ) २ आसन्नमृत्यु (वि) मृत् (भ्वा आ से)।

टिमटिमाहट, स स्त्री (हिं टिमटिमाना) तरल प्रभा, ज्योतिस् (न), स्फुरण रितम्।

टीका[१], स पु (स तिलक -क) चित्रक, विशेषक -क, पुण्ड -ड्रक, तमालपत्र २ तिलक, औद्वाहिकरीतिविशेष ३ अन्त, श्रावण प्रवेशन ४ (रोगनिवारणार्थ) रोगद्रव्यनिवेशन ५ गव्यद्रव्यसक्रामण ६ प्रधान, मुख्य, ७ युवराज ८ राजत्व, चिह्न लक्षण ९ राज्य ,अभिषेक १० बिंदु (पु), लाञ्छन, चिह्नम् ११ ललाटिका, मस्तकभूषणभेद ।

—करना, क्रि स, (रोगनिवारणार्थ) रोगद्रव्य निविश सकम् (प्रे) २ गव्यद्रव्य निविश् सकम् (प्र)।

—करनेवाला, स पु, गव्य रोग द्रव्य निवेशक ।

—भेजना, क्रि स, औद्वाहिकोपहारान् प्रेष् (प्रे)।

—लगाना, क्रि स तिलक कृ अथवा विधा (जु उ अ)।

टीका[२], सं स्त्री (स) व्याख्या, वृत्ति (स्त्री), भाष्य, टिप्पणी नी ।

—कार, स पु (स) टीका भाष्य व्याख्या वृत्ति ,-कार कृत् (पु)।

टीन, स पु (अ टिन) रग, वग, कस्तीर, त्रपु (न) रगलिप्त लौहतनुफलकम् ।

टीप, स स्त्री (हिं टीपना), (हस्तेन) आपीडन २ शनै प्रहरण ३ इष्टकासधिषु सुधापूर्ति रेखा ४ (समय-) लेख पत्र ५ जन्म, पत्र पत्रिका ।

—करना, क्रि स, इष्टकादिसधिषु सुधा पूर् (चु)।

—टाप, स स्त्री, आडबर वैभव २ सत्कार, परिष्कार, भूषा, अलकरणम् ।

—टाप करना, क्रि स, अल परिष्, कृ, मड् (चु)।

टीपना, क्रि स (सं टेपन = फेंकना) आपीड् (चु), सकोच् (भ्वा प से) २ लिख (तु प से) ३ शनै प्रह (भ्वा प अ) ४ उच्चै गै (भ्वा प अ)।

टीम, स स्त्री (अ) क्रीडकमंघ २ गण, वर्ग ।

टीमटाम, स स्त्री (देश) दे 'टीपटाप'।

टीरा, स पु (स टेर) टेरक केकर, केदर, टगर, वलिर ।

टीला, स पु (स अष्ठीला>) उन्नतभूभाग २ क्षुद्रपर्वत ३ मृत्तिकाचय वल्मीक कम।

टीस, स स्त्री (अनु) विध्यद् स्फुरद, व्यथा वेदना यातना।

टीसना, क्रि अ, (हिं टीस) मुहुर्मुहु व्यथ (भ्वा आ से), सस्पद पीड् (कर्म)।

टुच, वि, दे 'टुचा'।

टुड, स पु (सं तुट>) छिन्नो हस्त २ छिन्न शाख तरु, स्थाणु (पु न), ध्रुव, शकु (पु)।

टुडा, वि (हिं टुड) अहस्त, छिन्नहस्त २ शाखाहीन ३ एकशृग।

टुडी, स स्त्री [स तुडि (स्त्री)], नाभि (स्त्री)।

टुक, क्रि वि (सं स्तोक) क्षण, कचित्कालम् । वि, किंचित्, अल्प, क्षुद्र।

टुकड़ा, सं पु (हिं टुक) खड ड, शकल ल, लव, वि, भाग, अश, वि, दल २ ग्रास, कवल, पिंड ।

टुकड़े करना, क्रि स, भञ् (रु प अ), खड् (चु), शकली [redacted] २ विच्छिद् विभिद् (रु प अ), विभज् (भ्वा उ अ)।

टुकड़े टुकड़े करना, मु, चूर्ण् (चु) खडशः भञ्, मृद् (क्र् प से)।

टुकड़े माँगना, मु, भिक्ष (भ्वा आ से), भिक्षां याच् (भ्वा आ से)।

टुकड़ी, स स्त्री (हिं टुकड़ा) दे 'टुकड़ा (१) २ समूह, गण ३ सैन्यदल, गुल्म मम्।

टुच्चा, वि (स तुच्छ) क्षुद्र, नीच हीनजाति।

टुटपुँजिया, वि (हिं टूटी+पूजी) परिक्षीण, निर्धन, अल्प, धन मूल, दरिद्र।

टूँडी, स स्त्री, दे 'टुडी'।

टूक डा, स पुं, दे 'टुकड़ा'।

टूटना, क्रि अ (सं त्रुट्) द्, भज्, भिद् (कर्म), त्रुट् (दि तथा तु प से), दल् (भ्वा प से), स्फुट् (तु प से)

२ विरन् (भ्वा प अ), निच्छिद् (कर्म), निवृत् (भ्वा आ से) ३ वियुज (कर्म), पृथक भू ४ निर्दली भू ५ दरिद्र (वि) जन् (दि आ मे) ६ आक्रम् (भ्वा प से), अभिद्रु (भ्वा प अ)। सं पु, भञ्जन, भग, विराम, विच्छेद, निवृत्ति (स्त्री)।

टूटनेवाला, सं पु, भिदुर, भगुर, सुभग।

टूटा, वि, भग्न, दीर्ण, त्रुटित, स्फुटित, विच्छिन्न, निवृत्त इ।

—फूटा, वि, टकनी खण्ड, कृत, दलित, विदीर्ण।

टूर्नामेंट, सं स्त्री (अ) पुरस्कारार्थिना क्रीडा खेला, क्रीडाप्रतियोगिता।

टूल, स पु (अ) उपकरण, साधनम्।

टेंट टी, स स्त्री (देश) शार्ङ्गेपुष्ट-द्राटिका ग्यावृत्ति (स्त्री) २ दे 'करील' (वृक्ष तथा फल)।

टेंटुआ, स पु (देश) श्वासनालिका, कण्ठ, गल।

टेंटें, स स्त्री (अनु) शुकशब्द, कीरराव, टेंटें इति ध्वनि (पु) २ प्रलाप, व्यर्थ वचनम्।

—करना, निर्विवेक भाष (भ्वा आ से), जल्प (भ्वा प से)।

टेंप्रेचर, सं पु (अ) ताप, ऊष्मन् (पु)।

टेक, स स्त्री (हिं टिकना) स्थूणा, उपस्तम्भ, उत्तम्भ, अवष्टम्भ, उपघ्न २ आश्रय, अव लम्ब ३ वेदी ४ आग्रह, अभिनिवेश ५ ध्रुवपद ६ प्रतिज्ञा ७ स्थायिन् (सगीत) ८ अभ्यास, नित्यव्यवहार।

टेकन, स पु, दे 'टेक' १ २।

टेकना, क्रि स (हिं टेक) अव-आ, लम्ब् (भ्वा आ से), अवष्टम्भ् (क्र प से), धृ (भ्वा प अ, चु)।

माथा—, क्रि स, प्रणम् (भ्वा प अ), पादयो पत् (भ्वा प [illegible]), वद् (भ्वा आ से)।

टेकी, वि (हिं टेक) सत्यसन्ध, दृढप्रतिज्ञ २ साग्रहिन्, अभिनिवेशिन्।

टेटेनस, स [illegible] (अ) धनुर्वात, प्रतान (मय कररोग)।

टेढ़ा, [illegible] (स तिरस्>) अराल, कुटिल, जिह्म, वक्र, आ, नत (ना) मित, आभुग्न, न्युब्ज, आकुञ्चित, विषम, तिर्यच् २ कठिन, दुष्कर ३ उद्धत, अशिष्ट, दुःशील।

—करना, क्रि स, आवृज् (चु), वक्री-कुटिली कृ, अव-आ, नम् [प्रे न (ना) मयति], आ वि, भुज् (तु प से)।

—मेढ़ा, वि, वक्र, वक्राकार, कुटिल।

—होना, मु, क्रुद्ध रुष्ट (वि) भू।

टेढ़ापन, स पु (हिं टेढ़ा) कुटिलता, जिह्मता, वक्रता, अरालता इ।

टेढ़ी, वि स्त्री (हिं टेढ़ा) वक्रा, कुटिला, जिह्मा इ।

—खीर, [illegible], दुष्कर कार्यम्।

—चितवन, मु, कटाक्ष, साचिविलोकित, अपाङ्गदृष्टि (स्त्री)।

टेढ़े, क्रि वि (हिं टेढ़ा) तिर, तिर्यक्, वक्र साचि (सब अव्य)।

टेना, क्रि स (देश), दे 'सान देना' २ दे 'मूँछ पर ताव देना'।

टेनिस, सं स (अ) कन्दुकक्रीडाभेद।

टेब(बु)ल, सं पु (अ) पादफलक कम्।

—क्लाथ, स पु (अ) पादफलक, वसन, आच्छादनम्।

टेर, स स्त्री (सं तार) तारध्वनि, उच्च स्वर २ आह्वान, सबोधन, आह्वानशब्द।

टेरना, क्रि स (हिं टेर) उच्चै गै (भ्वा प अ) २ आहृ (प्रे), आह्वे (भ्वा प अ)।

टेराकोटा, स पु (अ) पक्वमृन्मूर्ति (स्त्री), तप्तमृत्प्रतिमा २ पक्व तप्त, मृत्तिका मृद् (स्त्री)।

टेलीग्राम, स [illegible] (अ) तडित् विद्युत्, सन्देश।

टेलीपैथी, सं स्त्री (अ) अन्यचित्त ज्ञानम्, मनविचार, संक्रान्ति (स्त्री)।

टेलीप्रिंटर, सं पु (अ) •दूरमुद्रकम्।

टेलीफोटोग्राफी, स स्त्री (अ) •दूरच्छाया चित्रणम्।

टेलीफोन, पु पुं (अ) दूर, भाष ध्वनम्।

टेलीविज़न, सं पुं (अ) •दूरदर्शनम्।

टेलीस्कोप, स पु (अ) दे 'दूरबीन'।

टेव, सं स्त्री (हिं टेक) दे 'आदत'।

टेवा, सं पुं (सं टिप्पन>) जन्मपत्रिका।

टेसू, सं पु (हिं केसू) किंशुक, पलाश, रक्तपुष्पक, यज्ञिय २ किंशुककुसुमम् ।

टेस्टट्यूब, सं स्त्री (अं) परीक्षणनालिका ।

टोंटी, सं स्त्री (सं तुंड>) नाली, नालिका ।

टोक, सं स्त्री (हिं 'रोक' का अनु) अन्तराय उपरोध विघ्न,-वचन वाक्य २ कुदृष्टि (स्त्री) ३ कुदृष्टिप्रभाव ।

—टाक या टोका टाकी, सं स्त्री, निषेध पृच्छा व्याघात,-वचनानि (न बहु) ।

टोकना, क्रि स (हिं टोक), नि-वि-नि, वृ (प्रे) अव नि प्रति, रुध् (रु प अ), (प्रश्ने) बाधू (भ्वा आ से), निषिध (भ्वा प से) ।

टोकनेवाला, सं पु, विघ्नकर, निवारक, प्रतिबंधक ।

टोकरा, सं पु (?) कण्डोल, करंड ।

टोकरी, सं स्त्री (हिं टोकरा) करंडी, कण्डोलक ।

टोटका सं पु (सं त्रोटक >) गारुड, मंत्र २ रक्षाकरंड ।

टोटल, सं पु (अं) योग, पिंड, मण्डल, परिसंख्या ।

टोटा, सं पु (हिं टूटना) हानि क्षति (स्त्री) २ अभाव, न्यूनता ३ खंड-ड, शकलम् ।

टोडी, सं स्त्री (सं त्रोटकी) रागिणीभेद ।

टोडी, सं पु (अ) श्ववृत्ति, चाटुपटु, प्रभु स्वदेश, शत्रु द्रोहिन ।

टोना, सं पु (सं तंत्र) अभिचार, मंत्र, अभिचार, कुहक, वशक्रिया, मोह, योग २ गीतिभेद ।

टोनेबाज़, सं पु, कुहक, अभिचारिन्, कौसृतिक ।

टोप, सं पु (हिं तोपना = ढाँकना) •टोप, आप्तीय शुरुड, शिरस्क २ शिरस्त्राण । ३ कोश प, वेष्टनम् ।

टोपी, सं स्त्री (हिं टोप) शीर्षण्य, शिरस्क •टोपी ।

टोला, सं पु (सं प्रतोलिका) नगर पुर, विभाग २ वर्ग, गण ।

टोली, सं स्त्री (हिं टोला) गण, संघ, वर्ग, समूह ।

टोह, सं स्त्री, दे 'खोज' ।

टोहना, क्रि स, दे 'खोजना' तथा 'टटोलना' ।

ट्रंक, सं पु (अं) लौह आयस, पिटक पेटिका समुद्गक ।

ट्राम, सं स्त्री (अं) विद्युच्छकटिका, ट्रामाख्य यानम् ।

ट्रेडमार्क, सं पु (अं) पण्यमुद्रा ।

ट्रेन, सं स्त्री (अं) बाष्पशकटी ।

ठ

ठ, देवनागरीवर्णमालाया द्वादशो व्यञ्जनवर्ण, ठकार ।

ठठ, वि, दे 'ठूंठ' ।

ठंडक, सं स्त्री (हिं ठंडा) शीत, शीतता, शैत्य हिम, हिमता, शीतलता ।

ठंड(ढ)क, सं स्त्री (हिं ठंडा) दे 'ठंड' २ तृप्ति (स्त्री), सन्तोष ३ उपद्रव-रोग, शांति (स्त्री) ।

ठंडा, वि (सं स्तब्ध) शीत, शीतल, उष्णता रहित, आर्द्र, हिम, शिशिर २ धीर, प्रशांत ३ तृप्त, सन्तुष्ट ४ मृत, दिवंगत ५ निर्वाण, निर्वापित ।

—करना, क्रि स, आर्द्रीशीती,-कृ, आर्द्रयति (ना धा), ताप ह (भ्वा प अ) । मु, तुष् प्रसद् प्रशम् (प्रे), सान्त्व् (चु) २ निर्वा (प्रे निर्वापयति) ।

—होना, क्रि अ, शीती शीतली भू, शीतायते (ना धा) । मु, दे 'मरना' ।

ठंडी सांस, सं स्त्री, दीर्घ, श्वास निश्वास, नि(नि)श्वास, उच्छ्वास ।

—भरना, मु, उत् प्र श्वस् (दि प से), श्वस् (भ्वा प से), क्षि (कर्म) ।

कलेजा—होना, मु, वैर, निर्यातन-साधन शुद्धि (स्त्री) जन (दि आ से) २ प्रसद् (भ्वा प अ) ।

ठंडा (ढा) ई, सं स्त्री (हिं ठंडा) शीतपेय, तापहरपान २ भंगापेयम् ।

ठढे-ठढे, अव्य० (हिं ठढा) प्रातः सायं वा, आतपाभावे २ सुखम्, मानन्दम् ३ शान्त, समौनम् (दोनों अव्य०)।

ठक, स स्त्री (अनु) अभिघात पात प्रहार, शब्द, ठक इतिध्वनि (पु)।

—ठक, स स्त्री (अनु) ठकठकायित, ठकठकध्वनि २ कलह, कलि। वि स्तब्ध चकित, निश्चेष्ट।

ठकठकाना, क्रि स (अनु) ठकठकायते (ना धा), मृद अभि आ हन् (अ प अ) अथवा प्रहृ (भ्वा प अ) २ लघु प्रहृ या तड (चु)।

ठकठकिया, वि (अनु ठकठक) विवादिन्, कलह कलि प्रिय।

ठकुरसुहाती, स स्त्री (हिं ठाकुर+सुहाना) दे 'खुशामद'।

ठकुराइ(य)न, स स्त्री (हिं ठाकुर) ठक्कुरी, ठक्कुरभार्या (२) नापिती, क्षुरिणी २ स्वामिनी, ईश्वरी।

ठकुराई, स स्त्री (हिं ठाकुर) प्रभुत्व, आधिपत्य, स्वामित्व २ अधिकार, शासन ३ महत्त्वम्

ठकुरायत, स स्त्री (हिं ठाकुर) दे 'ठकुराई'।

ठग, स पु (स स्थग) कितव, दाम्भिक, धूर्त, प्रतारक, वञ्चक।

—बाजी, स स्त्री, कैतव, कपट, दम्भ, प्रतारण, स्थगन अति-अभि, सधान, वचनम्।

ठगना, क्रि स (स स्थगन) अति-अभि, सधा (जु उ अ), प्र-मुह् (प्रे), वञ्च् शठ (चु), विप्रलभ् (भ्वा आ अ)। स पु, दे 'ठगबाजी'।

ठग(गि)नी, स स्त्री (हिं ठग) वञ्चिका, प्रतारिका, दाम्भिकी कपटिनी।

ठगी, स स्त्री, दे 'ठगबाजी'।

ठगाना, क्रि प्रे., व 'ठगना' के प्रे रूप।

ठट, स पु, दे 'ठठ'।

ठट(ठ)री, स स्त्री (हिं ठाट) शवयान, खाटी २ कंकाल, अस्थिपञ्जर ३ घास पलाल, जाल ४ कृशमनुष्य।

ठट्ठा, स पु (पु अट्टहास या अनु) हास्य, परि(री)हास, क्ष्वेला-ष्टिका प्रहसन, नर्मन् (न) नर्म-विनोद परिहास,-आलाप-उक्ति (स्त्री) वचन २ उपहास।

—करना, क्रि स, परिहस् (भ्वा प स) विनोदवचन उदीर (प्रे) २ अव-उप वि, हस, उपहासास्पदी कृ, अवज्ञा (क्र उ अ)।

ठट्ठेबाज, स पु, (हिं +फा) विनोदशील, हास्यप्रिय, वैहासिक, षण्ड।

ठट्ठेबाजी, स स्त्री विनोद,-कारिता शीलता, वैहासिकता।

ठठ, स पु (स स्थिर >) समूह, समुदाय, जन, समर्द ओघ

ठठेरा री, स पु (अनु ठन ठन) कांस्य ताम्र,-कार।

ठठेरिन, स स्त्री (हिं ठठेरा) कांस्य-ताम्र, कारी।

ठठोल, स पु (हिं ठट्ठा) दे 'ठट्ठेबाज'।

ठठोली, स स्त्री (हिं ठठोल) दे 'ठट्ठेबाजी'।

ठनक, स स्त्री (हिं ठनकना) ठणिति, ठणत्कार, शिञ्जा, क्वणन, झणत्कार, मृदङ्गादीनां ध्वनि (पु) २ दे 'टीस'।

ठनकना, क्रि अ (अनु ठनठन) क्वण (भ्वा प स), शिञ्ज (अ आ से)। ठणठणायते (ना धा), ठणिति कृ।

ठनकाना, क्रि स, व 'ठनकना' के प्रे रूप।

ठनठन, स स्त्री (अनु) दे 'ठनक'।

—गोपाल, स पु, दरिद्र, निर्धन २ निस्सार वस्तु।

ठनना, क्रि अ, (हिं ठानना) नि-निर्-अध्यवसो (कर्म)।

ठनाका, स पु, दे 'ठनक'।

ठनाठन, क्रि वि (अनु ठनठन) सठणत्कार, सझणत्कारम्।

ठप्पा, स पु (स स्थापन) मुद्रा, मुद्रायन्त्र, २ आकर-संस्कार, साधन ३ अङ्क, चिह्न, मुद्रा, न्यास।

—लगाना, क्रि स, मुद्रयति चिह्नयति (ना धा), अङ्क (चु०), लाञ्छ् (भ्वा प से)।

ठरना, क्रि अ, दे 'ठिठुरना'।

ठर्रा, स पु (देश) निकृष्टसुरा २ स्थूलसूत्र ३ अर्धपक्वेष्टका।

ठस, वि (स स्थास्नु >) घन, दृढसन्धि, सुदृढ, कठिन, स्थूल, सुसंहत २ दे 'गफ' ३ गुरु,

भारवत् ४ अलस, मथर ५ (सिक्का) कूट कपट कृत्रिम(समासारम में) ६ घनात्व ७ कृपण ८ अत्याग्रहिन् ९ ठसिनि शब्द, वस्तुभग्नध्वनि (पु)।

ठसक स स्त्री (हिं ठस) हाव, भाव, विभ्रम २ दर्प, गर्व।

ठसका, स पु (अनु ठस) शुष्क अवक. कास क्षवथु २ आघात, समर्द ३ पाश, धातुरत।

ठसनी, स स्त्री (हिं ठस) अयोधन, मुद्गर।

ठसाठस, वि (हिं ठस) परिपूर्ण, आकीर्ण, आकुल, सकुल, समाकुल।

ठस्सा, स पु (देश) अहकार, दर्प २ हाव भाव ३ आडबर।

ठहरना, क्रि अ (स स्थिर) स्था (भ्वा प अ), अवस्था (भ्वा आ अ), निश्चल स्थितिस्थिर स्तब्ध (वि) भू २ वस (भ्वा प अ) ३ निविश (तु प अ), प्रयाणभग कृ ४ विश्रम् (दि प से), विरम् (भ्वा प अ) ५ निश्चि निर्णी (कर्म) ६ प्रतीक्ष् (भ्वा आ से)। स पु अव स्थिति (स्त्री) स्थान, निश्चलता, स्तब्धता वास, विश्राम इ।

ठहरनेवाला, स पु, भव स्थाता (पु)।

ठहराना, क्रि, स, व 'ठहरना' के प्रे रूप।

ठहराव, स पु (हिं ठहरना) अव स्थिति (स्त्री), निवेश २ निर्धारण, निश्चय।

ठहरौनी, स स्त्री (हिं ठहराना) विवाहे शुल्कादिनिश्चय।

ठहाका, स पु (अनु) सशब्द, स्फोटन भग २ अति प्र-अट्ट-उच्चैर ,हास।

ठाँय, स पु (स स्थान) स्थल, प्रदेश २ निवास, वसति (स्त्री)।

ठाँसना, क्रि स, दे 'ठूँसना'।

ठाकुर, स पु (स ठक्कुर) परमेश्वर, जगदीश २ पूज्य, मान्य (मानव) ३ नायक, अधिष्ठातृ (पु) ४ ग्रामेश, भूस्वामिन् ५. क्षत्रियोपाधि (पु) ६ प्रभु, स्वामिन् ७ नापित ८ देव, देवता ९ देवप्रतिमा।

—द्वारा, सं पु } देव, मदिर-स्थान आलय,
—बाड़ी, स स्त्री } मदिरम्।

ठकुरी, स स्त्री, दे 'ठकुराई'।

ठाट, स पु (स स्थातृ) तृण, पटल इदि (स्त्री) २ दे 'ढाँचा' ३ अलक्रिया, वेश ४ आडबर, शोभा, वैभव ५ हर्ष, मोद ६ रीति (स्त्री), शैली ७ आयोजन समारभ ८ सामग्री, परिच्छद ९ युक्ति (स्त्री), उपाय १० आधिक्य, प्राचुर्य ११ समूह, वृदन्।

—बाट, सं पु., आडबर, श्री (स्त्री), शोभा, ऐश्वर्य, वैभव, प्रताप।

—बदलना, मु, आकार मात्र परिवृत् (प्र)।

ठाठ, स पु, दे 'ठाट'।

ठाढ़ा, वि (स स्थातृ) अवस्थित, उन्नत, ऊर्ध्व, दडवत् उत्थित, उत्तान २ जात, उत्पन्न ३ समस्त, समग्र, अशिष्ट।

ठानना, क्रि स (स अनुष्ठान) अध्यव स्यव सो (दि प अ, अध्यवस्यति), निश्चि (स्वा उ अ), सकल्प् (प्रे), निर्णी (भ्वा प अ) २ साग्रह प्रारभ् (भ्वा आ अ), अध्यवसायेन अनुस्था (भ्वा प अ)।

ठार, स पु (स) हिम, तुहिन, तुषार २ अतिहीन, शैत्यातिशय।

ठाला, स पु (हिं निठल्ला) कार्य-जीविका व्यवसाय, अभाव।

ठाली, वि, दे 'निठल्ला'।

ठिंगना, वि (हिं ठेठ+अग) खर्व, ह्रस्व, वामन, ह्रस्वकाय।

ठिकाना, स पु (हिं ठिकान) स्थल-ली, स्थान, प्र,देश, भू भूमि (स्त्री) २ आनि, वास, आ,लि, लय ३ आश्रय निर्वाह, स्थान ४ याथार्थ्य, प्रामाण्य ५ आयोजन, मतिया, प्रबध ६ अत, सीमा ७ नामधाम परिचय ८ निर्दिष्ट-स्थान, स्थानम्।

ठिकाने लगना, मु, हन् हिंस् (कर्म) २ समाप् (कर्म)।

ठिकाने लगाना, मु, हन् (अ उ अ), हिंस् (रु प से) २ निर्दिष्टस्थान नी (भ्वा प अ) ३ सम्यक् उपयुज् (रु उ अ) ४ कार्य समाप् (स्वा उ अ) ५ सफली कृ।

टिटकाना, क्रि अ (सं स्थित+करण >) अकस्मात्-अकांडे विरम् (भ्वा प अ)-रुध् (कर्म) स्तब्ध निश्चेष्ट स्तब्धगति (वि) भू

ठिट(ठु)रना, क्रि अ (स ठार >) शीतो जडी भू, स्तम (कर्म) २ शीतेन कंप (भ्वा आ से)।
ठि(ठु)नक, स स्त्री (अनु) गद्गद, फु (फू)त्कार।
ठि(ठु)नकना, क्रि अ (अनु) सगद्गद क्रन्द् (भ्वा प से)-रुद् (अ प से), शिशुवत् रुद्।
ठिरना, क्रि अ, दे 'ठिठरना'।
ठीक, वि (हिं ठिकाना) अवितथ, तथ्य, सत्य यथार्थ २ उचित, न्याय्य, धर्म्य, समञ्जस ३ शुद्ध, निर्भ्रांत, निर्दोष ४ सुस्थ, अविकृत ५ यथार्ह, यथायोग्य, अनुरूप ६ नम्र, विनीत ७ अन्यूनाधिक, निर्दिष्ट ८ नियत ९ पूर्ण, समाप्त। क्रि वि, यथावत्, याथातथ, सम्यक्, साधु तत्त्वत, पूर्णतया।
—आना, क्रि अ, उपपद्-युज् दिश्य (कर्म), सुश्लिष्ट सुसंगत (वि) भू २ तुल्य-अनुरूप (वि) भू।
—करना, क्रि स, निर्दोषी-कृ, परि वि-सं शुध् (प्रे) २ सुश्लिष्ट सुसंगत कृ।
—ठाक, वि, सिद्ध, सज्ज, उपस्थित, उपकरणस्थ।
—ठीक, क्रि वि, दे 'ठाक' क्रि वि।
ठीकरा, स पु (हिं टुकड़ा) घट-शराव खंड, भिन्नमृत्पात्र, क(ख)र्पर, २ भिक्षा, भाजनं पात्र ३ जीर्णपात्रम्।
ठीकरी, स स्त्री (हिं ठीकरा) क्षुद्रखर्परखंड २ तुच्छ निरर्थक वस्तु (न)।
ठीका, स पु (हि ठीक) अभ्युपगम, नियम, पण, समय, संविद् (स्त्री) २ पट्टोलिका।
—देना, क्रि स, पण संविदं कृ, प्रतिपद् (दोनों प्रे)।
—लेना, क्रि स, पण संविद समय कृ, प्रतिपद् (दि आ अ), संविद् (अ आ से)।
ठीकेदार, स पु पणकर्तृ, कृतसमय, नियम कृत् (पु)।
ठीठी, स स्त्री (अनु) हास्यध्वनि (पु), अट्टहास।
ठीहा, स पु (सं स्थित >) भूनिखातकाष्ठ-खंड दम् २ उच्चस्थानम् ३ वेदिका-वेदि (स्त्री) ४ आसनम् ५ सीमा।
ठुठ, स पु, दे 'ठूँठ'।

ठुकना, क्रि अ (अनु ठुक ठुक) आहन्-ताड् प्रहृ (कर्म) २ अयोघनेन विघनेन आहन् ताड (कर्म) ३ परा, भू जि (कर्म)
ठुकराना, क्रि स (हिं ठोकर) पादेन प्रहृ (भ्वा प अ)-तड (चु)-आहन् (अ प अ) २ प्रत्याख्या (अ प अ), अवमन् (दि आ अ) धिक्कृ।
ठुकवाना, क्रि प्रे, व 'ठोकना' के प्रे रूप।
ठुड्डी, स स्त्री, दे 'ठोडी'।
ठुनकाना, क्रि स (अनु) अंगुल्या ह्रस्वेन वा मन्द मन्द आहन् (अ प अ)।
ठुन ठुन, स स्त्री (अनु) ठुणठुणकार, ठुणठुणायित, धातुपात्रक्वणित २ शिशुक्रंदन ध्वनि (पु), ठुणठुणशब्द।
ठुमक, स स्त्री (अनु) खेल विलास गति (स्त्री)।
—ठुमक, क्रि वि, खेल विलास-गत्या सखेल सविलास (शिशु चलनम्)।
ठुमकना, क्रि अ, (हिं, ठुमक) सखेल सवि लास चल् (भ्वा प से)।
ठुमका, वि (हिं ठुमक) वामन, खर्व, ह्रस्व।
ठुमरी, स स्त्री (देश) गीतक तिका।
ठुसकना, क्रि अ (अनु) दे 'ठिनकना'।
ठुसना, क्रि अ (ठूसना) अत्यंत पूर् (कर्म), २, बलात् निविश् (तु प अ)।
ठुसवाना, ठुसाना, क्रि प्रे, व 'ठूसना' के प्रे रूप।
ठूँग, स स्त्री } (स तुण्ड) चञ्चु (स्त्री) [दोनों
ठूँगा, स पु } (स्त्री)] २ चञ्चुप्रहार।
—मारना, क्रि स, चञ्चा प्रहृ (भ्वा प अ)। तु, न्यून तुल् (चु)।
ठूँठ, स पु (स स्थाणु) शुष्कवृक्ष, पत्र विटप, हीनतरु (पु) २ छिन्नो हस्त, निकृत्त कर।
ठूँठा, वि (हिं ठूँठ) अपत्र, अशाख, शुष्क (वृक्ष) २ छिन्नहस्त, निकृत्तकर।
ठू(ठूँ)सना, क्रि स (हिं ठस) अत्यधिक पूर (चु), भृश पृ (प्रे) २ बलात् नि प्र विश् (प्रे) ३ अतिमात्र खाद् (भ्वा प से)।
ठेंगना, वि, दे 'ठिगना'।
ठेंगा, स पु (हिं अँगूठा) अंगुष्ठ २ दंड, यष्टि (स्त्री), लगुड ३ मेढ्रम्।
ठेका, स पु, दे 'ठीका'।

टेका, स पु (हिं टेक) अवष्टम्भ, लब लक्ष्म, अवष्टम्भ, उपघ्न २ निवेशस्थान, विश्रामस्थल ३ पटहवादनप्रकारभेद ४ कौवा लीनामकस्तालभेद ५ स्खलन ६ नामभृदग ७ दे 'टीका'।

ठेठ, वि (दे) विशुद्ध, मिश्रणरहित, स्वच्छ २ केवल, मात्र (समासात में)।

टलना, क्रि स, दे 'धकेलना'।

टला, स पु (हिं ठेलना) दे 'धक्का'। २ जनौघ, जनसमर्द ३ हरन, शकट शकटम्।

टस, स स्त्री (हिं, ठस), प्रहार आ-अभि, घात, ताडन, पात, आहति (स्त्री)।

ठेसना, क्रि स दे 'ठूसना'।

ठोकना, क्रि स (अनु ठक ठक) अयोधनेन मुद्गरेण तड (चु)-प्रह (भ्वा प अ) २ वज्रन ताडनेन प्रविश् (प्रे) ३ अभि आ हन् (अ प अ), तड (चु), प्रह। ४ अभियुज् (रु आ अ) राजकुले निविद् (प्रे,) ५ हस्तेन लघुप्रह आहन्, करेण स्पृश परामृश (तु प अ)।

ठोंक बजाकर, मु, निपुण परीक्ष्य, सम्यक पर्यालोच्य निरूप्य।

ठोंग, स स्त्री (स तुण्ड) चञ्चु-ञ्चु (स्त्री) २ चञ्चुप्रहार ३ अङ्गुलीप्रहार।

ठोंगना, क्रि स (स तुण्ड>) तुण्डेन, चञ्चुपुटेन अभिहन् (अ प अ)-प्रह (भ्वा प अ), चञ्चुप्रहार [illegible]।

ठोंगा, स पु (हिं ठोंग) पत्र पुट पुटिका कोष।

ठोंसना, क्रि स, दे 'ठूंसना'।

ठोकना, क्रि स, दे 'ठोंकना'।

ठोकर, [illegible] स्त्री (हिं ठोकना) स्खलन, स्खलित, आघात, आहति (स्त्री) २ पाद लत्ता, आघात, प्रहार ३ कटुअनुभव।

—खाना, क्रि अ, प्र, स्खल (भ्वा प स), पद विषमी भू। मु, हानि क्षति-कष्ट सह् (भ्वा आ से) २ वच् प्रतार् (कर्म) ४ औचित्यार्थमितस्तत भ्रम् (भ्वा प से)।

—मारना, क्रि स, लत्तया पादेन प्रह (भ्वा प अ)-आहन् (अ प अ)-तड् (चु), पादप्रहार [illegible]।

—लगना, क्रि अ, दे 'ठोकर खाना'।

ठोड़ी डी, स स्त्री (स तुण्ड>) चिबुक, हनु (पु स्त्री)।

ठोर, स पु (देश) पक्वान्नभेद, ठौर। २ चञ्चु, ञ्चू (स्त्री)।

ठोला स पु (देश) सभाहारशराव २ अङ्गुलि, सन्धि-ग्रन्थि पर्वन् (न)।

—मारना, क्रि स, अङ्गुलिपर्वणा प्रह (भ्वा प अ)।

—खाना, मु, दल् (अ प अ), मृ (प्र)।

ठोस, वि (हिं ठस) सान्द्र, दृढ, सहत, कठिन, मध्यावयव, घन २ पूर्णगर्भ, छिद्ररहित, सगर्भ।

ठोसाई, स स्त्री (हिं ठोस) घनता, काठिन्य, निश्छिद्रता।

ठौर, स [illegible] (हिं ठाँव) स्थान, स्थली, प्रदेश २ अवसर, सुयोग, योग्यकाल।

कुठौर, मु, दुर्लक्ष्य-अनिष्ट, स्थाने स्थले।

ठिकाना, स पु, वासस्थान, आ नि -वास।

ड

ड, देवनागरवर्णमालायास्त्रयोदशो व्यञ्जनवर्ण, डकार।

डक, [illegible] (स दश) कण्टक, दशचञ्चु (स्त्री), शकु (पु), (विच्छू का) अल २ दशनव्रण ३ दे, 'लिंग'।

—मारना, क्रि स, दश् (भ्वा प अ) २ मर्माणि भिद् (रु प अ)।

—वाला, वि सदश, दशिन्-दशक।

डंका, स पुं (सं ढक्का) बृहत् पटह, विजय मर्दल, दुन्दुभि, डिंडिम।

—बजाना, मु, प्र, शास् (अ प से), तन्त्र (चु)।

—बजाना, मु, विश्रुत विख्यात (वि) भू।

डंके की चोट कहना, मु, प्रकाशं उद्घुष् (चु)।

डंगर, सं पु (स दङ्ग(क)रीय) पशु, मृग, चतुष्पद, चतुष्पाद् (पु)।

डंठल, स [illegible] ([illegible] दड) काड, दंड, नाल-ली २ वृन्त, प्रसव बन्धनम्।

डंड, स पुं (सं दण्ड) लगुड, यष्टि (स्त्री) २. बाहु (पुं), भुज-जा ३ अर्थ दण्ड, दड

४ निग्रह शासन ५ हानि क्षति (स्त्री) ६ व्यायामप्रकार साष्टाङ्ग दंड, व्यायाम ।
—देना, क्रि स, दड (चु) शास (अ प से, दोनों द्विकर्मक), दम् (प्रे दमयति), निग्रह् (क्र प से)।
—पेलना, क्रि अ, (दडवत्) व्यायाम् (भ्वा प अ) व्यायाम कृ ।
—भरना, क्रि अ, अर्धदंड परि ,क्षुथ (प्रे ।।
—लेना, क्रि स, अर्धदंड दा (प्रे दापयति)।
—पेल, स पु मल्ल, मल्लयोद्धृ (पु), व्यायामिन्, दृढांग, वज्रदेह ।
डंडवत, स स्त्री दे 'दंडवत्'।
डंडा, स पु (सं दंड) काष्ठ, काष्ठखंड, लगुड, यष्टि (स्त्री), वेत्र वेत्रयष्टि । २ प्राचीर, प्राकार, वरण ।
डंडिया, स पु (हिं डांड) करोद्ग्राहक, शुल्कग्राहक ।
डंडी, स स्त्री (हिं डंडा) सूक्ष्म तनु, दड यष्टि (स्त्री) २ तुलायष्टी ३ मुष्टि (स्त्री), वारग ४ कांड ड, नाल ल ५ पर्वतीय वाहनभेद । स पु, दंडधारिन्, सन्न्यासिन् ।
पग—, स स्त्री, चरण पाद, पथ, पद्धति (स्त्री), पथा, पदवी ।
डंडौत, स पु स्त्री, दे 'दंडवत्'।
डकरना, क्रि अ (अनु) हंभारव कृ, रेभ (भ्वा आ से), नि,नद् (भ्वा प से)।
डकराना, क्रि अ, दे 'डकरना'।
डकार, स पु (सं उद्गार) उद्गिरण, उद्गम, उद्वमन २ गर्जन, गर्जित, निनाद ।
—लेना, क्रि अ, दे 'डकारना'।
—जाना या—बठना, मु, छलेन आत्मसात् कृ, ग्रस (भ्वा आ से)।
डकारना, क्रि अ (हिं डकार) उद्गॄ (तु प से), उद्वम् (भ्वा प से) २ दे 'डकरना' ३ दे 'डकार जाना'।
डकैत, स पु, दे 'डाकू'।
डकैती, स स्त्री, दे 'डाका'।
डकौत—तिया, स पु (देश) मिथ्यामौहूर्तिक, ज्योतिर्विदाभास २ जातिविशेष ।
डग, स पु (हिं डोंकना) दीर्घ, विक्रम, पादन्यास ।
—भरना, क्रि अ, विक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ) दीर्घपादान् वि'यम (दि प से) निक्षिप (तु प अ)।
डगमग, वि (हिं डग+मग) प्रस्खलत्, विचलत् कंपमान, वेपमान । अव्य०, सकम्पम्, सवेपथु।
डगमगाना, क्रि अ (हिं डग+मग) प्र, कंप् वेप (भ्वा आ से) वेल् (भ्वा प से) २ प्रस्खल विचल (भ्वा प से) ३ विशंक विकल्प (भ्वा आ से), चित्त दोलायते (ना धा)।
डगमगाहट, सं स्त्री (हिं डगमगाना) प्रकंप, वेपथु २ प्रस्खलन, विचलन ३ विक्षोभ, चित्तवैकल्य, धृतिनाश ।
डगर, सं स्त्री (हिं डग) दे 'मार्ग'।
डटना, क्रि अ (हिं ठाढ़ा) दृढ स्थिरं निश्चल स्था (भ्वा प अ), अवस्था (भ्वा आ अ), वृत् (भ्वा आ से)।
डट्टा, सं पु (हिं डाटना) कूपीछिद्र पिधान, अवष्टम्भ, रोध ।
—लगाना, क्रि स, रोधेन अवष्टम्भेन अपि पि, धा (जु उ अ) स आ वृ (स्वा उ से)।
डढ़ियल, वि (हिं डाढ़ी) कूर्चधर, लम्बकूर्च, श्मश्रुल, सश्मश्रु ।
डपट, सं स्त्री (सं दर्प) निर्भर्त्सना, वाग्दंड ।
डपटना, क्रि स (हिं डपट) तर्ज् (भ्वा प से चु आ से), वाचा दंड् (चु), निर्भर्त्स् (चु आ से)।
डपोर्संख, स पु (अनु डपोर=बड़ा+सं शंख) आत्मश्लाघिन्, विकत्थनशील २ अल्पबुद्धि (पु)।
डफ, डफला, स पु (अ दफ) डिंडिमभेद डफम् ।
डफली, स स्त्री (हिं डफला) लघु, डिंडिम डफम् ।
डफाली, स पु (हिं डफला) डफ डिंडिम, वादक ।
डबडबाना, क्रि अ (अनु) सास्र सवाष्प सजलनयन साश्रु (वि) भू ।
डबडबाई आँखों से, क्रि वि, सास्र, साश्रु, सवाष्प, पर्यश्रु ।

डबोना, क्रि [illegible], दे 'डुबोना'

डब्बा, स पु (स डिंब >) सपुट, सपुटक, करडक, समुद्गक । २ (रेलगाडी का) शकट-टम् ।

डमरू, स पु (स क) क्षीणमध्यो गुटिका द्वययुक्तो वाद्यभेद ।

—मध्य, स पु (स न) विशालभूभागद्वय योजक सबाधभूखड ।

जलडमरूमध्य, स पु (म न) सामुद्रधुनी ।

डर, स पु (स दर र) त्रास, त्रास, भी भीति (स्त्री), भय, साध्वस २ शका, चिंता ।

डरना, क्रि अ (हिं डर) भी (जु प अ), वि स त्रस् (भ्वा दि प से) उद्विज् (तु प अ), भयात्त त्रस्त (वि) भू २ आ वि, शक (भ्वा आ से)।

डरपोक, वि (हिं डरना + पोंकना) भीरु, भीरु, सभय, ससाध्वस २ साशक, शकित ।

डराना, क्रि स, व 'डरना' के प्र रूप ।

डरावना, वि (हिं डर) भीम, भीषण, भयकर ।

डल, स स्त्री (स तल) तडाक क (ग न), सरोवर ।

डलना, क्रि अ (हिं डालना) न्यस् निक्षिप् (कर्म २ नि, सिच् (कर्म) स्रु (भ्वा प अ)।

डलवाना, क्रि प्रे, व 'डालना' के प्रे रूप ।

डला, स [illegible] (स दल ल) खड ड, स्थूल, अश भाग २ पिंड ड घन, गड, गुल्म ।

डला[२], [illegible] पु [स डल(ल)क] दे 'टोकरा' ।

डलिया, स स्त्री (हिं डला) दे 'टोकरी' ।

डली, स स्त्री (हिं डला) पिंडक क, क्षुद्रगड २ शकल ल खड ड ३ दे 'सुपारी' ।

डसन, स पु (स दशनम्) दश २ दश दशन रीति (स्त्री)।

डसना, क्रि स (स दशन) दश् (भ्वा प अ), कटवेन व्यध (दि प अ) २ मर्माणि भिद् (रु प अ)।

डसनेवाला, स पु, दशक २ अरुतुद, मर्मस्पृश ।

डहडहा, वि (अनु) हरित, रसवत्, सरस, विकसित, विकच २ अभिनव, प्रत्यग्र ३ प्रसन्न, आनंदित ।

डहडहाना, क्रि अ (हिं डहडह) प्रफुल्ल् विकस (भ्वा प से), हरिती भू २ सम् ऋध (दि प से) स वि वृध् (भ्वा आ से) ३ मुद् (भ्वा आ से)।

डाँकना, क्रि स, दे 'लाँघना' क्रि अ, दे 'कै करना'

डाँग, स स्त्री (स दडक) लगुड २ ल, स्थूल बृहद् दड ।

डाँट, स स्त्री ([illegible] दाति >) तर्जन, तर्जित, निर-, भ सन ना, वाग्दड ।

—डपट, [illegible] स्त्री भ्रूभंग तर्जन, आक्रोश, विभीषिका भयदर्शन, अपकारगिर् (स्त्री)।

डाँटना क्रि स (हिं डाँट) निर् भर्त्स् (चु आ से), भय दृश् (प्रे), भी (प्र), तर्ज (भ्वा से, चु आ से)।

डाँटने योग्य, वि, तर्जनीय, निर्भर्त्सनीय वाग्दडार्ह ।

डाँटनेवाला, स पु, तर्जक निर्भर्त्सक ।

डाँड, स पु (स दड) यष्टि (स्त्री), लगुड २ क्षेपणी, नौदड ३ पृष्ठवश कशेरुका ४ धन अर्थ दड निग्रह, शासन, दड ६ सम सरल, रेखा ७ सीमा ।

डाँडना, क्रि स (स डडन) अर्थ धन दड् (चु)।

डाँडा, स पु (हिं डाँड) दे 'मेड' ।

डाँडी, स स्त्री (हिं डाँड) दे 'डडी' (१ ४)।

डाँवाँडोल, वि (हिं डोलना) अस्थिर, चचल, तरल, लोल, कम्पमान । (मनुष्य) अस्थिरबुद्धि, चलचित्त, चचलमानस ।

डाँस[१], स पु (स दश) दशक, अरण्य गो वन, मक्षिका, पांसुर, क्षुद्रिका ।

डाँस[२], स पु (अ) नृत्यम्, दे 'नाच' ।

डाइन, स स्त्री, (स डाकिनी) दे 'डाकिन' ।

डाइनामाइट, स पु (अ) विध्नसकम्, विस्फोटकम् ।

डाक, स स्त्री (हिं डाँकना-फाँदना)। प्रेष्य पत्राणि-पत्रिका (बहु) २ पत्रवाहन, व्यवस्था सस्था ।

—खाना, स पु (हिं + फा) (प्रेष्य) पत्र, स्थान गृह-कार्यालय ।

—गाड़ी, स स्त्री, पत्रशकटी ।

—घर, सं पु, दे॰ 'डाकखाना'।
—बँगला, सं पु (हिं + अ) विश्राम विश्रान्ति, गृहम्।
—महसूल, स पु (हिं + अ) पत्रवाहन
—व्यय, स पु (हिं + स) शुल्कम्।
डाका, सं पु (हिं डाकना) प्रसह्य चौर्यम्, लुंठि (स्त्री) टी, लुंठनम्।
—जनी, सं स्त्री (हिं + फा) दे 'डाका'।
—डालना, या मारना, क्रि स, लुं॰ लुट् (भ्वा प से, चु), प्रसह्य अपहृ (भ्वा प अ)।
—पड़ना, क्रि अ, लुठकै अवस्कन्द्-आक्रम् (कर्म)।
डाकिन, नी, सं स्त्री (सं नी) कुहकिनी, अभिचारिणी, योगिनी, मायाविनी, काली गण भेद। २ स्थविरा, वृद्धा ३ कुरूपा नारी।
डाकिया, सं पु (हिं डाक) पत्रवाहक।
डाकू, सं पु (हिं डाकना कूदना) दस्यु, महासाहसिक, लुंठक, लुटा(ठा)क, मोषक, प्रसह्यचौर, विलोप।
डाट, स स्त्री (सं दांति >) तोरण र्ण २ दे 'डट्टा' ३ दे 'डाँट'।
—लगाना, क्रि स, इष्टकाकरया तोरण रूपेण निर्मा॰ (जु आ अ)।
डाटना, क्रि स (हिं डाट) अत्यन्त पूर (चु) २ अत्यधिक भक्ष् (चु) ३ सावक्षेप वस्त्रादिक॰ परिधा (जु उ अ) ४ दे 'डाँटना'।
डाढ़, सं स्त्री (सं दाढा) चर्वणदंत, —भ, दंष्ट्रा।
डाढ़ी, स स्त्री दे 'दाढ़ी'।
डाब, स स्त्री, दे 'डाभ'।
डाबर, सं पु (सं दभ्र = सागर >) अल्प पल्वल, भू (स्त्री) देश २ पल्वल र ३ आविलजल ४ दे 'चिलमची'।
डाभ, स पु (दर्भ) कुश॰श २ आम्र मंजरी ३ अपक्वनारिकेल र।
डामर, वि (स) भीषण, भयावह २ उपद्रविन, कलिकलह, प्रिय ३ सरूप, अनुरूप, सदृश। स पु (स) उपद्रव, कलह २ उल्लास, प्रमोद।
डामल, स पु (अ॰ दायमुल हब्स) यावज्जीविक कारावास, आमरणान्तिक रोध निरोध आसेध प्रग्रह।
डायन, सं स्त्री (दे डाकिनी)।
डायनामो, सं [illegible] (अ) विद्युज्जनक लघुयन्त्रम्।
डायरी, सं स्त्री (अ दैनंदिनी दैनिकी।
डायरेक्ट स्पीच, सं स्त्री (अ) प्रत्यक्षवर्णनम्।
डायर्की, सं स्त्री (अ) दे॰ 'दुराज'।
डायल, सं पु (अ) घटीमुख २ सूर्यघटी।
डायस, स पु (अ) उच्चासन, मंच।
डार, स स्त्री [सं दारु (न)] विटप, शाखा, २ पंक्ति-तति (स्त्री), श्रेणी।
डाल, स स्त्री [सं दारु (न)] विटप, शाखा २ असि, धारा पत्र फलम्।
डालना, क्रि स (स तल्न) प्र, अस (दि प से), प्र, क्षिप (तु प अ), पत् (प्रे) २ प्र, सृ (प्रे), नि, सिच् (तु प अ) ३ परिधा (जु उ अ), वस् (अ आ अ), धृ (चु) ४ नि प्र निदा (प्रे), निधा (जु उ अ) ५ विस्मृपरित्यज (भ्वा प अ) ६ मिश्र (चु), संमिल् (प्र) ७ उप पत्नीत्वेन अवरुध् (रु उ अ)।
डालर, स पु (अ) रौप्यमुद्राभेद, डालरम्।
डाली, सं स्त्री (हि. डाल) शाखा, विटप।
डाली, स स्त्री (हिं डाला) दे 'टोकरी' २ उपहार, उपायनम्।
डाह, स पु (सं दाह) ईर्ष्या, अभि, असूया, मत्सर, मात्सर्य्य, परोत्कर्षद्वेष, २ द्वेष, द्रोह।
डिंगल, वि (सं डिंगर) दुष्ट, दुर्वृत्त २ क्षुद्र, नीच। स स्त्री, राजस्थानस्य भाषाविशेष।
डिंडिम, सं पु (स) लघु, पटह -दुंदुभि (पु)।
डिंभ, सं पु (सं) डिंब, शिशु, पृथुक, कलभ, पोत-भक, शाव-वक, अर्भक, अपत्य, पृथुक २ मूर्ख जड़।
डिक्टेटर, स पु (अ) एक—अधिपति—सर्वाधिकारसम्पन्न, शासक—शासितृ।
डिक्टेशन, स स्त्री (अ) दे 'इम्ला'।
डिक्शनरी, सं स्त्री (अ) (शब्द)-कोश ष, अभिधानम्।
डिगना, क्रि अ (हिं डग) अप,-सृ-गम् (भ्वा प अ), प्र वि सृप् (भ्वा प अ) २. विचल् (भ्वा प से), पराङ्मुखी-विमुखी

भू, अति ध्वनि-द (अ प अ), अति व्योम चर (भ्वा प से) ३ दे 'गिरना' ।
डिगरी¹, स स्त्री [अ उपाधि (पु)], उपपद २ अंश, कला, मात्रा, समकोणस्य नवतो (हे) भाग ।
डिगरी², स स्त्री (अ डिक्री) स्वत्वप्रापक, आधिकरणिकनिर्णय, राजाज्ञा, व्यवस्था ।
—देना, क्रि स, स्वत्वप्रापणात्मक निर्णय कृ, व्यवस्था (प्रे) ।
डिठौना, स पु (हिं डीठ) कुदृष्टिनिवारक कज्जलतिलकम् ।
डिपटी, स पु (अ डिपुटि) प्रति, निधि पुरुष हस्त हस्तक, नियोगिन्, नियुक्त ।
—कमिश्नर, स पु (अ) उपायुक्त ।
डिपार्टमेन्ट, स पु (अ) विभाग, शाखा ।
डिपो, स पु (अ) भांडागार, आलय, शाला ।
डिप्लोमा, स पु (अ) प्रमाणपत्र, अधिकारपत्रम् ।
डिफ्थीरिया, स पु (अ) रोहिणी ।
डिबिया, स स्त्री (हिं डिब्बा) कोषक, सम्पुटक ।
डिब्बा, स पु, दे 'डब्बा' ।
डिसमिस, वि (अ) अधिकारच्युत, भ्रष्टाधिकार ।
—करना, क्रि स, अधिकारात् पदात् च्यु भ्रंश् अवरुह् (प्रे) ।
डिसिनफेक्टैंट, वि (अ) रोगाणुनाशक ।
डिस्टिलेशन, स पु (अ) आसवनम् ।
डींग, स स्त्री (सं डीन<) आत्मश्लाघा, स्व प्रशंसा, विकत्थनम् ।
—मारना या हाँकना, आत्मान श्लाघ् विकत्थ (भ्वा आ से) ।
डींगिया, वि (हिं डींग) आत्मश्लाघिन्, विकत्थनशील, विडोद्धूर ।
डीठ, स स्त्री, दे 'दृष्टि' ।
डील, स पु (देश) (देह) प्र परि, माण, आकार, आकृति (स्त्री), कायमानम् ।
—डौल, स पु, मूर्ति (स्त्री), संस्थान, आकारमानम् ।
डुगडुगी स स्त्री (अनु) डिंडिम, लघुपटह ।
—पीटना, मु, (सडिंडिमनाद) उद् वि घुष् (चु), प्रख्या प्रख्यापयति) ।
डुग्गी, स स्त्री, दे 'डुगडुगी' ।
डुबकी, स स्त्री (हिं डूबना) अवगाह, आप्लव निमज्जथु (पु) ।
—लगाना, क्रि अ, वाह-अवगाह् (भ्वा, आ से), आप्लु (भ्वा आ अ), निमस्ज (तु प अ) ।
डुबाना, क्रि स, व 'डूबना' के प्रे रूप ।
डुबाव स पु (हिं डूबना) अगाधता, गाम्भीर्यम् ।
डुबोना, क्रि स, व 'डूबना' के प्रे रूप ।
डुलाना, क्रि स, व 'डोलना' के प्रे रूप ।
डूँगर, स पु, (स तुंग>) पर्वतक, क्षुद्रपर्वत २ उच्चभू (स्त्री) मृच्चय ।
डूँगरी, स स्त्री (हिं डूँगर) अनिक्षुद्रपर्वत २ क्षुद्रमृच्चय ।
डूँडा, वि (देश०) एक-शृंग विषाण कृणिक । स पु एकशृंग एकविषाण, वृष वृषभ ।
डूबना, क्रि अ, (हिं बूडना का विपर्यय, अथवा अनु डुब डुब) निमस्ज (तु प अ), निमज्जनेन मृ (तु आ अ)-व्यापद् (दि आ अ) २ अस्त इ-या (अ प अ), अस्ताचल अस्तशिखर अवरुह् (भ्वा प से), प्रप् (स्वा प अ) ३ नष्ट ध्वस्त निर्मूल (वि) भू, नश् (दि प वे), ध्वस् (भ्वा आ से), परिक्षि(कर्म), प्र वि लीं(दि अ अ) ४ निध्यै (भ्वा प अ), सतत आलोच् चिंत् (चु), चिंताकुल (वि) भू ५ निमग्न निरत आसक्त व्यापृत (वि) भू । स पु, निमज्जन, आप्लाव, प्लावन, निमज्जनेन मरण, अस्त, अस्तमन, नाश, ध्वंस, सततचिंतन, कार्यासक्ति (स्त्री)।
डूश, स पु (अ) योनिक्षालनम् ।
डेंगू बुखार, स पु (अ + अ) दण्डक अस्थि भंजन, ज्वर ।
डेढ़, त्रि (सं अध्यर्ध) सार्द्धैक ।
—ईंट की मसजिद जुदी बनाना, मु (दर्पित) कार्यमसभूयैव कृ ।
डेपुटेशन, स पु (अ) प्रतिनिधिवर्ग, शिष्ट मंडल, नियुक्तजना ।
डेरा, स पु (हिं ठहरना) पटवस्त्र, गृह कुटी मंडप वेश्मन् (न), दूष्य दय २, गृह, आलय, आवास ३ विश्राम, अस्थिरवास ४ शिविर, निवेश ।

—डालना मु, सैंध निविश् (तु प अ) समावस (भ्वा प अ)।

डेल्टा स पु (यू अ) नदीमुखपुलिन-नम्।

डेलिगेट, स पु (अ) नियोगिन् प्रतिनिधि (पुं)।

डेवढ़ा, वि (हिं डेढ) अध्यर्द्धगुण। स पु अध्यर्द्धगुणनसूची।

डेवढ़ी, स स्त्री, दे 'ड्योढ़ी'।

डेसिमल, स पु (अ) दशमलव २ दशसंख्यक।

डेस्क, स पु (अ) लेखन पीठिका फलकम्।

डोंगा, स पु (स द्रोण<) वेडा, वारिरथ नौ (स्त्री), तरी।

डोंगी, स स्त्री (स द्रोणी) उडुप, नौका, वेटी, वेडा, तारिका।

डोंडी-डी, स स्त्री, दे 'डौंडी'।

डोडी, स स्त्री (स तुड) बीजकोष, पुट-टम्।

डोबा, स पु (हिं, डूबना) निमज्जथु (पु), निमज्जन अवगाह हन आप्लव।

—देना, क्रि स, (रंगे) नि, मिस्ज (भ्र मज्जयति), अवगाह (भ्र) २ क्लिद् (प्रे), आर्द्री कृ।

डोम, स पु (स) डोंब', अन्त्यजजातिभेद' २ दे 'मीरासी'।

डोर, स स्त्री (स पु ब) डुल्ल-ल्ल, डुल्ला ल्वी, वराट टक, रज्जु (स्त्री), गुण, वट टी।

डोरा, स पु (स डोर र) डोरक-क, सूत्र तंतु (पु), गुण २ रक्षा धा, लेखा ३ अभि, धारा ४ चमसभेद ५ स्नेहसूत्र, प्रेमबंधन ६ कज्जलरेखा ७ मूर्ख मीवागतिभेद।

—डालना, मु अनुरंज्-मुह् (प्रे)।

डोरिया स पु (हिं डोरा) •डोरीय, सरेखो ऽंशुकभेद।

डोरी, स स्त्री, दे, 'डोर'।

डोल, स पु (स दोल <)•दोल,लोहसेचनम्। वि, अस्थिर, लोल।

डोलची, स स्त्री (हिं डोल) •दोलक ल्पुसेचनी।

डोलना, क्रि अ (स दोलन) सृ-सृप (भ्वा प स) चल् (भ्वा प से) २ भ्रम् पर्यट् (भ्वा प से) ३ अप, इया (अ प अ) ४ (चित्त) विचल्, चचल भू ५ दोलायते (ना धा), प्रेंख (भ्वा प से)। स पु, दोलन, प्रेंखण इ।

डोलनेवाला, सं पु, सर्पणशील पर्यटक, अपयायन् (पु), चलचित्त, प्रेंखक।

डोला, स पुं (स दोला) डयनं, दोलिका, शिविका।

—देना, मु, नृपाद्दिभ्य स्वक-यामुदह (भ्वा प अ)

डोली, स स्त्री (हिं डोला) दे 'डोला'।

डौंडी डी, स स्त्री (स डिंडिम) पटह, दुदुभि २ (सडिंडिमनाद) घोष घणा ३ ख्यापन, ४ कीर्तनम्।

—देना या पीटना, क्रि स, दे 'डुगडुगी पीटना'।

डौल, स पु (हिं डौल) आकार, संस्थान, आकृति (स्त्री), रूप २ प्रकार, विधा (समासांत में) ३ युक्ति (स्त्री) उपाय ४ लक्षण, चिह्नम्।

डाल, स पु, उपाय, युक्ति (स्त्री)।

—दार, वि., सुन्दर, रम्य २ पुष्ट, स्वस्थ।

ड्यूटी, स स्त्री (अ) कर्तव्य, कार्य कृत्यम्, •याय्य स्व, कर्मन् कार्यम्।

ड्योढ़ा, वि तथा स पु., दे 'डेवढ़ा'।

ड्योढ़ी, स स्त्री (स देहली) गृहावग्रहण, द्वार, पिंडी पिंडिका २ उपशाला, द्वारागण, द्वारकोष्ठ।

—दार, —वान, स पु, दौवारिक, द्वारपाल।

ड्राइङ्ग, स स्त्री (अ) •रेखाचित्रणम्।

—रूम, दर्शन उपवेशन,-कोष्ठ शाला कक्ष, चित्रशाला।

ड्राइवर, स पु (अ) वाहक, चालक।

ड्रापर, स पु (अ) बिन्दुपातकम्।

ड्राफ्ट स पु (अ) प्रारूपम् २ धनार्पणादेश, ड्राफ्टम्।

—टेबल, स पु (अ) मृगारपलकम्।

ड्राफ्टसमैन, स पु (अ) आलेख्यचित्र, कार-कार कृत्।

ड्राम, स पु (अ) ड्रामगाभ, मापनयात्म कस्तोलभेद।

ड्रामा, स पु (अ) रूपक, नाटकम्।

ड्राअर, सं पु (अ) चल,कोष्ठ सपुट ।
ड्रेस, स स्त्री (अ) वेश प, परिधानम् ।
ड्रेसिंग, स स्त्री लेप, उप, नाह देह । अ २ शृगार, मण्डनम् ।
ड्रिल, स स्त्री (अ) व्यायाम, अस्त्रशस्त्र, शिक्षा अभ्यास ।
—मास्टर, स पु (अ) व्यायाम, शस्त्र, शिक्षक ।

ढ

ढ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्दशो व्यञ्जनवर्णं, ढकार ।
ढग, स पु (स तग् = गति > ?) शैली, रीति पद्धति (स्त्री) प्रणाली २ प्रकार, जाति (स्त्री), भेद, विधा (समासांत में) ३ रचना, घटन, निर्माण ४ युक्ति (स्त्री), उपाय ५ व्यवहार, आचरण ६ व्याज, मिष ७ लक्षण, चिह्न ८ स्थिति (स्त्री), दशा ।
ढगी, वि (हिं ढग) चतुर, विदग्ध, धूर्त ।
ढँढोरा, स पु (अनु ढढ) दे 'ढोंडी' ।
ढँढोरिया, सं पु (हि ढँढोरा) उद्घोषक, प्रत्यापक ।
ढई, स स्त्री (हिं ढहना) दे 'धरना' सं पु ।
ढकना, स पु, दे 'ढक्कन' । क्रि स, दे 'ढाँकना' । क्रि अ, आच्छाद् आवृ पिधा (कर्म) ।
ढकनी, सं स्त्री, दे 'ढक्कन' ।
ढकवाना, क्रि प्रे, व 'ढाँकना' के प्रे रूप ।
ढकेल, स पु दे 'धकेल' ।
ढकेलना, क्रि स, दे 'धकेलना' ।
ढकोसला, सं पु (हिं ढग+स कौशलम्) दम, आडबर, पाषड ३, कापट्य, छाद्मिकता ।
ढक्कन, सं पु (स ढक = छिपना) पिधान, पुटी, छद, छदन, आवरणम् ।
ढचर, स पु (हिं ढाँचा) परिच्छद, उपकरणसामग्री २ आधार, उपष्टम ३ कलह, विवाद ४ व्यवसाय, वृत्ति (स्त्री) ५ आडम्बर ६ जरठ ।
ढप, स पु, दे 'डफ' ।
ढपना, स पु (हि ढाँपना) दे 'ढक्कन' । क्रि अ, दे 'ढकना' क्रि अ ।
ढब, स पु, दे 'ढग' ।
ढमढम, सं पु (अनु) पटह भेरी, नाद, ढमढमध्वनि (पु), ढमढमायितम् ।
ढरका, स पु [हिं ढर(ल कना] चि(च)लता, पिच्छता, नेत्रस्राव, अभिस्य(ष्य न्द २ पशूना मौषधपाननल ।
ढरकी, सं स्त्री [हिं ढर(लकना] त(त्र सर, मल्लिक ।
ढर्रा, सं पु (हिं ढरना) मार्ग, पथिन् २ शैली, पद्धति (स्त्री) ३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ४ आचार, आचरणम् ।
ढलकना, क्रि अ (हिं ढाल) प्र परि, स्नु (भ्वा प अ), पत् (भ्वा प से) प्रस्यन्द्, श्च्युत् (भ्वा आ से) २ 'लुढ़कना' । सं पु, स्र(स्रा) व, श्च्योत, अवपात ।
ढलका, स पु, दे 'ढरका' (१) ।
ढलकाना, क्रि स, व 'ढलकना' के प्रे रूप ।
ढलना, क्रि अ (हि ढाल) विलाप्य सघा घट् रच् क्लृप (कर्म) २ दे 'ढलकना' । ३ व्यति अति, इ (अ प अ), व्यतिक्रम् (भ्वा प से) ४ दे 'लुढकना ५ प्री (दि आ अ), अनुकूली भू ५ अस्त गम् ।
साँचे में ढला, मु, अभि, सुन्दर सुभग शोभन ।
ढलमल, वि, दे 'ढीला' ।
ढलवाँ, वि (हिं ढालना) विलाप्य घटित रचित क्लृप्त २ अवसर्पिन, प्रवण ।
ढलवाना, क्रि प्रे, व 'ढालना' के प्रे रूप ।
ढलाई, सं स्त्री (हि ढालना) विलाप्य घटनं रचन कल्पन २ द्रावण विलापन, भृति (स्त्री) ।
ढहना, क्रि अ (स ध्वसन) ध्वस अवस्रस् (भ्वा आ से), अवपत् (भ्वा प से) २ वि ,नश् (दि प वे) ।
ढहवाना, क्रि प्रे, व 'ढहाना' के प्रे रूप ।
ढहाना, क्रि स (स ध्वसन) अवस्रम् ध्वस् अवपत् उन्मूल् उत्पट् उच्छिद् उत्सद् (प्रे) २ विनश् (प्रे) । स पुं, प्र वि ध्वस, उत्पाटन, उन्मूलन, उत्सादन ३ ।
ढहाने योग्य, वि, विध्वसनीय, उन्मूलयितव्य ३ ।

ढहानेवाला, सं पु, विध्वंसक, उत्पाटक ।
ढाँकना, क्रि स (सं ढक=छिपाना) आ प्र सम आच्छद् (चु), आ प्र सं वृ (स्वा उ से), यत्रपि, धा (जु उ अ), अवगुठ (चु), निगुह (भ्वा उ से, निगूहति-ते) २ आ, स्तृ (स्वा उ अ) स्तृ (क्र उ से)।
सं पु, आ प्र-सम,-च्छादन आ-स्तरण, पिधान अवगुठन, वेष्टन आस्तरण ३
ढाँकनेवाला, सं पु, आच्छादक, आवरक, पिधायक ।
ढाँका हुआ, वि, आच्छादित आवृत, पिहित ३ ।
ढाँचा, सं पु (सं स्थाता>) आकार, आधार, उपष्टम, संस्थान, प्रारम्भिक रूप-आधार ।
ढाँपना, क्रि स, दे 'ढाँकना'।
ढाई, वि (सं अर्धद्वितीय>) सार्धद्वि ।
ढाक, सं पु (सं आषाढक) पलाश, किंशुक, पर्ण याज्ञिय, रक्तपुष्पक, वातहर, समिद्वर ।
—के तीन पात, मु, सदादरिद्रता निरन्तर निर्धनता ।
ढाड़, सं स्त्री (अनु) चीत्कार, आक्रन्द, उत्क्रोश २ गर्जित, गर्जन-ना, महागम्भीर, नाद ।
—मारना, मु, सचीत्कार सशब्द रुद् (अ प से)।
ढाढस, सं पु (सं दृढ>) धीरता, धैर्य, चित्तस्थैर्य, शान्त (स्त्री) २ सम्, आश्वास सन, सान्त्वन ना ३ साहस, चित्तदार्ढ्यम् ।
—देना या बँधाना, मु, आ समा-श्वस (प्रे) शां (सां) त्व (चु), विधुद्(प्रे) २ प्रोत्सह् (प्रे)।
ढाना, क्रि स, दे 'ढहाना'।
ढाबा, सं पु (देश) ओवन, गृह शाला २ दे 'परछती'। ३ कुक्कुट,-चटोल करङ ३ आलय्, पाश ।
ढारस, सं पु, दे 'ढाढस'।
ढाल[1], सं स्त्री (सं न) चर्मन् (न), फलक, फलकम् ।
ढाल[2], सं स्त्री (सं धार>) क्रमशः निम्नता प्राव ग, प्रवणा-स्व २ निम्न, प्रवण, प्रवण अवसर्पि, भूमि (स्त्री) ३ पर्वत, उत्सग, कटक क, नितव ४ प्रकार, विधि (पु), मति (स्त्री)।
ढालना, क्रि स (हिं ढाल) विलाप्य रच्, घट्कम्प (प्रे) निर्मा० (जु आ अ) २ (मद्य) पा (भ्वा प अ) ३ दे 'उँडेलना'।
ढालवाँ, वि (हिं ढाल) दे 'ढलवाँ' (१ २)।
ढालिया, सं पु (हिं ढालना) पात्रकार २ सुवर्णकार ।
ढाली, सं पु (सं ढलिन्) ढाल चर्म फलक, धारिन् २ सैनिक, योध ।
ढासना, सं पु (सं धा-धारण+आसन>) पृष्ठासन (पृष्ठ-) अवष्टम अवलम्बन आधार २ उपधान, उपबर्ह ।
ढिंढोरा, सं पु (अनु ढम+सं ढोल>) दे 'डौंडी' (१ २)।
ढिग, क्रि वि (सं दिश>) समीपे ।
सं स्त्री, सामीप्य, नैकट्य २ अंत, प्रान्त ।
ढिठाई, सं स्त्री (हिं ढीठ) धार्ष्ट्य, प्रागल्भ्य, वैयात्य, अविनय, अशिष्टता, धृष्टता ।
ढिबरी[1], सं स्त्री (हिं डिब्बा) मृत्तैलदीपिका ।
ढिबरी[2], सं स्त्री (हिं दबना) कीलकदील करोधनी ।
ढिमका, सर्व (हिं अमका का अनु) अमुक ।
ढिलढिला, वि (सं शिथिल) कोमल, स्निग्ध मेदुर, अकठिन ।
ढिल्लड़, वि (हिं ढीला) मंद, मंथर, अलस ।
ढीठ, वि (सं धृष्ट) अहीक, प्रगल्भ, वियात, कुमुख, दुःशील, विनयविहीन ।
ढील, सं स्त्री (हिं ढीला) काल,-अतिपात क्षेप यापन-हरण, विलम्ब, व्यासङ्ग २ आलस्य, मंथरता ३ शिथिलता, शैथिल्य, श्लथता ।
—करना, क्रि अ, काल क्षिप् (तु प अ), विलम्ब (भ्वा आ से)।
—देना, मु, यथेष्टमाचरितुं अनुमन् (दि आ अ) अनुज्ञा (क्र उ अ) २ शिथिली कृ, श्लथ् (चु)।
ढीला, वि (सं शिथिल) प्र, श्लथ, विगलित, सस्त, अदृढ, अनमद्ध, २ अलस, तद्रिल, तन्द्रालु, मंद, मंथर ३ काल, अतिपातिन्, क्षेपक ।
ढीलापन, सं पु, दे, 'ढील'।

ढीह, स पु, दे ढीला।
ढुँढवाना, कि प्रे, स 'ढूँढना' के प्रे रूप।
ढुढि, पु (स) गणश, गणपति।
ढुंढी, स स्त्री, (स तुदी) १ तुद दि (स्त्री) नाभि (पु स्त्री) २ बाहु, भुज औ
ढुकना, कि अ (देश) प्रविश (तु प अ) २ सहसा अभिद्रु (भ्वा प अ) आक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ)।
ढुलकना, कि अ, दे लुढकना।
ढुलकाना, कि स, दे 'लुढकाना'।
ढुलना, कि अ, दे 'ढलकना' २ दे 'लुढकना' ३ प्री (दि आ अ) अनुग्रह् (क प से), दय् अनुकम्प (भ्वा आ से)।
ढुलवाई, ढुलाई, स स्त्री (हि ढुलवाना) वाहन, नयनं, हरण, भरण २ वाहनवेतन, प्रापणनिर्वेश।
ढुलवाना, कि प्रे, स 'ढोना तथा 'ढुलना' के प्रे रूप।
ढुलाना, कि प्रे, स ढुकना तथा 'ढोना' के प्रे रूप।
ढूँढ, स स्त्री (हि ढूँढना) दे 'खोज'।
ढूँढना, कि स (स ढुढन) दे खोजना'।
ढूह-हा, स पु (स स्तूप) राशि (पु) चय २ मामखर, क्षुद्रपर्वत।
ढेंकली, स स्त्री (हि ढेंक) जलकर्षणयत्र २ धान्यकुट्टनी ३ वक्तुद्यम (अर्क उतारने का यत्र) ४ दे 'कलाबाजी'।
ढेर, स पु (हि धरना ?) राशि (पु), निकर, चिति (स्त्री), नि स, चय, स्तोम, पुज, समार। वि, प्रचुर प्रभूत, बहुल, भूरि, विपुल, पर्याप्त।
—लगाना, कि स, राशी कृ, सचि (स्वा उ अ)।
—करना, मु, व्यापद् मृ (प्र)।
ढेरी, स स्त्री (हि ढेर) क्षुद्रराशि (पु), दे 'ढेर'।
ढेला, स पु (हि ढला) लोष्ट, मृद्, खड पिंड, लोष्ट क, दरिणि (पु स्त्री) लोष्टु, २ पिंड, खड ३ धान्यभेद।
ढैया, स पु (हि ढाई) सार्धद्विसेरकात्मक तोल २ सार्धद्विगुणनसूची।
ढोंग, स पु (हि ढग) आडबर, दम, पाखण्ड, कपट, छद्मन् (न), वचना, प्रतारणा।
ढोंगी–गिया, वि (हि ढोंग) दांभिक, वचक, प्रतारक, कापटिक छाद्मिक, पापडिन्।
ढोटा, स पु (हि ढोटी) पुत्र २ बालक।
ढोटी, स स्त्री (स दुहितृ) पुत्री २ बालिका।
ढोना, कि स (स वोढ का क्र, विपर्यय से ढोव) वह् नी (भ्वा उ अ) (उत्पाट्य) हृ (भ्वा उ अ)। स पु, वहन, नयन, हरणम्।
ढोनेवाला, स पु भार, वाहक हार।
ढोर, स पु, दे, 'पशु'।
ढोल, स पु (■) आनक, पटह ढ, ढक्का २ कर्णदुदुभि (पु)।
ढोलक–की, स स्त्री (स ढोलक) भेरी रि (स्त्री), दुदुभि (पु)।
ढोलकिया, स पु (स ढोलक >) ढोलक वादक, पटहताडक।
ढौंचा, स पु (स अर्द्ध + हि चार) सार्धचतु गुणनसूची।

ण

ण देवनागरीवर्णमालाया पचदशो व्यजनवर्ण, णकार।

त

त, देवनागरीवर्णमालाया षोडशो व्यजनवर्ण, तकार।
तक, स पु (स) भय भीति (स्त्री) त्रास २ कष्टमय द्वेषमय, जीवनम् ३ वियोगदु खम् ४ टक, तक्षणी।
तग, वि (फा) दृढ, शैथिल्यशून्य, ससक्त, सुसहत गाढ २ अर्दित, उद्विग्न, सतप्त, पीडित, विकल ३ विस्तारविरहित, सबाध, सकट, सकु (को) चित, सकीर्ण। स पु वरत्रा, नध्री, वरत्रा।
—दस्त, वि (फा) निर्धन, दरिद्र।

—दस्ती, स स्त्री (फा) अकिंचनता, दारिद्र्यम्।
—दिल, वि (फा) कदर्य, कृपण, मितपच।
—आना, या होना, मु, खिद् (दि क आ अ), सतप (कर्म)।
—करना, मु, खिद्-यथ सतप (प्रे)।
हाथ तग होना, मु, दरिद्रा (अ प से) निर्धन (वि) भू।
तगी, स स्त्री (फा) सकोच, सकीर्णता, विस्ताराभाव, सबाधता २ दृढता, सहति सुसमक्ति (स्त्री), गाढता ३ कष्ट, दु ख ४ निधनता, दरिद्रता ५ न्यूनता।
तडुल, स पु (स) दे 'चावल'।
तति, स स्त्री (स) रज्जु (स्त्री), गुण, कर्षरी रशना २ पक्ति (स्त्री), श्रेणी पि (स्त्री)।
—पाल, स पु, गोरक्षक (२) अज्ञातवासे सहदेवस्य सज्ञा (महा०)।
तत, स पु (स) सूत्र, तन्त, गुण २ सतान।
—वाय, स पु, दे 'जुलाहा'।
तत्र, स पु (स न) ततु (पु), सूत्र २ तनु, वाय-वाप, कुविंद, पटकार ३ पट निर्माणपरिच्छद ४ सपत्ति (स्त्री) ५ अधीनता, पराश्रय ६ शासन, शासनपद्धति (स्त्री) ७ कारण ८ काय ९ परिवार १० सेना ११ गारुड, मत्र १२ औषध १३ राज्य १४ शास्त्रभेद।
तत्री, स स्त्री (स) तत्रि (स्त्री), वीणादीनां गुण २ गुण, रज्जु (स्त्री) ३ वीणा, सतन्त्री वाय ४ देहशिरा। स पु (स तत्रिन्) वीणावादक २ गायक ३ सैनिक।
तदुरस्त, वि (फा) स्वस्थ, नीरोग।
तदुरस्ती, स स्त्री (फा) स्वास्थ्य, नीरोगता।
तदूर, स पु (फा तनूर) आपाक, तरवा, कदु (पु स्त्री)।
तदेही, स स्त्री (फा तदिही) परिश्रम, प्रयत्न।
तद्रा, स स्त्री (स) निद्रा, आलस्य, निद्रालुता, शयालुता, तद्रालुता।
तद्रालु, वि (स) तद्रिल, निद्रालु, निद्रा, पर-वश, सुषुप्सु, शयालु।
तबाकू, स पु, दे 'तमाकू'।
तबीह, स स्त्री (अ) शिक्षा, अनुशासन, उपदेश।
तबू, स पु (हिं तनना) पट, कुटी मडप गृह, दूष्य, केणिका, मलन, स्थूलम्।
शाही—, स पु, उपकार्या।
तबूर, स पु (फा) पटह, पणव, मुरज।
तबूरा, स पु (स तुबर) तानपूरक, वीणाभेद।
तबोल, स पु (स ताबूल >) •ताबूल, •वर शुल्क क (पजाब) २ •वरयात्रिव्यय •ताबूल (बुदेलखड)।
तबोली, स पु (हिं तबोल) ताबूलिक, ताबूलविक्रेतृ (पु)।
तअज्जुब, स पु (अ) आश्चर्य, विस्मय।
तअम्मुल, स पु (अ) धैर्य, शाति (स्त्री)।
तअल्लुक, स पु (अ) भूमि (स्त्री), क्षेत्र २ प्रदेश, प्रातभाग, मडलम्।
—दार, स पु, भू-क्षेत्र, स्वामिन्, क्षत्रपति।
तअल्लुक, स पु (अ) सबध, ससर्ग।
तअस्सुब, स पु (अ) धार्मिक जातीय, पक्षपात।
तई, प्रत्य (प्रा हुतो) प्रति, -अर्थम्।
(इसका अनुवाद प्राय द्वितीया या चतुर्थी के रूपों से करते हैं)।
तक, अव्य (स अत + हिं क) यावत्, पर्यन्त आ (समास में या पचमीयुक्त)। आमरण, आमरणात्, मरण यावत्, मरणपर्यन्तम् इ।
तकडा, वि (हिं तन + कडा) बलवत्, सबल, पुष्ट [तकडी (स्त्री)-बलवती, सबला]।
तकडी, स स्त्री (देश) तुला, मापन, धट, तौल्म्।
तकदीर, स स्त्री, (अ) भाग्य, दैवम्।
तकरार स स्त्री (अ) कलह, विवाद।
तकरीर, स स्त्री (अ) भाषण, व्याख्यानम्।
तकला, स पु [स तर्कु (पु स्त्री)] तर्कुट, कार्पासनासिका।
तकली, स स्त्री (हिं तकला) तर्कुटी क्षुद्रतर्कु (पु स्त्री) २ सवापन, ततुकील।
तकलीफ, स स्त्री (अ) कष्ट, क्लेश, आपद् (स्त्री)।
तकल्लुफ, स पु (अ) शिष्टाचार, नैयमिकता।
—करना, शिष्टवत् आचर् (भ्वा प से), शिष्टाचार दृश (प्र)।

बेतकल्लुफ, वि, सरल, ऋजु।

तक्वीयत, स स्त्री (अ०) पुष्टि शक्ति (स्त्री) दृढ़ता। २ सान्त्वना, आश्वास, आश्वासनम्।

तक्सीम, स स्त्री (अ) प्रदान, विभाग, विभागपरिकल्पन २ वटन, सम्विभाग।

—करना, क्रि स, भज् विभज् (भ्वा उ अ) २ वट् प्यच (चु)।

तक्सीर, स स्त्री (अ) अपराध, दोष।

तकाजा, स पु (अ) (ऋणशोधनार्थं) अनुरोध, प्रेरणा।

—करना, ऋणशोधनार्थं सनिर्बंध प्रार्थ (चु आ से) २ अनुरुध् (रु प अ)।

तकावी, सं स्त्री (अ) कृषकेभ्यो बीजाद्यर्थं दत्तऋणम्।

तकिया, स पु (फा) उपधान, उपबर्ह २ आश्रय, अवलम्ब ३ यवनभिक्षुककुटी।

—कलाम, स पु (फा+अ) *वाक्याश्रय, *सहजवाक्यम्।

तकुआ, स पु, दे 'तकला'।

तक्र, स पु (स न) पादांबुसंयुत दधि (न), मथितम्।

तक्षक, स पु (स न) त्वक्षण, तनूकरण, काष्ठस्य समीकरण २ उत्किरण, उत्कीर्य मूर्तिनिर्माणम्।

तक्षण, स पु (सं) पातालस्थो नागविशेष २ सर्प, अहि (पु)।

तखमीना स पु (अ) अनुमान २ मूल्य निरूपणम्।

तख्त, सं पु (फा) नृपासन, सिंहासन, भद्रासन २ फलक क, मंच।

—नशीन, वि (फा) सिंहासन-आसीन-आरूढ।

—पोश, स पु (फा) मंचाच्छादन, फलक प्रच्छद २ फलक क, मंच ३ दे 'चौकी'।

तख्ता, स पु (फा) काष्ठ-दारु, फलक फलक २ पट्ट ३ पीठ, मंच ४ प्लव, फलक यान ५ दे 'क्यारी'।

तख्ती, स स्त्री (फा तख्ता) क्षुद्रफलक, पीठिका २ (काष्ठ) पट्टी पट्टिका।

तगड़ा, वि, दे 'तगड़ा'।

तगण, स पु (स) छन्द शास्त्रे गणभेद, अन्तलघुगण। (उ० तूफान, तेंतीस)

तगर, स पु (सं न) वक्र, कुटिल, जिह्म, दीपनम्।

तगाड़, सं पु (सं तडाग गम्>) सुधाकर्दमादिमिश्रणार्थं कुण्डम्, नटाग।

तगादा, सं पु, दे 'तकाजा'।

तज, सं पु (स त्वच) बहुगंध, मुखशोधन, उत्कट, *चवत्वं, सिंहलम्।

तज़्किरा, स पु (अ) वर्णन, चर्चा २ जीवनचरितम्।

तजर(रु)बा, सं पु (अ) सपरीक्षा, प्रयोग, परीक्षा क्षण, २ अनुभव, परीक्षालब्ध-अनुभव जनित, ज्ञान, बुद्धिपरिपाक।

—कार, सं पु (फा) अनुभविन्, बहुदर्शिन्।

—करना, क्रि स, अनुभू २ परीक्ष (भ्वा आ से), प्रयुज् (चु)।

तजवीज, स स्त्री (अ) मत, मति (स्त्री), तर्क २ निर्णय ३ उपाय, युक्ति (स्त्री)।

तट, स पु (स तट ट) तटी टा, कूल, तीर, रोधम् (न)। क्रि वि, समीपे।

तटस्थ, वि (स) तीरस्थ, कूलस्थ २ निष्पक्षपात, उदासीन, उभयसामान्य, सम, मात दृष्टि।

तड़, स पु (सं तट >) पक्ष, दल म्।

तड़, स पु (अनु) प्रहारज शब्द, तटत्कार।

तड़कना, क्रि अ (अनु तड़) वि, दल (भ्वा प से), स्फुट (तु प से) द्विधा भिद् (कर्म) २ कुप (दि प अ)।

तड़का, सं पु (हिं तड़कना) प्रभात, विभात, उषस (स्त्री न), प्रत्यूष, ब्रह्ममुहूर्तम्।

तड़के, क्रि वि, प्रत्यूषे, प्रभाते।

तड़प, स स्त्री (हिं तड़पना) कप, स्पंद, स्फुरित २ संक्षोभ, उपप्लव, आकुलत्वम्।

तड़पना, क्रि अ (अनु) क्षुभ् (दि, क्र्‌ प से, भ्वा आ से) आकुली क्षुब्धो विह्वलो भू २ अत्यधिक अभिलष (भ्वा उ से)।

तड़पाना, क्रि स, उद्विज् (प्रे) प्रविसं क्षुभ (प्रे), आकुली कृ।

तड़फड़ाना, तड़फना, } क्रि अ, दे 'तड़पना'।

तड़ाक का, सं पु (अनु) ताडनध्वनि (पु) २ त्रोटन भग, शब्द विराव।

तड़ाक, स पु (सं पु न) दे 'तालाब'।

तड़ातड़, क्रि वि, (अनु) स्तडतडशब्दम्।
तड़ित, सं स्त्री (स) विद्युत् (स्त्री) चपला, चचला, शपा।
—पति, स पु (स) मेघ, नीरद।
तड़ी, स स्त्री (अनु॰) चपेट, चपेटिका, चपेट-करतल, प्रहार।
तति, स स्त्री (स) पंक्ति श्रेणी (स्त्री), २ समूह ३ विस्तार।
ततैया, स स्त्री (स तत>) वरट गटी इहाचिका गधोली, बरल बरोल विष, धूक-भृंगी।
तत्काल, क्रि वि (स) तत्क्षणात् अचिरादेव, सद्यः, आशु द्राक, झटिति, तत्काले।
तत्कालीन, वि (स) तात्कालिक [की (स्त्री)] तदानीन्तन [-नी (स्त्री)]।
तत्क्षण, क्रि वि (स तत्क्षण) दे 'तत्काल'।
तत्त्व, स पु (स न) तथ्य, याथार्थ्य, सत्य, सत्यता वास्तविकता २ पञ्चभूतानि ३ मूलकारण ४ सार, सार-अंश-वस्तु (न) ५ ब्रह्मन् (न)।
—अवधान, स पु (स न) निरीक्षण अवेक्षणम्।
—ज्ञान, स पु (स न) परमार्थ सद्-ज्ञानम्।
—ज्ञानी, स पु (स ज्ञिन्) १ तत्त्वज्ञ २
—दर्शी स पु (स शिन्) १ दार्शनिक।
—वादी, स पु (स दिन्) तत्त्ववक्तृ (पु) २ यथार्थ-स्पष्ट वादिन्।
—विद्, स पु (स विद्) दे 'तत्त्वज्ञानी'।
—विद्या, स स्त्री (स) दर्शनशास्त्रम्।
—वेत्ता, स पु (स वेत्तृ) दे 'तत्त्वज्ञानी'।
तत्पर, वि (स) आसक्त, निरत, व्यापृत समाहित, अभिनिविष्ट, व्यग्र २ एकाग्र, सुसमाहित, सावधान ३ सनद्ध, सज्ज, सज्जीभूत, उपक्लृप्त।
तत्परता, स स्त्री (स) अभिनिवेश आसक्ति (स्त्री), मनोयोग, एकाग्रता, एकनिष्ठता, अनन्यचित्तता।
तत्पुरुष, स पु (स) परमेश्वर २ समासभेद (व्या)।
तत्र, अव्य (स) तस्मिन् स्थल-स्थाने।
तथा, अव्य (स) च, (द्वन्द्व समास से भी, उ राम तथा श्याम = रामश्यामौ इ) २ तादृश, तत्सम, तत्तुल्य।
तथापि, अव्य (स) तदपि, तत्रापि, एवमप्यपि।
तथास्तु, अव्य (स) एवम् अस्तु भवतु।
तथ्य, स पु (स न) यथार्थता, सत्य, सत्यता।
तदंतर } क्रि वि (स तदनन्तर) तदनु, तदनंतर } तत्पश्चात्, तत, अथ, अनन्तरम्।
तदनुरूप, वि (स) तत्सदृश, तत्तुल्य, तदाकार।
तदनुसार, वि (स) तदनुकूल, तदनुरूप।
तदबीर, स स्त्री (अ) साधन, उपाय-युक्ति (स्त्री)।
तदा, क्रि वि (स) तस्मिन् काले समये।
तदाकार, वि (स) तद्रूप २ तन्मय।
तदीय, सर्व (स) तत्सम्बन्धिन्, तस्य।
तदुपरांत, क्रि वि, दे 'तदनंतर'।
तद्धित, स पु (स) प्रत्ययभेद (व्या) २ तद्धितान्तशब्द।
तद्रूप, वि (स) सदृश [शी (स्त्री)], तदाकार।
तद्वत्, अव्य (स) तत्सदृश, तत्तुल्यम्।
तन, स पु [फा। मि, स तनु (स्त्री)] देह, शरीर, वपुस् (न), गात्रम्।
—मन, स पु, तनुमनसी देहदेहिनौ (द्वि)।
—मन मारना, मु, कामान् अव निरुध् (रु उ अ)
—मन से, मु, सावधान, अनन्यवृत्त्या सर्वात्मना एकाग्रचित्तेन (तृ एक)।
तनख्वाह, स स्त्री (फा) दे 'वेतन'।
तनना, क्रि अ (स तनन>) प्र वि-तन् (कर्म), प्र, स्तृ (भ्वा आ से), प्रसृ (भ्वा प अ) विस्तृ (कर्म) २ उच्छिन उत्तान उन्नत (वि) स्था (भ्वा प अ) ३ रुष् (दि प से रुषु)।
तनय, स पु (स) पुत्र, सूनु (पु), आत्मज।
तनया, स स्त्री (स) पुत्री, दुहितृ (स्त्री), आत्मजा।
तनहा, वि (फ) एकल, एकाकिन्, असहाय। क्रि वि, एव, केवलम्।

तनहाई स्त्री (फा) विजनता, विविक्तता २ विजन विविक्त ३ एकाकिता, असहायता।

तनाजा, स पु (अ) कलह कलि (पु) २ वैमनस्य शत्रुता।

तनिक, वि (स तनुक) अल्प, स्तोक, अणु। क्रि वि किंचित्, स्तोक, ईषत्, मनाक् (सब अ द)।

तनी, स स्त्री (हिं तानना) बंध, बंधन, बंधनी।

तनु, स स्त्री (स) तनू (स्त्री) देह काय, वपुस् (न) २ त्वच (स्त्री) ३ नारी। वि, कृश दुर्बल, क्षीणकाय २ अल्प, दभ्र ३ कोमल पेलव ४ सुदर उत्कृष्ट।

—कूप, स पु (स) रो (लो)म, कूप रध्रम्।

—धारी, वि (स रिन्) देहिन्, शरीरिन्, प्राणिन्।

तनुज, स पु (स) पुत्र आत्मज, सूनु।

तनुजा, स स्त्री (स) पुत्री, आत्मजा, तनया।

तनू, स पु (स स्त्री) देह, काय।

—उद्भव, स पु (स) पुत्र, तनुज।

—उद्भवा, स स्त्री (स) पुत्री, तनुजा।

तनूर, दे 'तदूर'।

तन्मनस्क, वि (स) तल्लीन, तन्मय।

तन्मात्रा, स स्त्री (स अम्) सूक्ष्मभूतानि तत्वम् (उ शब्द, स्पर्श, रूप रस, गंध)।

तन्मय, वि (स) लि, मग्न, दत्तचित्त, अव हित आसक्त, लीन, निरत, पर परायण।

तन्वी, स स्त्री (स) तन्वंगी, कोमलांगी, कृशांगी।

तप[1], स पु [स तपस (न)] तपस्या, तप, व्रतादान नियमस्थिति (स्त्री), परि मस्या व्रतचर्या।

—करना, क्रि अ, तपस्यति (ना धा), तप तप् (दि आ आ) या आचर (भ्वा प से)।

तप[2], स पु (स) ताप, दाह, उष्म, ऊष्मन् (पु) २ ग्रीष्म ३ ज्वर।

तपक, स स्त्री (हिं तपकना) आकस्मिक, प्रकप स्फुरण आरंभ।

तपकना, क्रि अ (हिं तमकना) स्फुर (तु प अ), अकस्मात् कप स्पद् (भ्वा आ से)।

तपन, स पु (स न) ताप, ऊष्मन् (पुं), दाह, तप २ सूर्य ३ सूर्यकांतरत्न ४ ग्रीष्म।

तपना, क्रि अ (स तपन) तप (भ्वा प अ), दीप् (दि आ से), उष्णी भू २ सतप् क्लिश्-पीड् (कम) पच् (भ्वा आ से)।

तपश्चर्या, तपस्या, } स स्त्री (स) दे 'तप[1]'।

तपस्विनी, स स्त्री (स) तापसी, तपोधना २ प्रतिव्रता ३ दीना।

तपस्वी, स पु (स स्विन्) तापस, तपोधन, पारि (र) कांक्षिन्, पारिकांक्षक, यति (पु) २ दीन, दरिद्र।

तपाक, स पु (फा) आवेश आवेग, २ शीघ्रता।

तपाना, क्रि स, व 'तपना' के प्र रूप।

तपी, स पु (हिं तप) दे तपस्वी।

तपेदिक, स प (फा तप+अ दिक) क्षयरोग, राजयक्ष्मन् (पु)।

तपोधन, स पु (स) तपो निष्ठ निधि राशि (पु), तपस्विन्।

तपोबल, स पु (स न) तपस्याशक्ति (स्त्री)।

तपोभूमि, स स्त्री (स) तपस्यास्थानम्।

तपोवन, स पु (स न) तपस्यारण्यम्।

तप्त, वि (स) उष्ण, तापित, दे 'गरम' २ दु खित, पीडित, क्लेशित।

तफरीक, स स्त्री (अ) व्यवकलन विवर्जन, उद्धार।

—करना क्रि स, व्यवकल् विवृज्-ऋन् (चु), उद्धृ (भ्वा प अ)।

तफरीह, स स्त्री (अ) प्रसन्नता, मोद २ विनोद, परिहास ३ भ्रमणम्।

तफसील स स्त्री (अ) विवरण विस्तार २ विस्तृतवर्णन ३ टीका, व्याख्या ४ सूची।

तब, क्रि वि (स तदा) तदानीं, तस्मिन् काले २ तत तत्पश्चात्, तदनु, तदनतरं, तत पर ३ अत, अनेन कारणेन इति हेतो।

—तक क्रि वि, तावत्, तावत् काल पर्यं तम्।

—भी, क्रि वि, तदापि २ तथापि, तदपि, एव सत्यपि।

—से, क्रि वि, तत तदा, प्रभृति आरभ्य।

—ही, क्रि वि, तदैव, तत्काल, तत्क्षणं, द्राक्।

तबदील वि (अ) परिवर्तित, अयथाकृत ।
—करना, क्रि स परिवृत (प्रे) ।
तबदीली, स स्त्री (अ) परिवर्तन, परिवृत्ति (स्त्री), विपर्यय २ विकार, विकृति (स्त्री) ।
तबलची ■ पु (अ तबल)तबल्कवादक ।
तबला, स पु (अ तबल ●तबल्को (द्वि) वाद्यभेद ।
तबाशी(सी)र, स पु (स तवक्षीर) यवज यवचोद्भव, पय क्षीर, गोधूमज २ वंशरोचना, त्वक्क्षीरा री, वंशी, वैणवी ।
तबाह, वि (फा) ध्वस्त, नष्ट उत्सन्न ।
तबाही, स स्त्री (फा)प्रमि, ध्वंस , वि ,नाश
तबि(बी)अत स स्त्री (अ) चित्त मानस, चेतस मनस् (न) अंत करण, हृदय, स्वांत २ प्रकृति (स्त्री), स्वभाव ।
—आना, मु लिह् (दि प से) अनुरज् (कर्म) ।
—बिगड़ना, मु , रुग्ण (वि) भू विवमिषति (सन्नत) ।
तबीब, स पुं (अ)वैद्य चिकित्सक ,भिषज(पु)।
तबेला, स पु (अ) मंदुरा, अश्व शालि, शाला।
तभी, क्रि वि (हिं तब+ही) तत्क्षण तत्काल, तदैव २ तेनैव कारणेन, इति हेतो ।
—से, क्रि वि , तदारभ्य तत प्रभृति ।
तमंचा, स पु (फा) दे 'पिस्तौल' ।
तम, स पु [स तमस (न)] अधकार, तिमिर, ध्वांत, तमिस्र स्रा २ प्रकृतेस्तृतीयो गुण (सांख्य) ३ क्रोध ४ अज्ञान, अविद्या ५ कालिमन् (पु), श्यामता ६ मोह ७ पाप ८ नरक कम् ।
तमअ, स्त्री (अ) इच्छा २ लोभ ।
तमक, स स्त्री (हिं तमकना) आवेश, उद्वेग २ क्षिप्रता, त्वरा ३ क्रोध, कोप ४ दर्प, अभिमान ५ (कोपादिभ्य) अरुणाननता ।
तमकना,क्रि अ (अनु)(कोपादिभ्य) अरुणानन लोहितवदन (वि) भू २ अत्यत कुप् (दि प से) ।
तमगा, स पुं (तु) पदक, कीर्ति प्रतिष्ठा मुद्रा ।
तमचर, पुं (स तमीचर) राक्षस, निशाचर, पिशाच २ उल्लूक, घूक, कौशिक ।
तमचुर ,चूर चोर, सं पु (स ताम्रचूड) कुक्कुट कालज्ञ, चरणायुध ।
तमतमाना, क्रि अ (स त म्र>) (क्रोधातपादिभ्यो मुख) अरुणी रक्ती भू, अरुणानन लोहितमुख (वि) जन् (दि आ से) ।
तमतमाहट ■ स्त्री (हिं तमतमाना) (क्रोधादिजा) अरुणवदनता लोहिताननता ।
तमन्ना, स स्त्री (फा) अभिलाष, आकांक्षा ।
तमस, स पु दे तम' ।
तमस्सुक, स पु (अ) ऋणपत्र समयलेख, आधिकरणिकपत्रम् ।
तमा, स स्त्री (अ तमअ) लोभ लिप्सा ।
तमाकू-खू, स पु (पुर्त टबैको) ताम्रकूट, तमाखु वत्रभूमी, कृमिघ्नी, धूम्रपत्रिका क्षार पत्र, सुरती ।
—पीना, क्रि स, धूम पा (भ्वा प अ), धूमपान कृ ।
तमाचा, स पु (फा) दे 'चपत' ।
तमाम, वि (अ) समस्त, समग्र, सम्पूर्ण २ समाप्त, अवसित ।
काम तमाम करना, मु , व्यापद् णि (प्रे) ।
तमाल, स पु (स) कालस्कन्ध, कालनील, ताल, महाबल ।
तमाशबीन, स पु (अ तमाश +फा बीन) दर्शक, प्रेक्षक २ पार्श्व समीप, स्थ ३ सामाजिक, पारिषद ४ वेश्यागामिन् ।
तमाशबीनी, स स्त्री (अ +फा) वेश्यागामित्वम् ।
तमाशा, स पु (अ) नाटक २ रूपक कौतुक चमत्कार, दृश्य ३ अद्भुत विलक्षण, व्यापार ।
—करना, क्रि स, नट निरूप् प्रयुज (चु), अभिनी (भ्वा प अ) ।
—करनेवाला, स पु, नट, अभिनेतृ (पुं) ।
—गाह, स स्त्री, रंग, शाला भूमि (स्त्री), नाटकगृहम् ।
तमाशाई, दे 'तमाशबीन' ।
तमीज, स स्त्री (अ) विवेक, परिच्छेद, विवेचनशक्ति (स्त्री) २ ज्ञान, बोध ३ सभ्यता, शिष्टाचार, विनय ।
तमोगुण, स पु (स) प्रकृतेस्तृतीय (अधम) गुण ।

तमोगुणी, वि (सं गिन्) अधमवृत्तिक, तमोगुणप्रधान।

तमोली, स पु दे 'तम्बोली'।

तय, वि (अ) समाप्त, अवसित २ निश्चित, नियत ३ निर्णीत।

तरंग, स स्त्री (सं पु) भंग, भंगी गि (स्त्री) वीची चि (स्त्री), ऊर्मी मि (स्त्री) लहरी रि (स्त्री) कल्लोल, जल्लता, उत्कलिका २ स्वरलहरी ३ मानसलहरी, चित्ततरंग, छन्द, छन्दस (न)।

तरंगित, वि (सं) कल्लोलमय [यी (स्त्री)], नतोन्नत भंगिमत् [ती (स्त्री)]।

तरंगी, वि स —गिन्) सभंग, ऊर्मिमत्, कल्लोलवत् २ स्वैर, स्वैरिन्, कामचारिन्, स्वच्छन्द।

तर, वि (फा) आर्द्र, क्लिन्न २ शीतल ३ हरित, सरस ४ स्निग्ध, चिक्कण ५ समृद्ध, धनाढ्य।

तरकश, स पु (फा) इषुधि (पु), निषंग, तूणीर —रम्।

तरकारी, स स्त्री (फा तर —शाक) शाक —क, शिग्रु (पु), हरितक २ पक्वशाक क, व्यंजन ३ मांसम् (पंजाब)।

तरकी, स स्त्री [स ताट(ड)क] कर्ण, दर्पण मुकुर, कर्णिका, कर्णभूषणभेद।

तरकीब, सं स्त्री (अ) युक्ति (स्त्री), उपाय, प्रयोग २ रचनाप्रणाली, निर्माण-विधि (पु)।

तरक्की, स स्त्री (अ) उन्नति वृद्धि (स्त्री)।

तरखान, स पु (स तक्षन्) वर्द्धकिन् किन्, तक्षक, त्वष्ट, दारु।

तरगीब, स स्त्री (अ) प्रेरणा, उत्तेजना, प्रोत्साहनम्।

—**देना**, कि स, प्रेर् प्रोत्सह् उत्तिज प्रवृत् (प्रे)।

तरजीह, स्त्री (अ) अभिमान, अभिरुचि, रुचि (स्त्री) अनुराग मान, कृति (स्त्री) वरता।

तरजुमा, स पु (अ) दे 'अनुवाद'।

तरजुमान, स पु (अ) अनुवादक, भाषान्तरकार।

तरण, स पु (स न) पारगमन, प्लवनपूर्वक देशान्तरगमन, सन्तरणम्।

तरणि, सं स्त्री (सं) तरणी, नौका। स पु, सूर्य २ किरण।

—**तनूजा**, सं स्त्री (सं) यमुना।

तरणी, स स्त्री (सं) दे 'नाव'।

तरतीब, स स्त्री (अ) अनु,क्रम, विन्यास, व्यवस्था, यथास्थान स्थिति (स्त्री)।

—**वार**, कि वि, यथाक्रम, क्रमश, क्रमेण।

तरदीद, स स्त्री (अ) प्रत्याख्यान, खण्डन, निरास, निराकरणम्।

तरना, कि अ (सं तरण) दे 'तैरना' (२), मोक्ष मुक्ति-नि श्रेयस अधिगम्।

तरफ, स स्त्री (अ) दिश् (स्त्री), दिशा, आशा काष्ठा, ककुभ् हरित् (स्त्री) २ पार्श्व इर्वं, पक्ष। कि वि, अभि, प्रति, अभिमुख, उद्दिश्य, दिशि, दिशायाम्।

—**दार**, स पु, पक्षपातिन्, पक्ष्य, पक्षीय, पार्श्व(र्विव)क।

—**दारी**, स स्त्री, पक्ष, पात अवलम्बन-ग्रहणम्।

—**दारी करना**, कि स, पक्ष अवलम्ब् (भ्वा आ से) ग्रह् (क्र प से)।

दोनों—कि वि, उभयत, उभयत्र।

सब—या चारों—, कि, वि, समन्तात्, समन्तत, चतुर्दिक्षु, सर्वत, विश्वत, परित, अभित।

तरफैन, स पु (अ) उभौ पक्षौ, अर्थिप्रत्यर्थिनौ।

तरबूज, स पु (स तरम्बुज। मि फा तर्बुज) कालिंग गोडुम्ब, सेतु, (न), मासफलम्।

तरमीम, स स्त्री (अ) संशोधन, विशुद्धि (स्त्री)।

तरल, वि (सं) चचल, कम्प्र, कम्पन २ अनित्य, क्षणिक ३ द्रव, प्रवाहिन् ४ भासुर, भास्वर।

तरला, स स्त्री (सं) यवागू, श्राणा, उष्णिका २ सुरा ३ मधुमक्षिका।

तरवन, स पु, दे, 'तरकी' २ दे 'कर्णफूल'।

तरवर, स पु (सं तरुवर) महावृक्ष २ पादप।

तरस, सं पु (सं त्रस >) कृपा, अनुकम्पा, करुणा।

—**खाना**, कि स, दय् (भ्वा आ से, षष्ठी के साथ), अनुकम्प् (भ्वा आ से), दयां कृ (सप्तमी के साथ)।

तरसना, कि अ (सं तर्षण) तृष् (दि प

से,), अत्यन्त अभिलष (भ्वा दि प से) स्पृह् (चु , चतुर्थी के साथ)-कांक्ष-वाञ्छ् (दोनों भ्वा प से), लुभ् आकुलीभू ।

तरसाना, क्रि स , व 'तरसना' के प्रे रूप ।

तरसों, क्रि वि (स तृतीय+दिवस) तृतीयो गत आगामी वा दिवस , *इतरश्व (अव्य)।

तरह, स स्त्री (अ) जाति (स्त्री), प्रकार, भेद विधा (समासान्त में) २ रचनाप्रकार, घटन ३ शैली, रीति (स्त्री) प्रणाली ४ युक्ति (स्त्री), उपाय ५ वत् इव तुल्य, उपम ।

अच्छी—, क्रि वि , सम्यक , साधु, सुष्ठु (सब अव्य), सु (समासादि में)।

इस—,क्रि वि , इत्थ एव, अनया रीत्या ।

उस—, क्रि वि , तथा, तया रीत्या।

किस—, क्रि वि , कथ, केन प्रकारेण ।

जिस—, क्रि वि , यथा, येन प्रकारेण ।

बुरी—, क्रि वि , कु ,दुर् ,असम्यक इ ।

हर— क्रि वि सर्वथा, सर्वप्रकारेण ।

—देना, मु उपेक्ष क्षम् (भ्वा आ से)।

तराई, स स्त्री (स तल>) उपत्यका, पर्वतासन्नभू (स्त्री)।

तराज़ू , सं पु स्त्री (फा) तुला, मापन-धट , तुलायन्त्र, तोलम् ।

—की डण्डी, स स्त्री , शिक्या ।

तराबोर, वि (फा तर+हि बोरना) अति, सिक्त क्लिन्न ।

तरावट, स स्त्री (फा तर) आर्द्रता, क्लिन्नता २ शीतलता ३ बलातिहर पदार्थ ४ स्निग्धभोजनम् ।

तराशना, क्रि स (फा) दे 'काटना', 'कतरना'।

तरी,[1] स स्त्री (स) तरि (स्त्री), नौका।

तरी,[2] स स्त्री (फा) आर्द्रता, क्लिन्नता २ शीतलता ३ उपत्यका ४ कच्छ कच्छम् ।

तरीका, सं पु (अ) रीति (स्त्री), प्रकार , शैली २ आचार , व्यवहार , अनुसार ३ उपाय , युक्ति (स्त्री)।

तरु, स पु (स) पादप , द्रुम , दे 'वृक्ष'।

तरुण, वि तथा स पु (स) युवक , दे 'जवान'।

तरुणाई, स स्त्री (स तरुण>) यौवनम् , दे 'जवानी'

तरुणी, वि स्त्री तथा स स्त्री (सं) युवति (स्त्री) दे 'युवती'।

तरेरना, क्रि स , (सं तिर्यक+हि हेरना) तिर्यक् वक्र साचि (सब अव्य०) दृश् (भ्वा प अ) २ तर्जनवर्जनार्थं वक्र ईक्ष् (भ्वा आ से)

तरोई, स स्त्री , दे 'तुरइ'।

तरौना, स पु , दे 'तरकी' २ दे 'कर्णफूल'

तर्क, स पु (स) हेतु (पु), युक्ति उपपत्ति (स्त्री) २ आन्वीक्षिकी, न्याय , ऊहापोह ३ विदग्धोक्ति (स्त्री) ४ व्यङ्ग्यम् ।

—वितर्क, सं पु (स) वादविवाद , वाद प्रतिवाद , हेतुवाद २ सशय , सदेह , विकल्प , आ परि वि शका ।

—विद्या, स स्त्री (स) तर्क-न्याय,-शास्त्र विद्या तर्क , न्याय ।

तर्क, स पु (अ) त्याग , विसर्जनम् ।

तर्कश, स पु , दे 'तरकश'।

तर्ज़, सं स्त्री (अ) रीति (स्त्री), शैली, प्रकार २ रचनाप्रकार , घटनम् ।

तर्जन, स पु (स न) तर्जना, भयप्रदर्शन, भर्त्सनम् , दे 'डाँटडपट'।

तर्जना, क्रि स (स तर्जन) दे 'डॉटना'।

तर्जनी, स स्त्री (सं) प्रदेशिनी, अगुष्ठ समीपागुली ।

तर्पण, सं पु (स न) तृप्ति (स्त्री), प्रीणन, सन्तर्पण २ पित्रादिभ्यो जलदान (धर्म)।

तल, सं पु (सं पु न) मूल, अधोभाग , २ बुध्न , उपष्टम्भ ३ पाद-चरण,-तलं ४ करतल ल, प्रहस्त । ४ चपेट , चर्पट नरक पाताल, विशेष ।

तलक, अव्य , दे 'तक'।

तलख़, वि (फा) कटु कटुक २ अप्रिय, अनिष्ट ।

तलछट, स स्त्री (सं तल+हि छँटना) तलमल, किल्क, किट्ट, खल, मल ल, शेष ष, उच्छिष्ट, अन्न स, कर , असार ।

तलना, क्रि स (सं तलन), (घृततैलादिषु) भ्रस्ज् (तु उ अ भृज्जति, चु मर्जयति)- पच (भ्वा प अ)-मृज् (भ्वा आ से, मर्जते), तल् (भ्वा, प से , पाकराजेश्वर)।

सं पु, (घृतादिषु) मर्जन पचनम्।
तला हुआ वि, भ्रष्ट, भर्जित, घृतपक्व इ ।
तलफना, क्रि अ, दे 'तड़पना'।
तलफी, स स्त्री (फा) ध्वंस, विनाश २ क्षति हानि (स्त्री)।
तलफ़्फ़ुज़, स पु (अ) उच्चारणम्, भाषण विधि (पु)।
तलब, स स्त्री (अ) वेतन, भृति (स्त्री) २ आकारण, आह्वान ३ लिप्सा।
तलबगार, वि (फा) इच्छुक २ प्रार्थिन्।
तलबाना, स पु (फा) आकारण आह्वान-शुल्क म् २ साक्ष्यशुल्क कम्।
तलबी, स स्त्री (अ) आकारण णा, आह्वानम्।
तलवा, स पु (पु तल ए) चरण पाद, तलम्।
—चाटना,
—तले हाथ रखना, } मु, दे 'खुशामद करना'।
—सहलाना,
—तलवार, स स्त्री [स तरवारि (पु)] खड्ग असि निस्त्रिंश, चन्द्रहास, कौक्षेयक, करवा(पा)ल, कृपाण णी, ऋ(रि)ष्टि (पु), श्रीगर्भ, विजय, दुरासद, धर्मपाल।
—खींचना, क्रि स, असिं कोशात् उद्धृ निष्कृष् (भ्वा प अ)।
—चलाना, क्रि स, खड्ग चल् (प्रे), असिना प्रहृ (भ्वा प अ)।
—चलानेवाला, स पु, आसिक, खड्गधर, खड्गिन्।
तला, स पु (स तल ल) अधोभाग, बुध्न २ उपानत्तलम्।
तलाक़, स पु (अ) विवाह दापत्य उच्छेद-निराकरण, त्याग।
तलाश, सं स्त्री (तु) अन्वेषण, मार्गणम्।
तलाशी, सं स्त्री (फा) देह गेह परिच्छद, अन्वेषणा निरीक्षा।
—लेना, क्रि स, देह गेह परिच्छद अन्विष् (दि प से)-निरूप् (चु)-निरीक्ष् (भ्वा आ से)।
तली, स स्त्री, दे 'तल' तथा 'तला'।
तलुआ, स पु, दे 'तलवा'।
तले, क्रि वि (स तल>) अध, अधस्तात्, नीचे (सब अर्थ)।
—ऊपर या ऊपर तले, क्रि वि, अन्योन्यस्य अध, अधस्तात्, उपरि, उपरिष्टात् वा २ अक्रम, विपर्यस्त, संकीर्ण, अव्यवस्थितम्।
तलैया, सं स्त्री (हिं ताल) क्षुद्र लघु, तडाग कासार सरस (न),
तल्प, स पु (स पु न) आस्तर, आस्तरणम् बिस्तर २ पत्नी, भार्या।
—कीट, सं पु (स) ओकण, मत्कुण, उद्दंश।
—ज, स पु (स) नियोगज पुत्र सुत, क्षेत्रज।
तल्ला, स पु (स तल लम्) उपानत्तलम्। २ दे 'मंजिल'।
तवर्ग, स पु (स) तकारादिवर्णपञ्चकम्।
तवा, स पु (हिं तवना) तप्तकम्।
तवाज़ा, स स्त्री (अ) सत्, -कार -कृति (स्त्री) क्रिया, अतिथि,-सेवा सत्कार, आतिथ्य २ निमन्त्रणम्।
तवारीख़, स स्त्री (अ, तारीख का बहु) दे. 'इतिहास'।
तवी, स स्त्री (हिं तवा) ऋचीष(जी)षम्।
तशख़ीस, सं स्त्री (अ) रोग, निर्णय निदानम्।
तशरीफ़, स स्त्री (अ) महत्त्व, गुरुत्व, प्रतिष्ठा।
—रखना, मु उपविश् (तु प अ), विराज् (भ्वा आ से)
—लाना, मु, आगम्, आया (अ प अ)।
—ले जाना, मु, प्रस्था (भ्वा. आ अ), प्रया (उक्त दोनों मुहावरों में आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग करना चाहिए। उ आप तशरीफ़ रखिए = उपविशतु श्रीमत इ)।
तश्तरी, स स्त्री (फा) शराविका, स्थालकम्।
तसकीन, सं स्त्री (अ) आश्वास,-श्वासन, धैर्यम्।
तसदीक़, स स्त्री (अ) सत्यापन, सत्याकार।
—करना, क्रि स, सत्यापयति (ना धा), प्रमाणी कृ।
तसबीह, स स्त्री (अ) जपमाला, माला।
तसमा, स पु (फा) चर्म,पट्ट बध, वध्री, नध्री २ उपानद्बध।
तसला, सं पु (फा तश्त) ऋचीषम्।
तसलीम, स स्त्री (अ) नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम २ अभ्युपगम, अंगी स्वी,-कार।

तसल्ली, स स्त्री (अ) सान्त्वना, आश्वासन २ शान्ति (स्त्री), धैर्यम्।
तसवीर, स स्त्री (अ) चित्र आलेख्यम्।
तस्कर, स पु (स) चौर २ दस्यु।
तस्सू, स पु (स त्रिशूक >) पञ्चाङ्गुल मानम्।
तह, स स्त्री (फ़ा) तल, अधस्तल अधोभाग मूल २ बुध्न, उपष्टम्भ ३ तल पृष्ठ पृष्ठभाग ४ स्तर ५ व्यावृत्ति (स्त्री) व्यावर्तन पुट २ भग ६ तत्त्व, सार।
—करना, क्रि स, पुटयति (ना धा व्यावृत् (प्रे) पुणीपुणी कृ।
—तक पहुँचना, मु, तत्त्व अवगम् रहस्य विद् (अ प से)।
तहक़ीक़ात, स स्त्री (अ तहक़ीक़ का बहु) अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा।
तहख़ाना, स पु (फ़ा) भूमिगृह गर्भगृह गुप्ति (स्त्री), आत्मीयकोष्ठ।
तहज़ीब, स स्त्री (अ) सभ्यता, शिष्टाचार।
तहमत, स स्त्री (फ़ा तहबंद) •पुरुषवस्त्र, •धौतिका।
तहरीर, स स्त्री (अ) लेख, लिखित २ लेखशैली ३ लिखितपत्र, बंध ४ प्रमाणपत्रम्।
तहलका, स पु (अ) दे 'खलबली'।
तहस-नहस, वि (देश) वि, नष्ट प्र वि, ध्वस्त।
तहसील, स स्त्री (अ) करग्रहण, राजस्वसंग्रह, समाहरण २ राजस्व, आय आगम, उदय ३ उपमण्डल ४ उपमण्डल कार्यालय।
—दार, स पु, उपमण्डलेश्वर।
—दारी, स स्त्री उपमण्डलेश्वर, कार्य पद।
नायब तहसीलदार, स पु (फ़ा + अ + फ़ा) उपमण्डलेश्वरसहायक।
तहाँ, क्रि वि (स तत्र >) तत्र तस्मिन् स्थाने, तत्स्थाने।
ताँगा, स पु, दे 'टाँगा'।
तांडव, स पु (स न) पुरुषनृत्य २ उद्धत नृत्य ३ शिवनृत्य ४ नृत्यभेद।
ताँत, स स्त्री (स तन्तु) आन्त्र-स्नायु गुण २ मौर्वी प्रत्यञ्चा, धनुर्गुण ३ सूत्र, गुण ४ वीणातन्त्री।
ताँता, स पु [स तति (स्त्री)] पंक्ति (स्त्री), श्रेणी (स्त्री)।
ताँती, स स्त्री (हिं ताता) आवली (स्त्री) पंक्ति (स्त्री) २ सन्तति (स्त्री)।
ताँती, स पु (हिं तांत) तन्तुवाय पं, पटकार।
तांत्रिक, स पु (स) तन्त्रशास्त्रविद् (पु), २ मोहिन् कुहकचार। वि तन्त्रसंबंधिन्।
ताँबा, स पु (स ताम्र) ताम्रक म्लेच्छमुख, रवि लोह प्रिय मुनिपित्तल लोहितायसम्।
ताम्बूल, स पु (स न) पर्णं नागवल्लीदल, दे 'पान' २ पर्णवाटिका (स्त्री) ३ पूग पूगफलम्।
ताई[1], स स्त्री (हिं ताया) ज्येष्ठपितृव्या।
ताई[2], स स्त्री दे 'तवी'।
ताईद, स स्त्री (अ) समर्थन अनुमोदन, पुष्टि (स्त्री) दृढ़ीकरण-कार उपोद्बलनम्।
ताऊ, स पु दे 'ताया'।
बछिया के ताऊ, मु बलीवर्द २ मूर्ख।
ताऊन, स पु (अ) दे 'प्लेग'।
ताऊस, स पु (अ) मयूर शिखण्डिन् २ मयूराकारो वाद्यभेद।
तख्त ताऊस स पु मयूरासन २ शाहजहाँ नस्य मयूरसिंहासनम्।
ताक[1], स पु (अ) कुड्यविवर भित्तिगर्त तैं आलय २ कुड्य, फलक ३ असम विषम, संख्या-अंक। वि अनुपम, अद्वितीय, निपुण।
—जुफ़्त, स पु (अ + फ़ा) समविषमक्रीडा, द्यूतभेद।
—पर रखना, मु, परित्यज् (भ्वा प अ) उज्झ् (तु प से)।
ताक[2], स स्त्री (हिं ताकना) अवलोकन, ध्यान दर्शनम् २ अनिमिषदृष्टि (स्त्री) ३ अवसरप्रतीक्षा ४ अन्वेषणम्।
—झाँक, स स्त्री, अवकुञ्चनावलोकन २ निभृत वीक्षण ३ निरीक्षण ४ अन्वेषणम्।
ताक़त, स स्त्री (अ) बल शक्ति, (स्त्री) १
—वर, वि (अ + फ़ा) बलवत् शक्तिमत्।
ताकना, क्रि स (स तर्क >) अनिमिष प दृश् (भ्वा प अ) अवलोक् (चु) २ निभृत (क्रि वि) दृश् (भ्वा अ से) ३ अवनिरीक्ष् ४ हतु निभृत स्था (भ्वा प अ)।

ताकि, अव्य (फ़ा) तथा यथा, यथा।
ताकीद, सं स्त्री (अ) अवन्नुरोध, दृढ़ा देश, पुन स्मारणम्।
—करना, क्रि स, सानुरोध आदिश (तु प अ) पुन दृढ स्मृ (प्रे)।
तागा, स पु (सं तागक>) तन्तु (पु), डोर, गुण, सुत्रम्।
तागड़ी, स स्त्री, दे 'करधनी'।
ताज, स पु (अ) राजमु(मु)कुट, किरीट मद्।
—पोशी, स स्त्री (अ+फ़ा) राज्याभिषेक, मुकुटपरिधापनम्।
ताज़गी, स स्त्री (फ़ा) हरितत्व २ प्रफुल्लता ३ नवीनता।
ताज़ा, वि (फ़ा) हरित, सरस, २ नव, नूतन, प्रत्यग्र ३ आनिशून्य, मग्न।
मोटा—, वि, हृष्टपुष्ट, बलिष्ठ, सबल।
ताज़ियाना, सं पु (फ़ा) अश्वताड़नी, कशा षा, प्रताद।
ताज़ी, स पु (फ़ा) अरवाश्व २ मृगया कुक्कुर, विश्वकद्रु (पु)। वि, अरबदेशीय।
ताज़ीम, स स्त्री (अ) सत्कार सम्मानना।
ताज़ीर, स स्त्री (अ) दण्ड, अर्थदंड, निग्रह।
ताज़ीराते हिंद, स स्त्री, भारतीयदण्डसंहिता।
ताज्जुब, स पु, (अ तअज्जुब) आश्चर्य विस्मय।
ताड़, स पु (सं ताल) दीर्घस्कन्ध, ध्वज द्रुम, तृणराज, महोन्नत, तृणद्रुम २ ताडन, प्रहार ३ महाशब्द ध्वनि (पु)।
ताड़का, स स्त्री (सं) राक्षसीविशेष, सुकेतुकन्या।
ताड़न, स पुं (सं न) प्रहरण, आहनन, आघात, प्रहार २ तर्जन ३ दण्ड, शासन ४ गुणनम्।
ताड़ना[1], क्रि स (सं ताडन) तड् (चु), अभिहन् (अ प अ), आहन् (अ प अ), तुद् (तु उ अ), प्रहृ (भ्वा प अ), २ दट (चु), शास् (अ प से) ३ तर्ज् निभर्त्स् (चु आ से)। स स्त्री, दे 'ताड़न' (१ ३)।
ताड़ने योग्य, वि, ताडनीय, ताडयितव्य, दण्ड्य, तर्जनीय इ।

ताड़नेवाला, स स्त्री, ताडक, दण्डयितृ, तर्जक।
ताड़ा हुआ, वि, ताडित, अभिहत, दण्डित, तर्जित।
ताड़ना[2], क्रि स (स तर्कण) तर्क् (चु), अनुमा (जु आ अ), ऊह् (भ्वा आ से)।
ताड़ी, स स्त्री (सं ताली) तालकी, ताल, रस आसव मद्य, तारिका।
तात, स पु (सं) पितृ (पु), जनक २ पूज्य, गुरु (पु) ३ (प्रायः छोटों के लिए सम्बोधन में) वत्स, प्रिय, अङ्ग।
तातार, स पु (फ़ा) दे 'तूरान'।
तातील, सं स्त्री (अ) अवकाश, अनध्याय विश्राम, दिवस।
तात्कालिक, वि (सं) तत्कालभव २ सम कालीन, यौगपदिक।
तात्त्विक, वि (सं) वास्तविक, यथार्थ, परमार्थ।
तात्पर्य, सं पु (सं न) अर्थ, आशय अभिप्राय, भाव २ तत्परता तत्परायणता।
तादात्म्य, स पु (स न) अभेद, अभिन्नता, सायुज्यम्, तद्रूपता।
तादाद, स स्त्री (अ तअदाद) संख्या, गणना।
तादृश, वि (सं) तादृश, तद्‌सदृश, तुल्य समान, तथाविध।
तान, स स्त्री (सं) गानांगविशेष, आलाप, लयविस्तार २ विस्तृति ततिः (स्त्री), विस्तार।
—पूरा, स पु (स तुम्बुरु) वीणाभेद, वीणाविशेष।
तानना, क्रि स (सं तनन) प्रवितन् (त उ से), आयम् (भ्वा प अ) दीर्घी कृ विस्तृ विस्तॄ (प्रे) स्तम्भ् (प्रे)।
तानकर, सु स्तब्ध, पूर्णतया।
तानकर सोना, मु, निश्चिन्त स्वप् (अ प अ)।
ताना[1], स पुं (हिं तानना) तन्तवम्, संव्या नादतन्तव (पुं बहु)।
—बाना, अन्वायातनिवर्तनिक (पुं बहु), तन्तवोतु (पु दि)।
ताना,[2] सं पुं (अ) व्यंग्य-वक्रोक्ति-भंगि, वचन-वाक्य-गति (स्त्री), कटाक्षप।
ताना,[3] क्रि स (सं तापन) दे 'तपाना'।
—मारना, क्रि स, व्यंग्यव्यंग्यवचन आक्षिप (तु प अ), वक्रोक्ति-कटाक्षेण उपयम (दि प स) व्याहृ (भ्वा प अ)।

तानाशाह, सं पुं (हिं+फा) एक अधिपति शासक, अधिनायक ।
तानाशाही, सं स्त्री अधिनायकत्वं एकाधिपत्यम् ।
ताप, सं पुं (सं) उ(ऊ)ष्मन्(पुं) उष्णता, उष्म, उत् परि सं, ताप, दाह २ ज्वर ३ दुःखं, कष्ट ४ वेदना, मानसक्लेश ।
—तिल्ली, सं स्त्री, प्लीहाभिवृद्धि (स्त्री) प्लीहोदरम् ।
तापना, क्रि अ (सं तापनं) पावकमूर्तानर्थ आ निसेव (भ्वा आ से)। क्रि स दे 'तपाना' ।
तापमान, सं पुं (सं न) ऊष्ममानम् ।
—यन्त्र, सं पुं (सं न) १-२ तापज्वर मापकम् ।
तापस, सं पुं (सं) दे तपस्वी' ।
ताब, सं स्त्री (फा । मि सं ताप) ऊष्म, उष्णता २ दीप्ति (स्त्री), आभा ३ सामर्थ्यं, साहसम् ।
ताबड़तोड़, क्रि वि (अनु) अनवरतं, अविश्रान्त, सततं, अनवच्छिन्नम् ।
ताबूत, सं पुं (अ) शव पेटक सपुट ।
ताबे, वि (अ) अधीन, वशवर्तिन् ।
ताबेदार, वि (अ+फा) आज्ञा, पालक कारिन् ।
तामजान, सं पुं (हिं थामना+सं यान) शिबिकाभेद ।
तामरस, सं पुं (सं न) रक्तोत्पलं, कोकनदं, २ सुवर्णं ३ ताम्रम् ।
तामस, वि (सं) तमोगुणिन्, तमोगुणयुक्त १ काल, कृष्ण ३ अज्ञ ४ दुष्ट । सं पुं, सर्प २ उलूक ३ क्रोध ४ अंधकार ।
तामसिक, वि दे 'तामस' वि ।
तामिल, सं स्त्री (देश) द्रविडजातिभेद २ भाषाविशेष ।
तामिस्र, सं पुं (सं) नरकविशेष २ कृष्ण पक्ष ३ क्रोध ४ द्वेष ।
तामील, सं स्त्री (अ) आज्ञापालनं २ निष्पत्ति सिद्धि (स्त्री)।
ताम्र, सं पुं (सं न) ताम्रकं, मुनिपित्तलम् ।
—कार, सं पुं (सं) ताम्र,-कुट्ट उपजीविन् ।
—चूड, सं पुं (सं) कुक्कुट ।
—पत्र, सं पुं (सं न) ताम्रपट्ट-ट्ठ २ ताम्रफलकम् ।
ताया, सं पुं (सं तात >) ज्येष्ठ तात, ज्येष्ठ पितृव्य पितुरग्रज ।
तार, सं पुं (सं न) रूप्य, रजतं २ तार, धातु, तन्तु (पुं)-सूत्र ३ तडित् विद्युत्, संदेश वार्ता ४ सूत्रं, गुण, तन्तु (पुं) ५ सततक्रम परंपरा ६ नक्षत्रं, तारा, ग्रह ७ सप्तकभेद (संगीत)। वि, उच्च, महत् (ध्वनि आदि) २ भासुर ३ निर्मल, स्वच्छ ।
—देना, क्रि स विद्युत्संदेशं प्रेष (प्रे)-प्रहि (स्वा प अ)।
—कश, सं पुं (हिं+फा) तारकर्षं पंक ।
—घर, सं पुं, तारगृहम् ।
—तार, वि जीर्ण, विदीर्ण ।
—बर्की, सं स्त्री, तडित् विद्युत्-तार ।
—तार करना, मु, (वस्त्रादिक) तन्तुशः विद् (प्रे)-छद् (चु)।
—टूटना, मु, क्रम परम्परा भ्रंश् (दि प से)।
—बांधना, मु, निरन्तरं विधा(जु उ अ)-कृ ।
तारक, सं पुं (सं) तार रन्ध्रा, भ, नक्षत्र २ नेत्रं ३ कनीनिका, नयनतारा ४ मोचक, मुक्तिद ५ कर्णधार ।
तारका, सं स्त्री (सं) नक्षत्र, उडु २ कनीनिका, विरिनी ३ बालिपत्नी ।
तारकेश्वर, सं पुं (सं) शिव, महेश ।
तारकोल, सं पुं (अं कोलटार दे)
तारण, सं पुं (सं न) पारनयन, उत्तारणं, संतारण २ मोचनं, उद्धारण, निस्तारणम् । सं पुं, तारक उद्धारक, भवभयमोचक २ विष्णु ।
तारतम्य, सं पुं (सं न) न्यूनाधिकता, उत्कर्षापकर्षौ २ अन्तर, भेद ।
तारना, क्रि स (हिं तरना) पार नी (भ्वा, प अ), उत्, सं, तृ (प्रे) उत्, लङ्घ् (प्रे) २ मोच (चु), निस्तृ (प्रे), उद् हृ-धृ (भ्वा प अ) (पापेभ्य, भवभयात्) मुच् (प्रे)।
तारनेवाला, सं पुं, मोक्षक, मोचक, निस्तारक, उद्धारक, मुक्तिद ।
तारपीन, सं पुं (अं टरपेंटाइन) सरल चीरपर्णं, तैलं, सरल, द्रव रस स्यन्द, शीतल, श्री-वास वेष्ट ।

तारल्य, सं पु (सं न) तरलत्व, तरलता, द्रवत्व, प्रवाहिता २ कामुकता, लंपटता, कामान्धता।

तारा, स पु (सं स्त्री) तार र, तारका उडु (पुं) नक्षत्र, ऋक्ष भ, ज्योतिस (न) २ कनीनिका बिंबिनी ३ भाग्य, नियति (स्त्री)। स स्त्री, व लिपत्नी २ बृहस्पति भार्या।

—टूटना, कि अ, नक्षत्र उल्का पत (भ्वा प से)।

—अधिप, स पु (स) चंद्र २ बालि (पु)।

—मंडल, स पु (स न) उडु स नक्षत्र, गण ।

—होना, मु नभ चुंब (भ्वा प से), गगन स्पृश (तु प अ)।

तारीक, वि (फा) काल, कृष्ण २ मलिनित, निष्प्रभ।

तारीकी, स स्त्री (फा) कृष्णता २ अंधकार, तिमिरम्।

तारीख, स स्त्री (फा) तिथि (पु स्त्री), दिवस २ नियततिथि ।

तारीफ, सं स्त्री (अ) लक्षण परिभाषा २ स्तुति नुति (स्त्री) ३ वर्णनं ४ गुण, विशिष्टता।

तारुण्य, स पुं (सं न) यौवनं, कौमारम्।

तारेश, स पु (स) विधु, सुधांशु, चन्द्र ।

तार्किक, स पु (सं) तर्कशास्त्रविद् (पु) २ तत्त्वज्ञ, दार्शनिक ।

तार्क्ष्य, स पुं (सं) गरुड, वैनतेय, विष्णु रथ २ अरुण ३ अश्व ४ सर्प ५ खग ।

ताल[1], सं पु (सं तल) दे तालाब'। २ करतल न, प्रहस्त ३ ताली, करतलध्वनि (पु), करताल लक ४ संगीते कालक्रिया, मान ५ मल्लयुद्धे करतलेन बाहुजंघाद्यास्फालन ६ दे 'झाँझ'।

ताल[2], सं पु (स) तृणराज, मधुरस आसवद्रु (पु)।

—से बेताल होना, मु, विताल (वि) भू।

तालमखाना, सं पु (हिं ताल+मखाना) कोकिलाक्ष, काकेक्षु काण्डेक्षु, इक्षुर ।

तालव्य, वि (सं) काकुद-तालु, संबंधिन्।

—वर्ण, सं पु (सं) तालूच्चार्यवर्णा । (इ ई चवर्ग, य, श)।

ताला, स पु (सं तालक) ताल, तालद्वार यंत्रम्।

—लगाना, कि स, तालकेन निरुध (रु उ अ) पिधा (जु उ अ)-बध (क्र्‌ प अ)।

तालाब, स पु (हि ताल+फा आब) तडा(डा)ग ग, कासार र, सरस (न), पुष्करिणी।

तालिका, स स्त्री (सं) दे 'ताली' २ सूची चि (स्त्री), अनुक्रमणी णिका, नामावली लि (स्त्री)।

तालिब, स पु (अ) अन्वेषक, अनुसंधातृ (पु) २ इच्छुक, अभिलाषिन् ।

—इल्म, स पु (अ) विद्यार्थिन्, छात्र ।

ताली[1], स स्त्री (स) तालिका, कुंचिका, कुंचिरा, अर्गला, उद्घाटनी, साधारणी।

ताली[2], स स्त्री (स तालिका) करताल लक, करतल, शब्द ध्वनि (पु)।

—बजाना, कि स, करताल वद् (प्रे)-दा, करतलध्वनिं जन् (प्रे)।

तालीम, स स्त्री (अ) शिक्षा विद्या।

तालीशपत्र, स पु (सं न) तालीश नील, धात्रीपत्रम्।

तालु, स पु [सं तालु (न)] काकुद, तालुकम्।

—मूल, सं पु (सं तालुमूलम्) काकुदमूलम् २ गलग्रन्थि ।

ताल्लुक, स पु (अ तअल्लुक) सम्बन्ध, संसर्ग ।

ताव, स पु (स ताप) दाह, उ(ऊ)ष्म ष्मन् (पु), उष्ण ण २ आवेग, आवेश ३ त्वरा ४ व्याकुलत्व औत्सुक्य, आकुलत्वम्।

तावान, स पु (फा) दण्ड, अर्थदण्ड, दाम, निष्कृति (स्त्री), निस्तार ।

—देना, कि स, निष्कृतिं दा, निस्तॄ (प्रे)।

तावीज़, सं पु (अ तअवीज) यंत्र, कवच, क्षार २ यंत्रसंपुट ।

ताश, स पु (अ ताश) क्रीडापत्राणि (न बहु), क्रीडापत्रावली २ पत्र, क्रीडापत्रम् ३ दे 'जरबफ्त'।

तासीर, स स्त्री (अ) गुण, प्रभाव ।

तास्सुब, स पु (अ तअस्सुब) धार्मिक जातीय, पक्षपात, २ पक्षपात ३ मतान्धता।
ताहम, अव्य (फा) दे 'तथापि'।
तिकोन, स पु (त्रिकोण) त्रिभुज, त्र्यस्रम्।
तिकोना तिना, वि (हिं तिकोन) त्रिकोण, त्र्यस्र, त्रिकोण त्रिभुज, आकार।
तिक्त, स पु (स) रसभेद। वि, तिक्त रसस्वाद, तीक्ष्ण, तीव्र।
तिखूँट, स स्त्री (हिं तीन+खूँट) दे 'तिकोन'।
—नाप, स स्त्री त्रिकोणमिति (स्त्री)।
तिखूँटा वि, दे 'तिकोना।
तिगुना, वि (स त्रिगुण) त्रिगुणित त्रिरावृत्त त्रिगुणीकृत।
—करना, क्रि स, त्रिगुणीकृ, त्रि आवृत्(प्रे)।
तिजारत, स स्त्री (अ) वाणिज्य, क्रयविक्रयौ (द्वि)।
तिजारी, स स्त्री (स त्रि+ज्वर) तृतीयक ज्वर।
तितरबितर, वि (हिं तितर+अनु) आप्रकीर्ण, क्षीण विक्षिप्त २ अव्यवस्थित, क्रमशून्य, अस्तव्यस्त।
तितली, स स्त्री (हिं तीतर अथवा स तिल) चित्रपतंग, •तित्तिरी।
तितिक्षा, स स्त्री (स) सहिष्णुता, सहन २ क्षमा, क्षान्ति (स्त्री)।
तितिक्षु, वि (स) सहनशील, सहिष्णु २ क्षान्त, क्षमाशील।
तिथि, स स्त्री (स पु स्त्री) मिति (स्त्री), मास पक्ष, दिन दिवस, चान्द्रदिवस।
तिनकना, क्रि अ, दे 'चिड़चिड़ाना'।
तिनका, स पु (सं तृण), नाल-ल, पल, पलाल-ल, किण, स्तम्ब, सेन्ट, हरित, ताडव, अर्जुनम्।
—दांतों में दबाना या लेना, मु, दे 'गिड़गिड़ाना'।
तिनके का सहारा, मु, इषत् साहाय्यम्।
तिनके को पहाड़ समझना, मु, तिले ताल पश्यति।
तिपाई, स स्त्री (स त्रिपादिका) त्रिपदिका, त्रिपदम्।
तिबारा, क्रि वि (स त्रिवार) त्रि (अव्य)।
तिब्ब, स्त्री (अ) चिकित्साविज्ञानम्, २ यवन चिकित्साशास्त्रम्।
तिब्बत, स पु (स त्रिवि (पि) ष्टप >) त्रिविष्टपम्।
तिब्बती, वि त्रैविष्टप, त्रिविष्टप-सम्बन्धि विषयक। स पु, त्रिविष्टपीय, त्रिविष्टप, वासिन्-वास्तव्य। स स्त्री त्रिविष्टपभाषा, •त्रिविष्टपी।
तिमंजिला, वि (स त्रि + अ मंजिल) त्रिभूमिक।
तिमिर, स पु (स न) अंधकार, तमस् (न)।
तिरछा, वि (स तिर्यञ्च्) अनसर्पिन्, प्रवण, तिरश्चीन, वक्र, कुटिल, २ वेषाभिमानिन्।
—देखना, क्रि अ तिर्यक्-वक्र वीक्ष् (भ्वा आ से)।
तिरछी चितवन या नज़र, मु, तिर्यग्-वक्र, दृष्टि (स्त्री) २ कटाक्ष-अपाग-नयनोपान, वीक्षण-वीक्षित, कटाक्ष, भ्रूविलास।
तिरछापन, स पु (हिं तिरछा) प्रवणता, तिरश्चीनता, वक्रता, कुटिलता।
तिरछे क्रि वि (हिं तिरछा) तिर, साचि, जिह्म (सब अव्य)।
तिरपन, वि [स त्रिपञ्चाशत् (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (५३) च।
तिरपाई, स स्त्री (स त्रिपादिका) त्रिपदिका, त्रिपदम्।
तिरपाल, स पु (अ टारपालिन) तैलुलिप्तपट।
तिरसठ, वि [स त्रिषष्टि (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (६३) च।
तिरस्कार, स पु (स) अनादर, अपमान, निकृति (स्त्री), न्यक्कार, अवज्ञा, अवमानना, तिरस्क्रिया, मानभंग २ भर्त्सना, तर्जन ३ सापमान त्याग।
तिरस्कृत, वि (स) न्यक्कृत, अनादृत, अपमानित, अवज्ञात ३ २ सापमान त्यक्त ३ आच्छादित।
तिरहुत, स पु (स तीरभुक्ति >) मिथिला प्रदेश।
तिरहुतिया, वि (हिं तिरहुत) मैथिल, मिथिला सम्बन्धिन्। स पु, मैथिल, मिथिला वासिन्। स स्त्री, मिथिलाभाषा, मैथिली।
तिरानवे, वि [स त्रिणवति (नित्य स्त्री)]। त्रयोणवति। स पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (९३) च।

तिरासी, वि [स त्र्यशीति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्त सख्या, तदकौ (८३) च।
तिराहा, स पु (स त्रि +फा राह) त्रिपथम्।
तिरिया, स स्त्री (स स्त्री) नारी, रामा।
—चरित्तर, स पु (स स्त्रीचरित्र) रामारहस्य, वामावैदग्ध्य, नारीचरितम्।
तिरोधान, स पु (स न) अदर्शन, अतर्धान, गोपन, गूहन, सवरणम्।
तिरोभाव, स पु (स) दे 'तिरोधान'।
तिरोभूत, वि (स) अदृष्ट, अतर्हित, लुप्त।
तिरोहित, वि (स) गूढ, निलीन, आच्छादित, सवृत, निभृत, गुप्त।
तिर्यंची, स स्त्री (स) तिरश्ची, पशुमृग, योषा अगना-वधू (स्त्री)।
तिर्यक्, अव्य (स) वक्र, कुटिल, तिरस्, जिह्मम्, असरलम् (सब अव्य)।
तिलंगाना, स पु (स तैलग) प्रदेशविशेष।
तिलगी, वि (स तिलगाना>) तैलग देशीय।
तिल, स पु (स) पवित्र पितृतर्पण, पूत होम, धान्य, पापघ्न, स्नेहफल। २ तिलक, कालक, जडु (डु), ल, पिप्लु (पु)। ३ क्षण प, पल ४ तारा रक, कनीनिका।
—का तेल, स पु, तिल-तैल रस-स्नेह।
—किट्ट, स पु (स न) तिल-खली चूर्णम्।
—कुट, स स्त्री, तिलकुट्टम्।
—चढ़ा, स पु, रक्तवर्णकीटभेद।
—भुग्गा, स पु, तिल्मुक्कम्।
—पपड़ी शकरी, स स्त्री, तिलपट्टी, *तिलशर्करी। तिल की ओट पहाड़, स, * बिन्दौ सिन्धु, *तिले गिरि।
तिल का ताड करना, मु, तिले ताल पश्यति।
तिल तिल, मु, अल्पाल्प, तिर्निर्लिचित।
तिल धरने की जगह न होना, मु, स्थानाभाव।
तिलभर, मु, ईषदिव, तिर्चिदिव।
तिलक, स पु (स पुं न) दे 'टीका' (१ ? ६ ८ ९ ११)।
—लगाना, क्रि. स, दे 'टीका' लगाना'।
तिलड़ा, स पुं } (स त्रि+हिं लड़) त्रिसूत्रो
तिलड़ी, स स्त्री } हार।
तिलवा, स पु (सं तिल>) *तिलमोदक।
तिलहन, (हिं तेल + धान्य) स पुं तैल स्नेह, बीज बीजक रोहि।
तिला, स पु (फा। मि स तैल) मर्दनौषधं २ लिंगलेप।
तिलाक, स पु, दे 'तलाक'।
तिलि (ल) स्म, स पु (यू टेलिस्मा) दे 'इन्द्रजाल'।
तिल्ली, स स्त्री (स तिल्क>) प्लीहन् (पु), प्लीहा, गुल्म २ दे 'तिल' १।
ताप—, स स्त्री, दे 'ताप' के नीचे।
तिवारी, स पु (स त्रिपाठी), दे 'त्रिवेदी'।
तिस, सर्व, दे, 'उस'।
तिहत्तर, वि [स त्रिसप्तति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्त सख्या, तदकौ (७३) च।
तिहरा, वि दे 'तेहरा'।
तिहराना, क्रि स (हिं तिहरा) त्रि कृ, तृतीय वार विधा (जु उ अ)।
तिहवार, स पु (स तिथिवार) पर्वन् (न), उत्सव, उद्धर्ष, उद्धव, क्षण, मह।
तिहाई, स स्त्री (स त्रिभाग>) तृतीय,-अश भाग।
तिहारा, सर्व, दे 'तुम्हारा'।
तीक्ष्ण, वि (स) नि, शात शित, तीव्र, प्र, खर, सूक्ष्म, तीक्ष्णशित, धार २ (बुद्धि) कुशाग्र, सूक्ष्म सीघ्र ग्राहिन्, सूक्ष्म, तीव्र ३ उग्र, प्रचट ४ दे 'चरपरा' ५ (शब्द) कर्णकटु, अप्रिय ६ उद्यमिन्, अतद्र, क्षिप्रकर्मन् ७ अमद्य, दु सह।
तीक्ष्णता, स स्त्री (स) तीव्रता, प्रखरता, प्रचडता इ।
तीखा, वि, दे 'तीक्ष्ण'।
तीखुर, स पु, दे 'तवाशीर'।
तीज, स स्त्री (सं तृतीया) कृष्णा शुक्ला वा तृतीया तिथि (स्त्री) २ श्रावण माद, शुक्ल तृतीया।
तीत ता, वि (सं तिक्त) दे 'तिक्त' २ कटु।
तीतर, स पु (स तित्तिर) तिति (त्ति) रि (पु) तैतिर, खाजुपोदर।
तीन, वि [सं त्रीणि (न बहु)] त्रय (पु), तिस्र (स्त्री), त्रीणि (न)। स पु, उक्त सख्या, तदक (३) च।

—तेरह करना, मु , विद्रु (प्रे), अवा-आ प्र वि कॄ (तु प से)।

—पाँच करना, मु , वन्दायते (ना धा) विवद् (भ्वा आ भ)।

न तीन में न तेरह में, मु , सामान्य, साधारण।

तीमार, स पु (फा) सेवा, परिचर्या।

—दार, स पु , रोगि-रुग्ण -सेवक -परिचारक ।

—दारी, स स्त्री , रोगि-रुग्ण-परिचर्या-सेवा।

तीय, स स्त्री दे 'स्त्री' ।

तीर[1], स पु (स न) तट नदी।

तीर[2], स पु (फा) बाण , शर , इषु (पु) सायक ।

—कश, स पु (फा) इषुधि (पु), दे 'तरकश'।

—चलाना या मारना, क्रि स , इषु प्र-मुच क्षिप् (तु प अ)।

तीरदाज़, स पु [+अन्दाज़ (फा)] इषु धनुर ,-धर , धन्विन् (पु) धानुष्क ।

तीरंदाज़ी, स स्त्री , धनुर , विद्या-वेद , शराभ्यास ।

तीर्थ, स पु (स तीर्थं) पुण्यपवित्र,-स्थान २ घट्ट ३ घट्टमार्गान्तपथ , अवतार ४ उपाध्याय गुरु (पु)५ ब्राह्मण ६ परिव्राजकोपाधि (पु)७ शास्त्र , मोक्ष ८ ईश्वर ९ जननीजनकौ १० अतिथि (पु)।

—यात्रा, स स्त्री (स)तीर्थाटनम् ।

—राज, स पु (स) प्रयाग ।

तीर्थिक, स पु (स) तीर्थपुरोहित २ तीर्थंकर ३ तीर्थयात्रिन्।

तीला, स पु (फा तीर)दे 'तिनका'।

तीली, स स्त्री (हि तीला) स्थूलतृणम् २ धत्वाद दृढसूक्ष्मतार ।

तीव्र, वि (स) अत्यधिक, अत्यन्त, अतिशय २ दे 'तीक्ष्ण (२)'। ३ सुतप्त, अत्युष्ण ४ असीम, अमित ५ कटु ६ दुःसह ७ प्रखर ८ तिक्त ९ वेगवत्, शीघ्र १० तार, उच्च (स्वर)।

तीव्रता, स स्त्री (स) अत्यधिकता, बाहुल्य, अत्युष्णता, असह्यता, प्रखरता, तिक्तता इ ।

तीस, वि [स त्रिंशत् (नित्य स्त्री)]। स पु , उक्ता संख्या, तदङ्कौ(३०) च।

—मार खाँ, मु , वीराग्रणी (पु), शूरशिरोमणि (पु)(व्यंग्य)।

तीसों दिन, मु , सदा, सर्वदा।

तीसरा, वि पु (हि तीन) तृतीय [-या (स्त्री)]। स पु , मध्यस्थ , तटस्थ ।

—पहर, स पु , तृतीयप्रहर अपराह्न , पराह्न , विकाल ।

तीसरे, क्रि वि (हि तीसरा) तृतीयस्थाने, तृतीय, तृतीयतः (अव्य)।

तीसवाँ, वि (हि तीस) त्रिंशत्तम मी, त्रिंश श शी (पु न स्त्री)।

तुंग, वि (स)दे 'ऊँचा' २ चंड, उग्र।

तुंड, स पु (स न) मुख, आस्य, वदन २ चञ्चू -ञ्चु (स्त्री)।

तुंडि, स स्त्री (स पु)दे 'तुंड' (१२)। (स स्त्री) नाभि ।

तुंद, स पु (स न) उदर, तुन्दि (न), तुन्दि (स्त्री)।

तुंबा, स पु (स) अलाबु (पु स्त्री) -बू (स्त्री)२ अलाबु (न), अलाबुपात्रम्।

तुंबिया, स स्त्री (सं तुंबिका >) क्षुद्रालाबु (न), क्षुद्रालाबुपात्रम।

तुंबी, स स्त्री (स) तुंबि (स्त्री) अलाबु (पु स्त्री) २ दे 'तुंबा'(२)।

तुअर, स पु (स तुवरी) आढकी, दे 'अरहर'।

तुक, स स्त्री (हि टूक) अन्त्यानुप्रास , अक्षरमैत्री २ पद्यांश ३ पादान्तवर्ण ।

बेतुकी, वि , असम्बद्ध, असंगत।

—जोड़ना, मु , तुच्छकविता कृ अथवा रच् (चु)।

तुख्म, स पु (अ) दे 'बीज'।

तुच्छ, वि (स) नीच, हीन, अधम, क्षुद्र, दीन, निकृष्ट २ असार, व्यर्थक, अनर्थक।

तुड़वाना, तुड़ाना, क्रि प्रे , व 'तोड़ना' के प्रे रूप।

तुतला (ला)ना, क्रि अ (अनु) अस्पष्ट शिशुवत् भाष (भ्वा आ से)।

तुपक, स स्त्री (तु तोप) लघुनलिका २ नालास्त्रम्।

तुफंग, स स्त्री (तु तोप)वायव्य नालास्त्रम्।

तुम, सर्व (स त्वम्) त्वं (एक), यूयं (बहु) ('तुम को' आदि के लिए 'युष्मद्' की द्वितीया आदि के रूप बनेंगे)।

तुमड़ी, स स्त्री (स तुम्बी>) शुष्कवर्तुलालाबु (पु स्त्री) २ दे 'तुंबा'(२)।

तुमाई, स स्त्री (हिं तुमाना) कार्पासादि प्रसाधनभृति (स्त्री)।

तुमाना, क्रि प्रे, ब 'तूमना' के प्रे रूप।

तुमुल, वि (स) घोररव कलकल-कोलाहल मय-पूर्ण-युत। स पु (स पु न) भीषण-घोर-युद्ध-संग्राम २ कोलाहल, कलकल।

तुम्हारा, सर्व (हिं तुम) युष्माकं तव (त्रिलिंग) युष्मदीय, त्वदीय, तावक, यौष्माक कीण।

तुम्हीं, सर्व० (हिं तुम + ही) त्वमेव युवामेव, यूयमेव।

तुम्हें, सर्व (हिं तुम) (कर्म) त्वाम् त्वा युवाम्, वाम् युष्मान् व (सम्प्रदान) तुभ्य, ते, युवाभ्या, वा, युष्मभ्यम्, व।

तुरंग, **तुरंगम**, स पु (स) अश्व, घोटक।

तुरत, क्रि वि (स) झटिति, आशु, सद्य सपदि, तत्क्षणे।

तुरई, स स्त्री (स तूर>) मृदङ्गी, राज, कोशातकी, जालिनी, कृतवेधना, सुपीत पुष्पा राजिमत्फला (घिया तुरई, देखो 'नेनुआ')।

तुरक, स पु (स तुरुष्क) तुरुष्क २ यवन ३ सैनिक ४५ टर्की तुरुस्तान,-वासिन्।

तुरकी, वि (हिं तुरक) तुरुष्कदेशीय २ तुरुष्कभाषा।

तुरग, स पु (स) अश्व, वाजिन् (पु)।

तुरत, क्रि वि, दे 'तुरत'।

तुरही, **तुरी**, स स्त्री (स तूर) तूर्य-र्यं काहल-ला, शृङ्गवाद्यम्।

तुरीय, वि (स) तुर्य, चतुर्थ।

—अवस्था, स स्त्री (स) निःश्रेयस, मुक्ति (स्त्री)।

तुरुष्क, स पु (स) दे 'तुरक'।

तुर्य, वि दे 'तुरीय'।

तुर्रा, स पु (अ) उष्णीष आलम्ब शेखर २ चूडा। मौलि (पु), शिखा, शेखर ३ अलक, चूर्णकुन्तल, भ्रमरक, कुरल। ४ वि, विचित्र, अद्भुत।

तुर्श, वि (फा) दे 'खट्टा'।

तुलना[1], स स्त्री (स) उपमा, समता, साम्य सादृश्य २ तारतम्य, न्यूनाधिकता।

तुलना[2], क्रि अ (हिं तोलना) तुल्-तुल् (कर्म, तोल्यते, तुल्यते), तुलया मा (कर्म मीयते)।

किसी काम पर तुला हुआ, मु, कार्यविशेष कर्तुं उद्यत कृतनिश्चय विहितसंकल्प।

तुलनात्मक, वि (स) तुलनायुक्त, अन्यापेक्षक, अन्यसापेक्ष, सापेक्ष, साम्यवैषम्य, सूचक दर्शक।

तुलवाना, क्रि प्रे, ब 'तोलना' के प्रे रूप।

तुलसी, स स्त्री (स) सुभगा, पावनी, भूतघ्नी, विष्णुवल्लभा, वृन्दा, पुण्या, वैष्णवी।

—दल, स पु (स न) वृंदापत्रम्।

—दास, स पु (स) भक्तविशेष, रामचरितमानसादिरचयितृ (पु)।

तुला, स स्त्री (स) दे 'तकड़ी' २ तुलना, सादृश्य ३ राशिविशेष (ज्यो)।

—दान, स पु (सं न) देहभारसम सुवर्णादिदानम्। वि, तोलित, तुलित।

तुल्य, वि (स) समभार, तोल भार परिमाण २ सम, समान, सदृश, सदृक्ष।

तुल्यता, स स्त्री (स) सम, तोलता परिमाणता २ सादृश्य, साम्य, समत्वम्।

तुष, स पु (स) तुस, बुस, कडंगर, धान्यत्वच् (स्त्री)।

तुषानल, स पु (स) कुकूल, तुषाग्नि (पु)।

तुषार, स पु (स) तुहिन, हिम, प्रालेय, म(मि)हिका, अवश्याय, नीहार। वि, हिम तुषार, तुषार हिम,-वत्।

तुष्ट, वि (स) तृप्त, तर्पित, पूर्णकाम २ प्रसन्न, मुदित।

तुष्टि, सं स्त्री (सं) तुष्टता, तृप्ति (स्त्री), संतोष २ हर्ष, प्रसन्नता।

तुहमत, सं स्त्री, दे 'तोहमत'।

तुहिन, सं पु (स न) दे 'तुषार' २ चंद्रिका, कौमुदी ३ शीतलता, हिमता।

तूँबा, सं पु दे 'तुंबा'।

तूँबी, सं स्त्री, दे 'तुंबी'।

तू, सर्व (सं त्व)।

—तड़ाक, **—तुकार** या **—तू-तू मैं मैं करना**, मु, अशिष्टभाषया कलहायते (ना धा)।

तूणधि, सं पु (सं)
तूणी, सं स्त्री (स)
तूणीर, सं पु (सं पु न)
} दे 'तरकश'।

तूत, सं पु (फ़ा । मि स तूद) ब्रह्म,-काष्ठ दारु (न), सुरूपं, सुपुष्पम् ।

तूतिया, स पु, दे 'नीलाथोथा' ।

तूती, स स्त्री (फ़ा) शुकभेद २ कनेरी चटका ३ चम्काभेद ४ मुखवाद्यो वाद्यभेद, दे 'तुरही' ।

—बोलना, मु, प्र भू, अधिष्ठा (भ्वा प अ) ।

नक्कारखाने मे—की आवाज, मु, अरण्येरुदितम् ।

तूदा, स पु (फ़ा) चय, राशि (पु) २ सीमाचिह्नम् ।

तून, स पु (स तुन्न) नदीवृक्ष, तूणि (णी) क ।

तूफान, स पु (अ) झञ्झावात अति चण्ड महा,-वात, वात्या, प्रभञ्जन प्रकम्पन २ तोय-जल,-ओघ वृद्धि (स्त्री)-उपप्लव विप्लव प्रलय, सम्प्लव ३ उपद्रव, सक्षोभ विप्लव ४ आपद्-आपत्ति (स्त्री) ५ दे 'तोहमत' ।

—उठाना या मचाना, मु, तुमुल कृ, सक्षोभ उत्पद् (प्रे) ।

तूफानी, वि (फ़ा) उपद्रविन्, कलहोत्पादक १ उग्र, प्रचण्ड ३ पिशुन, अभ्यसूयक ।

तूमड़ी, स स्त्री (हिं तूंबा) दे 'तुंबी' २ तुम्बोनिर्मित आहितुण्डिकाना वाद्यभेद ।

तूमना, क्रि स. (स स्तोम >) ऊर्णा तूल मथ्नन (अ प वे, चु) घृष् (भ्वा प मे)- विश्लिष् (प्रे) ।

तूरान, स पु (फ़ा) तातार–तूरान,–देश ।

तूरानी, वि (फ़ा) तातार-तूरान,-देशीय सम्बन्धिन् । स पु, तातार-तूरान-वासिन् (पु) ।

तूल[1], स पु (स पु न) दे 'रुई' २ दे 'तूत' ।

तूल,[2] स पु (अ) दे 'लबाई' ।

तूलिका, स स्त्री (स) इ(ई) षीका, तुलि (स्त्री), तूली, ईषिका ।

तूली, स स्त्री (स) दे 'तूलिका' २ नाली ३ वर्ति (स्त्री) ।

तृण, स पु (स न.) दे 'तिनका' ।

तृणवत्, वि (स) तृण,-तुल्य-सम, तुच्छ, क्षुद्र २ अग्राह्य, त्याज्य ।

तृतीय, वि (स) दे 'तीसरा' ।

तृप्त, वि (स) तुष्ट, पूर्णकाम २ प्रहृष्ट, प्रमुदित ।

तृप्ति, स स्त्री (स) सतोष, सौहित्य, तर्पण, प्रीणनम् २ आनद, हर्ष ।

तृषा, स स्त्री (स) पिपासा, तृष्णा, उदन्या २ लोभ ३ इच्छा ।

तृषित, वि (स.) पिपासित, तर्षित सतृष २ इच्छुक ३ लुब्ध ।

तृष्णा, स स्त्री (स) दे 'तृषा' (१ २) ।

तेँ, प्रत्य [स तस (प्रत्य)] दे 'से' ।

तेँतालीस, वि [स त्रिचत्वारिंशत(नित्य स्त्री)] त्रयश्चत्वारिंशत् । स पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (४३) च ।

तेँतालीसवाँ, वि (हिं तेँतालीस) त्रि (त्रयश्च) चत्वारिंशत्तम सी म, त्रि (त्रयश्च) चत्वारिंश शी श (पु स्त्री न) ।

तेँतीस, वि [त्रयस्त्रिंशत् (नित्य स्त्री)] । स पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (३३) च ।

तेँतीसवाँ, वि (हिं तेँतीस) त्रयस्त्रिंशत्तम सी-म, त्रयस्त्रिंश शी श (पु स्त्री न) ।

तेँदुआ, स पु (देश) चित्रक चित्रकव्याघ्र, भेद ।

तेँदू, स पु (स तिंदुक) कालस्कंध, तिंदुक २ तिंदुल, तिंदुकफलम् ।

ते, सर्व (स पु तद् का बहु) दे 'वे' ।

तेईस, वि [स त्रयोविंशति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (२३) च ।

तेईसवाँ, वि (हिं तेईस) त्रयोविंशतितम मी म त्रयोविंश शी श (पु स्त्री न) ।

तेग, स स्त्री (फ़ा) दे 'तलवार' ।

तेज, स पु [स तेजस् (न)] कांति -दीप्ति (स्त्री), आभा, प्रभा २ पराक्रम, वीर्य, बल ३ प्रताप, अनुभाव, अभिख्या ४ ताप ऊष्मन् (पु) ५ उग्रता, प्रचण्डता ६ अग्नि (पु) ।

तेज, वि (फ़ा) दे 'तीक्ष्ण' (१) २ आशु शीघ्रगामिन्, जवन, महावेग ३ क्षिप्र,-कर्मन् कारिन् ४ दे 'चरपरा ५ उग्र प्रचण्ड ६ महार्घ-घं, बहु-महा,-मूल्य ७ कुशाग्रबुद्धि ८ अतिचचल ९ (विषादि) घोर, घातक ।

तेजपत्र, स पु (म न.) पत्र पत्रम्, गध जातम्।
तेजपात, स पु, दे 'तेजपत्र'।
तेजबल, स पु (सं तेजोवती) तेजनी, तेजवती।
तेजस्वी, वि (स विन्) तेजोवत्, तेजस्वत् ओजस्विन्, वर्चस्विन्, सुप्रभ, कान्तिमत् २ प्रतापिन् प्रतापवत् ३ वीर्यवत् बलवत्।
तेज़ाब, स पु (फ़ा) अम्ल, द्रावकम्।
तेज़ी स स्त्री (फ़ा), निशितत्व, तीक्ष्णधारता, प्रखरता २ उग्रता, चण्डता ३ शीघ्रता, त्वरा ४ महार्घत्व, बहुमूल्यत्व इ।
तेता, वि, दे 'उतना'।
तेरस, स स्त्री (स त्रयोदशी) शुक्लकृष्ण पक्षयो त्रयोदशी तिथि (स्त्री)।
तेरह, वि (स त्रयोदश)। स पु, उक्ता सख्या, तदकौ (१३) च।
तेरहवाँ, वि (हिं तेरह) त्रयोदश शी श (पु स्त्री न)।
तेरा, सर्व (स तव) तावक, [-की (स्त्री)], तावकी-, त्वत्, त्वदीय, तव।
तेल, स पु (स तैल) स्नेह, म्रक्षण, अभ्यञ्जनम्।
—मलना या लगाना, क्रि स, तैलेन अञ्ज् (र प से)-दिह (अ उ अ)-लिप (तु प अ)।
—निकालना, क्रि स, स्नेह निष्कृष् (भ्वा प अ)।
—चढ़ाना, मु, विवाहात्प्राक् वरवध्वो तैला भ्यञ्जनम्।
जलती पर—डालना, मु, कलह वृध (प्रे)।
तेलगू, स स्त्री (स तैलग >) तैलगप्रान्त आन्ध्रप्रान्त, भाषा, तैलगू (स्त्री)।
तेलहन, सं स्त्री, दे 'तिलहन'।
तेलिन, स स्त्री (हिं तेली) तैलिनी तैलिकी, तैल, करी-कारिणी, चाक्रिणी।
तेलिया, वि (हि तेल) तैल, [गण कृष्ण भासुर। स पु, कृष्ण, रग रग-वर्ण। २ कृष्णाश्व ३ वत्सनाभ, गरल (विषभेद)।
तेली, स पु (स तैलिन्) तैलकार तैलिक, चाक्रिक, धूसर।
तेवर, स पु (हि तेह=क्रोध) सकोप सक्रोध, दृष्टि (स्त्री) २ भ्रू (स्त्री), भ्रूलता।
—बदलना, मु, भ्रूभग कृ, भ्रुकुटिं बध् (क्र प अ)-रच् (चु)।
तेवरी ठी, स स्त्री, 'त्योरी'।
तेव(त्यो)हार, स पु, दे 'तिहवार'।
तेहरा, वि (हिं तीन) त्रि गुण गुणित, त्रिरावृत्त, त्रिरावर्तित।
तैयार, वि (फा) (मनुष्य) उद्यत, उद्युक्त, सज्ज सिद्ध, सनद्ध २ (वस्तु) सज्जी, कृत भूत, आयोजित, उपस्थित, उप-,क्लृप्त-कल्पित, सज्ज, सिद्ध ३ पीन, हृष्टपुष्ट।
—करना, क्रि स, सज्जीकृ, सनह् (प्रे), उप परि-क्लृप (प्रे), उपस्था (प्रे)।
—होना, क्रि अ, सज्जीभू, सनह् (दि उ अ) उद्यत-सनद्ध (वि) भू।
तैयारी, स स्त्री (फा तैयार) सज्जता, सनद्धता, उद्यतता २ सिद्धि उपस्थिति (स्त्री) ३ आडम्बर, श्री, शोभा।
तैरना, क्रि स (स तरण) पार गम (भ्वा प अ), स, तॄ (भ्वा प से, द्वितीया के साथ)। क्रि अ, तॄ, प्लु (भ्वा आ अ)।
तैराक, स पु (हिं तैरना) तारक, तरितृ, तरण प्लवन,-कृत (पु)।
तैराकी, स पु (हिं तैराक) तर, तरण, प्लव, प्लवनम्।
तैल, स पु (स न) दे 'तेल'।
तैश, स पु (अ) कोप, क्रोध।
तैसा, वि (स तादृश) दे 'वैसा'।
तोंद, स स्त्री (स तुन्द) पिचिण्ड, लम्बोदरम्।
—निकलना, स पु, तुन्दप्रसार, तुन्दिमता, तुन्दिलता।
तोंद(दे)ल, वि (हिं तोंद) तुन्दिन, तुन्दित, तुन्दिभ तुन्दिल, तुन्दिन, पिचिण्डिल, लम्बोदर।
तोंदी, स स्त्री [स तुण्डि (स्त्री)] तुन्द-दी, दे 'नाभि'।
तो, तौ, अव्य (स तद् >) तस्या दशाया-स्थिती (सप्तमी), तर्हि, तदा, तदानीम्।
—भी, अव्य, दे 'तथापि'।
तोड़ना, क्रि स (सं त्रोटन) त्रुट् (प्रे) खण्ड् (चु), भञ्ज् (र प अ) २ भिद्,छिद् (र प अ), दृ दॄ (क्र प से) ३ अवमन्,नि (स्वा उ अ), आदा (जु आ अ), ग्रह् (क्र प स) ४ नश् ध्वस (प्रे) ५ स्वपक्ष सह् (प्रे) स्वपक्षपातिन विधा (जु उ अ)

६ नाशयानि परिवृत (प्रे) भञ्ज (प्रे)। स पु, त्रोटन, भञ्जन, भेदन, अवभञ्जन, नाश, ध्वंस इ।

तोड़नेवाला, स पु, त्रोटक, भञ्जक, भेदक, अवचायक, नाशक इ।

टूटा हुआ, वि, त्रुटित, भग्न, भिन्न, ध्वस्त इ।

तोड़ा, स पु (हिं तोड़ना) नाणकस्युत, कोश -कोष २ धन,-कोष ग्रन्थि (पु) ३ सुवर्णरजत,-अन्दु -अन्दू (दोनों स्त्री) ४ तट-रेखा ५ हानि (स्त्री), अपचय ६ रज्जु-खण्ड -डम्।

तोतलाना, क्रि अ, दे 'तुतलाना'।

तोता, स पु (फा) कीर, शुक, वक्र-तुण्ड चंचु (पु) किंकिरात। (स्त्री, कीरी शुकी इ)।

—चश्म, स पु (फा) विश्वासघातक, अप्रत्ययिन्, अविश्वासिन्।

—चश्मी, स स्त्री (फा) अविश्वास, अप्रत्यय।

तोते की सी आँख फेरना, मु, निमान् वृत् (भ्वा आ से)-उदास् (अ आ से)।

हाथों के तोते उड़ जाना, मु, व्याकुलीभू, मन्-व्यामुह् (दि प वे)।

तोप, स स्त्री (तु) शतघ्नी, अग्न्यस्त्र, गोपम्।

—खाना, स स्त्री (तु + फा) शतघ्नीशाला २ अग्न्यस्त्र शतघ्नी समूह।

तोपची, स पु (तु तोप) दे 'गोलन्दाज'।

तोबड़ा, स पु [फा तो (तु) बरा] अश्वभक्ष्य भस्त्रा।

तोबा, स स्त्री (अ तौब) पापान्नावृत्तिप्रतिज्ञा, पश्चात्ताप।

तोम, स पु (स स्तोम) चय, निकर, पुञ्ज, समूह।

तोमर, स पु (स पु न) भल्लसदृश प्राचीनास्त्रम् २ ३ द्वादशमात्रा-नवमात्र,-च्छन्दस (न) -वृत्तम् ४ राजपुत्रवंशविशेष।

तोय, स पु (स न) जल, पानीयम्।

—कर्म, स पु (स-मंन् न) तर्पणम् दे॰।

—क्रीडा, स स्त्री (स) जलक्रीडा।

—द, स पु (स) जलद, नीरद, अम्भोद।

—धि, निधि, स पु (स) जलधि, वारिधि, समुद्र।

तोरई, स स्त्री, दे 'तुरई'।

तोरण, स पु (स पु न) बहिर्द्वार २ वन्दनमाला ३ ग्रीवा।

तोल, स पु (स) भार गुरुत्व २ भार मान, मान, मात्र, परिमाण ३ तोलन, भार मान, मिति (स्त्री)।

तोलन, स पु (स न) तुलया भार-मान मापन २ उत्थापनम्।

तोलना, क्रि स (स तोलन) तुल् (चु), तूल (भ्वा प से), तुलया धृ (चु)। स पु, दे 'तोल'।

तोलनेवाला, स पु, तोलक, भारमापक (पु)।

तोलवाना, क्रि प्रे, व 'तोलना' के प्रे रूप।

तोला, स पु (स तोल-क) तोलक मा,-पण, षनिरतिकिपरिमाण, कोल, कर्ष, कर्षार्द्धम्।

तोशक, स स्त्री (तु) तूला, तूलिका।

तोष, स पु (स) तृप्ति-तुष्टि (स्त्री), सन्तोष २ प्रसन्नता, आनन्द।

तोहफ़ा, स पु (अ) उपहार, उपायन, उपदा, उपग्राह्यम्। वि, उत्कृष्ट, उत्तम।

तोहमत, स स्त्री (अ) मिथ्याभियोग, मृषा दोषारोप।

—लगाना, क्रि स मिथ्या दुष (प्रे दूषयति), मृषा अभियुज् (रु आ अ चु)।

तौर, स पु (अ) आचार, व्यवहार २ दशा, अवस्था ३ प्रकार विधा (समासान्त में)।

—तरीक़ा, स पु (अ) शिष्टाचार २ आचरणम्।

तौल, स पु, दे 'तोल'।

तौलना, क्रि स, दे 'तोलना'।

तौलिया, स पु (अ टावेल) मार्जनवस्त्र, वस्त्रम्।

तौहीन, स स्त्री (अ) अपमान, निरादर, अवमानना, अवज्ञा।

त्यक्त, वि (स) विसृष्ट, उज्झित, अपास्त।

त्याग, स पु (स) उत्सर्ग, मोचन, अपासन, उज्झन, दान २ विरक्ति (स्त्री), वैराग्य, सन्यास ३ दे 'तलाक'।

—पत्र, स पु (स न) उत्सर्गलेख।

त्यागना, क्रि स (स त्याग) त्यज् (भ्वा

वैक्लव्य २ स्खलित, भ्रान्ति (स्त्री) ३ संदेह मत्स्य ।

त्रेता, स पु (स) त्रेता द्वितीय, युगम् ।

त्वचा, स स्त्री (स) त्वच् (स्त्री), चर्मन् (न) छविम् (स्त्री), सत्वदनी, असृग्धरा २ वल्कल, वल्कल ल, ३ त्वगिन्द्रिय ४ (साप का) कंचुक, निर्मोक ।

त्वरा, स स्त्री (स) शीघ्रता, दे 'जल्दी'।

त्वरित, वि (स) शीघ्र, दे 'तेज'।

थ

थ, देवनागरीवर्णमालायाः सप्तदशो व्यञ्जनवर्ण थकार ।

थंभ, स पु, दे 'स्तम्भ'

थई, स स्त्री (स स्थान) स्थल २ राशि (पु), चय ।

थकना, क्रि अ (स्थग >) परि श्रम् (दि प से), क्लम् (भ्वा दि प से) आयस् (भ्वा दि प से) २ निषद् (दि आ अ)।

थकान, स स्त्री (हिं थकना) आयाम, क्लम, खेद, श्रम, क्लान्ति (स्त्री), शैथिल्यम् ।

थकाना, क्रि स, व 'थकना' के प्रे रूप ।

थकामाँदा, वि, परि, श्रान्त, क्लान्त, खिन्न, म्लान ।

थकावट, स स्त्री, दे 'थकान'।

थकित, वि, दे 'थकामाँदा'।

थड़ा, स पु (स स्थल) वेदिका, वितर्दी र्दि (स्त्री) २ आपणिकासन, पण्यासीन पीठ ठम् ।

थन, स पु (स स्तन) कुच, पयोधर ।

थनेली, स स्त्री (हिं थन) स्तन-कुच, गण्ड पिण्ड ।

थपकना, क्रि स (अनु थपथप) करतलेन परमृशस्पृश् (तु प अ), स्नेहन आहन् (अ प अ) लघु प्रह (भ्वा प अ) तड (चु)।

थपकी, स स्त्री (हिं थपकना) करतल परामर्श, मृदुस्पर्श प्रेम, आघात प्रहार चपेट ।

थपड़ी, स स्त्री (तानु०) दे० 'ताली'।

थपेड़ा, स पु (अनु थप) तरंग-कल्लोल ऊर्मि वीची संघट्ट संघर्ष अभिघात २ दे 'थप्पड़'।

थप्पड़, स पु (अनु थप) चपेटिका, तल चपट,-आघात प्रहार ।

—मारना, क्रि स, चपेट दा, चपेटिका तड् (चु) प्रह (भ्वा प अ) आहन् (अ प अ)।

थम, स पु दे 'स्तम्भ'।

थमना, क्रि अ (स स्तभन) विरम् (भ्वा प अ), उपरम् (दि प से), रुद्धगति (वि) भू २ विश्रम्, (दि प से), निवृत् (भ्वा आ से)। स पु, उपरम, शम, विराम विरति (स्त्री) २ निवृत्ति विश्रान्ति (स्त्री), विच्छेद ।

थरथराना, क्रि अ (अनु) (भयेन) कम्प् वेप (भ्वा आ से) २ स्फुर (तु प से), स्पन्द् (भ्वा आ से)।

थरथराहट, थरथरी, } स स्त्री (हिं थरथराना) वेपन, वेपथु (पु), प्र, कम्प स्पन्द २ स्फुरण, स्पन्दनम् ।

थर्मामीटर, स पु (अ) दे 'तापमानयन्त्र'।

थर्राना, क्रि अ (अनु) दे 'थरथराना'।

थल, स पु, दे 'स्थल'।

थलथलाना, क्रि अ (अनु थलथल>) अभीक्ष्ण विचल् (भ्वा प से), थलथलायते (ना धा)।

थवई, स पु (स स्थपति) पलगण्ड, सुधा जीविन्, लेपक, गृह-कारक-सवेशक ।

थाइरायडग्लेंड, स पु (अं) चुबिकाग्रन्थि ।

थाक, स पु (स स्था>) ग्रामसीमा २ राशि (पु), चय ।

थाती, स स्त्री (स स्थात्>) दे 'अमानत' २ दे 'पूंजी'।

थान, स पु (स स्थान) स्थल, प्रदेश २ आलय, गृह ३ देवालय, मन्दिर ४ पशु, शाला स्थान ५ (वस्त्रादीना) *आवर्त ।

थानक, स पु (स स्थानकम्) स्थान, स्थलम् २ नगरम् ३ फेन ४ आलवालम् ।

थाना, स पु (स स्थान>) गुल्म, रक्षा रक्षि, स्थानम् ।

थानेदार, स पु (हिं+फा) रक्षास्थानाध्यक्ष, *गुल्मनिरीक्षक, रक्षोपदर्शक ।

थाप, स स्त्री (स स्थापन>) मृदङ्गादितलाघात ध्वनि (पु) २ चपेट तिमा ३ अङ्क, चिह्न ४ प्रतिष्ठा, सम्मान ५ शपथ ६ मृदु मृदु प्रहार आघात ७ स्थिति (स्त्री)।

थापना, क्रि स (स स्थापन) स्था (प्रे स्थापयति), आ नि धा (जु उ अ), न्यस (दि प से), अवरुह निविश (प्रे) कृ। स स्त्री, स्थापना, आ नि, धान, न्यसना, रोपण, २ मूर्त्यादीनां स्थापना प्रतिष्ठापना।

थापा, स पु (हि थापना) करतल, पञ्चाङ्गुली चिह्न।

थापी, स स्त्री (हि थापना) १ २ मृत्तिका कुट्टिम,गात्रानुसार ३ दे 'थपकी'।

थाम, स स्त्री (हि थामना) आ अव, लम्बनम्, धरणं,ग्रहणम्,आलम्बनम् २ आधार, आलम्ब, अवलम्ब, आश्रय।

थामना, क्रि स (सं स्तम्भन) अव उप-ष्टम्भ संस्तम्भ (क्र प से या प्रे), अवलम्ब आलम्ब दा, अव आलम्ब (भ्वा आ से) २ अव,स्था (प्रे), नि,रुध, रुध (रु उ अ), विरम् (प्रे) ३ साहाय्य दा ४ निग्रह।

थाल, स पु (स स्थाल) धातुमयभाजनभेद।

थाला, स पु (हि थाल) आ (ल) वाल, आवाप, अवाप।

थाली, स स्त्री (हि थाल) स्थालक, लघु स्थालम्।

थाह, स स्त्री (स स्था>) (नद्यादीनां) तल अधोभाग २ माप ३ गाम्भीर्यानुमान ४ अन्त, सीमा।

—लेना, क्रि स (तत्-त्व) परीक्ष् (भ्वा आ से) निरूप (चु) मा (जु आ अ)।

थियेटर, स पु (अ) नाट्यशाला,नाट्यक, नाट्य-गृह मन्दिर भूमि (स्त्री)।

थिगली, स स्त्री (हि थिगली) पट,खण्ड शकल।

बादल में—लगाना, मु, असम्भव निर्दिशति (सत्यार्थं)।

थियोसोफी, स स्त्री (अ) ब्रह्मविद्या २ सम्प्रदायविशेष।

थिर, वि, दे 'स्थिर'।

थिरकना, क्रि स (अनु थिर) नृत्य चलो निरन्तरं कंपन्देर (भ्वा आ से)।

थिरता, स स्त्री, दे 'स्थिरता'।

थुड़ी, स स्त्री (अनु) धिक्, शान्तम्, अवज्ञा-घृणा-लज्जा अवहेला, शब्द।

—थुड़ी करना, मु०, अवज्ञा (क्र्या प से), दे 'धिक्करना'।

—थुड़ी होना, मु० व० 'धिक्कारना' के कर्म० के रूप।

थुथनी, स स्त्री, दे 'थूथनी'।

थूक, स स्त्री (हि थूकना) मुखस्राव, लाला, ष्ठीवन, नि,ष्ठ्यूतम्।

—की पिचकारी, स स्त्री, लालाग्रन्थि (पु)।

—कर चाटना, मु, प्रतिज्ञा भञ्ज् (रु प अ), वचन व्यतिक्रम् (भ्वा प से)।

थूकना, क्रि स (अनु थू) नि,ष्ठिव (भ्वा दि प से, ष्ठीवति, ष्ठीव्यति), लाला नि सृ (प्रे), स पु,नि,ष्ठाव-वन, निष्ठ्यूति (स्त्री)।

थूथनी, स स्त्री (देश थूथन) प्रलम्बमुख, लम्बास्यम्।

थूनी, स स्त्री (स स्थूणा) स्थाणु (पु), स्तम्भ, अवष्टम्भ।

थूहर, स पु (स स्थूणा>) नेत्रारि (पु), निस्त्रिंशपत्रिका, स्नुही-ही (स्त्री), वज्रिन, वज्र,द्रुम-कण्टक, सिंहतुण्ड, मातुण्ड।

थेवा, स पु (देश) दे 'नगीना'।

थैला, स पु (स स्थल>)प्रसेव-, स्थूल-न, पुट-ट, स्यूत न, बीनकट।

थैली, स स्त्री (हि थैला) प्रसेवक, स्यू(स्यो)तक, पुटक।

थोक, स पु (स स्तवक) राशि (पुं), चय २ सम, ग्रस।

—फिरोश,-दार, स पु (हि +फा) चय स्यूत,विक्रयिन्।

थोड़ा, वि (स स्तोक) न्यून, अल्प, स्तोक, अणुक-अल्प-क्षुद्र-लघु, परिमाण-मात्र, इषत्।

—करना, क्रि स, न्यूनयति (ना धा) अल्पा न्यूनी कृ, क्षम् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, अल्पी-न्यूनी भू, भू, क्रि अपचि (कर्म)। क्रि वि, स्तोक, मनाक, ईषत्, मन्द, किञ्चित्।

—थोड़ा, क्रि,वि, अल्पश, अल्पाल्पं, स्तोकश।

—बहुत, वि, न्यूनाधिक।

—सा, क्रि वि, दे 'थोड़ा' क्रि वि।

थोड़े से, वि, अनिश्चित, कतिपया, स्तोका ।
थोथा, वि (देश) रिक्त शून्य, मर्म मध्य-उदर, सुषिर २ कुंठित, अनिशित ३ निःसार, निर्गुण ४ निरर्थक, निष्प्रयोजन ।
थोपना, क्रि स (स स्थापन) अनु प्र वि लिप् (तु प अ), दिह् (अ उ अ) २ राशी पिंडी कृ, समाक्षिप् (तु प अ) ३ दुष् (प्रे), दोष आरुह् (प्रे आरोपयति) क्षिप् ।

द

द, देवनागरीवर्णमालाया अष्टादशो व्यंजनवर्ण, दकार ।
दंग, वि (फा) चकित, विस्मित, स्तब्ध ।
दंगई, वि (हिं दंगा) उपद्रविन, कलहप्रिय २ उग्र प्रचंड ।
दंगल, स पु (फा) मल्लबाहु हस्ताहस्ति, युद्ध मल्लक्रीडा २ मल्ल भू भूमि (दोनों स्त्री) ३ जनौघ, लोकसमूह ।
दंगा, स पु (फा दंगल) कलह, उपद्रव २ कल्कल, कोलाहल ।
दंड, स पु (स) दे 'डंड' ।
दंडधर, स पु (स) यमराज, दंडपाणि २ नृप, शासक ३ परिव्राजक, सन्न्यासिन् ।
दंडनीय, वि (स) दंड्य, दंडयितव्य, दमनीय ।
दंडवत्, स पु स्त्री (स अव्य) साष्टांग, प्रणाम नमस्कार ।
दंडी, स पु (स डिन्) दंडधर परिव्राजक २ यम ३ नृप ४ दौवारिक ५ दंडधारी मनुष्य ६ संस्कृतकविविशेष ।
दंत, स पु (स) दशन, रद, रदन, दे 'दाँत' ।
—कथा, स स्त्री (स) लोकपारंपरीय-कथा, पारंपर्य, लोक जन, श्रुति (स्त्री) ।
—च्छद, स पु (स) ओष्ठ, रदनच्छद ।
—धावन, स पु (स न) दंत-काष्ठ मार्जनम् ।
दंती,[1] स स्त्री (स) एरंडपत्रिका, रेचनी, विशोधनी ।
दंती,[2] स पु (स निन्) गज, द्विप ।
दँतुला, वि (स दंतुल) दंतुर, दंतुरित, उन्नतदंत ।
दंतोष्ठ्य, वि (स) दन्तौष्ठैरुच्चार्यवर्ण (उ, व) ।
दंत्य, वि (स) रदनविषयक २ दंतोच्चार्य (तवर्गादि) ।
दंदनाना, क्रि अ (अनु) दनदनायते (ना धा), रम् (भ्वा आ अ), नद् (भ्वा प से) ।
दंदान, स पु (फा) दन्त, दशन, रदन ।
—साज़, स पु, दन्तकार, दन्तचिकित्सक ।
दंदाना, स पु (फा) दंत, छेद ।
दंदानेदार, वि (फा) दंतुर, दंतुरित, अनुक्रकच ।
दंपती-ति, स पु (स दंपती पु द्वि) जाया भार्या, पती (पु द्वि) ।
दंभ, स पु (स) कपट ट, कापट्य, आर्य रूपता, लिंगवृत्ति (स्त्री), आडंबर, वक्रव्रत, धर्मोपधा दांभिकता, छाद्मिकता २ अभिमान, दर्प ।
दंभी, वि (स भिन्) कपटिन्, कापटिक छाद्मिक दांभिक [-की (स्त्री)], कपट, छद्म २ अभिमानिन्, साडंबर ।
दंभोलि, स पु (स) इन्द्रवज्र जम् २ हीर रम् ।
दंश, स पु (स) दे 'डाँस'[1] २ दे 'डंक' (१ २) ३ दंत, रदन ।
दई, स पु (स दैव) ईश्वर २ अदृष्ट, भाग्यम् ।
—मारा, वि, मंद हत, भाग्य ।
दकीक़ा, स पु (अ) युक्ति (स्त्री), उपाय ।
कोई—बाकी न रखना, मु सर्वोपायान् समस्त युक्ती प्रयुज् (रु आ अ, चु) ।
दक्खिन, स पु, दे 'दक्षिण' ।
दक्ष, वि (स) कुशल, निपुण, चतुर, प्रवीण, विदग्ध, विशेषज्ञ । स पु, प्रजापति, शिव श्वशुर, सतीपितृ ।
दक्षता, स स्त्री (स) कौशल, नैपुण्य, चातुर्य, प्रावीण्य, वैदग्ध्य, पाटवम् ।
दक्षिण, वि (स) अपसव्य, सव्येतर, वामेतर २ दक्ष निपुण । स पु, दक्षिणं आशा दिशा दिश (स्त्री), दक्षिणा, वैवस्वती, यामी, अवाची २ दक्षिणापथ, दक्षिण ण ३ दक्षिण, पार्श्व -र्श्व ४ नायकभेद ।
—पूर्व, स पु, आग्नेयी, दक्षिणपूर्वा । वि, आग्नेय, दक्षिणपूर्व ।

—पश्चिम, स पु, नैर्ऋती, दक्षिणपश्चिमा। त्रि नैर्ऋत, दक्षिणपश्चिम।
दक्षिणा, स स्त्री (स) यज्ञादिविधिदान पौरोहित्यशुल्क रु २ दान, त्याग उत्स र्ग।
दक्षिणायन, स पु (स न) भानोर्दक्षिणा गति (स्त्री)।
—सूर्य, स पु (स) मकरसंक्रान्ति (स्त्री)।
दक्षिणी, वि (स दक्षिण>) द (दा) क्षिण, दाक्षिणात्य अवाचीन, अवाच्य, याम्य, अपाच्य।
दख़ल स पु (अ) अधिकार, स्वामित्व २ हस्तक्षेप परकार्यचर्चा ३ प्रवेश, उपगम।
—देना, क्रि स, परकार्याणि निरुध (तु) चर्च (चु आ से), परकर्मसु व्याप्र (तु आ अ) मध्ये पद् (भ्वा प से)।
दगना, क्रि प, ब 'दागना' के कर्म के रूप।
दगा, स स्त्री (अ) छल, कपट, वचन, प्रतारणा २ विश्वासघात।
—करना या देना, क्रि स, प्रतृ प्रलुभ् भ्रम मुह् (प्रे), वञ्च (चु)।
—दार,–बाज़, वि (अ+फा) कितव, प्रतारक वंचक शठ, विश्वासघातिन् कपटिन्, कापटिक।
—बाज़ी, स स्त्री (फा) वंचकता, कैतव २ विश्वासघातकता।
दग्ध, वि (स) ज्वलित, भस्मीभूत, भस्मसात् कृत २ दुःखित, व्यथित।
दढ़ियल, वि, दे 'मुंड़ियल'।
दतवन, दतौन, स स्त्री, दे दातुन'।
दत्त, वि (स) वितरित, विश्राणित, अर्पित।
दत्तक स पु (स) कृत्रिम पुत्र, दत्रिम सुत, दत्तकपुत्र।
दत्तचित्त, वि (स) अवहित, समाहित अभिनिविष्ट एकाग्र अनन्यवृत्ति।
ददिहाल, स पु (हिं दादा+स आलय) पितामहालय २ पितामह, कुल वंश।
दद्रु, स पु (स) दर्दू–र्द्रू, दद्रू, दद्रुरोग, मण्डलकुष्ठम्।
दधि, स पु (स न) दे, 'दही'।
—सार, स पु (स) नवद्र, मोम।
दधीचि, स पु (स) मुनिविशेष।
दनदनाना, क्रि अ (अनु) दे 'ददनाना'।
दनादन, क्रि वि (अनु) सदनदनशब्द २ अनुक्रमेण, यथाक्रमम्।
दनुज, स पु (स) असुर, राक्षस।
दफ़ती, स स्त्री (अ दफ़्तीन) दे 'गत्ता'।
दफ़न, स पु (अ) निखनन २ श्मशाने स्थापनम्।
—करना, क्रि स, श्मशाने प्रेतभूमौ निधा (जु उ अ) स्था (प्रे) निक्षिप (तु प अ) २ निखन् (भ्वा प से), निगुह् (भ्वा उ से)।
दफ़ा, स स्त्री (अ दफ़अ) दे 'बार' २ विधान, धारा। वि, अपसारित, दूरीकृत, निष्कासित, वि, चालित।
दफ़्तर, स पु (फा) कार्यालय २ वृहत्पत्र ३ सविस्तरवृत्तांत।
दफ़्तरी, स पु (फा) पत्रसंयोजक २ दे 'जिल्दसाज़'। वि, कार्यालयसंबंधिन्।
दबंग, वि (हिं दबाना) प्रभाव, बलशालिन्, अनुभाववत्, प्रतापिन्, प्रबल।
दबकना, क्रि अ (हिं दबाना) (भयेन) गुप् गुह् (कर्म), गुप्त निलीन (वि) भू निली (दि आ अ) २ परावस्कन्दनार्थं निभृत स्था (भ्वा प अ) ३ देह नम् (प्रे), नम्रीभू।
दबकाना, क्रि स ब 'दबकना' के प्रे रूप २ दे 'डाँटना'।
दबदबा, स पु (अ) आतंक प्रताप, अनुभाव, प्रभाव, तेजस् (न), प्रौढि (स्त्री)।
दबना, क्रि अ (स दमन>) [भ (भा) रेण] अवआनम् (भ्वा प अ) अथवा नम्रीवक्रीभू २ सकुच्-सपिंड्-मंह् (कर्म) ३ पीड् क्लिश् (कर्म) ४ निरुद्ध निगुह् (कर्म) ५ प्रच्छन्न गुप्त निलीन (वि) भू ६ वश इ या (अ प अ), वशीभू ७ आक्रम् निपिष् मृद् (कर्म) ८ भी (जु प अ), त्रस (दि प से)।
दबे पाँव (चलना), मु, अपरादशब्द नीरव निभृत चल् (भ्वा प से)।
दबाना, क्रि स, ब 'दबना' के प्रे रूप।
दबा लेना, मु, अन्यायेन ग्रह् (क् प से) आत्मसात्कृ।

दबाव, स पु (हिं दबाना) अभिभार, निर्बंध, पीडन २ अनुभव, प्रताप ।
दबैल, वि (हिं दबना) कातर, भीरु, समाध्वम त्रस्त ।
दबोचना, क्रि स (हिं दबाना) बलेन सहसा अभिद्रु (भ्वा प अ) आक्रम् (भ्वा प से आ अ)-ग्रह (क्र प से)-धृ (चु) । स पु सहसा ग्रहण धरण-आक्रमण इ ।
दबौनी, स स्त्री (हिं दबाना) *पत्रदमनी २ कास्यकारोपकरणभेद ।
दभ्र, वि (स) स्वल्प, स्तोक २ सूक्ष्म कृश । स पु समुद्र ।
दम, स पु (स) अन्तःसयम, इन्द्रिय-जय निग्रह, दान्ति (स्त्री), दमथ थु (पु) २ दण्ड शासन, निग्रह ३ गृह ४ कर्दम ।
दम, स पु (फ़ा), प्रश्वि, श्वास, उच्छ्वास, उच्छ्वसित २ असव प्राणा (पु बहु), जीवन, जीवित ३ फूत्कार, फूत्कृत, धूमाकर्ष ४ पर्म, क्षण त्रुटि (मे) प ५ क्वथित्र ६ अभिमान, दर्प ७ छल, कपट ८ वाष्पेण पाचनम् ।
—दिलासा, स पु, सान्त्वना, सान्त्वन, आश्वासनम् ।
—बदम, क्रि वि अनु प्रति, क्षण-पल-निमिषं, क्षणे क्षणे, पले पले ।
—चढ़ना, मु, कष्टेन-सत्वर श्वस (अ प से) कृच्छ्रेण-दीर्घं निःश्वस ।
—निकलना, मु, दे 'मरना' ।
—भर म, मु, क्षणेन, क्षण-निमेष-मात्रेण, झटिति, सद्य एव ।
—में दम आना, मु, चेतना-संज्ञा लभ (भ्वा आ अ) ।
—लगाना, मु तमाखु-धूम पा (भ्वा प अ) ।
—लेना, मु, विश्रम् (दि प से), उद्योगात् विरम् (भ्वा प अ) ।
—साधना, मु, प्राणान् रुध (रु प अ) ।
—नाक में आना, अत्यन्त तम-क्लिश्-पीड (कर्म)-खिद् (दि आ अ) ।
दमक, स स्त्री (हिं चमक का अनु) दे 'चमक' ।
दमकना, क्रि अ, दे 'चमकना' ।
दमकल, स स्त्री (हिं दम+कल) *धामयन्त्रम् २ अग्नियन्त्र (फ़ायर इंजन) ३ जलोत्तोलन यन्त्रम् ।
दमकला, स पु (हिं दमकल) *जलासेचनी ।
दमड़ी, स स्त्री (स द्रम्म >) काकिनी णी, काकिणिका बोधी पण पाद-अष्टमभाग ।
दमदमा स पु (फ़ा) मिथ्यामिध्याप्रसेवाभूति (स्त्री) (हिं मोरचा) ।
दमन, स पु (स न) अभिभव, वि, जय निरोधन नियमन, वशी-स्वायत्ती-करण, (२ ३) दे दम' (१-२) ।
दमनीय वि (स) दम्य दमयितव्य, नियमनीय -या-यम् सयमनीय -या-यम् ।
दमयंती, स स्त्री (स) भैमी, वैदर्भी, नलपत्नी ।
दमा, स पु (फ़ा) श्वासरोग, कृच्छ्रोच्छ्वास, तमक तमकश्वास ।
दमादम, क्रि वि (अनु०) मदम-दमशब्दम् २ निरन्तर, सततम् ।
दमामा, स पु (फ़ा) दे 'नक्कारा' ।
दमित, वि (स०) सयमित -ता-तम, नियमित -ता-तम्, शासित -ता-तम्, निरुद्ध -द्धा-द्धम् ।
दया, स स्त्री (सं) अनुकम्पा, अनुग्रह, कृपा, प्रसाद, करुणा, हितेच्छा ।
—निधान / **—निधि** / **—मय** } वि, परमदयालु, परमकृपालु, परमकारुणिक, स पुं, ईश्वर ।
—पात्र, वि (सं न) दयनीय, अनुकम्प्य, करुणार्ह ।
दयानतदार, वि (अ दयानत+फ़ा दार) शुचि, सरल, ऋजु शुद्धात्मन्, निष्कपट, अर्थशुचि ।
दयानतदारी, स स्त्री (अ + फ़ा) शुचिता, अर्थशौच, आर्जव, सरलता, निष्कपटता ।
दयालु, वि (सं) दयालु, दयाशील, दयार्द्र, कृपालु कारुणिक, अनुकम्पक, सदय, दयावत् ।
दयालुता, स स्त्री (स) कृपालुता दयाशीलता, दे 'दया' ।
दर[1], स स्त्री पु, दे 'निर्ख' ।
दर[2], स पु (फ़ा) द्वारं, द्वार् (स्त्री), प्रतिहार (ती) हार ।

—बदर, क्रि वि, गृहाद् गृहं, द्वारे द्वारे, अनुद्वारम् ।

—बदर फिरना, मु०, दारिद्र्येण परिभ्रम (भ्वा प से)।

दरकना, क्रि अ (स दर >) भज्‌ विद्‌ विभिद् (कर्म), स्फुट (तु प से) विदल (भ्वा प से)।

दरकाना, क्रि स, व 'दरकना' के प्रे रूप ।

दरकार, वि (फा) अपेक्षित, आकांक्षित, आवश्यक ।

दरकिनार, क्रि वि, (फा) दूरे आस्ताम पृथक् तिष्ठतु, का कथा ।

दरख्त, स पु (फा) वृक्ष, तरु ।

दरख्वास्त, स स्त्री (फा) निवेदन २ निवेदनपत्रम् ।

दरगाह, स स्त्री (फा) देहली २ न्यायालय ३ (पुण्य) समाधि (पु) ४ मंदिर, देवालय ।

दरज, स स्त्री, दे 'दरार'।

दरद, स पु, दे 'दर्द'।

दरदरा, वि (स दरण>) अर्द्धचूर्णित, सामिपिष्ट ।

दरबा, स पु (फा दर) विटंक, कपोतपालिका २ कपोतनिलयम् ।

दरबान, स पु (फा । मि स, द्वारवान्) द्वारपाल, दौवारिक ।

दरबानी, स स्त्री (फा) दौवारिकता, द्वारस्थता ।

दरबार, स पु (फा) राज‌सभा‌‌‌-कुल, आस्थान नी २ अधिकरण, न्यायधर्म‌-सभा, व्यवहारमण्डप ।

दरबारी, स पु (फा) राजसभासद् (पु), सभ्य, सचिव, राजवल्लभ, आस्थानचर ।

दरमियान, स पु तथा क्रि वि, दे 'मध्य'।

दरमियानी, वि (फा) दे 'मध्यम'।

दरयाफ्त, वि, दे 'दरियाफ्त'।

दरवाज़ा, स पु (फा) दे 'दर' २ दे 'किवाड़'।

दरवेश, स पु (फा) साधु (पु), मन्यासिन्, भिक्षु (पु)।

दरस, स (सं दर्श) दर्शन, वीक्षण २ स, आगम मिलनं ३ सौन्दर्यम् ।

दराँती, स स्त्री (स दात्रं) लवित्र, शस्य कर्तनी, गडगीकम् ।

दराज़¹, स स्त्री (अ ड्राअर) चलसम्पुट, निष्कर्षणी ।

दराज़, वि (फा) दीर्घ, लम्ब ।

दरार, स स्त्री (स दर र) छेद, भेद, स्फोट, भिदा, भग ।

दरिंदा, स पु (फा) श्वापद, हिंस्र पशुक पिशिताश, पशु (पुं)-जीव ।

दरिद्र द्री, वि (स दरिद्र) अधन, निर्धन अकिंचन, निःस्व, अर्थधनद्रव्य विभव, हीन, दीन, दुर्गत ।

दरिद्रता, स स्त्री (स) दारिद्र्य, निर्धनता, अकिंचनता, दुर्गति (स्त्री) इ ।

दरिया, स पु (फा) नदी, सरित् (स्त्री) २ सागर ।

—दिल, वि (फा) उदार, दानशील, वदान्य २ महानुभाव, उदारचेतस् ।

दरियाई घोड़ा, स पु (फा+हिं) करियादस (स), नदीघोट टक ।

दरियाफ्त, वि (फा) ज्ञात, विदित । स्त्री, आविष्कार ।

दरी¹, स स्त्री (स) दे 'गुफा'।

दरी, स स्त्री (स स्तर >) कुथ था, आस्तरण, परिस्तोम ।

दरीचा, स पु (फा) वातायन २ द्वारकम् ।

दरीबा, स पु (फा) ताम्बूलापण, ताम्बूलपर्णहट्ट, २ हट्ट, विपणी णि (स्त्री)।

दरेग, स पु (फा) अरुचि (स्त्री), विमुखता ।

दर्ज, वि (फा) लिखित, लेख्ये निवेशित ।

—करना, क्रि स, लिख (तु प से), लेख्ये निविश् (प्रे)।

दर्जन, स पु (अं डज़न) द्वादशक, द्वादश समूह ।

दर्जा, स पु (अ) श्रेणी णि (स्त्री), वर्ग, छात्रगण २ कोटि (स्त्री), काष्ठा ३ पद, पदवी वि (स्त्री) ४ क्रम, परम्परा ५ भूमि (स्त्री) (मकान की मंजिल) । क्रि वि, गुण, वार, गुणितम् ।

—ब दर्जा, क्रि वि, क्रमश, क्रमेण, शनैः श ।

दर्जिन, सं स्त्री (फा दर्जी) तुन्नवायी, (सी) सिवी, सूचिकर्मोपजीविनी ।

दर्ज़ी, स पु (फा) तुन्नवाय, सू (सी) चिक, वस्त्रसेवक, सूचिकर्मोपजीविन् ।

दर्द, स पु (फा) पीड़ा, व्यथा, दुःख, वेदना, अ (आ) र्त्ति (स्त्री) यातना, क्लेश, कष्ट कृच्छ्र २ करुणा, दया, सहानुभूति (स्त्री) ३ हानि-नाश-दुःखम् ।

—गुर्दा, स पु (फा) वृक्क (क्का) वेदना, गुर्दशूल नम् ।

—नाक, वि (फा) दुःखद कष्टप्रद, क्लेशकर [री (स्त्री)] मर्मान्तक ।

—सर, स पु (फा) शीर्ष, शूल पीड़ा-व्यथा शिरोवेदना ।

दर्दमंद, वि (फा) पीड़ित, व्यथित, दुःखित २ दयालु दयावत् ।

दर्दरी, स स्त्री (दिश) गृध्रसी (ऊरुरोगभेद)

दर्दी, वि (फा दर्द) दे 'दर्दमंद' ।

दर्प, स पु (स) अभिमान, मान, स्मय चित्तोन्नति (स्त्री), गर्व, अहङ्कार, अवलेप २ उग्रता, उद्धतता ।

दर्पक, स पु (स) दृप्त, अहङ्कारिन्, गर्वित, अवलिप्त, उद्धत ।

दर्पण, स पु (स पु न) मुकुर, आदर्श, आत्मदर्श, दर्पक, ककर, दर्शनम् ।

दर्पित, वि (स) गर्वित-मान्त, दृप्त-मान्त, अवलिप्त-मान्तम् ।

दर्भ, सं पु (स) कुशभेद २ कुश ३ तृण पत्रण, काश ।

दर्रा, स पु (फा) संकटमयपथ, पथ मार्ग, दुर्गमचर, गिरिद्वारम् ।

दर्शक, स ▒ (स) द्रष्टृ (पु), प्रेक्षक, वीक्षक, दर्शिन् २ (सभा आदि के) पार्षद, पारिषद, सामाजिक ३ प्रकाशक, प्रदर्शक ।

दर्शन, स पु (स न) क्रिआ भव, लोकन, वि, ईक्षण, साक्षात्करण, चाक्षुषज्ञान, निवर्णन, निभालन २ स, मिलन, समागम, सगति (स्त्री) ३ तत्त्व, विद्या शास्त्र ज्ञान ४ नेत्र ५ दर्पण ।

दर्शनीय, वि (स) भव्य आदि, लोकनीय, ईक्षणीय, निभालनीय २ मनोहर, अभिराम ।

दर्शनी हुंडी, स स्त्री, सत्र शोध्य धनादेश देयपत्रम् ।

दल, स पु (स पु न) सेना, सैन्य २ संघ, गण, समूह ३ पत्र, पलाश, पर्ण, छद, छदन ४ अर्द्धभाग-दः ५ चक्र, मण्डली ।

—पति, स पु (स) सेना-नी (पु)-नायक, चमूपति (पु) २ अग्रणी (पु), अध्यक्ष, प्रमुख, नायक ।

दलकना, क्रि अ, दे 'दरकना' २ दे 'धड़कना' ।

दलदल, स स्त्री (स दलाढ्य) कर्दम, पङ्क व जबाल म २ अनूप, कच्छ, भू भूमि (स्त्री), कच्छ ।

दलदली, वि (हिं दलदल) पङ्कदूषित, पङ्किल, सकर्दम, कर्दममय [-यी (स्त्री)] २ आनूप, [पी (स्त्री)], जल आर्द्र पूर्ण-मय ।

दलन, स पु (स न) पेषण, मर्दन, चूर्णन, निष्पेष, मर्दन २ वि, नाश ध्वंस, संहार ।

दलना, क्रि स (स दलन) स्थूलस्थूल पिष् क्षुद् (रु प अ) मृद् (क्र्‍ प मे)-चूर्ण्-खण्ड् (चु), निर्दल् (भ्वा प मे) २ सपीड् (चु), पादतलेन मृद् ३ (पिष्यादिभि), द्विधा खण्ड् (चु)-शकलीकृ ४ नश् ध्वंस (प्रे) । स पु दे 'दलन' ।

दलनेवाला, सं पु, स्थूल, पेषक मर्दक-चूर्णक ।

दलबादल, स पु (स दल + हिं बादल) मेघमाला, कादम्बिनी, घनपङ्क्ती २ महती चमू (स्त्री) ३ बृहत्पटमण्डप ।

दलवाना, क्रि प्रे, व 'दलना' के प्रे रूप ।

दलहन, सं पु (हिं दाल) दाली द्विदल-वैदल, सूपान्न-उपयुक्तान्नम् ।

दलहरा, स पु (हिं दाल) दाली वैदल, विक्रेतृ विक्रयिन् विक्रायक ।

दलादली, स स्त्री (स दल-दल >) दल गण संघ-वर्ग, स्पर्द्धा विजिगीषा प्रतियोगिता ।

दलाल, स पु (अ) परार्थे क्रयविक्रयायोजक, क्रयविक्रयसहायक, मध्यस्थ ।

दलाली, स स्त्री (अ दलाल) क्रयविक्रय सहायकत्व २ क्रयविक्रयसहायकत्ववेतनम् ।

दलित, वि (सं) खण्डित, चूर्णित, मर्दित, शकलीकृत २ अवन(ना)मित, अवपीडित ३ अस्पृश्य, अन्त्यज ४ नाशित, ध्वसित । स पु, अस्पृश्य, नीच, अन्त्यज, हरिजन ।

—उद्धार, स पु (स) अस्पृश्य अन्त्यज हरिजन-उन्नति (स्त्री)-उन्नयन-उद्धार ।

—वर्ग, स पु (स) अस्पृश्य-अन्त्यज-नीच, वर्ग-समुदाय ।

दलिया, स पु (हिं दलना) *दलित, दलित खंडित मर्दित, अन्नम्।
दलील, स स्त्री (अ) तर्क, युक्ति (स्त्री), हेतु (पु) २ वाद, वाद, मवाद विवाद, शास्त्रार्थ।
दव, स पु (स) दे 'दावानल'।
दवा, स स्त्री (फा) ओषधि (स्त्री), औषध भेषज २ उपचार, चिकित्सा ३ प्रति(ती)कार, प्रतिविधानम्।
—**खाना**, स पु (फा) औषधालय, भेषजालय।
—**दारू**, स स्त्री (फा+अ) उपक्रम, उपचार चिकित्सा।
दवाग्नि, स स्त्री } स पु, दे 'दावानल'।
दवानल, स पु }
दवात, स स्त्री (अ दावात) मसी-कूपी धानी धान पात्र भाजन, मेला, नद -नन्दा अधुर।
दवामी बंदोबस्त, स पु (फा) भूमिकरस्य स्थाविप्रकार।
दश, वि दे 'दस'।
—**आनन**, —**आस्य**, —**कंठ**, —**कंधर**, —**ग्रीव**,—**मुख**, स पु, (स) रावण।
दशन, स पु (स पु न) दे 'दांत'।
दशम, वि (स) दे 'दसवां'।
दशमलव, स पु (स) दशमबिन्दु (बीज गणित)।
दशमी, स स्त्री (स) चान्द्रमासस्य शुक्ला कृष्णा वा दशमी तिथि (पु, स्त्री) २ मरणावस्था ३ विमुक्तावस्था।
दशमूल, स पु (स न) पाचनभेद (वैद्यक)।
दशरथ, स पु (स) अवधेशो नृपविशेष, श्रीरामचन्द्रस्य पिता।
दशहरा, स पु (स स्त्री) गंगा, भागीरथी २ गंगाया अवतरणतिथि, ज्येष्ठशुक्लदशमी ३ उक्ततिथौ गंगावतरणोत्सव ४ विजयादशमी, रावणवधतिथि (पु, स्त्री), आश्विन शुक्लदशमी।
दशांश, स पु (सं दशांश >) दशम, अंश भाग।
दशा, सं स्त्री (सं) अवस्था, स्थिति वृत्ति गति (स्त्री), भाव।
दस, वि (स दशन्)। स पु, उक्ता सख्या, तत्की (१०) च।
—**गुना**,वि, दश, गुणगुणित।
—**प्रकार से**, क्रि वि, दशधा (अव्य)।
—**बार**, क्रि वि, दशकृत्व (अव्य)।
दसवाँ, वि (स, दशम मी मम्)।
दस्तंदाजी, स स्त्री (फा) हस्तक्षेप, पर कार्यचर्चा।
दस्त, स पु (फा) अति(ती)सार, द्रवमल २ हस्त, कर।
आवलहू वाले—, स पु, आमरक्तातिसार।
आँववाले—, स पु, आमातिसार।
लहूवाले—, स पु, रक्तातिसार।
—**कार**, स पु (फा) शिल्पिन्, शिल्पकार।
—**कारी**, स स्त्री (फा) शिल्प, शिल्पविद्या, हस्त, शिल्प कमन् (न) क्रिया।
—**खत**, स पु (फा) नाम हस्त, अक्षरम्।
—**खत करना**, क्रि स, स्वनामन् (न) लिख् (तु प से), हस्ताक्षर कृ।
—**बस्ता**, क्रि वि (फा) साञ्जलि, अञ्जलि बद्ध्वा।
दस्तक, स स्त्री (फा) द्वार, आघात -ताडन प्रहार।
दस्तरखान, स पु (फा) भक्ष्यवस्त्र, पत्र थपट।
दस्ता, स पु (फा दस्त) मुष्टि (स्त्री), वारग। (रद्दी का) मल त्सरु (पु) २ मुसल-ल ३ पत्रचतुर्विंशति (स्त्री) ४ सैनिकसमवाय ५ दे 'गुलदस्ता'।
दस्ताना, स पु (फा) *हस्तत्राण, करच्छद।
दस्तावर, वि (फा) वि, रेचक रेचन, शोधन, सारक।
दस्तावेज़, स स्त्री (फा) व्यवहारसमय, पत्र लेख।
दस्ती, वि (फा दस्त) हस्त्य, कर, हस्त २ वारगक, लघुमुष्टि (स्त्री)।
दस्तूर, स पु (फा) प्रथा, रीति, (स्त्री) २ नियम, विधि (पु)।
दस्तूरी, सं स्त्री, (फा दस्तूर >) (वणिग्भिर्भृत्येभ्यो देय) प्रथाशुल्कम्।
दस्यु, सं पुं (सं) चौर, लुंठक, २ अनार्य, म्लेच्छ।

दह, स पु (स हृद >) ॰मरिदुगर्त २ कुट ३ जलावत ।
दहक, स स्त्री दे 'धधक'।
दहकना, क्रि अ (स दह्) दे 'धधकना'।
दहक़ान, स पु (फा) कृषाण , कृष (षि-)क , कृषावल । वि , अज्ञ, मूढ, अशिष्ट ।
दहकाना, क्रि स (हिं दहकना) दे 'धधकाना'।
दहन, स पु (स न) ज्वलन, दाह , प्लोष २ (स पु) अग्नि (पु)।
दहलना, क्रि अ (स दर डर>) भयेन कप्, वेपू (भ्वा आ से), वि,त्रस् (भ्वा दि प से)।
दहलाना, क्रि प्रे , व 'दहलना' के प्रे रूप ।
दहलीज, स स्त्री (फा) देहली, गृहाव ग्रहणी ।
दहशत, स स्त्री (फा) त्रास , आतक , भीति (स्त्री)।
दहसेरी, स स्त्री (स दशसेरी) दशसेरकी ।
दहाई, स स्त्री (फा दह) दशत्व २. दशक, दशति (स्त्री) ३ अकगणनाया द्वितीयस्थान ४ दशमाश ।
दहाड, स स्त्री (अनु) गर्जित, गर्जन-ना, महत्-दीर्घ गभीर,-नाद शब्द २ आर्त्त, क्रोश आर्त्तनाद ।
दहाडना, क्रि अ (हिं दहाड) गर्ज्-रस्-नद्, नर्द् (भ्वा प से) २. आ-उद् वि क्रुश (भ्वा प अ), सचीत्कार रुद् (अ प से)।
दहाना, स पु (फा) विस्तीर्णमुख २ द्वार ३ गल्पासन ४ नदीमुखम् ।
दहिना, वि (स दक्षिण) अपसव्य, वामेतर, सव्येतर २ तुष्ट, कृपालु ।
दहिने, क्रि वि (हिं दहिना) दक्षिणेन, दक्षिणत , दक्षिणा पार्श्वे ।
दही, स पु [स दधि (न)] क्षीरज, विरल, मगल्य, पयस्य, द्रप्स स, श्रीघनम् ।
दहेज, स पु (अ जहेज) युतक, यौतुक, स्त्रीधन, शुल्क, वाहनिकम् ।
दाँ, स पु, (स दा)-वार,-कृत्व (दोनों अव्य)। (फा) वि, (समासान्त मे)-ज्ञ, (हिसाबदाँ=गणितज्ञ इ)।

दाँए बाँए, क्रि वि (स दक्षिण+वाम>) दक्षिणतो वामतश्च, दक्षिणवामपार्श्वयो , इत स्तत , अत्र तत्र ।
दाँत, स पु (स दत) दशन , रदन , खादन , रद , द्विज , खरु (पु), दश ।
(सामने के आठ=छेदक-कर्तनक,-दन्ता , साथ के चार=भेदक रदनक,-दन्ता , उनके पिछले आठ=अग्रचर्वणरदन्ता , पिछले बारह=चर्वणरदन्ता)।
—**उगना**, क्रि अ , दता उद्गम् (भ्वा प अ)-उद्,ऋद् (रुह)। स पु , दतोद्गम ।
—**किचकिचाना**, } क्रि अ , (क्रोधेन)दतैर्दतान्
—**किटकिटाना**, } घृष (भ्वा प से)-निष्पिष्
—**चबाना**, } (रु प अ)-विघट्ट् (प्रे)।
—**पीसना**, } स पु ,दत, घर्षण-निष्पेष ।
—**का दर्द**, स पु , दत, पीडा शूलम् ।
—**का पेस्ट**, स पु , ॰दतलेप ।
—**का बुरश**, स पु , दतकूर्चक ,-कम् ।
—**का मजन**, स पु , निर्धुक्तणम्, दतमार्जन, रदशोध ।
—**खोदनी**, स स्त्री , दतोल्लेखनी, दतशोधनी ।
—**बनानेवाला**, स पु , दत, वैद्य चिकित्सक ।
—**खट्टे करना या तोडना**, मु , वि परा जि (भ्वा आ अ), अभि परा भू (भ्वा प से)।
—**तले उँगली दबाना**, मु , अत्यर्थं वि स्मि (भ्वा आ अ), विस्मित चकित (वि) भू ।
—**निकालना**, मु , हस (भ्वा प से) २ स्वायत्ता प्रकाश (प्रे)।
—**रखना, लगाना या होना**, मु , अत्यत अभि-लष्-वाञ्छ् (भ्वा प से)।
दाँता, स पु (हिं दाँत) दे 'दंदाना'।
—**किटकिट**, } स स्त्री , कलह , वाग्युद्ध
—**किलकिल**, } २ दे 'गालीगलौज'।
दाँती, स स्त्री , दे 'दराँती'।
दाम्पत्य, वि (स) पतिपत्नी जायापति विषयक, वैवाहिक, आस्त्य । स पु (स न) दाम्पत्य, मवध व्यवहार , आसत्यम् ।
दाभिक, वि (स) दे 'दभी'।
दाइजा, स पु , दे 'दहेज'।
दाईं, वि स्त्री , दे 'दहिनी'।
दाई, स स्त्री, (स धात्री, फा दाय) मातृका,

उपमातृ (स्त्री,), अक्पाली २ माविका, प्रसवकारिणी।

—गीरी, स स्त्री, गर्भमोचनविद्या, प्रसव मुनि, कार्य-कमन (न)।

—से पेट छिपाना, मु, रहस्यविदो रहस्य गुह (भ्वा उ वे)।

दाऊ, स पु, (स देव >) अग्रज, ज्येष्ठभ्रातृ २ बल देव नाम, श्रीकृष्णाग्रज।

दाक्षायण स पु (स) दक्षप्रजापतिकृतयज्ञ २ सुवर्णम् ३ आभूषणम्। वि दक्षगोत्रीय।

दाक्षायणी, स स्त्री (स) अश्विन्य दिनक्षत्रम् २ *सती* ३ दुर्गा ४ *अदिति* (स्त्री) ५ दक्षगोत्रकन्या।

—पति, स पु (स) शिव २ चन्द्र।

दाक्षिणात्य, स पु (स) दक्षिणप्रदेश, निवासिन्-वासनव्य २ नारिकेल अद्‌भौतिक, फलम्। वि दक्षिण,-सम्बन्धिन् प्रदेशीय।

दाख, स स्त्री (स द्राक्षा) गोस्तनी, स्वाद्वी, मृद्वीका, रसाला, गुच्छफला २ शुष्कद्राक्षा ३ दे 'मुनक्का'।

दाख़िल, वि (फा) प्रविष्ट, निविष्ट २ समिलित, समाविष्ट ३ न्यस्त, निक्षिप्त।

—ख़ारिज, स पु (फा) स्वत्व-स्वामित्व, परिवर्तन।

—दफ़्तर, वि (फा) लेखागारे निक्षिप्त।

दाख़िला, स पु (फा) प्रवेश गमनम्।

दाग़, स पु (फा) अङ्क, चिह्न २ कलङ्क, लाञ्छन, दोष ३ तप्तलोहमुद्रा ४ बिंदु (पु), तिलक कम्।

—दार, वि (फा) अङ्कित, चिह्नित २ मालिन्क, बिंदुमत् कर्बुर ३ दूषित, कलङ्कित।

—लगना, *क्रि अ*, *कलङ्कित दूषित-लाञ्छित* (वि) भू २ तप्तलोहमुद्राङ्कित (वि) भू।

—लगाना, क्रि स, दुष् (प्रे), कलङ्कयति (ना धा) २ (तप्तलोहमुद्रया) अङ्कयति चिह्नयति (ना धा)।

दागना, क्रि स (फा दाग) दे 'दाग लगाना' २ लोहादिगोलकान् प्रक्षिप (तु प अ) प्राम (णि प स)।

दागी, वि (फा दाग) दे 'दागदार'।

दाघ स पु (स) ताप, दाह, उष्मन् (पु)।

दाड़िम, स पु (स) दे 'अनार'।

दाढ़[1], स स्त्री, (स दाढा) दंष्ट्रा, जम्भ, चर्वणदन्त।

दाढ़[2], स स्त्री (अनु) गर्जित, गर्जन ना २ चीत्कार।

दाढ़ी, स स्त्री (दाढिका) कूर्च चं, श्मश्रु (न), व्यञ्जन, कोट।

—जार, स पु, दग्ध,-कूर्च श्मश्रु (गालीभेद)।

—बनवाना या मुड़ाना, क्रि प्रे, कूर्चं मुण्ड (चु)-आवप (प्रे)।

दाता, स पु (स दातृ) दानकर्तृ (पु) वदान्य, दानशील, दातृ (पु), मुनिर।
[दात्री (स्त्री) = दानकर्त्री]।

दातु(तौ)न, स स्त्री (हि दाँत) दन्त,-काष्ठ धावनम्।

दाद[1], स स्त्री, दे 'दद्रु'।

दाद, स स्त्री, (फा) न्याय, न्याय्यता।

—देना, क्रि स, गुणावगुणान् विविच्य प्रशंस (भ्वा प से)।

दादा, स पु (स तात >) पितामह, पितृजनक २ अग्रज।

दादी, स स्त्री (हि दादा) पितामही पितृजननी।

दादुर, स पु, (स दर्दुर) मण्डूक, भेक।

दान, स पु (स न) त्याग, उत्सर्ग, विसर्जन, विश्राणन, वितरण, भिक्षादान २ प्रदान ददन, दत्ति (स्त्री), अतिसर्जन ३ गजमद।

—करना या देना, क्रि स, सत्कार्येषु पुण्यार्थे वित्त विसृज् (तु प अ)-व्यय् (चु, भ्वा उ स)।

—धर्म, स पु (स) भिक्षा, दान, (पुण्यार्थे) त्याग।

—पत्र, स पु (स न) दानलेख।

—पात्र, स पु (स न) दान, भाजन मञ्जूषा २ दानग्रहणाधिकारिन्।

—पुण्य, स पु (सं न) दे 'दानधर्म'।

—शील, वि (स) उदार, त्यागिन्, वदान्य, त्यागशील, दानशौंड।

दानव, सं पु (स) राक्षस, रक्षस् (न)।

—इन्द्र, स (पु) बलि।

दानवी, वि (स) दानवीय, दानव,-उचित सम्बन्धिन्। स स्त्री (सं) दानव, पत्नी भार्या।

दाना[1], स पु (फा दानह्) अन्नकण सिक्थ

२ अन्न, धान्य ३ गुल्मिका ४ पिप्लिका, रक्तवर्णी, स्फोटक ।

—पानी, स पु (फा + हि) अन्नजल, जलान्नम्, भक्ष्यपेयम् ।

—पानी उठना, मु , व्यवसाय-आजीविका, समाप्ति (स्त्री)-अवसानम् ।

—(ने) दाने को तरसना, मु , क्षुधया बुभुक्षया मृ (तु आ अ)।

दाना², वि (फा) प्राज्ञ, बुद्धिमत् ।

दानाई, स स्त्री (फा) बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता ।

दानी, वि (स -निन्) दे 'दानशील' तथा 'दाता' ।

दानेदार, वि , कण कणिका-मय [-यी (स्त्री)] ।

दाब, स स्त्री , दे 'दबाव' ।

दाबना, क्रि स , दे 'दबाना' ।

दाम¹, स पु (स दामन् न स्त्री) रज्जु (स्त्री), गुण, सदान २ माला, हार ३ समूह ४ संसार ।

दाम², स पु (फा । मि स 'दाम¹') पाश , जाल, वागुरा ।

दाम³, स पु (हिं दमड़ी) पणचतुर्विंशभाग २ मूल्य, अर्घ , वस्न ३ धन ४ दाननीति (स्त्री , राजनीति) ।

दामन, स पु (फा) चोलादीना निम्नभाग , वस्त्राचल , वसनान्त २ उपत्यका ।

—पकड़ना, मु , शरण प्रपद् (दि आ अ), आ उपास,-श्रि (भ्वा उ से) ।

—फैलाना, मु , याच् (भ्वा उ से) ।

दामाद, स पु (फा) जामातृ (पु), पुत्री पति (पु), कन्यावेदिन, दुहितृधव ।

दामिनी, स स्त्री (स) तडित्-विद्युत् (स्त्री), चञ्चला ।

दामोदर, स पु (स) श्रीकृष्णचन्द्र २ विष्णु ।

दाय, स पु (स) पैतृक, पैतृक, रिक्थ धन, गोत्रधन २ यौतुकादिदेयधनम् ।

—भाग, स पु (स) दाय-रिक्थ,-विभाग वंटन-व्यवहारम् ।

दायक, स पु (स) दे 'दाता' [दायिका (स्त्री)] ।

दायजा, स पु (स दाय >) दे 'दहेज' ।

दायर, वि (फा) चलत् (जाग्रत), वर्तमान ।

दावा—करना, क्रि स , अभियुज् (रु आ अ , तु), राजकुले निविद् (प्रे), अभियोग प्रवृत् (प्रे) ।

दायरा, स पु (अ) चक्र, मडल, वृत्तम् ।

दायाँ, वि (स दक्षिण) दे 'दहिना' ।

दायित्व, स पु (स न) उत्तरदायित्व २ दातृत्वम् ।

दायें, क्रि वि (हि दाया) दे 'दहिने' ।

दार, स स्त्री [स दारा (नित्य पु बहु)] कलत्र पत्नी, भार्या ।

—कर्म, स पु [स -मन् (न)] विवाह , पाणि ग्रहणम् ।

दारक, स पु (स) शिशु (पु), बाल , बालक २ पुत्र तनय ।

दार(ल)चीनी, स स्त्री (स दारु + चीन = देशविशेष >) दे 'तज' ।

दारा, स स्त्री , दे 'दार' ।

दारिद्र, द्र,-द्र्य, स पु (स दारिद्र्य) निर्धनता, अकिंचनता, दरिद्रता ।

दारु, स पु (स न , कहीं-कहीं पु) काष्ठ २ देवदारु (पु न) ।

दारुण, वि (स) घोर, विषम, विकट, दुःसह, कठोर, २ भीषण, भयङ्कर ।

दारुहलदी, स स्त्री (स दारुहरिद्रा) दार्वी, पीता, पीतिका ।

दारू, स स्त्री (फा) औषध, भेषज २ मद्य, सुरा ३ दे 'बारूद' ।

—दरमन,
—दवा, } स स्त्री , चिकित्सा, उपचार ।

दारोगा, स पु (फा) अध्यक्ष , अधिष्ठातृ (पु) निरीक्षक २ दे 'थानेदार' ।

दार्शनिक, स पु (स) तत्त्व, विद्-वेत्तृ (सब पु), दर्शनशास्त्रपण्डित ।

दाल, स स्त्री (स दाल = कोदों >) दाली, द्विदला-न्न, वैदल , शिम्बि-बिका, हरेणु (पु), हरेणुक , शमी-शिम्बी, धान्यम् ।

—दलिया, मु , रूक्षभोजनम् ।

—न गलना, मु , असमर्थ-अशक्त (वि) स्था (भ्वा प अ) ।

—में काला, मु , संदिग्धवार्ता २ कुरहस्य ३ कुलक्षणम् ।

—रोटी, स स्त्री , सामान्याहार ।

दालचीनी, स स्त्री , दे 'तज' ।

दालन, स पु (म दलन>) दन्तरोगभेद, दन्तक्षय ।

दालमोठ, स स्त्री (हिं दाल+मोठ) स्नेह भर्जितदाली, मन्वण ।

दालान, स पु (फा) दे 'बरामदा' ।

दालिम, म पु (स दाडिम (डि) म मा) (वृक्ष) कुचफल, शुकवल्लभ । (फल) कुचफल, रक्तबीज, दाडि (डि) मम् ।

दावँ, म पु (स प्रत्य दा>, उ पवदा) पर्याय, परिवृत्ति (स्त्री), वार २ अवसर, वेला, कायकाल प्रसग ३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ४ छल, कपट ५ मल्लयुद्धकूटयुक्ति (स्त्री) ६ निभृतावस्थिति (स्त्री) ।

—पर लगाना, मु, पण् (भ्वा आ से, पष्ठी के साथ, उ 'रूप्यकस्य पणते') ।

—लगना, मु, अवसर लभ (कर्म) ।

दाव, स पु (स) वन २ दावानल ३ अग्नि (पु) ४ दाह ताप ।

दावत, स स्त्री (अ) भोजन, निमन्त्रण २ विशिष्टभोजनम् ।

दावा, स पु (अ) स्वत्वप्रतिपादन, स्वामित्वप्रकाशन २ स्वत्व, अधिकार ३ अभियोग भाषा, पत्र ४ अभियोग, पूर्वपक्ष, भाषा, भाषापाद ५ प्रताप, प्रभुत्व ६ दृढोक्ति (स्त्री) ७ प्रतिज्ञा पक्ष, पूर्वपक्ष ।

पूर्वपक्ष स्मृत पादो, द्विपादश्चोत्तर स्मृत ।
क्रियापादस्तथा चान्य चतुर्थो निर्णय स्मृत ॥

—करना, क्रि स, अभियुज् (रु आ अ, चु) दे 'दायर' के नीचे २ स्वत्व प्रतिपद् (प्रे) ।

—खारिज करना, क्रि स, अभियोग अपाम् (दि प से)-निराकृ ।

—गीर, } म पु (अ+फा) अभियोक्तृ
—दार, } (पु), अर्थिन्, वादिन्, अभियोगिन्, सूचक, कार्यार्थिन २ स्वत्वप्रतिपादक, स्वामित्वप्रकाशक ।

दावानल, स पु (म) दा(द)वाग्नि (पु), वनवह्नि (पु), द(दा)व ।

दास, स पु (स) किंकर, भृत्य, भुजिष्य, दासेय, दासेर, दे 'नौकर' ।

दासता, स स्त्री (स) दासत्व, दास, भाव वृत्ति (स्त्री) ।

दासानुदास, स पु (स) अतिनम्र किंकर, तुच्छसेवक ।

दासी, स स्त्री (स) चेटी, भुजिष्या, दे 'नौकरानी' ।

दासेय, स पु (स), दासीपुत्र २ दास ।

दास्तान, स स्त्री (फा) कथा २ वृत्तान्त ३ वर्णनम् ।

दास्य, स पु (स न) दे 'दासता' ।

दाह, स पु (स) दाहन, ज्वालन, भस्मीकरण २ शवदाह, अन्त्येष्टि मृतक,-संस्कार क्रिया ३ ताप, प्लोष, शोक, सन्ताप ४ ईर्ष्या ।

—कर्म, स पु [स संस् (न)] दे 'दाह'(२)।

दाहक, वि (स) तापक, दीपक, प्लोषक ।

दाहना, क्रि स दे 'जलाना' ।

दाहिना, वि, दे, 'दहिना' ।

दाहिने, क्रि वि, दे 'दहिने' ।

दिक्, स स्त्री [स दिश् (स्त्री)] दिशा ।

—पाल, स पु (स) आशापाल, इन्द्रादयो दश देवा ।

दिक्, स पु (अ) क्षयरोग । वि, व्यथित, सतप्त २ अस्वस्थ, रुग्ण ।

—करना, क्रि स, तप्-व्यथ् (प्रे), पीड् (चु), बाध (भ्वा आ से) ।

आँतों का—, स पु, आन्त्रक्षय ।

दिक्कत, स स्त्री (अ) काठिन्य, बाधा, कष्टम् ।

दिखलाना, क्रि स, व 'देखना' के प्रे रूप ।

दिखलावा, स पु, दे 'दिखावा' ।

दिखाई, स स्त्री (हिं दिखाना) प्रदर्शन, व्यञ्जन, निर्देशन, प्रकाशन, प्रकटी-व्यक्ती,-करण २ प्रदर्शन-अर्घ-मूल्यम् । (हिं देखना) अव-आ वि,-लोकन, वि, ईक्षण, निभालन २ अवलोकन, शुल्क-कम् ।

—देना, क्रि अ, दृश्-दृश् (कर्म), अवभास् (भ्वा आ से) प्रतिभा (अ प अ) ।

दिखाना, क्रि प्रे, व 'देखना' के प्रे रूप ।

दिखावट, स स्त्री (हिं दिखाना) दे 'दिखाई' मे 'प्रदर्शन' इ २ आडम्बर, बाह्य शोभा श्री (स्त्री) ।

दिखावटी, वि (हिं दिखावट) दम्भिन्, आडम्बरिन्, सुभगाभोग, कृतक, कृत्रिम, अनुपयोगिन्, साम्बर ।

दिखावा, स पु (हिं दिखाना) आडंबर, दंभ, आपातरमणीयता, बाह्यशोभा।

दिगंत, स पु (स) दिशान्त, दिक्सीमा २ क्षितिज, दिक्-तट चक्र-मण्डल ३ चतस्रो दश वा दिश।

दिगंतर, स पु (स न) अन्या दिशा २ दिङ्मध्य दिक्कोण ३ आकाश श, अन्तरिक्ष ४ विदेश।

दिगंबर, स स्त्री (स पु) जैनसम्प्रदायविशेष २ शिव। वि, नग्न, अवसन।

दिग्गज, स पु (स) दिग्वारिन् २ ऐरावतादयोऽष्ट दिग्रक्षका गजा।

दिग्दर्शक यन्त्र, स पु (स न) दिङ्निरूपक यन्त्रम्, दिग्दर्शनम्।

दिग्दर्शन, स पु (स न) सामान्य साधारण, परिचय ज्ञानम् २ दिग्ज्ञापन, दिशानिर्देश ३ दिग्दर्शकयन्त्रम्।

दिग्विजय, स स्त्री (स पु) विजया युद्धेन वा जगज्जय।

दिठौना, स पु (हिं दीठ) *कुदृष्टिनिवारण (कज्जलबिंदु)।

दिति, स स्त्री (स) कश्यपपत्नी, दैत्यजननी।

दिन, स पु (स न) अहन् (न) दिवस, वार, वासर, घस्र, अहाक, दिव (स्त्री), द्यु (न) २ समय, काल।

—चढना या निकलना, क्रि अ, रजनी प्रभा (अ प अ), अरुण-सूर्य उद् इ (अ प अ), प्रभात विभात अरुणोदय जन् (दि आ से)।

—ढलना, क्रि अ, दिन दिवस परिणम् अथवा आ-अव-नम् (भ्वा प अ), अपराह्णी भू (भ्वा आ से)।

—डूबना, क्रि अ, सूर्य दिवस अस्त,-गम् (भ्वा प अ) अवरुह (भ्वा आ से)।

—कर,
—नाथ,
—पति,
—मणि,
—राज,
} स पु (स) दिनेश, दे 'सूर्य'।

—चढे, क्रि वि, उदिते सूर्ये, प्रातः (अव्य)।

—चर्या, स स्त्री (स) आह्निक २ नित्य कर्मन् (न)।

—ढले, क्रि वि, (अ) पराह्णे, दिवसस्य तृतीययामे।

—दिन, क्रि वि, दिने दिने, अनु-प्रति,-दिन दिवसम्।

—दहाडे, क्रि वि, दिन,-काले समये एव, दिवैव।

—बदिन, क्रि वि, अन्वह, प्रत्यह, प्रतिदिनम्।

—भर, क्रि वि, सर्वं दिनम्।

—में, क्रि वि, दिवा, दिवसे।

—रात, क्रि वि, अहर्निश, दिवानिश, अहोरात्र, रात्रि नक्त, दिवम्।

अगले—, क्रि वि, परेद्यु, परस्मिन् दिने।

दूसरे—, क्रि वि, अन्येद्यु, पराह्ने।

पहले या पिछले—, क्रि वि, पूर्वेद्यु, पूर्वस्मिन् दिने।

—काटना, मु, यथाकथंचित्कृच्छ्रेण जीवन या (प्रे यापयति)।

—दूना रात चौगुना होना, मु, अहर्निश समृध (दि प से)-प्र-उप, चि (कर्म)।

—फिरना, मु, भाग्य उद् इ (अ प अ)।

दिनेश, स पु (स) सूर्य, भानु (पु)।

दिनौंधी, [illegible] स्त्री (स दिनान्ध >) दिनान्धता, दिवान्धता, नेत्ररोगभेद।

दिमाग, स पु (अ) मस्तकस्नेह, मस्तिष्क, मस्तु, लुङ्ग उष्णक (—म,,गको), गोर्द २ मति धी-बुद्धि (स्त्री) ३ दर्प, अभिमान।

—चट, स पु, वाचाल, वाचाट, बहुभाषिन्।

—दार, वि (अ + फा) धीमत्, बुद्धिमत् २ दृप्त, अभिमानिन्।

—आस्मान पर होना या चढना, मु, अति वेगेन दृप्त अवलिप्त (वि) वृध् (भ्वा आ से)।

—में खलल होना, मु, विक्षिप्त-वातुल भ्रांत चित्त (वि) खिद् (दि आ अ)।

—सातवें आस्मान पर होना, मु, अति,-दृप्त-दर्पित-गर्वित भू।

दिमागी, वि (अ) मानसिक, बौद्धिक, मस्तिष्कसम्बन्धिन् २ ३ दे 'दिमागदार'(१ २)।

दिया, स पु (स दीप) दीपक, प्रदीप, स्नेहाश, कज्जलध्वज, गृहमणि (पु) दोषास्य, दीपनिल्प, नयनोत्सव।

—सलाई, स स्त्री, दीपशलाका।

दिये का काजल, स पु, दीप,-कज्जल किट्ट-ध्वज।

दिये की ज्वाला, स स्त्री, दीप,-कलिका-शिखा।

दिये की बत्ती, सं. स्त्री, दीपवर्तिः (स्त्री) खोरी-थूपी, विदाहिका।

दियानतदार, वि., दे. 'दयानतदार'।

दिल, सं. पु. (फ़ा.) हृदय, हृद् (न.), अग्रमांस, बुक्का, बुक्काग्रमांस। २ मनस, चेतस (न.) मानस, चित्त, अंतःकरण, हृदय, स्वांत, आत्मन्, अंतरात्मन् (पु.) ३ साहस, शौर्य ४ प्रवृत्ति (स्त्री), इच्छा।

—गीर, वि. (फ़ा.) खिन्न, विषण्ण, दुःखित।

—चस्प, वि. (फ़ा.) रोचक, रंजक, मनोहर।

—चस्पी, सं. स्त्री. (फ़ा.) रुचि (स्त्री) २ मनोरंजनम्।

—चोर, वि. (फ़ा.+हि.) कार्यत्यागिन्, श्रमचोर।

—जमई, सं. स्त्री. (फ़ा.+अ. जमअ) मनोष निर्भयत्व, शङ्काभाव।

—दरिया, वि., दे. 'दरिया दिल'।

—दार, सं. पु. (फ़ा.) दयित, वल्लभ, प्रिय प्रेम स्नेह प्रीति, भाजनम्।

—पसंद, वि. (फ़ा.) चित्ताकर्षक, रुचिकर, इष्ट।

—बर, सं. पु. (फ़ा.) दे. 'दिलदार' २ वाप भेद (टि. दिल के बहुत से मुहावरे 'कलेजा' और 'जी' के नीचे मिलेंगे, कुछ यहाँ दिये जाते हैं)।

—रुबा, (सं. पु. (फ़ा.) दे. 'दिलदार'।)

—का कमल (या कली) खिलना, मु., आनंद् (भ्वा. प. से), प्रसद् (भ्वा. प. अ.), मुद् (भ्वा. आ. से)।

—तोड़ना, मु., उत्साह भञ् (रु. प. अ.) हन् (अ. प. अ.), साहस धैर्य ध्वंस (प्रे.), अव खिन्द् (प्रे.)।

—में रखना, मु., गोप्य रहस्य गुह् (भ्वा. उ. से) छद् (चु.)।

—रखना, मु. प्री (क्र. प. अ., चु. प्रीणयति), तुष प्रसद् अनुरञ् (प्रे.)।

—ही दिल में, मु. तूष्णीं, निःशब्द, मौनं, जोषम्।

दिलवाना, **दिलाना**, क्रि. प्रे., व 'देना' के प्रे. रूप।

दिलावर, वि. (फ़ा.) शूर, वीर २ साहसिन्।

दिलावरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शौर्य, वीरता, पराक्रम, विक्रम।

दिलासा, सं. पु. (फ़ा. दिल) धैर्य, आश्वास, आश्वासनम्।

दिली, वि. (फ़ा. दिल) हार्दिक, मानसिक २ अभिन्नहृदय, हृदयंगम।

दिलेर, वि. (फ़ा.) दे. 'दिलावर'।

दिलेरी, सं. स्त्री. (फ़ा.) शौर्य, वीरता, साहसम्।

दिल्लगी, सं. स्त्री. (फ़ा. दिल+हि. लगना) परि (री) हास, हास्य, नर्मालाप, परिहासोक्ति (स्त्री)।

—बाज़, सं. पु. विनोद परिहास, शील, वैहासिक।

दिल्ली, सं. स्त्री. (हि. ढिल्ली) इन्द्रप्रस्थ, भारत राजधानी, दिल्ली।

—वाल, वि., इन्द्रप्रस्थ—दिल्ली,-वासिन् सम्बन्धिन्।

दिवंगत, वि. (सं.) प्रेत, मृत, स्वर्यात, स्वर्गत, स्वर्गीय।

दिवस, सं. पु. (सं.) दे. 'दिन'।

दिवांध, वि. (सं.) दिनांध। सं. पु., उलूक २ दिनांधता।

दिवाकर, सं. पु. (सं.) दे. 'दिनकर'।

दिवाला, सं. पु. (हि. दीया+बालना) ऋण शोधनासामर्थ्य, ऋणदानाक्षमता।

—निकलना, क्रि. अ., परिक्षि (कर्म.), ऋण शोधनाक्षमत्व ख्या (प्रे.)।

दिवालिया, वि. (हि. दिवाला) ऋणशोधनासमर्थ, ऋणदानाक्षम, क्षीणसर्वस्व, परिक्षीण।

दिवाली, सं. स्त्री., दे. 'दीवाली'।

दिव्य, वि. (सं.) दैव (-वी स्त्री), अमानुष (-षी स्त्री), ऐश्वर (-री स्त्री), अपार्थिव (-वी स्त्री), अलौकिक (-की स्त्री), स्वर्गीय २ भास्वर, प्रकाशमान ३ अति,-स्वच्छ,-सुंदर मनोहर।

—चक्षु, सं. पु. [सं. क्षुस (न.)] अपौरुषेय अलौकिक,-दृष्टि (स्त्री) २ अंध ३ उपनेत्रम्।

—ज्ञान, सं. पु. (सं. न.) अतिमानुष अपौरुषेय, मानुषातिग, ज्ञानम्।

दिशा, सं. स्त्री. (सं.) आशा, काष्ठा, ककुभ हरित् दिश् (स्त्री), ककुभा।

—शूल, सं. पु. (सं. न.) दिग्विशेषगमने निषिद्धवारा (पु.)।

—जाना या फिरना, मु, पुरीषमुत्सष्टु या (अ प अ) मलोत्सर्गाय गम् ।
दिसावर, स पु (स देशान्तर>) विपरदेश, देशान्तरम् ।
दिसावरी, वि (हि दिसावर) वैदेशिक, वि पर-देशीय, दे 'विदेशी' ।
दिहात, स स्त्री दे 'देहात' ।
दीक्षक, स पु (स) मन्त्रोपदेशक गुरु (पु), आचार्य
दीक्षान्त, स पु (स) अवभृथयज्ञ ।
दीक्षा, स स्त्री (स) गुरुमुखात् यथाविधि मन्त्रग्रहण २ यजन पूजन ३ प्रथम-उपदेश शिक्षा, उपनय, विद्याप्रवेश ।
दीक्षित, वि (स) उपनीत, यथाविधि उपदिष्ट, मन्त्रग्राहनन्तर प्रवेशित ।
दीखना, क्रि अ दे 'दिखाई देना' ।
दीठ, स स्त्री (स दृष्टि, दे) ।
दीदा, स पु (फा) दृष्टि (स्त्री) २ अव लोकन ३ नेत्र ४ धृष्टता ।
—दानिस्ता, क्रि वि, ज्ञानबुद्धिमति,पूर्वक, वामत (अव्य) ।
दीदार, स पु (फा) दर्शन, साक्षात्कार ।
दीदी, स स्त्री (हि दादा) अग्रजा, ज्यायसी, भगिनी ।
दीधिति, स स्त्री (स पु) किरण, मयूख, अंशु मरीचि ।
दीन, वि (स) दरिद्र, निर्धन २ खिन्न, विषण्ण ३ अति नम्र विनीत ४ भयार्त, दु खित ।
—दयाल, वि (स-लु) दरिद्रवत्सल । स पु, ईश्वर ।
—बन्धु, वि (स) दरिद्रमित्र, दीनानुकम्पिन् । स पु, परमेश्वर ।
—दीन, स पु (अ) धर्म ।
दार, वि (अ+फा) धार्मिक, पुण्यात्मन् ।
—दुनिया, स पु (अ) लोकपरलोकौ (द्वि) ।
दीनता, स स्त्री (स) दरिद्रता, निर्धनता, अकिंचनता २ आर्तता, कातरता ३ खेद, विषाद ४ अति-नम्रत्व विनय ।
दीनानाथ, स पु (स दीन+नाथ) दीन-, दयालु -वत्सल -बन्धु, परमेश्वर ।
दीनार, स पु (स) स्वर्णमुद्रा २ स्वर्णाभूषण ३ निष्क,तौल भार ।
दीप, स पु (स) दीपक, दे 'दिया' ।
—माला, स स्त्री (स) दीप,आलि (स्त्री) आली आवली-उत्सव मालिका २ दीपपंक्ति (स्त्री) ।
—शिखा, स स्त्री (स) दीप-कलिका ज्वाला ।
दीपक, स पु (स) स-दीप, दे 'दिया' २ ४ अर्थालंकार राग गाल, भेद ५ अग्नि दीपनकमेद । वि, प्रकाशक, दीप्तिकर २ पाचक, अग्निवर्द्धक ३ उत्तेजक ।
दीपन, स पु (स न) प्रकाशन, ज्वालन २ जठराग्निवर्द्धन, क्षुधोत्पादन ३ उत्तेजन ना, आवेगजननम् ।
दीपावलि-ली, स स्त्री (स) दे 'दीपमाला' ।
दीप्त, वि (स) प्रकाशित, प्रभाशमान २ प्र ज्वलित, प्रज्वलत् (ज्वलत्) ।
दीप्ति, स स्त्री (स) आलोक, प्रकाश २ आभा, प्रभा, द्युति (स्त्री) ३ कान्ति (स्त्री), शोभा ।
दीमक, स स्त्री (फा) उप,-दीका-देहिका ।
—लगना, क्रि अ, उपदेहिकाभि भक्षु निष्कुष् (कर्म) ।
दीया, दे दिया' ।
दीर्घ, वि (स) लम्ब, आयत, आयामवत् ।
—काल, स पु (स) सुमहान् समय ।
—जंघ, स पु (स) उष्ट्र २ बक । वि, लम्बग ।
—जीवी, वि (स विन्) दीर्घ चिर, आयु आयुस् आयुष्य जीविन्, आयुष्मत् ।
—दर्शिता, स स्त्री (स) दे 'दूरदर्शिता' ।
—दर्शी, वि (स र्शिन) दे, 'दूरदर्शी' ।
—निद्रा, स स्त्री (स) लम्बस्वाप २ मृत्यु (पु) ।
—सूत्री, वि (स त्रिन्) दीर्घसूत्र, चिरक्रिय, चिरकिन् ।
दीर्घायु, स स्त्री (स न) चिर-दीर्घ जीवन आयुस् (न) । वि, दे 'दीर्घजीवी' ।
दीर्घायुध, स पु (स न) भल्ल —ल्लम्, कुन्त, प्रास २ शूकर, वराह, कोल ३ शल्य, श्वेदार । वि दीर्घ-लम्ब बृहद्,-अस्त्र-आयुध ।
दीवट, स स्त्री (हि दीवा) दीप-दीपक, ध्वज-वृक्ष आधार, शिखातरु ।

दीवान, स पु (अ) राजसभा, आस्थान-नी, राजकुल २ अमात्य, सचिव ३ कविताम्रग्रह ।
—आम, स पु (अ) *सामान्यस्थानम् ।
—खास, स पु (अ) *विशेषास्थानम् ।
दीवाना, वि (फा) उन्मादिन, विक्षिप्त दे 'पागल' ।
दीवार, स स्त्री (फा) कुड्य, भित्ति (स्त्री) ।
—गीर, स स्त्री (फा) भित्तिदीप २ भित्तिस्थो दीपाधार ।
दीवाली, स स्त्री (स दीपाली) दे 'दीपमाला' ।
दुदुभ, स पु } स पु दे 'नक्कारा'
दुदुभि स स्त्री }
दुबा, स पु (फा दुबाल) गोल्पुच्छो मेष-मेढ ।
दुःख, स पु (स न) कष्ट, क्लेश, पीडा, बाधा, व्यथा, अ (आ) र्ति (स्त्री), कृच्छ्र, वेदना, परि-स, ताप २ आपद् विपद् (स्त्री), सकट ३ रोग, व्याधि (पु) ।
—उठाना या पाना, क्रि अ, दुःखयति (ना धा), दुःख सह् (भ्वा आ से)-अनुभू-उपभुज (रु आ अ)-प्राप (स्वा उ अ) ।
—देना या पहुँचाना, क्रि स, दुःखयति (ना धा), तप-व्यथ अर्द् (प्रे), पीड (चु), क्लिश (क्र् प से) ।
—दाई, वि (स -दायिन्) दुःख-कष्ट-क्लेश कर-द-दातृ-दायक प्रद जनक-उत्पादक ।
—मय, वि (स) क्लेशमय, दुःखपूर्ण ।
—हर्ता, वि (स -र्तृ) दुःखक्लेश-कष्ट,-नाशक निवारक-हरिन् ।
दुःखित, वि (स) क्लेशित, पीडित, व्यथित, स्वभाव, दून, तापित, स परि,-तप्त, दुःख, आर्त्त, कृच्छ्रगत, सव्यथ, दुःखिन् ।
दुःखिनी, वि स्त्री (स) विपन्ना, पीडिता, व्यथिता, स परि,-तप्ता, आर्त्ता ।
दुःखी, वि (स खिन्) दे 'दुःखित' (दुःखिनी स्त्री) ।
दुःशासन, वि (स) उच्छृङ्खल, उद्दाम, दुर्निग्रह । स पु, धृतराष्ट्रस्य पुत्रविशेष २ कुशासनम् ।
दुःशील, वि (स) दुःस्वभाव, कुशील, कुस्वभाव, दुष्प्रकृति, दुर्वृत्त २ धृष्ट, उद्धत ।
दुःश्रव, वि (स) कर्णकटु,-कटु । स पु, दुःश्रवत्व-श्रुतिकटुत्व,-दोष (सा०) ।
दुःसग, स पु (स) कुसग, कुसग,-सगति (स्त्री) ।
दुःसाध्य, वि (स) कठिन, दुष्कर, कष्टसाध्य २ असाध्य, दुष्प्रचार, अशमनीय, अचिकित्स्य, निरुपाय ।
दुआ, स स्त्री (अ) प्रार्थना २ आशीर्वाद ।
दुआबा, स पु (फा) दे 'दोआबा' ।
दुकड़ा, स पु (स द्विक) द्वय, द्वितय, युग, युगल, २ दे 'छदाम' ।
दुकान, स स्त्री (फा) पण्य, शाला-अगार, आपण, विपणि (स्त्री), निपण, *हट्टी ।
—दार, स पु (फा) आपणिक, पण्याजीव, विपणिन, क्रयविक्रयिक, वणिज (पु) ।
—दारी, स स्त्री, पण्यशाला (अ)विधा (जु उ अ) ।
दुखड़ा, स पु (स दुःख) दुःखवृत्तान्त, करुणकथा २ कष्ट, विपद् (स्त्री) ।
दुखना, क्रि अ (स दुःख>) पीड्-क्लिश तप (कर्म)-व्यथ (भ्वा आ से) ।
दुखाना, क्रि स (हिं दुखना) पीड् अर्द् (चु), व्यथ् (प्रे), दु (स्वा प अ), क्लिश (क्र् प से), उप परि-तप्, तप् (प्रे) ।
दुखिया-यारा, वि (स दुःख>) दे 'दुःखित' ।
दुगना, वि (स द्विगुण) द्विगुणित ।
दुग्ध, स पु (स न) क्षीर, पयस (न) ।
—फेन, स पु (स) क्षीरडिण्डि (डी)र, सार्कर ।
दुचित्ता, वि (स द्विचित्त) दोलायमान, सशयालु, सदेहिन, सदिग्ध,-बुद्धि-मति ।
दुचित्ती, स स्त्री (हिं दुचित्ता) दोलावृत्ति (स्त्री), द्वैधीभाव, निश्चयाभाव, सशय ।
दुत, अव्य (अनु) अपसर अपेहि (लोट्) ।
—कार, स स्त्री (अनु + स कार) धिक्कार, तिरस्कार, भर्त्सना, वाग्दण्ड २ अपमारणम् ।
दुतकारना, क्रि स (हिं दुतकार) धिक्-तिरस् कृ, निर्, भर्त्स् (चु आ से) २ सापमान निस् अप-सृ (प्रे) ।
दुतरफ़ा, वि (फा दो+अ तरफ़) द्वि(द्वै)-पक्ष, द्वि(द्वै)पार्श्व, द्वि, पक्ष्य पक्षीय ।
दुधार, वि (हिं दूध) क्षीरिणी, दुग्धवती, पयस्वती, पीनोध्नी (गौ इ) ।

दुधारा, वि (स द्विधार) उभयत तीक्ष्ण निशित। स पु, खड्गभेद, *द्विधार।

दुनिया, स स्त्री (अ -या) जगत् (न), ससार २ लोक, जनता ३ जगत्प्रपञ्च।

—दार, स पु (अ + फा) गृहस्थ, गृहिन्, ससारिन्, २ व्यवहार-कुशल पटु।

—दारी, स स्त्री (अ + फा) ऐहिकता-त्व, प्रपञ्चानुराग, ससारासक्ति (स्त्री) २ लोक, आचार मार्ग, रूढि (स्त्री) ३ व्यवहार कौशलम्।

दुनियावी, वि (अ) लौकिक सासारिक ऐहिक।

दुपट्टा, स पु (हिं दो + स पट्ट >) द्विपट्ट, द्विपटी २ उष्णीष वस्त्र।

दुपहर, स स्त्री, दे 'दोपहर'।

दुपहरिया, स स्त्री (हिं दुपहर) बधु(धू)क, रक्तक, बधुजीवक २ दे 'दोपहर'।

दुब(वि)धा, स स्त्री (स द्विविधा>) सशय, सदेह २ निर्णय निश्चय, अभाव ३ सकोच ४ आशका, विचिकित्सा।

दुबला, वि (स दुर्बल दे)।

दुबलापन, स पु, दे 'दुर्बलता'।

दुबारा, क्रि वि, दे 'दोबारा'।

दुबे, स पु (स द्विवेदिन्) द्विवेद, ब्राह्मणभेद।

दुभाषिया, स पु (स द्विभाषिन्) भाषाद्वयज्ञ, द्विभाषाविद् (पु) २ व्याख्यातृ, अर्थबोधक।

दुमज़िला, वि (फा) द्वि, भूम भूमिक (प्रासाद इ)।

दुम, स स्त्री (फा) पुच्छ च्छ, लागु(गू)ल, लूम २ अनुयायिन्, अनुग ३ अन्तिम भाग।

—दार, वि (फा) सपुच्छ, लागूलिन्।

—दार सितारा, स पु, उल्का, धूमकेतु (पु), उत्पात, केतु (पु)। वि, सपुच्छ लागूलिन्।

—दबाकर भागना, मु, कापुरुषवत्-सकातर्यं पलाय् (भ्वा आ से)-निर्द (भ्वा प अ)-अपधाव् (भ्वा प से), कादिशीक (वि) भू।

दुमन, वि (स दुर्मनस्) खिन्न, विषण्ण, म्लान, अवसन्न।

दुरगा, वि, दे दो के 'नीचे'।

दुरत, वि (स) दुष्परिणाम, कुफल, दुष्फल, दुरवसान २ दुर्गम, दुरतिक्रम ३ प्रचड, उग्र ४ दुर्जेय, दुर्बोध।

दुर, अव्य (हिं दूर) अपसर-अपेहि (लोट)।

—दुर करना, मु, सन्यक्कार अपसृ (प्रे)।

दुराग्रह, स पु (स) दे 'हठ'।

दुराग्रही, वि (स -हिन्) दे 'हठी'।

दुराचरण, स पु (स न) दे 'दुराचार'।

दुराचार, स पु (स) कद्-आचार आचरणं, दुर, वृत्त-व्यवहार आचरण, दुश्, चरित चेष्टित चारित्र्य शील, अनार्यत्वम्।

दुराचारी वि (स -रिन्) दुष्ट, दुरात्मन्, पापात्मन्, पापकर्मन्, दुर्वृत्त, दुश्चरित्र, अधार्मिक पाप, खल, शठ, लपट, विषयासक्त।

दुराज, स पु (स द्विराज्य) द्विशासन, द्विराजकता।

दुरात्मा, वि (स -त्मन्) दुष्ट, पापात्मन्, दे 'दुराचारी'।

दुरुस्त, वि (फा) दे 'ठीक'।

दुरूह, वि (स) दुर्बोध, दुर्ज्ञेय, गूढार्थ, गहन, क्लिष्ट।

दुर्गंध, स पु (स) पूति (स्त्री), पूतिगध, कु-दुर्-वास।

—युक्त, वि (स) दुर पूति-गधि, दुर्-कुत्सित, पूति, गध।

दुर्ग, स पु (स न) कोट्ट (स्त्री), दे 'किला'। वि दे 'दुर्गम' (१)।
अगम्य, गहन, विषमस्थ, दुर्ग २ दुर्बोध ३ विकट।

—अधिपति, स पु (स) दुर्ग, पति पाल ईश अध्यक्ष।

दुर्गति, स स्त्री (स) दुर्दशा, दुरवस्था, २ नरक-वास भोग।

दुर्गम, वि (स) दुष्प्राप, दुरासद, दुरारोह।

दुर्गा, स स्त्री (स) रुद्राणी, चडी, दे 'पार्वती'।

दुर्गुण, स पु (स) अवगुण, दोष, व्यसन, दुर्लक्षण, कुलक्षणम्।

दुर्घट, वि (स) दुष्कर, दुस्साध्य।

दुर्घटना, स स्त्री (स) अशुभ-असगल, घटना आपात समापत्ति (स्त्री) २ विपद्-आपद्(स्त्री)।

दुर्जन, स पु (स) खल, पाप, शठ, व 'दुराचारी' के पर्यायों के पु रूप।

दुर्जनता, स स्त्री (स) दुष्टता, खलता, शठता।

दुर्जय, वि (सं) अधृष्य अजय्य, अदम्य, दुरासद, अ दुर् जेय ।

दुर्ज्ञेय, वि (सं) दे 'दुरूह' ।

दुर्दमनीय, वि (सं) दुर्दम्य, दुर्दान्त, नियम्य, दे 'दुर्जय' ।

दुर्दशा, सं स्त्री (सं) दुर्गति (स्त्री), दुरवस्था ।

दुर्दिन, सं पु (सं न) मेघाच्छन्नो दिवस २ कुदिवस काल, कुसमय समय ।

दुर्दैव, सं पु (सं न) दे 'दुर्भाग्य' ।

दुर्धर्ष, वि (सं) दे 'दुर्जय' २ उग्र, प्रचण्ड ।

दुर्नीति, सं स्त्री (सं) कुनीति (स्त्री) अन्याय, अनाचार ।

दुर्बल, वि (सं) अबल निर्बल, अशक्त, क्षीण अल्प, बल शक्ति, निस्, तेजस्सत्व २ कृश, क्षाम, क्षीण, अमांस, शात, शान ।

दुर्बलता, सं स्त्री (सं) निर्बलता, अशक्तता, अबलता २ कृशता, क्षामता ।

दुर्बुद्धि, सं स्त्री (सं) कुमति मंदधी (स्त्री) । वि, अज्ञ, मूर्ख, मंदमति ।

दुर्बोध, वि (सं) दे 'दुरूह' ।

दुर्भाग्य, सं पु (सं न) दुर्दैव, दौर्भाग्य, भाग्य, दुर्जात, दुर्गति (स्त्री), दैव, दुर्विपाक विपर्यय विपर्यास ।

दुर्भावना, सं स्त्री (सं) दुर्भाव, दुष्ट, दुष्टि भाव, असूया, द्रोह, द्वेष, दौरात्म्यम् ।

दुर्भिक्ष, सं पु (सं न) अकाल, दुष्काल, अनशन, प्रयास, आहाराभाव, नीवाक ।

दुर्मट, सं पु (सं दुर् + मुट् = कूटना) *भूकुट्टन, *दुर्मुट्म ।

दुर्मति, सं स्त्री तथा वि (सं) दे 'दुर्बुद्धि' ।

दुर्मुख, वि (सं) कटुभाषिन् २ कुदर्शन, कुरूप ।

दुर्योध, वि (सं) अजेय, अनभ्य, अगम्य, अदम्य ।

दुर्योधन, सं पु (सं) धृतराष्ट्रस्य ज्येष्ठपुत्र ।

दुर्योनि, वि (सं) हीन—नीच,—जाति—वर्ण—कुल ।

दुर्र, सं पुं (अ०), दे० 'मोती' ।

दुर्लंघ्य, वि (सं) दुस्तर, दुरतिक्रम, दुर्लङ्घनीय, दुरतिक्रम ।

दुर्लभ, वि (सं) अप्राप्य, दुष्प्राप, विरल, दुरधिगम २ अत्युत्तम, अत्युत्कृष्ट ।

दुर्वचन, सं पु (सं) दे 'गाली' ।

दुर्विनीत, वि (सं) अविनय, अविनीत, उद्धत, धृष्ट, अशिष्ट, असभ्य, वियात ।

दुर्विपाक, सं पु (सं) कुपरिणाम, कुफलम् ।

दुर्वृत्त, वि (सं) दे 'दुराचारी' ।

दुर्व्यवस्था, सं स्त्री (सं) कुव्यवस्था, कुनीति (स्त्री), दुर्णय, कुप्रणयन, कुप्रबंध, दुर्निर्वाह ।

दुर्व्यवहार, सं पु (सं) दुर्वृत्ति (स्त्री), असद्व्यवहार, अप, कार क्रिया, कुचेष्टित, कुचरितम् ।

दुर्व्यसन, सं पु (सं न) दुर्गुण, दोष, *असदासक्ति (स्त्री) ।

दुर्व्यसनी, वि (सं निन्) दुर्गुण, दोषिन्, दुराचारिन्, पाप ।

दुलकी, सं स्त्री (हिं दलकना) धौ (धौ) रितकम् ।

—चलना, क्रि अ, धौरितेन गम् ।

दुलत्ती, सं स्त्री (हिं दो + सं लत्ता >) (पश्चात्) द्विलत्ता द्विपुर द्विपाद, आघात प्रहार क्षेप ।

—मारना, क्रि स, लत्ताभ्यां प्रहृ (भ्वा प अ) आहन् (अ प अ) ।

दुलह(हि)न, सं स्त्री (हिं दुलहा) नव वधू (स्त्री), वधूटी, नवोढा, नवपरिणीता ।

दुलहा, सं पु, दे 'दूल्हा' ।

दुलाई, सं स्त्री (हिं तुलाई) दे 'रजाई' ।

दुलार, सं पु (हिं दुलारना) उप, लालन, चुंबन, आलिंगनम् ।

दुलारना, क्रि स (सं दुर्लालन >) उप, लल् (चु), आलिंग् (भ्वा प से), स्नेहेन परामृश् (तु प अ) ।

दुश्चरित्र, सं पु (सं न) दे 'दुराचार' । वि, दे 'दुराचारी' ।

दुलारा, वि (हिं दुलार) दे 'लाडला' ।

दुशाला, सं (फा) द्विशाट ।

दुश्मन, सं पु (फा) शत्रु, अरि (पु) ।

दुश्मनी, सं स्त्री (फा) शत्रुता, वैरम् ।

दुष्कर, वि (सं) दुस्साध्य, कठिन, विकट, कष्टसाध्य ।

दुष्कर्म, सं पु [सं मंन् (न)] कु,-कार्य कृत्य, पाप, अधर्म, दुष्कृति (स्त्री) ।

दुष्काल, सं पु (सं) कु,-काल समय २ दे 'दुर्भिक्ष' ।

दुष्कुल, स पु (स न) नीच हीन-कु, कुल वश ।
दुष्कृत, स पु (स न) दे 'दुष्कर्म'।
दुष्ट, वि (स) खल, शठ, पाप, दुजन अभद्र, नीच, दुर्वृत्त, दे 'दुराचारी'।
दुष्टता, स स्त्री (स) दौर्जन्य दौरात्म्य, कुचेष्टा पाप, दुर्वृत्त दे 'दुराचार'।
दुष्प्रकृति, स स्त्री (स) दुस्स्वभाव दुश्शीलम्। वि, दुःशील दुष्टस्वभाव।
दुष्प्राप्य वि (स) दे 'दुर्लभ'।
दुष्यन्त, स पु (स) पुरुवंशीयनृपविशेष शकुन्तलापति।
दुस्तर, वि (स) दुस्तरणीय दुर्लङ्घनीय २ कठिन दुष्कर विकट।
दुस्सह, वि (स) दुःसह असह्य असहनीय।
दुस्साध्य वि (स), दे 'दुःसाध्य'।
दुहना, क्रि स (स दोहन) दे 'दोहना'।
दुहरा, वि, दे 'दोहरा'।
दुहाई¹, स स्त्री (हिं दुहना) दोहन, भृति (स्त्री)-भृत्या।
दुहाई², स स्त्री (स द्वि+आह्वाय >) दे 'डौंडी' २ आश्रयनार्थं आह्वान-आकारण सबोधन ३ शपथ।
—देना, मु, स्वरक्षार्थं आ-ह्वे (भ्वा प अ) आ-क्रु (प्रे)।
दुहाना, क्रि प्रे, व 'दोहना' के प्रे रूप।
दुहिता, स स्त्री [स दुहितृ (स्त्री)] दे 'पुत्री'।
दूकान, स स्त्री, दे 'दुकान'।
दूज, स स्त्री (स द्वितीया) शुक्ला कृष्णा वा द्वितीया तिथि (स्त्री)।
—का चाँद, मु, दिवाप्रदीप, दुर्लभदर्शन।
दूत, स पु (स) वार्तासदेशहर, सदिष्ट कथक, राज-दूत प्रतिनिधि २ प्रणिधि, चर (चा) र, गूढदूत।
दूती, स स्त्री (स) सचारिका, दूति (ती) का, शम्भली, कुट्ट (ट्टि) नी, सारिका २ वार्ता सदेशहरी।
दूध, स पु (स दुग्ध) क्षीर, पयस (न), स्तन्य, ऊधस्य, उधस्य, बालजीवन २ वृक्षक्षीर-रस ३ (गौ का) गो, दुग्ध रस, गव्यम्।
—का पानी, स पु, आमिक्षामस्तु (न), मोरट।
—की झाग, स स्त्री, दुग्धफेन, शार्कर, शर्कक।
—पिलाई, स स्त्री, दे 'दाई'।
—पूत, स पु, सपद्सतती धनसतानौ (द्वि)।
—बहन, स स्त्री, *सस्तन्या, धात्रीपुत्री, धात्रेयी स्तनधयी।
—भाई, स पु *सस्तन्य, धात्रीपुत्र, धात्रेय।
—मुँहा, वि पु स्तनधय, शिशु। स्तनशोष, पायिन् प [—मुँही (स्त्री)]।
—उगलना या डालना, मु, (शिशु) दुग्ध उद्गम् (तु प से)-उद्-वम् (भ्वा प से)।
—का दूध, पानी का पानी, मु, न्याय, नय भय।
—की मक्खी की तरह निकाल फेंकना, मु, दुग्धमक्षिकावत् निरस् (प्रे), अविमृश्यैव निष्कस् (प्रे)।
—के दाँत न टूटना, मु, शैशवे वर्तमान।
—छुडाना या बढाना, मु, स्तन्य हा (प्रे, हापयति)-त्यज् (प्रे)।
दूधों नहाना पूतों फलना, मु, धनसतानै वर्ध् (भ्वा आ से)।
—पिलाना, मु, स्तन-स्तन्य पा पे (प्रे, पाययति, धापयति) दा।
—फटना, मु, (अम्लादियोगेन) दुग्ध विकृ (कर्म) अथवा नीरक्षीरे वि श्लिष् (दि प अ)।
दूधिया, वि (हिं दूध) शुक्ल, श्वेत, दुग्धवर्ण।
—पत्थर, स पु (स) *दौग्धप्रस्तर, श्वेत पस्तरभेद।
दूना, वि (स द्विगुण) द्विगुणित।
दूब, स स्त्री (स दूर्वा) भार्गवी, हरिता, अनता।
दूबदू, क्रि वि, (फा दो या फा रूबरू) मुखामुखि (अव्य), समुखम्।
दूबे, स पु, दे 'दुबे'।
दूभर, वि (स दुभर>) कठिन, दुस्साध्य।
दूरदेश, वि (फा) दे 'दूरदर्शी'।
दूरदेशी, स स्त्री (फा) 'दूरदर्शिता'।
दूर, क्रि वि (स दूर) दूरे, आरात् (अव्य),

वि , दूरत । वि , दूर दूरस्थ, विप्रकृष्ट, अंतर वर्तिन्, दवीयस् ।
—दराज, वि (फा) सु-अति दूर दूरस्थ ।
—दर्शक, वि (स) दे 'दूरदर्शी' ।
—दर्शन, स पु (सं) पण्डित , धीमत्, बुद्धिमत्, प्राज्ञ २ गृध्र , वज्रतुंड ३ दूरवीक्षण, दूर–दर्शक–यन्त्रम् ।
—दर्शिता, स स्त्री , (सं) दूर-दर्शि, दृष्टि (स्त्री) दर्शित्व, बुद्धिमत्ता, अग्रनिरूपण, दूरदर्शनम् ।
—दर्शी, वि (स शिन्) दूर दोष-अग्र,-दृष्टि दर्शिन्-दर्शक, बुद्धिमत् ।
—दृष्टि, स स्त्री (स) दे 'दूरदर्शिता' ।
—बीन, स स्त्री (फा) दूरवीक्षण, दूरदर्शकयन्त्रम् ।
—वर्ती, वि (स र्तिन्) दे 'दूर' वि ।
—वासी, वि (स सिन्) दूरदेशीय २ विदेशीय ।
—वीक्षण, स पु (स न) दे 'दूरबीन' ।
—स्थ, वि (स) दे 'दूर' वि ।
—करना, मु , दूरी-पृथक् कृ २ पदात्-अधिकारात् अवरुह् च्यु भ्रंश् (प्रे) ।
—भागना या रहना, मु , दूरे-पृथक् स्था (भ्वा प अ), सगति परि हृ (भ्वा प अ) ।
—हो, अव्य अपेहि-अपगच्छ (लोट्) ।
—होना, मु , दूरी-पृथक् भू २ नश् (दि प वे) ।
दूरी, स स्त्री (स दूर>) दूरता-त्व, विप्रकर्ष, दूरं २ (स्थान) अंतर, अंतरालं, अध्वन् (पु) भूमि (स्त्री) ।
दूर्वा, सं स्त्री , दे 'दूब' ।
दूल्हा, स , पु (स दुर्लभ >) वर , परिणेतृ, पाणिग्राहक , परिग्रहीतृ (पु) ।
—दुल्हन, सं पु , वधूवरौ (द्वि) ।
दूषक, स पु (स) अपवादक , परिवादक, अभियोगिन्, अभियोक्तृ, दोषारोपक २ दुष्ट, दुर्वृत्त । वि दोष–पाप –जनक २ अपराधिन्, दोषिन् ३ निन्द्य, कुत्सित ।
दूषण, स पु (स न) दोष , अवगुण , दुर्व्यसनं (स पु) रावणभ्रातृविशेष ।
दूषित, वि (स) सदोष, दोषिन्, कल्मषवत् २ (मिथ्या) निंदित-कलंकित-अभियुक्त ।
दूसरा, वि (हिं दो) द्वितीय [-या (स्त्री)] २ अन्य, पर, अपर, अपरिचित ।
दूसरे दिन, क्रि वि , पराह्णे, परेद्यु अन्येद्यु (अव्य) ।
दूसरी माँ, सं स्त्री , विमातृ (स्त्री) ।
दृक्, दृग, सं स्त्री (स दृश्) दे 'आँख' २ दृष्टि (स्त्री) ।
दृग्विष, स पु (सं) विषाक्त,-नेत्र नयन, सर्पभेद ।
दृग्वृत्त, सं पु (स न) क्षितिजं, दिगन्त ।
दृढ़, वि (स) प्रगाढ, शैथिल्यशून्य २ कठोर, पीवन, कर्कश ३ सबल, बलवत् ४ स्थावर, स्थिर ५ ध्रुव, अविचल ६ आग्रहिन्, सनिर्बंध ।
—प्रतिज्ञ, वि (स) प्रतिज्ञापालक, स्थिरप्रतिज्ञ, सत्य, सत्य अभिसंध सगर ।
—मुष्टि, वि (स) कृपण, मितपच ।
दृढ़ता, सं स्त्री (सं) प्रगाढता, शैथिल्याभाव २ स्थैर्य, अचलत्व, स्थिरता ३ आग्रह निर्बंध ।
दृढ़ांग, वि (सं) बलवत्, शक्तिमत्, दृढदेह, हृष्टपुष्ट । [–गी (स्त्री)=शक्तिमती] ।
दृश्य, वि (सं) दृग्गोचर, नेत्रदृष्टि, विषय ग्राह्य २ दर्शनीय, अवलोकनीय, सुंदर । स पु (स न) दृष्टि, गोचर पथ विषय २ रूपकं, नाटकं ३ दे 'तमाशा' ।
दृश्यमान, वि (सं) दृश्यमाण अवलोक्यमान ।
दृष्ट, वि (स) वि-अव , लोकित, वि , ईक्षित, निरूपित, लक्षित २ ज्ञात, प्रकट ।
दृष्टांत, स पु (सं) उदाहरणं, निदर्शनं २ अर्थालंकारभेद ।
दृष्टि, स स्त्री (स) दृक्शक्ति (स्त्री), नेत्र, नयन,-ज्योतिस् (न) २ दृक्पात , अवलोकन ३ आशा ४ विचार ५ आशय , अभिप्राय ।
—कूट, सं पु (स दृष्टकूट) प्रहेलिका २ गूढार्थकविता ।
देखना, क्रि सं (सं दृश्) दृश् (भ्वा प अ) वि-प्र, ईक्ष् (भ्वा आ से), अव आ वि लोक् (भ्वा आ से , चु), आलोच् (भ्वा आ से , चु), निरूप् निवर्ण्-कल् (चु), मन् (चु आ से), २ अव-निर्-परि इक्ष् ३ अन्विष् (दि प से), ४ रक्ष् (भ्वा प से), रक्षां कृ ५ विचर् (प्रे) ६ अनुभू ७ पठ् (भ्वा प से)

८ मद्युप (प्रे)। सं पु, दर्शन, निरीक्षण, वीक्षण, निरूपण इ ।

—भालना, मु, निरीक्षण, परीक्षण, निभालन निर्वर्णनम् ।

—सुनना, मु, बोधन, वेदन परि वि ज्ञानम् ।

देखते देखते, मु, समक्षमेव २ सर्वा-ज्ञातिनि ।

देखने में, मु, आपातत, बहिः, प्रत्यक्षत २ आकृत्या, आकारेण ।

देखने योग्य, वि, दे० 'दर्शनीय' ।

देखनेवाला, स पु, दर्शक, द्रष्ट (पु), वीक्षक निरूपक इ ।

देखभाल, देखाभाली, सं स्त्री (हिं देखना + भालना) कार्यदर्शनं, अवेक्षणं निरीक्षणं पर्यवेक्षणं २ दर्शन, साक्षात्कार ।

देखरेख, स स्त्री (हिं देखना+स प्रेक्षण>) दे 'देखभाल' (१) ।

देखादेखी, स स्त्री (हिं देखना) दर्शन, विलोकनम् । क्रि वि, अनुकृत्या, अनुसृत्या, गतानुगतिकतया (सब तृतीया एकवचन) ।

देखा हुआ, वि, दृष्ट, निरूपित, निर्वर्णित, निभालित ।

देग, सं स्त्री (फा) पिठर २, बृहत्स्थाली ।

देगचा, स पु (फा) स्थाली, पिठरक -कम् ।

देगची, स स्त्री (फा देगचा) उखा, पिठरी, लघुस्थाली ।

देदीप्यमान, वि (स) अत्यन्तमतत भास मान-भ्राजमान-द्योतमान, अति,-तेजस्विन्-भासुर ।

देन, स स्त्री (हिं देना) दान, वितरण २ प्रीति,-दान, उपहार, उपायन, प्रदत्तवस्तु(न)।

—दार, सं पु (हिं +फा) दे 'ऋणी'

—लेन, सं पुं, कुसीद, वौसीद, वृद्धिजीवन = लानादान ने (क्रि) ।

देना, क्रि स (सं दान) दा (जु उ अ), दा (भ्वा प अ, यच्छति), उद्-वि-सृज् (तु प अ) विश्रण् (चु), दद (भ्वा आ से) ऋ (प्रे, अर्पयति) २ (थप्पड़ आदि) प्रहृ (भ्वा प अ), आहन् (अ प अ) ३ (किवाड आदि) (अ)पिधा (जु उ अ) । सं पु, अर्पण, प्रतिपादन, विश्राणनं, ददनं, उत्-वि सर्जन, दे 'दान' (१-२) ।

२०

देने योग्य, वि, देय, दानीय, दातव्य, विश्राणनीय, अर्पणीय, दानार्ह ।

देनेवाला, सं पुं, दातृ (पु), त्यागिन्,-द, प्रद-दायक-दायिन् (उ सुग,-द-दायक इ) २ दे 'दाता' ।

दिया हुआ, वि, दत्त, अर्पित, विसृष्ट, विश्राणित ।

दे मारना, मु, दे 'पटकना' ।

देय, वि (सं) दे 'देने योग्य' ।

देर, स स्त्री (फा) विलम्ब, अतिकाल, काल -अतिपात -क्षेप -यापन-व्याक्षेप २ समय, काल ।

—करना या लगाना, क्रि अ, वि-लम्ब् (भ्वा आ से), काल अतिपत् (प्रे)-व्याक्षिप् (तु प अ) ।

—तक, क्रि वि, चिराय, चिर यावत्, चिर कालान्तम् ।

—से, क्रि वि, चिरात्, चिरेण, विलम्बेन, विलम्बात्, चिर,-कालेन-कालात् ।

—होना, क्रि अ, विलंब्-व्याक्षिप् (कर्म) वेला अतिक्रम् (भ्वा प से), विलम्बो जन् (दि आ से) ।

देरी, स स्त्री, दे 'देर' (१-२) ।

देव¹, स पु (फा) दैत्य, दानव, राक्षस ।

देव², सं पु (स) देवता, दैवत, अमर, अमर्त्य, सुर, अस्वप्न, त्रिदिवेश, दिवौकस् (पु) निर्जर, विबुध, वृंदारक, सुमनस् (पु) २ ईश्वर ३ मित्र, आर्य, पूज्यपुरुष ४ मेघ ५ ज्ञानेंद्रिय ६ ब्राह्मण ।

—गिरि, स पु (स) रैवतकपर्वत २ नगर विशेष ।

—दारु, सं पुं, (स पु न) दे 'दियार' ।

—दासी, स स्त्री (स) वेश्या, वेशवनिता २ मंदिर-देव, नर्तकी ।

—देव, सं पु (स) ईश्वर २ इन्द्र ।

—नागरी, स स्त्री (सं) लिपिविशेष ('अ' से 'ह' तक अक्षर) ।

—पूजा, स स्त्री (स) प्रतिमापूजनं २ ईश्वरार्चनम् ।

—भूमि, स स्त्री (स) स्वर्ग, नाक ।

—मंदिर, सं पु (स न.) देव, गृहं भवनं-स्थान आलय ।

—लोक, स पु (स) स्वर्ग ।
—वाणी, स स्त्री (स) देवभाषा, संस्कृतम् ।
देवकी, स स्त्री (स) श्रीकृष्णचन्द्रजननी, देवकात्मजा ।
—नन्दन, स पु (स) श्रीकृष्ण ।
देवता, स पु (स स्त्री) दे 'देव' (१,३,५,६)।
देवत्व, स पु (स) सुरत्व, अमरत्व ।
देवन, स पु (स) अक्ष सार, शार, पाशक । (स न) कान्ति दीप्ति (स्त्री) २ अक्षद्यूत क्रीडा ३ क्रीडा, विनोद ४ प्रमोदवाटिका ।
देवना, स स्त्री (स) धूतम् २ क्रीडा ३ शोक ।
देवर, स पु (सं) देवृ (पु), देवल, देवार, देवान, तुरागाव, पत्युरनुज २ पतिभ्रातृ (पु छोटा या बड़ा)।
देवरानी, स स्त्री (स देवर >) यातृ (स्त्री), देवरपत्नी, जा ।
देवल, सं पु (स) देवाजीव, देवपूजोप जीविन् २ नारद ३ स्मृतिकारर्षिविशेष । हिं, देवालय मन्दिरम् ।
देवाङ्गना, स स्त्री (स) दे 'अमराङ्गना'।
देवालय, स पु (स) स्वर्ग २ मंदिरम् ।
देवी, स स्त्री (सं) देवपत्नी सुराङ्गना २ दुर्गा, पार्वती ३ ब्राह्मणी ४ पतिव्रता ५ पट्ट, महिषी राज्ञी ।
देश, सं पु (स) जनपद, विषय, भूभाग, नीवृत, उपवर्तन, प्रदेश २ राष्ट्र ३ स्थान, स्थल ४ रागभेद ।
—निकाला, सं पु, (स्वदेशात्) प्रनिरवि, वासनं-वास, प्रवासनम् ।
—भाषा, सं स्त्री (स) उपप्राकृत प्रादेशिक, भाषा ।
देशान्तर, स पु (स न) अन्यविषर,-देश २ लम्बांश, देशान्तर (तूल्दल्द)।
देशाचार, स पु (स) देश, धर्म-व्यवहार-रीति (स्त्री)।
देशाटन, स पु (स न) भू-यात्रा भ्रमण-पर्यटनम् ।
देशी, सं स्त्री (सं देशीय) देश्य, देशिक स्वदेश ३ उत्पन्न ।
देस, देसी स पु तथा वि, दे 'देश' तथा 'देशी'।
देसावर, स पु, दे 'दिसावर'।
देह, स पु (सं) काय, दे 'शरीर' २ अवयव, अंग ३ जीवनम् ।
—पात, स पु (स) मृत्यु (पु)।
देहरा, स पु (स देव + हिं घर) देवालय, मन्दिरम् ।
देहली, स स्त्री (स) दे 'दहलीज' २ इन्द्रप्रस्थं, देहली, दिल्ली ।
देहवत, देहवान्, वि (स देहवत्) दे 'देही'।
देहांत, सं पु (स) मृत्यु (पु) निधनं, मरणम् ।
देहात, सं पु (फा) दे 'ग्राम'।
देहाती, वि (फा देहात) दे 'ग्रामीण'।
देही, वि (स देहिन्) प्राणिन्, देहवत्, शरीरिन्, तनु धारिन् भृत । स पु, (सं) जीव, आत्मन् (पु), जीव, प्रत्यगात्मन् (पु)।
दैत्य, सं पु (सं) राक्षस, दानव, निशाचर ।
—गुरु, स पु (स) शुक्राचार्य ।
—पति, स पु (स) हिरण्यकशिपु ।
—माता, स पु (स तृ) दिति (स्त्री)।
दैत्यारि, सं पु (स) विष्णु २ देव ।
दैनिक, वि (स) प्रात्यहिक आह्निक [-की (स्त्री)], दैनंदिन [-नी (स्त्री)] २ नैत्यक नैत्यिक [-की (स्त्री)]। सं पुं, दे 'दैनिकी'।
दैनिकी, सं स्त्री (स) दिन-वेतनं भृति (स्त्री)।
दैव, स पु (सं न) भाग्य, अदृष्ट, नियति (स्त्री), भागधेय, भवितव्यता, दिष्ट, प्रक्तन, विधि (पु), प्रारब्ध २ ईश्वर ३ आकाश शाम । वि, दिव्य, सौर, अमानुष, अपौरुष, ईश्वर, अलौकिक (स्त्री, दे 'दैवी')।
—गति, सं स्त्री (सं) दैवघटना, भाग्य तर्क २ दे 'दैव' (१)।
—दुर्विपाक, सं पु (सं) दैवकोप, दौर्भाग्योदय ।
—योग, सं पु (सं) यदृच्छा, दैव, गति (स्त्री)-घटना ।
—वश, क्रि वि (स तः) दैवात्, दैववशात् दैवयोगात्, अकस्मात्, यदृच्छया ।

देवी, वि स्त्री (सं) आकस्मिकी, यादृच्छिकी अलौकिकी अमानुषी, नश्वरी अपार्थिवी।

दैहिक, वि (सं) शारीरिक कायिक-दैहिक [-की (स्त्री)]।

दो, वि (सं द्वि) द्वौ (पु) द्वे (स्त्री, न) द्वयं, द्वितय-युग्म (उ दो मास मासद्वय इ)।

—अन्नी, स स्त्री, द्वयाणी।

—अर्थी, वि द्व्यर्थ द्व्यर्थक श्लिष्ट २ संदिग्ध।

—आब सं पु (फा) *द्वयापम्।

—गला, स पु (फा) सकरज मिश्रज, विजात मास्रिक, वर्णसंकर।

—चन्द, वि (फा) द्विगुण द्विगुणित।

—चित्ता, वि दे दुचित्ता'।

—तल्ला, वि दे 'दुमंजिला'।

—तारा, सं पु *द्वितार वाद्यभेद।

—धारा, वि दे दुधारा'।

—नाली, वि, द्विनाली (तुपुरी आदि)।

—पहर, स स्त्री मध्याह्न मध्याह्नकाल, मध्य (ध्य)दिन, उद्दिन।

—पर्त, वि, द्विरावृत्त, द्विरावर्तित, द्विगुण, द्विगुणित।

—पहर का, वि, माध्याह्निक [–की (स्त्री)] माध्यंदिन [–नी (स्त्री)]।

—पहर पहिले, क्रि वि, अर्वाक् मध्याह्नात् (अ म -A M) प्राह्णे, पूर्वाह्णे।

—पहर ढले, क्रि, वि, पश्चान्मध्याह्नात् (प म -P M), अपराह्णे, विकाले।

—पाया, वि, द्विप(पा)द ,द्विपाद(पु)(मनुष्य)।

—बारा, क्रि वि (फा) द्विः, द्विवारं, पुनः (सब अव्य)।

—भाषिया, स पु, दे 'दुभाषिया'।

—महला, मंजिला, वि, दे 'दुमंजिला'।

—मानी वि, दे 'दोअर्था'।

—मुँहा, वि, द्विमुख, द्विवदन, २ छलिन्, दाम्भिक। स पु, द्विमुख सर्प, सर्पभेद।

—रंगा, वि, द्विरंग, द्विवर्ण २ दाम्भिक।

—रंगी, स स्त्री दम्भ, द्वैध, प्रतारणा।

—राहा, स पु, द्विपथ, चतुष्पथ।

—रुडा, स पु, *द्विमूत्रक।

—साला, वि, द्विवार्षिक द्वैवार्षिक (-की स्त्री) द्विवर्षीण, द्विवर्ष।

—सूती, स स्त्री, *द्विसूत्री।

—सेरी, स स्त्री, द्विसेरका द्विसेरी।

—हत्थड़, स पु, करयुगलाघात, द्विहस्तप्रहार।

—हत्था, क्रि वि कराभ्यां हस्तद्वयेन (तृ)।

—गुफ,-चार, सु, वर्तापिय, वति, विद्वत्न।

—करना, मु, द्विधा द्विखण्डी कृ समभागद्वयेन विभज (भ्वा प अ)।

—कौड़ी को चीज, [redacted], तुच्छ क्षुद्र अल्पमूल्य पदार्थ।

—घड़ी मु, कश्चित् काल समय अल्पसमय यावत्।

दोज़ख़, स पु (फा) न(ना)रक निरय।

दोज़ख़ी, वि (फा) नारकिन्, नारकीय, नारकिन्-नारक [की (स्त्री)]।

दोना, स पु (सं द्रोण>) *द्रोण, पत्र पर्ण, पुट पुटक।

दोनों, वि (हिं दो) उभौ (पु) उभे (स्त्री न), उभय (प्राय एक या बहु में, कभी द्विवचन में भी), द्वौ अपि (पु), द्वे अपि (स्त्री न)।

दोला, स स्त्री (सं) दोली, हिंदोला, प्रेंखा झूला।

—यन्त्र, स पु (सं न) दे 'दोला' २ वक्र भस्मान-यन्त्रम्।

—युद्ध, स पु, (स न) संदिग्धपरिणाम युद्धम्।

दोलायमान, वि (स) इतस्ततः विचलत् (-अन्तं), प्रेंखत् (-अन्तं)।

दोष, स पु ([redacted]) न्यूनता, विकलता, छिद्र, विकार २ पाप, पातक ३ लाञ्छन, कलङ्क, अभियोग ४ अपराध, दोष ५ रसदोषादय काव्यदोषा (सा) ६ प्रदोष, रजनीमुखम्।

—लगाना, क्रि स दुष (प्रे, दूषयति), अभि-युज (रु आ अ, चु), कलङ्कयति (ना धा), दोष क्षिप (तु प अ)-आरुह् (प्रे, आरोपयति), निंद (भ्वा प से)।

—कर, वि (स) अनिष्ट अहित हानि, कर कारिन्-कार।

—ग्राही, वि (स ग्रहिन्) दुष्ट, खल, दुर्जन।

—घ्न, स पु (स न) वातपित्तकफनाशक औषधम्।

—ज्ञ, वि (सं) प्राज्ञ, विद्वस्।

—त्रय, स पु (स न.) वातपित्तकफदोषा, दोष-त्रित्रयी।

—दृष्टि, वि (स) दोषैकदृश, छिद्रक, पुरोभागिन्, छिद्रान्वेषिन् ।

दोषी, वि (स दोषिन्) सदोष, दोषवत्, अपराधिन्, प्रमादिन् २ पाप, पापिन् ३ अभियुक्त, दण्ड्य कृतापराध ४ व्यसनिन् कुमार्गगामिन् ।

दोस्त, स पु (फा) सखि (पु), दे 'मित्र' ।

दोस्ताना, स पु, **दोस्ती**, स स्त्री (फा) सौहार्द्य, दे 'मित्रता' ।

दोहता, स पु, दे 'दौहित्र' ।

दोहती, स स्त्री, दे 'दौहित्री' ।

दोहद, स पु (स पु न) गर्भण्यभिलाष, लालसा, श्रद्धा, दौर्हृद, दौहृदम् ।

—वती, सं स्त्री, लालसावती गर्भिणी, श्रद्धालु (स्त्री) ।

दोहन, स पु (स न) स्तन्य-उधस्य उधस्य निःसारण निष्कर्षण निस्सारण २ दे 'दोहनी' ।

दोहना, क्रि स (स दोहन) दुह् (अ प अ, द्विकर्म) स्तन्य निस्सृ-सृ (प्रे) । स पु, दे 'दोहन' ।

दोहनी, स स्त्री (स) दोहन-दुग्ध, पात्र, दोहन, दोह, पारी, सेचनम् ।

दोहने योग्य, वि दोग्धव्य, दोह्य ।

दोहनेवाला, स पु, दोग्धृ (पु), दोहक ।

दोहर, स स्त्री (हिं दो) द्विस्तरी ।

दोहरा, वि पु (हिं दो) द्विरावृत्त, द्विरावृत्त २ द्विगुण, द्विगुणित ।

—करना, क्रि स, द्विपुटी कृ [illegible] आवृत (प्रे), द्विगुणयति (ना धा) २ द्विगुणी कृ, द्विगुणयति (ना धा) ।

दोहराना, क्रि स (हिं दोहरा) पुन द्विकथ् (चु)-[illegible] (भ्वा प से)-[illegible] (भ्वा प अ) २ मुहु द्वि कृ या अनुष्ठा (भ्वा प अ) आचर (भ्वा प से), अभ्यस् (दि प से) ३ पुन द्वि रूप (भ्वा आ से) विचर् (प्रे), संपुर् (प्रे) ।

दोहराव, स पु (हिं दोहराना) पुनर्वीक्षण, संशोधन २ पुनरुक्ति (स्त्री), पौनरुक्त्य, पुनर्-वचन-वाद ।

दोहा, स पु (हिं दो) हिंदी-छन्दोभेद ।

दौड़, सं स्त्री (हिं दौड़ना) धावनं पलायन, द्रवणं, विद्रव, द्रुत-गमनं-गति (स्त्री), २ आक्रमण (३ -) गति उद्योग-बुद्धि, सीमा ।

—धूप, स स्त्री, घोर कठोर, प्रयास परिश्रम उद्योग-उद्यम ।

—धूप करना, मु, अत्यंत आयस परिश्रम् (दि प से) प्रयत् (भ्वा आ से) ।

दौड़ना, क्रि अ (स धोरण) धोर् (भ्वा प से) द्रु (भ्वा प अ) धाव् (भ्वा प स) द्रुत सवेग शीघ्र गम् २ सतत-अत्यधिक प्रयत् (भ्वा आ से)-परि श्रम् (दि प से) ३ सहसा प्रवृत् (भ्वा आ से) ४ पलाय (भ्वा आ से) । स पु, दे 'दौड़' ।

दौड़नेवाला, स पु, धावक, धोरक, शीघ्रगामिन् ।

दौड़ाना, क्रि स, व 'दौड़ना' के प्रे रूप ।

दौर दौरा, स पु (अ+हिं) आधिपत्य, शासन, प्रभुत्व, स्वामित्व, ईशत्व वश शम् ।

दौरा, स पु (अ दौर) पर्यटन, परिभ्रमण २ [illegible] ३ अधिकारिणो निरीक्षणार्थं भ्रमणं ४ रोगादे आवृत्ति आवर्तनं सामयिकाक्रमणम् ।

—करना, क्रि अ परिभ्रम्-पर्यट (भ्वा प से), स्वमण्डल निरीक्षितु परिभ्रम् ।

—सुपुर्द करना, मु, अभियोग [illegible] प्रेष् (प्रे) ।

दौरात्म्य, स पु (सं न) दुष्टता, खलत्वम् ।

दौर्जन्य, स पु (स न) दुर्जनता, दुष्टता ।

दौर्बल्य, स पु (स न) दुर्बलता, क्षामता ।

दौर्भाग्य, स पु (स न) दे 'दुर्भाग्य' ।

दौलत, स स्त्री (अ) धन, संपद् (स्त्री) ।

—खाना, स पु (अ+फा) गृह आ निवास ।

—मंद, वि (अ+फा) धनिन्, सधन ।

—मंदी, स स्त्री (अ+फा) धनाढ्यता, समृद्धि (स्त्री) ।

दौवारिक, स पु (स) दे 'द्वारपाल' ।

दौष्कुल, वि (सं) क्षीण-नीच कुल, कुत्सित वर्ण-[illegible] ।

दौष्ट्य, स पु (स न) दुष्टता खलता, दुर्जनता ।

दौष्यन्ति, स पु (स) दुष्यन्तपुत्र भरत ।

दौहित्र, स पु (सं) दुहितृ-पुत्र-तनय ।

दौहित्री, स स्त्री (स) दुहितृ-पुत्री तनया

द्यु, स पु (स न) दिन २ आकाश ३ ३ स्वर्ग। स पु, अग्नि।
—लोक, स पु (स) स्वर्ग।
द्युति, स स्त्री (स) कांति-दीप्ति (स्त्री), आभा, प्रभा २ लावण्य, सौन्दर्य, शोभा छवि (स्त्री) ३ किरण, रश्मि (पु)।
द्युतिमन्त, वि (स -मत्) कांतिमत् दीप्तिमत्, भासुर, भास्वर।
द्यूत, स पु (स पु न) अक्षवती, कैतव, पण।
—कर, स पु (स) कितव, धूर्त दुरोदर अक्षदेविन, द्यूतकृत्।
—कार, स पु (स) सभि (भी) क २ दे 'द्यूतकर'।
द्योतक, वि (स) प्रकाशक द्योतकार, उद्भासक २ ज्ञापक, व्यापक।
द्रव, स पु (स) द्रवण, स्रवण, क्षरण, गलन, वहन, अभि नि, स्य (ष्य) दन २ रस (स्त्री) व, प्रवाह, प्रस्रव, धार रा ३ धावन, पलायन ४ वेग, जव ५ आसव ६ रस ७. परिहास ८ द्रवत्व ९ द्रव, द्रव्य पदार्थ। वि, तरल, द्रव, प्रवाहिन, २ आर्द्र, क्लिन्न, उन्न, ३ विलीन, विद्रुत, द्रवीकृत।
द्रवीभूत, वि (स) दयादिभि आर्द्रीभूत अभिष्यदित, दयालु, कृपालु। २ विलीन, विद्रुत।
द्रवत्व, स पु (स न) द्रवता, द्रवभाव, प्रवाहधर्म, रसता, तरलत्वम्।
द्रव्य, स. पु (स न) पदार्थ, वस्तु (न) २ भूम्यादयो नव पदार्था ३ उपादानकारण, सामग्री ४ धन, वित्तम्।
—संचय, स पु (स) धनसंग्रह।
द्रव्यार्जन, स पु (स) धनोपार्जन, वित्तार्जनम्।
द्राक्षा, स स्त्री (स) रसाला, प्रियाला, गुच्छफला, दे 'दाख'।
द्रुत, वि (स) विलीन, विद्रुत, द्रवीकृत भूत, अवदीर्ण २ शीघ्र, क्षिप्र, त्वरित, सत्वर ३ पलायित। क्रि वि, आशु, झगिति।
—गामी, वि (स मिन्) आशुग, शीघ्रगामिन, द्रुतगति।
द्रुम, स पु (स) पादप, तरु (पु), वृक्ष।
द्रोण, स पु (स पु न) प्राचीनपरिमाणभेद (४ सेर, १६ सेर या ३२ सेर) घट, कलश, उन्मान, अर्मण, उल्वण। स पु द्रोणाचार्य २ काष्ठकलश ३ द्रुममयो रथ ४ काक, कृष्णद्रोण-वृक्ष-काक ५ दे दोना' ६ जीरा।
द्रोह, स पु (स) अहित-अनिष्ट, चिंतन वैर, वि, द्वेष, अपचिकीर्षा जिघांसा, स्पर्धा, अहित-अनर्थ, इच्छा।
द्रोही, वि (स द्रोहिन्) अहित अनिष्ट-अनर्थ, चिंतक विनाशक, मत्सरिन्, अभ्यसूयक।
द्वन्द्व, स पु. (स न) मिथुनम्।
द्वंद्व, द्वन्द्व, स पु (स द्वंद्व) द्वय, द्वितय, युगल, युग्म, युग, यमल, युगल २ मिथुन, जाया पत्नी, दंपती ३ परस्परविरोधिपदार्थौ (उ. शीत-उष्ण, सुख-दुःख इ) ४ रहस्यं ५ कलह, उपद्रव ६ द्वंद्वयुद्ध ७ संशय ८ संभ्रम, समोह ९ कष्ट। स पु, समासभेद (व्या)।
—चारी, स पु (स चारिन्) दे 'चकवा'।
—युद्ध, स पु (स न) मल्लद्वयीर, युद्धम्।
द्वादशी, स स्त्री (स) शुक्ला कृष्णा वा द्वादशी तिथि (स्त्री.)।
द्वापर, स पु (स पु न) तृतीययुग (८६४००० वर्ष) २ संदेह।
द्वार, स पु (स न) द्वार् (स्त्री) प्रति (ती) हार २ उपाय, साधनम्।
—चार, स पु (स द्वाराचार) वधूगृहद्वारे करणीया विशिष्टरीति (स्त्री)।
—पाल, स पु (स) द्वा( )स्थ, द्वारस्थ, द्वारिक, दौवारिक, प्रति(ती)हार (-री स्त्री)।
द्वार(रि)का, स स्त्री (स) द्वारा(र)वती, तीर्थविशेष।
द्वारा, अव्य (स) द्वारेण, साधनेन, कारणेन, हेतुना। (हिं प्राय इसका अनुवाद तृतीया से करते हैं)।
द्वि, वि (स) दे 'दो'।
—जकार, स पु (स) काक, वायस २ कोक, चक्र।
—गुण, वि (स) द्विगुणित।
—पद, वि (स) द्विपद्, द्विचरण।
द्विज, वि (स) द्विजात, द्विरुत्पन्न, द्विजन्मन्। स पु, ब्राह्मणक्षत्रियवैश्या २ खग, अण्डज ३ दंत ४ ब्राह्मण ५ चंद्र।

—दास, स पु (स) शूद्र म०।
—पति, स पु (स) ब्राह्मण २ गरुड़ ३ चंद्र।
—प्रिया, स स्त्री (स) सोमलता।
—बधु, स पु (स) कर्महीन द्विज।
—राज, स पु (स) ब्राह्मण २ चंद्र।
द्वितीय, वि (स) द्वितीय संख्या (पु न स्त्री) २ गौण अवर।
द्वितीया, स स्त्री (स) शुक्ला कृष्णा वा द्वितीया तिथि (स्त्री)।
द्विधा, अव्य (स) प्रकारद्वयेन, द्विप्रकार २ द्विभागशः (अव्य), द्विराश्यो (सप्तमी)।
द्विविध, वि (स) द्विप्रकारक। त्रि वि दे 'द्विधा'।
द्वीप, स पु (स पु न) जलवेष्टितभूमि (स्त्री)।
द्वेष, स पु (स) वैर, शत्रुता मात्सर्य, विरोध, दुर्भाव।
द्वेषी, वि (स विन्) विरोधिन्, वैरिन् अहित, विपक्ष। स पु, अरि, शत्रु, रिपु द्वेष्टृ।
द्वैत, स पु (स न) द्वित्वं, द्विता, द्वैत, द्वैध २ द्वैतवाद (दर्शन) ३ भेदभाव।
—वाद, स पु (स) जीवब्रह्मपृथक्त्ववाद २ देहदेहिपृथक्त्वसिद्धान्त।
—वादी, स पु (स दिन्) द्वैतिन्।
द्वैधीभाव, स पु (स) संशय निश्चय मत २ दल ३ उपायविशेष (राजनीति)।
द्वैपायन, स पु (सं) श्रीवेदव्यास।
द्व्यणुक, स पु (स) परमाणुद्वयमेल द्रव्यम्।

ध

ध, देवनागरीवर्णमालायाः एकोनविंशो व्यञ्जनवर्णः धकार।
धधरा, स पु (हिं धधा) दंभ, कपट, माया।
धंधा, स पु (स धनधान्य>) आजीव, आजीव जीविका, जीवसाधन, वृत्ति (स्त्री) २ उद्यम, व्यवसाय।
काम—, स पु, दे 'धंधा'।
गोरख—, स पु, मोहकर आतिजनक, व्यापार।
धँसना, क्रि अ (स दशन>) आप्र विश् (तु प अ) निविश् (तु आ अ), निर्, भिद् (रु प अ), व्यध् (दि प अ), दे 'गड़ना'।
धँसाना, क्रि स, व 'धँसना' के प्रे रूप।
धँसाव, स पु (हिं धँसना) निप्रवेश वेशन, वेध घनम्।
धक¹, स स्त्री (अनु) हृदयद्वद्कम्प, स्पंद स्फुरण २ हृत्पदशब्द।
धक², स स्त्री (देश) उद्दीप्तेच्छा लघुयूका।
धकधकाना, क्रि अ (अनु) दे 'धड़कना'।
धकेलना, क्रि स (हि धका) (कर्तादिभि) प्रणुद् प्रेर प्रचल् प्रग्र् (प्रे) प्रचुद् (चु)।
धकेलू, स पु (हिं धकेलना) प्रणोदक, प्रचालक, प्रेरक, प्रचालक, अपसारक।
धकमधका, स पु (हि धका) अन्योन्यपर स्पर, मर्दन, समाघात, संघर्षण, अभिसपात।
धक्का, स पु (अनु धक् अथवा स धक्क=नाश करना>) अपसारणा, प्रचालना, प्रेरणा, प्रचोदना, संघर्ष, आघात, मर्दन २ संताप, क्लेश ३ आपद् विपद (स्त्री)।
—खाना, क्रि अ, अपसार् प्रेर प्रचाल् प्रणोद (कर्म)।
—देना, क्रि स दे 'धकेलना'।
—लगाना, मु, विपदा अभिउपद्रु (कर्म)।
धचका, स पु (अनु) लघु प्रहार आघात, दे 'धक्का'।
धज, स स्त्री (स ध्वज>) अलंक्रिया, सज्जा, भूषा २ आकार, आकृति (स्त्री), छवि (स्त्री) ३ हावभावो (द्वि) ४ वसनं, शोभम्।
धजीला, वि (हिं धज) दे 'सजीला'।
धज्जी, स स्त्री (स धजी) वस्त्रखण्ड, पत्र पट्टी २ पट्टवर, चीरम्।
—धज्जियाँ उड़ाना, मु छिद् (प्रे), खंड् (चु) २ निर्दय निष्ठुर तीव्र प्रह (भ्वा प अ) हन (अ प अ)।
धड़ग, वि (हिं धड़+अंग) नग्न, दे 'नंगा'।

धड, स पु (स धर >) कबंध, अपमूर्ध कलेवर, अशीर्षशरीर २ आकण्ठोत्र शरीरम्।

धडकन, स स्त्री (अनु धड) हृदय हृत, स्पंदन-स्फुरण-कंपन २ हृत्स्पंदध्वनि (पु) ३ आशंका, भयम्।

—बेधडक, क्रि वि, निःशंक, निर्भय, निस्संकोचम्।

धडकना, क्रि अ (हिं धडक) कम्प्-वेप्-स्पन्द् (भ्वा आ मे) स्फुर (तु प से)।

धडका, स पु, दे 'धडकन'।

धडकाना, क्रि स व 'धडकना' के प्रे रूप।

धडधड, स स्त्री (अनु) धडधडशब्द कर्ण ध्वनि क्रन। क्रि वि, सधडधडशब्द २ निस्संकोचम्।

—जलना, क्रि अ, अत्युग्रप्रचण्ड ज्वल् (भ्वा प मे)-दह् (कर्म)-दीप (दि आ से)।

धडधडाना, क्रि अ (अनु धडधड) धटधडा यते (ना धा) धडधड शब्द जन् (प्रे)।

धडल्ला, स पु (अनु धड) धडधडात्कार २ मनमर्म।

धडल्लेदार, वि (अनु + फा) निर्भय, निस्संकोच।

धडल्ले से, मु, निर्भय, निस्संकोचम्।

धडवाई, स पु (हिं धडा) तोलक, धरणधर।

धडा, स पु (स धट) तुला २ तोल, भार ३ पक्ष, दलम्।

धडाका, स पु (अनु०) धडाक् इति शब्द — स -ध्वनि (पु) गुरुद्रव्यपतनध्वनि।

धडाधड, क्रि वि (अनु धड) सतत, निरंतर, अविच्छिन्न, अनवच्छिन्न २ निरंतर सधट धटशब्द न।

धडाम से, प पु (अनु) सशब्दम्।

धडी, स स्त्री (स धट >) घटी, चतु सेरी-मानी, पन, सेरी-मितो।

धडेबंदी, स स्त्री (हिं फा) दलबंध, पक्ष, पक्ष ग्रहण-अवलंबनम्।

धत, स स्त्री, दे 'रत'।

धतकारना, क्रि स (अनु धत) दे 'दुतकारना'।

धता, स पु (अनु धत) निस्सारित, अपगत।

—बताना, मु, छलेन अप-निस्-सृ (प्रे), सत्यान परिहृ (भ्वा प अ)।

धतूरिया, स पु (हिं धतूरा) धत्तूर-मोहन, प्रतारको वंचक।

धत्तू (तू)रा, स पु (स. धत्तूर) धुस्तूर, शिवप्रिय, मोहन, कनक।

धधक, स स्त्री (अनु) ज्वाला, झटका, अर्चम् (न)।

धधकना, क्रि अ, (हिं धधक) उद्-प्र-भा (अ प अ) उद्-प्र-ज्वल् (भ्वा प से), प्रचंड दह् (कर्म)।

धधकाना, क्रि स, व 'धधकना' के प्रे रूप।

धनंजय स पु (स) अर्जुन २ अग्नि।

धन, स पु (स न) वित्त, द्रव्य, रि(रि)क्थ, वसु (न) अर्थ, हिरण्य, द्रविण, विभव, श्री-लक्ष्मी (स्त्री), भाग्य, सम्पद्-सम्पत्ति (स्त्री) कांचन, रै (पु, रा, रायौ, राय) २ गोधन ३ प्रेमपात्र ४ योगचिह्न (+, गणित) ५ मूलद्रव्यम्।

—कुबेर, स पु (स) लक्षपति (पु), कोटीश, सुसमृद्धजन।

—धान्य, स पु (स न) धनधान्ये, अर्थान्नौ।

—पति, स पु (स) कुबेर, दे।

—हीन, वि (स) दरिद्र, अकिंचन।

धनक, स पु (स) धनाशा, धनैषणा।

धनद, वि (स) दानशील, वदान्य। स पु (स), कुबेर।

धनाढ्य, वि (स) अर्थ धन वित्त-द्रव्य,-वत्। धनिन्, धनिक, स-वसु-महा, धन, वित्त-विभव धन, शालिन्, संपन्न, समृद्ध, श्रीमत्, लक्ष्मीश, धनेश्वर।

धनार्जन, स पु (स न) वित्तोपार्जन, धन संग्रह।

धनिक, वि (स) दे 'धनाढ्य'।

धनिया, स पु (स धनिका) धन्या, वितुन्नक, सुगंधि (न) कुस्तुम्बरी।

धनिष्ठा, स स्त्री (स) श्रविष्ठा, नक्षत्रविशेष।

धनी वि (स-निन्) दे 'धनाढ्य' २ दक्ष, कुशल। स पु, स्वामिन्, अधिपति २ पति (पु) धनाढ्य।

—मानी, वि (स धनिमानिन्) धनमान, वत् तुल्य।

बात का —, वि, प्रतिज्ञापक, स्थिर-दृढ, प्रतिज्ञ, सत्य,-प्रतिज्ञ-सत्यव्रत।

धनु, स पु (स) दे 'धनुष'।
धनुआ, स पु [स धन्व (वेद म)] दे 'धनुष' २ दे 'धुनकी'।
धनुक, स पु (स धनुस् न) धनु, धनू (स्त्री), धनु (न) इन्द्र,-चाप -आयुध-धनस (न)।
धनुकी, स स्त्री, दे 'धुनकी'।
धनुर्धारी, स पु (स रिन्) धनुर्द्धर, धन्विन्, इषुधर, धानुष्क, निषंगिन्, धनुभृत् धनुष्मत् (पु), तूणिन्।
धनुर्विद्या, स स्त्री (म) शराभ्यास, इषु शिक्षि (स्त्री)।
धनुर्वेद, स पु (स) धनुर्विद्यानिरूपकशास्त्रम्।
धनुष, स पु [स धनुस् (न)] चाप प द्वास, आस, कार्मुक, कोदण्ड, शरासन शारंग, धनू (स्त्री)।
धनेश्वर, स पु (स) धनपति २ कुबेर ३ रत्नभेद।
धनैषणा, स स्त्री (स) वित्तैषणा, धनाशा।
धनैषी, वि (स -षिन्) धनेच्छुक, वित्ता र्थिन् (पुं)
धन्ना, स पु दे 'धरना' स पु ४।
धन्य, वि (स) सौ, भाग्यवत्, पुण्य,-वत् भाज, सुकृतिन्, सुभग भाग्य, महाभाग २ श्लाघ्य, स्तुत्य। क्रि वि साधु सुष्ठु, सम्यक्।
—वाद, स पु (स) कृतज्ञता,-दर्शन प्रकाशनं, उपकारप्रशंसा २ साधुवाद, प्रशंसावचनानि (बहु), श्लाघा।
धन्वन्तरि, स पु (स) सुरचिकित्सक, सुश्रुतकार।
धन्वा, स पु (स धन्वन्) धनुस् (न) चाप २ मरु ३ स्थलम्।
धन्वी, स पु (स विन्) दे 'धनुर्धारी'।
धप्पा, स पु (अनु धप) चपेट ठिका २ क्षति-हानि (स्त्री)।
धब्बा, स पु (देश) दे 'दाग'।
धम, स स्त्री (अनु) पतनशब्द, धमिति ध्वनि (पु)।
—से, क्रि वि धमितिशब्देन सह २ अकस्मात्।
धमक, स स्त्री (अनु) अवपतन आघात,-शब्द, धमिति ध्वनि (पु) २ पादन्यास शब्द ३ आघात, प्रहार ४ कम्प।
धमकना, क्रि अ (हिं धमक) धमिति शब्देन सह पत् (भ्वा प से) २ व्यथ् (भ्वा आ से)। आ—, मु, अकस्मात् सहसा आया (भ प अ)।
धमकाना, क्रि स (हिं धमकना) भी (प्रे भापयति, भापयते, भीषयते), त्रस (प्रे) २ निर्, भर्त्स् (चु आ से), तर्ज् (भ्वा प से, चु आ से)।
धमकी, स स्त्री (हिं धमक) विभीषिका भयदर्शन २ तर्जना, भर्त्सना, अपकारगी (स्त्री)।
—में आना, मु, विभीषिकाप्रभावेण कार्यं कृ।
धमधमाना, क्रि अ (अनु) धमधमायते (ना धा), धमधमशब्द नद् (प्रे)।
धमनी, स स्त्री (स) धमनि (स्त्री), रक्त वहिनी नाडी।
धमाका, स पु (अनु) धुंधुमारादिशब्द, महाशब्द, धमिति ध्वनि (पु) २ पतन कूदन, शब्द।
धमाचौकड़ी, स स्त्री (अनु धम+हिं चौकड़ी) कलकल, कोलाहल, तुमुल-रव, डमर, भक्षोभ, विप्लव।
धमाधम, क्रि वि (अनु धम) सधमधम शब्दम्।
स स्त्री, धमधमध्वनि (पु) २ आघात प्रतिघातौ, उपद्रव, उत्पात।
धर, वि (सं) धारक धारिन्, धर्तृ, ग्रहीतृ। (प्राय समासान्त मे, उ चक्रधर इ)।
धरणि णी, स स्त्री (स) धरा, भूमि (स्त्री) दे 'पृथिवी'।
—धर, स पु (स) पवन २ कच्छप ३ शेषनाग ४ विष्णु (पु) ५ शिव।
—सुता, स स्त्री (सं) सीता, जानकी।
धरती, स स्त्री (सं धरित्री) दे 'धरणि'।
धरना, क्रि स (स धरणं) आ निधा (जु उ अ), स्था (प्रे), न्यस् (दि प स), निक्षिप् (तु प अ), आ-रुह् (प्रे आरोपयति), धृ (चु) २ ग्रह् (क प स) (हस्तेन) अव-लम्ब् (भ्वा आ स) धृ ३ परिधा (जु उ अ), वस् (अ आ स)। स पु, धरणं, आ नि, दानं ग्रहण २ ग्रहण ३ परि धान ४ सामह उपवेश स्थान वा।

—देना, मु , (उद्देश्यसिद्धये) साग्रह स्था (भ्वा प अ)।

धरवाना, क्रि प्रे , व 'धरना' के प्रे रूप।

धरहरा, स पु (हि धुर+घर) ससोपान गृहशिखर २ अन्त सोपान स्तम्भ ।

धरा, स स्त्री (स) भू भूमि (स्त्री)।

—तल, स पु (स न) भूतल, पृथिवीतल २ भूमि (स्त्री)।

—धर, स पु (स) दे 'धरणीधर'।

धराऊ, वि (हि धरना) महार्घ, बहुमूल्य २ विशिष्ट, उत्कृष्ट ।

धरात्मज, स पु (स) मगलग्रह २ नरकासुर ।

धराधिप, स पु (स) धरा, अधिपति अधीश , नृप ।

धरामर, स पु (स) विप्र , ब्राह्मण , भूसुर ।

धरित्री, स स्त्री (स) पृथिवी, दे ।

धरोहर, स स्त्री (हि धरना) निक्षेप , न्यास , दे 'अमानत'।

धर्ता, [redacted] पु ([redacted] धर्तृ) धारक , धारयितृ २ ग्राहक ।

धर्म, स पु (स) अभ्युदयनिःश्रेयससाधनो गुणकर्मसमूह (अहिंसा, सत्य, अग्निहोत्रादि) २ ईश्वर,-निष्ठा-सेवा भक्ति (स्त्री), आस्तिक्य बुद्धि (स्त्री) ३ पुण्य, परोपकार ४ सदाचार , साधुता, सुकृत, सत्कर्मन् (न) ५ नय , न्याय , नीति (स्त्री), न्यायिता, ऋजुता ६ पक्षपातराहित्य, समदर्शित्व ७ श्रद्धा, भक्ति , निष्ठा ८ मत, सम्प्रदाय , पथिन् (पु) ९ शास्त्रविहित,-कर्तव्य-कृत्य १० आचार , व्यवहार ११ रीति-रूढि (स्त्री) १२ प्रकृति (स्त्री), स्वभाव , नित्यगुण १३ विधि (पु), व्यवस्था, राजाज्ञा, कार्याकार्य नियम ।

—अध्यक्ष, स पु (स) प्राड्विवाक , अक्षदर्श , धर्माधिकरणिन्, न्यायाधीश , धर्माधिकारिन् ।

—अनुसार, क्रि वि (स र) यथाधर्म, धर्मोक्तरीत्या, धर्मपूर्वकम् ।

—अर्थ, क्रि वि, (स अ) धर्माय, पुण्याय ।

—अवतार, स पु (स) धर्ममूर्ति (पु), अतिधर्मात्मन् (पु), धार्मिष्ठ , पुण्यात्मन (पु)।

—आत्मा, वि (स -त्मन्) धार्मिक, धर्मशील, धर्मवत्, पुण्यात्मन्, धर्म पर परायण ।

—उपदेश, स पु (स) धर्म, शिक्षा अनुशासनम् ।

—उपदेशक, स पु (स) धर्म,-शिक्षक - अनुशासक ।

—कर्म, स पु [स र्मन् (न)] शास्त्रोक्त कृत्यम् ।

—क्षेत्र, स पु (स न) कुरुक्षेत्र २ भारतवर्षम् ।

—ध्वजी, स पु (स जिन्) धर्मध्वज , पाखण्ड , लिंग-वेष वृत्ति (पु , स्त्री), बक-बैडाल,-व्रत , आर्य-रूप-लिंगिन्, छद्मधार्मिक , मिथ्याचार ।

—करना, क्रि स , धर्मं चर (भ्वा प से), पुण्य कृ ।

—निष्ठा, वि (स) धार्मिक, धर्म, पर-परायण ।

—पत्नी, स स्त्री (स) यथाशास्त्र विवाहिता नारी २ भार्या, नारी, दारा (पु बहु), कलत्रम् ।

—पुत्र, स पु (स) युधिष्ठिर २ धर्मत कृत पुत्र ३ नरनारायणमुनी (द्वि)।

—भ्रष्ट करना, क्रि स , धर्म भ्रश् नश् (प्र)- हन (अ प अ) २ सतीत्व हृ (भ्वा प अ)।

—राज, स पु (स) धर्मात्मा नृप, २ युधिष्ठिर ३ यम ४ जिन ।

—शाला, स स्त्री (स) अतिथिगृह, तीर्थसेविनिवास ३ गुरुद्वार, शिष्यसप्रदाय देवालय ।

—शास्त्र, स पु (स न) धर्मसंहिता, स्मृति (स्त्री)।

—शील, वि (स) धार्मिक, धर्मात्मन् ।

—सभा, स स्त्री (स) व्यवहारमण्डप , न्यायसभा ।

धर्मिष्ठ, वि (स) दे 'धर्मात्मा'।

धर्मी, वि (स र्मिन्) पुण्यात्मन् २ मतानुयायिन् ।

धव, स पु (स) पति , भर्तृ २ पुरुष , नर ३ पिशाचवृक्ष ।

धवल, वि (स) श्वेत, शुक्ल २ भासुर ३ सुन्दर ।

धवला, स स्त्री (स) १-२ श्वेत शुक्ल गौर,-नारी-गौ (स्त्री)। वि स्त्री (स)

शुक्ला, गौरी, सिता। वि पु (हिं) श्वेत, गौर, शुक्ल। स पुं, गौर श्वत,नृप वृषभ।

धसकना, } क्रि अ, दे 'धँसना'।
धसना, }

धस्सर, सं स्त्री, दे 'स्वारल्गिना'।

धाँधल, स स्त्री (देश धांधना) क्षोभ, विप्लव, उपद्रव २ कपट, माया ३ त्वरा, सम्भ्रम।

धाँधली, वि (हिं धाँधल) उपद्रविन्, उत्पातिन्, कुचेष्टाप्रिय २ मायिन्, कपटिन्। स स्त्री, दे 'धाँधल'।

धाँय धाँय, स स्त्री (अनु) शतघ्नी, शब्द-ध्वनि (पु) २ प्रज्वलनध्वनि।

धाक, स स्त्री (सं धक्क>) प्रभाव, आतङ्क, प्रताप, शासन २ ख्याति प्रसिद्धि (स्त्री)।

—बँधना, मु, आतङ्क प्रताप प्रसृ (भ्वा प अ) २ प्रख्यात (वि) भू।

धागा, स पु (हिं तागा) सूत्र, गुण, तन्तु (पु)।

धाड़, स स्त्री (स धाटी>) लुंठनम्, लुंठि (स्त्री), लुण्ठाक्रमणम् २ विलाप, क्रन्दनं, रोदनम् ३ दल, गण।

—मारना, मु, उच्चै रुद् (अ प से), आक्रन्द्, (भ्वा प से)।

धाड़स, सं पु, दे 'ढाढस'।

धात, सं स्त्री, दे 'धातु'।

धाता, स पु (सं धातृ) ब्रह्मन्, चतुर्मुख, स्रष्टृ (पु), २ विष्णु (पुं) ३ शिव। वि, पालक २ रक्षक ३ धारक।

धातु, स स्त्री (सं पु) अश्मविकार (गैरिकादि) २ खनिजद्रव्य (सुवर्णादि) ३ शरीरधारक पदार्थाः (रसरक्तमांसादि) ४ शुक्र, वीर्यम्। सं पु (स) भूत, तत्त्वं (पृथिव्यादि) २ शब्दमूल (भू, कृ, आदि) ३ आत्मन् ४ परमात्मन् (पुं)।

धात्री, सं स्त्री (सं) अङ्कपाली, धात्रा, उपमातृ मातृका, धात्रेयी, प्रतिपालिका २ जननी ३ पृथिवी।

—विद्या, स स्त्री (स) शिशुपालनविद्या २ सूतिकर्मन् (न) गर्भमोचनविद्या।

धान, स पुं (सं धान्य) व्रीहि शालि स्तम्बकरि (पुं) २ (पौदा) स्तम्ब, नीवार।

धाना, स स्त्री [स धाना (स्त्री बहु)] भृष्टयवा २ भृष्टतण्डुला, लाजा (पु बहु) ३ दे 'धनिया'।

धानी[1], वि (हिं धान) ईषद्धरितवर्ण।

धानी, स स्त्री (स धाना>) भृष्ट,यवा-गोधूमा-तडुला २ व्रीहिभेद।

धान्य, स पु (स न) अन्न, अद्य, भोग्य, भोगार्ह, जीवसाधन २ व्रीहि शालि स्तम्बकरि (पु) ३ चतुस्तिलपरिमाणं ४ धन्याक, वितुन्नकम्।

—उत्तम, स पु (स) तंडुल।

—राज, स पु (स) यव।

धाभाई, स पु (हिं धाय+भाई) धात्रेय, धात्रीपुत्र।

धाम, स पु [स धामन् (न)] गृह, गेह, अ(आ)गार २ शरीर ३ स्थानं ४ पुण्य देश,स्थानम्।

धाय-यी, स स्त्री (सं धात्री, दे)।

धार[1], सं पु (स) वेगवान् वर्ष, धारा, आसार सपात २ ऋणं ३ प्रदेश।

धार, स स्त्री, (स धारा) प्रवाह, ओघ, सन्तान, स्रोतस् (न), प्रस्राव, रय, वेला, वेग २ उत्स, निर्झर ३ अस्रि, कोटि, पाली लि, अणी णि (सब स्त्री), अग्रम्। ४ दिशा श (स्त्री) ५ रेखा पंक्ति।

—दार, वि (हिं + फा) तीक्ष्ण, निशित, शितधार।

—मारना, मु, मूत्र् (चु), मिह् (भ्वा प अ)।

धारक, सं पु (सं) धारयितृ, धर्तृ २ ऋणिन्, अधमर्ण।

धारण, सं पु (सं, न) धरणं, ग्रहणं, अवलम्बनं, करेण ग्रहणं धरण २ परिधान वसनं ३ स्वीकरणं, अङ्गीकरणं ४ पालनं, पोषणं, भरणम्।

—करना, क्रि स, दे 'धारना'।

धारणक, स पुं (सं) ऋणिन्, अधमर्ण।

धारणा, सं स्त्री (स) स्मृति स्मरणशक्ति (स्त्री) २ धारणाशक्ति, मेधा, धारणावती धी (स्त्री), ग्रहणसामर्थ्यं ३ धारणं, ग्रहणं ४ निश्चय, निर्णय, दृढसंकल्प ४ बुद्धि (स्त्री) ५ मर्यादा, स्थिति (स्त्री) ६ योगाङ्गविशेष, ध्येये चित्तस्य स्थिरबन्धनं ७ मति (स्त्री), मनस्।

धारना, क्रि स (सं धारण) धृ (भ्वा उ अ, चु), ग्रह (क्र प से), आदा (जु आ अ), अवलम्ब (भ्वा आ से) २ परिधा (जु उ अ) वस् (अ आ से) धृ (चु) ४ अव-उद्-उप-म-स्तंभ (क्र प से) अव लम्ब-आलबना।

धारा, सं स्त्री (म) दे धार' सं स्त्री (१-५)। ६ परिच्छेद, विभाग, अधि करणम्।

—यन्त्र, स प (स न) दे 'फुहारा'।

धारी स स्त्री (स धारा) रेखा, लेखा रेखा।

—दार, वि (हिं +फा) रे(ले)खाकित, मरेख।

—धारी², वि (रिन्)-धर, धारक (उ दद्धर इ) [-धरिणी (स्त्री)]।

धार्मिक, वि (स) दे धर्मात्मा'।

धावन, स पु (स न) धोरण, द्रुतगमन २ शोधन, मार्जन ३ शोधनसाधनम्।

धावा, सं पु (सं धावन) आक्रमण, अभि द्रव, अवस्कद, आपात, उपप्लव।

—करना या मारना या बोलना, क्रि स आक्रम् (भ्वा दि प से), अभिद्रु (भ्वा प अ) अवस्कन्द् (भ्वा प अ)।

धाह, स स्त्री (अनु) दे 'डाट'।

धिक, अव्य (स धिक्) (प्राय द्वितीया परन्तु कभी षष्ठी के साथ) निंदा २ निर्भत्सना।

धिक्कार, स पु (स) न्यक्कार, निर्भर्त्सना, तिरस्कार, भर्त्सना, गर्हा, निंदा, परि(री)वाद, अधिक्षेप।

धिक्कारना, क्रि स (सं धिक्करण) तिरस्, धिक् कृ, अप परि-वद् (भ्वा प से) (तीन) निंद् (भ्वा प से), अधि आ क्षिप (तु प अ)।

धिग्दंड, स पु (स) दे 'धिक्कार'।

धिषणा, सं स्त्री (सं) बुद्धि, धी (दोनों स्त्री), प्रज्ञा २ स्तुति-नुति (स्त्री) ३ वाणी ४ पृथिवी ५ दे 'प्याली'।

धींगा, स पु (स डिंगर) दुष्ट खल शठ, पाप।

धींगी, स स्त्री, शठता, शाठ्य, दौष्ट्य, उपद्रव ३ बलात्कार, अन्याय।

—मुश्ती, स स्त्री, कुचेष्टा, उपद्रव, मस्ता २, बाहूबाहवि-मुष्टीमुष्टि (अव्य)

धी¹, सं स्त्री (स दुहितृ) पुत्री।

धी, स स्त्री (सं) बुद्धि मति (स्त्री), प्रज्ञा।

धीमा, वि (स मध्यम) मथर, मद,-गति गामिन्, २ लघु, तीव्रता-उग्रता-चण्डता, शून्य।

—पड़ना, क्रि अ, न्यूनी भू, ह्रस (भ्वा प से), क्षि(कर्म), उप प्र शम् (दि प से)।

धीमान्, वि (स-मत्) बुद्धिमत्, प्राज्ञ [धीमती (स्त्री) =बुद्धिमती]।

धीमे धीमे, क्रि वि, मद मद, शनै शनै २ अचट, अतीव्र ३ मृदु, यथासुखम्।

धीर, वि (स) धृतिमत्, शात, धैर्यान्वित, महनक्षमा, शील, सहिष्णु, क्षमिन् २ नम्र, विनीत ३ ग(गं)भीर चापल्यशून्य।

धीरज, स पु (स धैर्य) } दे 'धैर्य'।
धीरता, स पु (स) }

धीवर, स पु (॥) कैवर्त, जालिक, मत्स्य आजीव -उपज विन, मात्स्यिक, दाश -स, [धीवरी (स्त्री) =कैवर्ती]।

धुध, सं स्त्री (स धूमाध>) धूमदृष्टि (स्त्री) २ कुज्झटिका, धूमिका, कुहेलिका।

धुधका, स पु (हिं धुध) धूम-अग्निवाह, छिद्रं-विवरम्।

धुँधला, वि (हिं धुध) अस्पष्ट, अव्यक्त, मद, द्युति प्रभ, दुरालोक २ धूम्र, ईषत्कृष्ण, धूमवर्ण।

—पन, स पु, अस्पष्टता, दुरालोकता, अव्य क्तता, मदप्रभता।

धुआँ, सं पु (स धूम) अग्नि-मरुद्,-वाह, तमाल, शिखिध्वज, तरी।

—कश, स पु (हिं +फा) अग्निपोत।

—धार, वि धूममय, सधूम २ धूम्र, धूमवर्ण ३ घोर, प्रचंड। क्रि वि, सवेग, अत्यधिक, प्रबलम्।

धुआँसा, स पु (हिं धुआँ) कज्जल, मसी मि (स्त्री)।

धुकधुकी, स स्त्री (अनु धुकधुक) हृदय, हृद (न), अग्रमाम २ हृत-कप -स्पद २ त्रास, भय ४ उरोभूषणभेद।

धुन, स स्त्री (हिं धुनना) अभिनिवेश, दृढाग्रह, आसक्ति-अनिवार्यप्रवृत्ति (स्त्री)

उत्कण्ठा, लालसा २ चिंता, विचार ३ बारम्बार, लहरी।

धुन, स स्त्री [स ध्वनि (पु)] स्वर, गानप्रकार २ रागभेद ।

धुनकना, क्रि स, दे 'धुनना'।

धुनकी, स स्त्री [धनुस (न) >] पिंजन नी, विहनन तूलशोधनधनुक, धुनकरी।

धुनना, क्रि स (हिं धुनकी) (पिंजनेन) तूल शुध (प्रे) धु (स्वा उ अ) २ भृश तद (चु) ३ अनवरत कथ् (चु) ४ सन्तप्।

धुनि¹, स स्त्री (स) नदी, धुनी।

धुनि², स स्त्री [स ध्वनि (पु)] शब्द, रव ।

धुनिया, स पु (हिं धुनना>) पिंजाशोधक, *पिंजक, *तूलधावक ।

धुरंधर, वि (स) धुर्वह, धुर्य २ भारवाह ३ श्रेष्ठ, प्रधान, प्रकाण्ड, मुख्य।

धुर, स पु [स धुर (स्त्री)] अक्ष, ध्रुव २ भार ३ आरम्भ ४ युग न (जूआ)। अव्य, सम्पूर्णतया, अशेषतया, साकल्येन।

धुरपद, स पु (स ध्रुवपद) गीतभेद ।

धुरा, स पु [स धुर (स्त्री)] अक्ष, ध्रुव ।

धुरी, स स्त्री (हिं धुरा) अक्षक, ध्रुवक ।

धुलवाना, क्रि प्रे, व 'धोना' के प्रे रूप।

धुलाई, स स्त्री (हिं धुलाना) धावन, प्रक्षालन २ धावन,प्रक्षालन, भृति (स्त्री)

धुवाँ, स पु, दे 'धुआँ'।

धुवाँरा, स पु (हिं धुवाँ) पटल न छिद्र धूमच्छिद्रम्।

धुस्स, स पु (स ध्वस >) मृत्तिका चय, मृद्राशि (पु), क्षुद्रपर्वत, २ वप्र, चय ।

धुस्सा, स पु (स द्विशाट >) प्रावेण्य णि (स्त्री)।

धूआँ, स पु, दे 'धुआँ'।

धूत¹, वि (स धूर्त) वञ्चक कपटिन्, छलिन् पापिन्।

धूत², वि (स) चालित, कम्पित २ त्यक्त, उत्सृष्ट, भर्त्सित, तिरस्कृत।

धूता, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या।

धूनी, स स्त्री (स धूम >) धूप, सुगंधि धूम २ शिशुकानल, तपोग्नि (पु)।

—देना, मु, धूप (चु), धूपं घ्रा (प्रे घ्रापयति)।

—रमाना या लगाना, मु, परिव्रज (भ्वा प से), भिक्षुको भू २ तप तप (दि आ अ), तपस्यति (ना धा) ३ तपोऽग्निं ज्वल् (प्रे)।

धूप¹, स स्त्री (सं धूप्=चमकना>) आतप, सूर्य, आलोक प्रकाश ।

—छाँह, स स्त्री, *धूपच्छाया, द्विवर्णो वस्त्रभेद ।

—दिखाना, मु, आतपं प्रस् (प्रे)।

—सेंकना, मु, आतपं सेव् (भ्वा आ से)।

धूप², स पु स्त्री (स पु) पावन, यावन, तुरुष्क पिंडक, सिह्‌, तृण, मेरुक, २ गंध पिशाचिका, धूप, धूपधूम ३ धूपवर्ति (स्त्री)।

—दान, स पु, } —दानी, स स्त्री, } धूपधान-नी, धूपपात्रम्।

धूम¹, स पु (स) धूममाल, शिखिध्वज, दे 'धुआँ' २ वा(ब)ष्प भाप्।

—केतु, स पु (स) उल्का, खोल्का २ अग्नि (पु)।

—पान, स पु (स न) तमाखुधूमपानम्।

—पोत, स पु (स) अग्नियान पोत ।

धूम², स स्त्री (सं धूम >) ख्याति प्रसिद्धि (स्त्री) २ कोलाहल, कलकल ३ समारोह आडंबर, शोभा ४ उपद्रव, क्षोभ, विप्लव ।

—धाम, स स्त्री, आडंबर, शोभा, श्री (स्त्री) बृहदायोजन, वैभवम्।

धूमर, धूमला, धूमिल, वि (स धूमल) धूम्र, धूम्रवर्ण, कृष्णलोहित।

धूर रि, सं स्त्री, दे 'धूल'।

धूर्त, वि (स) वञ्चक, मायिन, कपटिन, कापटिक, विप्रलम्भक वञ्चनशील, प्रतारक। स पु, धत्तूर (पु) अरिष्टेनि तिनि २ वंचक, प्रतारक इ ।

धूर्तता, स स्त्री (स) वञ्चना, माया, प्रतारणा, कपट, कैतवम्।

धूल, स स्त्री [स धूलि (पुं स्त्री)] धूली, रजस (न), पांसु शु (पु), रेणु, तिनि वण, महीद्रव, वातनभ, केतु (पु), चूर्ण, क्षोद २ तुच्छवस्तु (न)।

—आड़ना, क्रि स , धूलि-लीं धु (स्वा उ अ)।
—उड़ना, मु , (स्थान की) ध्वम् (भ्वा आ मे) धूलीमत् भू । (मनुष्य को) निंद अधिक्षिप् दृप् (कर्म)।
—उड़ाना, मु , दुष (प्रे दूषयति) अधिक्षिप् (तु प च) २ उपहस (भ्वा प मे)।
—चाटना, मु , पादयो पतित्वा याच (भ्वा आ से) अभ्यर्थ् (चु आ से)।
—छानना, मु मोघ श्रम (भ्वा प से)।
—में मिलना, मु , धूलीमान् भू नश् (दि प वे)।
—समझना, मु तृणं तृणाय मन् (दि आ अ) अवगण (चु)।
धूलि, स स्त्री (स पु स्त्री) दे धूल'।
धूसर, वि (स) आरक्त, पाडु, पांसु धूलि वर्ण २ पांसु (शु) ल, धूलिधूसर, रेणु दूषित रूक्ष ।
धूसरित, वि (स) दे 'धूसर'।
धूहा, स पु (हिं दूह) खगविभीषिका ।
धृत, वि (स) धारित, अवलम्बित, २ आदत्त, गृहीत ३ स्थिरीकृत, निश्चित ।
धृतराष्ट्र, स पु (स) दुर्योधनजनक , नृप विशेष ।
धृति, स स्त्री (सं) दे 'धैर्य'।
धृष्ट, वि (स) निर्लज्ज वियात, प्रगल्भ, दे 'ढीठ'।
धृष्टता, स स्त्री (स) प्रागल्भ्य, वैयात्य, दे ढिठाई'।
धेनु, स स्त्री (स) नवप्र(प्रसू)तिका (गौ) २ गौ (स्त्री), दे ।
धेला, स पु दे 'अधेला'।
धेली, स स्त्री , दे 'अधेली'।
धैर्य, स पु (स न) धीरत्व, धीरता, धृति (स्त्री), मन स्थैर्य, सत्त्व, द्रढिमन् (पु), दृढता, क्षोभराहित्यम् ।
धैवत, स पु (स) षष्ठ स्वर (सगीत०)।
धोखा का, स पु (सं धूक>) छल, कपट, धूर्तता, प्रतारणा, वञ्चना, २ मोह , भ्रम , भ्रांति (स्त्री) भ्रमः मिथ्या प्रतीति (स्त्री) ३ माया, इन्द्रजाल, विवर्त ४ अज्ञान, अबोध ५ सशय , सदेह ६ प्रमाद , त्रुटि (स्त्री)।
—खाना, स , वञ्च् विप्रलभ्-अभिसधा प्रतार् (स)।
—देना, मु , प्रतृ (प्रे) वञ्च् छल् (चु), अति अभिसधा (जु उ अ), मुह् (प्रे)।
—धोखे की टट्टी, मु मोहजनक मायामय, वस्तु (न)।
धोखेबाज, वि , (हि + फा) कापटिक, छाद्मिक, मायाविन् ।
धोखेबाजी, स स्त्री (हिं धोखेबाज) कापटिकता, कपट, छाद्मिकता ।
धोती, स स्त्री । (स धौत>) शाटिका, धौताम्बर अधौता।
—ढीली होना, मु भयात् पलाय् (भ्वा आ मे)।
धोना, क्रि स (स धावन) धाव् (भ्वा प मे) प्र क्षल् (चु) निर् निज् (जु उ अ), प्रमृज् (अ प वे) २ दूरी कृ, अपसृ (प्रे)। स पु धावनं, प्रक्षालनं, निर्णेक , मार्जनम् ।
धोने योग्य, वि , धावनीय, प्रक्षालयितव्य, निर्णेक्तव्य ।
धोनेवाला, स पु , धावक , प्रक्षालक , क्षारक ।
धोबिन, स स्त्री (हिं धोबी) रजकी-का २ रजकपत्नी, धावकभार्या ।
धोबी, स प (हिं धोना) धावक , रजक , निर्णेजक , क्षारक , रजोहर ।
—घाट, स पु धावकघट्ट ।
—का कुत्ता, मु अकिंचित्कर , गुण सार हीन (जन)।
—का छला, मु , परपदार्थ, परवस्तु, द्रष्ट गर्वित ।
धोया हुआ, वि धौत, धावित, मार्जित, प्रक्षालित निर्णिक्त ।
धोवन, स स्त्री (हि धोना) धावन, प्रक्षालन २ धावनावशिष्ट जलम् ।
धौंकना, क्रि स (स ध्मा>) भस्त्रया ध्मा (भ्वा प अ , धमति), दृत्या वह्नि प्रज्वल्(प्रे)।
धौंकनी, स स्त्री (हिं धौंकना) भस्त्रा, भस्त्रा, भस्त्रिका, दृति (स्त्री) चर्म, प्रसेविका प्रसेवक ।
धौंस, स स्त्री (स ध्वस>) तर्जना, विभीषिका, भयदर्शन २ प्रभुत्व, अधिकार ३ छल, कपटम् ।
—पट्टी, स स्त्री मिथ्याऽऽशा, मिथ्या सान्त्वना ।

धौंसा, स पु (अनु) दे 'डंका'।

धौंसिया¹, स पु (हि धौंसा) डिंडिम-ढक्का, वादक नादक ।

धौंसिया², स पु (हिं धाक) भयदर्शक, विभीषक २ वञ्चक, कपटिन् ।

धौत, वि (स) दे 'धोया हुआ' २ स्वच्छ ३ स्नात ।

धौति क्री, स स्त्री (स) यौगिकक्रियाभेद ।

धौरा-ला, वि (स धवल) श्वेत, शुक्ल सित । स पु धवल वृषभवर ।

धौरेय, वि (स) भार वाहक-वाहिन् । स पु (स) शकटवाहकवृषभ २ अश्व ३ मुख्य, नायक ।

धौल, स स्त्री (अनु) चपेट टिका, करतल घात २ क्षति हानि (स्त्री) ।

—धप्पा, स पु, मुष्टीमुष्टि बाहूबाहवि (न)।

ध्यान, स पु (स न) ऐकाग्र्य, समाधि (पु) अन्तर्ध्यान, चित्तस्थैर्य २ स्मृति (स्त्री), धारणा ३ धी बुद्धि (स्त्री) ४ अवधान, मनोयोग ५ चित्त, मनस (न) ६ चिंता, मननं ७ भावना, मति (स्त्री) ८ मानस प्रत्यक्षम् ।

—आना, मु, स्मृ (भ्वा प अ), अनुचिन्त (चु)।

—दिलाना, मु, अनुस्मृ (प्रे)।

—देना, मु, अवधा (जु उ अ) मन युज (चु)।

—बटाना, मु, चित्त ध्यान अपकृष (भ्वा प अ)।

—में न लाना, मु, अवगण अवधीर (चु)।

—में मग्न होना या डूबना, मु, विचार ध्यान, मग्न (वि) स्था (भ्वा प अ)।

—रखना, मु, न विस्मृ (भ्वा प अ) मनसि कृ।

—लगाना, मु नि ध्यै (भ्वा प अ), समाधा (जु उ अ), विचिन्त (चु)।

—से उतरना, मु विस्मृ (कर्म)।

ध्यानस्थ, वि (स) ध्यान चिंतन विचार, मग्न लीन ।

ध्यानी, वि (स निन्) ध्यान चिंतन, शील परायण पर, विचाररत ।

ध्येय, वि (स) ध्यातव्य चिंतनीय । स पु (स न) लक्ष्य, लक्ष, उद्देश्य इयम् ।

ध्रुपद, स पु, दे 'धुरपद'।

ध्रुव, वि (स) अचल, अविचल, निश्चल, स्थिर २ नित्य, निर्विकार, अव्यय ३ निश्चित, नियत, असंदिग्ध । स पु (स) ध्रुवतारा, नक्षत्रनेमि (पु), उत्तानपादज, ज्योतीरथ ।

ध्वंस, स पु (स) प्र वि, ध्वस, वि, नाश, अवसाद उच्छेद, क्षय, निपात, संहार ।

ध्वजा, स स्त्री (सं ध्वज) पताका, वैजयन्ती, केतु (पु) केतनम् ।

ध्वजी, स पु (स ध्वजिन्) पताकिन्, ध्वज, वाहक धारिन् ।

ध्वनि, सं स्त्री (सं पु) नि, नाद, शब्द, र(रा)व, स्वर, घोष, ध्वान, निस्, स्व(स्वा)न, निह्राद २ शब्दस्फोट ३ व्यंग्यार्थ प्रधानं काव्य ४ गूढार्थ, गुप्ताशय ।

ध्वनित, वि (स) स्वनित क्वणित, नदित, शब्दित, रसित २ व्यंग्य सूचित, द्योतित, उपलक्षित, व्यञ्जित, विवक्षित ३ वादित ।

ध्वस्त, वि (स) प्र वि, ध्वस्त, वि-नष्ट, अवसन्न, उच्छिन्न, क्षीण, निपतित, खण्डित, भग्न २ पराजित ।

ध्वांक्ष, स पु (सं) काक ।

ध्वान, सं पु (सं) शब्द, दे 'ध्वनि'।

न

न देवनागरीवर्णमालाया विंशो व्यञ्जनवर्णः, नकार ।

नंग, सं पु (हिं नंगा), नग्नता-त्व दिगम्बरता-त्व २ गुह्याङ्ग, गुह्यम् ।

—धड़ङ्ग, वि } दे नगा¹ (१)।
—मुनंगा, वि }

नंगा, वि (सं नग्न) अ निर् वि-वस्त्र-वसन वासस, दिग्, अम्बर-वासस २ अनावृत, आवरण आच्छादन, रहित ३ निस्त्रप, निर्लज्ज ।

—करना, क्रि स, नग्नी विवस्त्र विवसनी कृ।

—बुच्चा या बूचा, वि, दरिद्र, अकिंचन ।

—मादरज़ाद, वि (फा) दिगम्बर, दिग्वसन ।

—लुच्चा, वि, दुष्ट, खल, दुर्जन ।

नंगे पाँव, वि, नग्नपाद, पादुहीन ।

नगे सिर, वि, नग्नशिरस्क निरुष्णीष।

नंद्[1], स पु (स) आनन्द, मोद २ पुत्र ३ श्रीकृष्णस्य धर्मतात प्रतिपालक ४ मगधेश्वरविशेष।

—किशोर, कुमार, नन्दन, स पु (स) श्री कृष्ण वासुदेव।

नंद, स स्त्री दे ननद'।

नंदक, वि (स) हर्षप्रद जनक आनन्ददायक। स पु श्रीकृष्णास्त्र।

नंदन, स पु (स न) 'इन्द्रवनम्' स पु पुत्र २ मेघ। वि हर्षक मोदक।

—वन स पु (स न) शक्रोद्यानम्।

नंदना, स स्त्री (स) पुत्री तनया।

नंदनी, स स्त्री दे नंदिनी'।

नंदि, स पु (स) आनन्द हर्ष २ शिव दौवारिक वृषभ, नन्दिकेश्वर।

नंदिकेश्वर, स पु (स) नंदिकेश, शिव वृष २ शिव ३ उपपुराणविशेष।

नंदिनी, स स्त्री (स) पुत्री दुहितृ (स्त्री), तनया २ ननान्दृ-ननन्दृ (स्त्री) ३ पत्नी, भार्या ४ दुर्गा।

नंदी, स पु (स नन्दिन्) शिवगणभेद २ शिवद्वारपाल वृषभ।

—ईश्वर, स पु (स) शिव।

ननदोई, नन्दोसी, स पु (हिं नन्द) ननान्दृ पति, कौतूल।

नंबर, स पु (अ) संख्या, गणना, अंक २ चिह्न, लाञ्छन ३ पर्याय, परिवृत्ति (स्त्री), वार।

—दार, स पु (अ+फा) भूकरोद्ग्राहक।

—वार, क्रि वि (अ+फा) यथाक्रम, क्रमश एकैकश (सत्र अव्य) पर्यायेण क्रमेण (तृ)।

नबरिंग मशीन, स स्त्री (अ) अंकनयन्त्रम्।

नबरी, वि (अ नबर) अंकित, अंकयुक्त, मार्क २ विख्यात, विश्रुत।

—सेर, स पु, आंग्ल-सेरक-सेर।

न, अव्य (स) न, नहि, नो २ (मन) मा, मा स्म अव्य (तृतीया अथवा क्त्वा (या ल्यप) के योग में)।

—न, मा मैव, मा तावत्।

—न, न च सदा, न न वा न च न च, न न (उ न रामो गतो न वा कृष्ण)।

नक, स स्त्री, (स नक्र) नासा, नासिका।

—कटा, वि छिन्न-नासा-न सिक २ विरूप, विग्र अ विगत,-नासिक ३ निर्लज्ज, अपत्रप।

—कटी, स स्त्री, नासाच्छेद २ अवमानना, मानहानि (स्त्री)।

—घिसनी, स स्त्री भूमौ नासिकाघर्षण २ दैन्य निदाय।

—चढ़ा, वि दुष्प्रकृति कुत्रु शील।

—छिकनी, स स्त्री छिक्कनी, छिक्किका, क्षवा, क्षिता।

—फूल, स पु स्वर्ण ग्रथ भूषाभेद।

—बेसर, स पु नाथक।

नकद, स पु (अ) टंकक नाणक, मुद्रा, मुद्राधनम्। वि, प्रस्तुत (धनादि)।

नकदी, स स्त्री दे नकद' स पु।

नकपुड़ी, स स्त्री, दे 'नथना'।

नकब स स्त्री (अ) दे सेंध'।

नकल, स स्त्री (अ) अनु प्रति-लिपि (स्त्री) लेख २ अनुकृति अनुवृत्ति (स्त्री) ३ अनुकरण-सरण ३ सोपहास अनुकरण विडम्बनम्।

—करना, क्रि स, अनु प्रति, लिपि कृ या लिख् (तु प से) २ अनुकृ ३ विडम्ब (चु)।

—नवीस, स पु (अ+फा) अनु प्रति-लेखक, प्रतिलिपिकृ(का)र।

नकली, वि (अ) कृतक, कृत्रिम २ काल्पनिक, छायिक, कपट, कूट, छद्म।

नकसीर, स स्त्री (हिं नक+स क्षीर=जल) नासारक्तस्राव।

—फूटना, क्रि अ, नासया रक्त स्रु (भ्वा प अ)।

नकाब, स स्त्री पु (अ) वणक, वर्णिका २ अवगुंठन, आवरक-कम्।

—पोश, वि वर्णिकाच्छादित, अवगुंठनवत्।

नकार, स पु (स) निषेधकवाक्य २ प्रत्याख्यान, निषेधप्रति षेध ३ 'न' इत्यक्षरम्।

नकारना, क्रि अ (स नकार >) प्रति-नि, षिध (भ्वा प से)।

नकीब, स पु (अ०) चारण, वन्दिन्।

नकुल, स पु (स) सर्पारि, बभ्रु २ पाण्डुराजस्य चतुर्थपुत्र ३ पुत्र।

नकेल, स स्त्री (हिं नाक) नासिकारज्जु (स्त्री)।

नक्कारख़ाना, स पु (फ़ा) डिंडिमालय, दुंदुभिगृहम्।

—नक्कारख़ाने में तूती की आवाज़, मु, अरण्यरुदितम्।

नक्कारची, स पु (फ़ा) दुंदुभिवादक, पटह ताडक ।

नक्कारा, स पु (फ़ा) आनक डिंडिम, दुंदुभि (पु), पटह, भेरी।

नक्काल, स पु (अ) अनुकारिन्, विडम्बनाकार, विडंबक २ भंड, विदूषक, वैहासिक ३ नट, कुशीलव, रंगाजीव ।

नक्काश, स पु (अ) उत्कारक ।

नक्काशी, स स्त्री (अ) उत्किरणम्।

नक्की, स स्त्री (स नक्क) अक्षे कौणपर्णे वा एकबिन्दुचिह्नम्।

—दुआ, स पु, अक्षक्रीडाभेद ।

—मूठ, स स्त्री, द्यूतभेद ।

नक्कू, वि (हि नाक) कुख्यातिमत्, कुप्रसिद्ध, दुर्नामन् ।

नक्तंचर, सं पु (स) राक्षस, निशाचर २ उलूक, घूक ३ चौर, स्तेन ।

नक्तंदिन, अव्य (स नक्तंदिनम्) नक्तंदिव, अहोरात्र, अहर्निशम्। दिवारात्रम् (सब अव्य)

नक्त, स पु (सं न) रात्रि नि (स्त्री), निशा।

नक्र, स पु (स) दे 'मगरमच्छ'।

नक्श, स पु (अ) आलेख्य, चित्र, प्रतिकृति (स्त्री) २ मुद्रा, अंक, चिह्न ३ लक्षण, आकृति (स्त्री)।

—करना, क्रि स, अंक मुद्र चिह्न (च)

२ निखन (प्रे) न्यस (दि प से)।

नक्शा, स पु (अ) मानप्रदेश, चित्र, रेखा लेख्यं २ आकार प्रतिमान रूप ३ रूप रेखालेख्यम्।

नक्षत्र, स पुं (सं न) तारा, तारका, उडु (पु) २ राशि (पु), राशिनक्षत्र ३ भगण, तारासमूह ।

—नाथ,—पति,—राज, स पुं (सं) चंद्र ।

नख, स पु (सं पुं न) दे 'नाखून'।

—शिख, सं प (सं न) सर्वाणि अंगानि, सर्वावयवा, गात्राणि (सब बहु) २ सर्वां गवर्णनम्।

—शिख से, मु, आपादशीर्षं, पूर्णतया, साम स्त्येन।

नख़रा, सं पु (फ़ा) विभ्रम, विलास, लीला हाव, २ चाप य ३ व्याज, कपटम्।

नख़रेबाज़, वि, (फ़ा) सविभ्रम, लीलामय (स्त्री लीलावती, विलासिनी)।

नख़रेबाजी, स स्त्री (फ़ा) ललिताभिनय, लीला।

—करना या बघारना, क्रि स, विलस (भ्वा प से), ललिताभिनय कृ २ कपट व्याज कृ।

नखी, स पु (स नखिन्) सिंह २ चित्रक। वि, सनख, नखवत्।

नग[1], स पु (सं) पर्वत, गिरि (पु) २ वृक्ष ३ 'सप्तन्' इति संख्या ४ सर्प ५ सूर्य । वि, अचल, स्थिर।

—पति, स पु (स) शिव २ हिमालय ।

नग[2], स पु, (फ़ा नगीनह्) दे 'नगीना' २, संख्या।

नगण, स पु (स) त्रिलघुगण, छन्द शास्त्रे गणभेद (उ० नमन, चलन इ०)।

नगण्य, वि (स अगण्य) क्षुद्र, तुच्छ, साधारण, सामान्य।

नगद, स पु, दे 'नक़द'।

नगनी, स स्त्री (सं नग्निका) नग्ना, निर्वस्त्रा, विवस्त्रा २ अपुष्पा, रजोरहिता कन्या ३ निर्लज्जा, स्वैरिणी।

नगमा, स पु (अ) सुमधुर, स्वर स्वन २ गीत, गीतिका ३ राग ।

नगर, सं पु (स न) पुर् (स्त्री), पुर, पुरी, नगरी, पत्तन, पट्टन नी, पट्ट, निगम ।

—कीर्तन स पु (स न) यात्रागानम्।

—नारी, स स्त्री (स) नगरनायिका, वेश्या।

—वासी, स पु (स सिन्) पौर, पौर, जन लोक ।

नगरी, स स्त्री (सं) दे 'नगर'।

नगाड़ा,-रा, सं पु दे 'नक़ारा'।

नगीना, स पु (फ़ा) रत्न, मणि (पु) २ देशीयवस्त्रभेद ।

नग्न, वि (स) दे 'नंगा'।

नग्नता, स स्त्री (स) दे 'नंगा'।

नचवाना, नचाना, क्रि प्रे, व 'नाचना' के प्रे रूप।

नजदीक, वि (फ़ा) सन्निहित, समीप, निकट।

नजदीकी, स स्त्री (फ़ा) सान्निध्य, सामीप्य।

नज़्म, स स्त्री (अ नज़्म) कविता पद्य, छन्दस (न)।

नजर, स स्त्री (अ) दृश्, दृग्दर्शि, दृष्टि (सब स्त्री) २ दयादृष्टि (स्त्री) परि, अवेक्षण अवेक्षा ३ निरीक्षण ४ दे 'नजराना' ५ कु-दुर्,-दृष्टि।

—अदाज, वि (अ+फ़ा) अवधीरित, निराकृत, उपेक्षित।

—आना या पड़ना, क्रि अ, दृश् ईक्ष्-अव लोक् (कम)।

—डालना, क्रि स, दृश (भ्वा प अ), ईक्ष् (भ्वा आ से)।

—बद, वि (अ+फ़ा) निरुद्ध।

—बदी, स स्त्री (अ+फ़ा) (निश्चितस्थाने) निरोध।

—बाज़, स पु (अ+फ़ा) कटाक्षवीक्षक, भ्रूविलासक, *पापदृष्टि।

—सानी, स स्त्री (अ) पुनरीक्षण, संशोधनम्।

—लगना, मु, कुदृष्ट्या पीड् (कम)।

—से गिरना, मु, अप-अव-मन् (प्रे), कल्क यति (ना धा)।

नज़राना, स पु (अ) उपहार, उपायनम्।

नज़ला, स पु (अ) कफ, श्लेष्मन् (पु) २ अभिष्यन्द, प्रतिश्याय, नासास्राव।

नज़ाकत, स स्त्री (फ़ा) लालित्य, सुकुमारता, कोमलता।

नज़ात, स स्त्री (अ) मुक्ति (स्त्री), अपवर्ग।

नजारा, स पु (अ) दृश्य, दृग्गोचरस्थान २ दृष्टि (स्त्री) ३ कटाक्ष।

नज़ीर, स स्त्री (अ) उदाहरण, दृष्टांत।

नजूम, स पु (अ) ज्योतिष, नक्षत्रविद्या।

नजूमी, स पु (अ) ज्योतिषिक, ज्योतिर्विद् (पु)।

नजूल, पु (अ) राज-नृप शासक भूमि (स्त्री)।

नट, स पु (स) शैलूष, जायाजीव, भरत, अभिनेतृ, भरतपुत्रक, रंग-जीव-अवतारक, सर्ववेशिन्, नट, नप्र २ रज्जुनर्तक ३ व्यायामिन् ४ जातिविशेष।

—वर, स पु (स) श्रीकृष्ण।

नटखट, वि (स नट+अनु खट) चपल, चंचल, कुचेष्टक २ धूर्त, मायाविन्।

नटखटी, स स्त्री (हिं नटखट) चपलता २ धूर्तता।

नटनी, स स्त्री, दे 'नटी'।

नटी, स स्त्री (स) शैलूषी, अभिनेत्री, सर्ववेशिनी २ नर्तकी ३ नटपत्नी ४ वेश्या ५ नटजातिनारी।

नतीजा, स पु (अ) परिणाम, फल २ अर्थ, पाक।

नत्थी, स स्त्री (हिं नाथना) नहन, सम्प्रथन २ नहनसूत्र ३ लेख्यश्रेणी।

नथ, स स्त्री (स नाथ = नाक की रस्सी) नाथ, नासावलय।

नथना, स पु (स नस्त = नाक)। नासा नासिका, रन्ध्र रध्र-विवर २ नासापुट पुटम्। क्रि अ, व्यध्-छिद् (कम) २ सम्प्रथ-संनह (कम)।

—चढ़ाना या फुलाना मु, क्रुध (दि प अ)।

नथनी, स स्त्री (हिं नथ) *नाथक।

नद, [illegible] पु (स) उद भिद, सरस्वत् (पु)।

—राज, स पु (स) समुद्र।

नदारद, वि (फा) अनुपस्थित, लुप्त, अदृष्ट।

नदीश, स पु (स) समुद्र, अब्धि (पु)।

नदिया, [illegible] स्त्री (स नदिका) क्षुद्र-सरित्-नदी।

नदी, स स्त्री (स) तटिनी, तरंगिणी, शैवलिनी, स्रोतस्विनी, वाहिनी सरित् (स्त्री) ह्र (ह्रा) दिनी, धुनी, निम्नगा, आ(अ)पगा, सिंधु (पु), रोधो-स्रोतस्-वती, कूलवती, स्रवन्ती।

—कांत, स पु (स) सागर, जलधि (पु)।

—तीर, स पु (स न) सरित्-नदी,-कूल तटम्।

नदीन, स पु (स) समुद्र, सागर २ वरुण।

नदीश, स पु (स) अब्धि-जलधि (पु)।

नद्ध, वि (स) बद्ध, योजित, सश्लेषित।

नद्ध्री, स स्त्री (स) चर्म-रज्जु (स्त्री)-कक्ष्या।

नधना, क्रि अ (स नद्ध) नि, बध (कम) संयुज (कर्म) २ दे 'जुतना' ३ प्रारभ् (कम)।

ननद, ननद्-दी, स स्त्री [स ननदृ (स्त्री)]।

ननाद् (स्त्री), भर्तृभगिनी, ननंदिनी, ननदा, पतिस्वसृ (स्त्री)।
ननिहाल, स पु (हिं नानी+स आलय) मातामहालय, मातृकुलम्।
नन्हा, वि (स न्यञ्च्√) अनिल्यु, क्षुद्र, अल्पक्षुद्र, तनु, प्रतनु। स पु, शिशु, स्तन भय।
नपुंसक, स पु (स) क्लीब, तृतीय प्रकृति (पु) षण्ड, पोगंड, श (प) ब-ढ (स न), क्लीबलिंग (व्या)। वि, भीरु, कातर।
नपुंसकता, स स्त्री (स) क्लीबता, षण्ढता, शंढता २ भीरुता, कातरता।
नफरत, स स्त्री (अ) दे 'घृणा'।
नफा, स पु (अ) लाभ, आय, उदय, फल, वृद्धि (स्त्री)।
नफीस, वि (अ) उत्कृष्ट, उत्तम, विशिष्ट २ चारु, शोभन, सुंदर ३ उज्ज्वल, विमल।
नबी, स पु (अ) सिद्ध, ईशदूत, आविष्कर्ता।
नबेड़ना, क्रि स, (स निवृत्त>) दे 'निपटाना'।
नबेड़ा, स पु (हिं नबेड़ना) न्याय, निर्णय।
नब्ज़, स स्त्री (अ) नाडी ना (स्त्री)।
—**देखना**, क्रि स, नाडीं परीक्ष् (भ्वा आ से)।
नभ, स पुं [स नभस् (न)] दे 'आकाश'।
—**चर**, स पु (स नभश्चर) खग, खेचर।
नम, अव्य (स) प्रणति (स्त्री), प्रणाम, अभिवादन, नमस्कार, नमस्क्रिया।
नम, वि (फा) आर्द्र, उन्न।
नमक, स पु (फा) लवण २ लावण्यं, विशिष्टसौन्दर्यं ३ रिं । (नमक के भेद, दे 'नोन')।
—**ख्वार**, स पु (फा) पराश्रित, परायत्त, सेवक।
—**दान**, स पु (फा) लवणधानी।
—**का तेज़ाब**, स पु, उदनीरिकाम्ल, लवणाम्ल।
—**हराम**, वि (फा+अ) कृतघ्न, अकृतज्ञ, अहितचिंतक, (नी स्त्री)।
—**हरामी**, स स्त्री कृतघ्नता, कृतघ्नता।
—**हलाल**, वि (फा+अ) अनुरक्त, भक्त, सानुराग।
—**हलाली**, स स्त्री, भक्ति, अनुरक्ति (स्त्री) कृतज्ञता।
—**खाना**, मु, पराश्रय भुज् (रु आ अ), पराश्रय सेव (भ्वा आ से)।
—**मिर्च लगाना**, मु, अत्युक्त्या वर्ण् (चु)।
कटे पर—लगाना अथवा घाव पर—छिड़कना, मु क्षते क्षारं क्षिप् (तु प अ)।
नमकीन, वि (फा) लवण, लवण क्षार, युक्त मय-गुणविशिष्ट धर्मक २ लवणित, सलवण, लवणमसृष्ट ३ अभिराम, मनोज्ञ। स पु, लवणपक्वान्न (समोसा आदि)।
नमदा, स पु (फा) नमतम्।
नमन, सं पु (स न) नमस्कार, प्रणति (स्त्री) २ अवनमन, नति (स्त्री)।
नमनीय, वि (स) पूज्य, वन्दनीय।
नमस्कार, स पु (स) दे 'नम'।
नमस्ते, वाक्य, (स) नमस्तुभ्यं, नमामि त्वाम्। स स्त्री, प्रणाम, प्रणति (स्त्री), नमस्कार।
नमाज़, सं स्त्री (फा) ईश, प्रार्थना-वन्दना (इस्लाम)।
नमित, वि (स) आकुञ्चित, नमित, प्रवण, प्रह्व।
नमी, स स्त्री (फा) आर्द्रता, क्लिन्नता।
नमूदार, वि० (फा) उदित, प्रकट, दृग्गोचर।
नमूना, स पु (फा) आदर्श, प्रतिमा, प्रतिरूप २ उपमान, प्रतिमानम्।
नम्र, वि (स) निर्, अभिमान अहंकार, विनत, विनीत, विनयिन्, विनयशील, अभिमान गर्व-दर्प, रहित शून्य हीन, नम्रचेतस् २ नत, प्रवण।
नम्रता, स स्त्री (स) प्रश्रय-याग, विनय, विनयिता, निरभिमानता, सौम्यता।
नय, स पु (स) नय, नीति (स्त्री)।
—**नागर**, वि (सं) नय नीति, निपुण-कोविदज्ञ विद् विशारद शास्त्र।
नयन, स पु (स न) नेत्र, दे 'आँख' २ अपनयन, अपहरणं।
—**गोचर**, वि (स) दृग्गोचर, दृष्टिगोचर।
—**पद**, स प (स) नेत्र नयन पद पद।
—**जल**, स पु (स) नयन, वारि (न)-सलिल-जलम्।
नया, वि (स नव) आधुनिक इदानींतन [-नी (स्त्री)] आधुनिक [-की (स्त्री)],

अर्वाचीन २ अभिनव, नवीन, नूतन, प्रत्यग्र ३ अभूत-अदृष्ट, पूर्व ४ अनभ्यस्त, अपरिचित।
—पन, स पु, नवीनता, नूतनता, अपूर्वता।
नये सिरे से, क्रि वि, पुनः, पुनरपि अभिनवम्।
नर, स पु (स) पु (पू) रुष, ना पुंस (पु), २ मनुज, मनुष्य, मानुष, मानव, मर्त्य। वि, पुरुषीय, नर, पु, पुरुष-(उ, पुल्लाथ)।
—देव, स पु (स) नृप २ ब्राह्मण।
—नाथ, स पु (स) नरपति, भूप।
—नारायण, स पु [स द्वौ (द्वि)] ऋषि विशेषौ।
—पिशाच, स पु (स) महादुष्ट, महाक्रूर।
—भक्षी, स पु (स-क्षिन्) राक्षस, पिशाच।
—लोक, स पु (स) पृथिवी, मर्त्यलोक।
—सिंह, स पु, दे 'नृसिंह'।
—सिंह, स पु (स) दे 'नृसिंह'।
नरक, स पु (स पु न) दुर्गति (स्त्री), नारक, निरय, अधोभुवनस्थान ३ दुःखपूर्णस्थानम्।
—कुंड, स पु (स न) निरय नरक,कूप कुण्डम्।
नरकट, स पु (स नल) धमन, नड, नाल, पोटगल, कुक्षिरन्ध्र।
नरक(कु)ल, नरकुल, स पु, दे 'नरकट'।
नरकेस(म, ह)री, स पु, दे 'नृसिंह'।
नरखड़ी, स स्त्री } (दश) कंठ, गल २ पाश
नरखरा, स पु } श्वास,मार्ग-नालिका।
नरगिस, स पु (फा) पुष्पभेद, *नरगिनम्।
नरद, स स्त्री (फा नर्द) शारि (पु), शारिका, शारिफलम्।
नरमी, स स्त्री, दे 'नर्मी'।
नरसिंघा, स पु (स नर (=बड़ा)+शृङ्ग>) वाद्यभेद, *नरशृङ्ग, कहल-लम्।
नरसों, क्रि वि, दे 'अतरसों'।
नराच, स पु (स नाराच) बाण, शर।
नराधम स पु (स) नीच, पाप, पापिष्ठ, नीच।
नराधिप, स पु (स) नृप, भूप।
नरेन्द्र, नरेश, नरेश्वर, स पु (स) नृप, नृपति, राजन् (पु)।
नर्तक, स पु (स) नर्तयितृ, नृत्य,-कर कारिन् २ दे 'नट'(१) ३ वन्दिन्, वैतालिक ४ दे 'नरकट'।
नर्तकी, स स्त्री (स) लयपुत्री, नृत्य, करी कारिणी, लासिका २ दे 'नटी' (१)।
नर्तन, स पु (स न) नृत्यम्। (पुरुषों का–) ताण्डव-वम्। (स्त्रियों का–) लास्यम्।
नर्बदा, स स्त्री (स नर्मदा) रेवा, मेकल कन्या, सोमसुता।
नर्म[1], स पु [स नर्मन् (न)] परि(री)-हास, विनोद।
नर्म[2], वि (फा) (स्वभाव) कोमल, मृदुल, सुकुमार, सौम्य, २ (पदार्थ) मसृण, स्निग्ध, श्लक्ष्ण, सुखस्पर्श, ३ (ध्वनि) मधुर, मञ्जुल।
नर्माना, क्रि अ (फा नर्म) मृदू भू २ दयार्द्री भू प्र शम् (दि प से)। क्रि स, मृदू कृ २ दयार्द्री कृ, प्र, शम् (प्रे शमयति)।
नर्मी, स स्त्री (फा नर्म) कोमलता, मृदुता, सौम्यता २ मसृणता, श्लक्ष्णता।
नल[1], स पु (स) नृपविशेष, दमयन्ती पति (पु)।
नल[2], स पु (स) दे 'नरकट'।
नल[3], स पु (स न) पद्म, कमलम्।
नल[4], स पु (स नाल) नाडी-डी, नाडि-लि (स्त्री) प्रणाल-ली।
पानी का नल, स पु प्रणालिका, सारणि (स्त्री), जलनाली।
नला, स पु (हिं नल) मूत्र,-मार्ग-नाली।
नलिन, स पु (स न) कमल, सरोजम्।
नलिनी, स स्त्री, (स) अम्बुज, कमल २ पद्म समूह ३ पद्माकर, पुष्करिणी ४ (लता) कमलिनी पद्मिनी, मृणालिनी ५ नदी।
नली, स स्त्री (हिं नल) सूक्ष्म-क्षुद्र,-नाली नाडी दे 'नल'(४) २ दे 'नरखरा' ३ अन्यतमनाली-डी ४ अनुजघास्थि (न) ५ सूत्रवेष्टन, भ्रमर।
नव[1], वि (स) नवीन, नूतन, दे 'नया'।
—युवक, स पु, नव,-युवन् (पु), तरुण, तरुण किशोर।
—यौवना, स स्त्री (स) नवयुवति (स्त्री)-ती नवतरुणी, तरुणी, नवोढा युवती।
—वधू, स स्त्री (स) नवोढा, वधू (स्त्री), नवपरिणीता, नववरिका।

नव², वि तथा सं पु (स नवन्) दे 'नौ'।

—ग्रह, स पुं [स ग्रह (बहु)] सूर्यादय नव ग्रहा।

—द्वार, वि (स) नवद्वारयुक्त २ नवच्छिद्र (शरीरम्)।

—निधि, स स्त्री (स पु) नवरत्नयुत कुबेरकोष।

—रत्न, स पु (स न) नवप्रकारमणय (मोती, माणिक्य आदि) २ विक्रमादित्यस्य राजसभायां कालिदासादयो नव पण्डिता ३ नवविधरत्नयुत हार केयूर वा।

—रात्र, स पु (स न) आश्विनशुक्लप्रतिपदादिनवमीपर्यन्तकर्तव्यदुर्गाव्रतविशेष।

—सत सोजना, मु, षोडशशृङ्गारैः अलङ्कृ।

नवक, स पु (स न) नववस्तुसमूह।

नवधा, अव्य (स) नवप्रकारे, नव खण्डेषु।

—भक्ति, सं स्त्री (स) नवप्रकारा भक्ति (श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदनम्)।

नवनी, नवनीत, स स्त्री, स पु, (स) दे 'मक्खन'।

नवम, वि (स) नवम मं मी (पु न स्त्री)।

नवमी, स स्त्री (स) चान्द्रमासस्य कृष्णा शुक्ला वा नवमी तिथि (स्त्री)।

नवल², वि (स) नवीन, नव्य, नूतन २ सुंदर ३ युवन् (पु) ४ उज्ज्वल, स्वच्छ।

नवला, स स्त्री (स) तरुणी, युवती ति (स्त्री)।

नवाँ, वि, दे 'नौवाँ'।

नवाना, क्रि स, दे 'झुकाना'।

नवान्न, स पु (स न) नूतनान्न २ श्राद्धभेद ३ सद्यःपक्वमन्नम्।

नवाब, स पु (अ नव्वाब) राजप्रतिनिधि (पु) २ उपाधिभेद ३ प्रान्ताध्यक्ष। वि, अतिव्ययिन्, अर्थनाशिन् २ आज्ञापक, शासक।

—ज़ादा, स पु (फा) राजप्रतिनिधि प्रान्ताध्यक्ष पुत्र २ विलासिन्, सुखपरायण।

नवाबी, स स्त्री (अ नव्वाब) राज, प्रतिनिधित्व प्रान्तनियम २ अधिकार, शासन, स्वाम्य ३ सुखोपभोग, विलासित्वम्।

नवासा, सं पु (फा) दौहित्र, पुत्रीदुहितृ, पुत्र। नवासी (स्त्री = दौहित्री)।

नवासी, वि [सं नवाशीति (नित्य स्त्री)]। सं पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (८९) च।

नवीन, वि (स) दे 'नया'।

नवीनता, स स्त्री (स) दे 'नयापन'।

नव्य, वि (स) दे 'नया'।

नब्बे, वि [स नवति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (९०) च।

नशा, स पु (फा) क्षीबता, मत्तता, मद, माद, शौण्डता २ मादकद्रव्य ३ धनविद्यादीना अवलेप गर्व दर्प।

—उतरना, मु, मदो व्यपगम्।

—उतारना, मु, दर्पं हृ (भ्वा प अ), अभिमान घूर्ण् (चु)।

—ख़ोर, स पु (फा) मद्यप मधुप, पान, रत शौण्ड।

—चढ़ना, मु मद् (भ्वा आ से) क्षीब मत्त (वि) भू।

—पानी, स पु, मादकसामग्री।

नशीला, वि (फा नशा) मादक, उन्मादक, मदोत्पादक २ मदमत्त।

नशेबाज, स पु (फा) दे 'नशाखोर'।

नश्तर, स पु (फा) वेधक्षुरिका।

—लगाना, मु क्षुरिकया स्फोटक छिद् (रु प अ), शस्त्रेण उपचर् (भ्वा प से)।

नश्वर, वि (स) क्षयिन्, क्षयिष्णु, भङ्गुर, अनित्य, अस्थिर, वि, ध्वंसिन्।

नश्वरता, स स्त्री (स) क्षय नाश, शीलता, अनित्यता, अस्थिरता, भङ्गुरता।

नष्ट, वि (स) अदृश्य, लुप्त, च्युत भ्रष्ट २ ध्वस्त, क्षीण प्र वि, लीन, उच्छिन्न, उत्सन्न।

नस, स स्त्री (स स्नसा) स्नायु (स्त्री) वस्नसा २ धमनी, नाडी।

नसर, स स्त्री (अ) गद्य, छन्दोहीनप्रबंध।

नसल, स स्त्री (अ) वंश, कुल, जाति (स्त्री)।

नसवार, स स्त्री दे 'नास'।

नसा, स स्त्री (स) नासिका, घ्राणेन्द्रियम्।

नसीब या, स पु (अ) दे 'भाग्य'।

—जागना, मु, पुण्य उदि (अ प अ)।

नसीहत, स स्त्री (अ) उपदेश, शिक्षा।

—देना, क्रि स, उपदिश् (तु प अ), अनुशास् (अ प से), २ निभर्त्स् (चु आ से)।

नस्य, स पु (स न) नस्त, लावण्य २ नासिक्य, नासावभिर।

नस्या, स स्त्री (स) नासा नासिका, नक्ता २ नासिकारज्जु (स्त्री)।
नहछू, स पु (स नखक्षौर>) वैवाहिकरीति भेद ।
नहर, स स्त्री (फ़ा) कुल्या प्रणाली, सहो- रणा भूमि (स्त्री)।
नहरनी, नहन्नी, स स्त्री (स नखहरणी) नख निकृन्तनी/शरारा।
नहला, स पु (हिं ना) नवारकुत क्रीड़ा पत्रम्।
नहलाई स स्त्री (हि नहलाना) स्नपन स्नान प्रधवन २ स्नपन-शुल्क प्रधवन भृति (स्त्री) भृत्य परिश्रमिकम्।
नहलाना क्रि स (ब नहाना के प्र रूप।
नहाना क्रि अ (स स्नान स्ना (अ प भ) अव वि ... (... आ ... में दिनया के ... में), स्नान (त प अ स्नानों के योग मे) स्नु (भ्वा प मे) सु (दि उ मे)। स पु ('स्नान'।
नहाने योग्य, वि , स्नानीय अवगाहनीय।
नहानेवाला, स पु, स्नातृ अवगाहक।
नहाया हुआ, वि , स्नात अभिषिक्त, कृतस्नान।
नहार वि (फ़ा) निराहार, अकृतप्रातराश।
—मुँह, पु , अक्लिन्नोदर, निराहारम्।
नहारी स स्त्री (फ़ा नहार) प्रातराश , कल्य वर्त २ अश्वना कुन्दूरक।
नहीं अव्य (स नहि) न ना मा दे 'न'।
—तो, अव्य अन्यथा, इतरथा २ इतरथा, न(नो)चेद ३ वा, अथवा।
नहुष स पु (स) सोमवंशीयनृपविशेष २ वैदिकऋषिविशेष ३ नागविशेष ४ कुशिक वंशीयो विप्रनृप ।
नहूसत, स स्त्री (अ) अशुभ, अकाल २ दैन्य, खिन्नता।
नाँद, स स्त्री (स नदिका>) मृद् मृन्तिका द्रोणी द्रोणि (स्त्री)।
नान्दी, स स्त्री (स) मंगलाचरण, नमस्कारमे देवद्विजादीनामाशीर्वाद २ अभ्युदय समृद्धि (स्त्री) ३ आनंद ।
ना, अव्य (स फ़ा) न, नो, मा।
—इत्तिफ़ाक़ी, स स्त्री (फ़ा) विरोध, विसंवाद , वैमनस्य।
—उम्मेद, वि (फ़ा) निराश, भग्नाश।
—उम्मेदी, स स्त्री (फ़ा) निराशा, आशा भंग ।
—क़ाबिल, वि (फ़ा + अ)अयोग्य, असमर्थ।
—कारा, वि (फ़ा) निष्प्रयोजन, अनुपयोगिन्, निरर्थक।
—खुश, वि (फ़ा) खिन्न विषण्ण।
—गवार, वि (फ़ा) अलक्ष्य २ अप्रिय।
—चाज, वि (फ़ा) तुच्छ, क्षुद्र। स स्त्री., निरर्थकवस्तु।
—जायज, वि (फ़ा) अनुचित, नियमविरुद्ध।
—तजरुबाकार, वि (फ़ा) अनुभवहीन, अपरिपक्वबुद्धि।
—पसन्द वि (फ़ा) अप्रिय अरुचिकर।
—पाक वि (फ़ा) अशुद्ध, अपवित्र २ मलिन।
—बालिग, वि (फ़ा) अप्राप्तवयस्क, अप्राप्त व्यवहार।
—माकूल, वि (फ़ा + अ) निर्बोध, निर्विवेक २ असमान अनुचित।
—मालूम, वि (फ़ा + अ) अज्ञात, अविदित।
—मुनासिब, वि (फ़ा) अनुचित, अयुक्त।
—मुमकिन, वि (फ़ा + अ) असंभव, अशक्य।
—मुवाफ़िक, वि (फ़ा + अ) अपथ्य, अहितकर।
—याब, वि (फ़ा) अप्राप्य, दुष्प्राप, दुर्लभ।
—लायक़, (फ़ा + अ) अयोग्य, मूर्ख।
—वाक़िफ़, वि (फ़ा + अ) अनभिज्ञ, अपरिचित।
—शायस्ता, वि (फ़ा) असभ्य, अशिष्ट।
—समझ, वि (स + हिं) निर्बुद्धि, मूर्ख, अबोध।
—समझी, स स्त्री (हिं नासमझ) अज्ञता, मूर्खता।
—साज, वि (फ़ा) अस्वस्थ, रुग्ण।
नाइट्रोजन, स स्त्री (अ) भूयानि (स्त्री), नत्रजनम्।
नाई, (स न्याय) सदृश, समान, तुल्य।
नाई, नाउन, } स पु (स नापित) क्षुरिन्, क्षुरिन्, क्षुरमर्दिन्, अन्तावसायिन्, दिवाकीर्ति (पु), क्षौरिक. चण्डिल, नखकुट्ट, मुण्ड ।
नाक[1], स स्त्री (स नक्र) नासा, नासिका, घ्राणं, घाणा, गन्धवहा, सिंघिनी, नस्या, नासिक्य, गन्धनाली २ (नाक का मल) सिंघाण

णक, शिरोमणी, विद्वान ३ प्रधान-मुख्य, वस्तु (न) ४ प्रतिष्ठा, मान ।

—कटी, स स्त्री मानहानि (स्त्री), प्रतिष्ठानाश ।

—का बाल, स पु प्रिय प्रीतिभाजन, सहचर ।

—की फिसी, स स्त्री नासापिटिका ।

—की रसोली, स स्त्री नासाबुद दम् ।

—घिसनी, स स्त्री , कारुण्य, दैन्येन याचनम् ।

—बहना, क्रि अ , नासा वह् (भ्वा उ अ) अथवा प्र,-स्रु (भ्वा प अ) ।

—सिनकना, क्रि स , नासा शुध् (प्रे) या निर्मली कृ ।

—कटना, मु , अपमन् अवज्ञा (कर्म), अनादृत (वि) भू ।

—घिसना या रगड़ना, मु , पादयो पतित्वा अभि प्र-अर्थ् (चु), दैन्येन याच् (भ्वा उ से) ।

—चढ़ाना, मु , क्रोध घृणा वा प्रकटयति (ना धा) ।

—पर मक्खी न बैठने देना, मु , दोषलवमपि न सह (भ्वा आ से) २ विमलस्वच्छ (वि) स्था (भ्वा प अ) ।

—बोलना, मु , नाम (भ्वा आ से) घर्घरायते (ना धा), घर्घरव कृ ।

—भौं चढ़ाना या सिकोड़ना, मु , अरुचि अप्रीतिं वा प्रकटी █ ।

—में दम करना, मु , अत्यर्थं क्लिश् (क्र प से) बाध (भ्वा आ से) ।

—रखना, मु , सम्मानं रक्ष (भ्वा प से), अपमानात् त्रै (भ्वा आ अ) ।

—सिकोड़ना, मु , अरुचि घृणा वा दृश (प्रे) ।

नाकों चने चबवाना, मु , अर्द् व्यथ (प्रे), परि-म-तप् (प्रे) ।

नाक², स पु (स) स्वर्ग २ आकाश द्यन् ।

नाकड़ा, स पु (हि नाक) नासापाक २ दीर्घनासिका ।

नाका¹, स पु (हि नाकना = लाँघना) रथ्यान्त , मार्गावधि (पु) २ वीथी, वर्त्म ३ नगरादीनां प्रवेशद्वार ४ नगरपाल पुर रक्षक-स्थान ५ सूच्छिद्रम् ।

—बंदी, स स्त्री , (पुररक्षकै) मार्गावरोध वीथीप्रतिबंध ।

नाका², स पु (स नक्र) कुम्भीर ।

नाक़िस, वि (अ) सदोष, विकल ।

नाकेश, स पु (स) इन्द्र , देवराज ।

नाख़ुदा, स पु (फ़ा) पोत नौका,अध्यक्ष, कर्णधार ।

नाख़ूना, स पु (फा) अर्म मर्म,नेत्ररोगभेद ।

नाख़ून, स पु (फा नाखुन) नख -र, नखर र, कर, न अग्रज अरूश -कण्ट रुह , पुनर, भव नव ।

नाख़ूना, स पु (फ़ा) दे 'मोतियाबिंद' २ अश्वनेत्रेषु रक्तरेखा (स्त्री) ३ सूर कौशपट ।

नाग, स पु (स) सर्प , पन्नग २ गज, हस्तिन ३ निर्दय , क्रूरचारिन् ४ देवभेद ५ नागकेसर ६ पुन्नाग ।

—केस(श)र, स पु (स) नागकिञ्जल्क , नागाख्य , पन्नग फणि,-केस(श)र ।

—पंचमी, स स्त्री (स) श्रावणशुक्लपंचमी, पर्वभेद ।

—फनी, स स्त्री (█ नागफण-अ) कन्थारी, दुर्धर्षा, दुष्प्रवेशा, तीक्ष्णकण्टका ।

—फाँस, स स्त्री (स नागपाश) वरुणायुध २ साक्षेद्यावर्तनेतास्त पाशभेद ३ बंधन प्रकार ।

—बेल, स स्त्री (स नागवल्ली) ताम्बूली, ताम्बूल बल्ली, नागलता, पूगी ।

नागर, वि (स) दक्षिण, चतुर विदग्ध, सभ्य २ पौर, नागरिक । स पु , नगर पौर, जन , पौर , नागरिक ।

नागरक, स पु (स) शिल्पिन्, शिल्पकार २ नगर प्रबन्धक ३ चौर । वि, दे 'नागर' ।

नागरमोथा, स पु (स नागरमुस्ता) चक्रांगा, चूडाला, कच्छरुहा, नादेयी ।

नागरिक, वि तथा स पु , दे० 'नागर'(१ २) ।

नागरिकता, स स्त्री (स) नागरता, पौरता २ दाक्षिण्य, विदग्धता, सभ्यता ।

नागरी, स स्त्री (स) पुर नगर-वासिनी २ चतुरा, प्रवीणा (नारी) ३ देवनागरी लिपि (स्त्री) ।

नागहानी, वि स्त्री (फा) आकस्मिकी । यादृच्छिकी ।

नागा, स पु (स नग्न) नग्नभिक्षु ।

नागा, स पु (अ) अनुपस्थिति (स्त्री), अनिर्वृत्ति (पु), कार्यपरत्याग, अवकाश।
नागिन, नी, स स्त्री (स नागी) सर्पिणी, उरगी भुजगी, भुजङ्गी।
नागेश(स)र, स पु, दे 'नागकेसर'।
नागेश(स)री, वि (हिं नागे(स)र) पीत, दे 'पीला'।
नागोद, स पु (स नागोदरम्) उरस्त्राणम्-त्राण, आयसी, उरश्छद।
नागोदरिका, स स्त्री (स) वरहस्तपाणि त्राणम्।
नाच, स पु [स नृत्य, नृत्ति (स्त्री)] नर्तन, नृत्त, २ (प्रेम-) लास्य लास्यस्तबक ३ (उद्धत) ताण्डव ४ नटन, नाट, नाट्यम्।
—घर, **—महल,** } स पु, नृत्य, शाला-स्थानम्।
—रङ्ग, स पु, आमोदप्रमोदा, उल्लास, विनोद, कौतुकम्।
—नचाना, मु., अर्द् क्षुभ (प्रे), दु (स्वा प अ)।
नाचना, क्रि अ (स नर्तन) नृत् (दि प से) नट (भ्वा प से), नृत्य कृ। स पु, दे 'नाच'।
नाचनेवाला, स पु, दे 'नर्तक'।
नाज़, स पु (फा) दे 'नखरा'।
—अदा,—नखरा, स पु, हावभावौ, विभ्रम, विलास।
—बरदार, स पु, चाटुकार, मिथ्याप्रशंसक।
नाज़नीं, स स्त्री (फा) सुन्दरी, वामा।
नाज़िर, स पु (अ) निरीक्षक २ आसेद्धृ (पु) ग्रहक।
नाज़ुक, वि (फा) कोमल, सुकुमार, मृदुल २ प्रतन, सूक्ष्म ३ भङ्गुर, भिदुर ४ भयकर, भयावह।
—बदन, वि (फा) कोमलाङ्गतन्वङ्ग (-ङ्गी, तन्वी स्त्री)।
—मिज़ाज, वि (फा+अ) कोमलप्रकृति, मृदुस्वभाव।
नाटक, स पु (स न) दृश्यकाव्य, अभिनय ग्रथ, महारूपक २ अभिनय, नाट्यम्।
—कार, स पु (सं) नाटककरूपक-कार प्रणेतृ (पु)।
—शाला, स स्त्री (स) रङ्गशाला।
नाटकीय, वि (स) नाटक-, विषयक-, सबंधिन्।
नाटना, क्रि अ, दे 'इनकार करना'।
नाटा, वि (स नत>) खर्व, वामन, ह्रस्व, हस्वकाय।
नाट्य, स प (स न) नौर्यत्रिक नृत्यगीत वाद्य २ अभिनय ३ विडम्बन, अनुकरण।
—शाला, स स्त्री (स) रङ्गमञ्च मन्दिर शाला।
नाडा, स पु (स नाड >) नाडी वि (स्त्री), कटीवस्त्रबन्ध नाला।
नाडी, स स्त्री [स नाडी (स्त्री)] दे 'नब्ज' २ नाल नलिका प्रणाली स्त्री ३ धमनी रक्तवाहिनी ४ शि(सि)रा, रक्तवाहिनी ५ (रक्त की अति सूक्ष्म नाडी Capillary) केशिकानाडी ६ चालकनाडी (Motor nerve) ७ सवेदनवहनाडी (Sensory nerve)
—चलना, क्रि अ, नाडी स्फुर (तु प से) स्पद् (भ्वा आ से)।
—मडल, स पु (स न) नाडी-जाल,-सस्थानम्।
—छूटना, मु, दे 'मरना' तथा 'मूर्छित होना'।
नाणक, स पु (स न) टक-क, मुद्रा।
नाता, स पु (स ज्ञाति >) सबध, बधुता, सगोत्रता, सजातिता, सपिंडता।
नातिन, स स्त्री (हिं नाती) दौहित्री २ पौत्री।
नाती, स पु [स नप्तृ (पु)] दौहित्र २ पौत्र।
नाते, क्रि वि (हि नाता) सबधेन (तृ)।
—दार, स पु, ज्ञाति बन्धु-बान्धव, गण-वर्ग जन।
—दारी, स स्त्री, दे 'नाता'।
नाथ, स पु (स) अधिपति (पु), प्रभु, स्वामिन् २ पति, भर्तृ ३ नास्य, पशुनासा रज्जु (स्त्री) ४ योगिनामुपाधिभेद ५ अ (आ)हितुण्डिक, व्यालग्राहिन्।
नाथना, क्रि स (स नाथन) नाथ् (भ्वा प से), वशी कृ, अभिभू (भ्वा प से) २ नासा व्यध् (दि प अ) नासाया छिद्र कृ।
नाद, स पु (स) शब्द, ध्वनि (पु), रव २ गीत, गीतिका ३ गर्जन, गाजन ४ प्रणव भेद (व्या) ५ अर्द्धचन्द्र, अर्द्धेन्दु (पु) (व्या)

—विद्या, स स्त्री (स) सङ्गीतशास्त्रम् ।
नादान, वि (फा) अज्ञ, मूढ, नष्ट ।
नादानी, स, स्त्री, (फा) अज्ञान, मौर्ख्यं, *नाड्यम् ।
नादित, वि (स) वादित, ध्मात, क्वणित, ध्वनित ।
नादिम, वि (अ) लज्जित, ह्रीण ।
नादिर, वि (फा) अद्भुत, विचित्र ।
नादिरशाही, स स्त्री (फा नादिरशाह) निष्ठुरशासन नृशंसता, क्रूरत्वम् । वि, घोर नृशंस ।
नाधना, क्रि स (स नद्ध>) योक्त्र यति (ना धा) युन (चु) २ आरभ् (भ्वा आ अ) ।
नान, स स्त्री (फा) *स्थूलरोटिका ।
नानखताई, स स्त्री (फा) मिष्टान्नभेद, *नानखतायी ।
नानबाई, स पु (फा नानबा) आपूपिक, कान्दविक ।
नाना¹, स पु (देश) मातामह, मातु पितृ (पु), ननर्दाननत ।
नाना, वि (स) विविध, बहुविध २ अनेक, बहु ।
—भाँति, वि, अनेकप्रकारक, नानाजातीय ।
—रूप, वि, (स) अनेक बहु, रूप ।
—वर्ण, वि (सं) अनेक-बहु,-वर्ण रङ्ग ।
—विध, क्रि वि (सं धं) अनेकधा, बहुधा ।
नानार्थ, वि (स) अनेकार्थक, बह्वर्थ २ अनेकन बहुन,-उपयुक्त ।
नानिहाल, स पु दे 'ननिहाल' ।
नानी, स स्त्री (देश) मातामही, मातु मातृ (स्त्री), ननमीननमी ।
—मर जाना, मु, हतोत्साह गतसाहस (वि) भू ।
नाप, स स्त्री (सं मापन) प्रमिति, मानं मिति (स्त्री) मानं २ मानदण्ड, मापनसाधनं, मानम् ।
—तौल, स स्त्री, मापन-तोलन ने (न द्वि) ।
नापना, क्रि स (स मापन) मा (दि आ अ, जु आ अ, अ प अ), मानं निरूप् (चु), दे 'मापना' ।
नापित, स पु (स) दे 'नाई' ।
नाफा, स पु (फा) कस्तूरी मृगमद,-कोश कोष ।
नाभि, स स्त्री (सं पु स्त्री) नाभी, तुन्द कूपी, उदरावर्त्तं, तुंद-दी दि (स्त्री), तुन्दिका २ चक्रमध्यं ३ कस्तूरी ।
नाम, स पु [सं नामन् (न)] अभिधा, अभिधानं, अभिधेय, आह्वा, आह्वय, आख्या, सज्ञा २ यशस् (न) ख्याति (स्त्री) ।
—रखना या धरना, क्रि स, नाम-संज्ञां कृ, अभिधा (जु उ अ) ।
—करण, सं पु (सं न) संस्कारभेद (धर्म) २ नामदानम् ।
—कमाना,—करना,—पाना या**—होना**, मु, विख्यात विश्रुत-महायशस्क (वि) भू ।
—डुबोना, मु, यशः मलिनी कृ, ख्यातिं नश् (प्रे), कीर्तिं कलंकयति (ना धा) ।
—पर धब्बा लगाना, मु, दे 'नाम डुबोना' ।
नामक, वि (स) नामधारिन्, आख्य,-संज्ञक ।
नामर्द, वि (फा) नपुंसक २ भीरु ।
नामी, वि (स नामन्>) नामक, नामधेय २ विख्यात, विश्रुत ।
—गिरामी, वि (फा, मि सं नामग्रामिन्) यशस्विन् प्रसिद्ध ।
नायक, स पु (सं) नेतृ-अग्रणी (पु), मुख्य, प्रमुख २ स्वामिन्, प्रभु, अधिपति ३ नरव्याघ्र, जननायक ४ कथापुरुष (सा०) ५ सङ्गीतकुशल ६ सेनापति ।
नायका, सं स्त्री (सं नायिका) दे 'नायिका' २ वेश्याजननी ३ दूती, कुट्टिनी, शम्भली ।
नाय(इ)न, स स्त्री (हि नाई) नापिती, क्षुरिणी, मुण्डनी, क्षौरिकी ।
नायब, सं पुं (अ) प्रति,-निधि (पुं) हस्तक पुरुष २ सहाय-यक, सहकारिन् उप-(उ उपमन्त्रिन्) ।
—तहसीलदार, सं पुं, उपमण्डलेश-श्वर ।
नायिका, सं स्त्री (सं) शृंगाररसालम्बन भूता नारी २ सुन्दरी रूपिणी ३ कान्ता, दयिता ।
नारंगी, स स्त्री (स नारङ्ग) (वृक्ष) नाग रङ्ग, नार्यंग, नागर, ऐरावत, त्वग्गन्ध, (फल) नारंग, नारंगकं, नारंगफलम् इ । वि,

पिच्छिल, कौसुम [-मी (स्त्री)], पीत लोहित।

नार-रि, म स्त्री, दे 'नारी' तथा 'नाल'।

नारकी, वि (स नारकिन्) नारकिक, नारकीय, पापिन्।

नारद, म पु (म) देवर्षिविशेष ।

नारमल, वि (अ) सामान्य, साधारण, यथार्ह।

नारा, म पु, दे 'नाडा'।

नाराज, वि (फा) अप्रसन्न रुष्ट।

—होना, क्रि अ, कुप (दि प से), रुष् (दि) भू।

नारायण, स पु (म) विष्णु, चक्रिन, ईश्वर।

नारायणी, म स्त्री (स) लक्ष्मी २ दुर्गा ३ मुद्गलमुने पत्नी ४ दुर्योधनाय दत्ता कृष्णसेना।

नारियल, स पु (म नारिकेल -ली) (वृक्ष) महाफल-दृढस्कन्ध, फल, तुग, त्र्यक्ष, मगल्य (फल) अफल, कौशिकफल, नारिकेल म।

नारियली, स स्त्री (हि नारियल) नारिकेली २ अफल-नारिकेल-रस ३ नारिकेलसार।

नारी, म स्त्री (म) स्त्री, सीमन्तिनी, योषित् (ता), योषित्, योषिद् (स्त्री), अबला, वामा, वनिता, महिला, रामा, प्रिया, ललना (स्त्री), सुभ्रू, वधू (स्त्री), योषिता।

—दूषण, म पु, (म न) सुरापानदुर्जन समागादय स्त्रीदोषा।

—रत्न, म पु, (म न) श्रेष्ठ-उत्तम रूपगुण शालिनी, नारी।

नाल[1], म स्त्री (म नाल) नाल-ली निका, पद्मादीना दण्ड २ दे 'नल' ३ अन्त्रल नाडी-ली ४ मूत्रवेष्टन, भ्रमर ५ दे 'आवल नाल'।

नाल[2], स पु (अ) खुरत्र, खुरत्राण २, लोह वलय-यम्।

—बद, स पु (अ +फा) खुरत्र, बधक योजक।

—बदी, म स्त्री (अ +फा) खुरत्रबधनम्।

—लगाना, क्रि स, खुरत्र बध् (क्र प अ), खुरत्रेण सनाथी कृ।

नालकी, म स्त्री (स नाल) शिबिकाभेद, *नालकी।

नाला, स पु (स नाल) अल्प-क्षुद्र-नदी सरित् (स्त्री) २ दे 'नाडा'।

नालिश, म स्त्री (फा) अभियोग, भाषा, आपाद।

—करना या दागना, क्रि स, अभियुज् (रु आ अ च) दानुकूल निविद् (प्रे)।

नाली, म स्त्री (स) नाल, नालि (स्त्री), प्रणाल ली जलमार्ग, परि(री)वाह २ नाडी, धमनी, शिरा ३ धात्वादिनाली-टी।

नाव, म स्त्री [स नौ (स्त्री)] तरणी रि (स्त्री), तरी रि (स्त्री), तरिका, तरण्ड। (छोटी) नौका, उडुप, कोल, प्लव।

—चलाना, क्रि स, नौका प्रेर्-वह चल् (प्रे)।

नावक, म पु (फा) क्षुद्रबाणभेद २ मधु मक्षिकादश।

नाविक, म पु (म) औडुपिक, नौ-तरणी वाह २ कर्णधार, सुरयन्त्रिक।

नाश, म पु (म) प्रणाश, विनाश, प्रविध्वंस उच्छेद, क्षय, सहार ३ अदर्शन, लोप, तिरोधान ३ मृत्यु (पु)।

—करना, क्रि स, प्रवि, नश् ध्वम् (प्रे) उत्-अव सद् (प्रे), क्षि विलुप् (प्रे), उच्छिद (रु प अ) २ दे 'मारना'।

—होना, क्रि अ, प्रवि, नश (दि प से) प्राव, ध्वस् (भ्वा आ से), प्रविली (दि आ अ), क्षय इ-या (अ प अ)।

नाशक, म पु (म) प्रवि, ध्वसक, क्षयकर [री (स्त्री)], उच्छेदक सहारक २ घातुक, अतकर [री (स्त्री)], नाशकारिन्।

नाशपाती, स स्त्री (तु) अमृतफल, फल, अमृताह्वम्।

नाशवान्, वि (स -वत्) क्षयिन, क्षयिष्णु, क्षय नाश, शील, वि,नश्वर [री (स्त्री)] अनित्य, अध्रुव।

नाशी, वि (स शिन्) दे 'नाशक' २ दे 'नाशवान्'।

नाश्ता, म पु (फा) कल्यवर्त, प्रातराश, उपल्पु,-आहार, कल्यपालम्।

नास, म स्त्री (स नस्य) सुकरी, नासाचूर्णम्।

—दान, म पु, नस्यपात्र-त्री।

नासपाल, म पु (फा) अपक्वदाडिमत्वच (स्त्री) २ अपक्वदाडिमम्।

नासा, म स्त्री (स)दे 'नाक'(१)तथा 'नथना'।

नासिका, म स्त्री (स)दे 'नाक'(१-२)।

नासूर, स पु (अ) नाडीव्रण, गद्।

नास्तिक, सं पु (स)अनीश्वरवादिन्, निरीश्वर, ईश्वरानिश्वासिन्।

नास्तिकता, स स्त्री (स) अनीश्वरवाद, ईश्वराविश्वास, नास्तिक्यम्।

नाह, स पु, दे 'नाथ'।

नाहक, क्रि वि (फा) वृथा, व्यर्थ मुधा, निरर्थक, निष्फलम्।

नाहर (र), स पु (स नरहरि >) सिंह २ व्याघ्र ।

निंदक, स पु (स) अभिशापक, अभ्यसूयक, अपपरिवादक आक्षेपक पिशुन ।

निंदनीय, वि (स) निंद्य, उपालभ्य, गर्हणीय, वाच्य गर्ह्य २ अभद्र, अशुभ, कुत्सित।

निंदा, स स्त्री (स) अपपरि-,वाद, आअधि-,क्षेप, अव अप-उप, क्रोश, कुत्सा गर्हा, गर्हण, कुत्सन, भर्त्सना।

—करना, क्रि स, निंद (भ्वा प स) गर्ह् (चु भ्वा आ स) अधि-आ क्षिप (तु प उ), अप परि,वद (भ्वा प से) आक्रुश (भ्वा प अ), तिरस्कृ (चु आ से)।

—होना, क्रि अ, उक्त धातुओं के कर्म रूप।

निंदासा, वि (हिं नींद) निद्रालु तन्द्रिल, निद्रालस।

निंदित, वि (स) अधि आ,क्षिप्त, गर्हित, आक्रुष्ट, निर्भत्सित २ कुत्सित, गर्हित।

निंद्य, वि (स) दे 'निंदनीय'।

निंब, सं पु (स) अरिष्ट, सर्वतोभद्र, तिक्तक, हीन ।

निंबकौड़ी, स स्त्री (स निंब >) दे 'निंबौरी'।

निंबू, स पु [स निंबु(बू)क] (वृक्ष) अम्लजंबीर, दन्तशत, रोचन, शोधन, जन्तुमारिन्, निंबू (स्त्री)। (फल) जंबीर, जंबीरफल इ ।

निःशंक, वि (स) अभय, निर्भय, अभीत, निर्भीक २ निःसंकोच, निःसंदेह। क्रि वि, निर्भयं, निःशंकम्।

निःशब्द, वि (स)नीरव, विराव, मूक, मौनिन्।

निःशेष, वि (स) अशेष, अखिल, समग्र, समस्त २ समाप्त, अवसित, सम्पूर्ण।

निःश्रेयस, स पु (स न) अपवर्ग, मुक्ति (स्त्री), मोक्ष, २ कल्याण, मंगलम्।

निःश्वास, स पु (स) बहिर्मुखश्वास, श्वसन, अपान, प्राण २ उच्छ्वास, उच्छ्वसित, दीर्घ (नि)श्वास इ ।

निःसंकोच, क्रि वि (स-न) निर्विकल्प, निःसंशय, निःशंक २ निर्भय, निश्शंकम्।

निःसंग, वि (स) असंग, गतसंग,संग २ निर्लिप्त ३ निःस्वार्थ।

निःसंतान, वि (स) अनपत्य, निरपत्य, निरन्वय, निर्वंश, अपुत्र । (स्त्री =वंध्या, अप्रजिनी, अनपत्या)।

निःसंदेह, क्रि वि (स ह) निःशंक, निःसंशय, असंशय, शंका संदेह, विना। वि, निर्विकल्प, निःसंशय, असंशय निःशंक।

निःसंशय, वि तथा क्रि वि, दे निःसंदेह'।

निःसार, वि (स) नीरस विरस, निःसत्त्व २ तुच्छ, क्षुद्र ३ असार, तत्त्वहीन।

निःसीम, वि (स) अनंत, अमित, अपरिमित, निरवधि।

निःसृत, वि (स) निर्गत, नियात, निष्क्रान्त।

निःस्पृह, वि (स) निष्काम, अकाम, निरिच्छ २ निर्लोभ, संतुष्ट।

निःस्वार्थ, वि (स) स्वार्थरहित स्वलाभहीन विमुख, परोपकारिन्।

निआमत, स स्त्री (अ नेअमत) अलभ्य दुर्लभ-वस्तु (न) २ स्वादुवस्तु ३ धनम्।

निकट, वि (स) आसन्न, समीप, संनिकृष्ट संनिहित, दे 'समीप'।

—वर्ती, वि (स तिन्) निकटस्थ, समीपस्थ।

निकटता, स स्त्री (स) समीपता' दे ।

निकम्मा, वि (स निष्कर्मन्) वृत्तिहीन, निर्व्यापार २ अलस, आलस्यशील, निरुद्यम ३ निरर्थक, मोघ, अनुपयोगिन्।

निकर, स पु (स) गण, समूह २ राशि (पु) ३ निधि (पु)।

निकलंक, वि (स निष्कलंक) निर्दोष, निष्पाप, अनघ, दोषपाप-रहित, शुद्ध, पवित्र।

निकलंकी, स पु (स कल्कि) विष्णु दशमावतार । वि (हिं निकलंक दे०)।

निकल, स स्त्री (अ) धातुभेद, कर्लिनम्।

निकलना, क्रि अ (हिं निकालना) निर्गम्, निःसृ तथा अप-इ (दोनों अ प अ), निःसृ (भ्वा प अ), निष्क्रम् (भ्वा प स), पृथग् भू २ अतिक्रम्, उन्मृ, [illegible] (भ्वा प से), अति इ, उल्लंघ् (भ्वा आ से)

३ सफली-उत्तीर्ण भू ४ गम, या, व्रज् (भ्वा प से) ५ उद्गम, उदगम, उदय् (भ्वा आ से) ६ जन् (दि आ स) प्रादुर्भू, उत्पद् (दि आ अ) ७ निष्, सम्पद, सिध (दि प अ) ८ (सवाल आदि) उत्तर लभ प्राप् (कम) ९ प्रवृत् (भ्वा आ से) प्रस्थर् चल् (भ्वा प से) १० विनिर्, सुर (कम) ११ आविष्कृ (कम) १२ स्थापित प्रमाणित (वि) भू, निष् १३ अप-सृ-सृप (भ्वा प अ), पलाय (भ्वा आ स) १४ आप, लभ (कर्म) १५ (समयादि) व्यति इ, अतिक्रम, गम्। स पु दे 'निकास'।

निकलनेवाला, स पु निर्गन्तृ निर्यातृ इ।

निकलवाना, क्रि प्रे, व 'निकलना' के प्रे रूप।

निकष, स पु (स) दे 'कसौटी'।

निकषा, स स्त्री (स) रावणादिराक्षसजननी माता (स्त्री)। अव्य०, समीप मे, अन्तिकं, दे० 'समीप'।

निकषोपल, स पु (स) दे 'कसौटी' १।

निकाई, स स्त्री (स निक = स्वच्छ>) भद्रता, प्रशस्तता २ सुंदरता, मनोज्ञता।

निकाम, वि (स) पर्याप्त, अलं (चतुर्थी के साथ), आवश्यकतानुरूप। २ अभीष्ट, यथेष्ट ३ विपुल, बहुल ४ इच्छुक, अभिलाषिन्, आकांक्षिन्।

अव्य० अत्यन्तम्, अत्यधिक, बहु, भृश, भूरि (सब अव्य०)।

निकाय, स पु (स) गण, सघ २ चय, राशि (पु) ३ गृह, सदन (न) ४ ईश्वर।

निकाल, स पु (हिं निकलना) दे 'निकास'।

निकालना, क्रि स (स निष्कासन) व 'निकलना' के प्रे रूप।

निकाला, स पु (हिं निकालना) निर्-वि-, वासन, अपसारण, निष्कासन, प्रवासनम्।

निकास, स पु (स निष्कास) अपसरि, गम, अपनिष्-क्रम क्रमण, २ निष्कासन, निष्काशन ३ द्वार, द्वार् (स्त्री) ४ क्षेत्र, सनभूमि (स्त्री) ५ उद्गम, प्रभव ६ रक्षोपाय ७ आयोपाय ८ आय, अर्थलाभ।

निकासी, स स्त्री (हिं निकास) प्रस्थान, निर्गम २ आय अर्थलाभ ३ विक्रय, विनियोग, निर्गमशुल्क -कम्।

निकाह, स पु (अ-विवाह इस्लाम)।

निकुञ्ज, स पु (स पु न) कुञ्ज, लता मडप, पर्णशाला।

निकृति, स स्त्री (स) तिरस्कार, अपमान २ शठता, नीचता।

निकृष्ट, वि (स) अधम, अवर, अपकृष्ट, क्षुद्र, गर्ह्य, निंद्य, नीच, हीन, जघन्य।

निकृष्टता, स स्त्री (स) अधमता, क्षुद्रता, हीनता, गर्ह्यता, जघन्यता, नीचता इ।

निकेत, स पु (स) निकेतन, निकेतन, गृह, स्थान, सद्मन्।

निक्षिप्त, वि (स) प्र-, अस्त क्षिप्त, अव नि पतित २ त्यक्त, विसृष्ट ३ अधिष्ठित, न्यस्त।

निक्षेप, स पु (स) नि प्र क्षेप-क्षेपण, प्रासन, प्रेरण निपातनं २ त्याग, विसर्ग, उत्सृ वि-सर्ग, विसर्जन ३ आधि-उपनिधि (पु), न्यास।

निखंग, स पु, दे 'तरकश'।

निखट्टू, वि (हिं नि = नहीं + घटना = कमाना) उद्यम-उद्योग-व्यवसाय, विमुख, अलस।

निखरना, क्रि अ (स निक्षरण>) निर्मली स्वच्छी भू, शुध् (दि प अ) प्रसद्-सृज् (कर्म) २ सुंदरतर (वि) जन् (दि आ से)।

निखरवाना, निखराना, क्रि प्रे, व 'निखरना' के प्रे रूप।

निखरी, स स्त्री (हिं निखरना) पक्व घृतपक्व, भोजनम्।

निखर्व, स पु (स निखर्व-र्वं) दशसहस्रकोट्यो वा, तदङ्कौ। नि, वामन, ह्रस्वकाय।

निखार, स पु (हिं निखरना) निर्मलता, स्वच्छता २ शृङ्गार।

निखारना, क्रि स, व 'निखरना' के प्रे रूप।

निखिल, वि (स) अखिल, समस्त, संपूर्ण।

निखोट, वि (हिं नि + खोट) निर्दोष, शुद्ध।

निगदना, क्रि स (फा निगद = सीवन) तुन्न सिव (दि प से)।

निगड, स स्त्री (स पु न) अंदुक, अंदु। २ शृंखल-ला, बधनम्।

निगम, स पु (स) वेद, श्रुति (स्त्री)

२ मार्ग ३ आपण, विपणी णि (स्त्री) ४ मेला, मेलक ५ वाणिज्यम्।
निगमन, स पु (स न) प्रत्याम्नाय (न्या)।
निगरण, स पु (स न) भक्षण, खादन २ कंठ, गल।
निगरानी, स स्त्री (फा) निरीक्षण, पर्यवेक्षणम्।
निगलना, क्रि स (स निगलन) निगल् (भ्वा प से) निगृ (तु प से), ग्रस् (भ्वा आ से) = दे 'खाना'।
निगह, स स्त्री दे 'निगाह'।
—दाश्त, स पु (फा) रक्षक, परित्राता।
—बानी, स स्त्री, रक्षा, त्राणम्।
निगाली, स स्त्री (देश निगाल = बाँस का प्रकार) धूमपानयन्त्रनाली।
निगाह, स स्त्री (फा) दृष्टि (स्त्री) दृक्शक्ति (स्त्री) २ दर्शन, वीक्षण, विलोकन ३ कृपा दया, दृष्टि ४ विचार, मति (स्त्री) ५ विवेक।
—रखना, मु, कटाक्षेण अवलोक् (चु) भाम् (भ्वा आ से)।
निगूढ, वि (स) निलीन, प्रच्छन्न, निभृत।
निगोड़ा, वि (हिं निगुरा) दुष्ट, खल, २ अधम, नीच ३ मन्दहत, भाग्य, दुर्दैव।
—नाठा, स, पु, बधुहीन निर्बान्धव, अविवाहित।
निग्रह, स पु (स) अवरोध, रोध, नियन्त्रणा, बाधा, मनि, वध रोध २ दम, दमन ३ दंड ४ पीडन, सतापन ५ निग्रहण, बधन ६ भर्त्सना।
—स्थान, स पु (स न) वादे पराजयस्थान (न्या)।
निग्राह, स पु (स) शाप २ दंड।
निघंटु, स पु (स) वैदिककोषविशेष २ शब्दसंग्रह।
निघर्ष, स पु (स) दे 'निमाव' २ पेषण, चूर्णन, मर्दनम्।
निघात, स पु (स) प्रहार, आघात २ अनुदात्तस्वर (व्या०)।
निघाती, वि (स-तिन्) प्रहर्तृ, आहन्तृ, प्रहारक, आघातक २ घातक, मारक, प्राणहर।
निचय, स पु (स) समूह, राशि, गण, निकर २ निश्चय ३ सचय, सग्रह।
निचला[1], वि (हिं नीचे) अर्वाञ्च्, अधःस्थ, अवर, अधस्तन, नीचस्थ, अधः (उ अधोदेश)।
निचला[2], वि (स निश्चल) अचल, स्तब्ध २ शान्त, गम्भीर।
निचाई, स स्त्री (हिं नीचा) अपकर्ष, हीनता, निम्नता २ अधमता, नीचता, नम्रता ३ निम्न-देश भूमि (स्त्री)।
निचान, स स्त्री (हिं नीचा) अवसर्पि प्रवण, भूमि (स्त्री), = प्रावण्य, क्रमशः निम्नता।
निचिंत, वि, दे 'निश्चिंत'।
निचुड़ना, क्रि अ (स निश्च्यवन) च्यु (भ्वा आ अ), च्युत् (भ्वा प से), क्षर निगल् (भ्वा प से), स्रु (भ्वा प अ), २ निष्पीड्य (कर्म), निष्कृष्-उद्धृ (कर्म) ३ दुर्बलीभू।
निचोड़, स पु (हिं निचोड़ना) मूल, मूलवस्तु (न), नियाम, सार २ तात्पर्य, निष्कर्ष, भाव, निर्गलित निष्कृष्ट विधि, अर्थ।
निचोड़ना, क्रि स (हिं निचुड़ना) निष्पीड् (चु), उद्-निर्-हृ (भ्वा प अ), निष्कृष् (भ्वा प अ), निगल् (प्रे) २ सर्वस्व हृ, निर्धनी कृ। स पु, निष्पीडन, निष्कर्षण, निगालन, सर्वस्वहरणम्।
निछावर, स पु (स न्यासावर्त से अ निसार>) (पीडादेवसादनार्थं) अर्पण, उपनयन, उपहरण, उत्सर्जन २ उत्सर्ग, दान, बलि (पु), उपायनम्।
—करना, मु, उत्सृज् (तु प अ), त्यज् (भ्वा प अ)।
—होना, मु, कस्मैचित् प्राणान् त्यज्।
निज, वि (स) आत्मीय स्वीय, स्वकीय, स्वक, आत्म, स्व २ व्यक्तिगत, वैयक्तिक ३ मुख्य, प्रधान।
—का या **निजी**, वि, दे 'निज' २।
निठल्ला ल्लू, वि (हिं नि+टहल = काम) क्षीण निर्-वृत्ति, वृत्तिहीन, निर्व्यापार २ अलस, कार्यविमुख। स पु, नारायण।
निठाला, स पु (हिं नि+टहल) अवकाश, निर्व्यापारता।
निठुर, वि, दे 'निष्ठुर'।
निठुराई, स स्त्री (हिं निठुर) दे 'निष्ठुरता'।
निडर, वि (स निर्दर) अभय, अभीत, निर्भीक, विदर २ साहसिक, साहसिन् ३ धृष्ट।
—पन पना, स पु, निर्भयता, निर्भीकता ३।

निढाल, वि (हिं नि+ढाल = गिरा हुआ) श्रान्त, क्लान्त, शिथिल, अशक्त २ अलस, निरुत्साह।

नितंब, स पु (स) दे 'चूतड' २ स्कंध ३ तट-टम्।

नितंबिनी, स स्त्री (स) सुनितंबावती नारी २ सुन्दरी।

नित, क्रि वि दे 'नित्य' क्रि वि।

—नित, क्रि वि दे 'नित्य' क्रि वि (१)।

नितरां, अ य (स) पूर्णतया, सामस्त्येन, २ अतिशयेन अत्यंत ३ सदा ४ निश्चयेन।

नितांत, वि (स) अत्यधिक, सातिशय, निरतिशय, अत्यंत। क्रि वि, सर्वथा, पूर्णतया, अत्यन्तम्।

नित्य, वि (स) शाश्वत [-ती (स्त्री)] अन श्वर, अविनाशिन, ध्रुव, सनातन, अनाद्यनंत, अमर २ आह्निक प्रात्यहिक [-की (स्त्री)]। क्रि वि अनुप्रति, दिन, दिने दिने प्रत्यह, अन्वह २ सदा, सर्वदा, ३ सतत, अविच्छिन्नम्।

—कर्म, स पु [स मन् (न)] प्रात्यहिक दैनंदिन, कार्य, आह्निक, नित्य, क्रिया-कृत्यम्।

—प्रति, क्रि वि, दे 'नित्य' क्रि वि (१)।

नित्यता, स स्त्री (स) नित्यत्व, अमरता, ध्रुवता, शाश्वतता।

नित्यानित्य, वि (स) ध्रुवाध्रुव, शाश्वता शाश्वत।

निथरना, क्रि अ (स नि+स्थिर>) स्थैर्येण निर्मलीभू (जलादि)। स पु, निकण्ठन, *निषदनम्।

निथार, स पु (हिं निथरना) निर्मलजल २ जलाध-स्थित मलम्।

निथारना, क्रि स (हिं निथरना) स्थैर्येण निर्मली कृ अथवा शुध (प्रे)।

निदर्शक, वि (स) प्र,दर्शक, दर्शयितृ २ कथक, कथित, अध्यापक, ज्ञापक।

निदर्शन, स पु (स न) उदाहरण, दृष्टान्त २ प्रदर्शन, प्रकटीकरणम्।

निदर्शना, स स्त्री (स) काव्यालंकारभेद।

निदाघ, स पु (स) ग्रीष्म, ग्रीष्म,-काल समय ऋतु (पु) २ आतप, सूर्यालोक ३ दाह, ताप।

निदान, स पु (स न) रोगनिर्णय रोग हेतु (पु) २ आदि-मूल-कारण ३ कारण ४ अंत, अवसान ५ शुद्धि (स्त्री)। क्रि वि, अंततः, अंते, अंततो गत्वा, चरमतः। वि निकृष्ट, अधम।

निदारुण, वि (स) कठोर, घोर, दुःसह, असह्य २ निर्दय, निष्करुण।

निदिध्यासन, स पु (स न) निदिध्यास, सतत-निरन्तर अनवरत,-चिन्तन-स्मरण ध्यानम्।

निदेश, वि (स) आज्ञा, आदेश २ कथन ३ सामीप्यम् ४ पात्रम्।

निद्रा, स स्त्री (स) स्वप्न स्वपन, स्वाप, सुप्ति (स्त्री) शयन, संवेश।

—भंग, स पु (स) जागरणम्।

—वृक्ष, स पु (स) अन्धकार।

निद्रायमान, वि (स निद्रायमाण) शयान, निद्राण, निद्रित, शयित।

निद्रालु वि (स) तन्द्रालु, निद्राशील, शयालु।

निद्रित, वि (स) शयित, सुप्त, निद्रागत।

निधड़क, वि (हिं नि+धड़क) निःसंकोच, निर्भय निःशंक। क्रि वि, निर्भयं, निःसंकोच, निःशंक, विस्रब्धम्।

निधन[1], स पु (स पु न) मृत्यु २ नाश।

निधन[2], वि (स) दे 'निर्धन'।

निधान, स पु (स न) आधार, आश्रय, २ निधि, कोश ३ स्थापनम्।

निधि, स पु (स) कोष श, द्रव्य,-राशि (पु) समूह-संचय, निधान, शे(से)वधि (पु) २ आधार, आश्रय।

निनाद, स पु (स) ध्वनि, रव, शब्द।

निनानवे, वि [स नवनवति (नित्य स्त्री)] एकोनशतम्। स पु, उक्ता संख्या, तदंकौ (९९) च।

—के फेर में पड़ना, मु वित्तोपार्जनपर (वि) भू, सर्वात्मना धन सचि, (भ्वा उ अ)।

निपट, वि (देश) अत्यंत, अत्यधिक, नितांत।

निपटना, क्रि अ, दे 'निबटना'।

निपटाना, क्रि स, दे 'निबटना'।

निपटा(टे)रा, स पु, दे 'निबटेरा'।

निपटावा, स पु, दे 'निबटाव'।

निपात, स पु (स) अध नि,-पतन २ प्र, ध्वंस ३ मृत्यु (पु) निधन ४ व्याकरण लक्षणानुत्पन्न पदम् (व्या.)।

निपातन, स पु (स न) अवपातन, अव भर्जनं अवकृतन २ वि, नाशन ध्वसन, हननं, मारणम् ।

निपान, स पु (स) तडाग गर्त, जलस्रोत, आधार आशय २ आह्वाव, निपानक ३ दोहनपात्र दे , 'दोहनी' ४ आचमन, पान, पीति (स्त्री) ।

निपीडन, स पु (स न) अर्दनं, सतापनं, लि-अप विध,-स्करणं २ मर्दन, दमन ३ निर्दरणं, निष्पर्षण, निष्पीडनम् । ।

निपुण, वि (स) प्रवीण, निष्णात, कुशल, चतुर, दक्ष, विज्ञ, कृतिन्, विचक्षण, विदग्ध, प्रौढ, कुशलिन् ।

निपुणता, स स्त्री (स) प्रावीण्य, वैदग्ध्य, दाक्ष्य, कुशलता, दक्षता इ ।

निपूता, वि (स निष्पुत्र) अपुत्र, पुत्रहीन २ दे 'नि सतान' ।

निफाक, स पु (अ) द्रोह , वैर २ विच्छेद , विभेद , विघटनम् ।

निबध, स पु (स) बधन, नियमन, दृढी करण २ प्रस्ताव , लेख , प्रबन्ध ।

निबु, स स्त्री (अं) लेमनीनिम्बु (स्त्री), कर्मारम् ।

निबटना, क्रि अ (स निवर्त्तन) निवृत्त स्वधावकाश,कृतकार्य(वि) भू , निवृत् (भ्वा आ से) २ समाप् (कर्म), निष्पंद् (दि आ अ) ३ निर्णी (कर्म), व्यवसो (कर्म व्यवसीयते) ।

निबटाना, क्रि स , ब 'निबटना' के प्रे रूप ।

निबटाव, निबटेरा, स पु (हि निबटना) अवकाश , कार्यनिवृत्ति (स्त्री), क्षण , विश्राम २ समाप्ति , निष्पत्ति (स्त्री) ३ निर्णय कृतान्त ।

निबडना, क्रि अ , दे निबटना' ।

निबद्ध, वि (स) निरुद्ध, बद्ध, नियमित २ विरुद्ध, प्रन्थित ३ स ग्रथित मुद्रित ४ निवेशित स्थित ५ सबद्ध ।

निबरना, क्रि अ (हि निबटना) दे 'निब टना' (१ ३) २ विच्छिद्य वियुज् (कर्म), व्यपद् (अ प अ) ३ विरिच्य (दि प अ) ४ वि मुच (कर्म), नैःरस्य (कर्म) ।

निबल, वि , दे 'निर्बल' ।

निबहना, क्रि अ , (निवहणम्) दे 'निभना' ।

निबाह, स पु (स निर्वाह) जीवनयापन, कालक्षेप , निर्वहण २ धारण, रक्षणं ३ त्राणो पाय , रक्षासाधन ४ निवृत्ति समाप्ति (स्त्री) ।

निबाहना, क्रि स (स निवाहण) निर्वह् (भ्वा उ अ , प्रे) रक्ष (भ्वा प से), प्रवृत् (प्रे), न विच्छिद् (रु प अ) २ (वचन) प्रतिज्ञा निवह् शुध (प्रे)-पा (प्र पाल्यति) अपवृज् (चु) ३ निवृत् निष्पद्-साध् (प्रे), समाप् (स्वा उ अ) ४ निरतरं कृ या विधा (जु उ अ) । स पु , दे 'निबाह' ।

निबाहनेवाला, स पु , निर्वाहक , सपादक , साधक , पूरयितृ (पु) ।

निबिड, वि (स) घन, सान्द्र २ कठिन ।

निबेड(र)ना, क्रि स (हि निबट(र)ना) समाप् (स्वा उ अ), अवसो (प्रे अवसाययति), साध्-सपद् (प्रे) २ विमुच् निर्मुच् (तु प अ प्रे), मोच् (चु), ३ विश्लिष् (प्रे) पृथक् कृ, वियुज् (रु प अ) ४ निर्णी (भ्वा प अ), व्यवस्था (प्रे), अव निर् धृ (चु) ।

निबेडा, रा, स पु (हि निबेडना) मुक्ति (स्त्री), मोचन, मोक्षण २ रक्षा, त्राणं, उद्धार ३ वरण, धृति (स्त्री) ३ विश्लेष , पृथक् कृति (स्त्री) ४ निर्णय , व्यवस्था ।

निबौरी-ली, स स्त्री (स निब) निब अरिष्ट,-फल-बीजम् ।

निभ, वि (स) तुल्य, समान । (स पु न) ब्याज , मिष २ प्रभा, आभा ।

निभना, क्रि अ (हि निबहना) निवह्(कर्म निरुह्यते), निवाहो भू २ निष्पंद् (दि आ अ) समाप् (कर्म) ३ निरतर कृ विधा (कर्म) ।

निभाग्य, वि , (निभाग्य) अभाग्य, मन्द भाग्य भाग्य प्रारब्ध हीन ।

निभाना, क्रि स दे 'निबाहना' ।

निभाव, सं पु , दे 'निबाह' ।

निभृत, वि (सं) १ [illegible] २ गुप्त, अनन्ति ३ असामुत ४ अक्षम ५ अचर ६ पूग ७ निर्जन, शून्य ८ नीरव, नि शब्द ९ मन्द १० विदित ११ धीर ।

निमत्रण, स पु (स न) अभ्यर्थन-ना, आमत्रण, आवाहन, आह्वान २ भोजनार्थ अभ्यर्थनम् ।
—देना, क्रि स, अभि-आ नि-मन्त्र् (चु आ से), अभ्यर्थ (चु आ से) आमन्त्रय हे (भ्वा प अ) आकृ आवह् (प्रे) ।
—पत्र, स पु (स न) अभ्यर्थन-आमत्रण, पत्रम् ।
निमत्रित, वि (स) आमत्रित, आहूत ।
निमक, स पु, दे 'नमक' ।
निमित्त, स पु (स न) कारण, हेतु (पु) २ चिह्न, लक्षण ३ शकुनम् । क्रि वि, उद्दिश्य, अभिलक्ष्य ।
निमिष, स पु (स) दे 'निमेष' ।
निमीलन, स पु (स न) पक्ष्मसंकोचन, निमेष ।
निमीलित, वि (स) मुद्रित, पिहित, सवृत ।
निमेष, स पु (स) निमिष, पक्ष्मसंकोच, २ क्षण, पलम् ।
निमोनिया, स पु (अ) फुफ्फुसप्रदाह, श्वसनज्वर ।
निम्न, वि (स) ग(ग)भीर, गहन २ नत, नीच, अध स्थ ।
—लिखित, वि (स) अधो लिखित-वर्णित ।
नियता, स पु (स नियतृ) व्यवस्थापक, न्याय-विधि, प्रवर्तक २ विधायक, कायमका रक ३ शासक, शासितृ (पु) ४ अध्यक्ष, ५ अध्यक्ष, अधिष्ठातृ, स्थ ६ सारथि (पु) ।
नियत्रण, स (स न) निग्रह, निरोध प्रतिबंध ।
नियत्रित, वि (स) नियमित, नियमबद्ध, प्रतिबद्ध, निरुद्ध ।
नियत, वि (स) सयत प्रतिबद्ध और वशी कृत २ निश्चित, स्थिरीकृत, पूर्वनिर्णीत ३ प्रतिष्ठापित, नियोजित, नियुक्त ।
नियति, स स्त्री (स) भाग्य, दैव, भवित व्यता ।
नियतेन्द्रिय, वि (स) जितेंद्रिय, सयमिन् ।
नियम, स पु (स) विधि (पु) व्यवस्था, सूत्र, रीति पद्धति (स्त्री), मर्यादा, अ नि देश, नियोग २ प्रतिबंध, नियत्रण ३ रीति (स्त्री), परपरा ४ प्रतिज्ञा, दृढसंकल्प ५ दे 'व्रत' ।
—धर्म, स पु (स-मौ) सदाचार, सद् वृत्तम् ।
—बद्ध, वि (स) नियमाधीन, नियमित, नियमित, नियत्रित, सनियम ।
नियमन, स पु (स न) वशीकरण अनु, शासन, नियन्त्रणम् २ दमन, निग्रह, निग्रहणम् ।
नियमित वि (स) दे 'नियमबद्ध' ।
नियम्य, वि (स) वशीकार्य, अनु,शास नीय, नियत्रणीय २ दमनीय, निग्रहणीय ।
नियाज, स पु (फा) इच्छा २ प्रार्थना ३ दर्शनम्, साक्षात्कार ।
—मद, वि ,इच्छुक २ प्रार्थिन्, ३ दर्शनार्थिन् दिदृक्षु ।
—हासिल करना मु, दर्शन कृ परिचय प्राप् (स्वा उ अ) ।
नियामक, स पु (स) व्यवस्थापक, विधा यक प्रतिबंधक २ निरोधक, प्रतिबंधक ३ नाविक ।
नियामत, स स्त्री , दे 'निआमत' ।
नियुक्त, वि (स) आयुक्त, नियोजित, व्यापा रित २ निश्चित, नियत, स्थिरीकृत ।
नियुक्ति, स स्त्री (स) नियोजन, नियोग, व्यापारण, स्थापनम् ।
नियुत, स पु (स न) लक्ष, लक्षदशक वा ।
नियोग, स पु (स) नियोजन, नियुक्ति (स्त्री), व्यापारण २ प्रेरणा ३ अवधारण, निश्चय । ४ देवरादिभि अपुत्राया पुनोत्पादन (धन) ५ आज्ञा ।
नियोजन, स पु (स न) दे 'नियुक्ति' २ प्रेरणा ।
नियोजित, वि (स) दे 'नियुक्त' (१) ।
निरकुश, वि (स) स्वैर स्वरानि स्वैरिन्, काम-वृत्ति चारिन् ।
निरजन, वि (स) पूत विशुद्ध, पवित्र, निर्लेप । २ अञ्जनल । स पु ईश्वर २ शिव ।
निरतर, वि (स) अविच्छिन्न, निरत, स (स)तत अन २ अव्यवहित । क्रि वि, सदा, सतत निरतर, नित्य अनवरत अविरतम् ।
निरक्षर, वि (स) अनक्षर, अज्ञ, अशिक्षित मूर्ख।

निरखना, क्रि स (स निरीक्षण) दे 'देखना'।

निरपराध, वि (स) अनिर, -दोष, अनवद्य, दोषहीन, अनघ, निष्पाप।

निरपेक्ष, वि (स), निरीह, अकाम, नि विगत, स्पृह, विरक्त, तटस्थ।

निरर्थक, वि (स) अर्थशून्य, अनर्थक २ निष-अ वि, फल, मोघ, वन्ध्य, अनुपयुक्त।

निरस, वि (स) दे 'नीरस'।

निरस्त्र, वि (स) अशस्त्र, निरायुध।

निरहंकार, वि (स) निरभिमान, नम्र, विनीत।

निरा, वि (स निरालय) विशुद्ध, मिश्रण रहित, असंसृष्ट २ केवल, एव, मात्र ३ अत्यन्त, अत्यधिक।

निराकार, वि (स) अदेह, अकाय, अशरीर, अमूर्त, अरूप। स पु, ईश्वर २ आकाश ब्रह्म।

निरादर, स पु (स) अनादर, अवज्ञा, अव-अप, मान, अवधीरण-णा, तिरस्कार, परिभव।

निराधार, वि (सं) निरवलंब, निराश्रय २ अयुक्त, मिथ्या ३ निराहार।

निरामिष, वि (स) निर्मांस मांसरहित २ शाकाहारिन्।

निरायुध, वि (स) दे 'निरस्त्र'।

निराला, वि (स निरालय>) अद्भुत, विचित्र, विलक्षण, विशिष्ट २ अनुपम, अतुल्य, अपूर्व ३ वि निर्, जन। स पु, निर्जनस्थानम्।

निराश, वि (स) भग्नाश, हताश, त्यक्ताश, आशाहीन, निरपेक्ष।

निराशा, स स्त्री (स) नैराश्य, निराशता, आशाहीनता।

निराश्रय, वि (स) अनाश्रय, अशरण, असहाय, आश्रयहीन।

निराहार, वि (स) निरन्न, अनाहार, उपोषित, कृतोपवास।

निरीक्षण, स पु (स न) दर्शनं, वीक्षण, अवलोकन २ अवेक्षण, निरूपण, कार्यदर्शनम्।

निरीक्षित, वि (स) दृष्ट, आलोकित २ अवेक्षित, निरूपित।

निरुक्त, स पु (स न) वेदाङ्गविशेष २ यास्कमुनिप्रणीतो ग्रन्थविशेष।

निरुक्ति, स स्त्री (स) निर्वचन, व्युत्पत्ति दर्शिनी व्याख्या।

निरुत्तर, वि (स) अनुत्तर, बद्ध रुद्ध-मुख।

निरुपम, वि (स) अनुपम, अतुल-ल्य, असदृश [-मी (स्त्री)], दे 'अनुपम'।

निरूपण, स पु (स न) अव निर्, धारण, निर्णय-यन, निश्चय २ अवलोकनं ३ निदर्शनम्।

निरूपित, वि (स) व्याख्यात, विवेचित सम्यक् वर्णित २ निर्धारित, निर्णीत ३ अवलोकित, इक्षित।

निरूप्य, वि (स) व्याख्यातव्य, विवेचनीय, वर्णनीय २ निर्धारणीय, निर्णेतव्य ३ अवलोक्य, ईक्षणीय, अन्वेषणीय।

निरूहण, स पु (स न) तर्कण, विवेचन, विचारणम् २ निर्धारण, निर्णयनम्।

निरोग-गी, वि, दे 'नीरोग'।

निरोध, स पु (स) अवरोध, प्रतिबन्ध २ नाश।

निरोधक, वि (सं) निवारक, प्रतिबन्धक, प्रतिषेधक, बाधक।

निर्ख, स पु (फा) अर्घ, मूल्यम्।

—नामा, स पु (फा) अर्घसूची, मूल्यपत्रम्।

निर्गत, वि (स) निर्यात, प्रस्थित, निष्क्रान्त।

निर्गम, स पु (स) बहिर्गमन, प्रस्थान २. द्वार, निर्गमनमार्ग।

निर्गुंडी, स स्त्री (सं) शेफाली लिका, सिंधुवार।

निर्गुण, वि (सं) निर्गुणातीत २ मूर्ख, गुणहीन। स पु, परमेश्वर।

निर्जन, वि (स) विजन, एकान्त, विविक्त।

निर्जर, वि (स) जराहीन। स पु, देवता।

निर्जल, वि (स) अल्पजल, शुष्क।

निर्जीव, वि (स) अचेतन, जड, प्राणहीन।

निर्णय, सं पु (स) आधर्षण, निर्णयपाद, व्यवस्था, इदाज्ञा २ निश्चय, परिच्छेद, विवेक, अव निर्, धारण धारणा।

निर्णीत, वि (स) निश्चित, अव निर्, धारित।

निर्दय-यी, वि (सं निर्दय) निष्कृप, निष्करुण, क्रूर, निष्ठुर, निर्घृण, नृशंस, कठोर।

निर्दिष्ट, वि (स) उक्त, कथित, वर्णित २. निश्चित, नियत, संकेतित ३ आदिष्ट।

निर्देश, स पु (स) वर्णन, कथनं, विशेषणं, संकेत २ निश्चय, नियम ३ आज्ञा, आदेश- ४. नामन् (न), संज्ञा।

निर्दोप, वि (स) दे 'निरपराध'।
निर्द्वन्द्व, वि (स निर्द्वन्द्व) शत्रु प्रतिद्वन्द्वि,-रहित २ द्वन्द्वातीन, विरक्त ३ स्वैर, स्वैरगति।
निर्धन, वि (स) अकिंचन, दरिद्र, अधन, नि स्व, अर्थ द्रव्य धन वित्त, हीन, दुर्गत, दीन।
निर्धनता, स स्त्री (स) दारिद्र्य, अकिंचनता, दुर्गति (स्त्री), दानता।
निर्धार, स पु (स) } निश्चय, परिच्छेद,
निर्धारण, स पु (स न) } विवेक अवधारणा
निर्धारित, वि (स) निश्चित, कृतनिश्चय, परिच्छिन्न।
निर्निमेष, वि (स) अनिमिष, पक्ष्मपातरहित। क्रि वि, अनिमि(मे)ष, निनिमे(मि)षम्।
निर्बन्ध, स पु (स) आग्रह, अभिनिवेश २ विघ्न, अन्तराय।
निर्बल, वि (स) अबल, अशक्त, दुर्बल, निस्तेजस, निर्वीर्य, अल्प क्षीण,-बल शक्ति, नि सत्त्व।
निर्बलता, स स्त्री (स) बल-शक्ति, शून्यता, बल शक्ति सत्त्व,-क्षय -नाश -हानि (स्त्री)।
निर्बुद्धि, वि (स) मूर्ख, जड।
निर्बोध, वि (स) अज्ञान, अबोध।
निर्भय, वि (स) अभय, अभीत, अकुतोभय, निर्भीक, निश्शङ्क २ प्रगल्भ, साहसिन्।
निर्भयता, स स्त्री (स) निर्भीकता, अभय, अभीति (स्त्री), नि शङ्कता २ प्रागल्भ्य, साहसम्।
निर्भीक, वि (स) दे 'निर्भय'।
निर्भीकता, स स्त्री (स) दे 'निर्भयता'।
निर्मम, वि (स) विरक्त, वैराग्यवत् २ नि स्वार्थ, निरिच्छ ३ उदासीन, तटस्थ।
निर्मल, वि (स) अमल, विमल, स्वच्छ, शुभ्र २ अपाप, पवित्र ३ निष्कलङ्क, निर्दोष।
निर्मलता, स स्त्री (स) विमलता, स्वच्छता २ पवित्रता ३, निष्कलङ्कता ३।
निर्मली, स स्त्री (स निर्मल>) अम्बुप्रसाद, कतक, तिक्तमरिच २ कतकबीज ३ दे 'रीठा'।
निर्माण, स पुं (स न) निर्मिति (स्त्री), रचना, विधान, सर्जन, घटन, कल्पन साधन, सम्पादन, सृष्टि (स्त्री)।
निर्माता, स पु [स -तृ] रचयितृ-स्रष्टृ(पु)।
निर्माल्य, स पु (स न) देवोच्छिष्टद्रव्य, देवार्पितवस्तु (न)।
निर्मित, वि (स) रचित, घटित, कल्पित, सृष्ट।
निर्मूल, वि (स) अमूलक, निर्मूलक, निराधार २ उन्मूलित, उत्पाटित।
निर्मोही, वि (स निर्मोह) निर्मम, ममत्व शून्य, रूक्ष २ निर्दय, पाषाणहृदय।
निर्लज्ज, वि (स) अप-निस्, त्रप, निर्, व्रीड ह्रीक, त्रपा-लज्जा, हीन, धृष्ट, वियात।
निर्लोभ, वि (स) परि-स,-तुष्ट, तृप्त, नि स्पृह, वितृष्ण, अलोलुप, अगृध्नु।
निर्वाण, स पु (स न) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री), अपवर्ग।
निर्वात, वि (स) अपवन, निर्वात्य, वातवेग शून्य (प्रदेशादि)।
निर्वाह, स पु (स) दे 'निबाह'।
निर्विकार, वि (स) विकृति विकार परिवर्तन, रहित, अविकारिन्, अपरिवर्तिन्।
निर्विघ्न, वि (स) निरन्तराय, निर्व्याघात, विघ्नरहित। क्रि वि, निर्विघ्न, स्वस्त्या (तृ.) निरुपद्रवम्।
निर्विवेक, वि (स) निर्बुद्धि, अविवेकिन्।
निर्वीर्य, वि (स) निस्तेजस् नि सत्त्व, निर्बल।
निवार, स स्त्री (फ़ा नवार) पर्यङ्कपट्टिका, *निवारम्।
निवारक, वि (स) रोधक २ अपसारक, नाशक।
निवारण, स पु (स) नि,रोध -रोधन २ अपसारण, दूरीकरण ३ निवृत्ति (स्त्री)।
निवाला, स पु (फ़ा) दे 'ग्रास'।
निवास, स पु (सं) वसति स्थिति (स्त्री) २ गृह, निकेतन आ(अ)गार, आवसथ, आ-नि,-लय २ वास,-गृह-स्थानम्।
—करना, क्रि अ, *अधि-आ नि प्रति-वस* (भ्वा प अ)।
निवासी, स पु (स -सिन्) वास्तव्य (पु), वासिन्,-स्थ,-वर्तिन्।
निवृत्त, वि (स) वि,मुक्त, विरत, लब्धावकाश, कृतकार्य २ विरक्त, पृथग्भूत।
निवृत्ति, स स्त्री (स) उपरम, प्रवृत्त्यभाव, अप-उप वि,-रति (स्त्री), मुक्ति (स्त्री)।

निवेदन, सं पु (सं न) आवेदन, प्रार्थन-ना, अभ्यर्थना, याच्ञा याचना, विज्ञापना विज्ञप्ति (स्त्री)।

—करना, क्रि स, आ नि-विद् (प्रे) विज्ञा (प्रे, विज्ञापयति) अभि प्र अर्थ (चु आ से), याच् (भ्वा उ से)।

—पत्र, सं पु (सं न) आवेदन प्रार्थना, पत्रम्।

निशङ्क, वि, दे 'निःशङ्क'।

निशान्ध, वि (सं) रात्र्यन्ध, दोषान्ध।

निशा, सं स्त्री (सं) रात्रि (स्त्री), शर्वरी।

—कर,—नाथ,—पति, [illegible] पु (सं) चन्द्र, सोम।

निशाचर, सं पु (सं) राक्षस, रक्षस् (न), पिशाच २ चोर, लुंठक ३ नक्तंचर। (उल्लू आदि)।

निशात, वि (सं) निशित शाणित, तेजित, शित, क्ष्णुत २ परिष्कृत शाणित, उज्ज्वलित।

निशाद, सं पु (सं) निशाटन, नक्तभोजिन् २ राक्षस पिशाच ३ घूक।

निशादि, सं पु (सं) सायम, (अव्य) सन्ध्या।

निशान, सं पु (फ़ा) अभिज्ञान, चिह्न, अंक, लक्षण, लाञ्छन, लिंग, व्यञ्जन २ प्रमाण, साधन ३ व्रण, क्षत-अंक चिह्न ४ लक्ष्य, शरव्य ५ अधिकार प्रतिष्ठा-चिह्न ६ ध्वज, वैजयन्ती।

—करना या लगाना, क्रि स, अंक (चु), चिह्नयति मुद्रयति (ना धा)।

—दार, वि (फ़ा) चिह्नित, अंकित २ ध्वज वाहक।

—बरदार, सं पु (फ़ा) वैजयन्तिक, पताकिन् २ अग्रेसर, पुरोग।

नाम—, चिह्न, लक्षण २ अस्तित्वलेश।

निशानची, सं पु (फ़ा निशान) दे 'निशानबरदार' २ लक्ष्यवेधक।

निशाना, सं पु (फ़ा) लक्ष्य-क्षं, शरव्यम्।

—बाँधना, मु, लक्षी-क्ष्यी कृ, संधा (जु उ अ)।

—मारना या लगाना, मु, लक्ष्य प्रति क्षिप् (तु प अ) अस् (दि प से)।

निशानी, सं स्त्री (फ़ा) दे 'निशान' २ स्नेह निशानी स्मृति स्मारक-दान २ अभिज्ञान, स्मारकम्।

निशावसान, सं पु (सं न) निशा-अतिक्रम अत्यय, प्रभात (अव्य)।

निशीथ, सं पु (सं) अर्द्ध-मध्य-रात्र, रात्रि निशा-मध्यं २ रात्रि (स्त्री)।

निश्चय, सं पु (सं) निश्चितता, निश्चितत्व, ध्रुवत्व २ विश्वास, विश्रम्भ ३ निर्णय ४ दृढसङ्कल्प, अध्यवसाय।

निश्चल, वि (सं) अचल, अविचल, धीर, दृढ धृतिमत् २ स्थिर, निस्तब्ध निश्चेष्ट।

निश्चिन्त, वि (सं) वीत मुक्त चिन्त, शान्त, चिन्ता रणरणक-रहित।

निश्चित, वि (सं) सन्देह संशय शून्य, असंदिग्ध, स्थिर, नियत, दृढ २ निर्णीत, निर्धारित।

निश्वास, सं पु (सं) दे 'निःश्वास'।

निषध, सं पु (सं निषधा बहु) विन्ध्याचलस्थ देशविशेष २ 'नल'स्य प्रदेश ३ निषधपति।

—पति, सं पु (सं) नल।

निषाद, सं पु (सं पु) अनार्यजातिविशेष २ चाण्डाल, हीन ३ सप्तमस्वर (संगीत)।

निषिद्ध, वि (सं) प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट, निवारित २ दूषित, गर्ह्य, निन्द्य।

निषूदन, वि (सं) मारक, मारयितृ, हन्तृ, प्रणाहर, अन्तकर, घातक।

निषेक, सं पु (सं) अवक्षरण, सेक सेचन, अभि-वर्षण उक्षणम् २ गर्भाधान ३ गर्भाधान संस्कार ४ पतन-क्षरण ५ स्नान-जल ६ वीर्य-शुद्धि (स्त्री)।

निषेचन, सं पु (सं न) दे 'निषेक' १।

निषेध, सं पु (सं) प्रतिषेध, निरोध, निवारणम्, निषिद्धि (स्त्री)।

निषेधक, वि (सं) प्रतिषेधक, निवारक, प्रतिषेद्धृ, बाधक, निरोधक।

निष्कण्टक, वि (सं) निर्विघ्न निर्बाध, निरन्तराय २ निःशल्य, अकण्टकित।

निष्कपट, वि (सं) ऋजु, सरल, अमाय, निश्छल, विशुद्ध।

निष्काम, वि (सं) निरिच्छ, निरीह, निःस्पृह।

निष्कारण, वि (स) अकारण, निर्निमित्त। क्रि वि अकारण, अहेतुकम्।

निष्क्रमण, स पु (स न) बहिर्गमन, निर्गमन २ संस्कारभेद (धर्म)।

निष्ठा, स स्त्री (स) प्रत्यय, विश्रम, विश्वास २ भक्ति (स्त्री), श्रद्धा।

निष्ठुर, वि (स) क्रूर, क्रूरकर्मन्, निर्दय, निर्घृण, निष्करुण, नृशंस, कठोरहृदय।

निष्ठुरता, स स्त्री (स) क्रूरता, निर्दयता नृशंसता।

निष्पत्ति, स स्त्री (स) अन्त, समाप्ति (स्त्री) २ परिपाक, सिद्धि (स्त्री)।

निष्पन्न, वि (स) समाप्त, अवसित २ सिद्ध, परिगत, सम्पन्न।

निष्पादन, स पु (स न) साधन, निवर्तन विधान २ सम्पादन, सम्पूरणम्।

निष्पाप, वि (स) अपाप, अनघ, अकल्मष, अकिल्बिष, पापरहित, पुण्यात्मन्।

निष्प्रयोजन, वि (स) निस्स्वार्थ, निष्काम २ अकारण, निष्कारण ३ अनर्थक, व्यर्थ। क्रि वि, व्यर्थं, मुधा।

निष्फल, वि (स) निरर्थक, अनुपयोगिन्, मोघ, विफल, निष्प्रयोजन, वृथा, मुधा।

निसबत, स स्त्री (अ) सम्बन्ध, अनुषंग २ वाग्दान, वाक्प्रदान ३ तुलना, सादृश्यम्। क्रि वि, अपेक्षया तुलनया-औपम्येन(तुलाया)।

निसर्ग, स पु (स) स्वभाव, प्रकृति (स्त्री)।

निसार, स पु (अ) दे 'निछावर'।

निस्तब्ध, वि (स) जड़ी-निष्पन्दी, भूत, अवसन्न, जड़तुल्य, निश्चेष्ट २ अनालापिन्, मौनिन्, तूष्णीक।

निस्तब्धता, स स्त्री (स) निष्पन्दता, निःस्पंदता, जड़ता, निश्चेष्टता २ नीरवता, मौनम्।

निस्तार, स पु (स) अपवर्ग, मुक्ति (स्त्री) २ उद्धार, त्राणम्।

निस्तारा, स पु (स. निस्तार) निर्णय, निर्धारण २ दे 'निस्तार'।

निस्तेज, वि (स निस्तेजस्) अप्रभ, निष्प्रभ, मलिन, तेजोहीन २ निःसत्त्व, निर्वीर्य, निरुत्साह।

निस्पंद, वि (स) निष्पंद, अकम्प, अचल, स्थिर, गतिशून्य, निस्स्पन्द, निःस्पन्द।

निस्पृह, वि, दे 'निःस्पृह'।

निस्फ, वि (अ) दे 'आधा'।

निस्संकोच, वि (स) दे 'निःसंकोच'।

निस्संतान, वि (स) दे 'निःसंतान'।

निस्संदेह, वि (स) दे 'निःसंदेह'।

निस्सार, वि (स) दे 'निःसार'।

निस्सीम, वि (स) दे 'निःसीम'।

निस्स्वार्थ, वि (स) दे 'निःस्वार्थ'।

निहंग, वि (सं निःसंग) एकल, एकाकिन्, २ ब्रह्मचारिन् ३ नग्न ४ निर्लज्ज।

निहत्था, वि (स निर्हस्त>) निरस्त्र, निःशस्त्र, निरायुध, अस्त्रशस्त्रहीन २ निर्धन।

निहाई, स स्त्री (स निघाति >) शूर्मी, स्थूणा।

निहायत, वि (अ) अत्यन्त, अत्यधिक।

निहारना, क्रि स (स निभालन) दे 'देखना'।

निहाल, वि (फा) संतुष्ट, पूर्णकाम, प्रसन्न।

—**करना**, क्रि स, प्रसद् आनन्द् हृष् (प्रे)।

निहित, वि (स) स्थापित, न्यस्त, निक्षिप्त।

निहोरा, स पु (स मनोहार >) अनुग्रह, कृपा, उपकार २ कृतज्ञता, कृतवेदिता ३ प्रार्थना, निवेदन ४ आश्रय, आधार। क्रि वि, द्वारा-कारणेन (अव्य)।

—**मानना**, क्रि अ, उपकार स्मृ (भ्वा. प. अ) कृतज्ञ (कृ उ अ)।

नींद, सं स्त्री (स. निद्रा) स्वपन, संवेशः, दे 'निद्रा'।

—**आना**, क्रि अ स्वप (सन्नन्त, उ, सुषुप्सति) निद्रया पराभू (कर्म)।

—**उचाट होना**, क्रि अ, विभग्न-निद्र (वि) भू।

—**न आना**, सं पु, निद्रा-लोप-नाश।

—**भर सोना**, मु, यथेष्ट स्वप् (अ प. अ)।

नींदू, वि (हिं नींद) दे 'निद्रालु'।

नींबू, स पुं, दे 'निंबू'।

नीक-का, वि (स निक्त>) अच्छा, सुन्दर, उत्तम, भद्र, उत्कृष्ट।

नीच, वि (स) अधम, अवर, अपकृष्ट, क्षुद्र, हीन, गर्ह्य, जघन्य, तुच्छ, पामर। स पु, अभद्र, खल, दुर्वृत्त, पृथग्जन, २ हीन, जाति-वर्ण-कुल, अन्त्यजातीय, नीच-कुल-वंशप्रसूत।

—ऊँच, मु , भद्राभद्रे (न) २ गुणावगुणौ, ३ हानिलाभौ ४ सुखदुःखे (न) ५ सम्पद् विपदौ (स्त्री) ६ उत्कर्षापकर्षौ ।

नीचता, सं स्त्री (स) अधमता, क्षुद्रता, तुच्छता पामरता, २ अन्त्यजता, हीनकुलता ।

नीचा, वि (स नीच) अधःस्थ, अधस्तन (-नी स्त्री), नत, निम्न, नीचस्थ, अवाच २ दे 'नीच' ।

—ऊँचा, वि , नतोन्नत, विषम, असम, २ दे 'नीच-ऊँच' ।

—दिखाना, मु , पराजि (भ्वा आ अ), पराभू २ ह्री (प्रे ह्रेपयति), लघू कृ, व्रीड् (प्रे) ।

नीचाई, स स्त्री (हि नीचा) नीचता,निम्नता, अधःस्थता ।

नीचे, क्रि वि [स नीचैः (अव्य)] अधः, अधोभागे, अधस्तात् तले २ अधीनतया, वशे ३ न्यून, अवर ।

—ऊपर, क्रि वि , अन्योन्यस्योपरि, इतरेतरस्योर्ध्वम् । २ अस्तव्यस्त, सकीर्णतया । ,

नीड, स पु (स पुं न) दे 'घोंसला' ।

नीति, स स्त्री (स) उपाय , युक्ति-रीति (स्त्री), प्रयोग २ राजराज्यशासन,-नीति नय न्याय मार्ग , नय नीति क्रम मार्ग ३ सदाचार , सद्व्यवहार , सुमत चरित ४ नीति,-विद्या शास्त्रम् ।

नीतिज्ञ, वि (स) नयज्ञ, नीतिशास्त्रज्ञ ।

नीतिमान् , वि (स -मत्) नयपर सदाचारिन् [-मती (स्त्री)] ।

नीप, स ▮ (सं) कदम्ब विशेष , मदिरा गन्ध ।

नीबू , स पु (स निम्बुक) दे 'निबू' ।

—निचोड, वि , अल्पदायिन् बहुग्राहिन्, अल्पदातृ बहुग्रहीतृ, अल्पद बहुग्राहक ।

नीम¹, सं पु , दे 'निम्ब' ।

नीम , वि (फ़ा , मि स नेम) दे 'आधा' ।

—हकीम, स प वैद्यमानिन् वैद्यमन्य, मिथ्या-कु वैद्य,-दंभचिकित्सक ।

—हकीम खतरे जान, मु , वैद्यम्मन्यात् प्राणसंकटम्, छद्मवैद्य सकटावह ।

नीयत, स स्त्री (स्त्री) आशय , उद्देश , भाव , इच्छा, लक्ष्यम् ।

—बदल जाना, मु पाप प्रति प्रवृत् (भ्वा आ स), धर्मं त्यज (भ्वा प अ) ।

नेक—, वि , सदाशय, सुमनस्क ।

बद—, वि , दुराशय, दुर्मनस्क ।

नीर, स पु , (स न) तोय, दे 'जल' ।

नीरज, सं पु (स न) पद्म, दे 'कमल' ।

नीरद, स पु (स) जलद , दे 'मेघ' ।

नीरस, वि (स) अरस, विरस, अवि,-द्रव, शुष्क २ अस्वादु, रसहीन, अरुचिकर ।

नीरोग, वि (स) सुस्थ, कल्य, वार्त, दे 'स्वस्थ' ।

नीरोगता, स स्त्री (स) आरोग्य, दे 'स्वास्थ्य' ।

नील, स पु (स नील) (पौधा) काला, नीली, नीलिनी, रजनी, २ (द्रव्य) नील, नीलवर्ण ३ प्रहारज, नीलचिह्न, नीला ४ लाञ्छन ५ वानरविशेष ६ इन्द्रनीलमणि , नीलोपल (पु) ७ संख्याविशेष (दस हजार अरब अथवा सौ अरब) । वि , दे 'नीला' ।

—कंठ, स पु (स) चाष , किकीदि(दी)वि (पु) २ शिव ३ मयूर ।

—कमल, स पु (सं न) नील,पद्मम् अब्ज इन्दि(न्दी)वर, इन्दीवार ।

—का टीका, मु , कलक , अपमान (न) ।

—गाय, ▮ स्त्री , दे 'रोझ' ।

नीलम, स पु [फा , स नीलमणि (पु)] नील , नीलाश्म , महा नीर,-नील ।

नीलाम्बर, स पु (स न) नीलकौशेयवस्त्र २ नीलीरागवस्त्रम् । स पु , बलदेव २ राक्षस ।

नीलोफर, स पु (फ़ा मि स नीलोत्पल) कुमुद, कैरव २ इन्दी(न्दि)वर, नील, अब्ज कमलम् ।

नीला, वि (स नील) श्याम, मेचक, नीलवर्ण ।

—रंग, स पु , नील , नीलत्व , नीलिमन् (पु) ।

—पीला होना, मु , क्रुध (दि प अ) कुप (दि प से) ।

नीलाई, स स्त्री (हि नीला) नीलत्व, नीलिमन् (पु) ।

नीलाथोथा, स पु (हि नीला+स तुत्थ) हेमसार, तुत्थ, नीलाञ्जन, ताम्रगर्भ, मयूरग्रीवक, नील तुत्थ, मयूरक ।

पुर, -मर, मुख्य २ प्रभु, स्वामिन् ३ निर्वाहक, प्रवर्तक [नेत्री (स्त्री)]।

नेती, स स्त्री (स नेत्र) नयनरज्जु (स्त्री), मथगुण ।

—धोती, स स्त्री, दीपपट्टिकया अन्त्रशोधन (हठयोग)।

नेत्र, स पु (स न) नयन, चक्षुस (न) दे 'आँख' २ दे 'नेती' ३ वस्त्रविशेष।

—रंजन, स पु (स न) अञ्जनम्।

नेत्र्य, वि (स) नयन नेत्र, विषयक सम्बन्धिन् २ नयन नेत्र, हितकर।

नेदिष्ट, वि (स) निकटतम २ अतिनिकटतम ३ निपुण।

नेनुआ या, स पुं (?) घोष पत्र, आदाना, देवदाली, ऐमी, महाफला।

नेपच्यून, स पुं (अ) नेपच्यून, ग्रहविशेष ।

नेपथ्य, स पु (स न) वेश न, परिधान, वस्त्र, आभरण, अलङ्कार २ (रङ्गशालाया) वेशस्थान, अलङ्कारकोष्ठ ३ रंग, भूमि (स्त्री) शाला।

नेपाल, स पु (स) भारतोत्तरस्थ देश विशेष । (सं न) दे 'ताम्र'।

—जा, स स्त्री (स) नेपालजाता दे मैनसिल।

नेब्यूला, स पु (अ) नीहारिका।

नेमि, स स्त्री (स) नेमी, प्रधि चक्रपरिधि (न) २ कूपानिजमञ्चस्थल ३ कूपसमीपे रज्जुधारणार्थं त्रिदारुयन्त्र, त्रिका।

नेवता, सं पु, दे 'निमन्त्रण'।

नेवर, स पु (स नूपुर) दे 'नूपुर' २ अश्व पादक्षतम्।

नेवला, स पु (स नकुल) पिङ्गल, सर्पी मदन, लोहितानन, सगुण, वभ्रु ।

नेवार, स पु, दे 'निवार'।

नेस्त, वि (फा) नष्ट, लुप्त।

—नाबूद, वि (फा) नष्टभ्रष्ट, उच्छिन्न।

नेस्ती, स स्त्री (फा) अनस्तित्व, अभाव २ आलस्य ३ नाश ।

नेह, स पु (स स्नेह) प्रेमन् (पु), प्रीति (स्त्री) २ घृत, तैलम्।

नैतिक, वि. (सं) नीति, विषयक शास्त्रीय।

नैत्य, वि (स) नैत्यक नैत्यिक [-की (स्त्री)], नित्य सम्बन्धिन्-करणीय।

नैन ना, स पु (स नयन) दे 'आँख'।

नैपुण्य, स पु (स न) कौशल, दाक्ष्य, पाटवम्।

नैमित्तिक, वि (स) निमित्त, न य त्तक, अनैत्यिक ।

नैया, स स्त्री, दे 'नाव'।

नैयायिक, स पु (स) न्याय नय, तार्किक, न्यायवि (पु), नार्तिक ।

नैराश्य, स पु (स न) दे 'निराशा'।

नैऋत, स स्त्री (स नैऋती) नैऋतकोण, प्रतीची प्रतीच्योर्मध्य दिक् (स्त्री)।

नैवेद्य, स पु (स न) देवबलि (पु) भोजन, भोग ।

नैसर्गिक, वि (सं) प्राकृतिक स्वाभाविक, स्वाभाविक सांसिद्धिक [की (स्त्री)], प्रकृति स्वभाव, सिद्ध।

नैहर, स पु, दे 'मायका'।

नोक, स स्त्री (फा) अग्र, अग्रभाग, अणि (पु स्त्री) प्रान्त मुख शिखर चञ्चु (स्त्री) २ उद्गम-उद्वर्तन, शाण भय ।

—झोंक, स स्त्री, नम, आलाप भाषित परि (ही)हास, व्यङ्ग्यम्।

—दार, वि, दे 'नुकीला'।

नोकीला, वि, दे 'नुकीला'।

नोच, स स्त्री (हि नोचना) लुंच, लुञ्चन २ आकस्मिक आच्छेद, लुंठन ३ परितो याचनम्।

नोचना, क्रि स (स लुञ्चन) लुञ्च् (भ्वा प से), उत्पाट (चु), आच्छिद् (रु प अ) २ वि दृ (क्र्या प से) ३ अपनी निर्दयम् (भ्वा उ अ) ४ अव छिद् (भ्रे), निःकृत् (रु प अ), लुट् (तु प से)।

नोट, स पु (अ) स्मृत्यर्थ लेखन, टिप्पणी, २ स्मरण, स्मरणादि, टिप्पणी ३ पत्र, पत्रिका ४ टिप्पनाणी, टीका ५ धनपत्र, नाणकपत्रम्।

—करना, क्रि स, लिख् (तु प से), अंक (चु)।

—कर्ता, स पु [स नृ (पु)] दे 'न्याया धीश'।
—सभा, सं स्त्री (स) दे 'न्यायालय'।
न्यायाधीश, स पु (स) न्याय धर्म, अध्यक्ष, आधिकरणिक निर्णेतृ-व्यवहारद्रष्टृ (पु) प्राड्विवाक, सभाधिकरणिक, दण्डनायक पर।
न्यायालय, स प (सं) धर्म न्याय-सभा, व्यवहारमण्डप, अधिकरणम्।
न्यायी, वि (स यिन्) न्याय-परपरायण-शील, न्यायवर्तिन्।
न्याय्य, वि (सं) उचित, धर्म्य, युक्त, योग्य, तथ्य।
न्यारा, वि (स निर्+आरात>) दूरस्थ, दूरवर्तिन् २ विश्लिष्ट, पृथक स्थित ३ अन्य, अपर भिन्न ४ विलक्षण, विचित्र[न्यारी(स्त्री)]।
न्यारिया, स पु (हिं न्यारा) टावन, बबुल।
न्यारे, कि वि (हिं न्यारा) दूर, दूरे, आरात् २ पृथक, विश्लिष्ट।
न्यास, स पु (स) निधान, स्थापन, न्यसन निक्षेपण २ उपनिधि (पु), निक्षेप ३ अर्पण, त्याग।
न्यूक्लियस, स पुं (अं) नाभिरूप।
न्यून, वि (सं) अल्पतर, अल्पीयस्, क्षोदीयस, लघीयस्, ऊन २ अवर, अधर ३ क्षुद्र, नीच।
न्यूनता, स स्त्री (सं) ऊनता, अल्पता, अपूर्णता, पर्याप्तताभाव २ हीनता, अभाव।
न्योछावर, स स्त्री, दे 'निछावर'।
न्योतहरी, स पु (हिं न्योता) निमन्त्रितजन।
न्योता, स पु, दे 'निमत्रण'।
न्योला, सं पु, दे 'नेवला'।
न्योली, स स्त्री (स नली) हठयोगक्रियाभेद।

प

प, देवनागरीवर्णमालाया एकविंशो व्यञ्जनवर्णः, पकारः।
पंक, स पु (स पुं न) कर्दम, चिक्किल, दे 'कीचड'।
पंकज, स पु (स न)पद्म, सरोज, दे 'कमल'।
पंकजासन, स पु (स) चतुर्मुख ब्रह्मन् (पुं)।
पंकिल, वि (स) सपंक, सकर्दम, सचिक्किल।
पंक्ति, स स्त्री (स) रेखा, श्रेणी, राजि २ तति, राजी नि श्रेणी नि आवली नि (सब स्त्री)।
—च्युत, वि (स) जातिच्युत।
—दूषक, वि (स) हीन, नीच, कुजाति।
—पावन, स पु (स) विप्रवर, ब्राह्मणश्रेष्ठ, द्विजोत्तम।
पंख, स पु (स पक्ष) वाज, गरुत्, पक्ष, पतत्र, छद तनूरुहम्।
पंखड़ी, सं स्त्री [स पक्ष्मन् (न)] पुष्पदलम्।
पंखा, स पु (हिं पंख) व्यजन, वीजन, तालवृन्तम्।
—झलना, कि स, वीज् (चु)।
पंखे का—, आलावर्त।
चमड़े का—, धवित्रम्।
पंखी, स स्त्री (हिं पंखा) व्यजनक-वीजनकम्।
पंखी, स पु, दे 'पक्षी'।
पंगत ति, स स्त्री (स पंक्ति) दे 'पंक्ति' (१ २) २ सभा, समाज।
पंगु, वि (स) श्रोण, खञ्ज, खोलक।
पंच, वि (स पचन्)। सं पु, उक्ता सख्या, तद्वाच् (४)च २ लोक, जनता ३ निर्णेतृसभा, मध्यस्था।
—तत्त्व, स पुं, (स न) पञ्चभूतम् (पृथिवी जलानलानिलाकाशानि)।
—नद, स पु (सं) पञ्चनदीयुत प्रान्तविशेष, *पञ्जाब।
—नामा, सं पु (सं+फा) *पञ्चनिर्णयपत्रम्।
—प्राण, स पु (स प्राणा) प्राणपञ्चकम् (प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान)।
—भूत, सं पुं (सं न) पंचतत्त्व, पंच, तत्त्वानि भूतानि।
—महायज्ञ, सं पु (सं-यज्ञा) ब्रह्म-देव-पितृ बलिवैश्वदेव नृयज्ञा।
—रत्न, सं प (स न) कनकहीरकनील मणिपद्मराग-मौक्तिकानीति पञ्चरत्नानि।
पंचक, सं पं (स न) पञ्चवस्तुसमुदाय।
पंचत्व, स पु (स न) मरण, निधन, मृत्यु, पञ्चता।
पंचम, वि (सं पंचम-मी मं) २ सुंदर ३ दक्ष। सं पुं, पंचमस्वर (संगीत)।
पंचमी, सं स्त्री (सं) शुक्ला कृष्णा वा पंचमी

निर्गि (स्त्री) = विनम्मिविशेष (व्या) ३ द्रौपदी।

पचास, म पु (म न) बार्न्तिनिजप्रयोग करणात्मकपंचिका गति।

पचासिन, म स्त्री (म न) पद्ध्यभेद पचनता।

पचानन वि (न) पाच मुख अस्य। म पु शिव = सिंह ३ स्फटाग्नि।

पचाननी, म स्त्री (म) दुर्गा २ सिंही।

पचायत, म स्त्री (स पचायतन>) पंच सभा समिति (स्त्री) २ सामनया।

—नामा, म पु (हि +फा) पंचमभानिर्णयपत्रम्।

पचायती वि (हिं पचायत) पंचसभा सवधिन् २ सामान्य सार्वजनिक।

पचाली, म स्त्री (म) पुत्तला, वस्त्रनिर्मित पुत्तिका २ द्रौपदी पाचाली।

पछा, म पु, दे 'पक्षा'।

पजर, म पु (म) कंकाल, देहास्थिसमूह २ देह, शरीर ३ दे 'पिंजरा'।

पजा, म पु (फा) पंचक २ नखचरणाना पचाङ्गुलीसमूहाग्रभागो वा ३ (व्याघ्रादीनां) पाद।

—पजे में, मु, अधिकारे, वशे।

पनाबी, वि (फा) पावनद [-दा (स्त्री)]। सं पु, पचनदवासिन्।

पजारा, म पु (म पंचिकर) तुलकार कनक २ दे 'धुनिया'।

पजीरी, म स्त्री (स पञ्च) गोधूमनिर्मचूर्ण, मिष्टान्नभेद।

पैंडवा, म पु, (?) महिषी पयस्विनी, गाव गावक।

पडा, म स्त्री (म पण्डित>) तीर्थपुरोहित।

पडाइन, म स्त्री (हि पडा) तीर्थपुरोहित भार्या पत्नी।

पडाल, म पु, (नमिल पैन्डल) दे मण्डप'।

पडित, म पु (म) बुध, कोविद प्राज्ञ, विद्वस (पु) २ ब्राह्मण। वि, नागरिक, बुद्धिमत् २ चतुर, दक्ष ३ सस्कृतज्ञ।

पडिता, म स्त्री (स) विदुषी, बुद्धिमती नारी।

पडिताई, म स्त्री, दे 'पाण्डित्य'।

पडिताऊ, वि (हि पण्डित) पण्डितमाहात्म्य, तुल्यसदृश।

पडितानी, म स्त्री (हिं पण्डित) पण्डित कोविद पत्नी भार्या २ ब्राह्मणी, द्विजोत्तमा।

पडुक, म पु (स पाडु>) कपोतजातीय खगभेद, पाडुर, *घूकर।

पथ, म पु (म पथिन्) वर्त्म, वत्मन् (न) २ सम्प्रदाय, मत, धर्ममार्ग ३ रीति (स्त्री)।

पथी, म पु (हि पथ) पथिक, यात्रिक २ साम्प्रदायिक मतवर्त्तिन्।

पँवाडा, म पु (म प्रवाद) आख्यान वृहद विस्तृत कथा, अभिविरल वृत्तान्।

पसारी, म पु (म पण्यशालिन्>) औषध विक्रयिन *पण्यशालिन्।

पसेरी, ■ स्त्री (म पच+सेर >) पचसरी, पचसेटकी।

पकड, म स्त्री (स प्रगृह>) ग्रह ह धा(धा)रण, ग्रसन, आश्लेष २ मल्लबाहु, युद्ध ३ दोषान्वेषण, अक्षेप, आपत्ति (स्त्री)।

—धकड, म स्त्री, निरोधाभियोग, ग्रहणधरणे (दोनों द्वि)।

पकडना, क्रि स (म प्रगृह>) ग्रह (क्र प मे), धृ (भ्वा प अ, चु), आदा (जु आ अ), अवलव् (भ्वा आ से), परामृश् (तु प अ) २ निरुध (रु उ अ), आमिष् (भ्वा प से), बध् (क्र प अ) ३ अ सद (प्रे), लभ (भ्वा आ से, चु), पश्चाद् आत्मय अतिक्रम् (भ्वा प से), पश्चात् आमिल् (तु प से) ४ निह्नलभ (प्रे), स्थिरीकृ ५ अन्विष (दि प से), अनुसधा (जु उ अ) ६ ग्रस् (भ्वा आ से), आक्रम (भ्वा प मे)। स पु, दे 'पकड'।

पकडनेवाला, स पु, ग्रहातृ धर्तृ धारयितृ (पु) निरोधक, आमेक्ष द।

पकडवाना, पकडना, क्रि प्रे, व 'पकडना' के प्रे रूप।

पकडा हुआ, वि, गृहीत, धृत, निरुद्ध, ग्रस्त।

पकना, क्रि अ (म पक्व>) पच श्रा-श्री (कम), सिध (दि प अ) २ पाक प्रम् (भ्वा प से), पाकोन्मुख (वि) भू। (केशा) धवली शुक्ली भू।

पकवाई, स स्त्री (हिं पकवाना) पाचन, मूल्य भृति (स्त्री)।

पकान, स पु (स पक्वान्न दे)।

पकाई, स स्त्री दे पकवाई १ पाचन पक्ष, दे पक्व'।

पकाना, क्रि स (हिं पकना) पच् (भ्वा प अ) श्री (क्र उ अ) श्रा (अ प अ, चु अपयति) (अप) सम्कृ अथवा सिध (प्रे साधयति)

पकाने योग्य, वि पचनीय, श्रापणीय, श्रेतव्य।

पकानेवाला स पु पाचक, सूद बल्लव।

पकाया हुआ, वि पक्व, पाचित, साधित, संस्कृत, श्राण।

पकाव, स पु (हिं पकना) पचन, पाक २ (व्रणादीनां) सपूयत्व, परि, पाक।

पका हुआ, वि, पक्व सिद्ध, श्राण, शृत।

पको(कौ)ड़ा, स पु (हिं पकौड़ी) पक्व पौट।

पको(कौ)ड़ी, स स्त्री (स पक्ववटी) पक्व वटिका।

पक्का, वि (स पक्व) १ परि, पक्व, परिणत, पक्वतामापन्न २ प्रौढ, सिद्ध, परिनिष्पूर्ण ३ संस्कृत, संशोधित ४ पक्व, श्राण, शृत ५ अनुभविन्, बहुदर्शिन् ६ दक्ष, निपुण ७ दृढ, स्थिर ८ निश्चित, ध्रुव ९ प्रामाणिक, प्रमाणसिद्ध।

पक्व, वि (स) दे 'पक्का' (१, ३ ४)।

पक्वान्न, स पु (स न) संस्कृत सिद्ध अन्न, अन्नम्।

पक्वाशय, स पु (स) नाभ्यधोभाग, उदर नारभिरो भाग।

पक्ष, स पु (स) पार्श्व अर्ध, पक्ष पार्श्व, भाग, कुक्षि (पु) २ दे 'पख' ३ दल गण, सघ ४ अर्धमास, मासार्द्ध ५ सहायक, मित्रि (पु) ६ गृह ७ मत, विचार।

उत्तर—, स पु (स) सिद्धान्त, कृतान्त, समाधि (पु)।

पूर्व—, स पु (स) शास्त्रीयप्रश्न, सिद्धान्त विरुद्धोक्ति (स्त्री), चोद्य, देश्य, कुचिका।

पक्षक, स पु (स) गुप्तद्वार, द्वारद्वार (स्त्री) २ पार्श्व दर्वी, पक्षभाग ३ सहाय सहायक।

पक्षति, स स्त्री (स) पक्षमान, मूलम्, शुक्ल प्रथमतिथि (स्त्री), प्रतिपदा, प्रतिपदी।

पक्षपात, स पु (स) पक्षपातित', असम, दृष्टि बुद्धि (स्त्री), असमता।

पक्षपाती, स पु (सं तिन्) पक्ष्य, पक्षधर पक्षावलम्बिन्, सपक्ष, पार्श्विक।

पक्षांत, स पु (स) अमावस्या २ पूर्णिमा।

पक्षाघात, स पु (स) पक्षवध, अर्धाङ्ग स्तम्भ, साद।

पक्षिणी, स स्त्री (स) पक्षिणी, पतत्रिणी, गरुत्मती वर्त्तिनी, नौक्षा, नीडोद्भवा।

पक्षी, स पु (स पक्षिन्) विहग, विहङ्गम, खग, शकुन शि (पु), शकुनि (पु) द्विज, पक्षिन्, पतत्रिन्, अण्डज, वर्तिन् वि (पु), पतत्रि (पु), गरुत्मत् (पु), पतग, पतङ्गम २ पक्ष्य, पक्ष पातिन्।

पख, स पु (स पक्ष >) द्वन्द्व, विवाद २ दोष, त्रुटि (स्त्री) ३ विघ्न प्रतिबन्ध।

पखवारा ड़ा, स पु (स पक्ष + वार >) कृष्ण शुक्लो पक्ष २ अर्धमास, मासार्द्ध।

पखारना, क्रि स (स प्रक्षालन) दे 'धोना'।

पखावज, स स्त्री (स पक्षवाद्य >) मृदङ्ग भेद, अवनद्ध वाद्यम्।

पखेरू, स पु [स पक्षालु (पु)] दे 'पक्षी'।

पखौ रा ड़ा, स पु (स पक्ष >) अंसास्थि (न) भुजस्कन्धसन्धि (पु)।

पग, स पु (स पदक) पद्, पद, चरण न्यास २ पद, क्रम ३ पादत्राण, चरणत्राण।

—डंडी, सं स्त्री, पद्धति, चरणवीथि (स्त्री), पथिकमार्ग, पद्यनी।

पगड़ी, सं स्त्री (स पटक) उष्णीष, शिरोवेष्टन, वेष्टन, वेष्टक, शीर्षण्यक।

—बाँधना, क्रि सं, उष्णीष परिधा (जु उ अ) वध (क्र् प अ)।

—उछालना, मु, स्पृ कृ, अपमान (प्रे)।

—उतारना, मु, दे 'पगड़ी उछालना' २ लुण्ठ (भ्वा प स), धन अपहृ (भ्वा उ अ)।

—बदलना, मु, सौहार्दं स्था (प्रे स्थापयति)।

पगना, क्रि अ (सं पच >) स्नन मधु

पछाड़ना, क्रि स (हिं पछाड़) जय नि पत (प्र) २ (शत्रु) पराति (भ्वा आ अ)।
पछाड़ी, स स्त्री दे पिछाड़ी ।
पछतावा, स पु (फा) पश्चात्ताप ।
पट¹, स पु (स) वस्त्र, वसन, सुचेल २ तिरस्करिणी व्यवधान प्रतिमारा ३ चित्रपट ४ धातुमय पत्र पट्ट पट्टिका ।
—खोलना, क्रि स तिरस्करिणी अपस विचल । (प्रे)
—मंडप—वास, स पु (स) दे 'तंबू' ।
पट², क्रि वि (चट का अनु) झटिति, सपदि ।
पट (अनु) पतन-ताडन, ध्वनि (पु), पटिति ।
पट⁴, स पु (देश) रूर (पु)। वि, अधो मुख, अधरोत्तर, अवमूर्धशय ।
पट , स पु (स पट्ट) कपाट(टा)ट पीट द्वार, द्वार् (स्त्री)।
—खोलना—बंद करना, क्रि स , दे 'द्वार' ।
पटकना, क्रि स (अनु पटक) उत्थाप्य भूमौ रभसा नि-अव पत (प्रे) २ बाहुयुद्धे प्रति द्वंद्विन जि (भ्वा प अ)।
पटकनी, स स्त्री (हिं पटकना) रभसा अध नि अव पात पतनम् ।
—देना, क्रि स , दे 'पटकना' ।
पट(ु)का, स पु (स पट्टक >) परिकर , पटि,-बधनी-वलयम् ।
—बाँधना, क्रि परिकर बध् (क्र प अ), उद्यम-सन्नद्ध (वि) भू ।
पटच्चर, स पु (स) चौर , स्तेन । न, नाणवस्त्रम् ।
पटड़ा रा, स पु (स पट्ट-ट्ट) काष्ठ द्वार,-फलक फलक २ काष्ठ-द्वार, पीठम् ।
—कर देना, मु , निर्दली नि मस्त्री कृ १ अव उत्-मद् (प्रे) उच्छिद् (रु प अ)।
पटड़ी री, स स्त्री (हिं पटडा रा) पट्टक-क २ पट्टिका ३ पथ्या, चरणवाथि (स्त्री), पाद चरण पथ ।
पटना, स पुं (सं पट्टन>) कुसुमपुरं, पुष्प पुर, पाटलिपुत्रम् ।
पटना, क्रि अ (हिं पट = भूमि की सतह के बराबर) आ-सम्मा छाद् (कर्म), आ मं वृ (कर्म) २ व्याप् आस्तृ (कर्म) ३ पूर (कर्म) आ प्रम पूर् (कर्म) ४ मिथ (कर्म)५ समन्(नि आ अ), प्रचित्ती भू ६ क्रयान् मुच (कर्म)।
पटपट, स स्त्री (अनु) पटपटाशब्द , पटपट ध्वनि (पु) क्रि वि , सपटपटशब्दम् ।
पटरानी, स स्त्री (स पट्टराज्ञी) पट्ट, देवी महिषी राज , महिषी ।
पटल, स पु (स न) छदिम् (न) छदि (स्त्री) २ आवरण, आच्छादन ३ तिरस्क रिणी, व्यवधान ४ आ,स्तर , कञ्चुक-कं ५ दृगावरण ६ समूह , पटली ७ अध्याय , परिच्छेद ८ चय , राशि (पु) ९ परि च्छद १० तिलक कं ११ दे 'मोतियाबिंद' ।
पटवा, स पु (स पट्ट+हिं वाहा) *पट्टवाह , *पट्टहार ।
पटवाना, क्रि प्रे , व 'पटना' के प्रे रूप ।
पटवारगरी, स स्त्री (हिं पटवारी+फा गरी) ग्रामभूलेखत्व २ ग्रामभूलेखपदम् ।
पटवारी, सं पु (सं पट्ट+हिं वार) *ग्राम भूलेखक ।
पटसन, स पु (स पाट +शण>) शण, अनसी, समृणी ।
पटह, स पु (स) दुंदुभि (पु), भेरी, पणव ।
पटहार, स पु , दे 'पटवा' ।
पटा, स पु (स पट्ट क) काष्ठ पट्ट पीठ २ मिथ्यालेख्य ३ ल्युट , दट ।
पटाई, स स्त्री (हिं पटना) पटलन आच्छा दनम् २ पटलाच्छादनभृति (स्त्री)।
पटाक, स स्त्री (अनु) तारध्वनि (पु), महा,शब्द नाद ।
पटाका खा, स पु (अनु पटाक) अग्निक्रीड नकभेद , *पटा क ।
पटाक्षेप, स पु (स) यवनिका प्रवनिका द अपटी निपात अवपात ।
पटाना, क्रि स , व 'पटना' के प्रे रूप ।
पटापट, क्रि वि (अनु पट) सपटपटशब्दम् । स स्त्री , पटपट शब्द ।
पटु, वि (सं) कुशल दक्ष निपुण, प्रवीण, निष्णात, विशारद, विदग्ध ।
पटुता, स स्त्री (सं) कौशल-ल्य, दक्षता,

नैपुण्यं ण, प्रावीण्य, वैचक्षण्य, पटुत्व, वैद ग्ध्यम्।

पटेबाज़, म पु (हि + फा) सन्मार्गपथानिन्, 'मध्यासियोध ।

पटेल, म पु (हि पट्टा) ग्रामणी (पु), ग्रामाध्यक्ष २ दक्षिणभारतवर्षे उपाधिभेद ।

पटोर-ल, म पु (म पटोल) लताराज अमृत(ता)-कटु नाम, फल, कुष्ठारि (पु), ग्रासमदन ।

पट्ट, स पु (म पु न) पीठ ठी, उप आसन २ पट्टिका ३ धातुमय, पत्र पट्टिका ४ चर्मन् (न) फलक-क ५ पेषणपाषाण, शिला ६ उष्णीष प ७ व्रण, बन्धन आवेष्टन ८ उत्तरीय ९ नगर १० चतुष्पथ-थ, शृंगाटक ११ राज, सिंहासनं १२ कौशेय १३ शण १४ दे 'पट्टा'।

पट्टन, म पु (म न) पत्तनं, पुर, नगर २ महानगरम्।

पट्टा, स पुं (सं पट्ट) पट्टोल्लिखा, आविहित कालात् भूम्यधिकारपत्र २ (कुक्कुरादीनां) ग्रैव ग्रीवापट ३ पेटा, पाश-बन्धन ४ पाठ ५ चर्ममय,-कटिबन्धना परिकर ६ दे 'चप रास' ७ खड्गभेद ८ अधिकारपत्रम्।

पट्टे पर दाने क्रि म, आविहितभयात् निरूपितमूल्येन दा अथवा निमृत (तु प अ)।

पट्टी[1], स स्त्री (सं पट्टिका) वाघ्र,पट्टिका २ पाठ, प्रपाठक, ३ शिक्षा, उपदेश ४ वचनात्मकोपदेश, ५ (वस्त्रादिस्य) दीर्घ,-खण्ड शकल ६ व्रण,-बन्धन आवेष्टन ७ *नपावेष्टनी ८ औशीरभेद, पट्टी ९ पङ्क्ति ततिः (स्त्री) १० प्रमाधिना केश ११ रिक्थभाग १२ मार्गवर्त्म पथ,-काष्ठपट्ट १३ मिष्टान्नभेद ।

—बाँधना, क्रि स, पट्टिका वध (क्र्‌ प अ) व्रणं आनह् (तु)।

—दार, म पु (हि+फा) अशिन्, भाग ग्राहिन्।

—दारा, स स्त्री (हिं+फा) अंशित्व, भागग्राहितम्।

पट्टी[2], स स्त्री (स) अश्ववक्षोबन्धनरज्जु (स्त्री), कक्ष्या, नद्धी २ स्तनाम्बूषा ३ पत्तकम्।

पट्टू, म पु (हि पट्टी) और्णपटभेद, नीशार ।

पट्ठा, म पुं (स पुष्ट) तरुण, युवक, युवन्, कुमारक २ शाव, पोत, डिम ३ मल्ल, बाहुयोध िन् ४ दीर्घस्थूलपत्र ५ स्नसा, स्नायु (स्त्री), पेशी।

पठक, म पुं (सं) पाठक, वाचक ।

पठन, मं पु (म न) अध्ययनं, पाठ, अधीति (स्त्री), वाचन २ श्रावणं, उच्चारणम्।

—पाठन, स पु (म न) अध्ययनाध्या पनम्‌ (द्वि)।

पठनीय, वि (स) पठितव्य, अध्येतव्य, पाठ्य, वाचनीय, पठन अध्ययन,-अर्ह।

पठान, म पु (पश्तो पुख्तानः) यवनजाति-भेद, *पख्तून *पठान ।

पठानी, स स्त्री (हिं पठान) पख्तूनी, पठानी २ पठानत्व, पख्तूनत्वम्।

पठार, स पु (स प्रस्तार >) अधित्यका, २ प्रस्तार ।

पठावनी, स स्त्री (स प्रस्थापनम्) प्रपण, प्रहिति (स्त्री) २ प्रस्थापनभृति। (स्त्री)।

पठित, (वि स) अधीत, वाचित २ आविद्य ३ साक्षर, विद्यावत्, विद्वस्।

पड़छत्ती (ती), सं स्त्री दे 'परछत्ती'।

पड़ताल, म स्त्री (स परितोलन>) अनु-सधान, अन्वेषण २ अन्वीक्षण, विमर्श, निरूपणम्।

—करना, क्रि स, अनुसधा (जु उ अ), अन्विष् (दि प से) २ विमृश् (तु प अ), निरूप (चु), अनु परि इष् (भ्वा आ से)।

पड़तालना, क्रि स, दे 'पड़ताल करना'।

पड़ती, मं स्त्री (हि पड़ना) अकृष्ट अहल्य, भूमि (स्त्री)।

पड़दादा, म पु (स प्र+तात >) प्रपिता मह ।

पड़दादी, म स्त्री (हिं पड़दादा) प्रपिता मही।

पड़ना, क्रि अ (स पतन) अव नि, पत् (भ्वा प से), अध-स्रस् (भ्वा आ से), च्यु (भ्वा आ अ) २ पट्-वृत् (भ्वा आ. से) आसपद्य प्रमन (कर्म) सवृत, स

ममाप" (दि आ अ) ३ मविश् (तु प अ), विश्रम् (दि प से) शी (अ आ स), स्वप् (अ प अ) ४ रुग्ण (वि) वृत् रोगेण अभिभू (कर्म) ५ प्रविश् ([illegible] प अ)।

क्या पड़ा है [illegible], गेऽय, किं प्रयोजनम्।

पड़नाना, स पुं (सं प्र+दे नाना) प्रमाता मह।

पड़नानी, स स्त्री (हिं पड़नाना) प्रमाता मही।

पड(र)वा स स्त्री, दे 'प्रतिपदा'।

पड़वाल, स पुं, दे 'परवाल'।

पड़ाव, स पु (हिं पड़ना) प्रयाणभंग, निवेश अवस्थिति (स्त्री) २ निवेश विश्राम, स्थानम्।

पड़ोस, स पु (स प्रतिवास या प्रतिवेश) निकट-समीप-सन्निहित-देश, सन्निधि (पु), २ सान्निध्य प्रातिवेश्यम्।

पड़ोसी, स पु (हिं पड़ोस) प्रतिवेश्य हित, प्रतिवासिन्, प्रातिवेशिक, [पड़ोसिन (स्त्री)-प्रति, वेशिनी-वासिनी इ]।

पढ़ना, क्रि स (स पठन) पठ् (भ्वा प से), अधि इ (अ आ अ), (अपने आप पढ़ना) अनुवच् (प्रे) २ वच् (प्रे), उच्चर् (प्रे) ३ अभ्यस् (दि प से), आवृत् (प्रे)। स पु तथा भाव, पाठ, पठन, अध्ययन, वाचन, उच्चारण, अभ्यसन, अभ्यास, आवर्तन, श्रावणम्।

—लिखना, स पु, पाठलेखौ पठनलखने, विद्याभ्यास, शिक्षा।

पढ़नेयोग्य, वि, दे 'पठनीय'।

पढ़नेवाला, स पु, अध्येतृ पठितृ (पु) वाचक, पाठक, अधीयान [अध्येत्री, पठित्री, पाठिका (स्त्री)]।

पढ़ा हुआ, वि, दे 'पठित'।

पढ़वाना, क्रि प्रे, व 'पढ़ना' के प्रे रूप।

पढ़ा, वि (स पठित, दे)।

—लिखा, वि, विद्वस्, उपार्जितविद्य, साक्षर, शिक्षित, व्युत्पन्न।

पढ़ाई, स स्त्री (हि पढ़ना) दे 'पढ़ना' सं पु। २ अध्यापन, पाठन, शिक्षण ३ अध्यापन, शैली रीति (स्त्री) ४ अध्ययन अध्यापन, शुल्कवेतनम्।

पढ़ाना, क्रि स (हिं पढ़ना) पठ शिक्ष् (प्रे), अधि इ (प्रे अध्यापयति), शास् (अ प से), उपदिश् (तु प अ)। स पु तथा भाव, अध्यापन, उपदेश, शिक्षण, पाठनम्।

पढ़ानेवाला, स पु, अध्यापक, शिक्षक, गुरु, उपदेष्टृ शास्तृ (पु)।

पण, स पु (स) द्यूत, देवन, दुरोदर, कैतव २ ग्लह (शर्त) ३ मूल्य, निर्वेश ४ शुल्क स्क, प्रतिफल ५ धन, रिक्थ ६ पणितव्य, विक्रेयवस्तु (न) ७ व्यवसाय, व्यवहार ८ स्तुति (स्त्री) ९ मुष्टिमान १० (पैसा) ताम्रमुद्राभेद, पणमुद्रा।

पतंग, स पु (स >) पत्रचित्र न, चित्र भास, *पतंग २ सूर्य ३ खग ४ शलभ।

—उड़ाना, क्रि स, पत्रचित्र पतंग उड्डी (प्रे उड्डाययति)।

—बाज़, स पु, पतंगोड्डायक।

—बाज़ी, स स्त्री, पतंगक्रीडा।

पतंगा, स पु (स पतंग) शलभ २ स्फुलिंग, अग्निकण।

पतंजलि, स पुं (सं) योगदर्शनकारर्षि विशेष २ महाभाष्यकारो मुनिविशेष।

पत¹, स पु (स पति) भर्तृ, धव २ प्रभु, स्वामिन्।

पत², सं स्त्री (स प्रत्यय >) प्रतिष्ठा, गौरव, मान, यशस् (न) कीर्ति (स्त्री)।

—उतारना या लेना, मु, अप भ्रं मन् (प्र), दुष (प्रे दूषयति)।

—रखना, क्रि स, गौरव रक्ष् (भ्वा प से)।

पतझड़, सं स्त्री (स पत्र+हिं झड़ना) शिशिर, शिशिरर्तु (पु) (माघफाल्गुन मासौ) २ अवनतिकाल, सकटमय समय।

पतत्प्रकर्ष, स पु (स) काव्यदोषभेद (सा०)।

पतत्र, स पु (स न) पक्ष, वाज, छद २ यान, वाहन, युग्य, वाह।

पतत्रि, स पु (स) पक्षिन्, पत्रिन्, पतत्रिन्, खग, विहग।

पतन, स पु (स न) अध नि-अध, पात,

पत्र स पु (स न) पर्ण छदन, पलाश, दल २ छद ३ (पुस्तकादीना) पत्र, पर्ण, पृष्ठ ३ समाचार-वृत्त पत्र ४ सदेश, पत्र, लेख्य ५ लेखपत्र ६ (धात्वादे पट्ट ह, फलक -कम्)

—कार, स पु (स) वृत्तपत्र लेखक सपादक ।

—वाहक, स पु (स) लेखहार, सदेशहर ।

—व्यवहार, स पु (स) पत्रविनिमय, लेखव्यवहार ।

पत्राञ्जन, स पु (स न) मशी मी-सी, मसि, -सि (स्त्री (स्त्री)।

पत्रा, स पु (पत्र>) पचाग, पजिका २ पृष्ठ, पर्ण, पत्रम् ।

पत्राचार, स पु (स), पत्र,-व्यवहार विनिमय ।

पत्रावलि, स स्त्री (स) पर्ण-दल छद-श्रेणी राजी-आवली २ पत्रभग ।

पत्रिका, स स्त्री (स) सदेश पत्र २ साम यिक, पुस्तक ग्रथ ३, समाचार वृत्त, पत्र ४ लघुलेख ।

पत्री, स स्त्री (स) लिपिपत्रिका, लघुलख २ सदेश, पत्रम् ।

जन्म—, स स्त्री (स) जन्मपत्रिका ।

पथ, स पु (स) पथिन् (पु), मार्ग, अध्वन् (पु), वर्त्मन् (न), पदवी वि (स्त्री) २ रीति (स्त्री), विधानम् ।

—गामी, स पु दे 'पथिक' ।

—(प्र)दर्शक, स पु (स) मार्ग,-दर्शक उप देशक, नेतृ, नायक ।

पथरी, स्त्री (हि पत्थर) प्रस्तर कटोरा रिका २ अश्मरी, अश्मीर रे ३ अष्ठील्ना (स्त्री बहु), पाषाणशर्करा (पु बहु) ४ दे 'चकमक' ५ पक्षिजठर र ६ शमर शाणी ।

पथरीला, वि (हि पत्थर) प्रस्तर उपल, सकुल आकीर्ण-बहुल ।

पथिक, स पु (स) अध्वग, अध्वनीन, अध्वन्य, पान्थ, पथिल, यात्रि(न्)क, यातृ -गन्तृ (पु), पथक ।

पथ्य, स पु (स न) उपयुक्ताहार । २ मंगलम् । वि, स्वास्थ्यकर, आरोग्यावह ।

पद, स पु (स न) पाद, चरण, अंघ्रि (पु) २ पाद पद चिह्न मुद्रा ३ पग, पद पाद न्यास विक्षेप, वि,क्रम, ४ स्थान, स्थिति (स्त्री), पदवी ५ वृत्ति (स्त्री), व्यवसाय ५ पद्य, छन्दस (न) ६ पदपाद, छदश्चरण उपाधि (पु) मानपद ८ सुप्तिङन्त प्रातिपदिक, सविभक्तिक शब्द (व्या) ९ भक्तिगीति (स्त्री) १० नि श्रे यस, मुक्ति (स्त्री)।

—चर, स पु (स) पदग, पदानिक ति (पु)।

—च्छेद, स पु (स) सधिसमासयुक्तवाक्य स्थ पदाना विभाग (व्या)।

—च्युत, वि (स) भ्रष्टाधिकार, अधि कारच्युत ।

—दलित, वि (स) पाद पद, आक्रान्त मर्दित २ अपराधत, अवपीडित ।

पदक, स पु (स न) कीर्ति प्रतिष्ठा, मुद्रा ।

पदवी, स स्त्री (स) पद, वृत्ति स्थिति, (स्त्री) स्थान २ उपाधि (पु), उप मान, पद, कीर्तिचिह्न ३ मार्ग ४ रीति (स्त्री)।

पदाति, स पु (स) प(पा)दातिक, पदिक, पत्ति (पु) प(पा)दग, प(पा)दाजि (पु), पादात ।

पदाना, क्रि स व 'पदना' के प्रे रूप ।

पदार्थ, स पु (स) भूत, द्रव्य, वस्तु (न), अर्थ २ शब्दार्थ ३ धर्मार्थकाममोक्षा ४ द्रव्यगुणकर्मादय प्रमेयविषया (दर्शन)।

—विज्ञान स पु (स न) विज्ञान भौतिक शास्त्रम् ।

पदार्पण, स पु (स न) चरणार्पण, पादन्य सन, शुभागमनम् ।

पदावली, स स्त्री (स) शब्दश्रेणी २ गीत सग्रह ।

पद्धति, स स्त्री (स) मार्ग, पथ, पथिन् २ पक्ति तति (स्त्री) ३ रीति (स्त्री), परिपाटी टि (स्त्री) ४ प्रकार, विधा ५ संस्कारविधिदर्शको ग्रन्थ ।

पद्धरि री, स स्त्री (स पद्धटिका) मात्रिकसमछद भेद (मा०) प्रतिचरण १६ मात्रा, अन्त म जगण, उ० नभ रैनि भवन नमसय निराम । पद अटकन वश्यक ३भनान्य ।]

पद्म, स पु (स न) सरोज, पुण्डरीक, दे

'कमल' २ विन्गोगतुपविशेष ३ पोन्शस्था निनी सख्या (T १०००००००००००००००)।

—कन्द, स पु (स पु न) शालु(लू)क, जलालुक, पद्ममूलम्।

—नाभ भि, सं पु (स) दे 'विष्णु'।

—पाणि, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ सूर्य ३ बुद्ध।

—योनि, स पु (स) दे ब्रह्मा।

—राग स पु (स) लाहितक, लोहित, शोणरत्न, कुरुविन्दकम्।

पद्मा, स स्त्री (स) दे लक्ष्मी।

पद्माकर, स पु (स) तडा(डा)ग सरोवर, सरसी, सरस (न), सरकम्।

पद्माक्ष, स स्त्री (स) विष्णु २ सूर्य ३ पद्मबीजम्। वि (स) कमलाक्ष कमलनयन, कमलनैन।

पद्मालया, स स्त्री (स) कमला, पद्मा, श्री, इन्दिरा, रमा।

पद्मासन, स पु (स न) योगासनविशेष। २ (स पु) दे 'ब्रह्मा'।

पद्मिनी, स स्त्री (स) कमलिनी नलिनी, बिसिनी २ दे 'पद्माकर' ३ स्त्रीभेदविशेष, (जो कमलाङ्गी सुशीला, सुन्दरी तथा पतिव्रता हो) ४ हस्तिनी ५ दे लक्ष्मी।

—वल्लभ, स पु (स) सूर्य।

पद्य, स पु (स न) छन्दस (न), श्लोक २ काव्य, कविता।

—मय, वि (स) पद्य, रूप-आत्मक, छन्दोबद्ध।

पधारना, स प (हिं पग+धरना) गमन, प्रस्थान २ उप, आगमन, प्रापणम्।

पन¹, [illegible] पु (स पण) प्रतिज्ञा, दृढसंकल्प।

पन², स पु [स पवन् (न)>] आयुषो चतुर्थभाग।

पन³, प्रत्यय (स)त्व,-ता (उ बालपन बालत्व-ता।

पनघट, स पु (हिं पानी+घाट) घट्ट-ट्टी।

पनचक्की, स स्त्री (हिं पानी+चक्की) जल, चक्री पवनी-यन्त्रम्।

पनडुब्बा, स पु (हिं पानी+डूबना) निमज्ज (पु), अवगाहक २ मगभेद ३ जलकुक्कुट।

पनडुब्बी, स स्त्री (पूर्व) जलमग्ना (नौका)।

पनपना, क्रि अ (स पर्ण) पुन पल्लवित हरित (वि) भू २ पुन स्वास्थ्य लभ् (भ्वा आ अ) अथवा पुष (दि प अ)।

पनपाना, क्रि स, व 'पनपना' के प्रे रूप।

पनबाडी, स स्त्री (हिं पान+बाडी) पर्ण वाटिका ताम्बूलवाटिका।

पनबाडी, स पु (हिं पान) दे 'तमोली'।

पनस, स पु (स) (वृक्ष) कण्टकफल, फल, स्थूल, मृदङ्गफल (फल) पनस, दे 'कटहल'।

पनसारी, स पु दे 'पसारी'।

पनसाल स स्त्री (स पानीयशाला) प्रपा, दे सबील'।

पनहा, स पु (स परिणाह) दे 'चौडाई' २ गूढाशय, मर्मन् (न)।

पनहारा स पु (स पानीयहार) जल, वाहक वोढृ (पु)।

पनहारिन री, स स्त्री (हिं पनहारा) जल वाहिका-वोढ्री।

पनाती, स पु [स प्रनप्तृ (पु)] प्रपौत्र २ प्रदौहित्र।

पनारा-ला, स पु, दे 'परनाला'।

पनाह, स स्त्री (फा) परि, त्राण, रक्षा २ रक्षास्थान, आश्रय।

पनीर, स पु (फा) कूर्चिका २ निर्जल दधि (न)।

पनीरी, स स्त्री (स पर्ण>) पर्णबीजानि (न बहु)।

पन्नग, स पु (स) दे 'साँप'।

पन्ना, स पु (स पर्ण>) पुस्तक, पत्र पृष्ठ २ धातुपट्ट-ट्ट ३ मरकत, हरिन्मणि (पु), अश्मगर्भ, सौपर्ण ४ देशीयोपानह उपरिभागम्।

पन्नी, स स्त्री (हिं पन्ना) त्रपु पित्तल, पत्रम्।

पपडा, स पु (स पर्पट>) शुष्ककाष्ठत्वक्-खण्ड २ रोटिकाया बाह्यभाग।

पपडी, स स्त्री (हिं पपडा) बाह्य, पटल-वेष्टन, वल्क, शुष्कत्वम (स्त्री) २ दे 'खुरण्ड' ३ पर्पटक ४ वल्कल-लम्।

पपनी, स स्त्री (देश) दे 'बरौनी'।

पपीहा, स पु (देश) चातक मेघजीवन, सारंग, स्तोकक ।
पपीता, स पु (देश) रक्तएरण्ड, महापक्वा हुआ २ पीपीकर, क्रीडनकभेद ।
पपीहा, स पु (अनु) दे 'चातक' ।
पपैया, स पु (अनु) चातक २ पीपीकर, क्रीडनकभेद ३ आम्रवृक्षक ।
पपोटा, स पु (स प्रपट >) दे 'पलक' ।
पब्लिक, स स्त्री (अ) लोका, जनता, जना । वि, सार्व, जनिक नवीन लौकिक ।
—प्रासिक्यूटर, स पु (अ) राजकीय प्राभियोक्तृ ।
—वर्क्स डिपार्टमेंट, स पु (अ) लोक निर्माणविभाग ।
पब्लिशर, स पु (अ) पुस्तक प्रय,प्रकाशक । दे 'प्रकाशक' ।
पय, स पु [स पयस् (न)] दुग्ध, क्षीर २ जल ३ अन्नम् ।
पयस्विनी, स स्त्री (स) क्षारिणी दोग्ध्री, दुग्धदा, दुधा ।
पयाल, स पु (स पलाल न) निष्फलकाट, निश्शस्यो धान्यनाल ।
पयोज, स पु (स न) सरोज, पद्म, दे 'कमल' ।
पयोद, स पु (स) मेघ, दे 'बादल' ।
पयोधर, स पु (स) कुच, क्षीरस्तन २ ऊधस् (न), आपीन ३ मेघ ।
पयोधि, **पयोनिधि**, } स पु (स) सागर, समुद्र ।
परंच, अव्य (स पर+च) अपर च, अपि च, अथ च २ तथापि, किंतु, परंतु ।
परंतप, वि (स) अरिमर्दन, रिपुसूदन ।
परंतु, अव्य (स पर+तु) किंतु, पर, तथापि ।
परंपरा, स स्त्री (स) अनुक्रम, आनुपूर्व्य, पूर्वापरक्रम २ सतान, सतति (स्त्री) ३ परिपाटी-टि (स्त्री) प्रथा ।
—गत, वि (स) पारंपरीण, साम्प्रदायिक पौराणिक [-की (स्त्री)], क्रम, आगत प्राप्त ।
पर¹, वि (स) अपर, अन्य, इतर, व्यतिरिक्त, आत्मभिन्न २ परकीय, अन्यदीय, अन्य, पर (समासारंभ में), अन्यस्य, परस्य ३. दूर, दूरस्थ-वर्तिन्, विप्रकृष्ट ४ अपर, उत्तर, उत्तरकालीन, पाश्चात्य ५ अतिरिक्त, भिन्न ६ उत्तम, श्रेष्ठ ७ लीन, मग्न, परायण । (उ स्वार्थपर-स्वार्थमग्न) । स पु (स) शत्रु अरि (पु) ।
पर², अव्य (स पर) तदनु, तत, तत्पश्चात् २ परतु किंतु, तथापि ।
पर³, प्रत्य (स उपरि) प्राय सप्तमी विभक्ति से (उ कुर्मी पर-ग्रामग्राम्) अधि, उपरिष्टात् ।
पर⁴, स पु (फ़ा) पक्ष, गरुत (पु) वाज ।
—दार, वि सपक्ष, वाजिन्, पक्षिन्, गरुत्मत ।
—कट जाना, मु, अशक्त असमर्थ (वि) भू ।
—न मारना, मु, गन्तु न शक (स्वा प अ) ।
—निकलना, मु, दृप (दि प अ), गर्व् (भ्वा प से) प्रगल्भ (भ्वा आ से) ।
परकार, स पु (फ़ा) ।
परकीय, वि (स) दे 'पर¹'(२) ।
परकीया, स स्त्री (स) नायिकाभेद, पर पुरुषानुरागिणी ।
परकोटा, स पु (स परिकूट >) प्राकार, वप्र प्र, साल, वरण न
परख, स स्त्री (स परीक्षा) विमर्श, सूक्ष्म, निरूपण परीक्षण-ज्ञान २ विवेक विचारणा परिच्छेद ।
परखना, क्रि स (स परीक्षण) परीक्ष् (भ्वा आ से) विमृश (त प अ) २ विविच (रु उ अ), विनिश्चि (स्वा उ अ), परिच्छिद् (रु प अ) । स पु, दे 'परख' ।
परखनेवाला, स पु, दे 'परीक्षक' ।
परखा हुआ, वि, दे 'परीक्षित' ।
परगना, स पु (फ़ा.) उपमण्डलविभाग, ग्रामसमूह, *परिगण ।
परगहनी, स स्त्री (स प्रग्रहण >) सुवर्ण कारणां नालाकार उपकरणभेद, *प्रग्रहणी ।
परचना, क्रि अ (स परिचयन) परिचि (स्वा उ अ), सुपरिचित (वि) भू, रूढ बद्ध-सख्य-सौहृद (वि) भू ।
परचा, स पु (फ़ा) (पराशाखा) प्रश्न-पत्र २ संदेश, पत्र ३ पत्रखड-डम् ।
परचाना, क्रि स, दे 'परचना' के प्रे रूप ।

परचून, स पु (स पर-अन्य+चूर्ण=आटा>) प्रकीर्ण विविध, पण्य *परचूर्णम्।

परचूनिया, सं पु (हिं परचून) स्तोकश अल्पश विक्रयिन् विक्रेतृ, खड्वणिज (पु)।

परछत्ती, स स्त्री (स प्र+हिं छत) *प्रछदि (स्त्री) -ग्नि (न) पटल २ तृण पटल आदि।

परछन, स स्त्री (स परि+अर्चन) (वधू मवधिनाभि वरस्य) पर्यर्चनं पर्यर्चा।

परछाईं, स स्त्री (स प्रतिच्छाया) छाया छायाकृति (स्त्री) २ प्रतिबिंब व प्रति, रूप फल-मूर्ति (स्त्री)।

परनौट, स पु (हिं परजा) *गृहभूमिकर।

परतन्त्र वि (स) पराधीन परायत्त पराश्रित परवश, परावलम्बिन्, परनिघ्न।

परतन्त्रता, स स्त्री (स) पराधीनता पराश्रय परावलम्बन परवशता इ।

परत, स स्त्री (स पत्र>) अथवा स्तर तल २ पुट भंग वलि (स्त्री) ३ दे 'पपनी (१)'।

परतल, स पु (स पत्तल>) *अश्व गोणी प्रसेव भार।

—का टट्टू, स प तृणय स्थौरिन्।

परतला, स प (स परि+तल) खड्ग कृपाण, पट्टिका।

परती, स स्त्री, दे 'पड़ती'।

परदा, स पु (फा) अपटी, तिरस्करिणी काण्डपट, च(य)वनिका, प्रतिसी(सी)रा २ व्यवधान ३ अवगुंठन ठिका ४ (नारीणां) एकान्तवास, परपुरुषादर्शन ५ स्तर तल ६ व्यवधायककुड्य ७ पटल, आवरक ८ आवरण, आच्छादन ९ वाद्यानां स्वरोद्गमस्थानम्।

—उठाना या खोलना, मु, रहस्य गुप्त प्रकटयति (ना धा) प्रकाश (प्रे)।

—करना या रखना, मु, अवगुंठ् (चु), अन्तःपुरे वस् (भ्वा प अ)।

—नशीन, वि (फा) अवगुंठनवती अन्तःपुरवासिनी।

परदादा, स पु, दे 'परदादा'।

परदेस, स पु (स परदेश) विदेश।

परदेसी, स पु (स परदेशीय) विदेशीय, पारदेशिक, वैदेशिक। वि, अन्य अ-देशीय।

परनाला, स पु, दे 'पड़नाला'।

परनाला, स पु (स) प्रणाल।

परनाली, स स्त्री (स प्रणाली) परि(री)वाह, सरणि (स्त्री) निर्गम जलनिस्सरण मार्ग जलोच्छ्वास।

पर(ड़)पोता, स पु (स प्रपौत्र) पुत्रपौत्र, पौत्रपुत्र।

पर(ड़)पोती, स स्त्री (स प्रपौत्री) पुत्रपौत्री, पौत्रपुत्री।

परब्रह्म, स पु (स न) परमेश्वर, निर्गुणो जगदीश्वर।

परभृत, स स्त्री (स पु) कोकिल, पिक।

परम, वि (स) उत्तम, श्रेष्ठ २ आदिम, प्रथम ३ प्रधान, मुख्य ४ अत्यधिक अत्यन्त।

—गति, स स्त्री (स)
—धाम, स पु [स -मन् (न)]
—पद, स पु (स न)
} मोक्ष, मुक्ति (स्त्री), अपवर्ग, निःश्रेयसम्।

—ज्ञान, स पु (स न) ब्रह्मज्ञानम्।

—तत्त्व, स पु (स न) मूलसत्ता २ ईश्वर।

—पिता, स पु [स तृ (पु)]
—पुरुष, स पु (स)
—ब्रह्म, स पु [स -ह्मन् (न)]
} परमेश्वर सच्चिदानंदो जगदीश्वरः।

—हंस, स पु (स) सन्यासिभेद २ ईश्वर।

परमाँट, वि (अ) स्थिर, स्थायिन्।

परमाक्षर, स पु (स न) ओङ्कार, प्रणव।

परमाणु स पु (स) भूजलानलानिलानां सूक्ष्मतमो लव।

—वाद, स पु (स) परमाणुभ्यो जगद्रचना इति न्यायवैशेषिकसिद्धान्त।

परमात्मा, स पु (स त्मन्) परमेश्वर, परमात्मन् (स) जगदीश्वर, वि, शान्त (यु) चोम (अव्य) सच्चिदानन्द।

परमानन्द, स पु (स) अत्यन्तसुख २ ब्रह्म सायुज्यसुख ३ आनन्दस्वरूप ब्रह्मन् (न)।

परमान्न, स पु (स न) पायस -स, क्षीरिका।

परमायु, स स्त्री [स -युस् (न)] अधिकाधिक आयुस (न), जीवनसीमा (यह मनुष्यों की १२० वर्ष है)।

परमार्थ, स पु (स) उत्कृष्टवस्तु (न) २ यथार्थतत्त्व ३ मोक्ष ४ सुखम्।

परमार्थी वि (स र्थिन्) तत्त्वज्ञानाभिलाषिन् २ मुमुक्षु, मोक्षेच्छुक।

परमेश्वर, स पु (स) दे 'परमात्मा' २ विष्णु ३ शिव।

परला, वि (स पर) पर, परस्थ, परवर्तिन्, २ अनन्तर निरन्तराल ३ दूर, दूर-स्थवर्तिन्।

परलोक, स पु (स) लोकान्तर २ देहान्तर प्राप्ति (स्त्री), प्रेत्यभाव, पुनर्जन्मन् (न)।

—गमन, स पु (स न) मृत्यु (पु) निधनम्।

—वासी, वि (स सिन्) मृत, विपन्न, दिवंगत स्वर्गिन्।

—सिधारना, मु, दिव-स्वर्गं पञ्चत्व गम्।

परवरदिगार, स पु (फा) पालक २ ईश्वर।

परवरिश, स स्त्री (फा) पालन, पोषण भरणम्।

—करना, क्रि स, परिप्रणि पा (प्रे पालयति) सवृध परिपुष (प्रे)।

परवल, स पु (स पटोल) दे 'परोर'।

परवश्य, वि (स) दे परतन्त्र'।

परवशता, स स्त्री (स) दे परतन्त्रता'।

परवा[१], स स्त्री (फ) आशका चिन्ता, व्यग्रता, उद्वेग २ आश्रय, अवलब।

परवा[२], स स्त्री (स प्रतिपदा' दे०)

परवाज़, स स्त्री (फा) उड्डयन, उत्पतन, डीनपतनम् २ गर्व, अवलेप।

परवानगी, स स्त्री (फा) अनुमति (स्त्री), अनुज्ञा।

परवाना, स पु (फा) आज्ञा शासन अनुज्ञा पत्र २ पतंग शलभ, दीपशत्रु (पु)।

—राहदारी, स पु दे 'पासपार्ट'।

परवाल, स पु (स पर+वाल >) पक्ष्म प्रकोप।

परशु, स पु (स) पशु (पु) परश्वध पर्शध कुठार।

—राम, स पु (स) भार्गव, जामदग्न्य, पर्शुराम।

परसा, स पु, दे 'परशु'।

परसाल, स पु (स पर+फा साल) (पिछला) गतवर्ष परुत् (अव्य) २ (आगामी) उत्तर-पर-आगामि वर्षम्। क्रि वि, परुत्, गतवर्षे २ आगामि-वत्सरे-वर्षे।

परसों, क्रि वि [स परश्व (अव्य)] श्वः परदिन २ ■ पूर्वदिनम्।

परस्पर, क्रि वि (स परस्पर) अन्योन्य, इतरेतर, मिथ (सब अव्य)।

—का, वि, परस्परस्य अन्योऽन्यस्य इतरेतरस्य (केवल एकवचन में), परस्पर, अन्योन्य, इतरेतर, मिथ।

परहित, स पु (स न) दे 'परोपकार'।

परहेज़, स पु (फा) कुपथ्यत्याग, पथ्य सेवन, मित-अशन पान, आहार-पानाशन-नियम २ सयम, जितेन्द्रियता, दोष-दुर्गुण, त्याग।

—करना, क्रि स, कुपथ्यं त्यज् (भ्वा प अ), २ दोषान् परि-विवर्ज् (चु)।

—गार, स पु (फा) कुपथ्यत्यागिन्, सयताहार २ सयमिन्, जितेन्द्रिय।

—गारी, स स्त्री (फा) दे 'परहेज़' (१-२)।

परोंठा, स पु (हिं पल्टना?) *परम घृत गर्भ, रोटिका, परोठा।

परात, स पु (स) मृत्यु, निधनम्।

—काल, ■ पु (स) मृत्युसमय २ मुमुक्षुणा देहत्यागकाल।

परा[१], स स्त्री (स) ब्रह्म-उपनिषद्, विद्या। वि स्त्री (स) परवर्तिनी दूरस्था २ श्रेष्ठा।

परा[२], स पु (फा पर-पक्ष?) पंक्ति-तति (स्त्री)।

पराकाष्ठा, स स्त्री (स) अतिभूमि परा कोटि (स्त्री), चरमसीमा, परमावधि (पु), अत्यन्तता।

पराक्रम, स पु (स) वीर्य, शौर्य, विक्रम, पौरुष, ओजस्-सहस् तरस (न), रणोत्साह।

पराक्रमी, वि (स मिन्) वीर, शूर, विक्रमिन्, विक्रान्त, वीर्यविक्रम, शालिन्, साहसिक [स्त्री (स्त्री)], तेजस्विन् [नी (स्त्री)]।

पराग, स पु (स) पुष्प-कुसुम धूलि (स्त्री)-रजस् (न)-रेणु (पु) २ रजस्, धूलि ३ स्नानीयसुगन्धिचूर्ण ४ चंदन ५ कर्पूर-रजस्।

पराङ्मुख, वि (स) विमुख, पराचीन २ प्रतिकूल, विपरीत, विरक्त [पराङ्मुखी (स्त्री)]।

पराजय, स पु (स) पराभव, हार-हारि, (स्त्री) भंग।

पराजित, वि (स) हारित, पराभूत, निर्-वि, जित।

परात, स स्त्री (स पात्र>) पारीत्रा।

पराधीन, वि (स) दे 'परतंत्र'।

पराधीनता, स स्त्री (स) 'परतन्त्रता'।

पराभव, स पु (स) दे 'पराजय' २ तिरस्कार, मानहानि (स्त्री) ३ विनाश।

पराभूत, वि (स) दे 'पराजित' २ तिरस्कृत ३ ध्वस्त, नष्ट।

परामर्श, स पु (स) विवेचन विचारणा, विनय, मंत्रणा २ उपदेश अनुशासनम्।

परायण, वि (स) लग्न, मग्न, प्रवृत्त पर, निरत (प्राय समासान्त मे उ धर्मपरायण= धर्मपर इ)।

पराया, वि पु (■ पर) दे 'पर' (२)।

परार, स पु [स परारि (अव्य)] पूर्वतर वत्सर, गततृतीयवर्ष षम्।

परार्द्ध, स पु (स न) शख-ख, अष्टादशाक वती संख्या (१०००००००००००००००००)।

परावर, वि (स) पूर्वापर २ निकटदूर ३ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

परावर्त, स पु (स) (निर्णयादिकस्य) परा प्रत्या, वृत्ति (स्त्री) वर्तनम्।

—व्यवहार, स पु (स) अभियोगस्य निर्णयस्य वा पुनर्विचार।

परावर्तन, स पु (स न) प्रतिनि नि परा- प्रत्या, वृत्ति (स्त्री)-वर्तनं, अप, क्रमण-सरण यानम्।

पराशर, स पु (स) व्यासपितृ।

पराश्रय, स पु (स) अन्य पर, सश्रय -अवलम्ब -अवलम्बन २ दे 'परतन्त्रता'।

पराश्रित, वि (स) अन्य पर,-सश्रित-अवलम्बिन २ दे 'परतन्त्र'।

परासु, वि (स) प्रेत -ता-त, मृत -ता-तम्, परेत -ता-त, निर्जीव -वा-व, प्रणीत -ता-तम्।

परास्त, वि (स) दे 'पराजित'।

पराह्न, स पु (स) अपराह्न, विकाल।

परिंदा, स ■ (फा) पक्षिन्, पत्रिन्, पतत्रिन्, खग।

परिकर, स पु (स) परिजन, अनुचरवर्ग २ कटिबंध, प्रगाढगात्रिकाबंध ३ कुटुम्ब ४ समूह ५ अर्थालंकारभेद (सा)।

परिकल्पित, वि (स) रचित, आविष्कृत २ कल्पित, उद्भावित ३ निश्चित।

परिक्रमा, स स्त्री (स-स) प्रदक्षिण -णा-णं, (पूजार्थं) परिभ्रमणम्।

—करना, क्रि स, परिक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ), (पूजार्थं) परि भ्रम् (भ्वा प से) प्रदक्षिणा कृ।

परिखा, स स्त्री (■) खात, खेयम्।

परिख्यात, वि (■) विख्यात, विश्रुत।

परिगणन, स पु (स न) सख्यान, सम्यक् गणनम्।

परिगृहीत, वि (स) स्वीकृत, उररीकृत २ प्राप्त, लब्ध ३ अंतर्भूत, समाविष्ट।

परिग्रह, स पु (स) आदान, ग्रहण, प्रतिग्रह २ लब्धि प्राप्ति (स्त्री) ३ धनादिसंग्रह ४ स्त्री-अगा,-दार ५ विवाह ६ पत्नी ७ परिजन, परिवार ८ परिवेष्टनम्।

परिघ, ■ पु (स) परिघातन लोहमुसलगुड २ परि,-घात हनन ३ अर्गल -ल-ला-ली ४ मुद्गर ५ शूल ६ कलस ७ भवन प्रतिबंध, बाधा।

परिचय, ■ पु (स) परि, ज्ञान, अभिज्ञता, बोध २ प्रमाण, उपपत्ति (स्त्री) ३ अभ्यास।

परिचर, स पु (स) अनुचर, सेवक, दे 'परिचारक'।

परिचर्या, स स्त्री (स) सेवा, शुश्रूषा षणा, उपस्थान, उपचार, उपासनम्।

परिचायक, स पु (स) परिचयदायक, परि-अभि, ज्ञापक २ सूचक, द्योतक, बोधक, निर्देशक, ज्ञापक। परिचायिका (स्त्री)।

परिचारक, स पु (स) सेवक, किंकर, दास, भृत्य, प्रेष्य, भुजिष्य, नियोज्य।

परिचालन, स पु (स न) (कार्य) निर्वाह संचालन २ प्रचोदना, प्रेरण णा, प्रोत्साहनम्।

परिचित, वि (स) अभि परि ज्ञात, परिचय विशिष्ट २ ज्ञात, बुद्ध, विदित।

परिच्छद, स पु (स) परिधान, वेश ष, वसन २ आच्छादन ३ राजचिह्नानि (न बहु) ४ राजसेवकवर्ग ५ परिजन, *परिवार, कुल ६, उपस्कर, संभार, सामग्री।

परिच्छेद, स पु (स) अध्याय, प्रकरण,

उल्लाम, उत्कर्लाम २ विभजन, खंडन ३ सीमा, इयत्ता ४ विवेक ५ निर्णय ६ विभाग, विभाजनम्।

परिजन, सं पु (स) परिवार, कुटुंब, कुल २ दास अनुचर,-वर्ग, परिवार।

परिणत, वि (स) विकृत, रूपांतर विकार प्राप्त, सविकार २ पक्व ३ जीर्ण, जठराग्नौ पक्व ४ पुष्ट, प्रौढ।

परिणय, स पु (स) विवाह, दारपरिग्रह।

परिणाम, स पु (स) फल २ अंत, पार, उदय ३ विकार, विक्रिया, रूपान्तर-अवस्थान्तर, प्राप्ति (स्त्री), दशापरिवर्तनम्।

परिताप, स पु (स) दुःख, क्लेश, व्यथा २ सताप, क्षोभ ३ अनुपश्चात्, ताप।

परितोष, स पु (स) तृप्ति (स्त्री), सन्तोष २ हर्ष, मोद।

परित्याग, स पु (स) सर्वथा त्याग-वर्जन उत्सर्ग २ निष्कासनं, बहिष्करणम्।

परित्राण, स पु (स न) रक्षा, रक्षण, पालन २ हस्तवारण, मारणोद्यतस्य निवारणम्।

परिधान, स पु (स न) वसन, वस्त्र, वासस (न), परिच्छद, नेपथ्य, वेश प २ वस्त्रै आवेष्टन-आच्छादन, वस्त्रधारणम्।

परिधि, स स्त्री (स पु) परिणाह, परिवेश, मंडल २ सूर्यचन्द्रसमीपमंडल, ३ प्राचीर, वृति (स्त्री) ४ नियतमार्ग।

परिधेय, वि (स) धार्य, वसनीय, धारणीय, परिधातव्य।

परिनिर्वाण, स पु (स न) मुक्ति परिनिवृत्ति (स्त्री), मोक्ष।

परिनिष्ठा, स स्त्री (स) चरमसीमा, परमावधि (पु), पराकाष्ठा, पार रम्।

परिनिष्ठित, वि (स) पारगत, सुनिपुण, सुदक्ष, विज्ञ।

परिपक्व, वि (स) सम्यक्, सिद्ध-संस्कृत-पक्व २ (जठरे) सुष्ठु-जीर्ण पक्व परिणत ३ प्रौढ, सुविकसित, पुष्ट ४ अनुभविन्, बहुदर्शिन ५ कुशल, प्रवीण।

परिपक्वता, स स्त्री (स) दे 'परिपाक'।

परिपाक, स पु (स) (जठरे) पचन, पाचन परिणाम २ प्रौढता, पूर्णता ३ अनुभव, बहुदर्शिता ४ नैपुण्य, प्रावीण्य ५ परिणाम, फल ६ कर्म-विपाक फलम्।

परिपाटी, स स्त्री (स) अनु, क्रम, परिपाटि (स्त्री), परंपरा, आनुपूर्वी-र्व्यं २ शैली, प्रणाली, विधि (पु) ३ रीति पद्धति (स्त्री), सप्रदाय।

परिपालन, स पु (स न) रक्षण, पालन २ रक्षा, त्राणम्।

परिपूर्ण, वि (स) व्याप्त, सभृत, सपूर्ण, पूरित, निभर २ अतितृप्त, सतर्पित, ३ अवसित, समाप्त।

परिभ(भा)व, स पु (स) तिरस्कार, अपअव-मान, अनादर।

परिभाषा, स स्त्री (स) लक्षण, निर्वचन, निर्देश, परिच्छेद, प्रज्ञप्ति, समयकार २ ग्रंथ सक्षेपनिर्वाहार्थ सकेतसज्ञा विशेष ३ परिष्कृतभाषण ४ निंदा।

परिभूत, वि (स) पराजित २ तिरस्कृत।

परिभ्रमण, स पु (स न) पर्यटन, विचरण २ घूर्णन-ना ३ दे 'परिधि'।

परिमल, स पु (स) आमोद, सौरभ, सुवास, सुगंध २ मैथुनम्।

परिमाण, स पु (स न) मान, प्रमाण, प्रमिति, मिति (स्त्री) २ मात्रा, भार ३ विस्तार, इयत्ता ४ परिधि (पु)।

परिमार्जन, स पु (स न) परिधावन, परिशोधन, परिष्करणम्।

परिमार्जित, वि (सं) परि धौत धावित, परिष्कृत परिशोधित।

परिमित, वि (स) परिच्छिन्न, सावधिक, ससीम, समर्याद, मित, २ अल्प, न्यून।

परिरंभ, स पु (स) } उपगूहन, परि-
परिरंभण, सं पु (स न) } ष्वंग, आलिंगनम्।

परिवर्त, स पु (स) विनिमय-वर्तन आवृत्ति (स्त्री), घूर्णन २ विनिमय, परिवृत्ति (स्त्री)।

परिवर्तन, स पु (स न) विकार, विकृति (स्त्री), विक्रिया, रूपांत, दशांतर २ विनिमय, परिदान, नैमेय, व्यति(ती)हार, परावर्त, विमय, वैमेय ३ आवर्तन, घूर्णन ४ काल युग-समाप्ति (स्त्री)।

—**करना,** क्रि स, परिवृत् (प्रे), परिवर्तन

अन्यथा कृ २ प्रतिदा (धु उ अ) विनि निमे (भ्वा आ अ)।
—होना, क्रि अ , परिवृत (भ्वा आ से), विकृ (कर्म), विपयम (दि प से) २ व्यतिहृ -प्रतिदा-विनिमे (कम)।

परिवर्तित, वि (स) विकृत, रूपान्तरित, दशान्तर प्राप्त २ विनिमित, व्यतिहृत विनिमयेन प्राप्त।

परिवर्द्धन, स पु (स न) परिवृद्धि (स्त्री), वृ ण, स्फीति (स्त्री)।

परिवर्द्धित, वि (स) विस्तृत विस्तीर्ण प्रवि नन, उपचित २ विशालीकृत वृद्धि नीत अप यित।

परिवा, स स्त्री , दे 'प्रतिपदा'।

परिवाद, स पु (स) निंदा, अपवाद , दोपकथन २ वीणावादनवलय (मिजराव)।

परिवादक, स पु (स) निंदक , अपवादक दोपकथक २ अभियोक्तृ (पु) अर्थिन् वादिन् ३ वीणावादक ।

परिवार, स पु (सं >) कुटुब, पुत्रकलत्रादीनि, गृहजन , परि(री)वार ।
—**नियोजन**, स पु (स न) परिवार कुटुम्ब-नियन्त्रण-निरोध , सन्तति-सन्तान निरोध ।

परिवाह, स पु (स) जलोच्छ्वास तोयप्लाव ।

परिवृत, वि (स) परिवेष्टित, परीयत, परिक्षिप्त २ आच्छादित, आवृत ।

परिवृत्त, वि (स) 'परिवर्तित (२) २ परिवेष्टित, परिगत ३ समाप्त ।

परिवेषण, स पु (स न) भोजनपात्रे भोजननिधान २ परिधि (पु), वेष्टन ३ परिवेश प ।

परिवेष्टन, स पु (स न) स्वलन, परिक्षेपण, परिवारण २ आच्छादन, आवरण गुढ, वैष्टन,-क ट प ३ परिधि (पु)।

परिव्रज्या, स स्त्री (स) सन्यास , वैराग्य चतुर्थाश्रम २ परिभ्रमणम् ।

परिव्राजक, स पु (स) } भिक्षु ,
परिव्राट् ,स पु (स व्राज्) } दे 'सन्यासी'।

परिशिष्ट, स पु (स न) परिशेष,-पूरण उत्तरभाग , शेषग्रथ खिलम्। वि , अव शिष्ट शेष, उद्धृत।

परिशीलन, स पु (स न) गभीर-समनन, अध्ययन पठन २ स्पर्शनम् ।

परिशीलित, वि (स) सम्यक्-सुष्ठु-अधीत पठित ।

परिशुद्ध, वि (स) पूर्ण, शुद्ध अमल-निर्दोष पूत २ कारा-कारावास,-मुक्त ।

परिशुद्धि, स स्त्री (स) पूर्ण शुद्धि (स्त्री) पवित्रता निर्दोषता २ कारागार-मुक्ति (स्त्री)।

परिशेष, स पु ,(स) अन्त , समाप्ति (स्त्री), दे परिशिष्ट' स पु तथा वि ।

परिशोधन, स पु (स न) परिमार्जन, परिधावन, २ ऋण, शोधन शुद्धि (स्त्री)।

परिश्रम, स पु (स) आ प्र-यास , श्रम , उद्यम , उद्योग प्र यत्न २ क्लम , क्लानि श्रांति ग्लानि (स्त्री), खेद ।
—**करना**, क्रि अ , आयस् परिश्रम् (दि प से), उद्यम् (भ्वा प अ), व्यत-सो (दि प अ)।

परिश्रमी, वि (स मिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्, उद्यम-उद्योग-परिश्रम, शील, आयसिन् ।

परिश्रांत, वि (स) क्लांत, म्लान, खिन्न, आयस्त ।

परिषद् द्, स स्त्री (स षद्) सभा, समाज , समिति (स्त्री) २ जनसमूह ।

परिषद, स पु (स) सदस्य, सभासद् (पु)। २ राजवल्लभ ,-सभासद् ।

परिष्कार, स पु (स) शौच शुद्धि (स्त्री), शुचिता, सस्कार २ निर्मलत्व, स्वच्छता २ आभूषण, अलंकार ३ मडन, प्रसाधनम् ।

परिष्कृत, वि (स) मार्जित, धावित, धौत २ मंडित, प्रसाधित, अलकृत ३ सस्कृत, शोधित ।

परिसख्या, स स्त्री (स) सख्या, गणना २ अर्थालंकारभेद (सा)।

परिस्तान, स पु (फा) अप्सरोलोक २ सुदरीस्थानम् ।

परिहरण, स पु (स न) बलाद् ग्रहण अपहरण २ परि ,त्याग ,उत्सर्ग ३ दोषादीना निवारण, निराकरण म् ।

परिहार, स पु (स) (दोषादे) निवारण, निराकरण २ उपचार, उपाय ३ त्याग , परिवजन ४ गोप्रचर , प्रचारभूमि (स्त्री)

५ युद्धान्ति धन, विजितद्रव्य ६ (करादे) मोचन,वर्जन ७ प्रत्याख्यान, खण्डन ८ अवज्ञा, अपमान ९ उपेक्षा।
परिहार्य, वि (स) परिवर्जनीय, मोक्षणीय, हेय, त्यक्तव्य।
परि(री)हास, स पु (स) नर्मन् (न), नर्मालाप, प्रहसन, हास्य, विनोद,-उक्ति (स्त्री) भाषणम्।
परी, स स्त्री (फा) अप्सरस (स्त्री), योगिनी, यक्षिणी, विद्याधरी २ सुंदरी।
—ज़ाद, वि (फा) अतिसुंदर, परमशोभन।
परीक्षक, स पु (स) प्राश्निक, अनुयोक्तृ परीक्षितृ (पु) २ विचारक निरूपक ३ समालोचक, समीक्षक।
परीक्षा, स स्त्री (स) परीक्षण, प्रश्न, अनुयोग २ समालोचना, समीक्षा, ३ निरीक्षा, अवेक्षा, आलोकन, निरूपण ४ दिव्य ५ प्रयोग, अनुभव।
परीक्षित, वि (स) कृतपरीक्षण, अभिप्रयु पुत्र २ प्रदिनत, अनुयुक्त, कृतपरीक्ष ३ समालोचित, समीक्षित ४ अनुभूत, प्रयुक्त।
परुष, वि (स) क्रूर, निर्दय, निर्घृण, २ अप्रिय, कटु।
परे, क्रि वि (स पर) दूर, दूरे, दूरत, २ पृथक, बहिस् ३ अनु, तत, तदनन्तर ४ उपरि, उर्ध्वं (सब अव्य)।
—परे करना, [illegible] परिह् (भ्वा प अ), अप, वृज् (चु), न संगम् (भ्वा आ अ)।
परेवा, स पु (स पारावत) दे 'कबूतर'।
परेशान, वि (फा) उद्विग्न, व्यग्र, व्याकुल।
परेशानी, स स्त्री (फा) उद्विग्नता, व्याकुलता।
परोक्ष, वि (स) अदृश्य, अलक्ष्य, अप्रत्यक्ष २ गुप्त, गूढ। स पु (स न) अनुपस्थिति (स्त्री), अविद्यमानता।
परोपकार, स पुं (स) परोपकृति (स्त्री) परहित, लोकसाहाय्य, उदारता।
—करना, क्रि स, परोपकारं कृ, परहित सपद् (प्रे) परसाहाय्य विधा (जु उ अ) उपकृ।
परोसना, क्रि स (स परिवेषण) भक्ष्याणि पात्रे स्था (प्रे स्थापयति), परिविष् (प्रे)। सं पुं, परि(री)वेषणम्।
परोसनेवाला, स पु, परिवेषक, परिवेष्ट (पु)।
परोसा हुआ, वि, परिवेषित, पात्रे निहित।
पर्चा, स पु, दे 'परचा'।
पर्जन्य, स पु (स) जलद, दे 'मेघ'।
पर्ण, स पु (स न) दे 'पत्र' (१) २ ताम्बूली नागलता,-दल, ताम्बूलम्।
—लता, स स्त्री (स) पुन्नागवल्ली, नागलता।
—शाला, स स्त्री (स) पर्णकुटी, उटज (न)।
पर्णाद, स पु (स), पत्र पर्ण, अशन आहार असुर (ऋषि) २ ऋषिविशेष।
पर्णाशन, स पु (स) दे 'पर्णाद'।
पर्णाहार, स पु (स) दे 'पर्णाद'।
पर्णी, स पु (स पर्णिन्) वृक्ष, तरु, पादप, विटप विन्।
पर्त, स स्त्री, दे, 'परत'।
पर्दा, स पु, दे 'परदा'।
पर्यंक, स पु (स) पल्यंक, अवसक्थिका, पर्यस्तिका, परिकर।
पर्यटन, स पु (स न) दे भ्रमण।
पर्यंत, अव्य (स पर्यन्त) यावत, आ, पर्यंत (उ, मृत्युपर्यंत, मृत्यु यावत, आमृत्यो, मरणपर्यंतम्)।
पर्याप्त, वि (सं) प्रभूत, प्रचुर, पूर्ण, यथेष्ट, उपयुक्त, अल (चतुर्थी के साथ) २ समर्थ, शक्त।
पर्याय, स पु (स) तुल्यार्थ समार्थ, शब्द २ क्रम, परपरा, आनुपूर्व्यं-र्वी ३ अर्थालकार भेद ४ अवसर, उचितसमय।
—वाची, वि (स) पर्यायवाचक, सम समान तुल्य अर्थक।
पर्व, स पु [स पर्वन् (न)] उत्सव, उद्धव, उद्धर्ष, क्षण, मह २ पक्षपरसंधि (चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा, रविसंक्रांति) ३ ग्रंथपरिच्छेद, भाग, ४ संधि (पु) ग्रंथि (पुं) ५ खंड ट, भाग।
पर्वत, स पु (स) अद्रि गिरि (पु), शैल, धरणीकीलक, सानुमत्, क्ष्माभृत्, शिखरिन् (पु), अचल, भूधर, अग, नग, कु धरा अवनी मही धरणी, भृ धर, भूभृत् भृत् (पु) २ चय, राशि (पु)।
—नंदिनी स स्त्री (स) दे 'पार्वती'।

—राज, स पु (स) दे 'हिमालय'।

—वासी, स पु (स सिन्) गिरि शैल-वासिन्, पार्वत [-ती (स्त्री)], पार्वतीय [-यी (स्त्री)]। वि, पावन, पार्वतीय इ।

पर्वतीय, वि (स) सपर्वत, नगप्राय, शैल अद्रि,-मय [मयी (स्त्री)]

पलग, स पु, दे 'पर्यंक'।

—पोश, स पु (हिं+फा) पर्यंक प्रच्छद।

पल, स पु (स) विघटिका, घटिकाया षष्टितमो भाग षष्टिविपलात्मक काल (-२४ सेकंड) २ क्षण, मुहूर्त, निमि (मे)ष।

—भर में या—मारते, मु, क्षणेन, क्षणात्, निमेष पल, मात्रेण।

पलक, स स्त्री (स पल) दे 'पल' २ नेत्र नयन,-छद।

—मारना, क्रि अ निमील (भ्वा प से), निमिष् (तु प से) २ चक्षुषा संकेत कृ।

—मारते या झपकते, मु, दे 'पल भर में'।

पलटन, स स्त्री (अ प्लैटून), सैनिकाना द्विशती, सैन्य,-दल-गण।

पलटना, क्रि अ (स प्रत्योठन) नि प्रतिनिवृत्या,-वृत् (भ्वा आ से) प्रत्या, गम् (भ्वा प अ)-या (अ प अ) २ पर्यस् (कर्म), अधोमुखी अधरोत्तरीभू, परिवृत्। ३ (दशा) परिवृत्, अवस्थान्तर जन् (दि आ से) ४ परि परा,-वृत्। क्रि स, व 'पलटना' के प्रे रूप। स पु, नि प्रत्या, वर्तन, वि, पर्यास परिवर्तनम्।

पलटा, स पु (हिं पलटना) नि प्रत्या,-वृत्ति (स्त्री), दे 'पलटना' स पु २ प्रतिफल, कर्मविपाक ३ स्वरपरावृत्ति (संगीत) ४ उत्पात, उत्प्लव ५ व्यतिहार, विनिमय ६ *परिवर्तन, (भाजनभेद)७ दे 'बदला'।

पलटाना, क्रि स, दे 'लौटाना'।

पलटा हुआ, वि, प्रतिनिवृत्त विपर्यस्त परिवृत्त, परावृत्त।

पलड़ा, स पु (स पटल>) तुला, फल पल्लवन्।

पलथी, स स्त्री (स पर्यस्त>) स्वस्तिका सनम्।

—मारना, क्रि अ, स्वस्तिकासनेन उपविश् (तु प अ)।

पलना, क्रि अ (स पालन>) पाल पोष सभृ (कर्म) २ परि, पुष (कर्म) प्याय् (भ्वा आ से), पुष्ट-पीन (वि) भू।

पलवाना, क्रि प्रे, व 'पालना' के प्रे रूप।

पलस्तर, स पु (अ प्लास्टर) *पलस्तर, लेप, सुधा २ उपनाह, प्रलेपपट्टिका।

—करना, क्रि स, सुधया लिप (तु प अ) २ उपनह (दि प अ)।

—ढीला होना या बिगड़ना, मु, अत्यन्त क्लिन्न पीड खिद् (कर्म)।

पलाडु, स पु (स) दे, 'प्याज'।

पलाद, स पु (स) पलादन, पलाश, राक्षस। वि, मांस, भक्षक आहारिन्।

पलान, स पु (स पल्ययन) पर्याण, पर्ययण, दे 'जीन'।

पलाव, स पु (स न) दे 'पुलाव'।

पलायक, स पु (स) वि-प्र-, पलायिन्, युद्ध-विमुख, पराङ्मुख-त्यागिन्।

पलायन, स पु (स न) वि, द्रव, उद्राप्रति, द्राव, चक्रम, शृगालिका, अप, क्रम-यानम्।

पलायमान, वि (स) प्र वि, द्रवत्, अप, धावत् क्रामत्, परायत् (सब शतृ)।

पलाश, स पु (स) किंशुक, याज्ञिक, त्रिपर्ण, ब्रह्मवृक्ष, पूतद्रु (पु), (स न) पत्र, पर्णम्।

पलाशी, स पु (स -शिन्) वृक्ष, तरु २ क्षीरवृक्ष (गूलर पीपल, बरगद, महुआ इ०) ३ राक्षस। वि सपत्र, पत्रवत् २ मांस भक्षक।

पलित, वि (स) वृद्ध, दे 'बूढा' २ पक्व, धवल, श्वेत, सित, (केश)। स पु (सं न) केशपाक।

पली, स स्त्री (स परिघ>) *स्नेहनिष्कासनी, पल्लिका।

पलीता, सं पु (फा) भूतवद्राविका वर्तिका वर्ति (स्त्री) २ दहनवर्ति। वि कोपाकुल, सरब्ध २ शीघ्रगामिन्।

पलीद, वि (फा) मलिन, मलीमस, अपवित्र २ नीच, खल।

पलेथन, स पु (स परिस्तरण>) (गोधूमादीना) शुष्कचूर्ण, *रोटिकापरिस्तरणम्।

—निकालना, क्रि स, परुष तड् (चु)।

पलौठा, वि (हिं पहला) *प्रथमज (पलौठा-प्रथमजा)।

पल्लव, स पु (स पु न) किस(ला)लय य प्रवाल, नवपत्र, किस(ला)ल २ प्र, शाखा विटप ३ नवपत्ररत्रक।

पल्लवित, वि (स) सपल्लव, सकिसलय २ तत विस्तृत ३ रोमांचित।

पल्ला[1], क्रि वि (स पर या पारे>) दूर, दूरे, दूरत। स स्त्री, दूरता, विप्रकर्ष।

पल्ला पल्लू, स पु (स पटाञ्चल) वसनान्त, वस्त्र,अंचल २ पार्श्व अधिकारे ३ दिशा।

—छुड़ाना, मु, आत्मान उद्दह (भ्वा प अ)-मुच (प्रे), अनिष्ट त्यज (भ्वा प अ)-अपास (दि प से)।

—पसारना, मु, याच (भ्वा आ से)।

पल्ले पड़ना, मु, लभ् अधिगम् (कम)।

पल्ला[2], स पु, दे 'पलटा'।

पल्ली, स स्त्री (स) ग्रामक, ग्रामटिका २ ग्राम ३ कुटी ४ गृहगोधिका।

पवन, स पु (स) अनिल, वात, दे 'वायु'।

—चक्की, स स्त्री, वायुपेषणी, *पवनचक्री।

—चक्र, स पु (स न) वातचक्र, चक्रवात।

—पुत्र, स पु (स) हनुमत् २ भीमसेन।

पवनाशन, स पु (स) पवनाश, सर्प।

पवि, स पु (स) वज्र अ, कुलिश, अशनि (पु स्त्री)।

पवित्र, वि (स) वि, शुद्ध शुचि, स्वच्छ, विशद, निर्मल २ पुण्य, निष्पाप, अनघ, अकल्मष।

पवित्रता, स स्त्री (स) शुचिता, शौच, वि,शुद्धि (स्त्री), शुद्धता २ स्वच्छता, वैशद्य, निर्मलता ३ पुण्यता, निष्पापता।

पवित्रात्मा, वि [स-त्मन (पु)] विमल शुद्ध-आत्मन (पु), शुद्ध, मति हृदय।

पवित्री, स स्त्री (स पवित्र) पवित्रक, कुशाङ्गुलीयकम्।

पशम, स स्त्री (फा पश्म) उत्तमोर्णा, मृर्णा २ उपस्थलोमन् (न) ३ अतितुच्छवस्तु (न)।

पशमीना, स पु (फा पश्मीनह्) दे 'पशम' २ उत्तमौर्ण,-वस्त्र पट।

पशु, स पु (स) लोमलाङ्गूलवज्जीव (सिंह -व्याघ्रगोमहिषादय), जन्तु (पु), चतुष्पाद, मृग २ प्राणिन्, जीवमात्रम्।

—पति, स पु (स) शिव २ पशुप्रभु।

—पाल,स पु (स) पशु गो, रक्षक पालक।

—राज, स पु (स) मृगेन्द्र, सिंह।

पशुता, स स्त्री (स) पशुत्व, पशु, भाव धर्म २ मौर्ख्य, औद्धत्य, जाड्यम्।

पशुत्व, स पु (स न) दे 'पशुता'।

पश्चात्, अव्य (स) ततः, तदनन्तर, तत्पश्चात, तदनु, तत , पर ऊर्ध्वम्।

पश्चात्ताप, स पु (स) अनु,-ताप शय शोक, पाप-दुःख,-खेद, विप्रतीसार।

—करना, कि अ, दे 'पछताना'।

पश्चिम, स पु (स पश्चिमा) प्रतीची, वारुणी, पश्चिम, दिशा आशा। वि, पश्चात् उत्पन्न, २ अन्त्य, अंतिम।

पश्चिमा, स स्त्री (स) दे 'पश्चिम'।

पश्चिमी, वि (स पश्चिमा>) प्रतीच्य, पाश्चात्य, पश्चिमाशासंबंधिन्।

पश्चिमोत्तर, स पु (स पश्चिमोत्तरा) उत्तर पश्चिमा वायवी। वि, वायव, वायुदिक्स्थ।

पश्तो, स स्त्री (देश) पश्चिमोत्तरसीमाप्रान्तस्थ भाषाविशेष।

पश्यंती, स स्त्री (स) वेश्या, गणिका, क्षुद्रा, रूपाजीवा २ वाणीभेद, वायुमयोनाद नाभिस्थ शब्द।

पसन्द, स स्त्री (फा) अभि,रुचि (स्त्री), मनोरथ। वि, मनोनीत, रुचिकर, स-अभि, मत, प्रिय।

—करना, रुच् (भ्वा आ से चतुर्थी के साथ) अभि प्रति, नन्द (भ्वा प से) अनुमुद् (भ्वा आ से) २ दे 'चुनना'।

पसंदीदा, वि (फा) अभीष्ट, वृत, रुचिकर, रोचक, उत्तम।

पस[1], स पु (अ), पूय,-य, क्षतज, मलज, कुणपम्।

पस[2], अव्य (फा) तदनु, तत्पश्चात, तदनन्तरम्।

—(सो) पेश, पु सिंध,-व्याज, छलम्।

पसरना, कि अ (सं प्रसरण) प्रसृ (भ्वा प अ) प्र वितन् (कर्म) २ विस्तृ (कर्म), वृध् (भ्वा आ से) ३ करचरणान् प्रसार्य शी (अ आ से)।

पसली, स स्त्री (स पर्शुका) पार्श्वास्थि (न), पार्श्वकम्।

—का रोग, स पु, श्वसनक ।
हड्डी—तोडना, मु, भृश तड् (चु)।
पसाना, क्रि स (स प्रस्रावण), मंड प्रस्रु (प्रे) २ अतिरिक्तजलांश अवपत (प्रे)।
पसार—रा, स पु, दे 'प्रसार'।
पसारना, क्रि स (स प्रसारण) व 'पसरना' के प्रे रूप। दे 'फैलाना'।
पसाव, स पु (स प्रस्राव >) प्रस्राव, मड-ड, दे 'माड'।
पसीजना, क्रि अ (स प्रस्वेदन) (शनै) क्षर्-गल् (भ्वा प से) सु (भ्वा प अ) मस्तु (अ प से) २ दयार्द्रीभवति (वि) मृ, अनुकम्पय (भ्वा आ से)।
पसीना, स पु (हि पसीजना >) प्र,स्वेद, घर्म, घर्मस्वेद, उदक जल बिंदु (पु) श्रम वारि (न)।
—आना, क्रि अ, प्र,स्विद् (दि प अ) स्वेद लुनिस्सृ (भ्वा प अ)।
पसोपेश, स पु (फा) विचिकित्सा, वितर्क, संशय आ परि वि, शंका २ परिणाम, हानिलाभौ।
—करना, क्रि अ, दोलायते (ना धा) विलब विप्रलुप् (भ्वा आ सं)।
पस्त, वि (फा) पराजित, विनिन २ परिश्रान्त, क्लान्त।
—कद, वि (फा) वामन, खर्व।
—हिम्मत, वि (फा) भीरु, कातर।
पहचान, स स्त्री (स परिचयन या प्रत्यभिज्ञान) प्रति, अभिज्ञा-अभिज्ञान, २ विवेक, विचारणा, परिच्छेद ३ लक्षण, चिह्न ४ परिचय, परि,ज्ञानम्।
पहचानना, क्रि स (हि पहचान) प्रति, अभिज्ञा (क्र उ ■) अनुस्मृ (भ्वा प अ) परिच्छिद् (र प अ), संविद् (अ प से) २ विच् (जु उ अ), विशिष् (रु प अ), परिच्छिद् ३ अवगम्, ज्ञा (क्र उ अ), बुध (भ्वा प से), विद् (अ प से) । स पु, दे 'पहचान'।
पहचाननेवाला, स पु, प्रति, अभिज्ञातृ (पु), परिच्छेदक, विवेकिन्, ज्ञातृ, बोद्धृ (पु)।
पहचाना हुआ, वि, विविक्त, परिच्छिन्न, प्रति, अभिज्ञात, बुद्ध, विदित।

पह(हि)नना, क्रि स (स परिधान) परिधा (जु उ अ), वस् (अ आ से), धृ (भ्वा प अ, चु), भृ (जु उ अ)। स पु, परिधान, धा(धा)रण, भरण, वसनम्।
पहनने योग्य, वि, परिधेय, धार्य, वसनीय।
पहननेवाला, स पु, परि,धातृ (पु) धारक, धर्तृ धारयितृ (पु)।
पहनवाना, क्रि प्रे } व 'पहनना'
पहनाना, क्रि स } के प्रे रूप।
पहनावा, स पु (हि पहनना) वेश प, परिधान वस्त्रादि-वसनानि (न बहु), नेपथ्य, परिच्छद।
पहना हुआ, वि, परिहित, धृत, धारित, वसित इ।
पहर, स पु (स प्रहर) याम, होराञ्रय-यी २ काल युग, समय।
पहरना, क्रि स दे 'पहनना'।
पहरा, स पु (हि पहर) रक्षा, रक्षणं, त्राण, निरूपण, अवेक्षण-क्षा, गोपन, गुप्ति (स्त्री) २ रक्षक, रक्षिन्, रक्षापुरुष, रक्षिवर्ग, प्रहरिन्, वैतंसिक ३ रक्षणकाल, प्रहर ४ प्रहरि, भ्रमण पर्यटन ५ प्रहरिपरिवर्तन ■ प्रहरिघोष।
—देना, क्रि अ, रक्षार्थं जागृ (अ प से) परि, भ्रम अट् (भ्वा प से)।
पहरेदार, स पु (हि +फा) दे 'पहरा'(२)।
पहरावनी, स स्त्री (हि पहरना) २ *परिधापनी, *परितोषवेष।
पहरी, पहरुआ, पहरू, स पु दे 'पहरा'(२)।
पहल, स स्त्री (हि पहला) उपक्रम, प्र, आरम्भ २ अग्रि-आ,क्रम, प्रथमापराध।
पहलवान, स पु (फा) मल्ल, बाहु,योध - योद्धृ (पु)मौष्टिक २ दृढाग, वज्रदेह।
पहलवानी, स स्त्री (फा) मल्लबाहु,युद्धम्।
पह(हि)ला, वि (स प्रथम) दे 'प्रथम'।
पहलू, स पु (फा) पक्ष, पार्श्व-र्श्व (सब अर्थों में) २ पक्ष पदार्थ, भाग, कक्षाधोभाग ३ विवादविषयस्य अंश-भाग,-विशेष ४ गूढाशय ५ व्यग्यार्थ।
—बचाना, मु, सपद परिहृ (भ्वा प अ)।
—में बैठना, मु, अतिसमीपे उपविश (तु प अ)निषद् (भ्वा प अ)।

पहले, अव्य (हिं पहला) पूर्वं, प्रथम, आदौ, प्राक्, आरम्भे २ पूर्वं, पुरा, पूर्वप्राचीन, काले ।

—पहल, अव्य , सर्वप्रथम प्रथमवारे, आदौ ।

पहाड़, स पु (स पाषाण >) दे 'पर्वत' (१ २) ३ दुस्साध्य-दुष्पर, कार्यम् ।

पहाड़ा, स पु (स प्रस्तार >) गुणनसूची ।

पहाड़िया, वि (हिं पहाड़) दे 'पर्वतवासी' ।

पहाड़ी, स स्त्री (हिं पहाड़) पर्वतक, लघु गिरि (पु) २ वल्मीक, वामलूर ।

पहिया, स पु (स परिधि) चक्र, रथाङ्गम् ।

पहिलौठा, वि , दे 'पलौठा' ।

पहुँच, स स्त्री (स प्रभूत >) उपसर्पण, अभिगम, नाम प्रवेश २ गतिसीमा ३ प्राप्ति (स्त्री), प्राप्तिसूचना, अभिज्ञानसीमा, परिचय ४ आगमन, उपस्थिति (स्त्री) ।

पहुँचना, क्रि अ (हिं पहुच) आ, गम्-सद् (भ्वा प अ) समा सद्, प्र-स आप (स्वा प अ), प्रपद् (दि आ अ) २ विस्तृ (क्रय) ३ प्रविश (तु प अ) ४ लभ्, प्राप (कर्म) । स स्त्री , दे 'पहुच' ।

पहुँचनवाला, स पु , आगन्तृ उपस्थातृ (पु), लब्धप्रवेश , सहायक ।

पहुँचा, स पु , दे 'कलाई' ।

पहुँचाना, क्रि स, व 'पहुँचना' के प्रे रूप ।

पहुँचा हुआ, वि , आगत, उपस्थित, प्राप्त, प्रपन्न, प्रविष्ट, लब्ध, अधिगत, सिद्ध ।

पहुँची, स स्त्री (हिं पहुचा) आवापक , मणिबन्धकङ्कण ।

पहुनाई, स स्त्री (हिं पाहुना) प्राघुण अतिथि, सेवा सत्कार । २ अतिथित्व, प्राघुणता ।

पहेली, स स्त्री [स प्रहेलिका (स्त्री)] प्रहेलिका प्रवल्हिका, प्रवह्लिका (स्त्री)— लिका २ समस्या, गूढार्थव्यापार ।

पह्लवी, स स्त्री (स पह्लव >) पारसीक देशस्थ प्राचीन भाषा, पह्लवी ।

पाँच, वि (स पञ्चन्) । स पु , उक्ता सख्या तदङ्क (५) च ।

—भौतिक, वि (स) पञ्चभूतनिर्मित (शरीरादि) ।

पाँचों उँगलियाँ घी में होना, मु , सर्वथा प्रवृ (भ्वा) समृध (दि प से) ।

पाँचवाँ, वि (हिं पाँच) पचम-मी (पु न स्त्री) ।

पाचाल, स पु (स) पञ्चाल । वि पञ्चाल देशोद्भव ।

पाचाली, स स्त्री (स) शाल भञ्जिका, पुत्रिका, पञ्चालिका २ रीतिविशेष (सा) ३ द्रौपदी, कृष्णा, याज्ञसेनी ।

पाडव, स पु (स) पाडुनन्दन , पञ्च पाण्डवा ।

पाडित्य, स पु (स न) बुद्धिमत्ता, मनीषा, व्युत्पत्ति (स्त्री), विद्वत्ता, विद्वत्त्व, ज्ञानं, प्राज्ञता ।

पाडु, स पु (स) नृपविशेष २ सितपीतवर्ण , हरिण , पाण्डु(डु)र ३ रक्तपीतवर्ण ४ श्वेतवर्ण ५ दे 'पाडुरोग' ।

—रोग, स पु (स) कामल-ला, पाडु (पु) ।

पाडुर, वि (स) सितपीतवर्ण, पाडु २ पीत ३ शुक्ल । स न (स) श्वित्ररोग । स पु (स) दे 'पाडुरोग' ।

पाडुलिपि, स स्त्री (स) पाडुलेख , शोध नीयलेख ।

पाडे, पाडेय, } स पु (स पडित) द्विज कायस्थ, भेद २ प्राज्ञ , विद्वस् (पु) ४ शिक्षक , अध्यापक ५ पाचक , सूद ।

पाँत, पाँति, स स्त्री , दे 'पक्ति' ।

पाथ, स पु (स) पथिक , यात्रिन् २ प्रवासिन् ३ वियोगिन् ४ भानु ।

—निवास, स पु (स) पान्थशाला, यात्रिक गृहम्, धर्मशाला ।

पाँव, स पु (सं पाद) पद, चरण ण, अंघ्रि (पु) २ जघा ३ मूल, आधार , उपष्टम्भ ४ धैर्य, स्थैर्यम् ।

—का अगूठा स पु , पादाङ्गुष्ठ ।

—का सोना, स पु , पादसुप्ति (रोग) ।

—की अँगुली, स स्त्री , पादाङ्गुलि लि (स्त्री) ।

—अड़ाना, मु , दे 'टाग अड़ाना' ।

—उखड़ना, मु , परा जि (कर्म), पलाय् (भ्वा आ से) ।

—उठाना, मु , निष्क्रम् (भ्वा प से) २ सत्वर चल् (भ्वा प से) ।

—जमाना, मु , निश्चल दृढ स्था (भ्वा प अ)।

—तले की मिट्टी निकल जाना, मु, जडी निष्पदी भू, विस्मयेन उपहन् (कर्म)।
—पड़ना, मु, चरणयो अवपत् (भ्वा प मे), अतिनम्रतया याच् (भ्वा आ से)।
—पसारना, मु प्रसृते प्रसृ (प्रे) सुख स्वप (अ प अ) २ दे 'मरन'।
—पाँव, मु, पादचारी भूत्वा, पद्भ्यामेव चल् (शत्रंत)।
—पूजना, मु चरणौ चुम् (भ्वा प से)-सेव (भ्वा आ से)।
—फटना, मु, पादौ शीतेन स्फुट् (त प से)।
—फूँक-फूँक कर रखना, मु, सावधान प्रवृत् (भ्वा आ से) कार्येषु।
—फैला कर सोना, मु निश्चित स्वप (अ प अ)।
—भारी होना, मु, गर्भं आधा (जु उ अ)-धृ (चु)।
दबे—आना, मु, निभृत आया (अ प अ)।
धरती पर—न रखना, मु, नितरा दृप् (दि प अ), गर्व (भ्वा प से)।
पाँवडा, स पु (हिं पाँव) पादचराम्भरणम।
पाँवड़ी, स स्त्री (हिं पाँव) दे 'खड़ाऊ' तथा 'जूता'।
—पाश (स) न, वि (स) दूषक, कलक जनक।
पांशु, स स्त्री (स पु) पांशु (पु), धूली लि (स्त्री), रजस (न)।
पांशुल, वि (स) रेणु-दूषित रूक्ष, धूलिधूसर।
पाँसा, स पु (स पाशक) अक्ष, देवन, सार, शार।
—उलटना, मु, यत्नो विपरीतफलो जन् (दि आ से)।
पा, स पु (फा) पाद, पद, चरण आम्।
—अंदाज, स पु पद-पाद,-प्रक्षालनम्।
पाइओरिया, स पु (अ) दन्तपूयम्।
पाई, स स्त्री (स पाद >) पादिका २ चतुर्थांशपणिका ऊर्ध्वरेखा (उ ४।-भवा नार) ३ आकारमात्रा (ा) ४ पूर्णविराम चिह्नम् (।)।
पाउड, स पु (अ) निष्क, दीनार २ पौण्ड, अर्धसेरात्मको देशीय आंग्लतोलभेद।

पाउडर, स पु (अ) पिष्ट, क्षोद, चूर्ण २ पिष्टातक, पिष्टात।
पाक¹, स पु (स) पचन, पाचन, श्रानि (स्त्री), अभिश्रयण, पक्ता, रन्धन (सात प्रकार का पाक—
भर्जन तलन स्वेद पचन क्वथन तथा।
तान्दूर पुटपाकश्च पाक सप्तविधो मत ॥)
२ पक्व-सिद्ध, अन्न ३ परिणति (स्त्री) ४ औषधभेद ५ जठरे आहारपचन ६ दैत्य विशेष।
—शाला, स स्त्री (स) महानस-सम्।
—शासन, स पु (स) दे 'इन्द्र'।
पाक² वि (फा) पवित्र, वि शुद्ध २, निष्पाप, निष्कलङ्क ३ समाप्त।
—दामन, वि (फा) पतिव्रता, सती।
—साफ, वि (फा+अ) स्वच्छ, निर्मल।
पाकेट, स पु (अ) दे 'जेब'।
पाक्षिक, वि (स) अर्धमासिक, मासार्धिक २ पक्षपातिन्।
पाखड, स पु (स पाषड-ण्ड) दम्भ, दाम्भिकता, छाद्मिकता, आयरूपता, कपटधर्म, कुटलिङ्गिता, वृत्ति (स्त्री) कापट्यम्।
पाखडी, वि (स पापडिन्) पाषण्डक, दम्भिन्, दाम्भिक कपटिन्, कापटिक, आर्य, रूप लिङ्गिन्, छद्म-कपट,-वेशिन्।
पाख, स पु (स पक्ष) दे 'पखवारा'।
पाखर, स स्त्री (स प्रखर) प्रक्षर, अश्वत्राण, सन्नाह।
पाखा (पा) ण, स पु (स पाषाण) प्रस्तर शिला, अश्मन्, ग्रावन् (पु)।
पाखाना, स पु (फा) शौच,-कूप-स्थान २ उच्चार, गूथ-थ, मल-क, पुरीष, विष (स्त्री) विष्ठा, शकृत् (न), शमलम्।
—निकलना, मु, नितरा भी (जु प अ), त्रस् (दि प से)।
पाखाने जाना, मु, शौचकूप या (अ प अ) पुरीष उत्सृज (तु प अ)।
पाग¹, स स्त्री (हिं पग) दे 'पगडी'।
पाग², स पु (स पाक >) मधु शर्करा,-क्वाथ २ मधुक्वाथपक्वफलमौषध वा।
पागना, क्रि स (स पाक >) गुड-मिना, रसे निमज्ज् (प्रे)।
पागल, स पु (देश) उन्मत्त, वातुल,

अचल २ मच, मचक ३ कूपच्छादनम् ४ उद्बन्धनपट्ट-टम् ५ कुड्यकोणपट्ट-टम्।
पाणि, स पु (स) कर हस्त।
—ग्रहण, स पु (स न) उद्वह, दे 'विवाह'।
—ग्राहक, स पु (स) भर्तृ (पु), दे 'पति'।
पाणिनि, स पु (स) अष्टाध्यायीप्रणेता वैयाकरणविशेष।
पात[1], स पु (स पत्र) दे 'पत्ता'।
पात[2], स पु (स) अध नि, पतन, भ्रमन, च्युति (स्त्री) २ पातन, ३ वि नाश ध्वंस ४ मृत्यु (पु), अवोनयनम्।
पातक, स पु (स न) दे 'पाप'।
पातकी, (स क्रिन्) दे 'पापी'।
पाताल, स पु (स) अधो भुवन लोक, नागलोक २ विवर, बिल ३ भुवनविशेष।
पातिव्रत, स पु (स न) पतिव्रत्य-सतीत्वम्।
पातुर, स स्त्री (स पातली>) दे 'वेश्या'।
पात्र, स पु (स न) भाजन, अमत्र, भांड कोश शी, कोष षी, कोषि(शि)का पात्री २ नट, अभिनेतृ (पु) ३ तीरद्वयान्तर (हि पाट) ४ राजमन्त्रिन् ५ स्रुवादीनि यज्ञोपकरणानि ६ *नाटकस्य कथापुरुष (नायकादि) ७ सत्पात्र, गुणाभ्यदम्। वि, योग्य, उचित, अर्ह।
पात्रता, स स्त्री (स) विद्या तपस्याचारयुक्तता, पात्रत्व, योग्यता, अर्हता, गुण।
पाथ[1], स पु (स पाथ) दाथम् (न), नभ्म्।
पाथ[2], स पु (स पथ) मार्ग, अध्वन् (पु)।
पाथना, क्रि स (हिं थापना) गोमयानि रच् (चु)-निर्मा (जु आ अ) २ तड (चु)।
पाथेय, स पु (स न) म(श)म्बल पथि उपभोक्तव्य द्रव्यम्।
पाथोधि, स पु (स) सागर।
पाद[1], स पु (स) पद, चरण-ण, पद् (पु), अहि-अंघ्रि (पु) २ मन्त्रश्लोकादीनां चरण ३ चतुर्थभाग ४ प्रथमभाग ५ गिरिवृक्षादीनां मूलम्।
—टीका, स स्त्री (स) पृष्ठतल पाद-टिप्पणी।
—त्राण, स पु (स न) दे 'पादुका'।
—पीठ, स पु (स न) पदासनम्।
—प्रहार, स पु (स) चरणाघात, दे 'ठोकर'।
पाद[2], स पु (स पर्द) अपान अधो-वायु (पु)।
—मारना, क्रि अ, दे 'पादना'।
पादना, क्रि अ (सं पर्दन) पर्द् (भ्वा आ से), अपानवायु उत्सृज (तु प अ)।
पादप, स पु (स) तरु, दे 'वृक्ष'।
पादरी, स पु (पुर्त पैद्रे) ख्रिस्तमत, पुरो हित उपदेशक।
पादविक, स पु (स) पथिक, पाथ, यात्रिन्।
पादांगुली, स स्त्री (स) } दे 'पाँव' के
पादांगुष्ठ, स पु (स) } नीचे।
पादात, स पु (स) पाद पद चरण,-अग्र अग्रभाग २ पद-चरण-समानम् (स०)।
पादुका, स स्त्री (स) पादू (स्त्री), पाद, त्र त्राण पाद-रक्षिका, कोषी। २ दे 'जूता' तथा 'बूट'।
पाद्य, स पु (स न) पादप्रक्षालनजलम्।
पाधा, स पु (स उपाध्याय) गुरु (पु), आचार्य, शिक्षक २ पंडित, विद्वस् (पु)।
पान[1], स पु (स न) पीति (स्त्री), आचमन, धयन, द्रवद्रव्यस्य गलाध करण २ मद्य सुरा, पान ३ पेयद्रव्य ४ मद्य ५ जलम्।
—करना, क्रि स, दे 'पीना'।
—पात्र, स पु (स न) पान, चषक, सरक, पानभाजनम्।
पान[2], स पु (स पर्ण) तांबूली, तांबूलवल्ली, नाग-लता-वल्ली २ तांबूल, पर्ण, नागवल्ली दल ३ क्रीडापत्ररंगभेद ४ पत्र, किसलय।
—गोष्ठी, स स्त्री (स) आपान, मद्यपान, चक्र सभा।
—दान, स पु (हि+फा) *पर्णाधान, तांबूल करक।
पानक, स पु (सं न) *मधुराम्लपेयम्।
पाना, क्रि स (सं प्रापण) प्र, आप (स्वा उ अ), लभ (भ्वा आ अ), विद (तु उ वे), समा सद् (प्रे) आ पनि पद् (दि आ अ) अधिगम्, आदा (जु आ अ), ग्रह (क्र प से), २ (सुखादि) अनुभू, भुज् (रु आ अ) ३ बुध् (भ्वा उ से), विद् (अ प से) ४ तुल्य-सदृश (वि) भू

५ मादृ (भ्वा प मे) ६ सह (भ्वा आ से)। स पु, प्रापण, लब्धि (स्त्री), अधिगमन, आदान, अनुभव, बोध, भुक्ति इ।

पानेवाला, स पु, प्रापक, अधिगन्तृ-आदातृ ग्रहीतृ (पु) इ।

पाने योग्य, वि, प्राप्य लभ्य, आदेय, ग्राह्य इ

पाया हुआ, वि, प्राप्त, अधिगत, लब्ध गृहीत इ।

पानिप, सं पुं (हिं पानी) द्युति कान्ति (स्त्री) २ दे 'पानी'।

पानी, स पु (स पानीय) वारि-अम्भस (न), दे 'जल' २ कान्ति द्युति (स्त्री) ३ प्रतिष्ठा, सम्मान ४ वृष्टि (स्त्री) ५ पौरुष, वीर्य ७ सत्त्वगादिसामग्री, जलवायु (न) ७ रस ८ शीतलवस्तु (न) ९ समय, अवसर १० परिस्थिति (स्त्री)।

—दार, वि (हिं + फा) कान्तिमत्, भासुर २ मान्य ३ आत्माभिमानिन्।

—देवा, स पु, तर्पक, पिण्डद २ पुत्र ३ स्वजातीय।

—फल, सं पु, दे 'सिंघाड़ा'।

—से हरना, स पुं, आर्द्र, नम्र, भारत सराम।

—कर देना, मु, क्रोध शमनी (भ्वा प अ) शम् (प्रे, शमयति)।

—का बुलबुला, मु, क्षणभंगुर, असार, नश्वर।

—की तरह बहाना, मु, अपव्यय् (चु), अमित व्यय, सुधा दो (प्रे, व्यययति)।

—के मोल, मु, स्वल्पमूल्येन, अल्पार्घेण।

—देना, मु, (पितृन्) उदकेन तृप् (प्रे) २ उदकं पत् (प्रे) निषिच् (तु प अ)।

—पड़ना, मु, वृष् (भ्वा प से)।

—पानी होना, मु, अतीव लज्-लस्ज् (तु आ से)।

—पी पी कर कोसना, मु निरन्तर आक्रुश् (भ्वा प अ)-अभिशप (भ्वा प से)।

—भरना, मु, (तुलनार्थ) तुच्छ (वि) प्रतीयते।

—में आग लगाना, मु, जान बन्दह पुन उत्तीव् (प्रे)-नवीकृ।

—लगाना, मु, प्रतिकूलजलवायुनाऽस्वस्थ (वि) भू।

—मा पतला, मु, जलरूप, जलबहुल, जल विरल।

अदरक का—, सं पु, आर्द्रकजलम्।

खारा—, [illegible] पु, क्षारजलम्।

पानीय, वि (स) पेय, पातव्य। सं पु (स (न) दे 'जल'।

पाप, सं पुं (सं न) अधर्म, पाप्मन् (पुं) पातक, किल्बिष, कल्मष, वृजिन, अघ, अंहस, एनस् (न), दुरित, दुष्कृत, पातक, शल्य २ अपराध, दोष ३ वध ४ पापबुद्धि (स्त्री) ५ अनिष्ट, अहितम्।

—कटना, क्रि अ, पापेभ्य मुच् (कर्म) पाप नश् (दि प वे)।

—करना, क्रि स, पाप कृ अथवा आचर् (भ्वा प से) २ अपराध् (दि भ्वा प अ)।

—नाशी, वि (सं शिन्) पापघ्न, अघनाशक, पापहर।

—बुद्धि, वि (सं) पाप कुबुद्, मति-बुद्धि।

—रोग, सं पुं (सं) रतिजरोग (प्रमेहादि)।

—लोक, स पु (सं) दे 'नरक'।

पापक, वि (सं) दुर्जन, दुष्ट, पापिन्। स पु, दुर्जन, पाप, पातकिन् २ कुकृत्य, पापम्।

पापड़, सं पु (सं पर्पट) माषयोनि, शिखी पूप, वेदलपिष्ट। वि, तनु २ शुष्क।

—बेलना, मु, घोर परिश्रम् (दि प से) २ दुर्जीव् (भ्वा प स)।

पापड़ा, स पुं (सं पर्पट) क्षेत्र, वरक, प्रगंध, सुतिक्त २ दे 'पित्तपापड़ा'।

—खार, [illegible] पुं (सं पर्पटक्षार) कदलीक्षार।

पापर, सं पुं (सं) दरिद्र, अकिञ्चन, निर्धन।

पापाचार, सं पु (सं) दुराचार, दुर्वृत्तम्।

पापात्मा, वि (सं-त्मन्) दे 'पापी'।

पापिन नी, वि स्त्री (सं) पापिनी, दुष्टा, दुराचारिणी, पाप-कर्म-कारिणी, एनस्विनी २ अपराधिनी, दोषिणी।

पापिष्ठ, वि, (सं) पापिष्ठतम, दुष्टतम [पापिष्ठा (स्त्री) = पापतमा, दुष्टतमा]।

पापी, वि (सं पिन्) पातकिन्, पाप, पाप कर, दु पाप-दुष्ट-दुष्ट, कर्मन्, एनस्विन, किल्बि षिन, पाप, निरत-बुद्धि मति, पापकृत् पापात्मन् २ अपराधिन्, दोषिन्।

पापोश, सं स्त्री (फ़ा) दे 'जूता'।

पाबंद, वि (फ़ा) बि, बद्ध, परतन्त्र, निरुद्ध संयत, नियन्त्रित।

पाबंदी, सं स्त्री (फ़ा) बंध, बंधन, नियन्त्रणा २ विवशता, बाध्यता।

पाम, सं पु (सं पामन्) पामा, विचर्चिका, खर्जू,—कंडूति (स्त्री)।

—घ्न, सं पु, (सं) पामारि, गन्धक सौगन्धिक।

पामन, वि (सं)पाम पामा-खर्जू पीडित ग्रस्त।

पामर, वि (सं) दुष्ट खल, दुर्वृत्त २ नीच अधम ३ मूर्ख, जड।

पामाल, वि (फ़ा) पदाक्रान्त, पददलित पादक्षुण्ण, अवमर्दित २ वि, ध्वस्त-नष्ट।

पायँचा, सं पु (फ़ा) *पादावरणजंघा।

पायँता, सं पुं (हिं पायँ) खट्वापाद *पदान, *पदस्थान।

पायँती, सं स्त्री, दे 'पायँता'।

पायंदाज़, सं पु (फ़ा) *पादमर्षणम्।

पाय, सं पु (सं पद) दे 'पाँव'।

पायख़ाना, सं पु, दे 'पाख़ाना'।

पायजामा, सं पु दे 'पाजामा'।

पायजेब, सं स्त्री, दे 'पाजेब'।

पायदार, वि (फ़ा) चिर, स्थायिन्, दृढ।

पायदारी, सं स्त्री (फ़ा) चिरस्थायिता,दृढता।

पायमाल, वि (फ़ा) दे 'पामाल'।

पायल, सं स्त्री (हिं पाय) दे 'पाजेब' २ वंशनिःश्रेणी ३ द्रुतगामिनी हस्तिनी।

पायस, सं पु (सं पु न) परमान्न, दे 'खीर' २ श्रीवास, दे 'तारपीन'।

पाया, सं पु (सं पाद) (पर्यंकादीनां) पाद, श्रया, दण्ड, २ स्तम्भ, स्थूणा, स्थाणु (पु) ३ पद, पदवी वि (स्त्री), स्थिति (स्त्री) ४ सोपान, पथ-मार्ग, परम्परा।

पायु, सं पु (सं) दे 'गुदा'।

पारगत, वि (सं) पारग, परतीर पार,-गत, २ प्रौढर्शिन्, अधीतिन्, श्रुतिन्, शास्त्र मर्मज्ञ।

पार, सं पु (सं पु न) पर, तीर तट २ अपरतट तट ३ पर अभिमुख पार्श्व दिशा ४ अन्त, पर्यंत, सीमा ५ मर्म, अधोभाग। अव्य, पारे, दूरे, अग्रे, परत।

—करना, क्रि स, स-उत्,-तृ (भ्वा प से), उत्,-लंघ (भ्वा आ से, चु), अति इ (अ प अ,), अतिक्रम् (भ्वा प से)। २ समाप् (स्वा उ अ) संपूर् (चु), निर्वह् (प्रे) दे 'बींधना'।

—दर्शक, वि (सं) स्वच्छ, विरलप्रकाश, भेद्य।

—दर्शी, वि (सं र्शिन्) दूरदर्शिन्, भविष्य दर्शिन्।

—पाना, मु, सम्यक् बुध (भ्वा प से), आयत्त या (अ प अ) अथवा संपूर् (चु)।

आर—, सं पु पारावार, पारावारम्। क्रि वि, अवारपारम्।

वार—, सं पुं, दे 'आरपार'।

पारखी, सं पु (हिं परख>) परीक्षक, गुण दोषविद् (पुं)।

पारग, पारगत, वि (सं) दे 'पारगत'।

पारण, सं पुं (सं न) पारणा, उपवासान न्तर प्राथमिकभोजनं २ तर्पणं ३ समाप्ति (स्त्री)।

पारतन्त्र्य, सं पु (सं न) दे 'परतन्त्रता'।

पारद, सं पु (सं) दे 'पारा'।

पारदेशिक शी, वि, दे 'परदेसी'।

पारधी, सं पुं, दे 'शिकारी'।

पारलौकिक, वि (सं) आमुष्मिक, परलोक, संबन्धिन् विषयक, अपार्थिव।

पारस, सं पुं (सं स्पर्श>) स्पर्श,-मणि उपल २ अतिलाभद पदार्थ।

पारसाल, सं पुं (सं +पार+फ़ा साल) गत वर्ष, परुत् (अव्य)। क्रि वि, गताब्दे, परुत्।

पारसी, वि (फ़ा) पारसवासिन् २ भारतस्थ पारसीक ३ 'फ़ारसी'।

पारसीक, सं पु (सं) पारसदेश, पारसिक २ पारसवासिन् ३ पारसयोग्य, वानायुज।

पारस्परिक, वि (सं) दे 'परस्पर का'।

पारा, सं पु (सं पारद) महा-दिव्य,-रस, रस,-राज नाथ उत्तम इन्द्र, चपल, पारद, शिवबीज, सिद्धधातु।

पारायण, सं पु (सं न) समापनं, समाप्ति (स्त्री) २ आद्यन्तपाठ।

पारावत, सं पुं (सं) कपोत, २ कपि ३ पर्वत।

पारावार, स पु (स) समुद्र । (स न) तटद्वय २ सीमा पर्यंत, अवधि ।

पारिजात, स पु (स) सुर-देव-कल्प, तरु वृक्ष, मदार ।

पारिजातक, स पु (स) देवतरुषु अन्यतम २ हरसिंगार ३ काचनाल, कोविदार ४ पारिभद्र देववृक्षविशेष ।

पारितोषिक, स पु (स न) सिद्धिपाल, जयलाभ, दे 'इनाम'।

पारिपथिक, स पु (स) परिपथिन्, लुंट (टा ठा) क, मार्गतस्कर ।

पारिभाषिक, वि (स) सांकेतिक, परिभाषा संकेत, संबंधिन् ।

पारिषद, स पु (स) सभासद् (पु), सभ्य, पारिषद्य २ गण, अनुचरवर्ग ।

पारी, स स्त्री, दे 'बार'।

पार्थक्य, स पु (स न) पृथक्ता, भिन्नता २ वियोग, विरह, विश्लेष ।

पार्थिव, वि (स) मृण्मय (यी स्त्री), मार्तिक (-की स्त्री) २ भौम, पृथिवीसंबंधिन् ३ लौकिक, ऐहिक (-की स्त्री)। स पु, नृप २ कुज ।

पार्लियामेंट, स स्त्री (अ) व्यवस्थापिका सभा ।

पार्वती, स स्त्री (स) उमा, अद्रिजा, अंबिका, गौरी, नंदा, भवानी महादेवी, शिवा, रुद्राणी, सती, सिंहवाहिनी, हिमाद्रितनया, हैमवती ।

—नंदन, स पु (स) कार्तिकेय ।

पार्श्व, स पु (स पु न) वक्षाधोभाग, पार्श्व पक्ष, भाग, कुक्षि २ पक्ष, पार्श्व -र्श्वं, समीप निकट,-स्थान ३ पार्श्वास्थि (न), पार्श्वकम् ।

—वर्ती, स पु (स त्रि) समीपस्थ निकटस्थ, जन ।

—शूल, स पु (स पु, न) शूलरोगभेद ।

पाल[1], स पु (स) पालक, पोषक २ पतद्ग्रह, दे 'पीकदान'।

पाल[2], स पु (हिं पालना) फलपाकार्थं पलालास्तरणम् ।

पाल[3], स पु (स पट वा पाट >) नौ,* वातपट २ पट, मंडप -गृह ३ शकटाच्छादनम् ।

पाल[4], स स्त्री [सं पालि (स्त्री)] सेतु, धरण, वप्रबंध २ उच्च, नीर-कूल, दे 'कगार'।

पालक[1], स पु (सं) पोषक, रक्षक, पालन कर्तृ पालयितृ २ अश्व,-पाल रक्ष ३ दत्तक पुत्र ४ चित्रकवृक्ष ।

पालक[2], स पु (स पालक) पालकी, सुस्निग्ध, धत्रा, मधुरा, क्षुरपत्रिका, ग्रामीणा ।

पालकी, स स्त्री (स पल्यक >) शिरस्का, डयन, शिविका, *पल्यकी, रथगर्भक, याप्य यानम् ।

—गाड़ी, सं स्त्री, *पल्यकी शकटी ।

पालतू, वि (स पालित) गृह्य,-वर्धित पोषित, गृह्य, छेक, गृह्य, ग्राम ।

पालथी, स स्त्री, दे 'पलथी'।

पालन, स पु (स न) भरण, पोषण, सं, वर्धन, अन्नवसनैः रक्षण २ निर्वाह, अनुकूला चरण, अनुवर्तन, साधन, पूरणम् ।

पालना, क्रि स (स पालन) परि, पा (प्रे पालयति), परि, पुष् (भ्वा क्र प से तथा प्रे), संवृध् (प्रे), सं, भृ (भ्वा जु प अ) २ (पशुविहगान्) विनी (भ्वा प अ), दम् (प्रे), गृहे पुष् संवृध् (प्रे) ३ अनुकूल आचर् (भ्वा प से), निर्वह् (प्रे) संपूर् साध (प्रे)। स पु, दे 'पालन' २ (शिशु) प्रेंखा दोला ।

पालने योग्य, वि, परि, पालनीय पोषणीय, भरणीय, विनेय, निर्वाह्य, इ ।

—वाला, स पु, दे 'पालक'[1](१) २ विनेतृ, गृहे पोषक ३ निर्वाहक, साधक ।

पाला[1], स पु (स प्रालेय) तुषार, नीहार, कुज्झटिका, मिहिका, तुहिन, २ घनजल, जल घन, तुषारसंघात, हिम ३ शीत, शैत्य, हिम ।

—मार जाना, मु, नीहारेण नश् (दि प वे), तुषारेण ध्वंस् (भ्वा आ से)।

पाला[2], स पु (हिं पल्ला) व्यवहारावसर, संबंध ।

—पड़ना, मु, व्यवहार संबंध -आदि जन् (दि आ से)।

पाले पड़ना, मु, वशाभू, अधीन (वि) जन् ।

पाला[3], स पु (स पट्ट >) प्रधानस्थान, मुख्यकार्यालय २ विभागरेखा ३ क्षेत्रसीमा ४ अन्नार्थं मृद्पात्र ५ मल्लयुद्धभूमि (स्त्री), व्यायामशाला ।

पालागन, स स्त्री (हिं पाँय+लगना) चरणचुंबन, पादप्रणति (स्त्री), प्रणाम, वंदना, नमस्कार ।

पाला हुआ, वि, परि, पालित, पोषित, स भृत, गृहे सवर्धित, सपूरित, रक्षित, इ ।
पालित, वि (स) दे 'पाला हुआ'।
पालिश, स स्त्री (अ) प्रमार्जनम्, *कानिसरी।
पालिसी, स स्त्री (अ) नीति (स्त्री) नय २ राजनीति शासनरीति (स्त्री) ३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ४ आयनिरक्षणमयलेख सभाव्यहानिरक्षण पत्रम् आश्वासिका।
—होल्डर, स, पु आश्वासिकाधारक ।
पाली[1], स स्त्री (स पालि -पक्ति >) भारत वर्षस्य प्राचीनभाषाविशेष (प्राय बौद्ध धर्म ग्रथ इसी मे है)।
पाली[2], वि (स लिन्) पालक पोषक २ रक्षक।
पाली[3], स स्त्री (स पालि स्थान>) कुक्कुट युद्ध भूमि (स्त्री)।
पावँ, स पु, दे 'पाव'।
पाव, स पु (स पाद) चतुर्थ, अश भाग, तुर्य, तुरीय २ (चार गिरह) गजतुर्य, हस्तार्द्ध ३ सेर, पाद, षट्कचतुष्कम्।
पावक, स पु (स) अनल, अग्नि २ ताप ३ सूर्य । वि, पावन, शोधक, मार्जक।
पावन, वि (स) शुद्ध, पूत पवित्र, शुचि २ दे 'पावक'। वि [पावनी (स्त्री)]।
पावस, स स्त्री (स प्रावृष) दे 'बरसात' (मौसिम)।
पावा, स पु, दे 'पाया'(१)।
पाश, स पुं (सं) शस्त्रभेद, बधन, २ पाश, मृगबधनी, पातिली, वागुरा ३ 'फाँसा'।
पाश्चात्य, वि (स) पश्चिमदेशज, प्रतीच्य २ उत्तर, उत्तरगामिन ३ पश्चिम, चरम, अपर, अवर।
पाषड, सं पुं, दे 'पाखड'।
पाषडी, वि, दे 'पाखडी'।
पाषाण, स पु (स) दे 'पत्थर'।
पासग, सं पु (फ़ा) प्रतितोलक तुल्यपूरकम्।
पास[1], स पु (स पार्श्व -र्श्व) पक्ष, दिशा २ अधिकार, आधिपत्यं (अव्य), निकटे, समीपे, अतिक-के, आराद्, उपकठ, निकषा, समया, सविधे (सब अव्य)।
—पडोस, सं पु, समीप-सन्निहित-देश, प्रति वेश २ प्रातिवेश्या प्रतिवासिन (पु बहु)।
आस—, क्रि वि, इतस्तत अभित, परित २ दे 'लगभग'।
पास, स पु (अ) *अनुज्ञापत्रम्। वि उत्तीर्ण, सफल, सफलीभूत २ स्वीकृत, उररीकृत।
—पोर्ट, स पु (अ) पार निष्क्रम पत्रम्।
—बुक, स स्त्री (अ) धनागारपुस्तकम्।
पासा, सं पु (स पाशक) दे 'पाँसा' २ दे चौसर'।
—फेंकना, मु, भाग्यं परीक्ष (भ्वा आ से) २ अभै ष्टिव (दि प से)।
पाहुना, स पु (स प्राघुण) प्राघुण(णि)र, प्राघूणक, अतिथि २ जामात् दे दामाद'।
पाहुनी, सं स्त्री (हि पाहुना) प्राघुणिका-की, प्राघूणकी २ आतिथ्य, अतिथि-सत्कार ।
पिंग, वि (स) आ ईषत पीत २ कपिल, पिंगल, पिंगर ३ आ ईषत पिंगल-कपिल।
पिंगल, स पुं (स) छद सूत्रकारो मुनि विशेष २ (पिंगलरचित) छद शास्त्र ३ कपि ४ उल्लूक ५ अग्नि । वि, दे 'पिंग'।
—शास्त्र, स पु (स न) छन्दो,विद्या विज्ञानम्।
पिंगला, स स्त्री (स) शरीर नाडीभेद ।
पिंडी, सं स्त्री (स) शमी, शिवा, भद्रा २ २ मूषा मूषिका ३ क्षुद्र मूषक-आखु ।
पिंजड़ा रा, स पु (स पिंजर) पजर -र, वि (वी)तस ।
पिंजर, स पु (स न) कायास्थिवृद ककाल, अस्थिपजर र २ स्वर्ण ३ दे 'पिंजड़ा'। वि, ईषत् पीत २ सुवर्णाभ ३ कपिल, पिंगल।
पिंड, स पु (स पु न) गोल -ल, वर्तुलद्रव्य २ लोष्ठ ठ, मृत्खड पिंड, द्रव्यखड -ड, घट, घन ३ चय, राशि, ४ निवाप, श्राद्धोपयोगिमक्तपिण्ड ५ आहार ६ शरीर, देह ।
—खजूर, सं स्त्री (स पिंडखर्जूर) राजजबू (स्त्री), स्थूलपिण्डा, पिंडखर्जूरी, दीप्या, फल्पुष्पा, हयभक्षा।
—दान, स पु (स न) पिण्डनिर्वाप ।
—छोडना, मु, न बाध (भ्वा आ से)।
पिंडली, स स्त्री (स पिंडी) जघापिण्ड, पिण्डिका पिंडि (स्त्री), पिचिण्डिका।
पिंडा, स पु (स पिंड -ड) दे पिण्ड' (१, २, ४, ६)।
—पानी देना, मु, पितृभ्य पिंडोदक दा।

पिडालू, स पु (पिंडालु) रोमालु, रोम पिंट,-कद, रोमश ।

पिडिका, [redacted] स्त्री (स) क्षुद्रपिंड -ड २ लोष्टक ३ दे 'पिंडली' ४ चक्रनाभि (स्त्री) ५ प्रति मावेदिका ।

पिडित, वि (स) पिंडी-घनी, भूत २ गणित ३ गुणित ।

पिडी, स स्त्री (स) दे 'पिटिका' (२,३,४)। २ अलाबू (स्त्री) ३ पिंडखर्जूर ४ वन्हि वेदी ५ मूत्रगोल -लम् ।

पिउ, वि (स प्रिय) वल्लभ, कान्त, दयित । स पु, पति, भर्तृ ।

पिक, सं पु (स) कोकिल, दे 'कोयल'।

—बंधु, स पु (स) पिक, राग -वल्लभ, आम्रवृक्ष ।

—बैनी, स स्त्री, कोकिलकंठा-ठी, मृदुमधु, कंठा ठी ।

पिकानन्द, स पु (स) पिकबान्धव, वसन्त, ऋतुराज ।

पिघलना, क्रि अ (स प्रघरणम्>) गल् क्षर् (भ्वा प से), वि, द्रु (भ्वा प अ), द्रवीभू, वि, ली (दि आ अ) २ करुणार्द्री दयार्द्रीभू, करुणया द्रु, दय (भ्वा आ से)। स पु क्षरण, गलन, विलयन, द्रवण २ दयार्द्री भाव, दयनं, अनुकम्पनम् ।

पिघलनेवाला, वि, वि, लेय, द्रवणीय, गलनार्ह ।

पिघलाना, क्रि स, व 'पिघलना' (१ २) के प्रे रूप। स पु, वि, द्रावण-लावन, द्रवीकरणम् ।

पिघलानेवाला, [redacted] पु, विद्रावक, विलयनकृत् ।

पिघला हुआ, वि, वि, -लीन, वि, द्रुत, गलित ।

पिघलाया हुआ, वि, वि, द्राविन-लापित, क्षारित, गालित ।

पिघालबिंदु, स पु (हिं + स) द्रवांक, द्रवण, अड्क बिंदु ।

पिच (चि) ड, स पु (स पुं न) उदर, जठर, फल ।

पिचकना, क्रि अ, व 'पिचकाना' के कर्म के रूप ।

पिचकाना, क्रि स (अनु पिच) आ नि-सं-पीड् (चु), संमृद् (क्र् प से), आ-सं-कुच् (भ्वा प से । सं पुं, संपीडनं, संमर्दनं, संकोचनम् ।

पिचकानेवाला, स पु, संपीडक, संमर्दक इ ।

पिचकाया हुआ, वि, संपीडित, संकोचित इ ।

पिचकारी, स स्त्री (अनु पिच>) रेचन यन्त्र, शृङ्ग, शृङ्गक, वस्ति (पुं स्त्री)।

—छोड़ना या मारना, [redacted], शृङ्गेण क्षिप् (तु प अ), तरलद्रव्यं सवेग प्रास् (दि प से)।

पिचपिचा, (हिं पिचपिचाना) उन्न, क्लिन्न, स्यान, सार्द्र ।

पिचपिचाना, क्रि अ (अनु पिचपिच>) पिचपिचायते (ना धा), शनैः क्षर् (भ्वा प से), प्रस्नु (अ प से)।

पिचुका, स पुं, दे 'पिचकारी' २ दे 'गोल गप्पा'।

पिच्छ, स [redacted] (स न) पुच्छ, पक्ष -वाज २ मयूरपुच्छ, बर्ह र्हं, शिखण्ड, कलाप ३ शरपक्ष, पुंख खम् ४ पक्ष, वाज ५ शिखा, शेखरम् ।

पिच्छल, वि (स) चिक्कण -णा णम्, मेदुर रा-रम्, श्लक्ष्ण क्ष्णा-क्ष्णम् ।

पिछड़ना, क्रि अ (हिं पिछाड़ी) मंद चल् (भ्वा प [redacted]), मंदायते चिरायति (ना धा), पश्चात् वृत (भ्वा आ से)।

पिछड़नेवाला, स पु, मंद, मंथर मंद गामिन् ।

पिछलगा, पिछलग्गू, स पु (हिं पीछे+ लगना) अनुयायिन्, अनुगामिन्, अनुवर्तिन्, शिष्य २ सेवक ३ आश्रित ।

पिछला, वि (हिं पीछा) पृष्ठस्थ, पश्चिम, पृष्ठ्य, पश्च, पश्चात्, २ उत्तर, उत्तरकालीन, अपर, पर, पाश्चात्य ३ अन्त्य, अन्तिम, उत्तर ४ गत, अतीत, पुराण ।

पिछवाड़ा, स [redacted] } (हिं पीछा) गृहस्य
पिछवाड़ी, सं स्त्री } पृष्ठ, पृष्ठभाग २ पृष्ठ पश्चाद्, भाग ३ गृहपृष्ठवर्तिभूमि (स्त्री)।

पिछाड़ी, स स्त्री (हिं पीछा) पृष्ठ, पृष्ठ पश्चाद्, भाग -देश २ (अश्वादीनां) पृष्ठपादरज्जु (स्त्री)।

पिटना, क्रि अ (हिं पीटना) ताड् आहन् (कर्म)।

पिटवाना, क्रि प्रे, व 'पीटना' के प्रे रूप।

पिटाई, सं स्त्री (हिं पीटना) ताडनं, प्रहरणं, आहनन २ ताडनभृति (स्त्री)।

पिटारा, सं पु (स पिट) पेट, करड, कटोल ।
पिटारी, सं स्त्री (हिं. पिटारा) पिटक-क, पेट(ट)क, पेटा, मजूषा, पेटि(डि)का, तरी रि (स्त्री)।
पिट्ठू, स पु (हिं पीठ) अनुगामिन्, अनुयायिन् २ सहाय, साहाय्यकारिन्।
पित, स स्त्री (स पित्त>) घर्मचर्चिका, घर्मजटक ।
पितपापडा, स पु (स पपट) अरक, वरक, तृ, तिक्त, चरक, शीन, प्रगध ।
पितर, स पु (स 'पितृ'का बहु) पिट स्वधा श्राद्ध,भुज भाज, पितरः (सब बहु)।
पितराई, स स्त्री (हिं पीतल) पित्तल-स्वाद, रिष्ट-मल-स्वाद, दे 'कमाव'।
पिता, स पु (स पितृ) तात, जनक, वप्तृ, प्रसवितृ, जनयितृ, जनितृ, जन्मद, बीजिन्।
—मह, स पु (स) दे 'दादा'।
—मही, स स्त्री (स) दे 'दादी'।
पितृ, स पु (स) दे 'पिता' २ दिवगता पूर्वपुरुषा ३ देवविशेषा ।
—ऋण, स पु (स न) जायमानस्य ऋण भेद (अपना पुत्र उत्पन्न होने पर मनुष्य पितृ ऋण से मुक्त होता है। धर्म)।
—कर्म, स पु [स-र्मन (न)] श्राद्धतर्पणादिक्रिया।
—गृह, स पु (स न) श्मशान २ दे 'मायका'।
—तर्पण, स पु (स न) तिलितर्, आप, निवपन, निर्वपण २ दे 'तिल'।
—तिथि, स स्त्री (स पु स्त्री) अमाव (वा)स्या।
—तीर्थ, स पु (स न) गया २ वाराणस्यादितीर्थस्थानानि ३ तर्जन्यगुष्ठयोमध्यम्।
—पक्ष, स पु (स) आश्विनकृष्णपक्ष २ पितृमवधिन (बहु)।
—यज्ञ, सं पु (स) पितृतर्पणम्।
—लोक, सं पु (स) पितृभुवनम्।
पितृक, वि (स) दे 'पैतृक'।
पितृव्य, स पु (स) दे 'चाचा'।
पित्त, स पु (स न) मायु, पटज्वल, तिक्तधातु ।
—घ्न, वि (स) पित्त-मायु,-हर-नाशक ।
—ज्वर, स पु (स) पैत्तिक-मायुज,-ज्वर ।
—की थैली, स स्त्री, पित्तकोष (gall-bladder)।
—पथरी, स स्त्री, पित्ताश्मरी।
—पापडा, स पु, दे 'पितपापडा'।
—प्रकृति, वि (स) मायुप्रकृति २ क्रोधिन्।
—प्रकोप, स पु (स) पित्त-मायु, प्रकोप-आधिक्यं विकार ।
—हर, वि (स) दे 'पित्तघ्न'।
पित्तल, स पु (स न) आरकूट,-ट, आर, क्षुद्र-सुवर्ण, रीती ति (स्त्री), पीतलक, दानक, पिंगललोहम्।
—का, वि, पित्तल पीतक,-मय (-यी स्त्री)।
पित्ता, स पु (स पित्त>) दे 'पित्ताशय' २ साहस, वीर्य, शौर्य ३ कोप, क्रोध ।
—खौलना, मु, अत्यत क्रुध् (दि प अ)।
—निकालना, मु, नितरा परिश्रम् (प्रे)।
—पानी करना, मु, सुतरा परिश्रम् (दि प मे)।
—मारना, मु, क्रोध वि नियम् (भ्वा प अ)।
पित्ताशय, स पु (स) पित्त-मायु,-कोष ।
पित्ती, स स्त्री (स पित्त>) शीतपित्त, पित्तविकारज त्वग्रोगभेद, २ दे 'पित'।
पित्र्य, वि (सं) दे 'पैतृक'। स पु, (स) अग्रज २ माघमास ३ मघानक्षत्रम् ४ मधु (न) ५ माष, मासल ।
पित्र्या, स स्त्री (स) अमावस्या २ पूर्णिमा।
पिदड़ी, स स्त्री, दे, 'पिद्दी'।
पिद्दा, स पु / पिद्दी, स स्त्री } (अनु पिद) चटकभेद २ तुच्छ,-जीव पदार्थ ।
पिधान, स पु (स न) आच्छादन, आवरण, कोष २ छद, छदन, पुट-टी ३ असिकोष ।
पिधायक, वि (स) आ प्र च्छादक, आवरक।
पिन, स स्त्री (अ) धातुकटक-क, अल्पसूची।
पिनकना, क्रि अ (अनु) (अहिफेनमदेन) ईषत् निद्रा-स्वप् (अ प अ)।
पिनाक, स पु (स पु न) (शिवस्य) चाप, धनुस् (न) २ त्रिशूलम्।

पिनाकी, स पु (स किन्) शिव , महादेव ।
पिन्ना, स पु (स पिंड -ड) तैलकिट्ट पिण्याक, पिंड -ड २ मूत्र-गोल पिंड ।
पिन्नी, स स्त्री (स पिंडी) पिंडिका, पिंटि (स्त्री) शादव, मिष्टान्न भेद २ दे 'पिंडली' ।
पिपरमिंट, स पु (अ) पुदीनजातीय क्षुप , *पिपरमिंट २ *पिपरमिन्ट् ।
पिपरामूल, स पु (स पिप्पलीमूल) चोल कटु-मूल, ग्रंथिक, मर्व कट-कटु ग्रंथि (न) ।
पिपरी, स स्त्री (स पिप्पली) पिप्पलि (स्त्री) श्यामा कृष्णा, मागधी, उ(ऊ)पणा, कोला, दंतफला ।
पिपासा, स स्त्री (स) तृषा, दे 'प्यास' ।
पिपासित, वि (सं) तृषित, दे 'प्यासा' ।
पिपासु, वि (स) तृषित, दे 'प्यासा' ।
पिपीलक, स पु (स) पिपील , पिपीलिक , पीलक , दे 'चींटा' ।
पिपीलिका, स स्त्री (स) पिपी(पि)ली, हीरा, दे 'चींटी' ।
पिप्पल, सं पु (स) अश्वत्थ , दे 'पीपल' ।
पिप्पलाद, स पु (स) ऋषिविशेष ।
पिप्पली, सं स्त्री (स) दे 'पिपरी' ।
—मूल, स पु, दे 'पिपरामूल' ।
पिय, पिया, वि (स प्रिय) वल्लभ, कान्त, दयित । स पु, पति भर्तृ ।
पियानो, स पु (अ) आग्लवाद्यभेद, *प्रियध्वान ।
पिरिच, स पु (देश) दे 'तश्तरी' ।
पिरोना, क्रि स (स प्रोत>) सन्(चु), गु(गु)फ (तु प से) स,पद् (कृ प स), स, दृभ् (चु, भ्वा , तु प से) । सं पु, सूत्रण, गुम्फन, ग्रथन, सन्दर्भणम् ।
पिरोने योग्य, वि , सूत्रयितव्य गुम्फनीय इ ।
पिरोनेवाला, स पु, गुम्फक, ग्रथक, सूत्रयितृ इ ।
पिरोया हुआ, वि , सूत्रित, गुम्फित, ग्र(ग्रं)थित, सदृब्ध इ ।
पिल, स स्त्री (अं) गुटिका, गुलिका, वटिका ।
पिलना, क्रि अ (स पेल्न>) सहसा प्रविश् (तु प अ) २ मर्वात्म अभिद्रु (भ्वा प अ) आपत् (भ्वा प स) ३. सोत्साह प्रवृत् (भ्वा आ से) अत्यन्त परिश्रम् (दि प से) ४ निष्पीड् निकृष् (कर्म) ।
पिलपिला, वि (अनु पिलपिल) शिथिल, अतिपक्व, अतिमृदु ।
पिलाना, क्रि प्रे (हिं पीना) पा (प्रे पाय यति), धे (प्रे , धापयति), चम् (प्रे , चाम यति), २ स्तन्य-स्तन पा धे (प्रे) ।
पिल्ला, स पु (तामिल) श्व, शावक शिशु ।
पिशंग, वि (स) कपिश, पिंगल ।
पिशाच, स पु (स) भूत , प्रेत , राक्षस , बेताल , असुर , दानव , दैत्य , निशाचर ।
पिशाचनी, स स्त्री (स पिशाची) पिशाचिका, निशाचरी, राक्षसी ।
पिशुन, स पु (स) छिद्रान्वेषी, सूचक, कर्णेजप २ परोक्षनिंदक, परिवादरत ३ दुर्जन , खल , नीच , गर्ह्य ।
पिशुनता, स स्त्री (स) पैशुन्य, पिशुनत्व, छिद्रान्वेषिता २ परोक्ष, निंदा परि(री)वाद ३ दुर्जनता ।
पिष्ट, वि (स) चूर्णित, चूर्णीकृत, क्षुण्ण । स पु, दे 'पीठी' ।
—पेषण, स पु (स न) चूर्णितचूर्णन, क्षुण्णक्षोदन २ पुनरुक्ति (स्त्री), पौनरुक्त्य, पुनर , वचनवाद ।
पिसनहारी, स स्त्री, (हिं पीसना) *पेषण कारी ।
पिसना, क्रि अ, दे 'पीसना' के कर्म के रूप ।
पिसाई, स स्त्री (हिं पीसना) पेषणं, चूर्णनं, विदलन, क्षोदन २ पेषण-चूर्णन, भृति (स्त्री)-भृत्या ३ घोरपरिश्रम ।
पिसान, सं पुं (हिं पिसा+सं अन्नम्) दे 'आटा' ।
पिसा(सवा)ना, क्रि प्रे , दे 'पीसना' के प्रे रूप ।
पिसौनी, सं स्त्री , पेषण, चूर्णनम् २ अन्न चूर्णन-व्यवसाय ३ अतिपरिश्रम ।
पिस्ता, स पुं (फा) मुकूलकम् ।
पिस्तौल, सं पु (अं पिस्टल) गुलिकास्त्र , लघ्वग्न्यस्त्रम् ।
पिस्सू, सं पु (फ़ा पश्शह्=मच्छर)*कुटरी, देहिका, कुट ।

पिहित, वि (सं.) तिरोहित, गुप्त २ अर्थालंकारभेद (सा)।

पींजना, क्रि स (म पिंजन=धुनकी>) *पिंज (प्रे पिंजयति) दे 'धुनना'।

पी, म पु (म प्रिय) कान्त, दयित, वल्लभ, २ पति, भर्तृ, प्राणेश्वर ।

पीक, म स्त्री (अनु पिच) पर्णरस, ताम्बूलनिष्ठीव ।

—दान, म पु (हिं + फा) पतद्ग्रह, प्रतिग्राह, *पात्रधारक, निष्ठीवनपात्रम् ।

पीच, म स्त्री (स पिच्छा) पिच्छा, मण्ड, भक्तमण्ड इ, दे 'मांड'।

पीठ, म पु (स पश्चात>) पृष्ठ, पृष्ठ पश्च पश्चाद्भाग देश २ अनु,-गमन-सरण-धावन ३ अन्वेषणम् ।

—करना, मु, अनु, इ-या (अ प अ) अनु, गम-सृ (भ्वा प अ), अनु याव व्रज् (भ्वा प से) २ साग्रह प्रार्थ् (चु आ से)।

—छुड़ाना, मु, परिह (भ्वा प अ), वि परि-त्यज् (चु), आत्मानं रक्ष् (भ्वा प से)-मुच्‌ (भ्वा आ अ)।

—ठोंकना, मु, न बाध् (भ्वा आ से) -प्रथ्-सह् (प्रे)।

पीछे, क्रि वि (हिं पीठ) अनु (द्वितीया के साथ), पृष्ठत, पश्चात्, पश्चाद्भाग, भागे-देशे २ अनन्तर, ऊर्ध्वं, पर, पश्चात् (सब अव्य) ३ अनुपस्थितौ, अभावे, परोक्षे ४ निधनानन्तर ५ हेतो, कारणात्, निमित्तात् ६ -अर्थं,-अर्थे, कृते (षष्ठी के साथ) = अनत, अंते, परिणामे।

—आना, मु, विलंबेन या कालमतिक्रम्य आया (अ प अ)।

—छूटना या रहना, मु, अतिक्रम्-अतिलङ्घ् (कर्म) मद चल् (भ्वा प से) मन्दायते (ना धा)।

—चलना, मु, अनु, इया (अ प अ), अनु, व्रज् (भ्वा प से)-सृ (भ्वा प अ)-कृ।

—पड़ना, मु, साग्रह प्रार्थ् (चु आ से) २ सतत बाध् (भ्वा आ से)-अर्द्-व्यथ् (प्रे)।

—लगना, मु इष्टसिद्धये सतत अनुगम्, २ रोगादिभि निरंतरं पीड् (कर्म)।

पीटना, क्रि स (स पीडन>) अभि-उप प्र, हन् (अ प अ), आहन् (अ उ अ), प्रह (भ्वा प अ, सप्तमी के साथ) २ तड् (चु), तुद् (तु प अ), प्रह, आहन्, अर्द्, पीड (चु) ३ दंड् (चु), निग्रह (क्र् प से)। स पु, आहति (स्त्री), आघात, प्रहार, ताडन, प्रहरण, पीडन, दंडन, निग्रह, मृत्यु, शोक, आपद्-विपद् (स्त्री)।

पीटने योग्य, वि, आहननीय, प्रहरणीय, ताडनीय, दंडयितव्य।

पीटने वाला, स पु, आ अभि, हन्तृ, प्रहर्तृ, ताडयितृ, पीडक, दंडयितृ।

पीटा हुआ, वि, आहत, प्रहृत, ताडित, दंडित इ ।

पीठ¹, स स्त्री (स पृष्ठ) पश्चिमांग, तनु चरम २ पश्चाद् पृष्ठ, भाग -देश ।

—चारपाई से लगना, मु, नितरां क्षि (भ्वा प अ)-कृशी भू।

—ठोंकना, मु, उत्तेज् प्रोत्सह (प्रे)।

—दिखाना या देना, मु, पलाय् (भ्वा आ से) अपधाव (भ्वा प से) २ परित्यज (भ्वा प अ)।

—पर हाथ फेरना, मु, दे 'पीठ ठोंकना' २ पृष्ठ परामृश् (तु प अ)।

—पीछे, मु, अनुपस्थितौ, परोक्षे।

—पीछे कहना, मु परोक्षे निंद् (भ्वा प से)।

—फेरना, मु, प्रस्था (भ्वा आ अ) २ प्राङ्मुखी भू (३४) दे 'पीठ दिखाना'।

—लगना, मु, मल्लयुद्धे उत्तानो निपद् (भ्वा प से) २ सर्वथा पराजि (कर्म)।

—लगाना, मु, मल्लयुद्धे उत्तान निपद् (प्रे) २ सर्वथा विजि (भ्वा आ अ)।

पीठ², स पु (स न) (काष्ठपाषाणधात्वादिनिर्मित) आसन, पीठी २ (व्रतिना) कुशासन, विष्टर ३ प्रतिमाधार ४ अधिष्ठान, आवास ५ सिंहासन ६ वेदी-दिका ७ प्रदेश, प्रान्त ।

पीठक, स पु, दे 'पीठ'² १। २ शिविकाभेद ।

पीठा, स पु, (स पिष्ट >) भोज्यभेद । पिष्ट ।

पीठिका, स स्त्री (म) दे 'पीठ' (१)। २ (स्तम्भादीनां) आधार, पाद ३ प्रथमभाग ।

पीठी, स स्त्री (म पिष्टिका), पिष्टाद्दाली (स्त्री), पिष्टद्विदल ।

पीड़क, स पु (स) दु ख,द -दायक दायिन्, क्लेशकर , पीडावह ।
पीडन, स पु (स न) अर्दन, बाधन, उप मर्दन, क्लेशन २-दे 'दबाना'।
पीड़ा, स स्त्री (म) वेदना व्यथा, दु ख, रुज (स्त्री) रुजा, अ(आ)र्ति (स्त्री), क्लेश , बाध धा यातना, कष्ट, कृच्छ्र , परि स ताप ।
—कर, वि (स) दु ख-कष्ट-व्यथा,-कर आवह प्रद द [—करी (स्त्री) =दु खदा]।
मानसिक—, स स्त्री (सं) आधि , मनोव्यथा, चित्तोद्वेग ।
शारीरिक—, स स्त्री (स) व्याधि , रोग ।
पीडित, वि (स) दु खित, व्यथित, क्लेशित, सव्यथ, सरुज, कृच्छ्रगत।
पीढ़ा, स पु (स पीठ) दे 'पीठ' (१)।
पीढ़ी, स स्त्री (स पीठी) पीठक क(काष्ठा दिनिर्मित) उपासना, क्षुद्रासनम् ।
पीढ़ी², स स्त्री (स पीठी) वशपरम्पराया पितृपितामहपुत्रपौत्रादीना पूर्वापरस्थान, क्रमन निक्रम ।
पीत, वि (स) हरिद्राभ, दे 'पीला'।
पीतल, स पु, दे 'पित्तल'।
पीताबर, स पु (स न) हरिद्राभवस्त्र २ श्रीकृष्णचन्द्र ३ वि , पीतवस्त्रधारिन् ।
पीदड़ी, स स्त्री , दे 'पिद्दी'।
पीन, वि (स) पीवर, स्थूल, पुष्ट, मासल।
पीनक, स स्त्री (हिं पिनकना) अफेननिद्रा, अहिफेननिद्रा ।
पीनता, स स्त्री (स) पीवरता, स्थूलता, पुष्टता ।
पीनस¹, स पु (स) अपीनस , नासिका मय , घ्राणशक्तिराहित्यम् ।
पीनस², स स्त्री (फा फीनस) दे 'पालकी'।
पीना, क्रि स (स पान) पा पे (भ्वा प अ), चम् (भ्वा प स), पान कृ २ मद् (भ्वा आ स)३ (क्रोधादीन्) निर्मस्यम् (भ्वा प अ), प्र , शम् (प्रे) ४ मद्य पा, सुरापान कृ ५ उद्, शुप् (प्रे) ६ धूम पा, धूमपानं कृ। ■ ५ , पय , पान, आचमन, पीति (स्त्री) ।
पीने योग्य, वि पेय, पानीय, चमनीय, धेय ।
पीनेवाला, स पु पय पायिन्, पातृ २ पान, आसक्त रत शौंड , मद्यप ।
पीया हुआ, वि , पीत, धौत, चात ।
पीनोध्नी, स स्त्री (स) पीवरस्तनी गौ ।
पीप ब, स स्त्री (स पूय -य) क्षतज, मलज, प्रमित, पूयन, कुणपम् ।
—पड़ना, क्रि अ , पूय (भ्वा आ से)।
पीपल¹, स पु (स पिप्पल) अश्वत्थ , क्षीर शुचि-बोधि, द्रुम , चल, दल पत्र , कुञ्जराशन ।
पीपल², स स्त्री , दे 'पिपली'।
पीपलामूल, स पु , दे 'पिपरामूल'।
पीपा, स पु (देश) *पटहपात्रम् ।
पीयु, स पु (स) काक , वायस २ सूर्य ३ अग्नि (पु) ४ उलूक ५ समय ६ सुवर्णम् ।
पीयूष, स पु (स पु न) सुधा, अमृत २ (नवप्रसूतायाः गो) दुग्धम् ।
—वर्षी, वि (स वर्षिन्) सुधास्यन्दिन्, सुमधुर।
पीर¹, स स्त्री (स पीडा) दे 'पीड़ा' २ सहानुभूति (स्त्री) ३ प्रसवपीडा ।
पीर², वि (फा) वृद्ध, जरठ २ धूर्त । स पु , धर्मगुरु , सिद्ध (मुसलमान)।
पीरी, स स्त्री (फा) जरा, वार्धक्यम् ।
पील, स पु (फा) गज , द्विप ।
—पाँव, स पु (फा + हिं) श्लीपद, शिलीपदम् ।
पीला, वि (स पीत) पीतल, हरिद्राभ, सुवर्ण कुकुम,-वर्ण २ निस्तेजस्क, कान्तिहीन। (पीली (स्त्री) = पीता, हरिद्राभा)।
—बुखार, स पु , पीतज्वर ।
—पड़ना या होना, मु , पाण्डुच्छाय (वि) भू , गतश्री नीरक्त (वि) जन् (दि आ से)।
पीलिया, स पु (हिं पीला) दे 'पांडुरोग'।
पीलू, स पु (सं पीलु) गुडफल , शीतसह , विरेचन , श्याम , करभवल्लभ २ कृमि , कीट ३ रागभेद ।
पीव, स पु , दे० 'पी'। स स्त्री , दे० 'पीप'।
पीवर, वि (स) दे 'पीन'।
पीसना, क्रि स (स पेषण) पिष् क्षुद् (रु प अ), चूर्ण् (चु), चूर्णी कृ, मृद् (क्र् प से) २ मजदूरी पिष् इ ३ विगर्द

परिश्रम् (दि प से)। स पु , पेषण, चूर्णन, मर्दन, मर्दन २ पेषणीयपदार्थ ।

पीसने योग्य, वि , पेषणीय, चूर्णयितव्य इ ।

पीसने वाला, स पु पेषक , चूर्णयितृ मर्दक ।

पीसा हुआ, वि , पिष्ट, चूर्णित, मर्दित ।

—पीसना, मु , मनन घोर च परिश्रम् ।

पीहर, स पु (स पितृगृह>) नारीणां पितृवेश्मन् (न)।

पुंगव, स पु (स)वृष वृषभ । वि श्रेष्ठ उत्तम (उ नरपुंगव =मानवोत्तम)।

पुंज, स पु (स) उत्कर , राशि , चय ।

पुंड, स पु (स) पुंड्र, दे 'तिलक'।

पुंडरीक, स पु (स न) शुक्लपद्म शतपत्र, महापद्म, सित, अद्भुतअभोज २ कमल ३ सिंह ४ व्याघ्र ५ तिलक ६ श्वेतच्छत्र ७ हाथी ८ तीर्थविशेष ९ कुष्ठभेद ।

पुंडरीकाक्ष, स पु (स) विष्णु । वि , कमलनयन (नयनी ना स्त्री)।

पुंड्र, स पु (स) दे 'पुंड्रक' (१) २ दे 'पुंडरीक' (१) ३ दे 'पुंड' ।

पुंड्रक, स पु (स) रसाल -लौ, इक्षुवाटी योनि (स्त्री), रसद्रालिका, करकशालि, इक्षुभेद । २ माधवी लता ३ तिलक ४ तिलकवृक्ष ।

पुंलिंग, स पु (स न) पुरुषचिह्न २ शिश्न ३ (प्राय) पुरुषवाचकशब्द (व्या)।

पुंश्चली, स स्त्री (स) कुल्टा, व्यभिचारिणी, धर्षणी, स्वैरिणी ।

पुंसवन, स पु (स न) संस्कारभेद (धर्म)।

पुंस्त्व, स पु (स न) पौरुष, पुरुषत्व, मैथुनसामर्थ्य २ शुक्र, वीर्य ३ तेजस्, ओजस् (न)।

पुआ, स पु (स पूप) अपूप , पिष्टक ।

पुआल, स पु , दे 'पयाल'।

पुकार, स स्त्री (हिं पुकारना) आह्वयन, आह्वान, आहाव , अहू(हु)ति (स्त्री), आका(क)रणं-णा, सद्यापन २ परिदेवनं, दुःख निवेदन ३ प्रबलप्रार्थना, उच्चस्वरेण याचना ४ चीत्कार , उत्क्रोश ।

पुकारना, क्रि स (स प्लुतकरण>) आ ह्वे (भ्वा प अ) आकृ-मधुष् (प्रे) २ उच्चै वद् (चु), उद्घुष (प्रे) ३ नार्त स्वरेण याच् (भ्वा आ से)-प्रार्थ् (चु आ से) ४ रक्षायै आ वि क्रुश् (भ्वा प अ) ५ (प्रतिकारार्थे) परिदेव (भ्वा आ से , चु) दु ख निविद् (चु) ६ नाम कृ, अभिधा (जु उ अ)। स पु , दे 'पुकार'।

पुकारने योग्य, वि, आह्वेय आकार्य, संबोधनीय ।

पुकारने वाला, स पु आह्वायक , आकारक इ ।

पुकारा हुआ, वि , आहूत आकारित इ ।

पुक्कश, पुक्कस, स पु (स) निषादात् शूद्रायां जातो मनुष्य वर्णसंकरभेद । वि अधम नीच (-ची स्त्री स्त्री)।

पुखराज, स पु (स पुष्पराज) पुष्पराग , पीत , पीत स्फटिक -मणि -अश्मन् (पु), मंजुमणि ।

पुख्ता, वि (फा -तह्) सबल, प्रबल २ दृढ, कठिन ३ स्थायिन् ४ पक्वेष्टकानिर्मित ५ अभिज्ञ ६ अनुभविन् ७ निश्चित ।

पुचकारी, स स्त्री (हिं पुचकारना) पुच्-कार -करण-कृति (स्त्री)।

पुचकारना, क्रि स (अनु पुच) पुचपुचायते (ना धा), पुचिति शब्द कृ।

पुचारना, क्रि स , दे 'पोतना'।

पुच्छ, स स्त्री (स पु न) दे 'पूँछ'।

पुच्छल, वि (स पुच्छ>) पुच्छिन्, सपुच्छ, लांगूलिन, लांगूलवत् ।

—तारा, स पु , धूम, केतु , उल्का, उत्पात ।

पुछल्ला, स पु (हिं पूछ) दीर्घपुच्छ -च्छं, लम्बलांगूल २ चाटुकार , मिथ्याशंसक ३ परिहासभंगिन् ।

पुजना, क्रि अ (हिं पूजना) पूज्-अभ्यर्च् (कर्म)।

पुजवाना, पुजाना, क्रि प्रे , व 'पूजना' के प्र रूप ।

पुजापा, स पु (स पूजापत्र) पूजा, प्रसेव पुट २ पूजासामग्री, देव-उपायन-उपहार , नैवेद्यम् ।

पुजारी, स पु (स पूजाकारिन्) प्रतिमा , पूजक , देवल -लक २ भक्त , उपासक ।

पुट', स पु (अनु) दोलासेक २ आ ईषद्, रंजन ३ आ ईषद, मिश्रण-संपर्क ।

पुट[२], स पु (स पु न) आच्छादन, आवरण, कोष, पिधानं, वेष्टनं २ पर्णपुट-ट, पत्र, द्रोण ३ द्रोणाकारपदार्थ (उ, अंजलिपुट) ४ औषधपाकाय पात्रभेद ।

—पाक, स पु (स) पुटस्थौषधपचनं (वैद्यक)।

पुटकी, स स्त्री (स पुटक>) दे 'पोटली' ।

पुटित, वि (स) चूर्णित, पिष्ट २ विदारित, छेदित ३ सकुचित, आकुंचित ।

पुट्ठा, स पु (सं पृष्ठ>) नितंब, जघन, कटिप्रोथ, २ अश्वादीनां नितंब ३ ग्रंथावरकपृष्ठम् ।

पुट्ठी, स स्त्री (हिं पुट्ठा>) शकटनेमी भाग ।

पुड़ा, स पु (सं पुट-ट) पत्रपोटा २ दे 'पुड़ी'।

पुड़िया, स स्त्री (सं पुटिका) पत्र, पुटिका २ औषधपुटिका ।

पुड़ी, स स्त्री (सं पुटी>) दे 'पुड़िया' २ पटहचर्मन् (न)।

पुण्य, स पु (स न) शुभादृष्ट, सुकृत, धर्म सुभद्र, कृत्य, धर्म, वृष, श्रेयस् (न)। वि, शुभ, मगल, पवित्र, भद्र, शास्त्र धर्म, विहित।

—भूमि, स स्त्री (स) भारत, भ(भा)रतवर्ष, आर्यावर्त ।

—लोक, स पु (स) स्वर्ग, नाक, सुर लोक ।

—वान्, वि (स-वत्)
—शील, वि (स) } दे 'पुण्यात्मा' ।

—श्लोक, वि (स) सच्चरित्र, आर्यवृत्त।

—स्थान, स पु ([illegible] न) पवित्रस्थल २ तीर्थस्थानम् ।

पुण्यात्मा, वि (स-त्मन्) पुण्यवत्, पुण्य शील, धर्मशील, धार्मिक, धर्मात्मन् ।

पुण्योदय, स पु (स) सौभाग्योदय, पूर्व सुकृतारम्भ ।

पुतला, स पु (स पुत्तलक) दे 'पुतली'(१) (मृत्तिकावस्त्रादिनिर्मिता) प्रतिमूर्ति प्रति कृति (स्त्री)।

अक्ल का—, वि, चतुर, दक्ष ।

खाक का—, सं पुं, मानव, मनुष्यशरीरम् ।

पुतली, स स्त्री (सं पुत्तली) पुत्रिका, पुत्त लिका, कुरटी, पाञ्चालिका, शालभंजिका २ कनीनिका, तारा,-तारका ३ तन्वी, कृशांगी ४ वस्त्रयंत्र ५ मैनाकारमक्षुरमामम् ।

—का तमाशा, सं पु, पुत्तली-कौतुकनृत्यम् ।

—घर, स पु, वस्त्रयंत्रालय ।

—फिरना, मु, कनीनिके स्तंभ (कर्म, मृत्यु चिह्न) २ दृप (दि प अ)।

पुताई, स स्त्री (हिं पोतना) लेप, लेपन २ लेपन, भृति (स्त्री)-भृत्या ३ सुधालेप ।

पुतारा, स पु, (हिं पोतना) उपदेहन, प्रले पनम् २ लेपन उपदे न, पट-वस्त्रम् ।

पुत्तलिका, स स्त्री (सं) दे 'पुतली' (१)।

पुत्तिका, स स्त्री (स) पतंगिका, मधुमक्षिका विशेष । २ दे 'दीमक'।

पुत्र, स पु (स) पुत्र, आत्मज, तनय, सुत, सूनु, तनु(नू)ज, पुसंतान, दायाद, नंदन, आत्मजन्मन् (पु), अंगज, कुमार दारक ।

—कंदा, स स्त्री, (स) लक्ष्मणाकन्दा, पुत्रद औषधिभेद ।

—घ्नी, स स्त्री, गर्भनाशकयोनिरोगभेद ।

—वती, [illegible] स्त्री (स) सपुत्रा, सुतवती।

—वधू, स स्त्री (सं) स्नुषा, वधू (स्त्री), जनी, पुत्रपत्नी ।

पुत्रिका, स स्त्री (सं) दे 'पुत्री' २ दे 'पुतली' ३ कनीनिका, तारा ।

पुत्री, स स्त्री ([illegible]) कन्या, आत्मजा, दुहितृ (स्त्री), तनुजा, सुता, तनया, स्वजा, नंदिनी।

पुत्रेष्टि, स स्त्री (स) पुत्रनिमित्तक-यज्ञभेद ।

पुदीना, स पु (फा पोदीनह्) पुदीन, व्यञ्जन, सुगंधिपत्र, वातहारिन्, अजीर्णहर, रुचिष्य ।

पुन, अव्य (स पुनर्) भूय (अव्य)।

—पुन, अव्य (स) भूयोभूय, वारंवार, रेण, अनेकवार, मुहु, असकृत्, पौन पुन्येन ।

पुनरावृत्ति, स स्त्री (स) पुन पाठ, पुन रध्ययनं २ आवृत्ति प्रत्यावृत्ति (स्त्री) ३ पुन, विधान संपादनं करणं ४ पुनरीक्षण, संशोधनम् ।

पुनरुक्ति, सं स्त्री (स) पौनरुक्त्य, पुन र्वचनम् ।

पुनर्जन्म, सं पु [स-जन्मन् (न)] पुन

र्भव, पुनरुत्पत्ति (स्त्री), प्रेत्यभाव, देहान्तरप्राप्ति (स्त्री)।
पुनर्भू, स स्त्री (स) द्विरूढा, दिधिषू (स्त्री)।
पुनर्वसू, स पु (स द्वि) यामकौ, आदित्यौ (द्वि)।
पुनीत, वि (स) पूत, पवित्र शुद्ध, निर्दोष।
पुन्य, स पु, दे 'पुण्य'।
पुमान्, स पु (स पुस) नर पु(पू)रुष, नृ (पु)।
पुरंदर, स पु (स) दे 'इन्द्र' २ नगरभंजक ३ चौर।
पुरंध्री, स स्त्री (स) पुरंध्रि (स्त्री), कुटुंबिनी २ नारी।
पुर, अव्य (स पुरस्) अग्रे, अग्रत, समक्षे, पुरत, पुरस्तात्, समक्ष (सब अव्य षष्ठी के साथ) २ पूर्वं, प्राक्, अवाक् (सब अव्य पचमी के साथ) ३ प्राच्या दिशि।
पुर, स पु (स न) नगर री, पुर् (स्त्री) पुरी, पत्तन, स्थानीय २ शरीर ३ दुर्ग। ४ गृह ५ लोक, भुवनम्।
—द्वार, स पु (स न) नगर, द्वारम्।
—वासी, स पु (स मिन्) पौर, नागरिक, पुरनगर (नन)।
अन —, स पु (स न) अवरोध, शुद्धान
पुरखा, स पु (स पुरुष >) पूर्वज, पूर्वपुरुषा, पितर, वशकरा (प्राय बहु में)।
पुरजा, स पु (फा) (पत्रपरखादानाम्) खडट, शकल-ल २ अवयव, अगम्।
चलता—, सु, चतुर ३ उद्योगिन्।
पुरवा¹, स पु (स पुर>) स्वग्राम, ग्रामटिका।
पुरवा², स पु (स पूर्ववात) प्राचीपवन।
पुरश्चरण, स पु (स न) पुरस्क्रिया, पूर्वानुष्ठानम्।
पुरस्कार, स पु (स) पारितोषिक, उपायन, प्रतिफल २ आदर, सम्मान, पूजा।
पुरस्कृत, वि (स) आदृत, सम्मानित २ प्राप्तोपायन, लब्धपारितोषिक।
पुरा¹, अव्य (स) पूर्व प्राचीन पुरातन, काले। वि, अतीत, प्राचीन (उ. पुरावृत्त)।
पुरा, स पु (स पुर>) ग्राम।
— कल्प, स पु (स) पूर्वकल्प २ प्राचीन काल।
पुराण, वि (स) प्राचीन, पुरातन। स पु (स न) प्राचीन-कथा आख्यान २ हिंदू नामष्टादश आख्यानग्रन्था (ब्रह्मविष्णुशिव पुराणादि)।
पुरातन, वि (स) पुराण, प्रतन, प्रत्न, चिरतन, चिरत्न, प्राचीन। (पुरातनी स्त्री)।
पुराना, वि (स पुराण) दे पुरातन' २ जीर्ण, शीर्ण, ३ अनुभविन्, सानुभव।
—खुर्राट, सु, वृद्ध, जरठ २ अत्यनुभविन्।
पुरी, स स्त्री (स) नगरी, नृपावास, दे 'पुर'।
पुरीष, स पु (स न) विष्ठा, दे 'पाखाना' २ जलम्।
पुरु, स पु (स) नृपविशेष, ययाते कनिष्ठ पुत्र। वि, प्रचुर, बहु।
पुरुष, स पु (स) मनुज, मानुष, दे 'मनुष्य' २ नर, नृ, पुम ३ परमेश्वर ४ आत्मन् ५ पूर्वज, पूर्वपुरुष, ६ पति ७ क्रियासर्वनामादीना रूपभेद (व्या) ८ शरीरम्।
—कार, स पु (स) उद्योग, पुरुषार्थ।
—द्वेषी, स स्त्री (स) पतिघातिनी नारी।
—धर्म, स पु (स) मनुष्यमात्रस्य धर्म।
—धौरेयक, स पु (स) नरपभ नरपुगव।
—पुर, स पु (स न) गांधारदेशराजधानी (वर्तमान पेशावर)।
—मेध, स पु (स) यज्ञभेद, नरमेध।
—वार, स पु (स) रवि मगल बृहस्पति शनि-वार वासर।
—सूक्त, स पु (स न) ऋग्वेदस्य यजुर्वेदस्य च सूक्तविशेष (यह 'सहस्रशीर्षा' से आरंभ होता है)।
महा—, स पु (स) महानात्मन, नरपुंगव, महात्मन् २ दुष्ट, दुरात्मन्।
पुरुषत्व, स पु (स न) पौरुष, वीर्य, साहस २ पुंस्त्व, नरत्वम्।
पुरुषार्थ, स पु (स) उद्यम, प्रयत्न, उद्योग, परिश्रम, पौरुष, पराक्रम, पुरुषकार २ पुरुष, प्रयोजन-ध्येय (धर्मार्थकाममोक्षा) ३ शक्ति (स्त्री), बलम्।
पुरुषार्थी, वि (स थिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्, परिश्रमिन्, उद्योग-उद्यम परिश्रम, शील-पर २ समर्थ, बलवत्।

पुरुषोत्तम, स पु (स) पुरुषश्रेष्ठ, नरकुंजर, मनुजश्रेष्ठ २ विष्णु ३ श्रीकृष्ण ।

पुरोहित, स पु (स) पुरोधस् (पु), सौवस्तिक धर्मकर्मादिकारयिता याज्ञिक, याजक ऋत्विज ।

पुरोहिताई, स स्त्री (स पुरोहित >) पौरोहित्य, पुरोहितकर्मन् (न) २ पुरोहित दक्षिणा ।

पुरोहितानी, सं स्त्री (स पुरोहित >) पुरोहित, पत्नी भार्या ।

पुल, स पु (फ़ा) सेतु, वारण सवर ।

—बाँधना, सेतु बंध् (क् प अ) निर्मा (जु आ अ) ।

पुलक, स पु (स) रोमांच राम, उद्गम हर्ष विकार-उद्भेद, त्वक्पुष्प, त्वगंकुर २ रत्नभेद ।

पुलकावली, स स्त्री (सं) पुलकावलि (स्त्री), हर्षोत्फुल्लरोमाणि (न बहु) ।

पुलकित, वि (स) रोमांचित, रोमांकित, पुलकित, जातपुलक, सपुलक, कंटकित २ प्रहृष्ट, प्रसन्न ।

—करना, क्रि स, रोमांचयति (ना धा), रोमाणि उद्-हृष् (प्रे) ।

—होना, क्रि अ, रोमाणि उद्गम् (भ्वा प अ) हृष (दि प से) ।

पुलपुला, वि (अनु) दे 'पिलपिला' ।

पुलाव, स पु (फ़ा) मांसौदन, भक्तामिषम्, पललान्नम् ।

पुलिंद, सं पु (स) चांडालभेद, प्राचीन जातिविशेष ।

पुलिंदा, स पु (हिं पूला) कूर्च, भार, पोट्टली ।

पुलिन, सं पु (स पु न) तोयोत्थिततट टी २ कूल, तीर, तट, ३ सैकत, सिकता मय तटम् ।

पुलिस, स स्त्री (अ) नगररक्षकाः, पुरपालाः, रक्षापुरुषाः (बहु) रक्षिगण ।

—इन्स्पेक्टर, स पुं (अं) रक्षक-रक्षि, निरीक्षक ।

—मैन, स पु (अ) रक्षक, दंडधर, रक्षक रक्षा-रक्षि, पुरुष, नगरपाल, राजपुरुष ।

—सब इन्स्पेक्टर, स पु (अ) रक्षकोप निरीक्षक, दे 'थानेदार' ।

—सुपरिंटेंडेंट, स पु (अ) रक्षाध्यक्ष ।

पुवाल, स स्त्री, दे 'पयाल' ।

पुश्त, स स्त्री (फ़ा) दे "पीठ" २ दे 'पीढ़ी' ।

—दर पुश्त, क्रि वि, 'वंशपरंपरया' ।

पुश्तैनी, वि (फ़ा पुश्त>) कुलक्रम-वंश परंपरा, आगत प्राप्त, परंपरीय, परंपरीण ।

पुष्कर, स पुं (स न) कमल, पद्म २ जल ३ तडाग-ग ४ गगनकुसुम = तीर्थविशेष ।

पुष्करिणी, स स्त्री (स) कासार १, तड़ाग क, सरसी, सरोवर ।

पुष्कल, वि (स) अधिक, बहु, प्रचुर, प्रभूत, बहुल, विपुल २ पर्याप्त, पूर्ण ।

पुष्ट, वि (स) पालित स, वर्धित, पोषित, भृत २ बलिष्ठ, पीन, पीवर ३ बल, प्रद वर्धक ४ दृढ ।

पुष्टई, स स्त्री (सं पुष्ट>) पुष्टिकर भक्ष्य औषध वा, रसायनम् ।

पुष्टता, स स्त्री (स) पीनता, पीवरता, दृढ़ांगता ।

पुष्टि, सं स्त्री (स) भरण, पोषण, स, वर्धन २ बलिष्ठता, दृढांगता, पीवरता ३ दृढता ४ समर्थन, अनुमोदन, दृढीकरण, उपो द्वलनम् ।

—कारक, वि (सं) पुष्टि,-कर-दायक, बल वीर्य-वर्धक ।

पुष्प, स पु (स न) कुसुम, प्रसून, सुमनः वक, सुम, फूल, सुमन, प्रसव, सुमनस् (स्त्री न, केवल बहुवचन में) २ आर्तव, ऋतुस्राव, रजःस्राव ३ नेत्ररोगभेद (हिं फूला) ४ कुबेरविमानम् ।

—करंड, —डक, सं पु (सं) उज्जयिन्या प्राचीनशिवोद्यानम् २ कुसुमकरंडः ।

—काल, स पु (स) वसंत, ऋतुराज । २ नारीणां आर्तवरज, समय ।

—कीट, स पु (स) भ्रमर, षट्पद २ कुसुमकीट ।

—रस, सं पुं (सं) मकरन्द, भ्रमरस, पुष्परस ।

—धन्वा,-बाण,-शर, —सुर, स पु (सं) पुष्पधन्वन् (पुं) मदन, दे 'कामदेव' ।

—पुर, स पुं (स न) दे 'पटना' ।

—रस, स पु (स) पुष्पासव, मामर, मकरंद ।
—राज, स पु (स) दे 'पुखराज'।
—रेणु, स पु (स) पराग, पुष्पधूलि (स्त्री)।
—वाटिका, स स्त्री (स) पुष्प-कुसुम-वाटी उद्यानम्।
—वृष्टि, स स्त्री (स) पुष्प-कुसुम,-आसार वृष्टि ।
पुष्पक, स स्त्री (स पु न) कुबेरविमान २ पुष्प ३ चक्षुरोगभेद ४ विनम्भस्मम् (न)।
पुष्पित, वि (स) कुसुमित, कुसुम पुष्प, विशिष्ट-युक्त।
पुष्पोद्यान, स पु (स न) दे 'पुष्पवाटिका' ('पुष्प' के नीचे)।
पुष्य, स पु (स) सिध्य, तिष्य, (अष्टम नक्षत्र) २ पौषमास ।
पुस्तक, स पु (स पु न) ग्रंथ, पुस्त-स्ती।
पुस्तकालय, स पु (स) ग्रंथ, आलय भंडार शाला।
पूँछ, स स्त्री (स पुच्छ) लांगू(गु)ल, लूम, (बालोंवाली पूँछ) बालधि, बालहस्त २ पृष्ठ पश्चाद्भाग ३ दे 'पिछलग्गा'।
पूँजी, स स्त्री (स पुज >) मूल,-द्रव्य धन, मूल २ संचितसंपत्ति (स्त्री) धन, पुज राशि ।
—पति, स पु, द्रव्यवत्, धनिन, कोटीश्वर, धनाढ्य ।
पूआ, स पु (स पूप) अपूप, पिष्टक ।
पूग, स पु (स) गु(गू)वाक, क्रमु, क्रमुक २ समुदाय, समूह ३ (स न) क्रमुक गु(गू) वाक, फलम्।
—फल, पूगीफल, स पु, (स पूगफल) पूग, चिक्कण-कणा, उद्वेगम्।
पूछ, स स्त्री (हि पूछना) पृच्छा, प्रच्छना, अनुयोग, प्रश्न, जिज्ञासा २ आदर, समान, प्रतिष्ठा ३ आवश्यकता, प्रयोजन ४ अन्वेषण णा, गवेषण णा।
—गाछ, —ताछ, —पाछ, } स स्त्री, दे 'पूछ'(१)।
पूछना, क्रि स (स पृ(प्र)च्छन) प्रच्छ् (तु प अ), प्रश्नयति (ना धा), अनुयुज् (रु आ अ) २ आदृ (तु आ अ) समन् (प्रे)। स पु, प्रच्छन-ना, पृच्छा, अनुयोग, जिज्ञासा।
पूछने योग्य, वि, प्रष्टव्य, जिज्ञासितव्य, अनुयोक्तव्य।
पूछनेवाला, स पु प्रष्टृ, अनुयोक्तृ, जिज्ञासु ।
पूछा हुआ, वि, पृष्ट, अनुयुक्त, जिज्ञासित इ ।
बात न—, मु, न आदृ (तु आ अ) न समन् (प्रे)।
पूजक, स पु (स) पूजयितृ, अर्चक, उपासक, आराधक भक्त ।
पूजन, स पु (स न) पूजा, अभि, अर्चन ना अर्चा, आराधन-ना, सपर्या, उपासन-ना २ समादर, सत्करण ३ वंदन-ना।
पूजना, क्रि स (स पूजन) पूज् (चु), अभि, अर्च् (भ्वा प से, चु), उपास् (अ आ से), आराध् (स्वा प अ), मा (भ्वा उ अ) २ समन् (प्रे), आदृ (तु आ अ) ३ वद् (भ्वा आ से), नमस्यति (ना धा) ४ उत्कोच दा। स पु, दे 'पूजन'।
पूजनीय, वि (स) दे 'पूज्य'।
पूजा, स स्त्री (स) दे 'पूजन'।
पूजार्ह, वि (स) दे 'पूज्य'।
पूजने योग्य, वि, दे 'पूज्य'।
पूजनेवाला, स पु, दे 'पूजक'।
पूजा हुआ, वि, दे 'पूजित'।
पूजित, वि (स) अभि, अर्चित, आराधित, उपासित २ समानित, आदृत, सत्कृत ३ वंदित, नमस्कृत।
पूज्य, वि (स) पूजनीय, पूजयितव्य, पूजार्ह, अभि, अर्चनीय, आराधनीय, माननीय २ आदरणीय, माननीय, सत्कार्य, वंदनीय।
—पाद, वि (स) परम-अत्यंत, पूजनीय आराध्य।
—पूजा, स स्त्री (स) सत्कार्यसत्कार, अर्चनीयपूजनीय,-वन्दना-समादर ।
पूडा, स पु (स पूप) अपूप, पिष्टक ।
पूडी, स स्त्री दे 'पूरी'।
पूत, वि (सं) दे 'पवित्र'।
पूत, स पु, दे 'पुत्र'।
पूतडा, स पु (हि पूत) शिशु-बाल्क, आस्तर-विस्तर ।

—(डो) का अमीर, मु परपरागत क्रमागत परपरीण, धनिक धनाढ्य ।

पूतना, स स्त्री (स) राक्षसीविशेष २ बाल रोगभेद ।

पूति, स स्त्री (स) दे 'पवित्रता'।

पूनी, स स्त्री (स पू >) पिंजिका, तूल, नालिका वर्त्तिका ।

पूप, स पु (स) अपूप पिष्टक ।

पूर, स पु (स) जलविप्लव ह्रद २ व्रण संशुद्धि (स्त्री)।

पूरक, वि (स) पूरयितृ, पूरणकर्तृ २ मैत्रिक परिशिष्टात्मक । स पु, बीजपूर, मातुलुंग, सुफल २ गुणकांक (गणित) ३ प्राणायामभेद ।

पूरण, स पु (स न) भरण, निचयन, मकुलीकरण व्यापन २ निर्वर्तन, निष्पादन, समापन, संपादन ३ अंकगुणनम्। वि, पूरक, पूरयितृ ।

पूरना, क्रि स (स पूरण) पूर् (चु) पृ भृ (जु उ अ) २ आच्छद् (चु) ३ संपद् साध् (प्रे) ४ रचा (भ्वा प अ), (वायुना) पूर् (च) ५ दे 'बटना'।

पूरब, स पु, दे 'पूर्व'।

पूरबी, वि, दे 'पूर्वी'।

पूरा, वि (स पूर्ण) पूरित, व्याप्त, संकीर्ण,आसमग्र,कुल, आविष्ट, निचित, सभृत २ समग्र, समस्त, सकल, ३ अविकल, निर्दोष ४ यथेष्ट, पर्याप्त ५ सपन्न, संपादित, कृत।

—करना, क्रि स समाप (स्वा उ अ) निर्वृत् (प्रे), नि शिप (प्रे), अत गम् (प्रे), सपूर (चु)।

—होना, क्रि अ, समाप (कर्म), अंत गम् (भ्वा प अ), नि शेषी भू, सपद् (दि आ अ)।

—उतरना, मु, यथोचित वृत् (भ्वा आ से) २ सफली भू।

—होना, मु, स्वर्गं दिव गम्, मृ (तु आ अ)।

पूरित, वि (स) दे 'पूरा (१)। २ तृप्त, तुष्ट ३ गुणित, आ नि हत।

पूरी, स स्त्री (स) पू(पो)लिका, पूपिका। सस्ता—, शष्कुली।

पूर्ण, वि (स) दे 'पूरा'(१ ५)।

—काम, वि (स) आप्तकाम, संपन्नमनोरथ २ निष्काम, अकाम, निरिच्छ।

—चंद्र, स पु (स) पूर्णेन्दु ।

—विराम, स पु (स) वाक्यपूर्णताचिह्नम्।

पूर्णतया, पूर्णत, क्रि वि (स) अशेषत, सर्वथा, साकल्येन,सामग्र्येण, सामस्त्येन, निरवशेषम्।

पूर्णता, स स्त्री (स) समग्रता, साकल्य २ सिद्धि, समाप्ति (स्त्री) ३ अविकलता, निर्दोषता ४ पूरितत्व, सभृतता।

पूर्णमासी, स स्त्री (स) दे 'पूर्णिमा'।

पूर्णाहुति, स स्त्री (स) यागान्ताहुति (स्त्री) २ अनुष्ठानावसानकृत्यम्।

पूर्णिमा, स स्त्री (स) पूर्णमा, पौर्णमासी, राका, निरुपा, चान्द्री सिता, इन्दुमती, ज्योत्स्नी।

पूर्त्त, स पु (स न) पालनं २ वापीकूप तडागादिनिर्माणम्।

पूर्त्ति, स स्त्री (स) (आरब्धस्य) समाप्ति निवृत्ति सिद्धि निष्पत्ति (स्त्री) २ पूर्णता, समग्रता ३ पूरण ४ गुणन ५ अपेक्षितद्रव्योपस्थापनम्।

पूर्व, स पु (स पूर्वा) प्राची, पूर्वा, दिशा दिश (स्त्री) आशा, ऐंद्री २ पूर्वदेश, पौरस्त्यजनपद । वि, अग्रग, पूर्वग, अग्रपूर्व गामिन् वर्तिन् २ पुराण, प्राचीन ३ दे 'पिछला'। क्रि वि, प्राक्, अर्वाक् (दोनों अव्य)।

—काय, स पु (स) (पशूना) देहाग्रभाग २ (नराणा) देहोर्ध्वभाग ।

—काल, स पु (स) प्राक्पूर्व प्राचीन, समय काल वेला।

—कालिक, वि, —कालीन, वि (स) पुराण,प्राचीन,प्राक्कालीन,पुरातन, प्राक्तन।

—कृत, वि (स) प्राग्विहित २ पूर्वजन्मकृत।

—जन्म, स पु [स जन्मन् (न)] प्राग्जनि (स्त्री)।

—दिशा, स स्त्री (स) दे. 'पूर्व' स पु (१)।

—पक्ष, स पु (स) शास्त्रीय प्रश्न तर्क, चोद्य, देश्य, शंका २ कृष्णपक्ष ३ दे 'पूर्ववाद'।

—पक्षी, स पु (स -क्षिन्) वादिन्, सिद्धान्त विरोधिन्।

—मीमांसा, स स्त्री (स) नैमिनिमुनिप्रणीत दर्शनग्रन्थविशेष ।

—वत्, क्रि वि (स) यथपूर्वं, पूर्वमद्‌ग्राम् ।

—वर्ती, वि (स निन्) प्राग्वर्तिन्, पूर्व-अग्र, गामिन् ।

—वाद, स पु (स) भाषा, भषापाद पूर्व, पक्ष, प्रतिज्ञा, अभियोग दे 'नालिश' ।

—वादी, स पु (स दिन्) अभियोक्तृ अर्थित, वादिन् शिरोवनिन्, दे 'मुद्दई' ।

पूर्वज, स पु (स) पूर्वपुरुषा, पितर (बहु) २ अग्रज, ज्यायान् भ्रातृ । वि, प्रागुत्पन्न ।

पूर्वत, अव्य (स) प्रथम, प्रथमत २ पुरत अग्रत (सब अव्य) ।

पूर्वतन, वि (स) पुरातन, प्राचीन, प्रतन, प्रत्न ।

पूर्वापर, वि (स) अग्रिमपश्चिम पूर्वपरवर्तिन् । स पु प्राचीनप्रतीच्यौ (द्वि) २ हानिलाभौ (द्वि) ।

पूर्वाभिमुख, (वि स) प्राङ्मुख (-खी स्त्री) ।

पूर्वाह्न, स पु (स) दिवा विभक्तदिवसस्य प्रथमभाग, प्राह्ण, प्राग्‌दह्न ।

पूर्वी, वि (स पूर्वीय) प्राच्य, पौरस्त्य, पूर्वदेशीय, पूर्वदिक्‌स्थ, प्राच् [ची (स्त्री)] । स्त्री, पूर्वीयभाषाविशेष २ रागिणीभेद ।

पूर्वीय, वि (स) दे 'पूर्वी' वि ।

पूला, स पु (स पूल) पूलक ।

पूष, पूस, स पु, दे 'पौष' ।

पृथक्, वि (स) भिन्न, व्यतिरिक्त, विश्लिष्ट, विभक्त, असलग्न । अव्य, विना, ऋते, अन्तरेण (सब अव्य) ।

—पृथक्, अव्य, वि, वि, भिन्नम् ।

पृथक्ता, स स्त्री (स) पृथक्त्व, पृथग्भाव, पार्थक्य, भिन्नता, विश्लेष, विभेद ।

पृथा, स स्त्री (स) कुन्ती, पाण्डुपत्नी, युधिष्ठिरादिजननी ।

—तनय, स पु (स) युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, (प्राय अर्जुन, पार्थ) ।

—पति, स पु (स) पाण्डुनृप, कुन्तीपति ।

पृथिवी, स स्त्री (स) पृथ्वी, पृथिवि (स्त्री), क्षिति भू भूमि (स्त्री), धरा, धरित्री, क्षोणी, वसुधा, वसुमती, वसुंधरा, अवनी नि (स्त्री), मेदिनी, धरणी-णि (स्त्री), मही हि (स्त्री), अचलकीला, अचला, स्थिरा, इडा ।

—तल, स पु (स न) भूधरणी,-तल २ संसार ।

—नाथ, स पु (स) भू, पति पाल ।

पृथु, वि (स) विस्तीर्ण, विस्तृत, विशाल, २ बहु, प्रभूत ३ विशिष्ट ।

—कीर्ति, वि (स) अतियशस्विन् । सं स्त्री, वसुदेवभगिनी ।

—दर्शी, वि, (स) दूरदर्शिन्, प्राज्ञ ।

—लोचन, वि, विशाल-नेत्र-नयन ।

—शेखर, स पु, (स) गिरि, पर्वत ।

—स्कंध, स पु (स) शूकर, कोल ।

पृष्ट, वि (स) अनुयुक्त, प्रश्नित, जिज्ञासित ।

पृष्ठ, स पु (स न) दे 'पीठ' (१२) । २ पुस्तक, पत्र पर्ण ३ पुस्तकपृष्ठम् ।

—पोषक, स पु (स) सहायक, उपकर्तृ ।

पेंग, स स्त्री (स प्रेङ्खा>) दोलन, प्रेंखण, दोलादि (स्त्री) ।

—चढ़ाना या बढ़ाना, ■, सवेग प्रेंख् (प्रे), उच्चै प्रेंखोल्यति (ना धा) ।

पेंदा, स पु (स रिंड-ड>) तल, अधोभाग, बुध्न ।

पेंसिल, स स्त्री (अ) अङ्कनी, स्वयलेखनी, वर्णिका, वर्णमातृ (स्त्री) ।

पेच, स पु (फ़ा) व्यावर्तन, मोटन, आकुञ्चन २ विघ्न, विशाल प्रत्यूह ३ धूर्तता, शाठ्य ४ उष्णीष-व्यावर्तन ५ यत्र ६ यन्त्रावयव ७ वल्यकीलक ८ पतगसूत्रसग्रथन ९ (मल्लयुद्धादीना) वधगोपाय, युक्ति (स्त्री) १० उष्णीषादेरलंकार ११ दे 'पेचिश' ।

—कश, स पु (फ़ा) कवलयकीलकर्ष २ अपिधानकर्ष ।

—खाना, क्रि अ, मडली-वर्तुली भू ।

—डालना, क्रि स, पतगसूत्राणि मिथ सश्लिष् (प्रे) ।

—ताब, स पु (फ़ा) अत,-कोप क्रोध ।

—दार, वि (फ़ा) आकुञ्चित, व्यावर्तित २ गहन, कठिन, दुर्बोध ३ सश्लिष्ट, सग्रथित ।

—पड़ना, क्रि अ, पतगसूत्राणि परस्पर सश्लिष् (दि प अ) ।

—वान, स पु (फ़ा) बृहद्धूमपानयन्त्र २ धूमपानयन्त्रस्य बृहन्नाली ।

पेचक, स स्त्री (फ़ा) सूत्र-तन्तु,-गोल-गोलम् ।

पेचिश, स स्त्री (फा) प्रवाहिका आमरक्तम् २ उदरवेदनाभेद ।

पेचीदगी, स स्त्री (फा) कौटिल्य, वक्रत्व २ दुर्बोधता क्लिष्टत्व, गहनत्वम् ।

पेचीदा, वि (फा) } दे 'पेचदार'।
पेचीला, वि (फा पेच) }

पेज, स पु (अ) पुस्तक , पृष्ठम् ।

पेट, स पु, (स पेट >) उदर , जठर १ कुक्षि , पिंड , मलुक २ गर्भ ३ आमाशय ४ अन्तःकरण ५ अवकाश ६ विस्तार ७ जीवन, प्राणधारणम् ।

—काटना, मु , धनसचयाय अल्पं खाद् (भ्वा प से) ।

—का धधा, मु , जीवनोपाय , आजीविका साधनम् ।

—का पर्दा, मु , अन्नावरणम् ।

—का हलका, मु , क्षुद्रप्रकृति, तुच्छ, प्राकृत ।

—की आग, मु , क्षुधा, बुभुक्षा ।

—की आग बुझाना,—मु , क्षुधा निवृत् (प्रे) ।

—गिरना, मु , गर्भ पत् (भ्वा प से) स्रु (भ्वा प अ) ।

—गुडगुडाना या बोलना, मु , कर्दन अन् (दि आ मे) कद् (भ्वा प से) ।

—दिखाना, मु , निजदारिद्र्य प्रकटयति (ना धा) ।

—पालना, मु , कृच्छ्रेण जीव् (भ्वा प से), यथाकथंचित् उदरं पृ (जु प से) ।

—पीठ एक होना, मु अत्यंत क्षि (भ्वा प अ), कृशीभू ।

—फटना, मु , अधीर (वि) भू , धैर्यं मुच् (तु प अ) ।

—फूलना, मु , हासातिशयेन उदर स्फाय (भ्वा आ से) श्वि (भ्वा प से) ।

—भर, मु , उदरपूर्ति यावत् २ यथेष्टम् ।

—भरना, मु , सपरि तुष् (दि प अ), परि तृप् (दि प अ) २ उदर पूर् (कर्म) ।

—में चूहे कूदना या दौड़ना, मु , नितरा क्षुध (दि प अ), अत्यन्त अशनायति (ना धा) ।

—रहना, } मु गर्भ धृ (चु), अन्तर्वत्नी
—से होना, } भू ।

—वाली, मु , गर्भिणी, गर्भवती, अन्तर्वत्नी ।

—से पाँव निकालना, मु सज्जन कुमार्गे प्रवृत् (भ्वा आ से) ।

पेटा, स पु (हिं पेट) मध्य, मध्यभाग २ विस्तृतविवरण ३ दे 'घेरा' ४ सीमा ५ परिधि ६ सरित्प्रवाहमार्ग ७ नदी विस्तार ८ पक्षेत्र ९ *पतगसूत्रशिथिल्भाग ।

पेटी[1], स स्त्री (सं) पेटिका, लघु पेट पेट पेरा, मजूषा, समुद्गक २ नापितकोश प ।

पेटी[2], स स्त्री (हिं पेट) कटिसूत्र बध, मेखला, काची २ कुल्कुल्कसिमूत्रम् ।

पेटीकोट, स पु (अ) चोली, पटवास ।

पेटू, त्रि (हिं पेट) औदरिक, उदरकुक्षि भरि, अघार, घस्मर ।

पेटेंट, वि (अ)विशिष्टाधिकाररक्षित नवरचना ।

पेट्रन, स पु (अ) सरक्षक दे ।

पेट्रोल, स पु (अ) *प्रस्तरतैलम् ।

पेठा, स पु (देश) (सफेद) पीतपुष्प, कुष्माण्ड, पीतपुष्प, पुष्प बृहत्, फल (पीला पेठा-दे 'कुम्हड़ा') ।

पेड़, स पु (स पिंड ट>) दे 'वृक्ष' ।

पेड़ा, स पु (स पिंड) सितागर्पिण्ड-ड २ आर्द्रचूर्णपिण्ड ।

पेड़ी, स स्त्री (हिं पेड) तरु, स्कन्ध प्रकाण्ड २ कबन्ध ३ नागवल्लीदलभेद ४ सकृल्लूनो नीलीगुप ।

पेड़ू, स पु (हिं पेट) बस्ति (पु स्त्री) २ गर्भाशय ।

पेदड़ी, स स्त्री , दे 'पिद्दी' ।

पेन्शन, स स्त्री (अ) वार्द्धक्य-पूर्वसेवा, वृत्ति (स्त्री) ।

पेन्शनर, स पु (अ) पूर्वसेवावृत्तिभोजिन् ।

पेन्सिल, स स्त्री (अ) दे 'पेंसिल' ।

पेपर, स पु (अ) पत्र, दे 'कागज' २ लेख, लेख्यपत्र ३ वृत्त समाचार, पत्रम् ।

पेय, वि (स) पानीय, पानार्ह, धेय । स पु, पानीयपदार्थ २ जल ३ दुग्धम् ।

पेयूष, स पु (स पे(पी)यूष प) सद्य प्रसूताया गो क्षीर २ अमृत ३ अभिनवघृतम् ।

पेरना, क्रि स (सं पीडन) (यन्त्रेणादि) निष्पीड् (चु), निष्पिष् (भ्वा प अ) २ नितरा पीड् (चु)-अर्द् (भ्वा प से) ।

पेलना, क्रि स (स पीडन) सहसा निविश्

(प्रे) बल्गात् अन प्रविश् (प्रे) २ (हस्तादिकेन) प्र वि चल् (प्रे), मणुद प्रभृत (प्रे)
३ उपेक्ष (भ्वा आ से) अवाण (चु)
४ त्यज् (भ्वा प अ), ग्राम (दि प से) ॥ वल प्रयुज् (रु आ अ) ६ ७ दे पेरना (१ २)।

पेल्वाना, क्रि प्रे व 'पेल्ना' के प्र रूप।

पेल्, म पु (हिं पेल्ना) कलह, वन्युद्ध २ अपराध, दोष ३ आक्रमण ४ (वन्द्व) अपमारण मच्चन्नम्।

पेश, क्रि वि (फ) अग्रे पुर, पुरत, समुख (सव अव्य)।

—आना, मु, व्यवह (भ्वा प अ), आचर् (भ्वा प से) २ सद्‌वृत् (भ्वा आ से)।

—करना, मु पुरत स्था (प्र स्थापयति) दृश् (प्रे) २ उपह (भ्वा प अ), ऋ (प्रे अर्पयति)।

—चलना या जाना, मु, प्रभुत्व वृत।

—होना, मु, उपस्था (भ्वा आ अ), पुरत स्था (भ्वा प अ)।

पेशगी, न स्त्री (फा) प्राग्दत्तमूल्य,*अग्रार्घ।

पेश (प, स) ला, वि (म) सुकुमार, मृदु, मृदुल २ तनु क्षीण ३ सुन्दर, मनोज्ञ ४ विज्ञ, दक्ष ५ छलिन्, मायिन्।

पेशवा, स पु (फा) नेतृ, नायक, अग्रणी २ पुरोहित ३ महाराष्ट्रामात्योपाधि।

पेशवाई, स स्त्री (फा) प्रत्युद्गमन, दे अगवानी २ नेतृत्वम्।

पेशा, न पु (फा) व्यवसाय, उपजीविका, वृत्ति (स्त्री)।

—कमाना या करना, मु वेश्यावृत्त्या निर्वाह कृ।

पेशानी, म स्त्री (फा) मस्तक २ भाग्य ३ अग्रभाग।

—पर बल आना या पढना, मु, क्षुभ (दि प अ), कुप्‌ रुष (दि प से)।

पेशाब, म पु (फा, मि० म प्रस्राव)मूत्रम्।

—की अधिकता, स स्त्री, मूत्र,मेह आधिक्यम्।

—खाना, स पु (फा) मूत्रालय, मेहनशाला, प्रस्रावागारम्।

—निकल कर आना, स पुं, मूत्रकृच्छ्रम्।

—रुकना, स पु, मूत्र, रोध स्तम्भ।

पेशावर,[1] स पु (फा) व्यवसायिन्, उपजीविन्।

पेशावर,[2] स पु (फा पेश+अवर>) पुरुषपुरम्।

पेशी[1], स स्त्री (फा) व्यवहारदर्शन, विचार २ उपपुर, स्थान स्थिति (स्त्री), *पुरोभाव।

पेशी,[2] स स्त्री (स) (देहस्था) मास पिण्डी ग्रन्थि (पु) २ वज्र ३ अण्ड ४ असि कोश प ५ गर्भावेष्टनचर्मनयरोध।

पेशीनगोई, स स्त्री (फा) भविष्यद्वाद, अनागतकथनम्।

पेषण, स० पु (म न) चूर्णन, मर्दन खण्डनम्।

पेषणी, स स्त्री (स) पेषणशिला, पेषणि (स्त्री), पट्ट गृहाश्मन् (पु)।

पैंजनी, स स्त्री (हिं पायँ+अनु. झन>) पादांगद, नूपुर -र, मञ्जीर -रम्।

पैंठ, म स्त्री (स पण्यस्थान) दे 'बाजार' २ दे 'दुकान'।

पैंड, स पुं (स पाददण्ड >) पदन्यास, चरणपात, क्रमण २ पद, क्रम ३ मार्ग।

पैंडा, न पु (हिं पैंड) मार्ग, पथ, पथिन् २ मदुरा, वाजिशाला ३ रीति (स्त्री), प्रणाली।

पैंताना, म पु. (हिं पायँ) खट्वाग्र पदभाग, *पदतल।

पंतालीस, वि [स पञ्चचत्वारिंशत् (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (४५) च।

पैंतीस, वि [स पञ्चत्रिंशत् (नित्य स्त्री.)]। स पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (३५) च।

पंसठ, वि [स पञ्चषष्टि (नित्य स्त्री)।] स पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (६५) च।

पै[1], अव्य (म पर) परन्तु किन्तु, पर २ अनन्तर, तदनु ३ निश्चयेन, अवश्यम्।

जौ—, यदि।

तौ—, तदा।

पै[2], अव्य (हिं पास या स प्रति) समीपे पे, निकटे २ प्रति, दिशि।

पै, प्रत्य (स उपरि) अधि, प्राय सप्तमी विभक्ति मे २ द्वारा, प्राय तृतीया विभक्ति मे ।

पैकेट, स पुं (अ) ल्पुटक २ पत्रकोश ।

पैगवर, स पु (फा) दूत, धर्मप्रवचक ।

पैगाम, स पु (फा) सदेश वार्ता ।

पैठ, स स्त्री (स प्रविष्ट>) प्रवेश, प्रविष्टि (स्त्री.) २ गति प्राप्ति (स्त्री), गतागतम् ।

पैड, स पु (अ) पत्राली ।

पैड़ी, स स्त्री (हिं पैर) दे 'सीढ़ी' ।

पैतरा, स पु (स पदान्तर>) युद्धे पादन्यास प्रकार ।

—**बदलना**, मु पादन्यास परिवृत् (प्रे) ।

पैतृक, वि (स) पितृ-सबधिन् विषयक, पित्र्य, पैत्र [पैतृकी, पैत्री, (स्त्री)] ।

पैत्त, वि (स) पैत्तिक, पित्तप्रकोपज, पित्त, जनित उद्भूत ।

पैत्तल, वि (स) पैत्तलक पीतक-पित्तल, मय निर्मित-सम्बन्धिन् ।

पैत्र, वि (स) दे० 'पैतृक' ।

पैदल, क्रि वि (स पाद>) पादचारी भूत्वा, पद्भ्यामेव, यान विना । वि, पाद चारिन् गामिन् । स पु, पदिक, पादत, पादगामिन्, पदाति नि, पदातिक, पद्ग, पत्ति, पद्ग २ पत्तय, पदातय, पदातिका (सब बहु) ।

पैदा, वि (फा) जात, उत्पन्न २ प्रकटित, आविर्भूत ३ आजत, प्राप्त ।

पैदाइश, स स्त्री (फा) उत्पत्ति (स्त्री), जन्मन् (न) ।

पैदाइशी, वि (फा) सहज, औत्पत्तिक २ स्वाभाविक, प्राकृतिक, नैसर्गिक ।

पैदावार, स स्त्री (फा) कृषिफल, शस्य २ आय, अर्थागम ।

पैना, वि (स पैनु>) तीक्ष्ण, निशि(शा)त, तेजित, क्ष्णुत । स पु, कृपाण, तीत्रवेणुकम् ।

पैमाइश, स स्त्री (फा) मान, प्रपरि माणं, मापनम् ।

—**करना**, क्रि स, दे 'मापना' ।

पैमाना, स पु (फा) मान, मान, दण्ड सूत्र ३, प्र परि, माणम् ।

पैर, स पु, दे 'पाँव' ।

—**गाड़ी**, स स्त्री, द्विचक्री क्रिका, पादयानम् ।

पैरना, क्रि अ (स प्लवन) दे 'तैरना' ।

पैरवी, स स्त्री (फा) अनु-गमन सरण, २ आज्ञापालन ३ पक्ष, मंडन-समर्थन ४ उद्यम, प्रयत्न ।

पैरा,, पैराग्राफ, स पु (अ) (प्रस्तावादिवस्य) खड, भाग, अनुपरि, च्छेद ।

पैराक, स पु, दे 'तैराक' ।

पैराव, स पु, दे 'डुबाव' ।

पैराशूट, स पु (अ) •ठयन छत्र,•परिभूतम् ।

पैरोकार, स पु (फा पैरवीकार) अनु यायिन् गामिन् २ पक्षसमर्थक, सहायक ।

पैरोल, स पु (अ) प्रतिज्ञा, सगर ।

—**पर**, वि, प्रतिज्ञा-संगर,-बद्ध ।

पैवंद, स पु (फा) पटखड द, प्रभिन्न शकल-ल २ वृक्षान्तरनिवेशित, प्ररोह शाखा, दे 'कलम' ।

—**लगाना**, क्रि स, वृक्षान्तरे निविश् (प्रे) २ पटखडै सिव (दि प से)-संधा (जु उ अ) ।

पैवंदी, वि (फा) दे 'कलमी' ।

पैशाचिक, वि (स) पैशाच, आसुर, भीत २ घोर, बीभत्स, क्रूर, निर्दय ।

पैशाची, स स्त्री (स) प्राकृतभाषाविशेष ।

पैशुन्य, स पु (स न) दे 'पिशुनता' ।

पैसा, स पु (स पणांश >) पण, पणक २ धन, वित्तम् ।

पैसेवाला, स पु, धनिक, धनाढ्य २ पणार्ध ।

पोंगा, स पु (स पुटक >) कीचकपर्वन् (न), अन्त शून्यवेणुनाली । वि, शून्यगर्भ, शून्योदर २ अज्ञ, अज्ञ ।

पोंगी, स स्त्री (हि पोंगा) दे 'बाँसुरी' ।

पोंछना, क्रि स (स प्रोंछन) प्रोंछ (भ्वा प से) मृज (अ प से, चु), निघृष्य शुध् (प्रे) निघृष् (भ्वा प से) । स पु, प्रोंछन, मार्जन, निर्घर्षणम् ।

पोंछने योग्य, वि, प्रोंछनीय, निर्घृष्य, शोधनीय ।

—**वाला**, स पु, प्रोंछक, मार्जक ।

पोंछा हुआ, वि, प्रोंछित, निर्घृष्ट, शोधित ।

पोखर, स पु (स पुष्कर) दे 'तालाब' ।

पोट, स स्त्री (स पोट >) पोट्टली-लिका २ राशि ।

पोटला, स पु (हि पोटली) वृहत् चेल,भार ।

पोटली, स स्त्री (स पोट्टली) पोट्टलिका, लघु-कूर्च भर ।

पोटा, स पु (स पुट >) उदर, जठर, उदराशय २ साहस, शौर्य ३ सामर्थ्य ४ अगुल्यग्र ५ अगुलीपर्वन् (न)।

पोटाशियम, स पु (अ) दहातु (न), पोटाशम्।

पोत, स पु (स) पोथ, पाहित्य, प्रवहण, छोड महानौका २ शाव-वत्स, अर्भक, पोतक, पृथुक, डिम्भ ३ वस्त्र ४ दश वर्षो गज ।

पोतड़ा रा, स पु (हिं पोतना) *शोधन (शिशुमल) *प्रोञ्छन ।

पोतना, क्रि स (स पोतन>) (सुधा मृत्तिकादिभि) लिप (तु प अ) - अप (रु प से) दिह (अ उ अ)। स पु, लेपनवस्त्रम्।

पोता[1], स पु (स पौत्र) पुत्रपुत्र, नप्तृ।

पर—, स पु (स प्रपौत्र) पुत्रपौत्र पौत्रपुत्र ।

पोता, स पु (हिं पोतना) लेपनवस्त्र २ लेपनकूर्ची विशा ३ (लेपनाय) अर्द्र मृत्तिका ।

—फेरना, मु., सवस्व लुठ (चु) २ सुधा मृत्तिकादिभि लिप (तु प अ)।

पोताई, स स्त्री दे 'पुताई' ।

पोती, स स्त्री (स पौत्री) पुत्रपुत्री, नप्त्री ।

पर—स स्त्री (स प्रपौत्री) पुत्रपौत्री, पौत्रपुत्री ।

पोत्या, स स्त्री (स) पोतसमूह, नौका पंक्ति (स्त्री)।

पोथा, स पु (स पुस्तक) वृहत् पुस्तक ग्रंथ ।

पोथी, स, स्त्री (स पुस्ती) पुस्तक ग्रथ ।

पोदीना, स पु, दे 'पुदीना'।

पोना, क्रि स, (हिं पूआ+ना) उष्मचूर्णेन रोटिका रच् (चु) २ रोटिका पच् (भ्वा प अ) ३ दे 'पिरोना'।

पोप, स पु (अ) रोमीयधर्म, अध्यक्ष अधिपति ।

—लीला, स स्त्री (अ + स) धर्माडम्बरविस्तार ।

पोपला, वि (हिं पुल्पुला) दन्त-दशन-रदन विहीन-रहित ।

पोर, स स्त्री [स पर्वन् (न)] अगुली, ग्रंथि-संधि पर्वन् २ अगुलीग्रंथ्यो मध्यभाग पर्वन् ३ मदोत्कादिग्रंथ्योर्मध्यभाग, पर्वन् ।

—पोर में, क्रि वि, पर्वणि पर्वणि, सर्वपर्वसु ।

पोरी, स स्त्री (हिं पोर) दे 'पोर' (३)।

पोल, स प (हिं पोला) अवकाश, शून्य स्थान २ सारहीनता, निस्सारता, शून्यगर्भता, निर्गुणता, अनर्थता ।

—खुलना, मु, पाप प्रकटीभू, दोष विवृ(कर्म)।

पोला, वि (स पोल >) अत शून्य, रिक्त-शून्य-गर्भ-गर्भ-उदर २ निस्सार, तत्त्वहीन ३ दे 'पुलपुला' [पोली (स्त्री)]।

पोलिटिकल, वि (अ) राजनीतिक, राज-शासन, विषयक ।

—एजट, स पु (अ) राजनीतिकप्रतिनिधि ।

पोलो, स पु (अ) दे 'चौगान'।

पोशाक, स स्त्री (फ़ा पोश) वेश-क, परि-धान, वसनानि (बहु)।

पोशीदा, वि (फ़ा) गुप्त, प्रच्छन्न ।

पोषक, वि (सं) पालक, पालयितृ, पोष यितृ सवर्द्धक पोष्टृ २ सहायक ।

पोषण, स पु (स न) पालनं, भरण, सवर्द्धन २ पुष्टि (स्त्री) ३ माहात्म्यम् ।

पोषित, वि (स) पालित, सवर्द्धित ।

पोष्य, वि (स) पालनीय, सवर्द्धनीय ।

—पुत्र, स पु. (स) दत्तक ।

पोसना, क्रि स (स पोषण) दे 'पालना' (१२)।

पोस्ट, स स्त्री (अ) पद, अधिकार. २. पत्र-वाहनव्यवस्था ३ दे 'डाक'।

—आफिस, स पु (अ) पत्रालय ।

—कार्ड, स पु (अ) पत्रम् ।

—मार्टम, स प (अ) शवपरीक्षणम् ।

—मास्टर, स पु (अ) पत्रालयाध्यक्ष ।

—मैन, स पु (अ) पत्रवाहक ।

पोस्टेज, स स्त्री (अ) पत्रशुल्कम् ।

पोस्त, सं पु (फ़ा) खसतिल-खसखस फल २ खस्खसवृक्षक ३ त्वच (स्त्री) ४, वल्कल ल, वल्क-कम् ।

पोस्ती, स पु (फ़ा) खस्खसफलसेविन् २ अलस, मथर ।

पोस्तीन, स पु (फ़ा) *चर्मकंचुक ।

पौंचा, स पु (हिं पाच) सार्द्धपचगुणनसूची ।

पौंड, स पु (अ.) निष्क, स्वर्णमुद्रा(१) अर्द्धसेर देशीय आग्लतोल ।

पौंडा, स पु (स पौंड्र) पौंड्रक । इक्षुभेद ।

पौ,[1] स स्त्री (स पाद >) किरण रश्मि, ज्योतिस् (न) अहर्मुख, उषा ।

—फटना, मु, वि प्र, प्रात जन् (दि आ मे) अरुण उत् इ (अ प अ) ।

पौ,[2] स स्त्री (स पद >) अक्षपातभद ।

—बारह होना, मु, जि (भ्वा उ अ) २ भाग्य उत् इ (अ प अ) ।

पौडर, सं पु (अ) क्षीण चूर्ण २ पटवासक पिष्टान ।

पौढ़ना, क्रि अ, दे 'लेटना' ।

पौत्र, स पु (स) दे 'पोता' ।

पौत्री, स स्त्री (सं) दे 'पोती' ।

पौद, स स्त्री (स पोत >) बालवृक्ष वृक्षक, २ स्थानांतरे आरोपणीय उद्भिज्ज ३ सन्तान, वंश ।

पौदा, पौधा, स पु. (स पोत >) क्षुद्रपादप, वृक्षक, उद्भिज्ज, बालतरु २ क्षुप, गुल्म ।

पौन,[1] वि (स पादोन) त्रिचतुर्थ, त्रितुर्य, त्रिपाद [पौनी (स्त्री)] ।

पौन,[2] स पु स्त्री दे 'पवन' ।

पौना, सं पु (स पादोन) पादोनगुणनसूची । वि, दे 'पौन' ।

पौने, वि (स पादोन) दे 'पौन' ।

—सोलह आने, मु, प्राय सार्धपञ्चदशामासत्वेन सामस्त्येन ।

पौर, वि (स) नागरिक पुर नगर सम्बन्धिन् जात ।

—कन्या, स स्त्री (सं) पौर नगर पुर नगर कन्या कुमारी २ नागरी पौराङ्गना ।

—जन, स पु (म) पौर जन नागर नागरिक, पौर, पुर, पुर नगर वासिन् ।

—मुख्य, स पु (स) पौरवृद्ध महापौर ।

—नारी, स पु (स न) स्त्रीनागरिकता ।

पौराणिक, वि (स) पुराणसम्बन्धिन् २ पुराण, वेत्तृ पाठक २ प्राचीन ३ काल्पनिक ।

पौरिया स पु (हिं पौरि) द्वारप द्वारस्थ ।

पौरी पौर्-री, स स्त्री (सं प्रतोली >) (नगर दुर्गादीनाम्) द्वार २ दे 'ड्योढ़ी' ।

पौरुष, स पु (सं न) पुरुषत्व, पुंस्त्व २ पुरुषार्थ, उद्यम, उद्योग ३ साहसम् पराक्रम । वि, पुरुषसम्बन्धिन्, मानुष, मानव ।

पौरुषेय, वि (स) पौरुष, मानवीय, मानव मनुष्य, रचित ।

पौर्णमासी, स स्त्री (स) दे 'पूर्णिमा' ।

पौवा, स पु (स पाद) (सेर) पाद २ पादमानपात्रम् ।

पौष, स पु (स) तिष्य, तैष, पौषिक, हैमन सहस्य ।

पौष्टिक, वि (स) पुष्टि, कर कारक, बलवीर्य, वर्धक ।

पौसर-ला, पौंसाला, स स्त्री (स पय शाला) प्रपा, दे 'सबील' ।

प्याऊ, स पु (स प्रपा) पय शाला, दे 'सबील' ।

प्याज़, स पु (फा) पलाण्डु, मुखदूषण, उष्ण शूद्रप्रिय, कृमिघ्न, दीपन, बहुपत्र, रोचन, मुखगन्धक ।

प्याज़ी, वि (फा प्याज़) पलाण्डुवर्ण ।

प्यादा, स पु (फा) पादग, पदग, पत्ति, पदाति २ दूत, सन्देशहर ३ शारिभेद ।

प्यार, स पु (हिं प्यारा) प्रीति (स्त्री), प्रेमन् (पु न), स्नेह, अनु, राग, भाव, प्रणय, अभिनिवेश २ लालन, चुम्बन आलिङ्गन इ ।

—करना, क्रि स, भाव अनुराग बध् (क् प अ) कम् (भ्वा आ से) स्निह् (दि प स सप्तमी के साथ) २ लल् (चु), आलिङ्ग् (भ्वा प मे), परिरभ् (भ्वा आ अ) चुम्ब् (भ्वा प मे) ।

प्यारा, वि (सं प्रिय) दयित वल्लभ, कान्त, प्रेमपात्र २ हृद्य, रम्य, मनोज्ञ, रुचिर, रुच्य [प्यारी (स्त्री) = प्रिया, वल्लभा, दयिता २ कान्तरी, हृद्या इ] ।

प्याला, सं पु (फा) चषक र, शराव ।

प्याली, स स्त्री (फा) शरावक, लघुचषक ।

प्यास, स स्त्री (स पिपासा) तृष् (स्त्री), तृष्णा, तृषा, तर्ष, उदन्या, पिपासा २ लालसा, प्रबललोभ ।

—बुझाना, मु, तृषा शम् (प्रे) अपनी (भ्वा प अ) ।

—लगना, मु, उदन्यति (ना धा), पिपासति (सन्नन्त) तृष् (दि प स) ।

प्यासा, वि (हिं प्यास) पिपासु, तृषार्त, तृषित, तर्षित ।

प्रकप, स पु (स) वेपथु, रामथु, दे 'कंपकपी'।
प्रकट, वि (स) स्पष्ट, व्यक्त, स्फुट, उल्वण उद्रिक्त २ आविर्भूत, दृष्ट।
—करना, क्रि स, प्रकटयति (ना धा), प्रकटी कृ, प्रकश् (प्रे)।
—होना, क्रि अ, आविर् प्रकटी, भू, प्रकाश (भ्वा आ से)।
प्रकटित, वि (स) प्रादुर् आविर् प्रकटी भूत, २ आविष् प्रकटी, कृत।
प्रकरण, स पु (स न) पौर्वापर्य, पूर्वापर सबध, प्रसग २ अध्याय, परिच्छेद ३ दृश्यकाव्यभेद।
प्रकर्ष, स पु (स) उत्कर्ष श्रेष्ठत्व उत्तमता २ आधिक्य, प्राचुर्यम्।
प्रकाड, स पु (स पु न) स्कध, दण्ड, काण्ड २ शाखा ३ वृक्ष। वि, सुमहत् सुविस्तृत, सुविशाल।
प्रकार, स पु (स) भेद, वर्ग जाति (स्त्री) २ रीति (स्त्री), सारणी, विधि ३ सादृश्यम्।
प्रकाश, स पु (स) आलोक, उज्ज्वलता, आभा, आभास, द्युति द्युति-दीप्ति त्विष्-भास् (सब स्त्री), भासस्-ज्योतिस्-तेजस्(न), द्या, द्योत, प्रभा २ आतप, सूर्यालोक, घर्म ३ अभिव्यक्ति (स्त्री), आविर्भाव ४ प्रसिद्धि (स्त्री) ५ अध्याय।
प्रकाशक, स पु (स) द्योतक, दर्शिवर, उद्भावक २ ख्यापक, प्रकाशयितृ।
प्रकाशन, स पु (स न) प्रकटी आविष्-करण २ प्रख्यापन, प्रचारण (पुस्तकादि का)।
प्रकाशमान, वि (स) भासमान, द्योतमान, भासुर २ प्रसिद्ध, विश्रुत।
प्रकाशित, वि (स) दे 'प्रकाशमान' २ उद्भावित, आविष्कृत ३ प्रचारित, प्रख्यापित, प्रकट।
प्रकाश्य, वि (स) प्रकाशनीय, प्रख्यापनीय, प्रचारणीय।
प्रकीर्ण, वि (स) अवकीर्ण, नष्ट, व्यस्त, विक्षिप्त, विकीर्ण।
प्रकीर्णक, वि (स) दे 'प्रकीर्ण'। स पु (स पु न) चमर, चामरम्। स पु (स) घोट, अश्व। स पु (स न) नाना विविध-बहुविध-वस्तुसग्रह २ प्रकरण, अध्याय ३ विविधविषयाध्याय।
प्रकुपित, वि (स) अति-कुपित-क्रुद्ध-सरब्ध।
प्रकृत, वि (स) वास्तविक-तात्त्विक [-की (स्त्री)] तथ्य, अवितथ, यथार्थ २ सविशेष कृत-रचित विहित।
प्रकृति, स स्त्री (स) स्वभाव, वृत्ति (स्त्री), शील, स्वरूप, धर्म, गुण २ दे 'तासीर' ३ प्रधान माया, जगत उपादानकारण, पृथ्व्यादि-परमाणव (बहु)।
—ज, वि (स) सहज, स्वाभाविक, सह जात, नैसर्गिक।
—मडल, स पु (स न) राष्ट्र, राज्य, देश।
—सिद्ध, वि (स) सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक, औत्पत्तिक।
—स्थ, वि (स) स्वस्थ, शान्त, विकार क्षोभ रहित।
प्रकोप, स पु (स) अत्यत-कोप-क्रोध सरभ अमर्ष २ (रोगादीना) प्रसार, आधिक्य ३ देहधातुविकार।
प्रकोष्ठ, स पु (स) कफोणेरधोमणिबन्ध पर्यन्तो हस्तभाग २ वहिर्द्वारपार्श्वस्थ कोष्ठ ३ विशालाङ्गनम्।
प्रक्षालन, स पु (स न) धावन, मार्जनम्।
प्रक्षालित, वि (स) धौत मार्जित, जलशोधित।
प्रक्षिप्त, वि (स) प्रास्त, अपास्त, निरस्त २ कालान्तरे मिश्रित योजित।
प्रक्षेप, स पु (स) प्रासन, निरसन, प्रक्षेपण, अपासन २ विकिरण ३ पश्चात् मिश्रणम्।
प्रखर, वि (स) उग्र, प्र, चड, प्रबल, तीव्र २ निशि(शा)त, तीक्ष्णाग्र, दे 'तेज'।
प्रख्यात, वि (स) दे 'प्रसिद्ध'।
प्रख्याति, स स्त्री (स) दे 'प्रसिद्धि'।
प्रगट, वि, दे 'प्रकट'।
प्रगल्भ, वि (स) चतुर, दक्ष, कुशल, प्रवीण २ प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभाशालिन् ३ उत्साहिन्, साहसिन् ४ निर्भय, अभय ५ वावदूक, प्रजल्पक ६ गम्भीर, प्रौढ ७ प्रधान, मुख्य ८ धृष्ट, निर्लज्ज, अपत्रप ९ उद्धत, विनय शून्य १० अभिमानिन्, दृप्त ११ पुष्ट १२. समर्थ, शक्त।
प्रगल्भता, स स्त्री (स) दाक्ष्य, कौशल, प्रावीण्य २ प्रतिभा ३ निर्भयता ४ उत्साह ५ वाक्चातुर्य, प्रत्युत्पन्नमतित्व ६ गाम्भीर्य ७ प्रधानता ८. धाष्टर्य, निर्लज्जता ९ औद्धत्य,

वैपाल्य १० अभिमान ११ पुष्टत्व १२ प्रग ल्भ, वावदूकता १३ सामर्थ्यम्।

प्रगाढ़, वि (स) अत्यन्त अत्यधिक प्रभूत, प्रचुर २ अतिग(ग)भीर अतिगहन ३ कठिन, कठिन घन।

प्रग्रह, स पु (स) ग्रहण धारण २ अश्वा दीना रश्मि ३ किरण ४ (तुला) सूत्र ५ बाहु ६ इन्द्रियनिग्रह।

प्रचण्ड, वि (स) तीव्र, उग्र घोर, प्र खर, २ प्रबल, बलवत् ३ भीषण, भयङ्कर ४ कठिन, कठोर ५ असह्य, दुस्सह ६ बृहत् महत् ७ पुष्ट, पीन ८ प्रतप्त ९ प्रतापिन्।

प्रचण्डता, स स्त्री (स) उग्रता, तीव्रता, प्रखरता, २ भीषणता भयङ्करता।

प्रचलन, स पु (स न) दे प्रचार'।

प्रचलित, वि (स) प्रचरित, सचारित प्रसिद्ध, लोकसिद्ध, वर्तमान, विद्यमान।

प्रचार, स पु (स) प्रचलन, प्रसार, सार्वजनिक योग, निरन्तरव्यवहार।

—करना, क्रि स प्रचर्-प्रचार् प्रसृ (प्रे)।

प्रचारक, वि (स) प्रसारक,प्रचालक, विस्तारक। [प्रचारिका (स्त्री)]।

प्रचुर, वि (स) विपुल, बहुल, अधिक, प्रभूत, प्राज्य, बहु, भूयिष्ठ, भूरि।

प्रचुरता, स स्त्री (स) बाहुल्य, आधिक्य, वैपुल्य, भूयिष्ठत्वम्।

प्रच्छन्न, वि (स) गुप्त, गूढ अदृष्ट, तिरो भूत २ आच्छादित आवेष्टित।

प्रजा, स स्त्री (स) सतान, संतति (स्त्री) २ प्रकृतय शासितजना राज्यनिवासिन (सब बहु)।

—तन्त्र, स पु (स न) जनतन्त्रशासन, प्रजा सत्ताक राज्य, जनगणमुख्यम्।

—नाथ, स पु (स) नृप २ ब्रह्मन् ३ मनु ४ दक्ष।

—पति, स पु (स) सृष्टिकर्तृ,-सर्जक-स्रष्ट्र पितृ-स्रष्टृ, २ ब्रह्मन् ३ मनु ४ नृप ५ सूर्य ६ अग्नि ७ पितृ ८ गृहपति।

प्रजावती, स स्त्री (स) भ्रातृजाया, दे 'भावज' २ अग्रजपत्नी ३ गर्भवती ४ सता नवती।

प्रज्ञ, स पु (स) प्राज्ञ, बुद्धिमत् विद्वस्, पण्डित।

प्रज्ञा, स स्त्री (स) बुद्धि (स्त्री) ज्ञान २ सरस्वती ३ एकाग्रता।

—चक्षु, स पु (स क्षुस्) धृतराष्ट्र २ अन्ध (व्यंग्य) ३ बुद्धिनेत्रम् ४ प्राज्ञ।

—पारमिता, स स्त्री (स) पूर्णज्ञान, सर्वज्ञता (बौद्ध०)।

—वाद, स पु (स) पाण्डित्य विद्वत्ता पूर्णोक्ति (स्त्री)।

—हीन, वि (स) मूर्ख, मूढ, पशु, अज्ञ।

प्रज्वलित, वि (स) देदीप्यमान, दन्दह्यमान, जाज्वल्यमान प्रदीप्त, २ सुस्पष्ट, स्वच्छ।

प्रण¹, स पु (स पण >) व्रत, दृढसकल्प, प्रतिज्ञा, शपथ, वाचा।

—करना, सशपथ प्रतिज्ञा (कृ आ अ), प्रतिश्रु (स्वा प अ)।

प्रण², वि (स) पुराण, प्राचीन।

प्रणत, वि (स) प्रह्वीभूत २ वदमान ३ नम्र ४ निधन।

प्रणति, स स्त्री (स) प्रणाम, प्रणिपात, नमस्कार, नमस्क्रिया, वदना २ नम्रता ३ निवेदनम्।

प्रणय, स पु (स) दे 'प्यार' २ सस्नेह-प्रार्थना।

प्रणयन, स पु (स) सरचन, रचन, निर्माण, विधान, करणम्।

प्रणयिनी, स स्त्री (स) प्रिया, वल्लभा दयिता २ पत्नी भार्या।

प्रणयी, स पु (स यिन्) रमण, वल्लभ कात दयित २ पति, भर्तृ।

प्रणव, स पु (स) ओंकार २ परमेश्वर।

प्रणाम, स पु (स) दे 'प्रणति' (चतुर्विध अष्टाग, पचाग अभिवादन, करशिर सयोग)।

—करना, क्रि स, नमस्कृ, प्रणम् (भ्वा प अ) अभिवद् (चु आ स) वद् (भ्वा आ से)।

प्रणाली, स स्त्री (स) जलनिर्गमनद्वार परिवाह, सरणि (स्त्री) २ प्रथा, परिपाटी, परपरा, रीति (स्त्री) ३ युक्ति पद्धति (स्त्री)।

प्रणिधान, स पु (स न) समाधि २ अति वर्तन ३ कर्मफलत्याग ४ निवेश प्रयत्न ५ प्रयत्न ६ व्यवहार।

प्रणिधि, स पु (स) दे गुप्तचर'।

प्रणिपात, स पु- (स) दे 'प्रणति' ।
प्रणीत, वि (स) लिखित, रचित, निर्मित, कृत, विहित २ संस्कृत, संशोधित ३ आनीत ४ प्रेषित ।
प्रणेता, स पु (स प्रणेतृ) रचक, रचयितृ, कर्तृ, निमातृ ।
प्रतप्त, वि (स) तापित, अत्युष्ण,-तप्त भूत ।
प्रताप, स पु (स) तेजस्-ओजस् (न), अनुभाव, अभिख्या, गौरव, ऐश्वर्य, महिमन् (पु) २ पौरुष, वीर्य, शौर्य ३ ताप, उष्णता, घम ।
प्रतापी, वि (स -पिन्) प्रतापवत् तेजस्विन्, ओजस्विन्, अनुभाववत् २ वीर, शूर ।
प्रतारणा, स स्त्री (स) वचनता, कपट, प्रतारण २ धूर्तता, कैतवम् ।
प्रति, स स्त्री (स प्रति>) प्रति-अनु,-लिपि (स्त्री), प्रतिलेख । (उपसर्ग) समक्ष, सम्मुख तुलनाया २ प्रति (द्वितीया के साथ, सप्तमी विभक्ति से भी, उ , भगवान् के प्रति श्रद्धा = भगवत प्रति अथवा भगवति श्रद्धा) ३ दिशा (सप्तमी) ।
प्रति(ती)कार, स पु (स) प्रतिकृति (स्त्री), प्रतिक्रिया, निर्यातन, शमनोपाय २ चिकित्सा, उपचार ।
प्रतिकूल, वि (स) विपरीत, विरुद्ध, प्रतीप, विषम ।
प्रतिकूलता, स स्त्री (स) वैपरीत्य, विरोध ।
प्रतिकृति, स स्त्री (स) प्रतिमूर्ति (स्त्री), प्रतिमा २ बिम्ब, आलेख्य ३ छाया, प्रतिबिंब ४ प्रतिक्रिया, प्रति(ती)कार ।
प्रतिक्रिया, स स्त्री (स) प्रति(ती)कार, प्रतिकृति (स्त्री) २ प्रतिघात, प्रत्याघात ३ निवारण शमन,-उपाय ।
प्रतिक्षण, क्रि वि (स -क्षण) अनुक्षण, क्षणे क्षणे, प्रति-अन, पलम् ।
प्रतिग्रह, स पु (स) स्वी-अगी,-कार , आदान, ग्रहण २ विवाह , पाणिग्रहणम् ।
प्रतिघात, स पु (स) प्रतिप्रहार , प्रत्याघात , प्रतिहति (स्त्री) ३ विघ्न , बाधा ।
प्रतिच्छाया, स स्त्री (स.) प्रतिबिंब, छाया, प्रतिरूप, प्रतिरूप २ चित्र ३ मूर्ति (स्त्री)।
प्रतिज्ञा, स स्त्री (स) प्रतिश्रव , सगर , समय , सविद्-आगू (स्त्री), वचन, वाचा शपथ , दृढसकल्प २ साध्यनिर्देश (न्या)।
—करना, क्रि स , आ प्रति-स-श्रु (भ्वा प अ), प्रतिज्ञा (क्र आ अ) । ।ऽ अ, प्रतिज्ञा कृ, वचन दा ।
—तोड़ना, क्रि स , प्रतिज्ञा भञ्ज् (रु प अ), उल्लघ् (चु), विसवद् (भ्वा प से) ।
—पालना, क्रि स वचन पा (प्रे पालयति) शुभ (प्रे) ।
—पत्र, स पु (स न) समय प्रतिज्ञा पत्र लेख्यम् ।
—पालन, स पु (स न) प्रतिज्ञानिर्वाह , सगरशोधनम् ।
—भग, स पु (स) वचनव्यतिक्रम प्रतिज्ञो ल्लघन, विसवाद ।
—विवाहित, वि (स) वाग्दत्त ता त्तम, प्रदत्त त्ता त्तम्, प्रत्त त्ता त्तम् ।
प्रतिज्ञात, वि (स) प्रतिश्रुत, सश्रुत, आ श्रुत ।
स पु (स न) प्रतिज्ञा, दृढसकल्प ।
प्रतिदड, वि (स) दु शाल न्ता-ल, धृष्ट ष्टा धृष्टम्, आज्ञालघिन्, अननुवर्तिन् ।
प्रतिदान, स पु (स न)प्रत्यपण २ विनिमय ।
प्रतिदिन, क्रि वि (स दिन) अनु, दिन दिवस्, प्रत्यह अन्वह, दिने दिने ।
प्रतिद्वद्विता, स स्त्री (स) शत्रुता, वैर, विरोध २. प्रतिस्पर्धा, प्रत्यर्थिता ।
प्रतिद्वद्वी, स पु (स द्विन्) अरि , शत्रु , विरोधिन् २ प्रत्यर्थिन्, प्रतिस्पर्धिन् ।
प्रतिध्वनि, स स्त्री (स पु) प्रति,ध्वनि नाद शब्द -श्रुति (स्त्री) ।
—उठना या होना, क्रि अ , प्रति, ध्वन्-नद् (भ्वा प से) ।
प्रतिनिधि, स पु (स) प्रतिपुरुष , प्रतिहस्त स्तक २ प्रतिमा, प्रतिमूर्ति (स्त्री) ।
प्रतिपक्षी, स पु (स -क्षिन्) विपक्षिन्, प्रतिवादिन् २ विरोधिन्, प्रतिद्वद्विन् ३ शत्रु , वैरिन् ।
प्रतिपत्ति, स स्त्री (स) प्राप्ति -उपलब्धि (स्त्री) अधिगमन २ ज्ञान ३ अनुमान ४ दान, अर्पण ५ निरूपण, प्रतिपादन ६ प्रवृत्ति (स्त्री) ७ निश्चय ८ परिणाम ९ गौरव १० प्रतिष्ठा, सत्कार ११ स्वीकृति (स्त्री) १२ सप्रमाण प्रदर्शनम् ।

प्रतिपदा, स स्त्री (सं) प्रतिपद् (स्त्री) प्रतिपत्ति (स्त्री) शुक्ला प्रथमतिथि (स्त्री), प्रतिपदी।

प्रतिपन्न, वि (स) ज्ञात, अवबुद्ध अधिगत २ स्वीकृत ३ निर्धारित, निश्चित ४ शरणागत ५ सम्मानित ६ प्राप्त ७ प्रवृद्ध।

प्रतिपादक, वि (स) दातृ-दायक, २ निरूपक, व्याख्यातृ ३ उन्नायक ४ निष्पादक।

प्रतिपादन, स पु (स न) निरूपण, सप्रमाण कथन साधन स्थापन २ सम्यग् ज्ञापन अवबोधन ३ दान, अर्पणम्।

प्रतिपादित, वि (स) सम्यग् अवबोधित ज्ञापित २ निष्पादित निश्चित ३ दत्त।

प्रतिपाद्य, वि (स) निरूपणीय, अवबोधनीय २ देय।

प्रतिपालन, स पु (स न) पालन, पोषण, संवर्धन २ रक्षण, त्राण ३ निर्वाह, ग्रहणम्।

प्रतिफल, स पु (स न) दे 'प्रतिच्छाया'(१) २ परिणाम, फल ३ प्रत्युपकार ४ प्रत्यपकार, निष्कृति (स्त्री)।

प्रतिबंध, स पु (स) विघ्न, बाधा, अन्तराय २ प्रतिरोध, व्याघात ३ दे 'प्रबंध'।

प्रतिबिंब, स पु (स न) दे 'प्रतिच्छाया'।

प्रतिबिंबित, वि (स) प्रतिफलित, प्रतिच्छवित।

प्रतिभा, स स्त्री (स) नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा, चमत्कारिणी बुद्धि (स्त्री), मतिप्रकर्ष २ बुद्धि मति धी (स्त्री) ३ वैदग्ध्य, बुद्धिचातुर्य ४ दीप्ति (स्त्री)।

प्रतिभाशाली, वि (स लिन्) प्रतिभावत्, प्रतिभान्वित, सप्रतिभ २ धीमत्, बुद्धिमत्।

प्रतिभू, स पु (स) लग्नक, दे 'जामिन'।

प्रतिमा, स स्त्री (स) अनुकृति मूर्ति (स्त्री), चित्र, प्रतिकृति (स्त्री) मान रूप प्रतिच्छन्दक २ प्रति, बिं, छाया ३ माप, मात्र, तोल भार, मान ४ अलंकारभेद (सा)।

प्रतियोगिता, स स्त्री (स) प्रतिद्वन्द्विता, प्रतिस्पर्द्धा, अहमहमिका, विजिगीषा २ विरोध, शत्रुता।

प्रतियोगी, स पु (स गिन्) प्रतिद्वन्द्विन्, प्रतिस्पर्द्धिन्, विजिगीषु २ शत्रु, वैरिन् ३ सहायक ३ अरिन्, अराभात्।

प्रतिरूप, स पु (स न) मूर्ति (स्त्री), प्रतिमा २ चित्र, आलेख्य ३ प्रतिनिधि।

प्रतिरोध, स पु (स) विरोध, प्रातिकूल्य, वैपरीत्य २ बाध धा, व्याघात, प्रतिबंध।

प्रतिलिपि, स स्त्री (स) अनुलिपि (स्त्री), प्रतिलेख।

प्रतिलोम, वि (स) प्रतिकूल, विपरीत, विरुद्ध २ तुच्छ, नीच ३ विलोम, विपर्यस्त, व्यत्यस्त।

प्रतिलोमज, स पु (स) वर्णसंकर २ उत्तमवर्णाया नार्या अधमवर्णात् पुरुषात् जात।

प्रतिवचन, स पु (स न) उत्तर, प्रतिवचस् (न) २ प्रतिध्वनि।

प्रतिवत्सर, अव्य (स) प्रति-अनु,-वर्ष-वत्सरं अव्य वर्षे-वर्षे, वत्सरे-वत्सरे।

प्रतिवनिता, स स्त्री (स) सपत्नी, सभार्या, समानपतिका।

प्रतिवस्तु, स स्त्री (स) सदृश-समान तुल्य, वस्तु (न), पदार्थ २ प्रतिवस्तुपदार्थ ३ उपमानम्।

प्रतिवस्तूपमा, स स्त्री (स) अर्थालंकारभेद।

प्रतिवाद, स पु (स) प्रत्याख्यान, निराकरण, निरास, दे 'खंडन' २ विवाद ३ उत्तरम्।

प्रतिवादी, स पु (स दिन्) प्रत्यर्थिन्, अभियुक्त २ विपक्षिन्, प्रतिपक्षिन्, प्रत्याख्यातृ।

प्रतिवासी, स पु (सं सिन्) दे 'पड़ोसी'।

प्रतिवेशी, स पु (स शिन्) दे 'पड़ोसी'।

प्रतिशोध, स पु (स) निर्यातन, प्रति, अपकार द्रोह।

प्रतिश्याय, स पु (स) दे 'जुकाम' २ पीनसरोग।

प्रतिषिद्ध, वि (स) दे 'निषिद्ध'।

प्रतिषेध, स पु (स) दे 'निषेध' २ खडन, निरसन ३ अर्थालंकारभेद (सा)।

प्रतिष्ठा, स स्त्री (स) सत्कार, अर्हणा, संमान, आदर, गौरव २ यशस् (न), कीर्ति विख्याति प्रसिद्धि (स्त्री) ३ स्थापना निधानम्।

प्रतिष्ठित, वि (स) सत्कृत, स मानित, अभ्यर्चित २ विश्रुत, प्रसिद्ध, विख्यात ३ स्थापित, प्रतिष्ठापित।

प्रतिस्पर्द्धा, स स्त्री (सं) प्रत्यर्थिता, प्रतिद्वंद्विता, विजिगीषा, अहमहमिका २ कलह।

प्रतिस्पर्द्धी, स पु (स द्धिन्) प्रत्यर्थिन्, प्रतिद्वन्द्विन्, विजिगीषु ।

प्रतिहत, वि (स) अव प्रति-रुद्ध प्रतिबाधित २ पराणुन्न, परावर्तित ३ अपास्त, क्षिप्त ४ पतित ५ निराश ■ पराजित, परास्त ।

प्रति(ती)हार, स पु (स) द्वार (स्त्री) द्वार २ द्वारपाल , द्वाःस्थ ।

प्रति(ती)हारी, स पु (स रिन्) द्वारपाल , द्वाःस्थ , दौवारिक । स स्त्री (स) द्वारपालिका ।

प्रतिहिंसा, स स्त्री (स) प्रत्यपकार प्रत्यपक्रिया, प्रतिद्रोह , प्रति ,नियातनम् ।

प्रतीक, स पु (स न) प्रतिमा, मूर्ति २ मुख, आनन ३ अग्र अग्रभाग ४ श्लोकादेः प्रथमशब्द ५ अग, अवयव ६ चिह्न, लक्षण ७ प्रकार , रूप ८ प्रतिरूप, स्थानापन्न वस्तु (न) ।

प्रतीकार, स पु (स) दे 'प्रतिकार' ।

प्रतीक्षा, स स्त्री (स) प्रतीक्षण, उदीक्षा, प्रत्याशा, अपेक्षा ।

—करना, क्रि अ, अव उद् प्रति ईक्ष (भ्वा आ से) भनु प्रति पा (प्रे पालयति) ।

प्रतीची, स स्त्री (स) दे 'पश्चिम' ।

प्रतीत, वि (स) ज्ञात, विदित, अवगत, बुद्ध २ प्रसिद्ध ३ प्रसन्न ।

—होना, क्रि अ , ज्ञा-अवगम्-बुध् प्रती (=प्रति इ) (सब कर्म) ।

प्रतीति, स स्त्री (स) ज्ञान, बोध , अवगम २ ख्याति (स्त्री) ३ विश्वास ४ आनंद ५ आदर ।

प्रतीप, वि (स) विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल ।

प्रतीहार, स पु (स) दे 'प्रतिहार' ।

प्रत्यचा, स स्त्री (स) मौर्वी, शिञ्जिनी, ज्या, धनुर्गुण ।

प्रत्यक्ष, वि (स) दृश्य, दृग्गोचर, पुर स्थित २ इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियगोचर, ऐन्द्रियक ३ प्रकट, स्पष्ट । स पु (स न) प्रमाणभेद (न्याय), अनुभवभेद । क्रि वि, नयनयो पुरत २ स्पष्ट व्यक्तम् ।

—दर्शी, स पु (सं शिन्) (प्रत्यक्ष) साक्षिन् (

—प्रमाण, स पु (सं न) प्रमाणभेद (न्या) ।

प्रत्यय, स पु (स) विश्वास, विश्रभ २ शब्दान्तर्भाग, प्रकृत्युत्तर वर्तमान, आगम (सुप् तिङ आदि, व्या) ३ प्रमाण, साधन ४ ज्ञान ५ विचार ६ व्याख्या ७ कारण ८ आवश्यकता ९ प्रसिद्धि (स्त्री) १० चिह्न ११ निर्णय १२ सम्मति (स्त्री) १३ सहायक १४ स्वाद ।

प्रत्याख्यान, स पु (सं न) निराकरण, निरसन, खण्डनम् ।

प्रत्याशा, स स्त्री (स) आशा, आशसा, आकाङ्क्षा २ उदीक्षा, प्रतीक्षा, अपेक्षा ।

प्रत्याशी, वि (स शिन्) परीक्षार्थिन् २ पदान्वेषिन् ३ आशावत्, आशान्वित ।

प्रत्याहार, स पु (स) प्रत्याहरण, उपादान, इन्द्रियनिग्रह २ अक्षरेण बहूनां ग्रहणं (उ 'अच'-सब स्वरवर्ण, व्या) (

प्रत्युक्ति, स स्त्री (स) उत्तर, प्रतिवचनम् ।

प्रत्युत, अ य (स) दे 'बल्कि' ।

प्रत्युत्तर, स पु (स न) उत्तरस्योत्तर, उत्तरप्रतिवचनम् ।

प्रत्युत्थान, स पु (स न) स्वागतार्थम् उत्थान अभ्युत्थानम् २ शत्रुमाभिमुख्यार्थम् उत्थिति (स्त्री) ३ कार्यविशेषाय सज्जी भू, सन्नह (दि उ अ) ।

प्रत्युत्पन्न, वि (स) पुनरुत्पन्न २ स्वावसरे उत्पन्न ।

—मति, वि (स) तत्कालधी, कुशाग्रीय मति, सूक्ष्मदर्शिन २ प्रतिभान्वित । स स्त्री (स) तत्कालधी (स्त्री), कुशाग्रबुद्धि (स्त्री) २ प्रतिभा ।

प्रत्युद्गमन, स पु (स न) प्रत्युत्थानं, प्रत्युद्गम ।

प्रत्युपकार, स पु (स) प्रति, उपकृति (स्त्री)-साहाय्यम् ।

प्रत्येक, वि (स) एकैक, सर्व, सकल ।

प्रथन, स पु (स न) विस्तार , वितति व्याप्ति (स्त्री) ■ यश प्रसरण प्रसारणम् ३ क्षेपण ४ प्रदर्शनम् ।

प्रथम, वि (स) आद्य, आदिम, अग्रिम २ श्रेष्ठ, उत्तम ३ प्रधान, मुख्य । क्रि वि (सं न) अग्रे, आदौ, पूर्व, प्रथमत ।

—कल्प, स पु (स) सर्वोत्तम ,उपाय युक्ति (स्त्री) २ मुख्यनियम ।

—पुरुष, स पु (स) अन्यपुरुष (व्या०)।
—वय, स पुं (स-यम् न) यौवन तारुण्यम्, नववयस (न)।
प्रथमा, स स्त्री (स) विभक्तिविशेष (व्या) २ मदिरा।
प्रथा, सं स्त्री (स) रीति-रूढि (स्त्री), अनुसार, आचार, व्यवहार २ दे 'प्रसिद्धि'।
प्रथित, वि (स) दे 'प्रसिद्ध'।
प्रदक्षिणा, स स्त्री (स) प्रदक्षिण गं, परिक्रम।
प्रदत्त, वि (सं) अर्पित, वितरित, उत् वि सृष्ट, समर्पित।
प्रदर, स पु (स) नारीरोगभेद, असृग्दर (स्त्री भेदी—श्वेतप्रदर रक्तप्रदर)।
प्रदर्शक, स पु (स) प्र दर्शयितृ, दर्शनकार यितृ २ दर्शक, द्रष्टृ, प्रेक्षक ३ गुरु।
प्रदर्शन, स पु (स न) प्रकटन, प्रकाशन, व्यक्त, विजृम्भण, प्रकटी आविष्करण २ दे 'नुमायश'।
प्रदर्शनी, स स्त्री (स) दे 'नुमाइश'।
प्रदर्शित, वि (स) प्रकटीकृत, प्रकटित, प्रकाशित।
प्रदान, स पु (सं न) दान, वितरण, अर्पण, समर्पण २ विवाह।
प्रदिशा, स स्त्री (सं) प्रदिश् विदिश (स्त्री) विदिशा, दिक्कोण।
प्रदीप, स पु (स) दीप, क[illegible], नयनोत्सव दीपवृक्ष २ प्रकाश।
प्रदीपन, स पु (स न) उद्दीपन, [illegible] प्रज्वलन २ प्र,दीपन, प्रकाशन, ३ उत्तेजन, प्रोत्साहनम्।
प्रदीप्त, वि (स) प्रज्वलित, उद्दीप्त, समिद्ध २ प्रकाशित, प्रकाशमान ३ उज्ज्वल, भासुर।
प्रदेश, स पु (स) चक्र, मण्डल, प्रान्त, इलाका, भूभाग २ स्थान, स्थल ३ अंग, अवयव।
प्रदोष, स पु (स) सन्ध्यासमय, सन्ध्या, सायंकाल, दिनावसान, रजनीमुख २ सन्ध्या धकार।
प्रधान, वि (सं) मुख्य, श्रेष्ठ, अग्रग, अग्रिम, परम, उत्तम, प्रमुख, विशिष्ट। सं पु, नेतृ, नायक, पुंगव, अग्रणी २ मन्त्रिन्, सचिव ३ प्रकृति (स्त्री), जगत उपादान कारण, प्रधान ४ सभा,पति-अध्यक्ष ५ ईश्वर।
—मंत्री, स पु (सं त्रिन्) महामन्त्रिन्, प्रधान,अमात्य सचिव।
प्रधानता, स स्त्री (सं) उत्तमता, श्रेष्ठता, मुख्यता २ नेतृत्व, नायकत्व ३ अध्यक्षता, सभापतित्व ४ मंत्रिपद, मंत्रित्वम्।
प्रध्वंस, सं पुं (सं) वि नाश, प्रणाश, विध्वंस, उच्छेद संहार।
प्रपंच, स पु (स) सृष्टि (स्त्री), संसार, जगजाल २ विस्तर, विस्तार, ३ छल, आडम्बर, कपट ४ दे 'बखेड़ा'।
प्रपंची, वि (स चिन्) कपटिन्, मायाविन्, धूर्त्त २ चतुर, धूर्त्त ३ कलहप्रिय।
प्रपन्न, वि (सं) प्राप्त, आगत २ शरणागत।
प्रपात, स पु (स) दे 'झरना' २ अतट, भृगु, निरवलंब पतनादिप्रदेश ३ अव, पात-पतनम्।
प्रपितामह, स पु (सं) दे 'परदादा'।
प्रपितामही, स स्त्री (स) दे 'परदादी'।
प्रपौत्र, स पु (स) दे 'परपोता'।
प्रपौत्री, सं स्त्री (स) दे 'परपोती'।
प्रफुल्ल, वि (स) विकसित, स्फुटित, उद्भिन्न, फुल्ल, प्रबुद्ध, भिन्न, विकच २ कुसुमित, पुष्पित ३ उन्मीलित, उन्मिषित (नेत्र) ४ स्मित,आनंदित।
—नयन, वि (स) विकचनेत्र [स्त्री भी (स्त्री)]।
—वदन, वि (स) स्मितानन, प्रसन्नमुख [नी (स्त्री) = स्मितानना सी प्रसन्नमुखी स्त्री]।
प्रफुल्लित, वि (स) दे 'प्रफुल्ल'।
प्रबंध, स पु (स) सविधा, उपाय, आयो जन, प्रयोग, युक्ति (स्त्री) २ प्रबन्ध ग्रन्थ, निबन्ध ग्रन्थ, प्रबंधन, अधिष्ठान, व्यवस्थापन, पालन, व्यवस्था ३ निबंध, रचना, प्रस्ताव ४ महाकाव्यं, मंत्रविन्यासेन।
—कर्ता, सं पु (स-र्तृ) प्रबंधक, आयो जक, व्यवस्थापक, निबन्धक, चालक, ७ यत्रु, अधिष्ठातृ, अवक्षक।

—कल्पना, स स्त्री (स) स्तोकसत्या कल्पनाबहुला कथा।

—कारिणी, स स्त्री (स) प्रबन्धव्यवस्था, कर्त्री समिति (स्त्री)।

—काव्य, सं पु (स न) कथनकाव्यम्, श्रव्यकाव्यभेद (सा०)।

प्रबधक, स पु (स) दे 'प्रबन्धकर्ता'।

प्रबल, वि (स) बलवत् प्रबल बलिन्, शक्तिमत्, ऊर्जस्विन् प्रभविष्णु २ उग्र, घोर, तीव्र, प्रचड।

प्रबुद्ध, वि (स) जागरित, उन्निद्र जाग्रत (रात्रत) २ विकसित ३ ज्ञानिन्।

प्रबोध, स पु (स) जागरण, प्रबोधन निद्रा, भग त्याग २ यथार्थ पूर्ण ज्ञान ३ सान्त्वना ४ विकास ५ पूर्वनिवेदनं ६ चेतनाभास, मूर्च्छाभग।

प्रबोधन, स पु (स न) (निद्रात) उत्थान, निद्राभजन २ जागरण ३ उद्बोध, उपदेश, ज्ञापन ४ सान्त्वनम्।

प्रभजन, स पु (स) वायु, पवन २ वात्या, झझावात, प्रकपन। (स न) उत्पाटन, उन्मूलन, वि, नाशनम्।

प्रभव, स पु (स) जन्महेतु (पु) उत्पत्ति कारण २ उत्पत्तिस्थान, आकर ३ सृष्टि (स्त्री) ४ (नद्यादीना) उद्गम, उद्भव, मूलम्।

प्रभा, स स्त्री (स) दीप्ति-द्युति-कान्ति-रुचि शोचि (स्त्री) आभा, विभा प्रकाश, त्विषा।

—कीट, स पु (स) खद्योत, दे 'जुगनू'।

प्रभाकर, स पु (स) दिवाकर, दे 'सूर्य'।

प्रभात, सं पु (स न) विभात, प्रातःकाल, उषा, उषा, उष, ऊष, अहर्मुख, क(का)ल्य, प्रत्यूष, प्रत्यु(त्यू)ष, अरुणोदय, दिनारम्भ, उषस (स्त्री)।

प्रभाव, स पु (स) सामर्थ्य, शक्ति (स्त्री), बल २ माहात्म्य, महत्त्वं ३ वश २ प्रभुत्व ४ परिणाम, फलम्।

प्रभु, स पु (स) परमेश्वर परमेश्वर २ स्वामिन् ईश ३ अधिपति, नायक ३ श्रेष्ठजनोपाधि।

—भक्त, वि (स) स्वामिभक्त, कृत्यपर, सत्सेवक २ प्रभुस्मृत, भगवद्भक्त।

प्रभुता, स स्त्री (स) महत्त्व, महत्त्व २ शासकता, अधिकारित्व ३ वैभव ४ स्वामित्व, प्रभुत्वम्।

प्रभूत, वि (स) दे 'प्रचुर' २ उत्पन्न, उद्भूत, उद्गत।

प्रभृति, क्रि वि (स) तदारभ्य, ततोऽनन्तर, आदि, इत्यादि। स स्त्री, आरभ।

प्रभेद, सं पु (स) प्रकार, वर्ग, जाति (स्त्री) २ अन्तर, भेद, भिदा।

प्रमत्त, वि (स) उन्मद, मदोन्मत्त, मत्त, क्षीब २ उन्मत्त, वातुल, उन्मादिन्।

प्रमथन, स पु (स न) विलोडन २ कष्टदान ३ हननम्।

प्रमद, स पु (स) आनद, हर्ष २ क्षीबता। वि क्षीब।

प्रमदा, स स्त्री (स) सुदरी, उत्तमयोषित् (स्त्री)।

प्रमा, स स्त्री (स) यथार्थज्ञान, शुद्धबोध २ दे 'माप'।

प्रमाण, स पु (स न) निदर्शन, साधन, उपपत्ति (स्त्री) तुल्यहेतु २ साक्ष्य, प्रामाण्य ३ मर्यादा ४ इयत्ता, निर्दिष्टपरिमाण ५ शास्त्रम्। वि ,सत्य, सिद्ध २ मान्य, स्वीकार्य।

—पत्र, स पु (स न) आत्मनिर्णय निदर्शन-पत्रम्।

प्रमाणित, वि (स) साधित, उपपादित, स्थापित, प्रमाणीकृत्या,कृत, सत्यापित।

प्रमाता, स पु (स-तृ) प्रमाणै ज्ञातृ-बोद्धृ।

प्रमातामह, स पु (स) मातामहपितृ।

प्रमातामही, स स्त्री (स) प्रमातामहपत्नी।

प्रमाद, सं पु (स) अनवधानता, उपेक्षा, सावधानताऽभाव २ भ्रान्ति त्रुटि (स्त्री),

प्रमुख, वि (स) प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य २ प्रथम, आदिम ३ प्रतिष्ठित, मान्य ।

प्रमुदित, वि (स) प्रहृष्ट, प्रसन्न आनंदित ।

प्रमेह, स पु (स) मेह मूत्रदोष , बहुमूत्रता ।

प्रमोद, सं पु (स) हर्ष , आनंद , प्रसन्नता २ सुखम् ।

प्रयत्न, स पु (स) उद्यम , अध्यवसाय , आयाम , चेष्टा, चेष्टित २ जीवव्यापार (न्या)।

—शील, वि (स) प्रयत्नवत्, सयत्न, उद्यमिन्, अध्यवसायिन्, सचेष्ट ।

प्रयाग, स पु (स) तीर्थविशेष २ महायज्ञ ।

प्रयाण, स पु (स न) प्रस्थान, गमन, व्रज्या, यात्रा २ युद्धयात्रा ।

—काल, स पु (स)गमनकाल २ मृत्युसमय ।

प्रयास, स पु (स) उद्योग , प्र-यत्न , परि,श्रम ।

प्रयुक्त, वि (स) व्यवहृत व्यापृत, उपयुक्त, सेवित, उपभुक्त ।

प्रयोग, स पु (स) उपयोग , उपभोग , सेवन, व्यवहार २ अनुष्ठान, साधन ३ प्रक्रिया, विधान ४ तान्त्रिकोपचार ५ अभिनय ६ कुसीदाय ऋणदानम् ।

—करना, उप प्र-युज् (क आ अ), व्यापृ (प्रे), सेव (भ्वा आ से), उपभुज् (रु आ अ)।

प्रयोजक, स पु (स) अनुष्ठातृ, उपयोक्तृ २ प्रेरक ३ व्यवस्थापक ।

प्रयोजन, स पु (स न) अर्थ , कार्य २ उद्देश्य, अभिप्राय , आशय ।

प्रलयंकर, वि (स) प्रलय विनाश-संहार, कर-कारिन् ।

प्रलय, सं पु (स) कल्पान्त , प्रतिसंचर , महानाश , विलय , संक्षय ।

प्रलाप, स पु (स) निरर्थकवचनानि (बहु), प्र , जल्प -जल्पनम् ।

प्रलोभन, स पु (सं न) विलोभन, लोभन प्रवर्तन २ प्रलोभकपदार्थ , विकारहेतु ।

प्रवचना, स स्त्री (स) धूर्तता, वैतव,च्छलम् ।

प्रवचन, स पु (स न) व्याख्यान, विवरण, प्रकाशन, स्पष्टीकरण २ व्याख्या ३ वेदाङ्गम् ।

प्रवर, वि (स) श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य (स न) गोत्रम् । (सं पु) सन्तति (स्त्री) २ गोत्र प्रवर्तकमुनिव्यावर्तक) मुनिगण ।

प्रवर्तक, स पु (स) आरम्भक , संस्थापक , प्रवर्तयितृ २ सञ्चालक , निर्वाहक ३ प्रेरक , नियोजक ४ उत्तेजक ५ आविष्कारक ।

प्रवर्तन, स पु (स न) कार्योपक्रमः, २ कार्य-सञ्चालन निर्वहण ३ प्रचारः ४ उत्तेजनम् ।

प्रवाद, सं पु (स) जनश्रुति (स्त्री), किंवदन्ती, लोक-वाद-वार्ता २ अपवाद , मिथ्यापवाद ।

प्रवाल, स पु (स पु न) विद्रुम २ किश (स)लय ३ वीणादण्ड ।

प्रवास, स पु (स) विदेशवास २ विदेश ।

प्रवासी, वि (स मिन्) प्रोषित, विदेशस्थ, विदेशवासिन् ।

प्रवाह, स न (स) स्रव , स्रवण, स्रुति (स्त्री), स्राव २ (जल) धारा, वेग , ओघ स्रोतम् (न) ३ कार्यनिर्वाह ४ व्यवहार ५ प्रवृत्ति (स्त्री) ६ क्रम , सततगति (स्त्री)।

प्रविष्ट, वि (स) कृतप्रवेश, अन्तर्गत ।

प्रवीण, वि (स) निपुण, कुशल, दक्ष, पटु, चतुर, निष्णात, विद २ वीणावादनकुशल ।

प्रवीणता, स स्त्री (स) नैपुण्य, दाक्ष्य, कौशल, पाटव, चातुर्यम् ।

प्रवृत्त, वि (सं) रत, मग्न, पर, परायण २ उद्यत ३ नियुक्त ।

—करना, क्रि स , प्रवृत् (प्रे), नि उद्-युज् (चु) प्रवणी कृ, प्रेर् (प्रे) ।

—होना, क्रि अ , प्रवृत् (भ्वा आ से), रत मग्न तत्पर (वि) भू ।

प्रवृत्ति, स स्त्री (स) रुचि (स्त्री) छंद , अभिप्राय , भाव २ वृत्तान्त ३ कार्यनिर्वाह ४ विषयासंग ५ उत्पत्ति (स्त्री)।

प्रवेश, स पु (स) अन्तर, विगाहन-गमनं २ गति (स्त्री), उपगम ३ बोध , ज्ञान, परिचय ।

—पत्र, स पु (सं न) प्रविष्टि,पत्र पत्रकम् ।

—शुल्क, स पु (स) प्रविष्टि, शुल्क कम् ।

प्रवेशिका, सं स्त्री (स) परीक्षाभेद २ प्रवेष्ट्री ।

प्रव्रजित, वि (सं) संन्यासिन्, चतुर्थाश्रमिन्, परिव्राजक ।

प्रव्रज्या, सं स्त्री (सं) संन्यास, वैराग्यम्, चतुर्थाश्रम।

प्रशंसक, सं पु (सं) स्तोतृ, स्तावक, नन्दक, श्लाघक २ चाटुकार।

प्रशंसनीय, वि (सं) प्रशस्य, श्लाघ्य, स्तुत्य नुत्य प्रशंसार्ह।

प्रशंसा, सं स्त्री (सं) श्लाघा, स्तुति-नुति नु (स्त्री), स्तव, कीर्तन ईडा।

—करना, क्रि स, प्रशंस् (भ्वा प से) श्लाघ् (भ्वा आ से), नु (अ प स), स्तु (अ प अ) ईड् (अ आ से)।

—होना, क्रि अ, प्रशंस्-स्तु-नु (कर्म वा)।

प्रशंसित, वि (सं) दे 'प्रशस्त'।

प्रशमन, सं पु (सं न) शमन, शान्ति (स्त्री) २ नाशन ३ मारण ४ वशीकरणम्।

प्रशस्त, वि (सं) स्तुत, नुत, स्तुत, श्लाघित, प्रशंसित २ दे 'प्रशंसनीय' ३ उत्तम श्रेष्ठ।

—पाद, सं पु (सं) दर्शनाचार्यविशेष।

प्रशस्ति, सं स्त्री (सं) दे 'प्रशंसा' २ पत्रारम्भे प्रशंसावाक्य ३ राज्ञां निदेश ४ प्राचीन ग्रन्थानां लेखकादिपरिचायकानि अन्तिम

प्रसक्त, वि (सं) संलग्न, संश्लिष्ट २ आसक्त ३ प्रसङ्गिन्।

प्रसन्न, वि (सं) संतुष्ट, संहृष्ट, सानन्द, आनन्दित, प्रमुदित, प्रफुल्ल २ निर्मल।

—करना, क्रि स, आनन्द्-आह्लाद्-तुष्-प्रसद्-प्रमुद्-प्रहृष् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, आनन्द् (भ्वा प से), आह्लाद्-प्रमुद् (भ्वा आ से), प्रहृष् (दि प से)।

प्रसन्नता, सं स्त्री (सं) आनन्द, आह्लाद, संतोष, परितोष, संमोद उल्लास २ अनुग्रह ३ स्वच्छता।

प्रसव, सं पु (सं) जनन प्रसूति (स्त्री), गर्भमोचन २ जन्मन् (न), उत्पत्ति (स्त्री) ३ संतान ४ फल ५ कुसुमम्।

प्रसविनी, वि (स्त्री) उत्पादयित्री, जननी, प्रसवित्री।

प्रसाद, सं पु (सं) कृपा, दया, अनुग्रह २ प्रसन्नता ३ स्वच्छता ४ काव्यगुणविशेषः (सा) ५ देवगुर्वादिशिष्टपदार्थ, शेष ६ भोजन ७ नैवेद्य, वायनम्-नकम्।

प्रसून, स पु (सं न) कुसुम, पुष्प २ फलम्। वि, जात, उत्पन्न।

—वर्ष, स पु (स) पुष्पवृष्टि (स्त्री)।

—बाण, स पु (स) पुष्प,शर-बाण, काम, मदन।

प्रसृत, वि (स) प्रगत, प्रचलित २ विस्तृत, विस्तीर्ण ३ लम्ब, दीर्घ, आयत ४ न्यस्त, सलग्न ५ सुशील, विनम्र ६ गत, यात ७ स्फूर्तिमत्

प्रसृता, स स्त्री (स) जघा, टक्किका।

प्रसेक, स पु (स) आस्रव, सेक सेचनम्, अभिवर्षण, अभ्युक्षण, प्रोक्षणम् क्षरण, गलन, स्रवणम् ३ वमन, वम, वमि (स्त्री) ४ दावका,-कटोरिका अग्रभाग।

प्रस्तर, सं पु (स) शिला, पाषाण, दे 'पत्थर'।

प्रस्ताव, स पु (स) अवसर, उचितकाल २ प्रसंग, विषय ३ प्रकरण ४ उपक्षेप, उपन्यास ५ प्रति,-कथ, लेख ६ दे 'प्रस्तावना'।

प्रस्तावना, स स्त्री (स) भूमिका, उपोद्घात, प्राक्कथन, आमुख, अवतरणिका २ आरम्भ, उपक्रम।

प्रस्तुत, वि (स) स्तु(स्तू)त, श्लाघित। २ उक्त, कथित ३ प्रासंगिक, प्रसंगप्राप्त ४ उपस्थित, प्रतिपन्न ५ उद्यत, सन्न ६ निष्पन्न, संपादित।

प्रस्थान, स पु (सं न) प्रयाण, अपक्रम, गमन, यात्रा २ विजिगीषुसेनाया प्रयाणम्।

प्रस्वेद, स पु (स) दे 'पसीना'।

प्रहर, स पु (स) याम दे 'पहर'।

प्रहरी, वि (स रिन्) दे 'पहरा' स पु २।

प्रहसन, स पु (सं न) रूपक नाटक, भेद, २ परिहास, विनोद ३ अव-उप,हास।

प्रहार, स पु (स) आघात, ताड, निघात, हथ।

—करना क्रि स आहन् (अ प अ), प्रह (भ्वा प अ), तड् (चु), प्रहार कृ।

प्रहृष्ट, वि (सं) प्रमुदित, सुप्रसन्न, अत्यानंदित।

प्रहेलिका, स स्त्री (स) प्रश्नदूती, दे 'पहेली'।

प्रागण, स पु (सं न) अजिर, अंगन, चत्वरम्।

प्राजल, वि (स) सरल, ऋजु, २ सत्य, यथार्थ ३. सम, समतल।

प्रात, सं पु (स) देशभाग, राष्ट्रविभाग २ भूखंड, प्रदेश ३ सीमा, समत ४ अग्र, कोटि (स्त्री) ५ दिशा (स्त्री)।

प्रातीय, वि (स) प्रांतिक, प्रांत,-संबंधिन् विषयक।

प्राइवेट, वि (अं) स्वकीय, आत्मीय २ विशिष्ट, असार्वजनिक ३ गुप्त, संवरणीय।

—सेक्रेटरी, स पुं (अं) स्वकीयसचिव।

प्राकार, स पु (स) वप्र म, शा(सा)ल, वरण।

प्राकृत, वि (स) प्रकृतिज, प्राकृतिक २ स्वाभाविक, नैसर्गिक ३ साधारण ४ लौकिक ५ तुच्छ, नीच ६ भौतिक। स स्त्री (स न) व्यवहारभाषा २ प्राचीन भाषाविशेष।

प्राकृतिक, वि (स) दे 'प्राकृत'।

प्राची, स स्त्री (सं) पूर्वदिशा, पूर्वदिश् (स्त्री) २ पूजकपूज्ययो पुरोवर्तिदिशा।

प्राचीन, वि (स) पुराण, सनातन, पुरातन, पूर्व, प्राक्कालीन २ पूर्वदेशीय, प्राच्य, पौरस्त्य, पूर्वदिक्स्थ, प्राच्।

प्राचीनता, स स्त्री (सं) पुराणता, पुरातनता इ।

प्राचीर, स पु (स न) प्रासादो वृत्ति (स्त्री) प्रावर, प्रावृति (स्त्री), दे 'प्रकार'।

प्राचुर्य, स पु (स न) 'प्रचुरता'।

प्राच्य, वि (स) दे 'प्राचीन' (१२)।

प्राज्ञ, वि तथा स पुं (सं) पंडित( ), विज्ञ( ), धीमत्, बुद्धिमत्, विद्वस्।

प्राज्ञी, स स्त्री तथा वि (स) पण्डिता, बुद्धिमती विदुषी (नारी)।

प्राण, स पु (स प्राण बहु) भगव (बहु) हृमारुत २ श्वास, उच्छ्वास, श्वसित, ३ पवन, अनिल ४ बल, शक्ति (स्त्री) ५ जीवन, चैतन्य ६ आत्मन् ७ प्रियो मनुष्य पदार्थो वा।

—त्याग, सं पु (स) मृत्यु, निधन २ आत्म, हत्या-घात।

—दंड, सं पु (सं) देह मृत्यु-दंड, उत्तम साहसम्।

—धारण, सं पु (सं न) जीवनं, प्राणनं, देहधारणम्।

प्रारब्ध, म स्त्री (स न) भाग्य, दैव, अदृष्ट, प्राक्तन, नियति (स्त्री) । वि , कृता रंभ, उपक्रान्त ।

प्रार्थना, स स्त्री (स) याचना याचना, अभि शस्ति (स्त्री), आ नि,-वदन, अभि , अथना ।

—करना, क्रि स अभिप्र , अथ (चु आ मे), याच (भ्वा उ से), सविनय आ नि विद् (प्रे) ।

—पत्र, स पु (स) आवेदनपत्रम् ।

प्रार्थनीय, वि (स) याचनीय, अभ्यर्थनीय ।

प्रार्थित, वि (स) याचित, अभ्यर्थित, निवेदित ।

प्रार्थी, स पु (स थिन्) प्रार्थयितृ, याचक निवेदक ।

प्रालब्ध, स स्त्री , दे प्रारब्ध' म स्त्री ।

प्रासंगिक, वि (स) प्रसंग, आगत प्राप्त उचित, अनुरूप प्रस्तुत, प्रास्ताविक [-की (स्त्री) = प्रासंगिकी] ।

प्रासाद, स पु (स) राज-नृप गृह भवन मंदिर हर्म्यं सौध धम् ।

प्रिज्म, म पु (अ) त्रिपार्श्वकाच ।

प्रिय, वि (स) दे 'प्यारा' २ मनोहर, अभिराम । सं पु , पति २ कान्त , दयित ३ जामातृ ४ हितम् ।

—तम, वि (स) प्रेष्ठ, प्राण प्रिय । स पु , पति , भर्तृ । २ वल्लभ , कान्त ।

—तमा, वि (स) प्रेष्ठा, प्राणप्रिया । स स्त्री , पत्नी २ कान्ता ।

—दर्शन, वि (स) सुशुभ,-दर्शन, सुरूप, शोभन, सुंदर ।

—भाषी, वि (स षिन्) मधुरभाषिन्, प्रिय, वादिन्-वचन ।

—वर, वि (स) प्रेष्ठ, प्रियतम ।

प्रिया, सं स्त्री (स) नारी, रमणी २ पत्नी, भार्या ३ प्रेयसी, प्रेमवती, कान्ता ।

प्रीतम, स पु , दे 'प्रियतम' ।

प्रीत, } सं स्त्री [स प्रीति (स्त्री)] दे
प्रीति, } 'प्यार' २ तृप्ति (स्त्री) ३ आनंद , हर्ष ।

—पूर्वक, क्रि वि (स -क) प्रेम्णा, स्नेहेन ।

—भोज, सं पु (सं -भोग) प्रीतिभोजन, भोजनोत्सव ।

प्रेक्षक, स पु (स) दर्शक , द्रष्टृ २ (नाट कादि मे) पार्षद , सामाजिक ।

प्रेक्षण, स पु (स न) नेत्र २ अवलोकनं, दर्शनम् ।

प्रेत, स पु (स) नरकस्थप्राणिन् २ भूत भेद , वेताल ३ मृतमानव , शव ।

—कर्म, स पु [स -कर्मन् (न)] प्रेत, कार्य क्रिया कृत्य, आमृत्यो सपिंडीकरणपर्यंत क्रियाकलाप ।

—गृह, स पु (सं न) प्रेतभूमि (स्त्री) श्मशानम् ।

—दाह, स पु (सं) अन्त्येष्टि संस्कार, सम्स्कार ।

—पक्ष, स पु (सं) पितृपक्ष , गौण चान्द्राश्विन कृष्णपक्ष ।

—पति, स पु (स) यमराज ।

प्रेतनी, स स्त्री (स प्रेत) पिशाची पिशाचिका, प्रेतपत्नी ।

प्रेम, सं पु [स प्रेमन् (पु न)] स्नेह , अनु, राग प्रणय , दे प्यार' २ काम , शृङ्गार , रति (स्त्री) ३ ईश्वरभक्ति (स्त्री) ।

—कहानी, स स्त्री प्रेमकथा, शृंगाराख्यायिका ।

—पात्र, स पु (स न) स्नेहभाजन (मानव वा पदार्थ) ।

—पाश, स पु (स) स्नेह-अनुराग प्रेम, बन्धन रज्जु (स्त्री) शृंखला-जालम् ।

—पुत्तलिका, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या, कलत्रम् ।

—वारि, सं पु (सं न) प्रेमाश्रु (न), स्नेहाम्बु ।

प्रेमालाप, स पु (सं)स्नेहसंभाषण २ शृंगार संवाद ।

प्रेमाश्रु, स पु (स न) प्रेम, स्नेह वारि(न), अनुरागबाष्पम् ।

प्रेमिक, स पु दे 'प्रेमी' ।

प्रेमिका, स स्त्री , दे प्रेयसी' ।

प्रेमी, स पु (सं मिन्) प्रणयिन्, अनुरागिन्, स्नेहिन्, अनुराग प्रणय,-वत् २ कामिन्, कामुक , रमण , वल्लभ । वि , प्रिय, आसक्त निरत, मग्न (उ , *संगीत का प्रेमी = संगीत, प्रिय-आसक्त इ*) ।

प्रेय, वि (सं प्रेयस्) प्रियतर, अतिप्रिय

२ लौकिकसामारिक-सुरर्ति भोग ३ अलंकारभेद (सा०)।

प्रेयसी, स. स्त्री (स) प्रेमवती, प्रमिणी, प्रिया, वल्लभा, कान्ता, दयिता।

प्रेरक, स पु (स) प्रचोदयितृ, प्रवर्तयितृ प्रोत्साहक, उत्तेजक।

प्रेरणा, स स्त्री (स) प्रचोदना, प्रोत्साहना, उत्तेजन-ना, प्रवर्तन २ दे 'धक्का'।

—करना, क्रि स, उत्तिज् प्रवृत् प्रेर् प्रचुद्-प्रोत्सह् (प्रे)।

प्रेरित, वि (स) प्रचोदित, प्रोत्साहित, उत्तेजित, प्रवर्तित।

प्रेस, स पु (अ) मपीयन्त्र २ मुद्रणयन्त्र ३ मुद्रणयन्त्रालय।

प्रेसिडेंट, स पु (अ) सभापति अध्यक्ष प्रधान।

प्रोग्राम, स पु (अ) कार्यक्रम २ कार्यक्रमपत्रम्।

प्रोटीन, स पु (अ) प्रोभूजिन, आननतत्त्व भेद।

प्रोत, वि (स) ग्रथित, निहित २ स्यूत, ग्रथित, गुम्फित।

प्रोत्साहन, स पु (स न) धैर्य-उत्साह-वर्धन, उत्तेजन, आश्वासनम्।

प्रोत्साहित, वि (स) उत्तेजित, आश्वासित, वर्धितोत्साह, प्रेरित।

प्रोथ, वि (स) विश्रुत, प्रख्यात २ प्रचलित, प्रस्थित ३ स्थापित, स्थिरीकृत (स पु न) १ १ ३ अश्व, नासा नासारन्ध्र ३ शूकर तुण्डम्।

प्रोदक, वि (स) उत्त उन्न आर्द्र २ निर्मल, निर्मलजल, शुद्ध।

प्रोनोट, स पु (अ) ऋणविस्तारप्रतिज्ञा-लेख, ऋणपत्रम्।

प्रोपगेंडा, स पु (अ) प्रचार, प्रचारकार्यम्।

प्रोप्राइटर, स पु (अ) स्वामिन्, प्रभु, ईश।

प्रोफेसर, स पु (अ) (महाविद्यालयस्य विश्वविद्यालयस्य वा) उपाध्याय।

प्रोषित, वि (स) विदेशस्थ, प्रवासिन्।

—पतिका, स स्त्री (सं) प्रोषितभर्तृका, नायिकाभेद।

प्रौढ, वि (स) प्रवृद्ध, एधित, प्रोपचित २ सपरि-पूर्ण, प्रबल, सिद्ध ३ परिणत, परिपक्व ४ पुष्ट, दृढ ५ निपुण, चतुर।

प्रौढता, स स्त्री (सं) प्रौढत्व, प्रवृद्धि (स्त्री) २ परिपूर्णता ३ परिपक्वता ४ पुष्टि (स्त्री) ५ निपुणता।

प्रौढा, स स्त्री (सं) चिर्भिटी, श्यामा, मुवया°, दृष्टरजा (स्त्री एक) (३० से ५५ वर्ष तक की नारी) २ नायिकाभेद। वि, पुष्टा, परिपक्वा, दृढा।

प्लन, स पु (अ) नियम।

प्लवग, स पु (स) कपि, वानर २ हरिण ३ मडूक।

प्लवन, स प (स न) कूर्दन २ तरणम्।

प्लाटिनम, स पु (अ) महातु।

प्लावन स पु (स न) महाप्रवाह, नल, प्रलय-कृत्पारिप्लव।

प्लावित, वि (सं) जलमग्न।

प्लास्टर, स पु (अ) दे 'पलस्तर'।

—आव पेरिस, स पु, दग्धशर्करा, परिसप्रलेप।

प्लीहा, स स्त्री (स) प्ली(लि)हन् (पु), गुल्म, प्लिहा।

प्लुत, स पु (स) त्रिमात्रवर्ण। वि, प्रधावितुत २ प्लावित ३ सिक्त ४ त्रिमात्र।

प्लूरिसी, स स्त्री (अ) फुफ्फुसवेष्टनपाक, फुफ्फुसावरणप्रदाह।

प्लेग, स पु (अ) महामारी, मारिका २ मूषिकरोग अग्निरोहिणी।

प्लेट, स स्त्री (अ) दे 'तश्तरी' २ (धात्वादिकस्य) पट्ट, फलकम्।

—फार्म, स पु (अ) वेदी, वेदिका, मञ्च, पीठिका।

फ

फ, देवनागरीवर्णमालाया द्वाविंशतितमो व्यञ्जनवर्ण, फकार।

फंका, स पु (हिं फाँकना) मुष्टि (पु स्त्री), अञ्जलि (पु), मुष्टि-अञ्जलि-मात्र अन्नादिक २ खड-ड, शकल-लम्।

फंकी, स स्त्री (हिं फका) चूर्ण, चूर्णौषधम्।

फंद, स पु (स बंध) बंधन २ दे 'फंदा' ३ छल, कपट ४ रहस्य, गूढ़वार्ता ५ दुःखम्।

फंदा, स पु (स बंध) पाश बन्धन, वागुरा, पाशिनी, मृगबंधनी २ जाल ३ दुःख बन्धन्।

—लगाना, मु , छल (चु) विप्रलभ (भ्वा आ अ) वचप्रतृ (प्रे) २ पाश निक्षिप् (तु प अ) निधा (जु उ अ)।

फंदे म पड़ना, मु , पाशे बध् प्रर् (कर्म), वशी भू , २ विप्रलब्ध प्रतार (कर्म)।

फंसना, क्रि अ (हिं फांसना) समबध् मंश्लिष् सबध् (कर्म), आकुली-सकीर्णी भू , सशक्त सलग्न-संश्लिष्ट (वि) भू २ जाले पाशे वा धृ-बध (कर्म) जालबद्ध (वि) भू।

फंसवाना, क्रि प्रे , व 'फंसाना' के प्रे रूप।

फंसाना, क्रि स (हिं फंसना) साश्लिष् (प्रे), समबंध् (क्र् प से), आकुल सलग्नी-संकीर्णी कृ २ पाशेन बध् (क्र् प अ) जाल धृ (चु), पाशे पत् (प्र)।

फंसाव, स पु } (हिं फंसना) सश्लिष्टता,
फंसावट, स स्त्री } प्रथितत्व २ सकुल्ता, व्यतिकर, संकर।

फक, वि (अ फक) श्वेत, शुभ्र, स्वच्छ २ विवर्ण, मदप्रभ।

रंग—होना या पड़ जाना मु पाडुच्छाय विवर्ण (वि) भू , मद-म्लान मलिन,प्रभ(वि) जन् (दि आ से) २ आकुली भू, मुह् (दि प से)।

फकत, वि (अ) अल, पर्याप्त २ समाप्ति: । क्रि वि , केवलम्।

फकीर, स पु (अ) भिक्षु , भिक्षुक २ साधु, सन्यासिन् ३ निर्धन।

फकीरनी, स स्त्री (अ फकीर>) भिक्षुकी, भिक्षोपजीविनी, भिक्षाचारी २ परिव्राजिका, सन्यासिनी, वैरागिणी।

फकीरी, स स्त्री (अ फकीरी) भिक्षुकता, याचकत्व २ सन्यास ३ दारिद्र्यम्।

फक्कड़, वि (अ फकीर) निर्धन २ निडर, ३ निश्चिन्तदृष्टि। स पु , गाली, अश्लील वचन , अश्लीलग्राम्य भाषा-भ्य,वचन २ मिथ्याव चन्।

—बाज, स पु , अग्राह्यभाषक अश्लील भाषिन् २ मिथ्याभाषिन्।

—बाजी, स स्त्री , अश्लीलभाषिता, अवाच्य वाचकता।

फक्किका, स स्त्री (स) तत्त्वनिर्णयार्थमुपस्था पित पूर्वपक्ष २ छल, कपट, दभ ।

फखर, स पु (फा फख्र) गर्व, अभिमान।

फगुआ, स पु (हिं फागुन) होलिकोत्सव २ होलिकागीतानि (न बहु)।

फजीलत, स स्त्री (अ), गौरव, महत्ता।

—की पगड़ी, मु , विद्वत्ताप्रमाणम्, वैदुष्यो क्तीयम्।

फजीहत, स स्त्री (अ) दुर्गति (स्त्री) दुर्दशा, २ कलह ।

फजूल, वि (अ) निरर्थक, व्यर्थ।

—खर्च, वि (अ+फा) मुक्तहस्त, अप व्यय,-व्ययिन्।

—खर्ची, स स्त्री , अति अप अमित,-व्यय, मुक्तहस्तता।

फज़ल, स पु (अ) कृपा, अनुग्रह ।

फट, स स्त्री (अनु) फटिति शब्द ध्वनि।

—फट, स स्त्री , फटफटाशब्द २ प्रलाप।

—से, क्रि वि , झटिति, सपदि।

फटक[1], स पु दे 'स्फटिक'।

फटक[2], क्रि वि (अनु) तत्क्षणे, झटिति।

फटकन, स स्त्री (हिं फटकना) तुषमं, तुष , असारद्रव्यम्।

फटकना, क्रि स, (अनु फट) प्रस्फुट् (प्रे), प्रसारितेन शूर्पेण विधुष् (प्रे) २ दे 'पींजना' ३ दे 'फटफटाना'। ४ रेणु अपमृज (अ प से), निधूली कृ ५ क्षिप् (तु प अ), अस् (दि प से)। क्रि अ, या (अ प अ), गम् २ दूरी पृथग् भू ३ 'तड़फड़ाना' ४ श्रम् (दि प से)।

फटकरी, स स्त्री, दे 'फिटकरी।

फटकार, स स्त्री (अनु फट्+सं कार>) निर्भर्त्सना, वाग्दंड, उपालभ, निंदा, आक्रोश, गहा।

फटकारना, क्रि स (पूर्व) शिलाया आस्फाल्य आहत्य वस्त्राणि प्रक्षल् (चु) २ दूरीकृ, क्षिप्, कृ ३ निर्भर्त्स्-तर्ज् (चु आ से) वाग्दंड् (चु), निंद् (भ्वा प से) ४ सफटफट शब्द एक्स्प् (प्रे)।

फटकारने योग्य, वि , निर्भर्त्सनीय, तर्जनीय।

फटकारने वाला, स पु , निर्भर्त्सक , तर्जक ।
फटकी, स स्त्री (हि फटक>) शाकुनिक पञ्जरम् ।
फटना, क्रि अ (हि फाटना) विद् विभिद् वि (कर्म) २ स्फुट (तु प से), दल (भ्वा प से) ३ खण्डशो भिद् (कम) द्विधा भू ४ अप वि कृ (तु प से) इतस्तत विद्रु (भ्वा प अ) ५ अत्यंत व्यथ (भ्वा आ से) ६ अम्ली भू ।
फट पड़ना, मु सहसा आपत् (भ्वा प से)- उपस्था (भ्वा आ अ)।
छाती—, (शोकातिशयेन) हृदय विदृ द्विधा भिद् (कर्म)।
फटफटाना, क्रि स (अनु फटफट) प्र, जल्प (भ्वा प से) अपार्थक वद् (भ्वा प से) २ दे फड़फड़ाना' ३ प्रयस् परिश्रम (दि प से) ४ फटफटायते (ना धा), फटफटाशब्द कृ ५ आजीविकार्थे भृश चेष्ट (भ्वा आ से)।
फटा, वि (हि फटना) विदीर्ण, विशीर्ण २ स्फुटित, विदलित ३ शकलीभूत। स पु, छिद्र, छेद, भेद ।
—दूध, स पु, अम्लीभूत क्षीरम्।
—पुराना, स पु, चीर, चीवर, कर्पट ।
फटे में पाँव देना, मु.. अव्यापारेषु व्यापार कृ, परकार्येषु व्यापृ (तु आ अ)।
फटिक, स पु दे 'स्फटिक'।
फट्टा, स पु (हि फटना>) विदीर्णवेणुदल ।
फड़, स स्त्री (स पण) कलह २ द्यूत, शाला-उभ' ३ क्रयविक्रयस्थान ४ पंक्ति (स्त्री), समूह ।
—बाज़, स पु (हिं+फा) सभिक, द्यूत कारक २ वाचाल, वावदूक ।
फड़क, स स्त्री (अनु) प्र,स्पद, स्फुरण, कम्प २ पक्ष-चालन-आस्फालनम्।
—उठना, मु, प्रमद् (दि प अ)।
—जाना, मु, अनुरज् (कम), स्निह् (दि प से)।
फड़कना, क्रि अ (पूव) स्फुर् (तु प से), वेप्-कम्प्-स्पन्द् (भ्वा आ से) २ क्षुभ् (दि प से), आकुली भू २ पक्ष विचल् (भ्वा प से), विधू (कर्म)।
फड़काना, क्रि स, व 'फड़कना' के प्रे रूप।
फड़फड़ाना, क्रि स (अनु फटफट>) फट फटायते (ना धा), फटफटाशब्द तन् (प्रे) २ पक्षौ विधू (स्वा उ से, क्र उ से, भ्वा उ से, चु), आस्फल् विचल (प्रे), दे 'फटफटाना'। क्रि अ, क्षुभ (दि प से), आकुली भू २ उत्सुक वृत् (भ्वा आ से)।
फड़फड़ाहट, स स्त्री (हिं फटफड़ाना) पक्ष,-आस्फालन विधुवन विचालन २ स्फुरण, स्पदन, विकप ३ आकुलता, चित्त-वेग भ्रम, म ,क्षोभ ४ प्रयास ,अति प्र -यत्न , चेष्टितम् ।
फड़वाना, **फड़ाना**, } क्रि प्रे , व 'फाड़ना' के प्र रूप ।
फड़िया, स प (हिं फड़) द्यूतकारक, सभिक २ दे 'परचूनिया'।
फण, स पु (स) फणा, फण, कट ,-टा-टी, स्फट -टा, भोग , स्फुट -टा, दर्वी-र्वि (स्त्री)।
—कर, स पु (स) सर्प, अहि ।
—धर, स पु (स) नाग, सर्प २ शिव ।
—मणि, स स्त्री (स पु) सर्पमणि -रत्नम् ।
फणा, स स्त्री (स) दे 'फण'।
फणी, स पु (स -णिन्) फणधर, फणाकर, दे 'सर्प'।
फणीन्द्र, **फणीश**, } स पु (स) अनत, शेष, भुजगेश, सर्पराज ।
फ़तवा, स पु (अ) व्यवस्था, निर्णय (इस्लाम)।
फ़तह, स स्त्री (अ) विजय २ साफल्यम्।
—मंद, **—याब**, (अ+फा) विजयिन्, विजेतृ।
फतिंगा, स पु (स पतग) शलभ, पतगम ।
फतूर, स पु (अ) दोष, विकार, २ हानि (स्त्री) ३ विघ्न ४ उपद्रव ।
फन, स पु, दे 'फण'।
फ़न, स पु (फा) गुण, वैशिष्ट्य २ विद्या, ज्ञान ३ कलाकौशल, शिल्प ४ व्याज, छलम् (न)।
फ़ना, स स्त्री (अ) प्रलय, वि,नाश, प्र,ध्वस ।
फनी, स पु, दे 'फणी'।
फफोला, स पु (स प्रस्फोट) त्वक्-,स्फोट, शोफ । दे 'छाला'।
दिल के फफोले फोड़ना, मु, वैर,-साधनं

शोभन नियातन कृ (ना धा), प्रतिद्दिम् (रु प स), क्रोध प्रकटयति (ना धा),

फब, स स्त्री , दे 'फबन' ।

फबती, स स्त्री (हिं फबना) क्ष्वेला लिका, नमन् (न), नर्मोक्ति (स्त्री), व्यङ्ग्यवचन २ समयोचितयुक्ति (स्त्री) ।

—उड़ाना, मु अवज्ञया हस (भ्वा प से), वक्रोक्त्या आक्षिप (तु प अ) ।

—कहना, मु , सहास्य उपालभ (भ्वा आ अ) सहास व्यङ्ग्यवचन प्रयुज (रु आ अ) ।

फबन, स स्त्री (हिं फबना) शोभा, छवि (स्त्री), सौन्दर्य २ मण्डन प्रसाधन,परिष्कार ।

फबना, क्रि अ , (स प्रभवन>) शुभ् (भ्वा आ से) युज (कर्म) उपपद् (दि आ अ), उचित उपपन्न अनुरूप युक्त सदृश (वि) युज (भ्वा आ से) ।

फबनेवाला, वि , शोभन, उचित, युक्त, अनुरूप, सदृश ।

फबीला, वि (हिं फब) शोभन, सुन्दर, २ उचित अनुरूप ।

फरक, फरकन, स स्त्री , दे 'फड़क' ।

फरक़, स पु , दे 'फ़र्क़' ।

फरकना, क्रि अ , दे 'फड़कना' ।

फ़रज़न्द, स पु (फ़ा) पुत्र , तनुज ।

फ़रज़ी, स पु , दे 'फ़र्ज़ी' ।

फ़रद, स स्त्री , दे 'फ़र्द' ।

फरफंद, स पु (अनु फर+हिं. फंदा) माया, कपट, छल, व्याज, (न), व्याज २ भाव , हाव ।

फरफर, स पुं (अनु) पक्ष,स्फुरण आस्फालनम् । क्रि वि सवेगं शीघ्र, द्रुत २ अप्रतिहतम् ।

फरफराना, क्रि स , क्रि अ , दे 'फड़फड़ाना' ।

फ़रमा[1], सं पु (अ फ्रेम) घटना, रचना २ दे 'कालबूत' ३ आकारसाधनम् ।

फ़रमा[2], सं पु (अं फ़ार्म) सकृन्मुद्रणार्ह पृष्ठपत्रम् ।

फरमान, सं पु (फ़ा) राजकीयं आज्ञापत्र, अनुशासनपत्र २ आज्ञा, आदेश ।

फरमाना, क्रि स (फ़ा) आज्ञा (प्रे), आदिश् (तु प अ) शास् (अ प स.) २ वच् (चु) ।

फ़रयाद सं स्त्री (फ़ा) दुःखनिवेदन २ प्रार्थना, अभ्यर्थना ३ अभियोग ।

फ़रयादी, स पुं (फ़ा) दुःखनिवेदक २ अभियोक्तृ ३ प्रार्थिन् ।

फरलांग, स पु (अं) क्रोशस्य षोडशो भाग, अध्वमानभेद ।

फ़रलो, स स्त्री (अं) सार्धवेतनो दीर्घावकाश , अवकाशभेद ।

फरवरी, स स्त्री (अं फ़ेब्रुअरी) आंग्लसंवत्सरस्य द्वितीयो मास ।

फरसा, स पु (सं परशु) दे 'कुल्हाड़ा' ।

फरहंग, स पुं (फ़ा) कोश प , अभिधानं, शब्दसंग्रह २ टीका, कुञ्चिका, व्याख्या ।

फरहत, सं स्त्री (अ) मोद , हर्ष , प्रसन्नता ।

फरहरा, स पु (हिं फहराना) पताका, केतु ।

फराख, वि (फ़ा) आयत, विस्तृत, विशाल ।

—दिल, वि (फ़ा) विशालहृदय उदार ।

फ़राग़त, स स्त्री (अ) व्यवसाय विश्राम , उद्योगविश्रांति (स्त्री), अवकाश । २ निश्चिन्तता ३ मलत्याग ।

फ़रामोश, वि (फ़ा) विस्मृत ।

फ़रामोशी, सं स्त्री (फ़ा), विस्मृति (स्त्री), विस्मरणम् २ स्खलनं, स्खलितम् ।

फ़रार, वि (अ) (दण्डभयात्) पलायित, अपक्रान्त ।

फ़रिश्ता, सं पुं (फ़ा, मि ग्री प्रेषित) दिव्य दूत, दूत २ देवता ।

फ़रीक़, सं पुं (अ) प्रतिद्वन्द्विन्, विपक्षिन् २ वादिन्, अर्थिन्, प्रतिवादिन्, प्रत्यर्थिन् ३ पक्ष , प्रतिपक्ष ४ पक्ष्य , सपक्ष ५ श्रेणी, वर्ग ।

—सानी, (सं पु अ) प्रतिवादिन् ।

फ़रीक़ैन, सं पुं (अ) (व्यवहारे) पक्ष प्रतिपक्षौ, वादिप्रतिवादिनौ, अभियोग्य भियुक्तौ ।

फरहा, सं पु , दे 'फावड़ा' ।

फरेंदा, सं पुं (सं फलेन्द्र) राजजम्बू, जम्बु , नद ।

फ़रेब, सं पु (फ़ा) छद्म, कपट, प्रतारणा ।

फ़रेबी, वि (फ़ा) छद्मिन्, कापटिक, प्रतारक ।

फ़रोख़्त, सं स्त्री (फ़ा) विक्रय -यणम् ।

फ़र्क़, सं पुं (अ) पृथक्तात्व, भिन्नत्व, इतरत्व २ अंतर, भेद, विशेष ३ दूरतात्व, अंतर ४ न्यूनता, विकलता ।

फ़र्ज़, सं पुं (अ) धार्मिककृत्य (इस्लाम) २ कर्तव्यकर्मन् (न) ३ कल्पना ४ उत्तरदायित्वम् ।

—करना, क्रि अ कल्प् (प्रे), उत्प्रेक्ष् (भ्वा आ से) (प्रमाण विना) सिद्ध मन् (दि आ अ) ।

फ़र्ज़ी, सं पुं (फ़ा) कल्पित, काल्पनिक, २ सत्ताहीन वितथ ।

फ़र्द, सं स्त्री (अ) सूची (स्त्री) नामावलि (स्त्री), अनुक्रमणिका २ पृथक्स्थित पत्रकादिः ३ प्रच्छदपट स्यो वपुः । वि अनुपम, अतुल्य ।

फ़याद, सं स्त्री, दे फ़र्याद' ।

फ़राटा, सं पुं (अनु) त्वरा, वेग २ दे 'फ़र्राटा' ।

फ़रांश, सं पुं (अ) कुथप्रसारक २ विस्तर ।

फ़र्श, सं पुं (अ) कुट्टिम म, शिलास्तर २ गृहभूमि (स्त्री) आस्तरण, कुथ -था, कमल, परिस्तोम ।

फल, सं पुं (सं न) शस्य, प्रसव, उत्पन्न २ लाभ, प्राप्ति (स्त्री) ३ परिणाम, ४ गुण, प्रभाव ५ कर्मभोग ६ प्रतिफल, प्रतीकार ७ धारा, पत्र, फल (खड्गादिकस्य) ८ फाल, कुशी, कृपक ९ फलक-क १० ढाल, फर, चर्मन् (न) ११ उद्देश्यसिद्धि (स्त्री) १२ गुण्य (गति) १३ गणित क्रियापरिणाम (उ योग गुणन, फल) १४ क्षेत्रफल १५ ग्रहयोगपरिणाम (ज्यो) १६ प्रयोजन, अर्थ १७ वृद्धि (स्त्री), दे 'सूद'

—आना, या लगना, क्रि अ, फल् (भ्वा प से), सफलीभू, फलवत् जन् (दि आ से), फलित (वि) भू ।

—दार, वि (सं + फ़ा) फलवत्, फलदायक, फलद, फलप्रद, फलित, फलिन्, सफल २ अमोघ, अवध्य ।

—पाक, सं पुं (सं) करमर्दक २ नलामलक ३ फलपरिणति (स्त्री) ।

—पाना, क्रि स, (स्वकर्मणाम्) फल भुज् (रु आ अ) लभ् (भ्वा आ अ) प्राप् (स्वा प अ) ।

—प्राप्ति, सं स्त्री (सं) कृतकार्यता, मनोरथसिद्धिः (स्त्री) ।

—भोग, सं पुं (सं) उदयानुभव, परिणामोपभोग ।

—दान, सं पुं (सं) दे तरबूज' २ दे 'खरबूजा' ।

फलक, सं पुं (सं पुं न) (काष्ठादिकस्य) पट्ट -ट्टः २ शिला ३ ढाल, चर्मन् (न) ४ रत्नपट्ट ५ आस्तरण ६ पत्र, पृष्ठ ७ हस्ततल ८ फल ९ पीठ, पीठिका ।

फ़लक, सं पुं (अ) आकाश -शः, गगन २ स्वर्ग ।

फलतः, अव्य (सं) परिणामतः, अतः, इति हेतोः, अस्मात् कारणात् ।

फलद, वि (सं) फल-दायक प्रद जनक ।

फलना, क्रि अ (सं फलन) दे फल आना' ('फल' के नीचे) २ फल आवह (भ्वा प अ), लाभ जन् (प्रे) ।

—फूलना, मु, समृध् (दि प से), संवृध् (भ्वा आ से), उत्कर्षे या (अ प अ) ।

फ़लसफ़ी, सं पुं (अ) दर्शनशास्त्र, तर्क, विद्याशास्त्रम् ।

फ़लसफ़ा, सं पुं (अ) दार्शनिक, तत्त्वज्ञ, दर्शनशास्त्रज्ञ ।

फ़लाँ, वि (फ़ा) अमुक ।

—फ़लाँ, वि अमुकामुक, विशिष्ट, निर्दिष्ट ।

फलांग, सं स्त्री, दे 'कुदान' ।

फलांगना, क्रि अ (सं प्रलंघनम्) दे 'कूदना' ।

फलाकांक्षी, वि (सं क्षिन्) फलेच्छुक, फलाभिलाषिन् ।

फ़लाना, वि, दे 'फलाँ' ।

फलार्थी, वि (सं -र्थिन्) फलेच्छुक, फलाभिलाषिन् २ परिणामोत्सुक ।

फलाहार, सं पुं (सं) फलभक्षण, फलैर्निर्वहणम् ।

फलाहारी, वि (सं -रिन्) फलभक्षक ।

फलित, वि (सं) फलवत्, फलिन्, प्राप्तफल २ सफल, पूर्ण ।

—ज्योतिष, स पु (स न) दैवज्ञविद्या ।

फली, स स्त्री (हिं फल) बीजपुट, बीजकोष ।

फलीता, स पु (अ फतीलह्) वर्तिका, वर्ति (स्त्री) २ नालास्त्रवर्ति फली ।

फलीभूत, वि (स >) सफल, फलप्रद ।

फलोदय स पु (स) फलोत्पत्ति (स्त्री) २ लाभ ३ हर्ष ४ स्वर्ग ।

फसल स स्त्री (अ फस्ल) शस्य, धान्य, अन्नम् २ ऋतु ३ काल ।

फसाद, स पु (अ) संक्षोभ विप्लव २ कलह उपद्रव २ विकार, विक्रिया ।

फसादी, वि (फा) विद्रोहिन् विप्लवकारिन् २ उपद्रविन् कलहप्रिय ।

फसाना, स पु (फा) आख्यायिका, कथा ।

फसाहत, स स्त्री (अ) भाषा सौष्ठव परिष्कृति (स्त्री) ।

फसील, स स्त्री (अ) प्राकार, वरण, वप्र, वप्रम ।

फहरना, क्रि अ (स प्रसरणम्) प्रसृ (भ्वा प अ) उन्दी (भ्वा आ से) ।

फहराना, क्रि स 'फहराना' के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप ।

फाँक, स स्त्री (स फलकम् >) खण्ड, शकल २ छुरिका ३ रेखा ।

फाँकना, क्रि स (हिं फकी) हस्तातलेन मुखे निक्षिप (तु प अ) । स पु, चूर्णस्य मुखे निक्षेपणम् ।

फाँदना, क्रि अ (स फणन >) कुर्द् (भ्वा आ से) उत्प्लु (भ्वा आ अ) २ उल्लङ्घ (भ्वा आ स) । स पु उत्प्लवन, कूर्दन, उल्लङ्घनम् ।

फाँस, स स्त्री (स पाश) बन्धनम्, दे 'फंदा' ।

फाँसना, क्रि स (हिं फाँस) पाशयति (ना धा) २ वञ्च्प्रतॄ (ने) ।

फाँसी, स स्त्री (हिं फाँस) उद्बन्धनम् २ मृत्युदण्ड २ पाश बन्धनम् ।

—देना, क्रि स, उद्बध्य हन् (अ प अ) ।

फाइल, स स्त्री (अं) पत्रसंग्रह २ पंक्ति (स्त्री) ३ सूत्र, गुण ।

फाका, स पु (अ फाकह्) उपवास, उपोषित, लङ्घनम् ।

फाग, स पु (हिं फागुन) होलिकोत्सव २ रक्तचूर्णभेद ३ होलिकागीतम् ।

फागुन, स पु (स फाल्गुन दे) ।

फाटक, स पु (स कपाट) अग्रद्वार, गृहद्वारम् २ लौहद्वारम् ३ दे 'काँजी हौद' ।

फाड़ना, क्रि स (स स्फाटनम्) मथ् (तु प से) भिद् छिद् (रु प अ), वि-दॄ (क्र्या) २ खण्ड् (चु), भञ्ज् (रु प अ) । स पु, मथन, भेदन, छेदन, विदारण, विपाटन २ खण्डन भञ्जनम् ।

फानूस, स पु (फा) काचदीप, काचकोषपुट ।

फायदा, स पु (अ फाइदह्) लाभ, धनागम, आय २ प्रयोजनसिद्धि, ईप्सितप्राप्ति (स्त्री) ३ सुफल सुपरिणाम ४ नीरोगता ।

—मन्द, वि लाभदायक, उपकारक ।

फारखती, स स्त्री (अ फारिग+खती) दायित्वत्याग २ दायित्वत्यागपत्रम् ।

फारम, स पु (अं फार्म) प्रपत्रम् ।

फारमूला, स पु (अं) सूत्रम् ।

फारस, स पु (फा) पारसि(सी)क ।

फारसी, स स्त्री (फा) पारसी ।

—दाँ, वि पारसीविद्, पारसीपठित ।

फारिग, वि (फा) लब्धावकाश, निर्वर्तित व्यापार, निवृत्त ।

—होना, मु कार्यमुक्त, लब्धावकाश भू २ शौचाय गम् ।

फारन, वि (अं) विदेशीय, परदेशीय, वैदेशिक ।

—आफिस, स पु (अं) विदेश पराराष्ट्र, कार्यालय ।

—सेक्रेटरी, स पु, विदेश पराराष्ट्र, सचिव ।

फारेनर, स पु (अं) विदेशीय, परदेशीय, वैदेशिक, पारदेशिक ।

फारेनहाइट, स पु, जर्मनवैज्ञानिकविशेष ।

—थर्मामीटर, सं पुं (अं) फारेनहाइट तापमापकम् ।

फारेस्ट, स पु (अं) वन, जङ्गलम् ।

—डिपार्टमेंट, स पु (अं) वन जंगल, विभाग ।

फाल, स स्त्री (सं पु न) कुशिक, कृषिका, हलापकरणम् ।

फालतू, वि (हिं फाल=टुकड़ा) उपयुक्ताव

(भ्वा प अ) २ नृत (दि प से)। म ण उत्प्लवनं, नर्तनम्।
फुनगी, म स्त्री (स स्फुटनम्) शाखा विटप, अग्रपत्र अग्रांकुरा (बहु०)।
फुफ्फुस म पु (म) दे 'फेफड़ा'।
फुफ्कार, पु (अनु) दे 'फुकार'।
फुफेरा वे, (हि फूफा) पैतृष्वसेय, पि (पै) तृष्वसीय।
फुरकत, म स्त्री (अ) वियोग, विरह।
फुरती म स्त्री (स स्फूर्ति) शीघ्रता, क्षिप्रता।
फुरतीला, वि (हिं फुरती) शीघ्र क्षिप्र, कारिन्, स्फूर्तिमत्।
फुरना, क्रि अ (स स्फुर) प्रादुर्भू, प्रकटीभू २ चपलेर् (भ्वा आ से) ३ प्रकाश् (भ्वा आ से) ४ पुरपुरायते (ना धा)।
फुरसत, म स्त्री (अ) अवकाश, रिक्तसमय २ अवसर, समय।
फुलका, स पु (हि फूलना) लघुतनु, रोटिका २ विस्फोट, पिटिका।
फुलझड़ी, म स्त्री (हिं फूल+झड़ना) पुष्पक्षारिणी २ कलहकारिणी वाणी।
फुलवाड़ी, म स्त्री (सं पुष्पवाटी) पुष्पकुसुम,-वाटी-वाटिका, उद्यानम् २ वरयात्राया कागज निर्मिता पुष्पवाटी ३ पुष्परत्नादय।
फुलाना, क्रि स, व 'फूलना' से प्रे रूप।
फुलेल, सं पु (हिं फूल+तेल) सुगन्धितैलम्।
फुल्ल, वि (स) विकसित स्फुटित, उद्भिद्।
फुसफुसा, वि (अनु फुस) शिथिल, श्लथ २ भगुर, भिदुर ३ अशक्त, दुर्बल।
फुसलाना, क्रि स (हिं फिसलाना) प्रलुभ्‌ (प्रे), विप्रलभ् (भ्वा आ अ)।
फुहार, स स्त्री (स फूत्कार >) शीकरवर्ष, मन्दवृष्टि (स्त्री)।
फुहारा, सं पु (हिं फुहार) जलधारा, यन्त्रम् २ जलोत्क्षेप।
फूँक, स स्त्री (अनु फू) फूत्कार, ध्मानम् २ मुखमारुत, श्वास।
—मारना, क्रि स, फूत्कृ, ध्मा (भ्वा प अ)।
फूँकना, क्रि म (हिं फूँक) दह् (भ्वा प अ), भस्मसात् कृ २ फूत्कृ।
फूँकनी, सं स्त्री., दे 'फुँकनी'।
फूँस, म स्त्री (घास से ...) पलाल-लं, पल २ शुष्क, तृण-घास।
फूट, म स्त्री (हिं फूटना) चित्रा, मृगा, चिर्भिटा पश्या २ विकल्प ३ विरोध, मतभेद।
—डालना, क्रि स, विरोध जन् (प्रे)।
फूटना, क्रि अ (म स्फुटनम्) भिद्‌ छिद् विद् (कर्म) स्फुट् (तु प से) २ विरम्, प्रुत्प्ल (भ्वा प से)।
फूत्कार, म पु (स) दे 'फुकार'।
फूफा, म पु (देश) पितृष्वसृ, पति श्र।
फूफी, म स्त्री (हिं फूफा) पितृष्वसृ।
फूल, म पु (स फुल्ल) कुसुम, प्रसून, पुष्पम्।
—दान, म पु, कुसुमधान पुष्पधानम्।
—दार, वि, पुष्पित, सपुष्प।
फूलना, क्रि अ (हिं फूल) पुष्प् विकस (भ्वा प स) २ प्रसृ (भ्वा आ से)। म पु विकास, प्रफुल्लन २ प्रमोद, आनन्द।
फूला, म पु } (हिं फूल) शुभ्र, पुष्प,
फूली, म स्त्री } पुष्पक नेत्ररागभेद।
फूस, स पु, दे 'फूँस'।
फूहड़, वि (अनु) मूर्ख, मूढ़, मन्दमति २. कदाकार, कुरूप, कुदर्शन।
फेंकना, क्रि स (स क्षेपणम्) क्षिप्‌ तुद् (तु प अ) प्र अस् (दि प स) २ प्रम दैन पत् (प्रे) ३ सावधान त्यज् (भ्वा प अ) ४ अपव्यय (चु)। म पु, क्षेपण, प्रासन, पातन, अपव्यय।
फेंकने योग्य, वि क्षेपणीय, त्यक्तव्य।
—वाला, म पु, क्षेपक, प्रासक।
फेंका हुआ, वि, क्षिप्त, प्रास्त, त्यक्त।
फेटना, क्रि म (सं पिष्ट) मथ् (क्र् प म), मथ्‌यन् (भ्वा प म) २ ...मिश्र् (चु)।
फेंटा, म पुं (हिं पेट या पटी) परिकर, कटि,-बन्ध पट २ लघूष्णीष।
फेन, म पुं (म) जलमल, अब्धिकफ, मण्ड..., डिण्डीर, अनुकफ।
फेनिल, वि (म) फेन,युत आवृत, सफेन।
फेनी, म स्त्री (म फेनिका) पक्वान्नभेद।
फेफड़ा, म पु (म फुफ्फुस-सम्) क्लोम, क्लोमं, क्लोमन् (न), फुफ्फुसम्, रक्तफेन।

फेफडी, स स्त्री दे 'पपनीर'।

फेर, स पु (हि फेरना) भ्रामण, परिवर्तनम् २ भ्रान्ति (स्त्री), भ्रम ३ पुनर (अव्य)।

फेरना, क्रि स (स प्रेरणम्) घूर्ण परिभ्रम् (प्रे) २ प्रतिदा प्रत्यृ (प्रे) ■ प्रतिया प्रतिनिवृत (प्र) स पु घूर्णन परिभ्रामण, प्रतिदान, प्रत्यर्पणम्, प्रतिस्थापन प्रतिनि वर्तनम्।

फेरफार, स प (हि फेरना) परिवर्तन विप र्यास विपर्यय २ व्याज, कपटम्।

फेरा, स पु (पूव) प्रत्यावर्तन, प्रत्यागमन २ भ्रमणम् परिक्रमणम् ३ द्विरागमन।

फेरी, स स्त्री (पूव) परिक्रमा प्रदक्षिणा २ दे 'फेरा' ३ दे 'फेर'।

—वाला, स पु, भाण्डवाह वणिज ।

फेल, वि (अ) विफल, मोघयत्न अनुत्तीर्ण।

फेक्टरी, स स्त्री (अ) शिल्पशाला।

फैलना, क्रि अ (स प्रसरणम्) वितन् विस्तृ (कर्म) २ व्याप् (स्वा प अ) ३ अप्यै (भ्वा आ अ) पीनी भू ४ प्रख्यात (त्रि) तन् (दि आ से) ५ आग्रह कृ। स पु, विस्तार, विततिः व्याप्ति (स्त्री)।

फैला हुआ, वि विस्तृत, विस्तीर्ण व्याप्त, अभ्यापित पीन, प्रख्यात, प्रसिद्ध।

फैलसूफ, स पु (अ फिलसफ़ा) बुध, प्राज्ञ २ छलिन्, कपटिन्। ३ अपव्ययिन्।

फैलसूफी, स स्त्री, (अ) बुद्धिमत्ता, प्राज्ञता २ छल, कपटम् ३ अपव्यय, कुमार्गगमना।

फैलाना, क्रि स, व 'फैलना' के प्र रूप।

फैलाव, स पु (हि फैलना) विस्तार, प्रसार २ वितति-व्याप्ति (स्त्री)।

फैशन, स पु (अ) रीति, प्रथा २ शैली, विधि, वेशभूषा।

फैसला, स पु (अ फ़ैसल) निर्णय, अवधारणम्

फोक, स पु (हि फूँकना) मल ल, उच्छिष्ट शेष, अवकर।

फोकट, वि (हि फोक) निस्सार, तत्त्वहीन।

फोकस, स पु (अ) रश्मिकेन्द्र।

फोटो, स प (अ) छायाचित्र, प्रकाशालेख्यम्।

—का कमरा, स पु, छायाचित्रपेटिका।

—ग्राफर, स पु (अ) छायाचित्रक।

—ग्राफी, स स्त्री (अ) छायाचित्रणम्।

फोडना, क्रि स (स स्फोटनम्) स्फुट विद् खण्ड् (प्रे)। स पु, विदारण, स्फोटन, खण्डनम्।

फोडा, स पु (स स्फोट), पिटक, गण्ड, विद्रधि।

फौज, स स्त्री (अ) सेना, बल, सैन्यम्।

—दार, स पु, (फ़ा) सेनापति, सेनानी।

—दारी, स स्त्री (फ़ा) दण्डाधिकरणम् २ कलह, युद्ध।

फौजी, वि (फ़ा) सैनिक, यौध। स प, सैनिक, योध।

फौरन, क्रि वि (अ) झटिति, सद्य झगिति, अचिरात् (सब अव्य)।

फौलाद, स पु (फ़ा पोलाद) तीक्ष्णायस, सारलोह, शस्त्रकम्।

ब

ब, देवनागरीवर्णमालाया त्रयोविंशो व्यञ्जन वर्ण बकार।

बग, स ■ (स बग बहु) आधुनिक प्रान्त विशेष।

बंगला[1], वि (हि बगाल) वाग, वगदेशीय। स स्त्री, वगभाषा।

बँगला[2], स पु (अ बँगलो) एकभूमि भवनम्।

बगाल, स पु (स वग बहु) प्रान्त।

बगाली, वि (हि बगाल) वगीय, वगदेशीय। स पु, वगवासिन्।

बजर, वि (हि बन+ऊसर) ऊषर, ऊषवत्, अशस्यप्रद। ■ पु ऊषर-रम्, अनुर्वरा भू (स्त्री) २ मरुस्थलम्।

बजारा, स पु (स वणिज्) धान्य-वणिज् व्यवसायिन्।

बँटना, क्रि अ (स वटनम्) विभज्-वट् (कर्म)।

बँटवाना, क्रि प्रे, 'बाँटना' के धातुओं के प्रे रूप।

बडल, स पु (अ) पोट्टलिका, गुच्छ, पोट्टल, सघात, भार, कूर्च।

बडी, स स्त्री (हि बद) कु(कु)र्पासक कम्।

बद, स पु (फ़ा) बध, बधनम् २ अवरोध,

उपरोध ३, विघ्न । वि, मयत नियमित २ अवरुद्ध अन्तरित ३ पिहित मकृतमुख ४ विरत, स्तब्ध ।

—करना, क्रि स (जालन) पिधा (जु उ अ) रुध् (क उ अ) बोल्यति (ना धा) २ निषिध् (प्रे) प्रतिषेध (भ्वा प से) ३ विरम् विश्रम (प्रे) स्तम्भ (क्र प स) ४ (रुध्रिक) धूर (चु) ।

बंदगी, म स्त्री (फा) प्रणाम २ सेवा ३ उपासना ।

वन्दनवार, म पु (स वन्दनमाला) द्वारस्था पुष्पपत्रमाला वन्दनमालिका ।

बंदना, म स्त्री (स वंदना) प्रणाम नमस्कार, वन्दनम् । क्रि स, प्रणम् (भ्वा प अ), वन्द् (भ्वा आ से) नमस्कृ ।

बंदर, म पु (स वानर) कपि मर्कट, शाखामृग वलीमुख । (स्त्री वनीमुखी, मरकटी) ।

—भत, म पु (स वानरक्षतम्) कपि मरकट, व्रण भतम् ।

—घुड़की, स स्त्री निस्सार भत्सन, मिथ्या विभीषिका भयप्रदर्शनम् ।

—का घाव, म पु स्थायि स्थिर, व्रण क्षतम् ।

बंदरगाह, म पु (फा) पोताश्रय २ पोताश्रयपुरम् ।

बंदा, स पु (फा) मानव, मनुष्य २ सेवक, भृत्य ।

—निवाज, वि, दीनदयालु, दीनवत्सल ।

—परवर, वि, अनाथनाथ, दीनबन्धु ।

बंदिश, म स्त्री (फा) बंधन, अवरोध ।

बंदी, म पु (म बन्दिन्) भट्ट, चारण, बन्दिन् २ कारागृह स्थ, बन्दिन् ।

—खाना, म पु, कारागृह, गुप्ति (स्त्री), कारा ।

बंदूक, म स्त्री (अ) अग्न्यस्त्र, गुलिकास्त्र अग्न्यस्त्रम् ।

बंदूकची, म पु (फा) नालास्त्रसैनिक ।

बंदोबस्त, म पु (फा) व्यवस्था, प्रतिबंध २ भूमिविभाग ।

बंधक, म पु (स) न्यास, निक्षेप, आधि ।

बंधन, म पु (स न) प्रतिबन्ध, अन्तराय २ बन्धन, ग्रंथि ३ रज्जु (स्त्री), शृङ्खला कारा, बन्दिगृहम् ।

बँधना, क्रि अ, अवरुध-बन्ध् (कर्म) ।

बँधवाना, क्रि प्रे, 'बाँधना' के धातु में ण प्रे रूप ।

बंधु, म पु (स) बान्धव, ज्ञाति, स्वजन, सगोत्र ।

बंधुर, म पु (स) हंस, बधिर, पुष्पभेद ।

बंधुता, म स्त्री (स) बन्धुत्व, सगोत्रता भ्रातृभावना २ मैत्री, मित्रता ।

बंधेज, म पु (हि बाधना) अवरोधोपाय २ प्रतिबंध ३ नियतराशि देयमान्य द्रव्यम् ।

बंध्या, म स्त्री (स) वन्ध्या, प्रसवशक्तिहीना २ वशा, अप्रसूता गौ (स्त्री) ।

बंब, म स्त्री (अनु) रणसिंह, नाद, ध्वनि २ युद्धघोष ३ अग्निगोलकास्त्रम् ।

बंबा, म पु (अं बम्ब>) जलनालीस्रोतस् ।

बंबूकाट, म पु (अनया बंबू + अं काट) वृषशकटम् ।

बंबी, म स्त्री (स वल्मीक-यम) सर्पबिल २ वल्मीकम्, कृमिः, मौलम, वामलूर ।

बंसरी, म स्त्री (स वंशी) मुरली, वंशु, वंश नालिका ।

बँहगी, म स्त्री दे 'बहँगी' ।

बक, म पु (स बक) बक २ असुरविशेष ३ कुबेर ।

बकना, क्रि स (अनु बक) जल्प् प्रलप् (भ्वा प से), अवाच्य वद् (भ्वा प से) ।

स पु, प्रजल्पन, उन्मत्त, प्रलाप ।

बकरा, म पु (स बर्कर) स्तुभ, छ(छा)ग, अज, शुभ, छागल (बकरी = अजा, नव अजा अजम्मनी) ।

बकवाद, म स्त्री (अनु बक + सं वाद >) प्रलाप प्रजल्प । क्रि अ, दे 'बकना' ।

बकवादी, वि (हि बकवाद) जल्पक, प्रलापिन्, वाचाल ।

बकायन, सं पु (हि बड़ा + नीम) पैर, गिरिनिम्ब, महानिम्ब, कार्मुक ।

बकुचा, म पु (म विकुच>) कूर्चक, पोट्टलिका, गुच्छ, मग्न ।

बकुल, सं पु (स) वकुल, सुरभि, सिंह केसर २ शिव ।

बक्की, वि, दे 'बकवादी'।
बक्स, स पु (अ बॉक्स) पेटिका, मञ्जूषा समुद्ग, समुद्गक, पिटक-कम्।
बख़िया, स पु (फ़ा) दृढसूक्ष्म-सीवनस्यूति (स्त्री)।
बख़ूबी क्रि वि (फ़ा) सम्यक, साधु, सुष्ठु (सब अव्य)।
बखेड़ा, स पु (हिं बिखेरना) विपत्ति सङ्कटम् २ विवाद ३ कठिनता।
बखेड़िया, वि (हिं बखेड़ा) विवादकारिन् कलह प्रिय विवादिन्।
बखेरना क्रि स दे 'बिखराना'
बख्त, स पु (फ़ा) भाग्य, दैव अदृष्टम् २ सौभाग्यम्।
बख्तावर, वि (फ़ा) भाग्यशालिन् सुभग महाभाग।
बख्शना, क्रि स (फ़ा बख्श) दा (भ्वा आ स), वितृ (चु), उत्सृज् (तु प अ)।
बख्शिश, स स्त्री (फ़ा) दानम् २ दत्त वस्तु (न) ३ पुरस्कार ४ क्षमा, अनुग्रह।
बगल, स स्त्री (फ़ा) कक्षा बाहुमूल, दोर्मूलम्।
बगला, स पु (स बक) बक, दीर्घजंघ, तापस दाम्भिक, तीर्थसेविन्, मौनव्रतिन् शुक्लवायस।
बगावत, स स्त्री (अ) राजद्रोह, विप्लव उपप्लव।
—का झंडा बुलंद करना मु, राजद्रोह-राज विरोध कृ।
बगीचा, स पु (फ़ा बागचह्) वाटिका वाटिका, उपवनम्।
बगुगोशा स पु (देश) मधुगोल दे 'नासपाती'।
बगूला, स पु (हिं बाऊ+गोला) चक्रवात, वातावर्त वातभ्रम, धूलिचक्र, वात्या।
बगैर, अव्य (अ) विना, अन्तरा, अन्तरेण, विहाय, वर्जयित्वा, ऋते।
बग्घी, स स्त्री (अ बोगी) चतुश्चक्र सपक्ष्म शयानम्।
बघारना, क्रि स (स अवधारणम्) अवधृ (भ्वा प अ, चु, तु प अ, भ्वा उ अ) व्यञ्जन तप्तघृतादिकेन सिच् (तु प अ)।
बघेला, स पु (हिं बाघ) व्याघ्र, मृगारातक।
बचत, स स्त्री (हिं बचना) लाभ, प्राप्ति (स्त्री) २ सञ्चय, संग्रह ३ सञ्चितराशि, अवशिष्ट धनम्।
बचना, क्रि अ (स वञ्चनम्>) रक्ष निर्मुच (कर्म) २ अवशिष् (कर्म)।
बचपन, स पु (हिं बच्चा) बाल्य, कौमार, बाल्यम्।
बचाना, क्रि स (हिं बचना) परित्रै (भ्वा आ अ), रक्ष-गुप (भ्वा प से) २ अव शिष (प्रे) अवि (स्वा उ अ)।
बचाव स पु (पूर्व) रक्षा त्राण, उद्धार, गोपन ऊति (स्त्री)।
बच्छीश, स स्त्री (फ़ा बिश) दानम् २ पारितोषिकम्।
बच्चा, स पुं (फ़ा बच्च) वत्स बाल, बालक, शिशु २ शाव शावक ३ अज्ञानिन्।
—दानी, स स्त्री, गर्भाशय गर्भकोष।
बच्ची, स स्त्री (फ़ा) वत्सा, बाला, बालिका।
बछड़ा स पु (स वत्स) गोवत्स, गोशावक, तर्ण।
बछेड़ा स पु (हिं बच्चा) बालाश्व, अश्व शावक।
बजट, स पु (अ) आयव्ययिकम्, व्ययानुमान।
बजना, क्रि अ (स वदन>) क्वण्-नद (भ्वा प स), वाद् (कर्म)।
बजरंग, वि (स वज्राङ्ग) दृढावयव, अशनि कठोर।
—बली, स पु हनुमत्।
बजवाना, क्रि प्रे, व 'बजाना' के प्रे रूप।
बजा, वि (फ़ा) युक्त, उचित। क्रि वि, सत्यम् ओम्।
बजाज, स पु (अ बज्जाज) वस्त्रविक्रेतृ।
बजाजा, स पु (फ़ा) वस्त्रहट्ट।
बजाजी, स स्त्री (फ़ा) वस्त्रविक्रय २ वस्त्र निचय।
बजाना, क्रि स (हिं बजना) वाद् (चु), क्वण्-ध्वन् (प्रे)। स पुं, वादनम्।
बजानेवाला, स पु, वादक, वादयितृ।
बजाय, अव्य (फ़ा) स्थाने, प्रतिनिधये।
बज्र, स पु (स वज्र) ऐन्द्रास्त्र, अशनि, पवि।
बट, स पुं (स वट-) जटिल, न्यग्रोध।

बटखरा, स पु (स वटक>) दे 'बाट'।

बटन, स पु (अ) कुडुप, गण्ड ।

बटना, क्रि स (स वर्तनम्>) व्यावृत (प्रे), तन्तून घूर्ण भ्रम (प्र) स पु, व्यावर्तन, तन्तु,घूर्णन भ्रामणम् ।

बटमार, स पु (हि बाट+मारना) परि पन्थिन , लुण्ठक प्रतिरोधक ।

बटलोई, स स्त्री (हि बटला) दे 'देगचा ।

बटवारा, स पु (हि बाँटना) भूविभाग , भूमिव्यवधानम् २ धनविभाग , दायभाग ।

बटा, स पु (हि बँटना) भिन्न अपूर्णांक , दायविभाग प्रभाग ।

बटुआ, स पु (स वर्तुल>) मुद्रा नागच कोश ।

बटेर, स स्त्री (स वर्तका) वर्तक , वर्तकी, वातका ।

बटोरन, स स्त्री (हि बटोरना) अवस्कर , निस्सारवस्तुसमूह उच्छिष्टम् ।

बटोरना, क्रि स (स वर्तुल>) रुचि (भ्वा उ अ) सग्रह् (क्र उ से) ।

बटोही, स प (हि बाट) पान्थ , पथिक ।

बट्टा[1], स पु (स वार्त>) दोष , कलङ्क ।

—खाता, स पु, अप्राप्यधनलेख ।

बट्टा, स पु (स वर्तक) पेषणपाषाण, कुट्टनप्रस्तर २ प्रस्तरादीना वर्तुलखण्ड ।

बड़[1], स पु (स वट) दे 'वट'।

बड़[2], वि (हि 'बड़ा' से, समास के आरम्भ में ही) दे 'बड़ा'।

बड़प्पन, स पु (हि बड़ा) श्रेष्ठता, महत्ता, गौरवम् २ वयस्कता, प्रौढता ।

बड़बड़, स स्त्री (अनु) प्र,लाप ,व्यर्थवचनम् ।

बड़बड़ाना, क्रि अ (अनु बड़बड़) प्र,लप् (भ्वा प से) २ असन्तोषेण नीचैः वद् (भ्वा प से)।

बड़बोला, वि (हि बड़ा+बोल) विकत्थन, विकत्थनशील ।

बड़भागी, वि (हि बड़ा+भाग) महाभाग्य, सुभग, भाग्यशालिन् ।

बड़वा, सं स्त्री (स वडवा) घोटी, तुरगी २ वडवाग्नि ।

बड़वानल, स पुं (सं वडवानल) वडवाग्नि , वडवामुख ।

बड़ा, (सं वृध>) आयत, विस्तृत, विशाल २ महत्, गुरु ३ वयोवृद्ध, अधिक वयस्क ४ उत्तम, श्रेष्ठ ५ अधिक, अतिशायिन् । स पु , धनाढ्य २ महापुरुष ।

बड़ाई, स स्त्री (हि बड़ा) मान , गौरवम् । महत्ता, प्रतिष्ठा २ वृद्धता, गुरुत्वम् ।

बड़ी, स स्त्री (स वटी) वटिका, वैदल-शिखा,वटिका ।

बढ़ई, सं पु (स वर्धकि) तक्षक , तक्षन्, वर्धकिन्, त्वष्टृ, छाद ।

बढ़ती, स स्त्री (हि बढ़ना) उन्नति वृद्धि (स्त्री), उपचय , उत्कर्ष ।

बढ़ना, क्रि अ (स वर्धनम्) वृध् (भ्वा आ से), उपचि (कर्म), वृद्धि प्राप् (स्वा उ अ), एध् स्फाय आप्याय् (भ्वा आ से), वृह (भ्वा तु प स)। स पु, दे 'बढ़ती'।

बढ़ा हुआ, वि., उन्नत, वृद्ध, उपचित, स्फीत, पीन, आप्यान ।

बढ़ाना, क्रि स , व 'बढ़ना' के धातुओं के प्रे रूप ।

बढ़िया, वि (हि बढ़ना) महार्घ, बहुमूल्य २ उत्कृष्ट, गुणवत् ।

बणिक, सं पु (सं वणिज्) पण्याजीव , दे. 'बनिया'।

बतकही, स स्त्री (हि बात+कहना) वार्ता लाप २ विवाद ।

बतख, स स्त्री (अ बत) वर्तक , कादम्ब , हंसजातीय खगभेद ।

बतलाना, क्रि स (हि बात) कथ्,वर्ण् (चु), आख्या (अ प अ), आचक्ष् (अ आ), निविद् (प्रे) २ बुध् ना (प्रे) ३ निर्दिश् (तु प अ), प्रदृश (प्रे)। स पुं , कथन, वर्णन, निवेदन, श्रावण,बोधन, ज्ञापन,निर्देश , प्रदर्शनम् ।

बतलाने योग्य, वि ,कथनीय,वर्णनीय,आख्येय ।

—वाला, स पु आख्यातृ कथक , वर्णयितृ २ बोधक , ज्ञापक ३ निर्देशक , प्रदर्शक ।

बतलाया हुआ, वि , कथित, वर्णित, श्रावित, बोधित, ज्ञापित ३ निर्दिष्ट, प्रदर्शित ।

बताना, क्रि स , दे 'बतलाना'।

बताशा, सं पुं (हि बतास) फेन सिताबुद्बुद , वातासा ।

बत्ती, स स्त्री (स वर्ति) वर्ती, वर्तिका, तैलिनी, शिखी २ दीप ।

बत्तीस, वि [स द्वात्रिंशत् (नित्य स्त्री)] स पु, उक्त सख्या तदकौ (३२) च।
—वाँ, वि, द्वात्रिंशत्तम मी म, द्वा ?शी शम्।
बत्तीसी, स स्त्री (हि बत्तीस) द्वात्रिंशत्पदार्थसमूह २ मानवदन्तसमूह, दशनावलि (स्त्री)।
बथुआ, स पु (स वास्तुकम्) शाकराज, राजशाक, शाकश्रेष्ठ।
बद, वि, (फा) दुष्ट, पाप, खल, साधु।
—किस्मत, वि, मन्दभाग्य।
—चलन, वि, दुर्वृत्त, कुचरित।
—ज़बान, वि, कटुभाषिन्, दुर्भाषिन्।
—जात, वि नीच, क्षुद्र, निकृष्ट।
—तमीज़, वि, अशिष्ट, असभ्य, ग्राम्य।
—नीयत, वि, वक्र दुराशय।
—परहेज़, वि, कुपथ्यसेविन्।
—परहेज़ी, स स्त्री, कुपथ्यम्।
—बू, स स्त्री, दुर्गन्ध, दे।
—मिज़ाज, वि, दुर्वृत्त, दुश्चरित्र।
—शक्ल, वि, कुरूप, दुर्दर्शन।
—हज़मी, स स्त्री, अजीर्ण, अग्निमान्द्य, अपाक।
बदन, स पु (फा) शरीर, देह, काय।
—टूटना, मु, अगमधिषु-अवयवप्रथिषु वेदनानुभव (ज्वरपूर्वरूपम्)।
—में आग लगना, मु, अत्यन्त कुप् (दि प से) क्रुध् (दि प अ)। २ अतीव मत्सर (वि) भू।
—साँचे में ढला होना, मु, लावण्य सौन्दर्य, अतिशय-अतिशय्यम्।
—सूख कर काँटा हो जाना, मु, अत्यर्थ कृश-क्षीण शुष्काग (वि) भू।
बदर, स पु (स) बदरी, बदरिका, बदर, बदरीफलम्।
बदलना, क्रि अ (अ बदल) स्थानान्तर स्थानान्तर-अवस्थान्तर गम, अन्यथा भू, विकृ (कर्म), परिवृत् (भ्वा आ से), विपर्यस (दि प से)। क्रि स, परिवृत् (प्रे), अन्यथा कृ, विकृ, विपर्यस् (प्रे), विनिमे (भ्वा आ अ)। सं पु, अवस्थान्तर स्थानान्तर-स्थानान्तर, प्राप्ति (स्त्री.), परिवर्तन, विनिमय, विक्रिया, विपर्यास, परिवृत्ति (स्त्री), विपरिणाम।
बदला, स पु (हि बदलना) विनिमय, आदानप्रदानम् २ प्रतिशोध, प्रति(ती)कार: ३ परिणाम, फलम्।
बदलाना, क्रि स, दे 'बदलना' क्रि स।
बदली, सं स्त्री (हि बदलना) परिवृत्ति (स्त्री), परिवर्तनम्।
बदावदी, स स्त्री (स वद्>) वैर, द्वेष, विरोध २ प्रतिस्पर्धा।
बदौलत, क्रि वि (फा) कृपया, अनुग्रहेण २ करणेन साधनेन, द्वारा।
बद्ध, वि (स) नियन्त्रित, वशी-कृत भूत, मयत।
—कोष्ठ, स पु (स) मलावरोध, विट्सङ्ग।
बधाई, सं स्त्री (स वर्द्धन>) वर्धापन, वृद्धि व न, अभिनन्दनम्।
—देना, क्रि स, वर्धापन दा (जु उ अ)।
बधिया, स पु (हि वध-मारना) नपुसक: पशु, षण्डाकृत चतुष्पाद।
बधिर, वि (स) अकर्ण, एड, श्रोत्रविकल।
बधूटी, स स्त्री (स वधूटी), दे 'वधू'।
बन, स पु (स वनम्) अरण्य, कानन, कान्तार।
—चर, स पु, अरण्यवासिन्, आटविक।
—वास, स पु, वनवास, अरण्यवास।
बनजारा, स पु (हि वनज) वाणिज्यव्यवसायिन्, वणिग्जीविन् २ वणिज्, दे 'बनिया'।
बनना, क्रि अ (स वर्णन>) निर्मा रच-विधा अनुग्रह (कर्म)।
बना हुआ, वि निर्मित, रचित, विहित, कृत, सृष्ट, सम्पन्न, निष्पन्न।
बनमानुस, स पु (सं वनमानुष) वानरभेद २. असभ्यमानव।
बनवाई, स स्त्री (हि बनवाना) निर्माण,-भृति (स्त्री)-शुल्क।
बनवाना, क्रि प्रे, व 'बनाना' क प्रे रूप।
बनात, स स्त्री (हि बाना) उत्तमौर्णपटभेद।
बनाना, क्रि स (हि बनना) निर्मा (अ प अ, जु आ अ), रच् (चु), कृ, क्लृप्-घट् (प्रे) २ जन् उत्पद् (प्रे) ३ सपद्-साध् (प्रे), अनुग्रह (भ्वा प. अ.),

विधा (जु उ अ) ४ अवक्लृप हम (भ्वा प से)। स पु, रचन करण, निर्माण कल्पन, जनन, उत्पादन, सपादन, अनुष्ठानम्।

बनाने योग्य, वि, निर्मातव्य रचनीय, वरणीय, विधेय, अनुष्ठेय, जनयितव्य।

—वाला, स पु, निर्मातृ, रचयितृ विधायक, जनयितृ, उत्पादक, अनुष्ठातृ।

बनाया हुआ, वि, निर्मित, रचित, कल्पित, विहित, जनित, उत्पादित, अनुष्ठित, सपादित।

बनारसी, वि (हि बनारस) काशीस्थ, वाराणसेय।

बनाव, स पु (हिं बनाना) निर्माण, रचना २ शृगार, अलकरणम्।

बनावट, स स्त्री (हि बनाना) रचना, रचनाकौशल, घटना २ आडबर ३ कृत्रिमता।

बनावटी, वि, (हिं बनावट) कृत्रिम, कृतक, अनैसर्गिक।

बनिया, स पु (सं वणिज्) नैगम, सार्थवाह, क्रयविक्रयिक, पण्याजीव २ आपणिक, विपणिन्।

बनिस्बत, अव्य (फा) अपेक्षया, तुलनायाम् २ उद्दिश्य, अधिकृत्य।

बबर, स पु (फ़ा) केसरिन्, हरि, सिंह।

बबूल, स पु (स बर्बुर) कण्टालु, तीक्ष्णकटक, स्वर्णपुष्प, युग्मकटक, कफान्तक।

बम, सं पु (अ बाम) अग्निगोलकास्त्रम्।

बया, स पु (स वयनम्>) वय, खगभेद।

बयान, स पु (फा) वर्णन, कथनम् २ वृत्तान्त, उदन्त।

बयाना, स पु (अ बै) दे 'पेशगी'।

बयार, स्त्री (स वायु) पवन, वात।

बयालीस, वि [स द्वि(द्वा)चत्वारिंशत् (नित्य स्त्री)]। स पुं, उक्ता संख्या, तदकौ (४२) च।

—वाँ, वि, द्वि(द्वा)चत्वारिंशत्तम मी मम्, द्वि(द्वा)चत्वारिंश शी शम्।

बयासी, वि [सं द्व्यशीति (नित्य स्त्री)] सं पुं, उक्ता संख्या, तदकौ (८२) च।

बरकत, सं स्त्री (अ) सम्पत्ति-समृद्धि विभूति (स्त्री)।

बरखास्त, वि, (फा) विसृष्ट, विसर्जित २ पदच्युत, भ्रष्टाधिकार।

—करना, क्रि स, विसृज् (तु प अ) २ पदात् च्यु (प्रे)।

बरगद, स पु, दे 'वट'।

बरछा, स पु (स व्रश्च) कुन्त, प्रास, शक्ति (स्त्री)।

बरजोर, वि (सं बल+फा जोर) बलवत्, शक्तिशालिन्। क्रि वि, बलात्, हठात्।

बरतन, स पु (स वर्तन>) पात्र, भाजन, भाण्डम्।

बरतना, क्रि अ (स वर्तनम्) व्यवहृ (भ्वा प अ), आचर् (भ्वा प से)। क्रि स, उपयुज् (प्रे), व्यापृ (प्रे)।

बरताना, क्रि स (स वितरणम्) वितृ (भ्वा प से), विभज् (भ्वा उ अ)। स पु, विभाजन, वितरणम्।

बरताव, स पु (हिं बरतना) व्यवहार, आचरणं, वृत्ति (स्त्री)।

बरदार, वि (फा) वोढृ, धारयितृ।

बरदाश्त, स स्त्री (फ़ा) सहन, मर्षण, सहिष्णुता।

—करना, क्रि अ, सह् (भ्वा आ से)।

बरफ, स स्त्री (फा बर्फ) हिम, घनवारि (न)।

बरफी, स स्त्री (हिं बरफ) हैमी, पायस-मिष्टान्नभेद, मिष्टान्नभेद।

बरबस, क्रि वि (सं बल+वश>) हठात्, बलात् २ मुधा, व्यर्थम् (चारों अव्य)।

बरबाद, वि (फा) नष्ट, ध्वस्त।

बरमा¹, स पु (देश) वेधनी, लघुवेधन-करणभेद।

बरमा², सं पु (सं) ब्रह्मदेश।

बरमी, स पु (हि बरमा) ब्रह्मदेशवासिन्। सं स्त्री, ब्रह्मदेशभाषा।

बरवा, सं पु (देश) एकोनविंशतिमात्रात्मकछन्दोभेद, ध्रुव-कुरग, छन्दस् (न)।

बरस, स पु, (सं वर्ष) वत्सर, संवत्सर, अब्द।

—गाँठ, सं स्त्री, वर्षग्रन्थि, जन्म दिनं दिवस।

बरसना, क्रि अ (स वर्षण) वृष् (भ्वा प. से)। सं पु, वृष्टि (स्त्री), वर्षणम्।

बरसात, वि (हिं बरसना) वर्षा (स्त्री बहु) मनस्य, प्रावृष (स्त्री) वर्षाकाल ।

बरसाती, स स्त्री (हिं बरसात) वर्षत्र, वृष्टिवारिणी ।

बरसी, स स्त्री (हिं बरस) वार्षिक श्राद्ध, वार्षिको मृत्युदिवस ।

बराडा, स पु (अ वेरान्डा) प्रघ(घा)ण, अलिन्द वितर्दिक ।

बराडी, स स्त्री (अ) सुरासार, *मनीवनी सुरा ।

बरात, स स्त्री (स वरयात्रा) विवाहयात्रा, २ प्रमोद ।

बराती, स पु (हिं बरात) वरयात्रिक ।

बराबर, वि (फ़ा बर) सम, समान, तुल्य ।

बराबरी, स स्त्री (हिं बराबर) समानता, साम्यम् ।

बरामद, वि (फ़ा) बहिरागत २ लब्ध ।

बरामदा, स पु (फ़ा) दे 'बराडा' ।

बरी, वि (फ़ा) मुक्त, विमोचित ।

बरोठा, स पु (स द्वारम्>) देहली-लि (स्त्री) ।

बर(रौ)नी, स स्त्री (स वरण>) पक्ष्मन्, पक्ष्मन् (दोनों न) ।

बरताव, स पु, दे 'बरताव' ।

बर्फ, स स्त्री, दे 'बरफ' ।

बर्बर, वि (स) नृशंस, निर्दय २ असभ्य, अशिष्ट ।

बलन्द, वि (फ़ा) उच्च, तुङ्ग ।

बल, स पु (स न) सामर्थ्य, शक्ति (स्त्री) २ पराक्रम, शौर्यम् ३ सेना ४ बलदेव ।

बलगम, स स्त्री (अ) श्लेष्मन्, कफ, श्लेष्म, बलास ।

बलवा, स पु (फ़ा) सक्षोभ, समद २ राजाभिद्रोह प्रजाक्षोभ ।

बलवान्, वि (स -वत्) बलिन्, बलशालिन्, महाबल वीर ।

बलहीन, वि (स) निर्बल, दुर्बल, अबल, अशक्त ।

बला, स स्त्री (अ) आपत्ति विपत्ति (स्त्री) २ दुःख, कष्टम् ३ प्रेतबाधा ४ रोग ।

बलात्, क्रि वि (स) हठात्, सरभसम् ।

बलात्कार, स पु (स) साहस, प्रमाथ २ हठभोग, प्रसह्यगमनं, धर्षणम्, दूषणम् ।

बलि, स स्त्री (स पु) राजस्व, कर शुल्क २ उपहार, उपायनम् ३ पूजा, सामग्री-५ वरण ४ बलिवैश्वदेवयज्ञ ५ देवभोज्य ६ भक्ष्य, अन्नम् ७ नैवेद्यम् ८ देवतार्थं हत पशु ९ हव्य, आहुति (स्त्री) ।

—चढ़ाना, मु, देवतार्थं हन् (अ प अ) ।

—जाना, मु, दे 'बलिहारी जाना' ।

बलिदान, स पु (स न) उत्सर्ग, परित्याग, विनियोग, समर्पणम् ।

बलिष्ठ, वि (स) बलवत्तम, शक्तिमत्तम । सं पु, उष्ट्र ।

बलिहारी, स स्त्री (स बलिहार>) आत्मोत्सर्ग, आत्मसमर्पण, आत्मनिवेदनम् ।

—जाना, मु, आत्मान समर्पं (प्रे) उत्सृज (तु प अ) ।

बली, वि (स -लिन्) सबल, बलवत्, बहुशक्ति, शालिन्, महाबल, वीर ।

बल्कि, अव्य (फ़ा) प्रत्युत, अपि तु, अपि ।

बल्लम, स पु (स बल्ल=शाखा>) यष्टि (स्त्री), दण्ड, लगुड २ सुवर्ण-रजत-दण्ड ३ कुन्त, प्रास ।

बल्लमटेर, स पु (अ वालन्टियर) स्वयंसेवक ।

बल्ला, स पु (स बल्ल=शाखा>) लगुड, २ स्थूणा ३ नौकादण्ड ४ कन्दुकक्रीडापट्ट ।

बवडर, स पु (स वायुमण्डल>) चक्रवात, वातावर्त, वातभ्रम २ वात्या, झञ्झावात ।

बवासीर, स स्त्री (अ) अर्शस (न), गुदाङ्कुर, गुदकीलक, दुर्नामकम् । (खूनी) रक्तार्शस् (बादी) वात-शुष्क,-अर्शम् (न) ।

बसत, स पु (स) वसन्त दे ।

—पञ्चमी, स स्त्री, श्रीपञ्चमी, माघशुक्ल पञ्चमी ।

बस, अव्य, वि (फ़ा) अलं, पर्याप्त २ वश, अधिकार ३ केवलम् ।

बसना, क्रि अ (स वसन>) नि अधि-प्रति,वस (भ्वा प अ) स्था (भ्वा प अ) २ अधिवस, आधृष । स पुं अधि-प्रति नि,-वास -वसन-वसति (स्त्री) ।

बसने योग्य, वि, वासोचित ।

—वाला, स पु, अधि नि,-वासिन् ।

बसा हुआ, वि, अध्युषित, अधिष्ठित ।

मन में—, मु, सदा स्था (कर्म) ।

बसना[2], क्रि अ (हिं बास=गंध) सुगंधित (त्रि) भू ।

बसर, स पु (फा) निर्वाह, कालयापनम् ।

बसाना, क्रि स (हिं बसना) अधिवस्-निवस (प्रे) ।

बसूला, स पु (स वासि पु स्त्री) तक्षणी ।

बसेरा, स पु (हिं बसना) आवास, निवास २ वास, वसति (स्त्री) ।

बस्ता स पु (फा-बस्ह्) पोट्टलिका, कूर्चं ।

बस्ती, स स्त्री (स वसति) निवास २ ग्राम, ग्रामटिका ।

बहँगी, स स्त्री (स विहंगिका) वेणुशिक्या, स्कन्धवाहनी ।

—का छीका, स पु, विहंगिकाशिक्या ।

बहकना, क्रि, अ (हिं बहना) अनिम्नया, (कर्म), वच् (कर्म) २ पथभ्रष्ट (वि) भू ३ लक्ष्यभ्रष्ट (वि) भू ४ मद् (दि प मे) ।

बहकाना, क्रि स (हिं) 'बहकना' के प्रे रूप बनाएँ ।

बहत्तर, वि [सं द्विसप्तति (नित्य स्त्री)] सं पु, उक्ता संख्या, तदंकौ (७२) च ।

—वाँ, वि, द्विसप्ततितम-मी मं, द्विसप्ततीतम् ।

बहन, स स्त्री (सं भगिनी) दे 'बहिन' ।

बहना, क्रि अ (सं वहनम्) वह् (भ्वा उ अ), क्षर् (भ्वा प से), स्रु (भ्वा प अ) । स पु, वहनं, क्षरण, सरणं, स्राव, स्रुति (स्त्री) ।

बहनापा, स पु (हिं बहन) स्वसृत्व, भगिनीत्वम् ।

बहनोई, सं पु (हिं बहन) आवुत्त, नशिर, स्वसृपति, भगिनीभर्तृ ।

बहनोता, स पु, दे 'भाँजा' ।

बहरा, वि पु (सं बधिर) एड, अकर्ण, अश्रोत्र ।

बहलना, क्रि अ (हिं बहलाना) चित्त विनोद नन्द् (दि आ मे) ।

बहलाना, क्रि स (फा बहाल) चित्तं रञ्ज् विनुद् नन्द् (प्रे) ।

बहलाव, सं पु (हिं बहलना) विनोद, मनोरंजनम् ।

बहली, सं स्त्री (सं वहल=बैल>) रथ सदृशी वृषशकटी ।

बहस, स स्त्री (अ) वाद, वादप्रतिवाद, ऊहापोह, प्रश्नोत्तरम् ।

—करना, क्रि अ, वादप्रतिवादं कृ, विवद् (भ्वा आ मे) ।

बहादुर, वि (फा) शूर, वीर, बलिष्ठ, पराक्रमिन् ।

बहादुरी, सं स्त्री (फा) शौर्य, शूरता, पराक्रम ।

बहाना[1], क्रि स, व 'बहना' के प्रे रूप ।

बहाना[2], स पु (फा बहा्ह्) मिषं, व्याज छलम् ।

—करना, क्रि अ, व्यपदिश (तु प अ) ।

बहार, स स्त्री (फा) शोभा, श्री (स्त्री), दर्शनीयता २ मधुमास वसन्तः ३ मनो विनोद ।

बहाल, वि (फा) पूर्ववत् स्थित, पदारूढ २ स्वस्थ ३ प्रसन्न ।

बहाव, स पु (हिं बहना) प्रवाह, स्रोत २ धारा, मन्दाक स्रोतस् (न) ।

बहिन, स स्त्री (स भगिनी) सोदरा, सहोदरा, स्वसृ, जामि (स्त्री) ।

छोटी—, अनुजा, बड़ी—, अग्रजा, अम्बिका ।

बहिरंग, वि (स) बाह्य, बहिर्भव, बहि स्थित ।

बहिश्त, सं पु (फा बिहिश्त) स्वर्ग, नाक । २ सुखावास ।

बहिष्कार, सं पु (सं) अपसारण २ निष्का सनम्, विवासनम् ।

बहिष्कृत, वि (स) अपसारित २ विवासित, निष्कासित ।

बही, स स्त्री (हिं बँधी ?) आयव्यय, पञ्जि (स्त्री) ।

बहु, वि (सं) अधिक, अनेक २ प्रचुर, बहुल ।

—क्षीरा, सं स्त्री (सं) बहुल प्रचुर, दुग्धा न्यया गो (स्त्री) ।

—गंधा, सं स्त्री (सं) १ यूथी, यूथिका, हेमयूथिका, कनकप्रभा । २ चंपक कलिका ३ कृष्णजीरक ।

—गुण, वि (सं) प्रचुर सूत्र २ प्रचुर विशेष ।

—जल्प, वि (सं) वाचाल, मुखर, जल्प (पा) क ।

बहुकर, स स्त्री (स बहुकरी) समार्जनी, शोधनी। वि, परिश्रमिन्।
बहुत, वि (सं बहुतर) असख्य २ यथेष्ट, पर्याप्त ३ प्रचुर, विपुल, भूरि।
बहुतायत, स स्त्री (हिं बहुत) अतिशय, आधिक्यम् २ पर्याप्तता।
बहुधा, क्रि वि (स) प्राय, प्रायश (दोनों अव्य) २, बहुप्रकारं।
बहुभाषी, वि (स भिन्) वाचाल।
बहुमूल्य, वि (स) महार्घ, दुर्मूल्य।
बहुरंगा, वि (स-न) चित्रविचित्र, अनेकवर्ण २ बहुवेश ३ चलचित्र।
बहुरूपिया, वि (स बहुरूप>) बहुरूपधारिन्, बहुरूपक।
बहू, स स्त्री (स वधू) वधूटी, नवोढा, नववधू।
बहेड़ा, स पु (स विभीतक) कलिद्रुम, भूतवास।
बाँका, वि पु (स वक्र>) तिर्यञ्च, वक्र, कुटिल, २ सुन्दर, मनोहर ३ वेशभाविन्, रूपगर्वित।
बाँग, स स्त्री (फा) प्रात कुक्कुटनाद २ यवनपुरोहितस्य धूनात्मसमुच्चकमहानाद।
बाँझ, स स्त्री (स वन्ध्या द)।
बाँटना, क्रि स (वंटनम्) विभज् (भ्वा स अ), अशू-वट्(चु), परिकल्प् (प्रे), यथाभाग वितृ (भ्वा प से)। स पु, अदान, वटन, परिकल्पन, विभाजन, वितरणम्।
बाँटन योग्य, वि, अदानीय, वटनीय, विभाज्य।
—वाला, स पु, विभाजक, अशयितृ।
बाँटा हुआ, वि, विभक्त, विभाजित, वटित।
बाँदी, स स्त्री (फा बदा) दासी, सविका, परिचारिका।
बाँध, स पु (हिं बाँधना) बध, सेतु।
बाँधना, क्रि स (स बधनम्) बध् (क्र् प अ), स नि-यम् (भ्वा प अ), पिनह् (दि प अ), ग्रथ् (क्र् प स, भ्वा आ से, चु)। स पु, बधनम्, स नि-यमन, पिनाह, ग्र(ग्र)थनम्।
बाँधा हुआ, वि, बद्ध, नियत, सयत, पिनद्ध, ग्रथित।

बांधव, स पु (स) अदार, दायाद, सगोत्र, सकुल्य, ज्ञाति।
बांधव्य, स पु (स न) सगोत्रता, रक्त सम्बन्ध, बन्धुता, बन्धुत्वम्।
बाँबी, बाँमी, स स्त्री (सं वल्मीक>) वल्मीक वामलूर वम्री, कूट शैल। २ सर्प अहि, विवर बिलम्।
बाँस, स पु (स वंश) वेणुदण्ड, तृणध्वज, वेणु, कीचक, त्वक्सार, मस्करपुष्प।
—पर चढ़ना, मु, अपकीर्ति-दुष्कीर्ति-वाच्यताम् लभ् (भ्वा आ अ)।
—पर, चढ़ाना, मु, कुख्याति-नयकीर्ति कृ।
—बराबर, मु, अति-दीर्घ आयतञ्च।
—(सों) उछलना, मु, अत्यधं मुद् (भ्वा आ से)।
बाँह, स स्त्री (स बाहु पु) भुज-जा।
बाइसिकिल, स स्त्री (अ साइकल) द्विचक्रिका, पादयानम्।
बाई¹, स स्त्री (स वायु) वात, दोष रोग।
बाई², स स्त्री (हिं बाबा) कुलवधूनामादर सूचक शब्द, देवी २ वेश्या।
बाईस, वि (स द्वाविंशति नित्य स्त्री)। स पु., उक्ता संख्या, तदङ्कौ (२२) च।
—वाँ, वि, द्वाविंशतितम-मी-म, द्वाविंश शी शम्।
बाएँ, क्रि वि (हिं बायाँ) वामत, वाम सव्य, पार्श्वे।
बाकी, वि (अ) अवशिष्ट, उद्वृत्त। स पु, अव, शेष।
बाग, स पु (अ) उपवन, उद्यानम्, आराम।
बाग, स स्त्री (स वल्गा) अभीशु, प्रग्रह, रश्मि।
बागडोर, स स्त्री (स वल्गा+डोर) दे 'बाग' २ प्रभुत्व, अधिकार।
बागवान, स पु (फा) मालाकार, मालिक, उद्यानपाल।
बागी, वि (अ) विद्रोहिन्, राजद्रोहिन्।
बागीचा, स पु (फा बागचह्) कुसुमोद्यान, पुष्प, वाटिका।
बाघ, स पु (स व्याघ्र) चुलुक, भेल, चन्द्रकिन्, द्विमाक, व्याड, मृगान्तक।

—शाही, स स्त्री, मधुमण्ठ ।

बाल्य, स पु (सं न) दे 'बचपन' ।

बावजूद, क्रि वि (फा) एव सत्यपि, इति स्थितेऽपि ।

बावन, वि [स द्वापञ्चाशत् (नित्य स्त्री)] । सं पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (५२) च ।

—वाँ, वि, द्वि (द्वा) पञ्चाशत्तम मी-मम् ।

बावरची, सं पु (फ) सूद, पाचक ।

बावला, वि (स वातुल) विक्षिप्त, उन्मत्त २ मूर्ख ।

बावली, स स्त्री (स वापी) वापिका, सोपानकूप ।

बाशिंदा, स पु (फा) नि-वासिन, वास्तव्य ।

बास, सं स्त्री (स वास) सुगन्ध, सुवास, परिमल, सौरभं २ दुर्गंध, पूतिगन्ध ।

बासठ, वि [स द्विषष्टि (नित्य स्त्री)] । स पु उक्ता संख्या, तदङ्कौ (६२) च ।

—वाँ, वि., द्वि(द्वा)षष्टितम मी-म, द्वि(द्वा)षष्टीष्टम् ।

बासन, स पु (सं वासनम्) दे 'बरतन' ।

बासमती, स पु (स वासमती>) वासमत्व्रीहि ।

बासी, वि (स वासिन्) निवासिन, वास्तव्य २ शुष्क, म्लान, पर्युषित, -ष्ट ।

बाहर, क्रि वि (स बहिस) बाह्यत, बहिर्भवनम् ।

बाहरी, वि (हि बाहर) बाह्य, बहिःस्थ, बहिर्भव, बहिर्वर्तिन्, बहिस ।

बाहु, स स्त्री (स पु) दे 'बाँह' ।

बाहुल्य, स पु (सं न) दे 'बहुतायत' ।

बिंदा, स स्त्री (सं बिन्दु) चन्द्रं तम् २ अंक, चिह्नम् ३ तिलक-क, चित्रकम् ।

बिंदु, स पु (स) कण स्व, पृषत २ दे 'बिंदी' १ २ ३ भ्रूमध्यम् ।

बिंब, सं पु (स पुं न) प्रतिच्छाया, प्रतिबिंब-कृति (स्त्री) २ सूर्यचन्द्र-मण्डल ३ बिंबफलम् ।

बिकना, क्रि अ (स विक्रयण>) विक्री (कर्म) ।

बिकवाना, क्रि प्रे (हि बिकना) विक्री (प्रे, विक्रापयति) ।

बिकाऊ, वि (हि बिकना) विक्रेय, पण्य, विक्रयणीय ।

बिक्री, स स्त्री (स विक्री) पणन, विक्रय, विक्रयणम् ।

बिखरना, क्रि अ (स विकिरणम्) विकॄ (कर्म) २ प्रसृ (भ्वा प अ) ।

बिखरा(खेर)ना, क्रि स (स विकिरणम्) अत्र वि, कॄ (तु प स), अस्तॄ (क्र प स), विक्षिप् (तु प अ) । स पु भाव अव वि, किरण, विक्षेप, आस्तरणम् ।

बिगड़ना, क्रि अ (सं विकरणम्) विकृ (कर्म), दुष् (दि प अ), क्षि (कर्म), दुर्दशा प्राप (स्वा प अ) २ उन्मार्ग गम्, सुपथभ्रष्ट (वि) भू ३ कुप (दि प से) ४ दुर्दान्त (वि) भू (दि आ से) ।

बिगड़ा हुआ, वि, विकृत, दूषित, क्षीण, २ दुर्ललित ३ दुर्दान्त ।

बिगाड़ना, क्रि स (हि बिगड़ना) दुष् (प्रे) आविलयति मलिनयति कलुषयति (ना धा) २ सन्मार्गात् भ्रंश (प्रे) ३ अत्यन्त लल् (चु) ।

बिगुल, सं पु (अ) काहल-ला ।

बिचकाना, क्रि अ (अनु) मुख विरूप् (चु) आननं वक्रीकृ ।

बिचला, वि (हि बीच) मध्यम, मध्यवर्तिन् ।

बिचवई, स पु (हि बीच) प्रमाणपुरुष, निर्णेतृ, मध्यस्थ, मध्य वर्तिन्-स्थ थिन्, सन्धायक । सं स्त्री, मध्यस्थता, माध्यस्थ्यम्, निर्णायकत्वम् ।

बिच्छू, सं पु (स वृश्चिक) आलि, आलिन, द्रुण ।

बिछ(छु)ड़ना, क्रि अ (सं विच्छेद>) वियुज्, विरह् (कर्म), विघट (भ्वा आ से), विश्लिष् (दि प अ), पृथक् भू । स पु, दे 'बिछोहा' ।

बिछाना, क्रि स (स विस्तरणम्) आ वि स्तॄ (क्र उ से), आ वि, तन् (त उ से), प्रसृ (प्रे) । स पु, आ वि, स्तार, प्रस्तार, प्रसारणम् ।

बिछावन, सं पु दे 'बिछौना' ।

बिछिया, स स्त्री (हि बिच्छू) पादांगुली भूषणम् ।

बिछुआ (वा), सं पु (हि बिच्छू) दे 'बिछिया' २ कटारभेद ।

बीभत्स, वि (स) घृणावह कुत्सित २ क्रूर ३ पापिन् ४ भयावह।
बीभत्सा, स स्त्री (स) जुगुप्सा घृणा।
बीम¹, स पु (अ) दे 'शहतीर'।
बीम² (फा) भय मयम।
बीमा, स पु (फा बीम–भय>) मभाव्य हानि रक्षणम २ सभा यहानिपूरक क्रम्।
बीमार, वि (फा) रोगिन् रुग्ण।
बीमारी, स स्त्री (फा) रोग, व्याधि।
बीस, वि [स विंशति (नित्य स्त्री)]।
स पु उक्ता सख्या तद्सो (२०) च।
—वाँ, वि, विंशतितम मोम, विंश शी क्रम।
बीहड, वि (स विकट) निबिड, दुर्गम २ विषम, नतोन्नत।
बुंदा, स पु (स बिन्दु >) कर्णाभरणभेद, लोलकम्।
बुकचा, स पु (तु च) पोट्टलिका, कूर्च कम, भार।
बुकनी, स स्त्री (हिं बुकना–पीसना) चूर्ण, क्षोद।
बुखार, स पु (अ) ज्वर ताप।
—पुराना, स पु, जीर्णज्वर।
बुज़दिल, वि (फा) भीरु, त्रस्नु, कातर, निस्साहस।
बुज़ुर्ग, वि (फा) वृद्ध, स्थविर। स पु, पूर्वज, वशकर, गुरु।
बुझना, क्रि अ (देश) शम् (दि प से), निर्वापित (वि) भू २ शीनी भू ३ उत्साहो नश् (दि प वे)।
बुझाना, क्रि स (हिं बुझना) निर्वा (प्रे), ज्वाला शम् (प्रे) २ शीनी कृ ३ उत्साह नश (प्रे)। स प निवाप अग्निशमनम।
बुझारत, स स्त्री (हिं बूझना) प्रहेलिका, कूटप्रश्न।
बुडबुड़ाना, क्रि स (अनु) नम् (भ्वा प से)।
बुड्ढा, वि पु (दे 'बूढा'।
बुढापा, स पु (हि बूढ़ा) वार्धक्य, जरा ज्यानि (स्त्री), स्थविरता।
बुत, स पु (फा) मूर्ति, प्रतिकृति (स्त्री), प्रतिमा।
—परस्त, वि, मूर्ति प्रतिमा, पूजक।
बुदबुद, स पु, दे 'बुलबुला'। (स बुद्बुद) स प (अनु) फेन, जलविकार (बुलबुला कार), अम्बुस्फोट। २ गर्भस्थानविशेष।
बुद्ध, वि (स) ज्ञानवत् जानत् २ बुद्धदेव, सुगत, मर्यादासिद्ध मुनीन्द्र।
बुद्धि, स स्त्री (स) धी मति (स्त्री), प्रज्ञा मनीषा धिषणा, धिषणा, बुधा, मेधा।
—मान, वि (स मत्) धीमत्, प्राज्ञ, बुध, मनीषिन् पण्डित, मेधाविन्, विचक्षण, विदग्ध विवेकिन्, चतुर।
बुध, स पु (स) बुधवासर २ चन्द्रपुत्र, चतुर्थग्रह ३ पण्डित पण्डित ४ देव।
बुनना, क्रि स (स वयनम्) वे वप् (भ्वा उ अ)। स पु भाव, वयन, वयन, वस्त्रनिर्माणम।
बुनने योग्य, वि वयनार्ह, वयनीय, वानव्य।
—वाला, स पु, त तुवाय, तन्तुवाय, कुविंद, पटकार।
बुना हुआ, वि, उत, स्यूत।
बुनियाद, स स्त्री (फा) वस्तु, वास्तु (न), गृहमूल, पीठ, भित्तिमूलम २ यथार्थता।
बुरका, स पु (अ) अवगुण्ठन।
बुरा, वि (स विरूप>) दूषित दुष्ट, निकृष्ट, मन्द, २ निर्गुण, अशुभ ३ गर्ह्य, कुत्सित ४ दुष्ट, दुर्वृत्त।
बुराई, स स्त्री (हिं बुरा) दुष्टता, नीचता, निकृष्टता, दुर्वृत्त, खलत्वम्।
बुरादा, स पु (फा) काष्ठचूर्ण, दारुक्षोद।
बुरुश, स पु (अ ब्रश) आपर्षणी, लोममयी मार्जनी २ तूलिका, वर्तिका।
बुर्ज, स पु (अ) प्राचीर, शिखर गृहम।
बुलबुल, स स्त्री (फा) पिकशाब, बुलबुल, मधुस्वर।
बुलबुला, स पु (स बुद्बुद >) जल विकार, जल बुद्बुद।
बुलाना, क्रि स (देश) आह्वे (प्र), आहे (भ्वा प अ), आमन्त्र (चु आ से) शब्द (चु)। स पु आ ह्वान, आह्वान, आमन्त्रण।
बुलावा, स पु (हिं बुलाना) दे 'बुलाना' स पु।
बुलेटिन, स स्त्री (अ) राजवृत्तपत्रिका, २ राजकीय आधिकारिक विज्ञप्ति (स्त्री)।

बुप, बुस, स पु (स बुषन) बुसन, तुष स २ गुदगी,-मयमग पुरीषाण।
बुहारना, क्रि स (स बहुकरी>) सम्मा (अ प द), शुध् (प्र०)।
बुहारी, स स्त्री (हिं बुहारना) शोधनी, दे 'बहुकर'।
बूँद, स स्त्री (स बिंदु) कण, लव, पृषत, पृषत् (न) विप्रुष (स्त्री), द्रप्स।
बूँदा-बाँदी, स स्त्री (हिं बूँद+अनु) मन्द वृष्टि (स्त्री) शीकरवर्ष।
बूँदी, स स्त्री (हिं बूँद) बिन्दव (पु बहु), मिष्टान्नभेद २ वृष्टिबिन्दु।
बू, स स्त्री (फ़ा) गंध, वास २ दुर्गन्ध।
—उड़ना या फैलना, मु, दुर्यात-अपख्यात (वि) भू।
बूआ, स स्त्री (देश) पितृष्वसृ (स्त्री), पितृभगिनी २ अग्रजा।
बूचड़, स पु (अ बुचर) सौ(सौ)निक, मांसिक, शौद्धिक, कौटिक।
—खाना, स पु, सूना, सूना।
बूझ, स स्त्री (स बुद्धि) बोध, ज्ञान, विवेक २ प्रहेलिका।
बूझना, क्रि अ (हिं बूझ) ज्ञा (क्र उ अ), बुध् (भ्वा उ से) २ प्रच्छ (तु प अ)।
बूट, स पु (अ) उपानह (स्त्री), पत्रद्धी।
बूटा, स पु (स विटप) क्षुप, बालवृक्ष, लता, ओषधि (स्त्री) २ बड़ा, बड़ापरचरा।
बूटी, स स्त्री (हिं बूटा) ओषधि (स्त्री), काष्ठौषध २ भांग ३ वस्त्रेपु पत्रपुष्परचना।
बूड़ना, क्रि अ, दे 'डूबना'।
बूढ़ा, स पु (स वृद्ध) जरठ, स्थविर, पलित, जरित। वि, जरठ, जरितृ, जान, जीर्ण, वयस्क, प्रवयस्, वृद्ध, स्थविर, पलित।
—होना, क्रि अ, जृ (दि क्र प से), ज्या (क्र प अ), परिणम् (भ्वा प अ), वृद्ध (वि) भू।
—पन, स पु, जरा, परिणति-ज्यानि-जीर्णि (स्त्री), वाधक्य, वृद्धावस्था।
बूढ़ी, स स्त्री (हिं बूढ़ा) वृद्धा, जरती, स्थविरा, पलिता, पलिक्नी। वि, ब 'बूढ़ा' वि के स्त्री रूप।
बूता, स पु (स वित्त>) बल, शक्ति (स्त्री)।
बूरा, स पु (हिं भूरा) शर्करा २ चूर्णम, चूर्ण ३ चूर्णी, क्षोद ४ काष्ठचूर्ण।
बृहत्, वि (स) विशाल महत् २ दृढ, दृढ २ पर्याप्त ४ उच्च (स्वर दि)।
बृहस्पति, स पु (स) देवगुरुविशेष, सुगुरु, गुरु, वाचस्पति, गीष्पति (द्र न) २ मंगलस्य पंचमो ग्रह।
—वार, स पु (स) गुरु,-वार-वासर।
बेंच, स स्त्री (अ) (काष्ठादिनिर्मित) आसन, २ धर्म-व्यवहार,-आसन ३ अधिकरणा धर्माध्यक्षा (पु बहु)।
बेंत, स पु (स वेत्र) वेतस, वानीर, वञ्जु, नीरप्रिय, अपुष्प। २ वेत्रवेतसन्दण्ड यष्टि (स्त्री)।
बेंदी, स स्त्री (स बिंदु) वर्तुलचिह्न २ तिलक-क ३ शून्य, खम्।
बे,[१] अव्य (स हे) अरे, रे, अयि।
बे,[२] अव्य (फ़ा, सि स वि) अ, अन्, वि, निर्, रहित,-वा न,-अनिरिक्त,-वर्जित।
—अक्ल, वि (फ़ा+अ) निर्बुद्धि, मूढ।
—अक्ली, स स्त्री, निर्बुद्धता, मौर्ख्य।
—अदब, वि (फ़ा+अ) अविनीत, धृष्ट।
—अदबी, स स्त्री, धृष्टता, वैयात्यम्।
—आबरू, वि (फ़ा) निराकृत अवधीरित, समानरहित।
—आबरूई, स स्त्री, अवधीरणा, अवज्ञा, अपमान।
—इंतिहा, स पु (फ़ा+अ) अनन्त, असीम।
—इन्साफ़, वि (फ़ा+अ) अन्यायिन, अधार्मिक।
—इन्साफ़ी, स स्त्री, अन्याय, अधर्म।
—इज़्ज़त, वि (फ़ा+अ) दे 'बेआबरू'।
—इज़्ज़ती, स स्त्री, दे 'बेआबरूई'।
—इल्म, वि (फ़ा+अ) अविद्य, निरक्षर।
—ईमान, वि (फ़ा+अ) कुटिल, निन्द्य, धनन्याय, विमुख, वञ्चक, वंचक, शठ।
—ईमानी, स स्त्री, कुटिलता, वञ्चना, अधर्म।
—औलाद, वि (फ़ा+अ) निरपत्य, निस्सन्तान।
—क़द्र, वि (फ़ा) दे 'बेआबरू'।
—क़द्री, स स्त्री (फ़ा) दे 'बेआबरूई'।
—क़रार, वि (फ़ा) अशान्त, विकल, व्याकुल।
—क़रारी, स स्त्री (फ़ा) अशान्ति (स्त्री), व्याकुलता।

—कल, वि , आकुल, व्याकुल, अशान्त ।
—कली, स स्त्री , आकुलता व्याकुलता अशान्ति (स्त्री) कुलता।
—कस, वि (फ) निस्सहाय २ दरिद्र ३ अनाथ मातृपितृहीन ।
—कसी, स स्त्री , दैन्यम्, विवशता, दीनता ।
—कानूनी, वि , अवैध, विधि नियम, विरुद्ध विपरीत ।
—काबू, वि (फा +अ) सयमशून्य, विवश २ अदम्य, अवश्य ।
—काम, वि (फ +हिं) वृत्तिहीन, व्यवसाय शून्य ॥ व्यर्थ, निरर्थक ।
—कायदा, वि (फा +अ) नियमविरुद्ध, अवैध अनियमित ।
—कार, वि (फा) दे 'बेकाम' (१-२) । क्रि वि , व्यर्थ निष्प्रयोजनम् ।
—कारी, स स्त्री नियोगाभाव, वृत्तिराहित्यम् ।
—कुसूर, वि (फा +अ) निरपराध, निर्दोष ।
—खटके, क्रि वि (फा +हिं) निःसकोच, निःशक, निर्भयम् ।
—खबर, वि (फ) अज्ञ, अपरिचित २ मूर्च्छित, निःसज्ञ ।
—खबरी, स स्त्री , अज्ञता, प्रमाद २ मूर्च्छा, मादः, मत्तता ।
—खौफ, वि (फा) निर्भय, त्रासहीन ।
—गरज़, वि (फ +अ) निरपेक्ष निश्चिन्त ।
—गुनाह, वि (फा) निष्पाप २ निरपराध ।
—चैन, वि (फ) विकल, अशान्त २ विनिद्र ।
—चैनी, स स्त्री व्याकुलता २ विनिद्रता ।
—जड़, स पु (फि +स छदन) अत्यन्त प्रागहीन तृणम (न) अभिनायक वृत्तम् ।
—ज़बान वि (फ) अवाक्, मूक २ दीन ।
—जा, वि (फ) अनुचित, अस्थान २ कुस्थित, गय ।
—जान, वि (फ) निष्प्राण, मृत २ निर्बल, अशक्त ।
—ज़ाब्ता, वि (फा +अ) अवैध, अनैयमिक ।
—जोड़, वि (फा +हिं) अनुपम २ असत ।
—ठिकाने, वि (फ +हिं) अस्थान, च्युत भ्रष्ट, २ निराधार ३ असगत ।
—डौल, वि (फा +हिं) कुरूप, कदाकार ।
—ढंगा, वि (फा +हिं) अनाचारिन्, दुष्ट २ कुरूप ३ अक्रम, दुर्व्यवस्थित ।
—ढब वि (फा +हिं) कदाचार, कुशील, २ कुदर्शन, कुरूप ।
—तकल्लुफ, वि (फा +अ) उपचाररहित, निराडम्बर २ ऋजु, सरल ।
—तकल्लुफी, स स्त्री , उपचाराराहित्य, आडम्बर हीनता २ आर्जव, सरलता ।
—तमीज़, वि (फा अ) अशिष्ट, असभ्य, उद्धत, निर्लज्ज ।
—तरह, क्रि वि (फा +अ) अनुचित, अयथार्थ, असभ्यम् २ असाधारण विलक्षण रूपेण । वि , अत्यधिक ।
—तरीका, वि (फा+अ) अनुचित, अनैय मिक । क्रि वि , अनुचितम् ।
—तहाशा क्रि वि (फा +अ) अति, नवेन वेगेन शीघ्रतया २ ससभ्रम ३ अविचार्य, अविमृश्य ।
—ताब वि (फा) दुर्बल २ विकल ।
—ताबी, स स्त्री (फा) निर्बलता २ व्याकुलता ।
—तार, वि (फ +स) वितार, ततुहीन ।
—तार का तार, स प विनातार, विनारो विद्युत्सदेश ।
—तुका, वि (फा +हिं) विषमस्वर, साम ञ्जस्यहीन २ दे 'बेढब' ।
—दखल, वि (फ़ा) निष्कासित, निरस्त, अपाकृत, अधिकारभ्रष्ट ।
—दखली, स स्त्री (फा) निष्कासनं, अपाकरणं अधिकारभ्रश ।
—दम, वि (फा) मृत, निष्प्राण २ मृतप्राय, मरणासन्न ।
—दर्द, वि (फा) निर्दय, निष्करुण ।
—दाग, वि (फ़ा) निष्कलक, शुद्धाचार २ निर्दोष निरपराध ३ स्वच्छ ।
—धड़क, क्रि वि (फा +हिं) निःसकोचं २ निर्भयं ३ अविमृश्य । वि , निःसकोच, निर्भय, अविमृश्यकारिन् ।
—नज़ीर, वि (फा +अ) अनुपम, अद्वितीय ।
—नमाज़, वि (फा +अ) मदहीन, भ ग्य ।
—परदा, वि (फा) अनावृत, निरावरण २ नग्न ।
—परवाह, वि (फा) निश्चिन्त, चीतचिन्त । २ स्वच्छन्दचारिन् ३ उदार ।

—परवाही, स स्त्री, निश्चिंतता २ स्वेच्छाचार ३ औदार्यम्।
—पीर, वि (फा + हिं) निर्दय, अरुण २ सहानुभूतिशून्य।
—फायदा, वि (फा) निष्फल, निरर्थक। क्रि वि, मोघ, निष्फलम।
फिक्र, वि (फा) दे 'बेपरवाह'।
—फिक्री, स स्त्री, दे 'बेपरवाही'।
—बस, वि (स विवश) अशक्त, अवश निरधिकार २ परवश पराधीन।
—बसी, स स्त्री (हिं) विवशता, अवशता २ परवशता।
—बहरा, वि, भाग्यहीन २ विद्याहीन।
—बाक, वि निर्भय धृष्ट।
—बाक, वि (फा) निरवारित शोधित।
—बुनियाद, वि (फा) निर्मूल, निराधार।
—भाव, वि (फा + हिं) असंख्यात, अगणित।
—भाव की पड़ना, मु, मृश ताड़ (कर्म)।
—मजा, वि (फा) नीरस, विरस, निस्वाद।
—मतलब, अ०, निष्प्रयोजनम्, व्यर्थम।
—मानी, वि (फा + अ) निरर्थक।
—मुरव्वत, वि (फा) निःसंकोच, अविनीत, अदक्षिण कुशील।
—मेल, वि असंगत, विषम।
—मौका, वि (फा) असामयिक, अस मयोचित।
—रहम, वि (फा + अ) निष्ठुर, निर्दय।
—रहमी, वि निर्दयता, निष्ठुरता।
—रोक, } क्रि वि (फा + हिं) निष्प्रति
—रोक-टोक, } बंध, निर्विघ्न, निर्बाधानम्।
—रोजगार, वि (फा) दे 'बेकार'।
—रोजगारी, स स्त्री, दे 'बेकारी'।
—रौनक, वि (फा) शोभाहीन, निःश्रीक २ निष्प्रभ, कान्तिहीन।
—लाग, वि (फा + हिं) निःसंग, निर्मोह २ निष्कपट, निर्व्याज।
—वफा, वि (फा + अ) विश्वास,घातक घातिन, भक्तिहीन २ दुःशील ३ कृतघ्न।
—वफाई, स स्त्री (फा) विश्वासघात २ दुःशीलता ३ कृतघ्नता।
—शऊर, वि (फा + अ) दे 'बेतमीज़'।
—शक, क्रि वि (फा + अ) अवश्य, निःसंदेहम।
—शरम, वि (फा शर्म) निर्लज्ज, अपत्रप।
—शरमी, स स्त्री, निर्लज्जता, निर्व्रीडता।
—शुमार, वि (फा) अगणित, असंख्य।
—सबर, वि (फा + अ सब्र) अधीर २ असंतुष्ट।
—सबरी, स स्त्री, धैर्यलोप २ असंतोषभाव।
—सरो सामान, वि (फा) निष्परिच्छद, दरिद्र, अकिंचन।
—सुध, वि (फा + हिं) मूर्च्छित, नष्टमत, निश्चेतन २ अज्ञ, जड।
—सुधी स स्त्री, मूर्च्छा २ जडता।
—सुर —सुरा, वि (स विस्वर) विषमस्वर २ श्रव्य, कटुस्वर ३ दे 'बेमौका'।
—स्वाद, वि (स विस्वाद) दे 'बेमज़ा'।
—हद वि (फा) असीम, निस्सीम, अपरिमित २ अत्यधिक।
—हया, वि (फा) दे 'बेशरम'।
—हयाई, स, स्त्री, दे 'बेशरमी'।
—हाल, वि (फा + अ) विकल २ दुर्गत।
—हाली, स स्त्री, विकलता २ दुर्गति (स्त्री) दारिद्र्यम्।
—हिसाब, क्रि वि (फा + अ) अत्यधिक, अपरिमितम्। वि, अत्यंत, अगणनीय।
—होश, वि (फा) दे 'बेसुध'।
—होशी, स स्त्री, दे 'बेसुधी'।
बेकल, वि (स विकल) अशान्त, विह्वल, दे 'व्याकुल'।
बेकली, स, स्त्री, (हिं बेकल) अशान्ति अनिवृत्ति (स्त्री) दे 'व्याकुलता'।
बेकिंग पाउडर, स पु (अ) भर्जनक्षोद।
बेक्टीरिया, स पु (अ) कीटाणवः (पु बहु)।
बेगम, स स्त्री (तु) राज्ञी, राजपत्नी २ राजचित्रान्वितक्रीडापत्रभेद।
बेगाना, वि (फा) अस्वीय अस्वकीय, अनात्मीय पर, अन्य २ अपरिचित, अज्ञात।
बेगार, स स्त्री (फा) विष्टि आजू, आजुर (स्त्री)।
—टालना, मु, असमनोयोगेन कृ, येन केन प्रकारेण विधा (जु उ अ)।

बेहूदगी, स स्त्री (फा) अशिष्टता, असभ्यता।
बेहूदा, वि (फा) अशिष्ट, असभ्य २ अशिष्टतापूर्ण।
—पन, स पु दे 'बेहूदगी'।
बैगन, स पु (स वातिंगन) (पौधा) माम वृक्षकी, फल, वर्ताकी वृन्ताक की वा २ (तरकारी) वृन्ताक शाकम्।
बैंग(ज)नी, वि (हिं बैंगन) नील, लोहित अरुण।
बै, स स्त्री (अ) विक्रय, विक्रयण, मूल्येन दानम्।
बैकुण्ठ स पु (स वैकुंठ) स्वर्ग नाक।
बैजंती, बैजयंती, स स्त्री, दे 'वैजयंती'।
बैज, स पु (अ) चिह्न, लक्षण, लक्ष्मन् (न) २ दे 'चपरास'।
बैटरी, स स्त्री (अ) विद्युत्० २ *विद्युत् पिटक, दे 'टार्च' ३ दे 'तोपखाना'।
बैठक, स स्त्री (हिं बैठना) *उपवेश कोष्ठक, दर्शनगृह, सभाभवनगोष्ठ २ आसन, पीठ ३ अधिवेशन ४ उपवेश शन ५ उरवा नीमनेशनात्मको व्यायामभेद ६ मा।
बैठकी, स स्त्री (हिं बैठक) व्यायामभेद, *उपवेशनी २ आसन, पाठम ३ पादफलक प्रदीप।
बैठना, क्रि अ (स विश्>) उपविश (तु प अ), निषद् (भ्वा प अ), आस् (अ आ से) २ व्यवअनुबन्ध (कर्म) ३ अभ्यस्त (नि) भू ४ अध अथवा तल गम् ५ नि,मस्ज् (तु प अ) ६ सकुच (तु भ्वा प से), मूल्येन प्र (कर्म), क्री (क्र्य) ७ लक्ष्य व्यध (दि प अ) सिध् (दि प अ) ८ आ अधिरुह् (भ्वा प अ) ९ आ, रोप (कर्म) निधा (कर्म), प्रति स्थप (कम) १० दृढ बन्ध (भ्वा प अ) ११ (वनजिन् मद) पननत्वेन सवम १२ वृत्तिहीन, (वि) वृत् (भ्वा आ से) १३ नष्टिा भू, परिक्षि (कम) १४ अप, नगम् (भ्वा प अ)। स पु उपवेश शन, नियमन अस्ति, आसन निर्गति (स्त्री)।
बैठने योग्य, वि, उपवेशनीय, निषदनीय, आसितव्य।
बैठनेवाला, स पु, उपवेशक, उपवेष्टृ, उपवे शिन, आसक, निषदिन।

बैठा हुआ, वि, उपविष्ट, निषण्ण, आसीन।
बैठते-उठते, क्रि वि, सदा, प्रतिक्षणम्।
बैठे बैठे, } क्रि वि, निष्कारण अहेतुक
बैठे बैठाए, } २ अनायासेन अप्रयत्नम्।
बैठवाना, क्रि प्रे, व 'बैठना' का प्रे रूप।
बैठाना, } क्रि स व 'बैठना' के प्रे रूप।
बैठालना, }
बैत, स स्त्री (अ) पद्य, श्लोक।
—बाजी, स स्त्री पद्यपाठप्रतियोगिता २ अन्त्याक्षरी।
बैतरनी, स स्त्री दे 'वैतरणी'।
बैताल, स पु, दे 'वेताल'।
बैन, स पु (स वचन*) शब्द २ वार्ता ३ *परिदेवनपद्यम् (पंजाब)।
बैना, स पु (स वायन) वायनक, साम्दा निकमिष्टान्नम्।
बैनामा, स पु (अ बै+फा नामह) विक्रयपत्रम्।
बैरग, वि (अ *बेयरिंग) शुल्कापेक्षिन, *निरस्तार्य।
—लौटना, मु, विफल प्रत्यागम य (नि) प्रत्य धृत (भ्वा आ से)।
बैर, स पु, दे 'वैर'।
बैरक, स पु (तु) सैनिक, ध्वज केतु २. सैनिक,-आवास -आगार।
बैराग, स पु, दे 'वैराग्य'।
बैरागी, स पु, दे 'वैरागी'।
बैरी, स पु, दे 'वैरी'।
बैरोमीटर, स पु (अ) वायुभारमापकम्।
बैल, स पु [स ब(व)लीवर्द] बलद, वृष, वृषभ, उक्षन् अनडुह् वृषन् ककुद्मत् (पु), पुङ्गव, शाक्वर, सौरभेय २ मन्द, मूढ।
—गाड़ी, स स्त्री, बलदशकटी वृषभ(गो)यानम्।
हल में का—, स पु, शाकट, धुरन्धर, धुरीण, धौरेय, प्राजन।
बूढ़ा—, स पु, जरद्गव।
हल खींचनेवाला—, स पु सैरिक, हालिक।
बैलून, स पु (अ) दे 'गुब्बारा'।
बैशाख, स पु, दे 'वैशाख'।
बैसाखी¹, स स्त्री (स वैशाखी) जाना पर्वविशेष।
बैसाखी², स स्त्री (स वैशाख>) *वैशाखी, कुक्षियष्टि (स्त्री)।

बोझ, स पु (स वोढव्य ?) भार, भर, भारविध पदार्थ २ गुरुत्व, तौल, भार ३ दुष्कर कार्य ४ काम धन्धा ५ व्ययभार ६ उत्तरदायित्वम् ।

बोझ(झि)ल, वि (हि बोझ) गुरु, भारवत्, भारिन्, भारिन्, दुर्वह ।

बोटा, स पु (स वृन्त>) छिन्नवृक्षकाण्डखण्ड २ खण्ड ३, शकल-लम् ।

बोटी, स स्त्री (हि बोटा) मांसखण्ड कम् ।

—बोटी काटना, मु शरीर खण्डश कृत् (तु प से)-शस्त्रैः देह खण्डशः खण्ड् (चु) ।

बोतल, स स्त्री (अ बॉटल) काचकूपी ।

बोदा, वि (स अबोध) दुर्मेध जड, मन्दधी बुद्धि मूढ २ अलस, मन्थर ३ निर्बल, अशक्त ४ शिथिल, श्लथ ।

बोध, स पु (स) उपलब्धि प्रतिपत्ति (स्त्री) ज्ञान २ धैर्य, आश्वासनम् ।

—गम्य, वि (स) ज्ञेय, बुद्धिगम्य, सुबोध, सुगम ।

बोधक, स पु (स) अध्यापक, शिक्षक । वि, ज्ञापक, व्यञ्जक ।

बोधन, स पु (स न) अध्यापन, शिक्षण २ ज्ञापन, सूचन ३ उत्थापन, निद्राभञ्जन ४ उद्दीपन, प्रज्वलनम् ।

बोधनीय, वि (स) विज्ञापनीय २ निद्राया उत्थापनीय ।

बोधि, स स्त्री (स पु) समाधिभेद, पूर्णज्ञान, प्रकाश उपलब्धि (स्त्री) २ कुक्कुट ।

—द्रुम, स पु (स) बोधि-तरु वृक्ष, पावन, पिप्पल बोधद्रुम-कुम्भराजन ।

—सत्व स पु (स) बुद्धत्वोन्मुखो महात्मन् ।

बोना, क्रि स (स वपन) आ नि, वप् (भ्वा उ अ), (बीजानि) विकॄ (तु प से)-आरुह् (प्रे) । स पु, उप्ति (स्त्री), वपन, वाप, वप बीज, विकिरण आरोपणम् ।

बोने योग्य, वि, वपनीय, वप्तव्य, वाप्य ।

बोने वाला, सं पु, वप, वपक, वप्तृ, वापिन् ।

बोया हुआ, वि, उप्त, भूमौ विकीर्ण (बीज) ।

बोरा, स पु (स पुट=दोना>) स्यूत, स्यात, प्रसेव ।

बोरिक एसिड, स पु (अ) टङ्कणाम्ल ।

बोरिया, स स्त्री (हि बोरा) कट, किलिञ्ज २ अस्तर ण, विष्टर ३ दे 'बोरी' ।

—(अथवा बोरिया बधना) उठाना, मु, गमन प्रस्थान-उद्यत (वि) भू ।

बोरी, स स्त्री (हि बोरा) स्यूतक, स्योतक, प्रसेवक ।

बोल, स पु (हि बोलना) वाणी, गिर वाच उक्ति व्याहृति (स्त्री), वचस (न), शब्द, वाक्य, वचन २ व्यङ्ग्य-व्याज क्षेप, उक्ति (स्त्री), दे 'बोली' ३ प्रतिज्ञा ४ वाद्यानां नियत ध्वनि ५ गीतांश ।

—चाल, स स्त्री, सौहार्द, सद्भाव, आलाप ।

—चाल की भाषा, स स्त्री, लोक नित्य-व्यावहारिक, भाषा ।

—बाला होना, मु, वाक्य अर्ह (कर्म) २ भाग्य उदि (अ प अ) ३ यशो वृध् (भ्वा आ से) ।

बोलना, क्रि अ (स ब्रू) आलप्-गद्-भण् (भ्वा प से), ब्रू (अ उ अ), वच (अ प अ) २ किलकिलायति-ते (ना धा), कूज् (भ्वा प से) ३ कथ् (चु) ४ गै (भ्वा प अ) । स पु, आलपन, निगदन, भाषण, वचन, गदन कथन, कूजनम् ।

बोलने योग्य, वि, आलपनीय, वचनीय, गेय ।

बोलने वाला, स पु, वाचक, वक्तृ, निगादिन्, कथक, व्याख्यातृ, गायक ।

बोला हुआ, वि, उक्त, गदित, कथित, गीत ।

बोली, स स्त्री (हि बोलना) गिर-वाच् (स्त्री) गिरा, उदीरणा, वाणी २ वचन उक्ति (स्त्री), वचस, शब्द ३ विक्रय घोषणा ४ भाषा, वचा गिरा ५ उपभाषा प्रादेशिक, भाषा ६ वक्र व्यङ्ग्य-व्याज क्षेप भङ्गि, उक्ति (स्त्री) भाषित, कुवाक्य ।

—ठोला, सं स्त्री, दे 'बोली' (६) ।

—ठोली मारना, मु, व्यङ्ग्य अधिक्षिप् (तु प अ) वक्रोक्त्या अधिक्षिप्, व्याजोक्त्या सूच् (चु) ।

बोवा(आ)ना, क्रि प्रे, व 'बोना' का प्रे रूप ।

बोहनी, स स्त्री (स बोधन>) प्रथमविक्रय ।

बौखलाना, क्रि अ (सं वायुग्रस्तन>) ईषत् उन्मद् (दि प स)-वातुलीभू ।

बौछाड़ र, स स्त्री (स वयुमरण>) झञ्झा, झञ्झा,अनिल-वात-मरुत् (पु) २ आसार, धारासम्पात ३ *मननमपान ४ व्यङ्ग्योक्ति (स्त्री) दे बोली' (६)।

बौद्ध, स पु (स) बौद्धमबुद्धानुयायन्। वि, बुद्ध,-सबधिन प्रचारित।

—धर्म, स पु (स) बुद्धप्रवर्तितधर्म, बुद्धमतम्।

बौना, स पु (स वामन) खर्व, ह्रस्व खट्टन, न्यग्‌रुह न्यच। वि खव, ह्रस्व।

बौरा, वि (स वातुर) विक्षिप्त, उन्मत्त। ३ अन मूढ।

बौली, स स्त्री (देश) विक, स्व प्रसूताया गोर्दुग्धम्।

ब्याज, स पु दे 'सूद'।

ब्याध, स पु, दे 'व्याध'।

ब्याना, क्रि स (स वीन>) जन्-उत्पद् (प्रे), प्रसू (अ आ मे)।

ब्यालू, स पु (स वैकल्पिक>) साय भोजन, *नक्ताश। *वैकालिकम्।

ब्याह, स पु (स विवाह) उद्वाह, परिणय, उपयम, पाणि,ग्रह ग्राह ग्रहण, दार, परिग्रह अधिगम।

ब्याहता, वि स्त्री (स विवाहिता) ऊढा, परिणीता। स पु, पति, भर्तृ।

ब्याहना, क्रि स, (सं विवहन) (पत्नीग्रहण) उद्-वि-वह् (भ्वा प अ), परिणी (भ्वा प अ), उपयम् (भ्वा आ अ), परि,प्रति ग्रह् (क्र प से) २ (पति ग्रहण) पति विद् (तु उ वे)-लभ (भ्वा आ अ)-अधिगम् (भ्वा प अ) वृ (स्वा उ से), भर्ता मनुज (क्रम) ३ उद्वह कृ (प्रे), पाणि ग्रह (प्रे) विवाहेन-मनुज (प्रे), पाणि ग्रहण सपद् (प्रे)। स पु, दे 'ब्याह' स पु।

ब्याहने योग्य, वि, उद्व वाह्य वोढव्य, परिणेय, विवाहयोग्य।

ब्याहने वाला, स पु, वि-उद्-वोढृ परिणेतृ परिणायक, पाणि,ग्रह ग्रहक ग्रहातृ।

ब्याहा हुआ, वि पु, विवाहित, सपत्नीक, सभार्य, कृतदार, स्त्रीमत्, कुटुम्बिन्, ऊढ, परिणीत। (वि स्त्री) सभर्तृका, पतिवत्नी, सधवा, सुवासिनी, परिणीता, ऊढा।

ब्योंत, स स्त्री (स व्यवस्था) वृत्त, वृत्तान्त २ काय, विधि प्रणाली शैली ३ युक्ति (स्त्री), उपाय ४ अयोजन, उपकल्पन ५ अवसर ६ व्यवस्था, प्रबन्ध ७ मितव्यय वस्त्रकर्तनम्।

ब्योंतना, क्रि स, दे कतरना'।

ब्योपार री, स पु दे 'व्यापार री'।

ब्योरा, स पु (स विवरणम) विस्तृत, वर्णन वृत्तान्त २ उदन्त, वृत्तान्त ३ अन्तरम भेद।

—(रे)वार, अ० स विस्तर विस्तरम्, विस्तारपूर्वकम्।

ब्योहार, स पु, दे व्यवहार'।

ब्रज, स पु, दे व्रज'।

ब्रत, स पु दे 'व्रत'।

ब्रह्म, स पु [स ब्रह्मन् (न)] परमात्मन्, परमेश्वर, सच्चिदानद परमात्मन् २ आत्मन्, देहिन् ३ ब्राह्मण (प्राय समासारम्भ में, उ ब्रह्महत्या) ४ चतुर्मुख, विधि, पद्मासन ५ वेद ६ ब्रह्मा", भुवनकोश।

—चर्य, स पु (स न) आश्रमभेद, प्रथमाश्रम २ वीर्यरक्षा, अष्टागमैथुनप्रतिषेध, यमभेद (योग), ऊर्ध्वरेतस्त्वम्।

—चारिणी, स स्त्री (स) ब्रह्मचर्यधारिणी, २ प्रथमाश्रमिणी ३ अनूढा, कुमारी।

—चारी, स पु (स रिन्) व्रतिन्, लिङ्गिन्, लिङ्गस्थ, ब्रह्मचर्यधारिन् वर्णिन् २ प्रथमाश्रमिन्, अविवाहित।

—ज्ञान, स पु (स न) परमेश्वरबोध।

—ज्ञानी, स पु (स नित्) ब्रह्मवेत्ता २ अद्वैतवेदिन्।

—दिन, स पु (स न) परमेष्ठिदिवस, सृष्ट्यवधि (= १०० चतुर्युगी)।

—देश, स पु (स) अर्यावर्तस्य भागविशेष (कुरुक्षेत्र च मत्स्याश्च पचाला शूरसेनका। एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तर —मनु० २।१९)

—पुराण, स. पु (स न) पुराणविशेष।

—बधु, स पु (स) पतितो विप्र।

—भोज, स पु (स ज्य) ब्राह्मणभोजनम्।

—मुहूर्त, स पु (स पु न) सूर्योदयात् विचतुरघटीपूर्ववर्तिकाल, ब्राह्मकाल।

—यज्ञ, स पु (स) ब्रह्मसत्र, सविधि वेदाध्ययनाध्यापनम्।

—रंध्र, स पु (स न) ब्रह्म, छिद्रद्वारम।
—रात्रि, स स्त्री (स) ब्रह्मणो निशा, प्रलया वधि (– १०० चतुर्युगी)।
—वर्चस, स पु (स न) तप स्वाध्यायज तेजस् (न)।
—वर्चस्वी, वि (स स्विन्) ब्रह्मवर्चसविशिष्ट।
—वादिनी, स स्त्री (स) गायत्री। वि, वेदोपदेष्ट्री।
—वादी, वि (स न्नि) वेदोपदेशक।
—विद्, वि (स) ब्रह्मवेत्तृ २ वेदार्थज्ञ।
—विद्या, स स्त्री (स) उपनिषद् परा, विद्या।
—वेत्ता, स पु (स वेत्तृ) ब्रह्मज्ञ।
—वैवर्त्त, स पु (स न) पुराणविशेष।
—समाज, स पु (स) श्रीराममोहनराय प्रवर्तित सम्प्रदायविशेष।
—सूत्र, स पु (स न) दे 'यज्ञोपवीत' २ शारीरिकसूत्रम्।
—हत्या, स स्त्री (स) विप्रवध।
—हत्यारा, स पु (स + हि) विप्रघ्न ब्राह्मणघातक।
ब्रह्मत्व, स पु (स न) परमेश्वरत्व ता २ ब्राह्मणत्वम।
ब्रह्मर्षि, स पु (स) वसिष्ठादयो मन्त्रद्रष्टार ऋषय २ ब्राह्मण ऋषि।
ब्रह्मा, स पु (स ब्रह्मन् पु) चतुर्मुख, अष्ट कर्ण, अज क, धाता, कमलपद्म अब्ज, योनि, वि,धातृ, नाभिज, पद्मासन, परमेष्ठिन्, पितामह, विधि, विरिंचि चि चन, विश्वसृज, सर्वतोमुख, स्रष्टृ, स्वयम्भू, हंस वाहन, हिरण्यगर्भ (सब पु)।
ब्रह्मांड, स पु (स न) भुवनकोष, विश्व गोलक, विश्व, जगत् (न), जगती, त्रिभुवनम्।
ब्रह्माक्षर, स पु (स न) ओम् इत्यक्षरम्, प्रणव ओङ्कार।
ब्रह्माणी, स स्त्री (स) ब्रह्मण पत्नी, शतरूपा, सावित्री, सरस्वती, गायत्री।
ब्रह्मानंद, स पु (स) ब्रह्मदर्शनाह्लाद।
ब्रह्माभ्यास, स पु (स) वेद, अध्ययन स्वाध्याय।
ब्रह्मावर्त्त, स पु (स) तपोवन, सरस्वत दृषद्वत्योमध्यवर्तीदेश।
ब्रह्मासन, स पु (स न) योग ध्यान आसनम्।
ब्रह्मास्त्र, स पु (स न) ब्रह्मस्वरूपमस्त्र २ अमोघास्त्रभेद।
ब्राह्मण, स पु (स) आर्याणामुत्तमो वर्ण २ विप्र, ज्येष्ठवर्ण, अग्रजन्मन् जातक। भूदेव, द्वि जन्मन् जाति, वक्त्रज, द्विज, गुरु, द्विजोत्तम, षट्कर्मन्, ब्रह्मन् (सब पु)।
ब्राह्मणत्व, स पु (स न) द्विजत्व, विप्रत्व, ब्राह्मण्यम् ३।
ब्राह्मणी, स स्त्री (स) ब्राह्मणपत्नी २ ज्येष्ठ वर्णा, द्विजोत्तमा ३ बुद्धि (स्त्री)।
ब्राह्ममुहूर्त्त, स पु (स पु न) अरुणोदय कालस्य प्रथमदण्डद्वयम्।
ब्राह्मी, स स्त्री (स) दुर्गा २ भारतवर्षस्य प्राचीनलिपिविशेष ३ (बूटी) सोमवल्लरि सुरसा, परमेष्ठिनी, ब्रह्मकन्यका, वाग्देवी सरस्वती।
ब्रिटिश, वि (अ) आङ्गल।
ब्रुश, स पु (अ) मार्जनी, लोममयी शोधनी मार्जनी २ कूर्चिका ना, तूलिका, वानरा।
ब्रूरी, स स्त्री (अ ब्यूरी) यवासवनी।
ब्रौंकाइटिस, स पु (अ) श्वासनालीभुजप्रदाह।
ब्लाक, स पु (अ) चित्रफलक २ चतुरस्त्री भूखण्ड ३ गृहवर्ग।
ब्लीचिंग पौडर, स पु (अ) श्वेतनक्षोद, रङ्गनाशक चूर्णम्।
ब्लैडर, स पु (अ) मूत्राशय, बस्ति (पु स्त्री) २ पित्ताशय ३ (पादकन्दुकस्य) अन्त कोष।

भ

भ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्विंशो व्यञ्जनवर्ण, भकार।
भग[1], स स्त्री दे 'भाग'।
भग[2], स पु (स) भञ्जन, भेदन २ विनाश, विभ्रम ३ अतिक्रमण, उल्लंघन ४ तरङ्ग, कल्लोल ५ पराजय ६ खण्ड ७ बाधा, विघ्न ८ वक्रता, जिह्मता ९ दे 'लकवा'।
भंगड़, वि (हि भांग) भङ्गाप, भङ्गापायिन्।
भँगरा[1], स पु (सं भृंगराज) केशराज, कुन्तलवर्द्धन पितृप्रिय भृंग, पदाराज।

भँगरा¹, स पु (हिं भंग) शाणपट, वराशि मि ।
भँगरा², स पु (म भृङ्गराज) पिकाकार खगभेद २ दे 'भँगरा'।
भँगिन, स स्त्री (हिं भंगी) मल्पू (स्त्री), सम्मार्जका।
भंगिमा, स स्त्री (स भंगिमन्) वक्रता, कुटिलता, विलासता, अरालता।
भंगी,¹ स पु (स भंग >) ... मलहारक, मेम ... २ क्षुद्रजातिभेद।
भंगी, वि (हिं भांग) दे 'भंग'।
भंगी,² स स्त्री (स) भेद विच्छेद २ कुटिलता, वक्रता ३ अंगविक्षेप ... ४ कल्लोल लहरी ५ व्याज ६ प्रवञ्चना (स्त्री)।
भंगी,³ वि (स भंगिन्) भिदुर, भंगुर, क्षणभंगुर, नश्वर २ भंजक भंजन, ...।
भंगुर, वि (स) भिदुर, क्षणिक २ नश्वर, अस्थिर २ कुटिल, वक्र।
भंजक, वि (स) भञ्जन, खण्डन, त्रोटक २ उल्लंघक अतिक्रमक ... ।
भंजन, स पु (स न) खण्डन, त्रोटन, भेदन, शकलीकरण २ अतिक्रमण, उल्लंघन, भंग, ३ वि ध्वंसन ४ भग, ध्वंस ५ नाशन, लोपनम्। वि, दे 'भंजक' (१२)।
भंजना, क्रि अ (स भंजन) दे 'टूटना'।
भंटा, स पु (स वृन्ताक) दे 'बैंगन'।
भंड, स पु (स) दे 'भाँड'।
भंडा, स पु, दे 'भाँडा'।
भंडार, स पु (स भाण्डार) कोश प निधि, शेवधि, निधान २ धान्य,कोष्ठ, अ(आ)गार २ ३ पाकशाला ४ उदर, जठर ५ भाण्डागार ६ दे 'भण्डारा'।
भंडारा, स पु (हिं भंडार) दे 'भंडार' (१-५) २ समूह, राशि ३ साधूना भोजनोत्सव।
भंडारी, स (हिं भंडार) कोषक, अ(आ)गारक ... २ कोश प।
भंडारा, स पु (भाण्डारिन्) कोषा(षा)ध्यक्ष, धनाध्यक्ष २ भाण्डागारिक, भाण्डारिक ३ सूद, पाचक।
भंभीरी, स स्त्री (अनु) रक्तवर्ण पतङ्गभेद, *भंभीरी २ दे 'तीतरी'।

भँवर, स पु (स भ्रमरक) जल-आवर्त, गुल्म, भ्रमि (स्त्री) आवर्त, अवघूर्ण, कुण्डल, तालूर २ दे 'भ्रमर' ३ गर्त, गर्त, श्वभ्र।
भँवरा, स प, दे 'भ्रमर'।
भँवरी,¹ स स्त्री (हिं भँवर) दे 'भँवर' १ शरीरास्थ रोम,चतुष्क आवर्त।
भँवरी², स स्त्री (हिं भँवरना, स भ्रमण>) दे 'भाँवर' २ वैवाहिकपरिक्रमणा, भाण्डवाहकता ३ (प्रचारार्थं अधिकारिणा) पर्यटन पर्यभ्रमणम्।
भउआ, स पु (हिं भाड़, दे)।
भक, स स्त्री (अनु) ज्वाला,ज्वलन, ध्वनि (पु)।
भक्त, वि (स) धार्मिक, धर्मपरायण, पुण्यधन, पुण्यात्मन्। स पु, पूजक, उपासक सेवक २ अनुयायिन्, अनुगामिन ३ पक्षपातिन्, सनातन।
भक्ताई, स स्त्री, दे 'भक्ति'।
भक्ति, स स्त्री (स) ईश्वर, सेवा, पूजा-अर्चा उपासना परायणता २ नियम, धामावना, धर्मक्रिया, तपस् (न) ३ श्रद्धा, निष्ठा ४ परायणता, निरति (स्त्री), अनुराग, अभिनिवेश।
भक्ष, स पु (स) भोजनम् २ भक्षणम्।
—कार, स पु (स) खादिर २ पाचक।
भक्षक, वि (स) खादक, अशन, भोक्तृ, घस्मर, भोजिन् [भक्षिका (स्त्री) = खादिका, अशिनी, भोक्त्री]।
भक्षण, स पु (स न) अशन, आस्वादन, खादन, भोजन, अभ्यवहरण २ आहार।
भक्षित, वि (स) भुक्त, खादित, अदित।
भक्षी, वि (स क्षिन्) दे 'भक्षक'।
भक्ष्य, वि (स) खाद्य, भोज्य, अभ्यवहार्य। स पु (स न) भोजन, आहार, खाद्यवस्तु (न), अन्नम्।
भगंदर, स पु (स) अपानदेशे व्रणरोगभेद।
भग, स पु (स) सूर्य २ ऐश्वर्य, धन ३ सौभाग्य, भाग्य ४ चन्द्र ५ योनि (स्त्री) ६ गुह्य ७ पूर्वाफल्गुनीनक्षत्र ८ धन ९ कान्ति (स्त्री) १० मोक्ष ११ माहात्म्य १२ यत्न।

भगण, स पु (स) नक्षत्रसमूह २ गणभेद । (ऽ।।, छंद शास्त्र)।
भगत, स पु तथा वि, दे 'भक्त'।
भगतानी, सं स्त्री (हिं भगत) भक्त भार्या पत्नी २ ईश्वर,-उपासिका पूजिका भक्तिका, धर्मशीला ३ अनुगामिनी।
भगती, सं स्त्री, दे 'भक्ति'।
भगदड़, स स्त्री (हिं भाग+दौड़) पलायन, अप,क्रमण धावन, विद्राव ।
—पड़ना या **मचना**, क्रि अ, पलाय (भ्वा आ से), विप्रद्रु (भ्वा प अ), अपधाव (भ्वा प से)।
भगवत, स पु (स भगवत् >) ईश्वर, भगवत् (पु)।
भगवती, स स्त्री (स) देवी २ गौरी ३ सरस्वती ४ गंगा ५ दुर्गा।
—भगवत्, वि (स) श्रीमत्, लक्ष्मीवत्, ऐश्वर्यशालिन् २ पूज्य, मान्य, अर्चनीय। स पु (स) परमेश्वर, जगदीश्वर २ विष्णु ४ शिव ५ जिन ६ बुद्ध ।
—गीता, स स्त्री (स) श्रीकृष्णार्जुनसंवादा त्मको विख्यातो धर्मग्रंथविशेष ।
—पदी, स स्त्री (स) गंगा, *देवनदी।
भगवाँ वा, सं पु, दे 'गेरू'। वि, दे 'गेरुआ'।
भगवान्‌न्, वि (स भगवत्) दे 'भगवत्' वि तथा स पु ।
भगाना, क्रि स, दे 'भागना' के प्रे रूप।
भगिनी, स स्त्री (स) सोदरा, दे 'बहन'।
भगीरथ, स पु (सं) अयोध्यापतिविशेष । वि, सुमहत्, विपुल, अत्यधिक।
भगोड़ा, वि (हिं भागना) रणविमुख, युद्धत्यागिन् २ अपधावित, प्रपलायित ३ भीरु, कातर।
भग्न, वि (स) खंडित, त्रुटित, ध्वस्त २ भिन्न, वि,दीर्ण ३ पराजित, पराभूत।
भग्नावशेष, स पुं (सं) ध्वंसावशेष, दे 'खंडहर'।
भजन, स पु (सं न) पूजा, अर्चा, सेवा, सपर्या २ जप, सततस्मरण ३ भक्ति गीत निशा।
—करना, क्रि स, दे 'भजन'।
भजना, क्रि स (स भजन) भज् (भ्वा उ [redacted]), पूज्-सभाज् (चु), उपास् (अ आ से), आराध् (चु), नमस्यति (ना धा), सेव् (भ्वा आ से) २ जप (भ्वा प से), निरंतर स्मृ (भ्वा प अ) ३ आ,श्रि (भ्वा उ से)। क्रि अ, दे 'भागना'। स पु, दे 'भजन' (१२)।
भजनानन्द, स पु (स) भक्ति,-आनन्द -रस आह्लाद । वि भक्तिपरायण।
भजनानन्दी, वि (स दिन्) भक्तयानन्द, मग्न लीन परायण।
भजनीक, [redacted] पु (स भजन>) गायक, गातृ, गाथु, गेष्ण ।
भजनीय, वि (स) पूज्य, सम्मान्य, सेव्य।
भजने योग्य, वि, भजनीय, उपास्य, सेव्य, जपार्ह, आश्रयणीय।
भजने वाला, स पु, भक्त, उपासक आराधक ।
भट, सं पु (स) योध, योद्धृ (सैनिक, आयुधिक) २ वीर, शूर ३ वर्णसंकरभेद ।
भटकटाई, **भटकटैया**, स स्त्री (स भट + कटर >) दुःस्पर्शा, दुष्प्रधर्षिणी, बहुकटा, चित्रफला।
भटकना, क्रि अ (स भ्रामक>) मोघ पर्यट् परिभ्रम् (भ्वा प से) २ पथभ्रष्ट (वि), इतस्ततः या (अ प अ), विपथगम् ३ भ्रम्, मुह् (दि प से)। स पु, व्यर्थपर्यटन, पथ भ्रंश, उन्मार्गगमन, भ्रम, माया, मोह ।
भटकाना, क्रि स, दे 'भटकना' के प्रे रूप।
भटका हुआ, वि, उन्मार्ग विपथ,-गामिन्, पथ-भ्रष्ट, भ्रांत, मूढ।
भटू, स स्त्री, (स वधू >) (सम्बोधन में हा। (हे) सखि। (हे) भामि! (हे) वयस्य
भट्ट[1], स पु (स भट्ट) जातिविशेष २ स्तुति पाठक, दे 'भाट'।
भट्ट[2], [redacted] पु, दे 'भट'।
भट्टा, स पु (स भ्राष्ट्र >) आपाक, भ्राष्ट्र-(पु स्त्री), पाकपुटी।
भट्टी, सं स्त्री (हिं भट्ठा) अश्मन, उद्धान, अंतिका, अंदिका, अधिश्रयणी, अग्निकुंड २ संधानी, अभिषवशाला ३ रजकस्थाह ।
भठियारा, सं पुं (हिं भट्ठा) पाथागार, अध्वग पति २ सूदकार, भ्राष्ट्रमिष,-अर्जन,-कार कर्तृ।

भठियारिन-री, सं स्त्री (हिं भठियारा) पाथागाराध्यक्षा २ भर्जन-कारी-कर्त्री, भृष्टकारी।

भड़क, स स्त्री (अनु) औज्ज्वल्य, प्रभा, भाम् (स्त्री), अति-बाह्य,-शानि -दीप्ति (दोनों स्त्री)-शोभा।

—दार, वि (हि + फा) भासुर, भासमान, उज्ज्वल, दीप्तिमद्।

भड़कना, क्रि अ (हिं भड़क) उद् प्र ज्वल (भ्वा प से), उद् प्र-म दीप (दि आ से) २ समाध्वस अपस (भ्वा प अ)-परावृत (भ्वा आ से), सहसा कप (भ्वा आ से) ३ क्रुध् (दि प अ)।

भड़काना, क्रि स क, 'भड़कना' के प्रे रूप २ उत्तिन उद्दाप-(प्रे)।

भड़कीला, वि (हि भड़क) दे 'भड़कदार'।

भड़भड़िया, वि (अनु भड़भड़) वाचाल, वाचाट, वावदूक, जल्पक, बहुभाषक्।

भड़भूँजा, स पु (हिं भाड़ भूनना) दे 'भठियारा' (२)।

भड़भूजी,-जिन, स स्त्री (हिं भड़भूजा) दे 'भठियारिन' (२)।

भड़ुआ, स पु, (हि भाँड) भगाजीविन्, वेश्याचार्य, कुट्टारिन्, विट।

भड्डर, स पु (स भद्र>) क्षुद्रब्राह्मणभेद।

भणित, वि (स) उक्त, कथित, व्याहृत।

भतीजा, स पु (स भ्रातृज) भ्रातृव्य, भ्रात्री(त्रे)य, भ्रातृ पुत्र।

भतीजी, स स्त्री (हिं भतीजा) भ्रातृजा, भ्रातृव्या भ्रात्रीया, भ्रातृ पुत्री, भ्रात्रेयी।

भत्ता, स पु (स भक्त>) भक्त, भागव्यय, यात्रावृत्ति (स्त्री), यात्रिकम्।

भद्भद, वि (अनु) अतिस्थूल २ कुदर्शन।

भद्दा, वि (अनु भद) वक्राकार, कुदर्शन, कुरूप, विषमाग २ नैपुण्य-दाक्ष्य शून्य ३ अश्लील, अवाच्य।

भद्र¹, वि (स) सभ्य, शिष्ट, सुशिक्षित, श्रेष्ठ, गुणिन्, प्रशस्त, साधु, सुवृत्त, सुशील २ मगल, कल्याण, शुभ ३ उचित, उपयुक्त। सं पु (स न) कल्याण, क्षेम, मगल, कुशल, हित २ चदन ३ गजजातिभेद ४ सुवर्ण ५ समृद्धि (स्त्री)।

भद्र², स पु (स भद्राकरण) केशकूर्चश्मश्रु मुडन, मुण्डनम्।

भद्रता, स स्त्री (स) शिष्टता, सभ्यता, सज्जनता, सुशीलता।

भद्रासन, स पु (स न) नृपासन, सिंहासन २ योगासनभेद।

भद्रिका, स स्त्री (सं) भद्रा तिथि (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) २ वृत्तभेद।

भनक, स स्त्री (स भण्>) मद-अस्पष्ट ध्वनि २ जनप्रवाह, किंवदंती।

भनभनाना, क्रि अ (अनु) भणभणायते (ना धा), गुञ्ज (भ्वा प से) झकार कृ।

भनभनाहट, स स्त्री (हिं भनभनाना) भणभणायित, भणभणध्वनि, गुञ्जन, गुञ्जित, झकार।

भप(भ)का, स पु (हिं भाप) बकयन्त्र,-यन्त्रम्।

भभक, स स्त्री (अनु भक) ज्वालोत्थान, शीलोद्गति (स स्त्री) २ दे 'उज्वाल'।

—मारना, क्रि अ, गर्ज् (भ्वा प से)।

भभकना, क्रि अ (हि भभक) प्रज्वल् (भ्वा प से), उद्दीप (दि आ से) २ तापातिशयेन स्फुट् (तु प से)-भन् (कर्म) ३ दे 'उबलना'।

भभकी, स स्त्री (हि भभक) विभीषिका, तर्जना, भर्त्सना, भयदर्शनम्।

—देना, क्रि स, निर्,भर्त्स्, तर्ज् (दोनों चु आ से)।

गीदड़—, पु, कपटविभीषिका, मिथ्या तर्जना।

भभ्भड़, स पु, दे 'भीड़भाड़'।

भभूका, स पु (हिं भभक) ज्वाला, शिखा, अर्चिस (न)।

भभूत, स स्त्री [स विभूति (स्त्री)] गोमयभस्मन् (न) २ वैभवम्।

—रमाना, क्रि स, विभूत्या विग्रह लिप् (तु उ अ)। स पु भस्मगुण्ठनम्।

भयकर, वि (सं) त्रास भीति भय,-जनक-द प्रद अवह, भीम, भीषण, भयानक, रौद्र, भैरव।

भयकरता, सं स्त्री (स) भीमता, भीषणता, भयानकता इ।

भय, स पु (स न) भी भीति (स्त्री),

त्रास, स ,भास , दर र, भिया २ आतंक ३ आशंका ।
—कारक,—प्रद, वि , दे 'भयकर' ।
—खाना या लगना, क्रि अ, भी (जु प अ), वि+त्रस् (भ्वा दि प से), दे 'डरना' ।
—भीत, वि (स) भीत, भयात, सत्रास्त्रस्त, त्रस्त सभय, सदर ।
—हीन, वि (स) निर्भय, अभय, निर्भीक, अकुतोभय दे 'निर्भय' ।
भयातुर, वि (स) दे 'भयभीत' ।
भयानक, वि (स) दे 'भयकर' ।
भयावना, वि (स भय>) दे 'भयकर' ।
भयावह, वि (स) दे 'भयकर' ।
भर, वि (हिं भरना) समस्त, सम्पूर्ण, समग्र, यावत् (ती स्त्री) तावत् (ती स्त्री) । क्रि वि , यावत् (द्वितीया के साथ) आ (पचमी के साथ मात्र, मित, परिमित, परिमाण ।
आयु—, क्रि वि , यावज्जीव, आमृत्यो ।
कोस—, क्रि वि , क्रोश यावत्, क्रोशमात्रम् ।
बालि—, वि , वश, मात्र मित परिमाण ।
शक्ति—, क्रि वि , यथाशक्ति (अ), यावच्छक्य, यावच्छक्ति (अव्य) ।
सेर— वि , सेर-मेटक,मात्र परिमित ।
भरण, स पु (स न) पालन, पोषण, संवर्धन, रक्षण, समालम्बनम् ।
भरणी, स स्त्री (स)नक्षत्रविशेष , यमदेवता २ घोषकन्या । वि स्त्री (स) पालयित्री, पोषिका ।
भरत, स पु (स) कैकेयीपुत्र , रामानुज २ शाकुतलेय , दौष्यन्ति , सर्वदमन ३ ऋषभदेवपुत्र ४ नाट्यशास्त्रकर्ता मुनिविशेष ५ नट ।
—खड, स पु (स न) भारत, भारतवर्ष पं = भारतान्तर्गतकुमारिकाखंडम् ।
भरता¹, स पु (देश) भृन्ताकभृतम् ।
भरता², भरतार, स पु [स भर्तृ (भर्ता)] भर्तृ, पति , धव २ स्वामिन्, प्रभु ।
भरती, स स्त्री (हिं भरना) सैन्यप्रवेश २ प्रवेश ३ भरण, पूरण, पूर्ति (स्त्री) ।
—करना, क्रि स , सैन्य प्रवेशं कृ (प्रे) ।
—डालना, क्रि स , गर्ते पूर् (चु) ।
—होना, क्रि अ , सेनायां प्रविश् (तु प अ) ।

भरना, क्रि स (स भरणं) भृ (भ्वा उ अ), भृ (जु उ अ), पृ (जु प अ), पृ (तु प से) पूर् (चु), व्याप् (स्वा प अ) २ प्रभुपत् (प्रे) ३ ऋणादिक शुध् निस्तॄ (प्रे) ४ सह् (भ्वा आ से) ५ उचित प्रकुप (प्रे) ६ लिप् (तु उ अ) । क्रि अ , भृपृपृ-व्याप्पूर् (कर्म) २ अंत कुप् (दि प से) ३ ऋणादिक शुध् (दि प अ) ४ पुष् (कर्म) । सं पु , भरणं, पूरण, व्यापनं, पूर्ति भृति (स्त्री) २ ऋण ३, उत्कोच ।
भरनी¹, स स्त्री (हिं भरना) मक्षिक ,त(न)सर , सूत्रवेष्टनं २ निर्यक्सूत्रव (पु बहु) ।
भरनी², स स्त्री , दे 'भरणी' ।
भरने योग्य, वि , भर्तव्य, भरणीय, पूरणीय, पूरयितव्य २ शोधनीय (ऋणादि) ।
—वाला, स पु, पूरक , भर्तृ, पूरयितृ २ ऋणादिशोधक ।
भरा हुआ, वि , सं,भृत, पूर्ण, पूरित, आकीर्ण, व्याप्त, निचित, सकुल, आविष्ट ।
भरपूर, वि (हिं भरना+पूरा) स परि, पूर्ण पूरित भृत सकीर्ण व्याप्त, निचित । क्रि वि , पूर्णतया, अशेषेण २ सम्यक् , साधु ।
भरभराना, क्रि अ (अनु) आकुल (वि) भू ।
भरम, स पु (सं भ्रम) भ्रान्ति , मिथ्या मति (दोनों स्त्री), माया, आभास , अविद्या २ भेद , रहस्यम् ३ प्रतिष्ठा, प्रत्यय ।
भरमार, सं स्त्री (हिं भरना+मार) बहुलता, प्रचुरता, विपुलता, भूयिष्ठता ।
भरराना, क्रि अ (अनु०) सहसा पत् (भ्वा प से) २ त्रुट् (दि तथा तु प से) ।
भरवाना, क्रि प्रे , व 'भरना' के प्रे रूप ।
भरसक, क्रि वि [हिं भर+सक (=शक्ति)] यथा शक्ति-बल-सामर्थ्यं, पूर्ण, शक्त्या-बलेन ।
भरा, वि (हिं भरना) पूर्ण, पूरित, (सं) भृत, निचित, आविष्ट ।
—(री) जवानी , पूर्ण-यौवन-तारुण्यम् ।
—(री) थाली में लात मारना, मु , लाभ प्रदजीविकां परित्यज् (भ्वा प अ) ।
—पूरा, वि (हिं भरना+पूरा) संपन्न, समृद्ध २ परिसं,पूर्ण ।
भराई, सं स्त्री (हिं भरना) दे 'भरना' सं पुं २ भरणपूरण, भृति (स्त्री)-वेतनम् ।

भराना, क्रि प्रे, व 'भरना' के प्रे रूप ।
भरी, स स्त्री (हि भर) दशमाषो ।
भरोसा, स पु (हिं भरा+स विश्राम >) विश्राम, प्रत्यय २ आश्रय, अवलंब बल, आधार ३ आशा ।
—करना, क्रि अ, आ-अव-लम्ब् (भ्वा आ से) २ विश्रम (अ प से) ३ आशा बध् (क प अ)।
भर्ता, भर्तार, } स पु (स भर्तृ) दे 'भरता'।
भर्ता, स पु, दे 'भरता'।
भर्ती, स स्त्री, दे 'भरती'।
भर्त्सना, स स्त्री (स) तर्जना, निर्भर्त्सना, अधिक्षेप, निंदा, गर्हा वाग्दंड, उपालम्भ ।
—करना, क्रि स, निभर्त्सन (चु आ से), गर्ह् (भ्वा आ से), निंद् (भ्वा प से)।
भलमनसत, भलमनसाहत, भलमनसी, } स स्त्री (हिं भला+मानुस) भद्रता, सज्जनता, आयत्व, महानुभावता ।
भला, वि (स भद्र) शुभ, वर, शोभन, उत्तम, श्रेष्ठ, गुणवत्, निर्दोष, साधु, प्रशस्त, प्रशस्य, वर सु, सत् २ उत्कृष्ट, विशिष्ट । स पु (स न) कल्याण, कुशल, मगल, हित ३ लाभ, प्राप्ति (स्त्री)। अव्य, भवतु, अस्तु, तावत् ।
—करना, मु, उपकृ, साहाय्य दा (जु उ अ)।
—चगा, वि, नीरोग स्वस्थ, निरामय ।
—बुरा, स पु, दुर्-अश्लील-वचन २ हानि लाभौ ।
—मानुस, स पु, भद्र, आर्य, सज्जन ।
भले ही, मु, काम, (लोट, विधिलिङ् से भी अनुवाद किया जाता है)।
भलाई, स स्त्री (हिं भला) सज्जनता, साधुता, आर्यता २ उपकार, उपकृति (स्त्री), परहितम् ।
भव, स पु (स) ससार, जगत् (न) २ जन्मन् (न), उत्पत्ति (स्त्री) ३ पुनर्जन्मन्दुःख ४ सत्ता ५ शिव ६ मेघ ।
—बधन, स पु (स न) जगज्जाल्म्।
—भजन, स पु (स) ईश्वर, मुक्तिद ।
—भय, स पु (स न) पुनर्जन्मत्रास ।
—मोचन, वि (स) मोक्षद ।
—सागर, स पु (स) ससारपारावार ।
भवदीय, सव (स) भावत्क, युष्मदीय, त्वदीय, तावक यौष्माक [—की (स्त्री)], यौष्माकीण ।
भवन, स पु (स न) अ(आ)गार र, वेश्मन् सद्मन् (न), सदन, निकेतन, मदिर, गृह, गेह २ प्रासाद, नृपमन्दिरम् ।
भवानी, स स्त्री (स) दे 'पार्वती' ।
भवितव्य, वि (स) अवश्य भाविन्, भवनीय ।
भवितव्यता, स स्त्री (स) नियति (स्त्री), भाग्य, भागधेय, दैवम् ।
भविष्णु, वि (स) भविष्य, भविष्यद्, आगामिन्, भूष्णु ।
भविष्य, वि (स) आगामिन्, अनागत, उत्तर, भविष्यत, श्वस्तन [—नी (स्त्री)]। स पु (स न), भविष्यत्-आगामि-भावि उत्तर-अनागत काल समय, अनागत, श्वस्तन, प्रगेतन, भावित्-आगामिन् (न), आयति. (स्त्री), उदर्क ।
भविष्यत्, वि तथा स पु, दे 'भविष्य'।
भविष्य(द्)वक्ता, स पु (स -वक्तृ) भविष्यद् वादिन्, दैवज्ञ ।
भविष्य(द्)वाणी, स स्त्री (स) भावि कथन-सूचन, भविष्यद्वाद ।
भव्य, वि (स) सश्रीक, शोभान्वित, दिव्य, सुप्रभ, शोभन २ शुभ, मगल ३ सत्य, यथार्थ ४ योग्य ५ भाविन् ६ श्रेष्ठ ७ प्रसन्न ८ महत्, गुरु ।
भव्यता, स स्त्री (स) दिव्यता, शोभा, श्री (स्त्री), सुदरता ६ ।
भषक, स पु (स) कुक्कुर, सारमेय ।
भसींड, स स्त्री (देश) मृणाल -लं, शालूक (विमर्द ?), विस, नालीक २ करहाट, कर्कोट, शिफाकद ।
भसुड, स पु, दे 'हाथी'।
भसुर, स पु (हिं ससुर का अनु) ज्येष्ठ, भसुरगन ।
भस्म, स पु [स भस्मन् (न)] भसित, वि, भूति (स्त्री.)।
—करना, क्रि स, भस्म (स्मी)कृ, भस्मसात् कृ २ दे 'जलाना'।

भागना, क्रि अ (स भाज्) पलाय (भ्वा आ से), अपधाव् (भ्वा प से), विद्रु (भ्वा प अ), अप-सृप (भ्वा प अ) २ वृज (चु) परिहृ (भ्वा प अ)। स पु, पलायन अपधावन, अद, यान द्रवा मरण परिहरणम्।

भाग दौड़, स स्त्री, दे 'भगदड़'।

सिर पर पैर रखकर भागना, मु, महाजवेन पलाय या अपधाव।

भागनेवाला, स पु दे 'भगोड़ा'।

भागवत, स पु (स न) श्रीमद्भागवत, महापुराणविशेष २ देवीभागवतपुराण ३ भागवद्भक्त। वि, ऐश्वर, वैष्णव।

भागार्थी, वि (स र्थिन्) भाग-अंशाकांक्ष, इच्छुक-कामिन् अर्थिन्।

भागार्ह, वि (स) अंशिन्, अंशभागिन्, भाग धारिन् भागिन् २ विभज्य, अंशनाम, बन्नीन।

भागिनेय, स पुं (स) दे 'भांजा'।

भागी, स पु (स भागिन्) अंशिन्, अंश नाम, अंशहिन् हारिन् २ दायाद, दायिक, रिक्थिन् अंशक।

भागीरथ, वि (स) भगीरथ-सम्बन्धिन् विषयक-सदृश।

भागीरथी, स स्त्री (स) गंगा, जाह्नवी २ गंगाया बालविशेषविशेष।

भाग्य, स पु (स न) भागधेय, दिष्ट, अदृष्ट, दैव, नियति (स्त्री) विधि, भवितव्यता, विपाक, प्राक्तनम्।

—उदय, स पु (स) पुण्योदय, दैवानुकूलता।

—चक्र, स पु (स न) दैवगति (स्त्री), भाग्यक्रम।

—वश,—वशात्, क्रि वि सौभाग्येन, सुदैवेन दिष्ट्या दैवतः।

—वान्, वि (स वत्) भाग्यशालिन्, महाभाग, सुभग, धन्य, सौभाग्यपुण्य, कृत पुण्यवत्, धीमत्।

—हीन वि (सं) हतदुर्भाग्य, मन्दभाग, दुर्दैव, दैवहतक।

भाजक, वि (स) विभाजक, विभेदक, विच्छेदक, विभाजयितृ २ हर, हार, हारक (गणित) दे 'भागफल' में।

भाजन, स पु (स न) दे 'पात्र'।

भाजित, वि (स) विभक्त, विभाजित २ पृथक्कृत, विश्लेषित।

भाजी, स स्त्री (स) व्यञ्जन, उपसेचन, अन्नोपस्कर २ शाक, हरितक, शिग्रु ३ दे 'भाड़'।

भाज्य, वि (स) भागार्ह, भजनीय। स पु (स न) भागाहीन (गणित) दे 'भागफल' में।

भाट, स पु (स भट्ट) ब्राह्मणस्तुतिविशेष। २ चारण, बंदिन्, वैतालिक, मागध, स्तुति पाठक, मङ्खक ३ चाटुकार ४ राजदूत।

भाटा, स पु (हि भाठना) वेला, परिवर्त अपचय, क्षीयमाण-अपचीयमान, वेला।

ज्वार—, स पु वेलोपचयापचयौ (पु द्वि)।

भाड़, स पु (स भ्राष्ट्र पु) अम्बरीष, भर्जनपात्र।

—झोंकना, मु, क्षुद्रकार्य कृ २ काल व्यर्थ या (प्रे यापयति)।

—में झोंकना वा डालना, मु, नश् (प्रे), क्षि (प्रे क्षपयति) २ त्यज् (भ्वा प अ), उपेक्ष् (भ्वा आ से)।

—में पड़े, मु, नश्यतु, भस्मसात् भवतु।

भाड़ा, स पु (स भाटक-क) भाट, भृति (स्त्री)।

—भाड़े का टट्टू, मु, अस्थिर, अस्थायिन् २ स्वार्थपर, अर्थपर ३ अल्पमूल्य, गुणसार, हीन।

भात, स पु (स भक्त) ओदन-न, भक्त, अन्धस (न) कूर, भिस्सा, दीदिवि २ वर वधूपितृगृहभोजनात्मको वैवाहिकरीतिभेद।

भाथा, स पु (स भस्त्रा) दे 'तरकश'।

भादों, स पु (स भाद्र) भाद्रपद, नभस्य, प्रोष्ठपद।

भाद्र, भाद्रपद, स पु (स) दे 'भादों'।

भाद्रपदी, स स्त्री (स) भाद्री, भाद्र भाद्रपद, पूर्णिमा।

भान, स पु (स) प्रकाश, ज्योतिस् (न) २ ज्ञान ३ आभास, प्रतीति (स्त्री)।

भानजा, स पु, दे 'भांजा'।

भानजी, स स्त्री दे 'भांजी'।

भानमती, स स्त्री (स भानुमती) ऐन्द्रजालिकी, मायिनी।

—का पिटारा, स पु , विषमवस्तुसंग्रह ।
भाना, क्रि अ , दे 'पसन्द आना' ।
भानु, स पुं (स) रवि , सूर्य २ किरण ।
भानुजा, भानुतनया, } स स्त्री (स) यमुना,कालिन्दी, भानुसुता ।
भाप, स स्त्री (स वा(बा)ष्प पुम् ।
—निकलना,क्रि अ , वा(बा)ष्पायते (ना धा) बाष्प उत्क्षिप् (तु प अ)-उद्गॄ (तु प से)।
—देना, क्रि स , वाष्पेण स्विद् (प्रे) या पच् (भ्वा प अ) ।
—बनना या बनाना, उद्वाष्पण, वाष्पी, भवन-करणम् ।
भाभी, स स्त्री (स भ्रातृभार्या) अग्रजपत्नी २ भ्रातृ-जाया-पत्नी, प्रजावती ३ जननी ।
भामा, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या २ नारी ३ क्रुद्धा स्त्री ।
भामिनी, सं स्त्री (स) कोपना स्त्री २ नारी ।
भार, स पु (सं) दे 'बोझ' ।
—वाह, स पु (स) भारिन्, भारिक , भार-हर -हार , वाह(हि)क ।
—उठाना, मु , भारस्कन्धं धारयति ।
—उतरना, मु , उत्तरदायित्व हा (जु प अ) ।
भारत, स पुं (स न) भारतवर्ष पं, भ(भा)रतखंड २ महाभारतग्रन्थ ।
भारती, स स्त्री (स) गिर-वाच् (स्त्री), वाणी २ सरस्वती, शारदा ३ वृत्तिभेद (ना) ।
भारतीय, वि (स) भारत,-देशीय-वर्षीय । सं पु , भारतवासिन् ।
भारी, वि (स रिन्) भारिन्, गुरु, दुर्वह, भारवत् २ कराल, भीषण ३ महत्, वृहत्, विशाल ४ अत्यन्त, अत्यधिक ५ असह्य, दुर्भर, दुधर ६ प्रबल ७ घन, स्थूल ८ शान्त, ग(गं)भीर ।
—पन, स पु , भारवत्त्व, गुरुत्व, गरिमन् ।
—भरकम, वि , अति-गुरु, भारवत् ।
पैर भारी होना, मु , गर्भं धृ (चु) ।
भार्या, स स्त्री (स) दारा (पु बहु), दे 'पत्नी' ।
भाल, सं पु (सं न) ललाट, अलिक, गोधि (पु स्त्री), निट(टि)ल, मूर्धन् (पु), कपाल, मस्त(स्ति)क, मस्तक ।
—चन्द्र,—नेत्र,—लोचन, स. पुं (सं) शिव ।
भाला, सं पु (स भल्ल रूप) दे 'बरछा' ।
—बरदार, स पुं (हि +फा) दे 'बरछैत' ।
भालू, स पु (स भल्लूक) भल्लु(ल्लू)क, ऋक्ष, भल्ल, दुर्नाम, दीर्घकेश, दुश्चर, भालुक, भाल्लूक ।
भाव, स पु (स) अस्तित्व, सत्ता, विद्यमानता २ मानसदशा, विकार-वृत्ति (स्त्री), विचार ३ अभिप्राय , आशय ४ मुखाकृति (स्त्री) ५ जन्मन् (न) आत्मन् (पु) ७ पदार्थ ८ विक्रम् (पु) ९ जन्तु १० ऐश्वर्य, विभूति (स्त्री) ; ११ संविषय, भोग १२ प्रेमन् (पु न), अनुराग १३ सम्भार १४ चेतना १५ स्वभाव १६ गूढेच्छा १७ लीढी रीति (स्त्री) १८ दशा १९ भावना २० विश्वास २१ प्रतिष्ठा २२ वस्तु, गुण धर्म २३ उद्देश्य २४ मूल्य, अर्घ , क्रय , अवक्रय , अर्घमूल्य, प्रमाण २५ श्रद्धा, भक्ति (स्त्री) २६ स्थायि व्यभिचारिसात्विकभावा (काव्य), नायिकादिमालमविकारा २७ हाव , दे 'नखरा' ।
—ताव, स पु , मूल्य, अर्घ ।
—वाचक, स स्त्री (स -वाचिका) संज्ञाभेद (व्या , ३ श्रेणी) ।
—वाच्य, स पु (स न) वाच्यभेद (व्या , ३ स्थल) ।
—उतरना या गिरना, मु , अर्घ अपचि (कर्म), मूल्य ह्रस् (भ्वा प स), मदायते (ना धा) ।
—चढ़ना या बढ़ना, मु मूल्य वृध् (भ्वा आ स), अर्घस्य उपचि (कर्म) ।
भावक, वि (स) उत्पादक, जनक २ कल्याणकारक ३ उत्प्रेरक ४ भावात्मक ।
भावन, सं स्त्री (सं अनुशया) दे 'भावना' (?) ।
भावता, वि (हि भावना = अच्छा लगना) प्रिय, रुचिकर, रोचक । स पु , वल्लभ प्रिय जन , प्रेमपात्रम् ।
भावन, वि (स) उत्पादक, प्रसाधक । स पु (स) निर्मातृ-स्रष्टृ २ सूचिक ३ शिव । (स न) उत्पादनम् २ चिन्तनम् ३ कल्पना ४ अधिवासन ।
भावना, स स्त्री (सं) ध्यान, चिन्ता, विमर्श ,

विचार २ कामना, वासना, इच्छा ३ स्मृत्यनुभवजश्चित्तसंस्कारभेद ४ सामान्य, विचार-कल्पना ५ दे 'पुट' (वैद्यक)। वि, शोभन, प्रिय, रोचक। क्रि अ, दे 'पसंद आना'।

भावनीय, वि (स) चिन्तनीय, कल्पनीय।

भावाभाव, स पु [स-बौ (द्वि)] अस्तित्वानस्तित्वे (न) २ उत्पत्तिविनाशौ ३ जन्ममृत्यू (सब द्वि)।

भावार्थ, स पु (स) तात्पर्यार्थ, आशय, तात्पर्य, भाव २ भावप्रधानटीका।

भावित, वि (स) विचारित, चिंतित।

भावी, वि (सं विन्) दे 'भविष्य' (वि)। स्त्री, दे 'भविष्य' स पु २ दे भवितव्यता'।

भावुक, वि (सं) रसिक, सरस, रसभूयिष्ठ, भावप्रधान २ चिंतक, विचारक।

भाव्य, वि (स) भवितव्य, अवश्यभाविन्।

भाषण, स पु (स न) कथन, वचन, उक्ति (स्त्री) २ व्याख्यान, प्रवचन, उपदेश।

भाषांतर, स पु (स न) अनुवाद।

—कार, स पु (स) अनुवादक।

भाषा, स स्त्री (स) वाणी, वाच् गिर् (स्त्री), भारती, गिरा, उदीरणा २ हिन्दीभाषा ३ वचस् (न), वचन, वाक्य, उक्ति (स्त्री), व्याहार, निगद, शब्द, भाषित, आलाप ४ सरस्वती ५ अभियोगपत्र (अर्जीदावा)।

भाषित, वि (स) कथित, उक्त, उदीरित। स पु (स न) कथन, वार्तालाप।

भाषी, स पु (स विन्), वादिन्, वक्तृ।

भाष्य, स पु (सं न) टीका, व्याख्या, वृत्ति (स्त्री) विवरणम्।

—कार, स पु (स) टीका भाष्यव्याख्या, सूत्र कृत् (पु) २ महाभाष्यकार, पतञ्जलि, गोनर्दीय।

भास, स पु (स) सस्कृतभाषाया महाकवि विशेष २ कान्ति-दीप्ति (स्त्री) ३ कल्पना ४ गोष्ठम् ५ कुक्कुट ६ गृध्र ७ पक्षिन्।

भासना, क्रि अ (स भासन) भास्प्रकाश् (भ्वा आ से) २ प्रतिइ (कर्म) ३ दृश (कर्म)।

भासुर, वि (स) दे 'भास्वर'।

भास्कर, स पु (स) सूर्य २ अग्नि, (स न) सुवर्ण ३ ज्योतिषग्रन्थकारो भास्कराचार्य।

भास्वर, वि (स) द्युति कान्ति दीप्ति-मत्, उज्ज्वल, भासुर, देदीप्यमान, भ्राजमान।

भिंडी, स स्त्री (स भिंडा) भिण्ड भिण्डक, सुशाक, करपर्ण, वृत्तबीज, चतुष्पुट।

भिक्षा, स स्त्री (स) याच्ञा, याचना, अर्थना, २ भिक्षान्न ३ भृत्य, दानम्।

—पात्र, स पु (स न) भिक्षाधान, पात्र भाजनम्।

भिक्षु, स पु (स) परिव्राज, परिव्राजक, श्रमण, (बौद्ध) सन्न्यासिन्, मस्करिन्, प(पा) राशरिन् २ दे 'भिखारी'।

भिक्षुक, सं पु, (स) दे 'भिखारी'।

भिखमंगा, स पु दे 'भिखारी'।

भिखारिन, स स्त्री (हिं भिखारी) भिक्षुकी, भिक्षाकी, भिक्षाचरी।

भिखारी, स पु (हि भीख) भिक्षु, भिक्षुक, भिक्षाक, भिक्षाचर, भिक्षाशिन्, मार्गण, याचक, याचनक, वनीयक, अर्थिन्।

भिगोना, क्रि स (हिं भीगना) क्लिद् (प्रे), उद् (रु प से), आर्द्रीकृ।

भिनवाना, क्रि प्रे, व 'भेजना' प्रे रूप।

भिटनी, स स्त्री (देश) स्तनाग्र, चूचुकम्।

भिड़, स स्त्री (हिं बर्रे?) वरट-टा-टी, दग्न विवा, गधोली, गृहकारिका।

भिड़ना, क्रि अ (अनु भड?) सघट्ट (भ्वा आ से) संघट्-सहन् (कर्म) उप, स्या (अ प अ), समिल (तु प से) ३ कलहायते (ना धा), युध (दि आ अ)।

भिड़ाना, क्रि स, व 'भिड़ना' के प्रे रूप।

भितल्ला, स पु (हिं भीतर+तल) दे 'अस्तर'। वि आन्तर, आभ्यन्तर, दे 'भीतरी'।

भितल्ली, स स्त्री, (हिं भितल्ला) पेषण्या अधस्थ पाषाण।

भित्त, स पु (स न) भाग, अश २ खण्ड, शकल-लम् ३ दे 'भित्ति'।

भित्ति, स स्त्री (स) कुड्य, कुड्य, कुड्यक, भित्तिका २ चित्ति-गृह,-मूलम् ३ चित्राधार ४ भेद, भेद् ५ खण्ड शकल ६ भग्न वस्तु (न) ६ कर, किलन, तृणपूली ७ दोष ८ अवसर।

भिदना, क्रि अ (स भिद्) विध्-व्यध् (कर्म), छिद्रित (वि) भू २ आहन् व्रण् (कर्म)।

भिनकना, भिनभिनाना, } क्रि अ (अनु भिनभिन) भिण भिणायते (ना धा), भिणभिण, रणित निनद नद् (प्रे)।

भिनभिनाहट, स स्त्री (हिं भिनभिनाना) भिणभिणायित, भिणभिण-रणित निनद, चकार, गुञ्जनम्।

भिन्न, वि (स) असंबद्ध, अलग्न, पृथग्भूत, विश्लिष्ट २ अन्य, इतर, अपर। स पु (स न) अपूर्णाङ्क, राशि, भाग।

—भिन्न, वि, अनेक, विभिन्न २ भिन्न-भिन्न, विध।

भिन्नता, स स्त्री (स) भिन्नत्व, पृथक्त्व, भेद, अतरम्।

भिलावाँ, स पु (स भल्लातक) भल्लात, शोथहृद (पु), वीर-तरु वृक्ष, कृमिघ्न, भूतनाशन, स्फोटबीजक, अग्निकृत् (पु)।

भी, अव्य (स अपि) च, अपि च २ अवश्य ३ अधिकम्।

भीख, स स्त्री (स भिक्षा) दे 'भिक्षा' (१ २)।

—मांगना, क्रि स, भिक्ष् (भ्वा आ से), भिक्षा याच (भ्वा आ से)।

भीग(ज)ना, क्रि अ (स अभ्यञ्जन>) क्लिन्नी-आर्द्री भू, उद् (कर्म उद्यते), क्लिद् (दि प वे)।

भीगी बिल्ली होना, मु, भयात् तूष्णीं स्था (भ्वा प अ)।

भीड़, स स्त्री (हिं भिड़ना) जन-समुदाय सम्मर्द-ओघ-व्यूह २ आ द्विपद् (स्त्री)।

—भड़क्का, स पु } सुमहान् जनसम्मर्द
—भाड़, स स्त्री } २।

भीत¹, वि (स) भयात्त, त्रस्त, सभय।

औढ़ैं की प्रीत ज्यों बालू की भीत, मु, * दुर्जनस्य हि सख्यम्।

भीत², स स्त्री, दे 'भित्ति'।

भीतर, क्रि वि (स अभ्यतरे) अंत, मध्ये, अंतरे, दे 'अंदर'। स पु, हृदय, मानस, अन्त करण २ अन्त पुर, अवरोध।

भीतरी, वि (हिं भीतर) आंतर अभ्यन्तर [-री (स्त्री)], अन्तर, अन्तरस्थ, अन्तर्भव २ गुप्त, गूढ, प्रच्छन्न।

भीति, स स्त्री (स) दे 'भय'।

भीम, सं पु (स) युधिष्ठिरानुज, भीमसेन, वृकोदर। वि, दे भयकर २ सुमहत्, अति विशाल।

—के हाथी, मु, अप्रत्यागामि अप्रत्यावर्त्ति, पदार्थ।

भीरु, वि (स) कातर, भयालु, भयशील, भाप(रु)क।

भीरुता, स स्त्री (स) कातर्य, कापुरुषत्व, क्लीवता, त्रस्तता।

भील, स पु (स भिल्ल) म्लेच्छजातिविशेष।

भीलनी, स स्त्री (हिं भील) भिल्ली, भिल्लनारी।

भीषण, वि (स) दे 'भयकर'।

भीषणता, स स्त्री (स) दे 'भयंकरता'।

भीष्म, स पु (स) गांगेय, देवव्रत, शान्तनु पुत्र २ शिव। वि, दे 'भयकर'।

भुक्खड़, वि (हिं भूख) बुभुक्षित, क्षुधार्त २ औदरिक, बहुभोजिन्, अघस, घस्मर, अत्याहारिन् ३ दरिद्र, दीन।

भुक्त, (स) भक्षित, जग्ध २. उपभुक्त, व्यवहृत।

—शेष, वि (स) उच्छिष्ट, जुष्ट।

भुक्ति, स स्त्री (स) भोजन, आहार, भक्ष २ विषयोपभोग, लौकिकसुखम्।

भुखमरा, वि (हिं भूख-मरना) दे 'भुक्खड़' (२, ३)।

भुगतना, क्रि स (स भुक्त>) उप-भुज् (रु आ अ), अनुभू, प्राप् (स्वा प अ) २ सम्-सह् (भ्वा आ से), मृष् (दि प अ, चु) ३ (ऋणादिक) शुध् (दि प अ), अपाकृ (कर्म)। क्रि अ, समाप् (कर्म), पूर् (कर्म), निवृत् (भ्वा आ से) अवसो (कर्म)।

भुगतान, स पु (हिं भुगतना) निष्पत्ति समाप्ति सिद्धि पूर्ति (स्त्री) २ (ऋणादि कस्य) निस्तार, परिशुद्धि, अपनयनम्।

भुगताना, क्रि प्रे व 'भुगतना' क्रि स के प्रे रूप।

भुग्गा, वि मूर्ख, जड़, अज्ञ, निर्बुद्धि।

भुग्न, वि (स) अराल, जिह्म, वक्र, न्युब्ज, आनत(ना)मित।

भुच्च, भुच्चड़, वि (स भूत+हिं चढ़ना) जड़, अज्ञ, मूर्ख, जडमति।

भुजंग, भुजगम } स पु (स) दे 'सर्प'।
भुजगी गिनी, म स्त्री, दे 'सर्पिणी'।
भुज, म पु (स) भुजा, बाहु, दोर्दंड २ (ज्योमेट्री में) भुज, बाहु, पार्श्व।
—दंड, म पु (म) दोर-बाहु-दंड।
—पाश, म पु (म) आलिंगन, परिरंभ।
—बन्ध, म पु, अगद, केयूर, बाहुवलय।
—मूल, म पु (स न) कक्षा, दोर्मूल, खडिक।
भुजना, स पु (हिं भूजना) *भृष्टान्नम्।
भुजा, स स्त्री (म) दे 'भुज'।
भुजिया, म स्त्री (हिं भूजना) *भर्जिया भृष्टशुष्क शाक शिम्बु। स पु क्वथितधान्य २ क्वथितधान्यतडुल।
भुट्टा, म पु (स भृष्ट>) मकायकणिशम्।
भुनना, म पु दे 'भून' (७-९)।
भुनगा, स पु (अनु) (१ २) कीट पतग, भेद।
भुनना, क्रि अ, व 'भूनना' के कर्म रूप २ व 'भुजना' के कर्म रूप।
भुनभुनाना, क्रि अ (अनु) गुणगुणायते (ना धा) अव्यक्त वद (अ प अ)।
भुनवाना, क्रि प्रे, व 'भूनना' के प्रे रूप। २ व 'भुनाना' के प्रे रूप।
भुनाई[1], म स्त्री (हिं भूनना) भर्जन, भृति भाटि (दोनों स्त्री)।
भुनाई[2], स स्त्री (हिं भुनाना) नाणकवि निमयभाटि भृति (दोनों स्त्री)।
भुनाना[1], क्रि प्रे व 'भूनना' के प्रे रूप।
भुनाना[2], क्रि म (सं भजन) अल्पनाण केभ्य बृहन्नाणकानि प्रतिदा (जु उ अ) नाणकानि*भन*भुज् (प्रे) नाणकानि विनिमे (भ्वा आ अ)।
भुरकुस, स पु (अनु भुर>) *चूर्ण, क्षोद।
—निकालना, मु, निर्दय तड् (चु) २ नश घ्वम (प्रे)।
भुरता, म पु (अनु भुर>) दे 'भरता' २ चूर्णित विकृत, पदार्थ।
—करना, मु, आपट्य चूर्ण (चु) भिद् (र प अ)।
भुरभुरा, वि (अनु) भिदुर, मधुर, सुभग २ वालुकानिभ।
भुलक्कड, वि (हिं भूलना) विस्मरणशील, मद अल्प,स्मृति २ प्रमादिन, प्रमत्त।
भुलाना, क्रि प्र व 'भूलना' के प्रे रूप।
भुलावा, म पु (हिं भुलाना) प्र,वचना, प्रतारणा, छल।
—देना, क्रि स, प्रनृ (प्रे), वच (चु)।
भुव, अव्य (म) आकाश, अन्तरिक्ष लोक द्वितीयलोक २ द्वितीयमहाव्या हृति (स्त्री)।
भुवन, स पु (म न) जगत् (न), जगती, सृष्टि (स्त्री), ससार २ जल ३ जन, लोक ४ चतुर्दश-भुवनानि (न बहु) लोका।
त्रि—, म पु (स न) त्रिलोकी, लोकत्रयम्।
भुशुंडि, स पु (म) काकभुशुंडि। (म स्त्री) भुशुडी, अस्त्रभेद।
भुस, म पु, दे 'भूसा'।
भुसी, म स्त्री, दे 'भूसी'।
भूँकना, क्रि अ (अनु) दे 'भौंकना' (१ २)।
भूँचाल, (स भूचाल) मही, भू-कप प्रकप कम्प, क्ष्मायितम्।
भूँजना, क्रि स, दे 'भूनना' (१ २)।
भूँडोल, स पु दे 'भूँचाल'।
भू, म स्त्री (स) धरणी, धरा, दे 'पृथिवी' २ स्थान, स्थलम्।
—कप, स पु (म) दे 'भूँचाल'।
—चाल, —डोल, } दे 'भूँचाल'।
—तल, स पु (म न) धरातल २ पृथिवी।
भूख, स स्त्री (म बुभुक्षा) क्षुधा,क्षुध (स्त्री), जिघत्सा, अशनाया, अशनायित २ आवश्य कता ३ अभिलाष।
—का अभाव, स पु, अरुचि (स्त्री), भक्त उपरान द्वेष।
—प्यास, सं स्त्री, क्षुधापिपासे, क्षुत्तृषे।
भूखों मरना, मु, आहाराभावात् मृ (■ आ अ)-अवमद् (भ्वा प अ)-नश् (दि प वे)।
—लगना, क्रि अ, क्षुध् (दि प अ, चतुर्थी के साथ), बुभु (सन्नन्त, बुभुक्षति ने) क्षुधया अर्दपीड् (कर्म)।

भूखा, वि (हिं भूख) क्षुधा आविष्ट आतुर आर्त अकिन पीड़ित, क्षुधित, जिघत्सु, बुभुक्षु, अन्नार्थिन अदनायित २ इच्छुक ३ दरिद्र।
—नंगा, वि दीन, दरिद्र निधन अकिंचन।
—प्यासा, वि क्षुत्पिपासित क्षुत्तृषार्त।
भूखे प्यासे, मु अनिरन्नपान अन्नपान विना।
भूगर्भ, स पु (स) धरा अन्तर अभ्यन्तर-गर्भ।
—गृह, स पु (स न) भूगेह गृहम्।
—शास्त्र, स पु (स न) भूतत्त्व शास्त्र विद्या विज्ञानम्।
—शास्त्रवेत्ता, स पु (स-तृ) भू-तत्त्वज्ञ, भूगर्भशास्त्रज्ञ।
भूगोल, स प (स) भूमण्डल भुवनकोष २ भूगोल, विद्या शास्त्र, भूपृष्ठविद्या।
—वेत्ता, स पु (स-तृ) भूगोलशास्त्रज्ञ।
भूचक्र, स पु (स न) पृथ्वीपरिधि २ विषुवरेखा ३ अयनवृत्त ४ क्रान्तिवृत्तम्।
भूचर, स पु (स) स्थलचर २ शिव।
भूत, स पु (स न) पृथ्व्यप्तेजोवाय्वाकाश पंचक २ जड़चेतनपदार्थ, चराचरवस्तु (न) ३ प्राणिन्, जीव ४ भूत-अतीत,-काल ५ सत्य ६ क्रियारूपभेद (व्या) ७ रुद्रानुचरा पिशाचा ८ मृतस्य आत्मन् (पु) ९ पिशाच, प्रेत रक्षस् (न) रास्म। वि (स) गत, वि, अतीत २ युक्त ३ सदृश ४ परिणत (सब प्रायः समासान्त मे)।
—उतारना क्रि स, भूतान् निष्कम (प्रे) अपनुद् (तु प अ) -अपसृ (प्रे)।
—काल, स पु (स) पूर्वभूत अतीत काल समय।
—नाथ,
—भावन, } स पु (स) शिव।
—पूर्व, वि (सं) प्राक्तन पूर्वतन, पौर्वक।
—संचार, स पु (स) भूतावेश।
—चढ़ना या सवार होना, मु, अतिनिर्बन्ध अवस्था (स्था अ प) २ अत्यर्थ कुप् (दि प से)।
भूतदयविद्या, स स्त्री (स) दे 'भूतमावचा'।
भूतात्मा, स पु (सं-त्मन्) जीवात्मन्, देहिन् २ शरीर ३ परमेश्वर ४ विष्णु ५ शिव।
भूतानुकंपा, स स्त्री (स) जीव भूत प्राणि, दया कृपा अनुकम्पा।
भूताविष्ट, वि (स) पिशाच भूत, ग्रस्त पीड़ित-आक्रान्त।
भूतावेश, स पु (स) भूत-सवार क्रान्ति (स्त्री), पिशाचावेश।
भूनि(त)नी, स स्त्री (हि भूत) शाकिनी, डाकिनी, राक्षसी, पिशाची चिता।
भूदेव, स पु (स) ब्राह्मण भूसुर।
भूधर, स पु (स) गिरि, पर्वत।
भूनना, क्रि स (स भर्जन>) भृज् (भ्वा आ से), भ्रस्ज् (तु उ अ), ईषत्पाक प्लुष (भ्वा प से) शुष (प्रे)।
भूप, स पु (स) भूपति, भूपाल, नृप, राजन् (पु)।
भूपति,
भूपाल, } स पु (स) नृप, दे 'राजा'।
भूभल, स स्त्री (स भू + हि बल्ना) उष्ण, असित भस्मन् (न) -बालुका।
भूमंडल, स पु (स न) पृथिवी, धरा, धरिणी।
भूमिका, सं स्त्री (स) प्रस्तावना उपोद्घात, अवतरणिका, आमुख, मुखबंध २ वेशान्तर परिग्रह।
भूमि, स स्त्री (स) धरा, धरित्री, दे. 'पृथिवी'।
—प, वि (स) भूमिजात।
—जा, स स्त्री (सं) जानकी, सीता।
—पुत्र, सं पु (स) मङ्गलग्रह, भूमुत।
—सुता, सं स्त्री (सं) सीता वैदेही।
भूय, अव्य (सं भूयस्) पुन, पुनरपि।
भूरा, वि (स बभ्रु) भूमि सदृश वर्ण रंग २ कपिल, पिंग, पिंगल। सं प १-२ वत् पिंगल-वर्ण-रंग ३ शर्करा, सिता।
भूरि, वि (स) अधिक, बहु प्रचुर २ महत्, गुरु।
भूल, सं स्त्री (हिं भूलना) विस्मरणं विस्मृति (स्त्री) २ दोष अपराध ३ अशुद्धि (स्त्री), स्खलित स्खलनं २ मोह, भ्रम।

—चूक, स स्त्री, प्रमाद, अपराध, त्रुटि (स्त्री), स्खलितम्।
—भुलैयाँ, स स्त्री, सुगहनस्थान, आनिचक्र २ संशय-संदेह, असमंजस।
भूलना, क्रि स (प्रा भुल्लइ) विस्मृ (भ्वा प अ) २ स्खल् (भ्वा प से), प्रमद् (दि प से) ३ त्यज (भ्वा प अ), हा (जु प अ)। क्रि अ, विस्मृ (कर्म) २ भ्रम-नश् (दि प से), च्यु (भ्वा आ अ) ३ गर्वित अवलिप्त (वि) भू ४ मग्न (भ्वा आ ने), स्निह् (दि प से, सप्तमी के साथ)। स पुं, विस्मरण, विस्मृति (स्त्री) २ प्रमाद, स्खलित ३ भ्रंश, नाश।
भूलने योग्य, वि, विस्मर्तव्य, विस्मरणीय।
भूलनेवाला, स पु, दे 'भुलक्कड़'।
भूला भटका, वि, पथ-मार्ग, भ्रष्ट।
भूला हुआ, वि, विस्मृत, स्मृतिपथच्युत अचेत।
भूलोक, स पु (स) मर्त्यलोक, भूमि (स्त्री)।
भूशायी, वि (स-यिन्) धराशायिन्, मृत, २ भूमिशयन ३ भूगो पतित।
भूषण, स पु (स न.) आभरण, अलंकार, अ-वि, भूषण, दे 'गहना'।
भूषणीय, वि (स) भूष्य, अलंकार्य, मडनीय।
भूषा, स स्त्री (स) अलंक्रिया, परिष्कार क्रिया, प्रसाधन, नेपथ्यम्।
भूषित, वि (स) अलंकृत, परिष्कृत, प्रसाधित, मंडित।
भूसा, स पु (स तुस>) पलाल न, यवस, धान्यतृण, पत्र।
भूसी, स स्त्री (हिं भूसा) दे 'भूसा' २ तुष, बुस, तुषम, कडंगर, धान्यत्वच (स्त्री)।
भूसुर, स पु (स) विप्र, ब्राह्मण।
भृंग, स पु (स) भ्रमर, षट्पद २ कीटभेद।
—राज, स पुं (स) पक्षिभेद २ केशराज, भृंगराज, मार्कव, केशरंजन।
भृकुटी, स स्त्री (स) दे 'भौंह'।
भृगु, स पु (स) मुनिविशेष २ परशुराम।
—नाथ, स पु (स) परशुराम भृगुराम।
भृत, वि (स) पूरित, पूर्ण, निचित २ पालित, पोषित।
भृतक, स पु (स) वैतनिक, कर्मकर।
भृतकाध्यापक, स पु (स) सवेतन शिक्षक।
भृति, स स्त्री (स) वेतन, भृत्या २ कमाया, तुलिका, भरण, भर्मण्या ३ मूल्य ४ पूरण, भरण ५ पालन ६ वैतनिकता।
भृत्य, स पु (स) सेवक, दे 'नौकर'।
भृत्या, स स्त्री (स) सेविका, दासी २ दे 'भृति'।
भृशं, क्रि वि (स भृश) अत्यंत, अत्यधिकम्।
भेंगा, वि (देश) केकर, केदर, टेर, गर, वलिर।
—पन, स पु, तिर्यग्दृष्टि (स्त्री), टेरता इ।
भेंट, स स्त्री (स भिद्>) स(समा)गम, सम्मिलन, साक्षात्कार २ उपहार, उपायन, प्राभृत-तक, प्रदेशनम्।
—करना, क्रि स, सम्मिल् (तु प से), अभि-सम्-उपेभू, सम् इ (अ प अ) २ उत्सृज (तु प अ), उपह (भ्वा प अ), उपढौक (प्रे), ऋ (प्रे अर्पयति)।
भेक, स पु (स) दे 'मेंढक'।
भेख, स पु दे 'वेष'।
भेजना, क्रि स (स व्रजन>) रा, प्रेष (प्रे), प्रहि (स्वा प अ), प्रस्था (प्रे), विसृज् (तु प अ), स, प्रेर् (प्रे)। स पु, स, प्रेषण प्रेरण, विसर्जन, प्रस्थापन, प्रहिति (स्त्री)।
भेजने योग्य, वि, प्रेषणीय, प्रस्थाप्य, प्रहयणीय।
भेजनेवाला, स पु, प्रेषक, प्रहेतृ।
भेजा हुआ, वि, प्रेषित, विसृष्ट, प्रहित।
भे(भि)जवाना, क्रि प्रे, व 'भेजना' का प्रे रूप।
भेजा, स पु (देश) दे 'मगज'।
भेड़, स स्त्री (स मेण्ड >) मेषी, एडका, अविला, उरणी, उरा, कुररी, गाडरिका, जालकिनी (स्त्री), रुजा (पु, दे 'भेड़') २ मूर्ख, मूढधी, ऋजु।
भेडना, क्रि स, दे 'बंद करना'।
भेड़ा, स पु (स मेड) अवि, उरण, उरभ्र, ऊर्णायु, एडक, मेढ़, हुड, रो(लो)मश, मेढु, मेण्ढक।
भेड़िया, स पु (हिं भेड) वृक, कोक, ईहामृग।
—धसान, स पु, अंध-अनुकरण-अनुसरण-अनुवर्तनम्।

भेड़ी, स स्त्री , दे 'भेड़' ।

भेद, स पु (स) छेद दे 'भेदन' २ शत्रुवशीकरणोपायभेद, उपजाप ३ रहस्य, गूढाशय ४ अन्तर, विशेष ५ प्रकार , जाति (स्त्री) ।

—खोलना, क्रि स , रहस्य विवृ (स्वा उ भे) ।

—पाना, क्रि स , गुह्य बुध (भ्वा प से) ।

—बुद्धि, स स्त्री (स) विश्लेष , विच्छेद , ऐक्याभाव ।

—भाव, स पु (स) अन्तर, विशेष ।

—लेना, क्रि स , गोप्य ज्ञा (मन्त्रम जिज्ञासते) ।

भेदक, वि (स) भेत्तृ छेत्तृ २ रेचक ।

भेदन, स पु (स न) विदारण, छेदनं, वेधन व्यध भन, त्रोटनम् । वि , भेदक २ रेचक ।

भेदिया, } स पु (सं भेद >) दे 'जासूस'
भेदी,[1] } २ रहस्यविद् (पु) ।

भेदी[2], वि (स भेदिन्) छेदक, विदारक ।

भेद्य, वि (स) छेद्य, विदारणीय ।

—रोग, स पु (स) शल्यचिकित्स्यो रोग ।

भेरी, स स्त्री (स) भेरि (स्त्री), दुन्दुभि , डिंडिम , पटह , ढक्का ।

भेली, स स्त्री (देश) गुडपिंड -ण्डम् ।

भेष, स पु , दे 'वेष' ।

भेषज, स पु (स न) औषधं, अगद , भैषज्यम् ।

भेस, स पु , दे 'वेष' ।

भैंस, स स्त्री (स महिषी) मन्दगमना, महाक्षीरा पयस्विनी कलुषा ।

भैंसा, स पु (स महिष) अश्वारि कलुष , कासर कृष्णशृङ्ग , गद्गदस्वर , नर इ)१ , यमरथ लुलाप (य), वीरस्कन्ध , सैरिभ , हेरम्ब ।

भैया, स पु , दे 'भाई' ।

भैरव, स पु (स) शंकर , शिव २ शिवगणभेद ३ रागभेद । वि , भीम, भीषण, भयङ्कर ।

भैरवी, स स्त्री (स) चामुण्डा, देवीविशेष २ रागिणीभेद ।

भैरो, स पु , दे 'भैरव' ।

भोंकना, क्रि स (अनु भक) सहसा शस्त्राग्रं निविश (प्रे), व्यध (दि प अ) २ अकस्मात् आहन् (अ प अ) ।

भोंडा, वि , दे 'भद्दा' ।

भोंदू, वि दे , बुद्धू' ।

भोंपा, स पु (अनु भों) दे 'भोंपू' २ मूर्ख , जड ।

भोंपू, स पु (अनु भों) काहल -ला, मुखवाद्यभेद ।

भो, अ० (स) हे, अरे, अयि ।

भोक्तव्य, वि (स) दे० 'भोग्य' ।

भोक्ता, वि (स भोक्तृ) खादक, भक्षक २ विलासिन्, विषयिन् ३ प्र-उप -योक्तृ । स पु , पति ।

भोग, स पु (स) सुख दु खादीनामनुभव २ सुख ३ दु ख ४ रति (स्त्री), सभोग ५ सर्पफण फणा ६ सर्प ७ धन ८ गृह ९ भक्षण १० शरीर ११ परिमाण १२ विपाक , कर्मफल १३ भुक्ति (स्त्री) (कृष्टा) १४ नैवेद्य १५ भाटक कम् ।

—लगाना, क्रि स , देवाय नैवेद्य ऋ (प्रे अर्पयति) २ भक्ष् (चु) ।

—विलास, स पु (स) आमोदप्रमोदा (पु बहु), सुख हर्ष ।

भोगना, क्रि स (स भोग >) दे 'भुगतना' (१ २) ।

भोगी, वि (सं भोगिन्) भोग-विषय,-आसक्त लम्पट, विलासिन् २ भक्षक ।

भोग्य, वि (स) उपयोक्तव्य, उपयोगिन् २ भोगार्ह, उपभोक्तव्य ३ भक्ष्य । सं पु (स न) धनं २ धान्यम् ।

भोज[1], [redacted] पु (स) धारानगरस्य नृपविशेष ।

भोज[2], स पु ([redacted] भोजन) भक्ष्य, आहार २ सहभोजन , भोजनं सग्धि (स्त्री) ।

भोजन, स पु (स न) भक्षण, खादन, अशन, आस्वादन २ खाद्य, भोज्यं, भक्ष्यम् ।

—करना, क्रि स , भुज् (रु आ अ), भक्ष (चु) ।

—भट्ट, सं पु (स भोजनभट) अत्याहारिन्, अमर , घस्मर ।

—शाला, स स्त्री (सं) भोजन आलय आगार (र) २ पाकशाला महानस -सम् ।

भोजनाच्छादन, स पु (स न) अन्नवस्त्र, अशनवसनम् ।

भोजपत्र, सं पु (सं) भूर्जवृक्ष , बहुलवल्कल , छत्रपत्र , मृदु बहु,-त्वच् (पुं) ।

भोज्य, वि (स) भक्ष्य, खाद्य, अभ्यवहार्य । स पु , भक्ष्यपदार्थ ।

भोर, स पु (स विभावरी>) उषा, उषस (स्त्री) कि प्र, भात, विहान नम् ।

भोला, वि (हि भूलना) सरल, ऋजु, निष्क पट, निश्छल २ मूर्ख, जड ।

—नाथ, स पु (हि + स) शिव ।

—पन, स पु आर्जव, सरलता, निर्व्याजता २ मौर्ख्य, अज्ञता ।

—भाला, वि , निष्कपट, सरल, ऋजु ।

भौं, स स्त्री , दे 'भौंह' ।

भौंकना, क्रि अ (अनु भौं भौं) बुक्क (भ्वा प से, चु), भष् (भ्वा प से) २ प्र,जल्प् (भ्वा प से)। स पु , बुक्कन, भषण २ नल्प पनम् ।

भौंतुवा, (हि भौना=घूमना) तैलिक-तैलकार, वृष वृषभ । २ कीटभेद ३ हस्तरोगभेद ।

भौंर, स पु (स भ्रमर) दे 'भ्रमर' २ जल्प वर्त , भ्रमि (स्त्री) ।

भौंरा, स पु (स भ्रमर) दे 'भ्रमर' २ भ्रमरक-क, क्रीडनकभेद ३ भू ,गेह गृहम् ।

भौंरी, स स्त्री (स भ्रमरी) षट्पदी, मधुकरी २ घोटकादिशरीरस्थ रोम, चक्र-मडल-वर्तुल ३ वैवाहिक,-परिक्रम प्रदक्षिणा ४ आवर्त , नल्गुल्म ।

भौंह, स स्त्री [स भ्रू (स्त्री)] चिल्लिका, भ्रूलता, नयनोर्ध्ववर्ति रोमराजी ।

—चढ़ाना या तानना, क्रु , कुप (दि प से), क्रुध (दि प अ) २ भ्रु(भ्रू)कुटीं बध् (क्र प अ)-रच् (चु) ।

भौगोलिक, वि (स) भूगोल, विषयक सम्ब न्धिन् ।

भौंचक, भौचक्का, वि (स भयचकित>) विस्मयापन्न, विस्मित, भयाध्मात, भयाभिभूत, स्तम्भित ।

भौजाई, भौजी, स स्त्री (स भ्रातृजाया) दे 'भाभी (२) ।

भौत, वि (स) भौतिक, भूतनिर्मित २ पैशा चिक ३ भूताविष्ट । (स पु) भूतपूजक २ भूतयज्ञ ।

भौतिक, वि (स) भूतात्मक, भूतमय, आधि भौतिक, भौतिक २ पार्थिव ३ शारीरिक, दैहिक, दैव्य ।

भौम, वि (सं) पार्थिव, भौमिक २ भूमिज । स पु , मगलग्रह , कुज ।

—वार, स पु (स) मंगलवासर ।

भौमिक, वि , दे 'भौम' वि । स पु , क्षेत्र, पति -स्वामिन् ।

भौमी, स स्त्री (स) जानकी, सीता, वैदेही।

भ्रंश, स पु (स) अध अव,-पतन पात २ वि,नाश = ध्वस ३ पलायनम् ।

भ्रंशित, वि (स) अव पातित २ वचित ।

भ्रम, स पु (स) भ्रान्ति (स्त्री), माया, मिथ्या,-मति (स्त्री) ज्ञान, आभास , अविद्या २ सशय सदेह ३ मूर्च्छाभेद ४ मूर्च्छा ५ कुलालचक्र ६ भ्रमण ७ भ्रमद्वस्तु (न) ।

भ्रमण, स पु (स न) पर्यटन, विचरण, परिभ्रमण २ गतागत ३ यात्रा ।

—करना, क्रि अ , पर्यट विचर (भ्वा प से), परिक्रम् (भ्वा दि प से) ।

भ्रमात्मक, वि (स) भ्रमोत्पादक २ सदिग्ध ।

भ्रमर, स पु (स) षट्पद , द्विरेफ , मधु, कर प -लिह् (पु), अलि , अलिन्, भृङ्ग , शिलीमुख , पुष्पधय , चचरीक २ कामुक ।

भ्रमरी, स स्त्री (स) षट्पदी, मधुकरी, शिलीमुखी २ जतुकालता, पुत्रदात्री ३ पार्वती ४ मृगीरोग , भ्रामरम् ।

भ्रमी, वि (स -मिन्) भ्रान्त, भ्रमविशिष्ट, मिथ्याज्ञानिन् २ चकित, विस्मित ३ शङ्का शील, साशङ्क ।

भ्रष्ट, वि (स) अध -अव,-पतित, अव ,गलित स्रस्त, च्युत २ विकृत,दूषित, सदोष ३ दुर्वृत्त,-दुराचार रिन् ।

—करना, क्रि स, भ्रश्-दुष्-आधृष् (प्रे) च्यु (प्रे) २ सतीत्व नश (प्रे) ३ मलिनी कलुषीकृ ।

—होना, क्रि अ , भ्रश् (दि प से), भ्रश (भ्वा आ से) २ दुष (दि प अ), विकार आपद् (दि आ अ) ३ मलिनी कलुषी भू ४ क्षीणवृत्त (वि) भू ।

भ्रष्टा, सं स्त्री (स) कुलटा, पुंश्चली ।

भ्रात, वि (स) भ्रान्ति भ्रम, विशिष्ट २ व्याकुल, विह्वल ३ उन्मत्त ४ पथभ्रष्ट ५ आवर्तित, चक्रवत् चालित ।

म

म, देवनागरीवर्णमालायाः पञ्चविंशो व्यञ्जनवर्णः, मकारः ।

मगता, स पु (हि माँगना) दे 'भिखारी'।

मगन, मगनी, } स स्त्री (हि माँगना) वाग्दान, विवाहनिश्चय । २ याच्ञा, याचना ।

मङ्गल, स पु (स न) कल्याण, कुशल, भद्र, हित, क्षेम, भव्य, प्रशस्त, अरिष्ट, शिव, भद्र २ कार्यसिद्धि (स्त्री) ३ ग्रहविशेष, कुज, भौम, अङ्गारक, महीसुत, वक्र, लोहिताङ्ग, आवनेय ४ मङ्गलवार । वि, (स) शुभ, शिव, भद्र, मङ्गल, हित-शुभ-कर, माङ्गलिक ।

—काम, वि (स) शुभ-हित-काम, -चिन्तक-इच्छुक-कामिन् ।

—कामना, स स्त्री (सं) हितचिन्तनम्, शुभ, इच्छा-कामना ।

—कारक, वि (स) कल्याण-भद्र-, -कारिन् भद्र दे 'मङ्गल' वि ।

—कौम, स पु (स न) दलबोधित मौदेवतलम् ।

—गान, स पु (स) मङ्गल-शुभ- गीत गीति (स्त्री) गायनम् ।

—धार, स पु (सं) मङ्गल-भौम-वासरः ।

—सूत्र, स पु (स) हरिद्रारञ्जितवैवाहिकसूत्रम् ।

मङ्गलाचरण स पु (स न) ग्रन्थारम्भे कल्याणप्रार्थना ।

मङ्गलाचार, स पु (स) माङ्गलिक-आचार कृत्य २ आशीर्वाद ३ स्तव ।

मङ्गलामुखी, स स्त्री (स) दे 'वेश्या'।

मङ्गला, वि (सं मार्ग) अनावृत्ति-आर्य-वर (फलित ज्योतिष)।

मँगवाना, क्रि प्रे, व 'माँगना' के प्रे रूप।

मगोतर, वि (हि माँगनी) वाग्दत्त।

मच, मचक, स पु (स) खट्वा २ पीठिका ३ उच्चासन, इन्द्रकोश-मण्डप, वेदिका, ५ रङ्ग, रङ्ग-भूमि (स्त्री) पीठ ६ मच मण्डप ।

मंजन, स पु (स न) दन्तधावन-दन्त-चूर्ण २ (देश) दन्तशुद्धि, दन्तोदलेप ।

मँजना, क्रि अ, व 'माँजना' के कर्म के रूप।

मँजवाना, क्रि प्रे, व 'माँजना' के प्रे रूप।

मञ्जरी, स स्त्री (स) मञ्जरि-वल्लरी-रि (सब स्त्री), मञ्जि-वि (स्त्री) मञ्जर, वल्लर, वल्लि (स्त्री) २ पल्लव, किसलय ३ लता ४ मुक्ता।

मजिल, सं स्त्री (अ) दे 'पड़ाव' २ कोष्ठ, भूमि (उ दोमंजिला = द्विभूमिक गृह) ३ लक्ष्यस्थिति, स्थानम्।

मञ्जीर,रा, स पु (स पु न) नूपुरम् २ मञ्जीरभेद।

मञ्जु, मञ्जुल, } वि (स) सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ, मनोरम, चारु, रम्य, रुचिर, कम्र, हृद्य।

मञ्जूर, वि (अ) दे 'स्वीकृत'।

मञ्जूरी, स स्त्री (अ मञ्जूर) स्वीकृति (स्त्री)।

मञ्जूषा, सं स्त्री (सं) पिटक, दे 'पिटारी'।

मँझला, वि पुं, दे 'मध्यम'।

मँझा, स पु 'माँझा'।

मँडरार, क्रि वि, दे 'मँडराना'।

मड, स पु (सं) दे 'माँड'।

मडन, स पु (स न) अलङ्करण, परिष्करण, भूषण प्रसाधन २ युक्तिपूर्ण वचन समर्थन, प्रतिपादन, प्रमाणपुरस्सरस्थापनम्।

मदर, स पु (स पु न) विलक्षण, उत्ताव, चरचर आतुर २ मन्दर,

विश्रमगृह ३ (मम्करविन्र) शाल, शाच्छादन ? देवान्योध्वभाग ।

मडराना, क्रि अ, दे 'मँडलाना'।

मडल, स पु (स न) वृत्त, वतुल, चक्र वलय २ गोलक ३ परिवेश, ४ परिधि, उपसूयक ४ निनिज, दिक, चक्रवाल, दिगन्त ५ द्वादशराजक ६ समाज, समुदाय ७ व्यूहभेद ८ चक्र, दे 'पहिया' ९ ऋग्वेद परिच्छेद १० गोलचिह्न ११ ग्रह,-कक्षा-मार्ग १२ भूप्रदेश ।

मडलाकार, वि (स) गोल, वतुल, चक्राकार वृत्त।

मँडलाना, क्रि अ (स मडल>) चक्राकार उड्डी (भ्वा दि आ से) अथवा खे चर् (भ्वा प से) २ परि,-भ्रम्,-अट्,-क्रम् (भ्वा प से)। स पु, चक्रवत् उड्डयन, परि, क्रमण भ्रमणम् ।

मडली,[1] स स्त्री (स) समाज, सभा, समिति (स्त्री), गोष्ठी २ सघ, समुदाय ३ दूर्वा ४ गुडूची।

मडली,[2] स पु (स -लिन्) सर्प २ सर्पभेद ३ सूर्य ४ विडाल ५ मडलाधिप ६ वट, न्यग्रोध ।

मँडवा, स पु (स मडप, दे)।

मडा, स स्त्री (स) सुरा, मद्य २ दे 'आँवला'।

मडित, वि (स) भूषित, अलकृत, परिष्कृत।

मडी, स स्त्री (स मडप>) महाहट्ट, पण्यागार, वृहद् आपण -विपणी ।

मडूक, स पु (स) दे 'मेढक'।

मडूर, स पु (स पु न) लौहमल, सिंघाण, सिंघानम् ।

मतव्य, स पु (स) विचार, मतम्। वि, स्वीकार्य, विधमनीय, अभ्युपगतव्य २ मन नीय, मन्तव्य ।

मत्र, स पु (स) वेदवाक्य २ वेदाना सहिताभाग ३ मत्रणा, परामर्श, विचार ४ गोप्य, रहस्य, गुप्त ५ अभिचारतत्र (तत्र)।

यत्र—, स पु, दे 'जादू टोना'।

—कार, स पु (स) मत्र,-रचयितृ-कर्तृ-द्रष्ट।

—गृह, स पु (स न) मत्रणाभवनम्।

—विद्या, स स्त्री, तत्र, तत्रविद्या।

मत्रणा, स स्त्री (स) परामर्श, विचारणा, सम्मति (स्त्री) २ उपदेश, अनुशासनम्।

मत्रित्व, स पु (स न) साचिव्य, मत्रिता, अमात्यत्व, मत्रि-सचिव,-कार्य-पदम्।

मत्री, स पु (स मत्रिन्) अमात्य, सचिव, धी सचिव -सख, सान्दविकृ, राज, अमात्य -सचिव ।

प्रधान—, स पु (स त्रिन्) मुख्य-महा, मत्रिन्, प्रधानामात्य, महामात्र ।

मथन, स पु (स न) मथन, विलोडन, २ अनुसधान, अवगाहन, निरूपण ३ दे 'मथनी'।

मथर, वि (स) मद, अल्प २ जड, मदमति ३ स्थूल, भारवत् ४ अधम। स पु (स) दे 'मथनी' २ ज्वरभेद।

मद, वि (स) अलस, तद्रालु, कार्यविमुख, उद्योगशून्य २ मथर ३ शिथिल ४ मूर्ख ५ दुष्ट।

—बुद्धि, मति, वि (स) मूढ, मूर्ख, जड बुद्धि।

—भाग्य, वि (स) हतभाग्य, दुर्दैव। स पु (स न) दुर्-दैव-भाग्यम्।

—मद, क्रि वि (स -द) शनै -शनकै (अव्य) मदगत्या, सौम्यतया, गाम्भीर्येण।

मदता, स स्त्री (स) आलस्य २ मथरता ३ क्षीणता।

मदर, स पु (स) मथशैल, पर्वतविशेष २ स्वर्ग ३ मुकुर। वि, मद, मथर।

मँदरा, वि, दे 'बौना'।

मदा, वि (स मद) मथर, बहल २ शिथिल ३ अल्प,-अर्धमूल्य, सुलभ ४ निकृष्ट, हीन ५ विकृत, भग्न।

मदाकिनी, स स्त्री (स) स्वर्गनदी, गगा, स्वर्णदी, सुरदीर्घिका।

मदाक्रान्ता, स स्त्री (स) वर्णवृत्तभेद।

मदाग्नि, स स्त्री (स पु) अजीर्ण, अपचन अपाक, अग्निमाद्यम्।

मदार, स पु (स) स्वर्वृक्षविशेष २ अर्क वृक्ष ३ मदरपर्वत ४ गज ५ स्वर्ग ६ दे 'धतूरा'।

मदिर, स पु (स न), देवायतन, देव,-गृह भवन-निकेतन-आलय २ गृह, गेह, सदन् वेश्मन (न) ३ आ-नि,-वास, वासस्थानम्।

मदी, स स्त्री (स मद>) कार्पण्य, पण्यसु लभता, मूल्यापकर्ष ।

मद्र, म [illegible] (स) गभीरध्वनि (पु) (सगान) २ मृदंगर । वि, मनोहर २ प्रसन्न ३ गभीर ४ मद गभीर (शब्दादि)।

मशा, स स्त्री (अ) दे 'मसा'।

मसब, स पु (अ) पद, पदवी, स्थान २ कर्तव्य ३ अधिकार।

मन्ना, स स्त्री (अ मशा) इच्छा, कामना २ मकसद ३ आशय।

मसूख, वि (अ) विलुप्त, अपसृष्ट, निरस्त, निवर्तित, गलित।

मसूखी, स स्त्री (अ मसूख) विलोप, निराम निवर्तन, खंडनम्।

मसूबा, स पु (फा) सङ्कल्प, विचार २ युक्ति (स्त्री), उपाय।

—बाँधना, मु, निश्चि (स्वा उ अ), सङ्कल्प (प्रे) २ उपाय चिन्त् (चु)।

मई, सं स्त्री (अ मे) आंग्लवर्षस्य पञ्चमो मास, वैशाखज्येष्ठम्।

मकद, म स्त्री (म मदाय) कठिन।

मकड़ा, सं पु (स मकरक >) बृहल्लूता।

मकड़ी, स स्त्री (हि मकड़ा) लूता, तन्तु-वाय-नाभ, ऊर्णनाभ, मर्कटक, जालिक कोषकार अष्टापद।

—का जाला, म पु, मर्कटजालम्।

मकतब, स पु (अ) पाठशाला।

मकतबा, म पु (अ) पुस्तकालय २ ग्रन्थविपणि (स्त्री)।

मकदूर, म [illegible] (अ) सामर्थ्य, शक्ति (स्त्री)।

मकबालीन, स पु (अ) दे 'चुम्बर'।

मकबरा, सं पु (अ) समाधि (पु), *मृतकमन्दिरम्।

मकबूजा, वि (अ) अधिकृत, हस्तगत।

मकबूल, वि (अ) स्वीकृत मत २ प्रिय।

मकरन्द, सं पु ([illegible]) मरन्द मकरन्द, पुष्प-रस सार स्वेद निर्यास निर्यासक, मधु (न), पुष्पद्रव २ किंजल्क विजल्क ३ कुन्दपुष्प।

मकर, म पु (स) नक्र ग्राह, दुर्धार अवहार जन्तु नर २ दशमराशि आकार ३ मासभेद ४ व्यूहभेद ५ दे 'मछली'।

—ध्वज, सं पु (स) मकर-वनु-केतन, कामदेव।

मकर, स पु (फा) कपट, छलम्।

मकरूज़, वि (अ) दे 'ऋणी'।

मकरूह, वि (फा) कलुष, मलीमस २ घृणोत्पादक।

मकसद, स पु (अ) मनःकामना २ अभिप्राय।

मकान, [illegible] पु (फा) अ(आ)गार र, भवन-वेश्मन्-सद्मन् (न), सदन, दे 'घर'।

—किराये पर देना या लेना, कि स, सदन भाटकेन दा अथवा आ-दा (जु आ अ)।

मालिक—, सं पु, गृ, सदन-स्वामिन्, पति।

मकोड़ा, म पु (हि कीड़ा का अनु०) क्षुद्रकीट।

मकोय, स स्त्री (सं काकमाता म विप०) काकमाची चिरा, कुष्ठघ्नी, वायसी, रसायनी, बहुतिक्ता, काका, काकिनी २ काकमाची-फल २ ३ दे 'रसभरी'।

मक्का, स पु, दे मरद।

मक्कार, वि (अ) कपटिन्, छलिन्।

मक्कारी, स स्त्री (अ) कपट, छलम्।

मक्खन, स पु (स म्रक्षण >) नवनीत, मन्थन, नवोद्धृत तक्र-सार, दधि-ज-स्नेह, पीयूष हैयंगवीनम्।

मक्खी, सं स्त्री (स मक्षिका) मक्षिका, माक्षिका, गन्धलोलुपा, भम, पतङ्गिका, वमनीया, पलङ्कषा, नीला, वर्वणा २ मधु मक्षिका ३ *अन्यमक्षिका।

—चूस, सं पु (स कृपण, मितपच, कदर्य)

जीती मक्खी निगलना मु, जानन्नपि पाप कृ।

नाक पर मक्खी न बैठने देना, मु, उपकारं न सह (भ्वा आ से)।

मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना, मु, पापकानि परित्यज्य महापापेषु प्रवृत् (भ्वा आ से)।

मक्खी पर मक्खी मारना, मु मक्षिका स्थाने मक्षिका, निर्विवेकमनुलिपि (स्त्री)।

मक्खी मारना या उड़ाना, मु, उद्योगहीन (वि) स्था (भ्वा प [illegible])।

मक्षिका, सं स्त्री (सं), दे 'मक्खी'।

—मल, सं पु, दे 'मोम'।

मख, सं [illegible] (सं) यज्ञ, क्रतु।

मख़तूल, स पु (स महाधनूल>) कृष्ण, कौशेय-कीटसूत्रम् ।

मख़मल, स स्त्री (अ) *मखमल, श्लक्ष्ण वस्त्रभेद ।

मखमली, वि (अ मखमल) मखमल, मय निर्मित २ श्लक्ष्ण, स्निग्ध ।

मख़ौल, स पु, (दे 'ठट्ठा') ।

मग, स पु, दे 'मार्ग' ।

मग़ज़, स पु (अ मग्न) मस्तिष्क मस्तुलुंगक २ बुद्धि-मति (स्त्री) ३ दे 'गिरी' ।

—चट, स पु (अ + हिं) वाचाल, वाचाट ।

—चट्टी, स स्त्री, वाचालता, प्रजल्प ।

—पच्ची, स स्त्री (अ + हिं) बौद्धिकश्रम ।

—खाना या चाटना, मु वावदूकतया खिद् (प्रे) ।

—खाली करना या पचाना, मु, प्र,जल्प (भ्वा प से) २ मस्तिष्क खिद् श्रायस् (प्रे) ।

मगजी, स स्त्री, (अ मग्ज) चीरीगि (स्त्री), दशा ।

मगध, स पु (स) कीकटदेश, बिहार प्रान्तस्य दक्षिणभाग २ चारण, बन्दिन् ।

मगन, वि, दे 'मग्न' ।

मगर, अव्य (फ़ा) किंतु, पर, परतु ।

मगर, } स पु (स मकर)
मगरमच्छ, } दे 'मकर' (१) २ महा, मत्स्य-मीन ।

मगरिब, स पु (अ) दे 'पश्चिम' ।

—ज़दा, वि, पाश्चात्यसभ्यतया प्रभावित, पश्चिम-आकृष्ट प्रेरित प्रवर्तत ।

मग़रिबी, वि (अ) दे 'पश्चिमी' ।

—तहज़ीब, स्त्री, पाश्चात्यसभ्यता ।

मगरूर, वि (अ) दे 'अभिमानी' ।

मगरूरी, स स्त्री (अ मगरूर) दे 'अभिमान' ।

मग्न, वि (स) बलात् प्रविष्ट, निमज्जनेन, मृत-नष्ट २ लीन, निरत, आसक्त,-पर, परायण ४ मत्त, क्षीव, मदोद्धत ४ प्रसन्न, प्रहृष्ट ।

—होना, क्रि अ, प्र,हृष् (दि प से) २ निरत-लीन-आसक्त (वि) भू ।

मघवा, स पु (स -वन्) इन्द्र, आखण्डल ।

मघा, स स्त्री (सं) नक्षत्रविशेष, मघा (स्त्री बहु भी) २ औषधभेद दे 'पिप्पली' ।

मचक, स स्त्री (हिं मचकना) भार, पीडन २ अस्थिसन्धिपीडा ३ कम्पनम् ।

मचकना, क्रि अ (अनु मच मच>) अस्थिसन्धि व्यथ् (भ्वा आ मे)-पीड् (कर्म) २ भारेण समचमचध्वनि कम्प् (भ्वा आ से), निमिष् (तु प से), निमील् (भ्वा प मे) ।

मचकाना, क्रि स (हिं मचकना) व 'मचकना' के प्रे रूप ।

मचकोड़, स स्त्री (हिं मचकना) सन्धि, व्यावर्तन व्याक्षेप ।

मचना, क्रि अ (अनु मच)प्र-आरभ् (कर्म), प्रवृत् (भ्वा आ से) ।

मचलना, क्रि अ (अनु) निर्बंधेन वद् (भ्वा प से), साग्रह (वि) अवस्था (भ्वा आ से) ।

मचला, वि (हिं मचलना) कपटमूढ, अज्ञलक्षण, व्याजबद्ध ।

मचलाना, क्रि अ (अनु) वम् (सन्नत, विवमिषति), वमनेच्छया पीड् (कर्म) २ दे 'मचलना' ।

मचलापन, स पु (हिं मचलना) कपट मूढता, व्याजबद्धत्वम् ।

मचलाहट, स स्त्री (हिं मचलना) निर्बंध, आग्रह २ विवमिषा, वमनवाञ्छा ।

मचान, स पु (स मच) मचक उच्चासनं, वेदिका, इन्द्रकोष ।

मचाना, क्रि स (हिं मचना) व 'मचना' के प्रे रूप ।

मचिया, स स्त्री (स मच >) मचिका, पीठी, पीठक, क्षुद्रासनम् ।

मच्छ-छ, स पु (स मत्स्य >) महा-बृहद्, मीन-मत्स्य झष ।

—अवतार, स पु, दे 'मत्स्यावतार' ।

मच्छड़ र, स पु (सं मशक) वज्रतुण्ड, मशा, सूच्यास्य, सूक्ष्ममक्षिक, रात्रिजागरद ।

—दानी, सं स्त्री, मश(शक)हरी, चतुष्की, मसरिका, नीशार ।

मच्छर पर तोप लगाना, मु , तुच्छकार्ये बहुयत्न ।

मच्छी, स स्त्री (हिं मच्छ) दे 'मछली' ।

मछंदर, स पु (स मत्स्येन्द्र या बंदर से अनु) कपि वानर २ आखु मूषिक ३ जड, मूढ ४ मिथ्यावेश ५ विदूषक , वैहासिक ६ भिक्षुक ।

मछरायँध, स स्त्री (हिं मछली+स गंध) मत्स्यगंध मीनपूति (स्त्री) ।

मछली, स स्त्री (स मत्स्य) मीन , झष , अण्डज विसार पृथुरोमन् (पु), शकुलिन्, वैसारिण आत्माशिन्, तिमि , जलपिप्पिक । वि चंचल जलचारिन् स्थिरजिह्व , शकुलाक्ष २ मत्स्याकारो भूषणभेद ।

—वाला, स पु , दे 'मछुआ' ।

—की तरह तड़पना, मु , जलहीनमीनवद् व्याकुलीभू ।

मछवा, स पु (हिं मच्छी) मत्स्यधारिनौका २ दे 'मछुआ' ।

मछुआ वा, स पु (हिं मच्छी) मत्स्य, आजीव मत्स्योपजीविन्,मात्स्यिक , धीवर , कैवर्त ।

मज़दूर, स पु (फ़ा) भार हर हार वाहक वाह , भारिक , वोढ्, वाह , वाहक २ कार्मिक, कर्मिन्, श्रमजीविन्, कर्म,-कर -कार ।

मज़दूरी, स स्त्री (फ़ा) भारवहन, श्रम , व्याम २ श्रमण्या, भृति (स्त्री), भृत्या, भर्मण्या, भर्म, पारिश्रमिकम् ।

मजनूँ, स पु (अ) उन्मत्त , उन्मादिन्, वातुल २ रमणी-वल्लभ , कैस ३ प्रणयिन्, प्रेमिन्, कामुक , कामिन् ४ कृशाङ्ग ,क्षीणदेह ।

मज़बूत, वि (अ) दृढ, २ स्थिर ३ बलवत् ।

मज़बूती, स स्त्री (अ मजबूत) दृढता २ स्थिरता ३ बलवत्ता ४ साहसम् ।

मजबूर, वि (अ) दे 'विवश' ।

मजबूरन्, क्रि वि (अ) बलात्, बलेन, हठात् प्रसभ प्रसभम् ।

मजबूरी, स स्त्री (अ मजबूर) विवशता, अगतिकता, अपरिहार्यता ।

मजमा, स पु (अ) जन,-समर्द समुदाय ।

मजमूआ, स पु (अ) समुदाय , संग्रह , समूह ।

मज़मून, स पु (अ) प्रस्ताव , निबंध , लेख २ व्याख्यानादेर्विषय ।

—नवीस, सं पुं , निबन्ध,-कार,-लेखक ।

मज़मूम, वि (अ) निन्दित, दुष्ट २ हीन, वर्गकुल ।

मज़म्मत, स स्त्री (अ) निन्दा, कुत्सा २ भर्त्सना ।

मजरूह, वि (अ) आहत, दे 'घायल' ।

मजलिस, स स्त्री (अ) सभा, समाज , गोष्ठी । मीर—स पु (फ़ा+अ) सभा,-पति अध्यक्ष , प्रधान ।

मजलिसी, वि (अ) सामाजिक ।

मज़हब, स पु (अ) धर्म , सम्प्रदाय ,मतम् ।

मज़हबी, वि (अ) धार्मिक, साम्प्रदायिक । सं पु , खल्पू, शिष्य , शिष्य(सिक्ख), जाति-विशेष ।

मज़ा, स पु (फ़ा) रस,स्वाद , रस २ आनंद , सुखं ३ विनोद , हास्यम् ।

—उड़ाना या लूटना, मु , मुद् (भ्वा आ से), रम् (भ्वा आ अ), नन्द् (भ्वा प से) ।

—दिखाना या चखाना, मु , दण्ड् (चु, दिकर्म) २ प्रतिहिंस् (क प से), मत्स्यफल ।

मजे मे, मु , सानंद, सकुशल, निर्विघ्नम् ।

मज़ाक़, स पु (अ) दे 'ठट्ठा' ।

मज़ार, सं पु (अ) समाधि २ दे 'क़ब्र' ।

मजाल, स स्त्री (अ) सामर्थ्यं, शक्ति स्त्री) ।

म(मे)जिस्ट्रेट, सं पुं (अं) दण्ड,-नायक अध्यक्ष अधिकारिन् ।

म(मे)जिस्ट्रेटी, स स्त्री (अं मेजिस्ट्रेट) दण्डनायक-दण्डाध्यक्ष-पद-कार्ये २ दण्डनायक-सभा ।

मजीठ, सं स्त्री (सं मंजिष्ठा) रक्ता, रोहिणी, रक्तयष्टिका, रागाढ्या, अरुणा, रागाङ्गी, वस्त्र भूषणा, विकसा, जिंगी ।

मजीठी, वि (हिं मजीठ) रक्त, रञ्जित, अरुण ।

मजीरा, सं पु , (स मञ्जीर) नूपुर , पाद भद (न) २-विष्कम्भ , कुटर ।

मज़ेदार, वि (फ़ा) स्वादु, रुच्य, रुचिकर २ उत्कृष्ट, उत्तम ३ आनंद,-दायक प्रद ।

मज्जन, सं पुं (स न) स्नानं, दे 'नहाना' सं पुं ।

मज्जा, सं स्त्री (सं) शुक्रकर , पौष्टिक , अस्थि,-स्नेह -सार -संभव , अस्थिजम् ।

मझधार, सं स्त्री (सं मध्यधारा) नद्या

मध्य-केन्द्रीय-मध्यस्थ-मध्यम,-धारा प्रवाह - मध्यस्रोतस् (न) २ कार्य,-मध्य मध्यम् ।

मझ(झो)ला, वि (स मध्य) मध्यम, मध्य, वर्तिन्-स्थ २ मध्यमाकार, मध्यमपरिमाण ।

मटक, मटकन, स स्त्री (हिं मटकना) हाव, विभ्रम, विलास २ गति (स्त्री) संचार ।

मटकना, क्रि अ [म मट (सौत्रधातु) = अवसाद] विलस (भ्वा प से), सविलास चल् (भ्वा प से) विभ्रम् (भ्वा दि प से) ।

मटका, स पु (हिं मिट्टी) मणिक-क, अलिंजर ।

मटकाना, क्रि स (हिं मटकना) सविलास चालि चल (प्रे) विभ्रम (प्र) ।

मटकी, स स्त्री (हिं मटका) क्षुद्र-मणिक अलिंजर ।

मटमैला, वि (हिं मिट्टी+मैला) दे. 'मटियाला' ।

मटर, स पु (स मधुर) कलाय, काल धूर, मुण्डचणक, रेणुक, वातुल, सतीन (ल)क, हरेणु, खण्डिक ।

मटरगश्त, स पु स्त्री (स मधर+फ़ा गश्त) सुखाटन, विहार, विहरण, यथेष्टभ्रमण, सुखसंचरणम् ।

मटियामसान
मटियामेट } वि दे 'मलियामेट' ।

मटियाला, वि (हिं मट्टी+वाला) धूलि रेणु धातु -वर्ण-रंग ।

मट्टी, स स्त्री, दे 'मिट्टी' ।

मट्ठा, स पु (स मथित) अनरोदक-घोल, नवनीत शून्य घोलम् ।

मट्ठी, स स्त्री (स मठ) पक्वान्नभेद ।

मठ, स पु (स पु न) आनि-वास, २ आश्रम, विहार, मुनिवास ३ धार्मिक-विद्यालय ४ मंदिर, देवालय ।

—धारी, स पु (स रिन्) मठपति, मठिन् ।

मढ़ना, क्रि स (स मण्डन>) कोशे निविश् (प्रे), आवेष्ट (भ्वा आ से) २ चर्मादिभि र्वाद्यमुखं आच्छद् (प्रे) ३ बलात् आरुह् (प्रे), दे 'थोपना' । स पु, आवेष्टन, आच्छादन, आरोपणम् ।

मढ़ने योग्य, वि, आवेष्टनीय, आच्छादनीय ।

मढ़नेवाला, सं पु, आवेष्टक, आच्छादक ।

मढ़वाना, क्रि प्रे, व 'मढ़ना' के प्रे. रूप ।

मढ़ा हुआ, वि., आवेष्टित, चर्मादिभिराच्छादित, बलादारोपित ।

मढ़ी, स स्त्री (सं मठ >) क्षुद्रमठ ठ, लघु मंदिर २ कुटी, पर्णशाला ३ ४ क्षुद्र-मदन-मंडप ।

मणि, स स्त्री (स पु स्त्री) रत्न २. नर-पुंगव-कुंजर-ऋषभ ।

—कांचन योग, सं पु (स) उभयशोभा-वर्धकसंयोग ।

—दीप, स पु (स) दीपोज्ज्वलमणि, रत्न दीप २ मणिरत्नजटितदीप ।

—धर, स पु (स) सर्प, अहि ।

—बंध, स पु (स) मणि, पाणिमूल, कलाचिका ।

—माला, स स्त्री (स.) रत्नहार २ रमा, पद्मा, कमला, इन्दिरा ३ वर्णवृत्तभेद ।

मतंग, स पु (स) गज २. मेघ ३ ऋषि विशेष ।

मत[1], स पु (स न) धर्म, सम्प्रदाय २ मति (स्त्री), तर्क ३ आशय, अभिप्राय । वि, पूजित ।

मत[2], क्रि वि (स मा) न, नो, मा, अलं (तृतीया के साथ) ।

मतलब, स पु (अ) आशय, अभिप्राय, तात्पर्य २ शब्द-वाक्य-अर्थ ३ स्वार्थ ४ उद्देश, उद्दश्य ५ संबंध, संपर्क ।

—निकालना, मु, स्वार्थं साध् सिध् (प्रे) ।

बे—क्रि वि, व्यर्थ,मोघ,निष्प्रयोजन,निरर्थकम् ।

मतलबी, वि (अ मतलब) स्वार्थिन, निजहित-स्वार्थ-पर-परायण निरत ।

मतलाना, क्रि अ, दे 'मचलाना' (१) ।

मतली, स स्त्री, दे. 'मचलाहट' (२) ।

मतवाला, वि (स मत्त) मदोद्धत, मदोदग्र, क्षीव २ उन्मत्त ३ अभिमानिन् ।

मताधिकार, स पु (स) मतप्रकाशनाधिकार ।

मतावलंबी, स पु (स -बिन्) धर्म-मत, अनुगामिन्-अनुयायिन्-अनुवर्तिन् अनुसारिन् ।

मति, स स्त्री (स) धी (स्त्री), धि(धी)षणा, प्रज्ञा, बुद्धि (स्त्री) २ मत, तर्क, अभिप्राय ३ इच्छा ४ स्मृति (स्त्री) ।

—मान्, वि (स -मत्) प्राज्ञ, चतुर ।

—हीन, वि (सं) अज्ञ, मूढ़ मूर्ख।
मतीरा, सं पुं, दे 'तरबूज'।
मत्कुण, सं पुं (सं) रक्तपायिन्, खटमल, मत्कुणाश्रय, उद्दंश।
मत्त, वि (सं) शौण्ड, उत्कट क्षीब, उन्माद, मदाढ्य, समद, मदिरोत्कट, मद-मत्त-उन्मत्त, मदोत्कट ३ निर्विवेक ३ वातुल, उन्मत्त ४ प्रसन्न।
—गयंद, सं पुं (सं मत्तगजेन्द्र >) सवैयाछन्दोभेद। (७ भगण+२ गुरु अक्षर)।
मत्था, सं पुं, दे 'मस्तक' (१)।
मत्सर, सं पुं (सं) मात्सर्य, परोत्कर्षद्वेष, असूया, ईर्ष्या २ क्रोध।
मत्स्य, सं पुं (सं) दे 'मछली' २ मीन राशि ३ विराटदेश (दीनाजपुर-रंगपुर, अथवा प्राचीन राजपूताने के अन्तर्गत) ४ महापुराणविशेष ५ विष्णोरवतारविशेष, मत्स्यावतार।
मथन, सं पुं (सं न) दे मथन १ २।
मथना, क्रि स (सं मथन) दे 'बिलोना' २ ध्वस्-नश् (प्रे) ३ अन्विष् (दि प से) ४ असकृत् अनेकवारं कृ। सं पुं, दे 'मथानी' २ मथन, मंथ।
मथनी निया, सं स्त्री (सं मथनी) मथनघटी, गर्गरी, मथिनी २ दे 'मथानी'।
मथानी, सं स्त्री (सं मंथान) मथमथन, दण्ड, मंथ, मथन, खज, वैशाख, मथि, मथिन् (पुं), तक्राट।
मथुरा, सं स्त्री (सं) मधुपुरी-रा।
मंद, सं पुं (सं) मन्दा, चौंडना, छीतना २ वातुलता, उन्माद, मतिभ्रम ३ दर्प, अभिमान ४ सुरा, मद्य ५ हर्ष, मोद ६ कस्तूरी रिका, मृग-मद-नाभि ७ गजगण्डजल, मद, गण्डवारि (न), दान ८ शुक्र, वीर्य ९ काम, प्रमद १० मदन, काम।
—माता, वि, दे 'मत्त' (१) २ गर्वित, अहंकारिन्।
मद, [illegible] स्त्री (अ) विनिमयर २ लेखांतर ३ प्रकरण।
मदक, सं स्त्री (सं मद >) मदक मादक द्रव्यभेद।
मदद, सं स्त्री (अ) दे 'सहायता'।
—गार, वि (अ+फा) दे 'सहायक'।
मदन, [illegible] पुं (सं) मन्मथ, कंदर्प, अनंग दे 'कामदेव' २ कामक्रीड़ा, मैथुन ३ सिंधुर मुचकुंद, कर्णिकार ४ धुत्तूर ५ भ्रमरः ६ सत्तन ७ दे 'मैना'।
—कदन, सं पुं (सं) शिव, मदनदहन।
—गोपाल, सं पुं (सं) मदनमोहन, कृष्ण।
—बाण, सं पुं (सं) कामशर, पुष्पभेद।
—सदन, सं पुं (सं. न) मदन-गृह-भवन, भगः।
—महोत्सव, सं पुं ([illegible]) मदनोत्सव, सुवसन्त, मदनपूजार्थं नरादिजागरणादियुक्तैत्र भव प्राचीनोत्सवभेदः।
मदनोद्यान, सं पुं (सं न) प्रमोदवनम्।
मदर, सं स्त्री (अ) मातृ (स्त्री), जननी।
मदरसा, सं पुं (अ) विद्यालय, पाठशाला।
मदांध, वि (सं) दे 'मत्त' (१)।
मदार, सं पुं (सं मदार) दे 'अर्क'।
मदारी, सं पुं (अ मदार) दे 'कलंदर' २ सौभिक, दे 'बाजीगर'।
मदिरा, सं स्त्री (सं) सुरा, हाला, मद्य, वारुणी, कादंबरी, हलिप्रिया, गंधोत्तमा, इरा, प्रसन्ना, परिस्रुता, कश्य, गंधमादनी, माधवी, मदना, मत्ता, मदनभा, मधु, माध्वीक, अब्धिजा, देवसृष्टा, मदगा, सुधा, मैरेय, सीधु, महानदा, मदनी, मोदिनी, मनोज्ञा, अमृत, आसव, प्रिया, वरुण, मत्ता, कामिनी।
मदिराक्ष, वि (सं) मत्तलोचन (-नी स्त्री)।
मदीय, वि (सं) मामकीन, मामक (-निका स्त्री), मत्।
मदीला, वि (सं मद >) दे 'नशीला'।
मदोन्मत्त, वि (सं) मद-उत्कट-उदग्र-उद्धत।
मद्धि(द्ध)म, वि, दे 'मध्यम'।
मद्य, सं पुं (सं न) दे 'मदिरा'।
—प, वि (सं) सुरापः, दे 'शराबी'।
—पान, सं पुं (सं न) सुरापानम्।
—भाजन, सं पुं (सं न) सुरा पात्र-भाजनम्।
मधु, सं पुं (सं न) क्षौद्र, माक्षिक, कुसुमासव, आसव, पित्त्य, पवित्र, मध्वीक, मकरंद, पुष्परस, पुष्प आसव, मदिरा-वरटी मूत्र-वान्त २ मदिरा ३ दुग्ध ४ जल

५ मकरंद, पुष्परस ६ अमृत ७ वसन्तर्तु ८ चैत्रमास ९ दैत्यविशेष । वि, मधुर, स्वादु।
—कंठ, स पु (स) कोकिल, पिक ।
—कर, स पु (स) भ्रमर २ कानुर ३ भृङ्गराजवृक्ष ।
—करी, स स्त्री (स) भ्रमरी, भ्रमरी २ मिष्टान्न पक्वान्न भिक्षा ।
—कार, स पु (स) मधुमक्षिका ।
—कोष, स पु (स) मधु कम चक्र छत्र कोश, कर चशाल ।
—प, स पु (स) भ्रमर २ मधुमक्षिका ।
—पर्क, स पु (स) दधिमधुमिश्र आज्य, (अभिष्यादिश्य) ।
—मक्खी, स स्त्री (स-मक्षिका) मधु-कार कारित सरघा ।
—मय, वि (स) मधुर, मधुर, मिष्ट, स्वादु, रुचिर ।
—मास, स पु (स) चैत्र ।
—मेह, स पु (स) मधुप्रमेह, मूत्ररोगभेद ।
मधुर, वि (स) मिष्ट, मधुर, मञ्जुल, मधुक, मधुमय २ रम्य, रुचिकर, स्वादु ३ कर्ण श्रुति-मधुर, कल, मजुल ४ सुंदर, मनोज्ञ ।
—भाषी, वि (स -षिन्) प्रियवद, मधुर सु-वाच, चारुभाषिन् ।
मधुरिमा, स स्त्री [स -रिमन् (पु)] माधुर्य २ सौन्दर्यम् ।
मधूकरी, स स्त्री, दे 'मधुकरी' (२) ।
मध्य, वि (स) दे 'मध्यम'। क्रि वि, मध्ये, अन्तरे,अभ्यन्तरे । स पु, मध्य, मध्यभाग देश स्थल-स्थान २ गर्भ, अन्ति, अन्तरम् ।
—देश, स पु (स) हिमावद्विन्ध्ययोर्मध्ये कुरुक्षेत्रप्रयागमध्यस्थो देश २ मध्यप्रांत ।
—भाग, स पु (स) मध्य-स्थल-स्थान, केन्द्रम् ।
—लोक, स पु (स) भूमि (स्त्री), पृथिवी ।
—वर्ती, वि (स -र्तिन्) केन्द्रीय, मध्य, मध्यम, मध्य-स्थ-स्थित ।
मध्यम, वि (स) मध्य, मध्य-स्थ-स्थित वर्तिन् २ मध्यपरिमाण ३ सामान्य, साधारण ४ व्यवहित, अन्तरालस्थ । स पु (स) चतुर्थस्वर (सगीत) २ ४ नायक-मृग-राग, भेद ।
—पुरुष, स पु (स) पदविशेष (य्या त्व पर्याय इ) ।
मध्यमा, स स्त्री (स) ज्येष्ठाङ्गुली-लि (स्त्री), मध्या, ज्येष्ठा २ नायिकाभेद ३ रजस्वला नारी ।
मध्यस्थ, स पु (स) निर्णेतृ प्रमाणपुरुष २ उदासीन, निष्पक्ष, तटस्थ । वि, दे 'मध्यम' ।
मध्यस्थता, स स्त्री (स) माध्यस्थ्य, निर्णय २ तटस्थता ।
मध्याह्न, स पुं (स) मध्य(ध्य)दिन, मध्याह्न, काल-समय-वेला ।
मध्याह्नोत्तर, स पु (स न) अपराह्न, पराह्न, विकाल ।
मन¹, स पु [स मनस् (न)] चित्त, चेतस (न), हृदय, स्वान्त, हृद् (न), मानस, मन, अन्तक, अन्त करण २ अन्त करणस्य सकल्पविकल्पात्मकवृत्ति (स्त्री) ३ विचार, सकल्प ४ इच्छा, कामना ।
—गढ़त, वि, मन कल्पित, काल्पनिक, अवास्तविक, मन प्रसूत ।
—चला, वि, निर्भय २ साहसिक ३ रसिक ।
—चाहा,-चीता, वि, अभीष्ट, मनोवाञ्छित ।
—जात, स पु, मनोज, कामदेव ।
—भावता, भावन, वि, रम्य, रुचिकर, प्रिय, अभिमत ।
—मति, वि, स्वच्छन्द, अनियन्त्रित, स्वेच्छाचारिन् ।
—मथ, स पु, मन्मथ, कदर्प ।
—माना, वि, रम्य, रुचिकर २ अभिमत, मनोनीत ३ यथेष्ट, यथेच्छ, यथेप्सित । क्रि वि, यथेष्ट, यथाभिलषम् ।
—मानी, स स्त्री, यथेष्ट-कार्य-कर्मन् (न) ।
—मुटाव, स पु, वैमनस्य, वैमत्य, दुष्ट, भाव-बुद्धि द्वेष ।
—मोदक, स पु, काल्पनिकसुख, मन कल्पितानन्द ।
—मोहन, स पु, श्रीकृष्ण । वि, मनोहर, हृद्य ।
—मौजी, वि, स्वैरिन्, स्वेच्छाचारिन् ।
—रंजन, वि, मनोरंजक । स पुं, मनोरंजनम्, चित्तविनोद ।

—हर, —हरण, —हारी, } १ ,मनोहर, मनोहर्तृ,मनोहारिन्, २ सुंदर, मनोज्ञ ३ प्रिय, हृद्य।

(टिप्पणी—मन के बहुत से यौगिक शब्दों और मुहावरों के पर्यायवाची 'जी', 'दिल' और 'कलेजा' के नीचे मिलेंगे, कुछ यहां देते हैं)।

—अटकना, मु, स्निह् (दि प मे), अनु रञ् (कर्म)।

—करना, मु , अभिलष् धाउ (दि भ्वा प से)।

—के लड्डू खाना, मु , गगनकुसुमानि चि (स्वा उ अ), मोघाशया हृष् (दि प मे)।

—बहलाना, मु , मनो विनुद् रम् (प्रे), विद् (भ्वा प अ)।

—बसना, मु , रुच् (भ्वा आ से), दे 'मनभाना'।

—भर, वि , यथेष्ट, यथेच्छम्। (क्रि वि), यथा रुचि, यथाभिलाष, यथेष्टम्।

—भरना, मु , परितृप्, तृप्-तुष् (दि प अ)।

—भाना, मु , रुच (तु प से), अभिलष्, रुच्।

—भाना मुंडिया हिलाना, मु , मनसि काम यमानोऽपि शिरःकंपेन (वाचन) निषिध् (भ्वा प से)।

—माने, वि तथा क्रि वि , दे 'मनभर'।

—मारना, मु , मनः निग्रह् (क्र प से) २ धैर्येण सह् (भ्वा आ से)।

—मिलना, मु मानसैक्य ऐकमत्य वृत् (भ्वा आ से)।

—ललचाना, मु , लुभ (दि प से) अत्य धिक स्पृह् (चु , चतुर्थी के साथ)।

—हरा होना, मु , मुद् (भ्वा आ से)।

मन,² पु (स मण) चत्वारिंशत्सेरात्मक भारमानम्।

—भर, वि , मण, मित परिमितमात्र।

मनका,¹ स पु (सं मणिक >) आर , गुलिका २ जपमाला।

मनका² स स्त्री (स मन्याका) मन्या, अवटु , कृकाटिका, शिरःपीठं, घाटा।

—ढलना, मु , मरणोन्मुख-मुमूर्षु-आसन्नमृत्यु (वि) वृत् (भ्वा आ से)।

मनकूला, वि (अ) चर, चल, अस्थिर।

—गैरमनकूला जायदाद, स स्त्री (अ + फा) स्थावरवित्त, स्थिरसंपद् (स्त्री)।

—जायदाद, स्त्री, (अ + फा) जंगम परिच्छद, चरसंपद् (स्त्री)।

मनन, स पु (स न) अनुचिंतन, ध्यान, आलोचनम्।

—शील, वि , विचार, शीलवत्।

मननीय, वि (स) विचारणीय, चिंतनीय, विचारास्पद, मननार्ह।

मनवाना, क्रि प्रे , व 'मानना' के प्रे रूप।

मनशा, स स्त्री , दे 'मंशा'।

मनसब, सं पु (अ) पद, पदवी २ अधि कार ३ स्तर ४ सेवा।

मनसा¹ स स्त्री , दे, 'मंशा'।

मनसा, अ (सं) चित्तेन, हृदयेन। स स्त्री-१ जरत्कारु पत्नी २ वासुकिभगिनी।

मनसिज, स पु (सं) कामदेव , पंचशर।

मनसूख, वि दे 'मंसूख'।

मनसूबा, सं पु , दे 'मंसूबा'।

मनस्ताप, सं पु (सं) मनोवेदना, आधि २ अनुपश्चात्ताप।

मनस्वी, वि (स विन्) महाशय, महानुभाव २ बुद्धिमत्, सुबुद्धि ३ स्वेच्छाचारिन्।

मनहुँ, क्रि वि , दे 'मानो'।

मनहूस, वि (अ) अशुभ, अमंगल २ कुरूप, दुर्दर्शन ३ अलस, मंथर।

मना, वि (अ) निषिद्ध, प्रतिषिद्ध वर्जित। स पु दे 'मनाही'।

—करना, क्रि स , निषिध्-प्रतिषिध् (भ्वा प स), निवृ (प्रे), नि अव-रुध (रुधा उ अ)।

मनादी, सं स्त्री (अ मुनादी) उद्घोषणा, प्रख्यापनम्।

—करना, क्रि स , उद्घुष (चु), प्रख्या (प्रे , प्रख्यापयति)।

मनाना, क्रि स , व 'मानना' के प्रे रूप।

मनाही, स स्त्री (अ मना) निषेध, प्रतिषेध , निरोध , निवारण, प्रत्यादेश।

मनिहार, स पु (स मणिकार) रत्नकार, रत्नाजीविन् २ ३ कांचकंकण-कार विक्रयिन्।

मनिहारी, सं स्त्री (हि मनिहार) मणि-व्यव-

साय-वाणिज्य, रत्नव्यवहार २ काचद्रव्य व्यवसाय ।
मनी-आर्डर, म पु (अ) धनादेश ।
—फार्म, म पु (अ) धनादेशपत्रम् ।
मनीषा, स स्त्री (स) बुद्धि (स्त्री) २ स्तुति (स्त्री) ।
मनीषी, वि (स विन्) पडित, बुद्धिमत् ।
मनु, म पु (स) ब्रह्मण पुत्र, धर्मशास्त्र कारो मुनिविशेष २ मनुष्य ।
मनुज, स पु (स) मनुष्य, मानव ।
मनुष्य, स पु (स) मानुष, मनुज, मानव, मर्त्य, नर, द्विपद, मनु, पचजन, पुरुष, पुम्स्-न् (पु), मर्ण, विश् (पु) ।
मनुष्यता, स स्त्री (स) मनुष्यत्व, मानवता २ सभ्यता, शिष्टता ३ दया, सौहार्दम् ।
मनुष्यी, स स्त्री (स) नारी, मानुषी, मानवी, मर्त्या, मनुजी, नरी ।
मनुहार, स स्त्री (स मानहार >) प्रसादन, उपशमन, सात्वन २ विनय, प्रार्थना ३ आदर, माननम् ।
मनो', क्रि वि, दे 'मानो' ।
मनो, (स मनस न) दे 'मन' ।
—कामना, स स्त्री (स मन कामना) अभिलाष, वाछा ।
—गत, वि (स) हृदयस्थ, हार्दिक ।
—ज, स पु (स) मदन, कदर्प ।
—ज्ञ, वि (स) सुन्दर, अभिराम ।
—नीत, वि (स) रम्य, रुचिकर, हृद्य २ वृत ।
—योग, स पु (स) अनन्यमनस्कता, चित्तै काग्र्य, अवधानम् ।
—रजक, वि (स) चित्ताह्लादक, सुखकर, हर्षावह हृदयहारिन्, मनोविनोदक ।
—रजन, स पु (स न) मनोविनोद, चित्ताह्लादन-द, क्रीडा, कौतुकम् ।
—रथ, स पु (स) स्पृहा, वाछा ।
—रथ सफल होना, क्रि अ, सफलमनोरथ (वि) भू, अभिलषित अधिगम् ।
—रम, वि (स) मनोज्ञ, सुदर ।
—वाछित, वि (स) अभिलषित, अभीष्ट ।
—विकार, स पु (स) चित्त-विकृति (स्त्री) विकार, मनो, धर्म-वृत्ति (स्त्री) वेग ।
—विज्ञान, स पु (स न) मानसशास्त्रम् ।
—वृत्ति, स स्त्री (स) चित्तवृत्ति (स्त्री), मनोविकार, मानसी दशा ।
—हर, वि (स) सुन्दर, हृदयहारिन् ।
—हरता, स स्त्री (स) सौन्दर्य, चित्ताकर्षकता, मनोज्ञता ।
मनौती, स स्त्री (हिं मानना) दे 'मनुहार'(१) २ दे 'मन्नत' ।
मन्नत, स स्त्री (हिं मानना) देवपूजा, प्रण प्रतिज्ञा शपथ ।
—उतारना या चढ़ाना, मु, देवपूजाप्रतिज्ञा पा (प्रे पालयति) ।
—मानना, मु, अभीष्टसिद्धये देवपूजा प्रतिज्ञा (कृ प्रा अ) ।
मन्वन्तर, स पु (स न) एकसप्तति चतुर्युग्यात्मक काल, ब्रह्मदिनस्य चतुर्दशो भाग ।
मपना, क्रि अ, ब 'मापना' के कर्म के रूप ।
मपवाना, मपाना, क्रि प्रे, ब 'मापना के प्रे रूप ।
मफ़रूर, वि (अ) पलायित, गुप्त, अन्तर्हित, प्रच्छन्न, व्यपसृत ।
मम, सव (स) दे 'मेरा' ।
ममता, स स्त्री (स) } स्वाम्य, स्वामित्व,
ममत्व, स पु (स न) } अधिकार, स्वत्व, प्रभुत्व २ स्नेह, प्रेमन् (पु न) ३ वात्सल्य ४ मोह ५ लोभ ६ अभिमान, गर्व ।
ममिया, वि, दे 'ममेरा' ।
—ससुर, स पु, पति पत्नी,-मातुल ।
—सास, स स्त्री, पति पत्नी,-मातुली ।
ममियौरा, स पु (हिं मामा) मातुलगृहम् ।
ममीरा, स पु (अ मामीरान) नेत्ररोगोपकारक क्षुपमूलभेद ।
ममेरा, वि (हिं मामा) मातुलीय, मातुलिक ।
—भाई, स पु मातुलपुत्र, मातुलेय (-यी स्त्री), दे 'भाई' के नीचे ।
ममोला, स पु, दे 'खंजन' ।
मयंक, स पुं (स मृगाक) दे 'चाँद' ।
मयस्सर, वि (अ) प्राप्त, लब्ध २ प्राप्य, सुलभ ।
मयूख, स पु (स) किरण, रश्मि ।
मयूर, स पु (स) दे 'मोर' ।
मयूरी, स स्त्री (स) दे 'मोरनी' ।

मरक, स पु (स) दे 'मरी'।
मरकत, स पु (स न) हरिन्मणि अश्म गर्भ मरक रतनीन गारत्मत्।
मरकना, क्रि अ (अनु) भारेण भग भिद् द्रु (कम)।
मरघट स पु (हि मरन + घाट) श्मशान, श्मशान पितृकानन प्रेतभू (स्त्री)।
मरज़ स पु (अ मज़) रोग व्याधि २ दुर्व्यसन कुवृत्ति (स्त्री)।
मरजीवा वि (हि मरना + जीना) मृत्युमुक्त, मृतजीवित २ मरण उन्मुख आसन्न ३ मृत प्राय-कल्प । स पु (मुक्ता र्थ) निमज्जक विगाहक ।
मरण, स पु (स न) मृत्यु निधनम्।
—धर्मा वि (स धर्मन्) मर्त्य, मरणशील।
मरतबा, स पु (अ) पद, पदवी २ वार ।
मरतबान, स ? दे 'अमृतबान'।
मरदूद, वि (अ) तिरस्कृत, अपमानित २ क्षुद्र ।
मरना क्रि अ (स मरण) मृ (तु आ अ), पञ्चत्व इ या (अ प अ) असून् प्राणान्—देह तनु जीवित त्यज (भ्वा प अ) उत्सृज (तु प अ) हा (जु प अ), प्र इ (अ प अ) गतासु परासु (वि) भू, विपद् (दि आ अ) प्रमी (क्र्य), २ कष्टेन निर्वह सह (भ्वा आ से) ३ शुष (दि प अ) म्लै (भ्वा प अ) ४ अत्यन्त रञ्ज (तु आ से)-रञ्ज (भ्वा आ स) ५ पराजि परि भू (कर्म) पराविनि (कम) ६ शम् (दि प से) ७ क्षीणतां वहिष्कृ (रुम)। स पु मरण निधन, दे मृत्यु ।
—जीना मु सुख दुःखे हर्षशोकौ वी।
किसी पर— मु अनुरञ् (कम) भृश अनुराग बन्ध (क्र प अ)।
पानी— मु लज्जित दर्पित अपमानित (वि) भू ज्वाला अवमन् (कर्म)।
मर कर, मु , अत्याय सन, अतिकठिनतया ।
मर के बचना, म मृत्युमुखात् मुच (कम) मरणासन्नाऽपि पुन स्वास्थ्य लभ (भ्वा आ अ)।
मर मिटना, मु , सर्वनाशेन नश् (दि प मे)।
मरने तक का फुर्सत न होना, मु , अनिच्छा पूत भवकाश (वि) मृ (भ्वा आ मे)।
मरने योग्य, वि , मरणार्ह, अर्धजीवित, २ हनक सत्र, दुष्ट ।
मरनेवाला, स वि , मरिष्यमाण, मरणोन्मुख, आसन्नमृत्यु २ मर्त्य, मृत्युवश, नश्वर ।
मरा हुआ वि , मृत, गतासु पञ्चत्व-गत प्राप्त इत प्रेत, परेत, उपरत संस्थित, विपन्न, प्रमीत, वियोजित निष्प्राण, प्राण ।
मरभुक्खा, वि (हि मरना + भूखा) क्षुधा अर्दित-पीडित-आर्त-अवसन्न २ अकिंचन, निर्धन।
मरमर[1], स स्त्री (अनु) मर्मर ध्वनि शब्द , मर्मर पत्र-वस्त्र-स्वन ।
मरमर[2], स पु (यू०) चिक्कणप्रस्तरभेद , मरमर ।
मरमरा वि (अनु०) भिदुर, भंगुर, सुभग ।
मरमराना, क्रि अ (हिं मरमर) मर्मर रव कृ मर्मरायते (न धा) २ सममर्दशब्द अन भा नम् (भ्वा प अ)।
मरम्मत स स्त्री (अ) जीर्ण , उद्धार , प्रति, समाधान संधान, संस्कार , नवीकरण, पूर्वदशाप्रापणम्।
—करना, क्रि अ , पूर्ववत् नवी-कृ, उद् (भ्वा प अ), संममा प्रतिसमा, धा (जु उ अ) २ तड् (चु)।
मरवाना, क्रि प्रे , व 'मारना' के प्रे रूप ।
मरसा सं पु (स मारिष) शाक , मार्षिक (शाकभेद)।
मरसिया स पुं (अ) निधनकाव्य, शोक मयी कविता ।
मरहठा स, स पु (सं महाराष्ट्र >) महा राष्ट्रवासिन, महाराष्ट्र (बहु)।
मरहटी-ठी, स स्त्री (स महाराष्ट्री) माहाराष्ट्री।
मरहम, स पु (अ) अनु-लेप , उपदेह , समालभ अभ्यञ्जनम्।
—पट्टी, स स्त्री (अ + स) लेपपट्टी, व्रणोपचार ।
मरहमत, सं स्त्री (अ) अनुग्रह , कृपा ।
—करना या फरमाना, दे 'देना'।
मरहूम, वि (अ) स्वर्, गत-यात, दिवं गत, मृत ।
मराल, स पुं (सं) राजहंस २ कारण्डव ३ अश्व ४ गज ५ मेघ ।
मरिच, सं स्त्री (सं न) दे 'मिर्च'।

मरियल, वि (हिं मरना) मृतकल्प, कृश, निर्बल।
मरी, स स्त्री (स मारी) जनमार, महामारी, मारिका।
मरीचि¹, स स्त्री (स पु स्त्री) किरण, रश्मि २ कान्ति (स्त्री) ३ मरुमरीचिका।
मरीचि², स पु (स) १-४ ऋषि-मरुद दानव-दैत्य-विशेष।
मरीज, वि (अ) रुग्ण, रोगिन्।
मरीचिका, स स्त्री (स) दे 'मृगतृष्णा'।
मरु, स पु (स) धन्वन् (पु), मरु-स्थल स्थली ऊसर २ शिखर।
—भूमि, सं स्त्री (स) } दे 'मरु'।
—स्थल, स पु (स न) }
मरुआ, स पु (स मरुव) गन्ध-खर पत्र गौतरूप दद्रुघ्नं (क्षुपभेद)।
मरुत, स पु (स) दे 'वायु'।
मरोड़, स पु (हिं मरोड़ना) आकुञ्चन, व्यावर्तन २ अन्न-उदर, वेदना-शूल पीड़ा ३ दर्प ४ क्रोध ५ दे 'पेचिश'।
—फली, स स्त्री, मधूलिका, मूर्वा, मूर्वी, मधुरसा, रा-दिव्य, लता।
मरोड़ना, क्रि स (हिं मोड़ना) कुच-कुच (भ्वा प मे), व्यावृत् (प्रे), कुञ्चि वक्री कृ २ पीड़ (चु), दु मर्दनि (ना भा) ३ मुष्टिना-मुष्ट्या ग्रह (क्र प मे) धृ (भ्वा प अ)।
मरोड़ा, स पु, (हिं मरोड़ना) दे 'मरोड़' (१२) ३ दे 'पेचिश'।
मरोड़ी, स स्त्री (हिं मरोड़ना) दे 'मरोड़'(१) २ कुञ्चित-व्यावर्तित-वस्तु (न) ३ ग्रंथि।
मर्कट, स पु (स) दे 'बंदर'।
मर्ज, स पु (अ) दे 'मरज'।
मर्जी, स स्त्री (अ) इच्छा, रुचि (स्त्री) २ प्रसन्नता ३ स्वीकृति (स्त्री), अनुज्ञा।
मर्त्य, स पु (स) मनुष्य, मानव, २ शरीरम्।
—लोक, स पु (स) भूमि (स्त्री), भूलोक।
मर्द, सं पु (फा) मानव मनुज, २ पुंस (पु), पुरुष, नर ३ वीर सहनिन्, योध ४ पति।
—बच्चा, स पु, वीरवत्स।
मर्दन, स पु (स न) मर्दना पीडनं धर्षण आक्रमण २ अभ्यञ्जन, मर्दनं, मर्दन, घर्षण ३ ध्वंसन, नाशन ४ पेषण, चूर्णनम्।
मर्दाना, स क्रि (फा) पुरुष, वीरता, पुरुषत्वम्।
मर्दाना, वि (फा) पुरुष-जार-शूर-उचित २ पुरुष-नर-सदृश उपम विक्रान्त-नर पुरुष।
—भेष स पु पुरुषवेद नरोचितवेष।
मर्दित वि (स) मर्द पीडित घृष्ट-आ.त २ चर्चित, चूर्णित ३ नाशित।
मर्दुम, स पु (फा) जन, मनुष्य।
—खोर, स पु, नरभक्षक मनुजाद।
—शिनास, वि, नर-मानव-अभिज्ञ।
—शुमारी, स स्त्री (फा) जन-मनुष्यगणना।
मर्म, स पु [स मर्मन् (न)] तत्त्व, स्वरूप २ रहस्य, गोप्यवृत्त ३ मर्मस्थान ४ जीवस्थानम्।
—ज्ञ, वि (स) तत्त्वज्ञ, मर्मविदिन २ रहस्यविद् (पु)।
—पीड़ा, स स्त्री (स) हृद्व्यथा, मनव्यथा।
—भेदी, वि (स-दिन्) मर्म-भिद् (पु) भेदक छेदक-विदारक।
—स्थान, स पु (स्त्री) मर्मस्थल, जीवनस्थानम्।
मर्मर, स स्त्री (अनु) दे 'मरमर'।
मर्यादा, स स्त्री (स) स्थिति (स्त्री), धारणा, मर्यादा, नियम २ सीमा ३ कूल ४ प्रतिज्ञा, समय ५ सदाचार, सद्वृत्त ६ गौरव, प्रतिष्ठा ७ धर्म।
मलंग, स पु (फा) मलङ्ग, यवनभिक्षुभेद २ जनभेद ३ स्वेच्छाचारिन्।
मल, स पु (स पु न) अव(प)स्कर, दन्तक, किट्ट २ कर्दम, पङ्क ३ उच्चार, गूथ-थ पुरीष, विष (स्त्री), विट, शकृत (न), शमलम्।
मलना, क्रि स (स मर्दन) अन (क प मे), पिष् (तु प अ), दिह् (अ उ अ), घृष् (भ्वा प से) २ घृष् (भ्वा प मे), मृद (क्र प से, प्रे) ३ परि-प्र-मृज् (अ प मे), निष् (तु ट अ) ४ करत

लाम्या चूर्ण (पु)। स पु, अनन, लेपन, घर्षण, मर्दन, मार्जन, चूर्णनम्।

हाथ—, मु, अनुपश्चात् तप् (दि आ अ), अनुशुच् (भ्वा प से) अनुशी (अ आ से)।

मलवा, स पु (स मल-) दे 'मल' १ २। २ शकलराशि।

मलमल, स स्त्री (स मल्लमल्लक >) *मल मल्लक, सूक्ष्म तूलवस्त्रम्।

मलमास, स पु (स) अधिमास, मलिम्लुच, असंक्रान्तमास, नपुंसक।

मलय, स पु (स) दक्षिणाचल, चन्दनाद्रि, आषाढ, मलयाचल २ तैलपर्णिक, श्रीचन्दन ३ नन्दनवनम्।

मलयज, स पु (स न) दे 'चन्दनम्'।

मलयाचल, स पु (स) मलय, अद्रि गिरि पवन।

मलयानिल, स पु (स) मलय, पवन वात समीर।

मलवाई, स स्त्री (हिं मलवाना) मर्दन अनन घर्षण, भृति (स्त्री)।

मलवाना, मलाना, क्रि प्रे, स 'मलना' के प्रे रूप।

मलहम, स पु, दे 'मरहम'।

मलाई, स स्त्री (फा बालाई) (दूध की) सन्तानी निरा, क्षीर, सार, दुग्ध, अग्र तालीय, शार्कर, शाकर, (दही की) दे 'सार' (४) २ सार उत्तमांश।

मलामत, स स्त्री (अ) दे 'फटकार'।

मलार, स पु (सं मल्लार) रागभेद।

मलाल, स पु (अ) खेद २ औदासीन्यम्।

मलिक, स पु (अ) नृप २ अधीश्वर।

मलिका, स स्त्री (अ) राज्ञी २ अधीश्वरी।

मलिन, वि (स) आविल, कलुष मलीमस, समल, पंकिल मलदूषित, मलदूषित २ दूषित, विकृत ३ धूम्रवर्ण ४ धूमवर्ण ५ पापात्मन्, दुष्ट, पाप ६ विषण्ण, म्लानमुख।

मलिनता, स स्त्री (स) आविलत्व, कालुष्य, मालिन्य, पंकिलत्व इ।

मलियामेट, सं पं (हिं मलना + मिटना) वि, ध्वंस नाश, क्षय, उच्छेद।

—करना, क्रि, स, उच्छिद् (रु प अ), ध्वंस्-नश् (प्रे), निर्मूल् (चु)।

मलीदा, स पु (फा मालीदा) मर्दन, स्निग्धमिष्टरोटिकाचूर्ण २ और्णवस्त्रभेद, मर्दन।

मलीन, वि, दे 'मलिन'।

मलेरिया, स पु (अ) विषमज्वर, *मशक-कृपवन-ज्वर।

मल्ल, स पु (स) प्राचीनजातिविशेष २ बाहु-योध योधिन्। वि, महाबल, मांसल, स्थूल-महा-काय।

—भूमि, स स्त्री (स) मल्लशाला।

—युद्ध, स पु (स न) बाहु नि-युद्ध, दे 'कुश्ती'।

—विद्या, स स्त्री (स) नियुद्धविद्या।

मल्लाह, स पु (अ) नाविक, नौ पोत-वाह, औडुपिक, मार्गर २ धीवर, कैवर्त।

मल्लिका, स स्त्री (स) दे 'मोतिया' २ छन्दोभेद।

मल्लू, स पु (स मल्लुक) ऋक्ष, दे 'रीछ' २ वानर।

मवक्किल, स पु (अ मुवक्किल) अभिभाषकनियोजक।

मवाद, स पु (अ) दे 'पीप'।

मवेशी, स पु (अ मवाशी) पशव (पुं-बहु), पशुसमूह, गोकुलम्।

—खाना, स पु (अ + फा) गोष्ठ इ, व्रज।

मश(स)क', स पु (स) दे 'मच्छड़'।

मशक', स स्त्री (फा) चर्मभस्त्रिका।

मशकूक, वि (अ) सन्देह संशय, आस्पद पात्र, सन्दिग्ध।

मशकूर, वि (अ) कृत, कृतज्ञ वेदिन, उपकृत, उपकारस्मर्तृ, आभारिन्।

मशक्कत, सं स्त्री (अ) परिश्रम, प्रयास।

मशक्कती, वि (अ) उद्योगिन्, परिश्रमिन्।

मशगला, स पु (अ) कार्य, व्यवसाय, अर्जनिका, वृत्ति (स्त्री)।

मशगूल, वि (अ) व्यापृत, व्यग्र, कार्यमग्न।

मशरिक, स स्त्री (अ) प्राची, दे 'पूर्व' (दिशा)।

मशविरा, स पु (अ) मन्त्रणा, परामर्श।

मशहूर, वि (अ) विख्यात, प्रसिद्ध।

मशान, स पु (स श्मशान) दे 'मरघट'।

मशाल, सं स्त्री (अ) दीपिका, शिखिनी, अलात, उल्मुक, उल्का।

—लेकर या जलाकर ढूँढना, मु, सम्यक् अन्विष (दि प से)।

मशालची, स पु (अ +फा) उल्काधारिन्, उल्मुक-दीपिका-वाहक ।

मशीन, स स्त्री (अ) यन्त्रम्।

मश्क, स स्त्री (अ) दे 'अभ्यास'।

मष्ट, वि (स मष्ट>) मौन, निःशब्दता।

—मारना, मु, तूष्णीं स्था (भ्वा प अ)-भू।

मसकना, क्रि अ (अनु मस) व 'मसकाना' के कर्म के रूप। क्रि स दे 'मसकाना'।

मसकाना, क्रि स (हिं मसकना) विदल्-विद्र (प्रे), विपट् (चु) २ सबल मृद् (क्र प से)-निपीड (चु)।

मसखरा, स पु (अ) विदूषक, भंड, वैहासिक ।

—पन, स पु, भंडता, वैहासिकता, परिहास, क्ष्वेडा।

मसजिद, स स्त्री (फा) *यवनमंदिर, मोहम्मदीयदेवालय ।

मसनद, स स्त्री (अ) च(चा)तुर, चक्रगंडु, वृहद्वालिश महामसूरक २ धनिकासनम्।

मसल, स स्त्री (अ) आभाणक, लोकोक्ति (स्त्री)।

मसलन्, क्रि वि (अ) यथा, उदाहरण-दृष्टान्त-रूपेण।

मसलना, क्रि स (हिं मलना) हस्तेन पादेन वा समृद् (क्र् प से, प्रे), सर्पाट् (चु) २ सबल निपीड (चु) ३ दे 'गूँधना'।

मसलहत, स स्त्री (अ) *नीति-गुप्त, गुप्त मंगल मंत्र, औचित्य, युक्तता।

मसला, स पु (अ) दे मसल २ विषय, समस्या।

मसविदा, स पु (अ मुसव्विदा)। मस्कार्यं शोधनार्थ,-लेख २ दस्त अमुद्रित,-लेख ३ युक्ति (स्त्री), उपाय ।

—बाँधना, मु, उपाय चिंत (चु)।

मस(छ)हरी, स स्त्री (स मशहरी) दे 'मच्छरदानी'।

मसा, स पु (स मांसकील) चर्मकील २ अर्श,-कील-कील, मांसकीलक-कम्।

मसान, स पु (स श्मशान) पितृ वन-कानन, अन्तशय्या, शवानक, रुद्राक्रीड, दाह-सरस् (न)-स्थल २ पिशाच ३ रणक्षेत्रम्।

मसाना, स, पु (अ) मूत्राशय, वस्ति (पु स्त्री)।

मसाला, स पु (फा) वेश(ष, स)वार, उपस्कर, उपस्करसामग्री, स्वादन २ उपकरणानि, उपसाधनानि (न बहु), सामग्री।

—डालना, क्रि स, उपस्कृ, स्वादूकृ, अधिवास (चु)।

मसालेदार, वि (फा) उपस्कृत, सोपस्कर, वेशवारयुक्त, स्वादूकृत।

मसि, स स्त्री (स स्त्री पु) मसिजल, पत्राञ्जन, मेला, मसी, रञ्जनी, मशी, काली।

—दान, स पु } स +फा) दे 'मसिपात्र'।
—दानी, स स्त्री }

—पात्र, स पु (स न) मसि(सी),-कूपी-घटी धान-धानी-आधार ।

मसी, स स्त्री (स) दे 'मसि'।

मसीह, स पु (अ) दे 'ईसा' २ विश्वत्रातृ।

मसूड़ा, स पु [स श्मश्रु (न)>] दंत, मूल-मांस, दंतवेष्ट ।

मसूर, स पु [स मसु(सू)र] मसु(सू)र, मसूरक-का, मंगल्य-ल्या, पृथु गुंठ-कल्याण, बीज, ब्रीहिकांचन ।

मसूरिया, स स्त्री (स मसूरिका) वसन्तरोग, पापरोग, रक्तवटी, मसूरी, शीतला-ली, दे 'चेचक'।

मसूरी, स स्त्री (स) दे 'मसूरिया' २ दे 'मसूर'।

मसो(सू)सना, क्रि अ (फा अफ़सोस) (मनसि) खिद्-दु (कर्म), शुच् (भ्वा प से), तप् (दि आ अ) २ मनोवेग रुध् (रु प अ) शम् (प्रे) ३ ४ दे 'मरोड़ना' तथा 'निचोड़ना'।

मसौदा, स पु, दे 'मसविदा'।

मस्त, वि (फा) दे स 'मत्त'(१) २ निश्चिन्त, निरुद्विग्न ३ कामुक, कामिन् ४ स्वैरिन्, स्वेच्छाचारिन् ५ दृप्त, गर्वित ६ प्रहृष्ट, अतिप्रसन्न ७ उन्मादिन्, वातुल ८ समद, मद घूर्णित (नेत्रादि)।

माल—, वि, वित्तमत्त, धनमूढ।

मार—, वि, पीनप्रमोदिन्।

मस्तक, स पु (स पु न) शिरस (न), उत्तमांग, शीर्ष, मूर्द्धन (पु), मुंड, शिर, वरांग, मौलि, कपाल, केशभू (स्त्री)

२ ललाट, अलि(ली)क, भाल, ललाट भाल, पट्ट, गोधि ।

मस्तगा, स स्त्री (अ मस्तकी) उत्तमनिर्यास भेद, *मस्तगी ।

मस्ताना, वि (फा) मत्त तुल्य सदृश २ मत्त, क्षीव, मदिरोन्मत्त ।

मस्तिष्क, स पु (स न) गोल, गोर्द, मस्तकस्नेह, मस्तुलुङ्ग (मस्तिष्कभागा— बृहन्मस्तिष्क, लघुमस्तिष्क सुषुम्नाशीर्षकम्) ।

मस्ती, स स्त्री (फा) मत्तता, क्षीबता, शौण्डता, मदाढ्यता, उन्मदता, २ सुरतेच्छा, रतिकामता ३ अभिमान ४ मद, मदजल, दानम् ।

मस्तूल, स पु (पुर्त) कूपक, गुणवृक्ष-क, कूपदण्ड ।

मस्सा, स पु, दे 'मसा' ।

महँगा, वि (स महार्घ) महार्घ, बहु महा,-मूल्य ।

महँगाई, **महँगी**, } स स्त्री (हिं महँगा) महार्घता, बहुमूल्यता २ दुर्भिक्ष, दुष्काल ।

महंत, स पु (स महत्>) मठाधीश, २ साधूत्तम । वि, प्रधान, श्रेष्ठ ।

महंती, स स्त्री (हिं महंत) मठाधीशता २ साधुनेतृत्वम् ।

महक, स स्त्री (महमह से अनु) दे 'सुगंध' ।
—दार, वि (हिं+फा) दे 'सुगंधित' ।

महकना, क्रि अ (हिं महक) सुवास-सौरभ उत्सृज्-मुच् (तु प उ) ।

महकमा, स पु (अ) विभाग ।

महकाना, क्रि (हिं महकना) अधि, वास् (चु), सुरभीकृ, धूप (चु भ्वा प, से), परिमलयति (ना धा) ।

महकूम, वि (अ) शासित, अधीन २ आदिष्ट, आज्ञापित ।

महज़, वि (अ) शुद्ध, केवल । क्रि वि, केवल, एव, मात्र ।

महत्, वि (स) गुरु, विशाल, बृहत्, स्थूल, दीर्घ २ उत्तम, श्रेष्ठ ।

महता, स पु (स महत्>) ग्रामणी (पु), अग्रिम, पुराग, नायक २ लेखक, कायस्थ ।

महताब, स पु (फा) चंद्र, सोम । स स्त्री (फा) चंद्रिका, कौमुदी ।

महताबी, स स्त्री (फा) वर्तिकाकाराग्नि क्रीडनकभेद, चन्द्राभा ।

महतारी, स स्त्री दे 'माता' ।

महती, वि स्त्री (स) बृहती, विशाला, विपुला, प्रचुरा ।

महतो, स पु (स महत्>) ग्रामनायक, ग्रामणी (पु) ग्रामाध्यक्ष ।

महत्तत्त्व, स पु (स न) प्रकृते प्रथम विकार (सांख्य), बुद्धितत्त्वम् ।

महत्तम, वि (स) महिष्ठ, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, वरिष्ठ, गरिष्ठ, विशालतम, अधिक । स पु (स न) [= आदे आनम (गणित) ।

महत्तर, वि (सं) बृहत्तर, गुरुतर, विशालतर, उत्तर ।

महदूद, वि (अ) मित, परिमित, ससीम, मर्यादित ।

महफ़िल, स स्त्री (अ) सभा, सगीतसभा, प्रमोद परिषद् (स्त्री), रंगशाला ।

महफ़ूज़, वि (अ) सुरक्षित, परि, त्रात त्राण ।

महबूब, स पु (अ) प्रिय, कान्त, दयित ।

महबूबी, स स्त्री (अ) प्रिया, कान्ता, दयिता ।

महरा, स पु (सं महत्तर >) दे 'कहार' ।

महराव, स्त्री, दे 'मेहराव' ।

महरूम, वि (अ) वंचित, विरहित, हीन (प्राय सब समासान्त में) ।

महर्षि, स पु (स) ऋषीश्वर, ऋषिश्रेष्ठ २ रागभेद ।

महल, स पु (अ) प्रासाद, सौध, हर्म्य, राज-नृप, कुल-भवन मंदिरम् ।
—सरा, स स्त्री (अ+फा) अंतःपुर, अवरोध ।

महल्ला, स पु (अ) पुरभाग, नगरविभाग ।

महल्लेदार, स पु (अ+फा) पुरभाग नायक २ समपुरभागवासिन् ।

महसूर, वि (अ) परिवेष्टित, रुद्ध, बाधित, परिवृत ।

महसूल, पु (अ) कर, राजस्व, शुल्क, बलि २ भाड़ा, भाटक ३ दे 'मालगुजारी' ।
—खाना, स पु, करभू (स्त्री) ।

महसूस, वि (अ) अनुभूत, ज्ञात, अवगत, विदित ।

महा, वि (सं महत्) अत्यंत, अत्यधिक, अतिशय, बहुल २ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्टतम ३ विस्तीर्ण, विशाल, विपुल ।
—काय, वि (सं) विशालदेह ।
—काल, सं. पुं (सं) शिवरूपविशेष ।

—काली, स स्त्री (स) महाकालपत्नी।
—काव्य, स पु (स न) महाकाव्य, काव्य भेद।
—कन्द, स पु (स) मलकन्द २ शङ्कर।
—देव, स पु (स) शिव।
—देवी, स स्त्री (स) दुर्गा २ पट्टराज्ञ्या उपाधि।
—द्वीप, स पु (स) भूखण्ड वर्ष वर्ष्म्।
—धातु, स पु (स) सुवर्णम्।
—निद्रा, स स्त्री (स) मृत्यु।
—निशा, स स्त्री (स) निशीथ, अर्द्ध रात्र रात्रि (स्त्री), महारात्रम्।
—पथ, स पु (स) प्रधान-महा-राज-मार्ग २ मृत्यु स्वर्ग-श्री-पथ, सम्मरण, राज वर्त्मन् (न)।
—पाप, स पु (स न) महापातकम्।
—पापी, स पु (स-पिन्) महापातकिन्।
—पात्र, स पु (स) मुख्यप्रधान महा-मन्त्रिन्-अमात्य-सचिव।
—पुरुष, स पु (स) पुरुषषभ, नरोत्तम २ दुष्ट (व्यङ्ग में)।
—प्रभु, स [illegible] (स) पवित्रात्मन, महात्मन् २ नृप ३ विष्णु ४ शिव ५ इन्द्र।
—प्रलय, स पु (स) त्रिलोकीनाश, सम्हार महार।
—प्रस्थान, स पु (स न) मृत्यु।
—प्राण, वि (स) महाप्राण, महाबल। स पु (स) वर्णमालाया अक्षरविशेषा (ख्, घ्, छ, झ, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, श, ष, स ह)।
—बली, वि (स-लिन्) बलिष्ठ।
—बाहु, वि (स) दीर्घ-आजानु-बाहु २ बलवत्।
—ब्राह्मण, स पु (स) महाविप्र।
—भाग, वि (स) सौभाग्यशालिन्।
—भारत, स पु (स न) व्यासप्रणीत इतिहासग्रन्थ।
—भाष्य, स पु (स न) अष्टाध्यायीभूताष्या पतञ्जलिकृत बृहद्भाष्यम्।
—मांस, स पु (स न) (१८) गा-नर-गज-घोटक महिष-वराह-उष्ट्र-मप -मांसम्।
—माई, स स्त्री (स +हि) दुर्गा २ काली।
—माया, स स्त्री (स) प्रकृति (स्त्री) २ दुर्गा ३ गङ्गा ४ गौनमबुद्धजननी।
—मारी, स स्त्री (स) मारिका, जनमार।
—मुनि, स पु (स) मुनिपुङ्गव, मुनीन्द्र।
—मूल्य, वि (स) महार्घ, बहुमूल्य।
—यज्ञ, स पु (स) बृहद्याग २ आर्य प्रत्यह काया पचयज्ञा (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ नृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ)।
—यात्रा, स स्त्री (स) मृत्यु।
—युग, स पु (स न) चतुर्युगी।
—रथी स पु (स महारथ) महायोध।
—राजा, स पु (स महाराज) राजेश्वर, राजेन्द्र, नृपश्रेष्ठ सम्राज (पु), अधिराज।
—राजाधिराज, स पु (स) चक्रवर्तिन-सार्वभौम-नृप।
—रात्रि, स स्त्री (स) महाप्रलयाधकार २ दे 'महानिशा'।
—रानी, स स्त्री (स महाराज्ञी) अधिराज्ञी।
—हास, स पु (स) अट्टहास, अति-हास हसितम्।
महाजन, स पु (स) नरर्षभ, पुरुषोत्तम २ साधु ३ धनिक, धनाढ्य ४ कुसीदिक दिन, वार्धुषिक पिन ऋणद ५ वणिज् (पु) ६ आय, मानव।
महाजनी, स स्त्री (स महाजन >) वृद्धि जीविका, अर्थप्रयोग, कुसीद, कौसीद्य २ लिपिविशेष।
महातम, स पु, दे 'माहात्म्य'।
महात्मा, स पु (स त्मन्) महाशय, महानुभाव, महामनस् (पु), उदारचरित।
महान्, वि (स महत्) दे 'महा' (१३)।
महाराष्ट्र, स पु (स) दक्षिणापथे प्रान्तविशेष।
महाराष्ट्री, स स्त्री (स) दे 'मरहटी' २ प्राकृतभाषाभेद।
महावत, स पु (महामात्र) हस्तिपक, हास्तिक गजाजीव, निषादिन, आधोरण, इभ्य।
महावर, स पु (स महावर्ण ?) यावक-यावक-अलक्तक-लाक्षा रस।
महावरा, स पु, दे 'मुहावरा'।
महाशन, वि (स अद्मर, घस्मर, औदरिक, उदरभरि।
महाशय, स पु (स) महात्मन्, महामनस्,

सज्जन, आर्य, उदार, चेतस्-मति धी, महानुभाव। (स्त्री महाशया)।
महास्पद, वि (स) उच्च, पदस्थ अधिकारिन् २ शक्तिशालिन्, सशक्त, शक्तिमत्।
महि, स स्त्री (स) दे 'पृथिवी'।
—पाल, स पु (स) दे 'राजा'।
महिमा, स स्त्री [स महिमन् (पु)] महत्त्वं, माहात्म्य, गौरव, महत्ता, गरिमन् (पु), गुरुत्वं २ श्री (स्त्री), शोभा, प्रभाव, प्रताप, तेजस् (न), प्रभा, विभूति (स्त्री) ३ सिद्धिविशेष (योग)।
महिला, सं स्त्री (सं) नारी, रामा, स्त्री, ललना, वनिता।
महिष, स पु (स) असुरविशेष २ दे 'भैंसा' ३ अभिषिक्तो नृप।
महिषी, स स्त्री (स) १ 'भैंस' २ पट्टराज्ञी।
मही, स स्त्री (सं) दे 'पृथिवी'।
—धर, स पु (स) पर्वत, गिरि २ शेषनाग।
—प,-पति, सं पु (स) दे 'राजा'।
—रुह, स पु (सं) वृक्ष, पादप।
—सुर, सं पु (स) ब्राह्मण।
महीन, वि (महा-क्षीण) दे 'सूक्ष्म' तथा 'बारीक'।
महीना, सं पु [स मास, मास् (पु), मि फा माह] दे 'मास' २ मासिकवेतनम्।
महुआ, स पु (स मधूक) गुडपुष्प, मधुद्रुम, मधु, मधुक, मधु,पुष्प-वृक्ष आदि, माधव।
महेंद्र, स पु (स) दे 'इन्द्र' २ विष्णु ३ पवनविशेष।
महेश, सं पु (सं) शिव २ ईश्वर।
महेश्वर, स पु (सं) शिव २ परमेश्वर ३ सुवर्णम्।
महेश्वरी, सं स्त्री (स) दुर्गा, पार्वती।
महोत्सव, स पु (सं) महा,-क्षण -उद्धर्ष -पर्वन् (न) -महस् (न) -मह।
महोदधि, सं पु (सं) महा,-सागर -अब्धि।
महोदय, सं पु (सं) महाशय महानुभाव (आदरसूचक सबोधन) २ ऐश्वर्य, वैभव ३ स्वर्ग ४ मोक्ष। (स्त्री महोदया)
महोपाध्याय, सं पु (स) प्राध्यापक, पण्डित।
,**महौषध**, सं पु (सं न) भूम्याढ्य २ सुंठी ३ लशुन ४ वाराहीकन्द ५ वत्सनाभ ६ पिप्पली ७ अतिविषा।
माँ, स स्त्री (■ मा) दे 'माता'।
माग,[1] स स्त्री (हि मागना) दे 'मागना'। स पु २ आवश्यकता, पृच्छा, जिघृक्षा, प्रेप्सा, लिप्सा ३ प्रार्थनाविषय।
माग[2], स स्त्री (स मार्ग ?) सीमत, *मूर्द्धरेखा।
—निकालना, क्रि स, सीमन्तयति (ना धा), सीमत उन्नी (भ्वा प अ)।
—चोटी, सं स्त्री, वेश, विन्यास सस्कार।
—जली, स स्त्री, विधवा।
माँगना, क्रि अ (स मार्गण>) भिक्ष् (भ्वा आ से) भिक्षाटन कृ। क्रि स, याच् (भ्वा आ से), अभि प्र अर्थ् (चु आ से) २ ऋणं कृ अथवा मह् (कृ प से)। सं पु, भिक्षण, भिक्षा, भिक्षाटन, याचन-ना, याञ्चा, अभ्यर्थन ना, प्रार्थन-ना।
मागने योग्य, वि, याचनीय, अभि प्र,-अर्थ,-नीय, प्रार्थयितव्य।
मांगनेवाला, स पु भिक्षु, भिक्षुक, याचक, प्रार्थक, प्रार्थिन् इ।
मांगलिक, वि (स शिव शुभ,-वह (-ही स्त्री), शिव, शुभ, कल्याण (-णी स्त्री), मगल, भद्र, मांगल्य।
मांगल्य, वि (सं) दे 'मांगलिक'। स पु (स न) शुभ, भद्र, कल्याणं, शिवम्।
मांगा हुआ, वि, प्रार्थित, याचित।
माँजना, क्रि स (सं मार्जन) प्र सं-मृज् (अ प से, चु), प्रक्षल् (चु), धाव् (भ्वा प से, चु), अव निर्, निज् (जु उ अ), पवित्री कृ २ पतगगुणं तीक्ष्णीकृ, मृज् (भ्वा प से)। क्रि अ, अभ्यस् (दि प से)। सं पु, मार्जन, प्रक्षालनं, धावन, अभ्यसनम्।
माँजने योग्य, वि, मृज्य, मार्जनीय, प्रक्षालनीय, धावनीय।
माँजनेवाला, सं पु, मार्जक, प्रक्षालक, धावक, पावक, शाणक।
माँजा हुआ, वि, मार्जित, मृष्ट, प्रक्षालित इ।
माँझा[1], सं पु (सं मध्य>) पुलिनं, नदीमध्यवर्ती, द्वीप २ वरप्रदत्तं मध्योजनं ३ औदादिक पानदेश ४ प्रगाढ, रत्न।

माँझा², स पु (स मार्जन>) *पतगगुण गुन्ति, *मार्जन ।
माँझी, म पु (म मध्य>) दे 'मल्लाह' ।
माँड, स प (स मड-ड) भक्तमड, आच म, पिच्छ-लला, निस्त्र(स्रा)व, मासर, पिच्छा चड्म् ।
माँडना, क्रि म, दे 'रौंदना', 'मसलना' और 'गूधना' ।
माडलिक, म पु (स) मंडल, इश्वर-अधीश, अध्यक्ष ।
माँडव, म पु (स मडप) औद्वाहिकमटप ।
माडवी, म स्त्री (म) भरतपत्नी कुशध्वजपुत्री ।
माडा, स पु (स मडक) पिष्टकभेद ।
माँडी, म स्त्री (स मट >) श्वेतसार मड-डम् ।
मान्त्रिक, वि (स) मन्त्र-,सम्बन्धिन् विषयक । म पु (स) मन्त्रविद्, वेदपाठिन् २ अभिचारिन्, मायिन् ।
माँद¹, वि (स मद) नि श्रीक, खिन्न, विवण २ मदतर, निकृष्टतर, मलिनतर ।
माँद², म स्त्री (देश) शुष्कगोमयराशि, शकृच्चय २ (हिंस्रपशुना) गुहा, गह्वर, विवरम् ।
माँदगी, स स्त्री (फ़ा) रोग २ ग्लानि ग्लानि (स्त्री) ।
माँदा, वि (फ़ा) श्रान्त, क्लान्त २ अवशिष्ट ३ रुग्ण, रोगिन् ।
माम, स पु (सं न) पिशित, पल, पलल, तरस, क्रव्य, आमिष, असन, कीर, जाग्ल्म् ।
—का घी, स पुं, माम-,मर स्नेह, मेदस (न) ।
—पेशी, म स्त्री (स) शरीरस्थ माम पिण्ड, मार्मपिटी, स्नमा, वरनमा, स्नायु, स्नाव (ये पुरुष मे ५००, स्त्रियों मे ५७० होती हैं) २ द्वितीयसप्ताहे गर्भरूपम् ।
—भक्षक, स पु (स) मास-,अद् (पु)- अग्ग मोजिन् भक्षिन्-आहारिन्-आशिन् ।
—भक्षण, म पु (स न) माम भोजन अशन अदनं-आहार ।
—रस, स पु (म) मामभड-ड, दे 'यखनी' ।
मामल, वि (स) पीन, पीवर, मामपूर्ण २ पुष्ट, दृढाग ३ बलवत्, बलिन् । ■ पु, दे 'उडद' ।

मा, म स्त्री (म) लक्ष्मी (स्त्री) २ मातृ (स्त्री) ।
—बाप, म पु, दे 'मातापिता' ।
माइक्रोमीटर, स पु (अ) अणुमापकम् ।
माई म स्त्री [स मातृ (स्त्री)] दे 'माता' २ वृद्धा, जरती स्थविरा ।
—का लाल, स पु, उदार, वदान्य' २ वीर शूर ।
माक़ूल, वि (अ) यथार्थ, न्याय्य, उचित, युक्त, योग्य २ पर्याप्त ३ उत्तम ।
माखन, मं पु, दे 'मक्खन' ।
—चोर, म पु, श्रीकृष्ण ।
मागध, स पु (स) मगधवासिन् २ जरा मध ३ चारण, वदिन् ।
माघ, म पु (स) शिशुपालवधमहाकाव्य लेखको महाकविविशेष । २ तपस् (पु), मासविशेष (जनवरी-फ़रवरी) ।
माजरा, स पु (अ) वृत्त, वृत्तान्त २ घटना ।
माजाया, वि (सं मातृजात) सोदर, सहोदर, सोदर्य ।
माजू, स पु (फ़ा) मायाभावि छिद्रा-फल, मायिका ।
—फल, स पु (फ़ा+म) माया-भावि छिद्रा, फल, मायिकम् ।
माजून, म स्त्री (अ) अवलेह, लेह्य (औषध) २ भंगामिश्रितावलेह ।
माट, म पु (हि मटका) वृहन्नीलभाड २ 'मटका' ।
माटी, म स्त्री, दे 'मिट्टी' ।
माणिक, म पु (स माणिक्य) शोण, रत्न उपल, पद्मराग, लोहितक, रत्नम् ।
मातग, म पु (स) द्विप, गज ।
मात, स स्त्री (अ) परा-अभि परि, भव, पराजय २ पराजित, परास्त, पराभूत ।
—करना, क्रि म, विजि (भ्वा आ अ), पराभू ।
—होना, क्रि अ, पराभू (कर्म), विजित (वि) भू ।
मातदिल, वि (अ मोअतदिल) अनु-ग्रहीन, मध्यम, मामान्य, मध्यमप्रकृतिक ।
मातबर, वि (अ मोतबिर) दे 'विश्वसनीय' ।
मातबरी, स स्त्री (अ+फ़ा) दे 'विश्वसनीयता' ।

मातम, स पु (अ) मृतक ,शोक रुदन, विलाप परिदेवना।

—ख़ाना, स पु, शोकसदनम्।

—पुर्सी, सं स्त्री (अ +फ़ा) आश्वासन,-सान्त्वन, शोकशमन अनुशोचनम्।

—पुर्सी करना, क्रि स अनुशोक प्रकाश (प्र) अनुशुच (भ्वा प से), मृतकबन्धून् समाश्वस (प्रे)।

मातमी, वि (फ़ा) शोक-सूचक प्रकाशक पूर्ण।

—लिबास, स पु (फ़ा +अ)शोक-वेश (प)।

मातरिश्वा, स पु (स-श्वन्) वायु दे वात , पवन अनिल।

मातलि, स पु (स) इन्द्रसारथि।

—सूत, स पु (स) सुरेश , शचीपति , इन्द्र।

मातहत, वि (अ) अधीन, आयत्त।

मातहती, स स्त्री (अ मातहत) अधीनता, आयत्तता।

माता[1], स स्त्री [स मातृ (स्त्री)] जननी, जनयित्री प्रसू (स्त्री), जनी नि (स्त्री), जनित्री, सवित्री, अम्ब (स्त्री), अक्का, अबा, अम्बिका, अम्बालिका, माता (क्वचित्)। २ वृद्धा, स्थविरा, पूज्यनारी ३ गौ (स्त्री) ४ भूमि (स्त्री) ५ शीतला-मसूरी, दे 'चेचक' ६ मसूरीरिका, दे 'खसरा'।

—ढलना, क्रि अ , शीतला शम् (दि प से)।

—निकलना, क्रि अ , शीतला आविर्भू।

—पिता, स पु पितरौ, मातापितरौ, मातरपितरौ, मातानौ, अबाजनकौ।

—मह, स पु (स) मातुर्जनक।

—मही, स स्त्री (सं) मातुर्जननी।

छोटी—,स स्त्री , लघुमसूरिका (हि लाकड़ा काकड़ा)।

माता[2], वि , दे 'मत्त' (१)।

मातुल, स पु (स) मातृभ्रातृ, पितृश्याल , मातृक।

मातुली, सं स्त्री (सं) मातुलानी, मातुलपत्नी।

मातृ, स स्त्री (स) दे 'माता'।

—भाषा, सं स्त्री (स) जन्मभाषा।

मातृक, वि (सं) मातृ विषयक-सम्बन्धिन्। सं पु (स) दे 'मातुल'।

मातृका, सं स्त्री (सं) दे 'माता' २ उप वि,माता, मातृसपत्नी ३ धात्री, धातृका, अक्षराली ४ अ इत्यादय सप्तदेश्य ५ स्वर वर्णचिह्नानि, मात्रा (ा, ि , इ)।

मात्र, अव्य (स-मात्र) एव, केवलम्।

मात्रा, स स्त्री (स) परिम,माण, मान, अंश , भाग २ सकृत्सेव्य औषधमात्रा ३ मात्रिका, कला, ह्रस्ववर्णोच्चारणापेक्षित काल ४ स्वरवर्णचिह्न (ा, ि , ई)।

मात्सर्य, स पु (स न) दे 'मत्सर'।

माथा, स पु (स मस्तक-क>) दे 'मस्तक' (२) अग्र, अग्र भाग-देश ३ मूर्धन् (पु), शिखरम्।

—पच्ची, } सं स्त्री , दे 'मगजपच्ची'।
—पिट्टन, }

—टेकना, मु , चरणयो पत् (भ्वा प से), प्रणम् (भ्वा प अ)।

—ठनकना, मु , आविर्भक्ष्य आशङ्क् (भ्वा आ से)।

—रगड़ना, मु , पादयो पतित्वा याच् (भ्वा आ से)।

मादक, वि (स) मद,-कारक-जनक।

मादकता, स स्त्री (स) मदकारकता।

मादर, सं स्त्री [फ़ा , मि स मातर (मातृ से)] जननी, जनित्री, मातृ (स्त्री)।

—ज़ाद, वि (फ़ा), मि स, मातृजात) सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक, जात्या जन्मना नग्नन (अध , बधिर इ) २ दिगंबर, नग्न ३ सोदर, सहोदर।

मादा, सं स्त्री (फ़ा) नारी, स्त्री , स्त्रीजाति वर्गो जीव।

मादा, सं पु (अ) प्रकृति (स्त्री) उपा दानकारणं २ योग्यता ३ दे 'पीप'।

माधव, सं पु (स) विष्णु , नारायण २ वैशाख ३ वसन्त।

माधवी, सं स्त्री (सं) वासंती, सुगधा, चन्द्रवल्ली, मद्रलता, अतिमुक्तक माधविका २ सुराभेद।

माधुरी, स स्त्री (सं) मधुरता २ सुंदरता ३ मद्यम्।

माधुर्य, सं पु (स न) मधुरतारस, मिष्टत्वं, स्वादुत्वं मधुमयता मिष्टता २ सौन्दर्यं, लावण्य ३ चित्तद्रवीभावमयो ह्लाद , काव्य गुणभेद।

माध्यंदिन, वि (स >) मध्य, मध्यम, मध्यवर्तिन् । [redacted] पु, मध्याह्न, मध्य(ध्ये) दिनम्, उदिनम् २ वाजसनेयिसहितायाः शाखाविशेष ।

माध्यम, वि (स) माध्यमक [—मिका (स्त्री)], माध्यमिक (—मिकी स्त्री) माध्य [—ध्यी (स्त्री)], केन्द्रीय, मध्यम । स पुं (स न) उपकरणं, साधन २ मूत्र सदेशहर ।

माध्यमिक, वि (स) मध्य, मध्यम, मध्यवर्तिन् । स पु बौद्धसम्प्रदायविशेष ।

माध्यस्थ्य, स पु (स न) दे 'मध्यस्थता' ।

माध्वी, स स्त्री (स) मध्वादिनिर्मितसुरा २ माधवी, वासन्ती, सुगधा ।

मान, स पु (स) गर्व, अभिमान, दर्प, अहकार, अवलेप २ समान, प्रतिष्ठा, आदर, समावना, पूजा, प्रणय-यण ३ कोप, प्रीति प्रसाद-अभाव । (स न) यौतव, पौतवं, माप्य, द्रुवय (हि तौल नाप) २ प्रमाणं,—माण, मात्रा ३ इयत्ता, विस्तार ४ भार, गुरुत्व, तौल ५ मारभाव, परिमाण, मात्र, माड ६ मान,-दड-सूत्र ७ साधन, हेतु, युक्ति (स्त्री) ।

—**करना**, क्रि स, सद्-पुरस-,कृ, समन् (प्रे), पूज्-मह् (चु) । क्रि अ, मान धा (जु उ अ), कुप् (दि प से) २ दृप् (दि प अ), गर्व (भ्वा प से) ।

—**चित्र**, स पु (स न) देशालेख्य, प्रदेश चित्र, दे 'नक्शा' ।

—**मंदिर**, स पु (स न) वेधशाला २ कोप भवन, मानगृहम् ।

—**मनौती**, स स्त्री (सं+हि) दे 'मनन' २ पारस्परिकप्रेमन् (पु न) ३ कोपप्रशा दन-ने ।

—**मोचन**, स पु (सं न) कोप, उपशमन अपनयन, प्रसादनम् ।

—**रखना**, क्रि स, दे 'मान करना' क्रि स २ स्वाभिमान-आत्मसमान रक्ष (भ्वा प से) ।

—**हानि**, स स्त्री (स) अपमानं,-वाद, अपभाषा अवधीरणा, मानभग, अवमानना ।

मानता, स स्त्री (हि मानना) दे 'मनन' २ समान, प्रतिष्ठा ।

मानना, क्रि अ (स मनन) क्लृप् (प्रे), तर्क् (चु), उत्प्रेक्ष (भ्वा आ से) २ अगी स्त्री-कृ अभ्युपगम्, अभ्युप इ ([redacted] प अ), मन् (दि आ अ) ३ सम्मानितमिन् भू । क्रि स, दे 'मानना' क्रि अ २ दक्ष प्रवीण पूज्य मन् (दि आ अ) ३ श्रद्धा (जु उ अ), विश्वस् (अ प से) ४ दे 'मन्नत मानना' । स पु, स्त्री-अगी-,करण-कार, अभ्युपगम-गमन, कल्पन, उत्प्रेक्षा-क्षा, विश्वसनम् ।

माननीय, वि (स) पूज्य, पूजनीय, सत्कार्य, आदरणीय, समान्य ।

मानने योग्य, वि, स्त्री-अगी-,कार्य, मन्तव्य, अभ्युपेय २ आदेय, पूज्य, विश्वसनीय ।

माननेवाला, स पु, स्त्रीकर्तृ, मंतृ २ श्रद्धालु, विश्वासिन् ।

मानव, स पु (स) दे 'मनुष्य' ।

मानवी, स स्त्री (स) मानुषी, स्त्री, नारी । वि, मानव, मानुष, पौरुषेय, मनुजोचित ।

मानस, स पु (स न) मनस् चेतस् (न), हृदयं, दे 'मन' (१४) । २ कैलासवर्ती सरोवरविशेष ३ कामदेव, कदर्प । वि, मानसिक, चैत्त बौद्धिक, हार्दिक ।

—**शास्त्र**, स पु, (स न) मनोविज्ञानम् ।

मानसिक, वि (स) मनोभव, मानस, दे 'मानस' वि ।

माना हुआ, वि, स्त्री अगी-,कृत, मत २ पूजित प्रतिष्ठित, विश्वस्त ।

मानिंद, वि (फा) तुल्य, सदृश, वत् ।

मानिक, स पु, दे 'माणिक' ।

मानित, वि (स) आदृत, प्रतिष्ठित, पूजित ।

मानिनी, स स्त्री (स) रूपगर्विका । वि, मानवती, अभिमानिनी २ रुष्ट, प्रतीपा, कुपिता ।

मानी[1], वि (स मिन्) अहकारिन्, दृप्त, गर्वित २ समानित, प्रतिष्ठित । स पु, रुष्ट नायक २ सिंह ।

मानी[2], स पु (अ) अर्थ, तात्पर्यं २ तत्त्व, रहस्य ३ प्रयोजनम् ।

मानुष, स पु (स) मनुष्य, नर, दे 'मनुष्य' २ प्रमाणभेद (धन) । वि, मानुषि(ष)क, मानुष्यक, मनुष्यसबधिन्, मानुष्य, मानुषीय ।

मानुषिक, वि (स) दे 'मानुष' वि।
मानुष्य, स पु (स न) मनुष्यत्वम्। वि, दे मानुष वि।
माने, स पु दे 'मानी' (१ ३)।
मानो, अव्य (हिं मानना) इव, (प्राय मन्) (दि आ अ) से अनुवाद करते हैं।
मान्य, वि (स) दे माननीय'।
माप, स स्त्री (हिं मापना) (सामान्य) मान प्र परि -माण, यौ(पौ)त्व, पत्त्य, द्रवय २ (गजादि) मान,दड सूत्र ३, ३ (बड़ा) भारमान, माड मान ४ (पात्र) प्रतीमान, प्रस्थ ५ मान, मापन, माननिरूपण ६ परिमाण इयत्ता, दे 'मान'।
मापक, स पु (सं) माननिरूपक, मातृ (पु) २ दे 'माप' (१४)।
मापन, सं पु (स न) दे 'मापना' स पु।
मापना, क्रि स (स मापन) प्रपरि,-मा (अ प अ जु आ अ, दि आ अ) मान निरूप (चु) २ तुल् (चु), भारं निरूप, दे 'तौलना'। स पु, स न, मान निरूपण मापन मरिन (स्त्री), तोलन, भारनिरूपणम्।
मापने योग्य, वि, परि,-मेय, तोलयितव्य।
मापनेवाला, स पु, दे 'मापक'।
मापा हुआ, वि परि मित, मानमान, तोलित।
माफ, वि दे 'मुआफ'।
माफिक, दे 'मुआफिक'।
माफी, दे 'मुआफी'।
मामता, स स्त्री (स ममता) दे 'ममता' (१४)।
मामा[1], स पु, दे 'मातुल'।
मामा[2], स स्त्री (फ्रा) मातृ (स्त्री) जननी २ वृद्धा ३ दासी ४ धात्री, मातृका।
मामि(म)ला, स पु दे 'मुआमिला'।
मामी, स स्त्री दे 'मातुली'।
मामू, स पु, दे मातुल'।
मामूल, वि (अ) दे 'अभ्यस्त' २ रीति-परिपाटी ि (स्त्री)।
मामूली, वि (अ) साधारण, सामान्य।
मायका, स पु (हिं माय) उड़ा पितृ-मातृ-गृहम्।
मायल, वि (अ) आनत, प्रवृत्त, प्रवण २ मिश्रित।

माया, सं स्त्री (स) द्रव्यं, धन, संपद् (स्त्री) २ अज्ञान, भ्रान्ति (स्त्री), अविद्या ३ छल, कपट ४ प्रकृति (स्त्री), सृष्टे उपादान कारण ५ ईश्वरीयशक्ति (स्त्री) ६ ईंद्रजाल कुहक ■ देव,-लीला शक्ति (स्त्री) -प्रेरणा ८ ममता-स्वम्।
—कार, स पु (सं) मायाजीविन, ऐन्द्र जालिक।
—ओढना, क्रि स, धन स चि (स्वा प अ)।
—मोह, स पु (स) जगज्जाल २ ममता स्वम्।
—रूप, वि (स) मायामय, अलीक, भ्रांति मय, मायिक।
—वती, सं स्त्री (सं) रति (स्त्री), काम पत्नी।
—वाद, स पु (स) भ्रांतिवाद, जीवजग न्मिथ्यात्ववाद।
मायाविनी, स स्त्री (स) मायिनी, कपटिनी, वञ्चनशीला २ ऐंद्रजालिकी।
मायावी, स पु (स विन्) मायिन् कपटिन, वंचक, धूर्त, शठ २ ऐन्द्रजालिक, कुहक जीविन, मायाकार'।
मायिक, वि (स) कृतक, कृत्रिम, २ दे 'मायावी' (२)।
मायी, वि (स यिन्) मायाविन, धूर्त, वंचक, कपटिन्।
मायूस, वि (फ्रा) दे 'निराश'।
मायूसी, ■ स्त्री (फ्रा) दे 'निराशा'।
मार[1], स पु (स) कामदेव २ विघ्न ३ विष ४ धुत्तूर।
मार[2], स स्त्री (सं मृ) मारणं, हननं, हिंसनं २ घात, वध, हत्या ३ ताडनं, आह नन, प्रहरण ४ आघात, प्रहार ५ युद्धम्।
—काट, स स्त्री, युद्ध २ वध, घात, हननं, हिंसनम्।
—धाड, } सं स्त्री., मारणाघात, मारणताडनं,
—पीट, } अभिमर्द, अभिमर्दपात।
—खाना, } मु., ताड् मृद (कर्म)।
—सहना, }
—गिराना, मु, अत्यल्प निपद् (प्रे)।
—डालना, मु, हन् (अ प अ), मृ-व्या पद् (प्रे)।

—बैठना, मु , परद्रव्य कपटेन आत्मसात्-कृ ।
—भगाना, मु , विद्रु (प्रे), पलाय् (प्रे), सर्वथा परा जि (भ्वा आ अ) ।
—मारना, मु , भृश-अत्यर्थं निर्दय तड् (चु) ।
—लाना, मु , लुट् (चु), अन्यायेन अपहृ (भ्वा प अ) ।
—लेना, मु , दे 'मार बैठना' ।
—हटाना, मु , बलेन अपस् (प्रे)-विद्रु (प्रे) ।
मारक, वि (स) घातक, हिंसक, महारक, नाशक ।
मारका¹, स पु (अ मार्क) चिह्न, लक्षण, अभिज्ञानम् ।
मारका², स पु (अ) युद्ध, संग्राम २ विशिष्ट, वृत्त-घटना ।
मारकीन, स स्त्री (अं नैनुकिन) *मारकीन, स्थूलवस्त्रभेद ।
मारण, सं पु (स न) हनन, हिंसन, व्यापादन २ तान्त्रिकप्रयोगभेद ।
मारतौल, स पुं (पुर्त० मोर्टेलो) महा-भृहद्, घन विघन ।
मारना, क्रि स., (स मारण) व्यापद् (प्रे), हन् (अ प अ), हिंस (भ्वा रु प से) सूद् (चु) २ तड (चु), प्रह (भ्वा प अ), आहन् (अ प अ) ३ पीड् (चु), दु:खयति (ना धा) ४ मल्लयुद्धे रिपु निपद (प्रे)-पराजि (भ्वा आ अ) ५ (किवाड़ादि) अ-पिधा (जु उ अ), आ-सं-वृ (स्वा उ से) ६ धुन प्रक्षिप् (तु प अ), आम (दि प से) ७ निग्रह् (क्र प से) निरुध् (रु प अ) ८ नश्, ध्वंस (प्रे) ९ (धात्वादिक) भस्मीकृ १० अन्यायेन आत्मसात् कृ ११ अनु-स्था (भ्वा प अ) १२ जि (भ्वा प अ) १३ दश (भ्वा प अ) । सं पु , मारण, हनन, निषूदन, हिंसन, विशसन, व्यापादन, प्रमापण २ हत्या, वध, हिंसा, घात ३ आहनन, ताडन, प्रहरण ४ पीडन ५ निपातन ६ पिधान ७ नाशन, ध्वंसन ८ भस्मीकरण ९ अन्यायेन आत्मसात्करण १० दशन, इ ।
मारने योग्य, वि , हन्तव्य, हिंसितव्य, व्यापाद्य २ ताडयितव्य, आहननीय, इ ।
मारनेवाला, स पु , घातक , हिंसक, ताडक ।
मारपेच, म स्त्री (हिं मारना+पेच) कैतव, कपटोपाय ।
मारवाड़, स पु , राजस्थानस्य भागविशेष ।
मारवाड़ी, स पुं , मारवाडवासिन् । सं स्त्री मारवाडी, मारवाडभाषा ।
मारा, वि (हिं मारना) दे 'मारा हुआ' (१ २)।
—जाना, क्रि अ , हन-हिंस-सूद् (कर्म) ।
—मार, स स्त्री , मिथ ताडन, कलि , संघर्ष । क्रि वि , सत्वर, सवेग, शीघ्रतया ।
—मार करना, मु , त्वर् (भ्वा आ से.), शीघ्र या (अ प अ)-कृ ।
—मारा फिरना, मु , मुधा परिभ्रम् (भ्वा दि प से), क्षीणवृत्तिक (वि) पर्यट (भ्वा प से) ।
—हुआ, वि, हत, व्यापादित, मारित, २ ताडित, प्रहृत आहत ।
मारी, स स्त्री (स) दे 'मरी' ।
मारुत, स पु (स) वायु, मरुद (पु), मरुत ।
—तनय, म पु (स) पवन,-सुत पुत्र-ज , मारुति , आंजनेय ।
मारू, स पु (हिं मारना) रागभेद २ रण, भेरी-दुंदुभि । वि , मारक, हृदयवेधक ।
मारे, अव्य (हिं मारना) कारणेन-सात्, हेतो ।
मार्ग, सं पु (सं) अध्वन् पथिन् (पुं), पथ', वर्त्मन् (न) २ चरणपथ , पदवी वि (स्त्री), पद्या, पद्धती ति (स्त्री) ३ प्रतोली, राजपथ , रथ्या, वाहनी, श्रीपथ , सरणी-णि (स्त्री) ४ वीथी-थि (स्त्री), विशिखा ५ उपाय , युक्ति (स्त्री) ।
मार्गशीर्ष, स पु (स) आग्रहायणिक , मार्ग , मार्गशिर -रस् (पु), सहस् (पु) ।
मार्जन, म पु (स न) मार्ष्टि-शुद्धि (स्त्री), मार्जना, मृजा, प्रक्षालन, धावन, शोधन, पवन, निर्मलीकरणम् ।
मार्जनी, स स्त्री (स) दे 'झाड़ू' ।
मार्जार, सं पु (स) दे 'बिल्ला' (-ली स्त्री) ।
मार्जित, वि (स)पूत, शोधित, प्रक्षालित, धौत ।
मार्तंड, म पु (स) सूर्य २ अर्क-पुष्प ३ शूकर ।
मार्दव, म पु (स न) दे 'मृदुता' ।
मार्फ़त, अव्य (अ) दे 'द्वारा' ।

मार्मिक, वि (स) प्रभावशालिन्, हृदयग्राहिन्।

माल, स पु (अ) संपद्-संपत्ति (स्त्री), वित्त, अर्थ २ सामग्री, परिच्छद ३ पण्यजात, पणसा (पुं बहु), क्रय्यद्रव्याणि (न बहु) ४ राजस्व, कर ५ उत्पन्न प्रसव, फल ६ स्वादुभोजन ७ गोपशु, धनम्।

—खाना, स पुं (फा) भांडार, पण्यागारम्।

—गाड़ी, सं स्त्री (फा+हि) द्रव्यशकटी, दे 'गाड़ी'।

—गुज़ार, स पुं (फ़ा) राजस्वदायक, भूमिकरद।

—गुज़ारी, सं स्त्री (फ़ा) भूमि-क्षेत्र,-कर शुल्क।

—टाल, स पु, धनं, वित्त, संपद् (स्त्री)।

—दार, वि (फा) धनिक, धनाढ्य।

—मस्त, वि (फ़ा) त्रिलक्षम, धन, गर्वित मत्त।

माला—, वि, हृसपन्न, हृसमृद्ध।

मालकंगनी, स स्त्री (हिं माल१+स कंगुनी) महाज्योतिष्मती, पणुनी, कनकप्रभा, सुरलता, तीक्ष्णा, तेजस्विनी (लताभेद)।

मालती, स स्त्री (स) सुमना, सुमनस् (स्त्री, न), जाती नि (स्त्री) २ ज्योत्स्ना ३ रात्री।

मालदह, स पु (देश०) बिहार राज्यस्य नगरविशेष २ आम्रभेद।

मालपु(पू)आ, सं पु (अ माल+स पूप) पूप, पिष्टक, दे 'पुआ'।

मालवा, स पुं (स मालव) अवन्तिदेश।

मालवीय, वि (स) मालवसम्बन्धिन् । स पु, मालववासिन् २ विप्रभेद।

माला, स स्त्री (स) माल्यं, स्रज् (स्त्री), मालि(लि-ला)का, आपीड अवतंस, आलि (ली) (स्त्री) २ पंक्ति-आवलि-राजि श्रेणि (स्त्री) ३ समूह, निकर ४ अक्ष-जप,-माला ५ कंठमाला, हार।

—कार, स पु (स) दे 'माली'।

—फेरना, मु, ईश्वरं, भज (भ्वा उ अ), प्रणवं जप (भ्वा प से)।

मालामाल वि (अ) समृद्ध, सम्पन्न, धनधान्यपूर्ण।

मालिक, सं पुं (अ) परमेश्वर २ स्वामिन्, प्रभु ३ पति [मालिका (स्त्री)।]

मालिका, सं स्त्री (सं) पंक्ति श्रेणि नति (स्त्री) २ माला ३ कंठभूषणभेद ४ द्राक्षा, मद्य ५ मालिनी ६ दे 'चमेली'।

मालिकी, स स्त्री (फा मालिक) स्वामित्व, प्रभुत्व, स्वत्वम्।

मालिक्यूल, स पु (अ) व्यूहाणु, अणु।

मालिन, स स्त्री (स मालिनी) मालाकारी, मालिकी।

मालिन्य, सं पु (स न) दे 'मलिनता' २ अंधकार।

मालियत, स स्त्री (अ) मूल्य, अर्घ २ धन ३ मूल्यवद्द्रव्यम्।

मालिया, सं पु, दे 'मालगुजारी'।

मालिश, स स्त्री (स) अभ्यंजनं, मर्दनं, घर्षणं, संवाहनम्।

माली[1], सं पु (स लिन्) मालाकार, मालिक, उद्यानपाल २ जातिविशेष ३ मालाधारिन्।

माली[2], वि (अ माल) आर्थिक, सांपत्तिक, अर्थ-द्रव्य धन, विषयक।

मालीख़ोलिया, स पु (यूनानी) विषाद वायुरोग, श्लेष्मिकोन्माद।

मालीदा, सं पु (फा) दे 'मलीदा'।

मालूम, वि (अ) ज्ञात, दे 'विदित'।

माल्टाफ़ीवर, स पु (अं) माल्टाज्वर।

माल्य, स पु (स न) दे 'माला'(१) २ पुष्प, कुसुमम्।

मावस, सं स्त्री दे 'अमावस्या'।

मावा, स पुं (स मंड) दे 'मांड' २ किण्वद ३ गोधूमादिकस्य दुग्ध ४ अंड,-गर्भ पीतिमन् (पु) ५ तमाखु,-मासर पिण्ड ६ सार, निष्कर्ष ७ सामग्री, उपकरणजातम्।

माशकी, स पु (फा मशक) दृतिहर।

माशा पा, स पु, दे 'मासा'।

वल्लभ, प्रिय।

माशूक़, स पुं (अ) कांत, दयित, वल्लभ, प्रिय।

माशूक़ा, सं स्त्री (अ) प्रिया, कांता, दयिता, वल्लभा।

माष, सं पुं (सं) कुरुविन्द, धान्यवीर, वृषाकर, मासल, बलाढ्य, पित्र्य, पितृभोजन २ दे 'मासा' ३ दे 'माश'।

मास[1], सं पुं (स पु न) वर्षांश, वर्षांग, शुक्लकृष्णपक्षद्वयात्मक काल त्रिंशद्दिनात्मक

समय, मास (पु, इसके पहले पाँच रूप नहीं होते), मासक २ चान्द्रमास, मास, सांवत्सर ३ सौरमास, सावन।

—भर का, वि, मास्य, मासीन (इत्यादि)।

हर—, क्रि वि, प्रति-अनु-मास, मासे मासे।

मास², स पु, दे 'मांस'।

मासड, स पु (हि मासी) मातृष्वसृ, धव पति।

मासा, स पु (स माष) माषक, माष, हेम, धान्यक, अष्टगुञ्जात्मक।

—भर, वि, माष-मात्र २ अत्यल्प।

—तोला होना, मु, दशायाः अस्थिरत्व अनुभवत्व परिवर्तित्वम्।

मासिक, वि (स) मासानुमासिक, प्रतिमासिक, मासि भव, मासान। स पु (स न) अन्वाहार्य, श्राद्धभेद २ रजोदर्शन ३ मासिकवेतनम्।

—धर्म, स पु (स) ऋतु, आर्तव, रजस् (न) रज, रजःस्राव।

—पत्र, स पु (स न) प्रतिमासिक पत्रिका।

मासी, स स्त्री (स मातृष्वसृ) जननी भगिनी।

—का लड़का, स पु, मातृष्वसेय, मातृष्वस्रीय।

—की लड़की, स स्त्री, मातृष्वसेयी, मातृष्वस्रीया।

मासीन, वि (स) मासिक, मास्य, मासानुमासिक।

माह, स पु (फ़ा) दे 'मास' २ चन्द्र ३ प्रिय।

—ताब, स पु (फ़ा) चन्द्र २ चन्द्रिका।

—ताबी, स स्त्री (फ़ा) दे 'महताबी'।

—वार, वि (फ़ा) दे 'मासिक'। क्रि वि, प्रतिमासम्। स पु, मासिकवेतनम्।

—वारी, वि (फ़ा) दे 'मासिक'।

माहात्म्य, स पु (स न) महिमन्-गरिमन् (पु), महत्त्व, महत्ता, गौरव, माहात्म्य, २ तीर्थक्षेत्रादिमाहात्म्यवर्णनपरग्रन्थविशिष्टकम्।

माही, स स्त्री, (फ़ा) मीन, मत्स्य।

—गीर, स पु (फ़ा) दे 'मछुआ'।

माहुर, स पु (स मधुर) विष, गरल-म्।

मिक़दार, स स्त्री (अ) मात्रा, परिमाण, मानम्।

मिक़्सचर, स पु (अ) मिश्रम्।

मिचकाना, क्रि स (हि. मिचना) नेत्रेऽक्षिणी निमील् (भ्वा प से) उन्मील् च, नयने पुन पुन निमिष् (तु प से) उन्मिष् च, अनवरत निमेषोन्मेष कृ २ दे 'मीचना'।

मिचना, क्रि अ व 'मीचना' के कर्म रूप।

मिचलाना, क्रि अ, दे 'मचलाना' (१)।

मिजराब, स स्त्री (अ) परि(री)वाद, वादनमुद्रा।

मिज़ाज, स पु (अ) प्रकृति, स्वभाव २ शारीरिक-मानसिक-अवस्था-दशा ३ दर्प।

—दार, वि (अ+फ़ा) दृप्त, गर्वित।

—पुरसी, स स्त्री (अ+फ़ा) कुशल-प्रश्नः।

—शरीफ़, वाक्यांश (अ), अपि कुशली भवान्।

मिटना, क्रि अ (स मृज्>) अप-व्या-मृज् (कर्म), विलुप् (दि प से) २ उच्छिद् (कर्म), विनश् (दि प वे), उन्मूल् (कर्म) ३ निर्-अस् (कर्म), खण्ड् प्रत्याख्या (कर्म)। स पु, लोप, अपव्या-मृष्टि (स्त्री), उच्छेद, विनाश, निरास, प्रत्याख्यानम्।

मिटाना, क्रि स, व 'मिटना' के प्रे रूप।

मिटा हुआ, वि, अपव्या-मृष्ट, विलुप्त, विनष्ट, खण्डित।

मिट्टी, स स्त्री [स मृत्ति (स्त्री)] मृत्तिका, रेणु, धूलि (स्त्री) मृदा, मृद् (स्त्री)। (अच्छी मिट्टी) मृत्स-त्स्ना २ पृथिवी ३ भस्मन् (न, सुवर्णादि की) ४ शरीर ५ शव।

—का तेल, स पु, मृत्तैलम्।

—का शरीर, स पु, नश्वरदेह।

—का पुतला, स पु, मनुष्य २ मानव शरीरम्।

—का माधव, स पु, जड, मूर्ख।

—करना, मु, नश्-ध्वंस् (प्रे) २ कलुषयति (ना धा)।

—के मोल, मु, अत्यल्प-मूल्येन-अर्घेण, निर्मूल्यमिव।

—ठिकाने लगाना, मु, अन्त्येष्टिं कृ २ शवं भूमौ निधा (जु उ अ)-न्यस् (प्र)।

—डालना, मु, शम् (प्रे, शमयति), गुह् (भ्वा उ से)।

—पलीद या ख़राब होना, मु, परिक्षि (कर्म), क्षय-नाश इ-या (अ. प. अ.),

परिक्षीण-गतविभव (वि) भू, दुर्दशां आपद (दि आ अ)।

—में मिलना, मु, दे 'मिट्टी पलीद होना' २ मृ (तु आ अ) पञ्चत्वं गम् ।

मिट्ठी, स स्त्री (स मिष्ट>) चुम्बन, दे 'चूमा'।

मिट्ठू, स पु (स मिष्ट>) मधुरभाषिन् २ शुक, कीर । वि मौनिन्, तूष्णीक, प्रियवद ।

अपने मुँह आप मियां मिट्ठू बनना, मु, विकत्थ् (भ्वा आ से), आत्मानं श्लाघ् (भ्वा आ से)।

मिठाई, सं स्त्री (हिं मीठा) खाद्य, मिष्टान्न, मिष्ट, मोदकजात २ दे 'मिठास'।

मिठास, स स्त्री (हिं मीठा) मधुरतास्वं, मधुरिमन् (पु), माधुर्यं, मिष्टत्वम् ।

मिड (डि)ल, वि (अ) मध्य, मध्यम, मध्यवर्तिन् । स पु मध्यमा कक्षा (स्त्री)।

—ची, वि, अल्पशिक्षित (तिरस्कारसूचक)।

—स्कूल, स पु, मध्यम-विद्यालय ।

मित, वि (सं) परिमित, सीमित, ससीम २ अल्प, स्तोक ।

—भाषी, वि (स षिन्) मित-,वाक्-पथ, अल्पवादिन् ।

—भोजी, वि (स जिन्) दे० 'मिताशी'।

—व्यय, स पुं
—व्ययिता, सं स्त्री } (स) अल्प परिमित स्तोक-,व्यय -व्ययिता, अमुक्तहस्तत्वम् ।

—व्ययी, वि (स -यिन) अमुक्तहस्त, अल्प स्तोक-,व्ययिन् ।

मिताशन, स पु (स न) परिमितभोजन, ईषद्भक्षण, मिताहार २ वि दे 'मिताशी'।

मिताशी, वि (स शिन) मिताशिन, परिमित-अल्प इषद्, भोजिन भुज ।

मिती, सं स्त्री (सं मिति >) देशीयतिथि (पु स्त्री) २ दिन, दिवस ।

—वार, क्रि वि, तिथिक्रमेण, तिथ्यनुसारम् ।

मित्र, स पुं (सं न) सुहृद् (पु) मित्र (पु), वयस्य २ सहचर, [illegible]

मित्रता, सं स्त्री (सं) सखित्व, सख्यं, [illegible], सौहार्द, मैत्री, मैत्र्य, मित्रत्वम् ।

मिथुन, सं पु (सं न) द्वंद्व, द्वं(न्द्व)न्द्व (दि), जायापती, स्त्रीपुंसौ युग्म-युग्मं युगल

२ रति (स्त्री), सम्भोग ३ ४ राशि-लग्न, विशेष (ज्यो)।

मिथ्या, त्रि (स अव्य) अनृत, असत्य, वितथ २ काल्पनिक, अवास्तविक, मायामय ।

—वादी, वि (स दिन्) अनृत असत्य मृषा-वितथ, भाषिन् आलापिन्-वादिन् ।

मिनिमम, वि (अं) न्यूनतम, अल्पिष्ठ ।

मिन्नत, स स्त्री [अ, मि स विनति (स्त्री)] प्रार्थना, निवेदनम् ।

मिमियाना, क्रि अ (अनु मिनमिन>) मिणमिणायते (ना धा), मे मेशब्द कृ, रेभ् (भ्वा आ से), उ (भ्वा आ [illegible], अवने)।

मियाँ, स पु (फा) स्वामिन्, भर्तृ २ पति, भर्तृ ३ (संबोधनशब्द) महाशय ! महोदय ! (मुसल) ४ अध्यापक ५ दे 'मुसल्मान'।

—मिट्ठू, स पु (फा+हिं) मधुरभाषिन्, मधुवाच (पु) २ शुक ३ मूर्ख ।

मियान, सं स्त्री (फा) असि, कोश प, खड्ग ,पिधानम् ।

मियाना, वि (फा) मध्यम, मध्याकार ।

मियानी, सं स्त्री (फा मियान) पादाया मस्य मध्यमो वस्त्रखंड २ मध्यमा, मध्य कोष्ठक (पु)।

मिरगी, स स्त्री (स मृगी) अपस्मार ,भ्रामरम् ।

मिर्च, स स्त्री [स मरि(री)च] (काली) कृष्ण, गो(का)लक, श्याम, ऊ(औ)षण, कटुक, शाखाग सर्वहित, धर्मपत्तन, वेल्लज, कफविरोधि (न) पलितम् । (लाल) कुम्भक, मरि(री)च, तीक्ष्णशक्ति (स्त्री), उज्ज्वला, भनदा, कटु वीरा तीक्ष्णा (मकरंद) मिन-मरि(री)च वल्लीज, धवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उग्र, स्वभाव ।

नमक—लगाना, मु अत्युक्त्या वर्ण् (चु)-प्रतिपद् (प्रे) अतिवच् (अदा प स)।

मिर्ज़ा, स पुं > मिर्च ([illegible])।

मिलता जुलता, वि तु य, सदृश ।

मिलन, सं पुं (सं न) सं(मना)गम, संयोग, संमिलन, परस्परसंभाषणार, [illegible] २ मिश्रण, संयोग, संसर्ग, [illegible] ।

—सार, वि, मिलन [illegible] मासमप्रिय ।

—सारी, सं स्त्री [illegible] मिलन, शीलता ।

मिलना, क्रि अ (स मिलन) मिश्र-सङ्गत-संयुज्-समूह (कर्म), स्त्री [illegible]

२ समिल् (तु प से), सङ्ग(अ प अ), सगम् (भ्वा आ अ), आसमा-मद्(भ्वा प अ), आसमा,-गम्, अभिमुखी-मुखी भू, नयन, पथ विषयं या (अ प अ) ३ तुल्य-सम-सदृश (वि) वृद् (भ्वा आ से) सवद् (भ्वा प से) ४ आलिङ्ग् (भ्वा प से), परिरभ (भ्वा आ अ) ५ यम् (भ्वा प अ), सुरत आतन् (त प से) ६ लभ (भ्वा आ अ) अधिगम ७ एक-सम,-स्वर (वि) भू (सितारादि)। स पु, दे 'मिलन' (१२)। ३ सादृश्य, साम्य ४ आलिङ्गन ५ मैथुन ६ लाभ ७ समस्वरता, इ।

मिलनी, स स्त्री (हिं मिलना) औद्वाहिक मि(मे)लनम्।

मिलवाना, क्रि प्रे, व 'मिलना' के प्रे रूप।

मिला-जुला वि, मिश्रित २ सम्मिलित।

मिलान, स पु (हिं मिलाना) समेलन, समिश्रण २ समी-सदृशी,-करण, तुलना ३ सत्यापन, प्रामाण्यपरीक्षा।

मिलाना, क्रि स, व 'मिलना' के प्रे रूप।

मिलाप, स पु (हिं मिलना) दे 'मिलन'(१) २ सौहार्द यें, मैत्री ३ सयोग, रति (स्त्री)।

मिलावट, स स्त्री (हिं मिलाना) अपद्रव्येण मिश्रण-मेलनम्।

—करना, क्रि स, (अपद्रव्येण) समिश्र (चु)।

मिला हुआ, वि, मिश्र, मिश्रित, सपृक्त, ससृष्ट २ सगत, समिलित, सघुटीभूत ३ लब्ध, प्राप्त।

मिलिंद, स पु (स) भ्रमर, षट्पद।

मिलिटरी, वि (अ) साग्रामिक सामरिक, सैनिक। स स्त्री, सेना, सैन्य, वाहिनी।

मिल्क, स पु (अ) दुग्ध, पयस (न), क्षीरम्।

मिल्कियत, स स्त्री (अ) भूमि (स्त्री) रि(ऋ)क्थ २ द्रव्य, सपत्ति (स्त्री), दाय।

मिल्लत[१], स स्त्री (हिं मिलना) मैत्री २ मिलनशीलता।

मिल्लत[२], स स्त्री (अ) धर्म, संप्रदाय, मतम्।

मिल्लिग्राम, स पु (अ) सहस्रिधान्यम्।

मिल्लिमीटर, स पु (अ) सहस्रिशा २ रर मुक्तभूमि।

मिशन, स पु (अ) उद्देश्य, लक्ष्यम् २ प्रचारकमण्डलम् ३ प्रतिनिधिमण्डलम्।

मिशनरी, स पु (अ) विधर्म, प्रचारक २ दे 'पादरी'।

मिश्र, स पु (स) ब्रिप्रोपाधिभेद २ मिश्रित, मिश्रितद्रव्य, योग सकर समिपात। वि, मिश्रित, मिश्रापन, स-सृष्ट-मिश्र-मिलित ३ श्रेष्ठ।

मिश्रण, स पु (स न) सयोजन, समेलन, समिश्रण, एकी एकत्र,-करण, समर्जन २ नाना द्रव्यसमुदाय, दे 'मिश्र' (२)। ३ योग, सकलन, दे 'जमा' (गणित)।

मिश्रित, वि (स) ससृष्ट, समिश्र, दे 'मिश्र' (वि)।

मिष, स पु (स न) छल, कपट २ व्यप देश, व्याज, कुनकहेतु।

मिष्ट, स पु (स) मधुररस। वि, दे 'मीठा' (१)।

—भाषी, वि (स विन्) मधुरभाषिन्, प्रियं वद।

मिष्टान्न, स पु (स न) दे 'मिठाई' (१)।

मिस[१], स पु, दे 'मिष' (१)।

मिस[२], स स्त्री (अ) कुमारी, कन्या, अक्षता।

मिसरा, स पु (अ) पद्यपाद, श्लोकचरण।

मिसाल, स स्त्री (अ) उपमा २ उदाहरण, दृष्टान्त ३ लोकोक्ति (स्त्री), आभाणक।

मिसिल, स स्त्री (अ) लेख, पञ्जिका।

मिस्कीन, स पु (अ) नि सहाय, निराश्रय २ दरिद्र, अकिंचन ३ सरल, सुशील।

मिस्टर, स पु (अ) मिश्र, महाशय महोदय।

मिस्तरी, स पु (अ मास्टर) कुशल,-शिल्पिन् शिल्पकार।

मिस्र, स पु (अ = नगर) मिश्रदेश।

मिस्री[१], स पु (अ मिस्र) मिश्रदेशवासिन्। स स्त्री, मिश्रदेशभाषा।

मिस्री, स स्त्री, (अ) खण्ड, मोदक शर्करा, शकरजा, शार्कर, सान्द्र, सितोपला, सिता खट, खण्डक।

मिस्ल, वि (अ) तुल्य, समान, इव।

मिस्सा, स पु (स मिश्र>) *मिश्रान्नम्।

मिस्सी रोटी, स स्त्री, वेढमिका।

मिस्सी-सी, स स्त्री (फा मिसी) दत, *मसी-मसि (स्त्री), दत्यचूर्णभेद।

—की नल करना, मु अत्यान मूष-मह् (मु) प्रमाथ (प्रे)।

मींगा, स स्त्री दे 'गिरी'।

मीआद, स स्त्री (अ) काल, अवधि, नियत समय २ अनेध-कारावास-अवधि।

मीआदी, वि (अ मीआद) सावधिक, नियतकालवत्।

—बुख़ार, स पु, सावधिकज्वर २ सान्निपातिकज्वर।

मींचना, क्रि स (स मिष्) निमिष (तु प से) स्मील् निमील् (भ्वा प से) जैसे मुकुलयति (ना धा)।

मीज़ान, स पु (अ) योग, सकल, परिसंख्या।

मीटिंग, स स्त्री (अ) सभा, गोष्ठी, अधिवेशनम्।

मीठा, वि (स मिष्ट) मधुर मधुल, मधुमय २ सरस, स्वादु सस्वाद, स्वादवत् ३ अम्ल, मधर ४ मध्यम, साधारण ■ मंद मद ६ नपुंसक ७ प्रिय, रुचिकर। ८ सुशील सरल। स पु, मधुरनंदी, मिष्टनिंबूक, मधुरनीर, मधुजंबीर, मधूली, मधुफला २ मिष्टान्न ३ मिष्ट, गुड, शर्करा इ।

—आलू, स पु, दे 'शकरकंद'।

—चावल, स पु, मिष्ट गुड ओदन (नम्)।

—तेल, स पु तिल, तैलस्नेह २ सरस सर्षतैलम्।

—तेलिया, स पु वत्सनाभ, प्राणहारक, मधुपुन गरल, श्वेट, प्रदीपन।

—नीबू, स पु दे 'माठा' स पु (१)।

—पानी ■ पु कीर्त्येयन्।

—बोलना, मु, प्रिय मृ (अ उ), मधुर भण (भ्वा ■ से)।

मीठा छुरा, स स्त्री, अन शत्रु, कपटमित्र, विश्वासघातक २ कुटिल कपटिन्।

मीठीमार, स स्त्री, गूढ़ गुप्त-आन्तरिक-ताडनं प्रहार।

मान, स पु (सं) दे 'मछली' (२२) राशि, राशि लग्नम्।

—मेख निकालना, मु, गुणदोषान् परीक्ष् (भ्वा आ से) २ छिद्रं अन्विष् (दि प से)।

मीना, सं पु (फ़ा) चित्र-बहुवर्ण-काच २ नीलप्रस्तरभेद ३ धातुरंजन चित्रण (इनेमेल) ४ सुरापात्र।

—कार, स पु (फ़ा) धातु, रंजक चित्रक।

—कारी, स स्त्री (फ़ा) दे 'मीना'(१)।

—बाज़ार, स पु (फ़ा) कांतापण, मनोज्ञमेला, प्रदर्शनी।

मीनार, स पु (अ मनार) स्तम्भ-प्रस्तम्भ, कीर्तिस्थ।

मीमांसा, स स्त्री (स) दर्शनशास्त्रविशेष २ विचार, विवेचन, निर्णय।

मीर, स पु (फ़ा) नायक, प्रधान।

—मजलिस, स पु (फ़ा) सभा, पति अध्यक्ष।

—मुंशी, स पु (फ़ा + अ) मुख्य, लेखक, कायस्थ।

मीरास, स स्त्री (अ) रिक्थ, दाय, पितृद्रव्यम्।

मीरासी, स पुं (अ मीरास) संगीतकुशल-यवनजाति विशेष २ भंड, वैहासिक।

मील स पु (अ मइल) कोशार्द्ध, अर्द्धक्रोश, मील, मीलकम्।

मीलन, स पु (स न) पिधान, निमीलनं, मुद्रणम् २ संकोचन, संहरणं, आकुंचनम्।

मीलित, वि (स) पिहित, निमीलित, मुद्रित २ संकोचित, संहृत, आकुंचित।

मुंगरा, सं पु (सं मुद्गर) वि, घन द्रुघण, प्रघण। [मुँगरी(स्त्री) क्षुद्रमुद्गर इ.]।

मुंज, स पु, दे 'मूँज'।

मुंड, सं पु (स पु न) शिरस् (न), शीर्ष मूर्धन् (पु), मस्तकं २ छिन्न-शिरस् शापम्। सं पुं, स्थाणु, निष्पत्र वृक्ष २ राहु ३ नापित, मुंडक ४ उपनिषद्विशेष। वि मुंडित, वापितमुंड, कृत्तकेश (शा, शी स्त्री) २ अधम।

—माला, सं स्त्री (सं) छिन्नमस्तकमाल्यम्।

—मालिनी, स स्त्री (स) काली।

—माली, स पु (स न्निन्) शिव।

मुंडक, सं पुं (सं) नापित २ उपनिषद् विशेष ३ छिन्न, शीर्षम्।

मुंडन, स पुं (सं न) क्षौर, केश-छेदनं वपन, परिवापनं, भद्रकरणं २ चूडा, चूडाकरणं-कर्मन् (न), संस्कारविशेष (धम)।

मुँडना, क्रि अ (स मुडन) व 'मूँडना' के कर्म के रूप।

मुंडा, स [illegible] (स मुड) मुंडित, उप्तकेश, छिन्नमूर्द्धन, कृत्त-केश २ कृत्तकेश साधु शिष्य ३ शृगहीनपशु ४ अग-अवयव शाखा, हीन ५ लिपिविशेष (महाजनी, ल्डे) ६ उपानत्प्रकार।

मुँडाई, स स्त्री (हिं मूँडना) दे 'मुडन' (१)। २ मुडन, मृत्या भृति (स्त्री)।

मुँडासा, स पु [स मुडवासस् (न)] उष्णीष ध, दे 'पगडी'।

मुडित, वि (स) दे 'मुड' वि।

मुडी[1], स, स्त्री (हिं मुडा) मुडा, वपतकेशा स्त्री २ विधवा।

मुडी[2], स पुं (स मुडिन्) मुडित, लूनकेश २ नापित ३ सन्यासिन्।

मुँडेर, स स्त्री (स मुड >) दे 'मुँडेरा' २ दे 'मेंड'।

मुँडेरा, स पु (स मुड >) प्राकारशीर्ष, कुड्यमुख-अम्।

मुँडेरी, स स्त्री, दे 'मुँडेरा' तथा 'मेंड'।

मुडो, स स्त्री (स मुण्डा) मुण्डिता, वपिता, क्षुरिता, उप्त-कृत्त, शिरा-मूर्द्धजा २ विधवा, मृतभर्तृका।

मुतक्किल, वि (अ) स्थानान्तर नीत २ पर हस्ते समर्पित परस्वत्वे दत्त।

मुतख़ब, वि (अ) निर्वाचित, वृत, चित २ उत्कृष्ट, श्रेष्ठ।

मुतज़िम, स पु (अ) अध्यक्ष, व्यवस्थापक।

मुतज़िर, वि (अ) प्रतीक्षक, प्रतीक्षाकारिन्।

मुँदना, क्रि अ (स मुद्रण) व मूँदना के कर्म के रूप।

मुँदरा, स पु (स मुद्रा) (योगिना) कर्ण, मुद्रा-कल्पन।

मुदरी, स स्त्री (हिं मुँदरा) अगुली(री)य यक, ऊर्मिका।

मुशियाना, वि (अ०) लेखक सदृश-उप युक्त। स स्त्री, लेखक-भृति (स्त्री)-मृत्या।

मुशी, स पु (अ) लेखक, कायस्थ लिपिकार।

मुसिफ़, स पुं (अ) निर्णेतृ, धर्मन्याय अध्यक्ष-अधिकारिन्।

मुसिफ़ाना, वि (अ) न्याय-उचित-युक्त अनुसारिन्, न्याय्य।

मुसिफ़ी, स स्त्री (अ मुसिफ़) १ २ न्याया-ध्यक्ष पद-कार्य-सभा ४ निर्णय ५ न्याय।

मुँह, स पु (स मुख) आस्य, तुड, वक्त्र, वदन, लपन, आनन २ मुख-वदन-आनन, मडल ३ (बर्तन आदि का) कण्ठविवर, मुख ४ छिद्र, रंध्र ५ आदर ६ सामर्थ्य ७ साहस ८ उपरितनभाग, कर्ण, कठ स्थान ९ विद्यमानता, उपस्थिति (स्त्री)।

—**अँधेरा**—स पु, प्र-वि, मात, विहान-न, उषा, उषस् (स्त्री)।

—**काला**, स पु अपमान, अपध्वस् (न)।

—**चोर**, वि, लज्जालु, हीमत, सलज्ज।

—**जबानी**, वि, वाचिक, लेखरहित। क्रि वि, वाचैव सभाषणेन।

—**जोर**, वि, वाचाल, वावदूक २ दुर्दान्त ३ दे 'मुँहफट'।

—**दिखाई**, स स्त्री, नवोढामुखदर्शन २ मुख दर्शनोपहार (विवाह की रीतियाँ)।

—**देखा**, वि, बाह्य, उपरितन, कृत्रिम।

—**फट**, वि अवाच्यवस, वाक्चपल, वाग्दुष्ट, अविमृश्यवादिन्।

—**बोला**, वि, धर्म (धर्म भ्राता आदि)।

—**मांगा**, वि, यथेष्ट, यथेच्छ, यथेप्सित।

—**उतरना या निकल आना**, मु, कृशी-तनू भू, कृशवदन (वि) तन् (दि आ से), क्षि (भ्वा प अ)।

—**का कौर**, मु सुलभ द्रव्य-वस्तु (न)।

—**काला करना**, मु, दुष् (प्रे दूषयति), कलङ्कयति (ना धा), अपकीर्ति जन् (प्रे)।

—**काला होना**, मु, कलङ्कित-दूषित (वि) भू, अपयशस् (न), लभ (भ्वा आ अ)।

—**की खाना**, मु, नितरा पराजि (कर्म) सुतरा अभिभू (कर्म) २ लज्जितो भू ३ दुर्दशा आपद् (दि आ अ)।

—**खोलना**, मु, वद् (भ्वा प से) २ गाली दा अपभाष (भ्वा आ से) ३ अवगुठन अपास् (प्रे)।

—**जुठारना या जूठा करना**, मु, नाममात्रमेव भुज् (रु आ अ)।

—**त(ता)कना**, मु, स्थिर आ-अव-लोक् (चु) २ विस्मि (भ्वा आ अ), चकित (वि) स्था (भ्वा प अ)।

—**देखते रह जाना**, मु, दे 'मुँह ताकना'।

—देखे की प्रीत, मु, मृषास्नेह कृत्रिमानुराग।
—पर छाना, मु बद् (भ्वा प मे) कथ् (चु)।
—पर हवाइयां उड़ना, मु (भयत्रासादिभि) मुख विवर्णीभू।
—फ़क होना मु, दे 'मुँहपर हवाइयां उड़ना'।
—फुलाना या सिकोड़ना, मु, रुष्-कुपित क्रुद्ध (दि) भू।
—फेरना, मु, उपेक्ष् (भ्वा आ मे), अपरज् (दि प अ)।
—बनाना, बिगाड़ना या चिढ़ाना, मु, विम्ब (चु) मुख विकृ, स्वमुखविकारैः उपअवहस् (भ्वा प मे)।
—मीठा करना, मु, उत्कोचं दा।
—में पानी भर आना, मु, विप्रलुभ् (दि प से) अत्यर्थं अभिलष् (भ्वा उ मे)।
—लटकाना, मु, दे 'मुँह फुलाना'।
—(किसी के) लगना, मु, उद्धत इव आचर् (भ्वा प से) २ धृष्टतया प्रश्नोत्तर कृ।
—लगाना, मु, हीनान् मित्रीयति (ना धा) अनुमद् (क् प मे), उद्धतान् विधा (जु उ अ)।
—से फूल झड़ना, मु सुमधुर वच (वम)।
मुहँ—, मु परिपूर्ण, आकर्ण पूर्ण, निभर।
मुँहासा, स पु (हिं मुँह) यौवन-कटक पिड(डि)का।
मुअज़्ज़म, वि (अ०) पूज्य, ममान्य २ महत्, ज्येष्ठ।
मुअत्तल, वि (अ) आनियतकाल अधिकाराद् च्यावित अथवा प्रदित। २ दे 'बेकार'।
मुअत्तली, सं स्त्री (अ मुअत्तल) आनियत काल अधिकार, भ्रंश च्युति (स्त्री) २ दे 'बेकारी'।
मुअद्दब, वि (अ) सभ्य, शिष्ट।
मुअद्दबाना, अव्य (अ) सविनयम्, वि, नम्र, विनयेन, नम्रतया।
मुअम्मा, स पु (अ) प्रहेली, प्रहेलिका, प्रश्नदूती २ गुह्य, गोप्यं, रहस्यं।
मुअल्ला, वि (अ) उच्च, उत्कृष्ट, प्रकृष्ट २ उच्च, पद-अधिकार।
मुआ, वि, दे 'मुर्दा'।
मुआफ़, वि (अ) हीन, मोचित, दोषदंड, मुक्त।
—करना, दे 'क्षमा करना'।
मुआफ़िक, वि (अ) अनुकूल, अनुरूप २ सदृश, तुल्य ३ अन्यूनाधिक ४ यथेष्ट।
मुआफ़ी, स स्त्री (अ) दे 'क्षमा' २ कार मुक्तभू (स्त्री)।
मुआमिला, स पु (अ) उपजीविका, वृत्ति (स्त्र), व्यवसाय २ पारस्परिकव्यवहार, क्रयविक्रय, दानादान ३ वृत्त, वार्त्ता, विषय ४ कलह, विवाद ५ अभियोग ६ प्रतिज्ञा, समय।
मुआयना, स पु (अ) दे 'निरीक्षण'।
मुआवज़ा, सं पु (अ) निष्कृति (स्त्री), निस्तार, प्रतिफल २ क्षतिपूरण हानिपूरण, मूल्यम्।
मुकद्दमा, स पु (अ) अभियोग, अर्थ, अथ, कार्यं, व्यवहार, व्यवहारपदम्।
—करना या दायर करना, क्रि स, अभियुज् (रु आ अ, चु), राजकुले निविद् (प्रे)।
मुकदमेबाज़, सं पु (अ + फ़ा) कार्यार्थिन्, व दिन्, व्यवहत्, अभियोगशील।
मुकदमेबाज़ी, सं स्त्री (अ + फा), अभियोगशीलत्वा, व्यवहर्तृत्वम्।
मुकद्दमा, स पु, दे 'मुकदमा'।
मुकद्दर, स पु (अ) भाग्यं, दैवम्।
मुकद्दस, वि (अ) पवित्र, पुण्य, पावन।
मुकम्मल, वि (अ) समाप्त, अवसित २ सं पूर्ण, नि शेष।
मुकरना, क्रि अ (सं मा+न+करणं) अप-निह्नु (अ आ अ), अपलप् (भ्वा प से) निराकृ।
मुक़रनी, सं स्त्री, दे 'मुकरी'।
मुकरी, स स्त्री (हिं मुकरना) कविताभेद, अपह्नुतियुता कविता।
मुकर्रर, क्रि वि (अ) पुनरपि, द्वितीयवार, भूय।
मुक़र्रर, वि (अ) नियत, निश्चित २ नियुक्त।
मुक़ाबला, सं पु (अ) विरोध, प्रतिद्वंद्विता, प्रातिकूल्यं २ स्पर्धा, संघर्ष, अहमहमिका, प्रतियोगिता ३ समान, युद्ध ४ तुलना, औपम्यं ५ साम्यं, सादृश्यं ६ मनी-सदृशी, करणम्।
—करना, क्रि स, स्पर्ध् (भ्वा आ से), संघृष् (भ्वा प से) २ प्रतिद्व, विरुध्

(रु उ अ) ३ युध (दि आ अ) ४ तुल (चु), उपमा (नु आ अ) ५ समी-सदृशी-कृ ।

मुक़ाम, स पु (अ) स्थान, स्थल २ विराम स्थान, दे 'पड़ाव' ३ विराम, निवेश ४ आ निवास, गृह ५ अवसर ।

—करना, क्रि अ, विश्रम् (दि प से), निविश (तु प अ), विरम् (भ्वा प अ)।

मुकुंद, स पुं (स) श्रीकृष्ण २ रत्नभेद ३ पारद ४ मोक्षद, परित्रातृ ।

मुकुट, स पु (स न) किरीट-ट, मकुट, कोटीर, मौलि, उत्तंस ।

मुकुर, स पु (स) दर्पण, दे ।

मुकुल, स पु (स पु न) कुड्मल, दे 'कली' २ आत्मन (पु) ३ शरीर ४ पृथिवी ।

मुकुलित, वि (स) समुकुल, सकुड्मल २ ईषद्विकसित, अर्द्धोन्मिषित अर्द्धनिमीलित ३ निमेषोन्मेषयुक्त ।

मुक्का, स पु (स मुष्टिका) मुष्टि (पु स्त्री), मुस्तु, मुचुटी, सपिंडिताङ्गुलिबद्ध पाणि २ मुष्टि-मुचुटी, प्रहार-घात-ताड़ हत ।

—मारना, क्रि स, मुचुट्या प्रहृ (भ्वा प अ)।

मुक्केबाज़, (हिं + फ़ा) मुष्टि-योध-योधिन् ।

मुक्केबाज़ी, स स्त्री, (हिं + फ़ा) मुष्टियुद्ध, मौष्टा, मुष्टिक, मुष्टी(ष्टा)मुष्टि (अव्य)।

मुक्त, वि. (स) लब्ध-प्राप्त-मोक्ष निर्वाण, निस्तीर्ण २ मोचित, स्वाधीन, बन्धन-निरोध रहित ।

—कंठ, वि (स) तारस्वर, महास्वन २ अविमृश्यवादिन्, अयतवाच ।

—हस्त, वि (स) व्ययशील, अतिव्ययिन्, बहुव्यय ।

मुक्ता, स स्त्री (स) } दे 'मोती' ।
—फल, स पु (स न) }

—हार, स पु (स) मुक्तावली ।

मुक्तागार, स पु (स न) शुक्ति (स्त्री), शुक्तिका, मौक्तिक-प्रसू (स्त्री) प्रसवा ।

मुक्ति, स स्त्री (स) मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण, श्रेयस (न), निःश्रेयस, अमृत, अपवर्ग, अपुनर्भव २ मोचन, निर्यातना-ना, निरोधाभाव ३ स्वच्छंदता, स्वतन्त्रता ।

—क्षेत्र, स पु (स न) काशी वाराणसी ।

—धाम, स पु (स न) मोक्ष स्थानम् तीर्थम् ।

—फ़ौज, स स्त्री (स + अ०) मुक्तिसेना, ख्रिस्तधर्मप्रचारकसंघ ।

मुख, स पु (स न) दे 'मुँह' ।

—बंध, स पु (स न) प्रस्तावना, भूमिका ।

मुखड़ा, स पु (स मुख) दे 'मुँह' (२) ।

मुख़्तार, स पु (अ) प्रति, निधि पुरुष हस्तक २ पराभियोगकारिन् ३ उपाभिभाषक ।

—नामा, स पु (अ + फ़ा) प्रातिनिध्य प्रतिनिधित्व पत्रम् ।

मुख़्तारी, स स्त्री (अ मुख़्तार) पराभियोग कारिता-त्व २ उपाभिभाषकता-त्व ३ प्रातिनिध्यम् ।

मुख़बिर, स पु (अ) दे 'जासूस' ।

मुख़बिरी, स स्त्री (अ मुख़बिर) दे 'जासूसी' ।

मुखर, वि (स) कटु-अप्रिय-वादिन् भाषिन् दुर्मुख २ वाचाल, वाचाट ३ नेतृ, अग्रयायिन् ४ शब्दायमान ।

मुखरित, वि (स) प्रति, ध्वनित नादित ।

मुखस्थ, वि (स) मुखाग्र, कण्ठाग्र, कण्ठस्थ ।

मुख़ालिफ़, वि (अ) विपक्षिन्, विरोधिन् २ वैरिन् ३ प्रतिद्वंद्विन् ।

मुखिया, स पु (स मुख्य) नेतृ, नायक, पुरो अग्र-गा-गामिन्, अग्रणी, प्रधान, मुखर २ ग्रामणी (पु), ग्राममुख्य ।

मुख़्तलिफ़, वि (अ) भिन्न, अपर २ बहु अनेक, विध ।

मुख़्तसर, वि (अ) संक्षिप्त २ लघु, क्षुद्र ३ अल्प । सं पु, संक्षेप ।

मुख्य, वि (स) प्रधान, अग्रग, अग्रिम, प्रमुख परम, उत्तम, श्रेष्ठ, विशिष्ट, ऋषभ, इन्द्र, पुंगव-वर ।

मुख्यत, } क्रि वि, (स) प्रधानत-तया,
मुख्यतया, } विशेषतया, प्रधान-मुख्य विशेषेण, रूपेण ।

मुगदर, स पु, दे 'मुदगर' ।

मुग्ध, वि (स) आसक्त, अनुरक्त, बद्धभाव, सानुराग, कामासक्त २ मूढ, भ्रान्त ३ सुन्दर, अभिराम ४ नव, नवीन ।

मुग्धता, स स्त्री (स) आसक्ति (स्त्री), अनुराग २ मूढता ३ सौंदर्यम् ।

मुग्धा, स स्त्री (स) नायिकाभेद २ सुकुमारी तरुणी ।

मुचलका, स पु (तु) निस्तार ।

मुछंदर, स पु (हिं मूछ) महा,-गुप्त श्मश्रु -व्यञ्जन श्मश्रुल २ कपि ३ मूषिक ४ कुरूपमूर्ख , जड ।

मुज़क्कर, वि (अ) पुल्लिंग (-ग)।

मुजरा, स पु (अ) उद्धृत-व्यवकलित, धन २ अभिवादनं, प्रणिपात ३ वेश्याया सनृत्यमनृत्य वा गानम् ।

मुजरिम, स पु (अ) अपराधिन्, कृतापराध दण्ड्य २ अभियुक्त ।

मुजस्सिम, वि (अ) सशरीर, देहवत्, शरीरिन् ।

मुज़िर, वि (अ) हानि, कारक, प्रद ।

मुझ, सर्व (हिं मुझे) (अस्मद् क रूप बनेंगे) ।

—को, मा, मा २ मह्य, मे ।

—से, मया २ मत् ।

—में, मयि ।

मुटाई, सं स्त्री , दे 'मोटाई' ।

मुट्ठा, स पु (हिं मुट्ठी) मुष्टि (पु स्त्री) मुष्टिमात्र द्रव्य २ वारण, दण्ड, मुष्टि (पु स्त्री) ।

मुट्ठी, सं स्त्री [स मुष्टि (पु स्त्री)] दे 'मुक्का' (१) । २ मुष्टिमेय पदार्थ , मुष्टि ३ मर्दन हस्तः ४ मुष्टि -ग्रहणम् ।

—भरना, क्रि स, संवह् (प्र), मृद् (क प से) ।

—चाँपी, स स्त्री , दे 'मुट्ठी' (३) । २ सेवा, परिचर्या ।

—भर, वि , मुष्टि, मात्र-मय मित ।

—गरम करना, मु , उत्कोच दा ।

—में, मु , वशे, अधिकारे ।

मुठभेड़, स स्त्री (हिं मुट्ठी+भिड़ना) सगट्ट , समाघात २ संग्राम, युद्ध ३ सामुख्यं, समुपागमन स,-मिलन आगम ।

मुठिया, स स्त्री (सं मुष्टिका>) (यष्ट्यादिनां) त्सरु, वारण, मुष्ट २ हठ, पण, मुष्टि गिरा, नर -स ३ अभिवादन्दन ।

मुड़ना, क्रि अ (सं मुरण) वक्रीभू, नम् (भ्वा प अ) २ प्रत्यागम्, प्रतिगम्,प्रतिनिवृत् (भ्वा आ, से) ३ व्यावृत् । सं पुं, वक्रीभाव ,नमन,प्रति, गमन आगमन, व्यावर्तनम् ।

मुड़ाना, क्रि प्रे व 'मूड़ना' के प्रे रूप ।

मुड्ढा, स पु (स मूर्द्धन्>) स्कंध २ *मूत्र पिंट -क, तूलपीठी ।

मुड्ढी, स स्त्री (हि मुड्ढा) छिन्नतरुमूलम् ।

मुतअल्लिक़, वि (अ) सबद्ध, सलग्न, सगत । क्रि वि , विषये, सबधे ।

मुतफर्रिक़, वि (अ) बहु नाना वि, विध, प्र-स,कीर्ण ।

मुतबन्ना, स पु (अ) दे 'दत्तक' ।

मुतलक़, क्रि वि (अ) किंचिद मनाग् ईषद् अपि २ केवल, सर्वथा । वि , केवल,ऐकान्तिक ।

मुताबिक़, क्रि वि (अ)-अनुसार रेण, -अनुरोधेन धात्, यथा, अनु, वि , अनुकूल, अनुरूप ।

मुतालबा, स पु (अ) प्राप्तव्यधन २ ऋण देय, शेष शेष ।

मुदित, वि (स) प्रसन्न, आनंदित, प्रहृष्ट ।

मुद्गर, स पु (स) घन , द्रुघन -ण ,प्रघण २ गोपुच्छआकारो व्यायामोपयोगी स्थूलदंड ३ अनियाध , मधरात ।

मुद्दआ, स पु (अ) अभिप्राय , तात्पर्यम् ।

मुद्दई, स पुं (अ) परिवादक , अभियोगिन् , वादिन्, अर्थिन्, अभियोक्तृ २ शत्रु , वैरिन् ।

मुद्दत, स स्त्री (अ) अवधि , समयसीमा, नियतकाल ,२ चिर, चिरकाल ,महान् समय , युग -ग्राम ।

—का वि , चिर,-कालिक-कालीन, पुराण, पुरातन ।

—तक,**—से**, क्रि वि , चिर, चिरेण, चिराय, चिरात, चिरस्य चिरे ।

मुद्दाअलेह, स पुं (अ) अभियुक्त , प्रत्यर्थिन, प्रतिवादिन्, उत्तरवादिन् ।

मुद्रक, स पु (स) मुद्रण कार कृत् ।

मुद्रण, स पु (सं न.) मुद्राः,रे अंकनं, मुद्रांकनं २ मुद्रानिर्माणम् ।

मुद्रणालय, स पु (सं) मुद्रणगृह, दे 'प्रेस' ।

मुद्रांकित, वि (सं) स दृत,मुद्र,मुद्रा चिह्नित २ नारायणायुधचिह्नयुक्त (वैष्णव) ।

मुद्रा, सं स्त्री (सं) मुद्रिका, प्रत्ययकारिणी, *नामांकनी २ अंगुली(री)यं-यकं, ऊर्मिका ३ नाणक, टंक -क ४ मुद्रित शब्द चिह्न ५ दे 'मुँदरा' ६ शरीरस्य तदवयवानां वा

श्चिनिविशेष, अंगविन्यास, सरस्वति (स्त्री) ८ मक्त मुख,-आकार -आकृति (स्त्री) ८ मक्त देहांकित भगवदायुधचिह्न ९ अगस्त्यपत्नी, लोपामुद्रा १० मुद्रा,-लाञ्छन चिह्नम्।
—मार्ग, स पु (स) मद्धारन्ध्रम्।
—यन्त्र, स पु (स) मुद्रणयन्त्रम्।
—राक्षस, स पु (स न) विशाखदत्तप्रणीत संस्कृतनाटकम्।
—शास्त्र, स पु (स न) मुद्रानस्त्रम्।
मुद्राक्षर, स पु (स न) सीसक धातुमय-मुद्रण,-अक्षराणि।
मुद्रिका, स स्त्री (स) अङ्गुलीयक, ऊर्मिका २ अनामिकाधार्य कुशाङ्गुलीयक, पवित्र ३ नाणक ४ मुद्रा।
मुद्रित, वि (स) दे 'मुद्रांकित' २ मुद्राक्षरैः सीसकाक्षरैः अंकित ३ पिहित, संवृत, निमीलित मुकुलित।
मुधा, अव्य (स) व्यर्थ, वृथा २ असत्य, मृषा (अव्य)। वि, व्यर्थ २ असत्य। स पु, असत्य, अनृतम्।
मुनक्का, स पु (अ) काकलद्राक्षा, गोस्तनी, फलोत्तमा, दुग्धी चिका।
मुनहसि(स)र, वि (अ) आश्रित, अवलम्बित।
मुनाजरा, स पु (अ) शास्त्रार्थ, वाद, तर्कशास्त्रम्।
मुनादी, स स्त्री (अ) दे 'मनादी'।
मुनाफा, स पु (अ) लाभ आय फलम्।
मुनासिब, वि (अ) उचित, युक्त, योग्य।
मुनि, सं पु (स) विचारक चिंतक, तत्त्व,-ज्ञ-दर्शन, प्रज्ञ ? मौनिन्, वाचयम, ऋषि, व्रतिन्, तपस्विन्।
मुनीम, स पु (अ मुनीब) सहाय-यक, उपकारिन्, उप-(उ उपमन्त्रिन् आदि) २ गणक, कायस्थ, लेखक।
मुनीश, स पु (स) मुनीश्वर, मुनिपुंगव २ श्रीबुद्धदेव।
मुन्ना, मुन्नू, स पु (स मुद >) शिशु बालक २ (बच्चों को बुलाने में) अंग, तात।
मुफरद, वि (अ) एकाकिन्, असहाय २ असम्मिश्रित (औषधादि), केवल।
मुफरह, वि (अ) आनन्द-मोद,-दायक प्रद।
मुफलिस, वि (अ) अधन, अकिंचन, दरिद्र।
मुफलिसी, स स्त्री (अ) निर्धनता, दरिद्रता।
मुफस्सल, वि (अ) स, विस्तर प्रपंच। क्रि वि, सविस्त(स्ता)र, विस्त(स्ता)रेण, विस्तरेण। सं पु, नगर,-उपांत प्रान्त, पुरोपकण्ठ, उप शाखा, नगर पुरम्।
मुफीद, वि (अ) उपकारिन्, उपयोगिन्, हितकर(-री (स्त्री))।
मुफ्त, वि (अ) निःशुल्क, निर्मूल्य।
—खोर रा, वि, परपिंडाद, पराश्रपुष्ट।
—में, मु, नि शुल्क, निर्मूल्य, मूल्य विना २ व्यर्थ, निष्प्रयोजनम्।
मुफ्ती, स पु (अ) न्याय,-अधीश अधिपति, धर्माध्यक्ष (इस्लाम)।
मुबतिला, वि (अ) ग्रस्त, गृहीत, पीडित।
मुबर्रा, वि (अ) मुक्त, अनिरुद्ध २ निर्दोष, पूत।
मुबल(लि)ग, वि (अ) सर्व, समस्त। स पु, मात्रा २ रूप्यकादिसंख्या।
मुबारक, वि (अ) शुभ भद्र, मंगल। अव्य, शुभ भद्र भूयात्, स्वस्ति।
—बाद, स पु } (फा) दे 'बधाई'।
—बादी, स स्त्री }
मुबालिगा, स पु (अ) अत्युक्ति (स्त्री)।
मुबाहिसा, स पु (अ) स वि, वाद, हेतुवाद, प्रति वाद, ऊहापोह, विचार-णा।
मुमकिन, वि (अ) सम्भाव्य, संभवनीय, संभव, शक्य, सम्भावित, साध्य, सपाद्य।
मुमानियत, स स्त्री (अ) दे 'मनाही'।
मुमुक्षु, वि (स) मोक्षार्थिन, अपवर्गाभिलाषिन् २ श्रमण, मुनि, साधु, भिक्षु।
मुमूर्षु, वि (स) आसन्नमृत्यु २ निधनेच्छुक।
मुम्तहिन, स पु (अ) दे 'परीक्षक'।
मुरकना, क्रि अ (हिं मुड़ना) व्यावृत् (भ्वा आ से), आकुञ्च् (कर्म) २ वि, नश् (दि प वे) ३ अभिग्रक (भ्वा आ से) ४ प्रतिगम् प्रत्यागम्, प्रतिनिवृत् (भ्वा आ से) ५ अस्पष्ट स्फुट (तु दि प से)-स्फुट (तु प से) ६ दे 'मोच आना'।
मुरकाना, क्रि स, व 'मुरकना' के प्रे रूप।
मुरकी, स स्त्री (हिं मुरकना) कर्णपूरक, कर्णवलयक-कम्।
मुरगा, स पु (फा मुर्ग) उषाकल, कृकवाकु, दे 'कुक्कुट' २ पक्षिन्।

मुरगाबी, स स्त्री (स) जलकुक्कुट, यष्टिक, शुक्लकण्ठ।
मुरज, स पु (स) दे 'मृदंग'।
मुरझाना, क्रि अ (स मूर्च्छन>) म्लै म्लै (भ्वा प अ), शिथिलू (क्रम), म्लान म्लान विशीर्ण (वि) भू, वृ (दि प स) २ अवसद् विषद् (भ्वा प अ), दुर्मनायते (ना धा), विषण्ण-अवसन्न विच्छाय (वि) भू। स पु, ग्लानि म्लानि (स्त्री) २ विषाद, अवसाद वै-शैर, मनस्यम्।
मुरझाया हुआ, वि म्लान, म्लान, जीर्ण, शीर्ण २ विषण्ण, निर्विण्ण, अवसन्न, दीन।
मुरदा, स पु (फा) शनक-ब, शव ब, कुणप, प्रतम्। वि, उपरत, प्रेत, परेत, विपन्न, परासु मृत, निर्जीव, निष्प्राण, प्रमीत २ दुर्बल ३ म्लान।
मुरदार, वि (फा) मृत, प्रेत २ दूषित, अपवित्र ३ जड, स्तंभित, स्तब्ध।
मुरब्बा[1], (अ मुरब्बह्) मिष्टपाक, फलोपस्कर।
मुरब्बा[2], सं पु (अ मुरब्बअ) समचतुरस्र, समचतुर्भुज २ वर्ग, दिघात ३ समचतुरस्र समचतुर्भुज-वर्गाकार, भूखंड(-डम्)। वि, वर्गीकृत, वर्ग-(गन, कुट्ट आदि)।
मुरमुरा, स पु (अनु मुरमुर) मिष्टा, मिमिश्रा-दा भिस्स(स्स)टा।
मुरमुराना, क्रि अ (अनु मुरमुर) मुरमुरायते (ना धा)।
मुरली, स स्त्री (सं) वंशी शिरा, वंश, वेणु, वंश नालिका, नालिका।
—धर, }
—मनोहर, } स पु (स) श्रीकृष्णचंद्र।
मुरव्वत, स स्त्री (अ) शील २ सज्जनता।
बे—, वि कम सहानुभूतिशून्य।
मुराद, स स्त्री (अ) अभिलाष, कामना २ आशय, अभिप्राय।
मुरादों के दिन, मु, यौवनम्।
मुरारी, स पु (सं-रि) श्रीकृष्णचन्द्र।
मुरीद, सं पु (अ) शिष्य २ अनुयायिन्।
मुर्दनी, स्त्री (फा मुर्दन) मृत्यु-लक्षणानि (न बहु) छाया २ अवसाद, विषाद, दौर्मनस्य, निर्वेद, उत्साहाभाव।
चेहरे पर मुर्दनी छाना या फिरना, मु, मुखे मृत्युलक्षणानि प्रादुर्भू २ अति, विषण्ण-निराश (वि) विद् (दि आ अ)।
मुर्दा, स पु, दे 'मुरदा'।
मुर्रा, स पु (हिं मरोड) दे 'मरोड' (२)। २ दे 'पेचिश'।
मुलजिम, वि (अ) अभियुक्त, दूषित।
मुलतवी, वि (अ) विलम्बित, व्याक्षिप्त, स्थगित।
मुलतान, स पु (स मूलस्थान) प्रह्लादपुर, साम्बीपुरम्।
मुलतानी, वि (हिं मुलतान) मूलस्थान-विषयक-सबंधिन्, मौलस्थान। स स्त्री, रागिणी भेद २ पीतगैरिक, मौलस्थानीमृत्तिका।
मुलम्मा, वि (अ) भासुर, भ्राजमान २ सुवर्ण-रजत, लिप्त रजित। सं पु, हेमलेप, रजतरञ्जन ३ आडंबर, आपातरम्यता।
—करना, क्रि स, रजतेन-स्वर्णेन लिप् (तु प अ)-रञ्ज् (प्रे)।
—साज़, स पु (अ + फा) धातु हेम,-लेपकार।
मुलहटी-ठी, स स्त्री, दे 'मुलेठी'।
मुलाकात, स स्त्री (अ) दे 'मिलन' (१)।
—करना, क्रि स, दे 'मिलना'।
—करवाना, क्रि प्रे, परिचय कृ (प्रे), परि चि (प्रे)।
मुलाकाती, स पु (अ मुलाकात) परिचित २ दर्शक।
मुलाज़िम, स पु (अ) दे 'नौकर'।
मुलाज़िमत, स स्त्री (अ) दे, 'नौकरी'।
मुलायम, वि (अ) कोमल, सुकुमार २ श्लक्ष्ण, चिक्कण।
—करना, मु, परस्य क्रोध शम (प्रे शमयति)।
मुलाहिज़ा, स पु (अ) दे 'निरीक्षण' २ आदर ३ अनुग्रह।
मुलेठी, सं स्त्री [स मधुयष्टि-ष्टि (स्त्री)] यष्टिमधु (न), मधुयष्टिका, मधुर, क्लीतकम्।
मुल्क, सं पु (अ) देश २ प्रांत ३ संसार।
मुल्की, वि (अ) स्व देशीय २ शासन संबंधिन्।
मुल्ला, सं पु (अ) यवनपुरोहित २ अध्या पक।
मुवक्किल, सं पु (अ) अभिभाषकनियोक्तृ।

मुवा-आ, वि (म मृत) निर्जीव, निष्प्राण २ नीच, तुच्छ ।
मुशाइरा, स पु (अ) कविसम्मेलनम् ।
मुशाबहत, म स्त्री (अ) सादृश्य, साम्यम् ।
मुश्क¹, म पु (फ़ा) कस्तूरी रिका, मृगमद २ दुर् गंध ।
मुश्क², स स्त्री (देश) भुज, बाहु ।
मुश्कें कसना या बाँधना, मु, बाहू पृष्ठत नियम् (तु) ।
मुश्किल, वि (अ) कठिन, दुस्साध्य । स स्त्री, कठिनता २ विपत्ति (स्त्री) ।
—कुशा, वि सङ्कट-क्लेश विघ्न, हर विनाशक ।
—आसान होना, मु, सङ्कटहरणम्, विपद् विनश (दि प से) ।
मुश्की, वि (फ़ा) कृष्ण श्याम २ मृगमद-मिश्रित ३ श्यामाश्व, सुराह ।
मुश्त, म पु (फ़ा) मुष्टि (पु स्त्री) ।
एक—, क्रि वि, युगपद् (अव्य) ।
मुष्टामुष्टी, स स्त्री [स ष्टि (अव्य)] मुष्टी मुष्टि (अव्य), मुष्टियुद्धम् ।
मुष्टि, मं स्त्री (म पु स्त्री) दे 'मुक्का' (१) । २ पलपरिमाण (४ या ८ तोल का) ३ चौर्य ४ दुर्भिक्ष ५ त्सर, सर ।
—युद्ध, म पु (स न) दे 'मुक्केबाजी' ।
मुष्टिका, स स्त्री (स) दे 'मुक्का' २ दे 'मुट्ठी' (२) ।
मुसक(कि)राना, क्रि अ (स स्मयकरण) स्मि (भ्वा आ अ), इषत् मद मृदु हस् (भ्वा प से) मृदुहास्य कृ । म पु, स्मयन, इषद्धसन, स्मित, मृदुहास ।
मुसकरानेवाला, स पु, स्मेर, सस्मित, स्मयमान, स्मित-कारिन् शालिन् ।
मुसक(कि)राहट, म स्त्री (हि मुसकराना) स्मितति (स्त्री), मद-मृदु,-हास हसित-हास्यम् ।
मुसन्निफ़, म पु (अ) ग्रन्थकार, पुस्तकप्रणेतृ ।
मुसल, म पु दे 'मूसल' ।
मुसलमान, म पु (फ़ा) यवन मोहम्मदीय, *मुसल्मान ।
मुसलमानी, म स्त्री (फ़ा) यवनी *मुसल्मानी २ दे 'खतना' ३ दे 'इस्लाम' । वि, यावन (-नी स्त्री), यवनधर्मसंबंधिन् ।
मुसलाधार, —मेह बरसना, मु } दे 'मूसल' के नीचे ।
मुसलामुसलि, स स्त्री (म) मुस (श, ष) ल,-युद्ध-संग्राम ।
मुसलिम, स पु (अ) दे 'मुसलमान' ।
मुसली, स स्त्री (म मुश(ष)ली) मुश(ष)लिका, ताल-मूलिका पत्रिका, अर्शोघ्नी, भूताली, दीर्घकंदिका हेमपुष्पी, गोधापदी ।
मुसल्ला, म पु (अ) *आराधनास्तर, *उपासनासनम् ।
मुसव्विर, म पु (अ) दे 'चित्रकार' तथा 'फोटोग्राफर' ।
मुसाफ़िर, म पु (अ) पथिक, पाथ, दे 'यात्री' ।
—ख़ाना, मं पु (अ+फ़ा) पथिकाश्रम, पाथ, शाला-गृह, *धर्मशाला ।
मुसाफ़िरी, म स्त्री (अ) पथिकत्व २ यात्रा, प्रवास ।
मुसाहब, स पु (अ) परिपार्श्व(र्श्वि)क-, पार्श्वग ।
मुसीबत, स स्त्री (अ) कष्ट,क्लेश २ आपद् विपद् (स्त्री) ।
मुस्ट(ष्ट)डा, वि (स दृढ का अनु) पुष्टाग, दृढ-देह-तनु-अग, बलवत् २ दुर्वृत्त, खल ।
मुस्तक़िल, वि (अ) ध्रुव, अचल २ दृढ, चिरस्थायिन् ।
मुस्तनद, वि (अ) प्रामाणिक, विश्वसनीय ।
मुस्तहक़, वि (अ) अर्ह, योग्य, पात्र, अधिकारिन् ।
मुस्तैद, वि (अ मुस्तअद) सज्ज, सनद्ध २ आशु क्षिप्र,-कारिन् ।
मुस्तैदी, म स्त्री (हिं मुस्तैद) सन्नद्धता, सज्जता २ आशुकारित्व, क्षिप्रता ।
मुहताज, वि (अ) निर्धन, अकिंचन २ दीन, पराश्रित ३ आकांक्षिन् ।
मुहब्बत, म स्त्री (अ) प्रेमन् (पु न) २ मित्रता ३ अभिलाष, काम, प्रणय ।
मुहम्मद, स पु (अ) श्रीमोहम्मद, यवनधर्मप्रवर्तक ।
मुहर्रिर, म पु (अ) लेखक, लिपिकार ।
मुहल्ला, स पु दे 'महल्ला' ।
मुहाना, म पु (हि मुँह) नदीमुख, सरित्संगम २ प्रवेशद्वारम् ।

मुहाफिज, वि (अ) रक्षक, त्रातृ ।
मुहाल, वि (अ) कठिन दुष्कर २ असमाव्य, अशक्य, असमव । स पु, दे 'महल्ला' ।
मुहावरा, स पु (अ) वाग्धारा, वाक्,-रीति (स्त्री)-सम्प्रदाय २ अभ्यास ३ नीत्य् ।
मुहासिरा, स पु (अ) उपरोध, अवरोधनम् ।
—करना, क्रि स, अव-उप,-रुध (रु उ अ) ।
मुहिम, स स्त्री (अ) दुष्करकार्यं २ आक्रमण ३ युद्धम् ।
मुहु, अव्य (स) पुन ।
—मुहु, अव्य, पुन पुन, असकृत् ।
मुहूर्त, स पु (स पु न) द्वादशक्षणपरिमित-काल २ घटिकाद्वय, अहोरात्रस्य त्रिंशो भाग ३ मांगलिकसमय (ज्यो) ।
मूँग, स स्त्री पु (स मुद्ग) सूपश्रेष्ठ, रमोत्तम, हयानन्द, वाजिभोजन, सुफल ।
छाती पर मूँग दलना, मु, दे 'छाती' के नीचे ।
मूँगफली, स स्त्री (स भूमिफली) मण्डपी भूस्था, भूमिशिंबिका, भूचणक ।
मूँगा, स पु (हि मूँग) विद्रुम, प्रवाल -ल, भौमीरत्न ।
मूँगिया, वि (हि मूंग) मुद्ग-हरित(त)-पलाश,-वर्ण ।
मूँछ, स स्त्री [स श्मश्रु (न)] गुच्छ, ओष्ठ रो(लो)मन् (न) ।
—उखाड़ना, मु, कठोर दण्ड् (चु) २ गर्व चूर्ण् (चु) ।
—नीची होना, मु, लज्जित (वि) भू २ अवमन् (कर्म) ।
—पर ताव देना या हाथ फेरना, मु, शौर्यं मुद्रा (प्रे), वीरत्वाभिमानेन श्मश्रूण्याकृष् (प्रे) ।
मूँज, स स्त्री (स मुञ्ज) मुञ्जतृण, दृढतृण, मूल, ब्रह्मण्य, रञ्जन, दृढमूल, शरभंग ।
मूँड, स पु (स मुण्ड) दे 'मुण्ड' (१) ।
—मुड़ाना, मु, परिव्रज् (भ्वा प से), संन्यस् (दि प से) ।
मूँडन, स पु, दे 'मुण्डन' ।
मूँडना, क्रि स (सं मुण्डन) मुण्ड् (भ्वा प से), वप (भ्वा उ अ, प्रे), क्षुर क्षुर् (तु प [illegible]), केशान् कृत् (तु प से)-छिद् (रु प अ)-लू (क्र्या उ से) २ वञ्च् (प्रे), छल् (चु), प्रलभ् (प्रे), विप्रलभ् (भ्वा आ अ) ३ दीक्ष् (भ्वा आ से प्रे), उपनी (भ्वा प अ) । ४ भेटीभूतम्/ कृन्त् (तु प से) । स पु, मुण्डन, क्षौर, वपन, केश, छेदन-लवन-कर्तनम् ।
मूँडने योग्य, वि, मुण्डनीय, वापव्य, वप्य ।
मूँडनेवाला, स पु, मुण्डक, नापित, मुण्डिन् ।
मूँडा हुआ, वि, मुण्डित, क्षुरित, उप्त, कल्पत-केश श्मश्रु ।
मूँडी, स स्त्री, दे 'मुण्ड'(१) । २ मुण्डाकार ऊर्ध्वभाग ।
मूँदना, क्रि स (सं मुद्रण) प्र-आ,-च्छद् (चु), स-आ, वृ (स्वा उ से), आ,-स्तृ (स्वा उ अ), स्तृ (क्र्य उ से) २ अपि,-पिधा (जु उ अ) ३ निमील् (भ्वा प से), (प्रे) मुद्रयति (ना धा) । स पु, आ प्र,-च्छादन, आ-स,-वरण, पिधान, निमीलन, मुद्रणम् ।
मूक, वि (स) अवाच्, वाणीहीन, *निर्गिर ।
मूगरी, स स्त्री (स मुद्गर >) *वसन कुट्टनी, *मुद्गरी ।
मूज़ी, वि (अ) दु खप्रद-क्लेश-प्रद,-द-दायक २ दुष्ट, दुर्जन, खल ।
मूठ, स स्त्री, दे 'मुट्ठी' (१ २) तथा 'मुठिया' (१ २) ।
मूठा, स पु, दे 'मुट्ठा' ।
मूढ़, वि (स) अज्ञ, मूर्ख, मन्दधी, मन्द, निर्बुद्धि २ स्तब्ध, निश्चेष्ट ३ व्यामोहित, भ्रष्टमद ।
—मति, वि (सं) मूढ, बुद्धि-नैमम् ।
मूढ़ता, स स्त्री (स) अज्ञता, मूर्खता, बुद्धि-हीनता इ ।
मूत्र, स पु (स न) स्रव, प्रस्राव, मेह, गुह्यनिस्यद ।
—करना, क्रि अ, मूत्रयति (चु), मूत्रोत्सर्गं कृ, मिह् (भ्वा प अ), मूत्र उत्सृज् (तु प अ) ।
—कृच्छ्र, स पु (स न) अश्मरी २ कृच्छ्र ३ मूत्ररोग ।
—स्थान, स [illegible] (सं न) *प्रस्रावागार-स्थ-मूत्रालय ।
मूर्ख, वि (स) निरक्षर, दुर्बुद्धि, अ निर्-बोध, अज्ञ, अनभिज्ञ, अज्ञान निन, मन्द, मन्दधी, विद्या प्रज्ञा ज्ञान-बुद्धि, शील सत्य-रहित इ ।
मूर्खता, स स्त्री (सं) अज्ञता, अनभिज्ञता,

मन्दता, दुर्-निर्, दुर्बुद्धित्व, अज्ञान, अबोध, जड़ता इ ।

मूर्च्छना, सं स्त्री (स) संगीत-प्रकार ।

मूर्च्छा, स स्त्री (स) संमोह, कश्मल, मूर्च्छन, मूर्च्छाय, चैतन्य-संज्ञा-लोप-नाश ।

—आना, क्रि अ मूर्च्छ् (भ्वा प से), मुह (दि प से) मोह-मूर्च्छां प्राप् (स्वा प अ), संज्ञा चेतना हा (जु प अ), नष्ट संज्ञ-लुप्तचेतन (वि) भू ।

मूर्च्छित, वि (स) मूढ, मुग्ध, मोहवश, मूर्च्छान्वित, नष्ट-लुप्त-विगत,-चेतन-चैतन्य-संज्ञ ।

मूर्त, वि (स) मूर्तिमत्, साकार, आकृतियुक्त २ कठिन,स्थूल,संहत, घन ३ 'मूर्च्छित' दे ।

मूर्ति, सं स्त्री (स) चित्र आलेख्य रेखा चित्र २ प्रतिकृति (स्त्री), प्रतिच्छन्द, प्रतिमा ३ आकृति (स्त्री), आकार, स्वरूप ४ शरीर, देह ।

—कार स पु (स) चित्रकार २ प्रतिमा कार ।

—पूजा, स स्त्री (सं) प्रतिमा-पूजनम् ।

—विद्या, सं स्त्री (स) मूर्ति-निर्माण-घटना ।

मूर्तिमान्, वि (स मत्) सशरीर, शरीरिन्, काय-देह,-भृत्-धारिन्-वत्, देहिन्, मूर्त २ दृश्य, दृग्गोचर, प्रत्यक्ष, साकार ।

मूर्द्धज, स पुं (स) शिरोरुह, दे 'केश' ।

मूर्द्धा, स पु (स -र्द्धन्) शीर्ष, दे 'सिर' ।

मूल, सं पु (स न) शिफा जटा, म(बु)ध्न, अङ्घ्रिनामक २ कन्द ३ उप क्रम, आरंभ, आदि ४ आदि,-कारण बीज हेतु, प्रकृति (स्त्री) ५ मूलवित्त, दे 'पूंजी' ६ आद्य-आरंभिक,-भाग ७ गृह मूल, वास्तु (पु न) ८ मूलग्रन्थ, व्याख्येय वाक्य ९ नक्षत्रविशेष १० समीप ११ दे 'पिप्पलीमूल' । वि , मुख्य, प्रधान ।

—धन, स पु (स न) मूल, मूल,-द्रव्य वित्त, साम्नकम् ।

—मूलक, वि (सं समासान्त में) -कारणक, उद्भूत,-उत्पन्न (उ अज्ञानमूलक, अज्ञान कारणक इ) ।

मूली, स स्त्री (सं मूलक-क) राजालुक, महाकन्द, हस्तिदन्त, कन्दमूल, दीर्घ,-मूलक-पत्रक-कन्दकम् । (छोटी मूली) मूलकपोतिका, चाणक्यमूलक, लघुमूलकम् ।

किसी को मूली गाजर समझना, मु , तृणाय-तुण मन् (दि आ अ), अवधीर् अवगण् (चु) ।

मूल्य, स पु (स न) वस्न-न, अर्घ, अर्हा, क्रयण, पण्य ।

—रहित, वि (स) तुच्छ, निस्सार, व्यर्थ, क्षुद्र ।

—वृद्धि, स स्त्री (स) वस्न-अर्घ,-वृद्धि-उद् चय-उन्नति (स्त्री) ।

मूल्यवान्, वि (स -वत्) बहुमूल्य, महार्घ, अनमूल्य, अमूल्य ।

मूल्याकन, सं पु (सं न) मूल्य वस्न अर्घ,-निर्धारण-निश्चयनम् ।

मूष, मूष(षि)क, म पु (स) उन्दुरु, दे 'चूहा' ।

—वाहन, स पु (स) गणेश ।

मूसल-र, स पु (स मुसल-ल) मुश(स)-ल-ल, अयोऽग्रम् ।

—चन्द, स पु , अशिष्ट, असभ्य २ पुष्टदुष्ट ।

मूसल(ला)धार बरसना, मु , अतीव-अति वेगेन धारासारै वृष् (भ्वा प से) ।

मूसलाधार वर्षा, आसार, धारा,-आसार (नि-सं)पात -वर्ष -वर्षम् ।

मूसली, स, स्त्री , दे 'मुसली' ।

मूसा, स पुं (स मूष) दे 'चूहा' ।

मृग, स पुं (स) हरिण, कुरंग,-रङ्ग, वातायु, (अ)जिनयोनि, सारङ्गक, अजिन पत्र, रिष्य-श्य, चारुलोचन, सारंग, कृष्ण सार, पृषत-त (पु), प्लाविन् (पुं), मरव, रुरु, रोहित, रिजु, मतंग, शबर, रौहिश, वातप्रमी (पु) २ पशुमात्र ३ वन्यपशु ४ मार्गशीर्षमास ५ मकरराशि ६ पुरुषभेद ।

—छाला, स स्त्री (सं+हिं) मृग हरिण, अजिन चर्मन् (न) ।

—तृष्णा, स स्त्री (स) मृग,-तृष्-तृषा-तृष्णि-तृष्णिका-मरीचिका (सब स्त्री) ।

—नयनी, स स्त्री (स) कुरंग मृग,-दृश् (स्त्री)-लोचन (-नी)-अक्षी-ईक्षणा-नयना ।

—राज, स पु (स) मृगेन्द्र , दे 'सिंह' ।

—शिरा, सं स्त्री (सं) मृग-शिर -शिरस् (न)-शीर्षम् ।

मृगया, सं स्त्री (सं) दे 'शिकार' ।

मृगांक, सं पु (सं) शश,-अक-लांछन, दे 'चाँद' ।

मृगी, सं स्त्री (सं) हरिणी, कुरंगी, एणी, पृषती २ अपस्मार ३ कस्तूरी ।

मृगेन्द्र, सं पु (सं) मृग,-पति -राज, दे 'सिंह' ।

मृणाल, सं पु (सं पु न) बिसम्, मृणाली, पद्म-कमल -नाल, पद्मतन्तु ।

मृत, वि (सं) दे 'मुरदा' वि ।

मृतक, सं पु (सं पु न) दे 'मुरदा' सं पु ।

—कर्म, सं पु [सं-मंद (न)] प्रेतकृत्य (अन्त्येष्टि इ) ।

मृत्तिका, सं स्त्री (सं) दे 'मिट्टी' (१) ।

मृत्युंजय, सं पु (सं) जितमृत्यु २ शिव ।

मृत्यु, सं स्त्री (सं पु) मरण, निधन -नं, पचत्व ता, प्राणनाश, तनु-त्याग-विच्छेद, कालधर्म, दिष्टान्त, संस्थिति (स्त्री), प्रलय, अत्यय, प्राण भंग, नाश, मृति (स्त्री), अवसान, दीर्घनिद्रा ।

—लोक, सं पु (सं)यमलोक २ मर्त्यलोक ।

मृदंग, सं पु (सं)मुरज, पटह, घोष ।

मृदु, वि (सं) श्लक्ष्ण, मसृण, सुखस्पर्श, २ श्रुति मधुर, कर्कशता शून्य, मंजुल ३ सुकुमार, पेलव, कोमल, मृदुल, सौम्य, ४, मंद, मंथर, विलम्बकारिन् ।

मृदुता, सं स्त्री (सं) श्लक्ष्णता, मसृणता २ मंजुलता, श्रुति मधुरता ३ सुकुमारता, कोमलता २ मंदता, मंथरता इ ।

मृदुल, वि (सं) दे 'मृदु' ।

मृदुलता, सं स्त्री (सं) दे 'मृदुता' ।

में¹, अव्य (सं मध्ये)-अंतरे, अंत, प्राय सप्तमी विभक्ति से (उ घर में गृहे) ।

—से, अव्यय (षष्ठी के साथ), प्राय षष्ठी तथा सप्तमी विभक्ति द्वारा (उ नगरानां नगरेषु वा इम श्रेष्ठ) ।

में², सं स्त्री (अनु) रंभणं, अजशब्द ।

मेंगनी, सं स्त्री (हिं मींगी) अजगुलिका, अजमलगुटी ।

मेगनीज़, सं पु (अ) लोहकं, माक्षम् ।

मेंडक, सं पु, दे 'मेढक' ।

मेंढा, सं पु, दे 'भेड़ा' ।

मेंबर, सं पु (अ) सदस्य, सभासद् (पुं) ।

मेंह, सं पु (सं मेघ >) दे 'वर्षा' ।

मेंहदी, सं स्त्री, दे 'मेहदी' ।

मेक्सिमम, वि (अं) भूयिष्ठ, अधिकतम ।

मेख, सं पु, दे 'मेष' ।

मेख़, सं स्त्री (फ़ा) दे 'खूँटा' २ दे 'कील' ३ दे 'पच्चड़' ।

—मारना, मु, कीलय् (भ्वा आ से), विहन् (अ प अ), विघ्न (ना धा, विघ्नयति) ।

मेखल-ला, सं स्त्री (सं मेखला) कांची चि (स्त्री), रस(श)नान्न, सारस(श)न, कक्ष्या । मसका-की १ कटिसूत्र ३ खड्गादि निबंधन ४ शैलनितंब ५ नर्मदा ।

मेगज़ीन, सं पु (अं) शस्त्रास्त्रकोष्ठ २ सामयिकपत्रिका ।

मेगनेशियम, सं पु (अ) भास्वत्तु, मग्नकं, माग्निषम् ।

मेघ, सं पुं (सं) जलधरो धारा-अम्भो, धर, अभ्र अंबु-वारि -वाह, स्तनयित्नु, बलाहक, अब्द नीरद, वारिद, जलद, तोयद, अंबुद, अम्भोद, पयोद, घन, जीमूत, धूमयोनि, वारि जल मुच् (पुं), घनाघन, पर्जन्य २ रागभेद (संगीत) ।

—काल, सं पु (सं) प्रावृष् (स्त्री) वर्षा (स्त्री, बहु), वर्षा-ऋतु,-काल-समय ।

—गर्जन, सं पुं (सं न) मेघ-दुंदुभि -नाद -स्वन, गर्जितं, गर्जन-ना, स्तनित, वि,-स्फूर्जथु ।

—दूत, सं पु (सं न) कालिदास प्रणीतं खण्डकाव्यम् ।

—धनु, सं पु [सं -धनुस (न)] इन्द्रचाप ।

—नाथ, सं पु (सं) मेघपति, इन्द्र ।

—नाद, सं पुं (सं) इन्द्रजित् २ मेघगर्जनम् ३ वरुण ।

—मण्डल, सं पु (सं न) घनपंक्ती, मेघ माला कादंबिनी ।

—वर्ण, वि (सं) घनश्याम ।

—वाहन, सं पुं (सं) इन्द्र, शक्र ।

मेज़, सं स्त्री (फ़ा) पादफलक-कम् ।

—पोश, सं पुं (फ़ा) पादफलकाच्छादनम् ।

मेजबान, सं पु (फ़ा) आतिथ्यकारिन्, अतिथिसेवक ।

मेटना, क्रि स दे 'मिटाना' ।

मेड, स पु (स भित्त) क्षेत्र,-सीमा पर्यन्त ।

मेढक, सं पु (स मण्डूक) भेक, प्लव, प्लवग, दर्दुर, वर्षा,भू-घोष, अजुक, कंटुक, हरि, शालु, शा(सा)लूर ।

मेढ़ा, स पु (स मेढ्र) दे 'भेड़ा' ।

मेथिलेटिड स्पिरिट, स स्त्री (अ) मिथिलिन सार ।

मेथी, स स्त्री (स) मेथि (स्त्री), मेथिका मेथिनी, दीपनी, बहुपर्णी, गन्ध,-फला-बीजा ।

मेद, स पु [स मेदस् (न)] वपा, वसा, मेद २ मेदस्विता स्थौल्य ३ कस्तूरी ।

मेदा, स पु (अ) पक्वाशय, पिचण्ड, फण्ड, मलुक ।

मेदिनी, स स्त्री (स) धरा, दे 'पृथिवी' ।

मेध, स पु (स) यज्ञ, मख २ हविस्(न) ।

मेधा, स स्त्री (स) धारणावती बुद्धि (स्त्री), स्मरणशक्ति (स्त्री), धारणा ।

मेधावी, वि (स) पण्डित, धीमत्, मेधावत् ।

मेम, स स्त्री (अ मैडम) गौरांगी, श्वेतांगी (विदेशीय नारी) ।

मेमना, स पु (अनु मे-मे) अजपोत, छागशाव २ अविडिंभ, मेषशिशु ।

मेमार, सं पु (अ) स्थपति, वास्तुशिल्पिन्, गृहसंवेशक, पल्गण्ड, •गेहकार ।

—का काम, स पु, सूत्रकर्मन् (न) ।

मेरा,री, सर्व (हिं मैं) मम, मदीय (-या स्त्री), मामकीन(-ना स्त्री), मामक (-मिका स्त्री), मत्- ।

मेरु, स पु (स) सुमेरु, हेमाद्रि, रत्नसानु, सुरालय २ जपमालाया प्रधानगुटिका ।

—दण्ड, स पुं (स) पृष्ठ,-वंश अस्थि (न) २ भुवमध्यरेखा ।

मेल, स पु (सं) दे 'मिलन' (१२) ३ ऐकमत्य, सांमत्य, वैमत्याभाव ४ सख्य, मित्रत्व, सौहार्द ५ आनुकूल्य, सामनस्य ६ साम्यं, सादृश्यम् ।

—जोल, } स पु, सुपरिचय, अभ्यन्तरत्व,
—मिलाप, } गाढसौहृदम् ।

मेला, सं पुं (सं मेल) मेलक, यात्रा, समाज, उत्सव २ जनसमर्द, सकुलम् ।

—ठेला, स पु, जनौघ, जनसमर्द ।

मेवा, स पु (फ़ा) शुष्क,-फलम् ।

—फरोश, स पु (फ़ा) फल, विक्रेतृ विक्रयिन् ।

मेष, स पु (स) दे 'भेड़ा' २ क्रिय, राशिविशेष ।

मेहदी, स स्त्री (स मेंधी) रागांगी, मेन्धिका, यवनेष्टा, नख, रंजिनी, रागगर्भा, कोकदंता ।

मेह¹, स पु (स) मूत्र २ प्रमेह ३ मेष ।

मेह², स पु (स मेघ) जलद २ वृष्टि (स्त्री), दे 'वर्षा' ।

मेहतर, स पु (फ़ा, मि स महत्तर) ज्येष्ठ, प्रधान २ मलवाहक, दे 'भंगी' (मेहतरानी स्त्री) ।

मेहनत, स स्त्री (अ) परिश्रम, प्रयास ।

—मज़दूरी, स स्त्री, शारीरिक-कायिक,-श्रम जातम् ।

—ठिकाने लगना, मु, श्रमसाफल्यम्, श्रमेण कार्यसिद्धि (स्त्री) ।

मेहनताना, स पु (अ + फ़ा) •पारिश्रमिक, कर्मण्या, भर्मण्या ।

मेहनती, वि (अ मेहनत) परिश्रमिन्, उद्योगिन् ।

मेहमान, स पु (फ़ा) अतिथि, दे ।

—खाना, स पु, अतिथि प्राघुण, शाला-गृहम् ।

—नवाज़, वि, अतिथि प्राघुण,-सेवक-पूजक-सत्कारक ।

—नवाज़ी, स स्त्री, दे 'मेहमानदारी' ।

मेहमानदारी, स स्त्री (फ़ा) } आतिथ्य
मेहमानी, स स्त्री (फ़ा मेहमान) } अतिथि, सेवा सत्कार ।

मेहर, स स्त्री (फ़ा) कृपा, अनुग्रह ।

मेहरबान, वि (फ़ा) कृपालु, अनुग्रहशील ।

मेहरबानी, स स्त्री (फ़ा) दया, अनुकंपा ।

मेहराब, स स्त्री (अ) तोरण -ण, वृत्तखण्ड,-डम् ।

—दार, वि (अ + फ़ा) तोरणाकार (द्वारादि) ।

मैं, सर्व (स अस्मद्>) अहम् । स स्त्री, अहमति (स्त्री), अहंकार ।

मैका, स पु, दे 'मायका' ।

मैत्री, स स्त्री (स) मैत्र्य, दे 'मित्रता' ।

मैथिल, वि (स) मिथिलासंबंधिन् । स पु, मिथिलावासिन् २ जनक ।

मैथिली, स स्त्री (सं) वैदेही, जानकी।
मैथुन, स पु (स न) रत, सुरत, रति, क्रियाक्रीडा, महासुख, क्रीडारत्न, अब्रह्मचर्यक, निधुवन, धर्षित, संभोग ।
—करना, क्रि स, सुरत आनन (त प से), संभोग-रतिक्रीडां कृ, महासुख अनुभू।
मैदा, स पु (फा)समिता, अपूप्य, *अट्टसार ।
मैदान, स पु (फा) समभूमि (स्त्री) स्थल-स्थली प्रदेश , उपशल्य २ क्षेत्र, भूमि क्षेत्र ३ युद्धभूमि , रणक्षेत्रम्।
—मारना, मु, विपरा-जि (भ्वा आ अ), दे 'जीतना'।
मैन, स पु (स मदन) कामदेव २ दे 'मोम'।
मैनफल, सं पु (सं मदनफल) श्वसन-छर्दन शल्य-करहाटक,-फल २ (वृक्ष) मदन, श्वासन , छर्दन , शल्य ।
मैनसिल, स पु (स मन शिला) नैपाली, मनोज्ञा, शिला, कुनटी, दिव्यौषधि (स्त्री), नागजिह्विका, कल्याणिका।
मैना, सं स्त्री (स मदना) शा(सा)रिका, चित्रलोचना, कुणपी, मधुरालापा, मेधाविनी, गो, किराटा कलहप्रिया ।
मैनाक, सं पु (सं) हिमवत्सुत , सु हिरण्य, नाभ ।
मैया, स स्त्री (सं मातृका) दे 'माता'।
मैल, सं स्त्री (सं मलिन>) दे 'मल' (१-२)। ३ दोष, विकार ।
—खोरा, वि (हिं + फा) मल,-गोपिन्-गोप्य। सं पु, अन्तर्-वस्त्र-वसनं वासस (न) २ दे 'साबुन'।
हाथ की—, मु, तुच्छवस्तु (न) क्षुद्रद्रव्यम्।
मैला, वि (सं मलिन)दे 'मलिन'। सं पु, दे 'मल' (१-२)।
—करना, क्रि स, आविलयति-मलिनयति (ना धा), कलुषी-मलिनीकृ।
—होना, क्रि अ, आविली मलिनीभू, कलुषपंकिल (वि) अन् (दि आ से)।
—कुचैला, वि, अति आविल कलुष मलिन।
मों, सं स्त्री, दे 'मुख'।
मोंढा, सं पु (स मूर्धन्>) *शरकांडपीठं २ भुजमूल स्कंध,-प्रदेश ।
मोक्ष, सं पु (सं) दे 'मुक्ति'।
—विद्या, स स्त्री (स) वेदान्तशास्त्रम्।
मोगरा, सं पु (स मुद्गर) अतिगन्ध गन्ध, राज मार, वित,प्रिय, जन मृग, इष्ट २ दे 'मुँगरा'।
मोघ, वि (स) व्यर्थ, निष्फल।
मोच, स स्त्री (स मुच्>) संधि,-व्याक्षेप व्यावर्तनं, स्नायुवितान ।
—आना या निकलना, क्रि अ, संधि व्याक्षिप् (कर्म)-व्यावृत् (भ्वा आ से), स्नायु वितन् (कर्म)।
मोचक, स पु (स) मुक्तिद २ मन्यासिन् ३ कदली।
मोचन, स पु (स न) मोक्षण, मुक्तिदानं, बंधनभंजन, मुक्ति (स्त्री)। वि, मोचक, मोक्षक, मुक्तिप्रद।
मोचना, स पु (स मोचन>) *मोचन, *वालोत्पाटन २ सुचुटी, लोहकारोपकरणभेद ।
मोचरस, सं पु (स) मोच,-स्राव-सार निर्यास , शाल्मलीवेष्ट , सुरस ।
मोची, स पु (सं मुच्>) चर्मकार, पादू,-कार मद्यावर ।
मोजा, स पु (फा) अनुपदीना, *चरणावरणं, दे 'जुराब'।
मोजिज़ा, स पु (अ) चमत्कार , कौतुकं, आश्चर्यम्।
मोट, स स्त्री, दे 'गठरी'।
मोटन, स पु, (सं न) पेषणं, चूर्णनं, मर्दनं, खण्डनम्।
मोटर, सं पु (अं) चालन प्रवर्तक,-यन्त्रम्।
—कार, सं. स्त्री (अं) चित्र रथ, *मोटरम्।
—खाना, सं पु, मोटरागारम्।
—ड्राइवर, स पु, मोटरचालक ।
—पथ, स स्त्री *मोटर,-पथ।
—बोट, सं स्त्री *मोटरनौका।
—साइकिल, सं स्त्री *मोटरसाइकलम्, *फटफटिया।
मोटा, वि (सं पुष्ट> ?) पीन, पीवर, पुष्ट, पुष्टांग (-गी स्त्री), स्थूल, स्थूलदेह, मेदस्विन् २ घन, निबिड, सांद्र, गाढ, स्थूल ३ कणमय, कुपिष्ट, ४ अप,-निकृष्ट, हीन, गर्ह्य ५ कुरूप

६ 'समाधर', विशिष्ट ७ दृढ, गवत ८ महद्, बृहत् ९ धनाढ्य, शान्त।
—असामी, स पु, धनिन्, धनशालिन्, श्रीमत्।
—ताजा, वि, हृष्टपुष्ट, पुष्टा, मांसल।
मोटी बात, स स्त्री, सामान्य-साधारण प्राकृत, वार्ता।
मोटे हिसाब से, क्रि वि, स्थूलमानेन।
मोटाई, स स्त्री / मोटापन, मोटापा, स पु } (हिं मोटा) पीवरता, मेदोवृद्धि (स्त्री), स्थूलता पीनता २ घन न ...ड्ता, माद्यता इ
मोठ, स स्त्री (स मकुष्ठ) वन-अरण्य-वन, मुद्ग मुकुष्ठ इत्र, मद(मु)ष्ठ -ष्ठक।
मोड़ स पु (हिं मुड़ना) (नदीमार्ग आदि का) वक्र आवृत्ति (स्त्री) १ वक्रता, वक्रिमन् (पु), वक्रीभाव, जिह्मता ३ दे 'मुड़ना' स पु।
मोड़ना, क्रि स, दे 'मुड़ना' के प्रे रूप।
मोढ़ा, स पु, दे 'मोंढा'।
मोतदिल, वि दे 'मातदिल'।
मोतिया, स पु (हिं मोती) मल्ली, मल्लिका, वन, चन्द्रिका, गौरी, प्रिया सौम्या, सिता, दे 'मोगरा' (१)।
मोतियाबिंद, स पु (हिं मोती+स बिंदु) मौक्तिक-मुक्ता बिन्दु (नेत्ररोग)।
मोती, स पु (स मौक्तिक) मुक्ता, शौक्तिक, मुक्ताफल शुक्तिज।
—पिरोना, क्रि स, मौक्तिकानि सूत्र (चु) गु(ग्र)न्थ (तु प से) समथ् (क प से)। मु, सुमधुर भाष् (भ्वा आ से) २ सुस्थानरे लिख् (तु प से) ३ रुद् (अ प से) ४ सुसूक्ष्मकार्यं कृ।
मोतीचूर, स पु (हिं मोती+चूर) मुक्तामोदक।
—आँख, स स्त्री, *मौक्तिकनेत्र, लघुगोलाक्षि सुरनेत्रम्।
मोतीज्वर, स पु (हिं मोती+स ज्वर) शीतला-मसूरिका, ज्वर।
मोतीझि(झ)रा, स पु (हिं मोती+झरना) आन्त्रिक मन्थर, ज्वर।
मोथा, स पु (सं मुस्तक-क) मुस्ता, कुरुविंद, भद्रा, भद्रक।

मोद, स पु (स) हर्ष, आनंद, दे 'प्रसन्नता'।
मोदक, स पु (स) मिष्टान्नभेद। वि, हर्षजनक, आह्लादक।
मोदी, स पु (■ मोदक>) अन्न, विक्रेतृ विक्रयिन्, दे 'परचूनिया'।
—खाना, स पु (हिं+फा) अन्नभाण्डारम्।
मोम, स पु (फा) सिक्थ, सिक्थक, मधूच्छिष्ट, ...मल -ल, मधुज, मधुशेष, मधूच्छिष्ट, मधूत्थ, मधूत्थम्।
—की नाक, स स्त्री, मु, चलचित्त, अस्थिरमति।
—जामा, स पु (फा) *माधुज-सैक्थिक-सिक्थाक्त, वस्त्रम्।
—दिल, वि (फा) मृदुमानस, आर्द्रचित्त।
—बत्ती, स स्त्री (फा+हिं) मधुज सिक्थ, वर्ती-वर्ति (स्त्री)।
—करना या बनाना, मु, दयार्द्रीकृ, करुणार्द्र (वि) विधा (जु उ अ)।
—होना, मु, दयार्द्र (वि) भू, अनुकम्प् (भ्वा आ से)।
मोमियाई, स स्त्री (फा) कृत्रिमशिलाजतु (न), कृतकशिलाजित (स्त्री) २ व्रणपूरक स्निग्धौषधभेद।
मोमी, वि (फा) सिक्थमय, माधुज, सैक्थिक।
मोर, स पु (■ मयूर) बर्हिण, नीलकण्ठ, चित्र, पिच्छक पत्रक, कलापिन्, केकिन्, चन्द्रकिन्, नर्तनप्रिय, बर्हिन्, भुजगारि, मयानदिन, शिखण्डिन्, शिखावल, वर्षामद, प्रचलाकिन्।
—की ध्वनि, स स्त्री, 'केका' दे।
—की पूछ, स स्त्री, कलाप, पिच्छ, प्रचलाक, बर्ह, शिखण्ड।
—चन्द्रिका, स स्त्री, चन्द्रक, मेचक।
—पखी, स स्त्री, केलि-वि ार-नौका।
—मुकुट, स पु, मयूरमुकुट -ट, शिखण्डशेखर।
—शिखा, स स्त्री, बर्हिचूडा, शिखिशिखा, शिखालु।
मोरचा[1], स पु (फा) दे 'जंग' २ मुकुरमलम्।

मोरचा[2], स पु (फा मोरचाल) परिखा, खेय, खातम्।
—बंदी करना, मु, परिखया परिवेष्ट (प्रे) परिखा खन् (भ्वा प मे) सेना खातेषु नियुज् (रु आ अ)।
—लेना, मु, युध (दि आ अ)।
मोरछल, स पु (हिं मोर+छड) *शिखंड चामर, *कलापव्यजनम्।
मोरनी, स स्त्री (हिं मोर) मयूरी शिखण्डिनी, बर्हिणी, केकिनी।
मोरी, स स्त्री (हिं मोहरी) नाली, नालि (स्त्री) *वहनी, जलमार्ग।
मोल, स पु (स मूल्य, दे)।
—लेना, क्रि स, दे 'खरीदना'।
—तोल, स पु, अर्घनिर्धारण, मूल्यनिर्णय।
मोह, सं पु (स) भ्रम, भ्रान्ति-मिथ्यामति (स्त्री), विवर्त, आभास, प्रपंच, अविद्या अज्ञान २ ममता त्व ३ स्नेह, राग, प्रेमन् (पु न) ४ कष्ट, दुःख ५ मूर्च्छा।
—लेना, क्रि स, मुह (प्रे), मन ह (भ्वा प अ), वशी कृ।
मोहक, वि (स) चेतोहर, मनोहारिन् रम, २ मोहजनक।
मोहताज, वि (अ) दे 'मुहताज'।
मोहन, सं पु (स) मोहक, मनोहारिन् २ श्रीकृष्ण ३ मूर्च्छाकारक उपचारभेद (तंत्र) ४ अस्त्रभेद ५ कंदर्पबाणविशेष ६ धत्तूरक्षुप। वि, मोहक, चेतोहर।
—भोग, स पु (सं) (१-२) सयाव कदली-आम्र, भेद।
मोहना, क्रि अ (स मोहन) अनुरञ्-आसञ्ज् (कर्म), आसक्त-अनुरक्त-बद्धभाव भू २ मुह् (दि प से), दे 'मूर्च्छा आना'। क्रि स, प्रीति-अनुराग-अभिलाष जन् (प्रे), अनुरञ्ज् (प्रे), वशी कृ २ भ्रम भ्रान्ति-संदेह जन् (प्रे), प्रतॄ-वञ्च (प्रे)। स पु, अनुरञ्जन, अनुराग मूर्च्छा, मोदनं, वशीकरणं, वचन, प्रतारणम्।
मोहनी, सं स्त्री (स) विष्णो रूपविशेष २ मिष्टान्नभेद ३ मोहन, शक्ति (स्त्री) मंत्र ४ माया। वि स्त्री (सं) मोहिका, चेतोहरी।
—डालना, मु, अभिचारेण मायया वा वशीकृ।
मोहर, स स्त्री (फा) दे 'मुद्रा' (१-४)। २ सुवर्णमुद्रा, निष्क व, दीनार।
—लगाना, क्रि स, मुद्रयति (ना धा), मुद्रया अंक (चु)।
मोहरा[1], स पु (हिं मुँह) पात्र भाजन, मुख २ पदार्थस्य अग्र-ऊर्ध्व, भाग ३ पशुमुख जालक ४ नासीरचरा (पु बहु), सेना मुख ५ निगमनमार्ग, द्वारम्।
मोहरा,[2] स पु (फा मोहर) शार-रि, खेलनी २ मृण्मय *मस्थानपुर (मांचा) ३ दे 'जहरमोहरा'।
मोहलत, स स्त्री (अ) अवकाश २ अवधि।
मोहित, वि (स) मोहग्रस्त, भ्रांत २ आसक्त, अनुरक्त, बद्धभाव।
मोहिनी, वि तथा स स्त्री (सं) दे 'मोहनी' वि तथा स स्त्री।
मोही, वि (स-हिन्) मुग्धकारिन्, चेतोहर २ अनुरागिन्, स्नेहिन् ३ भ्रान्त ४ लुब्ध, लोभिन्।
मौंजी, स स्त्री (स) मुञ्जमेखला।
—बंधन, स पु (स न) मुञ्जमेखलधारणम्।
मौका, स पु (अ) घटनास्थानं २ स्थान, प्रदेश ३ अवसर, अवकाश।
—देखना, मु, अवसर प्रतिपाल् (प्रे, प्रतिपालयति)।
—हाथ से न जाने देना, मु, अवसर न वा (प्रे वापयति) हा (जु प अ, प्रे, हापयति)।
मौकूफ, वि (अ) दे 'बरखास्त'।
मौकूफी, स स्त्री (अ) दे 'बरखास्तगी'।
मौक्तिक, स पु (स न) मुक्ता, मुक्ताफलं, शौक्तिकम्, शुक्तिजम्।
—दाम, सं पु (स-मन् न) मुक्ता-मौक्तिक, हार-स्रज्, मुक्तावली।
—सर, स पु (सं) दे 'मौक्तिकदाम'।
मौखिक, वि (सं) वाचिक लेख विना।
मौज, स स्त्री (अ) तरंग, कल्लोल, वीची नि (स्त्री) २ कामचार, छंद, छंदस् (न), चित्ततरंग ३ आनंद, मोद ४ वैभव, विभव ५ दे 'धुन'।
—आना, मु, स्वच्छन्दतया सहसा प्रवृत् (भ्वा आ से)।

—मनाना या उडाना, मु, नद् (भ्वा प से), मुद् (भ्वा आ से), रम् (भ्वा आ अ)।

मौज़ा, स पु (अ) ग्राम।

मौजी, वि (अ मौज) प्रसादिन्, उल्लासिन् २ कामचारिन्, स्वैरिन २ अस्थिरमति।

मौजूद, वि (अ) उपस्थित, विद्यमान।

मौजूदगी, स स्त्री (अ+फ़ा) उपस्थिति (स्त्री), विद्यमानता।

मौजूदा, वि (अ) वर्तमान, विद्यमान, प्रचलित, आधुनिक, साम्प्रतिक।

मौत, स स्त्री (स मृत्यु दे)।

—सिर पर खेलना, मु, जीवितसंशये वृत् (भ्वा आ से)।

अपनी—मरना, मु, प्रकृत्या स्वभावेन मृ (तु आ अ)।

मौन, स पु (स न) निःशब्दता, तूष्णीं भाव, वाक्-रोध-नियमन-स्तंभ २ मुनि व्रतम्। वि, दे 'मौनी'।

—व्रत, स पु (स न) मूकता-मूकिम-तूष्णीकता, प्रतिज्ञा संकल्प व्रतम्।

—खोलना, क्रि अ, मौनं भञ्ज् (रु प अ), तूष्णींभाव त्यज् (भ्वा प अ)।

—धारण करना, क्रि अ, वाचंयम् (भ्वा, प अ)-निरुध् (रु उ अ), मौन धृ (चु) भज् (भ्वा उ अ)।

मौनी, वि (स निन्) वाचंयम, मौनव्रतिन्, मूक, निःशब्द, तूष्णीक। स पु (स) मुनि, तपस्विन्।

मौर, स पु (स मुकुट>) वरस्य तालपत्र मुकुट, *मुकुट, २ प्रधान, शिरोमणि।

मौरी, स स्त्री (हिं मौर) वध्वास्तालपत्रमुकुटक, *मुकुटकम्।

मौरूसी, वि (अ) पैतृक, पित्र्य, परम्परागत।

मौर्ख्य, स पु (स न) मूर्खता, अज्ञता, जड़ता, मूढता।

मौर्य, स पु, (स) प्राचीन भारतस्य वंश विशेष।

मौर्वी, स स्त्री (स) धनुर्गुण, प्रत्यंचा, ज्या।

मौलसिरी, स स्त्री (स मौलि+श्री>) बकुल, सीधुगंध, मुकु(कू)ल, मधुपुष्प सुरभि, स्थिरकुसुम, भ्रमरानंद।

मौला, स पु (अ) परमेश्वर।

मौलि, सं स्त्री (स पु स्त्री) शिखर, शृंग, ऊर्ध्वभाग २ शीर्ष, मस्तक ३ मुकुट, किरीट ४ जूट, जूटक ५ अशोकवृक्ष ६ प्रधान, मुख्य ७ पृथिवी।

मौलिक, वि (स) मौल, आधारभूत २ प्रधान, मुख्य ३ आद्य, आदिम।

मौसा, स पु, दे 'मासड'।

मौसिम, स पु (अ) ऋतु, काल, समय २ उपयुक्तसमय, उचितकाल।

मौसिम, वि (फ़ा) आर्तव, ऋतु-संबंधिन् विषयक २ समयानुकूल, कालानुरूप।

मौसी, सं स्त्री, दे 'मासी'।

मौसेरा, वि (हिं मौसी) मातृष्वसृसंबंधिन्।

—भाई, स स्त्री, मातृ-ष्वसेय ष्वस्रीय।

मौसेरी बहिन, स स्त्री, मातृ ष्वसेयी ष्वस्रीया।

म्याँव, स स्त्री (अनु) विडालशब्द*, *म्यूँकार।

—करना, मु, भयेन मंदमंद वद् (भ्वा प से)।

म्याद, स पु, दे 'मीआद'।

म्यान, स स्त्री, दे 'मियान'।

म्लान, वि (स) म्लान्त, विशीर्ण २ दुर्बल ३ मलिन ४ खिन्न, अवसन्न।

म्लानि, स स्त्री (स) म्लानता, कान्तिक्षय, विवर्णता २ खेद, अवसाद, शोक, ग्लानि, (स्त्री)।

म्लेच्छ, स पु (स) वर्णाश्रमधर्मविहीन, अनार्य २ गोमांसभक्षक ४ अस्पष्टभाषिन् ४ दुर्वृत्त, दुष्ट। वि, अधम, नीच, पापिन्।

य

य, देवनागरीवर्णमालाया षड्विंशो व्यंजनवर्ण, यकार।

यंता, स पु (स यन्तृ) शासक, निदेशक २ वाहन-चालक, सारथि। ३ हस्तिपक, गजाजीव*।

यंत्र, सं पु (स न) देवाद्यधिष्ठान, विविध प्रभावयुक्त अंकाक्षरयुत कोष्ठकचित्र (तंत्र) २ दारुयन्त्रादि, यन्त्र (मशीन) ३ साधन, उपकरण ४ अस्त्र-शस्त्रं ५ वाद्य, वीणा ६ दे 'ताला'।

—गृह, स पु (स न) यन्त्रशाला २ मान मंदिर, वेधशाला ३ (अपराधिना) यन्त्रणागृहम्।

—मंत्र, स पु (स न) अभिचार, कुहक, कुयुक्ति।

—विद्या, स स्त्री (स) यंत्र शास्त्र विज्ञानम्।
—शाला, स स्त्री (स) दे 'यंत्रगृह'।
यंत्रज, स पु (स) यंत्रकार यंत्रज, शिल्पिन्।
यंत्रण, स पु (स न) नियंत्रण, दमनम् २ बंधन, संयमनम् ३ पीडा, वेदना ४ रक्षण, अभिरक्षा।
यंत्रणा, स स्त्री (स) कष्ट, क्लेश, यातना २ वेदना पीडा।
यंत्रालय, स पु (स) यंत्र-गृह शाला २ मुद्रणयंत्रालय।
यंत्रित, वि (स) यंत्रबद्ध २ तालबद्ध।
यकता, वि (फा) अनुपम, अद्वितीय, अप्रतिम।
यकसाँ, वि (फा) तुल्य, सम, सदृश।
यक़ीन, स पु (अ) निश्चय २ विश्वास।
यकृत, स पु (स न) कालखंड, कालक, कालेय, करेजा, महास्नायु, दे 'जिगर' २ यकृद्, उदरवृद्धि।
यक्ष स पु (स) देवभेद, गुह्यक २ कुबेर।
—राज, स पु (स) कुबेर, यक्षराज।
यक्षिणी, स स्त्री (स) यक्षभार्या, यक्षी, २ कुबेरपत्नी।
यक्ष्मा, स पु (स यक्ष्मन्) क्षय, शोष, राजयक्ष्मन् (पु), रोगराज।
यख़नी, स स्त्री (फा) मांस-मंड-रस २ शाक-मंड रस।
यगानगर, स पु, आत्मीय, सबंधिन्, बांधव, बंधु। वि, एकाकिन् २ अनुपम।
—बेगाना, स पुं, स्वकीयपरकीया (बहु) २ मित्रबांधवा (बहु)।
यजमान, स पु (स) यज्ञपति, यष्टृ, व्रतिन्, यज्ञ-कर्तृ २ दानिन्, दातृ।
यजुर्वेद सं पु (स) अर्याय धर्मग्रंथविशेष, यजुस् (न), यजु श्रुति (स्त्री)।
यजुर्वेदी, स पु (स-दिन्) यजुर्विद् (पुं)।
यज्ञ, स पु (स) याग, अध्वर, सव सवन, मख, क्रतु, सत्र, हवनं होम यज ज़ि, इज्या, इष्टि (स्त्री), मखनतु, मह २ विष्णु।
—कर्म, स पु [सं अंतु (न)] यज्ञ, क्रिया कृत्य २ कर्मकाण्डम्।
—कुंड, सं पुं (सं पुं न) हवन-वेदी-कुंडम्।
—पति, स पु (स) दे 'यजमान'।
—पशु, सं पुं (सं) यज्ञियबलि २ अश्व ३ छाग।
—पात्र, स पु (स न) याग, भाजन भाण्ड।
—भूमि, स स्त्री (स) यागक्षेत्रम्।
—शाला स स्त्री (स) यज्ञ सदनं-मंदिरं आगारम्।
—सूत्र, स पु (स न) यज्ञोपवीतम्।
—स्तंभ, स पु (स) यागयूप।
यज्ञांग, स पु, (स न) यज्ञभाग २ यज्ञ साधनम् सामग्री उपकरणम्। (सं पुं) उदुम्बर जंतुफल २ खदिर, दंतधावन ३ विष्णु।
यज्ञागार, स पु (स न) यज्ञ, शाला वेदी वेदि (स्त्री)।
यज्ञोपवीत, स पु (स न) पवित्र, सावित्री यज्ञ सूत्र, सूत्र, द्विजायनी।
यति¹, स (सं) यतिन्, जितेंद्रिय, तापस, परिव्राजक, सन्न्यासिन्, योगिन्, भिक्षु, रक्तवसन २ ब्रह्मचारिन्।
—धर्म, स पु (स) सन्न्यास, भिक्षाचर्यम्।
यति², स स्त्री (स) विराम, विरति (स्त्री), विश्राम, पाठविच्छेद (छंद)।
यतिनी, स स्त्री (स) सन्न्यासिनी, परिव्राजिका २ विधवा।
यती स पुं (स तिन्) दे 'यति' 'सं पु'।
यतीम, सं पु (अ) छ(डि)म्भ, अनाथ, मातृपितृहीन।
—ख़ाना, स पु (अ+फा) अनाथालय, छ(डि)म्भालय।
यत्न, स पु (स) प्रयत्न, उद्योग, उद्यम, अध्यवसाय, चेष्टा इति, आयास-याम, परिश्रम, व्यवसाय २ उपाय, युक्ति (स्त्री) ३ चिकित्सा, उपचार, रोगप्रतिकार।
—करना, क्रि अ, प्र, यत् तथा चेष्ट् (भ्वा आ मे) परि, श्रम् (दि प से), अध्यव-व्यव सो (दि प अ), उद्यम् (भ्वा प अ), आयम् (भ्वा दि प से) प्रयत्नं परिश्रमं अध्यवसायं कृ।
—शील, वि (स) यत्नवत्, उद्यमिन्, उद्योगिन्, आयास-यामिन्, परिश्रम उद्योग रत, शील परायण।
यत्र, अव्य (सं) यस्मिन् देशे स्थले स्थाने।
—तत्र, अव्य (स) अत्र तत्र, इतस्ततः २ अनेकत्र, बहुत्र।
यथांश, अव्य (सं न) यथा, भाग खण्डम्,

म-र अश, अनुसार-अनुकूल्न् २ यथायोग्यम्, यथोचितम्।

यथा, अव्य (स) येन प्रकारेण, यदा रीत्या २ दृष्टान्त उदाहरण,-स्वरूप,तथा यथा हि, नत्, इव, यद्वत्, अनुरूप, अनुसारम्।

—काम, क्रि वि (स न) यथा, इच्छ इष्ट ईप्सित अभिमतम्।

—क्रम, क्रि वि (स न) क्रमेण, क्रमानुसारेण।

—तथा, क्रि वि (स) यथाकथंचित्, येन केन प्रकारेण।

—मति, क्रि वि (स न) यथाबुद्धि, यथाज्ञानम्।

—योग्य, वि (स) यथोचित, यथार्ह।

—रुचि, क्रि वि (स न) दे 'यथाकाम'।

—वत्, क्रि वि (स) यथोचित, यथार्ह, यथायुक्त २ यथाविधि, नियमानुसार ३ यथा नर्थ, यथ सत्यम्।

—शक्ति, क्रि वि (स न) यथा-बल-सामर्थ्य क्षमम्।

—शास्त्र, क्रि वि (स न) शास्त्रानुकूलम्।

—सभव, क्रि वि (स न) यथाशक्यम्।

—समय, क्रि वि (स न) यथाकाल, कालानुसारम्।

—साध्य, क्रि वि (स न) यथा-शक्ति मसभ्यम्।

—स्थान, क्रि वि (स न) स्थानानुकूल, नचितस्थानेषु।

यथार्थ, वि (स) सत्य, अवितथ, निर्दोष, निर्भ्रान्त २ उचित, उपयुक्त, युक्त। क्रि वि (स न) युक्त, यथार्ह, साम्प्रत, सम्यक्।

यथार्थता, स स्त्री (स) सत्यता, निर्दोषता २ औचित्य, युक्तता।

यथेच्छ, क्रि वि (स न) 'यथाकाम' दे। वि, (स) यथेष्ट, यथेप्सित, यथाकाम।

यथेच्छाचार, स पु (स) स्वेच्छाचार, यथेष्टव्यवहार।

यथेच्छाचारी, वि (स रिन्) स्वच्छन्द, स्वैर, स्वैरिन, अनियंत्रित।

यथेष्ट, वि तथा क्रि वि दे 'यथेच्छ'।

यथोचित, वि (स) यथा,-योग्य अर्ह युक्त। क्रि वि (स न) यथा,-योग्य-अर्हम्।

यदा, अव्य (स) यस्मिन् काले-समये।

—कदा, अव्य (स) काले काले, कदाचित्, कदापि।

यदि, अव्य (स) चेत् (यह वाक्यारंभ मे नहीं आता)।

यदु, स पु (स) ययातिसुत।

—नन्दन, स पु (स) यदु,-नाथ -श्रेष्ठ पति राज, श्रीकृष्ण।

यद्यपि, अव्य (स) षष्ठी वा सप्तमी से भी, जैसे, यद्यपि दशरथ विलाप करता रहा तो भी राम वन को चल दिया = विलपति दशरथे (विलपतो दशरथस्य) रामो वन ययौ।

यम, स पु (स) धर्मराज, पितृपति, कृतान्त, यमुनाभ्रातृ वैवस्वत, काल, दण्डधर, शमन, धन, महिषध्वज, महिषवाहन, जीवितेश २ इन्द्रियनिग्रह ३ योगाङ्गविशेष, अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहधर्मपालन ४. वायु ५ दे 'यमज'।

—दूत, स पु (स) धर्मराजचर।

—पुर, स पु (स न) यमपुरी, यमलोक।

—राज, स पु (स) दे 'यम' (१)।

यमक, स पु (स न, शब्दालंकारभेद (काव्य), (स पु) संयम २ दे 'यमज'।

यमज, स पु (स-जौ) यमौ, यमकौ, यमलौ २ अश्विनीकुमारौ (जोड़े में से एक) यम, यमल। वि, यम, यमक, यमल।

यमल, स पु तथा वि, दे 'यमज'।

यमुना, स स्त्री (स) कालिन्दी, कलिंद,-कन्या-नंदिनी, यमी, यमनी, सूर्यसुता, तरणितनुजा २ दुर्गा।

ययाति, स पु (स) नहुषपुत्र, पुरुपितृ, चंद्रवंशिनृपविशेष।

यरकान, स पु (अ) पाण्डु,-रोग -आमय, कामला, पाण्डुक।

यव, स पु (स) सित-शूक-शूक, मध्य, दिव्य, अक्षत, धान्यराज, तुरगप्रिय, शक्तु, मेध्य, पवित्रधान्यम्।

—क्षार, स पु (स) यवज, पाक्य, यवाग्रज।

यवन, स पु (स) यूनानवासिन् २ दे 'मुसलमान' ३ विदेशीय ४ म्लेच्छ ५. वेग. ६ वेगवान् अश्व।

यवनानी, स स्त्री (स) १ २ यवन-यूनान, भाषा-लिपि (स्त्री)।

यवनारि, स पु (स) कृष्ण, नन्दनन्दन, वासुदेव, मधुसूदन।

यवनिका, स स्त्री (स) जवनिका, अपटी, कांडपट २ तिरस्करिणी प्रतिसीरा, व्यवधानम्।
यवनी, स स्त्री (स) यवनभार्या २ यवन जातेर्नारी।
यवस, स स्त्री (स पु न) घास, शाद, तृणम् २ यव, प्रलाल धान्यतृणम्।
यवागू, स पु (स स्त्री) उष्णिका, श्राणा, विलेपी, तरला।
यश, स पु [स यशस (न)]ख्याति-कीर्ति विश्रुति प्रसिद्धि (स्त्री) श्लोक, विश्राव, अभिख्यान, समाख्या।
—गाना, मु प्रशंस (भ्वा प से), श्लाघ (भ्वा आ से) २ कृत ज्ञा (क्र उ अ), उपकार विद् (अ प से)।
यशस्वी, वि (स स्विन्) कीर्तिमत्, प्र वि, ख्यात लोकविश्रुत, सुयश यशोधर, कीर्तित, पुण्यश्लोक, प्रसिद्ध। [यशस्विनी (स्त्री) = कीर्तिमती, विख्याता इ]।
यष्टि, } स स्त्री (स) दण्ड, लगुड, यष्टी
यष्टिका, } २ हारभेद।
यह, सव (स इदम्) इदम् एतद्।
यहाँ, क्रि वि (सं इह) अत्र, अस्मिन् देशे-स्थाने।
—तक, क्रि वि, एतद्-अत्र, पर्यंत-यावत्-अवधि-अनम्।
—वहाँ, क्रि वि, अत्र तत्र, इतस्ततः, अत्रामुत्र।
—से, क्रि वि इतः, अस्मात् स्थानात् २ अतः इतः, परं-ऊर्ध्वं प्रभृति।
यही, क्रि वि (हि यह+ही) अयं इयं इदं एव-एषा एतद्-एव।
यहीं, क्रि वि (हि-यहाँ+ही) इहैव, अत्रैव, अस्मिन्नेव स्थाने।
यहूदी, सं पु (इब्रानी, यहूद) यहूद-वासिन् भाषा लिपि (स्त्री)।
यों, क्रि वि, दे 'यहाँ'।
या, अव्य (फा) वा, अथवा यद्वा, (प्रश्न करने में) नु।
याकूत, स पु (अ) दे 'लाल' (रत्न)।
याग, स पुं (स) दे 'यज्ञ'।
याचक, सं पु (स) अर्थिन्, प्रार्थक २ भिक्षु, भिक्षुक।
याचना, सं स्त्री (सं) याचनं, याच्ञा, प्रार्थना। क्रि स, दे 'माँगना'।
याजक, स पु (सं) याजयितृ, पुरोहित।
याज्ञवल्क्य, सं पु (सं) वैशंपायनशिष्य, वाजसनेय २ जनकसम्यो योगीश्वरयाज्ञवल्क्य ३ स्मृतिकारविशेष।
याज्ञिक, सं पु (स) यजमान, यष्टृ २ याजयितृ। वि, यज्ञि(ज्ञी)य, यागविषयक। [याज्ञिकी (स्त्री)]।
यातना, स स्त्री (स) पीडा-वेदना-व्यथा-अतिशय २ यमदण्डपीडा।
यातायात, स प (स न) गतागत, आयातनिर्यान २ प्रेत्यभाव, पुनर्जन्मन् (न)।
यात्रा, स स्त्री (स) प्रस्थान, प्रयाण, व्रज्या, गम अत, प्रवस, देश-भ्रमण पर्यटन, प्रस्थिति (स्त्री), अध्व मार्ग-गमन क्रमणम्।
—करना, क्रि अ, प्र या (अ प अ) प्रवस् (भ्वा प अ), देशे अट (भ्वा प से), यात्राकृ।
यात्री, वि (स त्रिन) पथिक, पथिल, पाथ, अध्वग, अध्वय, पादविक, प्रवासिन्, मार्गिक, यात्रिक, सारणिक २ तीर्थयात्रिन्, कार्पटिक।
याद, स स्त्री (फा) धारणा, स्मृति-स्मरण शक्ति (स्त्री) २ स्मरणम्।
यादगार, स स्त्री (फा) स्मृतिचिह्न, स्मारकम्।
याददाश्त, स स्त्री (फा) स्मृति (स्त्री), धारणा २ स्मरण, स्मारक टिप्पणी।
यादव, स पु (स) यदुवंश्य, यदुवंशज २ श्रीकृष्ण। वि, यदुसंबन्धिन्।
यान, स पु (स न) प्रवहण, रथ स्यंदन, शताङ्ग, वाहन, वहम्।
यानी-ने, अव्य (अ) अयं आशय, एष भाव, इदं तात्पर्यं, अर्थात्।
यापन, सं पुं (स न) कालक्षेप, समयातिवहनम्।
याबू, स पुं (फा) दे 'टट्टू'।
याम, सं पुं (सं) दे 'पहर' २ समय।
यामिनी, स स्त्री (सं) रात्रि, रजनी, निशा।
यार, सं पुं (फा) मित्र, सुहृद् (पु) २ उपपति, जार।
यारनी, सं स्त्री (फा यार) उपपत्नी, भुजिष्या २ प्रिया, दयिता।

याराना, सं पु } (फा) मर्त्य, मित्रता
यारी, स स्त्री } २ अधर्म्य अनुचित, प्रणय प्रेमन् (पु न), अनुराग ।
याल, स स्त्री (तु) दे 'अयाल'।
यावक, स पु (सं) सत्तु २ अलक्तक ।
यावज्जीवन, क्रि वि (स न) आ,मरणं मृत्यो, यावज्जन्म, यावज्जीवम् ।
यावत्, वि (स) दे 'जितना' २ समस्त, सकल (अव्य) पर्यन्तम्, आ(समास मे या पचमी युक्त)।
यावनी, स स्त्री (स) करकशालिनामक इक्षु, गुग्गुलभेद, वि स्त्री यवन-सम्बन्धिनी।
युक्त, वि (स) उचित, उपपन्न, योग्य, औपपत्तिक २ संश्लिष्ट, सहित, सम्पन्न, मिलित।
युक्ति, स स्त्री (स) उपाय, प्र,योग -युक्ति (स्त्री) २ कौशल, चातुर्य ३ रीति (स्त्री), प्रथा ४ न्याय, नीति (स्त्री) ५ अनुमान, तर्क ६ हेतु, कारणं ७ ऊहा, तर्क ८ योग, सश्लेष ।
—युक्त, वि (स) उचित, उपपन्न न्याय्य, यथार्थ।
युग, सं पुं (स न) द्वय, द्वितय, युग्म, युगल, युतक, यमक २ समय ३ सुदीर्घ कालपरिमाणविशेष, कृतादिकालचतुष्टय (दे 'कलियुग' आदि) ४ धुर् (स्त्री), धुर्वी, प्रासंग, युग न ५ ग्रार रि, खेलनी ६ एक षोडशस्थ शारद्वयम्।
—युग, क्रि वि (स न) निरतरं, सदा, शाश्वत, नित्य, चिर, (सब अव्य)।
—धर्म, सं पु (सं) युगानुरूप,कर्तव्य आचार ।
युगपत्, अव्य (स) सहैव, समकालम्।
युगल, स पु (स) दे 'युग' (१)। २ दपती (द्वि) जपती।
युगांत, सं पुं (स) महाप्रलय, कल्पात २ सत्यादियुगविशेषस्य समाप्ति (स्त्री)।
युगांतर, स पु (सं न) अन्य द्वितीय,-युग २. परिवर्तित समय ।
—उपस्थित करना, मु, सवथा परिवृत् (प्रे) क्राति कृ ।
युग्म, सं पु (स न) दे 'युग' (१)।
युत, वि (स) युक्त, सम्पन्न, सहित, मिलित, संश्लिष्ट।

युद्ध, स पुं (स न) संग्राम, आयोधनं, जन्य, प्रधन, मृध, आस्कन्दनं, सख्य, समर, रण, विग्रह, सप्रहार, अभिसपात, कलि, आहव, विदार, आजि (पु स्त्री) बलन, युध् (स्त्री)।
—काल, स पु (स) सगर-सग्राम,-समय काल-वेला।
—क्षेत्र, सं पु (स न) युद्ध रण-संगर, भू (स्त्री) भूमि (स्त्री) -क्षेत्रम्-अजिरम्।
—विद्या, स स्त्री (स) रण-समर-सगर,-शास्त्र विज्ञानम्।
—वीर, स पु (सं) भट, योध, शूर, योद्धृ।
युधिष्ठिर, सं पु (स) पाडवराज, अजात-शत्रु, धर्मपुत्र, शल्यारि, अजमीढ ।
युरेनियम, स पु (अ) किरणधातु, वरुणिकम्।
युवक, सं पु (स) दे 'युवा'।
युवती, स स्त्री (स) युवति (स्त्री), तरुणी, यूनी, धनि(नी)का, मध्यमा,-मिका, वयस्था, वर्या, ईश्वरी, दृष्टरजस् (स्त्री), प्राप्तयौवना।
युवराज, स पु (स) राज्याधिकारिन, राज-कुमार ।
युवा, सं पु (स युवन्) तरुण, तलुन, वय-(य)स्थ ।
यूँ, अव्य, दे 'यों'।
यूका, स पु (स) यूक, केशकीट, स्वेदज, बालकृमि, पालीलि (स्त्री), षट्पद । दे 'जूँ' २ दे 'खटमल'।
यूथ, स पु (स न) कुल, वृंद, गण, समज, सजातीयवस्तुसमूह २ सैन्य, दल-लम्।
—पति, स पु (स) यूथ,प नाथ २ दल-पति ।
यूनान, स पु (ग्रीक, आयोनिया) यूनान, यवनदेश ।
यूनानी, वि (हिं यूनान) यवनदेशसबधिन्। २ स्त्री, (१-२) यवनदेश यूनान, भाषा-चिकित्सा प्रणाली। स पु, यवनदेशीय, यूनानवासिन्।
यूनिवर्सिटी, स स्त्री (अ) विश्वविद्यालय ।
यूप, स पु (स) यज्ञ-याग,-स्तंभ २ वि,-जयस्तभ, कीर्तिस्तभ ।

यूरोप, स पु (अ युरोप) *यूरोप, महाद्वीप विशेष ।

यूरोपियन, वि (अ) *यूरोपीय, यूरोप भव भव विषयक । ॥ पु, यूरोपीय, यूरोप वासिन् ।

यूष, स प (स पु न) जूष प, द्विदल क्वाथरस । दे शोरवा' ।

ये, सव (हिं यह) इमे एते इदम एतद् के बहुवचन के रूप ।

यों, अव्य (स एवमेव>) इत्थ, एव, अनेन प्रकारेण, एतया रीत्या ।

—तो, क्रि वि प्राय, प्रायश, प्रायेण २ साधारण्येन, सामान्यतः ।

—ही, क्रि वि, एवमेव, इत्थमेव २ व्यर्थं, मुधा, निष्प्रयोजन ३ अकारण, अहेतुरम् ।

—ही सही, क्रि वि, एवमस्तु, एव भवतु, तथास्तु ।

योग, स पु (स) चित्तवृत्तिनिरोध, मन स्थैर्यं २ दर्शनशास्त्रविशेष ३ औषधिपद्य, युक्तियुक्ति (स्त्री) ४ सधि, सँग, स(मना)-गम, सहति (स्त्री), सयोग, सश्लेष ५ उपाय ६ औषध ७ धन ८ लाभ ९ शुभ मगल,-अवसर मुहूर्त (र्त्ती) १० दूत, चर ११ वर्तीविदशावी १२ चातुर्य १३ वाहन १४ परिमाण १५ नियम १६ उपयुक्तता १७ सामायुपायचतुष्टय १८ वशीकरणोपाय १९ ध्यान, चिंतन २० सबध २१ धनोपार्जनवर्द्धने २२ सौहार्द २३ वैराग्य २४ संकलन, परिसख्या, पिण्डकरण (गणित) २५ सौकर्य २६ निर्विकार नक्षत्रादीना स्थितिविशेष (ज्यो)।

—क्षेम, स पु (स न) अनागतागमनागत रक्षणं (न द्वि), प्राणिरक्षणं । जीवननिर्वाह २ मगल ३ लाभ ४ राष्ट्रसुव्यवस्था ५ दायादेषु अविभाज्य वस्तु (न)।

—निद्रा, स स्त्री (स) योगसमाधि २ वीरगति (स्त्री)।

—फल, सं पुं (सं न) सकल, पिंड, परिसख्या (गणित)।

—बल, सं पुं (सं न) तपोबलं, योग शक्ति (स्त्री)।

योगांग, सं पुं (सं न) योग,-साधनानि उपाया (पु) [यमनियमासनप्राणायाम प्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावगानि।

योगांजन, स पु (स न) सिद्धाजन, भूग र्भस्थपदार्थदर्शकवज्जलम् २ नेत्ररोगनाश कांजनम् ।

योगाभ्यास, स पु (स न) योगानुष्ठान योगसाधनम् ।

योगासन, स पु (स न) प्रद्मासन, ध्यानासनम् ।

योगिनी, स स्त्री (स) योगाभ्यासिनी तपस्विनी २ रण, पिशाची पिशाचिका ।

योगी, स पु (स गिन्) योगाभ्यासिन, तपस्विन, तापस, यति मुनि, वैरागिन गिन, सन्यासिन् ।

योगीश्वर, सं पु (सं) योगीन्द्र, योगिराज ।

योगेश्वर, सं पु (स) श्रीकृष्ण २ शिव ३ योगेन्द्र, सिद्ध, योगेश ।

योग्य, वि (स) क्षम, शक्त, समर्थ, पात्र २ सुशील, श्रेष्ठ, ३ चतुर, दक्ष, निपुण ४ उचित, उपपन्न, युक्त ।

योग्यता, स स्त्री (सं) क्षमता, सामर्थ्यं २ चातुर्यं, नैपुण्यं ३ औचित्य, युक्तता ।

योग्या, स स्त्री (सं) युवती, तरुणी २ अभ्यास ३ शस्त्रक्रियाभ्यास ।

योजक, वि (स) सयोजक, सम्मेलक सश्लेषक । सं पु डमरुमध्यम, वृहद्भूखण्ड युग्मयोजकसूक्ष्मभूभाग ।

योजन, स पु (स न) (१-२) द्विचतुः अष्ट,-क्रोशी ४ योग ५ सयोजनम् ।

योजना, स स्त्री (सं) उपाय, कल्पना, प्रयोग, प्रयुक्ति (स्त्री) २ नियुक्ति (स्त्री) ३ रचना, विन्यास ४ व्यवस्था, आयोजनं ।

योद्धा, } स पु (स योद्धृ) भट, योध, योधा, } वीर, शूर सैनिक, आयुधिक, युद्ध शास्त्र उपजीविन्, अस्त्रशस्त्र धर शूर आजीव ।

योनि, स स्त्री (स पु स्त्री) भग, वरांगं, स्मरमंदिरं, रतिगृहं, अधर, स्मरच्छत्र, पुष्प नाडी,-पुष्पं उपस्थं, मन्मथमार्ग २ कारण ३ उद्गम, उद्भव, निर्गम ४ प्राणिजाति (स्त्री) ५ देह ६ गर्भ ७ जन्मन् (न) ८ गर्भाशय ।

योनिज, वि (स) मगज, योनिसभव। म पु, (स) जरायुज अण्डजो वा जीव।

योरोप, स पु, दे 'यूरोप'।

यौगिक, स पु (स) व्युत्पन्न, प्रकृतिप्रत्यय योगलभ्यार्थवाचक शब्द २ समस्तशब्द।

यौतक, स पु (स न) यौतुक, युतक, दे 'दहेज'।

यौवन, स पु (स न) तारुण्य, पूर्व प्रथम नव-वय (न)।

—**काल**, स पु (स) यौवन, दशा पदवी, तरुण्यावस्था।

र

र, देवनागरीवर्णमालाया सप्तविंशो व्यजनवर्ण, रेफ, रकार।

रक, वि (स) दरिद्र, निर्धन २ कृपण, कदय। स पु, भिक्षुक २ दरिद्र।

रग, स पु (स) राग, वर्ण २ वर्णक-का, लेप ३ नृत्यगीते (न द्वि), सगीत ४ नाट्य रग, क्षेत्र, शाला-गृह-मडप-स्थल-भूमि (स्त्री) ५ युद्ध-रण, क्षेत्र-भूमि ६ शरीरस्वग, वर्ण ७ यौवन ८ सौंदर्य ९ प्रभाव १० कौतुक, क्रीडा ११ युद्ध १२ कामचार, छद (पु) १३ आनद १४ दशा १५ काड, अद्भुत व्यापर १६ कृपा १७ अनुराग १८ प्रकार, रीति (स्त्री)।

—**करना**, क्रि स, दे 'रगना'।

—**चढना**, क्रि अ, व 'रगना' के कर्म के रूप।

—**ढग**, स पु, आकार, रूप, २ दशा ३ आचार।

—**दार**, वि, रजित, वर्णित, सराग, रागयुक्त, चित्रित।

—**बिरग-गा**, वि, अनेक-बहु-नाना, रग-वर्ण, चित्र, कर्बुर, शबल। २ विविध, अनेक-बहु नाना विध प्रकारक।

—**भूमि**, स स्त्री (स) उत्सव, स्थल-स्थान २ क्रीडा-कौतुक, स्थल ३ दे 'रग' (४)।

—**र(रे)लियाँ**, स स्त्री, आमोदप्रमोद, परिहास, विनोद, लीला, हासिका, विहार, क्रीडा।

—**रस**, स पु, दे 'रगरलियाँ'।

—**रसिया**, स पु, क्रीडाप्रिय, विलासिन्, विनोदिन, आनदिन, हास्यशील।

—**रूप**, स पु (स न) आकार, आकृति (स्त्री), रूपम्।

—**रेज**, स पु (फा) रजक, रागजीव। [स्त्री (स्त्री)-रजका]।

—**शाला**, स स्त्री (स) दे 'रग' (४)।

—**साज**, स पु (फा) रजक, वर्णचारक, कुणु वर्णाट, तौलिक, तौलिकिक, रग, कार-जीवक आजीव २ रग, निर्मातृ रग विक्रेता।

—**साजी**, स स्त्री (फा) रजन, वर्णन, रजकता, तौलिकता।

—**महल**, स पु (स+अ) रगभवन, प्रमोदप्रासाद।

—**उडना या उतरना**, मु, पाण्डुच्छाय (वि) जन् (दि आ से), विवर्णता प्रपद् (दि आ अ), मलिन-म्लान-मद, प्रभ-काति द्युति जन्।

—**जमाना या बाँधना**, मु, स्वगौरव प्रतिष्ठा (प्रे प्रतिष्ठापयति), निजप्रतिष्ठा प्रस (प्रे)।

—**पीला (फक, फीका या मद) होना**, मु, दे 'रग उडना'।

—**बदलना**, मु, कुप् (दि प अ), क्रुध् (दि प से)।

—**में भंग पडना**, मु, आनदोत्सव विघ्न (नम), रगभगो जन्।

—**र(रे)लियाँ मनाना**, मु, मुद् (भ्वा आ से), रम् (भ्वा आ अ), विहृ (भ्वा प अ), क्रीड विलस् (भ्वा प से)।

रगत, स स्त्री (स रग >) दे 'रग' (१६) २ आनद, स्वाद ३ दशा, अवस्था।

—**लाना**, मु, परिवर्तनं जन (प्रे), प्रभाव उत्पद् (प्रे)।

रँगना, क्रि स (स रग >) रज् (प्रे), चित्र-वर्ण (चु) २ दे 'मोहना' क्रि स (१) तथा क्रि अ (१)। स पु, रजन, चित्रण, वर्णनम्।

रगने योग्य, वि रजनीय, चित्रयितव्य, वर्णनीय।

रगनेवाला, स पु, दे 'रगरेज' तथा 'रगसाज'।

रंगरूट, सं पु (अ रिक्रूट) नवनूतन, सैनिक २ नव, नात्र-शैनिन-शिष्य, शैक्ष ।
रँगरेज़, म पु दे 'रंग' के नीचे ।
रंगवाई, स स्त्री (हिं रंगवाना) रंजन वर्णन, भृति (स्त्री) भृत्या ।
रंगवाना, क्रि प्रे, व 'रंगना' के प्रे रूप ।
रंगाई, स स्त्री (हिं रंगना) दे 'रंगवाई' २ दे 'रंगना' स पुं ।
रंगा हुआ, वि, रंजित, चित्रित, वर्णित, रागयुक्त ।
रंगी, वि (स रंगिन्) विनोदिन्, आनन्दिन, उल्लासिन् २ सराग रागयुक्त ३ रंजक, ४ अनुरक्त ५ अभिनेतृ ।
रंगीन, वि (फ़ा) दे 'रंगदार' २ विलासिन् आनंदिन, विहारिन, विनोदिन, रसिक ३ चमत्कृत, अलंकृत (भाषा आदि) ।
रंगीनी, सं स्त्री (फ़ा) सरागता, सचित्रता २ शृंगार, अलंक्रिया ३ अनुरागिता, कामुकता ।
रंगीला, वि (स रंग >) दे 'रंगीन' (२) । २ सुंदर ३ अनुरागिन, कामुक ।
रंगोपजीवी, सं पु (सं विन) नट, अभिनेतृ, शैलूष, भरतपुत्रक ।
रंच, रंचक, वि (स न्यंच् >) अल्प, स्तोक ।
रंज, सं पु (फ़ा) शोक, परिताप, आर्ति (स्त्री) ।
रंजक, स पुं (सं) दे 'रंगसाज' (२) दे 'रंगरेज'। वि (सं) रंगकार, वर्णकारक २ आह्लादक, आनंदप्रद ।
रंजन, स पु (स न) चित्रण, वर्णन २ आह्लादन, परितोषणम् ।
रंजित, वि (सं) वर्णित, चित्रित, सराग २ आह्लादित, सहर्ष ३ अनुरक्त, आसक्त ।
रंजिश, सं स्त्री (फ़ा) वैर, शत्रुता २ अप वि-राग, प्रसाद प्रीति-अभाव ।
रंजीदगी, स स्त्री (फ़ा) दे 'रंजिश' (२) । २ शोक ।
रंजीदा, वि (फ़ा) शोकग्रस्त, परितप्त २ विषण्ण, प्रसन्नताशून्य ।
रंड, वि (स) धूर्त, वञ्चक २ विकल, निष्फल ३ छिन्न-विकल अंग । स पु (स) निरपत्य, निस्सन्तान २ निष्फल अरण्ड-वृक्ष ।
रंडा, सं स्त्री (सं) विधवा, गतमृत भर्तृका, विश्वस्ता, कात्यायनी । स पु (प०) दे 'रँडुआ' ।
रंडापा, स पु (स रंडा) वैधव्य, दे ।
रंडी, स स्त्री [(प) विधवा सं रण्डा >] वेश्या भोग्या, गणिका ।
—बाज़, स पु (हिं+फ़ा) वेश्या गणिका गामिन् ।
—बाज़ी, स स्त्री (हिं+फ़ा) वेश्यागमन, रम्भारमणम् ।
रँडुआ या, स पुं (हिं रांड) मृतपत्नीक, गतभार्य, विधुर ।
रंदा, स पु (फ़ा) तक्षणी, त्वक्षणी ।
—फेरना, क्रि स, तक्षण्या समी-श्लक्ष्णीकृ, तन् (भ्वा स्वा प से) ।
रंध्र, सं पु (सं न) छिद्र, विवर, बिल २ योनि (स्त्री) ३ दोष ।
रंबा, स पु (प) खुरप्र ।
रंभा, सं स्त्री (स) कदली, दे 'केला' २ गोध्वनि ३ अप्सरोविशेष ४ वेश्या ।
रंभाना, क्रि अ (स रंभण) रंभ् रैभ (भ्वा आ से), मृदु नर्द् (भ्वा प से) । स पु, रंभा, हंभा, रैभणम् ।
रअय्यत, स स्त्री (अ) प्रजा २ कृषीवल ।
रईस, स पु (अ) धनाढ्य, धनिक, रयीश २ भूस्वामिन, क्षेत्रपति ।
रक़बा, सं पुं (अ) क्षेत्रफलम् ।
रक़म, सं स्त्री (अ) संख्या, परिमाण २ संपत्ति (स्त्री), धन ३ प्रकार, विधा ।
रकाब, सं स्त्री (फ़ा) (सादिन) पादाधार पादधार २ दे 'तश्तरी' ।
—पर पैर रखना, मु, गतु सज्जीभू ।
रकाबी, सं स्त्री (फ़ा) दे 'तश्तरी' ।
रक़ीब, सं पुं (अ) सपत्न, प्रत्यर्थिन् प्रतिस्पर्धिन् ।
रक्त, सं पुं (सं न) शोणि, शोणित, लो(रो)हित, लोहं, रुधिर, अर्स, असृज् (न), क्षतज अंगज, तात्र, जमें २ कुङ्कुमं ३ ताम्र ४ सिंदूर ५ पद्मं ६ हिंगुलम् । वि, अनुरक्त, आसक्त २ रक्त-लोहित-वर्ण ३ स्पष्ट, वामिन्, कामुक ।
—कमल, सं पु (सं न) कोकनदं, रवि

प्रिय, रक्त-अरुण शोण,-अमोघ कमल पद्म वारिजम् ।
—कोढ, स पु (स रक्तकोट) रक्तकुष्ठ ह, विसर्प ।
—चदन, स पु (स न) अर्क-कुशोणित क्षुद्र, चदन तिलपर्ण, रञ्जन, ताम्रवृक्ष, लोहितम् ।
—पात, स पु (स) रुधिर-रक्त,-स्रवण स्राव क्षरण २ शोण-रक्त, पातन स्रवण ३ नर नृ, हत्या पात ।
—पायी, वि (स -यिन) शोणप, रक्तप । स पु मत्कुण, दे 'खटमल'।
—पित्त, स पु (स न) रोगभेद २ दे 'नकसीर'।
—प्रदर, स पु (स) प्रदरभेद, नारीरोग भेद ।
—प्रमेह, स पु (स) रक्तमेह, मूत्ररोगभेद ।
—बहना, क्रि अ, रक्त स्रु (भ्वा प अ)-क्षर (भ्वा प से)।
—बहाना, क्रि स, रक्त शोण पद स्रु मुच् (प्रे), सृ (प्रे), हन (अ प अ)।
—मोचन, स पु (स न) रक्त,-मोक्षण मोक्ष, शोणितस्राव, दे 'फस्द'।
—लोचन, स पु (स) कपोत । वि, लोहितेक्षण ।
—वर्ण, वि (स) अरुण, लोहित, शोण, रक्त ।
—स्राव, स पु (स) रुधिरक्षरण, असृक् स्रुति (स्त्री)।
—हीन, वि (स) शोणशून्य, रुधिररहित २ निर्वीर्य, निस्तेजस्क ।
रक्षक, स पु (स) शरण्य, शरण, प, पाल (समासांत में), रक्षित, रक्षिन्, त्रातृ, पातृ, गोप्तृ २ प्रहरिन्, यामिक ३ पालक, सवर्द्धक, पोषक ।
रक्षण, स पु (स न) परि,-त्राण, गोपन, रक्षा, गुप्ति २ पालन, पोषण, सवर्द्धनम् ।
रक्षणीय, वि (स) रक्ष्य, रक्षितव्य, त्रातव्य, गोपनीय २ पालनीय, पोषणीय ।
रक्षा, स स्त्री, (स) दे 'रक्षण' (१)। २ कष्ट निवारक-यत्र, रक्षिका ।
—करना, क्रि स, अनु गुप् रक्ष् (भ्वा प से), पा (अ प अ)।
—बधन, स पु (स न) श्रावणी, पर्वविशेष २ श्रावणपूर्णिमायांवेदस्वाध्यायोपाकर्मन्(न)।
रक्षित, वि (स) त्रात, त्राण, गुप्त, गोपायित, पात, ऊत, अवित २ प्रतिपालित, पोषित ३ स्थापित ।
रखना, क्रि स (स रक्षण>) न्यस् (दि प से), निक्षिप् (तु प अ), निधा (जु उ अ), स्था (प्रे स्थापयति) २ रक्ष्-अव-गुप् (भ्वा प से), त्रै (भ्वा आ अ) ३ सचि (स्वा उ अ), सग्रह् (क्र उ से) ४ आधीकृ, उपनिधा (जु उ अ), न्यस ५ धृ (चु), भृ (जु उ अ) ६ आत्मसात्-स्वायत्तीकृ ७ (गौ आदि) अस (अ प) विद् (दि आ अ) -कृत (भ्वा आ से) ८ नियुज (चु, रु प अ) ९ विलब (प्रे), व्याक्षिप् (तु प अ) १० उपपतित्वेन उपपत्नीत्वेन वा स्वीकृ ११ अध्ययेन सचि । स पु, न्यसन, निक्षेपण, निधान, स्थापन २ रक्षण, गोपन, ३ सचयन, सग्रहण ४ आधीकरण, उपनिधान ५ धारण, भरण ६ आत्मसात्करण ७ विवीनन, ८ विलबन इ ।
रखनी, स स्त्री (हिं रखना) दे 'रखेली'।
रखने योग्य, वि, न्यसनीय, स्थापयितव्य, रक्षितव्य, सचेय, उपनिधेय, धार्य, नियोक्तव्य ।
रखनेवाला, स पु, निधातृ, स्थापक, रक्षक, सचायक, उपनिधायक, धारक इ ।
रखवाई, स स्त्री (हिं रखना) रक्षा, भृति (स्त्री) मूल्य।
रखवाना, क्रि प्रे, व 'रखना' के प्रे रूप ।
रखवाला, स पु (हिं रखना) दे 'रक्षक' (१ २)।
रखवाली, स स्त्री (हिं रखवाला) दे 'रक्षण' (१)।
रखा हुआ, वि, न्यस्त, निहित, रक्षित, सचित, उपनिहित इ ।
रखेली, स स्त्री (हिं रखना) उप, पत्नी भार्या कलत्रम् ।
रग, स स्त्री (फा) धमनी, नाडी, रक्तवाहिनी, शिरा, ईलिका ।
—में, मु, सर्वस्मिन्नपि शरीरे ।
—से वाकिफ होना, मु, सम्यग्-सु-सुष्ठु-साधु ज्ञा (क्र उ अ) परिचि (स्वा उ अ)।

—रेशा, स पु (फ़ा) शरीर, अवयवा अङ्गानि (बहु) २ पत्र, पल्लव, नाड्य (स्त्री बहु)।

रगड़, स स्त्री (हिं रगड़ना) दे 'रगड़ना' सं प। २ त्वग्भगहीन-क्षुद्र, व्रण (पु) ३ कलह, विवाद ४ विघ्न, परिश्रम प्रयास।

—खाना या लगना, क्रि अ, व 'रगड़ना' के कर्म के रूप।

रगड़ना, क्रि स (अनु) घृष् (भ्वा प स), मृद् (क्र् प से) २ चूर्ण् (चु), पिष् (रु प अ) ३ श्लक्ष्णीकृ, परिष्कृ ४ परि प्र-मृज (अ प से प्रे), निर् (जु उ अ) ५ अभ्यस (दि प से), पुनः पुनः कृ ६ सवेग सपरिश्रम च रुपद् (प्रे) अनुष्ठा, (भ्वा प अ) ७ पीड् (चु), स्नप् (प्रे) ८ तड् (चु), आहन (अ प अ)। स पुं, घर्षण, मर्दन २ चूर्णन, पेषण ३ श्लक्ष्णीकरण ४, परिमार्जन, प्रक्षालन, ५ अभ्यसन, आवृत्ति (स्त्री) ६ पीडन ७ ताडन ८ सवेग सपादन ह।

रगड़ने योग्य, वि, घर्षणीय, मर्दनीय, पेषणीय ह।

रगड़नेवाला, सं पु, घर्षक, मर्दक, पेषक ह।

रगड़वाना, क्रि प्रे, व 'रगड़ना' के प्रे रूप।

रगड़ा, सं पुं (हिं रगड़ना) दे 'रगड़ना' सं पुं। २ अतिशय-अत्यंत, परिश्रम-उद्योग ३ चिरस्थायिकलह, नैत्यिकविवाद।

—झगड़ा, सं पु (नित्य समास) विवाद-कलह-कलि।

—हुआ, वि, घर्षित, मर्दित, पिष्ट, अभ्यस्त।

रगड़ी, वि (हिं रगड़ा) विवादक, कलह कलि, प्रिय, विवादिन्।

रगबत, सं स्त्री (अ) कामना २ रुचि प्रवृत्ति (स्त्री)।

रगेदना, क्रि स (स खेट), अपनुद् (तु प अ), विद्रु अपधाव् (प्रे)।

रघु सं पु (सं) सूर्यवंश्यो नृपविशेष, दिलीपसूनु।

—नंदन, सं पुं (सं) रघु-नाथ-पति-राज वर-वीर, श्रीरामचंद्र।

—वंश, सं पुं (सं) रघुकुलं २ महाकवि कालिदास प्रणीतो महाकाव्यविशेष।

रचना[1], क्रि स (सं रचनं) सृज् (तु प अ), निर्मा (अ प अ, जु आ अ), जन्-उत्पाद् (प्रे) २ क्लृप्-घट (प्रे), रच् (चु), कृ ३ प्रणी (भ्वा प अ), निबंध (क्र् प अ) रच् (चु), लिख् (तु प से) ४ यथाविधि न्यस् (दि प से) स्था (प्रे) ५ परिष्कृ, अलंकृ, भूष् (भ्वा प से, चु) ६ आयुज् (प्रे), मंत्र (चु आ से)। स पु, दे 'रचना' सं स्त्री (१-३, ८-९), परिष्करण, भूषण, आयोजनम्।

रचना[2], क्रि स (सं रंजन) दे 'रंगना'। क्रि अ अनुरज् (कर्म), स्निह् (दि प से) २ व 'रंगना' के कर्म के रूप।

रचना[3], स स्त्री (सं) रचन, निर्माण, सर्जन, घटन, विधानं, कल्पन, साधन, निष्पादन, उत्पादन, जनन २ ३ रचना निर्माण उत्पादन-कौशल-रीति (स्त्री) ४ रचित निर्मित, वस्तु (न) ५ गद्यमयी पद्यमयी वा कृति (स्त्री) ६ केशविन्यास ७ पुष्पगुंफन ८ स्थापन ९ प्रणयनं, निबंधनम्।

रचने योग्य, वि, स्रष्टव्य, निर्मातव्य, रचनीय, प्रणेतव्य, यथाविधि, स्थापनीय ह।

रचनेवाला, स पु, स्रष्टृ, निर्मातृ, जनयितृ, घटयितृ रचयितृ, प्रणेतृ, लेखक आयोजक ह।

रचयिता, स पु (सं ह) निर्मातृ, स्रष्टृ, विधातृ, उत्पादक २. लेखक, प्रणेतृ ह।

रचवाना या रचाना, क्रि प्रे व 'रचना' के प्रे रूप।

रचा हुआ, वि, सृष्ट, निर्मित, जनित, रचित, घटित, प्रणीत, लिखित, परिष्कृत ह।

रचित, वि (सं) निर्मित, घटित, २ सृष्ट, जनित ३ लिखित, प्रणीत।

रज, सं पु [सं रजस (न)] पुष्प, कुसुमं, आर्तव, ऋतु, रज (पु) २ प्रकृतेर्गुणविशेष, रजः (पुं) ३ आकाश शं ४ पापं ५ जलं ६ पराग, रेणु (पु स्त्री), पुष्पधूलि (स्त्री) ७ भुवन, लोक। सं स्त्री, रजस् (न), धूलि (स्त्री) २ रात्री ३ प्रकाश।

—का रुक जाना, सं पुं, रजोरोध २ रजोनिवृत्ति (स्त्री)।

—की पीड़ा, सं स्त्री, ऋतुशूलं, रजःकृच्छ्रम्।

रजक, सं पु (सं) निर्णेजक, धावक, शौचेय, कर्मकारिन्।

रजकी, स स्त्री (स) रजका, निर्णेनिका, धाविका।

रजत, सं स्त्री (सं न) रूप्य दे 'चाँदी' २ सुवर्ण ३ गजदंत ४ हार। वि, रजतमय २ शुक्ल।

—कुंभ, स पु (सं) रूप्य-श्वेत-शुभ-घट कलश।

—पात्र, सं पु (स न) रूप्य-श्वेत-सुवर्ण, पात्र भाजनम्।

रजनी, स स्त्री (स) निशा, रात्रि २ हरिद्रा ३ जतुका ४ नीली ५ लाक्षा।

—कर, स पुं (स) रजनी,-पति-नाथ, चन्द्र।

—चर, स पुं (सं) राक्षस, निशाचर।

—मुख, सं पुं (स न) साय, प्रदोष, दिनांत।

रजवाड़ा, सं पु (हिं राज+वाडा) देशीय राज्य २ नृप, राजन् (पु)।

रजस्, स पु स्त्री (सं न) दे 'रज' स पु स्त्री।

रजस्वला, स स्त्री (स) स्त्रीधर्मिणी, ऋतुमती, पुष्पवती, पुष्पिता, म्लाना, पांसुला।

रज़ा, स स्त्री (अ) इच्छा, काम २ समति (स्त्री), एकचित्तता, मतैक्य ३ अनुज्ञा, अनुमति (स्त्री)।

—मंद, वि (फ़ा) सहमत,-मत-चित्त,समत।

—मंदी, स स्त्री (फ़ा) दे 'रजा' (२ ३)।

रजाइस, **रजायस**, **रजायसु**, स स्त्री (स राजादेश >) आ-नि,-देश, नियोग, आज्ञा, शासनम् २ अनुमति -स्वीकृति (स्त्री)।

रज़ाई, स स्त्री (<सं रजन ?) *पिचुल प्रच्छद, तूलाच्छादनम्।

रजिस्टर, स पुं (अ) पजिका, पत्री।

रजिस्टर्ड, वि (अ) पञ्जीबद्ध।

रजिस्ट्रार, स पुं (अ) पञ्जी पजिका,-लेखक।

रजिस्ट्री, स स्त्री (अ) पञ्जीनिबंधनम्।

—कराना, क्रि प्रे, राजकीयपजिकायां लिख (प्रे)।

—शुदा, वि, पञ्जी-पजिकाकृत, लिखित।

रजिस्ट्रेशन, स पु (अ), पजी पजिका,-करण लेखनम्।

रज़ील, वि (अ) अधम, नीच २ अन्त्यज।

रजोगुण, स पु (सं) दे 'रज' स पु (२)।

रजोदर्शन, स पु (स न) कन्याया प्रथम पुष्पस्राव।

रजोधर्म, स पु (स) दे 'रज' स पु (१)।

रज्जु, स स्त्री (स) दे 'रस्सी २ वेणी।

रट, स स्त्री (हि रटना) असकृत् उच्चार, आम्रेडनं, अभीक्ष्णं वचन, पौन पुन्येन पठनम्।

रटना, क्रि स (स रटनं>) अभ्यस (दि प से), असकृत् आवृत् (प्रे) २ मुखस्थ हृदयस्थ-कंठस्थ (वि) कृ, स्मरणार्थं पुन पुन उच्चर् (प्रे)-वद्-पठ (भ्वा प से)। क्रि अ, अभीक्ष्ण रण-क्वण् (भ्वा प से)। स पु, अभ्यसन, आवतन, आवृत्ति (स्त्री), कंठे करण, हृदये धारण, पुन पुन उच्चारणम्।

रटने योग्य, वि, आवतनीय,स्मर्तव्य स्मरणार्ह।

रटनेवाला, स पु, अभ्यासिन्, आवर्तयितृ।

रटा हुआ, वि, अभ्यस्त, आवर्तित, कंठे कृत।

रण, स पु (स पुं न) समाम, दे 'युद्ध'।

—क्षेत्र, स पु (सं न) रणांगण-न युद्धरंग, भूमि (स्त्री)-स्थल-क्षेत्रम्।

—छोड़, सं पु, श्रीकृष्ण।

—बाँकुरा, स पु (स+हिं) वीर, भट।

—रंग, स पु (सं) युद्धोत्साह २ युद्ध ३ रणक्षेत्रम्।

—स्तंभ, सं पुं (स) विजय,-स्तंभ -यूप।

रत, वि (स) व्यापृत, मग्न, लग्न, लीन, आसक्त २ अनुरक्त, बद्धभाव।

रतजगा, स पु (हिं रात+जागना) रात्रि, जागरण-जागरा २ *नैशोत्सव।

रतनार, वि (स रत्न>) आ ईषद्,-रक्त लोहित।

रतालू, सं पु (सं रक्तालु) (= लाल शकरकंद) रक्त पिंडक -पिंडालु, लोहित, लोहितालु, रक्तकंद।

रति, स स्त्री (स) कामदेवकलत्र, मदनपत्नी २ मैथुन, संभोग, कामक्रीडा ३ अनुराग, प्रीति (स्त्री) ४ शोभा, सौन्दर्य, छवि (स्त्री) ५ सौभाग्य ६ स्थायिभावभेद ७ रहस्यम्।

—क्रिया, स स्त्री (सं) रति, केलि (स्त्री)-कलह -समर, मैथुनम्।

—गृह, सं पुं (सं न) रति, मदनमंदिर २ योनि (स्त्री)।
—नाथ, सं पुं (सं) रति,-कांत पति प्रिय राज रमण, कामदेव ।
—बंध, सं पुं (सं) सुरतासनम्।
—शास्त्र, सं पुं (सं न) कामशास्त्रं, कोक शास्त्रम्।
रतौंधी, सं स्त्री (हिं रात+अंधा) निशांध त्वम्।
रत्ती, सं स्त्री (सं रक्तिका) काक, तिक्ता-वल्लरी पीलु -जवा-चिंची, कृष्णला, दे 'गुंजा'। २ रक्तिकापरिमाणम्।
—भर, वि , अल्प, स्तोक, ईषत्।
रत्थी थी, सं स्त्री (सं रथ) *विमानं, शव, यानं, फलक, दे 'अरथी'।
रत्न, सं पुं (सं न) मणि (पुं स्त्री), अश्मभेद २ स्वजातिश्रेष्ठ ३ माणिक्यम्।
—गर्भा, सं स्त्री (सं) वसुंधरा, वसुधा।
—जटित, वि (सं) मणि,-खचित-अनुविद्ध व रचित ।
—दाम, सं स्त्री [सं-मन् (न)] मणिमाला ।
—पारखी, सं पुं, रत्नपरीक्षक २ मणिकार, रत्नाजीविन्।
नौ—, सं पुं, दे 'नवरत्न'।
रत्नाकर, सं पुं (सं) रत्नालय, समुद्र २ मणि खानि (स्त्री)-गंजा ३ वाल्मीके प्रथमनामन् (न)।
रत्नावली, सं स्त्री (सं) मणिमाला, रत्न दामन् (न)।
रथ, सं पुं (सं) शताङ्ग, स्यन्दन, चक्र यानम्। (युद्ध का रथ) सांग्रामिक, वैनायिक । (सैर का रथ) पुष्परथ । (यात्रा का) पारियानिक । २ शरीर ३ चरण-णम्।
—कार, सं पुं (सं) रथ-स्यन्दन-चक्रयान, निर्मातृ-रचयितृ-वर्धं। २ वर्णसंकरजातिभेद ।
—चर्या, सं स्त्री (सं) रथ चक्रयान,-यात्रा भ्रमण गमनम्।
—पति, सं पुं (सं) रथिन्, रथिक, रथिर रथिर ।
—यात्रा, सं स्त्री (सं) आषाढशुक्लद्वितीयायां श्रीजगन्नाथस्य रथारोहणमहोत्सवः।
—वीथि, सं स्त्री (सं) रथ मुख्य प्रधान, मार्ग पथ ।
—शाला, सं स्त्री (सं) स्यन्दनागारम्।
—विद्या, सं स्त्री (सं) रथ,-शास्त्र विज्ञानम्।
—सूत, सं पुं (सं) सारथि, रथवाह ।
रथवान्, सं पुं (सं रथवत्) रथ,-वाह वाहक, सारथि, दे 'सारथी'।
रथाङ्ग, सं पुं (सं न) चक्रम् २ मत्स्यभेद ३ कोष, चक्र, कार्मुक ।
—पाणि, सं पुं (सं) चक्रपाणि, विष्णु ।
रथी, सं पुं (सं थिन्) रथिक, रथिन, रथिर रथ,-आरोहिन्-स्वामिन्, सारथि । वि, रथस्थ, रथारूढ । २ रथस्थ-महा,-योध योद्धृ । ३ (सं रथ) दे 'रत्थी'।
रद, रदन, } सं पुं (सं) दंत, दे 'दाँत'।
—च्छद, —पुट, } सं पुं (सं) ओष्ठ, दे 'ओठ'।
रद्द, वि (अ) मोघ, निरर्थक २ मंद, निष्प्रभ, ३ निरस्त, खंडित।
—करना, क्रि स, निरस् (दि प से), खंड (चु), निवृत् (प्रे)।
—बदल, सं पुं (अ+फा) परिवर्तन, विपर्यय, परि(री)वर्त ।
रद्दा, सं पुं (देश) इष्टका-मृत्तिका,-स्तर।
—रखना या लगाना, क्रि स, भित्तिं चि (स्वा उ अ), स्तरं रच् (चु) निर्मा (जु आ अ)।
रद्दी, वि (अ रद्द) निरर्थक, अनुपयोगिन्। सं स्त्री, निरर्थकपत्राणि (न बहु)।
रन(नि)वास, सं पुं (हिं रानी+सं वास) अन्तःपुरं, शुद्धान्त, अवरोध ।
रपट¹, सं स्त्री (हिं रपटना) दे 'फिसलाहट' २ धावनं, सत्वरगमन ३ निम्नभू (स्त्री), प्रवणम्।
रपट², सं स्त्री (अं रिपोर्ट) सूचना, आख्या।
रपटना, क्रि अ (सं रपन) दे 'फिसलना'।
रफ़, वि (अं) रिक्तपदार्थ, दुःस्पर्श, विषम २ संस्कार परिष्कार शून्य।
रफ़ा, वि (अ) अपसारित, दूरीकृत २ निवारित, शमित, शांत ३ समान, पूर्ण ।
रफ़ू, सं पुं (अ) तन्तुभिः छिद्रपूरणम्।

—करना, क्रि स , वस्त्रछिद्र तन्तुभि पूर(चु)। मु , स्वविरोधिवचनेषु सामञ्जस्य दृश (प्रे)।

—गर, स पु (फा) वस्त्रछिद्रपूरक ।

—चक्कर होना, मु , पलाय् (भ्वा आ से), अपधाव (भ्वा प से)।

रफ्तार, स स्त्री (फा) गति (स्त्री) २ वेग , जव ।

रफ़्ता रफ़्ता, क्रि वि. (फा) शनै शनै (अव्य) २ क्रमश (अव+)।

रब, स पु (अ) परमेश्वर , जगदीश ।

रबड़¹, स पु (अ रबर) *घर्षक, घृषि(न)- वृक्षनिर्यासभेद २ वटजातीयो वृक्षभेद , *घर्षक ।

रबड़², स स्त्री (हि रगड) व्यर्थ-श्रम प्रयास २ दूरता, विप्रकर्ष ।

रबड़ना, क्रि स (हि रपटना) तरलद्रव्य परि भ्रम्-चल (प्रे)। भ्रम् क्लम् (प्रे), क्षुधा धाव (प्रे), आयस खिद् (प्रे)। क्रि अ , वृथा भ्रम् (भ्वा प से)-परिश्रम् (दि प से), आयस (भ्वा दि प से)।

रबड़ी, स स्त्री (हि रबड़ना) किलाटिका, क्षैरेयम् ।

रबाब, स पु (अ) वाद्यभेद , *रबाबम् ।

रबाबिया, रबाबी, स पु (अ रबाब) रबाबवादक ।

रब्त, स पु (अ) अभ्यास २ सबंध ।

—ज़ब्त, स पु , गाढसौहृद, सुपरिचय ।

रब्बी की फ़सल, स स्त्री (अ) चैत्रशस्यम् ।

रमण, स पु (स न) क्रीडा, विलास , विहरण, विहार , केलि (पु स्त्री), खेला, लीला २ मैथुन, रति (स्त्री) ३ भ्रमण, पर्यटन ४ जघनम् । (स पु) पति २ कामदेव । वि , मनोहर २ प्रिय, आनन्दप्रद ३ क्रीडापर ।

रमणी, स स्त्री (स) नारी २ सुन्दरी, वरवर्णिनी, वामा ।

रमणीक, वि (सं रमणीय) मनोज्ञ, मनोहर, दे 'सुन्दर' ।

रमणीय, वि (स) सुरूप, शोभन, दे 'सुन्दर' ।

रमणीयता, सं स्त्री (स) सुरुचि (स्त्री), मनोहरता, दे 'सुन्दरता' ।

रमता, वि (हि रमना) विचरत् विहरत् भ्रमत् (शतृ)।

रमना, क्रि अ (स रमणं) रम् (भ्वा आ अ) नद् क्रीड् (भ्वा प से), मुद् (भ्वा आ से) २ सुखोपलब्धये वस् स्था (भ्वा प अ) ३ विहृ (भ्वा प अ), पर्यट् (भ्वा प से) ४ व्याप (स्वा प अ), व्यश् (स्वा आ से) ५ अनुरज् (कर्म), स्निह् (दि प से, सप्तमी के साथ) ६ कामक्रीडा कृ सुरत आतन् (त प से.)। स पु रमण, नदन, क्रीडन, क्रीडा, मोद , सुखाय वसन, विहरण, विचरणं, व्यापन, व्यशन, अनुराग , निधुवन ६ ।

रमा, स, स्त्री (स) दे 'लक्ष्मी' ।

—पति, स पु (स) विष्णु ।

रम्ज़, सं स्त्री (अ) (नेत्रादिभि) संकेत , इगितम् २ रहस्य, गुह्य, कूटम् ३ आशय , अभिप्राय ।

रम्माल, स पु (स) दैवज्ञ , ज्योतिषिक ।

रम्य, वि (स) दे 'रमणीय' ।

रम्या, स स्त्री (स) स्थलपद्मिनी २ रजनी ३ गंगा ४ निर्गुण्डी, इन्द्राणी ।

रम्हाना, क्रि अ (स रभण) दे '(भाना' ।

रय्यत, स स्त्री (अ रअय्यत) दे 'प्रजा' ।

रव, सं पु (सं) शब्द , नि ,नाद , ध्वनि , वि ,रव राव २ कलकल , कोलाहल , उत्क्रोश ।

रवाँ, वि (फा) प्रवहत् प्रस्रवत् प्रचलत् (शतृ) २ अभ्यस्त ३ निशित, तीक्ष्ण (शस्त्रादि) ४ प्रस्थित ।

रवा¹, सं पु (स रज) कण , लव , अणु , लेश २ दे 'सूजी' ।

रवा , वि (फा) उचित, युक्त २ प्रचलित, विद्यमान ।

रवाज, स पु (अ) दे 'रिवाज' ।

रवानगी, [illegible] स्त्री (फा) प्रस्थान, प्रयाणम् ।

रवाना वि (फा) प्रस्थित, प्रचलित २ प्रेषित, प्रहित ।

—करना, क्रि स , प्रस्था (प्रे प्रस्थापयति), प्रहि (स्वा प अ), स, प्रेष् (प्रे), प्रचल् (प्रे)।

—होना, क्रि अ . प्रस्था (भ्वा आ अ), अप, स-गम् (भ्वा प अ), प्रया (अ प अ)।

रवानी, स स्त्री (फा) प्रवाह , प्रगति (स्त्री)।

रवायत, सं स्त्री (अ) कथा २ लोकोक्ति (स्त्री)।

रवि, सं पु (सं) अर्क भानु, दे 'सूर्य'।

—वार, सं पु (सं) आदित्य-वार वासर।

रवैया, सं पु (फ़ा रविश) आचार, आचरण, चेष्टित, वृत्ति (स्त्री), व्यवहार।

रशना, सं स्त्री (सं) कांची, दे 'मेखला' (१) २ जिह्वा ३ रज्जु (स्त्री)।

रश्क, सं पु (फ़ा) ईर्ष्या, मात्सर्यम्।

रश्मि, सं स्त्री (सं पुं) किरण २ अश्वरज्जु (स्त्री) ३ पक्ष्मन्-वरुणु (न)।

रस, सं पुं (सं) आ-स्वाद २ षट् इति संख्या ३ शरीरस्थधातुविशेष, रसिका चम रक्त-सार, तेज अग्नि-आहार-प्रभव ४ तत्त्व, सार ५ काव्यनाटकानुभवन शृङ्गारादिरस विशेष मानसानन्दभेद (काव्य) ६ 'नव' इति संख्या ७ आनन्द, सुख, आह्लाद, प्रमोद ८ अनुराग ९ रति (स्त्री), सुरत १० उत्साह, औत्सुक्य ११ गुण १२ द्रव, सार, रस, आसव, नियास, सत्त्व १३ जल, १४ यू(जू)ष ष १५ दे 'शरबत' १६ वीर्य १७ विष १८ पारद १९ दे 'हिंगरक' २० धातुभस्मन् (न) २१ आनन्दरूप महान् (न) २२-२३ गन्धशिला-रस २४ प्रकार, रूप २५ चित्ततरंग, छन्द।

—चूना या टपकना, क्रि अ, रस क्षरण निस्यन्द् (भ्वा आ से)-स्नु (भ्वा प अ)।

—लेना, क्रि अ, नन्द् (भ्वा प से), मुद् (भ्वा आ से)।

—कपूर, सं पु (सं रसकर्पूर) कर्पूररस।

—गुल्ला, सं पुं, •रसगोल।

—भरा, वि, रस-पूर्ण-मय-युक्त-वत्, सरस रसिन्।

—भरी, सं स्त्री, •रसबदरी।

—पति, सं पु (सं) चन्द्र २ नृप ३ पारद, •रसराज ४ शृंगाररस रसराज।

—सिंदूर, सं पु (सं न) सिंदूररस।

रसज्ञ, सं पु (सं) रस-स्वाद-विद्-ज्ञ २ काव्यमर्मज्ञ, काव्यालोचक ३ निपुण, कुशल ४ अनुरागिन्, रसिक, प्रेमिन् ५ गुणग्राहक ६ रसवैद्य ७ रसायनविद् (पु)

रसद¹, वि (सं) सुखद, आनंदप्रद, २ स्वादु, सरस। सं पुं (सं) चिकित्सा वैद्य, भिषज्।

रसद², सं स्त्री (फ़ा) अन्नसामग्री भक्ष्यजातम्।

रसना¹, सं स्त्री (सं) रसा, जिह्वा, रसज्ञा, लोला, रसनेन्द्रिय २ कांची, मेखला ३ रज्जु (स्त्री) ४ अभीशु पु, वल्गा।

रसना², क्रि अ, दे 'रिसना'।

रसनीय, वि (सं) आस्वाद्य, चषणीय २ स्वादु, रुच्य, रुचिकर।

रसनेन्द्रिय, सं स्त्री (सं न) जिह्वा, रसा, लोला, रसज्ञा।

रसम, सं स्त्री (अ रस्म) प्रथा, परिपाटी-टि (स्त्री), रीति (स्त्री)।

रसा¹, सं स्त्री (सं) पृथिवी २ जिह्वा, रसना ३ पाठा ४ रास्ना, एलापर्णी ५ द्राक्षा ६ नदी ७ रसातलम्।

—पति, सं पु (सं) नृप, भूप।

—पायी, वि (सं -यिन्) जिह्वापायिन्। सं पु, श्वन्, कुक्कुर, सारमेय।

रसा², सं पु (सं रस >) यू(जू)ष प•रस-, दे 'शोरबा'।

रसाई, सं स्त्री (फ़ा) दे 'पहुँच'।

रसांजन, सं पु (सं न) दे 'रसौत'।

रसातल, सं पु (सं न) पाताल २ पाताल विशेष।

रसायन, सं पु (सं न) जराव्याधिनाश कौषध २ तक्र ३ विषं ४ रस विद्या शास्त्र सिद्धि (स्त्री) ५ रसायनशास्त्र, दे 'कैमिस्ट्री' ६ धातुविद्या।

—बनाना, मु, (क्षुद्रधातून्) सुवर्णरूपेण परिणम् (प्रे) अथवा सुवर्णीकृ।

—शास्त्र, सं पु (सं) दे 'कैमिस्ट्री'।

रसाल, सं पुं (सं) इक्षु, दे 'गन्ना' २ आम्र। वि, स्वादु, सुस्वाद २ सरस ३ मधुर ४ सुंदर।

रसिक, सं पुं (सं) रसास्वादिन्, स्वाद ग्राहिन् २ प्रणयिन्, अनुरागिन्, कामुक ३ सहृदय, भावुक, काव्यमर्मज्ञ ४ मानंदिन्, विनोदिन् ५ भक्त, प्रेमिन्।

रसिकता, सं स्त्री (सं) विनोदित्व, परिहासप्रियता २ सहृदयता, भावुकता ३ कामुकता, विलासिता।

रसिया, सं पुं, दे 'रसिक'।

रसीद, सं स्त्री (फ़ा) प्राप्ति-उपलब्धि (स्त्री) २ •प्राप्तिपत्रम्।

—बुक, स स्त्री (फ़ा + अ) प्राप्तपत्रपञ्जिका।
रसीला, वि (स रस >) दे 'रसभरा'।
रसूल, स पु (अ) ईशदूत।
रसेंद्र, स पु (स) पारद, दे 'पारा'।
रसोइया, स स्त्री (हिं रसोई) पाचक, सूद सूपकार, बल्लव, आरालिक, आपूपिक, औदनिक, रन्धक।
रसोई, स स्त्री (स रसवती) पाकशाला, महानस २ सिद्धान्न, पक्वाहार, भोजनम्।
—घर, स पु, दे 'रसोई' (१)।
—दार, स पु, दे 'रसोइया'।
कच्चा—, स स्त्री (घृतादिषु) *अपक्वभोजनम्।
पक्की—, स स्त्री, (घृता दषु) *पक्वभोजनम्।
रसौत, स स्त्री (स रसोद्भूत) रसाञ्जन, रसगर्भ, कुनक, बाल्भैषज्य, दर्वीजनम्।
रस्सा, स पु (हिं रस्सी) स्थूलसन्दान, बृहद्रज्जु (स्त्री), स्थूलरश्मि।
रस्सी, स स्त्री [स रश्मि (पु)] रज्जु (स्त्री), गुण, दामन् (न), वराट, शुल्वा, वटी, रश(स)ना।
रहँट, स पु, दे 'अरहट'।
रहटा, स पु, दे 'चरखा'।
रहते, क्रि वि (हिं रहना) उपस्थितौ, विद्यमानतायां, जीवने (सब सप्तमी एक)।
रहन[1], स स्त्री (हिं रहना) वास, वसन, वसती-ति (स), वसति (स्त्री), स्थिति (स्त्री) २ आचार, व्यवहार, चरित, वर्तन, वृत्ति (स्त्री)।
—सहन, स स्त्री दे 'रहन' (२)।
रहन[2], स स्त्री (हिं रखना) आधान, दे 'गिरवी'।
रहना, क्रि अ (स रमण >) अधि-नि प्रति, वस (भ्वा प अ) २ अवस्था (भ्वा आ अ), वृत् (भ्वा आ से), स्था (भ्वा प अ) ३ जीव (भ्वा प से) प्राणान् धृ (चु) ४ विरम् (भ्वा प अ), विश्रम् (दि प से) ५ अव उत् परि, शिष (कर्म) ६ उज्झ-त्यज् (कर्म) ७ विद् (दि आ अ), उपस्था (भ्वा प अ) ८ मुधा कालं या (प्रे)। स पु, अधि-नि प्रति, वसन वसती ति (स्त्री), अवस्थान, अवस्थिति (स्त्री), जीवन, प्राणधारणं, अवशिष्टता, त्याग, उपस्थिति (स्त्री)।

रहने योग्य, वि, निवसनीय, वासार्ह।
रहनेवाला, स पु, नि, वासिन्, स्थ, वर्तिन्, (तद्धित प्रत्यय से भी, व, भारतीया, पाञ्चनदा)।
रह रह के, मु, पुन पुन, भूयो भूय, पौन पुन्येन, वार वारम्।
रहम[1], स पु (अ) कृपा, दया, करुणा, अनुकम्पा।
—दिल, वि, कृपालु, सकरुण।
रहम, स पु (अ रहम) गर्भाशय, दे.।
रहमत, स स्त्री (अ) कृपा, अनुग्रह।
रहमान, वि (अ) अतिशय-परम, कृपालु-दयालु। स पु, परमेश्वर।
रहस्य, वि (स) गोप्य, गोपनीय, गुह्य २ गुप्त, गूढ, प्रच्छन्न। स पु (सं न) गुह्य, गोप्य, मर्मन्, गूढ, मन्त्र, वार्ता।
रहा-सहा, वि, 'बचाखुचा'।
रहा हुआ, वि, उषित, अव, स्थित, अव-उत् परि, शिष्ट, उपस्थित इ।
रहाइश, स स्त्री (हिं रहना) वसती-तिः (स्त्री), वास, अवस्थान, अवस्थिति (स्त्री)।
रहित, वि (स) हीन, विरहित, वर्जित, शून्य, वियुक्त, विनाभूत।
रहीम, वि (अ) दयालु। स पु, ईश्वर।
राँग,गा, स पु (स रङ्ग-ग) वङ्ग, त्रपु, त्रपुष, पूतिगन्ध, कुरूप्य, मधुर, हिम, पिच्चटम्।
राँड, वि (स रण्डा) विधवा दे। २ वेश्या।
राँधना, क्रि स (स रन्धन) दे 'पकाना'।
राँपी, स स्त्री (देश) चर्मकारक्षुरिका, *चर्मकर्तनी।
राँभना, क्रि अ, दे 'रम्भाना'।
राई, स स्त्री (स राजी) रक्तसर्षप, राजिका, आसुरी, क्षव, क्षवक, क्षुतक। दे 'सरसों' के भेद २ अत्यल्प, मात्रा-परिमाणम्।
—नोन उतारना, मु राजीलवणधूमेन कुदृष्टि प्रभाव नश (प्रे)।
—भर, मु, तिल अणु-लेश-राजी, मात्र, अल्पकम्।
—से पर्वत करना, मु, अणुमपि पर्वतीकृ, तिलं ताल पश्यति, अत्युक्त्या वर्ण् (चु)।
राईफल, स स्त्री (अ) कुक्षिभृतास्त्र, नाल्य स्त्रभेद।

राका, स स्त्री (स) सम्पूर्णचंद्रा, पौर्णमासी २ पूर्णिमा, पूर्णा, पूर्णमासी।

राकेश, स पु (स) राकापति, चंद्र।

राक्षस, स पु (स) निशा रजनी रात्रि नक्त, चर, क्रव्याद-द् (पु), रक्षस (न), पलाश शिन, भूत, क्षपाट, सन्ध्यावल, यातु, यातुधान, अस्र-कौण, प, कर्बुर, दैत्य, असुर दानव २ दुष्टप्राणिन, पाप ३ विवाहभेद (धर्म)।

—विवाह, सं पुं (स) विवाहभेद, युद्धेन कन्यां प्राप्य विवाह।

राक्षसी, स स्त्री (सं) पिशाची, निशाचरी, दानवी। वि, राक्षस दानव, उचितन्योग्य, अमानुषिक।

राख, स स्त्री (स रक्षा>) भस्मिन, भस्मन् (न), भूति (स्त्री)।

राखी, स स्त्री (स रक्षा>) दे 'रक्षाबन्धन' २ दे. 'राख'।

राग, सं पु (स) अभिमतविषयाभिलाष, सुखैषणा २ क्लेश, कष्ट ३ मात्सर्य्य, ईर्ष्या ४ प्रीति (स्त्री), अनुराग ५ अंगराग ६ लोहित, रक्त-वर्ण ७ रंजन, आह्लादन ८ कथा ९ संगीतशास्त्रीयराग (भैरवादि)।

—रंग, सं पु (सं) विनोद, विलास शोभा कौतुक, संगीत, रञ्जनम्।

अपना—अलापना, मु, (परविचारान् अश्रुत्वा) स्वकीयानेव विचारान् भरमम श्रु ( ) ।

रागान्वित, वि (स) अनुरक्त, कामुक, सकाम २ कुपित, क्रुद्ध।

रागिनी, सं स्त्री (सं रागिणी) रागपत्नी (भैरवी, गुर्जरी आदि) २ विदग्धा नारी।

रागी, स पु (सं गिन्) रागविद् (पु), गायक, गातृ ३ अनु-रागिन्-रक्त, प्रेमिन्। वि, रंजित, सराग २ लोहित-रक्त-वर्ण ३ विषयासक्त, भोगिन्।

राघव, सं पुं (स) रघुवंश्य २ अज ३ दशरथ ४ श्रीरामचंद्र।

राछ, स पु (स रक्ष>) (शिल्पिना) उपकरण, साधन, यन्त्रं २ वरयात्रा ३ दे 'जलूस' ४ चर्खीपैशणी,-नीत्र।

राज, सं पु (स राज्य) शासनं, शिष्टि (स्त्री), देश प्रबंध व्यवस्था, प्रजापालन, आधिपत्य २ जनपद, नीवृत् (पुं), राष्ट्र, देश, राज्य, विषय, उपवर्तन ३ अधिकार, आधिपत्य ४ शासन-राजत्व-राज्य,-काल। स पु (स राजन्) नृप २ 'मिमार'।

—करना, क्रि स, प्र, शास (अ प से), ईश् (अ आ से) अधिष्ठा (भ्वा प अ), परि पा (प्रे, पालयति), तन् (तु आ स)।

—कर, सं पुं (स) राज, स्वमवलि शुल्क (क) धनम्।

—काज, स पु (स कार्य) शासन, व्यवस्था कृत्यम्।

—कुमार, स पु (सं) राज, पुत्र-सुत, तनु।

—कुमारी, स स्त्री (स) राजनृप,-कन्या सुता पुत्री।

—कुल, स पु (स न) राज-नृप,-वंश अन्वय।

—गद्दी, स स्त्री, नृपासन, राजसिंहासनं २ राज्य, अभिषेक, राज्याभिषेक नम्।

—गीर, स पु, दे 'मिमार'।

—गुरु, सं पु (स) राज, शिक्षक पुरोहित।

—गृह, सं पु (स न) नृप-राज, प्रासाद भवनं मंदिर सदन, सौध, सुधामय २ मगध प्रान्तस्य प्राचीनराजधानी।

—तिलक, स पु (स पु न) दे 'राजगद्दी' २ अभिषेकोत्सव।

—दंड, स पुं (स) राज शासनं, प्रजापालन २ राज्यनियमविहित आर्थिक-शारीरिक,-दंड ३ दे 'राजकर'।

—दंत, स पु (सं) पुरोवर्तिद्वन्तचतुष्कं २ उपरिश्रेणीमध्यवर्तिदन्तद्वयम्।

—दरबार, सं पुं, दे 'राजसभा'।

—दूत, स पु (स) नृप,-वार्तिक -संदेशिक।

—द्रोह, स पु (स) नृपविरोध, राज्यविप्लव, प्रजाक्षोभ।

—द्रोही, स पु (सं हिन) नृपविरोधिन्।

—धानी, स स्त्री (सं) नृपनगरी।

—नीति, स स्त्री (स) नृप-राज, नय विद्या, शासननीति (स्त्री) (संधिविग्रहसामदानादि)।

—नैतिक, वि (सं) राजशासनविषयक तत्सम्बंधिन।

—पथ, सं पु (सं) राज, महा वर्त्मन् (न), महा-घंट श्री, पथ।

—पाट, स पुं, (सं) राजसिंहासनं २ शासनाधिकार ३ जनपद, राष्ट्रम्।

—पुत्र, स पुं (स) राजकुमार २ क्षत्रिय जाति भेद ३ बुधग्रह ।
—पूत, स पुं (स राजपुत्र >) क्षत्रियजाति भेद, *राजपुत्र ।
—पूती, स स्त्री (हिं राजपूत) शौर्य, वीर्यम् ।
—फोड़ा, स पुं *राजस्फोट, *स्फोटराज, दे 'धारवकल' ।
—बाहा, [illegible] पु, राज महा-कुल्या ।
—भंडार, स पु (स भाण्डार) राज-राज्य,-कोष (श) -भाण्डागार (रम्) ।
—भक्त, स पु (स) राज्य-राज, भक्त निष्ठ ।
—भक्ति, स स्त्री (स) राज्य-राज, भक्ति (स्त्री) -निष्ठा ।
—भवन, } स पु (स न) दे 'राजगृह'(१) ।
—मंदिर, }
—मज़दूर, स पु, पल्गण्डकार्मिका, गेहकार वर्मकारा (भाव बहु) ।
—महल, स पु, दे 'राजगृह' (१) ।
—मार्ग, स पु (स) दे 'राजपथ' ।
—माष, स पु (स) [illegible]-टी, नील-नृप, माष', नृपोचित ।
—मुद्ग, स पु (स) मुकुष्ठ, दे 'मोठ' ।
—यक्ष्मा, स पु (सं-क्ष्मन) राजयक्ष्म, दे 'यक्ष्मा' ।
—योग, सं पु (स) अष्टाङ्गयोग ।
—राजेश्वर, स पु (स) सम्राज् (पु), राजाधिराज ।
—रोग, स पु (स >) असाध्यव्याधि २ दे 'यक्ष्मा' ।
—लक्षण, म पु (सं न) सहज राजचिह्न (सामुद्रिक) ।
—लक्ष्मी, स स्त्री (स) राजश्री (स्त्री), २ नृपच्छवि (स्त्री), नृपवैभवम् ।
—वंशी, वि (स राजवंश >) राजवंश्य, नृपकुलोद्भूत, राजकुलज ।
—सत्ता, म स्त्री ([illegible]) राज, शक्ति-अधिकार (स्त्री), राजनात्वम् ।
—सभा, स स्त्री (स) राज-परिषद्-संसद् (दोनों स्त्री) २ नृपतिसमाज ।
—हंस, स पु (सं) मराल २ कलहंस, कदंब ३ नृपोत्तम ।
राज़, सं पुं (फ़ा) रहस्य, गुह्य, गोप्यम् ।
राजकीय, वि (स) राज नृप, राज राज्य, विषयक २ नृपोचित, राजार्ह ।
राजत, वि (स) रौप्य-रूप्य-प्यम, रूप्यमय योग्य, रजत, मय निर्मित-कृत ।
राजत्व, स पु (स न) राजता, नृपत्व राज अधिकार आधिपत्यम् ।
राजस, वि (स) रजोगुण, उद्भूत जनित-प्रधान-मय (राजसी स्त्री) ।
राजसिक, वि, दे० 'राजस' ।
राजसी, वि (स राजस>) राज, योग्य-अर्ह, नृपोचित, राजकीय ।
राजसूय, स पु (स) नृपाध्वर, क्रतु-राज उत्तम ।
राजस्व, स पु (स पु न) राज, धन कर बलि ।
राजा, स पु (स राजन) नृप, भूप, पार्थिव, जर-नृ भू-मही, पाल पति, क्ष्मा-मही भू भृत् (पु), पार्थ, महीन्द्र, नरेन्द्र, प्रजेश्वर, भूमिप, [illegible]धर, अवनि,-प -पति, इन, भुभुज् (पु) राज् (पु), महीक्षित् (पु), नाभि, अश्वपति, प्रभु २ स्वामिन, अधिपति ३ उपाधिभेद ४ धनाढ्य ।
राजाज्ञा, स स्त्री (स) नृपादेश, राजशासनम् ।
राजाधिकारी, स पु ([illegible] -रिन) राज, नियोगिन भृत्य -कर्मकर पुरुष २ न्यायाधीश, धर्माध्यक्ष ।
राजाधिराज, स पु (स) राजराजेश्वर, सम्राज् (पु) ।
राजाधिष्ठान, सं पु (स न) राजधानी, नृपनगरी, राजपुरम् ।
राजानक, स पु (सं ?) राजक, साधारण, नृप भूप पार्थिव, सामंत ।
राजाभियोग, म पु (स) प्रजया बलाद् कार्यकारणम्, दे 'बेगार' ।
राजिका, स स्त्री (स) श्रेणी, पंक्ति (स्त्री) २ केदार ३ दे 'राई' ।
राजी, स स्त्री (स) दे 'राजि' ।
राज़ी, वि (अ) एक-सह-स,-मत-चित्त २ स्वस्थ ३ प्रसन्न ४ सुखिन् ।
—करना, क्रि स, प्रसद् (प्रे), स-परि तुष (प्रे), प्री (क्र् उ अ) ।

—होना, क्रि अ , प्रसद् (भ्वा प अ) स-परि तुष् (दि प अ) प्री (कर्म०) ।
—नामा, स पु (अ + फा) समाधान २ समाधानपत्रम् ।
राजीव, स पु (स न) नीलकमल २ पद्म, सरोज, कमलम् ।
राजेन्द्र, स पु (सं) दे 'राजाधिराज' ।
राज्ञी, स स्त्री (स) राजपत्नी, दे 'रानी' ।
राज्य, स पु (स न) दे 'राज' (१ २) ।
—च्युत, वि (स) राज्यभ्रष्ट, सिंहासनच्युत ।
—च्युति, स स्त्री (स) राज्य,भ्रंश भग, सिंहासनावरोपणम् ।
—तन्त्र, स पु (स न) शासन,-प्रणाली-व्यवस्था ।
—पाल, स पु (सं) राज्य प्रदेश प्रान्त, शासक । (प्रादेशिक शासन का सर्वोच्च प्रबन्धक) ।
—लक्ष्मी, सं स्त्री (स) दे 'राजलक्ष्मी' ।
—व्यवस्था, स स्त्री (सं) राज्य,-नियम -व्यवस्था ।
राज्याभिषेक, सं पु (सं) राज्य-सिंहासन, आरोहण, राजतिलक कं २ सिंहासनारोहणे राजसूये वा नृपस्नानविशेष ।
राणा, सं पु (सं राजन्) राजपुत्रनृपाणा उपाधि ।
रात, सं स्त्री [स रात्रि (स्त्री)] रा(शा)र्वरी निशा निशीथिनी त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, रजनी यामिनी तमी, तम स्विनी श्यामा, घोरा, नक्त, दोषा ।
—दिन, क्रि वि , नक्तदिनं, नक्तदिव, सदा, सर्वदा ।
—भर, क्रि वि , यावन्नक्त, निशान्त यावत् ।
आधी— स स्त्री मध्य अर्ध रात्र निशीथ , निशा-रात्रि मध्यम् ।
रातों— क्रि वि , निशीथे एव ।
रात्रि स्त्री, स स्त्री (सं) दे 'रात' ।
राध्यध, सं पु (स) निदाघ (मनुष्य या पशु आदि) ।
राधा धिका, सं स्त्री (सं) रासेश्वरी, गमिकेश्वरी कृष्णप्रिया, वृषभानुतनया ।
—रमण, सं पुं (स) राधावल्लभ , श्रीकृष्ण ।
रान, सं स्त्री (फा) ऊरु , सक्थि (न) ।

राना, स पु , दे 'राणा' ।
रानी, स स्त्री (सं राज्ञी) राजपत्नी, नृप-कलत्र २ स्वामिनी ।
छोटी—, स स्त्री , परिवृक्ती ।
पट्ट—, स स्त्री , पट्ट-राज्ञी-महिषी देवी, महा पट्ट राज्ञी ।
प्रिय परन्तु छोटी—, स स्त्री , वावाता ।
राब, स स्त्री (सं द्रावक) फाणित, अर्धा वर्तितेक्षुरस ।
रावटी, स स्त्री , दे 'रावटी' ।
राम, स पु (सं) परशुराम २ बल,-राम देव ३ श्रीरामचंद्र ४ परमेश्वर ५ 'त्रि' इति सख्या ।
—कली, स स्त्री (स) रामक(कि)री (रागिणी) ।
—कहानी, सं स्त्री , बृहत्कथा २ करुणकथा ।
—जनी, सं स्त्री , हिंदू नर्तकी २ वेश्या ।
—तरोई, सं स्त्री , दे 'भिंडी' ।
—दूत, स पु (सं) हनुमत् (पु), पवनपुत्र ।
—धनुष, स पुं [सं धनुस् (न)] इन्द्रचाप ।
—नवमी, सं स्त्री (सं) श्रीरामजन्मतिथि, चैत्रशुक्लनवमी ।
—नामी, सं पु [सं रामनामन् (न)] रामनामांकितवस्त्र २ रामनामांकितहारभेद ।
—पुर, सं पु (स न) स्वर्ग २ अयोध्या ।
—बाण, सं पु (सं) अजीर्णनाशक औषध विशेष २ रामशर , शरवृक्षभेद ३ वि, अमोघ, सद्य फलदायिन् ।
—रस, स पु (स) लवणं २ ग्रामभेद (मदरास में) ।
—राज्य, स पु (सं न) धर्म्यसाम्राज्य, राज्यम् ।
—राम, अव्य (सं) प्रणाम , नमस्कार ।
—लीला, सं स्त्री (सं) रामायणाभिनय ।
—सखा, सं स्त्री (सं-ख)सुग्रीव ।
—करके, मु , अत्यायासेन, अतिकृच्छ्रेण, यथाकथंचित् ।
—जाने, मु , न वेद्मि, न जाने, ईश्वरो जानाति २ ईश्वर साक्षी, अहं सत्यं ब्रवीमि ।
—नाम सत्य है, मु , रामनाम(गोविन्दनाम)-सत्य, प्रेतवहनकालोचितवाक्यम् ।

रामचद्र, सं पु (स) दशरथस्य ज्येष्ठसुत , रघुनदन , सीतापति , रामभद्र , रावणारि ।

रामा, सं स्त्री (स) सुदरनारी, सुन्दरी, वामा २ नारी ३ सगीतकुशला नारी ४ सीता ५ राधा ६ रुक्मिणी ७ लक्ष्मी ८ शीतला ।

रामानद, स पु (स) वैष्णवाचार्यविशेष ।

रामानुज, स पु (स) लक्ष्मण , सौमित्रि २ श्रीवैष्णवसम्प्रदायप्रवर्तकाचार्य (स १०३३ ११९४) ।

रामायण, स पु (स न) श्रीवाल्मीकि प्रणीतो महाकाव्यविशेष २ रामचरितम् ।

रामायणी, वि (स रामायणम्>) रामायण, सम्बन्धित-विषयक, रामायणीय । स पु रामायण, पाठिन् पठित ।

राय¹, स पु (स राजन्) नृप, भूप २ सामत , नायक ३ चारण, वदिन ४ राजकीयोपाधिभेद , राजन् (पु) ।

—बहादुर, स पु (हिं+फ़ा) *राजवीर (उपाधिभेद) ।

—साहब, स पु (हिं+फ़ा) *राजमहोदय (उपाधिभेद) ।

राय², स स्त्री (फ़ा) मत, मति (स्त्री) आशय , अभिप्राय , विचार , तर्क ।

—देना, क्रि अ, निजमत-स्वमति प्रकटयति (ना श) ।

—पूछना या लेना, क्रि स, परमत प्रच्छ् (तु प अ), (स्वहिताय) परविचार ज्ञा (मनत, जिज्ञासते) ।

रायगाँ, वि, (स) व्यर्थ, निरर्थक, अपार्थक ।

रायज, वि (स) दे 'प्रचलित' ।

रायता, स पु (स राज्यक्त) दाधिकव्यजनभेद , दाधेयम् ।

रायल, वि (अ) राजकीय, राजोचित, नृपोचित, राजार्ह ।

रार, स स्त्री [स राटि (स्त्री)] दे 'झगड' ।

राल¹, स पु (स) शाल-साल-वृक्ष २ सर्जसाल, निर्यास-रस, सुरधूप धूप, सुरभि, अग्निवल्लभ , दे 'धूप' ।

राल², स स्त्री (स लाला) सृणि(णी)का, स्यदिनी, द्राविका, मुखस्राव ।

—गिरना चूना या टपकना, मु, लालायते (ना था) लालायित (वि) भू, अत्यर्थं अभिलष् (भ्वा प मे) ।

राव, स पु, दे 'राय' ।

—चाव, स पु, सगीतोत्सव , दे 'रागरग' २ लालनम् ।

रावण, स पु (स) पौलस्त्य , लकेश , दश, कधर ग्रीव आनन आस्य ।

रावल¹, स पु (स राजपुर>) अतःपुर, दे 'रनवास' ।

रावल², सं पु (स राजपुत्र >) नृप २ सामत ३ समानपूर्वक संबोधनपद, राजन् ! ४ योध , भट ।

रावी, स स्त्री (स इरावती) ऐरावती, पचनदप्रवर्तिनदीविशेष ।

राशि, स स्त्री (स पु) पु(पि)ञ्ज , पुञ्जि (स्त्री), उत्कर, कूट-ट, समुच्चय , निकर , दे 'ढेर' २ ज्योतिश्चक्रस्य द्वादशांश ३ उत्तराधिकार ।

—चक्र, स पु (स न), ज्योतिश्चक्र, भ, मडल पजर चक्रम् ।

—भाग, स पु (स) राश्यंश , भागांश (ज्यो) ।

—भोग, स पु (स) राशौ ग्रहावस्थिति (स्त्री) २ राशौ ग्रहावस्थितिकाल ।

राशी¹, स स्त्री, दे 'राशि' ।

राशी², वि (अ) दे 'रिश्वतखोर' ।

राष्ट्र, स पु (स न) देश , विषय , जनपद , दे 'राज' (२) । २ राष्ट्रवासिन, राष्ट्रिका, जना , प्रजा (सब बहु) लोक, जनता ३ राष्ट्रीय उपद्रव , दे 'ईति' ।

—पति, स पु (स) राष्ट्रिक, राष्ट्रिय, राष्ट्रनायक , प्रजातत्रप्रधान ।

—पाल, स पु (स) नृप , भूप । २ कस भ्रातृ ।

—विप्लव, स पुं (स) राजद्रोह , प्रजा क्षोभ क्रान्ति (स्त्री) ।

राष्ट्रीय, वि (सं) देशीय, देश्य, राष्ट्रिय, जानपदिक ।

राष्ट्रीयता, स स्त्री (स) देशीयता, देश भक्ति (स्त्री) ।

रास¹, स पु (स) कोलाहल , कलकल, महाध्वान २ ध्वनि, शब्द । सं स्त्री

(स पु), गोपानां नृत्यक्रीडाभेद २ नाट्य रूपक, भेद ३ शृंखला ४ प्रचलितगानविशेषभेद ५ विलास ६ लम्य ७ नानाममाज ।

—क्रीडा, स स्त्री (स) रासविलास २ रास लीला ३ कृष्णगोपिकानृत्यम् ।

—धारी, स पु (स रिन्) रासाभिनेतृ ।

—विहारी, स पु (स रिन्) श्रीकृष्ण ।

रास¹, स स्त्री (अ) दे 'श्याम' ।

रास², स स्त्री, दे 'राशि' (१२) ।

रासभ, स पु (स) गर्दभ २ अश्वतर (रासभी स्त्री) ।

रास्त, वि (फ़ा) सरल २ उचित ३ अनुकूल ४ यथार्थ ।

रास्ता, स पु (फ़ा) मार्ग, पथिन् (पु) २ रीति (स्त्री) ।

रास्ती, स स्त्री (फ़ा) सत्य, तथ्य, ऋत २ आर्जव, धर्मशीलता ।

राह, स स्त्री (फ़ा) पथिन् (पु), दे 'मार्ग' २ प्रथा, रीति (स्त्री) ३ नियम ।

—खर्च, स पु (फ़ा) मार्गव्यय ।

—गीर, स पु (फ़ा) यात्रिन, पथिक ।

—चलता, स पु (फ़ा + हिं) पथिन् २ अपरिचित ।

—ज़न, स पु (स) दस्यु, परिपंथिन्, मार्गतस्कर ।

—ज़नी, स स्त्री (फ़ा) लुंठन, मोषण, अपहार ।

—दारी, स स्त्री (फ़ा) पथ-कर-देय, मार्ग शुल्क-कम् ।

—रीति, स स्त्री (फ़ा + स) परस्पर, व्यवहार-सम्पर्क ।

—ताकना या देखना, मु, प्रतीक्ष (भ्वा आ से), प्रतिपा (प्रे प्रतिपालयति) ।

—नापना, मु, व्यर्थं घट (भ्वा प से) ।

—निकालना, मु, युक्तिं चिंत् (चु) उपाय कल्पय् (प्रे) ।

—पर आना, मु, सुपथे प्रवृत् (भ्वा आ से), सन्मार्गं अवलंब (भ्वा आ से) ।

—बताना, मु, मार्गदर्श अनुव्रज् (प्रे) २ मार्गं दृश् (प्रे) ।

—रखना, मु, व्यवहृ (भ्वा प अ) सम्पर्क रक्ष् (भ्वा प से) ।

—रैना, मु, प्रस्था (भ्वा आ अ), या (अ प अ) ।

राहत, स स्त्री (अ) सुख, आनंद ।

राही, स पुं (फ़ा) पान्थ, पथिक ।

राहु, स पु (स) विधुंतुद, सैंहिकेय, तमस (पु न), स्वर्भानु, शीर्षक, ग्रवध ।

—ग्रास, स पु (स) राहु-ग्रसन-ग्रहण-स्पर्श ग्राह उपराग, सूर्य-चंद्र-ग्रहणम् ।

रिआयत, स स्त्री (अ) मूल्य-न्यूनता २ अनुग्रह, व्यवहारमार्दवं, प्रसाद: ३ पक्षपात ।

—करना, क्रि स, मूल्यं न्यूनीकृ २ अनुग्रह् (क्र प से) ३ सपक्षपातं आचर (भ्वा प से) ।

रिआयती, वि, (अ) प्रासादिक, आनुग्रहिक, न्यूनमूल्य ।

रिआया, स स्त्री (अ) प्रजा, दे ।

रिकशा, स स्त्री (अं रिक्शा) नर-यान-वाहनम् ।

रिकाब, सं स्त्री, दे 'रकाब' ।

रिकाबी, स स्त्री, दे 'तश्तरी' ।

रिकट्स, स पु (अं) बाल्यग्रह (रोगभेद) ।

रिक्त, वि (स) पर, शून्य, शून्यगर्भ २ निर्धन ।

—हस्त, वि (सं) शून्यपाणि ।

रिक्थ, सं पु (सं न) दाय, पैतृकधनम् ।

—हारी, स पु (सं रिन्) रिक्थिन्, दायाद ।

रिज़क, स पु (अ रिज़्क़) अन्न-जल-जीविका, वृत्ति (स्त्री) ।

रिज़र्व, वि (अं) रक्षित, निश्चित, नियत ।

रिज़ल्ट, स पु (अं) परीक्षा-फल-परिणाम २ परिणाम, फलम् ।

रिझाना, क्रि स, व 'रीझना' के प्रे रूप ।

रिपु, सं पु (सं) अरि, वैरिन्, दे 'शत्रु' ।

रिपोर्ट, स स्त्री (अं) सूचना २ विवरणिका, विवरणं, प्रतिवेदनम् ।

रिपोर्टर, स पु (अं) संवाद-दातृ लेखक, वृत्तान्त-समाचार-लेखक ।

रिपोर्टाज़, सं पु (अं) घटनाक्रमवार्ताना साहित्यिकविवरणं, साहित्यविशेष, *रिपोर्ताजम् ।

रिफ़ार्म, सं पु (अ) संशोधनं, दोषापनयनं, संस्करणम्, संस्कार । *सुधार ।

रिफ़ार्मर, स पु (अ) (समाज) संशोधक संस्कारक -दोषहन्तृ, *मुद्धारक ।
रिफ़ार्मेटरी, स स्त्री (अ) बालापराधि-संस्कारकपाठशाला *संशोधिका *संस्कारिका, *सुद्धारिका ।
रिब्बन, स पु (अ) पट्टिका ।
रिमझिम, स स्त्री (अनु) शीकर-वर्ष पात ।
—होना, क्रि अ , मंद मंद वृष् (भ्वा प से)।
रियासत, स स्त्री (अ) देशीयराज्य, राज्यं २ ऐश्वर्यं, वैभवम् ।
रिवाज, स पु (अ) दे 'रीति' ।
रिशवत, स स्त्री (अ रिश्वत) उत्कोच , आमिष, ढौकन, लंचा २ उत्कोचदानादानम् ।
—खाना, क्रि अ , उत्कोच ग्रह (क्र् प से)-आदा (जु आ अ)।
—ख़ोर, स पु (अ + फ़ा) उत्कोचग्राहिन् ।
—ख़ोरी, स स्त्री (अ + फ़ा) उत्कोच-आदान ग्रहणम् ।
—देना, क्रि स , उत्कोच दा ।
रिश्ता, स पु (फ़ा) दे 'संबंध' ।
रिश्तेदार, स पु (फ़ा) दे 'संबंधी' ।
रिश्तेदारी, स स्त्री (फ़ा) दे 'संबंध' ।
रिस, स स्त्री (स रिष्>) कोप , क्रोध ।
रिसना, क्रि अ (स रस >) बिंदुश कण क्रमेण स्यंद् (भ्वा आ से)-क्षर-गल (भ्वा प से), री (दि आ अ) २ मंद मंद स्नु (भ्वा प अ)-प्रस्नु (अ प से)-स्यंद्, री।
रिसालदार, स पु (फ़ा) सादि-सेना-नी (पु)-पति ।
रिसाला[1], स पु (अ) सामयिक , पत्रिका, २ पुस्तिका।
रिसाला[2], स पु (फ़ा) तुरगबल, सादिसैन्य, अश्वारोहा नीकम् ।
रिहा, वि (फ़ा) निर वि, मुक्त विमोचित, दे 'मुक्त' ।
रिहाई, स स्त्री (फ़ा) (बंधनादिभ्य) वि, मुक्ति (स्त्री) उद्धार , निस्तार ।
रींगना, क्रि अ , दे 'रेंगना' ।
रींधना, क्रि स (स रंधन) दे 'पकाना' ।
री, अव्य (स रे) अरे, ओ , अयि, हे, दे 'अरी' ।
रीछ, स पु (स ऋक्ष) भल्लूक , दे 'भालू' ।
रीझ, स स्त्री (हिं रीझना) तुष्टि तृप्ति प्रीति (स्त्री), प्रसाद , २ दे 'रीझना' स पु ।
रीझना, क्रि अ (स रंजन) अनुरज्-आसञ्ज् (कर्म) अनुरक्त-आसक्त-बद्धभाव (वि) भू , विस्मरि,-मुह (दि प से) २ तुष्-तृप् (दि प से), प्रमद् (भ्वा प अ) । स पु, अनुराग आसक्ति (स्त्री) २ तुष्टि प्रीति (स्त्री) ।
रीझा हुआ, वि , अनुरक्त, आसक्त, बद्धभाव, वि ,मुग्ध, प्रेमिन्, प्रणयिन् ।
रीटार्ट, स पु (अं) वक्रभाण्डम् ।
रीठा, स पुं (स रिष्ट) अरिष्ट द्रु , मांगल्य , कृष्णवर्ण , अर्थसाधन पीतफेन , गुच्छफल , फेनि(णि)ल २ रिष्ट फेनि(णि)ल -फलम् ।
रीढ़, स स्त्री (स रीढक) पृष्ठवंश , पृष्ठास्थि (न), कशे(से)रु( )(पु न), कशेरुका ।
रीता, वि (स 'रिक्त' दे) ।
रीति, स स्त्री (स) रूढि (स्त्री), आचार , व्यवहार प्रथा, परिपाटी टि (स्त्री) २ संस्कार , कृत्य, विधि , कल्प ३ प्रकार , विधा, पद्धति (स्त्री) ४ नियम ५ रसादीनां उपकर्त्री पदसंघटना (काव्य , उ) वैदर्भी, गौडी इ) ६ स्वभाव , प्रकृति (स्त्री), धर्म ।
—रिवाज, स पु , रूढय , आचारव्यवहारा , संस्कारा (सीमों बहु) ।
रीस, स स्त्री (स ईर्ष्या) मात्सर्यं २ स्पर्धा, विजिगीषा ।
—करना, क्रि अ , स्पर्ध (भ्वा आ से), संघृष् (भ्वा प से) । (प) अनुकृ ।
रुंड, स पु (स पु न) कबंध , नि शीर्षकाय २ छिन्नपाणिपादो देह ।
रुँ(रुं) दवाना, क्रि प्रे व 'रौंदना' के प्रे रूप ।
रुंधना, क्रि अ (स रुद्ध) अव-उप, रुध् (कर्म) प्रतिबाध् स्तंभ (कर्म) ।
रुकना, क्रि अ , व 'रोकना' के कर्म के रूप ।
रुकवाना क्रि प्रे , व 'रोकना' के प्रे रूप ।
रुकाव, स पु } (हिं रुकना) दे 'रोक' ।
रुकावट, स स्त्री }
रुक्का, स पु (अ रुक्अह्) पत्रक, लघुपत्रम् ।
रुक्म, स पु (स न) सुवर्ण, काञ्चनं २ लोह ३ रुक्मिणीभ्रातृ । वि भास्वर ।

—रथ, सं पु (सं) रुक्मवाहन द्रोणाचार्य ।

रुक्मिणी, सं स्त्री (सं) श्रीकृष्णस्य प्रथम पत्नी, विदर्भेशभीष्मपुत्री ।

रुक्मी, सं पु (सं रुक्मिन्) विदर्भेश्वरभीष्मस्य ज्येष्ठपुत्र ।

रुख, सं पु (फा) मुख, वदन, आनन, २ कपोल, गल्ल ३ मुख-मुद्रा आकृति (स्त्री) ४ भाव, आशय ५ कृपा-दया, दृष्टि (स्त्री) ७ रथनाम नामकशतुरगशार । क्रि वि, प्रति (द्वितीया के साथ), दिशाया २ सम्मुख, पुरत ।

—करना या देना, मु, अवधा (जु उ अ) मनोयुज (चु) २ अभिमुखीभू ।

—बदलना या फेरना, मु, पराङ्मुखीभू २ मनोऽन्यत्र युज् (चु), अन्यमनस्क (वि०) भू ।

रुखसत, सं स्त्री (अ) प्रस्थान, प्रयाण २ अवकाश दे 'छुट्टी' ।

रुखाई, सं स्त्री (हिं रूखा) शुष्कता, शोष, नीरसता २ रूक्षता, औदासीन्य, स्नेहाभाव, उपेक्षा, रौक्ष्यम् ।

रुखानी, सं स्त्री (सं रोकखानं) काष्ठ खननी, वर्धक्युपकरणभेद ।

रुचना, क्रि अ (सं रोचनं) रुच् (भ्वा आ स), प्रिय मधुर-रुचिकर प्रतिभा (कर्म) । इष्-अभिलष (कर्म) ।

रुचि, सं स्त्री (सं) अभिरुचि-प्रीति-श्रद्धा प्रभृति (स्त्री), छंद, काम २ अनुराग, प्रेमन् (पु न) ३. किरण ४ सौंदर्य, छवि (स्त्री) ५ बुभुक्षा, पिपासा, क्षुधा ६ आस्वाद ।

—कर, वि (सं) स्वादिष्ट, सुरस २ हृद्य, प्रिय, मनोहर, रुचिकारक ।

—वर्द्धक, वि (सं) रुचिकारक-वर्धक-कारिन् २ पाचक, दीपक, अग्निवर्द्धक ।

रुचिर, वि (सं) सुन्दर, मनोहर २ मधुर, सुस्वादु ।

रुझाना, क्रि स, व 'रुझना' के प्रे रूप ।

रुतबा, सं पुं (अ) पद, पदवी २ मान, प्रतिष्ठा ।

रुदन, सं पुं (सं) रुदित, रोदनं, विलपनं, विलाप, क्रन्दनं, क्रंदितं, अश्रुपात ।

रुद्ध, वि (सं) वेष्टित, वलयित, सवीत, २ मुद्रित अ, पिहित, आ स-वृत ३ स्तंभित, निश्चलीकृत ।

—कंठ, वि (सं) गद्गदस्वर, स्खलद्वचन २ वक्तुमसमर्थ (प्रेमादि के कारण) ।

रुद्र, सं पुं (सं) शिवस्य रूपविशेष, शिव २ गणदेवताभेद ३ 'एकादश' इति संख्या ४ रसभेद (काव्य) । वि, भीम, भयंकर भीषण ।

रुद्राक्ष, सं पु (सं) (वृक्ष) तृणमरु, अमर, पुष्पचामर २ (फल) शिव हर नीलकंठ-अक्ष, पावन, भूतनाशनम् ।

रुधिर, सं पु (सं न) शोणित, दे 'रक्त' ।

रुपया, सं पु, (सं रूप्य) रूप्यक, रूपक, टंकक, रजतमुद्रा २ धनम् ।

—उड़ाना, मु, धन अपव्यय् (चु) अथवा वृथा क्षै (प्रे) ।

—जोड़ना, मु, धनं संचि (स्वा उ अ) ।

—भुनाना, मु, दे 'भुनाना' ।

—वाला, वि, धनिक, धनाढ्य ।

रुपहला, वि (हिं रूपा) रूप्य रजत-मय, राजत २, रूप्य-रजत-वर्ण, धवल ।

रुमाली, सं स्त्री (फा रूमाल) दे 'लंगोट' ।

रुरुआ, सं पु (हिं ररना) भीषणरव उलूक भेद ।

रुलाई, सं स्त्री (हिं रोना) दे 'रुदन' २ रोदनप्रवृत्ति (स्त्री), रुरुदिषा ।

रुलाना, क्रि स, व 'रोना' के प्रे रूप ।

रुष्ट, वि (सं) कुपित, क्रुद्ध ।

रूँधना, क्रि स (सं रोधनं) (रक्षार्थं कण्टकादिभि) परि-वेष्ट् (भ्वा आ स, प्रे), परिवृ (स्वा उ से, प्रे) २ परिरुध् (रु उ अ), परिच्छद् (चु), सवरयति (ना धा) संवृ (स्वा भ्वा स) ३ अव-नि रुध् (रु उ अ), पिधा (जु उ अ) ।

रूँ रूँ, सं स्त्री (अनु) शिशु-रुदित-रुदनं, ०ईकार ।

—करना, क्रि अ, मंद मंद रुद् (अ प स) ।

रू, सं पु (फा) मुखं, वदनं (२ ३) उपरि भाग, भाग ।

—स्याह, वि (फा) अपकीर्तिमत्, कलंकित ।

—स्याही, सं स्त्री (फा) अप-यशस् (न), कीर्ति (स्त्री) ।

रूई, स स्त्री [स रोमन् (न)] (पौधा) कर्पास-सनी, कार्पासी सिका २ (धूआ) कार्पास, तूल-ल, पिचु, पिचुल, पिचु तूलम् ।

—का गाला, स पु, पिचुपिंड-न्द् ।

—दार, वि, कर्पास (-सी स्त्री), कार्पासिक (-की स्त्री) ।

—दार वस्त्र, स पु, कर्पास, फाल, बादर, तूलावरम् ।

रूक्ष, वि (स) दे 'रूखा' ।

रूख, स पु (स वृक्ष) पादप, तरु ।

रूखा, वि (स रूक्ष) स्निग्धता चिक्कणता मसृणता श्लक्ष्णता,-रहित २ घृत-तैल, हीन रहित ३ विरस, स्वादहीन ४ शुष्क, निर्जल, नीरस ५ उदासीन, प्रेमहीन, विरक्त ६ कठोर परुष ७ विषम नतोन्नत ।

—सूखा, वि, रूक्षशुष्क (भोजनादि), विरस, नि स्वाद ।

रूखापन, स पु, दे रुखाई' ।

रूठन, स स्त्री (हिं रूठना) दे 'रूठना' स पु ।

रूठना, क्रि अ (स रुष्ट) रुष् (दि प से) अप वि रज (भ्वा उ से) रुन(ज्य)ति-ते, रुष्ट-कुपित कुपित (वि) भू । स पु, रोष, अप वि,-राग, प्रीति प्रसाद परितोष,-अभाव ।

रूठा हुआ, वि, रुषित, कुपित, अप-वि,-रक्त, कृतरोष ।

रूढ, वि (स) आ-अधि, रूढ, उपर्यासीन २ प्रचलित, प्रसिद्ध ३ कठिन, कठोर ४ अविभाज्य (संख्या) ५ अशिष्ट, ग्राम्य ।

रूढ़ि, स स्त्री (स) प्रथा, दे 'रीति' (१) । २ ख्याति प्रसिद्धि (स्त्री) ३ आ-अधि, रोह ४ वृद्धि (स्त्री) ।

रूप, स पु (स न) आकार, आकृति मूर्ति (स्त्री) संस्थान २ प्रकृति, स्वभाव ३ सुषमा, सौन्दर्य-छवि (स्त्री)-वर्ण ४ काय, देह ५ वेश-ष ६ दशा ■ लक्षणम् ।

—बिगाड़ना, क्रि स, विरूप् (चु), आकृति दुष् (प्रे) विकृ ।

—रंग, स पु (स न) वर्णाकारम् ।

—रेखा, सं स्त्री, दे 'रूप' (१) ।

—भरना या बनाना, मु, वेष ग्रह् (क्र् प से), रूपं धृ (भ्वा प अ, चु) ।

रूपक, स पु (सं न) नाटक २ अर्थालंकार भेद (काव्य) । सं पुं, दे 'रुपया' ।

रूपवती, वि (स) सुरूपिणी, वरवर्णिनी ।

रूपवान्, वि (स -वत्) सुन्दर, सुरूप, रूप शालिन् ।

रूपा, स पु (सं रूप्यं) रजत, श्वेत, शुभ्र, मित, दे 'चाँदी' ।

रूपी, वि (स -पिन्) रूपान्वित, रूपधारिन् २ तुल्य, समान ।

रूपोपजीविनी, स स्त्री (स.) वेश्या, वारांगना ।

रूपोपजीवी, स पु (स -विन्) दे 'बहु-रूपिया' ।

रूपोश, वि (फा) (दण्डभयात्) पलायित गुप्त-गूढ प्रच्छन्न ।

रूपोशी, स स्त्री (फा) (दण्डादिभयात्) गुप्ति (स्त्री), अज्ञातवास, प्रच्छन्नता ।

रूप्यक, स पु (स न) दे 'रुपया' ।

रूबरू, क्रि. वि (फा) अभि स,-मुख-मुखे, पुर, पुरत (सब अव्य) ।

रूमाल, स पु (फा) वरक, कर,-वस्त्र पु (पु), कर्पट ।

—पर रूमाल भिगोना, मु, अत्यधिक रुद् (अ प से), अश्रुधारा प्रवह् (प्रे), वाष्पवर्षं कृ ।

रूल, स. पु (अ) नियम, विधि २ पत्ररेखा ३ *रेखादंड ।

—दार, वि (अ+फा) रेखांकित, सरेख (पत्रादि) ।

रूलर, स पु (अ) *रेखादंड २ प्रमाण-पट्टिका ३ शासक ।

रूम, स पु (फा) *रूम, देशविशेष ।

रूसी, स पु (फा) रूसवासिन् । सं स्त्री, रूसभाषा ।

रूह, सं स्त्री (अ) जीव, आत्मन् (पुं) २ तत्त्वं, सार-रम् ।

—केवड़ा, स स्त्री, केतकीसार ।

—गुलाब, स स्त्री, जपा,-तत्त्व-सार ।

रेंक, स स्त्री (हिं रेंकना) *रेंकार, खर-गर्दभ, नाद, चि(ची)त्कार, हेष पा षितम् ।

रेंकना, क्रि अ (अनु) आरट् (भ्वा प से), रेंक्, चीत्कृ, हेष्-ह्रेष् (भ्वा आ से) २ परुषं गै (भ्वा प अ) ।

रेंगटा, स पु (हि रेंकना) गर्दभार्भक रासभशावक ।

रेंगना, क्रि अ (स रिंगण) रिंग्-(भ्वा प से) सृप् (भ्वा प अ) उरसा गम् २ निभृत शनैः अनिमद चल (भ्वा प से)-सृप् । स पु, रिंगणं, सर्पणं, उरसा गमनं, शनैः चलनम् ।

रेंगनेवाला, स पु, उरोगामिन्, सर्पन् ।

रेंट-टा, स पु (देश) सिंघाण, सिंहाण-णं, नासामलम् ।

रेंड, स पु (स एरंड) अम्बक, हस्तपर्णं ।

रेंडी, स स्त्री (हि रेंड) एरण्डबीजम् ।

—का तेल, स पु, एरण्डतैलम् ।

रेंदी, स स्त्री (देश) क्षुद्रस(ई)र्षप २ क्षुद्र तरबूज (प रेंदी) ।

रें रें, स स्त्री (अनु) दे 'रूँ रूँ' ।

रे, अव्य (स) अरे, अयि, भो (सब अव्य) ।

रे, स पु (स ऋषभ) ऋषभस्वर (संगीत) ।

रेख, स स्त्री (स रेखा) दे 'रेखा' २ चिह्न ३ संख्या, गणना ४ नवश्मश्रु (न), श्मश्रूद्भेद ।

रेखांश, स पु (स) द्राघिमांश ।

रेखा, स स्त्री (सं) रेषा, लेखा, दण्डाकार लिपि (स्त्री) २ चिह्न, अङ्क ३ गणना, संख्या ४ आकार ५ पाणिपादादिरेखा (सामुद्रिक) ६ हीरकदोषभेद ७ भाग्यम् ।

—गणित, स पुं (स न) भूज्या, मिति (स्त्री) ।

कर्म—, सं स्त्री (सं) भाग्यलेख, दैवम् ।

रेगिस्तान, स पु (फ़ा) मरु, मरु-स्थलं भूमि (स्त्री), रिदल, धन्वन् (पु), ऊषर-रम् ।

रेचक, वि (स) त्रि, रेचक रेचन, दे 'दस्तावर' ।

रेचन, सं पु (स न) वि, रेक, प्रस्कन्दनं, रेचना, विरेचनं, उदरशोधनम् । स पु, मारक वि, रेचन-रेचनम् ।

रेज़ा, स पु (फ़ा) लव, लेश, अणु, कण ।

रेजीमेंट, स स्त्री (अं) सैन्य-दल-गुल्मम् ।

रेट, स पु (अं) अर्घ, मूल्यम् ।

रेडियम, सं पु (अं) रेडियमं, धातुभेद २ तनातु (न) ।

रेणु, सं स्त्री (स पु) पांसु-सु, धूली लि (स्त्री) २ बालुका, सिकता ३ कण-निकर ।

—रंजित, त्रि (सं) धूलिधूसरित २ गर्भे ।

रेणुका, स स्त्री (स) दे 'रेणु' १, २, ३ जमदग्निपत्नी, परशुरामजननी ।

रेत, स पु [स तस (न)] वीर्य २ पारद ३ जलम् ।

रेत, स स्त्री (स रेतना) बालुका, सिकता, सिता, शीतला, महा, सूक्ष्मा ।

रेतना, क्रि स (हि रेत) मक्षन्या घृष् (भ्वा प से), लोहमार्जन्या श्लक्ष्णीकृ २ मक्षन्यादिभि शनै शनै कृत (तु प से) । स पु, लोहमार्जन्या घर्षण श्लक्ष्णीकरणं कर्तन छेदनम् ।

रेतल-ला, वि, दे 'रेतीला' ।

रेता, सं पु (हि रेत) दे 'रेत' २ धूली लि (स्त्री) ३ सिकतिलस्थलम् ।

रेतिया, स पु (हि रेतना) (लोहमार्जन्या) घर्षक ।

रेती[1], स स्त्री (हि रेतना) लोहमार्जनी, मक्षन-नी ।

रेती[2], स स्त्री (हि रेत) पुलिनं, सैकत २ सरिन्मध्ये सिकतिलद्वीप पम् ।

रेतीला, वि (हि रेत) सिकतिल, सैकत, बालुका सिकता मय-युत ।

रेफ, स पुं (स) रवर्ण, रकार (र) २ वर्णा न्तरमूर्धस्थो रकार (उ, र्प) ।

रेल[1], स स्त्री (अं) लोहपथमार्ग ।

—की लाइन, स स्त्री, लोह, पथ-सारणी मार्ग ।

—गाड़ी, स स्त्री, बाष्पशकटी ।

रेल[2], सं स्त्री (हि रेलना) धारा, प्रवाह २ आधिक्यं, बाहुल्यम् ।

—पेल, सं स्त्री जनौघ, जनसंमर्द २ बाहुल्यं

रेलना, क्रि स (देश) दे 'धकेलना' ।

रेलवे, सं स्त्री (अं) लोहपथ २ लोहपथ विभाग ।

रेला, सं पु (देश) दे 'धक्का' २ दे 'धावा' ३ प्रवाह, आप्लाव ४ पंक्ति, राशि (स्त्री) ।

रेवद, सं पु (फ़ा) पीतमूली, गन्धिनी ।

रेवड़, सं पुं (देश) (अजमेषादीना) यूथं, वृन्दं, समज, कुलं, षण्ड-ण्डम् ।

रेवड़ी, स स्त्री (देश) गुडतिलगुटी ।

रेवती, स स्त्री (सं) नक्षत्रविशेष २ बलदेव पत्नी, रैवतपुत्री ३ गौ (स्त्री) ४ दुर्गा ।

—रमण, स पुं (सं) बलदेव-राम ।

रेवा, स स्त्री (स) नर्मदा २ कामपत्नी, रति (स्त्री) ३ दुर्गा।

रेश, स स्त्री (फ़) श्मश्रु, कूर्च, कूर्चम्।

—सफ़ेद, स पु (फ़) वृद्ध, स्थविर, जरठ।

रेशम, स पु (फ़ा) कौशेय, कीट-तन्तु, कौश, पट्ट-सूत्र।

—का कीड़ा, स पु, तन्तुपट्ट-कीट।

रेशमी, वि (फ़) कौश, कौशिक, कौशेय, पट्ट, क्षौम।

—कपड़ा, स पु, कौशिक, चीनपट्ट, अंशुक, दुकूल, कौशाम्बरम्।

रेशा, स पु (फ़ा) (फलवल्कलादीनां) गुण, तन्तु, सूत्र २ नाड़ी, दे 'रग' ३ दे 'जुकाम'।

रेशेदार, वि (फ़ा) सूत्र-तंतु-नाड-युक्त।

रेहन, स पु (फ़ा) दे 'गिरवी'।

रैदास, स पु (स रविदास) भक्तविशेष, श्रीरामानंदशिष्यविशेष २ चर्मकार।

रैन, स स्त्री (स रजनी) दे 'रात'।

रैयत, स स्त्री (अ) प्रजा, दे।

रोआँ, स पु, दे 'रोम'।

रोंगटा, स पु [स रोमन् (न)] लोमन् (न), आ-चर्म-त्वच्, त्वच्, तनुरुहम्।

रोंगटे खड़े होना, मु, रोमांच-रोमहर्ष-रोमोद्गम जन् (दि आ से), दे 'रोमांच'।

रोक[1], स स्त्री (स रोधक>) विराम, विरति (स्त्री), निर्विच्छेद, अवरोध २ निप्रति-षेध, प्रत्याख्यान ३ बाधा, विघ्न, प्रतिबंध ४ वरण, वृति (स्त्री)।

—टोक, स स्त्री, दे 'रोक' (२ ३)।

बे—रोक, क्रि वि, निरंतराय, निर्विघ्न, निर्बाध (सब अव्य)।

रोक[2], स पुं (स) प्रत्यक्षक्रयविक्रयव्यवहार २ टंक, नाणक, मुद्रा, दे 'नकद' ३ दीप्ति (स्त्री)।

रोकड़, स स्त्री (स रोक>) दे 'रोक' (२) २ मूलद्रव्य, दे 'पूंजी'।

—बही, स स्त्री (हि रोकड़) मूलद्रव्य आयव्यय-लेखनपत्रिका।

रोकड़िया, स पु (हि रोकड़+प्रइया), आयव्ययमूलद्रव्य, लेखक-प्रलोख।

रोकना, क्रि स, (हिं रोक) अव-नि-प्रति-रुध् (रु उ अ), अवरुध् (प्रे), प्रतिरुध (रु प अ), नि, स्तम्भ् (क्र् प से) २ नि-वि-नि वृ (प्रे), निप्रतिषिध् (भ्वा प से), निवृत् (प्रे) ३ वशीकृ, निग्रह् (क्र प से), नियम् (भ्वा प अ) ४ प्रतिरुध् (दि आ अ), इतुमैन्य प्रति बध्, प्रतिरुध्। स पु, अवनि प्रति-स रोध रोधन, निवारण, नियमनं, निग्रह-हणं, प्रति षेधन, निप्रति-षेध-षेधनम्।

रोकनेवाला, स पु, अवनि, रोधक, निवारक, प्रतिषेधक, प्रतिरोध इ।

रोका हुआ, वि, अवनि, रुद्ध, निवारित, निरुद्ध इ।

रोग, स पु (स) रुज् (स्त्री), रुजा, व्याधि, गद, आ(आ)म, आमय, उपताप, मृत्युभृत्य।

—कारक, वि (स) व्याधिजनक।

—ग्रस्त, वि (स) रोगाक्रांत, दे 'रोगी'।

—नाशक, वि (स) रोगनाद, हारिन्-हर, स्वास्थ्यकर।

—निदान, स पु (स न) रोग-निर्णय-निरूपण।

—राज, स पु (स) राज-यक्ष्मन् (पु)-यक्ष्म।

—लक्षण, स पु (स न) व्याधिचिह्न २ रोगनिदानम्।

—लगना, क्रि अ, रोगेण ग्रस्-उपसृज्-बाध् (कर्म)।

रोगन, स पु (फ़ा रोगन) तैल, दे. 'तेल' २ कुंकुम, रंग, राग, वर्ण अंक-टीका।

—करना, क्रि स, रंज् (प्रे), वर्ण् (चु), २ कुंकुमेन लिप (तु प अ)।

—जर्द, स पु (फ़ा) घृत, आज्यम्।

रोगी, वि (स) व्याधित, रुग्ण, रोग-युक्त पीडित-आर्त-आक्रांत, आतुर, अस्वस्थ, अभ्यमित, मामय, आमयाविन्, गद, विकृत। [रोगिणी (स्त्री) = रुग्णा, व्याधिता]।

रोचक, वि (स) आह्लादक, मनोरंजक २ दे. 'रुचिकर' (२)।

रोचन, वि (स) रोचक, रुचिकर २ दीप्तिमत्, रुचिमत् २ हृद्य, प्रिय।

रोचना, स स्त्री (स) कोकनद, रक्तकमल २ गोरोचना ३ वरनारी, सुन्दरी ४ दे. 'गोरोचन'।

रोज़, स पु (फ़ा) दिन, दिवस, अहन् (न)। क्रि वि, दिने दिने, प्रति, अनु-दिन-अहन्।

—वरोज़, }
—मर्रा, } क्रि वि, दे, 'रोज' क्रि वि।
—रोज़, }

रोज़गार, स पु (फा) आजप,-जीविका, वृत्ति (स्त्री), व्यवसाय २ वाणिज्य, वणिक् कर्मन् (न)।

रोज़नामचा, स पु (फा) दे 'डायरी' २ दैनिकायव्ययपंजिका, दैनिकलेख।

रोज़ा, स पु (फा) व्रत, उपवास, उपोषण वितम् (इस्लाम)।

रोज़ाना, क्रि वि (फा) प्रतिदिन २ सर्वदा।

रोज़ी, स स्त्री (फा) दैनिकान्न, प्रात्यहिक भोजन २ आजप,-जीविका, व्यवसाय।

रोज़ीना, वि (फा) प्रात्यहिक, दैनिक। स पु, प्रात्याहिक-दैनिक,-वृत्ति भृति (स्त्री)-वेतनम्।

रोट, स पु (हिं रोटी) बृहत्-स्थूल,-रोटि(ट)का २ मिष्टस्थूलरोटिका।

रोटी, सं स्त्री (स रोटिका) रोटका २ भोजनं, सिद्धान्नम्।

—कपड़ा, मु, भोजनवस्त्र, निर्वाहसामग्री १ ग्रासाच्छादनमात्रम्।

—दाल, मु, सामान्य-साधारण, भोजन, अन्नो दकमात्रम्।

—दाल चलना, मु, जीवन निर्वह्, सामान्य निर्वाह भू।

किसी के यहाँ—तोड़ना, मु, पराधीन जीव् (भ्वा प से), परार्पित भुज् (रु आ अ)।

रोड़ा, स पु (स लोष्ट-ष्ट) लोष्टक, लोष्टु पाषाण प्रस्तर इष्टका,-खण्ड शकल।

—अटकाना, या डालना, मु, बाध् (भ्वा आ से), अव-उप नि प्रति स, रुध् (रु प अ), प्रतिबन्ध (क्र् प अ)।

रोदन, स पु (सं न) दे 'रुदन'।

रोधन, सं पुं (■) अवरोध दे 'रोक' २ दमनम्।

रोना, क्रि अ (स रोदन) रुद् (अ प से), अश्रूणि पत् (प्रे) विमुच् (तु प अ), आ, क्रन्द् (भ्वा प से) क्रुश् (भ्वा प अ), शुच् (भ्वा प से) २ दे 'रूठना' ३ अनुतप् (दि आ अ), अनुशी (अ आ ■) पश्चात्ताप कृ। क्रि स, अनुतुप् विलप् (भ्वा प से), परिदेव् (भ्वा आ से)। स पु, दे 'रुदन'।

रोनी, वि स्त्री (हिं रोना) विषण्णा, शोकमग्न।

रोनेवाला, म पु, रोदक, अश्रुमोचक, आक्रन्दक २ अनुशोचक, परिदेवक, विलापक।

रोपना, क्रि स (स रोपण) दे 'बोना'।

रोब, स पु (अ रुअब) आतंक, तेजस्(न), प्रताप, प्रभाव, प्राबल्यम्।

—दाब, सं पुं (अ) दे 'रोब'।

—दार, वि (अ+फा) तेजस्विन्, प्रतापिन्, प्रभावशालिन्।

—जमाना, मु, स्वप्रभावं नम् (प्रे), स्वगौरव प्रतिष्ठा (प्रे), निजतेजसा अभिभू।

—में आना, मु, परतेजसा अभिभू (कर्म), परप्रतापेन नम् (भ्वा प अ)।

रोबीला, (अ) दे 'रोबदार'।

रोमथ, स पु (सं) उद्गीर्ण चर्वणं, दे 'जुगाली'।

रोम[1], स पु [स रोमन् (न)] दे 'रोंगटा'

—कूप, स पु (स पु न) लोम,-विवरं छिद्रं, रोम,-द्वार-गर्तं।

—राजी, ■ स्त्री (स) रो(लो)मलता, रोमाली, रोमावली लि (स्त्री)।

—हर्ष, स पु (सं) रोमांच।

—हर्षण, स पु (स न) रोम,-उद्गम उद्भेद हर्षं। वि (स) रोमांचकर, भीषण।

—रोम में, मु, सर्वदेहे, सपूर्णशरीरे।

—रोम से, मु, सर्वात्मना, साभिनिवेशम्।

रोम[2], सं पुं (सं रोमक) रोम, पत्तन-नगर, रोमम्।

—वासी, स पु (सं सिन) रोमका (प्रायः बहु)।

रोमन, स ■ (अ) रोम, निवासिन्-वास्तव्य। वि रोम, सम्बन्धिन्,-विषयक।

—कैथलिक, स पु, ख्रिस्तसम्प्रदायविशेष।

रोमांच, सं पुं (स) रोम,-उद्गम-उद्भेद-विकार विक्रिया हर्षं हर्षणं, पुलक, कंटक कं, उद्धर्षणं, उद्धर्षणं, उल्लसनम्।

रोमांचित, वि (सं) हृष्टरो(लो)मन्, पुलकित, कंटकिन, सपुलक।

—करना, क्रि स, कंटकयति पुलकयति-रोमांचयति (ना धा)।

—होना, क्रि अ, पुलकित-कंटकित (वि) जन् (दि आ से)।

रोया, सं पुं, दे 'रोंगटा' तथा 'रोम' (१)।
रोलर, सं पुं (अं) (१ २) समीकरण-पिंडी करण,-यन्त्र ३ दे 'बेलना'।
रोला¹, सं पुं (सं रावण) कोलाहल, कलकल तुमुल, महा, शब्द -स्वन ध्वन-घोष -रव राव, निनाद, निस्वन, उत्क्रोश, उद्घोष २ तुमुलयुद्धम्।
—डालना या मचाना, क्रि स, कलकल-कोलाहल कृ, वि,-रु (अ प अ), उत्क्रुश (भ्वा प अ)।
रोला², सं पुं (सं) चतुर्विंशतिमात्रिक छन्दस् (न)।
रोली, सं स्त्री (सं रोचनी>) चूर्णहरिद्रा निर्मित तिलकोपयोगि रक्तचूर्णम्।
रोशन, वि (फा) प्रकाशित, प्रदीप्त २ भासुर, प्रकाशमान ३ प्र-वि,-ख्यात ४ प्रकट, व्यक्त।
—दान, सं पुं (फा) गवाक्ष -छदिर्वातायनम्।
—दिमाग, वि, प्राज्ञ, बुद्धिमत्।
रोशनाई, सं स्त्री (फा) दे 'मसी' २ प्रकाश।
रोशनी, सं स्त्री (फा) प्रकाश, आलोक २ दीप ३ दीपमालिका ४ ज्ञानालोक।
रोष, सं पुं (सं) कोप, क्रोध, मन्यु।
रोहिणी, सं स्त्री (सं) धेनु (स्त्री), गौ (स्त्री) २ तडित् (स्त्री), चपला ३ नक्षत्र विशेष ४ बलदेवजननी।
—पति, सं पुं (सं) चन्द्र २ वसुदेव।
रोहित, वि (सं) रक्त, लोहित। सं पुं, रुधिर, रक्त २ रक्त,-वर्ण रंग (३ ४) मृग मीन,-भेद ५ हरिश्चन्द्रपुत्र।
रोहू, सं स्त्री (सं रोहिष) (१-२) मीन मृग,-भेद।
रौंद(ध)ना, क्रि स (सं मर्दन ?) पादाभ्यां मृद् (क्र् प से)-क्षुद् (रु प अ)।
रौ, सं स्त्री (फा) धारा, प्रवाह, मदांक, स्रोतस् (न)।
रौगन, सं पुं (फा) दे 'रोगन'।
रौज़ा, सं पुं (अ) समाधि, चैत्य २ उद्यानम्।
रौद्र, वि (सं) रुद्र,-विषयक-संबंधिन् २ भीम, भीषण ३ चंड, संरब्ध, कोपान्वित। सं पुं (सं) रुद्रोपासक २ कोप ३ रसभेद (काव्य) ४ यम।
रौनक, सं स्त्री (अ) कांति -दीप्ति -द्युति (स्त्री) २ श्री (स्त्री), शोभा, छटा ३ जन-भीड़-समुदाय।
रौप्य, सं पुं (सं न) रूप्य, रजतम्। वि (सं) राजत, रजतमय, रजतोपम।
रौरव, वि (सं) भीम, घोर २ धूर्त, कापटिक ३ स्वर्गसंबंधिन्। सं पुं (सं) नरकविशेष।
रौला, सं पुं, दे 'रोला'।
रौशन, वि, दे 'रोशन'।

ल

ल, देवनागरीवर्णमालाया अष्टाविंशो व्यंजनवर्ण, लकार।
लंक, सं स्त्री (सं लंका, दे)।
—नाथ-नायक पति, सं पुं (सं) रावण, दशानन।
लंका, सं स्त्री (सं) रक्षःपुरी, रावणराजधानी २ भारतदक्षिणवर्तिद्वीपविशेष।
—पति, सं पुं (सं) दे 'रावण'।
लंग¹, सं स्त्री, दे 'लांग'।
लंग², सं पुं (सं) दे 'लँगड़ापन'।
लँगड़ा, वि (सं लंग >) पंगु (-गू स्त्री), खञ्ज, श्रोण, खोड-र-ल, विचलगति २ एकपादहीन (मेज आदि)। सं पुं, उत्तमाम्रभेद।
लँगड़ाना, क्रि अ (हि लंगड़ा) खञ्ज्-खोर-खोड्-लङ्ग् (भ्वा प से), सलंगं चल् (भ्वा प से)। सं पुं, खञ्जन, खोडन-रण लन, लगनं, लंग विकल,-गति (स्त्री)।
लँगड़ापन, सं पुं (हि लंगड़ा) खञ्जता, पंगुता, खोड(रल)ता, लंग, विकलगति (स्त्री)।
लंगर, सं पुं (फा) लांगल, पोतस्तंभन २ महानस, पाकशाला ३ अनाथ-दरिद्र, भोजन ४ 'लंगोट' ५ लोहमयीस्थूल शृंखला ६ लंबक, लोलक ७ दुष्टधेनूनां गललगुड। वि, भारवत्, गुरु २ खल, दुष्ट।
—खाना, सं पुं (फा) क्षेत्र, अनाथभोजन शाला।
—गाह, सं पुं (फा) नौकाश्रय, नौकाश्रय।

—करना, मु , कुत्सित चेष्ट (भ्वा आ से), कुचेष्टां कृ ।

लगूर, म पु (स लाङ्गूलिन्) कपि , मर्कट , वानर २ कपि-वानर, पुच्छ, लाङ्गु(गू)ल ३ श्वेतलोमा कृष्णमुखो वानरभेद ।

—फल, स पु (हिं + स) नारिकेल , लांगलिन् ।

लगूल, स पु (स न) लाङ्गूल, पुच्छं, दे 'पुच्छ' ।

लँगोटा, स पु (स लिंग + हिं ओट) पुंसी धटी, कौपीन लिंगावरणम् ।

—बंद, वि , ब्रह्मचारिन्, ऊर्ध्वरेतस् ।

लँगोटिया यार, स पु (हिं फ़ा) सह पांशु क्रीडित् शैशव-बाल्य-मित्र सखि (पु) ।

—मे मस्त, मु , दारिद्र्येऽपि प्रसन्न, अकिंचन त्वेऽपि सन्तुष्ट ।

लँगोटी, स स्त्री (हिं लँगोट) दे 'कछनी' २ लघु पुटी-कौपीन चर्पिका ।

लंघन, स पु (स न) उपवास , उपोषण मित अनाहार, अनशन २ दे 'लाँघना' स पु प्लवन ३ अति-क्रमण-क्रम नियम भंग-उल्ल घन ४ घोटकानां अनिश्चितगति (स्त्री) ।

लंघना, क्रि स (स लघनं) दे 'लाँघना' ।

लंच, स पु (अ) मध्याह्न-माध्यन्दिन, भोजनम् ।

लंठ, वि (हिं लट्ठ) जड, मूर्ख २ धृष्ट ।

लंडूरा, वि (देश) अलाङ्गु(गू)ल, छिन्नपुच्छ, पुच्छहीन (खगादि) २ परित्यक्त, निराश्रय ।

लंप, स पु (अ लैंप) दे 'लालटेन' ।

लंपट, वि (सं) लिप्सु, अभिक, कामिन्, कामुक, विषय-काम,-आसक्त, रतेच्छु, स्मरार्त, व्यभिचारिन्, दुराचारिन् ।

लंपटता, सं स्त्री (सं , व्यभिचारी , विषया सक्ति (स्त्री), कामुकता, अभिकता, लांपट्यं, दुराचार ।

लंब, स पु (सं) लम्ब (= अम्बुद) । वि (स) दे 'लंबा' ।

—कर्ण, स पु (स) अज २ गज ३ खर ४ शश ५ राक्षस ६ श्येन । वि (सं) दीर्घश्रवण ।

—ग्रीव, स पु (स) उष्ट्र , क्रमेलक ।

लंबतड़ंग, वि (स लंब + ताड़ + अंग) तन्तुल, अत्युच्च, अत्युच्छ्रित ।

लंबा, वि (सं लंब) दीर्घ, दीर्घ आकार परि माण, आयत, आयामवत् २ उच्च, प्रांशु, तुंग, उच्छ्रित ३ विशाल, महत्, बहु, अधिक ।

—करना, क्रि स , दीर्घी-लंबी-आयती विततीकृ आयम् (भ्वा उ अ), विस्तृ प्रस् (प्रे) प्र-वि-तन् (त उ से) । मु , प्रस्था (प्रे) २ भूमौ अवपत् (प्रे) ।

—चौड़ा, वि , विशाल, विपुल, महत्, बृहत्, लंबोर, आयतविस्तृत ।

—होना, क्रि अ , दीर्घीभू , विस्तृ प्रतन आयम् (कर्म) । मु , प्रस्था (भ्वा आ अ), प्रया (अ प अ) ।

लंबाई, सं स्त्री (हिं लंबा) दीर्घता-त्व, दैर्घ्यं, द्राघिमन् (पु) आयाम , आय मन, आयति (स्त्री) लंबता, आनाह २ उच्चता ।

—चौड़ाई, स स्त्री , आनाहपरि(री)णाहौ, दीर्घत्वपृथुत्वे आयामविस्तारौ (सब द्वि) २ मान, प्र परि,-माणम् ।

लंबान, स स्त्री (हिं लंबा) दे 'लंबाई' ।

लंबी, वि स्त्री (हिं लंबा) दीर्घा, आयता, आयामवती ।

—तानना, मु , निश्चिन्त नी (अ प से) ।

—सांस भरना, मु , दीर्घं निःश्वस् (अ प से) ।

लंबोतरा, वि (हिं लंबा) दीर्घचतुरस्र अंड,-आकार-आकृति ।

लंबोदर, वि (स) तुंदिक भक्षक । स पु (स) गणेश २ औदरिक , घस्मर ।

लकड़बग्घा, सं पु (हिं लकड़ + बाघ) ईहा मृग , तरक्षुव्याघ्र ।

लकड़फोड़, स पु (हिं लकड़ + फोड़ना) दार्वाघाट , काष्ठकूट ।

लकड़हारा, स पु (हिं लकड़ + हारा) काष्ठिक , काष्ठच्छिद, तरक्षुहार ।

लकड़ा, स पु (सं लकुट) लगुड २ -ल, स्थूल-बृहत्,-काष्ठदारु (न) ।

लकड़ी, सं स्त्री (हिं लकड़ा) काष्ठ, दारु (न) २ इंधनं, एध , दंड , यष्टि (स्त्री), वेत्र ३ दे 'गतका' ।

—देना, मु , अन्त्येष्टि कृ, शवं दह् (भ्वा प अ) ।

लकब, सं पु (अ) उपाधि , उपनामन् (न) ।

लकलक, सं पु (अ) लम्बग्रीवा जलखगभेद , *** ।

लक्ना, मं पु (अ) आदनम्।
लकीर, स स्त्री (स लेखा) रेखा-सा, दड का रंलिपि (स्त्री) २ पंक्ति-श्रेणि आलि (स्त्री)।
—का फकीर, मु, विवेकशून्य, अंध,-अनुगामिन्-अनुयायिन् अनुवर्तिन्, परंपरानुसारिन्।
—पर चलना, } मु, अंधवत् अनुगम् (भ्वा
—पोटना, } प अ)-अनुया(अ प अ)।
लकुट, म पु (स) लगुड, यष्टि (स्त्री), दड।
लक्कड़, स पुं, दे 'लक्कड़'।
लक्का, मं पुं (अ) व्यजनपुच्छ पारावत, कपोतभेद।
लक्ख, वि तथा स पु (स) दे लाख'।
लक्षक, वि (म) प्रकटयितृ, प्रकाशक। म प (म) लक्ष्यार्थप्रकाशक शब्द। (म न) दे 'लाख'।
लक्षण, स पु (स न) अंक, चिह्न, लिंग, लांछन, व्यंजन, अभिज्ञानम्। २ परिभाषा, परिच्छेद, निर्देश ३ विशिष्टलिंग, विशेष ४ चरित्र, आचार।
लक्षणा, सं स्त्री (स) शब्दशक्तिभेद, शब्दसंबंध (मा) २ सारसी ३ हंसी।
लक्षित, वि (स) निर्दिष्ट, ज्ञापित २ दृष्ट, वीक्षित ३ अनुमित, तर्कित ४ चिह्नित, अंकित।
लक्ष्मण, म पु (सं) रामानुज, सौमित्रि २ दुर्योधनपुत्रविशेष ३ सारस।
लक्ष्मी, सं स्त्री (स) श्री, कमला, पद्मा, पद्मालया, हरि,प्रिया-वल्लभा, इंदिरा, मा, रमा, क्षीराब्धितनया, भार्गवी, लोकमातृ (स्त्री) २ धन, सम्पद् (स्त्री) ३ छवि (स्त्री), शोभा ४ दुर्गा ५ सीता ६ वीरनारी ७ गृहस्वामिनी।
—नारायण, ■ पु (स) लक्ष्मीजनार्दन शालग्रामभेद।
—पति, स पुं (सं) विष्णु २ श्रीकृष्ण ३ नृप।
लक्ष्मीश, स पु (स) विष्णु २ आम्रवृक्ष ३ धनाढ्य।
लक्ष्य, म पुं (सं न) शरव्य, लक्ष, वेध्य, वेध, प्रतिकाय २ निंदा-आक्षेप-उपालभ, विषय ३ आशय, उद्देश, अभि,इष्ट, मनोरथ, इप्सित ४ लक्ष्यार्थ। वि, दर्शनीय, अवलोकनीय।
—वेधी, म पु (सं धिन्) वेध्यवेधक।
लखपती, म पु (स लक्षपति) लक्ष, इश्वर,-अधीश २ धनिक धनाढ्य।
लखेरा, म पु (हिं लाख) लाक्षा-जतु,-कार' २ हिंदूपजातिभेद ३ कुंकुभ,-लेपक -लेपिन्।
लग, क्रि वि (स लग्>) दे, 'तक', २ समीप पे। अव्य ,सह, सार्द्धं २ दे 'लिए'।
—भग, क्रि वि प्राय, प्रायश, प्रायेण,-प्राय, -कल्प, उप ,आसन्न-।
लगन' म स्त्री (हिं लगना) आलग, प्रीति (स्त्री), आ,प्र सक्ति (स्त्री), अभिनिवेश', दे 'धुन' २ प्रेमन् (पु न), अनुराग, स्नेह ३ दे 'लगना' म पु।
लगन², म पु (स लग्न) राशीनामुदय (ज्यो) २ (विवाहस्य) शुभमुहूर्त -लग्नम्।
—कुण्ली म स्त्री (सं लग्नकुडली) जन्मकुंडली।
—लगाना, क्रि अ, अनुरज् (कर्म), स्निह (दि प मे)।
लगना, क्रि अ (स लगन) स, युज् (कर्म), लग (भ्वा प स), सहन्-मधा (कम), संश्लिष (दि प अ) संपृच् मस्ज (कम) २ आरोप्-मूल् (कर्म ३ निवेश्-स्थाप् (कम) ४ आहन्-ताड प्रह-व्यध् (कम) ५ स्पृश-समालभ् परामृश (कर्म) ६ विन्यस-व्यवस्थाप्-व्यूह् (कर्म) ७ दृश-लभ् प्रती (कर्म), प्रति ,भा (अ प अ) ८ संबन्ध् (कर्म), सम्बन्ध शातिल वृत् (भ्वा आ से) ९ स्वादं-रस धा १० अनुरज (कर्म), स्निह् (दि प मे) ११ कर शुल्क नियोज् (कर्म) १२ मूल्य अपेक्ष (भ्वा आ से), मूल्यकेन लभ (कम) १३ व्याप् (तु आ अ), मग्न-व्यापृत (वि) वृत् १४ पण् (कर्म) १५ पूतीभू, पूय (दि प से), पूय (भ्वा आ से)। म प तथा भाव, लगन, स, योग, सधान, म श्लेष श्लेषण, सपर्क, संसृष्टि (स्त्री), आरोपण, मूलन, निवेश, स्थापन, आघात, प्रहार, स्पर्श, समालम्भ, विन्याम, व्यूह, व्यवस्थिति, प्रतीति (स्त्री), भान, व्यापृति आमक्ति (स्त्री) १६ पूतीभाव, पूयन इ।

लगा हुआ, वि , स , युक्त, लीन लग्न सहन, संपृक्त, संसृष्ट, आरोपित निवेशित स्पृष्ट, विन्यस्त, अनुरक्त, व्यापृत मग्न इ ।

लगवाना, क्रि प्रे , व 'लगाना' के प्रे रूप ।

लगातार, क्रि वि (हिं लगना+तार) सतत, अविच्छिन्न, दे 'निरंतर' ।

लगान, स पु (हिं लगाना) भू भूमि,-कर , शस्यशुल्क, राजस्वम् ।

लगाना, क्रि स , व 'लगना' के स रूप ।

लगाम, स स्त्री (फ़ा) कविक-का, खलीन नं, प वि(बी)य, कवी, पचाणी २ वल्गा, रश्मि , अवक्षेपणी, कुशा ।

—चढ़ाना या देना, मु , संयम्(भ्वा प अ), निग्रह् (क्र प से), वशीकृ, निरुध् (प्रे) ।

लगालगी, सं स्त्री (हिं लगाना) अनुराग , प्रेमन् (पु न) २ संबंध , संपर्क , संसर्ग , संगति (स्त्री) ।

लगाव, स पु } (हिं लगाना) दे 'लगालगी' १ २ ।
लगावट स स्त्री }

लगुड-र-ल, स पु (स) दंड यष्टि (स्त्री) २ लोहमयोऽस्त्रभेद ।

लग्गा, स पु (सं लग्न>) लग्ग,-वेणु -दंड २ नौदंड ३ आकर्षणी ।

लग्गी, सं स्त्री (हिं लग्गा) भीनदंड २ ४ दे 'लग्गा' १ ३ ।

लग्न[1], स (पु स न) ⁼ 'लगन[2]' (१ २) ।

लग्न[2], वि (स) संयुक्त, संश्लिष्ट, संलग्नित, संबद्ध २ आसक्त, मग्न, व्यापृत, पर, परायण, निष्ठ ३ लज्जित ।

लघु, वि (सं) अल्प ईषद्, भार, ३ शुभ, नाश २ अणु, महत्त्व-गृहस्थ, शल्य, क्षुद्र, तनु अल्प, आकार-आकृति-काय ३ निस्सार, निस्सार ४ अल्प, स्तोक (मात्रा) ५. अधम, नीच ६ दुर्बल, निर्बल ६ कनीयस , यवीयस ।

—चेता, वि (सं-तस) तुच्छ, क्षुद्रमति, क्षुद्राशय ।

—शंका, सं स्त्री (सं) मूत्रोत्सर्ग , मेहनम् ।

लघुता, स स्त्री (स) लघुत्वं, लाघवं, लघिमन् (पु), अल्पभारवत्त्वं २ अणुता, तनुता, क्षुद्रता ३ अधमता ४ कनीयस्त्व ५ अल्पता ।

लचक, स स्त्री (हिं लचकना) स्थितिस्थापकता-त्वं, नम्यता, कुंचनं वता २ दे 'लचकना' सं पु ।

—दार, वि (हिं +फ़ा) नम्य कुचनीय, नमन कुचन शील स्थितिस्थापक, प्रकृतिप्रापक ।

लचकना, क्रि अ (हिं लच अनु) अव, नम् (भ्वा प अ), वक्रीभू । स पु तथा भाव, अव नमन नति नाम , वक्रीभाव ।

लचकाना, क्रि स , व 'लचकना' के प्रे रूप ।

लचकीला, } वि (हिं लचक) दे 'लचकदार' ।
लचलचा, }

लचना, क्रि अ , दे 'लचकना' ।

लचाना, क्रि स व 'लचकना' के प्रे रूप ।

लचीला, वि , दे 'लचकदार' ।

लच्छा, स पु (स लवगुच्छ >) सूत्रस्तबक, गुणगुच्छ , तंतुपची २ सूत्राकारा , पट्टिका कारा वा तनुदीर्घखंडा ३ सूक्ष्मतंतुरूप पाणिपादभूषणभेद ४ मिष्टान्नभेद ।

लच्छेदार वि (हिं +फ़ा) गुच्छ-सूत्र पट्टिका, आकार २ श्रुतिमधुर, श्रुश्राव्य, सुखश्रव ।

लजाना, क्रि अ , दे 'लज्जित होना' ।

लजालू, स पु , दे 'लाजवती' ।

लज़ीज़, वि (अ) सुस्वादु, सुरस, स्वादिष्ट (भक्ष्य) ।

लजीला, वि (हिं लाज) दे 'लज्जाशील' ।

लज्जत, स स्त्री (अ) आ स्वाद , रस ।

—दार, वि (अ +फ़ा) दे 'लज़ीज़' ।

लज्जा, स स्त्री [सं व्रीड-डा ह्री (स्त्री)] त्रपा, मदर्भ, शालीनता, लज्जा २ मान , प्रतिष्ठा ।

—कर, वि (स) त्रपा-लज्जा प्रद-जनक आवह, गर्हित ।

—शील, वि (सं) ह्रीमत् शालीन, लज्जालु, सलज्ज, विनीत, लज्जावत् लज्जान्वित ।

—हीन, वि (सं) निर्लज्ज, निर्व्रीड, धृष्ट, निस्त्रप, अत्रप, लज्जा त्रपा, शून्य ।

लज्जालु, वि (सं) दे 'लाजवती' २ दे. 'लज्जाशील' ।

लज्जित, वि (सं) ह्रीण, ह्रीत, व्रीडित, त्रपित, त्रपा-लज्जा,-अन्वित ।

—करना, क्रि स , लज्ज् त्रप् व्रीड् ह्री (प्रे) ।

—होना, क्रि अ , लज्ज् (तु आ से), त्रप् (भ्वा आ से), व्रीड (दि प से), ह्री (जु प अ) ।

लट,[1] सं स्त्री (सं लट्वा) अलक , चूर्णकुंतल ,

कुरल २ केशपाश, कचपक्ष ३ नग, सद्य, सद्यिन्स्र्केश्रा ।

—धारी, म प, नटिन, जटिल (भिनु) ।

लट,² म स्त्री (हिं लपट) ज्वाला, अग्निशिखा।

लटक, स स्त्री (हिं लटकना) दे लटकना स पु । २ कुचलनीयता, नम्यता ३ आवेश, सवेग ४ हाव, विभ्रम, मनोहरी(रा) आभगि (स्त्री)।

—चाल, म स्त्री सविभ्रमगति (स्त्री)।

लटकन, स पु (हिं लटकना) दे लटकना' म पु १ हाव, विभ्रम ३ प्रालम्ब लोलक ४ नासिकाभूषणभेद ५ उष्णीषलम्बिनी रत्नगुच्छ ।

लटकना, क्रि अ (स लटन>) अवलम्ब्य (ना आ मे), उद्बध्य (कम)२ दोला यन (ना धा)। प्रैंग (भ्वा प से) ३ विलम्बं कृ, चिरायतिते (ना था), विलम्ब (भ्वा आ मे)। स पु तथा भाव, अवलम्ब,लम्बन,लम्बन उद्बधन २ प्रैंखण, दोलन ३ विलम्बन, कालक्षेप ।

लटका, स पु (हिं लटक) गति (स्त्री), चार २ हावभावौ, विभ्रम ३ सविलासं भाषण ४ वाग्व्यापार (=तकिया कलाम) ५ संक्षिप्त,योग-उपचार-औषध ६ चमत्कृति ७ माया,यातु,-यष्टि (स्त्री) ८ अभिचारमन्त्र ।

लटकाना, क्रि स, व लटकना' के प्रे रूप।

लटकाव, स पु, दे 'लटकना' स पु ।

लटकीला, वि (हिं लटक) दे 'लचकदार'।

लटपट-टा, वि (हिं लटपटाना) प्रस्खलद् विचलत् (गमन), अस्थिरगतिक २ शिथिल, अपरिष्कृत, अस्तव्यस्त, अवस्रस्त ३ अस्पष्ट, अव्यक्त (शब्द) ४ क्रमहीन, असम्बद्ध ५ खिन्न, श्रान्त, ग्लान, अशक्त ६ उदपेष, गाढघन ७ वलियुत (वस्त्रादि) ।

लटपटाना, क्रि अ (स लट्+पत्) प्रस्खल (भ्वा प से) २ पतत् चल (भ्वा प से) ३ चापल्यतया गम् ४ वेप (भ्वा आ से) ५ अनुरञ्ज (कम)। स पु, प्रस्खलन, दूषितानि (स्त्री), कम्पन, अनुराग ।

लटा, वि (म लट्) लम्पट २ नीच ३ तुच्छ ४ पतित ५ दुष्ट।

लटापटी, मं स्त्री (हिं लटपटाना) दे 'लटपटाना' स पु २ कलह, कलि ।

लटी, मं स्त्री (हिं लटा) १ २ असद् असत्य,वार्ता ३ भिक्षा(क्षु)की ४ वेश्या ५ पक्षीजि (स्त्री)।

लटूरी, म स्त्री (हिं लट) दे 'लट' (१)।

—उतरवाना, चूडाकरणसंस्कार कृ (प्रे)।

लटोरा, स पु (देश) कलिंग, धूम्राट्, खगभेद ।

लट्टू, स पु (म लुठन>) भ्रमरक-क, २ लवक लवमीमकम्।

—होना मु अत्यधिक स्निह् (दि प से), गाढ अनुरञ्ज (कर्म)।

लट्ठ, स पु [सं स्थूल-यष्टि (स्त्री)] स्थूल बृहद्-दृढ-यष्टि लकुट, लगुड ।

—बाज, वि (हि +फा) यष्टियोध चिन, दण्डधर, दांडिक।

—बाजी, म स्त्री (हिं +फा) दंडा.डि (अव्य), यष्टियुद्धम्।

—मार, वि (हिं) दे 'लट्ठबाज' २ कटु, कठोर (वचन)।

—मारना, क्रि स, दण्डेन-यष्ट्या प्रह (भ्वा प अ) । मु, परुष ब्रू (अ उ से)।

पीछे—लिये फिरना, मु., सतत विरुध् (रु उ अ) २ प्रतिकूल आचर् (भ्वा प से)।

लट्ठा², सं पु (हिं लट्ठ) दीर्घकाष्ठ २ धुला, दारु, स्थूणा ३ साढेपञ्चहस्तमितो भूमानदण्ड ।

लट्ठम्—, स पु, दे 'लट्ठबाजी'।

लट्ठा³, स पु (अ लागक्लाथ) श्लंकपट ।

लठ, स पु, दे 'लट्ठ'।

लठालठी, स स्त्री, दे 'लट्ठबाजी'।

लठैत, स पु (हिं लठ) दे 'लट्ठबाज'।

लड़त, स स्त्री (हिं, लड़ना) दे 'लड़ाई'।

लड़, स स्त्री [सं यष्टि (स्त्री) ?] आवली लि (स्त्री), सरल,-माला-हार २ रज्जो घटक-सूक्ष्म,-तन्तु ३ शृंखल-ला-ला ४ श्रेणि पंक्ति (स्त्री)।

लड़कपन, स पु (हिं लड़का) बाल्य, कौमार २ चापल्यं, चाञ्चल्यम्।

लड़कबुद्धि, स स्त्री (हिं +स), बालबुद्धि (स्त्री), अपक्वमति (स्त्री)।

लड़का, स पु (हिं लाड) बालक, कुमार २ पुत्र ।

—वाला, स पु, संतति (स्त्री), सतान २ परिवार, कुटुम्बम् ।
—लड़की, स स्त्री, सतति (स्त्री) ।
लड़केवाला, मु, (विवाहे) वरस्य जनक सरक्षको वा ।
लड़कों का खेल, मु, सुकरकर्मन (न), सुसाध्यकार्यम् ।
लड़की, स स्त्री (हि लड़का) बालिका, कुमारी २ पुत्री ।
—वाला, मु (विवाहे) वध्वा जनक सर क्षको वा।
लड़कौरी, वि स्त्री (हि लड़का) बालोत्सगा, शिशुमती ।
लड़खड़ाना, क्रि अ (स लड्+हि खड़ा) प्रस्खल (भ्वा प से), घूर्ण् (भ्वा आ से) २ गद्‌गदवाचा भाष (भ्वा आ से), सगद्‌गद मृ (अ उ से) स्खल् । स पु, प्रस्खलन, घूर्णन २ सगद्‌गद भाषण, स्खलनम् ।
लड़ना, क्रि अ (स रणन>) विग्रह् (क्र प से) युध (दि आ अ), युद्ध-सग्राम समर कृ २ विवद् (भ्वा आ से) विप्र लप (भ्वा प से), कलहायन्ते (ना धा) ३ दश (भ्वा प अ) ४ सघट (भ्वा आ से), सघट्ट (क्र प से) ५ मल्लयुद्ध कृ, हस्ताहस्ति मुष्टीमुष्टि युध् । स पु तथा भाव, विग्रह, युद्ध, विवाद, विप्रलाप, कलह, दशन, सघट्टन, समद, मल्लयुद्धम् ।
लड़बड़ाना, क्रि अ, दे 'लड़खड़ाना' ।
लड़बावरा, वि (हि लड़का+बावरा) मूर्ख, अज्ञ, बालबुद्धि २ अशिष्ट, ग्रामीण ।
लड़ाई, सं स्त्री (हि लड़ना) सग्राम, दे 'युद्ध' २ मल्ल-बाहु,-युद्ध ३ वाग्युद्ध, कलह ४ वाद, वादप्रतिवाद ५ सघट्ट, समाघात ६ विरोध, वैरम् ।
—करना, क्रि स, दे 'लड़ना' ।
—का मैदान, रणक्षेत्र, युद्धभूमि (स्त्री) ।
—मोल लेना, मु, कामत कलहे प्रवृत् (भ्वा आ से), युध (सक्रत, युयुत्सते) ।
लड़ाका, स पु (हि लड़ना) योध, भट, योद्धृ । वि, कलह-कलि,-प्रिय, युयुत्सु, विवदिन् ।
लड़ाकू, वि (हि लड़ना) क्षामर्मित (-त्री स्त्री), योद्ध (द्री स्त्री) ।
लड़ाना, क्रि स, व 'लड़ना' के प्रे रूप ।
लड़ी, स स्त्री, दे 'लर' ।
लड़ीला, वि, दे 'लाडला' ।
लड्डू, स पु (स लड्डु) लड्डुक, मोदक ।
—खिलाना, मु, निमत्र् (चु आ स) ।
—मिलना, मु, सफल अधिगम् ।
मन के—खाना, मु, मनोराज्यं वितृम्भ् (प्रे) ।
लढ़ा, स पु / लढ़िया, स स्त्री [हि लुढ़(ढक)ना] बलदशकटी ।
लत, स स्त्री (स रति >) कु-,वृत्ति (त्ति)- शील, कदभ्यास, दुर्व्यसन, दुष्प्रवृत्ति (स्त्री), दे 'आदत' (बुरी) ।
लतखोरा, वि (हि लात+फा खोर) पाद प्रहारसह, नयाघातसह, कुकर्मिन् २ नीच, क्षुद्र । स पु, दास, किंकर २ देहली, अव ग्रहणी ३ दे 'पायदान' [लतखोरिन (स्त्री)] ।
लतपत, वि, दे 'लथपथ' ।
लता, स स्त्री (स) वल्ली, व(वे)ल्लि प्र(प्र)- तति (त्ती) (बहुत शाखाओं तथा पत्तों वाली) प्रतानिनी, गुल्मिनी, वीरुध (स्त्री), उलप २ सुन्दरी, तन्वी, रोचना ।
—मडप, स पु (स) लता, भवन कुञ्ज गृह, नि,-कुज ज, कुञ्जः नम् ।
लताड़, स स्त्री, दे 'लथाड़' ।
लताड़ना, क्रि स (हि लात) दे 'रौंदना' ।
लतिका, स स्त्री (सं) लघु वल्ली ततति (त्ती) ।
लतीफा, स पु (अ) दे 'चुटकुला' ।
लत्ता, स पु (सं लक्तक) नक्तक, कर्पट, चीर, पटचर, जीर्णवसन २ वस्त्रखंड ३ वसनम् ।
—कपड़ा, स पु, परिधानं, वस्त्राणि वासांसि (न बहु) ।
लत्ती[1], स स्त्री (हि लात) पादप्रहार, लत्ताघात, खुर, आघात क्षेप ।
लत्ती[2], स स्त्री (हि लत्ता) •पतगपुच्छे व स्वल्पवस्त्रखंड द्रम् ।
लथड़ना, क्रि अ, दे 'लथेड़ना' व कर्म रूप ।
लथपथ, वि (अनु) अति,-क्लिन्न उन्न तिमित आर्द्र २ (पकादिभि) लिप्त दिग्ध मलिन, कलुष ।
लथाड़, स स्त्री (अनु लथपथ) भूमौ पात

यित्वा इतस्ततः कर्षण २ पराजय ३ हानि (स्त्री) ४ अधिक्षेप, निर्भत्सन ना, तर्जनम्।

लथाडना, क्रि स, दे 'लताडना' २ 'लथेडना'।

लथेडना, क्रि स (अनु लथपथ) पकेन मलिनयति (ना धा), कर्दमे कृष् (भ्वा प अ) २ समिश्र् (चु), ससृज् (तु प अ) ३ निर्भर्त्स (चु), अधिक्षिप् (तु प अ) ४ व्यथ् (प्रे), पीड (चु)।

लदना, क्रि अ (स लब्ध>) व 'लादना' के कर्म के रूप २ मृ (तु आ अ)।

लदवाना, } क्रि प्रे, व 'लादना' के प्रे रूप।
लदाना,

लदा फँदा, वि (हिं लदना+फँदना) भारा क्रान्त, भारग्रस्त, पर्याहारपीडित।

लदाव, स पु (हिं लादना) दे 'लादना' स पु १ भार, भर, पर्याहार २ पटला दिषु निराधार इष्टकाचय।

लदुवा, लद्दू, वि (हिं लादना) धुरंधर, धुरीण, धौरेय, धुर्य, पृष्ठ्य, रथुरिन् (घोडा, बैल आदि)।

लद्धड, वि (हिं लदना) अलस, मंथर।

—पन, स पु, आलस्य, मन्थरत्वम्।

लप¹, स स्त्री (देश) अंजलि, करपुट २ अञ्जलि, मित-मान वस्तु (न)।

लप², स स्त्री (अनु) वेत्र-यष्टि, शब्द, लपलपध्वनि २ खड्गादीनां तरलप्रभा।

लपक, स स्त्री (अनु) ज्वाला, अग्निशिखा २ क्षणिक-अस्थिर, दीप्ति (स्त्री) प्रभा ३ वेग, जव, त्वरा, लाघव ४ प्लुति (स्त्री), झंपा।

लपकना, क्रि अ (हिं लपक) धाव् (भ्वा प से), द्रु (भ्वा प अ), सत्वर गम् २ स्फुर् (तु प से), तरलप्रभया प्रकाश् (भ्वा आ से) ३ वल्ग् (भ्वा प से), उत्, प्लु (भ्वा प अ) ४ धृ (चु), ग्रह् (क्र् प से)। सं पु, धावन, स्फुरण, उत्, प्लवन, धारणम्।

लपकाना, क्रि स, व 'लपकना' के प्रे रूप।

लपकी, सं स्त्री (हिं लपकना) सरलसीवन भेद।

लपझप, वि (अनु लप+हिं झपटना) चपल, चवल २ क्षिप्र, आशु।

लपट, स स्त्री (हिं लौ+पट) वह्निशिखा, ज्वाला २ तप्तपवन, घर्मानिल ३ सुगन्ध, सुवास, दुर्गंध, पूतिगंध ४ सुगन्धि-दुर्गंधि, पवनतरंग।

लपटना क्रि अ, दे 'लिपटना'।

लपडझपड, स स्त्री (स लपन+अनु) प्र, जल्प पन, निरर्थकशब्दा (बहु)।

लपन, स पु (स न) मुख २ भाषणम्।

लपलप, स पु (अनु) लेहन, लेह। वि, क्षिप्र शीघ्र-कारिन्, आशु। क्रि वि, क्षिप्र, द्रुतं, झगिति (सब अव्य)।

—करना, क्रि स, लिह् (अ उ अ), जिह्वाग्रेण पा (भ्वा प अ)।

—खाना, क्रि स, सत्वर भक्ष् (चु)।

लपलपाना, क्रि स (अनु लपलप) (जिह्वा-खड्गादिक) परिभ्रम् (प्रे)-विधू (स्वा क् उ से)। क्रि अ, खड्गवत् प्रकाश् भास् द्युत् (भ्वा आ से)। स पु तथा भाव, विधुवन, विधूति (स्त्री), विधूनन, परिभ्रा(भ्र)मण, प्रकाशन, भासन, द्योतनम्।

लपलपाहट, स स्त्री (हिं लपलपाना) (खड्गादीनां) द्युति-दीप्ति (स्त्री), प्रभा २ दे 'लपलपाना' स पु।

लपसी, स स्त्री (सं लप्सिका) द्रवप्राय सयाव २ द्रवप्राय भक्ष्यम्।

लपेट, स स्त्री (हिं लपेटना) दे 'लपेटना' स पु व्यावर्त, व्यावृत्ति (स्त्री) बंधन चक्र ३ परिधि, परिणाह, परिवेश, मंडल ४ कष्ट, क्लेश, कृच्छ्र, जाल ५ कु-दुष, प्रभाव ६ वेष्टन, बंधन ७ पुट, भंग, वलि (स्त्री)।

लपेटना, क्रि स (हिं लिपटना) संवेष्ट (प्रे), संपुटीकृ २ भ्रम्-घूर्ण् (प्रे) ३ व्यावृत् (प्रे), पुटीकृ, पुटयति (ना धा) ४ पिण्डी वर्तुली-कृ ५ आच्छद् (चु), परिवेष्ट् (भ्वा आ से, प्रे) ६ संग्रथ् (क्र प से) ७ अन्तर्गण (चु) संश्लिष् (प्रे)। स पु तथा भाव, संवेष्टन, संपुटीकरण, भ्रामण, घूर्णन, व्यावर्तन, पिण्डीकरण, आच्छादन, संग्रथन, संश्लेषणम्।

लपेटवाँ, वि (हिं लपेटना) संपुट, सभंग, वलियुत २ व्यावृत्त, आकुंचित, ३ गूढार्थ, गुप्ताशय, व्यंग्य ४ वक्र।

लप्पड़, स पु , दे 'थप्पड़' ।

लप्पा, स पु (देश) सौवर्ण-राजत,-वतुजाला भरणभेद. ।

लफंगा, स पु (फ़ा -ग) लपट , व्यभिचारिन् २ कुपथग , दुर्वृत्त ।

लफ़टंट, स पु (अ लेफ्टिनेंट) गणाध्यक्ष २ प्रतिपुरुष ।

—गवर्नर, स पु (अ) उपप्रान्ताध्यक्ष , उप भोगपति ।

—जनरल, स पु (अ) अक्षौहिणीप. ।

सेकंड—, स पु (अ) गुल्मप ।

लफ़्ज़, स पु (अ) शब्द , पद २ उक्ति (स्त्री), भाषणम् ।

—बलफ़्ज़, क्रि वि , शब्दशः , यथाशब्द, अक्षरशः ।

लफ़्ज़ी, वि (अ) शाब्दिक ।

—तर्जुमा, स पु (अ) अक्षरशः शब्दश - मूलशब्दानुवर्ति भावोपेक्षक,-अनुवाद ।

—बहस, स स्त्री (अ) भावोपेक्षक शाब्दिक,-वादप्रतिवाद. ।

लफ़्फ़ाज़, वि (अ.) वावदूक, वाचाल, बहुभाषिन्, मुखर ।

लफ़्फ़ाज़ी, स स्त्री (अ) वावदूकता, वाचालता, मुखरता, जल्पकता ।

लब, स पु (फ़ा) अधर , ओष्ठ , दन्तच्छद २ स्यन्दिनी, लाला ३ प्रान्त , मुख, कंठ , धार , कर्ण ।

—रेज़, वि , परि ,पूर्ण, समृत ।

लबड़धोंधों, स स्त्री (अनु) कोलाहल,-कलकल २ अव्यवस्था, संकुल, क्रमाभाव ३ अन्याय , अधर्म , अनीति (स्त्री) ४ वाक्छल, वाग्वचना ।

लबलबा, सं पु (अनु) फ्लोम, पक्वक्रिया (अं पेनक्रियास) । वि , चिक्कण, सलग्नशील ।

—का रस, स पुं , क्लोमरस ।

लबादा, [illegible] पुं (फ़ा) *पिचुकंचुक २. कंचुक ।

लबार, वि (सं लपन>) मिथ्याभाषिन् २ जल्पाक , वृथालापिन् ।

लबालब, क्रि वि (फ़ा) आ,-कंठं मुखं-कर्णम् । वि , आकर्ण, परिपूर्ण ।

लबी, सं स्त्री , दे 'राब' ।

लबेरा, सं पुं (देश) दे 'लसोड़ा' ।

लब्ध, वि (सं) अव प्र,-आप्त, अधिगत, समासादित २. उप, अर्जित । स पु (स न) फल, लब्धि. (गणित) ३ दासभेदः ।

—प्रतिष्ठ, वि (स.) लब्ध,-कीर्ति-नामन्, वि प्र,-ख्यात ।

लब्धि, स स्त्री (स) प्राप्ति (स्त्री), लाभ. २ उत्तर, लब्धफल (गणित) ।

लभ्य, वि (स) प्राप्य, अधिगम्य २ उचित ।

लमछड़, स [illegible] (हिं लबा+छड़) लवयष्टि (स्त्री) २ कुन्त , प्रास ३ दवाग्न्यस्त्रम् । वि , तनुलंब ।

लमटंगा, वि (हिं लंबी+टाग) दीर्घजंघ (-घा, घी स्त्री) २ दे 'लमढींग' ।

लमढींग, स [illegible] (देश) सारस , पुष्कराह्व. ।

लमतड़ंग, वि , दे. 'लंबतड़ंग' ।

लमहा, स पु (अ) क्षण , पल, निमि(मे)ष. ।

लय, स पु (स) एकरूपता, ऐकरूप्यं, एकी सदृशी, भाव , सायुज्यं, मग्नता, लीनता २ एकाग्रता, समाधि , अनन्यमनस्कता ३ अनुराग , प्रेमन् (पुं न) ४ महाप्रलय , कल्पान्त ५ अदर्शन, लोप, तिरोभाव ६ स-श्लेष , संमिश्रण ७ नृत्यगीतवाद्यानां साम्यं (संगीत) ८. मूर्च्छा । स स्त्री , स्वरोद्गम-प्रकार (२ ३) दे 'तर्ज़' तथा 'सम' ।

लरज़ना, क्रि अ (फ़ा. लरज़ा) कप्-वेप् (भ्वा आ से) २ भी (जु प अ), वि-त्रस् (भ्वा दि. प. से.) ।

लरज़ा, सं पु (फ़ा.) कम्प , वेपथु २ भूकंप ३ *कंपज्वर ।

ललक, स स्त्री (सं लल् = चाहना>) उत्कटेच्छा, लालसा, अभिलाषातिशय. ।

ललकना, क्रि अ (हिं. ललक) अत्यन्त स्पृह् (चु , चतुर्थी के साथ), अतीव अभिलष्-लाष् (भ्वा प से.) ।

ललकार, स स्त्री (हि अनु. लल+सं कार:) समर , आह्वानं, युद्धाय आकारणं-णा, रणनि-मन्त्रणं २ आक्रमण,-उत्तेजना प्रेरणा ।

ललकारना, क्रि स (हिं ललकार) आह्वे (भ्वा आ अ), (योद्धुं) आकृ उद्दीप्-उत्तिज्-प्रचुद् (प्रे) । सं पु तथा भाव, दे 'ललकार' ।

ललचना, क्रि. अ (हिं. लालच) दे 'लल-चाना' क्रि. अ ।

ललचाना, क्रि अ (हिं ललचना) (अत्यन्त) लुभ (दि प मे) सह् (चु) क्रम् (भ्वा आ से) अभिलष (भ्वा दि प मे) २ मुह् (दि प मे)। क्रि स, अभिलाषा जन् (प्रे) प्र, लुभ (प्रे) २ मुह (प्रे) वशीकृ।

ललचौहाँ, वि (हिं लालच) लोलुप म गृध्नु अयभिलाषित्, अत्याकाक्षिन्।

ललन, स पु (स) प्रियललित बालकुमार २ राग वल्लभ ३ (नायकसबोधन पद) ललन ! प्रियवर ! ४ विहार, क्रीडा, केलि (स्त्री)।

ललना, स स्त्री (स) कामिनी रामा २ जिह्वा।

लला-ल्ला, स पु (स लल>) दे 'ललन' (१३) २ (बालसबोधनपद) अग ! वत्स ! ललित ! लालितक !

ललाई, स स्त्री (हिं लाल) दे 'लाली'।

ललाट, स पु (स न) अलि(ली)क, गोधि (पु स्त्री) भाल, निटि(टा)ल, दे 'माथा' २ भाग्य, दैवम्।

—पटल, स पु (स न) ललाट-मस्तक, पट्ट-फलकम्।

—रेखा, स स्त्री (स) भाग्यलेख।

ललाटिका, स स्त्री (स) पत्रपाश्या, ललाटा भरणभेद २ ललाट, गरी चर्चा, भालस्थ चंदन, तिलक कम्।

ललाम, वि (स) रम्य, सुदर २ रक्त, लोहित ३ श्रेष्ठ, प्रधान। स पु (स न) आ, भूषण २ रत्न ३ चिह्न ४ ध्वज ५ शृंग ६ अश्व ७-८ अश्व, भूषण, भाल चिह्न ९ प्रभाव १० केस(श)र र, दे 'अयाल'।

ललित, वि (स) सुदर, मनोहर, रम्य, २ ईप्सित, अभीष्ट ३ लोल, चचल, कम्र।

—कला, स स्त्री (स) कोमल-उत्कृष्ट-कला शिल्प (काव्य, सगीत, चित्रकारी इ)।

—लोचन, वि (स) सु-नेत्र-नयन।

ललिता, स स्त्री (स) रमणी, सुन्दरी २ राधिकाया सखीविशेष।

ललिताई, स स्त्री (स ललित>) सौदर्य, रम्यता।

लली, ल्ली, स स्त्री (हिं लला-ल्ला) प्रिय पुत्री, ललितनुजा २ (नायिकासबोधनपद) प्रिये ! कन्ये ! वत्से ! ३ (बालिकासबोधनपद) ललिते ! वत्से ! कन्यके।

ललौंहाँ, वि (हिं लाल) आ ईषद्-रक्त लोहित।

लल्लो स स्त्री (स ललना) जिह्वा-रसना।

—चप्पो, } स स्त्री चाटु (पुं न),
—पत्तो, } चाटूक्ति (स्त्री), उपच्छदनम्।

—पत्तो करना, मु, मिथ्या प्रशम् (भ्वा प मे) उपछद् (चु), चाटुभि तुष् (प्रे)।

लवग, स पु (स न) दे 'लौंग'।

—लता, स स्त्री (स) श्रीपुष्पलता (२ राधा सखीविशेष।

लव स पु (स) परम अणु, लेश, कण, कणिक, क्षुद्रखड, विंदु २ काष्ठाद्वय, षट् त्रिंशन्निमेषमित काल ३ श्रीरामपुत्र, कुशभ्रातृ।

—लेश, स पु (स) २१ आयल्प, मात्रा समय।

लवण, स पु (स न) दे 'नमक'। स पु (१३) राक्षस-रस-समुद्र, विशेष। वि, लवणित, लावणिक, दे 'नमकीन' २ सुन्दर।

—भास्कर, स पु (स) पाचकचूर्णभेद (वैद्यक)।

लवणाकर, स पु (स) लवणख(खा)नि (स्त्री) २ सागर।

लवनि नी, स स्त्री (स लवन) शस्य-लाव मवय।

लवलीन, वि (स लय +लीन>) व्यग्र, नि, मग्न, पर-परायण, निरत, लीन, आसक्त, व्यापृत।

लवा, स पु (स लव) लाव (व), लाव (व)क, लघुजगल।

लश्कर, स पु (फा) सेना, सैन्य, अनीक नी २ जन-ओघ समर्द ३ शिबि(वि)र, निवेश ४ नाविका-नौवहा (बहु)।

लश्करी, वि (फा लश्कर) सैनिक, सेना सबधिन् २ यौन-य, होड। स पु, सैनिक २ नाविक।

—भाषा, स स्त्री, मिश्रित सैनिक, भाषा २ दे 'उर्दू'।

लशुन, स पु (स न) दे 'लहसुन'।

लस, स पु (स लस्>) सलग्नशीलता,

—लुहान होना, मु , लोहितक्लिन्न रुधिर स्नात रक्तरंजित शोणशोण (वि) भू ।
लाग, म स्त्री (स लाङ्गल>) कच्छ कच्छ, कच्छ(च्छा)टिका, कच्छाटिका कक्षा दे 'काँछ' ।
—खुलना, मु , अत्यर्थं भी (जु प अ), साहस धैर्यं मुच् (तु प अ) ।
लांगल, स पु (स न) दे 'हल' ।
लांगली, स पु (सं लिन्) बलराम २ सर्प ।
लांगूल, स पु (स न) पुच्छ २ शिश्नम् ।
लांगूली, स पु (स -लिन्) कपि बानर ।
लाँघना, क्रि स (स लंघन) लंघ (चु), अतिक्रम् (भ्वा दि प से), तॄ (भ्वा प से) २ उत्प्लुत्य लंघ् (भ्वा आ से, चु) । स पु तथा भाव, अतिक्रमण, लंघन, तरण, उत्प्लुत्य लंघनम् ।
लांछन, स पु (स न) कलंक , दोष , दूषण, अपकीर्तिचिह्न २ चिह्न, लक्ष्म लक्ष्मन् (न), लिंगम् ।
—लगाना, मु (प्रे) कलंकयति, यशो मलिनयति (दोनों ना धा) ।
लाइन, स स्त्री (अ) पंक्ति (स्त्री) २ रेखा ३ लोहमार्ग , ४ पत्तिसेना ५ दे 'बारक' ।
—डोरी, स स्त्री , दे 'पेशाकोश' ।
ला, अ (अ) विना, न, ऋते (सब अव्य) ।
—इलाज, वि (अ) असाध्य, निरुपाय, अचिकित्स्य, अप्रतिकार्य ।
—इल्म, वि (अ) निरक्षर, शिक्षाशून्य, विद्याविहीन, अज्ञ ।
लाइट, स स्त्री (अं) प्रकाश , आलोक ।
—हाउस, स पु (अं) प्रकाश ,स्तम्भ गृहम्, आकाशदीप दीपस्तम्भ ।
लाकड़ा काकड़ा, स पु दे 'माना(मेरी)' ।
लाक्षणिक, वि (सं) लक्षणागम्य (अर्थ), लाक्षण २ लक्षणज्ञ लक्षण्य ३ गौण अप्रधान ४ लक्षणसंबंधिन् ।
लाक्षा, स स्त्री (स) कोशा, जतुका, दे 'लाख' ।
—गृह, स [illegible] (स न) पाण्डवदाहार्थं दुर्योधननिर्मापितो जतुगृहविशेष ।
—रस, सं पु (स) दे 'महावर' ।
लाख¹, स स्त्री (स लाक्षा) लाक्षा, याव , यावक क, जतुका, जतु (न) रक्ता, अलक्त (क्त), द्रुम, आमय व्याधि , मुद्रिणी, नतुका २ रक्तवर्ण कृमिभेद ।
—चपड़ा, स स्त्री , पत्रकलाक्षा ।
लाख², वि (स लक्ष) नियुत, अयुतदशक, सहस्रशतक २ असंख्य, अगण्य । [illegible] पु (स न) उक्ता संख्या, तदंकाश्च (=१०००००) । क्रि वि , असकृत्, अनेकवार, बहु, अधिकम् ।
—टके की बात, [illegible] , अत्युपयोगिवार्ता ।
—से खाक होना, मु , वैभवात् दारिद्र्य उप इ (अ प अ), विसत्त परिक्षि (कर्म) ।
लाखा, स पु (हिं लाख) ओष्ठरंजको लाक्षिकरंग ।
लाखी, स स्त्री (हिं लाख) लाक्षिकरंग । वि , लाक्षिक लाक्षा, निर्मित रंजित-वर्ण संबंधिन् ।
लाग, [illegible] स्त्री , हिं लगना) संपर्क , संसर्ग , संबंध २ प्रसंग (पु न), अनुराग २ अभिनिवेश , आसक्ति (स्त्री) ४ युक्ति (स्त्री), उपाय ५ इन्द्रजाल माया ६ प्रतियोगिता स्पर्द्धा ७ वैर, शत्रुता ८ अभिचार ९ भूमिकर १० धातुभस्मन् (न), दे 'भस्म' ११, कम्पन ।
—डाँट, स स्त्री (हिं) वैर, द्वेष २ प्रतियोगिता स्पर्द्धा ।
—लपेट, स स्त्री (हिं) पक्षपात , पक्षपातिता, समदृष्ट्यभाव (स्त्री) २ मनोवृत्ति-संवृति (स्त्री) ।
लागत, स स्त्री (हिं लगना) व्यय , विनियोग , विसर्जन २ मूल्य, अर्घ , अर्हा ।
—आना या बठना, क्रि अ , मूल्येन क्री-मह (कर्म) २ व्ययेन संपद्-साध् (कर्म) ।
लाघव, स पु (स न) दे 'लघुत' (१ ५) । ६ क्षिप्रता, द्रुतता, दक्षता ७ क्लीवता ८ आरोग्यम् ।
लाचार, वि (फा) विवश, निरुपाय, अगतिक । क्रि वि , विवश-निरुपाय-अगतिक -तया ।
लाचारी, स स्त्री (फा) विवशता, अगतिकता ।
लाची, स स्त्री , दे 'इलायची' ।
लाज, स स्त्री (स लज्जा) दे 'लज्जा' (१ २) ।
—आना या करना, क्रि अ , दे 'लज्जित होना' ।
—रखना, मु , प्रतिष्ठा रक्ष (भ्वा प से), अपमानात् त्रै (भ्वा आ अ) ।

लाजवत, वि (स लज्जावत्) दे 'लज्जाशील'।

लाजवती, वि (हिं लाजवत) लज्जावती, शामनी। स स्त्री, लज्जालु (पु स्त्री), सकोचिनी, स्पर्शलज्जा, महाभीता, महौषधि (स्त्री) रक्त पादी-मूला।

लाजवर्द, सं पु (फा, मि स राजावर्त) नृपावर्त आवर्तमणि २ (विदेशीय) नीलम्।

लाजवर्दी, वि (फा) नीलवर्ण, राजावर्त नील।

लाजवाब, वि (अ) निरुत्तर, मूक़ी, कृत भूत वादे पराजित ३ अनुपम, अतुल।

लाजा, स स्त्री [स लाजा (पु बहु)] अक्षता (पु बहु) २ तंदुल।

लाज़िम, वि (अ) आवश्यक अवश्यकर्तव्य २ उचित युक्त।

लाज़िमी वि (अ लाज़िम) दे 'लाज़िम'।

लाट[1], स पु (अ लॉर्ड) शासक, शासितृ २ भोगपति, प्रान्ताध्यक्ष।

लाट[2], स स्त्री (हि लट्ठा) स्तम्भ, मेठि थि, यूप।

लाट, स पु (सं बहु) प्रान्तविशेष (गुजरात, अहमदाबाद के आसपास) २ लाट प्रान्तवासिन (बहु) ३ (लाट) अनुप्रास भेद (सा) ४ जीर्णवसनभूषणादिक ५ वसनानि-वासांसि (न बहु) ५ पठित।

लाटरी, सं स्त्री (अ) गुटिकापात, पाटक, कल्पाटी।

लाटानुप्रास, स पु (स) शब्दालंकारभेद (सा)।

लाटिका, लाटी, स स्त्री (स) रीतिभेद (सा) २ प्राकृतभाषाविशेष।

लाठ, स पु, दे 'लाट' (१-२)।

लाठी, स स्त्री (स लगुडयष्टी>) यष्टिका, यष्टि (स्त्री), लगुड, लकुट, दंड, लगुन २ वेत्र, वेत्रयष्टि (स्त्री)।

—चलना, मु, दंडादंडि जन (दि आ मे)।

—टेक कर चलना, मु, यष्टिमवलम्ब्य दण्डाश्रयेण चल् (भ्वा प से)।

—बाँधना, मु, यष्टि धृ (चु)।

लाड, स पु (स लड) लालनं, उप लालनं, २ परिष्वंग आलिंगनं, परिरंभण ३ चुम्बनं, निंस ४ क्रीडाकरणम् इ।

—करना, क्रि स, लल्—लाड (चु), चुम् आलिंग (भ्वा प से), क्रीडीकृ इ।

लाडला, वि (स लाड>) उप, लालि(लि)त चुंबित, आलिंगित, प्रेम-लालित, आदरपात्र मानित, प्रिय, अभिमत।

अत्यधिक—, वि, दुर्ललित, अतिलालित लालनदूषित।

लाडा, स पु (हिं लाड) दे 'वर'।

लाडी, स स्त्री (हिं लाडा) दे 'वधू'।

लात, स स्त्री (देश) 'तथा आघात', पसर २ पाद, चरण स, पद ३ तथा पाद, नहार आघात ४ गुरुपाद्ग क्षेप आघात।

—चलाना, मु, पादेन तथया प्रहृ (भ्वा प अ) ताड (चु)।

—जाना, मु, (गौ भैंस आदि) दुग्ध न दद् (भ्वा आ से)।

—मारना, मु, तुच्छ मत्वा त्यज (भ्वा प अ)।

लाद, स स्त्री (हिं लादना) दे 'लादना' स पु २ उदर ३ अंत्रम्।

लादना, क्रि स (हिं लदना) भार न्यस (दि प से), निधा (जु उ अ) आरुह् (प्रे) निविश (प्रे), भाराक्रान्त कृ, भारेण पूर् (चु) ३ राशी क समा चि (स्वा उ अ)। स पु भ(भा)र,-न्यास निवेशनं-आधानं आरोपणम्।

लादनेवाला, स पु भ(भा)र,-आरोपक -निवेशक।

लादवा, वि (अ) दे 'लाइलाज'।

लादा हुआ, वि, भार, ग्रस्त आक्रान्त, आरोपित निवेशित-स, भार।

लादी, स्त्री (हिं लादना) भार, पोटलिका।

लादू, वि (हिं लादना) दे 'लद्दू'।

लानत, स स्त्री (अ लअनत) धिक्कार, न्यक्कार, निर्,भर्त्सन-ना, अधिक्षेप गर्हा।

—मलामत करना, क्रि स, निर्भर्त्स् (चु आ से) अधिक्षिप् (तु प अ)।

लानती, स स्त्री (अ लानत>) निंद्य, गर्ह्य, निर्भर्त्सनीय, दुष्ट, खल।

लाना, क्रि स (हिं लेना+आना) आनी (भ्वा प अ), उप आ,हृ (भ्वा प अ), आवह् (भ्वा प अ) २ उपस्था (प्रे), पुरो निधा (जु उ अ), उपयम (भ्वा प अ) ३ उपहृ (भ्वा प अ), समृ,ऋ (प्रे), उपायनं दा ४ उत्पद् नम् (प्रे)। सं पुं,

आनयन, आ उपा हरणं, आवहन, उपस्थापन, उत्पादनं इ ।

लाने योग्य, वि, आनेय उपाहार्य, उपस्थाप्य ।

लानेवाला, सं पु, आनेतृ, आ-उपा, हृतृ हारक ।

लापता, वि (अ ला+हिं पता) अलभ्य, अदृश्य, तिरोहित, अन्तर्हित, गुप्त, प्रच्छन्न, अज्ञातवास ।

लापरवा वाह, वि (अ ला+फ़ा परवाह) निश्चित, अनवहित, प्रमत्त, प्रमादिन् ।

लापरवाही, स स्त्री (अ +फ़ा) निश्चिंतता, अनवधानता, प्रमत्तता, प्रमाद ।

लाफ़, स स्त्री (फ़ा) आत्मस्त्व, श्लाघा प्रशंसा, विकत्थनम् ।

—ज़न, वि, आत्मश्लाघिन्, विकत्थनशील ।

—ज़नी, स स्त्री, आत्मश्लाघिता, विकत्थन शालता ।

लाफिंग गैस, स स्त्री (अ) हसनवानि (स्त्री)।

लाभ, स पु (स) अवप्र, आप्ति, उप, लब्धि (दोनों स्त्री) अधिगम-मन, आसादन इ फल, अर्थ, उदय, वृद्धि (स्त्री), लभ्य इ कल्याण, उपकार, हितम् ।

—उठाना, क्रि अ, लाभ अधिगम, अर्न (भ्वा प से, प्रे), लभ (भ्वा आ अ) समासद (प्रे), विद् (तु उ वे)।

—दायक, वि (स) लाभ-कारक-कारिन् जनक प्रद, गुणकारिन, हित, हितकर, फल दायक, उपयोगिन् ।

लाभालाभ, स पु (स भौ द्वि) आयापायौ, अधिगमापगमौ, वृद्धिह्रासौ, उपचयापचयौ ।

लाम, स पु (फ़ा लाम) सैन्य, सेना २ जनौघ ३ युद्धम् ।

लामज़हब, वि (अ) धर्मविमुख, नास्तिक ।

लायक़, वि (अ) योग्य, क्षम, समर्थ, शक्त २ अनुरूप, अनुकूल, उपयुक्त ३ गुणिन्, गुणवत् सुशील, श्रेष्ठ, भद्र ।

लाया हुआ, वि, आनीत, आ-उपा, हृत, उपस्थापित, उपन्यस्त ।

लार, स स्त्री (स लाला) दे 'राल' (२)।

लार्ड, स पु (अ) जगदीश २ स्वामिन् ३ क्षेत्रपति ४ आंग्लदेशे उपाधिभेद ।

लाल, स पु (फ़ा) पद्मराग, दे माणिक्य' वि, रक्त, लोहित, शोण ।

—आलू, सं पुं, दे 'रतालू' २ दे 'अरुई'।

—इलायची, स स्त्री, दे 'इलायची' (बड़ी)।

—कुर्ती, स स्त्री, आंग्लसैन्यनिवेश, शिबि (वि)रम् ।

—चंदन, स पुं, रक्त-कुचंदन, रजन, दे 'चंदन' में ।

—पानी, स स्त्री, सुरा, मद्यम् ।

—पेठा, स पु, दे 'कुम्हड़ा'।

—बुझक्कड़, स पु, पंडितंमन्य, प्राज्ञ-पंडित मानिन्-अभिमानिन्-वादिन् ।

—मिर्च, स स्त्री, दे 'मिर्च' में ।

—मूली, स स्त्री, दे 'शलजम'।

—शकर, सं स्त्री, दे 'खाँड'।

—सागर, स पु, रक्तसागर ।

—सुर्ख़, वि, अग्निरूप, अंगारवर्ण, अतिलोहित २ अति, कुपित-संरब्ध ।

—पीला होना,-पीली आँखें निकालना, मु, अत्यंत कुप् (दि प से) क्रुध् (दि प अ), सरभानिशयेन लोहितलोचन रक्तवदन (वि) भू ।

लालच, सं स्त्री (स लालसा) लोलुपता, दे 'लोभ'।

लालची, वि (हिं लालच) लोलुप, दे 'लोभी'।

लालटेन, स स्त्री (अ लैंटर्न) प्रदीप पंजर, प्रदीपकोश (ष)।

लालड़ी, स स्त्री (फ़ा लाल) मिथ्यामाणिक्य, कृतलोहितरत्नम् ।

लालन¹, स पु (सं न) दे 'लाड' स पु ।

—पालन, स पु (स न) पालन भरण, पोषण, संवर्द्धन, भरण, रक्षणम् ।

लालन², स पु (हिं लाला) प्रिय-लालित, पुत्र-कुमार २ बालक ।

लालसा, स स्त्री (स) उत्कटेच्छा, लिप्सा-आकांक्षा-वांछा-स्पृहा-इच्छा-अभिलाष, अतिशय २ उत्कंठा, उत्सुकता ३ गर्भ, दोहद ।

लाला¹, स पु (सं लालक >) महाशय, महोदय, श्रीमत्, श्रीयुत २ (क्षत्रियवैश्याना संबोधन) श्रीमन्! महोदय! श्रेष्ठिन् ३ कायस्थ ४ शिशु, बाल ५ (बालसंबोधनपद) वत्स! अंग! ललित! लालितक! ६ पितृ, जनक ।

—भैया करना, मु सादर संभाष (भ्वा आ मे) संबुध् (प्रे) २ लट-लस (चु)।

लाला², स स्त्री (स) मुखस्राव, दे 'राल'(२)।

लाला³, स पु (फा) मसृणमध्यमनिल पुष्पम्।

लालायित, वि (स) अत्यभिलाषिन्, अत्याकांक्षिन् अत्युत्सुक, लालस।

लालित, वि (स) लालित, चुंबित, आलिंगित, क्रोडीकृत प्रिय २ सवाद्रन पालित।

लालित्य, स स्त्री (स न) सौंदर्य, मनोज्ञता मनोहरता छवि (स्त्री), माधुर्यम्।

लालिमा, स स्त्री (फा लाल) दे 'लाली'।

लाली, स स्त्री (फा लाल) रक्तवर्णता, लौहित्य रक्तिमन्-लोहिनिमन्-अरुणिमन् (पु) अरुणता, लोहितता-त्व, २ सम्मान, प्रतिष्ठा ३ प्रिय, कन्या(च्या)ना-कुमारिका।

लाले, स पु (स लाला>) लालसा, उत्कटेच्छा।

(किसी चीज के)**—पड़ना,** मु, अतिलालायित (वि) भू, अत्यंत स्पृह (चु, चतुर्थी के साथ) २ दुर्लभ-दुष्प्राप (वि) भू (भ्वा आ से), कृच्छ्रेण लभ प्राप (भ्वा)।

लाव¹, स पु (स) कर्तन, कृंतन, लवनं, छेदनम् २ लव, लावक, लघुनगल।

लाव², सं स्त्री (देश) दे 'रस्सा, रस्सी'।

लावक, स पु (स) लव, लावक, लघुनगल २ छेदक, छेत्तृ, छेदकर, -च्छिद्।

लावण्य, सं पु (सं न) लवणता-त्व, क्षारता २ विशिष्ट-सौंदर्य-रूप, छवि (स्त्री), चारुता, श्री-कांति (स्त्री)।

लावनी, स स्त्री (देश) (१) छंदो-गीतिका, भेद, लावणी।

लावलशकर, सं पुं (हि+फा) सपरिच्छद सैन्यम्।

लावल्द, वि (अ) निस्संतान, निरपत्य।

लावा¹, स पुं (स लाव-क) दे 'लवा'।

लावा², स पु (अं) ज्वालामुखी अग्नेय, उद्गार।

लावारिस, वि (अ) अदायाद, दायादरहित (मनुष्य) २ अदायिक, स्वामि प्रभु, हीन (धन)।

—माल, स पु (अ) अदायिक स्वामिहीन, रिक्थ-द्रव्य धनम्।

लाश, स स्त्री (फा) दे 'शव'।

लासा, स पु (हि लस) मदश्लेषक, द्रव्य-लेप २ दुग्धतुल्य सुपक्षीरम्।

—लगाना, मु, प्र वि लुभ् (प्रे) प्रतृ-वञ्च् (प्रे) २ उत्तेजित् उद्दीप (प्रे) ३ सश्लेषक द्रव्येण लगान बध (क्र्‍ प अ)।

लासानी, वि (अ) अनुपम, अप्रतिम, अद्वितीय।

लास्य, स पु (स न) नृत्य २ भावताल लय-आश्रय नृत्य ३ स्त्रीनृत्य ४ तौर्यत्रिकम्।

लाहौरी नमक, स पु (हिं +फा) दे 'सेंधा नमक' (नमक के नीचे)।

लिंग, स पु (स) चिह्न लक्षण अभिज्ञान, लक्ष्मन् (न) २ अनुमापक-कारण, साधक हेतु ३ मूलप्रकृति (स्त्री, सा) ४ मेढ्र-क, दे 'लिंगेंद्रिय' ५ शिवमूर्ति भेद ६ शब्द रूपभेद (व्या) ७ पुराणविशेष।

—देह, सं पु (स) सूक्ष्म लिंग, शरीर (=१० इंद्रियाँ, ५ तन्मात्रा, मन, बुद्धि—१७ तत्त्व)।

—पुराण, स पु (स न) शैवानां पुराण विशेष।

—वृत्ति, स पु (स) धर्मध्वजिन्, दांभिक, लिंगिन्।

—स्थ, स पु (स) ब्रह्मचारिन्।

लिंगेंद्रिय, सं पुं (सं न) शेफ, शिश्न न, लिंग, उपस्थ-स्थ, शेफस् (न), राग काम,-लता मेढ्र-ढ्र, मेहन, शङ्कु, काम-मंदन, मधुघ्न, ध्वज, कंदर्पमुषल।

लिंगोटी, स स्त्री, दे 'लंगोटी'।

लिट, सं पु (अ) सकोपयोगी दन्त्रगावयवभेद।

लिप, स [illegible] (अं) देहरस।

लिए, अव्य (कारकचिह्न) (के लगन या हुने) -अर्थं,-अर्थे-अर्थाय कृते, हेतो, (प्राय चतुर्थी विभक्ति, जैसे, उ राम के लिए=रामाय)।

लिखत, स स्त्री (स लिखित) लेख, लिपि बद्ध-अक्षरांकित,-विषय २ लिखितपत्र ३ लिखित दे 'दस्तावेज'।

लिखना, क्रि स (सं लिखन) लिख् (तु प से), रच् वा (चु) प्रतिपद् (प्रे),

पत्रे आरुह निविश (प्रे), लिपिबद्ध (वि) कृ २ (ग्रंथादि) प्रणी (भ्वा प अ), रच (चु), निर्मा (जु आ अ, अ प अ), ग्रथ् (क्र प से), नि प्र,-बध (क्र प अ) ३ वर्ण् (चु), आ-अभि,-लिख, चित्र (चु)। सं पु लि(ले)खन, पत्रे आरोपणं नवेशन २ रचन, निर्माण, प्रणयन ३ आलिखन, चित्रणम्।

लिखने योग्य, वि, लेख्य, लेखनीय, लेखाह द।

लिखने वाला, = पु, दे लेखक।

लिखवाई, स स्त्री, दे 'लिखाई' (४)।

लिखवाना, क्रि प्रे, व 'लिखना' के प्रे रूप।

लिखाई, स स्त्री (हिं लिखना) लिखन, लेखन, अक्षरविन्यास २ लिपि (स्त्री)-पी, अक्षर रचना ३ लि(ले)खन,-रीति (स्त्री) शैली ४ लि(ले)खन,-भृति (स्त्री)।

—पढ़ाई, स स्त्री, विद्याभ्यास, शिक्षा, लिखनपठनम्।

लिखाना, क्रि प्रे, व 'लिखना' के प्रे रूप।

—पढाना, मु, शिक्ष् (प्रे), विद्याभ्यास कृ (प्रे)।

लिखापढ़ी, स स्त्री (हिं लिखना+पढना) लेख-पत्र,-व्यवहार २ लिखितेन दृढीकरणम्।

लिखावट, स स्त्री (हिं लिखना) लिपी-पि (स्त्री), अक्षर, विन्यास-सस्थान २ लेख लेखन, प्रणाली शैली।

लिखा हुआ, वि लिखित, लिपिबद्ध, लेख्य पित २ रचित, प्रणीत, निर्मित ३ चित्रित।

लिखित, वि (स) लेख लिपि,-बद्ध, अंकित, लेख्य, कृत आरूढ स पु (स न) लि(ले)खन, लेख २ लिपी-पि (स्त्री) ३ लिखितं, दे 'दस्तावेज़' ४ प्रमाणपत्रम्।

—पाठक, स पु (स) हस्तलेख,-पाठक अध्येतृ।

लिटमस, स पु (अं) दीवल्म।

लिटाना, क्रि स, व 'लेटना' के प्रे रूप।

लिथड़ना, क्रि अ, व 'लथेड़ना' के कर्म के रूप।

लिपटना, क्रि अ (स लिप्त>), आ प्र-म, मन (भ्वा प अ), स परि,-स्वञ्ज् (भ्वा प मे) ससक्त परिलग्न (वि) भू, श्लिष् (दि प अ) २ आलिङ्ग् (भ्वा प से), आश्लिष्, परि,स्वञ्ज् (भ्वा आ अ), उपगुह् (भ्वा उ से) २ लीन मग्न-व्यापृत निरत परायण (वि) भू। स पु, आसग, परिलग्न, श्लेष २ आलिंगन, परिरंभण, परिष्वजनम्।

लिपटनेवाला, स पु, आसगिन, संलग्नशील २ आलिंगनकर्तृ, परिरभक ३ आलिंगित।

लिपटाना, क्रि स, व 'लिपटना' के प्रे रूप।

लिपटा हुआ, वि, परिलग्न, समक्त, उपगूढ।

लिपड़ी, स स्त्री (स लेप>) उपनाह, उत्कारिका, प्रलेप।

लिपना, क्रि अ, व 'लीपना' के कर्म के रूप।

लिपवाना, लिपाना, क्रि प्रे, व 'लीपना' के प्रे रूप।

लिपाई, स स्त्री (हिं लीपना) प्र वि,लेप लपन, उपनाहन, लिप, लिंप लिपी पि (स्त्री) २ लेपन भृत्या-वर्मण्या भमण्या।

लिपि, स स्त्री (सं लिपी पि, स्त्री) लिपिका, लिवी वि वि (स्त्री), अक्षर, विन्यास सस्थन रचना, लिखित, लि(ले)खनम्।

—कर, स पु (स) लेपक, लेपकार, पलगड, लिप लिपिकर २ लेखक, पजिकार, लिपिकार।

—कार, स पु (स) दे 'लिपिकर'(२)।

—बद्ध, वि (सं) लिखित, अक्षरांकित, लेखनिवेशित।

—सज्जा, स स्त्री, लेख,-साधनानि-उपकरणानि (न बहु)।

लिप्त, वि (स) चर्चित, दिग्ध, लेपान्वित, २ मग्न, लग्न, निरत, आसक्त, लीन।

लिप्सा, स स्त्री (स) इच्छा, अभिलाष, ईप्सा २ लोभ, लोलुपता।

लिप्सु, वि (स) इच्छु-च्छुक, अभिलाषिन् २ लोलुप-भ, गृध्नु।

लिफ़ाफ़ा, स पु (अ) पत्र, पुट-कोष-आवेष्टन अवरण २ आपातरमणीयवेश ३ आडंबर ४ मधुर भिदुर, पदार्थ।

—खुलना, मु, रहस्य विवृ (कर्म), स्वरूप प्रकटीभू।

—बनाना, मु आडंबर रच (चु)।

लिबास, स पु (अ) दे 'वेश'।

लियाक़त, स स्त्री (अ) योग्यता, क्षमता २, गुण, कला ३ सामर्थ्य ४ शीलम्।

लिवाना, क्रि प्रे , दे 'लेना' तथा 'लाना' के प्रे रूप ।

लिया लाना, क्रि स , सह आनी (ण्या प अ)।

लिसोड़ा, स पु , दे 'लसोड़ा' ।

लिहाज़, स पु (अ) अवेक्षणं अवधान २ कृपा-दया, दृष्टि (स्त्री) अनुग्रह ३ पक्षपात (तिता) ४ लज्जा, त्रपा ५ प्रतिष्ठा-मर्यादा, विचार ६ शीलसंकोच ।

—करना, क्रि अवधा (जु उ अ) २ आदृ (तु आ अ) ३ अनुग्रह (क्र प से) ४ मर्यादा पा (प्रे पालयति) ।

लिहाज़ा, अ (अ) अत, अत एव (दोनों अव्य) ।

लिहाफ़, स पु (अ) दे 'रजाई' ।

लीक, स स्त्री (स लेखा) रेखा-गा, दण्डाकार लिपी पि (स्त्री) २ (शकटादीनां) चक्रमार्ग ३ दे 'पगडंडी' ४ यशस् (न), प्रतिष्ठा ५ रीति (स्त्री), लोकाचार , प्रथा ६ कलंक, लाञ्छनं ७ गणनाचिह्नम् ।

—पर चलना,
—पीटना, } मु दे 'लकीर' के नीचे ।

—से बेलीक होना, मु पथभ्रष्ट (वि) भू, रूढ़िं त्यज् (भ्वा प अ) ।

लीख, स स्त्री (स लिक्षा) लिक्षा, यूकाण्डं, लि(ली)क्षा, लिख्य ।

लीचड़, वि (देश) अलस, मंद, मंथर २ सलग्नशील, दृढग्राहिन् ३ कृपण, कदर्य ।

—पन, स पु , आलस्य, कार्पण्य, सलग्नशीलता ।

लीची, स स्त्री (चीनी-लीचू) अलीचिका, फलभेद ।

लीडर, स पु (अ) दे 'नेता' ।

लीद, स स्त्री (देश) (गजाश्वादीनां) अवस्कर , उच्चार , शमल, पुरीष, वर्चस् ।

लीन, वि (स) व्यग्राप्त, समाविष्ट, ध्यानस्थ, तन्मय, निमग्न, आसक्त, तद्गतचित्त, निरत, व्यापृत पर, परायण । ३ द्रवीभूत ४ तिरोहित, लुप्त ।

लीनता, सं स्त्री (स) तन्मयता, तत्परता, निमग्नता, आसक्ति (स्त्री) ।

लीपन, स पु (स लेपन) दे 'लिपाई'(१) ।

लीपना, क्रि स (स लेपन) अनुप्र-वि-लिप् (तु प अ) २ दिह् (अ उ अ), उपनह् (दि प अ), अञ्ज् (रु प वे) ।

स पु , अनु प्र वि, लेप-लेपन, उपनाहन, उपदेहनम् ।

—पोतना, क्रि स , शुध् (प्रे), संस्कृ ।

लीपनेवाला, स पु , लेपक , पल्गण्ड, २ उपदेहक ।

लीपा हुआ, वि , प्र-वि ,लिप्त, दिग्ध, अक्त ।

लीमू, सं पु (फ़ा) दे 'निंबू' ।

लीला, सं स्त्री (सं) क्रीडा, केलि (स्त्री), खेला, खेलनं, कूर्दनं, क्रीडनं २ विहार, विनोद , रञ्जनं ३ शृङ्गारभावचेष्टा, विलास , काम, क्रीडा-केलि (स्त्री) ४ हावभेद (सा) ५ विचित्रव्यापार , रहस्यकृत्य ६ चरित्राभिनय (उ रामलीला इ) ।

—गृह, स पु (स न) विलास-क्रीडा,-भवनम् ।

—पुरुषोत्तम, स पु (स) श्रीकृष्ण ।

—स्थल, सं पु (स न) क्रीडाभूमि (स्त्री) ।

लीलावती, वि स्त्री (स) विलासिनी । सं स्त्री (स) भास्कराचार्यभार्या २ गणितग्रन्थविशेष (३ ४) रागिनी छंदो, भेद ।

लुगी, स स्त्री (हिं लाग) कटिवस्त्र, शाटी धौतिका २ शिरोवेष्टन, चित्रशिरोवेष्टनम् ।

लुचन, स पु (स न) उत्पाटन, उद्धरणं, उत्खनन, २ पृथक् करणं, अपनयन ३ कर्तन छेदनम् ।

लुंजा, वि (स लुंचन>) करचरणविहीन, अपांग, व्यंग, विरल, विकलांग, श्रोण । सं. पु , स्थाणु ध्रुव , शकु अपत्रपादप ।

लुठक, स पु (स) लुठा(ठा)क , दे 'लुटेरा' ।

लुठन, स पु (सं न) अपहरणं, मोषणं, दे. 'लूटना' (सं पुं) ।

लुंड', सं पुं (सं) चौर , तस्कर ।

लुंड , स पु (सं रुंड-ड) कबंध ।

—मुंड, वि (सं रुंड+मुंड>) दे 'लुंज' वि तथा सं पुं २ मोटुंगीवद् व्यावर्तित ।

लुंडा, वि (स रुंड>) दे 'लंडूरा' ।

लुआठी, सं स्त्री (सं उल्का+काष्ठ>) अलात, उल्का, प्रदीप्तकाष्ठम् ।

लुआय, सं पुं (अ) संलग्नशील , फल्मार' २ लम्पट, रसिकी ।

—दार, वि (अ + फ़ा) सलग्नशील, दे 'लसदार'।

लुक, सं पु (सं लोक >) वुक्कुम (ज्वा निद्रा) २ ज्वाला।

लुकना, क्रि अ (स लुक् = लोप>) दे 'छिपना'।

—लुकछिपकर, मु, निभृत, रहसि, रह (सब अव्य)।

लुकमा, स पु (अ) कवल, ग्रास, गुडेर।

लुकमान, स पु (अ) प्राचीनो वैद्य विशेष।

—के पास दवा नहीं, मु, असाध्य-अप्रति कार्य-निरुपाय, रोग व्याधि आमय।

—को हिकमत सिखाना, मु, प्राज्ञाय प्रज्ञा दा (जु उ अ), चतुरमपि चातुर्यं शिक्ष् (प्रे)।

लुकाट, स पु (स लकु(क)च) (वृक्ष) लिकुच, दार, क्षारय, दृढवल्कल, शद्रु। २ (फल) लक(कु)च, दार २।

लुकाना, क्रि स (हिं लुकना) व 'छिपना' के प्रे रूप।

लुगदी, सं स्त्री (देश) आर्द्रगोलक-कम्।

लुगाई, स स्त्री (हिं लोग) नारी २ पत्नी।

लुच्चपन, सं पु (हिं लुच्चा) लम्पटता, कामुकता २ दुर्वृत्त, दुराचार, दौर्जन्यम्।

लुच्चा, स ▇ (हिं लुचकना, स लुचन से) लुचक, अपहारक, दुर्वृत्त, दुराचारिन्, कुपथ गामिन् २ लंपट, कामुक ३ क्षुद्र, दुष्ट, निर्लज्ज [लुच्ची (स्त्री)]।

लुची, स स्त्री (सं चूर्णिका) पक्वान्नभेद।

लुटना, क्रि अ, व 'लूटना' के कर्म के रूप।

लुटवाना, क्रि स व 'लूटना' के प्रे रूप।

लुटाना, क्रि स (हिं लूटना) व 'लूटना' के प्रे रूप। २ अमित व्यय् (चु), अप व्यय-अतिव्यय कृ अपव्यय् (चु) ३ मूल्य विना दा ४ मुष्टिभि परिक्षिप् (तु प अ) पर्यस् (दि प से)। सं पु, अप-अति अमित-व्यय २ मुधा विक्षेप।

लुटानेवाला, स पु, अपव्ययिन्, विक्षेपिन्।

लुटेरा, वि (हिं लुटाना) अप अति कृथा, व्ययिन्, मुक्तहस्त, धननाशिन्।

लुटिया, सं स्त्री (हिं लोटा) लघुकमण्डलु।

—डुबाना, मु, सम्मान नाशय (प्रे)।

लुटेरा, स पु (हिं लूटना) मार्गतस्कर, हठमोषक, पाटच्चर, परिपन्थिन्, लुण्(टा, ठा)क २ वचक, प्रतारक।

लुढकना, लुढ़ना, क्रि अ (स लुंठन) वि लुठ् (तु प से), विलुठ् (भ्वा दि प से) २ स्रु (भ्वा प अ), बहिःपत् निर्गल् (भ्वा प से), निःसृ (भ्वा प अ)। स पु वि, लुठन-लोठन २ बहिःपतन, निर्गलन, च्यवनम्।

लुढकाना, लुढाना, क्रि स, व 'लुढकना' के प्रे रूप।

लुढियाना, क्रि स (हिं लोढिया) वर्तिका कार सिव (दि प से)।

लुतरा, स पु (देश) परोक्षनिंदक, पिशुन, कलहसाधक, कर्णेजप २ अपकारक, कुचे ष्टक। [लुतरी (स्त्री)]।

लुत्फ़, स पु (अ) आनंद, मोद २ रस, आ, स्वाद ३ उत्तमता ४ कृपा ५ रोचकता।

लु(लो)नाई, स स्त्री (हिं लोना) दे 'लावण्य'(२)।

लुपरी-ड़ी, सं स्त्री (स लेप >) दे 'लिपड़ी' २ द्रवप्राय भक्ष्य, लप्सिका।

लुप्त, वि (स) गुप्त, प्रच्छन्न, निभृत २ अन्त र्हित, तिरोभूत, अदृश्य ३ नष्ट, ध्वस्त। स पु, लुप्त, चौर्यधनम्।

लुब्ध, वि (स) गृध्नु, गर्द्धन, दे 'लोभी'। २ मुग्ध, मोहित, हृत। सं पु, दे 'लुब्धक'।

लुब्धक, स पु (स) व्याध, दे. 'शिकारी' २ लंपट ३ गृध्नु।

लुब्बलुबाब, स पु (अ) तत्त्व, सार, साराश २ दे 'गूदा'।

लुभाना, क्रि अ (हिं लोभ) विलुभ् (प्रे), दुराचारे-कुमार्गे प्रमद् (प्रे) २ वि, मुह् (प्रे), प्रलुभ (प्रे) ३ मद्, आकृष् (भ्वा प अ)। क्रि अ, दे 'रीझना'।

लुहडा, स पु (स लोहहंडी) *अयस्थाली।

लुहा(हां)गी, स स्त्री (स लोहांग>) *लोहांगी, लोहमुखी यष्टी दि (स्त्री)।

लुहार, स पु (सं लो(लौ)हकार) अयस्कार, व्योकार, कमार, कर्मकार (लुहारिन स्त्री)।

लुहारी, स स्त्री (हिं लुहार) लो(लौ)हकारी,

अयस्कारी २ लोहकारव्यवसाय, कर्मारता, अय शिल्पम्।

लू, स स्त्री (हिं लुक) घर्मवात, उष्णानिल तप्तपवन।

—चलना, क्रि अ, उष्णानिल वा(अ प अ)।

—मारना या लगना, मु, घर्मवातेन व्यथ (भ्वा आ से)।

लूक, स स्त्री (स लोक>) ज्वाला २ दे 'लुआठी' ३ दे 'लू' ४ उल्का।

लूट, स स्त्री (हिं लूटना) वि लुंट(ठ)न, बलात् अपहरण मोषण, लुंटा ठा, लुंठित, लुंटी ठी टि ठि (स्त्री) २ अन्याय्य-व्यवहार ३ स्तैन, स्तेय स्तेन्य भी, स्तेय-अपहृत लुंठित, धन, लुप्तम्।

—का माल, सं पु, दे 'लूट' (३)।

—खसोट पाट, स स्त्री लुंठनध्वसन, लुंठालुंठि (न)।

—खूट, मार, स स्त्री मोषणहिंसन लुंठन मारणं लुंठामारम्।

—पड़ना या मचना, क्रि अ, व 'लूटना' के कर्म के रूप।

—मचाना, क्रि स, दे लूटना'।

लूटना, क्रि स (सं लुंठन) वि लुंट-लुठ् (भ्वा प से, चु) लुट (भ्वा दि प से), बलात् अपहृ (भ्वा प अ), प्रसह्य मुष् (क्र प से) २ चुर् (चु) मुष, अपहृ ३ वि ध्वस नश् (प्रे) ४ छलेन अन्यायेन वा आदा (जु आ अ)-हृ ५ अत्यधिक अनुचित, मूल्य आदा ६ मुह् (प्रे), वशी कृ मनो हृ। स पुं, दे 'लूट'।

लूटने योग्य, वि, लुंठनीय, लुंठितव्य।

लूटनेवाला, स पु, दे 'लुटेरा'।

लूटा हुआ, वि, लुंठि(ठि)त, बलात् अपहृत मुषित।

लूता, स स्त्री (सं) मर्कटक, ऊर्णनाभि, दे 'मकड़ी' २ पिपीलिका ३ मर्कटमूत्र स्पर्शज रुग्रोग।

लूती, सं स्त्री, दे 'लुआठी'।

—लगाना, मु, कलहं जन (प्रे), दे 'चुगली करना'।

लून, वि (सं) छिन्न, कृत्त।

लून, स पुं (सं लवण) दे 'नमक'।

लूनिया, वि (हिं लून) लवण क्षार। स पु, लवणकार।

लूम, स पु (स ल) लांगूलं, पुच्छम्।

लूमड़ी, सं स्त्री, दे 'लोमड़ी'।

लूला, वि (स लून>) छिन्न-लून पाणि-हस्तकर २ अपाग, व्यंग ३ असक्त, असमर्थ।

लेंडी, स स्त्री (स लेंड>) बद्धमलं, विष्ठावर्ति (स्त्री) २ दे 'मेंगनी'।

लेंस, स पुं (अ) वीक्षम्।

—मैग्निफाइङ्ग लेंस, दूरदर्शकवीक्षम्।

लेंहड़ा, सं पु (देश) पशु-वृन्द-यूथ कुल समज।

ले, लेकर, अव्य (हिं लेना) आरभ्य, प्रभृति, आ, (पंचमी [illegible] भी उ, गाव से ले(कर)= आग्रामात्, ग्राम त कल से ले(कर) = श्व (प्रभृति आरभ्य) २ गृहीत्वा, आदाय।

लेई¹, स स्त्री (सं लेप >) सद्रवेष्टकलेप, २ सुघेष्टकचूर्णलेप।

लेई², स स्त्री (सं लेह) अवलेह, दे २ लप्सिका, द्रवप्रायसंयाव।

लेकिन, अव्य (अ) किंतु, परंतु २ तथापि।

—अगर, अव्य (अ + फ़ा) किंतु, यदि।

लेक्चर, सं पु (अ) व्याख्यान, भाषणं २ प्रपाठ, अध्यापनम्।

—बाज़ी, सं स्त्री (अ + फ़ा) व्याख्यान प्रवृत्तिः।

—झाड़ना, मु, सोत्साह व्याख्या (अ प अ) अथवा अधि इ (प्रे, अध्यापयति)।

लेक्चरार, सं पुं (अं लेक्चरर) व्याख्यातृ, उपदेशक, वक्तृ २ अध्यापक, उपाध्याय।

लेक्टोमीटर, सं पुं (अं) दुग्धमापकम्।

लेख, सं पुं (सं) लिपि(पी)-पि (वि) (स्त्री) २ लिखित-लिपिबद्ध-विषय वार्ता ३ प्रस्ताव, निबंध ४ दे 'लिखाई' (१-२)। ५ गणनं, संकलनम्।

लेखक, सं पु (सं) प्रबंधकृ, पुस्तक-लेखक रचयितृ प्रणेतृ २ लिपि(पी)-कार, मसिपण्य, पंजीकार, लिपिक, वार्णिक।

लेखन, स पु (सं न) दे 'लिखाई'(१)। २ लेखन-कला विद्या ३ गणनं, संख्यानं ४ भूर्जत्वच् (स्त्री)।

लेखनी, सं स्त्री (सं) अक्षर-वर्ण, तूली

लिपि कल्म, चित्रक, क्राश्रय, वर्णिका, शम्री।

लेखा, म पु (सं लख >) नकल्न, मन्यान, —ना २ व्ययमूल्य निरूपण अनुमान ३ सामन्दनदेयादेय, विवरण ४ अनुमान विचार।

—डालना, मु, अयव्ययपत्रिकायां नामन् (न) लिख (त प मे)।

—पूरा या साफ करना, मु, अवशेष शुध (प्रे)।

लेखिका, म स्त्री (स) ग्रंथकर्त्री, पुस्तक प्रणेत्री २ लिपिकारी, लिपिका।

लेखे, क्रि वि (हिं लेखा) विचारेण २ मध्ये।

लेख्य, वि (स) लि(ले)खितव्य, ले(लि)खनार्ह, ले(लि)खनीय। स पु (स न) लिखित लिपिबद्ध,विषय, लेख २ दे 'दस्तावेज'।

लेजिस्लेटिव काउंसिल, म स्त्री (अ) व्यवस्थापकसभा।

लेट¹, क्रि (अ) विलम्बित, विलंबित, काल समय अतीत।

लेट², म स्त्री (देश) दे 'गच'।

लेटना, क्रि अ (हिं लेटना) संविश (तु प अ), शी (अ आ मे) २ विश्रम् (दि प से) ३ दे 'मरना'। म पु, संवेश शयन, शयनम्।

लेटनेवाला, स पु, मवेशोन्मुख शयालु।

लेटर, म पु (अ) (अ) पत्र, लेख, लेख्य, पत्रिका, पत्री पत्रक लिखित, सन्देशपत्र। २ अक्षर, वर्ण, मातृका अभिलिखान।

—बाक्स, स पु (अं) पत्रपेटिका।

लेटाना, क्रि स, व 'लेटना' के प्रे रूप।

लेटा हुआ, वि, मविष्ट, शयान, शयित।

लेड, स पु (अ) सीस, सीसकम्, दे 'सीसा'।

लेडी, स स्त्री (अ) महिला, कुलाङ्गना, आर्या २ नारी, रमणी ३ लार्डोपाधिधर स्य पत्नी।

—डाक्टर, सं स्त्री (अ), भीषजा, चिकित्सा जीविनी, चिकित्सिका, रोगहारिणी।

लेन, स पु (हिं लेना) आदान, ग्रहण, धारण २ दे 'लहना' (१-२)।

—दार, स पु (हिं + फा) उत्तमर्ण, कर्णद, महाजन।

—देन, म पु (हिं) आदानप्रदान, व्यवहार २ कौसीद, वृद्धिजीवन-विधा।

लेना, क्रि स (स लभन) आदा (जु उ अ) प्रतिग्रह (तु प मे), प्रतिग्रहि, ग्रह (क्र प मे) २ अधिगम् (भ्वा प अ) आसद् (प्रे) प्राप् (स्वा प अ), लभ (भ्वा आ अ) ३ धृ (भ्वा प अ, चु) अव-आ-लंब (भ्वा आ मे) ग्रह ४ जि (भ्वा प अ) अभिभू (भ्वा प मे) वशीकृ ५ क्री (क्र् उ अ) ६ क्षण ग्रह् ७ अङ्केक्रोडे निधा (जु उ अ) ८ स्वी-अंगीकृ प्रतिपद् (दि आ अ) ९ प्रत्युद्-नम् व्रज (भ्वा प से)-या (अ प अ) सत्कृ समन-सभ् (प्रे) १० कर्मभार स्वीकृ ११ रुचि (स्वा प अ) सग्रह् (क्र प मे) १२ उपहस् (भ्वा प से), व्यंग्योक्तिभिः लज्ज (प्रे)। स पु, आदानं ग्रहण, प्रतिग्रह, अधिगमन, प्रापण आसादन, आलंबन, धारण, कर्मादान, अंगीकरण वशीकरण, संचयन, क्रयण, क्रय इ।

लेने योग्य, वि (स) आदेय, ग्राह्य, ग्रहीतव्य, प्राप्य, आसादनीय क्रेय, क्रयणीय इ।

लेने वाला स पु, आदाता, गृहीता, अधिगता, आत्तादयिता, अंगीकर्ता, क्रेता, ग्राहक।

लिया हुआ, वि (स) आत्त, आदत्त, गृहीत, प्राप्त अधिगत, धृत, अंगीकृत, वशीकृत, क्रीत इ।

ले आना, मु, दे ३ 'लाना'।

ले चलना या ले जाना, मु, आदाय गम् २ आत्मना सह नी (भ्वा प अ)।

ले डूबना, मु, परमपि आत्मना सह क्षै अवमद्-नश (प्र)।

ले देकर, मु, सर्वं मकलय्य २ कृच्छ्रेण, कथमपि।

लेना एक न देना दो, मु, न कोऽप्यर्थ, न किमपि प्रयोजनम्।

लेना देना मु, दानादान, आदानप्रदान २ कौसीद, वृद्धिजीवनम्।

लेने के देने पड़ना, मु, भद्रस्याभद्र फल, इष्टाशायामनिष्टप्रसङ्ग।

ले भागना, मु., सह नीत्वा पलाय् (भ्वा आ से), अपहृ (भ्वा उ अ)।

ले भरना, मु दे 'नि डूबना'।
लेन्स, स पु (अ) काच ।
लेप, स पु (स) अभि अजन, उपदेह, समालभ, उपनाह, प्रलेपपट्टिका २ लेपन, सुधा ३ लेपस्तर ४ उद्वर्तन, दे 'उबटन' ५ सपर्क, सम्बन्ध ।
—चढाना, क्रि स, दे लीपना'।
लेपक, स पु (स) लेपिन्, लेपकार, पलगण्ड, लेप्यकृत्।
लेपन, सं पु (सं न) दे 'लिपाइ' (१)।
लेपना, क्रि स, दे 'लीपना'।
लेपालक, स पु (हिं लेना+पालना) दत्तक, दे ।
लेबर, स पु (अ) परि,श्रम, आयाम, प्रयास २ श्रमिक-कर्मकर, वर्ग ।
—पार्टी, स स्त्री (अं) श्रमिकदल लम्।
—यूनियन, स स्त्री (अ) श्रमिक-कर्मकर, सघ-समाज सभा।
लेबुल, स पु (अ) लेपपत्रम्।
लेबोरेटरी, सं स्त्री (अ) प्रयोगशाला, २ रसायनशाला।
लेमोनेड, स पु (अ) जबीर पेय पानकम्।
लेरवा, म पु (सं लेह >) दे 'बछडा'।
लेवा, वि (हिं लेना) आ,दातृ-दायक।
—देवा, स पु, आदानप्रदानम्।
नाम—, स पु, पुत्र २ दायाद ।
लेश, स पु (स) दे 'लव' २ चिह्न, लक्षण ३ सबध ४ अलकारभेद (सा) २ अल्प, स्तोक।
—मात्र, वि (स) अणु-अल्प,-मात्र (-त्रा, त्री स्त्री)।
लेस, सं पु, दे 'लासा' (१)।
—दार, वि (हिं+फ़ा) दे 'लसदार'।
लेहन, सं पु (स न) जिह्वया स्वादन स्वदन-रसनम्।
लेहाज़ा, क्रि वि (अ) अत, अतएव।
लेहिन, स पु (स) टकण-न, रसशोधन, विड्म्।
लेह्य, वि (सं) लेहनीय स्वाद्य। सं पु (सं न) दे 'अवलेह' २ लेहनीयाहार ३ अमृतम्।
लैन, सं स्त्री, दे 'ल्हन'।

लैसस, स पु (अ लाइसेंस) अधिकारपत्र अनुज्ञालेख ।
लैस, स पु (अ लेस) सज्ज, सन्नद्ध, सिद्ध २ जालाभरण, दे 'फीता'।
लौंद, सं पु, दे 'मलमास'।
लौंदा, स पु (स लोष्ट ष्ट) आर्द्र पिंड (-ड)-घन, विलक्षगोल (-ल) लोष्ट (-ष्ट)।
लो, अव्य (हिं लेना) दृश्यतां प्रेक्ष्यतां, अवलोक्यतां। (केवल इन्हीं रूपों में)।
लोई¹, स स्त्री (स लोमीय) लोमी, नौशार, आविक ऊर्णायु कबलभेद ।
लोई², स स्त्री, दे 'पेडा' (गूधे हुए आटे का)।
लोक, स पु (स) भुवन, भूभुव स्वराद्य चतुर्दशस्थानविशेषा २ जगत् (न), जगती विश्व, चराचर, ब्रह्माड, भुवन, विष्टप ३ निवास, स्थान ४ दिशा, प्रदेश ५ लोक-का, जन-ना ६ समाज ७ प्राणिन्।
—कटक, स पु (स) जनपीडक ।
—तत्र, स पु (स न) जन प्रजा-तत्रम्।
—त्रय, स पु (स न) त्रिभुवन, त्रैलोक्य, त्रिलोकी।
—नाथ, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ विष्णु ३ शिव ४ बुद्ध ५ लोकपाल ।
—पति, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ नृप ३ लोकपाल ।
—परलोक, स पु (स-न्नौ) उभौ लोकौ, लोकद्वयम्।
—पाल, स पु (स) दिक्पाल २ नृप ।
—प्रवाद, स पु (सं) जन-लोक,-रव -श्रुति-(स्त्री)-प्रवाद ।
—मर्यादा, सं स्त्री (सं) लोक, आचार-व्यवहार, जगद्रीति (स्त्री)।
—यात्रा, सं स्त्री (स) जीवनं, प्राणधारणं।
—विश्रुत, वि (सं) जगद्विख्यात। २ व्यवहार, लौकिककृत्यानि (न बहु)।
—श्रुति, सं स्त्री (सं) दे 'लोकप्रवाद'।
—संग्रह, स पु (सं) लोक का, रजनं प्रसादनं २ लोकहितैषणा।
लोकातर, सं पु (सं न) परप्रेत-लोक ।
लोकाचार, स पु (सं) जगद्रीति रूढि (ढा) लौकिक, लोक,-सार्व -व्यवहार ।

लोकाट, स पु (चीनी लु+क्यू) लक्च, चैनन् ।
लोकालोक, स पु (स) चक्रवाल पर्वत विशेष (पुराण) ।
लोकेषणा, स स्त्री (स) अभ्युदयाभिलाष २ स्वार्थलिप्सा ।
लोकोक्ति, स स्त्री (स) आभाणक, जनवाद लौकिक-न्याय २ अलंकारभेद (सा०) ।
लोकोत्तर, वि (स) अलौकिक, अमानुष अपार्थिव लोकातिशायिन्, दिव्य, अति, विलक्षण अद्भुत ।
लोग, स पु (स लोक) लोक या जन ना, मानवा, मनुष्या, नरा, मानुषा, मर्त्या, मनुजा (स्व बहु) ।
लोच¹, स स्त्री (हिं लचक) दे 'लचक' २ कोमलता, मृदुता ।
लोच², स पु [स रुचि (स्त्री)] अभिलाष, इच्छा ।
लोचन, स पु (स न) नयन, नेत्रम्, दे 'आँख' ।
लोट, स स्त्री (हिं लोटना) लु(लो)ठन, लोटन, वेल्लन, लुठा, लुठा, लोट ।
—पोट, वि, लुठि(ठि)त, वल्लित, स्खलित २ मुग्ध, बद्धभाव, अनुरागिन् ३ वि, आकुल ४ अत्यन्त, विपर्यस्त ।
—जाना, मु, मूर्च्छ् (भ्वा प से, मूर्च्छति) २ मुह् (दि आ अ) ३ विश्रम् (दि प से) ४ चकितो मुग्धो वा भू ।
—पोट होना, मु, (पांडाभि) वि, लुठ (तु प से, भ्वा आ से) २ भाव-अनुराग बध (क्र प अ), ३ सहसा विक्षुब्ध वा भू (तु आ अ) ।
—होना, मु, अनुरक्त-आसक्त (वि) भू २ व्याकुलीभू ।
लोटन, स पु (स न) दे 'लोट' २ *लोट नवनीत ३ लागलभेद ४ मारकरा ।
लोटना, क्रि अ (स लोठन) लुट (भ्वा दि प से), लुठ (भ्वा आ से, तु प से) २ पार्श्वं परिवृत् (प्रे) ३ अतुल-व्याकुल (वि) भू । स पु तथा भव, दे 'लोट' सं स्त्री ।
लोटा, सं पु (हिं लोटना) कमण्डलु, दे ।
लोडन, स पु (स न) मथन, आ-वि लोडनम्, मथ ।
लोडित, वि (स) मथित, आ-वि-लोडित, व्याघट्टित ।
लोढ़ा, स पु, (स लोष्ट इ>) दे 'बट्टा' ।
लोढ़ि, स स्त्री (स लोष्ट इ>) दे ।
—पोथ, मु नति, शिथिल श्रान्त-खिन्न ।
लोधरा, स पु (हिं लोध) पल्लमाम, पिंड (ड) ।
लोध, स स्त्री (स लोध) (लाल) लोध, रक्त, मार्जन, तिरीट तिदुक । (सफेद) शुक्र, महा शबर लोध, शाबर ।
लोन, स पु (स लवण) दे 'नमक' २ लावण्य विशिष्टसौन्दर्यम् ।
लोना, वि (हिं लोन) लवण दे 'नमकीन' २ सुन्दर, चारु । स पु, *कुड्यमिति, लवण ३ सर्वांतिकुड्यस्य धूलि (स्त्री) ।
लोनिया, स पु (हिं लोन) दे 'लुनिया' । स पु ।
लोप, स पु (स) वि, नाश, क्षय, वि, ध्वंस ३ अदर्शन, तिरोभाव, अन्तर्धान ३ अभाव, अविद्यमानता ४ वर्णविनाश (व्या) ५ विच्छेद, विराम ।
लोपामुद्रा, स स्त्री (स) अगस्त्यमुनिपत्नी, लोपा, वरप्रदा, कौशीतकी ।
लोबान, स पु (अ) सुगंधिनिर्यासभेद *लोबानम् ।
लोबिया, स पु (स लोभ्य = मूँग) क्षुधा भिजनक, चप(व)ल, चर्वर, सुकुमार, शिंबिका, दीर्घ-शिम्बीबीज ।
लोभ, स पु (स) परद्रव्याभिलाष, गृध्या, गृध्नता, स्पृहा, लौल्य, लिप्सा, गर्द्ध, तृष्णा, वाञ्छा, राग, लोलुपता मता, इच्छा, वाञ्छा, मनोरथ, अभिलाष, काम २, कार्पण्य, कदर्यता ।
लोभित, वि (स) मोहित, आकृष्ट, हृतचित्त, लुब्ध, मुग्ध ।
लोभी, वि (स-भिन्) गृध्नु, गर्धन, लुब्ध, लोलुभ, लिप्सु, अभिलाषुक, तृष्णक ।
लोम, स पु (स) लोमन् (न) दे. 'रोंगटा' २ लांगूल, पुच्छम् ।

—हर्षण, स पु (स न) रोमाञ्च, दे । वि, दे 'रोमहर्षक'।

लोमड़, स पु (स लोम >) *लामड़ा, *लोमड़ा, दे 'गीदड़'।

लोमड़ी, स स्त्री (हि लोमड़) लोमशा, लोमाशिका, दे 'गीदड़ी' (संस्कृत में गीदड़ लोमड़ तथा गीदड़ी-लोमड़ी के लिए समान शब्दों का ही प्रयोग होता है।)।

लोमश, स पु (स) ऋषिविशेष २ मेष, दे 'भेड़ा'। वि, बहुलोमान्वित, केशल, केशिक २ ऊर्णामय (-यी स्त्री), और्ण (र्णी स्त्री)।

—मार्जार, स पु (स) गन्धमार्जार, पूतिक, मूत्रपातन।

लोरी, स स्त्री (स लोल >) निद्राशयन, गीतिका।

—देना, क्रि स, निद्रागीतिकया स्वप् (प्रे)।

लोल, वि (स) सकम्प, कम्पमान, वेपमान, कम्पित, कम्प २ चञ्चलचित्त ३ क्षणभंगुर, पल, क्षणिक ४ उत्सुक, उत्कंठित।

लोला, स स्त्री (स) जिह्वा, रसना २ लक्ष्मी श्री (स्त्री)।

लोलुप, वि (स) दे 'लोभी'।

लोलुपता, स स्त्री, दे 'लोभ'।

लोशन, स पु (अ) व्रणक्षालन, धावनौषध, *औषधजलम्।

लोष्ट, स पुं (स पु न) लोष्ट, मृत्तिकाखंड, दलि (पु स्त्री) दल्नी २ अश्मखण्ड।

लोह, सं पु (स लोह ह) लौह, दे 'लोहा' २ रुधिर ३ रक्तराग।

—कांत, सं पुं (सं) अयस्कान्त, लोह, चुम्बक।

—कार, सं पु (सं) अयस्कार, दे 'लुहार'।

—किट्ट, स पु (स न) लोह-मल, मंडूर, लौहज, कृष्णचूर्ण, अयो-,मल-रजस (न)।

—चून,
—चूर, } स पु (स लोहचूर्ण) कान्तभेद।
—चूर्ण,

—द्रावी, सं पु (सं विन्) लोहित, टंकण न दे 'सोहागा'।

लोहाँगी, सं स्त्री (सं लोहांगी) लोहदीर्घ, यष्टी-दंड -लगुड।

लोहा, स पुं (सं लोह ह) कृष्ण, अयस् (न) आयस, काल, कालायस, तीक्ष्ण, अश्म गिरि-सार, दृढ, पिंड २ अस्त्र, शस्त्र, ३ लोहमयद्रव्यम्। वि, रक्त, लोहित २ अति,दृढ-कठोर।

लोहे का, वि, लौह (हीं स्त्री), लालायसी, मय (-यी स्त्री), आयस (सी स्त्री), लोह, आयस,।

लोहे का चना, मु, सुदुष्कर कर्मन (न)।

लोहे के चने चबाना, मु, सुदुष्कर कर्म सम्पद् (प्रे)।

—गहना या लेना, मु, युध् (दि आ अ) दे 'लड़ना'।

—बजना, मु, युद्ध प्रवृत् (भ्वा आ से)।

(किसी का)—**मानना**, मु, (अन्यस्य) प्रभुत्वं *स्वीकृ २ विपरा,जि (कर्म)।

लोहार, स पु (स लोहकार) दे 'लुहार'।

—की स्याही, स स्त्री, दे, 'हीराकसीस'।

लोहित, वि (स) रक्त, शोण। स पु (सं) मंगलग्रह, कुज, भौम २ रक्तवर्ण। (स न) रक्त, रुधिरम्।

—चंदन, स पु, केसर-र, कश्मीरज, कुंकुमम्।

—नयन, वि, (सं) रक्तलोहित, नेत्र-नयन ईक्षण, कुपित, क्रुद्ध।

—शतपत्र, स पु, कोकनद, रक्त, उत्पल नीरजम्।

लोहिया, सं पु (हि लोहा) लोहपण्य विक्रेतृ, लोहविक्रयिन् २ लोहितपर्ण ३ लोह गुटिका।

लोहू, स पु (स लोहित) दे 'रक्त' तथा 'लहू'।

लौ, अव्य (हि लग) दे 'तक' २ सदृश, तुल्य।

लौंग, सं पु (स लवंग) देवकुसुम, श्री, प्रसून पुष्प मख, लवंगं, दिव्यं, शेखरं, लव २ लवंग (घ्राणभूषणभेद)।

लौंडा, सं पु (हि लोना) (लावण्यविशिष्ट) बालक दारक। वि, अबोध, अज्ञ २ चपल, चंचल।

—पन, सं पुं, बाल्य २ चापल्यम्।

लौंडी डिया, स स्त्री (हि लौंडा) कन्या, कुमारी २ पुत्री ३ दासी।

लौंडेबाज़, वि (हि + फा) पुंमैथुनकारिन्।

लँड़िबाज़ी, सं स्त्री (हिं + फ़ा) पुमैथुनम्।
लौ, स स्त्री (हिं लपट) दीप्त-ता अग्नि ज्वाला(ल)ज्वाला, जिह्वा, शिखा २ दीपशिखा।
लौ, स स्त्री (हिं लाग) अभिलाष राग २ चित्तमनो, वृत्ति (स्त्री) ३ कामना, वाञ्छा।
—लगाना, क्रि अ, उत्तन (वि) भू २ (भक्त्यादिषु) लीन-मग्न-निरत(वि) भू।
—लगाना, क्रि स, सतत अभिलष् (भ्वा प से) २ आत्मानं भक्त्यादिषु निमस्ज्-आसञ् (प्रे) ३ आक्षि (प्रे)।
—लीन, वि (स) मग्न, आसक्त, निरत।
लौकिक, वि (स) सामयिक, ऐहिक, प्रापंचिक, लौक्य २ व्यावहारिक आचारिक।
लौकी, स स्त्री (स लाव-बू दोनों स्त्री) अलाबु बू (स्त्री) दे 'कद्दू'।
लौटना, क्रि अ (हिं उलटना) दे 'वापस आना' तथा 'वापस जाना'।
लौटफेर, स पु (हिं लौटना+फेरना) बृहत् महा, परिवृत परिवर्तनम्।
लौटाना क्रि स, दे 'वापस करना'।
लौह, स पु (स न) दे 'लोहा' (१)। वि, दे 'लोहे का' ('लोहा' में)।

व

व, देवनागरीवर्णमालाया ऊनत्रिंशो व्यञ्जनवर्ण, वकार।
वक, वि (स) अराल, वृजिन, कुटिल, वक्र, आनत, जिह्म, वेल्लित, आभुग्न, कुटिल। स पु (स) नदीवक्रम्।
वकिम, वि (स) स्वल्प-किंचित्,-अराल-वक्र-वृजिन।
वंग, स पु [स वङ्गा (पु बहु)] वंगप्रान्त (=बंगाल)। (स न) त्रपु, त्रपु (न), रंग, नागज, कस्तीर २ सीसक सीसपत्रम्।
—भस्म, स पु [स भस्मन् (न)] रंगभस्मन् (न)।
वगन, स पु, दे 'बैंगन'।
वचक, वि तथा स पु (स) कपटिन, प्रतारक (, धूर्त ()।
वचना, सं स्त्री (स) वचन, प्रतारण-णा, माया, कपट, कैतव, वचन।
वचित, वि (स) प्रतारित, विप्रलब्ध २ हीन, रहित।
वदन, स पु (स न) वदना, प्रणाम, प्रणति (स्त्री) नमस्कार २ पूजा, अर्चा, आराधना ३ स्तुति-नुति (स्त्री)।
—वार, स स्त्री (स वदनमाल्य) वदनमाला स्रिजा, तोरणस्रज (स्त्री)।
वदना, स स्त्री (स) दे 'वदन' (१ ३)।
वदनीय, वि (स) नमस्य, वद्य २ पूज्य, अर्चनीय ३ स्तुत्य, नाना,त्य।
वदी, स पु (स न्दिन्) स्तुतिपाठक, मा(म)गध, चारण, २ कारागुप्त, वदी दि (स्त्री)।
—गृह, सं पु (सं न) कारा, कारा, गृह गारम।
वंद्य, वि (स) दे 'वदनीय'।
वंध्या, स स्त्री (स) दे 'बध्या'।
वश, स पु (स) कुल, अन्वय, अन्ववाय, गोत्र, अभिजन २ जाति (स्त्री), वग ३ कुटुंब, गृहजन, पुत्रकलत्रादीनि (न बहु) ४ वेणु, दृढग्रंथि, दे 'बांस'। ५ मुरली, वशी ६ पृष्ठास्थि (न), पृष्ठवश ७ मुक्तादीनां स्वारिश (न)।
—ज, स पु (सं) पुत्र २ सतान।
—धर, सं पु (स) वशज, सतति (स्त्री)।
—लोचन, सं पु [स -लो(रो)चना]वशशर्करा, वश-जा, वाशी शुभा।
—हीन, वि (स) निर्वंश २ अपुत्र।
वंशानुक्रम, स पु (स) वश, अन्वय क्रम, परम्परा (स्त्री)-अवलि वितति।
वंशावली, स स्त्री [स -ली-लि (स्त्री)] वश, क्रम श्रेणी परपरा।
वशी, स स्त्री (स) वशिका, मुरली दे।
—धर, स पु (स) मुरलीधर, श्रीकृष्ण
व, अव्य (फ़ा) च, दे 'और'।
वक स पु (स) दे 'बगला' २ राक्षस विशेष।
—वृत्ति, स स्त्री (अ) विडालवृत्ति, दभ।
वकालत, स स्त्री (अ) अभिभाषकता त्व, वाक्कीलत्व, व्यवहारदर्शकतात्व २ परप्रति निध्य, परकार्यसाधकत्व ३ दूतकर्मन् (न) ४ परपक्षमंडनम्।

—करना, क्र अ, परिपक्व समर्थ (चु) २ अभिभाषकवृत्ति उपजाव् (भ्वा प से)।
—नामा, स पु (अ+फा) अभिभाषकता पत्रम्।
वकील, स पु (अ) अभिभाषक, व्यवहार दर्शक, वाक्कील, पक्षवादिन् २ राज, दूत ३ प्रतिनिधि, प्रतिहस्तक ४ परपक्ष पोषक।
वकुल, स पु (स) दे 'बकुल'।
वकूफ, ■ पु (अ) ज्ञान २ बुद्धि (स्त्री)।
बे—, वि (फा+अ) निर्बुद्धि।
वक्त, स पु (अ) समय, काल २ अवसर ३ अवकाश ४ ऋतु ५ मृत्युकाल।
—की चीज़, स स्त्री, कालानकूलो राग।
—बे वक्त, क्रि वि कालेऽकाले वा, समयेऽसमये वा।
—काटना, मु, येन केन प्रकारेण काल या (प्रे यापयति) २ मनो विनुद् (प्रे)।
—पड़ना, मु, आपद् आपत् (भ्वा प से), उपनम् (भ्वा प अ)।
वक्तन् फौक्तन, क्रि वि (अ) कदा कदा, यदा यदा २ यथाकालम्।
वक्तव्य, वि (स) कथनीय, वचनीय २ हीन, वर्जित। स पु (स न) कथन, वचन ३ व्याख्यानम्।
वक्ता, स पु (स वक्तृ) वाग्मिन्, वक्तपटु २ व्याख्यातृ, उपदेशक ३ कथ(थि)क।
वक्तृता, सं स्त्री (स) वक्तृत्व, वाग्मिता, वाक्पाटव, भाषणकौशल २ व्याख्यान, भाषण, कथनम्।
वक्त्र, सं पुं (स न) मुख आस्य, लपन, वदनम् २ चञ्चु—चू (स्त्री) ३ प्रारम्भ, प्रस्तावनम् ४ अग्रभाग ५ कार्यारम्भ ६ परिधानभेद।
—प, स पु (सं) ब्राह्मण, विप्र २ दन्त, दशन, रदन, दाडिम।
—तुण्ड, सं पु (स) गणेश, गजवदन।
—शोधन, सं पु (स न) मुखशुद्धि (स्त्री) २ निंबुक, जंबीरम् ३ मातुलुंगम्।
वक्फ़, स पुं (अ) परोपकाराय दान २ धर्मार्थ उत्सृष्टा संपद् (स्त्री)।
—नामा, सं पुं (अ+फा) दानपत्रम्।
वक्फ़ा, स पु (अ) अवकाश २ उद्योग विश्रान्ति (स्त्री)।
वक्र, वि (स) दे 'बक' २ छलिन्, कपटिन्, धूर्त। स पु (स) शनैश्चर २ मंगल, भौम। (स न) नदीवक्र, वक्र।
—गामी, वि (स) कुटिलगति २ शठ, कुटिल।
—तुंड, स पु (स) गणेश २ शुक।
वक्रता, स स्त्री (स) जिह्मता, आनति. (स्त्री), कौटिल्य २ छल, कपट, शाठ्यम्।
वक्रोक्ति, स स्त्री (स) काकूक्ति (स्त्री) २ शब्दालङ्कारभेद (सा) ३ चमत्कृत कुटिल उक्ति (स्त्री)।
वक्षःस्थल, सं पु (स न) उरस्-वक्षस् (न), अङ्क, उत्संग, उर स्थलम्।
वग़ैरह, अव्य (अ) आदि, प्रभृति।
वचन, स पु (स न) भाषा, सरस्वती, वाणी दे २ उक्ति (स्त्री), कथन भाषण, वाक्य ३ एकत्वादिबोधक शब्दरूपभेद (व्या) ४ प्रतिज्ञा, संगर।
वजह, स स्त्री (अ) कारणं, हेतु।
वज़न, स पु (अ) भार, गुरुत्वम्।
वज़नी, वि (अ वजन) भारवद्, गुरु २ मान्य प्रभावशालिन्।
वज़ा, स स्त्री (अ वज़अ) रचना २ आकृति (स्त्री) ३ आकार, व्यवहार ४ दशा ५ रीति (स्त्री)।
वज़ारत, स स्त्री (अ) साचिव्य, अमात्यत्वं, मन्त्रित्वम्।
वज़ीफ़ा, स पु (अ) (छात्र)-वृत्ति -भृति (स्त्री)।
वज़ीर, स पु (अ) अमात्य, सचिव, मन्त्रिन्, मतधर, मन्त्र, धी-बुद्धि-सहाय।
वज़ीरी, सं स्त्री, दे 'वज़ारत'।
वज़ू, सं पु (अ) प्रार्थनायाः पूर्वं अंग प्रक्षालन (इस्लाम), अङ्गस्पर्श।
वजूद, सं पुं (अ) अस्तित्व, सत्ता २ शरीर ३ सृष्टि (स्त्री) ४ अभिव्यक्ति (स्त्री)।
वज्र, स पु (सं पुं न) कुलिश, पवि, अशनि (पु स्त्री), दंभोलि, ह्रादिनी, शतधार, अक्षोभ्य, स्वरु, गिरिकण्टक २. हीर १, हीरक, रत्न २ विद्युत् (स्त्री)। वि, कठिन-दृढ-संहत-कीकस-कठिन, दुर्भेद्य २ घोर, भीषण।

—धर, स पु (स) इन्द्र, वज्रिन्, वज्र पाणि-बाहु-मुष्टि ।
—पात, स पु (स) वज्रघात ।
—मय, वि (स) दे 'वज्र' वि (१)।
—हृदय, वि (स) पाषाणहृदय, निष्करुण, निर्दय।
वट, स पुं (स) न्यग्रोध, वृक्षनाथ, रक्तफल, क्षीरिन्, जटाल, अवरोहा, मह टाय ।
वटी, स स्त्री (स) गुलिका, वटिका, निस्नली, दे 'गोली'।
वटु, } स पु (स) बालक, माणवक
वटुक, } २ वर्णिन्, ब्रह्मचारिन्।
वडी, स स्त्री (स बटी) मापवटी।
वणिक्, स पु (स वणिज्) पण्यपाक्रयविक्रयिक २ वैश्य ।
वतन, स पु (अ) जन्म भू भूमि (द्वान (स्त्री) स्वदेश २ निवासस्थान ३ जन्मस्थानम्।
वतीरा, स पु (अ) प्रथा, रीति (स्त्री) २ आचार वृत्तम्।
वत्स, स पु (स) गोशिशु, तर्णक दोषक, तद्भव २ शिशु, बालक ।
वत्सतर, स पु (स) दम्य, दुर्दान, नि ।
वत्सतरी, स स्त्री (स) द्विहायनी गौ (स्त्री)।
वत्सर, स पु (स) अब्द, हायन, वर्षम्।
वत्सल, वि (स) अपत्यानुरागिन् सतन स्नेहिन्, पुत्रप्रेमिन् २ स्नेहिन्, प्रेमिन्।
वत्सलता, स स्त्री (स) (सन्तानादिविषय) अनुराग स्नेह ।
वदन, स पु (स न) मुख, आननम्।
वदान्य, वि (स) बहुप्रद, दानशील, उदार २ वल्गुवाक मधुरभाषिन्।
वदाम, स पु, दे 'बदाम'।
वदावद, वि (स) वाचाल, वाचाट।
वध, स पु (स) घात हनन, हत्या, विशसन, प्रमाथ, संहार ।
वधक, स पु (स) नरघातक, हन्तृ, हिंसक २ व्याध, शाकुनिक ३ मृत्यु ।
वधू, वधूटी, स स्त्री (स) नवोढा, नववधू, परिगृहीता २ पत्नी ३ पुत्रवधू ।
वध्य, वि (स) वधार्ह, शीर्षच्छेद्य, हतव्य ।
वन, सं पु (स न) अरण्य, विपिन, अटवी, कानन गहन, दाव, कान्तार २ वाटिका ३ जलम्।
—चर स पु (स) वन, चरिन् विहारिन् २ वन्य पशु मनुष्य ।
—माली, स पु (स) श्रीकृष्ण २ वनपुष्पमालाधारिन्।
—राज, स पु (स) सिंह ।
—वास, स पु (स) विपिनवसति (स्त्री)।
—वासी, स पु (स मिन्) आटविक, वनेचर वनौकस् वनिन् ।
—स्थली स स्त्री (स) काननभूमि, अरण्यप्रदेश ।
वनस्पति, स स्त्री (स प) पुष्पहीन फलिवृक्ष (जैसे बड, पीपल आदि) २ वृक्षमात्र ३ वट, न्यग्रोध ।
—शास्त्र, स पु (स न) वनस्पतिविज्ञानम्।
वनिता, स स्त्री (सं) नारी, रमणी २ प्रिया, कान्ता।
वनी, स स्त्री (स) वन, दे ।
वनी, स पु (स-निन्) वानप्रस्थ दे. २ दे 'वनवासी'।
वन्य, वि (स) वन-उद्भव उद्भूत-जात, अरण्यक आटविक २ असभ्य, अशिष्ट ३ क्रूर, हिंस्र।
वपन, स पु (स न) केशमुण्डन २ बीजाधानम्।
वपा, स स्त्री (स) मेदस् (न), वसा।
वपु, स पु [स वपुस् (न)] शरीरम्।
वप्र स पु (सं पु न) परिखा, साल, प्राकार २ क्षेत्र ३ धूलि (स्त्री) ४ तुंगतट ५ गिरिशिखर ६ वल्मीक-क मृत्तिकाचय ।
—क्रीडा, स स्त्री (स) वप्रक्रिया।
वफ़ा, स स्त्री (अ) प्रतिज्ञापालन २ आज्ञा, आज्ञा-अनुसरण पालन ३ विश्वसनीयता ४ सुशीलता।
—दार, वि (अ+फा) विश्वसनीय, विश्रब्ध, स्वामिभक्त २ आज्ञा, कारिन् पालक ३ कर्तव्यपालक।
—दारी, स स्त्री (अ+फा) दे 'वफ़ा'।
वबा, स स्त्री (अ) मरक, मारी, जन, मार, महामारी २ स्पर्शसंचरिरोग ।
वबाल, स पु (अ) भार, भर २ कष्ट, विपद् (स्त्री)।

वमन, सं पु (स न) वम, वमि (स्त्री), छर्दन, छर्दिका २ वान-वमन, द्रव्यम् ।
—करना, क्रि स, उद्,वम् (भ्वा प से), छर्द् (चु)।
वय संधि, स स्त्री (स पु) बाल्ययौवन मध्यकाल ।
वय, सं स्त्री [स वयस (न) आयुस् (न), वय क्रम, अतीतजीवनकाल ।
वयस्क, वि (स) प्रौढ, प्राप्तव्यवहार, दे 'बालिग' ।
वयस्य, स पु (स) समवयस्क २ मित्र, सखि (पु)।
वयस्या, स स्त्री (स) सखी दे ।
वयोवृद्ध, वि (स) स्थविर, जरठ्ण, जरित न, वृद्ध ।
वरच, अव्य (स) अपि तु, दे 'बल्कि' २ परन्तु, किंतु ।
वर, स पु (स) वृति (स्त्री), तपोभि देवेभ्यो याचितो मनोरथ २ (देवादीना) अनुग्रह, प्रसाद, आशिस् (स्त्री) ३ जामातृ ४ परिणेतृ, वोढृ ५ पति, भर्तृ । वि (स) उत्तम,श्रेष्ठ (उ ऋषिवर =ऋषिश्रेष्ठ)।
—मागना, क्रि स, वर याच (भ्वा आ से) वृ (स्वा उ से) वृ (क्र् उ से)।
—दान, स पु (स) मनोरथपूरण, अभीष्ट प्रदान २ दे 'वर' (२)।
—दायक, स पु (स) वरद प्रद-दातृ, वाञ्छितार्थद, समर्दक ।
—यात्रा, स स्त्री (सं) *जनेत, परिणेतृ प्रस्थानम् । दे 'बरात' ।
—वर्णिनी, स स्त्री (स) वर,अगना नारी, सुंदरी ।
वरक, स पु (अ) (पुस्तक-) पत्र पर्ण २ ३ सुवर्ण रजत, पत्रम् ।
—गरदानी, स्त्री, (अ +फा) ग्रन्थे विहगमदृष्टि (स्त्री), अध्ययनाडम्बर, अध्ययनाभास ।
—स्याह करना, मु, अत्यन्त-अत्यर्थ लिख् (तु, प स)।
वरगलाना, क्रि. स (फा वरगलानीदन) प्रलुभ् विमुह् (प्रे) २ प्रवृत्त्‌वन् (प्रे)।
वरज़िश, स स्त्री (फा) व्यायाम, दे ।
वरण, स पु (सं न) वृति (स्त्री), उन्मग्रहण २ भर्तृत्वेनाङ्गीकरण पतित्वेन स्वीकरण ३ पूजा ४ आवरण, आच्छादनम् ।
वरद, स पु (स) दे 'वरदायक' ('वर' के नीचे)।
वरदी, स स्त्री (अ) *नियतपरिधान, विशिष्ट-वर्गीय-वेष ।
वरन्, अव्य (सं वर>) अपि तु ।
वरना, अव्य (अ) अन्यथा, इतरथा, नो चेद् ।
वराटिका, स स्त्री (स) कपर्दिका, दे 'कौड़ी'।
वरानना, स स्त्री (स) सुंदरी, वरवर्णिनी, सुवदना स्त्री ।
वराह, स प (स) सूकर, दे 'सूअर' २. विष्णु, विष्णोरवतारविशेष ।
वरिष्ठ, वि (स) उत्तम श्रेष्ठ, पूज्यतम ।
वरुण, स पु (सं) पाशिन, प्रचेतस, अपां पति, जलेश्वर, मेघनाद २ जल ३ सूर्य ४ ग्रह विशेष (अं नेपच्यून)।
वरुणालय, स पु (सं) सागर ।
वरुथिनी, स स्त्री (स) सेना, सैन्यम् ।
वरे, क्रि वि [स अवारत (अव्य)] इत, एतत्स्थान प्रति, अत्र २ समीपे पेपन, अतिकटे (सब १ २ अव्य)।
वरेण्य, वि (स) प्रधान, मुख्य २ वरणीय, सत्कार्य ।
वर्कशाप, सं स्त्री (अं) प्रावेशन, शिल्प-शाल शाला ।
वर्ग, सं पु (स) (सजातीयानां) गण, जाति (स्त्री), समूह, श्रेणी णि (स्त्री) २ समस्थानवद् व्यञ्जनपंचक (उ कवर्ग, इ) ३ अध्याय, परिच्छेद ४ सम, चतुर्भुज चतुरस्र ५ समद्विघात, वर्गफल, कृति (स्त्री) (उ ३×३=९ वर्गोऽ)।
—फल, स पु (सं न) दे 'वर्ग' (५)।
—मूल, स पुं (सं न) पूरितसमाङ्कद्वय स्थायक, पद (उ ९ का वर्गमूल=३)।
वर्चस्, सं पु (स न) तेजस् (न), कांति (स्त्री)।
वर्चस्वी, वि (सं स्विन) तेजस्विन, कांतिमद् ।
वर्जन, स पुं (सं न) त्याग २ निषेध ।
वर्जनीय, वि (सं) त्याज्य, हेय, वर्ज्य २ निषेधार्ह ।
वर्जित, वि (सं) त्यक्त, उत्सृष्ट २ निषिद्ध, हेय ।
वर्ण, सं पुं (सं) आर्याणां ब्राह्मणादिविभाग

चतुष्टय, जाति (स्त्री) २ रंग राग ३ प्रकार, विधा ४ अक्षर ५ रूप, आकार।

—धर्म, स पु (स) ब्राह्मणादिकतव्यकलाप।

—नाश, स पु (स) वर्णअक्षर,लोप पन (निरुक्त) (उ, पृषनोदर से पृषोदर)।

—माला, स स्त्री (स) वर्णसमाम्नाय, अक्षरश्रेणी (उ अ से ह तक)।

—विकार, स पुं (स) अक्षरविक्रिया (निरुक्त) (उ गार्गी से गारी)।

—विचार, स पु (स) व्याकरणाविशेष, शिक्षा।

—विपर्यय, स पु (स) अक्षरव्यत्यास (निरुक्त, उ हिंस से सिंह)।

—वृत्त, स पु (स न) अक्षरछन्दस (न)।

—श्रेष्ठ, स पु (स) ब्राह्मण।

—संकर, स पु (स) वर्ण-जाति, मिश्रण २ मिश्रन, सक्करक, सांकरिक।

—हीन, वि (स) बहिष्कृत, अपांक्तेय।

वर्णन, स पु (स न) निरूपण, विवरण, व्याख्यान, सविस्तरकथन, वर्णना २ लवन, गुणकथन ३ रंजन, चित्रण।

—करना, क्रि स, विवृ (भ्वा उ से), निरूपृ, वर्ण (चु), सविस्तर कथ् (चु), व्याख्या (अ प अ)।

वर्णनीय, वि (स) वर्णयितव्य, निरूपयितव्य, वाच्येय, वर्ण्य।

वर्णित, वि (स) निरूपित, व्याख्यात २ उक्त, कथित।

वर्णी, स पु (स णिन) ब्रह्मचारिन् २ लेखक ३ चित्रकार।

वर्ण्य, वि (स) वर्णनीय, निरूपयितव्य, प्रस्तुत, उपमेय, व्याख्यातव्य।

वर्तन, स पु (स न) व्यवहार, वृत्त, चेष्टित, आचरण २ वृत्ति (स्त्री), आ-उप, जीविका ३ पात्रम्, भाजन, दे 'बर्तन'।

वर्तनी, स स्त्री (स) मार्ग, पथ, पथिन् २ पेषणभृत (स्त्री) ३ तर्कु (पु स्त्री), तर्कुटम्। ४ वर्णानुपूर्वी (स्त्री), वर्णाध्वनि (स्त्री) ५. वर्णविन्यास, शब्दाक्षरोच्चारणन्।

वर्तमान, वि (स) प्रचरि(लि)त, प्रचल सर्वसंमत २ उपस्थित, विद्यमान ३ आधुनिक(-की), अधुना इदानीं,-तन(-नी स्त्री)।

म पु (स) क्रियाका कालभेद (व्या) २ वृत्तान्त ३ प्रचलितव्यवहार।

वर्ती, स स्त्री (स) वर्ति तिका (स्त्री), दे 'बत्ती' २ शलाका।

—वर्ती, वि (स -तिन) -स्थ,-वासिन्।

वर्तुल, वि (स) गोल, मंडल चक्र,आकार।

वर्दी, स स्त्री, दे 'वरदी'।

वर्द्धन, स पु (स न) वृद्धि उन्नति (स्त्री) २ समृद्धि (स्त्री)।

वर्मा, स पु (स वर्मन्) क्षत्रियोपाधि।

बर्बर, स पु (स) देशविशेष २ बर्बरवासिन् ३ असभ्य, ग्राम्य ४ म्लेच्छ, बबर, बवर, अनार्य।

वर्ष, स पु (स पु न) अब्द, हायन, समा, शरद् (स्त्री), स, वत्सर, संवत् (अव्य) २ मेघ ३ वृष्टि (स्त्री) ४ महाभूभाग।

—गांठ, स स्त्री (स+हिं) वर्षवृद्धि (स्त्री), जन्म, दिवस दिन तिथि।

—फल, स पु (स न) वार्षिकग्रहफल दर्शक पत्रिका।

वर्षा, स स्त्री [सं वर्षा (स्त्री बहु)] प्रावृष् (स्त्री), मेघागम, घनकाल, जलार्णव, घनागम २ वृष्टि (स्त्री), वर्षण, वर्षण, गोघृत, शरामृतम्।

—काल, स पु (स) दे 'वर्षा' (१)।

—होना, क्रि अ, वृष् (भ्वा प से), वृष्ट भू। मु, अनिमा अवपत् (भ्वा प से)।

वलद, स पु (अ वल्द) पुत्र २ सन्तान।

वलय, स पु (स पु न) कटक, आवापक २ वेष्टन ३ मंडलम्।

वलयित, वि (स) परिवेष्टित, परिवृत।

वलवला, स पु (अ) उत्साह, औत्सुक्यम्।

वलाहक, स पु (स) मेघ, जलद २ पर्वत।

वलि, स स्त्री (स) दे 'वली'।

वलित, वि (स) न(ना)मित, आकुञ्चन २ आवर्जित, ग्रह ३ वलयित, दे ४ वलीमत्, वलिभ, वलिन ५ आच्छादित ६ सहित ७ लग्न।

वली, स स्त्री (सं) वलि (स्त्री), वली-लि (स्त्री), दे 'झुर्री' २ श्रेणी अवली लि (स्त्री) ३ रेखा ४ पुट, भग।

वली, स पु (अ) स्वामिन्, प्रभु २ शासक ३ साधु ।
—अह्द, स पु (अ) युवराज ।
वल्कल, स पु (स पुं न) वक्र के वृक्षत्वचा च (स्त्री) चोच शल्क, छल्ली २ वल्कलवस्त्र, वसनवस्त्रम् ।
वल्द स पु (अ) दे वल्द' ।
वल्दियत, स स्त्री (अ) पितृनामन् (न) ।
वल्मीक, स पु (स) वामलूर, वाम्रकूट, कृमिशैलः नाकु २ वाल्मीकि मुनि ।
वल्लभ, वि (स) प्रियतम दयित। स पु (स) नायक प्रियतम, कान्त २ पति, भर्तृ ।
वल्लभा, वि (स) प्रियतमा, कान्ता, दयिता। स स्त्री (स) प्रिया, पत्नी भार्या ।
वल्लरी रि, स स्त्री (सं) लता, वल्ली लि (स्त्री) २ मञ्जरी।
वशवद, वि (स) वशवर्तिन् अनुग, आज्ञाकारिन् । स पु (स) सेवक दास ।
वश, स पु (स पु न) अधिकार, प्रभुत्व २ शक्ति (स्त्री) प्रभाव, सामर्थ्य ३ अधीनता, आयत्तता ४ इच्छा, कामना। वि (स) अधीन, आयत्त ।
—(में) करना, क्रि स, वशीकृ दम् (प्र प मे), वश नी (भ्वा प अ), नियम् (भ्वा प अ)।
—वर्ती, वि (स -वर्तिन्) वशग, वशानुग, -वश,-अधीन -आयत्त परतन्त्र।
वशिष्ठ सं पु, दे 'वसिष्ठ' ।
वशी, वि (सं शिन्) निगृहीतमनस्, संयमिन् २ अधीन,-आयत्त ३ शक्तिमत्, समर्थ।
वशीकरण, स पु (सं न) (मणिमन्त्रौषधादिभिः) स्ववशीकरणं २ दम मन निग्रह इ०, वशीकार ।
वशीकृत, वि (सं) वश नीत २ मन्त्रमोहित ३ मुग्ध ।
वशीभूत, वि (स) अधीन, आयत्त २ परवशग ।
वश्य, वि (स) विनेय शिक्ष्य, दम्य।
वश्यक, वि (सं) आज्ञावचन, अनुवर्तिन् भाविन् सेवित् पाल्य ।
वश्यका, सं स्त्री (सं) आज्ञानुवर्तिनी पत्नी ।
वश्यता, सं स्त्री (स) अधीनता, परवशता, पराधीनता ।
वश्या, स स्त्री (सं) वशवर्तिनी, आज्ञानुवर्तिनी, पत्नी ।
वषट्, अव्य (स) देवनिमित्तकहविस्त्यागमंत्र ।
—कार, स पु (सं) होम, देवयज्ञ ।
वसंत, सं पु (सं) ऋतुराज, दे 'वसंत' २ शीतलारोग ३ मसूरिकारोग ४ रागभेद ५ तालभेद ।
—तिलक, स पु (सं न -का-स्त्री) वर्णवृत्त भेद ।
—पंचमी, स स्त्री (सं) श्रीपंचमी, माघ शुक्लपंचमी ।
वसती, वि, दे 'वसती' ।
वसती, स स्त्री (स) वसतिः वस्ति (स्त्री), ति, वास २ गृह, सदन (न) ।
वसन, स पुं (स न) वस्त्र, वासस् (न) ।
वसिष्ठ, स पु (स) ऋषिविशेष २ सप्तर्षिमण्डलान्तर्गतो नक्षत्रविशेष ।
वसीका, स पु (अ) समय प्रतिज्ञा संविद्, लेख पत्रम् ।
—नवीस, स पु (अ + फ़ा) दे 'अर्ज़ीनवीस' ।
वसीयत, स स्त्री (अ) (मरणानन्तरकृत्य) अन्त्यादेश २ रिक्थविभागव्यवस्था।
—करना, क्रि स, मृत्युपत्रेण दा (जु उ अ)-ऋ (प्रे, अर्पयति) ।
—नामा, स पु (अ + फ़ा) मृत्यु पत्र लेख ।
वसीला, स पु (अ) उपाय, साधन, २ साहाय्य ३ संबंध ।
वसुंधरा, स स्त्री (स) वसुधा दा, पृथिवी, दे ।
वसु, स पु (स न) धन २ रत्न ३ सुवर्ण ४ जलम् । (सं पुं) गणदेवताविशेष, अष्ट वसव (धरो ध्रुवश्च सोमश्च विष्णुश्चैवानिलो ऽनलः । प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टौ क्रमात् स्मृता) २ वसुभ ३ रश्मि । अष्ट इति संख्या ४ सूर्य ५ विष्णु ६ सज्जन ।
वसुदेव, स पु (सं) कृष्णपितृ आनकदुन्दुभि ।
वसुधा, सं स्त्री (स) वसुदा, वसुमती, पृथिवी, दे ।
वसूल, वि (अ) प्राप्त, लब्ध २ समाहृत ।
वसूली, स स्त्री (अ वसूल) प्राप्ति (स्त्री) अधिगम २ समाहार ।
वस्ति, सं स्त्री (स पु स्त्री) नाभेरधोभाग, दे 'पेड़ू' २ मूत्राशय ३ रेचनयंत्र, अहत, दे 'पिचकारी' ।

—कर्म, स पु [स कर्मन् (न)] यंत्रेण मल मूत्रनिष्कामनम् ।
वस्तु, स स्त्री (स न) पदार्थ, द्रव्य २ सत्य ३ वृत्तान्त ४ नाटकीयाख्यान, कथावस्तु(न)।
वस्तुत, अव्य (स) यथार्थत, तत्त्वत, याथार्थ्येन, सत्य, यथार्थम् ।
वस्त्र, स पु (स न) लि वसन, वासस (न) आच्छादन चेल क, अंशुक, अंबर, पट, निचय, परिधान, छाद, वास, कपट ।
वस्फ़, स पु (अ) सद्गुण, विशेष धर्म २ स्तुति (स्त्री)।
वस्ल, स पु (स) संगम समागम, मिलनम् ।
वह, सर्व (स स) तद् तथा अन्य के रूप। [उ स, असौ (पु), सा, असौ (स्त्री), तद्, अद (न)]।
वहन, स पु (स न) प्रापण, स्थानान्तरे नयनं, २ धारण, उत्थापनम् ।
वहम, सं पु (अ) भ्रम, भ्रान्ति (स्त्री) २ मिथ्या, शंका-सन्देह ३ मिथ्याधारणा ४ •र्थकल्पना, कुक्षिरोग ।
वहमी, वि (अ वहम) संशयात्मन्, शंकाशील, आशङ्किन् ।
वहशी, वि (अ) वन्य, आरण्य २ असभ्य, अशिष्ट ३ दुर्दान्त, दुर्दमनीय ।
वहाँ, क्रि वि (हिं वह) तत्र तस्मिन् स्थाने।
—से, क्रि वि, तत, तस्मात् स्थानात् ।
वहीं, क्रि वि (हि वहा+ही) तत्रैव, तस्मिन्नेव स्थाने।
वही, सर्व (हिं वह+ही) स एव, असावेव (पु), सैव, असावेव (स्त्री), तदेव, अद एव (न) इ ।
वह्नि, स पु (स) अनल अग्नि, दे 'आग'।
वाञ्छनीय, वि (स) स्पृहणीय, कमनीय, काम्य २ वाञ्छित, दे ।
वाञ्छा, स स्त्री (सं) इच्छा, अभिलाष, कामना।
वाञ्छित, वि (स) अभिलषित, अभीष्ट।
वा, अव्य (स) अथवा। २ दे 'वह'।
वाइदा, सं पु, दे 'वादा ।
वाइस चान्सलर, स पु (अ) विश्वविद्यालयस्य उपाध्यक्ष, कुलपति ।
वाइस प्रेसिडेंट, स पु (अ) उपसभापति, उपप्रधान ।
वाइसराय, स पु (अ) राज निर्दिष्ट ।
वाक्, स पु [स वाच (स्त्री)] वाणी, वाक्य २ सरस्वती शारदा ३ वागिन्द्रिय, वाक्शक्ति (स्त्री)।
—पटु, वि (स) वाक्कुशल, वाग्मिन् ।
—पटुता स स्त्री (स) वाक्पाटव, वाग्मिता, वाग्वैदग्ध्यम् ।
—पारुष्य, स पु (स न) अप्रियवाक्योच्चारण कटुभाषणम् ।
—संयम, स पु (स) वाग्यम, मितवाच् (स्त्री)।
वाक, स पु (स) वाक्य, वचनम् उक्ति (स्त्री)। ■ स्त्री, वाणी, सरस्वती, शारदा।
वाक़ई, क्रि वि (अ) वस्तुत, यथार्थत । वि, यथार्थ सत्य।
वाक़ा, वि (अ) स्थित, वर्ति, स्थ ।
वाक़ि(क़)आ, स पु (अ) घटना, वृत्त २ समाचार ।
वाक़िफ़, वि (अ) परिचित, अभ्यस्त २ ज्ञातृ बोद्धृ अभिज्ञ ३ अनुभविन् ।
—कार, वि (अ+फा) कार्याभिज्ञ, कुशल, निष्णात।
वाक़फ़ियत, सं स्त्री (अ) परिचय, परिज्ञान २ अनुभव ।
वाक्य, स पु (स न) पदसमूह, योग्यताकांक्षासक्तियुक्त पदोच्चय २ कथन, वचन ३ सूत्र ४ आभाणक ।
वागा, स स्त्री (स) वल्गा, दे 'लगाम'।
वागीश, ■ पु (स) बृहस्पति २ ब्रह्मन् (पु) ३ वाग्मिन्, कवि । वि (स) सुवक्तृ, सुस्वरवत्।
वागुरा, स स्त्री (स) मृगबन्धनार्थं जालभेद ।
वागुरिक, सं पु (स) व्याध, शाकुनिक ।
वाग्जाल, स पु (स न) वाग्डंबर, शब्दडंबर, वाक्प्रपंच ।
वाग्दण्ड, स पु (स) निर्भर्त्सना, अधिक्षेप ।
वाग्दत्ता, स स्त्री (स) •नियतवरा, •वाचा पिता (कन्या)।
वाग्दान, सं पु (सं न) कन्यादानप्रतिज्ञा।
वाग्दुष्ट, वि (स) कटुभाषिन् २ अभिशप्त।
वाग्देवी, सं स्त्री (स) सरस्वती, दे ।

वाग्मी, स पु (स वाग्मन्) वाग्विदग्ध वाक्पटु सुवक्तृ २ पंडित प्राज्ञ ३ बृह स्पति ।

वाग्विलास, स पु (स) सानन्दो वार्तालाप ।

वाङ्मय, वि (स) वाक्यात्मक २ वाग्विदिन (वार्ताति)। स पु (स न) भाषा २ साहित्यम् ।

वाच, स स्त्री (स) वाणी २ वाक्यम् ।

वाच स स्त्री (अ) *घटिका ।

वाचक वि (स) ज्ञापक, सूचक, बोधक ३ पाठक वाचयितृ ३ वक्तृ ।

—लुप्ता, स स्त्री (स) उपमालंकारभेद ।

वाचन स पु (स) पठन अध्ययन, उच्चारण २ कथन ३ प्रतिपादनम् ।

वाचस्पति, स पु (स) बृहस्पति, सुविद्वस ।

वाचा, स स्त्री (सं) वाणी, गिरा २ वाक्य, वचनम् ।

वाचाट-ल, वि (स) बहुभाषिन्, मुखर, जल्प(ल्पा)क २ वाक्पटु ।

वाचाल(ट)ता, स स्त्री (स) मुखरता, बहुभाषिता २ वाग्वैदग्ध्यम् ।

वाचिक वि (स) वाग्विषयक २ मौखिक ।

वाची, वि (स वचिन्) मूलक बोधक ।

वाच्य, वि (स) वचनीय, कथनीय २ अभिधेय, अभिधावृत्त्या बोध्य (अर्थ) ३ कुत्सित, हीन ।

वाच्यार्थ, स पु (स) अभिधेय-मूलार्थ, अर्थ शब्दार्थ ।

वाच्यावाच्य, वि (सं) भद्राभद्र (वाक्य दि)।

वाज़, स पु (अ) उपदेश, धार्मिक व्याख्यानम् ।

वाजपेय, स पु (स पु न) श्रौतयागभेद ।

वाजपेयी, स पु (स यिन्) कृतवाजपेय २ ब्राह्मणोपाधिभेद ३ सुकुल्ज ।

वाजसनेय, स पु (सं) यजुर्वेदस्य शाखा विशेष २ याज्ञवल्क्य ।

वाजिब-बी, वि (अ) उचित, योग्य, युक्त ।

वाजी, स पुं (स जिन्) अश्व, घोटक २ आमिश्रामस्तु (न), घोरट (=फटे हुए दूध का पानी) ३ पक्षिन् ४ बाण ५ वासक ।

—कर, वि (सं) कामोद्दीपक (औषधादि)।

—करण, स पु (स न) वीर्यवृद्धिकर प्रयोग ।

वाट, स पु (स) मार्ग २ वास्तु ३ मण्डप ।

वाटर, स पु (अ) जल, वारि (न) २ जलाशय ३ मूत्रम् ४ हीराभा ।

—प्रूफ, वि (अ) जलाभेद्य, जलाभेद्यम् ।

—फाल, स पु (अ) जलप्रपात ।

—वर्क्स, स पु (अ) *जलयन्त्र २ जलय न्त्रालय ।

वाटिका, स स्त्री (स) क्षुद्र आराम उद्यान दे 'बगीचा'।

वाडवाग्नि, स स्त्री (स) वाडव व(वा)ड वानल ।

वाण, स पु (स) बाण, दे ।

वाणिज्य, स पु (स न) क्रयविक्रय, निगम, वणिक्कर्मन् (न), व्यापार ।

वाणी, स स्त्री (सं) दे 'वाणी' ।

वात, स पु (स) पवन, वायु, दे । २ देहस्थवायु ३ रोगभेद ।

—चक्र स पु (स न) चक्रवात, वातावर्त ।

—ज, वि (स) वातप्रकोपज (रोगादि)।

—जात, स पु (स) हनुमन् मारुति ।

—तूल, स पु (स न) वृद्धसूत्रक, ग्रीष्म हासम् ।

—ध्वज, स पु (स) वातरथ, मेघ ।

—पट, सं पु (स) ध्वज, पताका ।

—पुत्र, स पु (स) हनुमत् २ भीम ३ महाधूर्त ।

—प्रकोप, स पु (सं) (शरीरे) वायुवृद्धि (स्त्री)।

—रोग सं पुं (स) वायुजन्य व्याधि, वातरक्त, अनिलामय, दे 'गठिया'।

—वैरी, सं पु (सं रिन्) एरण्ड, दे ।

वाताद, सं पुं (सं) नेत्रोपमफल, वाताम, वातवैरिन् । (फल) वाताम, वातामम् (दे बादाम)।

वातायन, सं पु (स न) क्षुद्रवातिका २ दे 'रोशनदान'।

वातुल, सं पु (सं) उन्मत्त, दे 'बावला'।

वात्सल्य, स पुं (सं) रसविशेष (काव्य)। (स न) पित्रोः अपत्यस्नेह, वत्सलता।

वात्स्यायन, सं पु (सं) न्यायसूत्रभाष्य कार २ कामसूत्रप्रणेतृ, पक्षिल, मल्लनाग ।

वाद, स पु (स) वादानुवाद, वादप्रतिवाद, ऊहापोह, *शास्त्रार्थ, दे। २ सिद्धान्त, राद्धान्त ३ कलह, विवाद।
—विवाद, स पु (स) दे 'वाद' (१)।
वादक, स पु (स) वाद्यवादयितृ २ वक्तृ ३ वादिन्, तार्किक।
वादन, स पु (स न) वाद्यवादित्र ध्वनन २ वाद्य, दे।
बादरायण, स पु (स) महर्षि वेदव्यास।
वादा, स पु (अ वअदः) नियतसमय २ प्रतिज्ञा, वचन, सगर।
वादानुवाद, स पु (स) दे 'वाद' (१)।
वादी, स पु (स -दिन्) अभियोक्तृ, अभिनोदिन्, अर्थिन्, शिरोवर्तिन्, दे 'मुद्दई' २ प्रस्तावक, प्रश्नोदृ ३ वक्तृ।
—प्रतिवादी, स पु (स वादिप्रतिवादिनौ) अर्थिप्रत्यर्थिनौ २ पक्षिप्रतिपक्षिणौ (सब द्वि)।
वाद्य, स पु (स) वादित्र, आतोद्य।
वानप्रस्थ, स पु (स) तृतीयाश्रमिन्, वानप्रस्थ, आरण्यक, तापस २ तृतीयाश्रम ३ ४ मधूक पलाश वृक्ष।
वानर, स पु (स) कपि, मर्कट, दे 'बंदर'।
वानरी, स स्त्री (स) मर्कटी, वलीमुखी।
वापस, वि (फ़ा) वि प्रत्या प्रतिनि-वृत्त, प्रति-गत-आगत-यात-आयात।
—आना, क्रि अ, प्रत्यागम्, प्रत्यावृत् (भ्वा आ से)।
—करना, क्रि स, प्रतिगम, प्रतिनिवृत् (प्रे) २ प्रतिदा (जु उ अ), प्रति क्र (प्रे प्रत्यर्पयति)।
—जाना, क्रि अ, प्रति-याम् निवृत्।
—लेना, क्रि स, प्रत्यादा, पुन स्वीकृ।
—होना, क्रि. अ, दे 'वापस जाना' २ प्रतिदा-अदा (कम)।
वापसी, वि (फ़ा वापस) प्रत्या-प्रतिनि-वृत्त। स स्त्री, प्रति-गमन-आगमन-आवृत्ति (स्त्री) २ प्रति-दान-अर्पण-आदानम्।
वापी, स स्त्री (स), वापि (स्त्री.) दीर्घिका, वापिका।
वाबस्ता, वि (फ़ा) बद्ध, संयत, २ लग्न, श्लिष्ट ३ संबद्ध, संग्रथित।
वाम, वि (स) सव्य, दक्षिणेतर, दे 'बयाँ' २ प्रतिकूल, विरुद्ध प्रतीप ३ कुटिल ४ दुष्ट, नीच ५ अभद्र, अमगल।
—देव, स पु (स) शिव।
—मार्ग, स पु (स) वामाचार वेदविरुद्ध सम्प्रदायविशेष।
—मार्गी, स पु (स गिन्) वामाचारिन्, वेदविरोधिन्।
—लोचन, स स्त्री (स) वामाक्षी, सुंदरी, शोभना।
वामन वि (स) खर्व, ह्रस्व, लघुकाय। स पु (स) खट्टन, खट्टेरक, खर्व, ह्रस्व २ विष्णु ३ शिव ४ पुराणग्रंथविशेष।
—अवतार, स पु (स वामनावतार) अदितिगर्भतो विष्णो पंचमावतार।
वामनी, स स्त्री (स) खर्वा खट्टनी।
वामा, स स्त्री (स) नारी, रामा, २ दुर्गा, गौरी ३ लक्ष्मी, सरस्वती ४ स्कन्दानुचरी।
वामी, स स्त्री (स) वडवा, २ रासभी ३ शृगाली।
वायव्य, त्रि (स) १ ३ वायु-संबंधिन् देवताक निर्मित, वायवीय।
—कोण, स पु (स) पश्चिमोत्तर-कोण दिशा, वायवी।
वायस, स पु (स) काक, ध्वाक्ष।
—वायु, स स्त्री (स पु) वात, पवन, अनिल, गंधवाह, समीरण, मरुत्, मातरिश्वन्, श्वसन, मातरिश्वन्, सदागति, अन्तप्राण, नभस्वत्, पवमान, प्रभंजन, धूलिध्वज, फणिप्रिय।
—कोण, स पु (स) पश्चिमोत्तरदिशा, वायवी।
—गुल्म, स पु (स) वातचक्र, चक्रवात, वात्या २ जल-गुल्म आवर्त ३ वातगुल्म, उदररोगभेद।
—पुत्र, स पु (स) पवन-सुत पुत्र, हनुमत्।
—भक्षण, स पु (स) वायु, भक्ष-भुज्, यतिभेद २ पवनाशन, सर्प।
—मंडल, स पु (स न) अंतरि(री)क्ष, गगन २ वातावरणम्।
वारट, स पु (अ) अधिकारपत्रम्।
—गिरफ्तारी, स स्त्री (अ + फ़ा) *आसेधाधिकारपत्रम्।

—तलाशी, स पु (अ +फा) अन्वेषण विचारपत्रम् ।

—रिहाई, स पु (अ +फा) (कारागार विम्य) मोचनाधिकारपत्रम् ।

वरवार, क्रि वि, दे 'बारबार' ।

वार, स पु (स) प्रहार, क्रम २ अवसर समय ३ सप्ताह-दिन-दिवस वासर ४ द्वार ५ आघात, प्रहार, आक्रमण ६ आवरण ७ समूह ८ पर-म् ।

—करना, क्रि स, अभिद्रु (भ्वा प अ) अवस्कन्द (भ्वा प अ) आक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ) ।

—खाली जाना, मु, लक्ष्य न व्यध (कर्म) अस्त्र अपलक्ष्य पत् (भ्वा प से) २ युक्ति निष्फलीभू ।

वारक, वि (स) निषेधक, प्रतिबंधक ।

वारण, स पु (स न) निषेध, प्रतिषेध, २ विघ्न, अन्तराय । (स पु) गज, वाण वार, कवच-चम् ।

वारदात, स स्त्री (अ) दुर्घटना २ विप्लव, संक्षोभ ।

वारना, क्रि स (स वारण>) अनिष्टवारणाय उत्सृज् (तु प अ)त्यज (भ्वा प अ) । स पु., दानिकर उत्सर्ग, कष्टवारक दानम् ।

वारनारी, स स्त्री (स) वारमुखी, वारांगना, वेश्या, वारवनिता ।

वारपार, स पु [स अवारपारीणे (पु न)] (नद्यादीनां) तटद्वय २ अन्त, सीमा । क्रि वि, अवारात् पारं यावत् ३ निकटपार्श्वात् परपार्श्वपर्यन्तम् ।

वारांगना, सं स्त्री (स) वारनारी, दे ।

वारा, सं पु (स वारण>) मितव्यय २ लाभ ।

वाराणसी, स स्त्री (स) काशी, शिवपुरी, तप स्थली, व(वा)राणसी ।

वारान्यारा, स पु (हिं वार+ पारा) निर्णय, निश्चय, निर्धारण २ समाधान, संधि, शम-मनम् ।

वारापार, सं पु तथा क्रि वि, दे 'वारपार' ।

वाराह, सं पु (स) वराह, दे ।

वारि, स पुं (सं न) पानीय, जल, दे ।

—चर, सं पु (स) जलजन्तु २ मत्स्य ।

—ज, सं पु (स न) कमल, वारिजन्तु-शङ्ख ।

—द, स पु (स) वारि, धर-वाह, मेघ ।

—धि, स पु (स) वारिनिधि, सागर ।

—यन्त्र, स पु (स न) जलयन्त्र, दे 'फव्वारा' ।

वारित, त्रि (स) निरुद्ध, रुद्ध, निवारित २ निषिद्ध, प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट ३ आच्छादित, आवृत ।

वारिद¹, स पु (स) मेघ, जलद ।

वारिद², त्रि (अ) आगत, आयात २ प्रकट, आविर्भूत ।

वारिस, स पु (अ) अंश, हर हारिन् भाज्, दायाद, दायिक २ उत्तराधिकारिन् ।

—होना, क्रि अ, पैतृकसंपदधिकारी अस् (दि आ से), दायाद्रीभू ।

वारीश, स पु (स) वारीश, सागर ।

वारुणी, स स्त्री (स) मदिरा, मद्य, सुरा २ पश्चिमदिशा ३ वरुणानी ।

वार्ड, स पु (अ) रक्षा, गोपन २ पुर-विभाग ३ कारागारादीनां विभाग ।

वार्डर, स पु (अ) रक्षक २ कारारक्षक ।

वार्त्ता, स स्त्री (सं) विषय, प्रसंग २ किंवदंती, जनश्रुति (स्त्री) ३ समाचार, वृत्त ४ वार्तालाप दे ।

वार्त्तालाप, स पु (स) संलाप, संवाद, संभाषण, आलाप ।

—करना, क्रि अ, सलप्-संवद् (भ्वा प से), संभाष् (भ्वा आ से) ।

वार्त्तिक, स पु (स न) उक्तानुक्तदुरुक्तार्थ प्रकाशको ग्रन्थ, टीका । (सं पु) चर २ दूत ।

वार्द्धक्य, स पु (सं न) वार्द्धक, वृद्धत्व, वृद्धावस्था, स्थविरत्व ।

वार्षिक, वि (स) आब्दिक, वात्सरिक, सांवत्सरिक २ प्रावृषेण्य ।

वाल टेयर, सं पु (अ) स्वयंसेवक, स्वेच्छासेवक ।

वाल(लि)दैन, सं पु (अ) पितरौ, मातापितरौ (दोनों द्वि) ।

वालिद, सं पुं (अ) पितृ, जनक ।

वालिदा, स स्त्री (अ) मातृ (स्त्री), जननी ।

वाल्मीकि, स पुं (सं) रामायणप्रणेतृमुनि विशेष, व(वा)ल्मीक, प्राचेतस, आदकवि, कविश्रेष्ठ ।

वावदूक, सं पु (स) वाग्मिन् २ वाचाल ।

वावैला, स पु (अ) विलाप २ कोलाहल ।
वाष्प, स पु (सं) उष्मन्, दे 'भाप' २ अश्रु (न)।
वासंती, स स्त्री (स) माधवी, प्रहसंती, वसनजा २ यूथी।
वास, सं पुं (स) अव,-स्थान-स्थिति (स्त्री) नि,वस्ति (स्त्री) २ गृह, भवन ३ सु,गंध ४ दुर्,गंध ।
वासक, स पु (स) अटरूष, वैद्यमिषङ्, मातृ (स्त्री), वासा-सक ।
वासकेट, स स्त्री (अ वेस्टकोट) वासकटि ।
वासना, स स्त्री (स) कामना, अभिलाष, वाञ्छा २ संस्कार, भावना, स्मृतिहेतु ३ ज्ञान ४ प्रत्याशा ५ देहात्मबुद्धिजन्यो मिथ्यासंस्कारः (न्याय)।
वासर, स स्त्री (स पु न) दिवस, दिनम्।
वासव, स पु (स) इन्द्र, दे ।
वासित, वि (स) भावित, सुरभीकृत २ वस्त्रवेष्टित ३ पर्युषित।
वासी, स पु (स-सिन्) निवासिन्, वास्तव्य।
वासुदेव, स पु (स) श्रीकृष्ण ।
वास्तव, वि (स) सत्य, यथार्थ, अवितथ।
—में क्रि वि, वस्तुत, सत्यम्।
वास्तविक, वि (स) तथ्य, सत्य, तात्त्विक, दे 'वास्तव'।
वास्ता, स पु (अ) संबंध, संपर्क ।
—पड़ना, मु, व्यवहारावसर जन् (दि आ से)।
वास्तु, सं पु (स पु न) वेश्मभू, गृहपोतक २ गृह, सौध ।
—विद्या, स स्त्री (स) भवननिर्माणकला, स्थापत्यम्।
वास्ते, अव्य (अ)-अर्थं,-निमित्तम्, चतुर्थी विभक्ति से भी (उ., तेरे वास्ते = त्वदर्थं, तुभ्यम्)।
वाह[1], अव्य (फ़ा) साधु, वर, भद्र, शोभन २ अद्भुत, आश्चर्य ३ धिक् ४ हत।
वाह, अव्य, साधु-साधु इ ।
—करना, क्रि स, अभि प्रति-नद् (भ्वा प से), साधुवादान् दा २ करतलध्वनिं कृ ।
—होना, मु, अभि प्रति-नद् (कर्म)।
वाहक, स पु (स) भारवह, भारिक २ सारथि, यन्तृ।
वाहन, स पुं (स न) यान, युग्य, दे 'सवारी'।
वाहवाही, स स्त्री (फ़ा) ख्याति विश्रुति (स्त्री), साधुवाद, प्रशंसा।
—लेना या लूटना, मु, यश वितन् (त उ से), साधुवादान् लभ् (भ्वा आ अ), प्रशंसापात्र भू ।
वाहिद, वि (अ) एक, एकाकिन्, एकल, अद्वितीय।
वाहिनी, स स्त्री (स) सेना २ नदी ३ सैन्यभेद (=८१ हस्ती, ८१ रथ, २४३ घोड़े, ४०५ पैदल)।
—पति, स पु (स) सेनापति ।
वाहियात, वि (अ वाही+फ़ा यात) व्यर्थ, निरर्थक २ दुष्ट, खल।
वाहीतबाही, वि (अ+फ़ा) निरर्थक, निष्प्रयोजन २ असंगत, असंबद्ध। स स्त्री, म, अल्प्र पन २ गालि (स्त्री), अपमानवचनम्।
वाह्य, वि (सं) वोढव्य २ वोढृ।
विंदु, स पु, दे 'बिंदु'।
विंध्याचल, स पुं (स) विंध्य, पर्वतविशेष ।
वि, उप (स) वैशिष्ट्यनिषेधादिबोधक उपसर्ग (व्या)।
विकच, वि (स) विकसित, उत्फुल्ल २ केशहीन।
विकट, वि (स) कठिन, दुस्साध्य, दुष्कर २ भीम, भीषण, भयप्रद ३ विशाल, विस्तीर्ण ४ दुर्गम ५ वक्र, कुटिल।
विकराल, वि (स) दे 'विकट' (२)।
विकल, वि (स) विह्वल, उद्विग्न, वि,आकुल, अधीर २ खंडित, अपूर्ण।
विकलांग, वि (स) अ,पौगंड, अंगहीन, विकल-न्यून,-अङ्ग इन्द्रिय।
विकला, स स्त्री (स न) कलायाः षष्टितमो भागः ।
विकल्प, स पु (स) भ्रम, भ्रांति (स्त्री) २ संदेह, संशय ३ विभाषा (व्या) ४ विरुद्ध विपरीत, विचार-कल्पना ५ चित्तवृत्तिभेद (यो) ६ अर्थालंकारभेद (सा) ७ अज्ञानकल्प ८ ऐन्द्रियविषय ।

विघ्न, स पु (स) व्याघात, अतराय, प्रत्यूह, प्रतिबंध, बाध धा, रोध, प्रति वि, ष्टम्भ ।
—कारी, वि (स रिन्) बाधाजनक विघ्न,-कर-कर्तृ विघातिन् ।
—नाशक, स पुं (स) विघ्न,-विनायक पति-राज नायक, गणेश ।
विचक्षण, वि (सं) विद्वस्, बुद्धिमत् २ कुशल, दक्ष, निपुण ।
विचरण, स पु (स) चलन, गमन, २. भ्रमण, पर्यटन, विहरणम् ।
विचल, वि (स) कम्पमान, कम्प्र २ चञ्चल, चल ।
विचलता, स स्त्री (स) अस्थैर्य, चाञ्चल्य २ वि आकुलता ।
विचलित, वि (स) पतित, स्खलित २ लोल, अधीर, चञ्चल ।
विचार, स पु (स) मात (स्त्री), कल्पना, भावना, सकल्प, तर्क, मत, अभिप्राय २ चिंतन, ध्यान, आलोचन, विचारण-णा, तत्त्व-निर्णय, वितर्क-ण, मनसा कल्पन, विवेचनं ३ व्यवहारदर्शन, विचारकरणम् ।
—शील, वि (स) विचारवत्, विवेकिन् समीक्ष्य विमृश्य,-कारिन् ।
—शीलता, स स्त्री (स) विवेकिता, बुद्धि मत्ता ।
विचारक, स पु (स) विचार धर्म-न्याय, अध्यक्ष, अधिकरणिक २ विवेकिन्, गुण दोषज्ञ, विवेचक, आलोचक ।
विचारणीय, वि (स) विचार्य, चिन्तनीय, विचारार्ह, ध्येय २ सन्दिग्ध ।
विचारना, क्रि अ (स विचारण) विचर-मभ् (प्रे), चिंत्-तर्क (चु) ध्यै (भ्वा प अ), विमृश् (तु प क), आ पर्या, लोच् (चु) ।
विचारित, वि (स) ध्यात, चिंतित, तर्कित, पर्यालोचित, विमृष्ट २ निर्णीत निश्चित ।
विचार्य, वि (स) दे 'विचारणीय' ।
विचिकित्सा, स स्त्री (स) सशय, सदेह ।
विचित्र, वि (स) कर्बुर-रित, कल्माष षित, शार, शबल २ विशिष्ट, विलक्षण, असाधारण ३ अद्भुत, आश्चर्य, विस्मापक ४ सुन्दर ।
—वीर्य, सं पु (स) चन्द्रवंशीयो नृपविशेष ।
—शाला, स स्त्री (स) अद्भुतालय ।
विच्छिन्न, वि (सं) निकृत्त, विलून, विवृक्ण २ वियुक्त, विश्लिष्ट, पृथक्-स्थित ३ समाप्त, अवसित ।
विच्छेद, स पु (स) छवन, लाव, कतन, विच्छेदन २ विश्लेष-षण, वियोजनं ३ क्रम,-भग भवन ४ विरह, वियोग ।
विछोह, सं पु (स विक्षोभ >) वियोग, विरह ।
विजन, वि (स) निर्जन, विविक्त, निःशलाक, एकान्त ।
विजय, स पु (स) जय, जयन, वशी स्वायत्ती करणम् ।
—दशमी, स स्त्री (स) दे. 'दशहरा' ।
—पताका, स स्त्री (स) जयकेतु २ जयचिह्न ।
—शील, वि (स) विजयिन्, सदाजयिन्, जिष्णु ।
—श्री, स स्त्री (स) जयलक्ष्मी (स्त्री) ।
विजया, स स्त्री (सं) भगा, हर्षिणी, दे 'भाग' २ उमासखी ३ दुर्गा ।
—दशमी, स स्त्री (स) आश्विनशुक्लदशमी, आर्याणां पर्वविशेष, विजयोत्सव ।
विजयी, वि. (स-यिन्) वि, नेतृ, जयिन्,-जित, जिष्णु (विजयिनी स्त्री) ।
विजयोत्सव, स पु (स) विजयदशमी-विजयादशमी,-उत्सव मवन् (म)-क्षण । २ जय,-उत्सव क्षण उद्धर्ष ।
विजर, वि (सं) अजर, निर्जर, वार्द्धक्य रहित २ नूतन, नवीन ।
विजल, वि (स) अजल, निर्जल, जल-वारि, रहित ।
विजातीय, वि (स) भिन्न-असमान,-जाति वर्ण २ साम्यरहित, असम ।
विजिगीषा, स स्त्री (स) विजयकामना २ उत्कर्ष ।
विजिगीषु, वि (स) जयाभिलाषिन् ।
विज़िट, स स्त्री (अ) अभिगम, अभ्यागम, दर्शनार्थ गमन,-दर्शनयात्रा ।
विज़िटर, स पु (अ) दर्शक, प्रेक्षक २ अभ्यागत, गृहागत ।
विज़िटिंग कार्ड, स पु (अ) *दर्शकपत्रम् ।
विजित, वि (स) पराजित, अभिभूत, भूत, वशी-स्वायत्ती,-कृत ।
विजेता, स पु (स-तृ) दे 'विजयी' ।

विज्ञ, वि (सं) प्रवीण, कुशल, विशेषज्ञ २ धीमत्, बुद्धिमत् ३ कोविद, पंडित ।

विज्ञता, स स्त्री (सं) प्रवीणता २ बुद्धिमत्ता ३ विद्वत्ता ।

विज्ञप्ति, स स्त्री (स) सूचना, ख्यापनम् ।

विज्ञात, वि (स) अवगत, अवबुद्ध २ प्रसिद्ध ।

विज्ञान, स पु (स न) ज्ञान, बोध, अवगम, उपलब्धि (स्त्री) २ विषयविशेषस्य विशिष्ट ज्ञान ३ अध्यात्म-विद्या ज्ञान ४ कर्मन् (न) ५ आत्मानुभव ।

—मयकोष, स पु (स) ज्ञानेन्द्रियसहिता बुद्धि (स्त्री)।

विज्ञापन, स पु (स न) बोधन, सूचन घोषणं, ख्यापन, विज्ञप्ति (स्त्री), विज्ञप्ता २ विज्ञापनपत्रम् ।

विट, स पु (स) कामुक, लम्पट २ धूर्त ३ नायकभेद (सा) ४ वेश्यानुचर ।

विटप, स पु (स पु न) शाखा शाखा पल्लवसमुदाय २ क्षुप गुल्म म ३ वृक्ष ।

विटपी, स पु (स पिन्) वृक्ष, पादप ।

विटामिन, स पु (अ) खाद्योजम् ।

विडंबना, स स्त्री (स) अनु-करण-कार कृति (स्त्री) २ अव-उप हास, अवहेलना २ निर्भर्त्सन ना ।

—करना, क्रि स, अव-उप-हस (भ्वा प मै) २ सोपहास अनुकृ विडम्ब् (चु) सवहास अवमन् (दि आ अ)।

विडारना, क्रि स (हिं डालना) विकृ (तु प से), विक्षिप (तु प अ) २ (वि, नश् (प्रे) ३ विद्रु पलाय (प्रे)।

वि(बि)डाल, सं पु (स) मार्जार २ लोचन-अक्ष, दे 'बिल्ला'।

वितंडा, स स्त्री (स) परपक्षदूषणमात्रपूर्वक स्वपक्षस्थापन २ प्रतिपक्षस्थापनाहीनो जल्प ३ व्यर्थ-कलह विवाद ।

वितत, वि (स) विस्तृत, विस्तीर्ण ।

वितथ, वि (स) मिथ्या, असत्य, अनृत २ व्यर्थ ।

वितरण, स पु (स न) दान, अर्पण, उत्सर्ग २ विभाजन, अंशदानम् ।

—करना, क्रि स, अंश् (चु) विसृज् (भ्वा उ अ)।

वितर्क, स पु (सं) ऊह ऊहन, ऊहापोह २ संदेह ३ अनुमान ४ अर्थालंकारभेद (सा)।

वितल, स पु (स न) पातालविशेष ।

वितस्ता, स स्त्री (स) पंचनदप्रान्तवर्ती नदविशेष ।

वितस्ति, स स्त्री (स पु स्त्री) द्वादशाङ्गुल, दे 'बित्ता'।

वितान, स पु (स पु न) उल्लोच, चंद्रातप २ विस्तार ३ यज्ञ ।

वितुंड, सं पु (स वि+तुंड>) गज, द्विप ।

वितृष्ण, वि (स) निःस्पृह, निष्काम, संतोषिन् ।

वित्त, स पु (स न) संपत्ति (स्त्री), धन, दे ।

—वान्, वि (स -वत्) धनाढ्य ।

—हीन, (वि) निर्धन ।

विदग्ध, वि (स) चतुर, दक्ष, कुशल २ व्युत्पन्न, पंडित ३ प्लुष्ट, प्लुष्ट । स पु (सं) रसिक २ विद्वस् ।

विदग्धता, स स्त्री (स) चातुर्य २ पाण्डित्य, विद्वत्ता ।

विदा, स स्त्री (अ विदाअ) प्रस्थान, प्रयाण २ गमनानुमति (स्त्री), प्रस्थानानुज्ञा ।

—करना, क्रि स, प्रस्था प्रया (प्रे) विसृज् (तु प अ)।

—होना, क्रि अ, प्रस्था (भ्वा आ अ), प्रया (अ प अ)।

विदाई, स स्त्री (हिं विदा) दे 'विदा' (१२)। ३ प्रास्थानिक धन द्रव्यं वा ।

विदारक, वि (स) विपाटक, विभेदक, विदारण ।

विदारण, स पु (सं न) विपाटन, विभेदन, विदलनं २ हनन ३ युद्धम् ।

विदारीकंद, स पु (सं पु न) भूमिकुष्माण्ड, विदारी-रिका, वृष्य स्वादु-कंदा ।

विदित, वि (स) अवगत, बुद्ध, ज्ञात, दे ।

विदिशा, सं स्त्री (स) दशार्णानां राजधानी, नगरविशेष (भेलसा) २ दिक्-दिशा-कोण ।

विदीर्ण, वि (सं) विपाटित, विदलित, विभिन्न २ त्रुटित, भग्न ३ हत ।

विदुर, सं पु (स) धृतराष्ट्रस्य भ्राता मंत्री च ।

विदुष, स पु (सं विद्वस्) पंडित, प्राज्ञ ।

विदुषी, वि (सं) विप्रकृष्ट, सुदूरवर्तिन् ।

विदूर, सं पुं (सं) वैहासिक, प्रहासिन्, हासिक, वासन्तिक २ भंड ।

विदेश, स प (स) परदेश , देशान्तरम् ।
विदेशी, वि (स विदेशीय) अन्य पर, देशीय, वैपर देशिक।
विदेह, वि (स) अकाय अशरीर रिन । स पु (स) जनक , मिथिलेश्वर ।
—पुर, स प (स न) जनकपुरी मिथिला, विदेहा।
विद्ध, वि (स) सच्छिद्र, सनुत्कीर्ण [सुषर वेधित, छिद्रित, निर्भिन्न २ क्षत, व्रणित ३ भिन्न, अस्त ।
विद्यमान, वि (स) वर्तमान, भवत्, २ प्रत्यक्ष, समक्ष, उपस्थित ।
विद्यमानता, स स्त्री (स) उपस्थिति (स्त्री), वर्तमानता ।
विद्या, स स्त्री (स) ज्ञान, विज्ञान, बोध २ अध्यात्मविद्या, परा विद्या ३ शास्त्रम् ।
—दान, स पु (स न) अध्यापन २ पुस्तक दानम् ।
—प्राप्ति, स स्त्री (स) ज्ञानाधिगम, अध्ययनम् ।
—वान्, वि (स,वत्) विद्वस्, प्राज्ञ ।
—हीन, वि (स) अशिक्षित, निरक्षर, अज, अविद्य ।
विद्यारंभ, स पु (स) १ वेदारम्भसंस्कार २ अध्ययनोपक्रम , शिक्षाप्रारम्भ ।
विद्यार्जन, स पु (स न) ज्ञान-बोध ,प्राप्ति उपलब्धि (दोनों स्त्री) २ विद्यया धनोपार्जनम् ।
विद्यार्थी, स पु (स थिन्) छात्र , शिष्य , २ अधीयान , अध्येतृ, पाठक ।
विद्यालय, स पु (स) पाठशाला, विद्या, गृह-मन्दिरम् ।
विद्युत्, स स्त्री (स) चचला, चपला, तडित् (स्त्री), दे 'बिजली' ।
—प्रिय, स पु (स न) कास्य २ कास्य पात्रम् ।
विद्रुम, स पु (स) प्रवाल , भौमीर , दे 'मूगा' २ रत्नवृक्ष ३ पल्लव-व, किस(श)-लय-यम् ।
विद्रोह, स पु (स) राज-द्रोह , विरोध , प्रजाक्षोभ , प्रकृतिप्रकोप , राज्यविप्लव ।
विद्रोही, स पु (स-हिन्) राज-द्रोहिन विरोधिन् द्रुह् ।
विद्वत्ता, स स्त्री (स) पाण्डित्य व्युत्पत्ति (स्त्री), विद्वत्त्व, विद्याप्रकर्ष ।
विद्वान्, स पु (स वद्स) पण्डित प्राज्ञ , बहुज्ञ विपश्चित ज्ञानवत् ।
विद्वेष, स प (स) वैर, शत्रुता, विरोध ।
विद्वेषी, स पु (स षिन) वैरिन , विरोधिन्, शत्रु ।
विधवा, स स्त्री (स) रडा, मृतभर्तृका, विश्वस्ता, यतिनी जालका ।
—पन, स पु (स + हिं) वैधव्य, दे ।
विधवाश्रम, स पु (स) *विधवालय ।
विधाता, स पु (स तृ) ब्रह्मन (पु), जगदुत्पादक सृष्टिकर्तृ परमेश्वर २ विधायक, रचयितृ ३ व्यवस्थापक , *प्रबन्धक ।
विधात्री, स स्त्री (स) रचयित्री, विधायिका २ व्यवस्थापिका ।
विधान, स प (स न) अनुष्ठान, करण, सपादन, निष्पादन, साधन २ व्यवस्था, आयोजन, *प्रबन्ध ३ रीति पद्धति (स्त्री), प्रणाली ४ निर्माण, रचन-ना ५ उपाय, युक्ति (स्त्री) ६ पूजा, अर्चा ७ शासन पद्धति (स्त्री), राज्यव्यवस्था ८ विधि, नियम, कल्प ।
—करना, क्रि स , विधा, आदिश (तु प अ), शास् (अ प से) ।
—परिषद्, स स्त्री (स) विधि-अधिनियम, निर्मात्री सभा ।
विधायक, स पु (स) अनुष्ठातृ, कर्तृ, निष्पादक , साधक २ निर्मातृ, रचयितृ, विधातृ, ३ व्यवस्थापक प्रबन्धक , प्रस्तोतृ ।
विधि, सं स्त्री (स पु) (शास्त्र ण) आदेश , नियोग , नियम , कल्प , अनुशासन २ रीति (स्त्री), कार्यक्रम , प्रणाली ३ व्यवस्था, सगति (स्त्री), क्रम ४ आचार , व्यवहार ५ प्रकार , रीति (स्त्री) ६ भाग्यम् । स पु (स) ब्रह्मन्, विधातृ (पु) ।
—निषेध, स पु [स धौ (द्वि)] नियोग प्रतिषेधौ (द्वि) ।
—पूर्वक, क्रि वि (स-कं) यथाविधि, यथा शास्त्र २ यथान्याय, यथोचितम् ।
—वत्, क्रि वि (स) दे 'विधिपूर्वक' ।
—वशात्, अ (स) दैवात्, भाग्येन, भाग्य दैव-वशात् ।

—वाहन, स पु (स) हंस, मराल, धवलपक्ष।

—हीन, वि (स) अवैध, आवाहन, विधि विरुद्ध, अनियमित।

विधु, स पु (स) चन्द्र सोम।

—वदनी, स स्त्री (स) चन्द्रमुखी २ सुन्दरी।

विधुर, वि (स) दुःखित पीड़ित २ भीत, त्रस्त ३ वि,आकुल ४ असमर्थ ५ परित्यक्त ६ विमूढ़ [विधुरा (स्त्री)]।

विधेय, वि (स) अनुष्ठेय, कर्तव्य, निष्पाद्य, साध्य २ वशवर्तिन्, विनीत, वश्य विनय, वचनेस्थित ३ विधानार्ह, अनुशासनीय। सं पु (स न) विशेषक, वाक्यांशभेद (व्या)।

विध्वंस, स पु (सं) वि,नाश, अवसाद, निर्मूलन, उच्छेद।

विध्वंसी, वि (स -सिन्) विध्वंसक वि, नाशक, निर्मूलयितृ।

विध्वस्त, वि. (स) वि नष्ट, उच्छिन्न, निर्मूलित, उत्सन्न।

विनत, वि (स) प्रणत, वदमान २ आवर्जित, प्रवण ३ वक्र, जिह्म ४ सङ्कुचित ५ नम्र ६, शिष्ट।

विनती, स स्त्री (स नति) प्रार्थना, याच्ञा २ विनय, नम्रता, शिष्टता ३ प्रवणता, प्रह्वता।

विनय, स स्त्री (स पु) प्रश्रय, नम्रता, शालीनता, सौजन्य, दाक्षिण्य २ शिक्षा ३ निवेदन, प्रार्थना ४ निर्भर्त्सना ५ नीति (स्त्री)।

—शील, वि (सं) नम्र विनीत, शिष्ट, दक्षिण, सभ्य, सुजन, सुशील।

विनश्वर, वि (स) क्षयिष्णु, नश्वर, अनित्य, अस्थायिन्।

विनष्ट, वि (स) वि,ध्वस्त, अवसन्न, उच्छिन्न, निर्मूलित २ मृत ३ विकृत ४ भ्रष्ट।

विना, अव्य (स) अन्तरेण मुक्त्वा, वर्जयित्वा विहाय (सब द्वितीया के साथ)। ऋते (पञ्चमी के साथ)।

विनायक, सं पु (स) गणेश, दे।

विनाश, सं पु (सं) दे 'विध्वंस तथा 'नाश'।

विनाशक, सं पुं (स) नाशकर्तृ, विध्वंसक।

विनिपात, स पु (स) वि,नाश ध्वंस २ वध, हत्या ३ अपमान, अनादर, अवधीरणा।

विनिमय, स पु (स) परिवर्त वृत्ति (स्त्री), प्रतिपरि,दानम्।

—करना, क्रि स, विनिमे (भ्वा आ अ), प्रतिदा, परिवृत् (प्रे)।

विनियोग, स पु (स) कृत्यविशेषे मन्त्रप्रयोग २ उपयोग प्रयोग ३ प्रेषण ४ प्रवेश।

विनीत, वि (स) दे 'विनयशील' २ निर्जितेन्द्रिय ३ शिक्षित ४ अपनीत ५ दण्डित ६ धार्मिक।

विनोद, सं पुं (स) कु(कौ)तूहल, कौतुक, मनोरञ्जकव्यापार २ खेला, क्रीडा, लीला ३ परिहास, प्रमोद ४ आनंद, हर्ष।

विनोदी, वि (सं दिन्) कु(कौ)तूहलिन्, कौतुकिन् २ लीलामय, क्रीडाशील ३ आनन्दिन् उल्लासिन् ४ परिहासशील, प्रमोदप्रिय।

विन्यास, स पु (सं) स्थापन, न्यसन, निधान २ रचन, परिष्करण, अलङ्करण ३ प्रणिधान, उत्पन्न, अनुध्यान ४ क्षेप पणम्।

विपञ्ची, स स्त्री (स) वीणाभेद २ केलि (स्त्री)।

विपक्ष, स पु (स) प्रति विरुद्ध-विपरीत प्रतियोगि-विरोधि, पक्ष २ विरोधिवर्ग, प्रतिद्वन्द्विवर्ग ३ प्रतिवादिन्, विरोधिन् ४ विरोध ५ अपवाद, बाधकनियम (व्या) ६ साध्याभाववान् पक्ष (न्या)। वि (स) विरुद्ध २ असहाय ३ निश्छद, निष्पक्ष।

विपक्षी, सं पु (सं क्षिन्) प्रतिपक्षिन्, प्रतिवादिन्, पर,पक्षीय पक्ष्य पक्षपातिन् प्रतिद्वन्द्विन् २ शत्रु, वैरिन् ३ निष्पक्ष, पक्षहीन (पक्षी आदि)।

विपणि, **णी**, सं स्त्री (स) आपण, हट्ट, पण्य शाला-वीथी, २ विक्रेयपदार्थ (पु) ३ वाणिज्य, व्यापार।

विपत्ति, स स्त्री (सं) आपद् विपद् आपत्ति (स्त्री), व्यसन, महा,दुःसंकट २ आपद्विपद्,काल -समय।

—आना या पड़ना, क्रि अ, व्यसनं प्रपद् (दि आ अ) कष्टम् आ-सम्-आपद् (भ्वा प से) विपद् उपनम् (भ्वा प अ)।

विपथ, सं पुं (सं) कु,पथ मार्ग २ असद्-आचार आचरणम्।

—गति, स स्त्री (सं) कुमार्ग-कुपथ,गमन गति (स्त्री)।
—गा, म स्त्री (सं) कुमार्गगामिनी नगरी २ नदी, सरित (स्त्री)।
—गामी, वि (स मिन्) कुमार्गगामिन्, दुर्वृत्त, दुराचारिन्।
विपद्-द्रा, स स्त्री (स) दे 'विपत्ति'।
विपन्न, वि (स) विपद्-आपद्, ग्रस्त, २ दुःखित ३ भ्रान्त ४ मृत।
विपरीत, वि (सं) विरुद्ध, प्रतीप, अप्रति, सव्य, प्रतिकूल, विलोमक २ रुष्ट, क्रुद्ध ३ कष्टकर, दुःखप्रद।
विपरीतता, स स्त्री (स) प्रतीपता, प्रतिकूलता, विरोध, वैपरीत्यम्।
विपर्यय, स पुं (सं) व्यत्यास, व्यत्यय, विपर्यास, व्यतिक्रम २ अव्यवस्था, क्रमाभाव ३ भ्रांति (स्त्री), स्खलित ४ मिथ्याज्ञानम्।
विपर्यस्त, वि (स) व्यत्यस्त, अधरोत्तर २ अव्यवस्थित, भग्नक्रम, सकुल, सकीर्ण।
विपर्यास, स पु (स) दे 'विपर्यय'(१ २,४)।
विपल, स पु (स न) क्षण, निमिष, पलस्य षष्टितमो भाग।
विपाक, स पु (स) पचन, पक्वता २ चरमोत्कर्ष, पूर्णता ३ फल, परिणाम ४ कर्मफल ५ जठरे भोजनस्य रसरूपेण परिणति (स्त्री) ६ स्वाद ७ दुर्गति (स्त्री)।
विपिन, स पु (स न) जगल, वन, दे। २ उपवन, वाटिका।
विपुल, वि (स) बहु, भूरि, प्रभूत, अत्यधिक २ विशाल, विस्तीर्ण ३ बृहत्, महत् ४ अगाध, अतिगभीर।
विपुलता, स स्त्री (स) आधिक्य, बहुत्व, अतिशय २ विशालता, विस्तीर्णता ३ महत्ता, बृहत्ता।
विपुला, सं स्त्री (स) पृथिवी, दे।
विप्र, स पु (स) ब्राह्मण दे २ पुरोहित।
विप्रतिपत्ति, स स्त्री (स) विरोध, विसवाद, असगति (स्त्री) २ परस्परविसवादिवाक्यम् (न्या), कुख्याति (स्त्री) ४ विकृति (स्त्री) ५ असिद्धि (स्त्री)।
विप्रतिषेध, स पु (स) मिथोविरोध, असगति (स्त्री)।
विप्रलम्भ, स पु (स) वियोग, विरह, रागिणोर्विच्छेद २ छल, वचनम्।
विप्लव, स पु (स) उपद्रव, डिंब, समर २ विद्रोह, दे ३ दुर्व्यवस्था क्रमहीनता ४ आपद्-विपद् (स्त्री) ५ विनाश आप्लाव, जलप्लावनम्।
विफल, वि (स) निष्फल, दे।
विबुध, स पुं (स) पंडित, प्राज्ञ २ देव ३ चद्र ४ शिव।
विबोध, स पु. (स) जागरण २. सम्यग्ज्ञान ३ सावधानता ४ विकास।
विभक्त, वि (स) कृतविभाग, परिकल्पित २ पृथक्कृत, विश्लेषित ३ विभिन्न, प्राप्तविभाग।
विभक्ति, स स्त्री (स) विभजन, विभाग २ वियोग, पार्थक्य ३ सुप्प्रत्यय, तिङ्प्रत्यय (व्या)।
विभव, स पु (स) धन, सपत्ति (स्त्री) २ ऐश्वर्य, प्रताप ३ मोक्ष, निःश्रेयसम्।
—शाली, वि (स-लिन्) धनाढ्य २ प्रतापिन्।
विभा, सं स्त्री (स) कान्ति (स्त्री), प्रभा २ किरण ३ सौन्दर्यम्।
विभाग, स पु (स) परिकल्पनं, विभजन, अशनं, वटन २ अंश, भाग, खड-ड, एकदेश ३ दायाश, रिक्थभाग ४ प्रकरण, अध्याय ५ शाखा, कार्यक्षेत्रम्।
—करना, क्रि स, दे 'बाँटना'।
विभाजक, स पु (स) विभाजयितृ, विभाग, परिकल्पक, वट(ड)क।
विभाजन, स पु (स न) वट(ड)न, विभजन, विभाग, परिकल्पनम्।
विभाजित, वि (स) कृतविभाग, परिकल्पित, वटित, पंडित।
विभाज्य, वि (स) विभजनीय, विभागार्ह, वटि(ङि)तव्य।
विभावना, स स्त्री (स) अर्थालकारभेद (सा)।
विभावरी, स स्त्री (स) शर्वरी, रात्री २ दूती, कुट्टनी।
विभाषा, स स्त्री (स) विकल्प (व्या)।
विभिन्न, वि (सं) विच्छिन्न, लून, कृन्त

७ विभक्त वियुक्त, पृथक्स्थित ३ नाना अनेक-बहु-विविध।

विभिन्नता, स स्त्री (स) विविधता ~ पृथक्ता-त्वम्।

विभीषण, स पु (स) रावणभ्रातृ। वि (स) भयंकर, भीम।

विभु, वि (स) सर्वव्यापक विश्वव्यापिन् सर्वग, सर्वगत, २ नित्य ३ सुमहत् ४ शक्तिमत्। स पु (स) ईश्वर २ स्वामिन् ३ अन्यत्।

विभूति, स स्त्री (स) विभव, ऐश्वर्य २ धन, वित्त ३ अलौकिक-दिव्य शक्ति सिद्धि (दोनों स्त्री) ४ शिवधृतभस्मन् (न) ५ लक्ष्मी (स्त्री) ६ (विविध) सृष्टि (स्त्री), वृद्धि (स्त्री) उत्कर्ष।

विभूषण, स पु (स न) अलंकरण, मंडन २ आभूषण अलंकार।

विभूषित, वि (स) अलंकृत, मंडित २ युक्त, सहित ३ सुशोभित।

विभ्रम, स पु (स) वि भ्रान्ति (स्त्री), भ्रम स्वलित २ संदेह ३ भ्रमण ४ स्त्रीणां हावभेद ५ सौन्दर्यम्।

विमति, स स्त्री (स) विपरीत-विरुद्ध, मत विचार २ कुमति (स्त्री)।

विमन, वि (स नस) खिन्न, विषण्ण, दुर्मनस्।

विमर्श, स पु (स) विचार-रण रणा मत्रण णा, विवेचन २ समीक्षा आलोचना ३ परीक्षा ४ परामर्श।

विमल, वि (स) स्वच्छ निर्मल, दे २ निर्दोष ३ सुंदर।

—मणि, स पु (स) दे 'स्फटिक'।

—मति, वि, (स) शुद्ध हृदय चित्त।

विमलता स स्त्री (स) निर्मलता दे।

विमला, स स्त्री (स) सरस्वती, शारदा २ सिद्धिविशेष।

—पति, स पु (स) ब्रह्मन् (पु), विधि।

विमांस, स पु (सं पुं न) अस्वच्छ अपवित्र-अभक्ष्य-मांसम्। (कुक्कुरादीनाम्)।

विमाता, स स्त्री (स-तृ) मातृसपत्नी।

विमान, सं पु (स न) देवरथ, वायुव्योम-यान २ रथ, वाहन ३ घोटक ४ सप्तभूमिकं गृहं = द्रव्ययानम्।

विमुख, वि (स) विरत निरपेक्ष, निरीह, औत्सुक्यहीन २ विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल ३ निराश, अपूर्णकाम ४ अवदन।

विमुखता, स स्त्री (सं) विरति (स्त्री), औदासीन्य २ विरोध, विपरीतता।

विमूढ़, वि (स) अज्ञ, अज्ञानिन्, २ निस्संज्ञ, मूर्च्छित ३ आकुल-व्याकुल, विकल ४ अति, मुग्ध-मोहित।

विमोक्ष, स पु (स) दे 'मोक्ष'।

वियोग, स पु (स) विरह, विप्रलम्भ, विप्रयोग २ विच्छेद, विश्लेष, विभेद ३ पार्थक्य, पृथग्भाव ४ व्यवकलनं (गणित)।

वियोगांत, वि (स) दुःख, अंत पर्यवसायिन् (नाटकादि)।

वियोगिनी, वि स्त्री (स) विरहिणी, वियुक्ता, प्रोषित, पतिका भर्तृका।

वियोगी, वि (सं गिन्) विरहिन, वियुक्त।

वियोजक वि (स) विश्लेषक, विच्छेदक।

विरंचि, स पु (सं) विधातृ, ब्रह्मन् (पु)।

—सुत, स पु (स) नारद।

विरक्त, वि (स) विरत, विमुख, निरीह, निवृत्त २ उदासीन, निष्प्रयोजन ३ खिन्न, रुष्ट वैराग्यिन्, वैरागिक।

विरक्ति, सं स्त्री (सं) विरति (स्त्री), विराग, विमुखता, वैराग्य, विरक्तता २ औदासीन्य ३ रोष।

विरत, वि (स) दे 'विरक्त' (१, ४) साथ काम, अत्यासक्त-अतिव्यापृत,-पर,-परायण।

विरति, सं स्त्री (सं) दे 'विरक्ति' (१ ३) ४ विराम, विच्छेद, उपर(रा)म।

विरद स पुं, दे 'विरुद'।

विरल, वि (स) घनता-रहित विरला, शून्य २ दुर्लभ, दुष्प्राप्य प्रापण ३ तनु ४ निर्जन ५ अल्प ६ विप्रकृष्ट, दूरस्थ।

—पातक, वि (स) न्यून अल्प पातक पाप, अतिस्वल्प-अल्प पुण्य, प्रायः स्वल्प।

विरला, वि (सं विरल) दे 'विरल' (१ २)।

विरव, वि (स) निःशब्द, नीरव।

विरस, वि (सं) नीरस, दे २ अप्रिय।

विरमा, सं पुं (अ) दे 'विरासत ?'।

विरह, सं पुं (सं) दे 'वियोग' (१ २)। ४ वियोगजं दुःखम्।

—जनित, वि (स) विरह-ज-जन्य, वियोग, -उद्भूत।

विरहिणी, वि स्त्री (स) वियोगिनी, दे।

विरही, वि (स हिन्) दे 'वियोगी'।

विराग, स पु (स) दे 'वैराग्य'।

विरागी, वि (स गिन्) दे 'वैरागी'।

विराजना, क्रि अ (स विराजन) शुभ विराज् (भ्वा आ से) प्रविश् (अ प अ) २ हृद (भ्वा आ से), विद् (दि आ अ), उपविश् (तु प अ) आस (अ आ से)।

विराजमान, वि (स) प्रकाशमान, शोभमान, भासमान, भासुर २ विद्यमान, उपस्थित, वर्तमान ३ उपविष्ट, आसीन।

विराट्, स पु (स-राज्) विश्वरूप, महान् (न) २ क्षत्रिय।

विराट, स पु (स) मत्स्यदेश २ तद्देशीयो राजविशेष।

—पर्व, स पु [स-वंन (न)] श्रीमहाभारतस्य चतुर्थं पर्वन् (न)।

विराम, स पु (स) दे 'विरति' (४)। २ विश्राम, विश्रान्ति (स्त्री) ३ वाक्याव स न ४ यति (स्त्री)।

विराव, स पु (स) शब्द, ध्वनि २ कलकल।

विरासत, सं स्त्री (अ) दाय, पैतृकधन, रिक्थ २ दायादत्व, रिक्थहरत्वम्।

विरुद, स पु (स) गुणोत्कर्षवर्णन, यश कीर्तन, प्रशस्ति (स्त्री) २ यशस् (न), कीर्ति (स्त्री) ३ नृपोपाधिशब्द।

विरदावली, स स्त्री (स) स्तवमाला, यशो गानम्।

विरुद्ध, वि (स) प्रतिकूल, विरोधिन्, विपरीत, प्रतीप २ रुद्ध, निरुद्ध ३ अनुचित, अन्याय्य।

विरूप, वि (स) बहुरूप, नानाकार २ कुरूप, कुदर्शन ३ परिवर्तित ४ निश्श्रीक, शोभाहीन ५ विरुद्ध ६ भिन्न।

विरेचक, वि (सं) सारक, मलभेदक, विरेचक, दे 'रेचक'।

विरेचन, स पु (स न) मलभेदकौषध, दे 'रेचन' २ रेक, रेचन-ना, मलभेद।

विरोध, सं पु (स) वैर, शत्रुता-त्वं, वि-द्वेष, सापत्न्यं २ असंगति (स्त्री), विसंवाद, विपरीतता ३ विप्रतिपत्ति (स्त्री), व्याघात ४ अर्थालंकारभेद (सा)।

—करना, क्रि स विरुध्/प्रतिरुध् (रु उ अ), प्रतिकूल प्रत्यवस्था (भ्वा आ अ) विप्रतिहन (अ प से) २ विप्रलप (भ्वा प से), प्रतिक्षिप (तु प अ)।

विरोधी, स पु (स धिन्) वैरिन्, शत्रु, ३ विपक्षिन्, प्रातद्वंद्विन् ४ विरोधकर, विनश्वर।

विलम्ब, स पु (स) अतिकाल, वेलातिक्रम, कालक्षेप हरण दे 'देर'।

विलंबित, वि (स) चिरायित, व्याक्षिप्त २ प्रलम्ब लम्बमान।

विलक्षण, वि (स) असाधारण, असामान्य, अद्भुत अपूर्व, विशिष्ट।

विलक्षणता, स स्त्री (स) वैलक्षण्य, विशिष्टता इ।

विलय, स पु (स) विलयन, द्रवीभवन २ लोप, अदर्शन ३ मृत्यु ४ वि, नाश ५ प्रलय।

विलाप, स पुं (स) परिदेवन,-ना, शोकज वचन अनुशोचनोक्ति (स्त्री) २ क्रंदनं, रु(रो)दनम्।

—करना, क्रि अ, विलप् अनुशुच् परिदेव् (भ्वा प से)।

विलायत, स पुं (अ) विपर-देश २ दूर देश (यूरोप, अमेरिका आदि)।

विलायती, वि (अ) दे 'विदेशी'।

—बैगन, स पु (अ+हिं) दे 'टमाटर'।

विलास, स पु (स) विभ्रम, लीला, हाव भेद दे 'नखरा' २ आनन्द, हर्ष ३ मनो-रंजन विनोद ४ सुखभोग ५ कम्पन, गति (स्त्री) ६ आह्लादक हावभाव-मनोहर कान्ति, चेष्टा क्रिया।

विलासिनी, स स्त्री (स) कामिनी, सुंदरी, वरांगना २ नारी ३ वेश्या ४ वर्णवृत्तभेद।

विलासी, वि (स सिन्) भोगिन्, विषयासक्त-आसक्त, कामिन् २ लोलापर, क्रीडाप्रिय, कौतुकिन् ३ सुखैषिन्।

विलीन, वि (स) अन्तर्हित तिरोहित, लुप्त २ नष्ट ३ गुप्त, गूढ।

विलोपन, स पु (स विलयन) विलयन, द्रवीभाव २ क्षरण, गलनम्।

विलुंठन, स पु, विलुठन, लुंठ, लुंठा २ चोरण मोषणम् ३ लुठन, लोठनम्।

विलोकना, क्रि स (स विलोकन) दे 'देखना'।

विलोडना, क्रि स, दे 'बिलोना'।

विलोम, वि (स) प्रतिकूल, विपरीत, प्रतिलोम, प्रतीप २ स्वरावरोह (संगीत)।

विलोल, वि, (स) चल, अस्थिर २ सुंदर।

विवक्षा, स स्त्री (स) वक्तुमिच्छा, विवदिषा २ तात्पर्य ३ संदेह।

विवक्षित, वि (स) वक्तुमिष्ट २ अपेक्षित।

विवर, स पु (स न) छिद्र, बिल २ गर्त, अवट, खात ३ कंदरा, गुहा।

विवरण, स पु (स न) व्याख्यान, विवेचन २ विस्तृत, वर्णन-वृत्तांत ३ टीका, भाष्य, व्याख्या।

विवर्जित, वि (स) निषिद्ध, वर्जित २ उपेक्षित, अनादृत ३ वंचित, रहित।

विवर्ण, वि (स) निस्तेजस, निष्प्रभ, कांतिहीन २ क्षुद्र, नीच।

विवर्त, स पु (स) भ्रम, भ्रांति (स्त्री) २ रूपांतर, दशांतरम्।

—वाद, सं पु (स) वेदान्तसिद्धांतविशेष।

विवश, वि (स) अवशिक, निरुपाय २ पराधीन ३ दुर्दांत ४ निर्बल।

विवस्वान्, स पु (स-स्वत्) सूर्य २ अरुण, सूर्यसारथि।

विवाद, स पु (स) वाद, अनुवाद प्रतिवाद, वाग्-वाद, युद्ध, तर्कवितर्क २ कलह, कलि ३ मतभेद ४ व्यवहार, ऋणादि न्याय, दे 'मुकदमेबाजी'।

—करना, क्रि अ, विवद् (भ्वा आ से), विप्रतिपद् (दि आ अ), विप्रलप् (भ्वा प से)।

विवादास्पद, वि (स) विवाद-अह प्रश्नयोग्य, संदिग्ध।

विवाह, स पु (स) पाणि, ग्रहण-करपीडन, उपयाम, परिणय, उद्वाह, दार, परिग्रह-यमन।

—करना, क्रि स, उद् वि वह् (भ्वा उ अ), दारान् परिग्रह् (क्र् प से), परिणी (भ्वा प अ)।

—(में) देना, क्रि स, विवाहे दा, पाणि ग्रह् (प्रे), उद्वह् (प्रे)।

विवाहित, वि पु (सं) ऊढ, परिणीत, निविष्ट, कृतविवाह, उपयत, कलत्रवत्, सपत्नीक।

विवाहिता, सं स्त्री (स) पतिवत्नी, सभर्तृका, ऊढा, परिणीता, उपयता।

विविक्त, वि (स) पृथग्भूत, वियुक्त २ एकल, असहाय ३ पूत, निर्दोष ४ विवेकिन्, विवेकशील।

विविध, वि (स) अनेक-नाना-बहु, विधप्रकार-रूप-जातीय।

विवेक, स पु (स) परिच्छेद, सदसज्ज्ञान, मिथो व्यावृत्त्या वस्तुस्वरूपनिश्चय, पृथग्भाव, पृथगात्मता, विवेचन २ भद्राभद्र-सदसत्, परिच्छेदशक्ति (स्त्री), ३ बुद्धि मति (स्त्री) ४ सत्यज्ञानम्।

विवेकी, वि (स किन्) परिच्छेदक, विवेचक, गुणदोषज्ञ, विशेषज्ञ, विवेकवत् २ बुद्धि-मति, मत् ३ ज्ञानिन् ४ न्यायशील ५ आधिकारिक।

विवेचक, वि (सं) दे 'विवेकी'।

विवेचन, स पु (स न) दे 'विवेक'(१)। २ सम्यक्, परीक्षा-क्षण, गुणदोषविचारण, परि-आलोचन ना ३ अनुसंधान ४ तर्कवितर्क ५ मीमांसा।

विवेचना, स स्त्री (सं) दे 'विवेचन'।

विशद, वि (स) निर्मल, विमल, स्वच्छ २ सुवि-व्यक्त, व्यक्त, प्रकट, स्फुट ३ सित, उज्ज्वल, श्वेत ४ सुंदर।

विशाखा, स स्त्री (स) राधा, नक्षत्रविशेष।

विशारद, वि (स) कुशल, दक्ष, प्रवीण २ विज्ञ, विशेषज्ञ, व्युत्पन्न, निष्णात।

विशाल, वि (स) विस्तृत, विस्तीर्ण, महत्, बृहत्, पृथु उरु २ भव्य, सुंदर ३, विख्यात।

विशालता, स स्त्री (सं) प्रथिमन्, विस्तार, बृहत्ता, पृथुता।

विशिख, स पु (सं) बाण, इषु। वि- (सं) शिखाहीन।

विशिष्ट, वि (स) युत, युक्त, अन्वित, सहित २ विशेष-, असामान्य ३ अद्भुत, विलक्षण ३ अनिदिष्ट ४ यशस्विन् ५ प्रसिद्ध।

विशिष्टता, सं स्त्री. (स) दे 'विशेषता'।

विशिष्टाद्वैतवाद, स पु (स) भेदाभेदवाद, द्वैताद्वैतवाद ।

विशीर्ण, वि (स) शुष्क २ क्षीण ३ जीर्ण ।

विशील, वि (स) दुश्चरित दुःशील, कुशील ।

विशुद्ध, वि (स) दे 'शुद्ध' २ सत्य ।

विशुद्धि, स स्त्री (स) शुद्धता पवित्रता २ संदेह-संशय, निवारणम् । ३ प्रति(ती)कार, प्रतिशोध ४ पापशोधनम् ५ परिष्कार ६ पूर्णज्ञानम् ।

विशूचिका, स स्त्री, दे 'विसूचिका' ।

विशेष, वि (स) असाधारण (णी स्त्री), विशिष्ट, विलक्षण । स पु (स) सप्तपदार्थान्तर्गतपदार्थविशेष (वैशेषिक) २ अन्तर, भेद ३ अर्थालंकारभेद (सा) ।

विशेषज्ञ, वि (स) प्रवीण, निपुण, विज्ञ, पारगत, पारदर्शिन् ।

विशेषण, स पु (स न) सत्तादीनां विशेषताबोधक पद (व्या) २ उपाधि गुण, विशेष्यधर्म ।

विशेषत, अव्य (सं) विशेषेण, प्रधानतः ।

विशेषता, स स्त्री (स) विशिष्टता, असाधारणता, विलक्षणता ।

विशेष्य, स पु (स न) विशेषणान्वित सत्तादिपद (व्या) ।

विशोक, वि (स) शोकहीन, प्रसन्न, मुदित, प्रहृष्ट ।

विश्रम, स पु (स) विश्वास, प्रत्यय २ अनुराग प्रेमन् (पु न) ।

विश्रब्ध, वि (स) विश्वसनीय, विश्वासार्ह २ शान्त ३ निर्भय ।

विश्रान्त, वि (स) व्यपगतश्रम, क्लान्ति श्रान्ति, शून्य ।

विश्रान्ति, स स्त्री (स) विश्राम, दे ।

विश्राम, स पु (स) विश्रान्त, विश्रान्ति (स्त्री), श्रमापनोदन, कार्य-व्यापार, निवृत्ति (स्त्री) २ सुख ३ शान्ति (स्त्री) ।

—करना, क्रि अ, विश्रम् (दि प से), आश्वस् (भ्वा प अ), कार्यात् निवृत् (भ्वा आ से) ।

विश्रुत, वि (सं) विख्यात, प्रसिद्ध, दे ।

विश्लिष्ट, वि (स) पृथग्भूत, भिन्न, विरचित २ विगलित ३ प्रकट ४ अयाकृत ५ शान्त ६ व्याकुल ।

विश्लेष, स पु (स) विघटन, विच्छेद, पृथग्भाव २ विरह, वियोग ।

विश्लेषण, स पु (स न) व्यवच्छेद, व्याकृति (स्त्री), पृथक्करणम् ।

विश्वभर, सं पु (स) परमेश्वर २ विष्णु ।

विश्वभरा, सं स्त्री (स) धरणी, पृथिवी दे ।

विश्व, स पु (स न) जगत् (न), जगती (स्त्री), त्रिभुवन, ब्रह्माण्ड २ भू-पृथिवी, लोक । वि (स) सर्व, सकल, समस्त ।

—कर्ता, स पु (सं तृ) परमेश्वर ।

—कर्मा, स पु (■ र्मन्) विश्वकृत्, देव, वर्धकि शिल्पिन, त्वष्टृ परमेश्वर ३ महान् (पु) विधि ४ सूर्य ५ तक्षक, वर्धकि ६ लोहकार ७ गृहकारक, पल्गण्ड ।

—कोश (-ष), सं पु (स) सर्वविषय बृहत्, कोश ।

—जित, सं पु (स) यज्ञ-याग, भेद । वि (स) जितविश्व, विश्वविजयिन् ।

—देव, स पु (स-वा बहु) देवगणभेद ।

—नाथ, सं पु (सं) शिव २ साहित्य दर्पणकार पण्डितविशेष ।

—पति, स पु (स) ईश्वर ।

—बन्धु, स पु (स) शिव २ जगत्सख ।

—विद्यालय, स पु (स) दे 'यूनिवर्सिटी' ।

—व्यापी, वि (स पिन्) विश्व-सर्व,-व्यापक (ईश्वरादि) ।

—साक्षी, स पु (स क्षिन्) सर्वद्रष्टा जगदीश्वर ।

विश्वसनीय, वि (स) विश्वास्य, विश्वास, योग्य अर्ह, विश्रम, पात्र भाजन आस्पदम् ।

विश्वसनीयता, स स्त्री (स) विश्वास्यता, विश्वासपात्रता ।

विश्वस्त, वि (स) दे 'विश्वसनीय' ।

विश्वामित्र, स पु (स) गाधेय, गाधिज, कौशिक (महर्षिविशेष) ।

विश्वास, स पु (स) प्रत्यय, विश्रंभ, २ श्रद्धा, दे ।

—करना, क्रि, अ, विश्वस् (अ प से), श्रद्धा (जु उ अ), प्रतिइ (अ प अ) ।

—दिलाना, क्रि स, उपर्युक्त धातुओं के प्रे रूप ।

—घात, स पु (स) विश्वासघात प्रत्यय भञ्जन समय-ञ्चन भग ।
—घातक, वि (स) विश्वभञ्जक, विश्वास घातिन् ।
—पात्र, स पु (स न) विश्वास्य विश्वसनीय ।
विश्वेश्वर, स पु (स) परमेश्वर २ शिवमूर्तिविशेष ।
विष स पु (स पु न) गरल, क्ष(ना)गुल, क्ष्वेड, कालकूट, ह(हा)लाहल, गर, गरद, घोर, तीक्ष्णम् ।
—कन्या, स स्त्री (स) मैथुनमात्रेण मृत्योत्पादनी कुमारी नारी वा ।
—धर, स पु (सं) सर्प ।
—हर, वि (स) विष,नाशक-घातिन् ।
—की गाठ, स्त्री, अपकारक, हानिप्रद ।
—देकर, मु, विषेण सूदन (प्रे) ।
विषक्त, वि (स) लम्बित, बद्धमूल, दृढसंलग्न ।
विषण्ण, वि (स) शोकमग्न, परिम्लान,खिन्न, अवसन्न ।
—मुख, वि (स) विषण्णवदन, सशोकास्य । आर्त्त, विधुर ।
विषण्णता, स स्त्री (स), मलिनता, परिम्लानता, अवसन्नता, शोकार्तता ।
विषम, वि (सं) असम, नतोन्नत, पिंडलाकृत, २ अयुग्म, दे 'ताक' ३ विरुद्ध, कठिन, दुस्साध्य ४ अति, तीव्र तीक्ष्ण ५ भीषण, घोर ।
—ज्वर, स पु (सं) ज्वरभेद २ दे 'मलेरिया' ।
—नयन, स पु (स) विषमनेत्र, शिव ।
—बाण, सं पु (स) कंदर्प, काम ।
—वृत्त, स पु (स न) असमचरण वृत्त (छंद) ।
विषमता, स स्त्री (स) वैषम्य, समताऽभाव २ अयुग्मता ३ वैर, विरोध ।
विषय, स पु (स) गोचर, इंद्रिया (=शब्दस्पर्शरूपरसगंधा) २ देश, जनपद ३ प्रकरण, प्रसंग ४ उपभोग, आस्वादनं ५ सुरत, मैथुनं ६ द्रव्यं, पदार्थ ७ कार्य, व्यापार, अर्थ ।
—सुख, सं पु (सं न) इंद्रियसौख्यम् ।
—विषयक, वि (सं)-सबंधिन्, उद्दिश्य, अधिकृत्य, आश्रित्य ।
विषयी, वि (सं विन्) भोगविषय, आसक्त, लम्पट विषय, निरत पर परायण-अधीन, कामिन्, विलासिन्, रसिक, टंकट, औपभ्यिक ।
विषाण, स पु (स न) शृङ्ग, दे 'सींग' २ गजदंत ३ कोलदंत ।
विषाद, स पु (स) अवसाद, दुःख, शोक, परिताप, ताप, आधि (पु), आर्ति (स्त्री) २ जाड्य ३ मौर्ख्यम् ।
विषुव, सं पु (स न) विषुवत् (न), विषुप, विषुण, समरात्रिंदिवकाल [= सौर चैत्र मास की नवीं (२१ मार्च) तथा सौर आश्विन मास की नवीं (२२ सितंबर)] ।
—रेखा, स स्त्री (सं) निरक्ष, भूमध्या, भूमध्यरेखा, विषुवद्रेखा ।
जल—, स पु (स न) विषुवद (२२ सितंबर) ।
महा—, स पु (स न) हरिपद (२१ मार्च) ।
विषूचिका, स स्त्री, दे 'हैजा' ।
विष्ठा, स स्त्री (स) उच्चार, गूथ, मल, पुरीष, शकृत् (न), विष् (स्त्री) ।
विष्णु, स पु (स) चक्रिन्, चतुर्भुज, चक्रपाणि, जनार्दन, त्रिविक्रम, हरि, हृषीकेश, श्री,पति निवास वल्लभ-वर धर, वैकुंठ, माधव, मधुसूदन, पुरुषोत्तम, पीतांबर, दामोदर, पद्मनाभ, नारायण, केशव, कृष्ण, गोपाल ई । २ अग्नि ३ आदित्य विशेष ।
—गुप्त, स पु (स) वैयाकरणविशेष २ चाणक्य ।
—पद, सं पु (सं न) आकाश २ पर्व ३ क्षीरोद ।
—पदी, स स्त्री (स) गंगा ।
—पुराण, स पु (सं न) पुराणग्रंथविशेष ।
विसर्ग, स पु (स) विसर्जनीय, वर्णविशेष (= :) २ दान ३ त्याग ४ मुक्ति (स्त्री), निःसर्ग ५ मृत्यु ६ प्रलय ७ विरह ।
विसर्जन, सं पु (सं न) परि,त्याग उत्सर्ग, मोचन, उज्झन २ स,प्रेषण, प्रस्थापन ३ प्रस्थान, प्रयाणं ४ समाप्ति (स्त्री), अंत ५ दान, वितरणम् ।
विसाल, सं पु (अ) संयोग, संगम ।

विसूचिका, स स्त्री (स) विसूची, दे 'हैजा' २ अजीर्णरोगभेद ।
विस्तर, स पुं (स) विस्तार, दे २ आसन, पीठम् ।
विस्तार, स पु (स) विस्तर, प्रसर(स)र, आयाम, वितति (स्त्री) विग्रह, व्यास, विस्तीर्णता २ विटप, शाखा ।
—करना, क्रि स, प्रसारयत् (प्रे), दे 'फैलाना'।
विस्तीर्ण, व (स) विस्तृत प्रसृत, वितत आयत २ विपुल, प्रचुर ३ विशाल, महत्, बृहत् ।
विस्तृत, वि (स) दे 'विस्तीर्ण'।
विस्फोट, स पु (स) स्फोटन, आस्फुटन स्फोटन २ वि(वि)स्फोटक-कणा, स्फोट-टक ।
विस्फोटक, स पु (स) दे 'विस्फोट'(२)। १ स्फोटनशील ३ दे 'चेचक'।
विस्मय, स पु (स) आश्चर्य, चमत्कार २ गर्व ३ सन्देह । वि (स) हतदर्प।
विस्मरण, स पु (स न) विस्मृति (स्त्री), स्मृति, आशा-लोप ।
विस्मय, वि (स) विस्मय-आश्चर्य, अपना-गर्वित, चकित, विस्मययुक्त।
विस्मृत, वि (स) स्मृतिभ्रष्ट, स्मृतिपथ-अतीत।
विस्मृति, सं स्त्री (स) विस्मरण, दे ।
विस्रंभ, स पु (स) विश्वास, प्रणय २ हत्या, वध ।
विहग, विहंगम, विहंग, स पु (स) खग, दे 'पक्षी'।
विहरण, स पुं (स न) विचरण, अटन, भ्रमण २ वियोग ३ प्रसरण ।
विहार, स पुं (स) परिक्रमण-भ्रमण, पर्यटन, परिभ्रमण, विहरण विचरण २ सुरत, संभोग ३ सुरतालय ४ उपाराम, आराम, मठ दे ।
विहारी, स पु (स-रिन्) भोगासक्त २ विहारकर्ता ३ श्रीकृष्ण ।
विहित, वि (स) (शास्त्रविहित) वरिष्ट, दिष्ट, उपदिष्ट २ न्याय्य, धर्म्य, उचित ३ कृत, अनुष्ठित ४ दत्त ।
विहीन, वि (स) परि,त्यक्त उज्झित २ रहित, वर्जित हीन, वर्जित, शून्य ।
विह्वल, वि (स) विकल, व्याकुल, दे ।
विह्वलता, स स्त्री (स) व्याकुलता, दे ।
वीची, स स्त्री (स) लहरी, तरंग, दे । २ रश्मि, मरीचि, दीधिति, (सब पु) ३ कान्ति दीप्ति (स्त्री)।
—क्षोभ, स पु (स) लहरीविक्षेप ।
—तरंग न्याय, स पु (स) दे यह परिशिष्ट।
—माली, स पु (स-लिन्) सागर, समुद्र, अर्णव ।
वीज, स पु (स न) बीज, दे ।
वीजन, स पु (स न) व्यजन, दे 'पंखा'।
वीणा, स स्त्री (स) वल्लकी, विपंची-विनता, ध्वनिमाला, वनमल्ली, परिवादिनी घोषवती, कण्ठकूणिका २ विद्युत (स्त्री)।
—दंड, स पु (स) प्रवाल ।
—पाणि, स स्त्री (स) सरस्वती।
वीत, वि (स) प्रस्थित, प्रयात २ परित्यक्त ३ मुक्त ४ समाप्त ५ रहित, हीन।
—भय, वि (स) विगत-निर-भय ।
—राग, वि (स) विरक्त, निस्स्पृह।
—शोक, वि (स) निश्शोक। स पु (स) अशोकवृक्ष ।
वीथी, स स्त्री (स) वीथि (स्त्री), वीथिका, रथ्या, मार्ग २ पंक्ति (स्त्री) ३ रूपकभेद (स)।
वीर, स पु (स) शूर, शौटीर, सुविक्रम, प्रमहान्,वीर, जेतृ २ योध, योद्धृ, भट, सैनिक ३ नायक, अग्रणी (पुं) ४ पुत्र ५ पति ६ भ्रातृ। वि (स) विक्रान्त, वीर्यवत्, साहसिक, पराक्रमिन् ।
—केसरी, स पु (स-रिन्) वीर,पुङ्गव वरूथ ।
—गति, सं स्त्री (स) युद्धे मरणात् स्वर्ग लाभ २ स्वर्ग ।
—चक्र, स पु,(स वीर+चक्र) सैनिकों आदि का, सम्मानसूचक-स्वर्णादि राजत या पदकम् २ पुरस्कारविशेष ।
—पत्नी, स स्त्री (स) वीरपत्नी।
—प्रसू, स स्त्री (स) वीर-प्र-मातृ (स्त्री)- जननी।
—भद्र, स पु (स) अश्वमेधाश्व २ वीरो-त्तम ३ शिवगणविशेष ।
—लोक, सं पु (स) स्वर्ग ।

वीरता, स स्त्री (स) वीर्य, शूरता, शौर्य, परा वि, क्रम, साहस, रणोत्साह, ओजस्, धामन् (न)।
वीरान, वि (फ़ा) निर्मानुष, निर विजन २ निरर्थीक, शोभाहीन।
वीराना, स पु (फ़ा) विजन, निर्जनप्रदेश।
वीरानी, स स्त्री (फ़ा) विजनता, निर्जनता।
वीर्य, स पु (स न) शुक्र, रेतस्, तेजस् (न) बीज, चरमधातु इन्द्रिय २ दे 'रज' ३ वीरता, दे ४ बीजम्।
—के कीड़े, स पु, शुक्रकीटा।
—ज, स पु (स) पुत्र, तनय।
—विरहित, वि (स) निःशक्त २ क्लीव ३ भीरु।
वीर्यवान्, वि (स-वत्) बलवत्, दृढांग २ मांसल।
वुकूफ, स पु (अ) परिचय २ ज्ञानम् ३ बुद्धि (स्त्री)।
वुज़ू, स पु (अ) अंगप्रक्षालनम् (इस्लाम)।
वृंत, स पु (स न) चूचुक, स्तन मुख, अग्र २ प्रसवबन्धन, दे 'डाँटी'।
वृंद, सं पु (स न) समूह, निकर २ कोटि शतक, अर्बुदम्।
वृंदा, स स्त्री (स) तुलसी (पौदा) दे २ राधा।
—वन, स पु (स) वृंदारण्य २ तीर्थविशेष।
वृक, सं पु (स) कोक ईहामृग २ शृगाल।
वृक्ष, स पु (स) तरु, पादप, शाखिन्, विटपिन्, द्रु, द्रुम, पलाशिन, महीक्षिति भू, रुह न अग, नग, विटप।
वृत्त, स पु (सं न) चरित, चरित्र, आचार, आचरण २ सद् वृत्त आचार ३ समाचार, वृत्तान्त, उदन्त ४ वर्णवृत्तछंदस (न) ५ मण्डल, वर्तुलम्।
—खंड, स पु (स पु न) मण्डलवर्तुल, खंड।
वृत्ति, स स्त्री (सं) आजीव वर्तन जिविका, जीवन, जीविका २ उपजीविका, भृति (स्त्री) ३ संक्षिप्तगंभीरव्याख्या, सूत्रार्थविवरण, टीका ४ वृत्त, वृत्तान्त ५ आत्मवीदनैनी (सा वैदिकी ?) ६ व्यवहार ७ चित्तावस्था (योग., क्षिप्तमूढादि) ८ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री)।
वृत्र, स स्त्री (स) शिक्षणोपजीविका।
वृत्तो, स स्त्री (स) स्वभाव, प्रकृति (स्त्री), प्रवणता।
वृथा, वि (स) व्यर्थ, निरर्थक, मोघ। क्रि वि (स) मुधा, व्यर्थ, निष्फलम्।
वृद्ध, वि (स) स्थविर, वयस्य, -गैल, जीर्ण, जरितन्। सं पु (स) जरठ, स्थविर २, दे 'बूढ़ा' २ पंडित ३
वृद्धता, स स्त्री (स) जरा, वार्द्धक्य, दे 'बुढापा'।
वृद्धा, स स्त्री (स) स्थविरा, जरती, दे 'बुढ़िया'।
वृद्धावस्था, स स्त्री (स) दे वृद्धता'।
वृद्धि, स स्त्री (स) वर्धन, वृहण, उन्नति (स्त्री), उत्कर्ष, उपचय, आधिक्य, विस्तार २ कुसीद, वार्द्धुष्य, दे 'सूद' ३ अभ्युदय, समृद्धि (स्त्री) ४ पुण्यप्रदेशवर्गोपचय (राजनीति), क्षीणि स्थाति (स्त्री) ५ औषभद्रा (औषधविशेष)।
—जीवक, स पु (स) कुसीदिन्, वार्द्धुषिक।
—जीवन, सं पु (स न) कौसीद, वृद्धि जीविका।
वृश्चिक, स पु (स) वृश्चन, पृदाकु, दे 'बिच्छू' २ अष्टमराशि (ज्यो) ३ अगहन मार्गमास।
वृष, स पु (स) ऋषभ, वृषभ, दे 'बैल' २ पुरुषप्रकार (कामशास्त्र) ३ धर्म ४ द्वितीयराशि (ज्यो) ५ पति।
वृषभ, स पु (स) बलीवर्द, उक्षन्, दे 'बैल'।
वृष्टि, स स्त्री (सं) वर्ष, वर्षण, पराभून, दे 'वर्षा'।
वृहस्पति, स पु (स) सुराचार्य, दे 'बृह स्पति' २ नवग्रहान्तर्गतपंचमग्रह ३ गुरुवार।
वे, सर्व (हि वह का बहु) ते अमी (दोनों पु बहु) ता, अमू (दोनों स्त्री बहु), तानि, अमूनि (दोनों न बहु)।
वेग, स पु (सं) प्रवाह, धारा, वेणी, ओघ २ जव, स्यद, रय, रंहस् (न), रभस, प्रमथ ३ मूत्रविष्ठादिनिर्गमप्रवृत्ति (स्त्री) ४ त्वरा, तीव्रता ५ आनंद ६ प्रवृत्ति (स्त्री) ७ उद्योग ८ वृद्धि (स्त्री) ९ वीर्य, शुक्र १० गुणभेद (न्याय)।

वेगवान्, वि (स-वत्) क्षिप्र, द्रुत, शीघ्र, त्वर, आशु।
वेणी, स स्त्री (स) वेणि (स्त्री), प्रवेणी णि, वेणिका २ जलौघ, स्रोतप्रवाह।
वेणु, स पु (स) वंश, दे 'बाँस' २ वंशी, दे 'बाँसुरी'।
वेतन, स पु (स न) भरण्य, निर्वेश, भृति (स्त्री), भृत्या, भर्मण्या, कर्मण्या २ मासिक, मासिकभृति (स्त्री)।
—भोगी, स पु (स गिन्) वेतन भृति, भुज्, वैतनिक।
वेताल, स [illegible] (स) द्वारपाल २ भूतभेद ३ भूताधिष्ठितशव।
वेत्ता, स पु (स-तृ) ज्ञातृ, बोद्धृ, विद्।
वेद, स पु (स) श्रुति (स्त्री), छन्दस् (न), आम्नाय, निगम, ब्रह्मन् (न), प्रवचन, आर्यधर्मग्रन्थविशेषः (ऋग, यजु, साम, अथर्व = ४ वेद) २ सत्यज्ञानम्।
—त्रयी, स स्त्री (स) वेदत्रयम्।
—निंदक, सं पु (स) श्रुतिविरोधिन्, नास्तिक २ बुद्ध ३ बौद्ध।
—पारग, स पु (स) वेद,-ज्ञ विद्-मूर्ति वेद ज्ञानिन्-दर्शिन्।
—मंत्र, [illegible] पु (स) श्रुति,-वचन-वाक्यम्।
—माता, स स्त्री (स तृ) गायत्री, सावित्री २ सरस्वती ३ दुर्गा।
—वाक्य, स पु (स न) वेद,-मंत्र-वचनं २ प्रामाणिकवचनम्।
—विद्, स पु (स) दे 'वेदपारग'।
—विहित, वि ([illegible]) वेद, प्रतिपादित आदिष्ट उक्त।
—व्यास, स पु (सं) दे 'व्यास'।
—सम्मत, वि (स) वेद, अनुकूल अनुमोदित।
वेदना, स स्त्री (स) पीडा, व्यथा, यातना, संताप २ वेदनं, अनुभव, संवेद, ज्ञानम्।
वेदनीय, वि (सं) ज्ञातव्य, ज्ञेय, बोद्धव्य २ ज्ञापनीय, बोधयितव्य ३ कष्टप्रद, दुःखद।
वेदांग, स पु (स न) श्रुत्यवयवषट्प्रकार शास्त्र [= शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंदस् (न)]।
वेदांत, स पु (स) ब्रह्म-अध्यात्म, विद्या, ज्ञानकांड २ उपनिषद् (स्त्री) ३ उत्तरमीमांसा, दर्शनशास्त्रविशेष।
वेदांती, स पु (स तिन्) वेदांतशास्त्रवेत्तृ ब्रह्मवादिन्।
वेदाभ्यास, स पु (स) वेद,-अध्ययन स्वाध्याय-पाठ।
वेदी,[1] स स्त्री (स) वेदि, वेदिका, वितर्दी र्दिका (सब स्त्री)।
वेदी,[2] स पु (स-दिन्) पंडित २ ज्ञातृ।
वेदोक्त, वि (स) वेदविहित, दे।
वेध, स पु (स) वेधन, निर्भेद-दन, व्यध २ यंत्रैर्ग्रहनक्षत्रावलोकनम्।
—शाला, स स्त्री ([illegible]) मानमंदिरम्।
वेधक, स पु (स) वेधनकर, छिद्रकार, वेधिन्।
वेधना, क्रि स (स वेधन) व्यध (दि प. अ), विध्-समुत्कृ (तु [illegible] से), छिद्रयति (ना धा)। स पु, वेध धनं, व्यध धनं, रश्मिकिरणं (दे वेधक, विद्ध ६)।
वेधनी, स स्त्री (स) वेधनिका, आस्फोटनी, सूच्यग्रशिका।
वेधी, स पु (स धिन्) वेधक, दे।
वेला, स स्त्री (स) काल, समय २ सागर तरंग ३ समुद्रतट-टम्।
वेल्डिंग, स पु (अ) सन्धानम्।
वेल्व, स पु (अ) कपाट।
—ट्यूब, सं स्त्री (अ), कपाटनलिका।
वेश, स पु (स) आकल्प, प्रसाधन, नेपथ्य, प्रतिकर्मन् (न), वेष २ परिधानं, वस्त्राणि वसनानि (न बहु) ३ पट,-कुटी-मंडप ४ गृहम्।
—धारी, स पु ([illegible] रिन्) वेशधर, कपट छद्म,-वेषिन् २ दंभिन्।
—भूषा, स स्त्री (स) परिधान, वस्त्राभरणम्।
किसी का—धारना, मु, अन्यवेश परिधा, वेष परिवृत (प्रे), वेशांतर विधा।
वेश्या, स स्त्री (स) वेश,-युवती-वधू (स्त्री)- वनिता स्त्री, वार, अंगना-वधू विलासिनी नारी स्त्री, गणिका, रूपाजीवा, साधारणस्त्री, पण्यांगना, कामरेखा, भोग्या, भुजिष्या, क्षुद्रा।
—पन, स पु गणिकावृत्ति (स्त्री), वेश्यात्व।
वेष, स पु (स) दे 'वेश'।
वेष्टन, स पु (स न) पुट-ट, कोश ष,

प्रावरण २ आच्छादन परिवेष्टन ३ उष्णीषम्।

वेष्टित, वि (स) वलयित, संवीत, कृतवेष्टन २ रुद्ध।

वेसर, स पु (स) वेश(स)र, अश्वतर, वेगसर, दे 'खच्चर'।

वेस्वार, सं पु (स) उपस्कर, वेश(स) वार।

वैकल्पिक, वि (स) ऐच्छिक, स्वाधीन २ संदिग्ध, विकल्प्य ३ एकांगिन्।

वैकुंठ, स पु (स न) स्वर्ग, वि ष्णुलोक (स पु) विष्णु।

वैजयन्ती, स स्त्री (स) केतु, पताका ध्वज।

वैज्ञानिक, स पु (सं) विज्ञान-वेत्तृ विद्। वि (स) विज्ञान-सम्बन्धिन् विषयक मूलक।

वैतनिक, सं पु (स) दे 'वेतनभोगी'।

वैतरणी, स स्त्री (स) यमद्वारवर्ती नदी विशेष (पुराण)।

वैताल, वि (स) वेताल, विषयक-सम्बन्धिन्। सं पु दे 'वेताल तथा 'वैतालिक'।

वैतालिक, स पु (स) वैताल स्तुतिपाठक, बोधकर।

वैद, वि (स) वेद, विषयक सम्बन्धिन, श्रौत, छन्दस् २ वेद, अनुकूल विहित समाधन ३ वेदज्ञ। स पु (स) वेदज्ञ-वेदनिष्णात विप्र ब्राह्मण।

वैदिक, वि ([illegible]) छांदस, श्रौत, वेद, विषयक सम्बधिन्-उक्त प्रतिपादित।

वैदूर्य, स पु ([illegible] न) केतुरत्न, विदूररत्नजम्।

वैदेशिक, वि (स) अन्य पर वि-देशीय। स पु (स) पारदेशिक, विदेशीय।

—**मन्त्री**, सं पु (सं त्रिन्) पारदेशिकसचिव।

वैदेही, स स्त्री (स) विदेहतनया, जानकी, सीता।

वैद्य, स पु (स) भिषज्, अगदंकार रोगहारिन, चिकित्सक, आयुर्वेदिन् २ पंडित।

—**राज**, स पु (स) भिषग्वर।

वैद्यक, स पु (सं न) आयुर्वेद, चिकित्साशास्त्रम्।

वैध, वि (स) वैधिक (-की), धर्म्य, न्याय्य शास्त्र, सम्मत-अनुकूल २ उचित, युक्त।

वैधव्य, स पु (सं न) रंडात्वम्।

वैनतेय, स पु (स) गरुड, दे।

वैभव, स पु (स न) वित्त, धन, विभव, सम्पद्-सम्पत्ति (स्त्री) ऐश्वर्य २ महिमन् (पु), सामर्थ्यम्।

—**शाली**, वि (सं लिन्) समृद्ध, धनिन्।

वैमनस्य, [illegible] पु (सं न) वैर, वि द्वेष २ अन्यमनस्कता।

वैयाकरण, सं पु (स) व्याकरण-वेत्तृ-अध्येतृ पंडित।

वैर, स पु (स न) विरोध, वि-द्वेष, शत्रुता त्व, सापत्न्य, विपक्षता, द्वंद्वभाव।

—**करना**, वि द्विष (अ उ अ), विरुध् (रु प अ), वैरायते (ना धा), अभिशत्रूयते (ना धा)।

वैराग, स पु, दे 'वैराग्य।

वैरागी, स पु (स गिन्) वैरागिक वैराग्यवत्, विरक्त' दे। २ वैष्णवसम्प्रदायविशेष।

वैराग्य, स पु (सं पु) विरक्ति (स्त्री), वैरक्त्य, अनासक्ति (स्त्री)।

वैरी, स पु (स रिन्) अरि, शत्रु, सपत्न, रिपु, अराति, जिघांसु, द्वेष्टृ, प्रत्यर्थिन्, परिपंथिन्।

वैवाहिक, वि (सं) औद्वाहिक (-की स्त्री), वैवाह (ही स्त्री)।

वैशाख, सं पु (सं) माधव, राध, सौर प्रथम चान्द्रद्वितीय-मास।

वैशेषिक, स पु (स न) कणादमुनिप्रणीतो दर्शनग्रंथविशेष, औलूक्यदर्शनम्।

वैश्य, स पु (स) ऊरुज, अर्य्य, विश्, वणिज्, पणिक, भूमिजीविन्, वार्तिक, व्यवहर्तृ।

वैश्यानी, सं स्त्री (सं वैश्य) वैश्या, अर्य्या, अर्य्याणी।

वैश्वदेव, स पु (सं) विश्वदेवसंबंधियज्ञ।

वैश्वानर, सं पु (सं) अग्नि २ परमेश्वर।

वैषम्य, सं पु (सं न) विषमता, दे।

वैष्णव, सं पु (सं) विष्णु-उपासक भक्त, वार्ष्ण २ सम्प्रदायविशेष। वि (सं) वार्ष्ण, हार, विष्णुसंबंधिन्।

वैसा, वि (हि वह+सा) तादृश-स, तत्, तुल्य-सदृश, तथाविध।

ऐसा—, वि सामान्य, साधारण, प्राकृत।

—**का वैसा**, क्रि वि, पूर्ववत्, यथापूर्वम्।

वसे, क्रि वि (हिं वैसा) तथा, तद्वत्, तत्स दृशम् ।

—ही, क्रि वि , मूल्य विना, दे 'मुफ्त' ।

वोट, सं पु (अ) मत, छद , छदस् (न) २ मतदर्शन ३ मतदर्शनाधिकार ।

वोटर, सं पुं (अ) मतदर्शक २ मतदर्शनाधिकारिन् ।

व्यंग, वि (सं) अकाय, अशरीर २ विकल हीन,-अंग ३ 'व्यग्य' ।

व्यंगार्थ, स पुं , दे 'व्यंग्य' ।

व्यंग्य, सं पु (सं न) व्यंजनया बोध्योऽर्थ , गूढ-गुप्त,-अर्थ -आशय २ उपालभ , अधिआ,-क्षेप ।

—कसना या छोड़ना, क्रि स, उपालभ (भ्वा आ अ), अधि-आ,-क्षिप (तु प अ), अव-उप-हस् (भ्वा प से) ।

व्यजन, स पुं (स न) स्फुटी प्रकटी,-करण भवन, प्रकाशन २ दे 'व्यंजना' ३ चिह्न, लक्षणं ४ अर्द्धमात्रक, ककारादयो वर्णा ५. अगं, अवयव ६ श्मश्रु (न) ७ तेम, तेमन, निष्ठानं, अन्नोपकरणं ८ सिद्धान्न ९ उपस्थ ।

—कार, स पु (स) पाचक , सूद , रन्धक ।

—संधि, स स्त्री (सं पुं) व्यञ्जन,-संयोग सन्निकर्ष ।

व्यजना, सं स्त्री (सं) दे 'व्यजन' (२) । २ शब्दशक्तिविशेष (सा) ।

व्यक्त, वि (स) प्रकट टित, स्फुट, विशद, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, प्रकाशित ।

—करना, क्रि स, व्यज् (रु प से , प्रे.) प्रकाश (प्रे), प्रकटी विशदी-स्पष्टीकृ ।

—होना, क्रि. अ व्यज् (कम), प्रकटी स्पष्टी-आविर्, भू , प्रकाश (भ्वा आ स) ।

व्यक्ति, स स्त्री (स) स्पष्टता, विशदता, स्फुटता, प्राकट्यं, आविर् प्रादुर्, भाव २ मनुष्य, मानव ३ व्यष्टि (स्त्री), पृथक्त्व ४ वस्तु (न), पदार्थ ५ भूतमात्र ६ प्रकाश ।

—गत, वि (सं) व्यक्ति, स्थ,-वर्तिन्-संबंधिन्, वैयक्तिक, पुरुषविशेषानुबद्ध ।

व्यग्र, वि (स) सभ्रान्त, अधीर, व्याकुल, दे. २ भीत, त्रस्त ३ व्यापृत, कार्यमग्न, व्यासक्त ।

व्यग्रता, स स्त्री (स.) उद्वेग , सभ्रम , व्याकुलता दे २ चिंता, रणरणक , उत्कण्ठिका ३ व्यासक्ति (स्त्री) ।

व्यजन, सं पु (स न) ताल्वृन्तक, दे 'पंखा' ।

व्यतिक्रम, सं. पु (स) क्रम, भग विपर्यय विपर्यास-व्यत्यय २ अतराय , विघ्न ।

व्यतिरिक्त, वि (सं) भिन्न, अपर, इतर २ अधिक, विशिष्ट । क्रि वि (स न) विना, अतिरिक्तम् ।

व्यतिरेक, सं पु (स) भेद , भिन्नता, पृथक्त्व, अन्तर २ वृद्धि (स्त्री) ३ अतिक्रमण ४ अर्थालकारभेद (का) ।

व्यतीत, वि (स) अतीत, गत, अतिक्रान्त ।

व्यत्यय, } स पु (स) दे 'व्यतिक्रम'
व्यत्यास, } (१) ।

व्यथा, स स्त्री. (स) पीडा, वेदना, यातना २ कष्ट, क्लेश , दुःखम् ।

व्यथित, वि (स) पीडित, आर्त २ दुःखित, स परि,-तप्त ३ शोकमग्न ।

व्यभिचार, सं पु (स) जारकर्मन् (न), पारदार्य, परयोषित्संग । (स्त्री का) पातिव्रत्यभंग, परपुरुषगमन २ कदाचार , दुराचार , दुर्वृत्तम् ।

व्यभिचारिणी, स स्त्री (स) जारिणी, पुंश्चली, बधकी, परपुरुषगामिनी ।

व्यभिचारी, स पु (स रिन्) पारदारिक , परस्त्रीगामिन्, जार , भुजग , परतल्पग , उपपति २ दुर्वृत्त , दुराचारिन् ३ दे 'संचारी' (भाव) ।

व्यय, स पु (स) वित्त,विनियोग , अर्थ, उत्सर्ग , २ दानं ३ परित्याग ।

—शील, वि (स) मुक्तहस्त, अमितव्ययिन् ।

व्यर्थ, वि (स) विफल, निष्फल, मोघ, निरर्थक, निष्प्रयोजन, वृथा , मुधा २ अपार्थक, अर्थहीन । क्रि वि (स न) निरर्थक, वृथा, मुधा, निष्प्रयोजन, निर्निमित्त, निष्फलम् ।

व्यवच्छेद, स पु (स) पार्थक्य, पृथक्त्व, २ विभाग , खण्ड-न ३ विराम , ४ निवृत्ति (स्त्री) ।

व्यवधान, स पुं. (स न) व्यवधा, आवरण,

२ *तिरस्करिणी, प्रतिसीरा* ३ *विभाग*, खंड ४ विच्छेद ।

व्यवसाय, सं पु (सं) वृत्ति (स्त्री), उपजीविका, आजीव २ व्यापार, क्रयविक्रय ३ *कार्य,-आरम्भ-उपक्रम* ४ निश्चय ५ *प्रयत्न*, *उद्यम* ।

व्यवसायी, सं पु (सं यिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन् २ क्रयविक्रयिक, वणिज् ३ वृत्तिमत्, व्यवसायविशिष्ट ४ अनुष्ठातृ ।

व्यवस्था, सं स्त्री (सं) शास्त्रनिरूपित, विधि विधान निर्णय २ रचना, विन्यास, क्रमेण स्थापन -व्यूहन ३ प्रबंध, कार्यनिर्वाहण *अवेक्षणं* ४ स्थिरता ।

व्यवस्थापक, सं पु (सं) व्यवस्थादायक, व्यवस्थापयितृ २ अधिष्ठातृ, अध्यक्ष, चालक, निर्वाहक, प्रबंधक ।

—मंडल, सं पु (सं न) व्यवस्थापिका सभा ।

व्यवहार, सं पु (सं) वृत्त, वर्तन, चरित, आचार, चेष्टित २ कर्मन् (न), कार्य २ व्यवसाय, व्यापार ३ कौसीद, वृद्धिजीवन ४ *विवाद* ५ *कलह*, पण ६ *अभियोग*, कार्य (-मुकदमा) ७ प्र-उप,-योग ।

—करना, क्रि अ, व्यवहृ (भ्वा उ अ), वृत् (भ्वा आ से), आचर् (भ्वा प से) ।

व्यवहारी, वि (सं रिन्) व्यवहारक, व्यवहर्तृ २ प्रचलित, लौकिक । सं पुं (सं) वणिज्, कार्य, अर्थिन् ।

व्यवहार्य, वि (सं) व्यवहरणीय २ उपयोक्तव्य ।

व्यवहित, वि (सं) व्यवधानविशिष्ट, सावरण, तिरोहित ।

व्यवहृत, वि (सं) व्यापारित, उप प्र,-युक्त २ *आचरित, अनुष्ठित* ।

व्यसन, सं पु (सं न) दोष, दुर्गुण, दुःशील, दुर्वृत्ति (स्त्री) २ विपद्-विपत्ति (स्त्री) ३ दुःख, कष्ट ३ अनिष्ट, अमंगल ४ विषय, अनुराग -आसक्ति (स्त्री) ५ दुर्दैव, भाग्य ६ अभिरुचि (स्त्री) ।

व्यसनी, वि (सं निन्) दुःशील, दुर्वृत्त, विषयासक्त २ वेश्यागामिन् ।

व्यस्त, *वि (सं) संभ्रान्त,* व्याकुल दे २ व्यासक्त, लीन, मग्न ३ व्याप्त ४ *भिन्न* ५ प्रत्येक, पृथक्-पृथक् ६ क्रमहीन, अव्यवस्थित ।

व्याकरण, सं पु (सं न) वेदांगविशेष, शब्दशास्त्र २ व्याकरणग्रंथ ।

व्याकुल, वि (सं) आकुल, व्यग्र, संभ्रान्त, विकल, विह्वल, मोहित, विक्षिप्त, विमूढ़, कातर, विह्वल, अधीर, संभ्रान्त-व्यस्त विक्षिप्त मूढ़,-चित्त मनस् २ अति,-उत्क-उत्कंठ-उत्सुक ।

—करना, क्रि स, मुह-संभ्रम् (प्रे), आकुलीविह्वलीकृ, वि सं,-क्षुभ् (प्रे) ।

—होना, क्रि अ, आकुलीभू, मुह् (दि प से), २ अत्युत्सुक (वि) भू ।

व्याकुलता, सं स्त्री (सं) आ-व्या,-कुलता कुलत्व, व्यामोह, व्यग्रता, संभ्रम, विकलता, व्यस्तता, विह्वलता, संवित्, क्षोभ, चित्तवैकल्यं-अशान्ति अनिर्वृति (स्त्री), उद्वेग, व्याक्षेप, उद्विग्नता २ उत्कंठातिशय, लालसा ।

व्याख्या, सं स्त्री (सं) स्पष्टी विशदी,-करण, विवरण, प्रकाशन, व्याख्यान, प्रवचन २ टीका, टिप्पणी, भाष्य (विविधभेद) ३ विवरणात्मको ग्रन्थ ।

—करना, क्रि स, व्याख्या (अ प अ), निरूप् (चु), विवृ (स्वा उ से), व्याचक्ष् (अ आ अ), स्फुटी विशदी स्पष्टी कृ ।

—स्थान, सं पुं (सं न) व्याख्यानभवन सभाभवनम् २ विद्यालय ।

व्याख्याता, सं पु (सं -तृ) भाष्य-व्याख्या टीका,-कार २ प्र,वक्तृ, उपदेशक, व्याख्यानदातृ, सम्भाषक ।

व्याख्यान, सं पु (सं न) दे 'व्याख्या'(१) २ भाषण, उपदेश, प्रवचनम् ।

—देना, क्रि स, व्याख्या (अ प अ), सम्भाष् (भ्वा आ से) उपदिश् (तु प. अ), प्रवच् (अ प अ) ।

—शाला, सं स्त्री (सं) सभा-व्याख्यान, स्थान भवनम् २ शिक्षालय ।

व्याघात, सं पु (सं) विघ्न, दे २ प्रहार, आघात ३ अलंकारभेद (सा) ।

व्याघ्र, सं पु (सं) शार्दूल, द्वीपिन्, मृगान्तक, हिंस्रक, चंद्रकिन्, शेर, व्याघ्र २ पंच,-नख-शिख आम्र, सिंह दे ।

व्याज[1], सं पु, दे 'ब्याज' ।

व्याज[2], सं पु (सं) अपदेश, देश,

कपट, छल, छद्मन (स), मिष २ विन ३ विल्व ।
—निंदा, स स्त्री (स) कपटनुत्या २ अलंकार भेद (सा)।
—स्तुति, स स्त्री (स) कपटप्रशंसा २ अलंकारभेद (सा)।
व्याजोक्ति, स स्त्री (स) कपट-छल,-वाक्य २ अलंकारभेद (सा)।
व्याध, स पु (स) मृगयु, मृगजीवन, लुब्धक, द्रोहाट, बल्पाशुन अरेटक, मृगवधाजीव २ शाकुनिक, जालिक पक्षिग्राहक, जीवानक ।
व्याधि, स, पु (स) रोग, दे २ विपत्ति (स्त्री)।
व्यान, स पुं (स) देहस्थवायुभेद ।
व्यापक, वि (स) व्यापिन्, प्रसारिन २ आच्छादक।
सव—, वि (स) विश्वव्यापिन्, सर्वग ।
व्यापकता, स स्त्री (स) व्याप्ति, दे ।
व्यापना, क्रि स (स व्यापनं) व्याप (स्वा प अ), वि-अश् (स्वा आ से), अत प्रस (भ्वा प अ)।
व्यापादन, स पुं (स न) अपकार-अनिष्ट, चिन्ता चिन्तनम् २ वध, हत्या ३ नाश, ध्वंस ।
व्यापार, स पु (स) वाणिज्य, वणिककर्मन (न), क्रयविक्रय, निगम २ कार्य, कर्मन (न) ३ व्यापार, इंद्रियार्थप्रयोग (न्या) ४ व्यवसाय ।
—करना, क्रि अ, क्रयविक्रय-वाणिज्य कृ, पण् (भ्वा आ से)।
व्यापारी, स पुं (स रिन्) वणिन्, वणिज, आपणिक, नैगम, क्रयविक्रयिण, पण्याजीव, सार्थिक, श्रेष्ठिन, व्यापारिन्।
व्यापी, वि (स पिन्) दे 'व्यापक'।
व्यापृत, वि (स) कार्य,-सलग्न-स्तान-रत २ निहित, स्थापित। स पु (स) मन्त्रिन, उच्चकर्मचारिन्।
व्याप्त, वि (स) ओत प्रोत, अत प्रसृत २ भृत, परिपूरित।
व्याप्ति, स स्त्री (स) व्यापन, परिपूरण, अंत प्रसार ।
व्याम, स पु (स) व्यायन, दैर्घ्यमानभेद ।
व्यामोह, स पु (स) विसं,मोह, विवेक भ्रश ।
व्यायाम, स पु (स) मल्लक्रीडा, बलवर्द्धक, श्रम २ परिश्रम ।
व्यायोग, स पु (स) रूपक-नाटक, भेद (सा)।
व्याल, स पु (स) सर्प, अहि २ सिंह ३ व्याघ्र ४ हिंस्रपशु । वि (स) दुष्ट, अपकर्तृ।
—ग्राही, स पु (स हिन) दे 'सपेरा'।
व्यावहारिक, वि (स) वतन-व्यवहार, विषयक २ अभियोगसम्बन्धिन् ३ सामान्य, साधारण।
व्यास, स पु (स) पाराशर-रि-र्य, कृष्ण, द्वैपायन, कानीन, बादरायण-णि, सत्य, भारत प्रन-रत, माठर, वेदव्यास, सात्यवत २ कथावाचक ३ विष्कम, गोलस्य मध्यरेखा ४ विस्तार ।
व्यासक्त, वि (स) अत्यतानुरक्त।
व्याहृति, स स्त्री (स) उक्ति (स्त्री) २ मत्रविशेष (= भू, भुव, स्व)।
व्युत्पत्ति, स स्त्री (स) विशिष्टज्ञान २ उद् गमस्थान, मूल ३ निरुक्ति (स्त्री), शब्द,-साधन सिद्धि (स्त्री), निर्वचनम्।
व्युत्पन्न, वि (स) निष्णात, प्रवीण, निपुण, विशेषज्ञ, विज्ञ २ व्युत्पत्तियुत ३ संस्कृत।
व्यूह, स पु (स) सैन्य-सेना,-विन्यास, सस्थान २ सेना ३ समूह ४ रचना, ५. तर्क ६ शरीरम्।
—रचना, क्रि स व्यूह् (भ्वा प से), सैन्य विन्यस (दि प से), व्यूह रच् (चु)।
व्योम, स पु [स मन् (न)] आकाश २ जल ३ जलद ।
—यान, स पु (स न) विमान-नं, वायुयान, *वातपोत ।
व्रज, स पु (स) समूह, समुदाय २ मथुरावृन्दावनयोश्चतुष्पार्श्ववर्तिदेश, व्रज,-मडल भूमि (स्त्री) ३ गोष्ठम्।
—नाथ, स पु (स) श्रीकृष्ण, व्रज मोहन-राज-वल्लभ इश्वर इद्र ।
—भाषा, स स्त्री (स) शौरसेनीप्राकृताद् द्भूतो भाषाविशेष ।

व्रण, स पु (स पु न) क्षत-ति (स्त्री), अरुस् (न), ईर्मं २ दे 'विस्फोट' (२)।

व्रत, स पु (स पु न) निय(या)म, पुण्यक, २ उपवास उपोषण, लङ्घन ३ दृढ़ सङ्कल्प अध्यवसाय निश्चय प्रतिज्ञा।

—रखना, क्रि अ, उपवस (भ्वा प अ), लङ्घ (भ्वा आ से), उपोषण कृ, व्रतयति (ना धा)।

—लेना, क्रि अ, दृढ़-सङ्कल्प कृ, सशपथ प्रतिज्ञा (क्र आ अ), व्रत धृ (चु) चर (भ्वा प से)।

व्रती, स पु (स विन्) व्रत,धर-स्थ चारिन् २ यजमान ३ ब्रह्मचारिन् ४ तापस, तपस्विन्।

व्रात्य, स पु (स) संस्कारहीन २ सावित्री पतित ३ सांकरिक, मिश्रज।

व्रीडा, स स्त्री (सं) त्रपा, लज्जा।

व्रीहि, स पु (स) शालि, स्तम्बकरि २ धान्यमात्रम्।

बहु—, स पु (स) समासभेद (व्या)।

श

श, देवनागरीवर्णमालायाः त्रिंशो व्यञ्जनवर्ण, शकार।

शंकर, वि (सं) शुभ(म)कर, मङ्गल्य, शुभ, शिव, भद्र। सं पु (स) महादेव, शिव, दे। २ शंकराचार्य।

शंकरा, स स्त्री (स) पार्वती २ मंजिष्ठा ३ शमीवृक्ष। वि स्त्री, सुख-मङ्गल,-कारिणी दायिनी।

शंकराचार्य, स पु (स) अद्वैतमतप्रवर्तक आचार्यविशेष।

शंकरी, स स्त्री (सं) पार्वती, उमा २ मंजिष्ठा, रक्ता ३ शमीवृक्ष ४ रागिणीभेद। वि स्त्री, मङ्गल-कल्याण,-कारिणी।

शंका, स स्त्री (स) भय, भीति (स्त्री), त्रास, दर, साध्वस २ सन्देह, संशय, विकल्प, आशङ्का ३ आक्षेप।

शंकित, वि (स) भीत, त्रस्त, ससाध्वस २ सदिग्ध, अनिश्चित ३ संशय-सन्देह-ग्रस्त, आशङ्किन्, साशङ्क।

शंकु, स पु (स) तीक्ष्णाग्र निशितान्त पदार्थ २ कील ३ नागदन्त, कालक ४ कुन्त, प्राम ५ (शाकदाना) फल फलक ६ दशलक्षकोटि (स्त्री) (संख्याविशेष) ७ मेढ़ ८ गोपुच्छाकार शम्भवो वृष।

शंख, स पु (स पु न) कम्बु, कम्बोज, अर्णोभव, पावनध्वनि अन्तकुटिल, महा-सुनाद-नाद, सुस्वर, हरिप्रिय २ लघु कौटि (स्त्री) दशनिखर्वसंख्या ३ गड ४ गजगण्डमध्यस्थ वा ५ असुरविशेष।

—बजाना, क्रि स, शंख ध्मा (भ्वा प अ), शंखेन पूर् (चु)।

—ध्वनि, स. स्त्री (स पु) कम्बुनाद।

—पाणि, स पु (स) शंखधर, विष्णु २ कृष्ण।

शंखिनी, स स्त्री (स) चतुर्विधनारीष्वन्य तमा २ श्वेत महा भद्र, तिक्ता, सूक्ष्मपुष्पी ३ दे 'सीप'।

शठ, स पु (सं) अविवाहित, अकृतविवाह, कुमार २ मूर्ख ३ क्लीब।

शंड, स पु (स) क्लीब, निर्मुष्क, षण्ढ, नपुंस (पु), नपुंस-सक (क) २ गोपति, बलीवर्द ३ उन्मत्त।

शन्तनु, स पु (स) महाभीष्म, प्रातीप, भीष्मजनक।

शंबर, स पु (स) दैत्यविशेष २ कुरङ्ग। (स न) जल २ मेघ ३ धनम्।

—सूदन, स पु (सं) कामदेव।

शंबुक-क, स पु (स) शम्बूक था, शम्बु, जम्बु, शुक्ति (स्त्री), डिम्ब, दुश्चर, पद्ममण्डूक, घोंघ २ शम्ब ३ शूद्रतापस।

शंभु सं पु (स) महादेव, शिव दे. २. ब्रह्मन् ३ विष्णु।

—बीज, स पु (स न) पारद, दे 'पारा'।

—भूषण, स पु (स. न) चन्द्र।

शऊर, सं पु (अ) विवेक, सूक्ष्म, दृष्टि बुद्धि (स्त्री) २ योग्यता, कौशल ३ शिष्टता, सुशीलता।

—दार, वि (अ + फा) विवेकिन् २ योग्य ३ शिष्ट।

शक¹, सं पु (सं) जातिविशेष २ शकादित्य, शालिवाहन ३ शालिवाहनप्रवर्तित संवत्-विशेष।

शक[2], स पु (अ) संदेह, संशय २ अविश्वास, प्रत्ययाभाव ।
—करना, क्रि अ, दे 'संदेह करना'।
शकट, स पु (स पु न) वहन, अक्ष, अनस् (न) २ शरीर, देह ।
—का भार, स पु, शाकट, शाकटीन ।
शकटिका, स स्त्री (स) लघुशकट ट, शकटी २ शकटकीटनरम् ।
शकर, स स्त्री (स शर्करा, फा) शार्कर, स्थूल-रक्त, शर्करा, गुडचूर्णम् ।
—कद, स पु (स शर्करानद द) (लाल) रक्तालु, लोहितालु, रक्त-कद पिंडक (सफेद) शर्करा-मधुर,-कद ।
—पारा, स पु (स फा) शकपाल, शर्करापाल ।
—बादाम, स पु (फा) सुरमानिका, दे 'सुरमानी' तथा 'नद आलू' ।
शकल[1], स स्त्री (अ शकल) आकार, आकृति (स्त्री), रूप २ मुख-मुद्रा ३ रचना, घटना ४ उपाय ५ मूर्ति (स्त्री), दे 'रूप'।
शकल बिगाड़ना, मु, भृश तद् (चु)।
शकल[2], स पु (स पु न) खड-ड, लव, भाग ।
शकील, वि (अ शकल) आकृतिमत्, सुंदर, सुरूप, चारु ।
शकुन, स पु (स) खग, दे 'पक्षी' २ कीटभेद ३ विश्वामित्रपुत्र ।
शकुतला, स स्त्री (स) कण्वप्रतिपालिता मेनकाविश्वामित्रयो कन्या, दुष्यंतपत्नी २ श्रीकालिदासप्रणीत प्रख्यातनाटकम् ।
शकुन, स पु (स पु न) फल पूर्व-लक्षण, अजन्य, निमित्त २ मगलमुहूर्त (र्त), तत्र भव कार्यं वा ३ पक्षिन् ४ गृध ४ माङ्गलिक गीत ५ विवाहनिश्चयको वरोपहार, शकुनम् ।
—देखना या विचारना, मु, (कार्यारंभात् प्राक) शकुनै फल चिंत (चु)।
शकुनि, स पु (स) पक्षिन् २ गृध ३ गांधारीभ्रातृ, सौबल्क ४ महादुष्ट ।
शक्कर, स स्त्री (स शर्करा) दे 'शकर' २ दे 'चीनी'।
शक्की, वि (अ शक) सशयात्मन्, विश्वासविहीन, श्रद्धाशून्य, शंकाशील ।
शक्त, वि (स) समर्थ, क्षम, योग्य २ सबल, शक्तिमत् ३ धनिक ४ मधुरभाषिन् ।
शक्ति, स स्त्री (स) बल, सामर्थ्य, प्रभाव, तरस्-ओजस् तेजस् ऊर्जस् महस (न), शौर्य, पराक्रम, शुष्म, सह, स्थामन् शुष्मन् (न), प्राण २ वश, अधिकार ३ शत्रु-विजयसाधन प्रभु मन्त्र उत्साह, शक्ति (स्त्री), ४ माया, प्रकृति (स्त्री) ५ दुर्गा, भगवती ६ गौरी ७ लक्ष्मी (स्त्री) ८ कासू-सू (स्त्री), शस्त्रभेद ९ खड्ग १० देवभावनम् ।
—धर, स पु (स) शक्ति, प्रह ध्वज-पाणि भृत्, कार्त्तिकेय ।
—वाला, वि, शक्ति-मत् शालिन्, बलवत्, शक्त, बलिन्, पराक्रमिन्, ऊर्जस्विन्, समर्थ ।
—हीन, वि (स) अशक्त, अबल, निर्बल, बलहीन, असमर्थ २ नपुसक, क्लीब ।
शक्य, वि (स) सभवनीय, संभाव्य, सभावित २ सपाद्य, साध्य ३ दे 'शक्त'। स पु (स) वाच्यार्थ ।
शक्यता, स स्त्री (स) सभाव्यता, सभव २ साध्यता, सपादनीयता ।
शक्र, स पु (स) पुरन्दर, दे 'इन्द्र'।
शक्राणी, स स्त्री (स) शची, इन्द्राणी।
शक्ल, स स्त्री (अ) दे 'शकल' (१)।
शख्स, स पु (अ) जन, मनुष्य, दे. 'व्यक्ति'।
शख्सियत, स स्त्री (अ) व्यक्तित्व, दे ।
शगल, स पु (अ) व्यवसाय, उपजीविका २ मनोविनोद ।
शगु(गू)न, स पु, दे 'शकुन'।
शगुनिया, स पु (हिं शगुन) निमित्तज्ञ, दैवज्ञ ।
शगूफा, स पु (फा) कोरक-क, कलिका २ पुष्प ३ विलक्षणवृत्तांत ।
—खिलना, मु, अद्भुत, सवृत् (भ्वा का मे)।
शचि ची, स स्त्री (स) पौलोमी, ऐन्द्री, दे 'इन्द्राणी'।
—पति, स पु (स) शचीश, बलभिद्, दे. 'इन्द्र'।
शजर, स पु (अ) पादप, वृक्ष ।

शजरा, स पु (अ) वंशावली स्त्रि (स्त्री), वंशवृक्ष २ वृक्ष ३ क्षेत्रमानचित्रम् ।

शठ, वि (स) धूर्त वंचक, प्रतारक माया विन् २ दुर्वृत्त, दे लुच्चा ।

शठता, स स्त्री (स) धूर्तता माया शाठ्य, कपट २ दुर्वृत्त दुराचार, दौर्जन्यम् ।

शडप्पा, स पु (अनु शडप) शब्दप्रकार, द्रुतनिगरणध्वनि ।

—मारना, मु, द्रुत निगृ (तु प से) शब्दप्रकारे भुञ्ज (रु आ से) ।

शण, स पु (स) दीप, शाख पल्लव माल्य पुष्प, सुकुमार, वमन, कटुतिक्तक २ शणा, विजया ३ शणपुष्पी ।

शत, वि [स शत (नित्य न)] । स पु, दशगुणितदशसंख्या तद्बोधका अङ्काश्च (१००), दे सौ' ।

—कोटि, स पु (स) वज्र, पवि । स स्त्री (स) अब्जसंख्या, अर्बुददशक अर्बम् ।

—क्रतु, स पु (स) शतमख, इन्द्र ।

—घ्नी, स स्त्री (स) अस्त्रभेद, लोहकंटक सहिता महती शिला ।

—च्छद, स पु (स) काष्ठकुट्टपक्षिन् । (स न) शतदलपद्मम् ।

—दल, स पु (स न) शतपत्र, कमलम् ।

—पत्र, स पु (स पु न) दे 'शतच्छद' ।

—पथ ब्राह्मण, स पु (स न) शुक्लयजुर्वेदस्य ब्राह्मणग्रंथविशेष ।

—पथिक, वि (स) नानामतावलंबिन्, नानापथगामिन् ।

—पद, स [illegible] (स) शतपदी, कर्णजलौका २ पिपीलिका । वि, शत-पद पाद ।

—पदी, स स्त्री (स) कर्णजलौका, शतपादिका, कर्ण-जलुका-जलौकस (स्त्री) शतपाद् (स्त्री) ।

—भिष, स पु (स शतभिषा) नक्षत्रविशेष, शतभिषज् (स्त्री) ।

—लक्ष, स पु (स न) कोटिः टि (स्त्री) ।

—वादन, स पु (स न) अनेकवाद्यानां युगपद् वादनम् ।

—वर्ष, वि (स) शताब्द, शतायुस । स पु (स न) शताब्दी ब्दम् ।

—सहस्र, स पु (स न) लक्षम् ।

शतक, स पु (स न) शतवर्षं, वर्षशत, शताब्दं २ शत, शतवस्तुसमूह । वि, शतसंख्याविशिष्ट, शत ।

शतधा, अव्य (स) शतप्रकार २ शतखण्डेषु ३ शतगुणित ।

शतद्रु, स स्त्री (स) शितद्रु, शतद्रु, शुतुद्रि द्रू (सब स्त्री) ।

शतरंज, स पु (फा) चतुरंगम् ।

—का मुहरा, स पु, खेलनी, शार रि ।

—की बिसात, स स्त्री, अष्टापद, शारिफलम् ।

—बाज़, स पु (फा) चतुरंगक्रीडक ।

—बाज़ी, स स्त्री (फा) (१ २) चतुरंग, क्रीडा-व्यसनम् ।

शतरंजी, स स्त्री (फा) विविधवर्णरोटिका २ बहुवर्ण-कुथा स्तरी ३ अष्टापद, शारिफलम् । स पु, चतुरंगचतुर ।

शतशः, अ (स) शत शतमिति कृत्वा २ शतकृत्व (अव्य) शतवारान् ३ अनेकधा, बहुधा नानाप्रकारेण ।

शताब्दी, स स्त्री ([illegible]) दे 'शतक' (१) ।

शतायु, वि (स-युस्) शत-वर्षं अब्द ।

शतिक, वि (स) शतवान् २ शत, शतविषयक ।

शती, स स्त्री (स) शती, शताब्दी २ शत वस्तुसमूह ।

शत्रुंजय, स पु (स) शत्रु-अमित्र-जित्, शत्रुंतप, अरिंदम, रिपुसूदन ।

शत्रु, स पु (स) रिपु, अरि, सपत्न, वैरिन्, द्वेषण, द्विष, दुर्हृद्, दौर्हृद, पर, शात्रव, अराति, प्रत्यर्थिन्, परिपंथिन्, प्रतिपक्षिन्, द्वेषिन्, जिघांसु घातक, हिंसक, २ शत्रुमता ।

शत्रुघ्न, स पु (स) लक्ष्मणानुज, शत्रुमर्दन । (अन्य) दे 'शत्रुंजय' ।

शत्रुता, स स्त्री (स) वैर, सापत्न्य, विद्वेष, प्रति वि, पक्ष(प)ता, विरोध ।

—करना, क्रि अ, वैरायते, अमित्रयति, अमित्र यति, अमित्रायते (सब ना धा), वि, द्विष् (अ उ अ) ।

शदीद, वि (अ) गंभीर, प्रबल, भयंकर तीव्र ।

शनाख्त, स स्त्री (फा) दे 'पहचान

शनि, स पु (स) शनैश्चर सौरि, मंद, छायासुत, ग्रहनायक, वक्र, पंगु सूर्यपुत्र २ दौर्भाग्य ३ शनिवासर ।

—प्रिय, स पु (स) नीलमणि, दे 'नीलम'।
—वार, स पु (सं) शनि शनैश्चर,-वार वासर ।
शनैः, अव्य (स) मद शनकैः ।
—शनैः, अव्य (सं) मद मद, शनकैः शनकैः ।
शनैश्चर, स पु (स) दे 'शनि' (१३)।
शपथ, स स्त्री (स) दे 'सौगंद' २ दिव्य ३ प्रतिज्ञा।
शफ, स पु (स न) (गवादीना) खुर, दे ।
शफक, सं स्त्री (अ) सखा, सख्या, सख्याशु ।
शफ़क़त, स स्त्री (अ) अनुग्रह २ प्रेमन् (पु न)।
शफ़तालू, स पुं (फ़ा) (पे॰) सतालुक । (फल) सतालुक, आरूक, दे 'आडू'।
शफ़ा, सं स्त्री (अ) स्वास्थ्य, नीरोगता।
—ख़ाना, स पु (अ+फ़ा) चिकित्सालय।
शब, सं स्त्री (फ़ा) रात्री त्रि (त्री), रजनी।
शबनम, स स्त्री (फ़ा) अवश्याय, दे 'ओस'।
शबल, वि (स) कर्बुर, कल्माष, नानावर्ण, चित्र।
शबाब, सं स्त्री (अ) यौवनं २ सौन्दर्या तिशय ।
शबाहत, स स्त्री (अ) आकृति (स्त्री) २ समानता।
शबीह, स स्त्री (अ) चित्र २ साम्यम्।
शब्द, स पु (सं) निन(ना)द, वि, र(रा)व, निर्घोष, स्व(स्वा)न, ध्वनि, ध्व(ध्वा)न २ पद, सार्थकोऽक्षरसमूह ३ ओश्म्, प्रणव ४ भक्तिगीतम्।
—कोष, सं पु [स न (श)] अभिधान, शब्द समूह ।
—चातुर्य, सं पु (सं न) वाग्मिता, वाक पाटवम्।
—चित्र, सं पु (स न) अधमकाव्यभेद, अनुप्रास ।
—चोर, सं पु (स) कुम्भिल, शब्दतस्कर ।
—चोरी, सं स्त्री, शब्दचौर्य, कुम्भिलत्वम्।
—पति, स पु (सं) अनुयायिरहितो नेतृ।
—प्रमाण, स पु (सं न) आप्तप्रमाणम्।
—विरोध, सं पु (सं) विरोधाभास, मिथ्या वैपरीत्यम्।
—ब्रह्मन्, स पु (स न) चत्वारो वेदाः ।
—भेदी, वि (स-दिन) शब्द,-वेधिन्-पातिन्। सं पु, अर्जुन २ दशरथ ३ बाणभेद ४ पांडु ।
—वेधी, सं स्त्री (सं धिन्) दे 'शब्दभेदी'।
—शक्ति, स स्त्री (स) शब्दार्थसामर्थ्यबोधक-शक्ति (स्त्री) (=अभिधा, लक्षणा व्यंजना)।
—शास्त्र, स पुं (स न) शब्दविद्या, व्याकरणम्।
—श्लेष, स पु (स) शब्दालंकारभेद (सा), अनेकार्थकपदप्रयोग ।
—सौष्ठव, सं पुं (स न) पदलालित्यम्।
शब्दाडंबर, स पु (स) शब्द पद,-जाल प्रपञ्च ।
शब्दातीत, वि (स) शब्दातिग, अवर्णनीय, (ईश्वरादि)।
शब्दानुशासन, स पु (सं न) दे 'शब्द शास्त्र'।
शब्दार्थ, स पुं (स) पदानुवर्ती अर्थ, भावो पेक्षोऽर्थ ।
शब्दालंकार, सं पु (स) अलंकारभेद (सा), शब्दाश्रितो वाक्चमत्कार ।
शम, स पु (स) प्र,शांति (स्त्री), शमथ, निश्चलत्व, स्वास्थ्य, प्र-उप,शम २ मोक्ष ३ इन्द्रियनिग्रह ४ निवृत्ति (स्त्री), वैराग्यं ५ क्षमा।
शमन, स पु (स न) दे 'शम' (१)। २ यज्ञार्थं पशुहननं ३ दमन, नाशन ४ चर्वण ५ हिंसा।
शमनी, स स्त्री (सं) निशा, रजनी।
शमला, सं पु (अ) उष्णीष शिरोवेष्टन, शिरस्त्र शिखर-अग्र प्रान्त ।
शमशेर, स स्त्री (फ़ा) असि, खड्ग ।
—बहादुर, स पुं (फ़ा) आसिक, खड्गिन्।
शमा, स पु (अ शमअ) दे 'मोम' २ दीपिका ३ दीप पक्ष ।
—दान, सं पु (फा) दीप-दीपिका, वृक्ष ध्वज ।
शमी¹, स स्त्री (सं) शक्तु, फला-फली, शिवा, केशमथनी, पापशमनी, भद्रा, श शुभ,-करी।
शमी², वि (सं मिन्) शांत, क्षोभरहित, निश्चल।
शयन, सं पु (स न) संवेश, स्वपन, निद्राणं, सुप्ति (स्त्री), स्वाप २ शय्या ३ संवेशनं, मैथुनम्।

—गृह, स पु (स न) शयन-आगार मन्दिरम्।
शयालु, वि (स) निद्रालु, तन्द्रालु २ सुषुप्सु, निद्रावश।
शय्या, स स्त्री (स) आस्तर, दे 'बिछौना' २ खट्वा, पर्यंक, दे 'खाट'।
—गत, वि (स) रुग्ण, रोगिन्।
—गृह, सं पु (स न) दे 'शयनगृह'।
—मूत्र, सं पु (स न) *स्वप्नस्राव, शिशुरोगभेद।
—छादन, स पु (स न) पर्यंकप्रच्छद।
शर, स पु (स) इषु, बाण, दे। २ शरकाण्ड, दे 'सरकण्डा' ३ क्षीरसार, दुग्धाग्र, सन्तानिका ४ दधिसार, दधि, सार-स्नेह, कट्वर, कन्दर ५ उद्गार।
शरअ, स स्त्री (अ) धर्म, मत २ धर्मशास्त्र ३ प्रथा ४ धार्मिकादेश ५ ईश्वरादिष्टमार्ग (इस्लाम)।
शरकाण्ड, सं पु (स) दे 'सरकण्डा'।
शरण, स स्त्री (स न) आश्रय, गति (स्त्री) २ आश्रय प्राण-स्थान ३ गृह भवनं ४ शरण्य, रक्षिन्, त्रातृ ५ शरणागतरक्षणम्।
—देना, क्रि स, अव-रक्ष् (भ्वा प से), शरणं दा।
—लेना, क्रि अ, आश्रि (भ्वा उ से), शरणं प्रपद् (दि आ अ) इ-या (दोनों अ प अ)।
शरणागत, वि (स) शरणापन्न, अभिपन्न, शरणार्थिन, शरणैषिन्। स पु (स) शिष्य।
शरणार्थी, वि (स थिन्) शरणेच्छुक, रक्षाभिलाषिन्।
शरण्य, वि (स) शरणद, शरणागतरक्षक, रक्षक, त्रातृ २ दुःखिन, असहाय।
शरद्, स स्त्री (स) परि-वत्सर, अब्द, वर्ष पुं २ वर्षावसान, मेघान्त, कालप्रमान-न प्रावृडत्यय (= आश्विन-कार्तिक)।
शरधि, सं पु (स) तूण, इषुधि, दे 'तरकश'।
शरफ, स पु (अ) महत्त्व, महत्ता २ श्रेष्ठता ३ गुण ४ प्रतिष्ठा।
शरबत, स पु (अ) शर्करोदक, गुडोदक, पानक, गौल्य, सितार, मिष्टोदं २ शर्करा मधु-क्वाथ।
शरबती, स पु (अ शरबत) दे 'मीठी' (फल) २ इक्षवीलवर्ण। वि, रसपूर्ण, सरस, सुमधुर।
शरम, स स्त्री, दे 'शर्म'।
शरह, सं स्त्री (अ) टीका, व्याख्या, भाष्य २ दे 'भाव' (मूल्य)।
शरा, स स्त्री, दे 'शरअ'।
शराकत, स स्त्री (फा) सहभागिता, दे 'साझा' २ सहकारिता।
शराफत, स स्त्री (अ) सज्जनता, सौजन्य, शीलम्।
शराब, स स्त्री (अ) सुरा, मदिरा २ दे 'शरबत' (हिकमत)।
—का खमीर, स पु, मद्यपक, सुरावल्क, मेदक, जगल।
—का प्याला, सं पु, पान-मद्य-सुरा, भाजन भाण्ड पात्रम्।
—के खमीर की झाग, स स्त्री, मद्य, फेन-मण्ड, वारि-उत्तर-उत्तम।
—के नशे मे चूर, वि, मत्त, क्षीव, मदोत्कट, मदोद्धत, समद, मदाढ्य, मदोन्मत्त, शौण्ड।
—खाना, स पु (अ + फा) गता, शुण्डा, सुरालय।
—खींचना, क्रि स, मद्यं मधा (जु उ अ) सुरां सन्धद (प्रे)। स पु, मद्य, संधानं अभिषव।
—खींचने का स्थान, सं पु, संधानी, अभिषव शाला।
—खींचनेवाला, स पु, सुराकार, शौण्डिक, सधानिन्।
—खोर, स पु (अ + फा) पान-आसक्त-रत, मधु-मद्य-सुरा-प, पानशौण्ड, सुराप।
—खोरी, सं स्त्री, सुरापानं-नं, मद्यसेवनम्।
—पीना, क्रि स, सुरां पा (भ्वा प अ), मद्य सेव् (भ्वा आ से)।
शराबी, सं पु (अ शराब) दे 'शराबखोर'।
शराबोर, वि (फा) दे 'लथपथ'।
शरारत, सं स्त्री (अ) कुचेष्टा-ष्टित, दुर्ललित, दुष्टता खलता, अपकार।
शरारती, वि (अ शरारत) कुचेष्टक, दुर्ललित, दुष्ट, खल, अपकारक।
श(स)राव, सं पु (सं पुं न) वर्द्धमानक, मानिक, मृत्कांस्य, दे 'कुल्हड़'।

शरासन, सं पु (स न) शरास्य, शरावाप दे 'धनुष'।
शरीअत, स स्त्री (अ) दे 'शरअ' (२,५)।
शरीक, वि (अ) सम्मिलित। स पु, सह चर -कारिन्-योगिन् २ सह -भागिन्, अंशिन्, अंशग्राहिन् ३ सहाय्यक ४ सजातीय, सजाति।
शरीफ़, स पु (अ) अभिजात, कुलीन, आर्य, सुप्रतिष्ठ, भद्रजन, सज्जन। वि (अ) सभ्य, शिष्ट, सदाचारिन् २ कुलीन, अभिजात, अभिजनवत् ३ पवित्र, निर्दोष।
शरीफ़ा, स पु (स श्रीफल>) (फल) सीताफल, वैदेहीवल्लभ, गडगात्र बहु वीजकम्। (वृक्ष) सीताफल इ पु कृ।
शरीर¹, स पु (स न) काय, देह-ह, कलेवर-र, गात्र, अङ्ग, क्षेत्र, विग्रह, संहनन, वपुस (न)। मूर्ति-तनु-तनू (स्त्री) पुर, चतुःशाख, पिण्ड, स्कन्ध, घन, इन्द्रियायतन, पुद्गल, करणम्।
—त्याग, स पु (स) देहपात, मृत्यु।
—रक्षक, स पु (स) अङ्गरक्षक, अनुचर।
—शास्त्र, स पु (स न) शरीरविज्ञानम्।
—संस्कार, स पु (स) गर्भाधानादय षोडशसंस्काराः २ कायशुद्धि (स्त्री), देहपरिष्कार।
शरीर², वि (अ) दे 'शरारती'।
शरीरांत, स पु (स) देहपात, निधनम्।
शरीरी, स पु (स रिन) शरीरवत्, देहिन् २ जीव, आत्मन् ३ प्राणिन्, जतु।
शर्क़, सं पु (अ) प्राची, पूर्वदिशा।
शर्करा, सं स्त्री (स) दे 'शक्कर' २ सिकता कण ३ अश्मरी, दे 'पथरी' ३ अष्ठीला पाषाणशकल (बहु) ४ क(ख)र्पर।
शर्क़ी, वि (अ शर्क़>) प्राच्य, पूर्वीय।
शर्त, स स्त्री (अ) पण, ग्लह २ संकेत, समय, नियम।
—करना, बाँधना या लगाना, मु, पण् (भ्वा आ से), ग्लह् (भ्वा चु उ से) २ समय-नियम कृ।
बिना—, क्रि वि, समय-नियम बिना।
शर्तिया, क्रि वि (अ) ग्लहेन, पणेन, ग्लहपण पूर्वक २ निस्संशय, निस्सन्देहम्। वि, अमोघ, अवश्य।
शर्म, स स्त्री (फ़ा) दे 'लज्जा' २ संकोच, दे 'झिझक' ३ मान, प्रतिष्ठा।
—से गड़ना या पानी पानी होना, मु, अत्यर्थं लज् (तु आ से)-त्रप् (भ्वा आ से) -लज्जान्वित (वि) भू।
शर्मसार, वि (फ़ा) लज्जाशील २ ह्रीत, लज्जित।
शर्मा, सं पु (स शर्मन्) ब्राह्मणोपाधिभेद।
शर्माना क्रि अ तथा क्रि स (फ़ा शर्म) दे 'लज्जित होना' २ दे 'लज्जित करना'।
शर्मानर्मी, क्रि वि (फ़ा शर्म) लज्जया, ह्रिया।
शर्मिंदगी, स स्त्री (फ़ा) लज्जा, त्रपा, व्रीडा।
—उठाना, मु, दे 'लज्जित होना'।
शर्मिंदा, वि (फ़ा) लज्जित, व्रीडित, ह्रीत।
शर्मीला, वि (फ़ा शर्म) लज्जावत्, सलज्ज, दे 'लज्जाशील'।
शर्वरी, स स्त्री (स) निशा, रात्री, दे 'रात'।
—नाथ, स पु (स) शर्वरीश, चन्द्र।
शलग(ज)म, स पु (फ़ा) शिखा, मूलकंद, गृञ्जनम्।
शल(ल)भ, स पु (स) पतङ्ग-ग, पतग, शलभा, टिड्डी, दे 'टिड्डी' २ पतंग, दे 'पतंगा'।
शलाका, स स्त्री (स) धातुकाष्ठादिनिर्मिता यष्टिः, दे 'सलाख' २ बाण ३ अस्थि (न) ४ तृण ५ शारिका ६ कज्जलशलाका ७ भेद, देवन ८ दीपशलाका।
शल्य, स [illegible] (स) मद्रराज, माद्रीभ्रात २३ विल्व-लोध्र-वृक्ष ४ सीमा ५ शलाका ६ शलाक्षी, शल्यक ७ मीनभेद (स न) कुन्त, भाम २ इषु, बाण ३ कण्टक ४ पीडाकरण ५ दुर्वचन ६ पाप ७ कष्ट ८ विष ९ अस्थि (न) १० शल्यचिकित्सा ११ शङ्कु।
—कर्ता, स पु (स न्तृ) दे 'नश्तर'।
—क्रिया, स स्त्री (सं) दे 'सजरी'।
शव, स पु (स पु न) कुणप, क्षितिवर्धन, मृतक-क, प्रेतम्।
—दाह, स पु (स) अन्त्येष्टि-मृतक-संस्कार।
—यान, स पु (स न) शवरथ, खाटी खटिका, खो, काष्ठमल्ल, दे 'अर्थी'।

शवर, स पु (स) म्लेच्छजातिभेद २ शिव ३ जलम् ।
शवरी, स स्त्री (स) श्रमणानाम तपस्विनी २ शवरजातिनारी ।
शश, स पु (स) शशक शल्यक लोम वर्ण मृदुरोमन् २ चन्द्रलाञ्छन ३ पुरुषभेद ।
—धर, स पु (सं) शशभृत्, चन्द्र ।
—शृंग, स पु (स न) शशविषाण, खपुष्प, गगनकुसुम, असम्भवनीयवस्तु (न)।
शशक, स पु (स) दे 'शश (१)।
शशमाही, वि (फ़ा) पाण्मासिक अर्धवार्षिक (-की स्त्री)।
शशांक, सं पु (स) शशधर , चन्द्र ।
शशी, सं पु (स शशिन्) शशधर , सोम , दे 'चाँद'।
—कर, स पु (स) चन्द्रकिरण ।
—कला, स स्त्री (स) चन्द्ररेखा २ वृत्त भेद (छद)।
—कांत, स पु (स) चंद्रकान्तमणि । (स न) कुमुदम् ।
—कुल, स पु (स न) चन्द्रवंश ।
—पुत्र, स पु (स) शशिज , बुधग्र
—प्रभा, स स्त्री (स) कौमुदी, चन्द्रिका ।
—भूषण, स पु (स) शशि-चूड, मौलि शेखर , शिव ।
—वदना, स स्त्री (स) वृत्तभेद (छद) २ चंद्रमुखीस्त्री । (उपयुक्त सभी समासों में 'शशि' रूप रहेगा । उ शशिकर इ)।
शस्त्र, स पु (स न) अस्त्र, प्रहरणं, आयुध, हेतु , हेति (पु स्त्री)।
—बाँधना, क्रि अ , शस्त्राणि धृ (चु) सनह (नि उ अ)।
—कर्म, सं पु [स -कर्मन्(न)] शल्य कर्म, क्रिया ।
—गृह, स पु (सं) शस्त्र, शाला आगारम् ।
—जीवी, स पु (स -विन्) शस्त्रवृत्ति , आयुधिक ।
—धारी, वि (स -रिन्) सशस्त्र शस्त्र, भृत्धर ।
—विद्या, सं स्त्री (स) धनुर्वेद ।
शस्त्रागार, सं पु (स शस्त्र+आगार) शस्त्र शाला-गृहं-स्थानम् ।
शस्त्राभ्यास, स पु (स) अस्त्रशिक्षा, युरली ।
शस्य, स पु (सं) शस्य, क्षेत्रस्थं धान्यं, दे 'फसल' शब्द, शाद १ वृक्ष-लता,-फल ४ धान्य (शस्य क्षेत्रगत प्राहु , सतुषं धान्य मुच्यते । आम वितुषमित्युक्त, स्विन्नमत्र मुदाहृतम् ॥) वि (स) उत्तम, श्रेष्ठ २ स्तुत्य, प्रशसनीय ।
—भक्षक, वि (स) तृण शाक, भक्षक ।
शस्यागार, स पु (स न) धान्यागारम्, कुशूल ।
शहंशाह, स पु (फ़ा) राजाधिराज , दे 'सम्राट्'।
शह, स स्त्री (फ़ा) गुप्तोत्तेजना ।
—देना, मु , निभृत उत्तिज्-उद्दीप् (प्रे)।
शहज़ादा, स पु (फ़ा) राजकुमार २ युवराज ।
शहज़ोर, वि (फ़ा) बलिन्, शक्तिशालिन् ।
शहतीर, स पु (फ़ा) तुला, स्थूणा,छदाधार ।
शहतूत, स पु (फ़ा) (वृक्ष) मदारु, तूद , तूल , पूष ब्रह्मण्य , तूल , यूष । (फल) तूत, तूल, तूद, पूर्ष, यूषम् ।
शहद, सं पु (अ) माक्षिक, क्षौद्रं, मधु (न) दे ।
—की मक्खी, स स्त्री , मधुमक्षिका ।
—लगाकर चाटना, मु , व्यर्थं पदार्थं निरर्थं रक्ष् (भ्वा प से)।
शहनाई, स स्त्री (फ़ा) सानेयी-यिका, नालिका ।
शहबाला, सं पु (फ़ा) *सहबाल (पं-सबाल), *वर,-पृष्ठग -सहचर ।
शहर, स पु (फ़ा) नगर, पुरम् ।
—पनाह, सं स्त्री (फ़ा) *नगरकोट्ट , वृति (स्त्री), प्राचीर, दे ।
शहरी, स पु (फ़ा) पौर , नागरिक , नगर-पौर, जन । वि , नगरीय, नागर, नागरेयक, नागरिक दे ।
शहवत, स स्त्री (अ) सभोग मैथुन,- इच्छा ।
—परस्त, वि , कामुक, लम्पट, कामातुर ।
—परस्ती, सं स्त्री कामुकता, लम्पटता, कामान्धता ।
शहसवार, सं पु (फ़ा) कुशलसादिन् ।
शहादत, सं स्त्री (अ) साक्ष्य, दे 'गवाही' २ प्रमा० ३ बलिदानम् ।

शहीद, स पु (अ) *हुतात्मन्, धर्महत, धर्मे पतग ।

—होना, क्रि अ, धर्मार्थं प्राणान् हा (जु प अ) परोपकाराय हन् (कम)।

शांत, वि (स) स्वस्थचित्त, प्रसन्न-मानस चेतस, निवृत्त, स्वस्थ, निरुद्वेग, आवेशशून्य, शमित, शमान्वित २ रुद्ध, वेग गति क्रिया, रहित, विरत ३ सौम्य गभीर, धीर ४ निःशब्द, मौनिन् ५ जितेन्द्रिय संयमशील ६ शिथिल, निरुत्साह ७ श्रान्त, क्लान्त, खिन्न ८ निर्वापित, निर्वाण (अग्न्यादि) ९ निर्विघ्न निर्बाध । स पु (स) रसविशेष (काव्य) २ विरक्त, योगिन् ।

—करना, क्रि स, उप प्र शम् (प्रे) २ प्रसद् तुष् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, शम् (दि प से), शान्त निश्चल (वि) भू ।

शांतता, स स्त्री (स) दे 'शांति' ।

शांतनु, स पु (स) दे 'शन्तनु' २ धर्नंजी ।

शांता, स स्त्री (स) दशरथतनया, ऋष्य शृंगभार्या ।

शांति, स स्त्री (स) दे 'शम' (१)। २ गति क्रिया वेग-क्षोभ, राहित्य ३ नीरवता, निःशब्दता ४ रोगादीनां क्षय नाश ५ मृत्यु ६ सौम्यता, गम्भीरता ७ वैराग्य, तृष्णाक्षय ८ सकटनिवारणम् ।

—दायक, वि (स) शांति, प्रद-कर-दायिन् ।

—पर्व, स पु [स पर्वन् (न)] श्रीमन्महाभारतस्य द्वादशपर्वन् ।

शादूर, स पु दे 'शायर'।

शाइस्तगी, स स्त्री (फ़ा) शिष्टता, सज्जनता ।

शाइस्ता, वि (फ़ा, न) शिष्ट, सुशील ।

शाक, स पु (स पु न) दे 'साग'।

शाकाहार, स पु (स) हरितकभोजन, मांस त्याग ।

शाकाहारी, वि (स हिन्) हरितकभोजिन्, मासत्यागिन् ।

शाक्त, स पु (स) शक्त्युपासक, शाक्तिक, शाक्तेय ।

शाक्तिक, स पु (स) दे 'शाक्त'। २ शक्ति वाह्, धर सैनिक, शाक्तीक ।

शाक्य, स पु (स) प्राचीनक्षत्रियजाति विशेष ।

—मुनि, स पु (स) गौतमबुद्ध, सिद्धार्थ, महाबोधि, महामुनि ।

शाख़, स स्त्री (फ़ा) दे 'शाखा' (१)। २ शृंग, विषाण ३ उपांग ४ उपनदी ।

—दार, वि (फ़ा) शाखायुत २ शृंगयुत ।

शाखा, स स्त्री (स) विटप पं, शिखा, लता, लता २ देहावयव, शरीरांग (हाथ, पाँव आदि) ३ अगुली, करशाखा ४ अंग, उपांग ५ वि भाग ६ वैदिकग्रंथ भेद ।

—नगर, स पु (स न) उपपुर शाखापुर, नगरप्रान्त ।

शाखी, सं पु (स खिन्) वृक्ष २ वेद । वि, सशाख ।

शागिर्द, स पु (फ़ा) शिष्य, दे ।

शागिर्दी, स स्त्री (फ़ा शागिर्द) शिष्यता २ सेवा ।

शाटक, स पु (स पु न) पट, वस्त्रम् ।

शाटिका, स स्त्री (स) दे 'धोती'।

शाटी, स स्त्री (स) दे 'साड़ी'।

शाठ्य, स पु (स न) दे 'शठता' (१ २)।

शाण, स पु (स) शाणी, सामक। (छोटा) शाणर २ नि,कष-स, कषपट्टिका ३ माष-चतुष्टय, टंक, निष्क ।

शाद[1], स पु (स) कर्दम २ शष्पम् ।

शाद[2], वि (फा.) प्रसन्न, मुदित २ परिपूर्ण ।

शादाब, वि (फ़ा) जलाढ्य, जलसिक्त ।

शादियाना, स पु (फ़ा) मंगलवाद्य २ दे 'बधाई'।

शादी, स स्त्री (फा) विवाह, दे २ हर्षः ३ आनन्दोत्सव ।

—ग़मी, स स्त्री (फ़ा+अ) हर्षशोकौ, सुख-दुःखे ।

—मर्ग, स स्त्री, हर्षातिरेकजनितमृत्यु ।

शाद्वल, स पु (स पु न) हरित-त, शष्प-बहुलो देश । वि, हरित, शष्पाच्छन्न ।

शान, स स्त्री (अ) श्री (स्त्री), अभिख्या, औज्ज्वल्य, शोभा, प्रभा, भव्यता, आडंबरः २ विभूति शक्ति (स्त्री) ३ प्रतिष्ठा, गौरव ४ विभ्रम ५ महिमन् (पु)।

—दार, वि (अ+फ़ा) श्रीमत्, शोभान्वित, भव्य, साडंबर, शोभन, सुप्रभ, समुज्ज्वल, वैभवशालिन् ।

न्त्रणा, नियमन ८ राज्य दण्ड ९ लिखित प्रतिज्ञा।
—करना, क्रि स, प्र,शास् (अ प से), दश (अ आ से), तन् (चु), अधिष्ठा (भ्वा प से), नियम्-विनी (भ्वा प अ)। म.पु, इसन, अधिष्ठान, नियमन, नियन्त्रणम्।
—कर्ता, मं पु (स-र्तृ) शासक, शासनधर, शास्तृ, शासितृ, अधिष्ठातृ, देशक।
—पत्र, म, पु (स न) राजादेशपत्रम्।
—हर, मं पु (स) आज्ञावाहक १ शासन, हारक-हारिन, राजदूत।
शासित, वि (स) कृतशासन, अधिकृत, अधिष्ठित, नियन्त्रित २ दण्डित, दे।
शास्त्र, म पु (स न) धर्मग्रंथ २ विज्ञानम्।
—कार, म पु (स) शास्त्र-कृत्-रचयितृ आचार्य।
—चक्षु, म पु [स-क्षुस् (न)] व्याकरण २ ज्ञानिन्।
—ज्ञ, म पु (स) शास्त्र,-दर्शिन-दृष्टि विद्, कोविद वेत्तृ।
—वक्ता, म पु (स-क्तृ) उपदेशक।
—विरुद्ध, वि (स) धर्मविरुद्ध, अधर्म्य।
शास्त्रानुसार, क्रि वि (स न) यथाशास्त्र, धर्मानुकूलम्। वि, शास्त्रोक्त, स्मार्त।
शास्त्री, स पु (स त्रिन्) उपाधिभेद २ धर्मशास्त्र्य ३ दे 'शास्त्रज्ञ'।
शास्त्रीय, वि (स) श्रौत, स्मार्त, शास्त्रविषयक २ शास्त्र,-उक्त-विहित।
शास्त्रोक्त, वि (स) शास्त्र, विहित-निर्दिष्ट अनुकूल।
शास्य, वि (स) नियन्त्रणीय, नियन्तव्य, शासन-अर्ह-योग्य २ शिक्षणीय, उपदेष्टव्य, विनेय ३ दण्ड्य, दण्डनीय।
शाह, म पु (फा) महाराज २ यवनभिक्षु पादि। वि, महत्, बृहत्, प्रधान।
—जादा, म पु (फा) दे 'शहजादा'।
शाहिद, मं पु (अ) साक्षिन्, प्रत्यक्षदर्शिन, देवय।
शाही, वि (फा) राजकीय २ नृपोचित, नृपयोग्य।
शिगरफ, म पु (फा शगर्फ) हिंगुल,-ल, हिंगुलु,-लि, रक्तपारद, चूर्णपारद, सुरंग, रसोद्भवम्।
शिंवाण, म पु (स न) नासिकामल, शिंघाणक-क २ लोहमलं ३ काचपात्रम्। (म पु) शिंघाणक, श्लेष्मन्।
शिंजन, स पु (स न) शिंजित, झणत्कार, झणझणध्वनि।
शिकनबी, स स्त्री (फा शिकनबीं) पानक,-*अम्लगौल्यम्।
शिकंजा, म पु (फा) १ २ निपीडन-दृढी करण-निष्काशन-यन्त्र ४ ग्रन्थनिपीडनयंत्र ५ निगड, हडि ६ * कोल्हू'।
शिकंजे में खींचना, मु, प्रमथ् (क्र प से), यत् (प्रे), अत्यर्थं अर्द् (प्रे) पीड् (चु), निगडयति (ना धा)।
शिकन, म स्त्री (फा) व(ब)ली लि (स्त्री) २ पुट भग।
—डालना, क्रि स, वलित कृ २ सपुट विधा।
—पड़ना, क्रि अ वलित-वलिभ-वलिवृत (वि) भू २ सपुट समग (वि) जन् (दि आ से)।
शिकम, म पु (फा) उदरं जठरम्।
शिकरा, स पु (फा) श्येनभेद, *शीकर।
शिकवा, म पु (अ) दे 'शिकायत'।
शिकस्त, म स्त्री (फा) अभि-परा, भव, पराजय दे २ वैफल्यम्।
—खाना, क्रि अ, परिभू विनि (कर्म), दे 'हारना'।
शिकायत, म स्त्री (अ) (सविलापा) विज्ञापना, दुःखनिवेदन २ परि(री)वाद, आक्षेप, गर्हा, निंदा ३ उपालम्भ, ४ आमय, व्याधि
—करना, क्रि अ, सशोक-सविलाप विज्ञा-निविद् (प्रे) २ आ-अभि क्षिप् (तु प अ), गर्ह् (भ्वा चु आ से), अप परि,-वद् (भ्वा प से) ३ उपालभ् (भ्वा आ अ)।
शिकार, म पु (फा) आखेट खेटन-टक, मृगया, मृगव्य, आच्छोदन, पापर्द्धि (स्त्री) २ मृग्य,-जन्तु प्राणिन् ३ मृगयाहतो जीव ४ मांस ५ मत्स्य ६ प्रतारित, वञ्चित।
—करना, क्रि स, मृग् (चु आ से, दि प. से) मृगया कृ, अनुधाव् (भ्वा प से)। मु, छलेन धनादिकं हृ (भ्वा प अ)।
—होना, क्रि अ, आखेटे हन् मार् (कर्म)। मु., वशवर्ती जन् (दि आ से)।
शिकारी, म पु (फा) व्याध, लुब्धक,

मृगयु, आखेटक, जीवान्तक, शाकुनिक, जालिक, वागुरिक। वि, आखेटिक।

—कुत्ता, सं पु, मृगदंशक, मृगयाकुक्कुर, विश्वकद्रु।

—ब्याह, सं पु, गान्धर्वविवाह।

—शिकार, सं पु, मृगया-अहेर-वेट (पु)।

शिक्षक, सं पु (सं) अध्यापक, गुरु, उपाध्याय, अनुशास्तृ, उपदेशक, आचार्य।

शिक्षण—सं पु (सं न) शिक्षा, अध्यापन, विद्यादान पाठन, अनु-शासन शिष्टि (स्त्री), विनय २ विद्या, उपादान ग्रहण-अभ्यास।

शिक्षा, सं स्त्री (सं) अध्ययनाध्यापन, पठनपाठन। २ ३ दे 'शिक्षण' (१ २) ४ निपुणता ५ उपदेश, मंत्र ६ वेदांगविशेष ७ नियन्त्रण ७ दंड, कुफलम्।

—हीन, वि (सं) अशिक्षित, निरक्षर।

शिक्षार्थी, सं पु (सं थिन्) शिक्षाग्राहक, छात्र।

शिक्षालय, सं पु (सं) शिक्षणालय, विद्यालय।

शिक्षित, वि (सं) साक्षर, अक्षराभिज्ञ, लेखनवाचनक्षम, कृतविद्य २ पंडित, विज्ञ। [शिक्षिता (स्त्री) = कृतविद्या पठिता इ]।

शिखंड-डक, सं पु (सं) मयूरपुच्छ २ चूडा, शिखा ३ काकपक्ष।

शिखंडी, सं पुं (सं डिन्) मयूर २ कुक्कुट ३ द्रुपदपुत्रविशेष ४ विष्णु ५ कृष्ण ६ शिव ७ बाण ८ गुञ्जा ९ स्वर्णयूथिका।

शिखर, सं पु (सं पु न) गिरि, मस्तक शृङ्ग, पर्वताग्र, कूट २ उच्चतमो भाग, दे 'चोटी'।

शिखरन, सं स्त्री (सं शिखरिणी) *दधिमिश्रितोदकम्।

शिखरिणी, सं स्त्री (सं) वर्णवृत्तभेद २ स्त्री रत्न ३ रोमराजी ४ द्राक्षाभेद ५ दे 'शिखरन'।

शिखरी, सं पु (सं रिन्) पर्वत २ वृक्ष ३ कोट्ट।

शिखा, सं स्त्री (सं) शिखंड-डक, चूडा २ अग्निज्वाला, ज्वाल, अर्चिस (न) ३ दीप, अर्चिस् (न)-शिखा ४ शिखर ५ किरण ६ शाखा।

—कंद, सं पुं (सं पु न) दे. 'शलगम'।

—वान्, वि (सं-वत्) शिखिन, चूडावत्, शिखान्वित। सं पु, दीपक २ अग्नि ३ केतुग्रह ४ उल्का, गोल्का।

—सूत्र, सं पु (सं-त्रे) चूडायज्ञोपवीते (न द्वि)।

शिखिनी, सं स्त्री (सं) मयूरी, शिखण्डिनी, केकिनी २ कुक्कुटी, कुक्कुटवधू (स्त्री), पक्षिणी।

शिखी, वि (सं खिन्) शिखावत् चूडावत्। सं पु (सं) मयूर २ कुक्कुट ३ दीपक ४ अग्नि ५ पर्वत ६ बाण ७ वृक्ष ८ उल्का, केतु।

शिगाफ़, सं पु (फ़ा) छिद्र बिलं २ विदर, भेद।

शिगार, शिगा(गा)ल, सं पु (फ़ा) शृगाल, जम्बुक।

शिताब, क्रि वि (फ़ा) शीघ्र, सत्वरम्।

शिथिल, वि (सं) मन्दबन्धन, श्लथ, स्रस्त, दे 'ढीला' २ अलस, मंथर ३ उदासीन ४ दृढतारहित ५ बंधनहीन, मुक्त ६ श्रान्त, क्लांत ७ अस्पष्ट (शब्दादि) ८ उपेक्षित (नियम)।

शिथिलता, सं स्त्री (सं) शैथिल्य, श्लथता, स्रस्तता, दे 'ढीलापन' २ आलस्य ३ औदासीन्य ४ दृढताऽभाव ४ श्रांति (स्त्री.) ५ नियमभंग ६ शक्तिन्यूनता।

शिद्दत, सं स्त्री (अ) उग्रता, तीव्रता, प्रचण्डता २ आधिक्यम्।

शिर, सं पु (सं) शिरस् (न) दे 'सिर'।

शिर(रा)कत, सं स्त्री (अ) दे 'शराकत'।

शिरस्त्राण, सं पु (सं न) शीर्षण्य, शिरस्त्र, दे 'खोद'।

शिरा, सं स्त्री (सं) सिरा, ईळिका, रक्तवाहिनी नाडी (Vein)।

शिरोधार्य, वि (सं.) अंगीकार्य, ग्राह्य, पालनीय।

—करना, मु, सादर स्वीकारी,-कृ।

शिरोमणि, सं पु स्त्री (सं) चूडामणि, शिरोरत्नं २ प्रधान, मुख्य।

शिला, सं स्त्री (सं) शिला, पट्ट-फलक २ अश्मन् ग्रावन् (पुं) ३ गण्डशैल ४ *रेणशिला, *शिला पट्टी पट्टिका, *शिला।

—जीत, स पु [स-जतु (न)] गिरि अग-अद्रि-अश्म-शिला-जं, अश्म-जतुक-म्-ग्म' उद्‌भ, शिला-निद (स्त्री) -द्र-मल-स्वेद ।
—लेख, स पु (स) प्रस्तरलेख्यम् ।
—वृष्टि, स स्त्री (स) करकासार ।
शिलोंठ, स पु (स) उच्छशिल, उपात्तशस्य क्षेत्रात् शेषावचयनम् ।
शिल्प, स पु (स न) यत्र कला, *हस्त कर्मन (न)-शिल्प-व्यवसाय शिलिपक, दे 'दस्तकारी' ।
—कला, स स्त्री (स) दे 'शिल्प' ।
—कार, स पु (स) शिल्पिन्, कारु, देवट, शिल्पजीविन, शिल्पकारिन्, कर्मकार ।
—विद्या, स स्त्री (स) हस्तकौशल २ गृह निर्माण-वास्तु-कला ।
—शाला, स स्त्री (स) शिल्प(ल्पि)-गृह गेह-शाला-आवेशनम् ।
—शास्त्र, स पु (स न) हस्तव्यवसाय शास्त्र २ गृहनिर्माण-वास्तु-शास्त्रम् ।
शिल्पी, स पु (स पिन्) दे 'शिल्पकार' २ गृह-कारक-निवेशक, पलगंड ३ चित्र कार ।
शिव, स पु (स) महादेव, शम्भु, पशुपति, शूलिन्, महा ईश्वर, शंकर, चन्द्रशेखर, गिरीश, मृड, पिनाकिन, त्रिलोचन, भूतेश, धूर्जटि हर, त्र्यंबक, त्रिपुरारि, गंगाधर, वृषध्वज, भव, रुद्र, उमापति, महानट, भैरव, पंचानन, कठेकाल नदीश्वर २ परमेश्वर ३ वेद ४ शृगाल । (स न) कल्याण मंगलम् । वि, कल्याण-मंगल-कारक कारिन् ।
—द्रुम, स पु (स) बिल्ववृक्ष ।
—नंदन, स पु (स) गणेश ।
—पुराण, स पु (स न) शैवपुराणं, पुराण ग्रंथविशेष ।
—पुरी, स स्त्री (स) काशी, शिवतीर्थम् ।
—बीज, स पु (स न) पारद, शिववीर्यम् ।
—रात, स स्त्री (स शिवरात्रि) शिवचतु दशी फाल्गुनकृष्णचतुर्दशी ।
—लिंग, स पु (स न) शिवप्रतिमाभेद ।
—लिंगी, स स्त्री (स-लिंगिनी) शिव-वल्ली वल्लिका, ईश्वरलिंगी, चित्रफला ।
—लोक, स पु (स) कैलास, शिवशैल ।
—वाहन, स पु (स) शिववृषभ, नंदिन् ।
—सुंदरी, स स्त्री (स) दुर्गा ।
शिवा, स स्त्री (स) दुर्गा २ पार्वती ३ शृगाली ।
शिवानी, स स्त्री (स) पार्वती, गौरी, दुर्गा ।
शिवाला, स पु (स-लय) शिव-मंदिर आयतन २ देवालय ३ श्मशानम् ।
शिवि, स पु (स) उशीनरनृपपुत्र, ययाति दौहित्र २ हिंस्रपशु ३ भूर्जवृक्ष ।
शिविका, स स्त्री (स) याप्ययान, शिवीरथ, दे 'पालकी' ।
शिविर, स पु (स न) कटक-क, निवेश, आगन्तुकसैन्यवास २ पट, मंडप-कुटी, दे 'तंबू' ३ दुर्ग-गेहम् ।
शिवेतर, वि (स) अशुभ, अमंगल, हानि कारक ।
शिशिर, स पु (स पु न) कंपन, शीत, हिमकूट, कीटन (माघ तथा फाल्गुन) २ तुषार, तुहिनम् । वि, शीत, शीतल, उष्णताशून्य ।
—कर, स पु (स) हिमांशु, चंद्र ।
—काल, स पु (स) शीतर्तु, शीतकाल ।
शिशु, स पु (स) स्तनंधय, स्तनप, वत्स, बाल-क, दारक, उत्तानशय, डिंभ, अपत्यम् ।
शिशुता, स स्त्री (स) शिशुत्व, शैशव, बाल्य दे ।
शिशुपाल, स पु (स) चेदिराज, दमघोष सुत, चैद्य ।
—वध, स पु (स न) महाकविमाघप्रणीत महाकाव्यविशेष ।
शिष्ट, वि (स) सभ्य, भद्र, श्रेष्ठ, सुशील २ धर्मशील ३ शान्त ४ बुद्धिमत् ५ शालीन, व्यवहारनिपुण ६ प्रधान ७ आज्ञाकारिन् ।
शिष्टता, स स्त्री (स) सभ्यता, भद्रता, सुशीलता, श्रेष्ठता २ अधीनता ।
शिष्टाचार, स पु (स) सदाचार, सद्व्यव हार २ सत्कार, सम्मान ३ विनय, प्रश्रय ४ उपचार आचार, यथाविधि वर्तन ५ आतिथ्य आतिथेयम् ।
शिष्य, स पु (स) छात्र, अंते-वासिन्, सद

विद्यार्थिन, शिक्षार्थिन २ अनु-गामिन्, यायिन्।
शिस्त, स स्त्री (फा) शरव्य लक्ष्यम्।
—बाँधना, मु, लक्ष्ये दृष्टि बध (क प अ)।
शीकर, सं पु (स) पवनाऽऽप्रेरित जलकण, तुषार २ अवश्याय, दे 'ओस' ३ स्वल्प वृष्टि (स्त्री) दे 'फुहार' (२)।
शीघ्र, क्रि वि (स शीघ्र) आशु, सद्य, सपदि, अचिरेण, अविलम्बेन, झगिति।
—कारी, वि (स-रिन्) विलम्बासह, आशुकारिन्।
—कोपी, वि (स पिन्) कोपन, आशुकोपिन्।
—गामी, वि (स मिन्) द्रुतगामिन्, आशु।
—चेतन, वि (स) तीव्रबुद्धि।
—वेधी, ■ पु (सं धिन्) लघुहस्त।
शीघ्रता, स स्त्री (स) त्वरा, क्षिप्रता लाघव, तरस् रहस (न) जव, वेग, रभस-सम्।
—करना, क्रि अ, त्वर् (भ्वा आ से), सत्वर-झटिति कृ।
शीत, वि (स) शीतल, शिशिर, हिम, तुषार, उष्णविरुद्ध २ शिथिल, दीर्घसूत्रिन्। स पु (स न) शीत शीततु, शीतकाल, शिशिर हिमागम २ शीतता, हिमता, शैत्य ३ अवश्याय तुषार ४ प्रतिश्याय दे 'जुकाम' ५ जलम्।
—कटिबंध, स पु (स) कर्कमकरेखातः परे शीतौ अतिशीतौ भूभागौ (पुं द्वि)।
—काल, स पु (स) दे 'शीत' स पु (१)।
—किरण, स पु (स) शीत हिम, कर रश्मि अंशु, द्युति चंद्र।
शीतता, ■ स्त्री (सं) शैत्य, शीत स्पर्श।
शीतल, वि (सं) दे शीत वि। २ शान्त, शमन्वित ३ सतुष्ट, प्रसन्न।
शीतलता, स स्त्री (स) दे शीतता'।
शीतला, स स्त्री (स) विस्फोटकरोग, विस्फोटा, मसूरिका शीतला, वसन्तरोग, दे 'चेचक' २ वसन्तविस्फोटादीनामधिष्ठात्री देवी।
—वाहन, स पु (सं न) गर्दभ, खर।
शीतांशु, सं पु (स) चंद्र २ कर्पूर रम्।
शीर, सं पु (फ़ा) क्षीर, दुग्ध, दे 'दूध'।
शीताकुल, वि (■) शीत शैत्य-हिम, आतुर-अर्दित पीडित-विह्वल।
शीरा, स पु (फ़ा) दे 'शरबत' २ दे 'चाशनी'।
शीरीं, वि (फ़ा) मधुर २ प्रिय।
शीरीनी, स स्त्री (फ़ा) मिष्टान्न, दे 'मिठाई' २ माधुर्यम्।
शीर्ण, वि (स) कृश, क्षीणतनु, क्षाम, २ भग्न, खण्डित, ३ च्युत ४ जीर्ण, विदीर्ण ५ म्लान, विरस।
शीर्णता, स स्त्री (स) कृशता, दौर्बल्य, क्षीणता, विदीर्णता।
शीर्ष, स पु (स न) शिरस् (न), दे 'सिर' २ ललाट, दे 'माथ' ३ शिखर ४ अग्रभाग।
शीर्षक, स पु (स न) अग्राक्षरपंक्ति, शिर पंक्ति (स्त्री) २ शिरस्त्र, दे 'खोद'।
शील, स पु (स न) चरित्र, आचरण, वृत्ति (स्त्री) २ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ४ सदाचार, सच्चरित्रम् ५ सत्, स्वभाव प्रकृति (स्त्री) ६ हृदयमार्दव ७ सकोच, आदर वि पर, परायण (उ दानशील)।
शीलवान, वि (स-वत्) सदाचारिन्, सद्वृत्त २ सत्स्वभाव, कोमलप्रकृति, सुशील।
शीशम, स स्त्री (फ़ा) शिंशपा, पिच्छि (च्छ)ला, पिंगला, कपिला, भस्मगर्भा।
शीशमहल, स पु (फ़ा शीशा+अ महल) काचस्फटिक, भवन २ काचकोष्ठ, अट्ट प्रासाद।
—का कुत्ता, मु, उन्मत्त, वातुल।
शीशा, सं पु (फ़ा) काच, दे २ आदर्श, मुकुर, दर्पण, दे ३ काचफलक-कम्।
शीशी, स स्त्री (फ़ा शीशा) काचकूपी।
—सुंघाना, औषधगंधेन मूर्च्छ् (प्रे)।
शुंठी, स स्त्री (स) कटुग्रंथि, दे 'सोंठ'।
शुक, स पु (सं) कीर, वक्रतुंड, दे 'तोता' २ महर्षि-व्यासपुत्र।
शुक्ति, सं स्त्री (स) मुक्तामातृ (स्त्री), दे 'सीपी'।
—बीज, स पु (स न) मौक्तिक, मुक्तामणि।
शुक्र¹, सं पु (सं) सित, श्वेत, काव्य, कवि, भार्गव, दैत्यगुरु २ अग्नि ३ ज्येष्ठ मास ४ शुक्रवासर। (सं न) बीज, वीर्य

रेतम् (न) २ बल, सामर्थ्यम्। वि (स) भासुर, देदीप्यमान २ स्वच्छ, उज्ज्वल।

शुक्र², स पु (अ) धन्यवाद, कृतज्ञता प्रकाश।

—गुज़ार, वि (अ + फा) कृतज्ञ, दे।

—गुज़ारी, स स्त्री (अ + फा) कृतज्ञता।

शुक्ल, वि (स) धवल, सित, श्वेत, दे 'सफ़ेद'।

—पक्ष, स पु (स) शुक्लपक्ष, दे 'पक्ष' मे।

शुक्लता, स स्त्री (स) धवलता, दे 'सफ़ेदी'।

शुगल, स पु (अ) दे 'शगल'।

शुचि, वि (स) विशुद्ध, पवित्र पूत २ उज्ज्वल, निर्मल ३ निर्दोष, निष्पाप ४ शुद्ध मानस।

शुतुरमुर्ग, स पु (फा) * उष्ट्रकुक्कुट।

शुनता, स स्त्री (फा) नियति (स्त्री), भवितव्यता।

शुद्ध, वि (स) स्वच्छ, स्वच्छ निश्चय... २ उज्ज्वल, श्वेत ३ त्रुटिरहित, यथातथ, यथार्थ ४ निर्दोष ५ पूत, पवित्र, पावन, मेध्य।

—करना, क्रि स, परि पू (क्र्या उ स), शुचीकृ। परि वि स, शुध् (प्रे), निर्मली कृ २ प्रतिसमा-समाधा (जु उ अ), त्रुटि रहित विधा (जु उ अ)।

शुद्धता, स स्त्री (स) शुचिता, शौच, पवित्रता, पूतता, वि, शुद्धि (स्त्री) २ निर्दोषता, यथार्थता।

शुद्धि, स स्त्री (स) दे 'शुद्धता' (१)। २ स्वच्छता, नैर्मल्य ३ वैदिकधर्मप्रवेशसंस्कार।

—पत्र, स पु (स न) शुद्धिपत्रकपत्रम्।

शुबहा, स पु (अ) सदेह २ भ्रम।

शुभ, वि (स) मगल, हित, कल्याण २ उत्तम, भद्र। स पु (स न) मगल, हितं, कल्याणम्।

—कर्म, स पु (स -र्मन् न) सुकृत्य, पुण्यम्।

—घड़ी, स स्त्री, मागल्किमुहूर्तम्।

—चिन्तक, वि (स) हितैषिन्, निर्चिन्तक।

—दर्शन, वि (स) प्रियसुदर्शन, सुन्दर।

—फल, स पु (स न) सुपरिणाम।

शुभ्र, वि (स) श्वेत, शुक्ल, भासुर।

—कर, स पु (स) शुभ्र भानु -रश्मि, चन्द्र।

शुभ्रता, स स्त्री (स) शुक्लता, भासुरता।

शुमार, स पु (फा) 'गणन', सकलनम्।

शुमाल, स पु (अ) उदीची, दे 'उत्तर' (दिशा)।

शुमाली, वि (अ) उत्तर, उदीचीन, उत्तर, दिक्‌-सबधिन्।

शुरू, स पु (अ) उपक्रम, आरभ दे २ प्रथम, आदि।

शुल्क, स पु (स पु न) घट्टपथादीना कर २ वरात् ग्राह्योऽर्थ ३ यौतुक दे 'दहेज' ४ पण ... ५ मूल्य ६ भाट, भाटक ७ प्रतिफल, वेतनम्।

शुश्रूषा, स स्त्री (स) परिचर्या, सेवा दे २ श्रवणेच्छा।

शुष्क, वि (स) निर्जल, आर्द्रतारहित, वान २ निर्जीव-अ रस, नि स्वाद ३ नदकर, अरुचिकर ४ मौन, निरर्थक ५ रूक्ष स्नेहहीन ६ नीरस, शीर्ण।

शुष्कता, स स्त्री (स) शोष, शुष्कता २ नीरसता ३ अरोचकता ४ रूक्षता ५ जीर्णता।

शूकर, स पु (स) वराह, दे 'सूअर'।

शूद्र, स पु (स) वृषल, दास, पादज, पद्य, पत्-, जघन्य, द्विजसेवक, उपासक, चतुर्थ २ निकृष्ट ३ सेवक।

शूद्रक, स पु (स) मृच्छकटिकरचयिता महाकवि २ शूद्र ३ शम्बूक, तपस्विशूद्र विशेष (रामायण)।

शूद्रा, स स्त्री (स) शूद्रजाते स्त्री।

शूद्री, स स्त्री (स) शूद्रस्य पत्नी।

शून्य, वि (स) रिक्त, वशिक, शून्य रिक्त, गर्भमध्य २ निराकार ३ असत् ४ रहित। स पु (स न) आकाश श, दे २ बिंदु, स ३ रिक्तस्थान निर्जन-स्थान ४ अभाव।

शून्यता, स स्त्री (स) शून्यत्व, रिक्तता।

शूप, स पु (स शूर्प पं) सूर्प कुल्य, प्रस्फोटनचा दे 'सूप'।

शूर, स पु (स) दे 'वीर'।

शूरण, स पु (स) दे 'सूरन'।

शूरता, स स्त्री (स) दे 'वीरता'।

शूर्प, स पु (स पु न) दे 'शूप'।

—कर्ण, स पु (स) गज २ गणेश।

—णखा, सं स्त्री (सं) रावणभगिनी।

शूल, सं पु (सं पु न) उदरवेदना, जठरव्यथा, वातरोगभेद २ पीड़ा, क्लेश व्यथा ३ कुंत, प्रास ४ त्रिशूल, त्रिशीर्षक ५ ध्वज ६ मृत्यु ७ अयकील ८ शलाका ९ दे 'सूली'।

—धारी [illegible] (सं रिन्) शूल, धर ग्राहिन् पाणि, शिव।

शूली, सं पु (सं लिन्) शिव, शूलपाणि २ शशक ३ शूलास्त्र। सं स्त्री, दे 'सूली'।

शृंखला, सं स्त्री (सं) शृंखल-क, निगड, बंध, बंधन २ क्रम, परंपरा ३ श्रेणी, पंक्ति (स्त्री) ४ मेखला, पुंस्कटिवस्त्रबंध ५ कांची, रश(स)ना।

—बद्ध, वि (सं) शृंखलित, निगडित २ क्रम श्रेणी-बद्ध।

शृंग, सं पु (सं न) विषाण, दे 'सींग' २ सानु, कूट, शिखर, शैलाग्र ३ वाद्यभेद ४ कामोत्तजना ५ क्रीडानलयंत्र (पिचकारी, दे रघुवंश १६.७०) ६ दे 'कंगूरा'।

शृंगार, सं पु (सं) रसविशेष (सा) २ मैथुनस्पृहा ३ मंडन, भूषणं, प्रसाधनं, अलंकरण परिष्करणं ४ संभोग, मैथुन ५ मदनप्रसाधन, साधनद्रव्य (चंदनादि) दे 'सोलह शृंगार'।

—करना, क्रि स, अलंकृ, परिष्कृ, प्रसाध् (प्रे), भूष-मंड् (चु)।

—योनि, सं पु (सं) मदन, कंदर्प।

शृंगी, सं पु (सं गिन्) गज २ वृक्ष ३ पर्वत ४ ऋषिविशेष ५ शृंगवत् पशु ६ वाद्यभेद ७ महादेव।

शृगाल, सं पुं (सं) गोमायु, क्रोष्टु, जंबु(बू)क, दे 'गीदड़'। वि, भीरु २ खल ३ निष्ठुर।

शेख, सं पुं (अ) श्रीमोहमदवंशजानामुपाधि २ यवनवर्गविशेष ३ यवनोपदेशक ४ वृद्ध।

—चिल्ली, सं पु (अ + हिं) मंद, जड २ मंद, विदूषक।

शेखर, सं पुं ([illegible]) शिरोमाल्य, शीर्षमाला २ शिरोभूषणमात्र ३ शीर्ष ४ किरीट, मौलि ५ पर्वताग्र, सानु।

शेखी, सं स्त्री (अ शेखह) दर्प, गर्व २ विकत्थनं, गर्वोक्ति (स्त्री)।

—बाज़, वि (हिं + फ़ा) विकत्थक, आत्मश्लाघिन् २ दृप्त।

—झड़ना या निकलना, [illegible], गर्व खड् (कर्म) मद व्यपगम् (भ्वा प अ) लघूभू।

—बघारना,-मारना या हाँकना, मु, विकत्थ (भ्वा आ से), आत्मानं श्लाघ (भ्वा आ से)।

शेप, सं पु ([illegible]) शेप(फ)स् (न), शेफ, मेढ्र २ मुष्क, वृषण, शुक्रग्रंथि ३ पुच्छ, लांगूल, लूमम्।

शेमुषी, सं स्त्री (सं) बुद्धि धी मति (स्त्री), प्रज्ञा।

शेयर, सं पु (अं) अंश, भाग।

—होल्डर, सं पु (अं) अंशिन्, भागिन्।

शेर[1], सं पु (फ़ा) द्वीपिन्, भेल, मृगांतक, शार्दूल, व्याघ्र दे २ केसरी, सिंह दे ३ वीर, शूर।

—पंजा, सं पु (फ़ा + हिं) दे 'बघनखा'।

—बच्चा, सं पु (फ़ा + हिं) सिंह-व्याघ्र-पोत शावक २ वीर, शूर।

—बबर, सं पु (फ़ा) दे 'शेर' (२)।

—मर्द, वि (फ़ा) वीर, निर्भय।

—होना, मु, भय मुच् (तु प अ), निर्भय (वि) भू।

शेर[2], सं पुं (अ) कवितायाश्चरणद्वयं (उर्दू, फ़ारसी आदि)।

शेरनी, सं स्त्री (फ़ा शेर) व्याघ्री, द्वीपिनी २ सिंही, केसरिणी।

शेरवानी, सं स्त्री (देश) आजानुलंबी कंचुकभेद।

शेष, सं पु (सं) अनंत, सर्पराज, शेषनाग, फणींद्र, फणीश्वर २ परमेश्वर ३ लक्ष्मण ४ बलराम ५ अंतरम् (गणित) ६ अंत ७ परिणाम ८ गज ९ मृत्यु १० नाश। (सं पु न) अवशिष्ट, शेष, उद्धृत, अवशिष्ट उपयुक्तेतर, वस्तु (न) २ अध्याहार्य शब्द। वि, अवशिष्ट २ समाप्त ३ इतर, अपर, अन्य।

—नाग, सं पु (सं) दे 'शेष' सं पुं (१)।

—शायी, सं पु (सं शायिन्) विष्णु।

शेषांश, सं पुं (सं) १ २ अवशिष्ट-अंतिम, भाग।

शैतान, सं पुं (अ) ईश्वर विरोधी देवविशेष

(सभी धर्म) २ भूत, प्रेत ३ क्रूर ४ दुष्ट, खल ५ काम, मदन ६ क्रोध ।

शैतानी, स स्त्री (अ शैतान) दुष्टता, कुचेष्टा ।

शैत्य, स पु (सं न) शीतता, शीतलत्वम् ।

शैथिल्य, स पु (स न) शिथिलता, दे ।

शैल, स पु (स) गिरि, अद्रि, पर्वत, दे । २ मंदरौल, दे 'चट्टान' ३ दे 'शिलाजीत' ।

—कुमारी, स स्त्री (स) अद्रितनया, शैल, कन्यका, दे 'पार्वती' ।

शैली, स स्त्री (सं) भाषण-लेखन, रीति सरणि (दोनों स्त्री) प्रकार २ प्रथा, रीति ३ परिपाटि (स्त्री), प्रणाली ४ चर्या, वर्तन, वृत्ति (स्त्री) ।

शैलेंद्र, सं पुं (स) हिमगिरि, हिमालय ।

शैव, स पुं (स) शिव, भक्त उपासक अनुयायिन् २ सम्प्रदायविशेष । वि (स) शिव सबंधिन् ।

शैव्या, स स्त्री (स) सत्यहरिश्चन्द्रपत्नी ।

शैशव, स पु (स न) शिशुता-त्व, बाल्यम् । वि (स) बाल बाल्य-सबंधिन् ।

शोक, स पु (स) आर्ति (स्त्री) आधि, दुःख, परिताप, खेद, शुच (स्त्री), शुचा, मन्यु, विषाद, शोचनम् ।

शोकार्त, वि (स) शोकित, शोक, आकुल आतुर ग्रस्त-उपहत विह्वल, सशोक, परितप्त ।

शोख़, वि (फ़ा) धृष्ट, वियात २ चचल, चपल ३ गाढ, भासुर (रग) २ दुर्ललित, कुचेष्टक ।

शोख़ी, स स्त्री (फ़ा) धाष्टर्य, वैयात्य २ चाञ्चल्य ३ गाढता, प्रसरता ।

शोच, स पु (स शोचन) शोक २ चिंता ।

शोचनीय, वि (स) आपन्न, दु स्थ, आर्त, निरानद २ सांशयिक, सदिग्ध ।

शोण, स पु (स) रक्त-लोहित-वर्ण-रग २ नदविशेष, हिरण्यवाह ३ माणिक्य ४ रक्तेक्षु ५ अग्नि ६ लोहिताश्व । स न, रुधिर २ सिंदूरम् ।

—रत्न, स पु (स न) पद्मरागमणि, शोणितोपल ।

शोणित, स पु (स न) रुधिर, रक्त दे । वि (स) लोहित, रक्त, शोण ।

शोणिमा, स स्त्री (स मन् पु) रक्तिमन्, लोहितिमन् अरुणिमन् (पु) । दे 'लाली' ।

शोथ, स पु (स) शोफ, शोथक, श्वयथु ।

शोध, स पु (स) शोधन, निस्तार (ऋणादि का) २ अनुसंधान, अन्वेषण ३ शुद्धि (स्त्री), शुद्धिसंस्कार ४ परीक्षा-क्षणम् ।

शोधक, स पु (स) पावन, शोधन, मलहर २ अन्वेषक, अनुसधातृ ३ दे 'सुधारक' ।

शोधन स पु (स न) पावन, सस्करण, निर्मली विशुद्धी-शुची-करणं, मार्जन, प्रक्षालन, धावन २ प्रतिमल्ल-सम्मा-मान, त्रुटिनिरसन ३ धातूना निर्दोषीकरण ४ अन्वेषण, अनुसधान ५ परीक्षण ६ ऋणनिस्तारण ७ दण्ड ८ प्रायश्चित्त ९ विरेचन १० निरूह ११ व्यवकलनम् ।

शोधना, क्रि स (स शोधन) दे 'शुद्ध करना' (१२) ३ औषधार्थं धातु संस्कृ ४ अन्विष् (दि प से), अनुसधा (जु उ अ) । स पुं, दे 'शोधन' ।

शोधनी, स स्त्री (स) स, मार्जनी, बहुकरी ।

शोधनीय, वि (सं) पवनीय, मार्जनीय २ निस्तार्य, प्रत्यर्पयितव्य ३ अनुसंधेय ।

शोभन, वि (स) सुदर, रम्य, रमणीय, २ उत्तम, श्रेष्ठ ३ उचित, उपयुक्त ४ मांगल्कि, मगल्य, मगलीय ।

शोभा, स स्त्री (स) कांति द्युति दीप्ति (स्त्री), भा, भासर, श्री (स्त्री) २ छवि (स्त्री), सुन्दरता, रुचिरता ३ भूषा, परिष्क्रिया ४ वर्ण, रग ५ श्रेष्ठगुण ।

—देना, क्रि अ, राज् शुभ (भ्वा आ से) ।

शोभायमान, वि (स शोभमान) राजमान, भ्राजमान, भासुर, दैदीप्यमान, सुन्दर २ विद्यमान, उपस्थित ।

शोभित, वि (स) शोभान्वित, सुन्दर, छविमत् । २ मंडित, भूषित ३ उपस्थित, विद्यमान ।

शोर, स पु (फ़ा) महारव, कलकल, कोलाहल दे ।

—मचाना, क्रि अ, कोलाहलं कृ, उत्क्रुश् (भ्वा प अ) ।

शोरबा, स पु (फ़ा) यूष, सूप, रस, क्वरस २ मासरस, दे 'यख़नी' ।

शोरा, स पु (फा शोर) यवक्षार, विपा ग्नि, तिग्मीनिन, पाक्य ।

शोरे का तेज़ाब, सं पु, भूमिकाम्ल, पाक्य द्रावक, नत्रिक-यवक्षार-अम्ल ।

शोला, स पु (अ), ज्वाला अर्चिस (न)।

शोशा, स पु (फा) अद्भुत विलक्षण-वार्त्ता २ व्यंग्योक्ति (स्त्री) ३ कल्होलादिका वार्त्ता।

शोषक, वि (स) रसाकर्षक, शोषणकर २ क्षय-कम, वारिन ।

शोषण, स पु (सं न) रसाकर्षण, शुष्की करण २ क्षपण ३ वि, नाशनं, वि, ध्वमन ४ सारोद्धार, ५ चूषणम् ।

शोहदा, सं पु (अ) दे 'गुण्डा'।

शोहरत, स स्त्री (अ) ख्याति प्रसिद्धि (स्त्री)।

शोहरा, स पु (अ) शोहरत, दे ।

शौक, स प (अ) अभि रुचि (स्त्री) प्रवृत्ति (स्त्री), प्रवणता २ लालसा उत्कठा, औत्सुक्यम् ।

—करना, मु, कुत (र आ अ)।

—चर्राना, मु, तीव्रम् अभिलष (भ्वा प से)।

—पूरा करना, मु, काम उपभोगेन शम (प्रे)।

—से, मु, सानद, सहर्ष, सप्रेमम् ।

शौकीन, स पु (अ शौक) प्रसाधन श्रृंगार सुवेश प्रिय, वेषा सम तिन, छैल २ वेश्या गामिन ३ प्रेमिन्, अनुरागिन, रसिक, अभि लाषिन ।

शौकीनी, सं स्त्री (हिं शौकीन) वेषाभिमान, शृङ्गारप्रियता २ वेश्यागमनम् ।

शौच, स पु (स न) शुद्धता, शुद्धि (स्त्री), पवित्रता, पूतता, शुचिता-त्व, पुण्यता, निष्पापता २ प्रात -कृत्यानि-कार्याणि (न बहु०) (शौच, स्नान, सन्ध्या आदि) ३ पुरी षोत्सर्ग, हदनम् ।

शौरसेनी, सं स्त्री (सं) १ २ प्राकृत अप भ्रंश, भाषाविशेष ।

शौर्य स पु (सं न) शूरता, वीरता, पराक्रम ।

शौहर, सं पु (फा) पति, भर्तृ।

श्मशान, सं पु (सं न) पितृ-वन-कानन, अंतशय्या, शवालय, रुद्राक्रीड, दाहसर (पुं), शवमानम् ।

—वासी, स पु (स शिन) शिव, २ चांडाल ।

श्मश्रु, स पु (सं न) कूर्च, -र्चं, चोट, व्यंजन, मुखरोमन (न), शिगिन (न), शिघाण, दे 'दाढी'।

—वर्धक, स पु (स) नापित ।

श्याम, स पु (सं) श्रीकृष्ण २ कृष्णवर्ण । वि (स) काल, कृष्ण २ कालनील, कृष्ण मेचक।

—सुंदर, सं पु (स) श्रीकृष्ण ।

श्यामता, स स्त्री (स) कालिमन्, कृष्णिमन् (पुं) २ नीलता, मेचकता।

श्यामल, वि (स) काल । श्यालीन ।

श्यामा, स स्त्री (स) राधा विशेष २ शकुनी, कालिका कृष्णा (रागभेद) ३ अप्रसूता गना ४ (मतभ्रष्टावर्णाभा) नारी ५ कृष्णा गौ (स्त्री) ६ यमुना ७ रात्री ।

श्याल, स पु (स) श्यालक, भार्याभ्रातृ, प्राप्तृ ।

श्याल की, स स्त्री (स) श्यालिका, श्याली, भार्या पत्नी, भगिनी ।

श्येन, स पु (स) शशाद -दन, कपोतारि, लगानक, घाति रण, पक्षिन, नीलपिच्छ ।

श्येनी, स स्त्री (सं) श्येनिका, नीलपिच्छी दृष्णा।

श्रद्धा, स स्त्री (स) आदर, सम्मान सत्कार २ विश्वास, प्रत्यय, विश्रम्भ ३ निष्ठा, आस्था, भक्ति (स्त्री)।

—करना या **—रखना**, क्रि अ श्रद्धा (जु उ अ), विश्रम्भ (अ प से)।

—हीन, वि (सं) अविश्वासिन, अश्रद्दधान २ आस्था निष्ठा भक्ति, हीन ।

श्रद्धालु, वि (सं) श्रद्धा-वत युक्त अन्वित, श्रद्दधान, विश्वासिन, प्रत्ययिन् २ (स्त्री) दोहदवती।

श्रद्धेय, वि (सं) विश्वास श्रद्धा, पात्र आस्पदं, श्रद्धातव्य, पूज्य, सं मान्य, नमस्य ।

श्रम, सं पु (स) परिश्रम, दे । २ श्रांति (स्त्री) ३ व्यायाम ।

—जल, सं पु (सं न) प्रस्वेद, श्रम, कणा शीकरा (बहु) दे 'पसीना'।

—जीवी, सं पु (सं विन्) श्रमिक, कर्मकर, दे 'मज़दूर'।

श्रवण, स पु (स पु न) कर्ण, श्रव, श्रोत्र दे 'कान' स न निशमनं, आकर्णनम् (स पु स्त्री) श्रवणनक्षत्रम् (ज्यो)।

श्रवणा, स स्त्री (स) श्रवण-ण, नक्षत्र विशेष।

श्रव्य, वि (स) दे 'श्राव्य'।

श्रांत, वि (स) क्लान्त, ग्लान, खिन्न, श्रमार्त्त, अवसन्न, जातश्रम २ शान्त ३ निवृत्त।

श्रांति, स स्त्री (स स्त्री) श्रम, आयास, अवसाद, खेद।

श्राद्ध, स पु (स न) श्रद्धया क्रियमाण कर्मन् (न) २ पितॄन् उद्दिश्य श्रद्धया अन्नादिदान ३ पितृ-आश्विनकृष्ण, पक्ष।

श्राप, स पु, दे 'सराप'।

श्रावण, स पु (स) मासविशेष, नभस् (पु)।

श्रावणी, स स्त्री (स) श्रावणमासीयपूर्णिमा।

श्राव्य, वि (स) श्रव्य, श्रोतव्य, श्रवणार्ह, आकर्णनीय, निशमनीय।

श्री, स स्त्री (स) कमला, लक्ष्मी दे २ सरस्वती ३ धन, संपद् (स्त्री) ४ विभूति (स्त्री), विभव ५ यशस् (न) ६ शोभा, प्रभा ७ कान्ति-द्युति (स्त्री) ८ नामपुरोवर्ति समानपद श्रीयुत, श्रीमत् ९ वृद्धि (स्त्री) १० साफल्य, सिद्धि (स्त्री) ११ रागभेद। वि, योग्य २ मनोज्ञ ३ उत्तम ४ मंगल।

—कंठ, सं पु (स) शिव, शम्भु।

—खंड, स पु (स पु न) हरिचंदन २ दे 'शिखरन'।

—धर, स (सं) विष्णु, श्री, निवास निकेतन। वि, तेजस्विन्।

—पति, स पु (स) विष्णु २ श्रीराम ३ श्रीकृष्ण ४ कुबेर ५ नृप।

—पथ, स पु (स) राज, मार्ग पथ।

—पाद, वि (स) पूज्य २ सपत्न।

—पुष्प, स पु (स न) लवंग, श्रीप्रसूनम्।

—फल, स पु (स) बिल्ववृक्ष २ नारिकेल ३ राजादनीवृक्ष ४ आमलक-की।

—फली, स स्त्री (स) आमलकी २ नीली।

श्रीमत, वि (स-मत) धनिक, धनाढ्य।

श्रीमत्, वि (स) धनवत्, धनिन्, श्रील, २ शोभान्वित, द्युतिमत् ३ छविमत्, सुन्दर। स पु, विष्णु २ कुबेर ३ शिव।

श्रीमती, स स्त्री (स) स्त्रीनामपुरोवर्त्तिसंमानपद २ लक्ष्मी (स्त्री) ३ राधा। वि, धनाढ्या २ शोभान्विता ३ सुन्दरी।

श्रीमान्, स पु (स श्रीमत्) नरनामपुरोवर्तिसमानपद, श्रीयुत, श्रीयुक्त। दे 'श्रीमत्' वि तथा सं पु।

श्रीरस, स पु (स) श्रीवेष्ट, दे 'श्रीवास'।

श्रीराग, स पु (स) षड्रागमध्ये तृतीयो राग।

श्रील, वि (स) लक्ष्मीवत्, धनाढ्य २ श्री शोभा,-युक्त-युत ३ अनश्लील, भद्र।

श्रीवत्स, स पु (स) विष्णु २ विष्णुवक्षस्थशुक्लवर्णदक्षिणावर्तरोमावली।

—लांछन, स पु (स) विष्णु।

श्रीवास, स पु (सं) पायस, वृकधूप, श्रीवेष्ट, सरलद्रव दे 'गंधाविरोजा' तथा 'तारपीन' २ पद्म ३ विष्णु ४ शिव।

श्रीहर्ष, स पु (स) नैषधकाव्यरचयिता २ सम्राट् हर्षवर्द्धन।

श्रुत, वि (स) आकर्णित, श्रवणगोचरता गत, निशान्त २ प्र,ख्यात।

—कीर्ति, स स्त्री (सं) शत्रुघ्न पत्नी। वि, कीर्तियुत, यशस्विन्।

श्रुति, स स्त्री (सं) वेद २ कर्ण, दे 'कान' ३ श्रवण ४ ध्वनि ५ किंवदंती।

—कटु, स पु (स) (काव्ये दोषभेद) कर्कशशब्दप्रयोग, दु श्रवत्वम्।

—पथ, सं पु (स) कर्ण २ वेदोक्तमार्ग।

श्रेणी, स स्त्री (स) श्रेणि (स्त्री) कक्षा, वर्ग, छात्रगण २ पंक्ति, ततिका, विजोली, आली लि, आवलि-ली, राजी जि, वीथी थिका, रेखा, लेखा, पाली लि (सब स्त्री) ३ क्रम, परंपरा, शृङ्खला ४ समव्यवसायिसंघ।

—बद्ध, वि (स) पंक्ति,-बद्ध-स्थ, वर्गीकृत।

श्रेय, स पु [स श्रेयस (न)] कल्याण, आनन्द, मंगल २ धर्म, सुकृत ३ मोक्ष, समृद्धि (स्त्री) ४ कीर्ति (स्त्री), यशस् (न)। वि, भद्रतर, साधीयस्, उत्कृष्टतर २ उत्तम, श्रेष्ठ ३ शुभंकर, मंगल ४ कीर्तिकर, यशोदायक।

श्रेयस्कर, वि (स) कल्याण हित-मंगल, कारक-कारिन्।

श्रेष्ठ, वि (सं) उत्तम, परम, प्रशस्ततम, वरेण्य, मुख्य, प्रथम, अग्रि(ग्री)य २ पूज्य, मान्य ४ वृद्ध, ज्येष्ठ ५ अभिजात, अभिजनवत्, कुलीन ६ आर्य, महानुभाव, महाशय।

श्रेष्ठता, सं स्त्री (सं) औदार्य, माहात्म्य, प्रधानता, भद्रता, आर्यत्व, कुलीनता २ उत्तमता, उत्कृष्टता।

श्रोतव्य, वि (सं) दे 'श्राव्य'।

श्रोता, सं पु (सं-तृ) श्रावक, श्रवणनिरत मन,-कर्ण, आकर्णयितृ।

श्रोत्र, सं पु (सं न) श्रवण-ण, कर्ण, दे 'कान'।

श्रोत्रिय, सं पु (सं) वेद,-विद् पाठक, छान्दस २ ब्राह्मणजातिभेद।

श्रौत, वि (सं) श्रुति-वेद,-विहित प्रतिपादित २ वैदिक, छान्दस ३ यज्ञीय। (सं न) गार्हपत्याहवनीयदक्षिणाग्नय (बहु)।

—सूत्र, सं पु (सं न) यज्ञविधायकग्रन्थविशेष।

श्लाघनीय, वि (सं) श्लाघ्य, प्रशंसनीय, दे २ उत्तम, श्रेष्ठ।

श्लाघा, सं स्त्री (सं) स्तुति-नुति (स्त्री), प्रशंसा, दे २ चाटु (पु न), चाटूक्ति (स्त्री) ३ इच्छा।

श्लाघ्य, वि (सं) श्लाघनीय, दे।

श्लिष्ट, वि (सं) संयुक्त, संलग्न २ आलिंगित ३ अनेकार्थक, श्लेषयुक्त (शब्दादि)।

श्लीपद, सं पु (सं न) पादवल्मीक, दे 'फीलपाँव'।

श्लील, वि (सं) उत्तम, उत्कृष्ट २ शुभ, भद्र।

श्लेष, सं पु (सं) अनेकार्थकशब्दप्रयोग, शब्दालंकारभेद (सा) २ परिरंभ, आलिंगन ३ संयोग, संधि।

श्लेष्मा, सं पु (सं-मन्) कफ, दे 'बलगम'।

श्लोक, सं पु (सं) अनुष्टुप्छन्दस् (न) २ पद्य, छन्दस् (न) ३ यशस् (न) ४ प्रशंसा।

श्वसुर, सं पु (सं) दे 'ससुर'।

श्वशुर्य, सं पु (सं) देवर २ श्याल।

श्वश्रू, सं स्त्री (सं) दे 'सास'।

श्वान, सं पु (सं) श्वन्, कुक्कुर, दे 'कुत्ता'।

—निद्रा, सं स्त्री (सं) अगाढ-कुक्कुर,-निद्रा-स्वाप।

श्वानी, सं स्त्री (सं) कुक्कुरी, शुनी, सरमा, सधी, सारमेयी।

श्वापद, सं पु (सं) हिंस्रपशु।

श्वास, सं पु (सं) प्राणा असव (बहु), दे 'सांस' २ श्वासरोग, दे 'दमा'।

—धारण, सं पु (सं न) श्वासरोध, प्राणायाम।

श्वासोच्छ्वास, सं पु (सं) प्राण,-गति क्रिया, श्वसितोच्छ्वसितम्।

श्वित्र, सं पु (सं न) श्वेत-त्र, श्वेतकुष्ठम्। वि (सं) श्वेत २ श्वित्रिन्।

श्वित्री, वि (सं-त्रिन्) श्वित्र-श्वेतकुष्ठ,-युक्त।

श्वेत, वि (सं) धवल, गौर, शुक्ल-क्ल, दे 'सफेद' २ निर्मल, स्वच्छ ३ निर्दोष, निष्कलंक। सं पु (सं) शुक्लवर्ण २ शंख ३ शुक्रग्रह (सं न) रूप्य, रजतम्।

—कुष्ठ, सं पुं (सं न) दे 'श्वित्र'।

—कृष्ण, वि (सं) सितासित, शुक्लश्याम २ पक्षविपक्ष।

—केतु, सं पुं (सं) उद्दालकपुत्र।

—प्रदर, सं पु [सं प्रदरभेद (स्त्रीरोग)]।

श्वेतता, सं स्त्री (सं) श्वैत्य, श्वेतिमन् (पु), शुक्लता, दे 'सफेदी'।

श्वेतांबर, सं पुं (सं) जैनसम्प्रदायविशेष, धवलवस्त्र।

ष

ष, देवनागरीवर्णमालाया एकत्रिंशो व्यञ्जनवर्ण, षकार।

षट, सं पुं (सं) दे 'छह' (१२)।

षट्, वि (सं षष्) सं पु, उक्ता संख्या, तद्बोधकांकश्च (६) २ दीर्घकरागपुन।

—कर्म, सं पु (सं-र्मन्) (न) षट् ब्राह्मणकर्माणि (यजनं, याजनं, अध्ययनं, अध्यापनं, दानं, प्रतिग्रहः)।

—कोण, सं पु (सं न) षड्भुज। वि, षड्भुज।

—पद, सं पुं (सं) षडङ्घ्रि, षट्चरण, भ्रमर।

—पदी, स स्त्री (स) भ्रमरी २ छन्दोभेद (छप्पय) ३ यूका।

—शास्त्र, सं पु (स न) सांख्ययोगन्याय वैशेषिकमीमांसावेदान्तशास्त्राणि (न बहु)।

—शास्त्री, सं पु (स -स्त्रिन्) षड्दर्शनविद्।

षट्क, स पु (स न) षट् इति संख्या २ षड्वस्तुसमूह।

षडङ्ग, स पु (स न) वेदाङ्गषट्शास्त्राणि (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दस (न), ज्योतिष) २ षट् शरीरावयवा (नवि बाहू शिरो मध्य षडङ्गमिदमुच्यते)) वि, षडवयवयुक्त।

षडङ्घ्रि, स पु (स) भ्रमर, षट्पद।

षडानन, स पु (स) कार्तिकेय, षण्मुख।

षड्गुण, स पु (स न) षाड्गुण्य, राज्य रक्षणस्य षडुपाया (= सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय)। वि, गुणषट्कयुत २ षड्गुणित।

षड्ज, स पुं (स) स्वरसप्तके प्रथम, चतुर्थो वा स्वर (संगीत)।

षड्दर्शन, सं पु (स न) दे 'षट्शास्त्र'।

षड्यन्त्र, स पु (स) कूट-ट, कूट, युक्ति (स्त्री)-उपाय उपजाप, *षडयन्त्र, *कुचक्र, कुमन्त्रणा।

षड्रस, स पु (स-रस,-रसा) रसषट्क (= मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय)।

षड्रिपु, स पु (स न) षड्वर्ग, विकारषट्क (= काम क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सर)।

षष्ठी, स स्त्री (स) शुक्लकृष्णपक्षयो षष्ठी तिथि (स्त्री) २ सम्बन्धविभक्ति (व्या) ३ कात्यायनी, दुर्गा।

षाड्गुण्य, स पु (स न) दे 'षड्गुण' स पु।

षोडश, वि तथा (स) 'सोलह'।

—कला, स स्त्री (स बहु) चन्द्रमण्डलस्य षडधिकदश भागा (= अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्णा, पूर्णामृता = १६ कला)।

—शृङ्गार, स पु (स बहु) षोडशसंख्याकानि प्रसाधनसाधनानि।

(अंग शुची, मज्जन, वसन, माग, महावर, केश। तिलक भाल, तिल चिबुकमें, भूषण, मेंहदी वेष। मिस्सी, काजल, अर्गजा, बीरी और सुगंध। पुष्पकली, युत होय कर तब नवसप्त निबन्ध।)

—संस्कार, स पु (स बहु) धार्मिककृत्यभेद (= गर्भाधानपुंसवनसीमन्तोन्नयनजातकर्मनाम करणनिष्क्रमणान्नप्राशनचूडाकर्मकर्णवेधोपनयन वेदारम्भसमावर्तनविवाहवानप्रस्थसन्न्यासान्त्येष्टि संस्कारा (स्वामी दयानन्द)।

षोडशी, स स्त्री (स) षोडशवर्षा युवति (स्त्री) २ प्रेतक्रियाभेद।

षोडशोपचार, स पु (स बहु) षोडशपूजन, (= आसन स्वागत पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्। मधुपर्काचमस्नान वसनाभरणानि च॥ गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्य वदन तथा। प्रयोजयेदर्चनायामुपचारास्तु षोडश॥)

स

स, देवनागरीवर्णमालाया द्वात्रिंशो व्यञ्जनवर्ण सकार।

संकट, सं पु (स न) आपद्-विपद्-आपत्ति विपत्ति (स्त्री) २ दुःख, कष्ट ३ जन-समूह समर्द ४ गिरिद्वार, दे 'दर्रा' ५ सबाधपथ।

संकटापन्न, वि (स) आपद्-विपद्-आपत्ति, ग्रस्त।

संकटोत्तीर्ण, वि (स) कष्ट-क्लेश-विपत्ति, मुक्त-रहित।

संकर, स पु (स) सम्मिश्रण, संमिलन २ सांकरिक, मिश्रज, संकरज, ३ अधर्म्य विवाह।

संकरता, स स्त्री (स) संमिश्रता, सांकर्य, क्रमभंग, व्यतिकर, अस्तव्यस्तता।

संकल, स स्त्री (स) शृंखला, दे।

संकलन, स पु (स न) संग्रहण, संचयनं २ संचय, राशि, ३ परिगणन, परिसंख्या ४ संग्रह, संग्रहग्रन्थ।

—करना, क्रि स., संकल् (चु), संग्रह् (क्र्. प से), समाहृ (भ्वा प अ)।

संकलित, वि (सं) संगृहीत, संचित २ परिसंख्यात, परिगणित ३ राशी-एकत्री-कृत।

संकल्प, सं पुं (सं) विकीर्षा, भाव, विचार, इच्छा, काम २ विधिपूर्वक-दान विनरण-उत्सर्जन ३ मंत्रविशेष ४ निश्चय, अवधारण, अध्यवसाय।

—करना, क्रि स निश्चि (स्वा प अ), दृष्ट अवधृ (चु), संकल्प (प्रे) २ सत्संकल्प पूर्वक वितृ (भ्वा प से), दा।

संकाश, वि (सं) तुल्य, सदृश २ निकट समीप, वर्तिन्। (सं पुं) सामीप्य, नैकट्यम्।

संकीर्ण, वि (सं) संबाध, संकट, संकुचित २ मिश्रित, संमिश्र संसृष्ट ३ क्षुद्र, तुच्छ ४ संकुल निचित व्याप्त, समा आ-कीर्ण।

संकीर्णता, सं स्त्री (सं) संबाधता २ मिश्रितत्व ३ संकुलता ४ क्षुद्रता नीचता।

संकीर्तन, सं पुं (सं न) (देवादीनां) गुणगान, कीर्तिकथनम्।

संकुचित, वि (सं) संकीर्ण, संबाध २ सलज्ज, सत्रप ३ अदय, निपचान ४ संहृत, संपिंडित, आकुंचित ५ मुद्रित, मीलित, मुकुलित।

संकुल, वि (सं) आ-सं-कीर्ण, निचित, व्याप्त, कलिल, गहन, संभृत, सं-परि, पूर्ण, पूरित। सं पुं (सं न) युद्ध २ जन, ओघ संमर्द ३ पशुकुल, गो, इद कुल, यूथ, निवह ४ असंगतवाक्यम्।

संकेत, सं पुं (सं) इंगित, संज्ञा, संधान, अंगविक्षेप, प्रवृत्ति (स्त्री) आकार, अभिप्रायव्यंजकचेष्टा २ (प्रेमिणो) संकेतनिकेतन, संमिलनस्थान ३ शृंगारचेष्टा, हाव, विभ्रम, विलास ४ चिह्न ५ उपदेश, आकूत, उपन्यास।

—करना, क्रि स, इंगितेन सूच् (चु), उपदिश् (तु प अ), साकूत उपयम् (दि प सं)।

संकोच, सं पुं (सं) आकुंचन, संकोचन, समाकर्ष, संपीडन २ लज्जा, त्रपा ३ निश्चयाभाव विकल्प, संशय ४ संक्षेपणम्।

संकोचन, सं पुं (सं न) दे 'संकोच' (१)।

संकोचना, क्रि स (सं संकोचन) संकुच् (प्रे), आकुंच् (प्रे), अल्पीकृ, संहृ (भ्वा प अ.)। क्रि अ, लज्ज् (तु आ से) त्रप् (भ्वा आ से)।

संकोची, वि (सं चिन्) लज्जालु, लज्जाशील, विनीत, शालीन।

संक्रमण, सं पुं (सं न) गमन, व्रजन २ भ्रमण पर्यटन ३ सूर्यस्य राश्यन्तरप्रवेश।

संक्रांत, वि (सं) अतीत, गत २ प्रविष्ट, निविष्ट ३ प्राप्त गृहीत ४ स्थानान्तरित ५ प्रति, फलित बिम्बित।

संक्रांति, सं स्त्री (सं) दे 'संक्रमण' (३)। २ ३ सूर्यसंक्रमण, समय दिवस।

संक्रामक, वि (सं) स्पर्श-, ज-य-संचारिन् (रोग)।

संक्षिप्त, वि (सं) संहृत, संमस्त, संकुचित, लघु अल्पीभूत।

—करना, क्रि स, संक्षिप् (तु प अ), समस् (दि प से), समाहृ-संहृ (भ्वा प अ)।

—रूपि, सं स्त्री (सं) दे 'शार्टहैंड'।

संक्षेप, सं पुं (सं) सार २, समूह, समास, समाहार।

संक्षेपण, सं पुं (सं न) संकोचन, संहरण २ संचयन, संग्रहणम् ३ प्रासन, क्षेपणम्।

संक्षेपतः, अव्य (सं) संक्षेपेण, समासेन, साररूपेण।

संख, सं पुं, दे 'शंख' (१ २)।

संखिनी, सं स्त्री, दे 'शंखिनी'।

संखिया, सं पुं (सं शृंगिक) फेनाश्मन्, आखुगोरी-पाषाण, शल, मल्ल, सरवीरा, कुनटी नाग, विहिंसा मातृ (स्त्री)।

संख्या, सं स्त्री (सं) गणना २ अंक ३ बुद्धि (स्त्री) ४ विचारणा।

—करना, क्रि स, गण् (चु) संख्या (अ प अ)।

संग¹, सं पुं (सं) मेल, संमिलन, समागम २ संगति (स्त्री), साहचर्य, संसर्ग, संवास, संपर्क ३ विषय, अनुराग आसक्ति (स्त्री) ४ सरित्संगम। क्रि वि, सह, साकं, सार्क, समं (तृतीया के साथ)।

—करना, क्रि अ, संगम् (भ्वा आ अ), सहचर् (भ्वा प से), संवस् (भ्वा प अ)।

संग², सं पुं (फा) पाषाण, प्रस्तर, दे 'पत्थर'। वि, नीरस, कर्कश, ककश, २ कठोर।

—तराश, सं पुं (फा + अ) तक्षण, पाषाण प्रस्तर।

—तराश, स पु (फा) मूर्ति प्रतिमा-कार, आदिमक, औपलिक ।
—तराशी, स स्त्री, मूर्ति प्रतिमा निर्माणम् ।
—दिल, वि (स) पाषाण-कठोर, हृदय, निर्दय ।
—दिली, स स्त्री, निर्दयता, निष्करुणता ।
—मर्मर, स पु (फा + अ) राजादमन (पु), मणिशिला, ममर,-उपल प्रस्तर ।
—मूसा, स पु (फा) *मूषोपल, *मूषाश्मन् (कृष्णश्लक्ष्णप्रस्तरभेद) ।
संगठन, स पु (स स+हिं गठना) सघट्टना, सुव्यवस्थान, सविधान, दे 'संघटन' २ संस्था, संघ ३ ऐक्य, सन्धि, सं, हति (स्त्री) योग-नाम ।
संगठित, वि (हिं संगठन) संघटित, सुविहित, सुव्यवस्थापित ।
संगत, स स्त्री (स न) दे 'संग' (१) । २ सहचर, मलिन् ३ मैथुनम् ।
—करना, क्रि अ, दे 'संग करना' ।
संगतरा, स पु (पुर्त) (वृक्ष) नारंग, नागरंग, ऐरावत । (फल) नारंग इ, दे 'नारंगी' ।
संगति, स स्त्री (स) दे 'संग' (१ २) । ३ मैथुन ४ सबन्ध ५ सवाद, विरोधाभाव, आनुरूप्य ६ ज्ञान ७ युक्ति (स्त्री) ।
संगती, स पु (स संगत>) सहचर, मित्र, सहाय ।
संगम, स पु (स) दे 'संग' (१ ०) । ३ वेणी (स्त्री) सरित-संयोग-समागम-सन्ध ४ मैथुन ५ ग्रहयोग (ज्यो) ।
संगर, स पु (स) युद्ध २ प्रतिज्ञा ३ नियम ४ आपद् (स्त्री) ५ अगीकार ६ विषम् ।
संगसार, स पु (फा) *उपलमार, प्राणदण्डभेद । वि, नष्ट, ध्वस्त ।
संगिनी, स स्त्री (हिं संगी) सहचरी, सहगामिनी २ पत्नी ।
संगी, सं पु (हिं संग) सहचर, सहाय २ मित्र ३ बंधु ।
संगीत, स पु (स न) प्रेक्षणार्थं नृत्यगीतवाद्यम् ।
—शास्त्र, स पु (स न) गंधर्व, विद्या-वेद ।
संगीन, स स्त्री (फा) *नालास्त्रसंगिनी । वि, अश्म पाषाण,-मय-रचित २ स्थूल ३ स्थायिन्, दृढ ४ घोर, विकट ५ संकीर्ण ।
संगृहीत, वि (स) संचित, समाहृत, एकत्रीकृत २ संकलित, परिसंख्यात ।
संग्रह, स पु (स) संचय यन, समाहरण, समा, हार हृति (स्त्री)-हरण, संकलन, राशी-एकत्री,-करण २ संग्रहग्रंथ ३ संक्षेप ४ मुष्टि (पु स्त्री) ५ निग्रह, संयम ६ रक्षा ७ बद्धकोष्ठ, दे 'कब्ज' ८ स्वीकृति (स्त्री) ९ ग्रहणम् ।
संग्रहणी, स स्त्री (स) ग्रहणी (अजीर्णभेद) ।
संग्रहणीय, वि (स) संचेतव्य संचयनीय, निचेय ।
संग्रहालय, स पु (सं) अद्भुतालय ।
संग्रहीता, वि (स तृ) संग्राहक, संग्रहिन्, संचेतृ, संचयिन् ।
संग्राम, स पु (स) रण, आहव, युद्ध, दे ।
—तुला, स स्त्री (स) युद्धपरीक्षा ।
—भूमि, स स्त्री (स) युद्धक्षेत्रम् ।
—मृत्यु, स स्त्री (स पु) वीरगति (स्त्री), रणमरणम् ।
संघ, स पु (स) सभा, समाज, समिति (स्त्री), गोष्ठी, परिषद्-ससद् (स्त्री) २ समूह, गण, वृंद, दल ३ प्राचीनप्रजातंत्रभेद ४ बौद्धश्रमणसमाज ५ विहार, मठ ठम् ।
—चारी, वि (स रिन्) गण-यूथ,-गामिन् । स पु, मीन ।
—शासन, स पु (स न) *संयुक्ततंत्रम् ।
संघटन, स पु (स न) दे 'संगठन' (१ ३) ४ निर्माण, रचन ५ घटना, रचना ।
संघट्टन, स पु (स न) संघर्षण २ संघट्ट, समर्द ३ रचना, घटना ४ संमिलन, संयोग ५ दे 'संगठनम्' ।
संघर्ष, स पु (स) संघृष्टि (स्त्री), सं अभि आ-घर्षण, आ वि, घट्टन, परस्पर,-घर्षण मर्दन २ प्रति,स्पर्द्धा, विजिगीषा, प्रतियोगिता, अहमहमिका ३ स-घट्ट-मर्द ४ युद्धम् ।
संघर्षण, सं पु (स न) दे 'संघर्ष' ।
संघात, स पु (स) सङ्घ्ह वृंद २ हनन, वध ३ आघात ४ निबिडसयोग ५ आवास ।
संघाती, स [illegible] (सं संघा>) सहचर, मित्रम् ।
संघाराम, स पु (स) आश्रम, विहार, मठ ठम् ।

कृतार्थ २ अनुनात, तोषित, प्रीत, मा त्वन, प्रमादित।

सतोष, स पु (स) स परि,-तोष -तुष्टि (स्त्री), वितृष्णा शानि -तृप्ति (स्त्री), प्रीति, २ आनन्द, हर्ष, सुखम्।

—करना, क्रि अ, सतुष-सतृप (दि प अ), नद (भ्वा प से)।

सतोषी, वि (स षिन्) दे 'सतुष्ट' (२)।

सथा, स पु (स सहिता> ?) आह्निक, दैनिक, पाठ।

सदर्भ, स पु (स) रचना, ग्रन्थना, निर्मिति (स्त्री) २ प्रस्ताव, लेख, प्रनि,-बध ३ भाष्य-टीका,-आरमकग्रन्थ ४ लघु ग्रन्थ पुस्तक ५ सग्रह, सकलन (ग्रथ) ६ विस्तार।

सदल, स पु (फा) मलयज श्रीखड, चदन, दे।

सदली, वि (फा सदल) चदनवर्ण, हय स्पीन २ चदन,-मय-निर्मित।

सदिग्ध, वि (स) सदेह-सशय, युक्त पूर्ण, निश्चयशून्य, सविकल्प, विकल्प्य।

—व्यक्ति, स पु (स स्त्री) शकित व्यक्ति,-जन।

सदूक, स पु (अ) सपुट, पेटा, मजूषा, समुद्ग।

सदूकचा, स पु / **सदूकची**, स स्त्री } (अ + फा) पेटिका, समुद्गक। करण्डक, सपुट(टि)क।

सदेश, स पु (स) सवाद, वार्ता, वाचिक, दिष्ट, आख्यायनी २ वगप्रानीयमिष्टान्नभेद।

—भेजना, क्रि स, सदिश (तु प अ), वाचिक दिष्ट प्रेष् (प्रे)।

—हर, स पु, वार्ताहर, वाचिक, सादेशिक, दूत, आख्यायक।

सदेसा, स पु, दे 'सदेश' (१)।

सदेह, स पु (स) सशय, विचिकित्सा, द्वापर, विकल्प, द्वैध, आशका, निश्चय निर्णय, अभाव २ प्रत्यय विश्वास,-अभाव ५ अर्था लकारभेद (सा)।

सदोह, स पु (स) समूह, निकर।

सधान, स पु (स न) अभिषव, सधानी, मद्यसज्जीकरण, सधिका २ चापे बाणयोजन ३ मदिराभेद ४ संघट्टन, सयोजन ५ अन्वेषण ६ सजीवन, दे ७ सधि' ८ अवदश ९ कानिक १० सधानिका।

सधि, स स्त्री (स पु) सयोग, समिलन, सगम, सहति (स्त्री) २ सधि, पवन्(न), सधिस्थान ३ मित्रीकरण, राज्यरक्षाया गुण विशेष (राजनीति) ४ मैत्री, सख्य ५ वर्णद्वयमेलन, सहिता (व्या) ६ रूपकागभेद (सा) ७ दे 'सेंध' ८ युगसधि ९ वय सधि।

—चोर, स पु (स) सधिहारक।

—च्छेद, स पु (स) सहितपदविश्लेषणम्।

—जीवक, स पु (स) विट, सचारक।

—बधन, स पु (स) स्नसा, स्नायुबध।

—वेला, स स्त्री (स) अहोरात्रमिलनसमय, सधिकाल २ सायम्।

सध्या, स स्त्री (स) सधिकाल, अहोरात्र-सयोगसमय २ सायकाल, दे ३ उपासना भेद ४ युगसधि।

—कालिक, वि (स) सध्याकालीन, विकाल सधिकाल,-सम्बन्धिन्।

—बल, स पु (स) निशाचर, राक्षस।

—राग, स पु (स) सध्या विकाल-विकालक -रक्तिमन् शोणिमन्-राग।

—वदन, स पु (स न) सध्योपासनम्।

सन्निकर्ष, स पु (स) सन्निधि, सन्निधान, सामीप्य २ इन्द्रियार्थसम्बन्ध।

सनिपात, स पु (स) वातपित्तकफाना युगपद् विकार, विकारोत्पादक मिलितदोषत्रय २ समाहार, समूह ३ समवपात ४ सकुञ्चन ५ सयोग, मिश्रणम्।

सन्निवेश, स पु (स) समुपवेश -शन २ उपवेश शन, आसित, निषदन ३ आनिधान, स्थापन ४ प्रतिबधन, उत्सचन, प्रणिधान ५ गृह ६ समूह ७ रचना ८ सस्थान ९ प्रतिमादीना स्थापनम्।

सन्निहित, वि (स) निकट-समीप, स्थ-वार्तिन् २ (समीपे) स्थापित।

सन्यास, स पु (स) आर्यजीवनस्य चतुर्थाश्रम, प्रव्रज्या, वैराग्य २ काम्यकर्मन्यास (गीता) ३ जगमासी।

सन्यासी, स पु (स सिन) चतुर्थाश्रमिन्, परि,-व्राजक व्राज्, श्रमण, भिक्षु, मस्करिन्, कमण्डिन, पाराशरिन्।

सपत्ति, स स्त्री (स) विभव, वैभव, ऐश्वर्य, अर्थ, धन, वित्त, श्री -लक्ष्मी समृद्धि (स्त्री)

२ विभव, द्रव्य ३ सिद्धि (स्त्री), सफलता, पूर्णता ४ लाभ, प्राप्ति (स्त्री)।

संपद् दा, सं स्त्री (सं संपद्) दे 'संपत्ति'।

संपन्न, वि (सं) धनाढ्य, धनिक, धनिन् दे २ सिद्ध, निष्पन्न, पूर्ण ३ सहित, युक्त ४ समृद्ध, धनधान्ययुत।

संपराय सं पु (सं) उत्तरकाल २ युद्ध ३ आपद् (स्त्री)।

संपर्क, सं पु (सं) संसर्ग, सम्बन्ध, साहचर्य २ मिश्रण दे ३ संयोग, मिलन ४ स्पर्श ५ योग संकलन (गणित)।

संपात, सं पु (सं) सहपतन २ समागम ३ संगमस्थान ४ संवृत्ति समापत्ति (स्त्री)।

संपादक, सं पु (सं), पत्र पत्रिकादीनां संपादयितृ, संपादनकर २ साधक, निष्पादक ३ अनुष्ठातृ, कर्तृ, निर्वर्तयितृ।

संपादकता, सं स्त्री (सं) सम्पादकत्वम्।

संपादकीय, वि (सं) १ २ सम्पादक,-लिखित-सम्बन्धिन्।

संपादन, सं पु (सं न) मुद्रणार्थं सज्जीकरणं २ परिष्करण, प्रसाधन, सज्जीकरण ३ साधन निष्पादन, समापन ४ करण, निर्वहन, अनुष्ठानम्।

संपादित, वि (सं) मुद्रणार्थं सज्जीकृत २ निष्पादित, पूरित समित-नीत, संपूरित, साधित ३ प्रस्तुत, सज्ज।

संपुट, सं पु (सं) समुद्गक, करण्डक, संपुट(टि)का, मंजूषा, दे 'डिब्बा' २ अंजलि, कर हस्त पाणि, पुट ३ द्रोण, पत्रपुट, दे 'दोना'।

संपूर्ण, वि (सं) व्याप्त, पूरित, पूर्ण, आकर्णभृत २ समग्र, समस्त, सकल, कृत्स्न ३ समाप्त, अवसित। सं पु, सप्तस्वरयुतो रागः (संगीत)।

संपूर्णतः } क्रि वि (सं) साकल्येन, साम
संपूर्णतया, } स्त्येन २ सम्यक्, सुष्ठु (सब अव्य)

संपूर्णता, सं स्त्री (सं) समग्रता, कात्स्न्यं, साकल्य २ समाप्ति (स्त्री), अवसानम्।

संपृक्त, वि (सं) मिश्र, मिश्रित २ खचित ३ स्पृष्ट ४ संसृष्ट, ज्ञातसंबंधक।

सँपेरा, सं पु (हि साँप) अ(आ)हितुण्डिक, गारुडिन्, व्यालिक, जांगलिक, व्यालग्राहिन्।

सँपोला, सं पु (हि साँप) अहि-सर्प, शाव-शावक।

संप्रति, अव्य (सं) अधुना, इदानीं २ अद्यत्वे, वर्तमाने।

संप्रतिपत्ति, सं स्त्री (सं) ऐकमत्य, सामंजस्य २ स्वीकृति (स्त्री) ३ लाभ, प्राप्ति (स्त्री) ४ प्रवेश ५ सम्यक् बोध ६ कार्यसिद्धि (स्त्री)।

संप्रदान, सं पु (सं न) दान, वितरण, विश्राणन, प्रतिपादन २ कारकभेद, चतुर्थी (व्या) ३ दीक्षा, मन्त्रोपदेश ४ उपहार।

संप्रदाय, सं पु (सं) मत, धर्म, शाखा-पथ मार्ग २ आम्नाय गुरुपरंपरागतसदुपदेश, गुरुमन्त्र ३ अनुयायिमण्डल ४ प्रथा, रीति (स्त्री)।

संप्रदायी, वि (सं यिन्) मतावलंबिन्, मतानुयायिन्।

संबंध, सं पु (सं न) संयोग, संश्लेष, सम्मिलन २ सम्पर्क, संसर्ग ३ बन्धुता, सगोत्रता, सजातीयता, ज्ञातित्व ४ प्रगाढसख्य ५ षष्ठी, विभक्तिभेद (व्या)।

संबंधक, वि (सं) सम्बन्धिन्, विषयक २ उपयुक्त, योग्य। सं पु (सं) जन्मविवाह सख्यादिजनित सम्बन्ध।

संबंधी, वि (सं धिन्) सम्बन्धविशिष्ट २ संयुक्त, संसृष्ट ३ प्रसंगगत। सं पु (सं) बन्धु, बान्धव, सगोत्र, ज्ञाति (स्त्री) २ दे 'समधी'।

संबद्ध, वि (सं) संयुक्त, संश्लिष्ट, संलग्न २ सम्बन्धविशिष्ट ३ (अ-) विहित, संहत ४ संग्रथित, संश्लिष्ट।

संबल, सं पु (सं पु न) पाथेयं, संबल-लम्।

संबाध, वि (सं) संकीर्ण, संकुचित २ संकुल, परिपूर्ण। सं पु (सं) विघ्न, बाध, बाधा २ जन-समुदाय-समूह समर्द ओघ।

संबोधन, सं पु (सं न) अभिमुखीकरणं, आमन्त्रणं, सम्बुद्धि (स्त्री), आकारण, आह्वानं २ आह्वानात्मक शब्दरूपभेद (व्या, उदाह०) ३ प्रबोधन निद्रात उत्थापन ४ आख्यापन, ज्ञापन ५ आकाशभाषितं (नाटक)।

सँभलना, क्रि अ (हि सम्भालना) उत्तभ्, उपस्तम्भ् धृ म् (सब कर्म) २ निश्चलं-दृढं स्था (भ्वा प अ) ३ सावधान-अवहित जागरूक (वि) भू ४ पादस्खलनपतनादिभ्यो रक्ष् मुच् (कर्म) ५ उत्तीर्ण या (अ प अ.),

अभिवृध् (भ्वा आ से) ६ पुन स्वास्थ्य लभ् (भ्वा आ अ), प्रकृर्ति आपद (दि आ अ)।

सभव, स पु (स) उत्पत्ति (स्त्री), जन्मन् (न) २ मेल, समागम ३ शक्यता सम्भवनीयता । वि (स >) शक्य, सम्भवनीय, सम्भाव्य २ साध्य, सम्पाद्य ।

सभवत, क्रि वि (स) कदाचित् स्यात् सम्भाव्यते, शक्यते (विधिलिङ से भी)।

संभार, स पु (स) सग्रहण, सञ्चयन समाहरण ३ सामग्री, आवश्यकवस्तूनि (न बहु) ३ सम्पत्ति (स्त्री) ४ राशि चय ५ भरणपोषणम् ।

सँभाल, स स्त्री (सं सम्भार) पोषण, भरण, सवर्द्धन, २ रक्षणं, त्राणं, पालनं ३ पर्यवेक्षणं, अवेक्षा-क्षण, अधिष्ठानं, कार्यनिर्वाहणम् ।

सँभालना, क्रि स (हिं सँभाल) उत्-उप-स स्तम्भ (क्र प से, प्रे), आ-अव-लम्ब् (भ्वा आ से), स, धृ (भ्वा प अ, चु), २ ग्रह् (क्र् प से), धृ विरम् (प्रे) रुध् (रु उ अ) (पादप्रहारपराजयादिभ्यो) रक्ष (भ्वा प से) त्रै (भ्वा आ अ) ३ सवृध (चु), पुष (~) ४ उपकृ साहाय्य विधा (जु उ अ) ५ अधिष्ठा (भ्वा प अ), निवह् सम्पद् (प्रे) ६ मनोवेग नियम् (भ्वा प अ) ७ पर्यवेक्ष (भ्वा आ से) ८ प्रोत्सह समाश्वस (प्रे)। स पु, आ अव-लम्बन, धारणं, उत्तम्भन २ ग्रहण ३ रक्षणं, त्राण ४ सवर्धन, पोषण ५ साहाय्यदानं, उपकार ६ अधिष्ठान, निर्वाहण ७ पर्यवेक्षण ८ प्रोत्साहन इ ।

सँभालने योग्य, वि धारयितव्य, उत्तम्भनीय, रक्ष्य, त्रातव्य, पोष्य, पर्यवेक्षणीय, इ ।

सँभालनेवाला, सं पुं, उत्तम्भक, धारक, आधार, आश्रय, आलम्बनं, पोषक, सवर्द्धक, रक्षक, प्रोत्साहक इ ।

सँभाला हुआ, वि, सस्तभित, धृत, धारित, रक्षित, सवर्धित, उपकृत, पर्यवेक्षित, प्रोत्साहित इ ।

सभावना, सं स्त्री (सं) शक्यता, सम्भवनीयता, सम्भाव्यता, सम्भव २ आदर, सत्कार ३ प्रतिष्ठा, मान ४ कल्पना, अनुमानम् ।

सभावित, वि (स) दे 'सभव' वि २ कल्पित, उद्भावित ३ आदृत सम्मानित ।

सभाव्य, वि (स) दे 'सभव' वि ।

सभाषण, स पु (स) आ स,-लाप, वार्तालाप, स,-कथा वाद भाषा २ प्रवचन, व्याख्यानम् ।

सभूत, वि (सं) (सह-) जात उत्पन्न उद्भूत ।

सभूति, स स्त्री (स) उद्भव, उत्पत्ति (स्त्री) २ विभूति -वृद्धि (स्त्री) ३ क्षमता ।

सभोग, स पु (स) रति (स्त्री), मैथुन दे २ सम्यक् ,-उपयोग -व्यवहार -प्रयोग ३ सयोगशृंगार (सा)।

सभ्रम, स पु (स) व्याकुलता, वैकल्य, व्यग्रता २ त्वरा रि (स्त्री) रभस, रभस (न), आ स, वेग ३ आदर मान ४ भ्रान्ति (स्त्री) भ्रम, सन्देहम् ।

सभ्रांत, वि (स) व्याकुल, व्यग्र, उद्विग्न २ प्रतिष्ठित, संमानित ।

—**जन**, स पुं (स) सम्मान्य पूज्य,-जन मनुष्य ।

—**मना**, वि (स नस) विभ्रान्त, भ्रान्त क्षुब्ध, आकुल, व्याकुल ।

समत, वि (स) सप्रतिपन्न, २ समादृत, समानित ।

समति, स स्त्री (स) समय, ऐकमत्य, मतैक्य, सांमत्य, ऐक्य २ अनुमति (स्त्री)-त, अनुज्ञा, अनुमोदन ३ मति (स्त्री), अभिप्राय, आशय, बुद्धि (स्त्री)।

समन, सं पु (अ समन्स) (धर्माधिकरण) आह्वानपत्रम् ।

समर्द, स पु (स) युद्ध २ विवाद ३ जन समुदाय -सकुलम् ।

समान, सं पु (स) मान,आदर सत्कार, पूजा, अर्हणा, अभ्यर्चन, सभावना, प्रतिष्ठा, गौरव, अर्चा।

—**करना**, क्रि स, समन् (प्रे) आदृ (तु आ अ), मह् पूज (चु), सभू (प्रे)।

संमानित, वि (स) समादृत, सत्कृत, पूजित, गौरवान्वित, अभ्यर्चित, पूज्य, उपास्य, नमस्य, सम्मान्य २ प्रधान, मुख्य, अग्रिय ।

समिलन, सं पु (सं न) सगम, समागम, मेल, सयोग, सगति (स्त्री)।

संमिलित, वि (सं) संमिश्र, मिश्रित, संयुक्त, संहत संयुक्त समवेत।

संमिश्रण, सं पु (सं न) संपर्क, संसर्ग संयोग संमिलन २ मिश्र मिश्र द्रव्य, संनिपात संकर नानाद्रव्यसमुदाय।

संमुख, क्रि वि (सं संमुख से) अभिमुख-खी पुर, पुरत, पुरस्तात् समक्ष साक्षात्, प्रत्यक्षम्।

संमेलन, सं पु (सं न) समाज, सभा, परिषद् (स्त्री) २ बृहदधिवेशनं ३ संमिलन, संघात ४ दे संमिलन'।

संयत, वि (सं) अव निरुद्ध रुद्ध, नियमित, निगृहीत २ नि प्र न-बद्ध, नियन्त्रित, पिनद्ध ३ वश नीत वशीकृत, दमित ४ क्रम नियम, बद्ध व्यवस्थित ५ मित, समयाद सावधिक ६ निर्गेन्द्रिय, आत्म नद्रिय, निग्रहिन्।

—मना, वि (सं नस्) संयमशील, संयत, आत्मनिग्रहिन्।

—प्राण वि (सं) प्राणायामिन, संयतश्वास।

—मुख, वि (सं) मित भाषक, भाषि वादिन्।

संयम, सं पु (सं) इन्द्रिय जय निग्रह, दम, आत्मनियन्त्रण २ निग्रह, निरोध, नियन्त्रण-णा ३ पथ्यसेवन, मिताशन ४ परिमितता-त्व मर्यादापालन ५ विधान, निर्मोचन, संवरण ६ बन्धनम्।

संयमी, वि (सं मिन्) इन्द्रिय-आत्म जित निग्रहिन, संयत जितेन्द्रिय, दमिन्, संयमशील, योगिन् २ मित अल्प-संयत आहार भोजिन।

संयुक्त, वि (सं) समवेत, संहत, संश्लिष्ट २ मिलित अन्वित, युक्त ३ संबद्ध, संपृक्त ४ संमिलित, समिश्रित।

संयोग, सं पु (सं) दे 'संमिलन २ संश्लेष, संमिश्रण ३ संभागशृंगार (सा) ४ संबंध, संपर्क ५ अनन्तरत्व नैरन्तर्य ६ योग, संकलन (गणित) ७ दैव, दैव, घटना गति (स्त्री)-योग।

—से, मु, दैवात् दैव-भाग्य-वशात्, अकस्मात्।

संयोगी, सं पु (सं गिन्) गृहस्थ साधु २ सहचर युत।

संयोजक, वि (सं) संमेलक, संघटक।

सं पुं (सं न) १२, शब्द वाक्य-योजक पदम्।

संरक्षक सं पु (सं) आश्रयदातृ, पुरस्कर्तृ, २ पोषक, प्रतिपालक, भरणकृत्, संवर्द्धक संरक्षित ३ त्रातृ गोप्तृ, पालक, रक्षितृ ५ सहायक, उपकारक।

संरक्षण, सं पु (सं न) गोपन रक्षा, त्राणं २ अवेक्षा, पर्यवेक्षण ३ अधिकार ४ रोध, प्रतिबन्ध।

संलग्न, वि (सं) संयुक्त, संहत, संश्लिष्ट, सहित, संमिलित, संबद्ध।

संलाप, सं पुं (सं) वार्तालाप, संवाद।

संवत्, सं पु (सं अव्य) वर्ष पुं, अब्द, वत्सर, परि,वत्सर २ विक्रमाब्द ३ शाक।

संवत्सर, सं पु (सं) दे 'संवत्'।

संवरण, सं पु (सं न) गोपन, प्रच्छादन, निगूहनम्।

सँवरना, क्रि अ (सं संवर्णन>) व 'सँवारना' के कर्म, के रूप।

संवाद, सं पुं (सं) दे 'समाचार' (१)। २ वृत्त वृत्तांत, समाचार ३ कथा, प्रसंग ४ व्यवहार, अभियोग ५ देवमत्य, संमति (स्त्री) ६ संदेश, दे ७ स्वीकृति, अनुमति (स्त्री)।

—दाता, सं पु (सं तृ) वृत्तप्रेषक वृत्तांत लेखक।

संवादी, वि (सं दिन्) संलापिन्, संभाषिन् २ सदृश, समान, तुल्य। ■ पु (सं) संगीते स्वरभेद।

सँवारना, क्रि स (सं संवर्णन>) अलंकृ, परिष्कृ, भूष् मण्ड् (चु), प्रसाध् (प्रे)। २ संस्कृ सं-, शुध् (प्रे) ३ व्यवस्था (प्रे), विन्यस (दि प से), रच (चु) ४ कार्य संस्कर् संपद् निष्पद् (प्रे)। सं पुं, अल परिष्,करणं, मंडनं प्रसाधन २ संस्कार, शोधनं ३ व्यवस्थापनं ४ संस्कर् संपादनं।

सँवारने योग्य, वि, अलंकार्य, परिष्करणीय, भूषयितव्य, संस्कार्य, व्यवस्थाप्य।

सँवारनेवाला, सं पुं, अलं परिष्,कर्तृ-कारक, प्रसाधक, मंडयितृ २ संशोधक, संस्कर्तृ ३ व्यवस्थापक, सुसंपादक।

सँवारा हुआ, वि, अलं-परिष्,कृत, मंडित,

प्रसाधित २ सस्कृत, स,शोधित ३ व्यवस्थापित ४ सुसपादित।

सवाहक, सं पु (स) अगशरीर,मर्दक सवाहक। वि (स) चालक, चालयितृ।

संवेदना, सं स्त्री (स) सवेदन, अनुभव, सुखदु खादि प्रतीति (स्त्री)।

सशय, स पु (स) सदेह, दे ।

सशयात्मा, स पु (स-त्मन्) विश्वासहीन, सदेहशील, श्रद्धाशून्य, सशयालु।

सशयापन्न, वि (स) सदिग्ध, अनिश्चित।

संशयालु, वि (स) दे 'सशयात्मा'।

सशोधक, स पु (स) सशोधयितृ, प्रति-समाधातृ २ सस्कर्तृ, सस्कारक, ३ निस्तारक (ऋणादि)।

सशोधन, स पु (सं न) पावन, निर्मलीकरण २ दोषनिवारण, त्रुटिनिष्कासनं, सस्कार, प्रति,समाधान ३ निस्तारण (ऋणादि)।

—करना, क्रि स, स-परि शुध् (प्रे), पू (क्र उ से) २ दोषान् निवृ (प्रे), सस्कृ ३ निस्तृ (प्रे)।

सशोधित, वि (स) सुपूत, सम्यक् निर्मलीकृत २ सस्कृत, परिशोधित ३ निस्तारित।

संसर्ग, स पु (स) सपर्क, सबध २ साहचर्य, सगति (स्त्री) ३ सयोग समिलन ४ सुपरिचय, अभ्यन्तरत्वम्।

ससार, स पु (स) सृष्टि (स्त्री), भुवन, विश्व, जगत् (न)-ती, चराचर, ससृति (स्त्री) २ पुनर्गमन (न), प्रेत्यभाव, ३ भू,मर्त्य इह-लोक ४ प्रपच, जगज्जाल ५ सततपरिवर्तन ६ गार्हस्थ्यम्।

—चक्र, स पु (स न) १२, दे 'ससार' (२, ४) ३ दशापरिवर्तनम्।

ससारी, वि (स रिन्) लौकिक, सासारिक २ ऐहिक, प्रापचिक ३ व्यवहारकुशल ४ असुक्तात्मन्। स पु (स) प्राणिन् २ जीवात्मन।

ससृति, स स्त्री (सं) दे 'ससार' (१२)।

ससृष्ट, वि (सं) मिश्रित, सश्लिष्ट २ संबद्ध, सलग्न।

ससृष्टि, स स्त्री (स) समिश्रण, सश्लेष २ सबध, सपर्क, ३ सुपरिचय, सौहार्द ४ सग्रहण, सचयन ५ अलकारमिश्रणभेद (सा)।

सस्करण, स पु (स न) ग्रथमुद्रणवार, आवृत्ति (स्त्री) २ सशोधन ३ परिष्करणम्।

सस्कार स पु (स) परि-स, शोधन, सस्करण २ परिष्,-कार-करण, परिमार्जन ३ शौच, शरीरशुद्धि (स्त्री) ४ मानसी शिक्षा ५ शिक्षासगत्यादीना प्रभाव ६ पूर्वजन्मवासना ७ पावन, शुद्धि (स्त्री) ८ धार्मिककृत्यभेद (दे 'षोडशसस्कार') २ अत्येष्टिक्रिया, दाहकर्मन् (न)।

सस्कृत, वि (स) स परि, शोधित, निर्मलीकृत २ परिष्कृत, परिमार्जित, परिमृष्ट ३ पाचित, सिद्ध, पक्व ४ कृतसस्कार, सस्कारपूत। स स्त्री (स न), देववाणी, सुरगर् (स्त्री), आर्याणा भाषाविशेष।

सस्कृति, स स्त्री (स) सभ्यता, आचारविचारा (बहु) २ सत्क्रिया, सस्कार, शुद्धि (स्त्री) ३ परिष्कार।

सस्था, स स्त्री (स) मडल, दल, गण २ सभा, समाज, परिषद् (स्त्री)।

सस्थागार, स पु (स पु न) सभाभवनम् २ ससद्भवनम्।

सस्थान, स पु (स न) चतुष्पथ, चतुष्क २ आकृति (स्त्री), आकार ३ रचना ४ सन्निवेश ५ स्थिति (स्त्री), दशा ६ नाश ७ मृत्यु ८ आयोजन, व्यवस्था (९१०), दे 'ढाँचा' तथा 'सारा'।

सस्थापक, सं पु (सं) प्रवर्तक, प्रवर्तयितृ, आरभक, प्रतिष्ठापक।

सस्थापन, स पु (स) प्रवर्तन, प्रारभण, प्रतिष्ठापन, प्रारभ २ निर्माण ३ दृढीकरणम्।

सस्थापित, वि (स) प्रवर्तित, प्रतिष्ठापित, प्रारब्ध २ निर्मित ३ दृढीकृत।

सस्पृष्ट, वि (स) स्पृष्ट, छुप्त, परामृष्ट २ सपृक्त, जातसपर्क ३ सयुक्त, सबद्ध।

सस्फुट, वि (स) अपावृत, व्यावृत, उद्घटित २ विकसित, उन्निद्र, स्फुटित,उन्मीलित।

सस्मरण, स पु (स न) सस्मृति (स्त्री), सम्यक्,स्मरण अनुचिंतन अनुबोधन २ स्मारक, स्मारकघटना ३ सस्कारजं ज्ञानम्।

संहत, वि (स) घन, दृढ, निबिड, अनंतर २ संयुक्त, संबद्ध ३ संमिलित, संमिश्रित ४ आहत ५ संगृहीत।

संहति, सं स्त्री (स) संगति (स्त्री), संमिलन २ राशि, चय ३ गण, समूह ४ घनत्व, निबिडता ५ संधि, संयोग ।

संहार, स पु (स) हिंसा-करण हनन, हत्या, वध, घात २ वि,नाश ध्वंस ३ (मुक्ता रूप्य) संहरण-संकोचन,संहृति (स्त्री), ४ संग्रह, संकोच ५ संक्षेप, सार ६ समाप्ति (स्त्री) अंत ७ प्रलय, कल्पान्त ।

—करना, क्रि स, मृ-ग-पद-निषूद् (प्रे) २ वि,नश ध्वंस (प्रे)।

संहारक, स पु (स) संहर्तृ, नाशक २ संग्र हीतृ, संचेतृ ।

संहिता स स्त्री (स) संधि, वर्णसंनिकर्ष (व्या) २ संयोग, मिलन ३ धर्मसंहिता, स्मृति (स्त्री), धर्मशास्त्रविका ४ वेदाना मंत्रभाग ।

सईंयाँ, स पु (स स्वामिन्) पति २ कांत ३ ईश्वर ।

सइयाँ, सं स्त्री (हिं सखिया) दे 'सखी'।

सकता, स पु (अ-अ) संन्यास, मूर्छा (रोगभेद) २ यति (स्त्री), विराम (छन्द)।

सकना, क्रि अ (स शकन) शक् (स्वा प अ), प्रभू (भ्वा प से), क्षम-समर्थ (वि) भू। (यह क्रिया सदा दूसरी क्रियाओं के साथ ही प्रयुक्त होती है)।

सकपकाना, क्रि अ (अनु सकपक) विस्मि (भ्वा आ अ), विस्मयाकुलीभू। २ अभिशङ्क् (भ्वा आ से) दोलायते (ना धा) ३ लज्ज् (तु आ से), त्रप् (भ्वा आ से)।

सकर्मक, वि (स) कर्मविशिष्ट (व्या)।

सकल, वि (स) दे 'सब ।

सकाम, वि (स) कामाभिलाषिन, कामना विशिष्ट २ लब्धकाम, पूर्णमनोरथ ३ कामुक, कामिन ।

सकारण, वि (सं) सहेतुक, कारणविशिष्ट।

सकुचना, क्रि, अ (स संकोचन) व्रीड (दि प से), ह्री (जु प अ), लज्ज (तु आ से) २ संकुच्-सह (वस), मुद्रित-संकु चित (वि) भू।

सकुचाना, क्रि अ (स संकोचन) दे 'सकु चना'। क्रि स, व 'सकुचना' के प्रे रूप।

सकुचीला, वि (स संकोच >) संकोचशील दे 'लज्जाशील'।

सकूनत, स स्त्री (अ) नि,वास , निकेतनं, नि,वासस्थानम्।

सकृत् , अव्य (स) एकवार २ सदा ३ सह।

सकोड़ना, क्रि स, दे 'सिकोड़ना'।

सकोरा, स पु (हिं कसोरा, दे)।

सखरा, स पु } दे 'रसोई कच्ची'।
सखरी, स स्त्री }

सखा, स पु (स सखि) मित्र, सुहृद, २ सह, चारिन चर, संगिन् ३ नायकसहचर (सा)।

सखावत, स स्त्री (अ) वदान्यता २ औ दार्य्यं।

सख्यि, स पु (स न) सख्यं, मैत्री।

सखी, स स्त्री (स) सहचरी, आली लि, (स्त्री), वयस्या, आलीची संगिनी २ नायिकाया सहचरी (सा)।

सखी, वि (अ) दानशील, वदान्य।

सखुन, स पु (फा) वार्तालाप , संवाद २ काव्य, कविता ३ वचनम्।

—तकिया, स ५ (फा) दे 'तकिया कलाम'

—दाँ, सं पु (फा) काव्यमर्मज्ञ, रसिक २ वाक्पटु ३ कवि ।

—दानी, स स्त्री (फा) काव्यमर्मज्ञता, रसि कता २ वाक्चातुर्य ३ काव्यकला।

—शनास, स पु (फा) दे 'सखुनदाँ'।

—साज़, सं पु (फा) कवि २ दे 'गप्पी'।

सख्त, वि (फा) कठिन,कर्कश,कठोर, घन, दृढसंधि, संहत २ दुष्कर, कठिन, दुस्साध्य, निर्दय, निष्करुण ४ चंड, परुष, कठोर, दुस्सह ५ कुशील, दुष्प्रकृति ६ कृपण ७ अतिशय, अत्यधिक। क्रि वि, परुष, निर्दय, तीव्रम्।

—सुस्त कहना, (मु) भर्त्स् (चु आ से), आक्रुश् (भ्वा प अ)।

सख्ती, सं स्त्री (फा) कठोरता, कठिनता, घनता २ दुष्करता ३ निर्दयता ४ उग्रता ५ कुशीलता ६ आधिक्यं ६ ।

—से, क्रि वि, चड, घोर २ निर्दयम्।
—करना, मु, बल प्रयुन् (र आ अ) निदय व्यवहृ (भ्वा प अ)।
सरूय, स पु (स न) सौहार्द, साप्तपदीन, मित्रता, दे।
सगध, वि (स) गध-वास,-वत-युक्त, सुवास, गधित, वासित २ सुगधि, सुवासित, सुगन्ध वत्, सुवासित ३ समान-तुल्य,-गध ४ गर्वित।
सग, स पु (फा) श्वान, कुक्कुर।
सगण, वि (स) सदल, ससैन्य। स पु (स) शिव २ छद शास्त्रीयगणभेद अन्त्यगुरुगण।
सगबग, वि (अनु) अति क्लिन्न आर्द्र दे 'लथपथ' २ आर्द्री-द्रवी,-भूत ३ परिपूर्ण।
सगर्व, वि (स) गर्वित, दृप्त। क्रि वि, सगर्व, साभिमानम्।
सगा, वि (स स्वक>) सोदर, सहोदर सोदर्य, सयोनि, सगर्भ २ स्वकुलज। स पु, सकुल्य, सगोत्र, बधु।
—भाई, स पु, सोदर, सहोदर, सगर्भ्य।
सगापन, स पु (हिं सगा) सोदरता, सग र्भता २ सबधनैकट्यम्।
सगाई, स स्त्री (हिं सगा) > 'सगनी'।
सगुण, वि (स) गुणिन्, गुणान्वित। स पु (स) साकारेश्वर २ अवतारपूजक भक्त सप्रदाय।
सगुन, स पु, दे 'शकुन'।
सगोती, स पु (स सगोत्र) एक वश, गोत्र २ बधु, ज्ञाति (स्त्री)।
सगोत्र, वि (स) सबधिन, सनाभि, सजातीय, एकवश,-गोत्र। (स न) कुलम्।
सघन, वि (स) निबिड, सांद्र, घन, अनन्तर, गाढ २ स्थूल, सहत।
सच, वि (स सत्य) यथार्थ, अवितथ, > 'सत्य'। स पु, सत्य, तथ्य, अवितथम्। क्रि वि, वस्तुत यथार्थेन (दोनों अव्य)।
—बोलना, क्रि स, सत्य वद् (भ्वा प से) ब्रू (अ उ)।
—मुच, क्रि वि (हिं अनु) तत्त्वत, वस्तुत, सत्य, सत्यत २ अवश्य, नि सदिग्धम्।
सचराचर, स पु (स) चराचर-स्थावर जगम-जड्चेतन सजीवनिर्जीव पदार्था (पु बहु०)।
सचल, वि (स) चल, चर, जगम, गति शील २ चेतन, प्राणिन्।
सचाई, स स्त्री (हिं सच) सत्यता, अवित थता २ याथार्थ्य, वास्तविकता।
सचान, स पुं (स सचान अथवा स मान > ?) श्येन, पत्रिन् शशादन, दे बाज'।
सचित, वि (स) चिता परमग्न, उद्विग्न, व्याकुल।
सचिव, स पु (स) मित्र, सखि (पु) २ मत्रिन्, अमात्य ३ सहाय-क।
सचेत, वि, दे 'सचेतन'।
सचेतन, वि (स) चेतनावत्, ससज्ञ, चेतनो पपन्न २ सावधान ३ चतुर।
सचेष्ट, वि (स) उद्योगिन, वत्साहिन, सोत्साह,सोद्योग, उत्साह-उद्योग, शील २ चेष्ट मान, कर्मोद्युक्त।
सच्चा, वि (स सत्य) सत्य-यथार्थ, भाषिन् वादिन् २ सत्य, यथार्थ, वास्तविक ३ वि, शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ, निश्छल-न्य ४ यथा योग्य, यथोचित।
सच्चाई, स स्त्री, दे 'सचाई'।
सच्चिदानद, स पु (स) नित्यज्ञानानन्दस्व रूप ब्रह्मन् (न) परमेश्वर।
सज, स स्त्री (स सज्जा) अलक्रिया, परिष्क्रिया प्रसाधन, मण्डन २ रूप, आकृति (स्त्री) ३ शोभा, छवि (स्त्री)।
—धज, बज, स स्त्री (हिं अनु) दे 'सज' (१३)। ४ परिकल्पना, सज्जा, सन्नद्धता।
सजग, वि (स स+हिं जागना) जागरूक, अवहित, सावधान।
सजन, स [illegible] (स सज्जन) आर्य, भद्र, सत्पुरुष २ पति, भर्तृ ३ उपपति, जार ४ दयित, कांत।
सजनपद, वि (स) एक-समान,-देशज दशीय-देशवासिन्।
सजना, क्रि अ (स सज्जन) मण्ड (भ्वा उ स) सज्ज परिष्कृत सिद्ध (वि) भू २ आत्मानं मंड-भूष् (चु) अलंकृ ३ राज् द्युत् (भ्वा आ से)।

सजनी, स स्त्री (हिं सजन) सखी, सहचरी २ उपपत्नी, जारिणी, मुनिष्या ३ कान्ता, प्रिया, दयिता ।

सजल, वि (स) उक्त, सन्न, निमिन, आर्द्र, क्लिन्न, जलयुत सनीर २ सबाष्प, सास्र, अश्रुपूर्ण (नेत्र) ।

सज़ा, स स्त्री (फा) दे 'दण्ड' ।

—याफ्ता, वि (स) दण्डित, मुक्तदण्ड २ अपराधशील पुरागपराधिन् ।

—वार, वि (फा) दण्डनीय, दण्ड्य ।

सजाति } वि (स) सगोत्र, गोत्रज, सवंश्य २ तुल्य, सदृश ।
सजातीय }

सजाना, क्रि स (हिं सजना) सज्जीकृ, सज्ज्-परिकल्प, (प्रे) २ व्यवस्था (प्रे), क्रमशः निविश् (प्रे) ३ भूष्-भूष् (चु), अलङ्कृ । दे 'सवारना' ।

सजावट, स स्त्री (हिं सजाना) दे 'सज' (१) २ शोभा, श्री (स्त्री) ३ दे 'सजधज' (४) ।

सजावल, स पु (तु सजाउल) शुल्कग्राहक, करसग्राहक २ राजकर्मचारिन् ३ दे 'सिपाही' ।

सजा हुआ, वि , सज्ज, सिद्ध, सन्नद्ध २ भूषित ३ शोभमान ।

सजीला, वि (हिं सजना) सुवेशमानिन्, वेशाभिमानिन्, अलङ्कृत २ दर्शित, मनोहर ।

सजीव, वि (स) प्राणित, प्राणधारिन्, चेतन, सत्त्ववत् २ क्षिप्र, लघु ३ आजस्विन् ।

सजीवता, स स्त्री (स) प्राणवत्ता, चैतन्य २ लाघव, क्षिप्रता ३ ओजस्विता ।

सजीवन, स पु, दे 'सजीवनी', स स्त्री १ १,२ ।

—बूटी, स स्त्री रुदन्ती (?) ।

—मूर,-मूल, स पु 'सजीवनी बूटी' ।

सज्जन, स पु (स) आर्य , भद्र , सत्पुरुष , सुसाधु -जन , महानुभाव , महाशय २ कुलीन , अभिजात । वि , भद्र,-सद्वृत्त २ सद्वंश्य, कुलीन ।

सज्जनता, स स्त्री (स) भद्रतात्वं, आयता स्व, सुशीलता, सौजन्य, सुजनतात्व २ कुलीनता, आभिजात्यम् ।

सज्जित, वि (स) अलङ्कृत, भूषित, मण्डित, परिष्कृत २ सन्नद्ध, सिद्ध, सज्ज, उद्यत ।

सज्जी, स स्त्री (स सर्जी) सर्जि (स्त्री), सर्जिका, स्वर्जिक , स्वर्जिन् ।

सटक, स स्त्री (अनु सट) मृदुयष्टि (स्त्री) २ धूमपानयन्त्रस्य नम्यनाली ३ निभृता पमार ।

सटकना, क्रि अ , निभृत अपया (अनु सट) (अ प अ), शनैः अपसृ (भ्वा प अ) ।

सटना, क्रि अ (स सं+स्था>) लग् (भ्वा प से), सम्पृच् (रु प अ), लग्न-सम्पृक्त-सन्निहित (वि) भू २ श्लिष् (दि प अ) सञ्ज (भ्वा प अ) ।

सटपटाना, क्रि अ (अनु) सटपटायते (ना धा), सटपटध्वनि जन् (दि आ से) २ अज्ञात पर्याकुल चञ्चल (वि) भू दे 'व्याकुल होना' ।

सटपटाया हुआ, वि , संक्षुब्ध, संमूढ, अशान्त, व्याकुल, सम्भ्रान्त, अस्वस्थ ।

सटरपटर, वि (अनु) क्षुद्र, तुच्छ, साधारण । स स्त्री , व्यर्थकार्य २ दुष्करकृत्यम् ।

सटाना, क्रि स , व 'सटना' के प्रे रूप ।

सटा हुआ, (वि), लग्न, सम्पृक्त, सन्निहित, २ सक्त, श्लिष्ट ।

सटीक, वि (स) सभाष्य, व्याख्यान्वित ।

सट्टा, स पु (स साथ>) समयलग्न, दे 'इकरारनामा' २ सदिग्धपण्यव्यवहार , सत्त्रा ।

सट्टा-बट्टा, स पु (हिं सटना+अनु) उपाय ,कूट -२,-कूट,-युक्ति -उपाय २ संगम , मेल ।

सठियाना, क्रि अ (हिं साठ) षष्टिवर्ष (वि) भू २ ज्या (क्र प अ), जॄ (दि क्र प से) ३ वार्धक्येन बुद्धि क्षि (कर्म) नश् (दि प से) ।

सठियाया हुआ, वि , षष्टिवर्ष २ जरठ, स्थविर ३ जरया मदमति-नष्टबुद्धि ।

सड़क, स स्त्री (अ शरक) अध्वन्, पथिन्, राजवीथी,-पथ , मार्गः, दे ।

सड़न, स स्त्री (हिं सड़ना) गलन, विदग्धी, विगलनम्, क्षरणम् ।

सड़ना, क्रि अ (स शरण>) विशॄ (कर्म), जॄ (दि प से), विगल (भ्वा प से) २ पूय (भ्वा आ से), पूतीभू ३ फेनयते (ना धा), उत्सिच् (कर्म), अत क्षुभ (दि प से) (=खमीर आना) ४ दुर्गत (वि) स्था (भ्वा प अ), अवरुद् (भ्वा प अ)। ■ पु, जीर्णि (स्त्री), विगलन, पूयन पूति (स्त्री), अवमार, दुर्गति (स्त्री), अभिनव अन्तःक्षोभ।

सड़सठ, स पु तथा वि, दे 'सतसठ'।

सड़ाक, स स्त्री (अनु सड़) त्वरा २ कशा शब्द।

सड़ायँध, स स्त्री (हिं सड़ना+गंध>) दुर्गंध, पूति (स्त्री), पूतिगंध।

सड़ा हुआ, वि, जीर्ण, विशीर्ण, दूषित, विगलित, पूति, पूतिगंध, पूतिक, उत्सिक्त, सफेन, दुर्गत, अवसन्न।

सड़ियल, वि (हिं सड़ना) पूति, पूतिगंध, कलुष २ जीर्ण, शीर्ण ३ क्षुद्र, तुच्छ ४ निरर्थक, व्यर्थ।

सत्, सं पु (स) ऋषि २ सज्जन। (सन) ब्रह्मन् (न) २ भद्रभू। वि (सं) सत्य, यथार्थ २ साधु, श्रेष्ठ ३ धीर ४ शाश्वत, नित्य ५ प्राज्ञ, पंडित, ६ पूज्य ७ पवित्र ४ उत्तम, उत्कृष्ट। सत्कर्म आदि, दे आगे।

सत[1], स पु (स सत्त्व) तत्त्वं, सार २ निष्कर्ष, भाव ३ कर्मन (न), सामर्थ्यम्।

सत[2], वि (सं सप्तन्) दे 'सात'।

—**मंजिला**, वि (हिं+अ) सप्त, भूमिक भौम (महल आदि)।

—**मासा**, स पु., सप्तमास्य (शिशु) २ रीति विशेष, *सप्तमासिकम्।

—**रंगा**, वि., सप्त-वर्ण-रंग।

सतगुरु, स पु (स सत्+गुरु) सद्गुरु, सच्छिक्षक २ परमेश्वर।

सतजुग, स पु, दे 'सत्ययुग'।

सतत, अव्य (स सतत) निरन्तर, सदा, सर्वदा, नित्यम्।

—**गति**, सं पु (स) पवन वायु।

—**ज्वर**, सं पु (स) स्थायि-स्थास्नु-नित्य जीर्ण,-ज्वर-ताप।

सतर, सं स्त्री (अ) रेखा २ पंक्ति (स्त्री)।

सतरह, वि (सं सप्तदशन्) स पु, उक्ता संख्या तद्बोधकौ अङ्कौ (१७) च।

सतरहवाँ, वि (हिं सतरह) सप्तदश शो शी (पुं स्त्री न)।

सतर्क, वि (स) सहेतुक, सयुक्तिक, उपपत्तिमत् २ प्रमादरहित, जागरूक, सावधान।

सतर्कता, स स्त्री (स) जागरूकता, सावधानता।

सतलज, स स्त्री, दे 'शतद्रु'।

सतलड़ा, स पु (हिं सात+लड़) सप्तसूत्रो हार २ सप्तगुणा माला। वि, सप्त-सूत्र गुण युक्त।

सतवंती, वि स्त्री (स सत्यवती>) सुचरित्रा, पतिव्रता, पतिपरायणा, सती, साध्वी।

सतसई, } स स्त्री (स सप्तशतिका)
सतसैया, } शतसप्तकपद्यात्मक समूह २ श्री बिहारीलालरचितो हिंदीभाषाया काव्य विशेष।

सतसठ, वि [स सप्तषष्टि (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (६७) च।

सतह, स स्त्री (अ) तल, पृष्ठ, उपरि-पृष्ठ, भाग।

सतहत्तर, वि [स सप्तसप्तति (नित्य स्त्री)] सं पु, उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (७७) च।

सताना, क्रि स (स संतापन) सं परि-तप् (प्रे), पीड़ (चु), दुःखयति (ना धा.), क्लिश (क्र प से) २ खिद् आयस्-उद्विज् (प्रे)। स पु, संतर्द,-तापन, पीड़न, क्लेशन अर्दन,आयासन, उद्वेजन, बाधनम्।

सताने योग्य, वि, संताप्य, पीड़नीय, उद्वेजनीय।

सताने वाला, स पु., संतर्द,-तापक पीड़क, क्लेश-दुःख,-कर आवह, आयासक, खेदकर।

सताया हुआ, वि, पीड़ित, संतापित, आयासित उद्वेजित, बाधित, इ।

सतालू, स पु, दे 'शफ़तालू'।

सतावर, स स्त्री (स शतावरी) शतमूली, नारायणी, वरी, बहुसुता।

सतासी, वि [स सप्ताशीति (नित्य स्त्री)] सं पु, उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (८७) च।

सती, वि स्त्री (सं) दे 'सतवंती'। स स्त्री (सं) पतिव्रता नारी २ मृतभर्त्रा सह दग्धा नारी, सह,-गामिनी-मृता ३ दक्षकन्या।

—चौरा, स पु (स + हिं) *सतीवेदिका।

—पुत्र, स पु (स) पतिव्रता-साध्वी, पुत्र तनय ।

—धर्म, स पु (स न), पातिव्रत-त्यम्, सतीत्वम् ।

—धर्मा, स स्त्री (स) पतिव्रता नारी।

—होना, मु , मृतभर्त्रा सार्द्धं दह (कर्म)- भस्मीभू ।

सतीत्व, स पु (सं न) पातिव्रत्य, साध्वीत्व।

—बिगाड़ना या नष्ट करना, मु , सतीत्व नश् (प्रे), बलात्कारेण गम् (भ्वा आ अ)-अभिगम् (भ्वा प अ), पातिव्रत्य दुष् (प्रे)।

—हरण, स पु (स न) बलात्कार , हठ सभोग , बलान्मैथुनम् ।

सतीर्थ, स पु (स) सतीर्थ्य , एकगुरु ।

सतून, स पु (फा) स्थूणा, स्तंभ ।

सतोगुण, स पु , दे 'सत्त्वगुण'।

सतोगुणी, वि (हिं सतोगुण) दे 'सत्त्वगुणी'।

सत्कर्म, स पु (स सत् (न) शुभ-सु पुण्य, कार्य कृत्य-कृति (स्त्री)-क्रिया-कर्मन्, पुण्यम् ।

सत्कार, स पु (स) आदर , सम्मान , पूजा २ आतिथ्य, अतिथिसेवा ।

सत्कार्य, स पु (स न) दे 'सत्कर्म'। वि, पूज्य, मान्य, आदरणीय ।

सत्कृत, वि (स) आदृत, सम्मानित, पूजित।

सत्त, स पु दे 'सत'।

—सत्तम, वि (स)-उत्तम, श्रेष्ठ।

सत्तर, वि [स सप्तति (नित्य स्त्री)] उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्को (७०) च।

सत्तरवाँ, वि (हिं सत्तर) सप्ततितम -तमी -तम (पु स्त्री न)।

सत्तरह, वि , तथा स पु दे 'सतरह'।

सत्ता[1], स स्त्री (सं) सत्त्व, अस्तित्व, भाव , विद्यमानता २ शक्ति (स्त्री), सामर्थ्य ३ प्रभुत्व, अधिकार ।

—धारी, स पु (स -रिन्>) अधिकारिन्, आधिकारिक ।

सत्ता[2], (स सप्तन्>) सप्तचिह्नाङ्कित क्रीडापत्र, *सप्तक ।

सत्ताईस, वि [सं सप्तविंशति (नित्य स्त्री)] स पुं , उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्को (२७) च।

सत्ताईसवाँ, वि (हिं सत्ताइस) सप्तविंशतितम -तमी-तम, सप्तविंश शी श (पु स्त्री न)।

सत्तानवे, वि [स सप्तनवति (नित्य स्त्री)] स पु , उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्को(९७)च।

सत्तावन, वि [स सप्तपञ्चाशत् (नित्य स्त्री)] स पु , उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्को (५७) च।

सत्तासी, वि [सं सप्ताशीति (नित्य स्त्री)] स पु , उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्को (८७) च।

सत्तू, स पु [स सक्तु (केवल पु बहु में सत्तव)] सक्तुक , शक्तु (पु न), भृष्टयव चूर्णम् ।

सत्त्व, स पु (स न) प्रकृतेर्गुणविशेष २ सत्ता, अस्तित्व, भाव ३ सार , तत्त्व, मूलद्रव्य ४ विशेषता, अन्तःप्रकृति (स्त्री) ५ चित्त प्रवृत्ति (स्त्री) ६ चेतना चैतन्य ७ प्राण ८ आत्मन् ९ प्राणिन् १० गर्भ ११ प्रेत, भूत १२ शक्ति (स्त्री), वीर्यम् ।

—गुण, स पु (स) सत्कर्मसु प्रवर्तको गुण , विवेकशील-प्रकृति (स्त्री)।

—गुणी, वि (स) सात्त्विक, उत्तमप्रकृति, विवेकशील ।

सत्पथ, स पु (सं) सु-सन्मार्ग २ सद्, वृत्त-आचार ३ सु,-सम्प्रदाय सिद्धान्त ।

सत्पात्र, स पु (स न) सुपात्र, दानार्हो जन २ आर्य, सज्जन ३ सु वर वोढृ ।

सत्पुरुष, स पुं (स) आर्य , सद्वृत्तो मानव , सद्‌ ।

सत्य, स पु (स न) तथ्य, ऋत , तत्त्व, यथार्थ, अवितथ, भूत-परम-तत्त्व,-अर्थ २ शपथ ३ प्रतिज्ञा ४ कृतयुगम् । वि , तथ्य, अवितथ, वास्तविक, यथार्थ, ऋतु २ अकृत्रिम, अकृतक ।

—काम, वि (सं) सत्य,-प्रिय अभिलाषिन्।

—नारायण, सं पु (सं) देवताविशेष (= सत्यपीर हिं)।

—प्रतिज्ञ, वि (स) सत्य, व्रत-सगर सन्ध अविसन्ध ।

—युग, सं पु (सं न) चतुर्युगेषु प्रथमयुगं, कृतयुगं (= १७२८००० वर्ष)।

—युगी, वि (स सत्ययुग>) सत्ययुगसम्बन्धिन् २ अति,पुराण प्राचीन ३ धर्मात्मन्, सद् वृत्त, सरल ।

—लोक, स पुं (स) सप्तलोकांतर्गत उच्चतमो लोक, ब्रह्मलोक ।

—वचन, स पु (सं न) सत्य-यथार्थ-कथन भाषणं २ प्रतिज्ञा ।

—वादी, वि (स दिन्) तथ्य सत्य, भाषिन्, यथार्थवक्तृ २ दे 'सत्यप्रतिज्ञ' ।

—व्रत, सं पु (सं न) सत्यभाषणप्रतिज्ञा । वि, सत्य-वादिन् प्रतिज्ञ सध ।

—सकल्प, वि (सं) दृढसंकल्प ।

—सध, वि (स) दे 'सत्यप्रतिज्ञ' । स पु (सं) श्रीराम २ भरत ३ जनमेजय ।

सत्यत, अव्य (स) वस्तुत, सत्यम् ।

सत्यता, स स्त्री (स) वास्तविकता, याथार्थ्यं २ नित्यत्वम् ।

सत्यभामा, स स्त्री (स) सत्राजित्पुत्री, श्रीकृष्णपत्नीविशेष ।

सत्यवती, वि स्त्री (स) सत्य,भाषिणी-वादिनी २ धार्मिकी । सं स्त्री (सं) व्यास जननी, योजनगन्धा,-मत्स्य,-गन्धा गध, काली ।

—सुत, स पु (स) व्यास, द्वैपायन ।

सत्यवान्, वि (स-वत्) दे 'सत्यवादी' (१२)।

स पु, सावित्रीपति, नृपविशेष ।

सत्या, स स्त्री (सं) सत्यता, दे । २ सीता ३ द्रौपदी ४ दे 'सत्यवती' स स्त्री ५ दुर्गा ।

सत्याकृति, स स्त्री (स) सत्यापन, सत्यं कार, अग्राय, दे 'पेशगी' ।

सत्याग्रह, स पु (सं) नि शस्त्र-अहिंसात्मक, विरोध प्रतिकार २ तथ्यनिर्बंध ।

—आदोलन, स पु (स न) निःशस्त्र विरोधादोलनम् ।

सत्याग्रही, स पु (सं दिन्) अहिंसात्मक विरोधिन् २ तथ्याभिनिवेशिन् ।

सत्यानास, सं पु (स सत्यानाश >) वि, ध्वंस -नाश, सर्वनाश ।

—करना, क्रि स, वि,नश्, ध्वस् (प्रे), समूल उच्छिद् (रु प अ) ।

सत्यानासी, वि (हिं सत्यानास) सर्व वि, नाशक ध्वसक २ मद हत, भाग्य ।

सत्यानृत, सं पु (स न) वाणिज्य २ सत्या सत्यमिश्रणम् ।

सत्र, सं पु (सं न) यज्ञ, भाग, मख २ सोमयागभेद ३ भवन, सद्मन् (न), ४ धन ५ दे 'सदावत' ।

सत्रह, वि तथा स पु, दे 'सतरह' ।

सत्वर, अव्य (सं-र) शीघ्र, दे ।

सत्संग, स पुं (स) आर्य-सत्,-संगति (स्त्री)-समागम -संसर्ग -सवास -साहचर्यम् ।

सत्संगी, वि (स गिन्) सज्जनसहचर (-री स्त्री) २ धार्मिक (-की स्त्री) ।

सथिया, स पुं (स स्वस्तिक) मांगलिक चिह्नविशेष २ दे 'जर्राह' ।

सदका, सं पुं (अ-स्द्) दान, बलि, उपहार, दे 'निछावर' ।

सदन, स पु (स न) भवन, गृह, दे 'घर' २ जलम् ।

सदमा, स पु (अ सद्मह्) आघात, प्रहार २ दु ख, शोक ३ अत्याहित, विपद् (स्त्री) ४ महा,-क्षति हानि (दोनों स्त्री) ।

—पहुँचना, क्रि अ, आहन् (कर्म), शोकेन विपदा वा ग्रस (कर्म) ।

सदय, वि (स) दयान्वित, दयालु, दे ।

सदर, वि (अ) प्रधान,-मुख्य, विशिष्ट । सं पु, केंद्रस्थल २ राजधानी ३ सैन्यनिवेश, दे 'छावनी' ४ सभा,-पति अध्यक्ष ।

—नशीन, स पु (अ + फा) दे 'सदर'(४) ।

—बाजार, स पु (अ + फा) प्रधानापण २ सैन्यापण ।

—बोर्ड, स पु (अ + अं) *राजस्वपरिषद् ।

—मुकाम, स पु (अ) मुख्यकार्यालय ।

सदरी, सं स्त्री (अ) दे 'वास्कट' ।

सदस्य, स पु (स) दे 'सभासद्' ।

सदा, अव्य (स) नित्यं, सर्वदा, अनिशं, सतत, सर्वकाल २ निरन्तर, अनवच्छिन्न, अविरतम् ।

—गति, स पु (स) वायु ।

—बहार, वि (सं + फा) *सदावसत, नित्य हरित शश्वत्पत्र ।

—वर्त, स पु (स व्रत>) नैत्यिकभोजन, दान वितरणं-उत्सर्ग, *सदान्न २ नैत्यिकदानम् ।

—सुखी, वि (स खिन्) सर्वदानद ।

—सुहागिन, वि स्त्री (स+हिं) नित्य सौभाग्यवती, अमरपतिका २ वेश्या ।

सदाचार, स पु (स) सच्चर्या, सदाचरणं, सच्चारित्र्यं, सद्वृत्त त्ति (स्त्री), सच्चरित, सद्

व्यवहार २ शिष्टता, सौजन्य, सद्भता ३ रीति (स्त्री), प्रथा।
सदाचारी, स पु (स रिन्) सद्वृत्त, सुच रितमचरित्र २ धर्मात्मन्, पुण्यात्मन् [सदाचारिणी-सद्वृत्ता आदि (स्त्री)]।
सदानन्द, वि (स) आनन्दशील, नित्यानंद। स पु (स) परमेश्वर।
सदार, वि (स) सपत्नीक, जायान्वित।
सदारत, स स्त्री (अ) सभा, पतित्व अध्यक्षता।
सदाश्रित, वि (स) परावलम्बशील, पराव लम्बिन्।
सदी, स स्त्री (अ) शताब्दी, शती २ शतम्।
सदुपदेश, स पु (स) सच्छिक्षा २ सन्म न्त्रणा।
सदृश, वि (स) सरूप तुल्याकार २ सम, समान, तुल्य सदृक्ष ३ योग्य, उचित।
सदृशता, स स्त्री (स) समानता, तुल्यता।
सदेह, क्रि वि (स त) सशरीर, सकायम्।
सदैव, अव्य (स) सर्वदैव, नित्यमेव।
सदोष, वि (स) सापराध, अपराधिन, दोषिन् ब्रुटि-दोष-युक्त।
सद्गति, स स्त्री (स) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) २ सुदशा, सुगति (स्त्री) ३ सदाचार।
सद्गुण, स पु (स) सु गुण, सल्लक्षणम्।
सद्भाव, स पु (स) हित शुभ चिन्ता, हितैषणा चिन्ता २ साम्य ३ निष्कपटता, सर लता ऋजुता ४ सत्ता, अस्तित्वम्।
सधना, क्रि अ (हिं साधना) विनी (कर्म), वशीभू, दम् (दि प से) २ अभ्यस्त (वि) भू।
सधर्मिणी, स स्त्री (स) धर्मपत्नी २ तुल्य मतावलम्बिनी।
सधर्मी, वि (स मिन्) सधर्मन, सधर्म, समान धर्मानुयायिन् २ तुल्यगुण।
सधवा स स्त्री (स) सिंदूरतिलका, सभ र्तृका सनाथा, पतिवती, जीवत्पतिका, सौभा ग्यवती।
सधाना, क्रि स (हिं सधना) विनी (भ्वा प अ) दम् (प्रे) शिक्ष् (प्रे) वशी कृ। सं पु, विनयनं, दमन, वशी करणम्।
सधानेवाला, स पु, विनेतृ, दमयितृ।
सधा हुआ, वि, विनीत, दान्त, शिक्षित,वशग।
सन्, स पु (अ) दे 'संवत्' (१, ३)।
—ईसवी, सं पु, ख्रिस्त, शाक संवत्(अव्य)।
—हिजरी, स पु, यवन, शाक संवत्।
सन१, स पु (स शण) दीर्घ, शाख पत्रक, त्वकसार, वमन।
सन२, स स्त्री (अनु) मणिति, भणत्कार, शीघ्रनिर्गमनध्वनि। वि, स्तब्ध २ नि शब्द।
—से, क्रि वि, समणत्कारम्।
सनई, स स्त्री (हिं सन) क्षुद्रशण।
सनक, सं स्त्री (स शका>) दृढा ग्रह, उत्कटाभिनिवेश, चित्तलहरी, छन्द ३ उन्माद, चित्तभ्रम।
सनकना, क्रि अ (हिं सनक) उन्मद् (दि प से), व्यामुह् (दि प वे)।
सनकी, वि (हिं सनक) उत्कटाभिनिवेशिन्, दृढाग्रहिन्।
सनद्, स स्त्री (अ) प्रमाणपत्र २ प्रमाणम्।
—याफ्ता, वि (अ+फा) प्रमाणपत्रधारिन्।
सनना, क्रि अ (स सधान>) व 'सानना' के कर्म के रूप।
सनम, स पु (अ) प्रियतम, दयित, वल्लभ।
सनमान, स पु, दे 'सम्मान'।
सनसनाना, क्रि अ (अनु सनसन) सनसणायते (ना धा) २ सनसणशब्द वा (अ प अ)।
सनसनाहट, स स्त्री (हिं सनसनाना) पवनवहनध्वनि, वातागतिशब्द २ (धारा दोला) सणसणायित, सणसणत्कार ३ दे 'सनसनी'।
सनसनी, स स्त्री (अनु सनसन) सवेदन नाडीनां स्पन्दनभेद, सणसणत्कृति (स्त्री) २ स्तब्धता ३ संक्षोभ, उद्वेग ४ नीरवता।
—खेज़, वि (अनु+फा) संक्षोभजनक, उद्वेगकर।
सनस्ट्रोक, सं पु (अं) अंशुघात।
सनातन, वि (सं) अति, पुराण प्राचीन पुरातन २ क्रमागत, परंपरालब्ध ३ नित्य, शाश्वत [सनातनी (स्त्री)]। सं पु, प्राचीनकाल २ पुरातनी परंपरा ३ विष्णु ४ ब्रह्मन् ५ शिव।
—धर्म, सं पु (स) प्राचीन पुरातन धर्म

२ परंपरागतो धर्म ३ प्रतिमापूजनमृतक श्राद्धादिविश्वासी हिंदूधर्मशाखाविशेष, पौराणिकधर्म ।
—धर्मी, स पु (स मिन्) सनातनधर्मानुयायिन्, पुरातनतत्त्वविद् ।
—पुरुष, स पु (स) विष्णु ।
सनातनी, स पु (स सनातन) दे 'सनातनधर्मी' । वि, पुरातन परंपरालब्ध ।
सनाथ, वि (स) मातृपितृमत् २ सपतिक, सभर्तृक, स्वामियुक्त, सहायवत् [सनाथा (स्त्री) जीवद्भर्तृका]।
सनाभि, स पुं (स) सोदर, सहोदर २ सपिंड, सगोत्र, सनाभ्य ।
सनाय, स स्त्री (अ सनाऽ) स्वर्णपत्री-त्रिका रैवती, कल्याणी मल्हारिणी ।
सनाह, स पु (स सन्नाह) तनुत्राण, कवच च दे ।
सनिद्र, वि (स) निद्रित, निद्राण, शयित, सुप्त, शयान ।
सनीचर, स पु, दे 'शनैश्चर' ।
सनीड, वि (स) सकुल्य, समानकुल-नीडवासिन् २ संबन्धिन्, सम्बन्धक, संपर्किन् । स पुं, सामीप्य, नैकट्यम् २ प्रातिवेश्यम्, प्रतिवेश ।
सनोबर, स पु (अ) दे 'चीड' (वृक्ष)।
सन्न, वि (स शून्य) चकितचकित, अति विस्मित २ स्तब्ध, जडीभूत, व्यामोहित ३ नि मश, अचेतन ४ गतसाहस, भयाभिभूत ।
सन्नद्ध, वि (सं) बद्धकवच, धृतसन्नाह २ सायुध, सशस्त्र ३ सज्ज, सिद्ध, उद्यत, उपक्लृप्त ४ संबद्ध, संलग्न ।
सन्नाटा, स पु (हिं शून्य) नि शब्दता, नीरवता २ निर्जनता, विजनता, विविक्त ३ भय विस्मयादिजनिता नि स्तब्धता । वि, नीरव २ निर्जन ।
सन्मान, स पु, दे 'संमान' ।
सन्मुख, अव्य, दे 'संमुख' ।
सन्यास, स पु, दे 'संन्यास' ।
सपक्ष, स पु (स) स्वपक्ष, पाक्षिन्-अवलंबिन्, सहायक, मित्रम् ।
सपत्नी स स्त्री (स) समानपतिका, समान भर्तृका ।
सपत्नीक, वि (सं) सकलत्र, सपरिग्रह ।
सपना, स पु, दे 'स्वप्न' ।
—होना, मु दुर्दर्श-दुर्लभ (वि) भू ।
सपरदाई, स पु (स संप्रदायिन्>) दे 'साजिंदा' ।
सपर्या, स स्त्री (स) पूजा-अर्चनं, आराधनम् ।
सपाद, वि (स) सम, समरेख समस्थ, समतल ।
सपाटा, स पु (स सर्पण>) चलनधाव नोड्डयनादीनां) वेग, रय २ त्वरित गति (स्त्री) धावनम् ।
सैर— स पु, परिभ्रमण पर्यटनं, विहरणम् ।
सपिंड, स पु (स) सनाभि सप्तपुरुषान्तर्गतज्ञाति (पु), सगोत्र, समकुलीय, बंधु ।
सपूत स पु (स सुपुत्र) सत्पुत्र, सुतनय ।
सपेरा, स पु दे सँपेरा ।
सपरे(पे)रा, स पु 'सँपेरा' ।
सप्त, वि (स सप्तन्) स प, उक्तासंख्या तद्बोधकोऽङ्कश्च (७)।
—ऋषि, स पु [स सप्तर्षय (बहु) =मरीचि, अत्रि, अंगिरस, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ, अथवा गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप]।
—जिह्व, स पु (स) सप्तज्वाल, अग्नि ।
—धातु, स पु [स सप्तधातव (बहु) =रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जान शुक्रसंयुता ।]
—पदी, स स्त्री (स) विवाहांगसप्तपदीगमनम् ।
—पाताल, स पु (स न) सप्तसंख्याकाधोभुवन (= अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल) ।
—पुरी, स स्त्री (स) सप्तपुण्यनगराणि (न ब) (=अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार) काशी, काँची, अवन्तिका, (उज्जयिनी), द्वारका) ।
—प्रकृति, स स्त्री (स प्रकृतय (स्त्री बहु) राज्यस्य सप्तांगानि (बहु) (=नृप, मंत्रिन्, सामंत, देश, कोश, दुर्ग, सेना) ।
—भुवन, स पु (स न) सप्तोर्ध्वलोका (पु बहु) भूर्भुव स्वर्महश्चैव जनश्च तप एव च सत्यलोकश्च) ।

—सप्ति, स पु (स) सूर्य, सप्ताश्व ।
सप्तक, स पु (स न) सप्तवस्तुसमूह २ सप्तस्वरसमूह (सगीत)।
सप्तमी, स स्त्री (स) शुक्लकृष्णपक्षयो सप्तमतिथि (पु स्त्री)। २ अधिकरणकारकस्य विभक्ति (स्त्री)।
सप्तर्षि, सं पु [स सप्तर्षय (बहु)] दे 'सप्तऋषि'।
सप्ताश्व, स पु (स) सूर्य, भानु, रवि, अर्क ।
सप्ताह, स पु (स) सप्तदिवसात्मक काल, *दिनसप्तक २ साप्ताहिक कृत्य ३ श्रीमद्भागवतादीना साप्ताहिकी कथा ।
सप्रज, वि (स) सबाल, सापत्य, ससन्तान, अपत्यवत्तृत् ।
सफ़, स स्त्री (अ) श्रेणी णि (स्त्री), पंक्ति (स्त्री) २ स्तरट ।
सफ़र, स पु (अ) यात्रा दे ।
—ख़र्च, स पु (अ+फ़ा) मार्गव्यय ।
सफ़रमैना, स स्त्री (अ सैपर+माइनर) खनकसैनिकिश (पु बहु)।
सफ़री, वि (अ सफर) यात्रोपयोगिन् ।
सफ़री, ▪ स्त्री (शफरी) शफर, मत्स्यभेद ।
सफल, वि (स) फलिन्, फलवत्, फलिन, सफलय, फलयुत २ सार्थक, अमोघ, अर्थवत् ३ निष्पन्न, सिद्ध, पूर्ण ४ कृत, कार्य-कृत्य सफलमनोरथ, सिद्धार्थ, कृतार्थ, कृतिन्, चरितार्थ, प्राप्त पूर्ण-लब्ध-काम ।
—होना, क्रि अ, कृतकार्य-सफल (वि) भू ।
सफलता, स स्त्री (स) साफल्य, अर्थ-मनोरथ, सिद्धि (स्त्री), कृत-कामता-कृत्यता २ पूर्णता, निष्पन्नता ३ फलवत्ता ४ साथकता ।
सफ़हा, स पु (अ) पत्र, पर्ण, पृष्ठम् ।
सफ़ा, वि (अ) अविनिर्, मल, स्वच्छ, २ शुचि, पूत, पवित्र ३ श्लक्ष्ण, मसृण ४ समतल, समस्थ ।
—चट, वि, अतिस्वच्छ, निताननिर्मल २ अति, श्लक्ष्ण-मसृण ।
—चट करना, क्रि स, क्षुरेण मुण्ड (भ्वा प से, चु), वचान् सम्यक आवप् (भ्वा उ अ, दि) २ विनश् विध्वंस (प्रे)।
सफ़ाई, सं स्त्री (अ साफ़) स्वच्छता, निर्मलता २ शौच, शुद्धि (स्त्री) ३ अवस्करापसारणं ४ निष्कपटता, आर्जव ५ चित्तमानम्, शुद्धि (स्त्री) ६ निर्दोषिता ७ ऋणशोधन ८ निर्णय ।
—देना, मु, स्वनिर्दोषिता प्रमाणीकृ, आरोपितापराध निरस् (दि प से)।
सफ़ीना, स ▪ (अ) पुस्तक २ दे 'समन'।
सफ़ीर, स स्त्री (अ) राजदूत ।
सफ़ेद, वि (फ़ा सुफेद) श्वेत, धवल, श्येत, श्येन, शुक्र, सित, शुक्ल, शुभ्र, गौर (-री स्त्री) २ अक्लिष्ट लेख-रहित (पत्रादि)।
—स्याह, स पु (फ़ा) हिताहित, इष्टानिष्टम् ।
—पोश, स पु (फ़ा) आर्य, सज्जन । वि, श्वेतवासस् ।
रंग—पड़ना, मु, विवर्णता अपद् (दि आ अ)।
सफ़ेदा, स पु (फ़ा सुफेदा) सीसकभस्मन् (न), *श्वेतसीस २ आम्रभेद ३ *श्वेत (वृक्षभेद)।
सफ़ेदी, स स्त्री (फ़ा सुफैदी) शुक्लता, श्वेतता, धवलता, धवलिमन्, शुक्लिमन्, श्वैतिमन् २ सुधा, सुधालेप ३ प्रत्यूष, प्रभातम् ।
—करना, क्रि स, सुधया लिप् (तु प अ) धवलयति (ना धा), सुधालेप कृ ।
—आना, मु, वृ (दि प से), ज्या (क्र्‍ प अ), केशा धवलायते (ना धा)।
सब, वि (स सर्व) विश्व, समस्त, सकल, अखिल, निखिल, कृत्स्न, अशेष, निःशेष २ पूर्ण, अन्यून, अखण्ड, समग्र ।
—कहीं, क्रि वि, सर्वत्र ।
—का सब, वि, समग्र, संपूर्ण ।
—कुछ, सं पु, सर्वम् ।
—कोई, सब, सर्वे, विश्वे (पु बहु)।
—से अच्छा, वि, उत्तम, परम, श्रेष्ठ, प्रशस्ततम ।
—हाल, स पु, सपूर्ण, वृत्त-वृत्तात ।
—मिलाकर, मु, सर्व, समस्त २ सर्वाणि सहलय्य परिगणय्य ।
सब—, वि (अ) सहायक, उप— ।
—इन्स्पेक्टर, सं पुं (अ) उप, निरीक्षक अवेक्षक ।
—जज, स पुं (अ) उपाधिकरणिक, उपन्यायाधीश ।
सबक़, सं पु (फ़ा) पाठ, दे । २ शिक्षा ।
सबब, सं पुं (अ) कारणं, हेतु ।

सबर, स पु, दे 'सब्र'।
सबल, वि (स) बलवत्, बलशालिन्, बलिन्, वीर्यवत्, शक्तिमत्, शक्त, प्रबल, ऊर्जित, ऊर्जस्वल, समर्थ २ ससैन्य।
सबा, स स्त्री (अ) प्रभातपवन।
सबाध, वि (स) दुःखद, कष्टदायक २ हानिकारक, अहितकर।
सबील, स स्त्री (अ) मार्ग, पथिन् २ उपाय ३ प्रपा, दे।
सबूत, स पु, दे 'सुबूत'।
सब्ज़, वि (फा) हरित-त, प(पा)लाश, हरिद्वर्ण २ नव, प्रत्यग्र, सरस (फलशाकादि)।
—बाग दिखाना, मु, मोघाशाभि वञ्च् प्रतॄ (प्रे)।
सब्ज़ा, स पु. (फा सब्ज़ह) हरितत्व, हारित्य, शाद, शाद्वलता २ भंगा, विजया ३ हरिन्मणि, मरकतम्।
—ज़ार, स पु (फा) शाद्वल-लम्।
सब्ज़ी, स स्त्री (फा) दे 'सब्ज़ा'(१) २ शाक क, ति(तिं)मु, हरितक-क ३ भंगा, विजया।
सब्जेक्ट, स पु (अ) विषय, प्रकरण, प्रसंग २ प्रश्न।
—(कटूस) कमिटी, स स्त्री (अ) विषय समिति (स्त्री)।
सब्र, स पु (अ) सतोष, धैर्य, तितिक्षा, सहिष्णुता।
बे—, वि (फा+अ) सतोषहीन २ असहिष्णु।
बेसब्री, स स्त्री, तितिक्षाभाव, असहिष्णुता २ धीरताभाव, व्याकुलता।
सभा, स स्त्री (स) समाज, गोष्ठि-(ष्ठी) -समिति परिषद्-ससद्-पर्षद् (स्त्री), समज्या, सदस् (न), आस्थान २ सभा, भवन-गृह आगार-मडप निकेतन, आस्थान-नी।
—पति, स पु (स) सभाध्यक्ष, ससत्पति, (सभाया) प्रधान।
—सद, स पु (स-सद्) सदस्य, सभ्य, सामाजिक, परिष(पर्ष)द्वल, प(पा)रिषद, पार्षद, सभास्तार, प(पा)रिषद्य।
धर्म—, स स्त्री (स) धार्मिकपरिषद् (स्त्री)।
न्याय—, स स्त्री (स) व्यवहारमडप।
राज—, स स्त्री (स) राजकीयपरिषद् (स्त्री)।
सभागा, वि (स सुभाग्य) सौभाग्य-वत् शालिन्, महाभाग, धन्य।
सभाला, स पु (स संभल) वरमल, परिणेतृमित्रम्।
सभ्य, स पु (स) सभासद, दे २ सज्जन, भद्रपुरुष। वि, शिष्ट नागरिक, दक्षिण, भद्र, विनीत, सुशील, आर्यवृत्त, सस्कृत, सस्कृति (स्त्री)।
सभ्यता, स स्त्री (स) शिष्टता, नागरिकता, दाक्षिण्य, सुजनता, आर्यवृत्ति (स्त्री) २ सस्कृति।
समञ्जस, वि (स) उचित, न्याय्य, योग्य।
सम, वि (स) समान, तुल्य, सदृश-श, सदृक्ष, सनिभ, सविध,-उपम,-निभ,-प्रकार, -विध (समासान्त मे) २ समतल, दे ३ युग्म, दे 'जुफ्त'। स पु (स) तालमानभेद (सगीत) २ अर्थालंकारभेद (सा)।
—कक्ष, वि (स) तुल्य, सदृश।
—काल, अव्य (स-ल) युगपद् (अव्य), यौगपद्येन, एक-सम,-काल(-ले)।
—कालीन, वि (स) एक,-कालिक-कालीन, समकाल।
—कोण, स पु (स) नवत्यशात्मक कोण। वि, तुल्याभिमुखकोण (त्रिभुज अथवा चतुर्भुज)।
—चित्त, वि (स) सम, चेतस् बुद्धि, धीर, शान्तमनस्क।
—तल, वि (स) सम, समस्थ, समरेख, सपाट।
—दर्शी, वि (स) सम,-दर्शन-दृश्-दृष्टि-बुद्धि।
—भाव, वि (स) सम, प्रकृति-गुण २ समता, तुल्यता।
—भूमि, स स्त्री (स) सम, भू (स्त्री) -स्थली।
—वयस्क, वि (स) सवयस्क, समायुष्क।
समक्ष, अव्य (स-क्ष) अग्रे, अग्रत, पुर, पुरत, पुरस्तात् (सब अव्य)।
समग्र, वि (सं) दे 'सब' (१२)।
समझ, स स्त्री (हिं समझना) बुद्धि धी मति (स्त्री), प्रज्ञा २ ज्ञान, बोध, उपलब्धि (स्त्री)।

—**में आना**, क्रि अ, अवगम्-बुध्-ज्ञा (कर्म)।
—**दार**, वि (हिं +फा) धीमत्, बुद्धिमत्, प्राज्ञ, विचक्षण।
समझना, क्रि स (स सज्ञान>) ज्ञा (क्र उ अ), बुध (भ्वा प से) अवगम्, बुद्ध्या ग्रह् (क्र् प से) २ क्लृप् (प्रे), उत्प्रेक्ष (भ्वा आ से), तर्क (चु) ३ विचर (प्रे) ४ प्रतिकृ, नियत् (चु)। स पु, ज्ञान, कौशल, अवगमन, उपलब्धि (स्त्री)।
समझने योग्य, वि, ज्ञेय, अवगन्तव्य, बोध्य।
समझनेवाला, स पु, ज्ञातृ, बोद्धृ अवगन्तृ।
समझाना, क्रि प्रे (हिं समझना) १ 'समझना (१) के प्रे रूप २ विशदी-स्पष्टीकृ व्याख्या (अ प अ), व्याचक्ष् (अ आ) ३ उपदिश् (तु प अ), शिक्ष (प्रे) ४ निभर्त्स् (चु आ स) ५ सान्त्व् (प्रे), अभिज्ञा (प्रे)।
—**बुझाना**, क्रि प्रे, दे 'समझाना'।
समझा हुआ, वि, ज्ञात बुद्ध अवगत।
समझौता, स पु (हिं समझना) सन्धि, समया, धान, कलह विवाद, शम शान्ति (स्त्री), २ सम्मति (स्त्री), एकमत्यम्।
समता, स स्त्री (स) तुल्यता, सादृश्य, समानता, साम्य, समत्वम्।
समद, वि (स) मत्त, क्षीब, उन्मद, मदोद्धत २ मदान्वित, मत्त (गजादि) ३ प्रसन्न, प्रहृष्ट।
समध(धि)न, स स्त्री (हिं समधी) १ २ पुत्र पुत्री-श्वश्रू (स्त्री), जामातृ स्नुषा,-जननी।
समधियाना,-**ना**, सं पु (हिं समधी) पुत्र-पुत्री,-श्वशुरालय।
समधी, सं पुं (स सम्बन्धिन्>) १ २ पुत्र पुत्री आत्य,-श्वशुर, जामातृ-स्नुषा, जनक।
समन्वय, स पु (स) संयोग, मिलन २ आनुरूप्य, विरोधाभाव, संवाद ३ कार्य कारणनिर्वाह।
समन्वित, वि (स) संयुक्त, मिलित, संबद्ध २ युक्त युत, सहित ३ निबद्ध।
समय, स पुं (सं) वेला, काल, दिष्ट, अनेहस् २ प्रस्ताव, प्रसंग ३ ऋतु ४ अव काश, क्षण ५ अवसर, उचितसमय।
समर, स पु (स पु न) संग्राम, युद्ध दे।
—**भूमि**, स स्त्री (स) समराङ्गण, युद्ध-रण, क्षेत्रम्।
—**शायी**, स पु (स यिन्) लब्धवीरगति, धराशायिन्।
समर्थ, वि (स) क्षम, योग्य, शक्त, सामर्थ्य वत् २ बलिन्, सबल।
समर्थक, वि (स) समर्थनकार, साहाय्यका रिन्, उपोद्बलक, अनुमोदक।
समर्थन, स पु (स न) दृढी प्रमाणी,-करण, उपोद्बलन, अनुमोदनम्।
—**करना**, क्रि स, समर्थ् (चु), दृढी प्रमाणी-कृ, दृढयति (ना धा), उपोद्बलयति (ना धा)।
समर्थित, वि (स) उपोद्बलित, दृढीकृत, अनुमोदित।
समर्पक, वि (स) समर्पयितृ, समर्पणकर, उपहारिन्, उपहारक।
समर्पण, स पु (स) उपहरणं, ससमानं उत्सर्जन २ दान, उत्सर्ग।
—**करना**, क्रि स, सम् ऋ (प्रे, समर्पयति), सादर दा, उपहृ (भ्वा प अ)।
समर्पित, वि (स) उपहृत, सादर उत्सृष्ट-दत्त।
समवाय, स पु (स) समूह २ नित्य गुण गुणि जातिव्यक्ति अवयवावयवि, सबंध (न्याय)
समवेत, वि (स) संचित, संगृहीत २ युक्त, मिलित ३ नित्यसंबन्धविशिष्ट।
समष्टि, स स्त्री (स) सर्व, समुदाय, समूह।
समस्त, वि (सं) समग्र, संपूर्ण, निःशेष, दे 'सब' २ समासयुक्त ३ संक्षिप्त।
समस्या, स स्त्री (सं.) समासार्था, समास्य यर्था (पद्यरचनार्थे) श्लोकांश २ विकटप्रश्न ३ कठिनावसर।
—**पूर्ति**, स स्त्री (स) निर्दिष्टपद्यांशमाश्रित्य काव्यरचना।
समाँ, स पु (सं समय) काल, वेला।
—**बँधना**, मु (संगीतादिसम्पन्नतया) स्तब्धीभू।
समाख्या, स स्त्री (स) यशस् (न), नामन् (न)।
समागम, सं पु (स) आगमनं, आयानं २ संमिलन, संयोग ३ मैथुनम्।
समाचार, स पु (स) वृत्त, वृत्तान्त, उदन्त, वार्ता।

—पत्र, स पु (स) वृत्तपत्रम् ।

समाज, स पु (स) सभा, दे २ समूह, सघ, दल, समुदाय ३ आर्यसमाज ।

—वाद, स पु (स) समष्टौ राज्याधिकार इति सिद्धान्त ।

समाजी, स पु (स-जिन्) सभासद् २ आर्य समाज-सदस्य सभासद्, आर्यसामाजिक ३ दे 'सपरदाई' ।

समादृत, वि (स) सम्मानित, पूजित, सत्कृत ।

समाधान, स पु (स न) समाधि, अन ध्यान, प्रणिधान २ शका-सदेह, निवारण ३ शकानिवारकउत्तर ४ आश्वास,-श्वसन सात्वन ५ विरोधापहरण ६ निराकरण ७ अनुसधान ८ तपस् (न) ९ ध्यान १० समर्थन, दृढीकरण, उपोद्वलनम् ।

—करना, क्रि स, समाधा (जु उ अ), शका निवृ (प्रे) ।

शका—, स पु (स न) सदेहनिवारणम् ।

समाधि, स स्त्री (स पु) अनुध्यान, समाधान, समाधि स्थिति (स्त्री), योगस्य चरम फल २ प्रेतावट, शव-अस्थि,-गर्त ३ निद्रा ४ चित्तैकाग्रय, अनन्यमनस्कता ५ योग ६ मौन ७ प्रतिरोध ८ अर्थालकारभेद (सा) ।

—लगाना, क्रि अ, समाधि मनो निविश (प्रे) -मनसा (जु उ अ), अत ध्या (भ्वा प अ), समाहित समाधिस्थ (वि) भू ।

समान, वि (स) तुल्य, सदृश सदृश्, सम, सन्निभ, सविध, सवर्ण,-उपम,-विध,-रूप, -प्रकार ।

समानता, स स्त्री (स) समता, साम्य, सादृश्य, औपम्य, सारूप्य, सावर्ण्यम् ।

समाना, क्रि अ (स समावेशनम्) प्रविश (तु प अ), अन्त या (अ प अ), क्रि स., प्रविश् (प्रे), अन्त स्था (प्रे), धा-भृ (कर्म) ।

समाप्त, वि (स) अवसित, अत,-गत इत, सपूरित, सपूर्ण, निःशेषीभूत ।

—करना, क्रि स, समाप (स्वा प, अ, प्रे), निवृत (प्रे), सपू (प्रे)-पूर (चु), पार अन गम् (प्रे), नि क्षिप् (प्रे), सपद् (प्रे.) ।

—होना, क्रि अ, समाप्-अवसो (कर्म), निःशेषीभू, समाप्ति-अन गम् ।

समाप्ति, स स्त्री (स) अत, परि, अवसान, निवृत्ति सिद्धि (स्त्री), निःशेषता २ प्राप्ति (स्त्री) ।

समारोह, स पु (स) आडबर, विभव, दे 'धूमधाम' २ आडबरमय उत्सव ।

—से, क्रि वि साडबर सागेरम् ।

समार्थक, वि (स) समानार्थक, पर्यायवाचिन, तुल्यार्थ्य (शब्द) ।

समालोचक स पु (स) गुणदोष-निरूपक विवेचक आलोचक ।

समालोचना, स स्त्री (स) स,आलोचन-ना, गुणदोष निरूपण-विवेचन-दर्शन परीक्षणम् ।

—करना, क्रि स, गुणदोषान् निरूप् (चु)-विविच (रु उ अ)-विचर (प्रे), समालोच (प्रे) २ छिद्राणि अन्विष् (दि प से) ।

समावर्तन, स पु (स न) (गुरुकुलात्) प्रत्यागमन, प्रत्यावृत्ति (स्त्री) २ अर्थागम सस्कारभेद, सनावर्तन-वृत्ति (स्त्री) (धर्म) ।

समाविष्ट, वि (स) अतर्,-गत-भूत-गत २ एकाग्रचित्त ।

समावेश, स पु (स) अतर्भाव, अतर्गणना ।

—करना, क्रि. स, अतर्भू (प्रे), अतर्गण् (चु) ।

समास, स पु (स) पदसयोग (व्या) २ सक्षेप ३ सम्मिश्रण ४ सग्रह ।

—करना, क्रि स, सक्षिप् (दि प से), एकीकृ, सनिबन्ध (चु) ।

समासोक्ति, स स्त्री (स) अर्थालकारभेद (सा) ।

समाहार, स पु (स) सचयन, सग्रहण २ चय, राशि ३ सक्षेप ।

—द्वद्व, स पु (स) द्वद्वसमासभेद (व्या) ।

समिति, स स्त्री (स) परिषद् (स्त्री) सभा, दे ।

समिधा, स स्त्री [स समिध् (स्त्री)] यज्ञिय होमीय, इधन-एध २ एध, इधन दे ।

समीकरण, स पु (स न) समानीकरण, समीक्रिया २ क्रियाभेद ।

समीक्षा, स स्त्री (स) समालोचना, दे ।

समीचीन, वि (स) सत्य, यथार्थ, अवितथ २ उचित, उपपन्न, योग्य, ३ न्याय्य, धर्म्य ।

समीप, क्रि वि (स समीप पे) अनिक-के वात, आरात निस्था, निकट-टे, उपकठे, समया, सविधे, सकाशे शात, सनिधौ, उप- ।

—वर्ती, वि (स तिन्) समीप, निकट, सनिहित, अंतिक, अभ्याश, आसन्न, उपकठ, उपात, अभ्यण, अभ्यग्र सविध, समीप निकट स्थ वर्तिन ।

समीपता, स स्त्री (स) सामीप्य, नैकट्य, सनिधि (पु), आसन्नता, सनिकर्ष ।

समीर, स पु (स) समीर, समीरण, पवन, वायु दे ।

समीहा, स स्त्री (स) उद्योग, प्रयत्न २ इच्छा ३ अनुसधानम् ।

समुदर, स पु (स समुद्र) सागर ।

—झाग, स पु, दे 'समुद्रफेन'।

—सोख, स पु (स समुद्रशोष) क्षुपभेद ।

समुचित, वि (स) यथेष्ट, उचित दे ।

समुच्चय, स पु (स समाहार) समिलन २ राशि, समूह ३ अर्थालकार भेद (सा)।

समुद, वि (स) सहर्ष, सामोद, सानन्द। अ, सहर्षं, सानन्दम् ।

समुदाय, स पु (स) निरा, चय, निकर, राशि २ गण, सघ, वृद, समूह ।

समुद्र, स पु (स) सागर, अब्धि, वारि अभो-उद न्-नीर अबु पाथो,-धि, पारावार, सरित्पति सिंधु, अर्णव, रत्नाकर, नीर-वारि जल,निधि मकरालय, ऊर्मिमालिन् ।

—तट, स पु (स पु न) सागर,-नीर-कूल, रोधस (न) वेला।

—पत्नी, स स्त्री (स) समुद्र,-गामी-गा, नदी।

—फेन, स पु (स) समुद्रकफ, अब्धिफेन, सामुद्रम्।

—यान, स पु (स न) पोत ।

—लवण, स पु (स न) अब्धि(क्षी)व, वशि(मि)र समुद्रक, लवणाब्धिजम् ।

—वह्नि, स पु (स) वडवानल, वाडव ।

समुद्रगुप्त, स पु (स) गुप्तवशीय सम्राड्विशेष

समुद्रीय, वि (स) समुद्रिय, समुद्रय ।

समुल्लास, स पु (स) परिच्छेद, अध्याय २ आनद, हर्ष ।

समूचा, वि (स समुच्चय >) समस्त, समग्र, सपूर्ण ।

समूल, वि (स) सकारण, सहेतुक २ मूल, वत्-अन्वित । क्रि वि (स न) मूलत, सम्पूर्णतया, अशेषेण, साकल्येन ।

समूलोन्मूलन, स पु (स न) (मूलत) उत्पाटन-उच्छेदन-व्यपरोपणम्।

—करना, क्रि स, उत्पट् (चु) विध्वस् उन्मद (प्रे), आमूल उत्खन् (भ्वा प से)-व्यपरुह् (प्रे, व्यपरोपयति)।

समूह, स पु (स) निवह, व्यूह, सदोह, विसर, व्रज, स्तोम, ओघ, निकर, व्रात, वार, सघात, नि प्र-स-चय, समुद(वा)य, समवाय, गण, सहति (स्त्री), वृद, निकुरब, कदबक, समाहार, समुच्चय, -मडल, -जाल, पूग, ग्राम (समासात मे)। (सदृश पदार्थों का) वर्ग। (जतुओं का) सघ, साथ। (सजातीय जतुओं का) कुलम् (ढेढे जतुओं का) यूथ -थ। (पशुओं का) समज। (औरों का ब्रुद) समाज। (एक धर्मवालों का) निकाय। (अन्नादि का ढेर) पुज, पिज, पुजि (स्त्री), राशि, उत्कर, कूट-ट २ जनता, जनमेलक, जन-सौर,-सघ समुदाय सम्मर्द सकुल ३ बहुत्व, बाहुल्य, बहु वृहत, सरया ।

समूहनी, स स्त्री (स) समार्जनी, 'दे झाडू'।

समृद्ध, वि (स) अतिशय, धनाढ्य-धनिक-सपन्न ।

समृद्धि, स स्त्री (स) एधा, अतिशय प्रचुर, सपद-सपत्ति (दोनों स्त्री) वित्त विभव-वैभवम्।

समेटना, क्रि स (हिं सिमटना) एकत्र कृ, सग्रह् (क् प से), सचि (स्वा उ अ), सनी-समाहृ (भ्वा प अ) २ आकुंच् (प्रे), सकुच (तु प से), सहृ (भ्वा प अ)। स पु तथा भाव, एकत्रकरण सग्रहण, सचयन, सनयन, समाहरण,आकुचन, सकोचनम्।

समेत, क्रि वि (स न) सह, सार्कं, सार्धं, सहित, सम (सब तृतीया के साथ)। वि (स) सयुक्त।

समोसा, स पु (फा) -समोस, निरामिष पक्वान्नभेद ।

सम्यक्, क्रि वि (स) सर्वथा, सर्वप्रकारेण २ सम्पूर्णतया, सामस्त्येन, साकल्येन, सम्पूर्ण ३ सुष्ठु साधु ।

सम्राज्ञी, स स्त्री (स) सम्राट्पत्नी २ राजराजेश्वरी, अति महा-राजाधि-रानी ।

सम्राट्, स पु (स सम्राज्) महा-, राजाधिराज, सार्वभौम, चक्रवर्तिन, मण्डलेश्वर, एक अधिपति-राज, अति इश्वर-राज ।

सयाना, वि, दे 'स्याना' ।

सयूथ्य, वि (स) एक-सम-समान-अभिन्न,-वर्ग गण-सर्व ।

सयोनि, वि (स) सोदर, सहोदर, सगर्भ, सोदर्य २ निकट समीप,-सन्निहित । स पु (स) सहोदर, सोदर, सोदर्य २ इन्द्र, शचीपति ।

सर¹, स पु [स सरस् (न)] सरसी, कासार, ह्रद, सरोवर, पद्माकर, तटाक-क, तडाग-ग, जलाशय ।

सर², स पु (फा) शिरस् (न), दे 'सिर' २ शिखर, शिखा, अग्रम् । वि, पराजित, अभिभूत ।

—अंजाम, स पु (फा) सामग्री, सम्भार २ सिद्धि, समाप्ति (स्त्री) ।

—कश, वि, (फा) उद्धत, उद्दण्ड २ अवश्य ३ दुर्दम्, ,वैद्य ।

—कशी, स स्त्री (फा) औद्धत्य, उद्दण्डता २ कुचेष्टा, चापल्यम् ।

—गना,—गरोह, स पु (फा) अग्रणी, नायक ।

—गर्म, वि (फा) उत्साहिन, उत्साहवत् ।

—गर्मी, स स्त्री, उत्साह, व्यग्रता ।

—ज़ोर, वि (फा) बलवत् २ उद्दण्ड ।

—ज़ोरी, स स्त्री, बलात्कार २ उद्दण्डता ।

—ताज, स पु (फा) पुरोग, नायक, शिरो चूडा-मुकुट,-मणि ।

—पच, स पु (फा + हिं) सभा, पति-अध्यक्ष, *पञ्चप्रधान ।

—परस्त, स पु (फा) त्रातृ, रक्षक २ सरक्षक, आश्रयद ।

—परस्ती, स स्त्री, रक्षण, त्राण २ सरक्षण, आश्रय ।

—पेच, स पु (फा) उष्णीषभूषणभेद ।

—बराह, स पु (फा) कार्याध्यक्ष, अधिष्ठातृ, *प्रबन्धक ।

—बराही, सं स्त्री, अधिष्ठान, *प्रबन्ध, अवेक्षा २ अधिष्ठातृत्वम् ।

—हद, स स्त्री (फा + अ) सीमन् (स्त्री), सीमा, दे २ सीमान्त पर्वत, प्रान्त ।

—हदी सूबा, स पु (फा) (पश्चिमोत्तर) सीमाप्रान्त ।

—करना, मु, विजि (भ्वा आ अ), अभिभू, वशीकृ ।

सर³, स पु (अ) आगलीयानामुपाधिभेद, *शिरोमणि २ भद्र, आर्य ।

सरकडा, स पु (स शरकांड) काड, तेजन, गुन्द्रक, क्षुरिकापत्र, उत्कट ।

सरकना, क्रि अ (स सरण) शनैः-मृदु चल् (भ्वा प से)-सृप्-सृ (दोनों भ्वा प अ) २ सत्वर सृ ३ अलक्षित अती (अ प अ) ४ उरसा गम्-चल । स पु तथा भाव, मृदु सरण सर्पण चलन, इ ।

सरकाना, क्रि स, व 'सरकना' के प्रे रूप ।

सरकार, स स्त्री (फा) राज्य,-सस्था-तन्त्र शासक-अधिकारि,-वर्ग, राजसमिति (बहु) २ प्रभु, स्वामिन् ३ राज्य, राष्ट्रम् ।

सरकारी, वि (फा) आधिकारिक, राजकीय, राज्यसम्बंधिन् ।

—नौकर, स पु (फा) राज्य, भृत्य-सेवक परिचारक ।

—नौकरी, स स्त्री (फा) राज्य,सेवा-परिचर्या ।

सरगम, स पु (हिं सा+रे+गा+मा) स्वर,ग्राम (सगीत) ।

सरघा, स स्त्री (स) मधुमक्षिका, दे ।

सरजा, स पु (फा सरजाह=उच्चपदाधिकारी, अ शरजह्=शेर) नायक, अग्रणी, नर शार्दूल २ सिंह ।

सरणी, सं स्त्री (स) सरणि (स्त्री), पथिन्, मार्ग २ पंक्ति (स्त्री), रेखा ३ पद्या, पद्धति (स्त्री) ४ शैली, प्रकार ।

सरद, वि, दे 'सर्द' ।

सरदई, वि (फा सर्दद) हरित्पीत ।

सरदल, स पु (देश) द्वारोर्ध्वस्थूणा ।

सरदा, स पु (फा सर्दह्) *शीतखर्बुजम् ।

(स्त्री) ३ संसार, जगत् (न) ४ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ५ संतति (स्त्री) सन्तान ६ उद्गम, मूल ७ प्रवाह, स्राव ८ क्षेपण, प्रासन ९ प्राणिन् १० प्रवृत्ति (स्त्री)।

सर्जन¹, स पु (स न) सृष्टि-जगदुत्पत्ति (स्त्री) २ विसर्जन दे ।

सर्जन², स पु (अं) शल्यवैद्य शल्य चिकित्सक ।

सर्जरी, स स्त्री (अं) शल्य, चिकित्सा शास्त्र, शल्यवैद्यक २ शल्यक्रिया ।

सर्जि, स स्त्री (■) सर्जी सर्जिका सर्जि सर्जिका-क्षार, क्षार, कापोत, सौवर्चल रुचक, दे 'सज्जी'।

सर्जू, स स्त्री दे 'सरयू'।

सर्टिफ़िकेट, स पु (अं) प्रमाणपत्र दे ।

सर्द, वि (फ़ा मि स शरद्>) शीत, शीतल दे २ अलस मंद ३ नपुंसक, निर्वीर्य ४ निःस्वाद, नीरस ।

—ऋतु, स स्त्री (फ़ा +स) शरद् (स्त्री) दे ।

—ख़ाना, स पु, हिमगृहम् ।

—मिज़ाज़, वि (फ़ा + अ) निरुत्साह २ रूक्ष ।

—होना, मु, कृ (मु आ अ) २ शीतली सदी भू ।

सर्दी, स स्त्री (फ़ा) शीत, शैत्य, हिम २ प्रतिश्याय ।

—का बुख़ार, स पु शीतज्वर ।

—खाना, मु, शीतपीडित (वि) भू ।

सर्प, स पु (स) अहि भुजग, दे 'साँप'।

—भक्षक, स पु (स) मयूर ।

—मणि, स पु (स) भुजगमणि: ।

—यज्ञ, सं पु (स) जनमेजयकृतो नाग यज्ञ ।

—राज, स पु (स) शेषनाग २ वासुकि येय ।

—लता, स स्त्री (स) नागवल्ली, दे 'पान'।

सर्पिणी, सं स्त्री (स) भुजगी, दे 'साँपिन'।

सर्फ़¹, वि (अ) व्ययित, विनियोजित, दे 'ख़र्च'।

सर्फ़², स पु (अ सर्फ़) व्यय, विनियोग २ मितव्यय ।

सर्राफ़, सं स्त्री (अ) दे 'सराफ़'।

सर्व, सव (सं) सकल, समस्त ।

—काम्य, वि (स) सर्व, प्रिय इष्ट ।

—काल, अ० (स) सर्वदा, नित्यम् ।

—कालीन, वि (स) सार्वकालिक, सदातन ।

—जनीन, वि (स) सार्वजनिक, विश्वजनीन ।

—जित्, वि (स) विश्व, जित् विजेतृ २ उत्तम श्रेष्ठ । (स पु) यज्ञभेद २ मृत्यु ।

—ज्ञ, वि (स) सर्व विश्ववेत्तृ विद् । (स पु) परमेश्वर ।

—ज्ञता, स स्त्री (स) विश्ववेत्तृत्वम् ।

—तंत्र, वि (स) सर्वशास्त्रसम्मत । (स न) सर्वशास्त्रम् ।

—तन्त्रस्वतन्त्र, वि (स) सर्वशास्त्रपारग ।

—दमन, स पु (स) भरतराज, दुष्यन्त पुत्र । वि (स) सर्वाभिभावक ।

—दर्शी, वि (स र्शिन्) विश्वद्रष्टृ ।

—नाम, स पु (स मन् (न) शब्दभेद (-त्या) ।

—नाश स पु (स) विध्वंस, विनाश, समूलोच्छेद ।

—नियंता, स पु (स तृ) विश्वनियामक, परमेश्वर ।

—प्रिय, वि (स) विश्व प्रिय इष्ट-वल्लभ ।

—भक्षी, स पु (स क्षिन्) सर्वभक्षक २ अग्नि ।

—भूत, स पु (सं न) चराचर, सर्वसृष्टि (स्त्री)।

—मेध, स पु (स) सोमयागभेद २ सार्व अनिकमत्रम् ।

—वल्लभा, स स्त्री (सं) कुल्टा, पुश्चली ।

—व्यापक, वि (स) विश्वव्यापिन्, विश्व सर्व,-ग गत ।

—शक्तिमान्, वि (स मत्) सर्वसामर्थ्ययुत । (सं पु) परमेश्वर ।

—श्रेष्ठ, वि (स) सर्व, उत्तम, प्रशस्ततम ।

—साक्षी, स पु (स क्षिन्) परमेश्वर २ अग्नि ३ वायु ।

—साधारण, सं पु, जना, लोका, जनता, पृथग्,प्राकृत,-जना । वि (सं) साधारण, सामान्य ।

—सामान्य, वि (स) साधारण, प्राय, प्रायिक ।

सर्वत्र, अव्य (सं) सर्वदिग्देशकाल ।
—ग, वि (स) सर्वव्यापक ।
सर्वथा, अव्य (स) सर्वप्रकारेण २ साम स्त्येन ३ नितान्त, अत्यन्तम् ।
सर्वदा, अव्य (स) सदा, दे ।
सर्वस्व, स पु (स न) समस्तसपद् (स्त्री), समग्रद्रव्य, निखिलधनम् ।
सर्वांग, स पु (स न) समस्तशरीर २ सर्व वेदाङ्गानि (न बहु) ३ समग्रावयवा (पु बहु) ।
सर्वांगीण, वि (स) सार्वदेहिक-सर्वांगिक (-की स्त्री) ।
सर्वात्मा, स पु (स -त्मन्) परमात्मन्, ब्रह्मन् (न) ।
सर्वाधिकार, स पु (स) पूर्णप्रभुत्व, ऐकाधि पत्यम् ।
सर्वे, स पु (अ) सर्वेक्षणम्, भूमापनम् ।
सर्वेयर, स पु (अ) सर्वेक्षक , भूमापक ।
सर्वेश्वर, स पु (स) सर्वेश , परमेश्वर २ चक्रवर्तिन्, सार्वभौम ।
सर्षप, स पु (स) दे 'सरसों' ।
सलगम, स पु , दे 'शलगम' ।
सलज्ज, वि (स) ह्रीमत्, लज्जाशील दे ।
सलतनत, स स्त्री (अ) राज्य २ साम्राज्य ३ शासनम् ।
सलना, क्रि अ (स शल्य) व 'सालना' के कर्म के रूप ।
सलफ, वि (अ) प्राचीन, पुरातन, पुराण । सं पु, पूर्वजा , पूर्वपुरुषा , पितर (सभी बहु) ।
सलब, वि (अ सल्ब) नष्ट, उच्छिन्न ।
सलवाई, स स्त्री (हिं सलवाना) वेधन, शुल्क-भृति (स्त्री) ।
सलवाना, क्रि प्रे , व 'सालना' के प्रे रूप ।
सलहज, स स्त्री , दे 'सरहज' ।
सलाई[१], स स्त्री (स शलाका) धात्वादि निर्मिता तनुयष्टि (स्त्री) २ दीपशलाका ।
सलाई[२], स स्त्री (हिं सालना) वेध धन २ दे 'सलवाई' ।
सलाख, स स्त्री (फा मि स शलाका) दे 'सलाई' २ धातुदण्ड-यष्टि (स्त्री) ३ रेखा ।
सलाजीत, स स्त्री , दे 'शिलाजीत' ।
सलाद, स पु (अ सैलाड) शिग्रुशाकम् ।
सलाम, स पु (अ) प्रणाम , दे ।
—अलैक या अलैकुम, प्रणाम , नमस्ते, नम स्कार ।
दूर से—करना, मु (अनिष्ट दुर्जन वा दूरत) परिहृ (भ्वा प अ)-हा (जु प अ) ।
सलामत, वि (अ) सुरक्षित, अक्षत, संकट मुक्त २ जीवत् सजीव ३ स्वस्थ, नीरोग ४ विद्यमान, वर्तमान । क्रि वि , सकुशल, क्षेमेण ।
—रहना, क्रि अ , स्वस्थ (वि) जीव् (भ्वा प से) कुशली वृत् (भ्वा आ से) ।
सलामती, स स्त्री (अ सलामत) स्वास्थ्य २ कुशल, क्षेम ।
—से, मु , ईश्वरकृपया ।
सलामी, स स्त्री (अ सलाम) नमस्क्रिया, अभिवादन, २ सैनिक, प्रणाम प्रणति (स्त्री)-नमस्कार ३ अस्त्यस्त्रै सम्मानना सभाजना ४ प्रवण, निम्न-अवसर्पि, भूमि (स्त्री) ।
—उतारना, मु , अस्त्यस्त्रै सभृ समन् (प्रे) ।
सलाह, स स्त्री (अ) अभिप्राय , तर्क , मत नि (स्त्री) २ परामर्श , मन्त्रणा ३ उपदेश , मन्त्र ।
—करना, क्रि अ विचर (प्रे), समन्त्र् (चु आ से), परामृश् (तु प अ , तृतीया के साथ) उपदेशार्थं प्रच्छ् (तु प अ) ।
—कार, स पु (अ + फा) उपदेष्टृ, मन्त्रद , परामर्शप्रद , बुद्धिसहाय ।
—देना, क्रि स , उपदिश् (तु प अ), अनु शास् (अ प से), मन्त्र (चु उ से) ।
—ठहरना, मु , सर्वैः निश्चि निर्णी (कर्म), मामत्य जन् (दि आ से) ।
सलिल, स पु (स न) अबु, वारि, जल दे ।
—निधि, स पु (स) सागर , समुद्र दे ।
सलिलाहार, वि (स) सलिल-जल-नीर, अशन भोजन । स पु (स) जल-नीर, अशनम्-आहार ।
सलीका, स पु (अ) कौशल, दाक्ष्य, वैद ग्ध्य, चातुर्य २ सभ्य शिष्ट, आचार , शिष्टता ३ आचार , चरित्र, व्यवहार ४ सभ्यता ।

—मद, वि (अ + फा) दक्ष, कुशल, विदग्ध, चतुर २ शिष्ट, शिष्टाचारिन् ३ सभ्य।

सलीस, वि (अ) सुगम, सुबोध २ दे 'मुहावरेदार'।

सलूक, स पु (अ) व्यवहार, वृत्ति (स्त्री), वर्तन २ स्नेह, सद्भाव ३ उपकार।

सलूना, वि (स सलवण) स(ला)वण, लाव णिक। स पु, व्यजन, दे 'भाजी'।

सलोतर, स पु (स शालिहोत्र >) १ २, पशु-अश्व, चिकित्सा।

सलोतरी, स पु (हिं सलोतर) १ २ पशु अश्व, चिकित्सक-वैद्य।

सलोना, वि (स सलवण) दे 'सलूना' वि २ सुन्दर, लावण्यमय, छविमद् ३ स्वादु सरस।

सलोनो, स स्त्री (स श्रावणी) श्रवितापणी रक्षाबंधन दे।

सवन, सं पु (स न) यज्ञस्नान २ सोम पान ३ यज्ञ ४ प्रसव।

सवर्ण, वि (सं) तुल्य-समान-सम-एक-जाति जातीय-वर्ण २ सदृश समान तुल्य।

सवा, वि (स सपाद) पादाधिक, पादोर्ध्व।

सवाब स पु (अ) पुण्यं सुकृतफल २ हित उपकार।

सवाया, वि, दे 'सवा'।

सवार, स पु (फा) सादिन्, तुरगिन् अश्व-आरोह-आरोहिन्। वि, आरूढ अधि रूढ, उपर्यासीन।

—होना, क्रि स (अश्वादिक) अधि-अध्या आ-समा रुह् (भ्वा प अ), अधिस्था (भ्वा प अ) अध्यास (अ आ से)।

सवारी, सं स्त्री (फा) अधि-अध्या-आ रोहण, आ-रोढ रूढ, (रथादिभि) सचरण विहरण २ यान, वाहनं ३ आरोहक, आरो हिन्, यायिन्, यात्रिक ४ यात्रा, दे 'जलूस'।

—करना, क्रि अ, अश्वादिभि गम् या (अ प अ)।

सवाल, सं पु (अ) अनुयोग, प्रश्न दे। २ निवेदन, प्रार्थना ३ भिक्षायाच्या ४ गणित प्रश्न ५ साधनविषय।

—जवाब, सं पु (अ) प्रश्नोत्तर २ वाद प्रतिवाद ३ कलह।

—जवाब करना, मु, विवद (भ्वा आ से), विचर् (प्रे), तर्क (चु) ऊहापोह कृ।

सवालिया, वि (अ सवाल>) प्रश्नात्मक, पृच्छापर।

सवाली, वि (अ सवाल>) याचक भिक्षुक, अर्थिन्।

सविकल्प, वि (स) संशय-सन्देह विकल्प, युक्त, सदिग्ध २ सार्थक, सशयान, सदिहान। स पु (स) समाधिभेद।

सविता, स पु (स तृ) सूर्य, भानु।

सवित्री, स स्त्री (स) सविका, दे 'दाइ' २ जननी ३ गौ (स्त्री)।

सवेरा, स पु [स सुवेला>(स्त्री)] अरुणो दय, अहमुख, प्रात काल, दे विलम्ब चिरता चिरत्व-अभाव।

सवैया, सं पु (हिं सवा) मालिनी, छन्दोभेद २ सपादसेरात्मक भारमान ३ सपादगुणन सूची।

सव्य, वि (सं) वाम, दे 'बायाँ' २ दक्षिण (क्भी ही) ३ विरुद्ध, प्रतिकूल।

—साची, स पु (स चिन्) अर्जुन।

सशंक, वि (स) दोलायमान, संशयापन्न, सशयान २ भीत, उद्विग्न, त्रस्त ३ भीम, भयकर।

ससुर, स पु (स श्वशुर) पतिपितृ २ जाया जनक ३ (गाली) दुष्ट, शठ, खल।

ससुराल, स स्त्री (स श्वशुरालय) १ २ पतिपत्नी, पितृगृह, श्वशुरगृहम्।

ससुरी, सं स्त्री (हिं ससुर) श्वश्रू (स्त्री), दे 'सास' २ दुष्टा, पापा।

सस्ता, वि (सं स्वल्प>) अल्प-अर्घ-मूल्य, सुप्रक्रेय २ सुलभ ३ सामान्य, साधारण, अवर।

—होना, क्रि अ, अल्पमूल्य सुप्रक्रेय (वि) भू।

सस्ते छूटना, मु, स्तोकार्थ मुच् (कर्म)।

सस्य, सं पु (सं न) शस्यं, धान्य, सीत्य, व्रीहि, स्तंबकरि २ वृक्षादीनां फलम्।

सह, अव्य (सं) साक, सार्धं, समं, सहित (सब तृतीया के साथ) दे 'साथ'।

—कार, स पु (सं) आम्र, आम्र २ सहा यक ३ सहयोग।

—कारिता, सं, स्त्री (सं) सहयोगिता २ सहायता।

—कारी, स पु (स रिन्) सह,-कृत् कृत्वन् योगिन्, सव्यवसायिन् २ सहायक ।

—गमन, स पु (स न) सह,चरण व्रजन २ पतिशवेन सह ज्वलन, सह,मरण अनुगमनम् ।

—गामिनी, स स्त्री ([illegible]) सहमृता पत्या सह ज्वलिता नारी २ पत्नी ३ सहचरी ।

—गामी, स पु (स मिन्) संगिन् सहचर चरिन्-यायिन् वर्तिन् २ अनुयायिन् ।

—चर, स पु (स) दे 'सहगामी' (१)। २ सेवक ३ सखि मित्रम् ।

—चरी, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या २ सखी, वयस्या ३ सहगामिनी सगिनी ।

—चार, स पु (स) दे 'सहगामिन्' (२)। २ सग , सगति (स्त्री)।

—चारिणी, स स्त्री (स) दे सहचरी'(१ ३ ।

—चारी, स पु (स रिन्) दे 'सहगामिन्' (१)। २ सेवक, अनुचर ।

—जात, वि (स) सहजन्मन, यमल २ सोदर, सहोदर ।

—जीवी, वि (स विन्) समकालीन २ सहवासिन् ।

—धर्मिणी, स स्त्री (स) सहधर्म, चरी-चारिणी, धर्मपत्नी ।

—पाठी, स पु (स ठिन्) सह, अध्यायिन्-पाठक ।

—भोज, स पु (स) सधि (स्त्री) सह भक्षण, सभक्ष ।

—भोजी, स पु (स जिन्) सहभक्षक ।

—मत, वि (स) एक,-मन चित्त, सवादिन्, सम्प्रतिपन्न ।

—योग, स पु (स) सह,-कार -कारिता-योगिता २ सगति (स्त्री) ३ सहायता ।

—योगी, स पु (स गिन्) दे 'सहकारी' (१ २) ३ समवयस्क ४ समकालीन ।

—वाद, स पु (स) वादप्रतिवाद , हेतु ,वाद ।

—वास, स पु (स) सहवसति (स्त्री) २ सग ३ मैथुनम् ।

—वासी, स पु (स-सिन्) सहवासकृत् २ दे 'सहगामी'।

सहज, वि (स) सुगम, सरल, सुकर २ सहजात, दे ३ स्वाभाविक, प्राकृतिक ४ साधारण । क्रि वि , सौकर्येण, सुखम् ।

—पथ, स पु (स सहज+पथिन्>) सहज पथनामा वैष्णवसम्प्रदायविशेष ।

—मित्र, स पु (स न) स्वाभाविकसुहृद् २ भागिनेय ३ मातृष्वसेय ४ पैतृष्वसेय ।

—शत्रु स पु (स) स्वाभाविकशत्रु , सहजारि २ पितृव्यपुत्र ३ वैमात्रेयभ्रातृ ।

सहनन, स पु दे 'सहिनन' ।

सहजिया, स पु (स सहज>) सहज मतानुयायिन् ।

सहदेव, स पु (स) पाण्डुराजस्य पचमपुत्र ।

सहन[1], स पु (स न) सहिष्णुता, मर्ष, मर्षण २ क्षमा, तितिक्षा, क्षान्ति (स्त्री)।

—करना, क्रि अ दे , 'सहना' ।

—शील, वि (स) सहिष्णु तितिक्षु २ क्षमिन्, क्षमितृ, सहन ।

—शीलता, स स्त्री (स) दे 'सहन' (१ २)।

सहन[2], स पु (अ) आगन, प्रागण, अजिर, चत्वरम् ।

सहना, क्रि अ (स सहनं) क्षम् सह (भ्वा आ से), तिज् (सन्नन्त, तितिक्षते), मृष (दि प से , चु)। स पु तथा भाव, सहन, सहिष्णुता, सहनशीलता, क्षमा, मर्षण, क्षान्ति (स्त्री), तितिक्षा ।

सहनीय, वि (सं) मर्षणीय, सह्य, सोढव्य, क्षमार्ह, क्षन्तव्य ।

सहने वाला, स पु , सोढृ, क्षन्तृ,-सह ।

सहम, स पु (फा) भय, त्रास २ सकोच, दे 'लिहाज' ।

सहमना, क्रि अ (फा सहम) दे 'डरना' ।

सहर, स स्त्री (अ) उषा, प्रभातम् ।

सहरा, स पु (अ) मरु , मरु,-स्थल भूमि (स्त्री) २ वन, निबिडकाननम् ।

सहरी, स स्त्री (स शफरी) मीनभेद ।

सहल, वि (अ) सरल, सुगम, सुकर, सुसाध्य ।

सहला(रा)ना, क्रि स (हि-सहर = धीरे अथवा अनु०) मृद् (क्र प से), घृष (भ्वा प से)। स पु अगमर्दन, सवाहनम् ।

सहसा, अव्य (स) अकस्मात्, एकपदे, अकाण्डे, अतर्कित, झटिति (सब अव्य)।

सहस्र, वि (स न) दशशत-तकम् । स पु , दशशतसख्या २ तद्बोधकाकाश्च (१०००)।

—कर, स पु (स) सहस्र, किरण रश्मि, सूर्य ।
—दल, स पु (स न) सहस्रपत्र कमलम् ।
—नयन, स पु (स) सहस्र-लोचन नेत्र दृश् ।
—नाम, स पु [स-मन् (न)] सहस्र नामयुत देवस्तोत्रम् ।
—बाहु, सं पु (स) शिव, २ कार्तवीर्यो र्ज्जुन, नृपविशेष ३ बन्दिनृपस्य ज्येष्ठसुत ।
सहस्राशु, स पु (सं) सूर्य ।
सहस्राक्ष, स पु (स) इन्द्र २ विष्णु ।
सहाई, सं पु (स सहाय) सहायक दे ।
सहाध्यायी, स पु (स यिन्) दे 'सहपाठी'।
सहानुभूति, स स्त्री (स) समवेदन ना, समदु ख(खि)ता २ समदु खसूचना ।
—करना या दिखाना, क्रि अ, सहानुभूति प्रकटयति (ना धा), प्रकाश् (प्रे)।
सहाय, स पु (स) सहायक, दे २ सहायता, दे ३ आश्रय ।
सहायक, वि (सं) सहाय, उप-कानुग्यारिन् कारक, साहाय्यद अभिसर, अनु-चर प्लव २ उप-, (उ उपनदी)।
सहायता, सं स्त्री (सं) साहाय्य, उप-कार कृत कृति (स्त्री) २ अनुग्रह ।
—करना, क्रि स, साहाय्य कृ, सहायक भू, उपकृ (षष्ठी के साथ), अनुग्रह् (क प से)।
सहारना, क्रि स (हिं सहारा) दे 'सहना' २ धृ (चु), भृ (जु उ अ) ३ उत्तम्भ-उपस्कम्भ (क प से)। सं पु, दे 'सहना' स पु २ धारण, उत्तम्भन, उपस्तम्भ ।
सहारा, स पु (स सहाय>) दे सहायता (१) २ आश्रय अवलम्ब, अवष्टम्भ ३ विश्राम, प्रत्यय, विश्रम्भ ।
—देना, क्रि स, साहाय्य कृ उपकृ २ उत्तम्भ् उपस्तम्भ (क प से) ३ शरण आश्रय दा, गुप् (म्वा प से) ४ समाश्वस् (प्रे)।
—ढूँढना, मु, आश्रय अन्विष् (दि प से)।
सहिजन, सं पु (स शोभाजन) तीक्ष्णगन्ध, सु-तीक्ष्ण, शोभाञ्जन ।
सहित, वि (स) समेत, युक्त, सगत, अन्वित, दे 'साथ' तथा 'सह'। क्रि वि, साकं, सार्धं, समं, सह ।
सहिष्णु, वि (स) सहनशील, दे ।
सहिष्णुता, सं स्त्री (स) सहनशीलता, दे ।
सही, वि (फा सहीह) सत्य, यथार्थ २ प्रामाणिक ३ शुद्ध, निर्दोष ।
सहीफ़ा, स पु (अ) ग्रन्थ, पुस्तकम् २ पत्र, ग्रन्थ पुस्तकम् ३ पत्रम् ४ प्रतिज्ञा ।
—सलामत, वि (हिं+अ) स्वस्थ, नीरोग २ सपूर्ण, निर्दोष, क्षतिरहित ।
सहूलियत, स स्त्री (फा) सुकरता, सुगमता २ शिष्टाचार ।
सहृदय, वि (स) समवेदना सहानुभूतियुक्त २ दयालु ३ रसिक ४ भद्र, महाशय ५ मद्-साधु-स्वभाव ६ प्रसन्नमनस्क, आनन्दिन् ।
सहृदयता, स स्त्री (स) समवेदना, सहानुभूति (स्त्री) २ सज्जनता, सौजन्य ३ रसिकत्व ४ अनुक्रोश, दयालुता ।
सहेजना, क्रि स (अ सही+हिं जाँचना) सम्यक् परीक्ष निरीक्ष (भ्वा आ से) बुधु बोधयित्वा प्रतिपद् (प्रे)-दा ।
सहेली, सं स्त्री (स सह+हेलन>) सखी, आली लि (स्त्री), सगिनी २ परिचारिका, अनुचरी ।
सहोक्ति, स स्त्री (सं) अर्थालंकारभेद (सा)।
सहोदर, स पु (सं) सोदर, सोदर्य, सहज, सगर्भ, समानोदर्य, भ्रातृ ।
सह्य, वि (स) सहनीय, दे । स पु (स) सह्याद्रि ।
साँई, सं पु (स स्वामिन्) प्रभु, ईश, अधिकारिन् २ परमात्मन्, परमेश्वर ३ पति, भर्तृ ४ यवनभिक्षु ।
साँकड, साँकल, स स्त्री (सं शृङ्खला, दे)।
सांकेतिक, वि (स) सकेतात्मक, पारिभाषिक, सकेत-सम्बन्धिन् विषयक ।
सांख्य, स पु (स पु न) महर्षिकपिल प्रणीतो दर्शनशास्त्रविशेष ।
सांग¹, स पु, दे 'स्वाग'।
सांग², सं स्त्री (स शक्ति) काष्ठ-, अस्त्र- (दोनों स्त्री), अस्त्रभेद ।
सांग³, वि (सं) सपूर्ण, सर्वांगयुत ।
सांगी, सं स्त्री (हिं सांग) दे 'सांग²' २ शकटवाहकासन, युग-गं ३ शकटपार्श्ववर्ति जालकम् ।

सांगोपांग, वि (सं) अंगोपांगयुक्त, स-,पूर्ण, समग्र, समस्त ।

साँच, वि (सं सत्य) अवितथ, यथार्थ ।

साँचा, सं पु (सं स्वच्छ) आकारसाधन, सन्धान, सस्थानपुर २ दे 'छापा' ।

साँचे मे ढला होना, मु , सर्वांगसुंदर (वि) भू (स्वा आ से) ।

साँझ, सं स्त्री (सं सध्या) सायकाल दे ।

साँझा, सं पु दे 'सध्या' ।

साँट, सं स्त्री (अनु सट) सूक्ष्मतनु दड - यष्टि (स्त्री) २ दड ना ३ यष्टिकशा - प्रहारचिह्न ४ नीच ४ कम्बी ।

साँठी, सं स्त्री (हिं गांठ का अनु) मूल धन दे 'पूँजी' ।

साँड, सं पु (सं षड) वृ(ष)ड , गोपति , वृषन्, वृषभ २ दिवगनरमृत्यामुत्सृष्टोऽकि तो वृषभ ३ वृषणाश्व , वृषन् । वि , दृढाग, बलिन् ३ स्वैरिन्, दुराचारिन् ।

साँड(ढ)नी, सं स्त्री (हिं साड) उष्ट्री, दे 'ऊटनी' ।

—सवार, सं पु (हिं + फा) उष्ट्र, आरोह आरोहिन् २ उष्ट्र क्रमेलक,-वाहक ।

साँडा, सं पु (सं शयानक) कृकलास स, कर्कपाद , प्रतिमूल , सरट द्रु , गोधिका, चित्रकील ।

सांत, वि (सं) अनवन्, नश्वर, नाशवत् ।

सांत्वना, सं स्त्री (सं) सान्त्व-,वर्ने, आ सवा,-धारानं २ शम , शांति (स्त्री), ३ प्रणय ।

—देना, क्रि सं, सा(शा)न्त्व् (चु), आ सम-,श्वस् (प्रे) शोक शम (प्रे) ।

सांद्र, सं पु (सं) वन २ राशि । वि (सं) घन, निविड, सुसहत ।

सांद्रता, सं स्त्री (सं) निविडता, घनता इ ।

सांधिविग्रहिक, सं पु (सं) संधियुद्ध मंत्रिन् ।

सांध्य, वि (सं) सन्ध्या,-सम्बन्धिन् विषयक, वैकालिक, वैकालीन ।

सांनिध्य, सं पुं (सं न) सामीप्य, निकटता २ मोक्षभेद ।

साँप, सं पु (सं सर्प) भुज(न)ग , भुजगम , अहि , पवनविष, धर , व्याल , सरीसृप , आशीविष , कुडलिन् , चक्षु श्रवस , फणि , बिलेशय , उरग , पन्नग , पवनाशन , दर्विन् द्वि,-जिह्व -रसन , पृदाकु , चक्रिन्, दद शूक , भोगिन् , गूढपाद् द , दीर्घपृष्ठ , जिह्मग । (चकत्तोंवाला साँप) मातुलाहि , मालुधान । (धारीदार साँप) राजि(जी)ल । (फनियर साँप) भोग फण भृत धर , फणिन् , भोगिन् ।

—की लहर, मु , अहि दशव्यथा ।

—के मुँह में, मु महासकटे ।

—छछूँदर की दशा, मु , द्वैधीभाव, दोला वृत्ति (स्त्री) सदेह ।

—सूँघ जाना, मु सर्पेण दश् (कर्म), मृ (तु आ अ) ।

कलेजे पर—लोटना, मु (ईर्ष्यादिभि) मनोऽ-त्यन्त सतप (कर्म) ।

सांपत्तिक, वि (सं) आर्थिक दे ।

साँपिन, सं स्त्री (हिं साप) सर्पिणी, सर्पी, पन्नगी, उरगी, भुजगी इ ।

सांप्रत, अव्य (सं -त) अधुनैव इदानीमेव, सद्य , सम्प्रति । वि (सं) उचित, योग्य, २ सामयिक, प्रास्ताविक ।

सांप्रदायिक, वि (सं) शास्त्रागत, सम्प्रदाय क्रम-मत, विषयक-सम्बन्धिन २ परपरीण, क्रमा गत ।

सांब, सं पु (सं) श्रीकृष्णपुत्र ।

सांभर, सं पु (सं साबर) सबरोद्भव, रौमक, वसुक २ राजपुत्रस्थानप्रदेशे कासारविशेष ।

सांमुख्य, सं पुं (सं न) दे 'सामना'(२) ।

साँय साँय, सं स्त्री (अनु)दे 'सनसनाहट'(१) ।

साँवला, वि (सं श्यामल) कृष्ण, श्याम २ ईषच्छ्याम, आकृष्ण ३ कृष्णनील । सं पु , श्रीकृष्ण २ पति ३ प्रेमिन्, प्रणयिन् ।

साँवलापन, सं पु (हिं साँवला) श्यामलता, श्यामता, आ कृष्णता, कृष्णनीलता ।

साँवाँ, सं पु (सं श्यामाक) श्याम -सक , त्रिबीज , अविप्रिय ।

साँस, सं स्त्री [सं श्वास (पु)] उच्छ्वास , उच्छ्वसित, नि(नि)श्वास , नि (नि)श्वसित, आन , आहर , एनन , असव प्राणा (दोनों पु बहु) २ दीर्घश्वास , निश्वास , उच्छ्वास ३ विराम , विश्राम ४ स्फोट , भग ५ श्वासरोग , दे 'दमा' ।

—रुकना, क्रि अ, श्वास निरुध् (कर्म)।
—लेना, क्रि अ, अन्‌प्राण्-श्वस् (अ प से) २ जीव (भ्वा प से) ३ विश्रम् (दि प से) विरम् (भ्वा प अ)।
—उखड़ना, मु (निधनकाले) कृच्छ्र कष्ट श्वस्।
—खींचना, मु, श्वासगमन निरुध् (रु प से)।
—चढ़ना या—फूलना, मु, सवेग प्राण।
—तक न लेना, मु, मौन आकल्प (चु)।
—रहते, मु, यावज्जीवनम्, आमृत्यो।
गहरी या लम्बी—लेना, मु, दीर्घं श्वस्।
सांसारिक, वि (स) ऐहिक लौकिक, प्राप चिक, व्यावहारिक।
सा, वि (स सदृश) सम, समान, तुल्य, सदृश २ इव, मात्र (उ थोड़ा सा=किंचि दिव, किंचिन्मात्र) ३ आ, ईषत (उ काला सा=आ-ईषत्-कृष्ण)।
साइक्लोपीडिया, स स्त्री (अ) (विषयविशेष निरूपक) बृहत्कोष २ विश्वकोश च।
साइत, स स्त्री (अ साअत) होरा, दे 'घड़ा' २ पल, क्षण च ३ मंगलमुहूर्त, शुभलग्नम्।
साइनबोर्ड, स पु (अ) चिह्नपट्ट-फलम्।
साइन्स, स स्त्री (अ) विज्ञान, शास्त्र २ रासायनिकभौतिकविज्ञान च।
साइफन, स स्त्री (अ) उत्क्षेपणनाली।
साईं, स स्त्री दे पराशा।
साईस, स पु (स्वम का अनु) अश्व, सेवक पाल पालक-रक्षक, यावानिक।
साइसी, स स्त्री (हिं साइस) अश्वसेवा अश्वसंवरत्वम्।
साक, स पु, दे 'साग'।
साकांक्ष, वि (स) इच्छु, इच्छुक, आकांक्षिन्, अभिलाषिन।
साका, स पु (स शाक) सवत् (अव्य), द २ यशस् (न), कीर्ति-ख्याति (स्त्री) ३ कीर्ति, चिह्न-स्मारक ४ आतंक, प्रभाव ५ कौतुककर कर्मन् (न)।
साकार, वि (स) आकारवत, आकृतिमत्, रूपवत् २ स्थूल, मूर्त्त ३ मूर्तिमत्, वपुष्मत्, देहधारिन्।
साकारोपासना, स स्त्री (स) मूर्त्याभि मत्पूजनं, मूर्तिपूजा।
साकिन, वि (अ) नि-वासिन्, वास्तव्य।
साक़ी, स पु (अ) सुरापरिवेषक २ वल्लभ, प्रेमपात्र, दे 'माशूक'।
साकूत, वि (स) सार्थक अर्थवत साभि प्राय, सप्रयोजन।
साकेत, स पु (स न) अयोध्या, दे।
साक्षर, वि (सं) शिक्षित, अक्षर, ह अभिज्ञ।
साक्षात्, अव्य (स) पुरतः, अग्रतः, समक्षं, प्रत्यक्षम्। वि, मूर्तिमत्, साकार, विग्रहवत्। स पु, स-समा-गम, मेल, सम्मिलनम्।
—करना, क्रि स, साक्षात् कृ स्वचक्षुर्भ्यां दृश (भ्वा प अ), निजेन्द्रियैः अवगम्।
—कार, स पु (स) दे 'साक्षात्'। स पु २ प्रत्यक्षं, इन्द्रियार्थसन्निकर्षजं ज्ञानम्।
साक्षी, स पु (स क्षिन्) दे 'गवाह' २ द्रष्टृ, प्रेक्षक। स स्त्री, साक्ष्यम्।
साक्ष्य, स पु (स न) साक्षिता-त्व, दे 'गवाही' २ दर्शनम्।
साख, स स्त्री (हिं साका) प्रभाव, यश आ, आतंक २ (हुंडी) प्रतिष्ठा, प्रत्यय, विश्वस नीयता।
साग, स पुं (स शाक-कं) शि(मि)मु, ह(हा)रितक २ व्यंजन, अन्नोपस्कर, दे 'भाजी'।
—पात, स पुं, शाकपर्ण, कन्दमूलं २ साधा रण नीरस, भोजनम्।
सागर, स पु (सं) समुद्र, दे २ महा, हृद-तड़ाग (-कम्)।
सागवान, स पुं, दे 'सागौन'।
सागू, स पुं (अं सैगो) •मागू', वृक्षभेद।
—दाना, स पुं (हिं +फ़ा) •सागूदाना।
सागौन, स पु (सं शाकवन>) गृहद्रुम, श्रेष्ठकाष्ठ, शाक, शाक-तरु-वृक्ष, भण।
साज़, स पु (फ़ा, मि सं सज्जा) सामग्री, उपकरणं २ (अश्व-) सज्जा-संनाह ३ वाद्य, वादित्र ४ अस्त्रशस्त्र ५ सुपरिचय, प्रगाढ सख्यम्। वि (फ़ा)-कार २ प्रतिरूपमाधातृ। (उ घड़ीसाज़=घड़ीकार, घटीप्रतिरूपमाधातृ)।
—बाज़, स स्त्री, सुपरिचय।
—सामान, स पु, सामग्री, उपकरण, परि च्छद २ दे 'ठाटबाट'।
साजन, सं पु (सं सज्जन) सद्‌जन, आर्य, सत्पुरुष २ पति ३ वल्लभ ४ परमेश्वर।

साजना, *क्रि स , दे 'सजाना'* ।
साज़िंदा, सं पु (फ़ा) वाद्यवादित्र ,वादक ।
साज़िश, स स्त्री (फ़ा) दे 'षड्यन्त्र'।
साझा, स पु (स साहाय्यं>) अंशिता, भागिता, भागधरत्वं २ अंश , भाग ।
साझी, स पु (हिं स झा) दे 'साझेदार' ।
साझेदार, स पु (हिं साझा) अंशक , अंशिन्, भागधर , अंशयितृ ।
साझेदारी, स स्त्री (हिं साझेदार) दे 'साझा' (१) ।
साटन, स पु (अ सैटिन) *साटन, कौशेय वस्त्रभेद ।
साटा, स पु (देश) विनिमय , परिवर्त ।
साठ वि [स षष्टि (नित्य स्त्री)] स पु उक्ता सख्या तद्बोधकांकौ (६०) च ।
साठवाँ, वि (हिं साठ) षष्टितम -मी-म (पुं स्त्री न)।
साठा, वि (हिं साठ) षष्टिवर्ष ।
साठी, स पु (सं षष्टिक-का) स्निग्धतण्डुल , षष्टिक ।
साड़ी, सं स्त्री (स शाटी) नारीवस्त्रभेद ।
साढ़साती, *सं स्त्री* (हिं साढ़े+सात) साढसप्तवर्ष(मास-दिवस)वर्तिनी शनिदशा ।
—आना या—चढ़ना, मु , दुर्दिनानि आगम् (भ्वा प से)।
साढ़ू, स पु (स स्यालीधव) श्यालीपति , नायानरिक ।
साढ़े, वि (स सार्ध) अध्यर्ध ।
सात, वि (स सप्तन्) सं पु, उक्ता सख्या, तद्बोधकाङ्कश्च (७) ।
—गुना, वि , सप्त,गुण-गुणित ।
—प्रकार का, वि , सप्त विधप्रकार ।
—फेरी, स स्त्री , दे 'भाँवर'।
—पांच, मु , शाठ्य , वाचव्यम् ।
—पांच करना, मु , प्रतृ-वच् (प्रे), विप्रलभ् (भ्वा आ अ)।
—पुश्तों से, मु , अनादिकालात् ।
—समुद्र पार, मु , अति-,दूर-दूरे ।
सातवाँ, वि (हिं सात) सप्तम -मी-म (पुं स्त्री न)।
सात्यकि, स पु (स) यादवयोधविशेष , श्रीकृष्णसारथि ।
सात्विक, वि (स सात्त्विक) १ २ सत्त्वगुण, सत्त्वनिर् निष्पादित प्रधान ४ शुद्धात्मन्, निष्कपट, ऋजु, सरल । सं पु (स) सत्त्वगुणजा अष्टप्रकारा भावा (=स्वेद स्तम्भोऽथ रोमाञ्च स्वरभङ्गोऽथ वेपथु । वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्विका स्मृता , सा) ।
साथ, अव्य (सं सहित) सह, साकं, सार्धं, समं, तृतीया से भी (उ क्रोध के साथ=क्रोधेन इ) म- -पूर्वक, -पुर सर (उ आदर के साथ=सादर, आदर,पूर्वक,पुर सर इ), मं, (उ साथ रहना=सवास)। सं पु सग , सगति (स्त्री) सहचार , साहचर्यं, संसर्ग ।
—का, मु , व्यजन, अवोपस्कार ।
—छूटना, मु , विश्लिष् (दि प अ), व्यप इ (अ प अ)।
—देना, मु , साहाय्य कृ २ रक्ष् (भ्वा प से) ३ सह या (अ प अ)।
—ही, मु , अपर च, अन्यच्च, अपि च, किं च, -अतिरिक्तम् ।
एक—, मु , युगपत्, समकाल-म, यौगपद्येन २ सम्भूय, मिलित्वा ।
साथिन, स स्त्री (हिं साथी) सहचरी २ सखी ।
साथी, सं पु (हिं साथ) सगिन्, सहचर २ मित्र, सखि (पु)।
सादगी, स स्त्री (फ़ा) साधुता, सरलता, आर्जव, निष्कपटत्व २ आडम्बरहीनता ।
सादर, वि (स) सगौरव, सविनय । क्रि वि (स रं) सप्रश्रयं, सविनयम् ।
सादा, वि (फ़ा -द) निष्कपट, निश्छल, सरल, ऋजु माया,-रहित, निर्व्याज, शुद्धात्मन् २ अज्ञ, मूर्ख ३ श्वेत, रग-वर्ण, हीन ४ अक्ष रांकादिरहित, रेखारहित ५ शुद्ध, केवल ६ अलकाररहित ७ विनीत-अनुद्धत,-वेश(ष) ८ अल्पावयव (यंत्रादि)।
सादापन, स पु (फ़ा सादह्) दे 'सादगी' ।
सादि, वि (स) सारम्भ, सोपक्रम, आरम्भ उपक्रम,-वत्-युक्त ।
सादिक़, वि (अ) सत्य, यथार्थ २ शुद्ध, त्रुटिरहित ।
सादृश्य, स पु (स न) समता, समानता, साम्य, सदृशता, तुल्यता ।

साध[1], स पु, दे 'साधु'।
साध[2], स स्त्री (स उत्साह >) अभिलाष, कामना, लालसा, वाञ्छा।
साधक, स पु (स) संसिध, पादक, समापक, सिद्धिकर, निर्वर्तयितृ २ तपस्विन्, तापस, योगिन् ३ करण, साधन ४ परहितकारिन्, परकार्यसहाय ५ भक्त, उपासक ६ भूतापसारक, दे 'ओझा'।
साधन, स पुं (स न) निष्पादन, विधान, सपादन, करण, अनुष्ठान, समापन, निर्वर्तन २ उपकरण, सामग्री ३ युक्ति (स्त्री), उपाय ४ उपासना, पूजा ५ सहायता ६ धातुशोधन ७ कारण हेतु ८ धन ९ पदार्थ १० सिद्धि (स्त्री)।
साधना, स स्त्री (स) सिद्धि निर्वृत्ति निष्पत्ति (स्त्री) २ आराधना उपासना ३ अभ्यास क्रियासातत्य, नित्यानुष्ठानम्। क्रि स (स साधनं) साध (स्वा प अ, प्रे), सिध (प्रे साधयति) २ निष्ठुन् सपद् समाप् (प्रे), अनुष्ठा (भ्वा प अ) २ विनी (भ्वा प अ) शिश (प्रे) ३ दम् (प्रे दमयति) वशीकृ ४ अभ्यस (दि प से) अभ्यास-व्यवहार कृ ५ नियन्त्र (चु) अनुशास् (अ प से)। स पु तथा भाव, साधन, निवर्तन, संसिध, पादन, अनुष्ठान विनयन, दे 'साधक', 'साधन' इ।
साधर्म्य, स पु (स न) समधर्मत्व समान गुण धर्मता गुणता।
साधारण, वि (स) सामान्य, विशिष्टता-रहित, प्रायिक प्राकृत मध्यम अवर २ सुकर, सुसाध्य ३ सार्वजनिक सर्वजनीन ४ सदृश, तुल्य।
—धर्म, स पु (स) सार्वजनिकधर्म २ चातुर्वर्ण्यस्य सामान्यधर्म।
—स्त्री, स स्त्री (सं) वेश्या।
साधारणत, अव्य (स) सामान्यत, प्रायश, प्रायेण, बहुश (सब अव्य)।
साधारणतया, अव्य (स) दे 'साधारणत'।
साधारणता, सं स्त्री (स) सामान्यता, विशिष्टताऽभाव साधारण्यम्।
साधु, स पु (सं) संन्यासिन, परिव्राजक, महात्मन, तापस, मुनि, यति २ सत्पुरुष, सज्जन, आर्य ३ अभिजात, कुलीन। वि (स) भद्र, उत्तम श्रेष्ठ २ यथार्थ, सत्य, अविनश्वर ३ प्रशसनीय, स्तुत्य ४ निपुण ५ अर्ह, योग्य ६ उचित, युक्त।
—वाद, सं पु (स) साधु-वचन-उक्ति (स्त्री), शसात्मकं वचनम्।
—साधु, अव्य (स) धन्य धन्य, सम्यक्-सम्यक, शोभन शोभन, वरं वरम्।
साधुता, स स्त्री (स) सज्जनता, श्रेष्ठता, भद्रता आर्यता २ सरलता, आर्जव ३ ४ साधु, चरित धर्म।
साधू, स पु, दे 'साधु'।
साध्य, वि (सं), निष्पादनीय करणीय, अनुष्ठेय, समापनीय २ शक्य, संभाव्य, संभवनीय ३ सुकर, सुगम ४ प्रमाणयितव्य, सत्यापयितव्य, उपपादयितव्य ५ प्रतिकार्य, प्रतिकार्य ६ ज्ञेय। स पु (स) देवता २ गणदेवताभेद ३ साधनीयपदार्थ (न्या)।
साध्वस, स पु (स न) भय २ व्याकुलता।
साध्वी, स स्त्री (स) सती, सच्चरित्रा २ पतिव्रता परायणा।
सानद, वि (स) प्रहृष्ट, मुदित। क्रि वि (स न) सकुशल, सहर्षम्।
सान, स पु (स शाण) शाणी, शाणाश्मन्।
—देना, क्रि स, तिज् (प्रे), नि, शो (दि प अ), तीक्ष्णीकृ, धृषु (अ प से)।
सानना, क्रि स (हिं सनना, स संधा से) मर्दनेन समिश्र् (चु), हस्ताभ्यां मृद (क्र प से, प्रे)-संपीड (चु) २ मलिनयति, कलुषयति-कल्कयति (ना धा) ३ संश्लिष् (प्रे), संबध (क्र प अ)।
सानी[1], स स्त्री (हिं सानना) *मिश्रान्नम्।
सानी[2], वि (अ) द्वितीय, अपर २ तुल्य, समान।
ला—, वि (अ) अद्वितीय, अनुपम, अप्रतिम।
सापत्न्य, सं पु (सं न) सपत्नीभाव, सदा रत्वम्। (सं पु) सपत्नीसुत २ शत्रु।
साफ़, वि (अ) स्वच्छ, निर्मल दे। २ शुद्ध, केवल ३ निर्दोष, त्रुटिहीन ४ स्पष्ट, विशद ५, धवल उज्ज्वल, भास्वर ६ निष्कपट, निश्छल ७ सम, सम-तल रेख ८ निर्विघ्न, निर्बाध ९ अवकाशशून्य, शेषरहित। क्रि वि,

निष्कलंक निरपवाद २ प्रच्छन्नं, निभृत ३ हानि हानि विना ४ अत्यन्त नितांत ४ निराहारम्।

—करना, क्रि स, प्रक्षल् (चु) प्रमृज्, मृज् (अ प से, प्रे), धाव (भ्वा प से, चु), निर्णिज् (जु उ अ) २ शुध (प्रे), पू (क्र् उ से), पवित्रीकृ ३ (ऋणादिक) निस्तृ शुध् (प्रे) अपाकृ।

—गो, वि, स्पष्ट-यथार्थ, भाषिन्-वादिन्।

—गोई, स स्त्री स्पष्ट-यथार्थ भाषिता-वादिता।

—दिल, वि (अ + फा) ऋजु सरल, निष्कपट।

—साफ़, अव्य, स्पष्ट प्रकटम, प्रकाशम स्फुटं, व्यक्तम् (सब अव्य)।

साफल्य, स पु (स न) सफलता दे २ लाभ।

साफा, स पु (अ साफ़) उष्णीष व शिरोवेष्टनम्।

साफ़ी, सं स्त्री (अ साफ़) गालनी।

साबन, स पु, दे 'साबुन'।

साबर, सं पु (स शबर) मृग भेद २ शबर चमन् (न) ३ वालमृगचमन् (न)।

साबिक, वि (अ) पुराण, पुरातन, पूर्व, प्राचीन, प्राक्तन।

साबिका, स पु (अ) व्यवहार, सबध २ परिचय।

साबित, वि (अ) प्रमाणित, सिद्ध दे।

साबु(बू)त, वि (फा सबूत) सपूर्ण, समस्त, पूर्णांग २ निर्दोष ३ स्थिर।

साबुन, स पु (अ) फेनल, सफेनम्।

साबूदाना, स पु दे 'सागूदाना'।

सामञ्जस्य, स पु (स न) औचित्यं, योग्यता २ उपयुक्तता ३ अनुकूलता ४ आनुकूल्य, आनुरूप्यम्।

सामंत, स पु (स) वीर, भट, योध, २ नायक, गणाधिपति ३ क्षेत्र-पति स्वामिन्।

साम, सं पु [स मन् (न)] सामवेद २ गेयवेदमंत्र ३ प्रियवाक्यादिभि सात्वन, मधुरभाषणं ४ उपायभेद (राजनीति)।

—वेद, स पु (स) आर्याणां प्रसिद्धो धर्म ग्रंथविशेष।

सामक, स पु, दे 'साँवाँ'।

सामग्री, सं स्त्री (स) उपकरणजात, सभार, साधनसमूह, आवश्यकद्रव्याणि (न बहु) २ परिच्छद, उपस्कर।

सामग्र्य, स पु (स न) समग्रता, पूर्णता, समष्टि (स्त्री) २ अनुचर-सेवक-वर्ग समुदाय ३ उपकरणसंग्रह ४ कोश परिच्छद, उपस्कर।

सामना, स पु (हि सामने) अग्र पूर्व, भाग, मुख २ स(समा)गम, सम्मिलन, दर्शन, सांमुख्य ३ विरोध, विपक्षता।

—करना, क्रि स, विप्रति स्था (भ्वा उ अ), प्रत्यवस्था (भ्वा आ अ) बाध (भ्वा आ से)।

सामने, क्रि वि (स समुखे) अग्रत, अग्रे, पुर, पुरत, समक्ष, अभि सं, मुख-मुखे २ उपस्थितौ, विद्यमानतायां ३ तुलनायां, प्रतियोगितया, विरुद्धम्।

—आना या—होना, क्रि अ, अभि-सं,मुखी भू, समुपस्था (भ्वा प अ)।

—करना क्रि स, अग्रे पुरत स्था (प्रे), समक्ष नी (भ्वा प अ)।

—से, क्रि वि, अग्रत, पुरस्तात्, पुरत।

आमने—, क्रि वि (अन्योन्यस्य) समुखे, मुखामुखि, प्रतिमुखम्।

सामयिक, वि (स) कालिक [—की (स्त्री)] काल-समय, विषयक २ साम्प्रतिक, इदानीन्तन, आधुनिक, वर्तमान ३ समयोचित, कालानुरूप।

—पत्र, स पु (सं न) समाचारपत्र, दे।

सम—, वि (स) समकालीन, दे।

सामर्थ्य, स पु स्त्री (स न) धीशक्ति (स्त्री), योग्यता, कार्यक्षमता २ बल, शक्ति (स्त्री) ३ तेजस् (न), पराक्रम ४ शब्द सबध (व्या)।

सामाजिक, वि (स) सामुदायिक, समाज जनसबध,-सबधिन् -समाज।

सामान, स पु (फा) दे 'सामग्री' (१ २)। यन्त्राणि, उपकरणानि (दोनों न बहु) ४ दे 'प्रबंध'।

सामान्य, वि (स) दे 'साधारण'। स पु (स न) सादृश्य, समानता २ साधारण, धर्म गुण (वैशेषिक) ३ अर्थालंकार भेद (सा)।

—वनिता, स स्त्री (स) वेश्या, वारागना।

सामान्यत, क्रि वि (स) दे 'साधारणत'।

सामान्यतया, क्रि वि (सं) दे 'साधारणतया'।

सामिग्री, सं स्त्री, दे 'सामग्री'।

सामीप्य, सं पु (सं न) सान्निध्य, नैकट्यं २ मुक्तिभेद ।

सामुदायिक, वि (सं) सामूहिक, सामवायिक।

सामुद्रिक, सं पु (सं न) *तनुचिह्नविज्ञानम्। वि (सं) सामुद्र, समुद्रीय।

साम्य, सं पु (सं न) समता, समानता, तुल्यता।

—वाद, सं पु (सं) समाज-समष्टि, वाद, पाश्चात्य सामाजिकसिद्धांतविशेष ।

साम्राज्य, सं पु (सं न) आधिपत्य, आधिराज्य, पूर्णाधिकार, दशलक्षाधिपत्य २ महाविस्तृत,-राज्य विषय -राष्ट्रम्।

सायं, क्रि वि (सं) दिनान्ते, सायकाले। सं पु, दे 'सायंकाल'।

—काल, सं पु (सं) सायाह्न, साय -म्, सायमव्याममय, रजनीमुखं, प्रदोष, दिवस दिन, अन्त अवसान, सन्ध्या, दि वै,-काल ।

—कालीन, वि (सं) सायंतन (-नी स्त्री), साय, प्रादोषिक वैकालिक(-की स्त्री), सायंभव।

—संध्या, सं स्त्री (सं) पश्चिमा सन्ध्या।

सायरन, सं स्त्री, दे 'साइरन'।

सायक, सं पु (सं) इषु, बाण २ खड्ग।

सायण, सं पु (सं) चतुर्वेदभाष्यकारो मायणपुत्र ।

सायत, सं स्त्री, दे 'साइत'।

सायबान, सं पु (फा साय बान) प्रघ(घा,ण, अलिन्द २ *तृणप्रच्छदिस, *प्रच्छायवद्।

सायल, सं पु (अ) प्रश्न,-क(र्ता)र -कृत्, प्रष्ट, पृच्छक २ याचक, भिक्षु ३ प्रार्थिन्, आवेदक ४ पद-आकांक्षिन-अन्वेषिन्।

साया, सं पु (फा -यह्) दे 'छाया'।

सायुज्य, सं पु (सं न) एकीभाव, ऐक्य, सारूप्य २ मुक्तिभेद ।

सारंग, सं पु (सं) मृगभेद २ मृग ३ वाद्यभेद ४ रागिणीभेद ५ धनुस् (न) ६ इषु ७ सर्प ८ रात्री ९ रमणी १० खड्ग ११ मेघ १२ खग १३ मयूर १४ हंस १५ चातक १६ भ्रमर १७ सागर १८ कमल १९ चन्द्र २० श्रीकृष्ण, इ ।

—पाणि, सं पु (सं) विष्णु ।

—लोचना, सं स्त्री (सं) मृगलोचनी, हरिणाक्षी, कुरंगाक्षी, मृगनयनी ।

सारंगिया, सं पु (सं सारंगी>)सारंग(गी)-वादक ।

सारंगी, सं स्त्री (सं) शारंगी, सारंग, पिनाकी, वाद्यभेद ।

सार, सं पु (सं पु न) तत्त्व, मुख्यांश, स्थिरांश, मूल, मूलवस्तु (न) २ भाव, तात्पर्य, निष्कर्ष, पिंडित निष्कृष्ट निर्गलित, अर्थ ३ मज्जा, अस्थि,-ज-संभव स्नेह -तेजस् (न)। (सं पु) रस, द्रव, निर्यास २ संक्षेप, संग्रह ३ शक्ति (स्त्री), बल ४ वीर्य, पराक्रम ५ वज्रक्षार ६ वायु ७ रोग ८ पाशक ९ दध्युत्तर १० अर्थालंकारभेद (सा)। (सं न) जलं २ धनं ३ नवनीत ४ अमृत ५ लौह ६ वनम्। वि (सं) उत्तम, श्रेष्ठ २ दृढ, बलवत् ३ -शाय्य, धर्म्य।

—गर्भित, वि (सं) तत्त्वपूर्ण, सार, युक्त वत् ।

—वर्जित, वि (सं) निस्सार, तत्त्वहीन ।

सारथि थी, सं पु (सं थि) सूत, हयग्य, नि यन्तृ, नियामक, क्षत्तृ, प्राजितृ, दक्षिणस्थ, रथ ,-आगर -कुटुंबिन् ।

सारल्य, सं पु (सं न) सरलता, दे ।

सारस, सं पु (सं) पुष्कराख्य, लक्ष्मण, लक्षण, कामिन, रसिक, सरसीक २ हंस ३ चन्द्र । (सारसी स्त्री)।

सारस्वत, सं पुं (सं) ब्राह्मणजातिभेद २ व्याकरणग्रन्थविशेष । वि (सं) सारस्वतीय ।

सारांश, सं पु (सं) सार, निष्कर्ष, पिंडितार्थ २ अभिप्राय, आशय ३ परिणाम, फल ४ उपसंहार ।

सारा, वि (सं सर्व) संपूर्ण, समग्र, समस्त ।

सारिका, सं स्त्री (सं) सारी, शारिका, चित्रलोचना, पीतपादा, कलहप्रिया, मधुरालापा।

सारूप्य, सं पु (सं न) तुल्य,-सम-रूपत्व, रूपता, तुल्यता, समता २ मोक्षभेद ।

सार्थ, वि (सं) सार्थक, साभिप्राय २ समान तुल्य,-अर्थक अर्थिन् (शब्दादि) ३ धनिन्, धनाढ्य। सं पुं (सं) धनाढ्य, धनिक २ यात्रि-यात्रिक,-समूह -समुदाय

३ तीर्थयात्रिसा (बहु) ४ पण्याजीव, सार्थिक, व्यापारिन्।

सार्थक, वि (सं) सार्थ, अर्थ-वत्-युक्त-पूर्ण २ सफल, पूर्णकाम ३ गुणकारिन्, उपयोगिन्, हितकर।

सार्थकता, सं स्त्री (सं) अर्थवत्ता २ सफलता, सिद्धि (स्त्री)।

सार्दूल, सं पु (सं शार्दूल) सिंह।

सार्वकालिक, वि (सं) सर्वकालसंबंधिन्, शाश्वतिक।

सार्वजनिक, वि (सं) सर्वजनहित, स(सा)-र्वजनीन सार्वलौकिक।

सार्वत्रिक, वि (सं) सर्वत्र, सर्वव्यापिन्।

सार्वदेशिक, वि (सं) सर्वसमस्त, देशविषयक।

सार्वभौतिक, वि (सं) चराचरसंबंधिन्।

सार्वभौम, सं पु (सं) चक्रवर्तिन्, नृपाधिपती, सर्वभूमीश्वर, एकराजन। वि (सं) अखिल-भूमण्डलविषयक।

सार्वलौकिक, वि (सं) सकललोकसंबंधिन् २ सार्वभौम।

साल[1], सं पु (सं) सर्ज, चारक, अग्निवल्लभ, शालनिर्यास।

साल[2], सं पु स्त्री (हिं सालना) छिद्र, विवर २ शल्य, क्षत ३ पीडा, व्यथा।

साल[3], सं पु (फा) दे 'वर्ष'।

—गिरह, सं स्त्री (फा) जन्म, दिन दिवस, नववर्षारंभ।

सालग्राम, सं पु, दे 'शालग्राम'।

सालन, सं पु (सं सलवण>) व्यंजन, दे 'भाजी'।

सालना, क्रि स तथा क्रि अ (सं शल्य>) दे 'चुभाना' तथा 'चुभना'।

सालममिश्री, सं स्त्री (अ सालम+मिश्री = मिस्र देश का) सुधामूली, वीरकंदा, अमृतोत्था।

सालमा, सं पु (अ साल्मोनेला) रक्तशोधकक्वाथभेद।

साला, सं पु (सं श्यालक) श्वशुर्य, श्यालवीर वारवीर, पत्नीभ्रातृ।

सालाना, वि (फा) वार्षिक, दे।

सालिक, वि (अ) पथिक, पान्थ, अध्वग, सत्विन, धार्मिक।

सालिबमिश्री, सं स्त्री, दे 'सालममिश्री'।

सालिम, वि (अ) समग्र, सं,पूर्ण, अखण्ड, अक्षत।

सालिस, सं पु (अ) निर्णेतृ, मध्यस्थ, प्रमाणपुरुष।

सालिसी, सं स्त्री (अ) माध्यस्थ्य, निर्णय २ दे 'पंचायत'।

साली, सं स्त्री (सं श्याली) श्यालिका, केलिकुचिका, पत्नीभगिनी, (छोटी) यवानी, यवीयसी, (बड़ी) कुली।

सालू, सं पु (देश) लोहित रक्तवस्त्रभेद।

सालोत्री, सं पु, दे 'शालिहोत्री'।

सावधान, वि (सं) अवहित, दत्तावधान, समाहित, तत्पर, अप्रमत्त, सहित, जागरूक, दक्ष।

—करना, क्रि स, सावधानी-कृ (चु)-सबुध् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, सावधान अवहित-जागरूक (वि) भू २ अवधा (जु उ अ), मनो युज (चु)।

सावधानता, सं स्त्री (सं) अवधान, तत्परता, जागरूकता, मनोयोग, अभिनिवेश।

सावन, सं पु (सं श्रावण) नभ, नभस् (पु), श्रावणिक।

—की झड़ी, सं स्त्री, श्रावणिकी सततवृष्टि (स्त्री)।

—हरे न भादों सूखे, मु, अपरिवर्तनदशा, सदैकरसता।

सावनी, सं स्त्री, दे 'श्रावणी'।

सावित्री, सं स्त्री (सं) गायत्री २ सरस्वती ३ ब्रह्मण पत्नी ४ उपनयनसंस्कार ५ दक्ष कन्या, धर्मस्य पत्नी ६ सत्यवतो नृपस्य पत्नी ७ सधवा नारी ८ यमुना।

—सूत्र, सं पु (सं न) यज्ञोपवीत, दे।

साष्टांग, वि (सं) अष्टांगयुत।

—प्रणाम, सं पु (सं) अष्टांगपात, साष्टांग नमस्कार, दे 'अष्टांग'।

—करना, मु, दूरात् परिहृ (भ्वा प अ)।

सास, सं स्त्री (सं श्वश्रू) श्वश्रू (स्त्री), २ पति-पत्नी-जननी (स्त्री)-जननी।

सास्ना, सं स्त्री (सं) गलकम्बल।

साह, सं पु (सं साधु) सज्जन, सत्पुरुष, आर्य २ वणिज, आपणिक ३ धनिन्, श्रेष्ठिन्।

साहब, सं पु, दे 'साहिब'।

साहस, सं पु (सं न) धृष्टता, निर्भीकता, साहसिकता, धैर्य, धार्ष्ट्य २ ठंदन, बलात् अप

हरण ३ दुष्कृत्य ४ दण्ड ५ क्रूरता, निर्दयता ६ ब्रह्मचौर,-कवन (न) ७ परदारगमन ८ बलात्कार ९ दंड १० अध्यवन, दर्प।

साहसांक, सं पु (सं) विक्रमादित्य, शर्वरि।

साहसिक, सं पु (सं) साहसिन्, आततायिन्, २ लुंठक, दस्यु ३ परत स्वगा परदारगामिन्। वि (सं) साहसवत्, पराक्रमिन् वीर २ निर्भीक, प्रगल्भ ३ मिथ्या-अनृत-वादिन् ४ परुषभाषिन्, कटुवादिन् ५ हठकारिन्।

साहसी, वि (सं सिन्) दे 'साहसिक' वि (१२)।

साहाय्य, सं पु (सं न) सहायता, दे।

साहित्य, सं पु (सं न) वाङ्मय, सारस्वत ग्रन्थसमूह सरणि (स्त्री), संमिलन, मेल ३ ४ साहित्य अलंकार, शास्त्रम्।

साहित्यिक, वि (सं) साहित्य-विषयिन्, वाङ्मय विषयक सं पुं, साहित्य-सेवक, -सेविन्।

साहिब, सं पु (अ) मित्र, सुहृद् २ प्रभु, स्वामिन् ३ परमेश्वर ४ महाशय, श्रीमत् ५ ...

—**इकबाल**, वि (अ) सपक्ष, समृद्ध।

—**ज़ादा**, सं पु (अ+फा) पुत्र, सुनुजात।

—**दिमाग**, वि (अ) धी-बुद्धि-मत्।

—**सलामत**, सं स्त्री (अ) मिथ प्रणाम, पारस्परिकनमस्कार २ परिचय।

साहिबा, सं स्त्री (अ) स्वामिनी, ईश्वरी २ आर्या, कुलांगना ३ देवी, भट्टिनी ४ अत्र तत्र भवती, भद्रा, भवती, मान्यनी।

साहिल, सं पु (अ) वेला, तट तटम्।

साही, सं स्त्री (सं शल्यकी) शल्य, शल्लक, श्वाविध, ...पाद, शल्यमृग, बिलेशय, ...।

साहु हू, सं पु (सं साधु) सज्जन, आर्य, भद्रपुरुष २ कुसीदिक-दिन, वार्धुषिक।

साहु(हू)ल, सं पु (फा ...) लम्ब, लम्बनिकम्।

साहूकार, सं पु (हिं साहु) धनिक, धनाढ्य २ सार्थवाह, सार्थिक, श्रेष्ठिन् ३ कुसीदिन, वार्धुषिक।

साहूकारा, सं पु (हिं साहूकार) वृद्धि, जीवन-जीविका ३ अर्थव्यवसाय ३ अध्यापन।

साहूकारी, सं स्त्री (हिं साहूकार) दे 'साहूकारा'(१२)।

सिंगा, सं पुं (सं शृंग>) दे 'नरसिंहा'।

सिंगार, सं पु (सं शृंगार दे)।

—**दान**, सं पु (हिं+फा) *शृंगारभाजन, *प्रसाधनपिटकम्।

—**हाट**, सं स्त्री, शृंगारहट्ट-वेश्यापण।

सिंगारिया, सं पुं (हिं सिंगार) शृंगारकार, प्रसाधक।

सिंगिया, सं पु (सं शृंगिन्) विषभेद।

सिंगौटी, सं स्त्री (हिं सींग) (वृषादीनां) शृंगाभूषणम्।

सिंगौटी, सं स्त्री (हिं सिंगार) दे 'सिंगारदान'।

सिंघ, सं पु, दे 'सिंह'।

सिंघण, सं पुं (सं न) सिंघाणम्, सिंघणी सिंघाणकम्, नासिकामलम् २ अयोमलम्, अयोरस।

सिंघाड़ा, सं पुं (सं शृंगाटक) शृंगाटिका, जलकंटक, कंटकत्रिकोणक, ...-मूल, गुल्मभेद।

सिंघासन, सं पुं, दे 'सिंहासन'।

सिंचाई, सं स्त्री (हिं सींचना) सेक, सेचन, जलप्लावन, सिक्ति (स्त्री) २ अभिषव, उक्षण ३ सेचन प्रोक्षण, भृति (स्त्री) भृत्या।

सिंचित, वि, दे 'सींचा हुआ'।

सिंडिकेट, सं पु (अ) व्यापार समिति (स्त्री) व्यवहारसंघ २ विश्वविद्यालय प्रबन्धसमिति (स्त्री)।

सिंदूर, सं पु (सं न) सीमन्तक, मांगल्य, गणेशभूषण, शृंगारक, सौभाग्य, नाग-ज संभव-गर्भ, अरुण, शोण, रक्तम्।

सिंदूरिया-री, वि (हिं सिंदूर>) शोण सिंदूर-वर्ण।

सिंध, सं पु (सं सिंधु) सिंधुदेश, भारत वर्षस्य प्रान्तविशेष। सं स्त्री (सं पु) ... नदप्रान्तवर्तिनदविशेष।

—**सागर**, सं पु (सं सिंधुसागर) सिंधु वितस्तामध्यवर्तिप्रदेश।

सिंधी, सं स्त्री (हिं सिंध) सैंधवी, सिंधुदेश भाषा। सं पु, सिंधु देशीय-वासिन्, सैंधवा (प्रायः बहु) २ सैंधव (घोड़ा)।

सिंधु, स पु (सं) सागर २ नद ३ नद विशेष ४ प्रांतविशेष, सिंधुदेश ।
—कन्या, स स्त्री (सं) सिंधु,-जा सुता, लक्ष्मी (स्त्री) ।
—पुत्र, सं पु (सं) चंद्र ।
—माता, स स्त्री (स तृ) सरस्वती (नदी) ।
सिंधुर, स पुं (स) गज, द्विप ।
—वदन, स पु (सं) गजानन, गणेश ।
सिंधोरा, स पु (स सिंदूर>) सिंदूरपुट ।
सिंह, स पु (सं) हरि, हर्यक्ष, मृग, राज इन्द्र अधिप, पंच-आस्य शिरः मुख, केशरिन् रिन्, सटा, नख-वीर, नखिन्, क्रव्याद २ लेय, पंचमराशि (ज्यो) ३ वीर श्रेष्ठ (उ पुरुषसिंह) ४ दे 'सिक्ख'।
—के(शा)सर स पु (स पु न) सटा २ बकुलवृक्ष ।
—नाद, सं पु (स) सिंह,-गजन गर्जना ध्वनि २ क्ष्वेडा, रणोत्साहजरव ३ नि शङ्कथनम् ।
—पौर, स पु (स + हिं) सिंहद्वार, प्रवेशनम् ।
सिंहनी, स पु (हिं सिंह) नखिनी, सिंही, पंचमुखी ।
सिंहल, स पु (स) लवणद्वीप २ (सीलोन या लंका) ।
सिंहली, वि (स सिंहल>) सैंहल २ सिंहल वासिन् ।
सिंहावलोकन, स पु (स न) सिंहावलोकित २ पूर्व,-अनुदर्शन-वृत्तान्तविमर्श ३ पद्यरचना रीतिभेद ।
सिंहासन, स पुं (स न) नृप-राज,-आसनम् ।
—पर बैठना, क्रि अ, सिंहासने उपविश् (तु प अ), राज्ये अभिषिच् (कर्म) ।
—से उतारना, क्रि स, राज्यात् भ्रश् च्यु (प्रे) ।
सिंहिका, स स्त्री (स) राहुमातृ, राक्षसी विशेष ।
—सूनु, स पु (स) सैंहिकेय, स्वर्भानु, राहु ।
सिंहिनी, स स्त्री दे 'सिंहनी'।
सिंही, स स्त्री (स) दे 'सिंहनी' २ सिंहिका ३ शृंग, वाद्यभेद ।
सिआर, स पु (स शृगाल) दे 'गीदड़'।
सिकंजबीन, स स्त्री (फा) दे 'शिकंजबीन'।
सिकड़ी, सं स्त्री (स. शृंखला) द्वार-कपाट, शृंखला, दे 'कुंडी' २ गलभूषणभेद ३ काञ्ची, मेखला ।
सिकता, सं स्त्री (सं बहु) बालुका (स्त्री बहु), दे 'रेत' २ अश्मरी, दे 'पथरी' ३ शर्करा, सिता ।
—मेह, स पु (स) प्रमेहभेद ।
सिकत्तर, स पु (अ सेक्रेटरी दे) ।
सिकलीगर, स पु (अ सैकल + फा गर) दे 'सैकलगर'।
सिकहर, स पु (स शिक्य+हर) शिक्यं क्या शिक्य (स्त्री), काच, दे 'छींका'।
सिकुड़न, स स्त्री (हिं सिकुड़ना) संकोचन आकुंचन २ दे 'शिकन'।
सिकुड़ना, क्रि अ (हिं सिकोड़ना) संकुच् (भ्वा तु प से), आकुञ्च् (भ्वा आ से, तु प से), सह् (कर्म) २ वलिमत् नम् (दि आ से) ३ अल्पी-न्यूनीभू ।
सिकोड़ना, क्रि स (सं संकोचन) संकुच् (प्रे) सह् (भ्वा प अ), आकुञ्च् (प्रे) २ संक्षिप् (तु प अ), अल्पीकृ ३ वलित(वि) कृ । सं पु तथा भाव, संकोच-चन, संहरण, आकुञ्चन, संक्षेपण, अल्पीकरणम् ।
सिक्का, स पु (अ) टंकक, नाणक, मुद्रा २ पदकम् ।
—जमाना या बैठाना, मु, शासन प्रभुत्व-आधिपत्य स्था (प्रे), वशं कृ, अधिष्ठा (भ्वा प अ) २ प्रताप प्रभाव प्रख्या (प्रे)।
सिक्ख, स पु (स शिष्य) अन्तेवासिन्, छात्र २ गुरुनानकमतानुयायिन्, *सिक्ख ।
—मत, स पु, शिष्य सिक्ख, मत संप्रदाय-धर्म, नानकपंथ ।
सिक्त, वि (स) अभ्युक्षित २ जलसेचन, आर्द्र, स्निग्ध, दे 'सींचना'।
सिख, स स्त्री (स शिक्षा) उपदेश ।
सिखलाना } क्रि स, व 'सीखना' के प्रे
सिखाना } रूप ।
सिगरेट, स पु (अ) तमाखुवर्त्ति (स्त्री)।
सिगार, स पु (अ) तमाखुवर्त्तिका।
सिजदा, सं पु (अ) प्रणाम, नमस्कार ।
सिटकिनी, स स्त्री (अनु) दे 'चटखनी'।
सिटपिटाना, क्रि अ (अनु) दे 'सिट्टीपिट्टी भूलना' २ विलप् (भ्वा आ स), दोला

यते (ना धा), स्त्री (अ आ मे)।
सिटी, स स्त्री (अं) नगर-री, पुर-री।
सिट्टा, स पु (देश) कणिश, मञ्जरी, दे 'भुट्टा' तथा 'बाली' (अन्न की)।
सिट्टी, स स्त्री (अनु सीटना) वाक्पाटवम्।
—पिट्टी भूलना, मु , व्यामुह (द प वे), किंकर्तव्य मूढ (वि) भू (दि आ से), मम्रम (भ्वा दि प से)।
सिठनी, स स्त्री (स अशिष्ट >) वैवाहिक-गालि (स्त्री), *गालिगीतिका।
सिड़, स स्त्री (हिं सिड़ा) उन्माद वातुलता २ दे 'धुन'।
—बिल्ला, स पु (हिं सिड़ी+बिल्ला) उन्मत्त २ मूर्ख ।
सिड़ी, वि (स शृणि >) उन्मत्त, वातुल २ दृढाग्रहिन ३ स्वेच्छाचारिन्।
सितंबर, स पु (अं) भाद्रपदाश्विन भाग ईसवी नवममास ।
सित, वि (स) श्वेत शुक्ल २ शुभ्र,भास्वर ३ निर्मल, स्वच्छ। स पुं (स) शुक्रग्रह २ शुक्लपक्ष ३ सिता, शर्करा ४ रजतम्।
—च्छद, स पु (स) हंस, सितपक्ष ।
—भानु, स पु (स) सितांशु, चन्द्र ।
सितम, स पुं (फा) अर्दन, पीडन, नैष्ठुर्य, क्रौर्यं २ अन्याय, अनीति (स्त्री)।
—गर, स पु (फा) निष्ठुर, क्रूरचित्त, अनर्थंकर २ अन्यायशील ।
—ढाना, क्रि स , पीड् (चु), अर्द् (भ्वा प से , प्रे)।
सितरी-स्ती, स स्त्री (स शीतम् >)शीतल प्रस्वेद ।
सितारा, स पु (फा) स्थान, स्थलम् २ निवास, स्थानम् ३ देश ।
सितांशु, सं पु (स) चन्द्र, सोम ।
सिता, स स्त्री (सं) दे 'चीनी' २ दे 'शक्कर' ३ मल्लिका ४ चन्द्रिका।
—खंड, सं पु (स) मधुशर्करा २ दे 'मिस्री'।
सितार, सं पु (स सप्त+तार) वीणा, वल्लकी, विपंची, (सात तारोंवाला) परिवादिनी।
—बाज़, सं पु (हिं+फा) वीणावादक ।
सितारा, स पु (फा र) तारा, तारका, भं, नक्षत्र, तारिका, उडु (स्त्री न) २ भाग्य, दैव ३ *तिनार, वाद्यभेद ।
—चमकना या बलन्द होना, मु , भाग्यम् उद्+इ (अ प अ), भाग्यपुण्य फल् (भ्वा प से)।
सितोपल, स पु (स) कठिनी, दे खड़िया (स पु) स्फटिक , सितमणि ।
सितोपला, स स्त्री (स) शर्करा दे 'शक्कर' २ दे 'चीनी' ३ सितखंड, दे 'मिस्री'।
सिद्ध, वि (स) निष्पन्न,-प्रसाधित, साधित, अनुष्ठित, कृत २ प्राप्त, उपलब्ध ३ कृतकृत्य, सफल ४ अतिकुशल, सुनिपुण ५ दिव्यशक्ति युक्त ६ योगविभूतिक ७ मोक्षाधिकारिन् ८ प्रमाणित, साधित ९ निर्णीत १० शोधित ११ अनुकूल १२ पक्व, शृत, श्राण १३ प्रख्यात १४ सज्जी, भूत कृत, उपक्लृप्त, १५ प्रस्तुत, उपस्थित। सं पु (स) मुनि , ऋषि , पुण्यवत् , योगिन्, महात्मन् २ देवयोनिभेद ।
—करना, क्रि स , साध (भ्वा प अ या प्रे), सिध (प्रे , साधयति) सपद् (प्रे) २ मंत्रै वशीकृ ३ प्रमाणीकृ, सत्याकृ।
—होना, क्रि अ, सिध् (दि प अ) स-निष् , पद् (दि आ अ) २ मंत्रै वशीभू ३ प्रमाणीकृ (कम)।
—हस्त, वि (सं) प्रवीण, कुशल, पटु, निपुण।
सिद्धांत, सं पु (सं) राद्धान्त, पूर्वपक्ष निरस्य स्थापित मत २ तत्त्व, मत, वाद ।
—पक्ष, स पु (स) तर्कसंगत-युक्तियुक्त, पक्ष मतम्।
सिद्धांती, स पु (सं सिन्) मीमांसक , तार्किक २ शास्त्रविद् ३ सिद्धान्त नियम, निष्ठ ।
सिद्धार्थ, वि (स) आप्त पूर्ण, काम, कृतकृत्य। स पु (स) गौतमबुद्ध ।
सिद्धि, स स्त्री (सं) निष्पत्ति , समाप्ति (स्त्री), पूर्णता २ साफल्य, कृतकार्यता ३ योगजा दिव्यशक्ति (स्त्री), विभूति (स्त्री) (योग की आठ सिद्धियाँ —अणिमा लघिमा प्राप्ति प्राकाम्य महिमा तथा। ईशित्वं च वशित्वं च सर्वकामावसायिता॥) ४ समृद्धि (स्त्री), भाग्योदय ५ निर्णय ६ निश्चय ७ मोक्ष ८ नैपुण्य, दाक्ष्यम्,
सिधाई, सं स्त्री (हिं सीधा) सरलता, ऋजुता, साधुत्व, आर्जवम्।

सिधारना, क्रि अ (स सिद्ध) प्रस्था (भ्वा आ अ), प्रया (अ प अ) २ प्रइ (अ प अ), मृ (तु आ अ), दे 'मरना'।

सिन, सिन्न, स पु (अ) वयस्-आयुस (न), दे 'उम्र'।

सिनक, स स्त्री (स सिंहाण(घा)णक) नासा नासिका-मल, सिंघ(घा)ण, दे 'रेंट'।

सिनकना, क्रि स (हि सिनक) सिंघाण सृ (प्रे), नासिका शुध (प्रे)।

सिनेट, स स्त्री, दे 'सीनेट'।

सिनेमा, स पु (अ) चलचित्र, गृह शाला, २ चलच्चित्रम्, चित्रपट।

सिरनी, स स्त्री (फा शीरीनी) दे 'मिठाई'।

सिपर, स स्त्री (फा) चर्मपट, खेटक, ढाल, दे।

सिपाह, स स्त्री (फा) सेना, सैन्यम्।

—गिरी, स स्त्री (फा) युद्धव्यवसाय, सैनिकवृत्ति (स्त्री)।

—सालार, *स पु (फा) प्रधान,* सेनापति सेनानी चमूपति।

सिपाही, स पु (फा) सैनिक, योध, योद्धृ, भट २ राजपुरुष, यष्टि-दंड,धर, रक्षिन्, शान्तिरक्षक, रक्षापुरुष।

सिपुर्द, दे 'सुपुर्द'।

सिप्रा, स स्त्री (स) उज्जयिनीसमीपवर्तिनदी विशेष।

सिफत, स स्त्री (अ) गुण, विशेषता २ लक्षण ३ स्वभाव, धर्म।

सिफर, स पु (अ) शून्य, बिंदु, खम्।

सिफारिश, स स्त्री (फा) गुणवर्णन, प्रशंसन २ अनुशंसा, परकार्यसिद्ध्यर्थमनुरोध ३ प्रशंसा, पत्र-लेख।

—करना, क्रि स, प्रशंस (भ्वा प से), गुणान् वर्ण् (चु) २ परकार्यसिद्धयै अनुरुध (रु उ अ), अनुशंस (भ्वा प से)।

सिफारिशी, वि (फा) गुणश्लाघिन् प्रशंसक।

—टट्टू, स पु (फा + हि) परप्रभावलब्धाधिकार, परानुग्रहनियुक्त, गुणहीन।

सिमटना, क्रि अ (स समित) आकुञ्च् संकुच् संक्षिप्-सह (कर्म), संकुचित भू, दे 'सिकुड़ना'।

सिमेटना, क्रि स, दे 'समेटना'।

सियापा, स पु (फा सियाहपोश) सविलाप, सपरिदेवन-ना।

सियार, स पु (स शृगाल) जंबुक, दे 'गीदड़'।

सिर, स पु [स शिरस् (न)] शीर्ष, शीर्षक, मस्तक-क, मूर्धन् (पु), मौलि (पु स्त्री), मुंड-ड, उत्तमवर, अंग, शिर २ अग्र, शिखर, शिखा सानु (पु न) शृङ्गम्।

—कटा, वि, छिन्न, शीर्ष मस्तक शिर।

—का घूमना, स पु, भ्र(भ्रा)मर, भ्रम भ्रमि (स्त्री) घूर्णि (स्त्री)।

—का दर्द, स पु, शिर, शूल पीडा, शिरोवेदना।

—के बल, क्रि वि, अवाक्शिर, अधोशीर्षम्।

—गुंथी, स स्त्री, *शिरग्रथन आगोगासीद् वाहिन्रीतिविशेष।

—चढ़ा, वि, दुर्ललित, अतिलालित, धृष्ट, उद्रिक्त।

—मुंडा, *स पु, मुंड, लूनकेश, मुण्डितशिर।*

—आँखों पर होना, मु, शिरोधार्य(वि) वृत् (भ्वा आ से), सहर्षं स्वीकार्य(वि) वृत्।

—आँखों पर बैठाना, मु, अत्यन्त सत्कृ, अत्यर्थं सम्-मन्(प्रे)-आदृ (तु आ अ)।

—उतारना या काटना, मु, शिर छिद् (रु प अ), मस्तक क्षुर (तु प से), शिरश्छेद कृ।

—खाना करना, मु, वाग्वार तड (चु), परुष ग्रह (भ्वा प अ)।

—चढ़ाना, मु, दृप्त-उत्सिक्त-अवलिप्त विधा (जु उ अ) २ अत्यन्त लल् (चु)।

—झुकाना, मु, नम् (भ्वा प अ), अभिवद् (प्रे)।

—धुनना, मु, शुच (भ्वा प से) सशीर्षताडन रुद् (अ प से)।

—नीचा करना, मु, त्रप् (भ्वा आ से), लज्ज् (तु आ से)।

—पर, मु, समीपस्थे, निकटे।

—पर खून सवार होना, मु, जिघांसाविष्ट (वि) वृत् (भ्वा आ से), वधोद्यत (वि) भू।

—पर पड़ना, *मु, आ-पत् पत् (भ्वा प से),* उपनम् (भ्वा प अ, षष्ठी के साथ)।

—पर लेना, मु, उत्तरदायित्व उररीकृ, भार स्वीकृ।

—परस्ती करना मु, अनु प्रति पा (प्रे पालयति) सत्कृ (प्रे), साहाय्य कृ।
—पीटना, मु दे 'सिर धुनना'।
—भारी होना, मु भा रेण पूर्णा वा पीड् (कर्म) २ शिरोवेदना वृत्।
—मारना, मु, अत्यन्त प्रयत् (भ्वा आ से) भूरि परिश्रम् (दि प से) ३ सपरिश्रम अविष (दि प से) शिरि (भ्वा उ अ)।
—मुँडाना, मु, परिव्रज (भ्वा प से), सन्यस (दि प से)।
—मूँडना, मु क्षुर् (भ्वा प से, तु), छलेन अपह (भ्वा प अ)।
—सफ़ेद होना, मु, वेदा धवलीभू, पलित शीर्ष (वि) जन् (दि आ से)।
—से कफन बाँधना, मु, निधनोद्यत (वि) भू मरणाय सज्जीभू।
—से पाँव तक, मु आमूलचूल, आपादशीर्ष, आनखशिखम्।
—होना, मु, कलहायते (ना धा), कलहोद्यत (वि) भू।
बिना—पैर का, वि, निराधार, निर्मूल २ असम्बद्ध, अप्रासङ्गिक, असङ्गत।
सिरका, स पु (फा) शुक्त, चौक्तिकम्।
सिरकी, स स्त्री (हिं सरकंडा) शरकाण्ड, इषीकापत्र ३ शरकाण्ड निर्मिता प्रतिसीरा।
सिरजनहार, स पु (स सर्जन>) स्रष्टृ, जगत्कर्तृ, विधातृ (सब पु)।
सिरताज, सं पु (हिं+फा) किरीट २ मु(म)कुट दे ३ शिरोमणि, अग्रणी, पुरोग, श्रेष्ठ, मुख्य, प्रधानम्।
सिरनामा, स पु, दे 'सरनामा'।
सिरपेच, स पु (फा) उष्णीष प दे 'पगड़ी'।
सिरहाना, स पुं (स शिर+धान>) शिरोधानम् (न), खट्वादीनां शिरो-अंग, भाग २ उपधान, सुगन्धि, उपबर्हणं, उच्छीर्ष, बालिश, मसूरक।
सिरा, स पु (स शिरस>) अन्त, प्रान्त, अवधि, सीमा २ ऊर्ध्व शीर्ष भाग, शिखा, शिखर ३ अन्त्य अन्तिम भाग ४ आद्य, आदिम, भाग ५ अग्र, अग्रभाग ६ अणि (स्त्री) अश्रि कोटि (स्त्री)।
सिरिस, सं स्त्री (अ) शृंखला, दे 'सिलसिला'।
सिरोपाव, स पु (स शिर पाद>) सम्मान वेश प।
सिरोही, सं स्त्री (देश०) सिरोहीनगर निर्मित खड्ग, शिरोही।
सिर्फ़, क्रि वि (अ) दे 'केवल'।
सिर्री, वि, दे 'सिड़ी'।
सिल, सिला, सं स्त्री (सं शिला) पाषाण, प्रस्तर, उपल २ शैल, शिलोच्चय, महा प्रस्तर ३ शिला, पट्ट फलक।
—बट्टा, स पुं, शिलावटक, *पेषणपाषाणौ (द्वि)।
सिलना, क्रि अ (हिं सीना) सिव् (कर्म)।
सिलपट, वि (स शिलापट्ट>) सम, समस्थ, सपाट।
सिलबट्टा, स पु (स शिला+वटक>) शिलावटकौ, वेषण, पाषाणौ प्रस्तरौ।
सिलवट, स स्त्री (हिं सिलना) वलि (स्त्री), वलभंग, पुटविटप्।
सिलवाई, सं स्त्री (हिं सिलवाना) सीवन सेवन भृति, अनि भृत्या कर्मण्या।
सिलवाना, (हिं सीना) सिव् (प्रे)।
सिलसिला, स पु (अ) क्रम, आनुपूर्वी, परंपरा २ पंक्ति राजि श्रेणि (स्त्री), ३ शृंखला ४. व्यवस्था, सविधान, विन्यास ५ वंशानुक्रम कुलपरंपरा।
—वार, क्रि वि (अ+फा) क्रमेण, क्रमशः, यथाक्रम, आनुपूर्व्या, अनुपूर्वश।
सिलह, स पु (अ सिलाह) अस्त्र, शस्त्रम्।
—ख़ाना, स पु (अ+फा) शस्त्रशाला, अस्त्रागारम्।
—पोश, वि, सन्नद्ध, शस्त्रास्त्रसज्ज।
सिला[1], सं पु (अ) पुरस्कार, पारितोषिकम् २ परिणाम, फलम्।
सिला[2], स स्त्री, दे 'शिला'।
सिलाई, सं स्त्री (हिं सिलाना) सधि, सीवन २ सीवितवर्त्म, स्यूति (स्त्री) ३ दे 'सिलवाई'।
सिलाजीत, सं पु [स शिलाजतु (न)] अद्रिज, अश्मज, दे 'शिलाजीत'।
सिलारस, स पुं (सं सिल्हरस) द्रु(म)म रस, द्रव रस निर्यास।
सिलिंडर, सं पुं (अं) स्तम्भ वर्तुल (पात्रभेद)।

सिली, सिल्ली, स स्त्री (हिं सिल) शाण, शानी, सानक, शानदमन् (पु)।

सिलौट, सिलौटा, स पु (हिं सिल+बट्टा) शिला-पट्ट फलक २ दे 'सिलबट्टा'।

सिवई, स स्त्री, दे 'सेंवई'।

सिवान, स पु (स सीमान्त) सीमा, प्रान्त, पर्यंत।

सिवाय, क्रि वि (अ सिवा) अपि च, अपर च २ ऋते, विना, अन्तरेण, विहाय, वर्जयित्वा। वि, अधिक, भूयस २ अपेक्षाधिक।

सिवार-ल, स स्त्री पु (स शैवाल) शैवाल —ल, जल,-केश नीली-नीलिका, शैवल, मञ्जिष्ठ-कुन्तलम्।

सिविल, वि (अ) नागरिक, पौर २ सभ्य, शिष्ट।

—डिसओबिडिएंस, स स्त्री (अ) सविनय अवज्ञा।

—सर्जन, स पु (अ) नागरिक शल्यवैद्य।

—सर्विस, स स्त्री (अ) नागरिकसेवा।

सिसकना, क्रि अ (अनु) सास्राद रुद् (अ प मे) २ निघनासन्न (वि) कृ (स्वा आ से)।

सिसकी, स स्त्री (हिं सिसकना) गद्गद-ध्वनि, गद्गदध्वनि।

—भरना या लेना, क्रि अ, दे 'सिसकना'।

सिहरा, स पु, दे 'सेहरा'।

सींक, स स्त्री (स इषीका) इषिका, तृण धान्य-सूक्ष्मनाल-सूक्ष्मकाण्डम्।

सींकर, स पु (हिं सींक) इषीकपुष्पम्।

सींकिया, स पु (हिं सींक) सरेखो वस्त्रभेद।

सींग, स पु (स शृङ्ग) विषाण-म्, कूणिका २ काहल-ला, शृङ्गमयो वाद्यभेद।

(किसी के सिर पर)—**होना** मु, वैशिष्ट्य वृत् (भ्वा आ से)।

—दिखाना, मु, अङ्गुष्ठ दृश् (प्रे), किमप्य दत्त्वा उपहस् (भ्वा प से)।

—निकलना, मु, (पशु) युवा जन् (दि आ स) २ उन्मद् (दि प से), दे 'इतराना'।

—समाना, मु, आश्रय शरण लभ् (कर्म)।

सींगी, स स्त्री (हिं सींग) दे 'सींग' (२)। २ रक्तचूषणशृङ्ग, रक्तचूषणी ३ शृङ्गी, मीन भेद।

—लगाना या तोड़ना, मु शृङ्गेण रक्त निष्कस् (प्रे)।

सींचना, क्रि स (स सेचन) अद्, सिच् (तु प अ), वारिणा अम्बु (प्रे) अभ्युक्ष् (भ्वा प से), अभिवृष् (भ्वा प से), जल दा २ अभि प्र-स, तृप्, अव-आ-नि, सिच ३ अव-वि,-कृ (तु प से)। स पु, अव-आ सेक सेचन, जलप्लावन, अभिवर्षण, अभ्युक्षण, प्रोक्षणम्।

सींचने योग्य, वि अव-आ सेचनीय-सेक्तव्य, अभ्युक्षणीय, अभिवर्षणीय।

सींचने वाला, स पु, सेचक, सेक्तृ, प्रोक्षक।

सींचा हुआ, वि, सिक्त, अभ्युक्षित, जल-प्लावित।

सींह, स पु (देश) शल्य, शल्यक, शल्की, शल्यमृग।

सी, [illegible] स्त्री (हिं सा) समा, तुल्या, सदृशी, सदृक्षी।

सी. आई. डी., स पु (अ) गुप्तचरविभाग, अपसर्प च(चा)र प्रणिधि-विभाग।

सीकर, स पु (स) कण, द्रप्स, पृषत, लव, बिंदु, विप्रुष् (स्त्री) २ शीकर, तुषार ३ प्रस्वेद, घर्म, स्वेदजलम्।

सीख, स स्त्री (स शिक्षा) शिक्षण, विनयन, अध्यापन, अनुशासन, बोधन २ शिक्षाविषय ३ मन्त्रणा, परामर्श, उपदेश।

सीख, स स्त्री (फ़ा) शलाका, धातु-लौह,-दण्ड २ लघुसूक्ष्मयष्टि (स्त्री) ३ शङ्कु, शल्य, महासूचि (स्त्री) ४ (मांसपचनीय) शूल-लम्।

सीख़चा, स पु (फ़ा) दे 'सीख़' (१, ४)।

सीखना, क्रि स (स शिक्षण) शिक्ष् (भ्वा आ से), अधि इ (अ आ अ) अभ्यस् (दि प से), अभ्यासेन विद्यां लभ् (भ्वा आ अ)-प्राप् (स्वा प अ), पठ् (भ्वा प से)। स पु, शिक्षण, अध्ययन, अभ्यास, विद्या,-अर्जन-लाभ, प्राप्ति (स्त्री)।

सीखने योग्य, वि, शिक्षणीय, अध्येतव्य, अध्ययनीय।

सीखने वाला, स पु , छात्र शिष्य , शिक्षक (क्वचित्) अध्येतृ विद्यार्थिन् शिक्षार्थिन् ।
सीखा हुआ, वि (मनुष्य) शिक्षित, कृतविद्य, पठित, प्राज्ञ, बुध । (विषय) शिक्षित, ज्ञात, बुद्ध, पठित, अधीत ।
सीगा, सं पु (अ) शासन विभाग २ व्यव साय , वृत्ति (स्त्री)।
सीझना, क्रि अ (सं सिद्ध>) तापेन सिध् (दि प अ), ऊष्मणा श्री पच (कम), सिद्ध (वि) भू २ (तापादिभि) मृदूभू , मार्दव मन् (भ्वा आ अ) ३ कष्ट सह् (भ्वा आ से) ४ धन शुष् (दि प अ), ऋणनिस्तार जन् (दि आ से) ५ शीतेन वि , गल् (भ्वा प से)।
सीटी, स स्त्री [स सीत्कृति (स्त्री)] शीत्कृत-प्रकार , शीत्कशब्द २ •शीत्करी, वाद्यभेद ।
—बजाना, क्रि अ , शीत्कशब्द कृ । क्रि स , शीत्करीं वद् (प्रे)।
—देना, मु , शीत्कशब्देन आहृ (प्रे)।
सीठना, सं पु (स अशिष्ट>) अश्लील गीत नि (स्त्री), वैवाहिकगालि (स्त्री)।
सीठनी, सं स्त्री (हिं सीठना) दे 'सीठना'।
सीठा, वि (सं शिष्ट>) अरस, विरस, नारस, स्वादहीन।
—पन, सं पु , नीरसता, निस्स्वादता।
सीठी, सं स्त्री (स शिष्ट) (पत्रपुष्पफला दीनां) उच्छिष्टं, नारसांश २ निस्सारद्रव्यं ३ नीरसपदार्थ ।
सील, सं स्त्री (सं शीत>) क्लेद , स्तेम , आर्द्रता २ क्लिन्नभूमि (स्त्री)।
सीढ़ी, सं स्त्री (■ श्रेणी>) सोपान , पथ मार्ग पंक्ति (स्त्री) पद्धति (स्त्री)-पद्वी, अधिरोह(ि)णी, नि(नि) श्रेणी ि (स्त्री), नि(नि)श्रय(यि)णी २ काष्ठनिश्रेणी।
—का डंडा, स पु , सोपानदंड ।
—चढ़ना, मु, क्रमश उत्कर्ष भज् (भ्वा प से)।
सीतल, वि , दे 'शीतल'।
—पाटी, सं स्त्री , •शीतलपट ।
सीतला, सं स्त्री., दे 'शीतला'।
सीता, सं स्त्री (सं) जानकी, मैथिली, वैदेही, अयोनिजा, भूसुता, पार्थिवी । २ फाल रेखा, लांगलपद्धति (स्त्री), हलि (पुं)।
—द्रव्य, म पु (सं न) कृषि-कर्षण, उप करणानि (न बहु)।
—पति, सं पु (स) श्रीराम , राघव ।
—फल, स पु (स) दे 'शरीफा' २ दे 'कुम्हड़ा'।
सीत्कार, सं पु (सं) सीत्,-कृत-कृति (स्त्री), आनंदपीडादिज सीत्शब्द ।
सीध, सं स्त्री (हिं सीधा) सरलायाम , अजमावलि (स्त्री) २ लक्ष्यम् ।
सीधा[1], वि (स शुद्ध>) सरल, वक्रतारहित, ऋजु, अजिम्, प्रगुण २ निर्व्याज, निष्कपट, निश्छल ३ शिष्ट, सुशील ४ शांतस्वभाव, सौम्य, ५ सुकर, सुसाध्य ६ सुबोध, सुगम ७ दक्षिण, अवामसव्य । क्रि वि , सरलं, अवक्रं, अजिह्मम्।
—करना, क्रि स , सरलीप्रगुणी, कृ २ दम् (प्रे), वशीकृ, विनी (भ्वा प अ)।
—पन, स पु, सरलता, वक्रताऽभाव २ आर्जव, सौम्यता, निष्कपटता।
—होना, सरलीप्रगुणी भू २ वशीभू । ३ सन्मार्गं अवलम्ब् (भ्वा आ से)।
सीधा[2], सं पु (सं असिद्ध) असिद्ध-अपक्व अन्न, अन्नम्।
सीधी तरह, क्रि वि , शांत, शास्त्या २ सम्यक्, सुचारूरूपेण ३ धर्मेण, न्यायेन।
सीधे, क्रि वि , सरलं, अवक्र २ दे 'सीधी तरह'।
सीन, स पु (अ) हृदयं, हृदयान्तविषय २ अ(उ)रसिजा, अपदी।
सीनाबंद, सं स्त्री (अ) हृदयप्रदेश , प्राङ्निक हृदय २ रंगसज्जा।
सीना[1], क्रि स (स सीवन) सिव् (दि प से)। स पु , सेवनं, सीवनं, स्यूति (स्त्री), ऊति स्यूति (स्त्री)।
—पिरोना, सं पुं , सूची(चि)-कर्मन् (न) -शिल्पम्।
सीना[2], सं पु (फा) उरस्-वक्षस् (न)।
—ज़ोर, वि (फा) प्रबल, दुर्दम, उद्धत।
—ज़ोरी, सं स्त्री , औद्धत्य, बलात्कार ।
—बंद, सं पु (फा) आंगिक कं, दे 'अंगिया'।
—उभार कर चलना, मु , सदर्प चल (भ्वा प से)।

सीने से लगाना, मु , आलिंग (भ्वा प से), उपगुह (भ्वा उ स)।
सीनियर, वि (अ) वरीयस्-ज्यायस (-सी स्त्री)। स पु , गुरुजन ।
सीनेट, स स्त्री (स) वृद्ध प्रधान-सदा,-सभा।
सीने योग्य, वि सीवनीय, सीवितव्य, सीवनार्ह ।
सीने वाला, स प सेवक सीवनकर्तृ,सीवक ।
सीप, स पु [स शुक्ति (स्त्री)] शुक्तिका मुक्ता,-मातृ(स्त्री)-प्रसू (स्त्री)-स्फोट ,मौक्तिक प्रसवा, तौलिर ।
—सुत, स पु (स शुक्तिसुत) मौक्तिक, मुक्ता, शुक्ति-जबीजम् ।
सीपी, स स्त्री, दे 'सीप'।
—सा मुँह निकल आना, मु अत्यन्तदुर्बल अत्यधिकक्षीण (वि) भू ।
सीमन्त, स पु (स) केशेषु वर्त्मन् (न), दे 'माँग' । २ अस्थिसन्धि ।
सीमन्तिनी, स स्त्री (स) नारी, दे ।
सीमन्तोन्नयन, स पु (स न) गर्भस्थिते षष्ठेऽष्टमे वा मासे करणीय संस्कार (धर्म)।
सीमान्त, स पु (स), सीमा, सीमन् (स्त्री), उपान्त , पर्यंत , प्रान्त २ ग्रामसीमा ।
सीमा, स स्त्री (स) मामन् (स्त्री) अवधि, आधार , प्रान्त , पर्यन्त , मर्यादा २ दे 'सीमन्त'(१)।
सीमित, वि (स) परिमित, सत्मान मर्यादित ।
सीया हुआ, वि , स्यूत, स्यून ।
सीमेंट, स पु (अ) वज्रचूर्णम् ।
सीर स पु (स) हल, हाल २ सूर्य ३ अर्कवृक्ष । स स्त्री, क्षेत्रपते अस्तकृष्ट भूमि (स्त्री)।
—ध्वज, सं पु (स) जनक २ बलराम ।
—में, मु , सभूय, एकत्र मिलित्वा ।
सीरम, स पु (अ) रक्तरस ।
सीरा[1], स पु (फा शीरह) मधु शर्करा,-क्वाथ, दे 'चाशनी' २ लप्सिका ।
सीरा[2], वि (स शीतल) शीत, शिशिर, उष्णत्वशून्य २ शान्त, मौनिन् ।
सील, स स्त्री (सं शीतल>) क्लेद , स्वेद, आर्द्रता ।
सीला[1] वि (स शीतल) आर्द्र, क्लिन्न ।
सीला[2], स पु (स शिल -ल) मुनीना नीव नोपायभेद , मर्यादितक्षेत्रानेकधान्योच्चयनम् ।
सीवन, स पु (स न) सेवन, स्यूति (स्त्री), सूचीकर्मन् (न) २ सीवन, (स्यूति) सन्धि ३ लिंगमध्यस्थ सूत्रम् ।
सीस, स पु (स शीर्ष) दे 'सिर'।
—फूल, सं पु (हिं) *शीर्षफुल्ल', शिरोभूषण भेद ।
सीसा, स पु (सं सीस) सीसक, सिन्दूर कारण, त्रपु (पु न), महाबल, बहुमल, सुवर्णारि , वप्रम् ।
—सीसे का दर्द, सं पु , सीसकशूलम् ।
सी सी, स स्त्री (अनु) सीत्,-कार -कृति, (स्त्री)-कृत, हर्षपीडाशीतादिजनितध्वनि ।
सीह, स पु , दे 'सींह'।
सुँघनी, स स्त्री (हिं सूँघना) नस्यं, दे 'नसवार'।
सुँघाना, क्रि प्रे , बनाओ 'सूँघना' के प्रे रूप ।
सुंदर, वि (स) रुचिर, सुषम, चारु, शोभन, कान्त रुच्य, मंजु, मजुल, मनोहर, मनोज्ञ, मनोरम, (मनो)हारि, रमणीय, रामणीयक, बन्धु(धू)र, पेश(स)ल, वाम, (अभि)राम, नन्दित, सुभग, वल्गु, सुरूप, अभिरूप, दिव्य २ शुभ, भद्र, मंगल ३ उत्तम, श्रेष्ठ, उत्कृष्ट। ('सु' से भी रूप बनाते हैं, जैसे- सुमुखम् ।)
—काण्ड, स पु (सं पु न) लङ्कावर्णनपर पवनसम्बन्धिकृत्य रचित रामायणस्य पञ्चम काण्डम् ।
सुंदरता, स स्त्री (स) सौन्दर्य, रुचिरता, सुषमा, कान्ति (स्त्री), मंजुता, मजुलत्व, मनोज्ञता-त्व, रमणीयता, अभिरूपता, लावण्य, शोभा, रूप, अभिख्या, श्री लक्ष्मी (स्त्री)।
सुंदरी, स स्त्री (स) रूपलावण्यसपन्ना नारी, रामा, वामा, रोचना, वरागना, वरवर्णिनी, सिता । वि (स)रूपवती, मनोज्ञा, रुचिरा।
सुवा, स पु (सं सूचक) *लौहवेधनी, शतघ्नी, शोधनी।
सुबुल, स पु (फा) सुगंधितघासभेद, सुबुल्म् ।
सु, उप. (स) सौन्दर्योत्कर्षभद्रत्वादिबोधक उपसर्ग (उ सुपुत्र इ)।

सुकचाना, क्रि अ, दे 'सकुचाना'।
सुकड़ना, क्रि अ, दे 'सिकुड़ना'।
सुकर, वि (सं) सु-सुख-अयत्न,-साध्य निष्पाद्य कार्य, अनायास।
सुकरता, सं स्त्री (सं) सु-सुख,-साध्यता, सौकर्य्य, सुकरत्वम्।
सुकर्म, सं पु [सं-मन् (न)] सु-सत्-उत्तम पुण्य-श्रेष्ठ,-कर्मन् (न)-कृत्य कार्यम्।
सुकर्मी, वि (सं-र्मिन्) सुकर्मन, सुकृत, सत्क्रिय, सुकर्मशील २ धर्मात्मन्, पुण्यात्मन् ३ सदाचारिन्, सद्वृत्त।
सुकवि, सं पुं (सं) कविवर, सुकाव्यकार।
सुकाल, सं पु (सं) सुसमय २ सुभिक्षम्।
सुकुमार, वि (सं) अति कोमल, मृदु, मृदुल, प्र,-तनु, परि पेलव, श्लक्ष्ण, स्निग्ध। सं पु (सं) सुन्दर-उत्तम,-बालक।
सुकुमारता, सं स्त्री (सं) सौकुमार्य, मार्दव, पेलवता, मृदुलता, तनुता।
सुकुमारी, सं स्त्री (सं) सुन्दर श्रेष्ठ,-कन्या २ दुहितृ (स्त्री), पुत्री। वि (सं) कोमल लांगी, तन्वंगी, तनुगात्री।
सुकुल, वि (सं) महाकुल, अभिजन, सद्वंशज, कुलीन। सं पु (सं न) सु-सद्,-वंश।
सुकुलीन, वि (सं) दे 'सुकुल' वि।
सुकृत, सं पुं (सं न) पुण्य, सद्-सु पुण्य कार्य-कृत्य-कर्मन् (न) वि (सं) सौभाग्यवत्, भाग्यशालिन् २ धार्मिक, पुण्यात्मन् ३ सुविहित।
सुकृति, सं स्त्री (सं) पुण्य, सत्कृत्यम्।
सुकृती, वि (सं-तिन्) धार्मिक, पुण्यवत्, सत्कर्मन् २ सौभाग्यशालिन् ३ प्राज्ञ, बुद्धिमत्।
सुकेशी, सं स्त्री (सं) सुन्दरकेशवती नारी, सुकेशिनी।
सुख, सं पु (सं न) मुद् (स्त्री), मुदा, मुदितता, प्रीति (स्त्री) हर्ष, आ-प्र,-मोद, संमद, शमन् (न), शर्म(सा)न, आ-,नन्द, आ-,नन्द्यु प्र,-मद, भोग, रभस, निर्वृति (स्त्री) सौख्य, चोष।
—**कर**, वि (सं) सुख,-कार-कारिन्-कारक-आवह-द-दायक, सुखंकर।
—**की नींद सोना**, मु, सुख जीव् (भ्वा प से)-वस् (भ्वा प अ)
—**चैन**, सं पु (सं+हिं) दे 'सुख'।
—**दायी**, वि (सं-यिन्) सुख,-द-प्रद-दायक दातृ-आवह, दे 'सुखकर'।
—**देना**, क्रि स, सुखयति (ना धा), सुखी कृ, सुख दा, निर्वृत-सुखिन कृ।
—**धाम**, सं पु [सं-मन् (न)] स्वर्ग, स्वर्लोक।
—**पाना**, क्रि अ, सुखमनुभू सुखायते (ना धा), निर्वृत-सुखित (वि) स्था (भ्वा प अ), सौख्य रम् (भ्वा आ अ)।
—**पाल**, सं पु (सं+हिं पालकी) सुख शिविका।
—**पूर्वक**, क्रि वि, (सं-क) सुखेन, सौकर्येण, सुख, लीलया, अनायासम्।
—**लूटना**, मु, सुखायते (ना धा), यथेष्टसुखम् भुज् (रु आ अ)।
—**साध्य**, वि (सं) सुकर, अयत्नसाध्य।
सुखांत, सं पु (सं न) सुखप्रधान नाटक रूपकं वा २ प्रहसनं (सा)।
सुखागत, सं पु (सं न) स्वागतम्, शुभागमनम्।
सुखाना, क्रि स, बनाओ 'सूखना' के प्रे रूप।
सुखार्थी, वि (सं र्थिन्) सुखैषिन्, सुखेप्सुक, सुखकामिन्।
सुखी, वि (सं-खिन्) सुखित, निर्वृत निवृत्त, स्वस्थ, सुस्थ, निरुद्वेग, शांत, आनंदिन, मुदित, श्रीमन्तिन, प्रसन्न, सानंद, संतुष्ट।
सुखेच्छा, सं स्त्री (सं) सुख-अभिलाषः कामना-वाञ्छा।
सुख्यात, वि (सं) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत।
सुख्याति, सं स्त्री (सं) सुकीर्ति विश्रुति (स्त्री), यशस् (न)।
सुगंध, सं स्त्री (सं पुं) सु, वास, सुरभि, सु, गंध, सौरभ्य, आमोद, परिमल।
सुगंधि, सं स्त्री (सं>) दे 'सुगंध' सं स्त्री। वि (सं) दे 'सुगंधित'।
सुगंधित, वि (सं) सुरभि, सुगंधि, सुवास, आमोद परिमल-वद्-युक्त, सुवासित, सद्गंध, इष्टगंध, घ्राणतर्पण, सुगंधाढ्य।
सुगम, वि (सं) उपगम्य, उपसर्पणीय, सुगम्य, सुख,-गम्य-उपसर्प २ सुबोध, सुज्ञेय ३ सुकर, सुसाध्य, सरल ४ सुलभ, सुप्राप्य, सुप्राप।

सुगमता, स स्त्री (मं) सौकर्य, सुसाध्यता ।
सुगम्य, वि (स) दे 'सुगम' (१) ।
सुग्गा, म प (म शुक) दे 'तोता' [सुग्गी (स्त्री) = शुकी] ।
सुग्रीव, स पु (स) सुकठ , वानरेन्द्र , श्रीरामसख । वि , सुकठ, शोभनग्रीव ।
सुघर, वि (स) सुकर, सुखसाध्य २ सुदर, मनोहर ३ सुघटित, सुरचित, सुरेख ।
सुघटित, वि (स) सुरचित, सुनिर्मित ।
सुघड, वि (स सुघट) सुदर, सुरेख, सुघटित २ निपुण दक्ष, प्रवीण ।
सुघड़(ढा)ई, स स्त्री (हिं सुघड) सुदरता, सुरूपता २ चातुर्य, कौशलम् ।
सुघडता, स स्त्री , दे 'सुघडई' ।
सुघडी, स स्त्री (स सुघटी) सु शुभ,-काल समय -मुहूर्तम् ।
सुघर, वि , दे 'सुघड' ।
सुचित, वि (स सुचित्त) सावकाश, निर्व्यापार २ निश्चित ३ सावधान ।
सुचेत, वि (स सुचेतस्) अवहित, सावधान, प्रमादशून्य ।
सुजन[1], स पु (स) आर्य , सत्पुरुष , भद्रजन , सज्जन दे ।
सुजन[2], स पु (स स्वजन) आत्मीय पारिवारिक, जना सबधिन , बाधवा (सब बहु) ।
सुजनता, स स्त्री (स) सौजन्य, भद्रता, सज्जनता दे ।
सुजाति, स स्त्री (स) सत्कुल, सद्वश , वरान्वय । वि (स) अभिजात कुलीन दे ।
सुजान, वि (स सुज्ञान) प्राज्ञ, बुद्धिमत्, पडित, विज्ञ २ प्रवीण निपुण । स पु , पति २ प्रणयिन्, रमण ३ परमात्मन् ।
सुजाना, क्रि स , दनाओ 'सूजना' के प्रे रूप ।
सुयाना, क्रि स , दनाओ 'सूजना' के प्रे रूप ।
सुठि, वि [स सुष्ठु (अव्य)] सुदर, वर, उत्कृष्ट २ अतिशय, बहु । क्रि वि , सामग्र्येण, सपूर्णतया, सम्यक् ।
सुडपना, क्रि स (अनु सुड-सुड) ससड सुडशब्द पा (भ्वा प अ)-आचम् (भ्वा प से) ।
सुड़कना, क्रि स (अनु सुडसुड) सशब्द सत्वर च निगॄ (तु प से) २ सशब्द श्वस् (अ प से) ।
सुडौल, वि (स सु+हिं डौल) सुरूप, सुरेख, सदाकार, सदाकृति, सुन्दर, सुघटित ।
सुढंग, स पु (स सु+हिं ढग) सुरीति सुरुढि (स्त्री) । वि , सुरूप, सुदर ३ सद्वृत्त ।
सुत, स पु (सं) आत्मज , सूनु , पुत्र दे ।
सुतनु, वि (स) सुगात्र, सुन्दरशरीर । सं स्त्री (स) कोमलाङ्गी, कृशाङ्गी, सुन्दरी ।
सुतराम्, अव्य (स) अत २ अपितु ३ अगत्या ४ अत्यत ५ अवश्यम् ।
सुतली, सं स्त्री दे 'सुतली' ।
सुता, स स्त्री (स) पुत्री, दुहितृ (स्त्री), तनुजा ।
—पति, स पु (स) जामातृ (पु), दे 'दामाद' ।
सुतारी, स स्त्री (स सूत्रकार >) आरा, चर्म, प्रभेदिका प्रभेदिनी-वेधनी, *चर्म,-सूची सीवनी ।
सुतार्थी, वि (स र्थिन्) पुत्र-सन्तान-सन्तति अपत्य,-अभिलाषिन्-कामिन् इच्छुक ।
सुतिनी, स स्त्री (सं) पुत्रवती, सुतवती, प्रजावती, सन्तानवती, ससन्ताना ।
सुतीक्ष्ण, वि (स) अत्यन्त-अत्यधिक, शित शान-तीव्र प्रखर । दे 'तीक्ष्ण' । स पु (स) अगस्त्यभ्रातृ, ऋषिविशेष । २ शोभाजन, तीक्ष्णगध , दे 'सहिजन' ।
सुत्थन, स स्त्री (देश) सुत्स्थणा, *सुत्थान, जघावस्त्रभेद ।
सुथना, स पु } दे 'सुत्थन' ।
सुथनी, स स्त्री } दे 'सुत्थन' ।
सुथरा, वि (स स्वच्छ वा सुस्थ>) स्वच्छ, निर्मल, विमल ।
—पन, स पु , स्वच्छता, नैर्मल्यम् ।
सुदर्शन, वि (स) शोभन, सुरूप, सुन्दर, प्रियदर्शन [सुदर्शना नी (स्त्री)] । स पु (स) सुदर्शनचक्रम् ।
—चक्र, स पु (स न) विष्णुचक्र, सुनाभ, श्रीकृष्णस्यास्त्रविशेष ।
—चूर्ण, स पु (स न) ज्वरौषधभेद ।
सुदामा, स पु (स-मन्) श्रीकृष्णसख । वि (स) सुदातृ ।
सुदिन, स पु (सं न) शुभ, दिन दिवस पुण्याहम् ।

सुदी, स स्त्री (स सुदि अव्य) शुक्ल सित, पक्ष-अद्धमास ।
सुदूर, वि (स) अति-सु-वत् दूर-दूरवर्तिन् दूरस्थ, अतिविप्रकृष्ट, दवीयस, दविष्ठ । क्रि वि (स न) अतिदूरे।
सुदृढ, वि (स) सुस्थिर, सुनिश्चल, सुधीर २ अति,-गाढ-घन-कीकस, दुर्भेद्य ३ अति बलिन्, सुशक्तिमत् ।
सुदेह, वि (स) सुतनु, सुकाय, सुन्दर । स पु (स) सुन्दरशरीरम् ।
सुध, स स्त्री [सं शुद्ध (बुद्धि) >] स्मरण, स्मृति (स्त्री) २ सज्ञा, चैतन्य, उपलब्धि (स्त्री), मति,बोध, चेतना ३ अवधान, वृत्तान्तः ।
—बुध, स स्त्री , चेतना, चैतन्य, सज्ञा ।
—दिलाना, मु , स्मृ (प्रे) ।
—न रहना या **बिसरना,** मु विस्मृ (कम) ।
—बिसराना या **बिसारना,** मु , विस्मृ (भ्वा प अ) ।
—रखना, मु , सावधान जागरूक (वि) स्था (भ्वा प अ) ।
—लेना, मु , वृत्तान्त ज्ञा (क्र् उ अ) ।
बे—, वि , नि सज्ञ, मूर्च्छित २ प्रमादिन् ।
सुधना, क्रि अ (हिं सोधना) शुध् (दि प अ) निर्मलीभू ।
सुध-बुध, स स्त्री (स शुद्धबुद्धि >) दे 'सुध' (१) ।
—जाती रहना या **मारी जाना,** मु , गतचेतन-नष्टसज्ञ नि सज्ञ-मूर्च्छित (वि) भू ।
—ठिकाने न रहना, मु , विक्षिप्त (वि) जन् (दि आ से) ।
सुधरना, क्रि अ (हिं सुधना) दोष त्रुटि, रहित हीन (वि) भू , परि वि-स , शुध (दि प अ), शुद्ध निर्दोष (वि) जन् (दि आ से), प्रतिसमाधा (कर्म) ।
सुधवाना, क्रि प्रे (हिं सोधना) शुध् (प्रे), पू (प्रे), दोष-मल, हीनं कृ (प्रे) ।
सुधांशु, स पु (स) चद्र दे ।
सुधा, सं स्त्री (सं) पीयूष, अमृत दे २ मकरंद , पुष्परस ३ मधु (न) ४ जल ५ दुग्ध ६ विष ७ चूर्ण , दे 'चूना' ।
—कंठ, सं पु (स) पिक , कोकिल ।
—कर, स पु (सं) सुधा,घट दीधिति (पु) धर आधार मयूख रश्मि योनि (पु) -सूति (पु)-निधि , चद्र ।
—कार, स पु (स) सुधाजीविन्, पलगड, लेपक ।
—धौत, वि (स) सुधा चूर्ण, सित क्षालित धवलित ।
—निधि, स पु (स) दे 'सुधाकर' ।
—भोजी, स पु (स भिन्) सुधाभुज , देव ।
—स्पर्धी, वि (स र्धन्) अमृत पीयूष,-उपम सदृश, सुमधुर ।
सुधाना, क्रि प्रे , दे 'सुधवाना' ।
सुधार, स पु (हिं सुधारना) दोष,-हरण-अपनयन, स,शोधन, सस्करण, प्रति ,समाधानम् ।
—करना, क्रि स , स,शुध् (प्रे), निर्दोष दोषरहित विधा (जु उ अ) कृ प्रति , समाधा, सस्कृ ।
सुधारक, स पु (हिं सुधार) सशोधक , दोषहारिन्, सस्कारक ।
सुधारना, क्रि स (हिं सुधारना) दे 'सुधार करना' ।
सुधित, वि (स) सुव्यवस्थित २ सुसम्यक्, पक्व सिद्ध शृत ।
सुधी, स पु (स) पंडित , विद्वस् (पु), २ चतुर, सुबुद्धि ।
सुनना, क्रि स (स श्रवण) श्रु (भ्वा प अ , शृणोति), आ-सम-कर्ण् (चु), निशम् (दि प से वा प्रे निशामयति), श्रवण गोचरीकृ २ अवधा (जु उ अ) ३ भर्त्स नावचनानि श्रु । सं पु , श्रवण, आ-सम, कर्णन, निश(शा)मन, श्रुति (स्त्री) ।
सुनने योग्य, वि , श्रोतव्य, श्राव्य, आ-सम, कर्णनीय, निशामनीय ।
सुनने वाला, स पु , श्रावक , आ-सम,कर्ण यितृ-श्रोतृ (पु) ।
सुन लेना, मु , छलेन यदृच्छया अलक्षित वा श्रु ।
सुना हुआ, वि , श्रुत आ-सम,-कर्णित, श्रवण गोचरीकृत ।
सुनी अनसुनी कर देना, मु , श्रुत्वापि न अवधा (जु उ अ)-उपेक्ष् (भ्वा आ से) ।

सुनय, स पु (सं) सु-उत्तम-श्रेष्ठ, नीति (स्त्री)।
सुनयन, स पु (सं) मृग। वि (सं) सुलोचन।
सुनयना, स स्त्री (सं) नारी। वि (सं) सुलोचना-नी।
सुनवाई, स स्त्री (हिं सुनना) श्रवण, निदा (शा)मन २ व्यवहारदर्शन, कार्य-अवेक्षण विचारणम्।
सुनसान, वि (सं शून्यस्थान>) निर्जन, विजन, विविक्त, एकान्त २ उच्छिन्न, उद्ध्वस्त, पर्जर। स पुं, नीरवता, निःस्तब्धता।
सुनहरा री, वि, दे 'सुनहला'।
सुनहला, वि (हिं सोना) हैम, सौवर्ण, सुवर्ण-वाचल हेम हिरण्य,-वर्ण-आभ।
सुनाई, स स्त्री (हिं सुनना) दे 'सुनवाई' (१, २)। ३ न्याय।
सुनाना, क्रि प्रे, व 'सुनना' के प्रे रूप।
सुनार, स पु (हिं सोना) सुवर्ण हेम,-कार, कलाद, नाडिंधम, मौष्टिक, हैमल।
सुनारी, स स्त्री (हिं सुनार) सुवर्णकार, व्यवसाय वृत्ति (स्त्री) २ सुवर्णकारपत्नी।
सुनावनी, स स्त्री (हिं सुनाना) मृत्युसमाचार, निधनवृत्तम्।
सुनीति, स स्त्री (सं) सुनय, दे २ ध्रुव जननी, उत्तानपादपत्नी।
सुनी सुनाई, स स्त्री (हिं सुनना-सुनाना) किंवदन्ती, जनप्रवाद।
सुनेत्र, वि (सं) सु-सुन्दर,-नयन-नेत्र-लोचन ईक्षण।
सुन्न, वि (सं शून्य>) चेष्टा क्रिया-चेतना स्पन्द, शून्य हीन, जडीभूत, निःस्तब्ध, निश्चेष्ट, निर्जीव, निश्चल। स पु (सं शून्य) बिंदु, खम्।
सुन्नत, स स्त्री (अ) दे 'खतना'।
सुन्ना, स पुं (सं शून्य) बिंदु, खम्।
सुन्नी, स पुं (अ) यवनसम्प्रदायविशेष।
सुपक्व, वि (सं) सुपरिणत २ सुसिद्ध, सुश्रृत, सुश्राण।
सुपथ, स पु (सं) सत्पथ, सन्मार्ग, सुपन्था (पु एक) २ सदाचार, सद्वृत्तम्।
सुपथ्य, स पु (सं न) पथ्य, स्वास्थ्य प्रदाहार।
सुपना, स पु, दे 'स्वप्न'।
सुपरिटेंडेंट, सं पु (अ) पर्यवेक्षक, अध्यक्ष।
सुपर्ण, स पु (सं) गरुड २ कुक्कुट ३ किरण ४ खग।
सुपात्र, सं पु (सं न) योग्यजन, अधिकारि व्यक्ति (स्त्री)।
सुपारी, सं स्त्री (सं सुप्रिय>) क्रमुक, पूग, क्रमुक पूग,-फल, ताम्बूलम्।
—पाक, सं पुं (हिं + सं) पौष्टिकौषधभेद।
सुपास, स पु (देश) सौख्य, सुख दे।
सुपुत्र, स पु (सं) सत्-उत्तम-श्रेष्ठ, पुत्र।
सुपुत्री, स स्त्री (सं) सत्-उत्तम-श्रेष्ठ पुत्री।
सुपुर्द, स स्त्री, (फा) निक्षेप, न्यास।
—करना, क्रि स, निक्षिप् (तु प अ), न्यस (दि प से)।
सुपूत, स पु (सं सुपुत्र, दे)।
सुपूती, स स्त्री (हिं सुपूत) सुपुत्रत्व २ सुपुत्रवती।
सुप्त, वि (सं) निद्रित, निद्राण, शयित २ जडीभूत, निश्चेष्ट, निःस्तब्ध ३ मुद्रित, मुकुलित ४ कर्णविमुख ५ अलस।
सुप्ति, स स्त्री (सं) निद्रा, स्वप्न, स्वाप, शयन, संवेश २ सुप्तागता, अंगजडता, स्तंभ ३ तंद्रा, निद्रालुता-त्वम्।
सुप्रतिष्ठा, स स्त्री (सं) सुख्याति-सुविभूति (स्त्री)।
सुप्रतिष्ठित, वि (सं) सुकीर्तिमत्, सुविख्यात।
सुप्रतीक, वि (सं) सुदर्शन, रूपवत्, सरूप, सुन्दर, सुरूप २ धार्मिक। स पु (सं) शिव २ कामदेव ३ दिग्गजविशेष ४ यक्ष विशेष।
सुप्रदर्श, वि (सं) सुदर्शन, रूपवत्, सुन्दर।
सुप्रसिद्ध, वि (सं) सुविश्रुत, प्रख्यात।
सुफल, सं पु (सं न) सत्परिणाम २ सुन्दर फल। वि सफल, कृतार्थ २ सुन्दरफलयुक्त।
सुबह, स स्त्री (अ) प्रातः, दे।
सुबास, स स्त्री, दे 'सुवास'।
सुबाहु, स पु (सं) राक्षसविशेष। वि (सं) दृढ-सुन्दर,-बाहु-भुज।
सुबुक, वि (फा) लघु, अल्प-लघु, भार २ सुन्दर।
सुबुद्धि, स स्त्री (सं) सुमति (स्त्री.),

सुधियागा, सुधी (स्त्री)। वि (स) बुद्धि धी,मद, पण्डित, प्रय बुध।
सुवृत, स प (अ) प्रमाण, साधन, उपपत्ति (स्त्री)।
—तहरीरी, स पु (अ) व्यक्तप्रमाण, साधन पत्रम्।
सुभ वि दे 'शुभ'।
सुभग, वि (स) सुन्दर, मनोरम २ सौभाग्यवत्, धन्य ३ प्रिय, प्रियतम ४ सुख आनद, प्रद ५. धनाढ्य, ऐश्वर्यशालिन्।
सुभगा, वि (स) सुन्दरी, रूपवती २ जीवित पतिका, स्वधा। स स्त्री (स) पतिप्रिया, पतिवल्लभा।
सुभट, स पु (स) सुसैनिक, सुयोध।
सुभट, स पु (स) सुविदत्त (पु) पण्डितवर।
सुभद्र, वि (स) भाग्यवत् २ श्रेष्ठ। स पु (स न) सौभाग्य २ कल्याण।
सुभद्रा, स स्त्री (सं) श्रीकृष्णभगिनी, अर्जुनस्य भार्या, अभिमन्युजननी।
सुभाग, वि (स) श्री,भाग्यवत्, सुभग। स पु (स) सौभाग्य, सुदैवम्।
सुभागी, वि (स सुभाग>) धन्य, महाभाग, सौभाग्यवत्, सुभाग्य।
सुभाग्य, वि (स) दे 'सुभागी'। स पु (स न) सौभाग्य, दे।
सुभान, अव्य (अ सुबहान) साधु-साधु वादम्।
—अल्ला, धन्योऽसि परमेश्वर! (आश्चर्यादि बोधकं वाक्यम्)।
सुभाव, स पु (स स्वभाव, दे)।
सुभाषित, वि (स) सम्यगुक्त। स पुं (स न) सूक्ति (स्त्री), वरवचनम्।
सुभिक्ष, स पु (स न) सुकाल, अन्नसिद्धा, बहुधान्य।
सुभीता, स पु (स्त्री) सौकर्य्यं सुगमता २ सन्तोष, सुयोग ३ सुख सौविध्यम्।
सुभूषित, वि (सं) सम्यक् अलकृत, सुमण्डित।
सुमगल, वि (स) सुमाङ्गलिक, सुभद्र, शिव, मगल।
सुम, स पु (फा) खुर, शफ, खुर दे।
सुमति, सं स्त्री तथा वि (सं) दे 'सुबुद्धि' सं स्त्री तथा वि।
सुमन, स पु (स सुमनस् न, स्त्री बहु) पुष्प, कुसुम २ सुचित्त, सुहृदयम् (स पु) देव २ पण्डित ३ गोधूम। वि (स) सहृदय, सुचित्त, दयालु।
—चाप, स पु (स सुमनश्चाप) कामदेव।
सुमनस्, स पु, तथा वि दे 'सुमन' सं पु, तथा वि।
सुमरन, स पु, दे 'स्मरण'।
सुमरनी, स स्त्री (हिं सुमरना) (स्मरणस्य जिनुविनावनी) जपमालिका।
सुमात्रा, स पु (स सुमात्रा) मलयद्वीप पुञ्जान्तर्गतमहाद्वीपविशेष, सुवर्णभूमि (स्त्री) द्वीपम्।
सुमार्ग, स पुं (स) दे 'सुपथ'।
सुमित्रा, स स्त्री (स) दशरथपत्नी २ मार्कण्डेयजननी।
—नदन, स पुं (स) लक्ष्मण २ शत्रुघ्न।
सुमुख, स पु (सं स) सुवदन, शोभनाननम्। वि (स) सुवदन, सुन्दरानन २ सुन्दर ३ प्रसन्न ४ कृपालु।
सुमुखा-खी, स स्त्री (स) सुवदनाङ्गी, सुन्दराननाङ्गी २ सुन्दरी ३ दर्पण।
सुमेरु-रु, स पु (सं सुमेरु) मेरु, हेमाद्रि, रत्नसानु, सुरालय २. उत्तरध्रुव ३ जपमालाया वृहद्गुटिका।
सुयश, स पु [स यशस् (न)] सुकीर्ति सुख्याति सुस्तुति सुप्रसिद्धि (स्त्री)।
सुयोग, स पु (स) योग्य-उचित,-काल, समुद्र,-अवसर।
सुयोग्य, वि (सं) सुसमर्थ, सुदक्ष, सुकुशल, सनिपुण सुनिपुण।
सुयोधन, सं पु (स) दुर्योधन।
सुरंग, वि (स) शोभन-सुन्दर-वर,-वर्ण-रंग रम्य। वि, सुन्दर, रुचाकृति, सुरूप।
सुरंगा, स स्त्री (सं सुरं(ङ्)ग-गा) सुर(ङ्) गा, अन्तर्भूमौ मार्ग २ सन्धि, भित्तिप्रा सुर(ङ्)ग-गा, सन्धिक ३ व(मा)नी नि (स्त्री), आकर ४ योधस्फोटिनी सुरंगा (यन्त्रम्)।
—उड़ाना, क्रि स, सुरङ्गं सशब्दं स्फुट् (प्रे)।
—लगाना, क्रि स, सन्धिं कृ अथवा खन् (भ्वा प स)।

—निठाना, मु, समुद्रे पथि वा सुरुगा न्यम् (दि प मे) निक्षिप (तु प अ)।
सुरगिया, म पु (म सौरगिक) सुरुङ्ग (गा)कार।
सुर, स पु (म) अमर, देव देवता दे २ मूय ३ पंडित।
—गज, म पु (स) देवद्विप २ ऐरावत।
—गाय, म स्त्री (म गौ) कामधेनु (स्त्री)।
—गायक, म पु (म) गधर्व।
—गिरि, स पु (स) सुमेरु, मरुपर्वत।
—गुरु, म पु (म) बृहस्पति।
—चाप, म पु (त) सुर इन्द्र धनुस (न)।
—जन[1], स पु (म) देवगण।
—जन[2], वि (स सुजन) सज्जन २ चतुर।
—तरु, म पु (म) कल्पवृक्ष, सुर, द्रुम पादप।
—दारु, स पु (स न) देवदारु (न)।
—द्विप्, स पु (म) असुर, राक्षस २ राहु।
—धाम, स पु [स-मन् (न)] स्वर्ग, नाक, देवलोक।
—धुनी, म स्त्री (म) गगा, देवनदी।
—धूप, म पु (स) राल।
—धेनु, स स्त्री (म) कामधेनु।
—ध्वज, स पु (स) इन्द्रध्वज, सुरकेतु।
—नाथ, म पु (म)सुर,नायक पति पालक इन्द्र इश।
—नारी, म स्त्री (म) सुर-देव,वधू (स्त्री) बाला अगना।
—पथ, म पु (स न) आकाश ग्रम्।
—पुर, म पु (स न) देवपुरी, अमरावती।
—मंदिर, ■ पु (स न) देवालय, मन्दिरम्।
—मणि, म स्त्री (म पु) चिन्तामणि।
—रिपु, म ■ (न) दानव, राक्षस।
—लोक, म पु (स) स्वर्ग, देवलोक।
—वल्ली, म स्त्री (म) तुलसी, वृन्दा।
—वाणी, म स्त्री (म) देववाणी, सस्कृतभाषा।
—श्रेष्ठ, म पु (म) इन्द्र २ शिव ३ विष्णु ४ गणेश ५ धर्म।
—सरि, } म स्त्री (म-सरित्) गगा,
—सरिता, } सुरसिंधु।
—सरी,
सुर, स पु (म स्वर) ध्वनि, नाद, स्वन दे 'सुर'।

—मिलाना, क्रि म, तुल्यस्वरं ■।
बे—, वि विस्वर।
बेसरा क्रि वि विस्वर, अपस्वरम्।
—म सुर मिलाना, मु, नाट्यकर्मि तुष (प्रे) या उपच्छन्द् (चु)।
सुरत[1], स स्त्री [स स्मृति (स्त्री)] स्मरणं, दे सुध[1] (१३)।
—सँभालना, मु, सावधान-अवहित (वि) भू।
सुरत[2], स पु (स न) काम-केली, क्रीडा, संभोग, मैथुन, रतिक्रिया, निधुवनम्।
ग्लानि, म स्त्री (स) रतिनिर्दैथिल्यम्।
सुरता, म स्त्री (स) देवत्व, अमरत्वम्। २ देव-सुर,-समूह -समुदाय ३ पत्नी, माया।
सुरति, म स्त्री, दे 'सुरत' (१-२)।
सुरभि, म स्त्री (स पु न) सुगध, सौरभ, न, वास। (म स्त्री) गौ (स्त्री) २ कामधेनु (स्त्री), सुरभी ३ पृथिवी ४ सुरा।
सुरभित, वि (स) सुरभि, सुगधित दे।
सुरभी, स स्त्री (स) सुगध, दे २ कामधेनु (स्त्री)।
सुरमई, वि (फा) यामुनरग, सौवीरवर्ण, ईषत्-कृष्ण-नील।
सुरमा, स पु (फा-मह्) यामुन, सौवीर, स्रोतोऽञ्जन, कपोताञ्जन, कृष्ण, अजनम्।
—दानी, स स्त्री, यामुन-सौवीर-अजन, आधाना।
—लगाना, क्रि स, (नेत्रयो) सौवीर निविश् (प्र) या अ (प्रे अपयति)।
सुरम्य, वि (म) सुदर, दे।
सुरस, वि (स) मधुर, स्वादु २ सरस, रस युक्त ३ सुदर।
सुरसा, म स्त्री (म) हनुमन्मार्गावरोधक नागमाता (स्त्री) २ राक्षसीविशेष ३ दुर्गा ४ नदीविशेष ५ तुलसी ६ ब्राह्मी।
सुरसुराना, क्रि अ (अनु सुर+सुर>) सृप (भ्वा प अ), मन्द निभृत च गम् २ कडूति अनुभू ३ सुरसुरायते (ना धा)।
सुरसुरी, स स्त्री (स) सुरसुर-सरण, ध्वनि २ कडू-कड्डुनि-खर्जू (स्त्री) ३ कीटभेद।
सुरक्षित, वि (स) सुत, स्वविन, सुत्रात, सुत्राण, सुपालित।
सुरागना, स स्त्री (स) देवी, देवपत्नी, अमरागना २ अप्सरा, स्वर्वेश्या, नाकनर्तकी।

सुरा, स स्त्री (स) मदिरा, वारुणी, हाला, कादंबरी, मद्य दे ।

सुराख़, स पु , दे 'सूराख़'। दे 'छेद'।

सुराग़, स पु (तु) अन्वेषण, अनुसंधान २ पद चिह्न लक्षण सूत्र संधानम् ।

—लगाना क्रि स चिह्नैः मृग (चु) या अन्विष (दि प से)।

—लेना, क्रि स निभृत निरीक्ष (भ्वा आ से)।

सुरागाय, स स्त्री [सं सुरगौ > (स्त्री)] चमर -सृमर [-री (स्त्री)], त्रिविष्टपदेशीय सकरजो गोभेद ।

सुरागी, स पु (फ़ा सुराग़) च(चा)र अपसर्प दे 'भेदिया'।

सुराही स स्त्री (सं) *लघ्वीवघटी,*सुराधि।

—दार वि (अ + फ़ा) सुराधिसन्निभ ।

सुरीला, वि (हिं सुर) सु-मधुर-स्वर स्वन कल, मंजुल कर्णमधुर (राग, कंठादि) २ सु मधुर,-कंठ (गायकादि)।

सुरखुरू वि (फ़ा सुर्ख़रू, दे)।

सुरुचि, सं स्त्री (स) उत्तम, रुचि अभिरुचि शील २ ध्रुवभक्तस्य विमातृ (स्त्री)। वि (स) सुरुचि-उत्तमाभिरुचि, विशिष्ट ।

सुरूप, वि (स) सुन्दर, रूपवत् २ बुद्धिमत्। स पु (स न) वराकृति (स्त्री), सुन्दराकार ।

सुरेन्द्र, स पु (स) देवेश , इन्द्र , सुरेश्वर ।

—चाप, स पु (स) इन्द्रधनुस (न)।

सुर्ख़, वि (फ़ा) रक्त, लो(रो)हित शोण, शोणित, अरुण, कषाय, फल्गुन ।

—होना, क्रि अ., रक्तायते-लोहितायते (ना धा)।

—रू, वि (फ़ा) तेजस्विन्, कांतिमत् २ प्र तिष्ठित, संमानित ३ कृतकार्य ।

—रूई, स स्त्री , कृतकार्यता २ यशस् (न), कीर्ति (स्त्री) ३ संमान , प्रतिष्ठा ।

सुर्ख़ाब, स पु (फ़ा) कोक , चुक , चक्र , चक्रवाक , रथांग , रथांगनामक ।

—का पर लगाना, मु , वैलक्षण्यविशिष्ट (वि) भू (भ्वा आ से)।

सुर्ख़ी, स स्त्री (फ़ा) रक्तिमन्-लोहितिमन्, अरुणिमन् (पु), शोणता, रक्तता २ (लेखा दीनां) शीर्षक ३ रुधिर, रक्त ४ इष्टकाचूर्ण ५. रक्तवर्ण ।

सुलक्षण, सं पु (सं न) शुभ भद्र-सु लक्षण चिह्न-लक्ष्मन् (न)। वि (स) शुभ, शिव, मांगलिक, सुलक्षणयुत २ भाग्यवत्, धन्य ।

सुलगना, क्रि अ (अनु सुल्सुल>) (सधूम) ज्वल् (भ्वा प से) दह् इध् (कर्म), दीप् (दि आ से) २ अत्यंत संतप् (कर्म), दुःखायते (ना धा)।

सुलगाना, क्रि स (हिं सुलगना) उद्दीप्-प्रज्वल (प्रे) सम्,इन्ध (रु आ से) २ संतप (प्रे), पीड् (चु) ३ उत्तिज् उद्दीप (प्रे)।

सुलझना, क्रि अ (हिं उलझना) उद्ग्रथ् (कर्म) विश्लिष् (दि प अ), सरलीभू ।

सुलझाना, क्रि स (हिं सुलझना) उद्ग्रथ् (क्र प से) विश्लिष् (प्रे), सरलीकृ, जटिलता अपनी (भ्वा प अ) २ विवाद शम (प्रे न(शा)मयति)।

सुलझाव, स पु (हिं सुलझाना) विश्लेष , मोचन, सरलीकरणं, जटिलतापनयनम् ।

सुलतान, स पु , दे 'सुल्तान'।

सुलफ़ा, सं पु (फ़ा) तमाखुभेद , *सुल्फ २ दे 'चरस'।

सुलभ, वि (स) सुलभ्य, सुप्राप्य पः २ सरल, सुगम ३ सामान्य, साधारण ।

सुलभता, स स्त्री (स) सुलभत्व, सुप्राप्यता २ सरलता ।

सुलह, स स्त्री (अ) सख्य मैत्री, सौहार्द २ शान्ति (स्त्री), विप्लवाभाव ३ संधि, संधान ४ प्रसादन, समाधानम् ।

—नामा, स पु (अ + फ़ा) संधिपत्रम् ।

सुलाना, क्रि स , व 'सोना' का प्रेरणार्थक रूप ।

सुलूक, स पु , दे 'सलूक'।

सुलेमान, स पु (अ) सुलेमान , देवदूतो नृपविशेष २ पर्वतविशेष ।

सुलेमानी, वि (अ) सुलेमानसंबंधिन् । सं पु (अ) सितकृष्णोऽश्व २ श्वेतकृष्ण प्रस्तर भेद ।

सुलोचन, वि (सं) सुनयन, सुनेत्र । सं पु (स) दैत्यविशेष २ मृग ३ चकोर ।

सुलोचना, वि स्त्री (सं) सुनयनी-ना। सं. स्त्री (स) मेघनादपत्नी ।

सुल्तान, सं पुं (अ) नृप , राजन्, सम्राज् ।

सुल्ताना, स स्त्री (अ) सम्राज्ञी, राज्ञी, नृपपत्नी ।

सुल्तानी, वि (अ) राजकीय २ रक्तवर्ण। स स्त्री , रानि, पद अधिकार र ज्य ३ कौशेयवस्त्रभेद ।

सुवर्ण, स पु (स न) स्वर्ण, काञ्चन, दे सोना"। २ धन, वित्तम् । वि (स) सुंदर-रम्य,-वर्ण रंग २ हेमवर्ण ३ कुलीन, अभिजात ।

—कार, स पु (स) दे सुनार'।

सुवास, स पु (स) सुगंध दे २ सु, सदन भवन-गृह, सुंदर,-निवास निलय ।

सुविचार, स पु (स) सद्विमर्श २ सुनिर्णय, सुन्याय ।

सुविधा, स स्त्री , दे 'सुभीता'।

सुवृत्त, वि (स) सदाचारिन् सच्चरित्र २ गुणिन् ३ साधु ४ सुच्छन्दोविशिष्ट(काव्य)।

सुवेश प, वि (स) सुन्दरवेषशा, सुवसन, सुवेशि(षि)न् २ सुन्दर, सुरूप।

सुशिक्षा, स स्त्री (स) सच्छिक्षा सुन्दर, अनुशासन-अनुशिष्टि (स्त्री)।

सुशिक्षित, वि (स) सुविनीत, व्युत्पन्न, सुपाठित, सूपदिष्ट २ शिष्ट, सम्भ्रान्त प्रबुद्ध।

सुशील, वि (स) सत्-उत्तम, शान्त स्वभाव प्रकृति, शीलवत्, सभ्य, दक्षिण २ सच्चरित्र, सदाचारिन् ३ नम्र, विनीत ४ सरल, ऋजु।

सुशीलता, स स्त्री (स) शीलवत्ता, दाक्षिण्य, सभ्यता, शिष्टता २ सच्चारित्र्य, सद्वृत्ति (स्त्री) ३ नम्रता ४ आर्जवम्।

सुश्री, वि (स) अति,-सुंदर-रम्य-मनोहर २ महा-वसु, धन, सुसपन्न, सुसमृद्ध।

सुषमा, स स्त्री (स) शोभातिशय, सुंदरता, दे ।

—शाली, वि (स) अतिसुंदर, सुषमित।

सुषिर, सं पु (स न) विविर, छिद्र २ वंश्या दिवाद्यम्। वि (स) सच्छिद्र, सरंध्र।

सुषुप्त, वि (स) गाढं शयित सुप्त निद्राण, गाढनिद्रामग्न।

सुषुप्ति, स स्त्री (स) सु-गाढ, निद्रा-स्वप्न स्वाप सुप्ति (स्त्री)-शयन-संवेश २ अज्ञान (वे) ३ चित्तवृत्तिभेद (यो)।

सुषुप्सु, वि (स) शिशयिषु, निद्रा,-आकुल आतुर।

सुषुम्ना, स स्त्री (स -णा) इडापिंगलामध्यगा मध्यनाडी, नाडी, पृष्ठवंश ।

सुष्ट, वि (स दुष्ट का अनु) शुभ, भद्र २ सुंदर।

सुष्ठु, अव्य (स) अत्य त, सातिशय २ सम्यक्, सुचारु ३ यथायोग्य, अवितथम्।

सुष्ठुता, स स्त्री (स) मंगल, शिव २ सौभाग्य ३ सौ दयम्।

सुसंगति, स स्त्री (स) सु-सत् साधु-उत्तम, संग संगम -समागम -संगति ।

सुसज्जित, वि (स) सुप्रसाधित, सुमंडित, सुभूषित, सुपरिष्कृत स्वलंकृत।

सुसताना, क्रि अ (फा सुस्त) विश्रम् (दि प से), आ वि-रम् (भ्वा प अ), कार्यात् निवृत् (भ्वा आ से), श्रम अपनी (भ्वा प अ)।

सुसमय, स पु (स) सुकाल २ सभिक्षम्।

सुसर रा, स पु (स श्वशुर) दे ससुर'।

सुसरार-ल, स स्त्री (स श्वशुरालय) दे 'ससुराल'।

सुसरी, स स्त्री (हि ससुर) दे 'ससुरी'।

सुस्त, वि (फा) अलस(क), आलस(स्य),-कार्य-उद्योग, विमुख, मंद, मथ(द)र, शीतक,-तुंद, परिसृत परिमार्न २ निर्बल ३ निस्तेजस्क, हतप्रभ ४ मंद,-गति-वेग ५ स्थूल मंद, बुद्धि ६ रुग्ण, दे 'रोगी'।

सुस्ताना, क्रि अ , दे 'सुसताना'।

सुस्ती, स स्त्री (फा) आलस्य माद्य, उद्योग कार्य, विमुखता-द्वेष २ तेजोहीनता, निष्प्रभता ३ रोग ।

—करना, क्रि अ , समय व्यर्थं नी (भ्वा प अ) अलस निर्व्यापार-उद्योगशून्य (वि) स्था (भ्वा प अ) २ विलंब (भ्वा आ से), चिरा(र)यति (ना धा)।

सुस्थिति, स स्त्री (स) सुंदर-सुखद, स्थिति (स्त्री)-अवस्था-दशा । २ सुख, मंगलम् ३ स्वास्थ्यम्।

सुस्थिर, वि (स) अचल, निश्चल २ सुदृढ, धीर।

सुस्पर्श, वि (स) कोमल, मृदुल, चिक्कण,-श्लक्ष्ण।

सुस्मिता, स स्त्री (स) स्मेरमुखी, प्रसन्न-प्रफुल्ल,-मुखी-आननी-वदना।

सुहबत, स स्त्री , दे 'संगत'।

सुहाग, स पु (सं सौभाग्य) सुभगत्व, पतिमत्त्वीत्व, २ वरस्य वैवाहिकवस्त्र, दे 'जामा' ३ वैवाहिक मंगलगीतम् ।

—पिटारा, सं पु, *सौभाग्यपिटक ।

—पुड़ा, स पु, सौभाग्यपुट ।

सुहागा, सं पु (सं सुभग) टंकण-न, कनकक्षार, रसशोधन, बिट, लोहद्राविन्, स्वर्णपाचक ।

सुहागिन नी, स स्त्री (हिं सुहाग) सधवा, पतिवत्नी, सनाथा, सभर्तृका, जीवत्पतिका ।

सुहाता, वि (हिं सुहाना) शोभन, सुन्दर ।

सुहाता, वि (हिं सहना) सहनीय, सह्य । २ कोष्ण, मन्दुष्ण (जल) ।

सुहाना, क्रि अ (स शोभन) विराज्, शुभ (भ्वा आ से) २ रुच् (भ्वा आ से), रुचिकर वृत् (भ्वा आ से) ।

सुहावना, वि (हिं सुहाना) शोभन, प्रिय सुभग,-दर्शन, सुन्दर दे । [सुहावनी (स्त्री)= शोभना] । क्रि अ, दे 'सुहाना' ।

—पन, स पु, सौन्दर्य, मनोहरता ।

सुहृद्, स पु (सं) सखि, मित्र, वयस्य ।

सुहृदय, वि (स) शुचित्त, सुमनस्क २ सहृदय, स्नेहशील ।

सूँघना, क्रि स (स शिंघन) शिंघ् (भ्वा प से), आ-उपा-स, घ्रा (भ्वा प अ), घ्राणेन्द्रियेण गंध ग्रह् (क्र्या प से) २ अत्यल्पं भक्ष् (चु) ३ (सर्पादि का) दंश् (भ्वा प अ) । स पु, उपा-आ,-घ्राण, घ्राति (स्त्री) गन्धग्रहणम् ।

सिर—, सु, शिरसि आ-सम-उपा, घ्रा ।

सूँघनी, सं स्त्री (हिं सूँघना) नस्य, दे 'नसवार' ।

सूँघने योग्य, वि, घ्रातव्य, घ्रेय, शिंघनीय ।

सूँघने वाला, स पु, शिंघक, घ्रातृ, गंधग्राहक ।

सूँघा सं पु (हिं सूँघना) निष्काद्, मृगयाकुक्कुर, आखेटिक २ *निधिज्ञातृ ३ चर(चा)र, अपसर्प ।

सूँघा हुआ, वि, शिंघित, घ्रात, घ्राण, गृहीतगंध ।

सूँड, स स्त्री (स शुंड) शुंडा,-दंड, शुंडार, हस्ति,हस्त, करि,कर ।

सूँस, सं पु [सं शि(शि)शुमार] अंबुकपि, असि,पुच्छ पुच्छ, शिशुक, महाशन, उष्णवाष्प, उलु(लू)पिन् ।

सूँ सूँ, स स्त्री (अनु) *सूं,-कार ध्वनि (स्त्री) ।

—करना, क्रि अ, नासिकया सूँ कृ अथवा सूँ सूँध्वनिं कृ ।

सूअर, स पुं [स सू(शू)कर] वराह, रोमश, किरि, दंष्ट्रिन, क्रोड, पोत्र-दन्त,रद, आयुध, घृष्टि, कोल, भेदन, घोणिन्, पोत्रिन् २ (गाली) अधमजन, गृध्नु ।

—का मांस, स पु, शूकर-वराह,-मांसम् ।

सूअरी, स स्त्री [स सू(शू)करी] क्रोडी, वराही, घृष्टि इ ।

सूआ¹, स पु (स शुक) कीर, दे 'तोता' ।

सूआ², स पु (स सूचा) सूचक, स्थूल बृहद्, सूची ।

सूई, स स्त्री (स सूची) सूचि (स्त्री), व्यधनी, सूचिका, सी(से)वनी २ घटीसूची ।

—पिरोना, क्रि स, सूची सम् सूत्र कृ या सूत्रग सूत्रयति (ना धा) ।

—का काम, स पु, सूचीकर्मन् (न) ।

—का नाका, स पु, सूची,छिद्र-रन्ध्र-सुषिर पाश ।

—की नोक, सं स्त्री, सूच्यग्र, सूचिकाग्रम् ।

—तागा, स पु, *सूची,-सूत्र डोरम् ।

—का भाला या फावड़ा बनाना, मु, अणु पर्वतीकृ, अत्युक्त्या वर्ण् (चु) ।

सूकर, स पु (स) दे 'सूअर' ।

सूकरी, स स्त्री (स) दे 'सूअरी' ।

सूक्त, सं पु (स न) वेदमंत्र भाग,-समूह २ उत्तमवचनं ३ महावाक्यम् । वि (स) साधु कथित, सम्यगुक्त ।

सूक्ति, स स्त्री (स) सुभाषित, सुन्दरवचनं, सुन्दर-वर,-वचन-वाक्य-उक्ति (स्त्री) ।

सूक्ष्म, वि (स) अति-अत्यन्त, अल्प क्षुद्र-तनु दभ्र-लघु-स्तोक-सुक्ष्म शुक्ष्म २ दुर्बोध, गहन, गूढ ३ अति,-तनु विरल श्लक्ष्ण ।

—कोण, स पु (सं) लघुकोण ।

—दर्शकयंत्र, सं पु (स न) अणुवीक्षण यंत्रम् ।

—दर्शिता, स स्त्री (सं) कुशाग्रबुद्धि (स्त्री)-प्रत्युत्पन्नमतित्वम् ।

—दर्शी, वि (स र्शिन्) कुशाग्र,बुद्धि-मति, सूक्ष्मदृष्टि, गूढज्ञ, सुविचक्षण, प्रत्युत्पन्नमति।
—भूत, स पु (स न) अपञ्चीकृत-आकाशादि भूतम्।
—मति वि (स) तीक्ष्ण-तीव्र-कुशाग्र,-बुद्धि मति।
—शरीर, स पु (स न) सूक्ष्म लिंग, देह शरीरम्।
सूक्ष्मता, सं स्त्री (स) सूक्ष्मत्व, अति, लघुता-अल्पता-स्तोकता २ सु-अति,-तनुता विरलता, श्लक्ष्णता ३ दुर्बोधता, गहनता, गूढता-त्वम्।
सूखना, क्रि अ (स शोषणं) शुष् (दि प अ), शोष-शुष्कता या (अ प अ), शुष्क निर्जल-नीरस (वि) भू २ कान्ति प्रभा, हीन (वि) भू ३ नश् (दि प वे) ४ कृश दुर्बल (वि) जन् (दि आ से) ५ भी (जु प अ), सद् (भ्वा प अ) ६ विनृ (कर्म), म्लै (भ्वा प अ)। स पु, शुष, शाष, शोषा, शुषी-षि (स्त्री)।
सूखा, वि (स शुष्क) निर्जल, निरुदक, अरस, विरस, नीरस, वान २ निष्प्रभ, कान्तिहीन ३ नष्ट, ध्वस्त ४ कृशाङ्ग, दुर्बल विशीर्ण, म्लान ६ परुष, कठोर, निर्दय ७ केवल, शुद्ध। स पु, अनावृष्टि (स्त्री) अवर्षण, अवग्रा(ग्र)ह २ नदी, तीर-कूल ३ निर्जलस्थान ४ शुष्कतनुत्व ५ (बाल-काना) कासभेद, शोष ६ दौर्बल्य, कृशाङ्गता ७ भङ्गा, दे 'भाँग'।
—पड़ना, क्रि अ, वृष्टि-वर्ष-विरम निरोध वृत् (भ्वा आ से)।
—जवाब देना, मु, स्पष्ट निराकृ वा प्रत्याख्या (अ प अ)।
सूखा हुआ, वि दे 'सूखा' (१-७)।
सूखकर काँटा होना, मु, अस्थिरा अस्थिशेष (वि) जन, अत्यंत क्षि (भ्वा प अ)।
सूखे खेत लहलहाना, [illegible], सुदिवसा आगम्।
सूचक, स पु (स) सूचीचि (स्त्री), दे 'सुई' २ दे 'सूचक' ३ सू(सौ)चिक, सौचि, तुन्नवाय, सूचभिद्, दे 'दरजी' ४ सूत्रधर ५ कथक ६ कुक्कुर ७ खल, विश्वसनाकर ८ गुप्त,चर-चार ९ पिशुन, कर्णेजप १० शिक्षक। वि (स) ज्ञापक, बोधक, निर्देशक निदर्शक।
सूचना, स स्त्री (स) विज्ञापना, आ,-ख्या पना, विज्ञप्ति (स्त्री) २ दे 'सूचनापत्र' ३ वार्ता, सदेश, ज्ञान, बोध।
—पत्र, स पु (स न) विज्ञापन विज्ञप्ति-घोषणा-प्रसिद्धि, पत्रम्।
सूचनीय, वि (स) बोधनीय, ज्ञापनीय, ज्ञापयितव्य, आवेदनीय।
सूचि, स स्त्री (स) दे 'सूई'।
सूचित, वि (स) ज्ञापित, बोधित, आ,-ख्यापित, कथित, प्रकाशित।
सूची, स स्त्री (स) दे 'सूई' २ अनुक्रमणी णिका, नामावली लि (स्त्री) परि,-गणना-सख्या।
—कर्म, स पु [सं-र्मन् (न)] कलाभेद।
—पत्र, स पु (स न), सूचि(ची) पुस्तक-पत्रकम्।
—भेद्य, वि (स) सीवनीच्छेद्य २ घन, निबिड (अन्धकार)।
सूजन, स स्त्री (हि सूजना) शोथ, शोफ, गड।
सूजना, क्रि अ (फ़ा सोजिश) सशोथ-सशोफ (वि) सजन् (दि आ से), श्वि (भ्वा प से), स्फाय् (भ्वा आ से)। स पु, दे 'सूजन'।
सूजनी, स स्त्री (फ़ा सोज़नी) कुथभेद सूचिनी।
सूजा, स पु (स सूचा>) दे 'सूआ' २. वेधनी, वेधनिका।
सूज़ाक, स पु (फ़ा) मूत्र, उष्णवात, रतिजरोगभेद।
सूजा हुआ, वि, शून, स्फीत, सशोफ, शोथयुत।
सूजी, स स्त्री (स शुचि>) कणिक।
सूझ, [illegible] स्त्री (हि सूझना) कल्पना, उद्भावना २ बोध, ज्ञान ३ दृष्टि (स्त्री)।
—बूझ, स स्त्री, बुद्धि-मति (स्त्री)।
सूझना, क्रि अ (स सुध्यानम्) दृश-लक्ष (कर्म), अवगम् (भ्वा आ से), प्रतिभा (अ प अ) २ (मनसि विचार) आविर्भू अथवा उत्पद् (दि आ अ)।
सूट, स पु (अ) आदल,-वेश (ष)-परिधानं २ सनवेश-भ

—केस, स पु (अ) वेश(ष)कोष ।

सूटा, स पु (अनु) (तमाखुप्रभृतीनां) धूम,-कर्ष कृष्टि (स्त्री) ।

सूत[1], स पु (स सूत्र) तन्तु, डोर, शुल्व २ सूत्र, यज्ञोपवीत ३ मेखला, काञ्ची ।

—धार, स पु, दे 'बढ़ई' ।

सूत[2], स पु (स) वर्णसंकरजातिभेद, क्षत्रियात् ब्राह्मणीसुत २ सारथि, यन्तृ, क्षत्तृ, हयरथ ३ चारण, वन्दिन्, वैतालिक ४ पुराणवक्तृ, पौराणिक । [सूती (स्त्री)] वि (स) प्रेरित २ उत्पन्न ।

—पुत्र, स पु (स) सारथिज २ सारथि ३ कर्ण ४ कीचक ।

सूतक, स पु (स) जन्माशौचम् २ मरणाशौचम् ३ सूर्य चन्द्र,-ग्रहण, उपराग ।

सूतली, स स्त्री (हि सूत) सूत्र, डोर, गुण, रज्जु (स्त्री), शुल्व, शुल्वम् ।

सूति, स स्त्री (स) प्रसूति (स्त्री), प्रसव, जननम् २ सन्तति (स्त्री), सन्तान ।

—गृह, स पु (स न) दे 'सूतिकागृह' ।

—मारुत, स पु (सं) प्रसव प्रसूति, पीडा वेदना, सूतिवात ।

सूतिका, स स्त्री (स) सद्य नव, प्रसूता, दे 'जच्चा' ।

—गृह, स पु (सं न) अरिष्ट, सूतिकागार, प्रसव सूति,-गृह भवन आवास गेहम् ।

सूती, वि (हिं सूत) कार्पास, कार्पासिक, तूल-तूलक पिचु-पिचुल, निर्मित सवधिन् ।

—कपड़ा, स पु, कार्पास, फाल, बादर, तूलाम्बरम् ।

सूत्र, स पु (स न) तन्तु, डोर, शुल्व, शुल्वं २ यज्ञ,-सूत्र-उपवीत ३ प्राचीनमानभेद ४ रेखा था, लेखा ५ मेखला, काञ्ची ६ नियम, व्यवस्था ७ समास सक्षिप्तवचन ८ कारण, मूल ९ संधान दे 'सुराग' ।

—कंठ, सं पु (सं) ब्राह्मण २ कपोत ३ खञ्जन, खञ्जरीट ।

—कर्म, सं पु [स -मन् (न)] दारुकर्मन्, तक्षशिल्प २ रूपकर्मन्, इष्टकान्यास, वास्तु निर्माणम् ।

—कार, सं पु (स) सूत्र,-कर्तृ प्रणेतृ-रचयितृ इ० ।

—ग्रंथ, स पु (स) सूत्ररूपेण रचित पुस्तकम् ।

—धार, स पु (स) नाटकीयकथासूत्रसूचक प्रधाननट, नाट्यशालाव्यवस्थापक, सूत्रभृत् २ तक्षन्, रथकार ३ इन्द्र [धारी (स्त्री) सूत्रधारपत्नी] ।

—पात, स पु (स) उपक्रम, प्र,आरंभ ।

सूथनी, स स्त्री, दे 'सुथन' ।

सूद[1], स पु (फ़ा) लाभ, प्राप्ति (स्त्री), आय, फल, अर्थ २ वृद्धि (स्त्री), वार्द्धुष्य, कला कायिका, कारिका, कालिका ।

—खाना, क्रि स, वार्द्धुष्य ग्रह् (क प से) ।

—खोर, स पु (फ़ा) कुसी(सी पा)द दक, कुसीदिन्, वार्द्धुषिक, वार्द्धुषिन्, वृद्ध्याजीव ।

—खोरी, स स्त्री, कुसीद, कौसीद्य, वृद्धि, जीवन जीविका ।

—दर सूद, स पु (फ़ा) चक्रवृद्धि (स्त्री) ।

—पर देना, क्रि स, कुसीद कृ ।

—पर लेना, क्रि स, वृद्ध्या ऋण ग्रह् ।

—बट्टा, स पु, हानिलाभौ, आयापायौ ।

बे—, वि, वृद्धि-फल,-रहित २ निष्फल, व्यर्थ ।

सूद[2], स पु (स) पाचक, सूपकार २ व्यञ्जन, दे 'भाजी' ३ सारथ्य ४ अपराध ५ पापम् ।

सूदन, वि (स) नाशक, घातक ।

सूदी, वि (फ़ा) सवार्द्धुष्य, सफल (दत्त आदत्त वा) ।

सूना, वि (स शून्य) निर्जन, विजन, विविक्त, जन,-हीन शून्य २ रिक्त, -विरहित, -हीन, वञ्चित, तुच्छ, निर- । स पु (स न) एकान्त, विविक्त, निर्जनस्थानम् ।

—पन, स पु, शून्यता, विजनता, विविक्तता २ रिक्तता ३ एकान्त ।

सूनु, स पु (सं) पुत्र २ अनुज ३ दौहित्र ।

सूप[1], स पु (स शूर्प से) प्रस्फोटन-नी, कुल्य, शूर्प ।

सूप[2], सं पु (स, मि अं सूप) पक्व-सिद्ध, दालि लि (स्त्री) २ दालिरस ३ सरसव्यञ्जन ४ सूद ।

—कार, सं पु (सं) सूद, औदनिक, आंधसिक, पाच(च)क, भक्ष्यकार ।

सूफ, स पु (अ) दे 'ऊन'।
सूफ़ी, स पु (अ) यवनमप्रदायविशेष । वि शुद्ध, पवित्र ।
सूबा, स पु (अ) प्रान्त प्रदेश , देशभाग ।
सूबेदार, स पु (अ +फा) प्रान्त, अधिपति शासक अध्यक्ष , ओपति २ सेनाधिका रिभेद ।
सूबेदारी, स स्त्री (अ +फा) भोगपतित्व, प्रान्ताधिपतित्व २ ३ प्रान्ताधिपति ,पद कमन् (न)।
सूम¹, वि (अ शूम=अशुभ) कृपण, मितपच दे 'कंजूस'।
सूम , स पु (स) जल, सौम्य २ दुग्ध, क्षीरम् ३ गगनं, आकाश शून् ।
सूय, स पु (स पुं न) सोमसोमलता, निष्पीडन संपीडनम् २ दक्ष , याग , मेघ , मख ।
सूर¹, स पु (स) सूर्य २ अर्कवृक्ष ३ पण्डित ।
सूर², स पु, दे 'शूर'।
सूर³, स पु, दे 'सूअर'।
सूरण, स पु (स मय , दे)।
सूरत, सं स्त्री (फा) रूप, आकार , आकृति (स्त्री) २ सौन्दर्यं, छवि (स्त्री) ३ युक्ति (स्त्री), उपाय , विधि ४ दशा, अवस्था ।
—दिखाना, मु, प्रकटनि (ना धा) समुख (?) आया (अ प अ)।
—बनाना, मु वेष परिवृत (प्रे) २ अन्यरूप ग्रह् (क्र प मे) ४ (चु) ३ आकृति प्रकटयति (ना धा), विरच (चु) ४ चित्र लिख (भ्वा प सै)।
—बिगडना, मु , वदन विवर्ण भू (दि आ से)।
—बिगाडना, मु , मुखं विरूपयति (चु),कुरूप विधा (जु उ अ) २ दंड (चु) ३ अप अवमन् (प्रे) अवज्ञा (क्र प अ)।
—शक्ल, स स्त्री (फा +अ) आकृति (स्त्री)।
सूरदास, सं पु (स सूर्यदास) हिन्दीभाषाया श्रीकृष्णभक्तो महाकविविशेष २ अन्ध, प्रज्ञाचक्षुक ।
सूरन, स पु [स सू(शू)रण] अर्शोघ्न , ओल कन्द, वातारि , सुवृत्त , बहुरुच्य,कन्द , दे 'जमींकंद'।
सूरमा, स पु (स शूरमानिन्) शूर , वीर , योध , भट , विक्रमशील ।
—पन, स पु , शौर्य, वीरत्व,विक्रम , साहसम् ।
सूरसागर, स पु (सं) भक्त सूरदासरचित श्रीकृष्णलीलावर्णनात्मक काव्यविशेष ।
सूराख, स पु (फा) छिद्र, बिल, विवर, रन्ध्र सुषि (स्त्री)।
—करना, क्रि स, छिद्रयति (ना धा), मसुक्ष (?) (चु प से)।
—दार वि , सच्छिद्र, सरन्ध्र ।
सूर्य स पु (स) सूर , आदित्य , भास्कर , (?) प्रभा विभा दिवा,-कर , मार्तण्ड, विवस्वत्, उष्ण तिग्म चंड,-रश्मि ,-कर , अर्क , मार्तण्ड , मिहिर , तरणि , मित्र , सवितृ, अंशु-मरीचि,-मालिन्, सहस्रांशु , रवि , दिन अह , पति , तपन , पद्मिनीवल्लभ , दिनमणि , सप्त -अश्व - सप्ति तापन , दिवा,-मणि , पतंग ,ग्रहराज , तमोनुद ।
—कांत, स पु (स) सूर्य-तपन, मणि , रविकान्त , सूर्याश्मन, अग्निगर्भ अर्क-दीप्त, उपल ।
—ग्रहण, स पु (स न) सूर्योपराग , सूर्यग्रह ।
—घड़ी, स स्त्री (स सूर्यघटी) शङ्कुयन्त्रम् ।
—तनय, स पु (स) सूर्य, पुत्र -सुत -नन्दन , कर्ण २ शनि , शनैश्चर ३ यम ४ सुग्रीव ५ अश्विनौ (द्वि)।
—तनया, स स्त्री (स) सूर्यपुत्री, सूर्यतनया, यमुना भानु -जा-तनया ।
—मंडल, स पु (स न) उपसूर्यक, परिधि , परिवेश , मंडल, सूर्यबिम्बम् ।
—मुखी, स स्त्री (सं) सूर्यलता, आदित्य भक्ता, वरदा,अर्ककान्ता, भास्करेष्टा, अर्कहिता।
—मुखी का फूल, स पु, सूर्यकमल, वरदा पुष्पम् ।
—रश्मि, स स्त्री (स प) रवि -किरण -पाद कर ।
—लोक, स पु (सं) सौरभुवन, लोक विशेष ।
—वंश, स पु (स) रविकुलम् ।
—वंशी, वि (स शिन्) सूर्यवंश्य, रविकुलज ।
—वार, स पु (सं) रवि-आदित्य,-वार वासर ।

—संक्रांति, स स्त्री (स) रविसंक्रमणम्। प्रात का—म पु, बाल-रवि-सूर्य-अर्क ।
सूर्यास्त, स पु (स) अस्त, अस्तमनं, निम्लोच, भानोरस्ताचलगमनं २ दिनान, सायंकाल ।
—होना, क्रि अ, सूर्य अस्त इ-या (अ प थ)-गम्।
सूर्योदय, स पु (सं) भानूद्गम २ प्रात काल ।
—होना, क्रि अ, सूर्य उद् इ (अ प अ)-उद्गम्।
सूल, स पु, देखो 'शूल'।
सूली, सं स्त्री (स शूल-ल) शूला, तीक्ष्णाग्र स्थूणा २ शूलारोपण, प्राणदंडप्रकार ३ वध पाशरज्जु, दे 'फाँसी' ४ दंडपाशवध, कंठ उद्बध्य घात, उद्बधन ५ प्राण-मृत्यु-दंड ।
—चढ़ाना या—देना, क्रि स, शूले आरुह(प्रे आरोपयति) २ उद्बध्य व्यापद् (प्रे) या हन् (अ प अ)।
—चढ़ाने या—देनेवाला, दंडपाशिक, वधक शूलारोपक ।
सूस, सूसमार, सं पु (स शिशुमार) दे 'सूँस'।
सूहा, वि (हि सोहना) रक्त, शोण, लोहित।
सृजन, स पु (स सृजन) उत्पादन, निर्माण, रचनं २ सृष्टि-उत्पत्ति (स्त्री) ३ मोचनम्।
—हार, स पु, स्रष्टृ, उत्पादक, विधातृ।
सृजना, क्रि स (स सर्जन) सृज् (तु प अ), उत्पद् (प्रे), विधा (जु प अ)।
सृष्टि, सं स्त्री (स) संसार-उत्पत्ति (स्त्री) -सर्ग निर्माण-रचना २ जगत् (न), संसार, चराचर वस्तुजात ३ प्रकृति (स्त्री), दे 'कुदरत'।
—कर्ता, स पु (सं तृ) स्रष्टृ, वेधस, विधातृ, विश्वसृज्, ब्रह्मन् (सव पु) २ ईश्वर ।
सेंक, सं पु (हि सेंकना) उ(ऊ)ष्मन्, उ(ता)-प, उष्ण स्पर्श, उष्णता २ तापन, उष्णी करण, तापेन अंगारेषु [redacted] भर्जनं ३ प्र स्वेदनं, घर्मसेक, ऊष्मणा तापन-उष्णीकरणम्।
सेंकना, क्रि स (सं श्रेषण) ऊष्मणा अंगारे वा भ्रस्ज् (तु उ अ) २ तप (प्रे), उष्णी कृ ३ (उष्णजलादिभि) स, सिच् (तु प अ)-स्वेद कृ, प्र, स्विद् (प्रे)।

आँख—, मु, सौन्दर्यं अवलोक् (भ्वा आ से, चु प से)।
धूप—, मु, आतप सेव् (भ्वा आ से)।
सेंटर, स [redacted] (अ) केन्द्र, मध्यबिंदु, मध्य-ध्य २ प्रधान-मुख्य-स्थानम्।
सेंट्रल, वि (अ) केंद्रीय, मध्य, मध्यम, मध्यस्थ।
सेंटिग्रेड, वि (अ) शतिक।
सेंटिमीटर, स पु (अ) शतिमानं, शतांश मानम्।
सेंत, स स्त्री ([redacted] संहति=किफायत २ राशि>) व्ययाभाव विनियोगाभाव ।
—मेत, क्रि वि (हि +अनु) मूल्य विना २ निष्प्रयोजन, व्यर्थम्।
—का, मु, मूल्य विना लब्ध, निर्मूल्य।
—में, मु, व्यर्थ-मूल्यं विना २ व्यर्थम्।
सेंद्रिय, वि (स) सकरण, साक्ष, इन्द्रियवत्, सजीव। २ पुंस्त्वयुक्त, मैथुन-समर्थ, वीर्यवत्।
सेंध, स स्त्री [स सन्धि (पु)] संधिला, सुरं-(ङ्)गा, खानिकम्।
—लगाना या सेंधना, सन्धिलां कृ अथवा खन् (भ्वा प से)।
—लगाने वाला, स पु, सुरं(ङ्)गयुज्, संधि हारक, संधिलाकार ।
सेंधा, स पु (सं सैंधव-व) शीतशिव, माणि-मंथ-थ, वशिर, सिंधु(देश)ज, शिव, सिंधु पथ्यम्।
सेंधिया, सं पु (हि सेंध) दे 'सेंध लगाने वाला'।
सेंवई, स स्त्री (सं सेविका) सूत्रिका।
—पूरना या—बटना मु, सेविका व्याधृन्(प्रे)।
सेंहुड़, स पु, दे 'थूहर'।
से¹, प्रत्य (प्रा सुंतो, पु हि सेंति) करण कारकचिह्न (प्राय तृतीया से, 'स' से या -पूर्वं,-पूर्वक आदि से अनुवाद करते हैं। उ, आदर से=आदरेण, सादर, आदरपूर्वक) २ अपादानचिह्न (प्राय पंचमी से 'आ' [redacted] या 'प्रभृति' '-आरभ्य' आदि से अनुवाद करते हैं। उ, वृक्ष से गिरा वृक्षात् अपतत्, जन्म से—आजन्म, जन्मतः, कल से लेकर=श्व-प्रभृति, श्व आरभ्य ह)।
से², वि (हि 'सा' का बहु) सम, समान, सदृश।

सेकंड, स पु (अ) विकला, विपल, क्षण । वि (अ) द्वितीय ।
सेक, स पु ([redacted]) दे 'सिंचाई' ।
सेक्रेटरी, स पु (अ) मन्त्रिन्, लेखनसचिव ।
सेक्रटान, स पु (अ) वि ,माम ।
सेचक, स पु (स) मेघ , वारिद । वि प्रो. क, सेक्तृ ।
सेचन, स पु (स न) अव-आ ,सेक सेवन, अभ्युक्षण, प्रोक्षणम् ।
सेज, स स्त्री (स शय्या, दे)।
—पाल, स पु (स शय्यापाल) शयना गाररक्षक , शय्या, अध्यक्ष पाल ।
सेठ, स, पु (स श्रेष्ठिन्) लक्ष्मपति , कोटीश्वर , धनाढ्य । २ वणिग्वर , सार्थवाह ३ धनिका निजतोपाधि ४ क्षत्रियोपजातिभेद [सेठानी (स्त्री) धनाढ्या, धनाढ्यपत्नी]।
सेतु, स पु (स) वरण , सवर , दे 'पुल' ।
—बंध, स पु (स) वारण सवर, बंधन-निर्माण २ श्रीरामनिर्मित सेतुविशेष ।
सेना, क्रि स (स सेवन) अंडाद उत्पद्(प्रे), अडेषु उपविश् (तु प अ) २ सेव (भ्वा आ से) ३ उपास् (अ आ से)।
सेना, स स्त्री (स) सैन्य, बल, वाहिनी, चमू (स्त्री), अनीक-किनी, पृतना, ध्वजिनी, वरूथिनी, चक्र, गुल्मिनी ।
—पति, स पु (स) सेनानी , वाहिनीपति , सेना,-वाह-नायक:-पाल-अध्यक्ष -अधीश -नाथ ।
—व्यूह, स पु ([redacted]) सैन्यविन्यास ।
सेनानी, स पु (स-नी) दे 'सेनापति' ।
सेनेट, स स्त्री (अ) प्रधानव्यवस्थापिका सभा, २ विश्वविद्यालयस्य प्रबन्धकर्त्री सभा ३ परिषद् (स्त्री), सभा ।
सेफ़, स पु (अ) लोहपेटिका, दृढमञ्जूषा ।
सेब, स पु (फ़ा) आत-सेवि सिञ्चित-सिञ्चिनिका,,फल, सेव, मुष्टिप्रमाणबदरम् ।
सेम, स स्त्री (स शिंबी) शिंबा, शिबिका । वि (स्त्री) शिंबा, शिंबिका, शिंबीविं (स्त्री)।
सेमल, स [redacted] [स शाल्मलि (पु स्त्री)] शाल्मल लिनी, तूलवृक्ष:, दीर्घद्रुम , रम्यपुष्प दुरारोहा ।

सेर¹, स पु (स) सेटकम् ।
सेर², वि (फ़ा) तृप्त, सतृप्त ।
सेराब, वि (फ़ा) जलप्लुत, अभिक्लिन्न २ सिक्त, प्लावित ।
सेरी, स स्त्री (फ़ा) तृप्ति (स्त्री), सतोष ।
सेरु, स पु (हिं सिर)उद्वाया शीर्षपादपट्टी।
सेल, स [redacted] (अ) बीजकोष ।
सेलखड़ी, स स्त्री , दे 'खड़िया' ।
सेल्युलोज़, स पु (अ) काष्ठोजन् ।
सेवक, स पु (स) परि अनु, चर , किंकर , भृत्य, भृतक, कर्मकर(रा)र अनुजीविन्, दास , नियोज्य , चेट , चेटक , डिंगर , परि, कर्मिन्-चारक अन-स्कर , प्रेष्य , भुजिष्य , कलीक , शुश्रूषक २ भक्त , उपासक , आरा धक ३ शिष्य , अन्तेवासिन् ।
सेवकाई, स स्त्री (स सेवक >) उप, चार चर्यास्थान, परिचर्या, शुश्रूषा, सेवकत्व,कैंकर्य, सेवा, भवृत्ति (स्त्री) २ आराधन, पूजा ।
सेवती, स स्त्री (स सेवन्ती) शतपत्रा, कर्णिका, चारुकेश(स)रा, महाकुमारी,गन्धाढ्या, अतिमंजुला, तरुणी, मुद्रेष्टा, शिववल्लभा, राम तरुणी ।
सेवन, स पु (स न) दे 'सेवा' २ उपा सन, आराधन, पूजन ३ उपयोग , प्रयोजन, उपभोग ४ सततवास ।
—करना, क्रि स , उपभुज्(रु आ अ),सेव् (भ्वा आ से)।
सेवनीय, वि (स) सेव्य, सेवितव्य, सेवा परिचर्या-उपचार, अर्हयोग्य २ पूज्य,आराध्य ३ उपयोगार्ह, प्रयोजनीय ।
सेवा, स स्त्री (सं) दे 'सेवकाई' (१, २) ३ आश्रय , शरणम् ।
—करना, क्रि स, सेव् (भ्वा आ से), अनु उप परि, चर् (भ्वा प से), उपास् (अ आ से), उपस्था (भ्वा आ अ), शु (सन्नन्त शुश्रूषते)।
—टहल, स स्त्री (सं + हिं) परिचर्या ।
—शुश्रूषा, स स्त्री (स) उप,-चार चर्या ।
सेविका, स स्त्री (स) चेटी, दासी, भुजिष्या, प्रेष्या, कर्मकरी, नियोज्या, परिचारिका ।
सेवित, वि (स) शुश्रूषित, उप परि, चरित

२ उपासित, पूजित, आराधित ३ व्यवहृत, प्रयुक्त ४ आश्रित ५ उपभुक्त, कृतोपभोग।
सेवी, वि (स विन्) सेवक सेवापरायण २ पूजक, आराधक ३ -भोगी। -भुज्, -भक्षिन्, -पायिन।
सेशन, स पु (अ) बहुदिवससमष्टय अधिवेशन समेल्न २ सत्र (स्कूल आदि का)।
—कोर्ट, स स्त्री (अ) दण्डसत्राधिकरणम्।
—जज, स पु (अ) दण्डसत्राधीश।
सेहत, स स्त्री (अ) सुख, सौख्य २ रोगमुक्ति (फा), दे 'स्वास्थ्य'।
—खाना, सं पु (अ + फा) शौचागारम्।
सेहरा, स पु (स शेखर) वरमुखावटविमालावली-स्रग्जाल २ वर-परिवेष्ट,-मुकुट ३ वरगुणवर्णनात्मकं गीतम्।
—बँधाई, स स्त्री, दोसरबन्धनशुल्कम्।
सेही, स स्त्री, दे 'साही'।
सैंडफ्लाई फीवर, सं पु (अ) बालुकामक्षिकाज्वर।
सैंतालीस, वि (स सप्तचत्वारिंशत्) स पु, उक्ता सख्या, तद्बोधकावौ(४७) च।
सैंतालीसवाँ, वि (हि सैंतालीस) सप्तचत्वारिंशत्तम -मी-म, सप्तचत्वारिंश -शी-श (पु स्त्री न)।
सैंतीस, वि (सं सप्तत्रिंशत्) स पु, उक्ता सख्या, तद्बोधकावौ(३७) च।
सैंतीसवाँ, वि (हि सैंतीस) सप्तत्रिंशत्तम -मी-म, सप्तत्रिंश -शी-श (पु स्त्री न)।
सैंधव, स पु (स) (सिंधुदेशोद्भव) लोण, सिंधुदेशीयोऽश्व २ दे 'सेंधा' ३ जयद्रथ ४ सिंधुदेशवासिन। वि (सं) सिंधुदेशीय २ समुद्रज, समुद्रीय सामुद्रिक।
सैकड़ा, स पु (स शतकाट -क) शत, शतक २ शतवस्तु-समुदाय -समूह -समुच्चय। क्रि वि., प्रतिशतम्।
सैकड़ों, वि, परश्शत।
सैकलगर, सं पु (अ सैक्ल+गर) शस्त्र,-मार्जक-मार्जन -सेवक।
सैद्धांतिक, सं पु (स) सिद्धान्त,-विद्, तत्त्वज्ञ, राद्धान्तिक २ तान्त्रिक। वि (स) सिद्धान्त-राद्धान्त-तत्त्व,-संबंधिन्।
सैन, सं स्त्री (स संज्ञपनं>) संकेत, संज्ञा, इंगित २ स्पर्श, चिह्नम्।
—करना, क्रि स, (भ्रूनेत्रहस्तादिभि) संज्ञां संकेतं वा कृ दा।
—मारना, क्रि स, सद्राव सवहेलं (तु) २ निमेषेण संकेतं कृ।
सैना, स स्त्री, दे 'सेना'।
सैनापत्य, सं पु (स न) सेनापति-सेनाध्यक्ष,-कार्यं पदम्, सेनापतित्वम्। वि (सं) सेनापति,-सम्बन्धिन्-विषयक।
सैनिक, स पु (सं) सेनाचर, योध, भट, सैन्य, आयुधिक, योद्धृ २ रक्षपुरुष, दे 'सन्तरी'। वि (सं) सामरिक, सांग्रामिक, आयुधिक, क्षात्र[-त्री (स्त्री)]।
—वाद, स पु (स) समरसमर्थकसिद्धान्त,-युद्धानुमोदकवाद।
सैनिटरी, वि (अ) स्वास्थ्य आरोग्य, कर रक्षक विषयक।
सैनिटेशन, स पु (अ) आरोग्य स्वास्थ्य, रक्षा-रक्षणम्।
सैन्य, स पु (स न) दे 'सेना'।
सैरध्री, स स्त्री (सं) स्वतन्त्रा शिल्पोपजीविनी २ अन्तःपुर, परिचारिका-दासी ३ द्रौपदी।
सैर, स स्त्री (फा) सुख,पर्यटन, परिभ्रमणं, विहार, विहरणं, विचरणम्।
—करना, क्रि. स, सुख पर्यट्‌ विचर् (भ्वा प से), विह (भ्वा प अ), भ्रम् (भ्वा प से)।
—गाह, स स्त्री (फा) भ्रमण पर्यटन,-स्थानं स्थली।
—सपाटा, स पु, दे 'सैर'।
सैलानी, वि (फा सैर) पर्यटन भ्रमण-विहरण, शील, पर्यटक, यथेष्टविहारिन् २ आनन्दिन, विनोदिन, प्रमोदिन, उन्मादिन।
सैलाब, स पु (फा) जल-प्लावन-स्रोत विप्लव प्रलय आप्लाव २. महा, प्रवाह-ओघ।
सों, प्रत्य, दे 'से'।
सोंचर नमक, स पु (स सौवर्चल+फा) सौवर्चल, रुचकं, रुच्यं, अक्षं, कृष्णलवणं, तिलक, हृद्गन्धकम्।
सोंटा, सं पु (सं शुड >) स्थूल-दण्ड, स्थूल, यष्टि (स्त्री) दण्ड २ मुसल लगुडम्।
—बरदार, सं पु (हि + फा) दण्ड,-भृत्-भृत्।

सोंठ, स स्त्री [स शुण्ठी ठि (स्त्री)] महा विश्व-औषध विश्वभेषज, कटुग्रन्थि, कफारि ।

सोंधा, वि (स सुगन्ध) सुगन्धित, दे ।

सोंपना, क्रि स दे 'सौंपना' ।

सोंह, स स्त्री दे 'सौगंद' ।

सो, सर्व (स स) देखो 'वह' । अव्य, अत, अत-एव, अनेन कारणेन अस्मात् कारणात् ।

सोऽहं, वाक्यांश (स स + अहं) अहं ब्रह्मास्मि (वे) ।

सोआ, स पु (स शताह्वा) मिश्र-अति, -छत्रा, शत-,मधी पुष्पिका मधुरा, मधुरिका, माधवी, मिशी-शि [(स्त्री) शाकभेद] ।

सोई, सर्व, दे 'वही' ।

सोखना, क्रि स, दे 'सुखाना' ।

सोख्ता, स पु, दे 'स्याहीचूस' ।

सोगन्द, स स्त्री, दे 'सौगंद' ।

सोग, स पु (स शोक) (मृत्युजनित) परिताप, शुचा, दु खम् ।

—मनाना, [illegible], शोकचिह्नानि धृ (चु), शुच (भ्वा प से) ।

सोच, स पु (स शोचनं) शोक, शुचा च (स्त्री), विषाद २ विचार, विमर्श, विचारणा ३ चिन्ता, रणरणक, उत्कलिका, -उत्सुकता ४ पश्चात् अनु, ताप ।

—विचार, स पु (हि + स) विचार-रणा, विमर्श, आलोचना, समीक्षा, विनय, विवेचन-ना ।

सोचना, क्रि अ (स शोचन) विचर् (प्रे), विमृश् (तु प अ), आ-पर्या-समा लोच (चु) २ चिन्ता कृ, चिन्त् (चु) ३ शुच् (भ्वा प से), दे 'विचारना' ।

सोच्छ्वास, वि (स) प्रसन्न, प्रहृष्ट २ निश्चिन्त, स्वस्थ ३ उच्छ्वासयुक्त ४ मन्दप्राण । अव्य (स न) सदीर्घश्वासं, निःश्वासपूर्वकं, सनिश्वासम् ।

सोज़, स स्त्री (हि सूजना) शोथ, शोफ, दे 'सूजन' ।

सोज़िश, स स्त्री (फा) ताप, प्रदाह २ शोथ ।

सोटा, स पु दे 'सोंटा' ।

सोडा, सं पु (अं) विक्षार ।

—वाटर, स पु (अ) विक्षारजलम् ।

खाने का—, *भक्ष्यविक्षार ।

धोने का—, *धावनविक्षार ।

सोडियम, स पु (अ) क्षारातु (न), क्षारजम् ।

सोता[1], स पु (स)स्रोतस् (न) उत्स*, वारिप्रवाह, प्रस्रवण, निर्झर २. नदी-शाखा, कुल्या ।

सोता[2], वि (स) सुप्त, शयान, निद्रित ।

सोते-जागते, मु, अहर्निशं, दिवानिशं, प्रतिक्षणं, सदा ।

सोदर, स पु (स) सहोदर, सोदर्य, भ्रातृ ।

सोदरा, स स्त्री (सं) सहोदरा, सोदर्या, स्वसृ (स्त्री) ।

सोन, स पु (स शोण) हिरण्यवाह दु, शोणभद्र, शोणा (नदविशेष) ।

सोनजूही, स स्त्री (स स्वर्णयूथी) हरिणी, पीतिका, हेमपुष्पिका, हैमा, स्वर्णयूथिका ।

सोना[1], स पु (स सुवर्ण) स्वर्ण, कनक, हिरण्य, हेमन् (न), हाटक, तपनीय, शातकुम्भ, चामीकर, जातरूप, महारजत, काञ्चन, रुक्म, कार्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद, भद्र, कर्बु(र्बू)र, द्रविण, पिंजर, कलधौत, लोहवर, कल्याण, मनोहर, भास्कर, दीप्त, मंगल्य, निष्क, अग्निशिख, २. महार्घ-बहुमूल्य,-वस्तु (न)-द्रव्यम् ।

—(ने)का तार, स पु, कनकसूत्रम् ।

—(ने)का पानी, स पु, सुवर्णलेप ।

—(ने)का वर्क, स पु, सुवर्णपत्रम् ।

गहनों का—, स पु, शृंगि, शृंगी, शृंगीकनकम् ।

सोना[2], क्रि अ (स शयन) स,शी (अ आ स), निद्रा (अ प अ), संविश् (तु प अ), स्वप (अ प अ) २ (अंगादि) निश्चेष्ट निस्तब्ध-निश्चल (वि) भू ३ दे 'मरना' । स पु, शयन, निद्रा, गुडाका, तंद्रा, तामसी, प्रमीला, संवेश, सुप्ति (स्त्री), स्वप्न, स्वाप, शी ।

सोनामाखी, स स्त्री (स स्वर्णमाक्षिक) माक्षिक मधु धातु, तापिज (उपधातुभेद) ।

सोने का कमरा, सं पु, स्वप्न-गृह निकेतन, शयन,-गृह मंदिर-आगारम् ।

सोने योग्य, वि, शयितव्य, शेय, शयनीय ।

सोनेवाला, स पु, सुषुप्सु, शिशयिषु, निद्रालु, शयालु, तन्द्रालु ।

सोया हुआ, वि , निद्रित, निद्राण, शयित, सुप्त, शयान, निद्रामग्न ।

सोप, स पु (अ) दे 'साबुन' ।

सोपान, स पु (स न) दे 'सीढ़ी' ।

सोफ़ा, स पु (अ) शय्या, पर्यंक , शय नीयम्, *उपवेश्य , *आस्य ।

सोम, स पु (स) सुधांशु , चंद्र , दे 'चाँद' २ सोमवार ३ स्वर्ग ४ कर्पूर ५ सोम लता ।

—कांत, सं पु (सं) चन्द्रकांत ।

—ग्रह, स पु (स) चंद्रग्रहणम् ।

—देव, स पु (स) सोमदेवता २ चन्द्रदेवता ३ कथासरित्सागरस्य रचयितृ ।

—नाथ, स पु (स) ज्योतिर्लिङ्गविशेष २ प्राचीननगरविशेष ।

—पान, स पु (स न) सोमपीति (स्त्री) ।

—पायी, वि (स -यिन्) सोम,पन्-पा-पीतिन् ।

—पुत्र, स पु (स) सोमज , बुधग्रह ।

—यज्ञ, स पु (स) सोम,-याग मख -क्रतु ।

—रोग, स पु (स) स्त्रीरोगभेद २ बहु मूत्रता, मूत्रातिसार ।

—लता, स स्त्री (स) सोमवल्ली, सोमा, क्षीरी, द्विजप्रिया, गुल्म-यज्ञ,-वल्ली, यज्ञनेता, सोमक्षीरा, यज्ञश्रेष्ठा २ गुडूची ३ गंगा ।

—वंश, सं पु (सं) चंद्रवंश २ युधिष्ठिर ।

—वती, स स्त्री (सं) सोमवती अमावास्या ।

—वल्ली, सं स्त्री (स) सोमलता २ गुडूची ३ सोमराजी ४ पातालगरुडी ५ ब्राह्मी ६ सुदर्शना ।

—वार, स पु (सं) सोम-चंद्र,-वार वासर दिनम् ।

सोरठ, सं पु (सं सौराष्ट्र) प्रान्तविशेष (गुजरात तथा दक्षिणी काठियावाड) २ सौराष्ट्र राजधानी (सूरत नगर) ३ रागभेद ।

सोरठा, स पुं (हिं सोरठ) हिन्दीकविताया छंदोभेद ।

सोर[1], त्रि (?) शीत, शीतल, शिशिर २ तिक्तम्लकषाय । स पु (?) शैत्य, शैत्य ३ तिक्ताम्लकषाय स्वाद ।

सोल[2], सं स्त्री (अं) आत्मन्, आत्मा , चेतना ।

सोल[3], सं पुं (अं) पाद,तलम् २ पादु कातलम् ।

सोलह, वि (स षोडशन्) षडधिकदश । स पुं , उक्ता सख्या, तद्बोधकाङ्कौ (१६) च ।

सोलहो आने, मु , साकल्येन, अशेषेण, पूर्णतया, सामस्त्येन ।

सोलहवाँ, वि (हिं सोलह) षोडश षोडशी (पु स्त्री न) ।

सोशल, वि (अ) सामाजिक, समाजविषयक ।

सोशलिज़्म, सं पु (अ) समाजवाद ।

सोशलिस्ट, स पुं (अ) समाजवादिन् ।

सोसनी, (वि (फ़ा सौसन) रक्तनील ।

सोसाइ(य)टी, स स्त्री (अ) समाज , सभा, गोष्ठी २ सगति (स्त्री), संसर्ग ।

सोह-मोहगम, वेदान्त-वाक्य, दे 'सोऽहं' ।

सोहन, वि (सं) शोभन, मनोहर, दे 'सुंदर' । स पु , नायक , सुन्दरपुरुष ।

—चिड़िया, [illegible] स्त्री , *शोभनचटक (-का स्त्री) ।

—पपड़ी, स स्त्री , *शोभनपर्पटी ।

—हलवा, स पु , *शोभनसयाव ।

सोहना[1], क्रि अ (स शोभन) शुभ् विराज् (भ्वा आ से), लसित-सुंदर शोभन (वि) भू (भ्वा आ से), विभा (अ प अ) । वि , शोभन, रम्य, सुंदर, मनोज्ञ ।

सोहना[2], क्रि स (स शोधन) कुतृणानि उन्मूल् (चु), क्षेत्र कुतृणरहित कृ ।

सोहबत, स स्त्री (अ) सगति (स्त्री), संसर्ग २ मैथुनम् ।

सोह(हि)ला, स पु (हिं सोहना) *पुत्र जन्मोत्सवगीत २ मगल्य-मांगलिक शुभ,गीत ३ देवतास्तोत्रम् ।

सोहिनी, त्रि स्त्री (सं शोभिनी) सुंदरी, मनोरमा, रम्या, सुरूपा । स स्त्री , रागिणी भेद ।

सौंदर्य, स पु (सं न) रमणीयता, दे 'सुंदरता' ।

सौंपना, क्रि स (सं समर्पण) न्यस (दि प स), निक्षिप् ([illegible] प अ), सम् ऋ (प्रे समर्पयति), प्रतिपद्-निविश (प्रे) । स पुं , न्यास , निक्षेप , समर्पण, प्रतिपादनम् ।

सौंपने योग्य, वि , निक्षेप्तव्य, समर्पणीय ।

सौंपने वाला, सं पुं , निक्षेप्तृ, समर्पयितृ ।

सौंपा हुआ, वि , निक्षिप्त, न्यस्त, समर्पित ।

सौंफ, सं स्त्री (सं शतपुष्पा) मधुरिका,

माधवी, माधुरी, मधुरा, सुगधा, शतपत्रिका, अति मित, छत्रा।
—का अर्क, स पु, दानपुष्पासव ।
सौंह, स स्त्री दे 'सौगद'।
सौ, वि (स शत, नित्य न) दशगुणितदश सख्या। स पु, उक्त सख्या, तद्बोधकाका (१००) च।
—बात की एक बात, मु, सार, तात्पर्य, साराश ।
—बिस्वे, मु निश्चयेन, अवश्य, नि सशयम् ।
सौवाँ, वि, शततम -मी-मम्।
सौकन, स स्त्री, दे 'सौत'।
सौकर्य, स पु (स न) सुकरता, सुसाध्यता २ दे सुभीता'।
सौकुमार्य, स पु (स न) कोमलता, दे 'सुकुमारता' २ यौवन ३ काव्यगुणभेद ।
सौखिक, वि (स) सुखेच्छुक, सुखैषिन, सुखकामिन् २ सुख-आनन्द-मोद,-दायक प्रद ३ सुख आनन्द, विषयक-सम्बन्धक।
सौख्य, स पु (स न) आनद, सुख दे ।
सौगद, स स्त्री (फा) शपथ, समय, प्रतिज्ञा, वचन, वाचा, सत्य ।
—खाना, क्रि अ, शप् (भ्वा दि उ अ), सशपथ वद् (भ्वा प से)।
—देना, क्रि स, शप (प्रे), सशपथ वच (प्रे)।
सौगध, सं प (स न) सुगध दे २ गाधिक, दे 'गधी ३ कत्तृणम्। स स्त्री, दे 'सौगद'। वि (स) सुगधित दे ।
सौगधिक, वि (सं) सुगधि, सुगधित, सुवास, सुरभि। स पु (स) गाधिक, गध, विक्रयिन् उपजीविन्-वणिन। २ गध(धि)क, गधाश्मन्। (स न) नील,-कमल-उत्पल, कुवलयम्। २ पुण्डरीक, सिताम्भोज, श्वेत कमलम्। ३ सुगन्धितृणभेद ४ पद्मराग ।
सौगात, स स्त्री (तु) उपहार, उपायन, प्राभृतक २ दुर्लभवस्तु (न)।
सौजन्य, स पु (स न) सज्जनता, सुजनता, दे ।
सौत, सौत(ति)न, स स्त्री (सं सपत्नी) समानपतिका।
सौतिया डाह, स पु, सापत्न्येर्ष्या २ साप त्न्य, ईर्ष्या।
सौतेला, वि (हिं सौत) सापत्न [-त्नी (स्त्री)] सपत्नी सम्बन्धिन।
—पिता, स पु, वि मातृपति ।
—पुत्र, स प सपत्नीपुत्र, सापत्न्य ।
—बच्चा, स, पु पर नात अपत्यम्।
—भाई, स पु वैमात्र, वैमात्रेय विमातृज ।
सौतेली पुत्री, स स्त्री, सपत्नी, पुत्री-दुहितृ (स्त्री)।
सौतेली बहन, स स्त्री, वैमात्री, वैमात्रेयी, विमातृजा।
सौतेली माता, स स्त्री, विमातृ (स्त्री)।
सौदा[1], स पु (अ) भाड, भाडानि (बहु), पण्य, क्रयविक्रयवस्तु (न) २ आदान प्रदान, दानादान, व्यवहार ३ क्रयविक्रयौ (द्वि), नियम, वाणिज्य, व्यापार, वणिक्कर्मन् (न) ४ क्रय विक्रय, प्रतिज्ञा।
—करना, क्रि अ, क्रयविक्रय कृ, वाणिज्य कृ, पण (भ्वा आ अ)।
—सुलुफ, स पु, दे 'सौदा' (१)।
—सूत, स पु, व्यवहार ।
सौदा[2], स पु (अ) उन्माद, दे 'पागलपन'।
सौदाई, स पु (अ सौदा) उन्मत्त, दे. 'पागल'।
सौदागर, स पु (फा) नैगम, क्रयविक्रयिक, पण्याजीव वणिज, वाणिज्यकारिन, सार्थ वाह, सार्थिक ।
—बच्चा, स पु (फा + हिं) वणिज् २ वणिक्पुत्र ।
सौदागरी, स स्त्री (फा) दे 'सौदा[1]' (३)।
सौदाम(मि)नी, स स्त्री (स) सौदाम्नी, चपला, चचला, तडित् विद्युत् (स्त्री), दे 'बिजली'।
सौध, स पु (स न) हर्म्य, प्रासाद, भवन, अट्टालिका।
सौप्तिक, स पु (स न) निशायुद्ध, रात्रिरण, रात्रि निद्रा,-मारण २ महाभारतीयपर्वविशेष ।
सौभागिनी, स स्त्री, दे 'सुहागिन'।
सौभाग्य, स पु (स न) सु भाग्य-भागधेय दैव-दिष्ट दिष्टि (स्त्री) नियति (स्त्री) २ सुख, आनद ३ कल्याण, कुशल ४ दे 'सुहाग' (१) ५ ऐश्वर्य, विभव ६ सौन्दर्य ७ शुभेच्छा ८ साफल्य ९ सिंदूरम्।

—शुंठी, स स्त्री (स) सूतिकारोगनाशक पाकभेद (आयु)।

सौभाग्यवती, वि स्त्री (स) सधवा, दे 'सुहागिन' २ भाग्यशालिनी।

सौभाग्यवान्, वि पु (स -वत्) महाभाग, सुभाग्य, सुभग, पुण्यवत्, धन्य २ सुखी सम्पन्न।

सौमित्रि, स पु (स) सौमित्र, लक्ष्मण।

सौम्य, वि (स) सोमसम्बन्धिन् २ सौमिक, चान्द्र ३ शीतस्निग्ध ४ नम्र सुशील, शांत ५ शुभ, मंगल्य ६ प्रसन्न, प्रहृष्ट ७ प्रियदर्शन, सुन्दर ८ उज्ज्वल, भासुर।

—दर्शन, वि (स) प्रियदर्शन, सुभगाकार।

—वार, सं पु (स) बुधवासर।

सौम्यता, स स्त्री (स) शीतलता, शीतस्निग्धता २ सुशीलता, साधुत्व ३ सौन्दर्य ४ उदारता, परोपकारिता।

सौर[1], वि (स) सौर्य, सूर्य विषयक सम्बन्धिन् २ भानुज ३ सूर्यानुसारिन्।

—मास, स पु (स) सूर्यैकराशिभोगावच्छिन्नकाल।

—संवत्सर, स पु (स) सूर्यस्य द्वादशराशि भोगावच्छिन्नकाल।

सौर[2], सं स्त्री (देश० सौड) दे 'चादर'।

सौरथ, स पु (सं) वीर, भट, योध, योद्धृ।

सौरभ, स पु (सं न) सुगंध, दे २ कुंकुम, दे 'केसर' ३ आम्रम्।

—वाह, स पु (स) वायु, पवन।

सौरभित, वि (स) सुरभि, सुगंधित दे।

सौराष्ट्र, सं पु (स) प्रान्तविशेष (गुजरात काठियावाड)।

सौरी, स स्त्री (स सूतिकागार) दे 'सूतिका गृह'।

सौष्ठव, स पु (स न) सौन्दर्य, सुषमा, लावण्य २ लाघव, क्षिप्रता ३ गुण-अतिशय उत्कर्ष, वैशिष्ट्य ४ उपयुक्तता, उपयोगिता।

सौंहँ, सं स्त्री (सं शपथ) दे 'सौगंद'।

सोहाँजना, स पु (स शोभाञ्जन) तीक्ष्णगंध, सुतीक्ष्ण, रुचिरांजन।

सौहार्द, सं पु (सं न) सख्य, मित्रता, सौहृद्य, अजर्य। दे 'मित्रता'।

स्कंद, स पु (स) कार्तिकेय, सेनानी, शिखिवाहन, षाण्मातुर, कुमार, शक्तिधर, स्वामिन्, द्वादशलोचन।

—पुराण, स पुं (स न) पुराणग्रंथविशेष।

स्कंध, स पु (स) अंस, भुजशिरस् (न)-मूल, दो शिखर, वत्सवर २ प्रकाण्ड-डं, दंड, स्कंधस् (न) प्रकाण्डक, दे 'तना' ३ शाखा ४ समूह ५ सैन्यव्यूह ६ ग्रन्थविभाग, खण्ड, पर्वन् (न)।

स्कंधावार, स पु (स) शिबि(वि)र, कटक, २, सेना, आवास-स्थान ३ राजधानी ४ सेना ५ यात्रिवणिज्, निवेश।

स्कर्वी, स स्त्री (अ) शीताद।

स्कारलेटिना, स पु (अ) आरक्तज्वर, उदर्द, लोहितज्वर।

स्कालर, स पु (अं) छात्र, विद्यार्थिन् २ सुविद्वस्, भट्ट, प्रकाण्डपंडित।

—शिप, स पु (अ) छात्रवृत्ति (स्त्री) २ पांडित्य, विद्वत्ता।

स्कीम, स स्त्री (अ) योजना, आयोजन, व्यवस्थितविचार, प्रयोग, युक्ति (स्त्री)।

स्कूल, स पु (अं) विद्यालय, पाठशाला।

—मास्टर, स पु (अ) शिक्षक, अध्यापक।

स्खलन, स पु (स न) पतन, भ्रंश, स्रंस, स्रंसन २ सन्मार्गात् च्युति (स्त्री) च्यवन विचलन भ्रंश, उन्मार्गगमनम्।

स्खलित, वि (स) पतित, च्युत, भ्रष्ट, २ स्रस्त, मृदु सुप्त ३ विचलित ४ भ्रान्त ५ उन्मार्गगत।

स्टाम्प, स पु (अं स्टंप) (आधिकरणिक) मुद्राङ्कितपत्र २ पत्रशुल्कमुद्रा, दे 'डाक का टिकट' ३ मुद्रा ४ मुद्रांक।

स्टार्च, स पुं (अं) श्वेतसार।

स्टीम, स स्त्री (अ) बाष्प।

—इंजन, स पु (अ) बाष्पयन्त्रम्।

स्टीमर, स पुं (अ) बाष्पपोत।

स्टूल, सं पु (अ) उच्चपीठम्।

स्टेज, स पु (अं) रंग, मंच भूमि (स्त्री)-पीठं २ मंच।

—मैनेजर, स पु (अ) रंगमंचप्रबंधक, सूत्रधार।

स्टेथिस्कोप, सं स्त्री (अ) उरपरीक्षणी।

स्टेशन, सं पु (अ) (वाष्पयानस्य) स्थानम्।

स्टेशनरी, स स्त्री (अ) लेखनसामग्री ।
स्टैंड, स पु (अ) आधार, स्थापकम् ।
स्तंभ, स पु (सं) स्थूणा, स्थाणु, यूप, मेढि थि २ तरुस्कंध, प्रकाण्ड -ण्ड ३ सात्त्विक भावभेद ४ प्रतिबंध ५ मूर्च्छा, जाड्यम् ।
स्तंभक, वि (स) स्तंभकर, रोधक २ जाड्य-कर-जनक ३ वीर्यरोधक ४ मलावष्टंभक ।
स्तंभन, स पु (स न) अव, रोध-रोधन, निवारण २ शुक्रपातविलंब ३. स्तंभक (औषध) ४ जड़ी निश्चेष्टी-करण ५ (स पु) मदनबाणविशेष ।
स्तंभित, वि (स) अव, रुद्ध, निवारित २ जड़ी, भूत कृत, निस्तब्ध ३ स्थित, विरत ।
स्तनधय, स पु स्त्री (स) उत्तानशय -या, डिंभ भा, स्तनप पा, स्तनधय -यायी, स्तन, पायक (पायिका)-पायिन् (-पायिनी) ।
स्तन, स पु (स) कु(कू)च, उरो-उरसि,-ज, वक्षो,-ज -रुह ।
—चूचुक, स पु (स न) स्तन,मुख-अग्र-शिखा-वृंत, मेचकम् ।
—पान, स पु (स) स्तन्य पीति (स्त्री)।
—पायी, स पुं, दे 'स्तनधय'।
स्तन्य, स पु (स न) क्षीर, दुग्धम् ।
स्तब्ध, वि (स) निश्चली-जड़ी, भूत निश्चेष्ट, क्षुभ, निस्स्पंद २ दृढ निरुद्ध ३ दृढ स्थिर ४ मंद अलस ५ दुराग्रहिन ६ दृप्त ।
—दृष्टि, वि (स) स्तब्धनयन, निर्निमेष ।
—बाहु, वि (सं) जड़ निस्तब्ध, निश्चेष्ट, हस्त-कर-बाहु भुज ।
—मति, वि (सं) मंदबुद्धि, जड़ ।
स्तब्धता, स स्त्री (स) जड़ता, स्पंदनहीनता २ स्थिरता, दृढ़ता ३ बधिरता, श्रवणन्यूनता ।
स्तर, स पु (स) दे 'परत' २ शय्या, आस्तर, तल्प -ल्पम् ।
स्तव, स पु (स) स्ताव, स्तुति (स्त्री) दे । २ स्तोत्र ३ ईश्वरप्रार्थना ।
स्तवक, स पु (स) पुष्प-कुसुम,-गुच्छ-स्तबक २ राशि ३ अध्याय, परिच्छेद ४ स्तर ५ स्तोतृ ।
स्तवन, स पु (स न) गुणकीर्तन स्तुति (स्त्री)।
स्तुत, वि (सं) प्रशंसित, प्रशस्त, श्लाघित, ईडित, कीर्तित ।
स्तुति, स स्त्री (स) स्त(स्ता)व, गुण,-वर्णन कीर्तन-कथन, श्लाघा, नुति (स्त्री), ईडा, प्रशंसा दे ।
—करना, क्रि स, नु (अ प से), स्तु (अ प अ), ईड (अ आ से), श्लाघ (भ्वा आ से), प्रशंस् (भ्वा प से)।
—पाठक, स पु (स) मागध, चारण, वैतालिक ।
स्तुत्य, वि (स) नव्य, नाव्य, नवितव्य, प्रशस्य, प्रशंसनीय, स्तोतव्य स्तवनीय, प्रशंसार्ह ।
स्तूप, स पु (स) मृदादि -कूट -राशि २ बौद्धचैत्य ।
स्तेन, स पु (स) चौर, तस्कर ।
स्तेय, स पु (स न) चौर्य, परद्रव्यहरण, स्तैन्यम् ।
स्तोतव्य, वि (स) दे 'स्तुत्य'।
स्तोता, वि (स तृ) प्रशंसक, स्तावक, नवितृ, नावक, वर्णक, स्तुतिवादक ।
स्तोत्र, स पु (स न) छंदोबद्ध देवगुण कीर्तन, स्तव, स्तुति (स्त्री)।
स्तोम, स पु (स) स्तुति (स्त्री), स्तव २ यज्ञ ३ राशि ।
स्त्री, स स्त्री (स) वनिता, महिला, रामा, नारी, दे २ पत्नी, भार्या ३ स्त्रीलिंगी जीव ।
—ग्रह, स पु (स) चंद्रबुधशुक्रग्रहाः (ज्यो)।
—जित, स्त्री वश विजित-वश्य ।
—धन, स पु (स न) स्त्रीस्वत्वास्पदीभूत धन (माता, पिता, भाई तथा पति से प्राप्त, विवाह संस्कार के समय प्राप्त और दहेज)।
—धर्म, स पु (स) ऋतु, पुष्प, रजस (न) २ मैथुन ३ स्त्रीकर्तव्य ४ स्त्रीसंबंधि विधानम् ।
—पुंसलक्षणा, स स्त्री (स) पोटा (स्तन श्मश्र्वादियुक्ता)।
—पुरुष, स पु (स) स्त्री,-पुंसौ-पुंसी, मिथुन द्वंद्व, युग्मम् ।
—राज्य, स पु (स न) प्राचीनप्रदेश विशेष (महाभारत)।
—लंपट, वि पु (स) स्त्री,-लोल शौंड -चौर, कामुक ।

—लिंग, स पु (स न) योनि-(स्त्री), भग, स्त्रीचिह्न २ शब्दलिंगभेद (व्या)।

—व्रत, सं पु (सं न) पत्नीव्रत, एकपत्नीपरायणता।

—समागम, स पु (स) स्त्री,-सम्सर्ग-सम्भोग ।

—स्वभाव, स पु (स) महल्लक, दे खोजा' २ नारीशील्म्।

स्त्रीत्व, स पु (स न) नारीत्व, स्त्री-नारी,-धर्म भाव ।

स्त्रैण, वि (स) स्त्रीजित, रमणीरत ३ स्त्री,-सबधि-योग्य ।

स्थगित, वि (स) विलंबित, व्याक्षिप्त दे 'मुल्तवी' २ आच्छादित ३ गुप्त ४ अव, रुद्ध।

स्थपति, स पु (स) वास्तुशिल्पिन् २ तक्षन्।

स्थल, स पु (सं न) भूमि (स्त्री), भूभाग, स्थली २ शुष्क-निर्जल,-भूमि ३ स्थान ४ अवसर ।

—कमल, स पु (स न) पद्मा, पद्मचारिणी, अतिचरा, स्थलरुहा।

—चर, वि (स) स्थल,-ग गामिन् चारिन्, भू , चर चारिन्।

स्थली, स स्त्री (स) शुष्क, भूमि (स्त्री)-भूभाग २ मनोज्ञतम् (स्त्री) ३ स्थान, स्थलम्।

स्थविर, स पु (स) वृद्ध २ महन्त (पु)।

स्थाणु, स पु (स) भग्नशाखवृक्ष, ध्रुव, शंकु २ स्तंभ, स्थूणा ३ शिव ४ स्थावरपदार्थ। वि (स) अचल, स्थिर।

स्थाण्वीश्वर, स पु (स न) कुरुक्षेत्र, स्थानेश्वरनगरम्, स्थाणुतीर्थम्। २ स्थानेश्वरस्थ लिंगविशेष ।

स्थान, स पु (स न) स्थल २ आनिवास, गृह ३ भूमि (स्त्री) स्थली, भूभाग ४ पद, दे 'पदवी' ५ वर्णोच्चारणस्थान (व्या) ६ राज्य, देश ७ देवालय, मंदिर ८ अवसर ९ दशा १० परिच्छेद, अध्याय ।

—च्युत, वि (स) स्थानभ्रष्ट २ पद, च्युत भ्रष्ट।

स्थानक, स पु (सं न) स्थानं, स्थलम् २ पद, स्थिति (स्त्री) ३ ४ वालक्षेत्र नृत्य, मुद्राभेद ५ नाटकव्याख्यास्थलविशेष ६ आलवाल, आवालवालम् ■ सुराफेन ।

स्थानी, वि (सं नित्) सस्थान, पदयुक्त २ स्थायिन् ३ उचित, उपयुक्त।

स्थानीय, वि (स) स्थानिक, स्थानविशेषसबंधिन्।

स्थापक, स पु (स) स्थापयितृ सस्थापक, प्रवर्तक, प्रारम्भक, स्थापनकर २ निधायक ३ उत्थापक, उन्नायक ४ मूर्ति प्रतिमा,-कार ।

स्थापत्य, स पुं (स न) वास्तु विद्या-शिल्प कला २ मुत्रकमन् (न), भवननिर्माणम्।

स्थापन, स पु (सं न) निधान, न्यसन, निवेशन २ उत्थापन, उन्नयन, उन्नमन ३ सस्थापन, प्रवर्तन, प्रारंभण ४ प्रतिपादन, साधनम्।

स्थापना, स स्त्री (स) (मंदिरे) मूर्ति, प्रतिष्ठापनं निवेशन २ ३ दे स्थापनं (३ ४) ४ विचारागविशेष (न्या०)।

स्थापित, वि (स) सस्थापित, प्रवर्तित २ निहित निवेशित, न्यस्त ३ उत्थापित, उन्नीत, उन्नमित ४ स्थिर, दृढ ५ निश्चित।

स्थायित्व, सं पु (स न) स्थायिता, स्थिरता, स्थैर्य, ध्रुवता, नैत्यम्।

स्थायी, वि (सं -यिन्) ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय २ चिरस्थायिन्, दृढ ३ स्थिर, स्थास्नु, स्थायुक, स्थितिशील ४ विश्वसनीय।

—भाव, स पु (स) रसस्थ भावविशेष (सा) (९ स्थायिभाव = रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद)।

स्थाली, सं स्त्री (सं) उखा, पिठर री, दे पतीला'।

—पुलाक न्याय, स पु (सं) न्यायभेद, अंशगुणज्ञानेन पूर्णगुणज्ञानानुमानम्।

स्थावर, वि (स) अचल, निश्चल, स्थिर २ स्थविर, स्थातृ, स्थाणु, स्थायुक, स्थास्नु, स्थितिशील। (सं न) अजंगम अचल, संपत्ति (स्त्री)।

स्थित, वि (स) विद्यमान, वर्तमान २ उपविष्ट आसीन ३ उत्थित ४ अवस्थित।

—प्रज्ञ, वि (सं) स्थिर स्थित,-बुद्धि धी प्रज्ञ, ब्रह्मबुद्धिसंपन्न २ आत्मसंतोषिन्।

स्थिति, सं स्त्री (सं) अवष्टंभ, आधार, आलम्ब २ निवास, अवस्थानं ३ दशा,

अवस्था ४ पद, दे 'पदवी' ५ अस्तित्व, सत्ता ६ मर्यादा।

—स्थापकता, स स्त्री (स) कुचनीयता, नम्यता, दे 'लचक'।

स्थिर, वि (स) अचल निश्चल, अविचल २ निश्चित, स्थिरीकृत ३ शांत ४ दृढ़ ५ स्थायी ६ नियत ७ विश्वसनीय ८ स्थायुक, स्थास्नु।

—चित्त, वि (स) दृढ़संकल्प, स्थिर मति धी-बुद्धि।

स्थिरता, स स्त्री (स) निश्चलता, अचलता स्थिरत्व २ दृढ़ता, धनत्व ३ स्थायित्व, ध्रुवता ४ धैर्य, धीरता ५ चिरस्थायिता, स्थास्नुता।

स्थूणा, स स्त्री (स) गृहस्तंभ, दे 'स्तम्भ' (१ २)।

स्थूल, वि (स) पीन, पीवर (-वानी स्त्री) पुष्ट, मांसल, मेदुर, मिद्र, मेदस्विन, पीवन, पीवन् २ स्पष्ट, सुबोध ३ मूर्ख, जड़ ४ विषम, नतोन्नत।

—बुद्धि, वि (स) मदमति, जड़।

स्थूलता, स स्त्री (स) पीनता, पीवरता, मेदुरता, स्थूलत्व २ गुरुतात्व, भारवत्ता ३ विषमता ४ महाकायता।

स्थैर्य, स पु (स न) दे 'स्थिरता'।

स्थौल्य, स पु (स न) दे 'स्थूलता'।

स्नात, वि (स) कृतस्नान, दे 'नहाया हुआ'।

स्नातक, स पु (स) आप्लुतव्रतिन्।

स्नान, स पु (स न) आप्लव(प्ला)व, अभिषेक, उपस्पर्श नीर, अवगाहनम्।

—करना, क्रि अ, स्ना (अ प अ), अवगाह् (भ्वा आ से), दे 'नहाना'।

—गृह, स पु (स न) स्नान, शाला आगार।

स्नायु, स स्त्री (स पु) वस्नसा, स्नसा, नसा, शानतनु, नाडी ... स्त्री), वायु वाहिनी नाडी, वातरज्जु (स्त्री)।

स्निग्ध, वि (स) चिक्कण, चिक्क, चक्कण, मसृण, श्लक्ष्ण, अरूक्ष २ सस्नेह, सतैल, तैलाक्त।

स्निग्धता, स स्त्री (स) चिक्कणता, मसृणत्व, श्लक्ष्णता २ तैलवत्ता, स्नेहवत्ता ३ प्रियता।

स्नीड, वि (स) मृदुल, कोमल, स्निग्ध २ अनुरक्त, आसक्त।

स्नुषा, स स्त्री (स) पुत्र, वधू (स्त्री)।

स्नेह, स पु (स) प्रेमन् (पु न) अनु, राग प्रीति (स्त्री), प्रणय २ चिक्कणता (घृततैल दि)।

—करना, क्रि स, दे 'प्रेम करना'।

—मिश्रित, वि (स) घृत तैल पक्व आग।

—सार, स पु (स) मज्जा, दे। वि, तैल प्रधान बहुल।

स्नेहपात्र, वि (स) स्नेह्य, स्नेहार्ह २ प्रेम पात्र भाजन अनुराग-अर्ह-योग्य।

स्नेही, स पु (स = हिन्) स्नेहशील, अनुरागिन, प्रणयिन्, प्रेमिन्, मित्रम्। वि (स) चिक्कण, मसृण।

स्पंज, स पु (अ) ... ...।

स्पंदन, स पु (स न) स्पंद, ईषत्कंपन, प्रस्फुरण, क्षिपकम्।

स्पर्द्धा, स स्त्री (स) विजिगीषा, मत्सर, अहमहमिका, ईर्ष्या, सापत्न्यम्।

—करना, क्रि अ, प्रति स्पर्ध् (भ्वा आ से), मत्सृ (भ्वा प से), विजिगीष (सन्नन्त विजिगीषते), आत्मभवितु यत् (भ्वा आ से), ईर्ष्य् (भ्वा प से)।

स्पर्श, स पु (स) स, स्पर्श योग, संसर्ग, संपर्क, परामर्श २ त्वगिन्द्रियग्राह्यगुणविशेष ३ कादिवर्णपञ्चक (व्या) ४ वायु।

—करना, क्रि स, स, स्पृश् (तु प अ), दे 'छूना'।

स्पष्ट, वि (स) परि, स्फुट, प्रकट, व्यक्त, प्रत्यक्ष, ... उद्रिक्त, विशद, सुबोध, स्पष्टार्थ। स पु (न) वर्णोच्चारणप्रयत्नप्रकार (व्या)।

—कथन, स पु (स न) सरलनिष्कपट, भाषण २ कथनप्रकारभेद परवचनानामविरोधेनाभास (व्या)।

—वक्ता, स पु (स-क्तृ) स्पष्टवादिन्।

स्पष्टतया, क्रि वि (स) प्रकट, स्पष्ट, व्यक्त, स्फुट प्रत्यक्षम्।

स्पष्टता, स स्त्री (स) वैशद्य, विशदता, स्फुटता, उत्तानता, सुबोधता, सरलता, आर्जव, सारल्य, निर्व्याजता।

स्पिरिट, स स्त्री (अं) जान, आत्मन्, देहिन्, जीव २ प्राण जीवन, शक्ति (स्त्री), वीर्य ३ तत्त्व, सत्त्व, सार ४ मद्यसार।

—लेप, स पु, सारप्रदीप ।
मेथिलेटिड—, मिथिलितमद्यसार ।
रेक्टिफाइड—, शुद्धमद्यसार ।
स्पीच, स स्त्री (अ) व्याख्यान, वक्तव्यम् ।
स्पृहा, स स्त्री (■) कामना, इच्छा दे ।
स्पेक्टरास्कोप, स स्त्री (अं) रश्मिवर्णदर्शकम् ।
स्पेशल, वि (अ) विशिष्ट, विलक्षण, असामान्य, असाधारण, सविशेष, विशेष ।
—गाड़ी, सं स्त्री (अ + हिं) विशिष्टशकटी ।
स्फटिक, स स्त्री (स) स्फाट(टि)क, भासुर, स्फाटिकोपल, श्वेतशिल, सितोपल, विमल, स्वच्छमणि, स्वच्छ, अमर-निस्तुष-रत्न, शिवप्रिय ।
स्फुट, वि (स) व्यक्त, प्रकट प्रकाशित, दे स्पष्ट २ विकसित ३ शुक्ल ४ नाना-बहु वि, विध ।
स्फुरण, स पु (स न) स्फुरणा, स्फुरित, स्फुलनं, स्फुर रणा, स्फ(स्फा)रण, ईषत् किंचित् चलनम् ।
स्फुलिंग, स पु (स) अग्निकण, दे 'चिनगारी' ।
स्फूर्ति, सं स्त्री (स) क्षिप्रता, शीघ्रता आशुकारिता-त्व, त्वरा २ स्फुरण ३ मानसी प्रेरणा ।
स्फोटक, स पु (स) पिटक, गड । वि, स्फोट ।
स्फोटन, सं पु (सं न) सशब्द, भेदन विदारण २ प्रकाशनं, प्रस्थापन ३ शब्द, ध्वनि ४ आकस्मिक, भजनं विदलन स्फुटनम् ।
स्मय, स पु (सं) अभिमान, दर्प ।
स्मर, स पु (स) कंदर्प मदन, काम २ स्मृति (स्त्री), स्मरणम् ।
स्मरण स पु (सं न) आध्यानं अनुचिंतन, २ स्मृति (स्त्री)।
—करना, क्रि स, अनु-स, स्मृ (भ्वा प अ), अनुचिंत् (चु), अनुबुध (भ्वा प से), आध्यै (भ्वा प अ) २ कंठस्थ-मुखस्थ कृ ।
—दिलाना या—कराना, क्रि प्रे, स 'स्मरण करना' के प्रे रूप ।
—रखना, क्रि स, चित्ते-चेतसि मनसि निधा (जु उ अ), मनसि धृ (चु) ।
—पत्र, स पु (स न) स्मारक-स्मारक पत्रम् ।
—शक्ति, स स्त्री (स) स्मृति (स्त्री), स्मरण, धारणा, चिंता, आध्यान, आध्या, चर्चा, चितिति (स्त्री), चित्त, चिंतिया ।
स्मरणीय, वि (सं) आध्येय, अनुचिंतनीय, स्मर्तव्य, स्मरणार्ह, मनसि धारणीय ।
स्मशान, स पु, दे 'श्मशान' ।
स्मारक, वि (स) अनुबोधक, स्मृतिकर । स-पु (स न) स्मृति-स्मरण, चिह्न २ स्मारप्रदान, स्नेहाभिज्ञानम् ।
स्मार्त्त, वि (सं) स्मृति, विहित संबंधिन् २ स्मरणसंबंधिन् ।
स्मित, स पु (स न) ईषद्भास्य, मंदहास, दे 'मुसकराहट' ।
स्मृति, स स्त्री (स) दे 'स्मरणशक्ति' २ स्मरण, आध्यान, अनु, चिंतन-बोध ३. आर्यधर्मशास्त्राणि (मनुस्मृति आदि) ।
—कार, सं पु (स) धर्मशास्त्रकार ।
—वर्द्धिनी, स स्त्री (स) ब्राह्मी ।
स्यंदन, स पुं (सं) रथ, दे ।
स्यात्, अव्य (स) दे 'शायद' ।
स्यानपन, स पु (हिं स्याना) नैपुण्यं, दाक्ष्यं, चातुर्यं २ कैतवं, शाठ्यं, व्याज ।
स्याना, वि (स सज्ञान) चतुर, बुद्धिमत् २ धूर्त, कापटिक ३ वयस्क, युवन् । स पु, वृद्ध २ ग्रामणी ३, चिकित्सक ।
—पन, स पुं, दे 'स्यानपन' ।
स्यानी, ■ (स्त्री) (हिं स्याना) चतुरा, दक्षा, बुद्धिमती । स स्त्री, युवती ति (स्त्री), समकन्या, परिणेया, उद्वाह्या ।
स्यार, सं पुं (सं शृगाल) चतुर, दे. 'गीदड़' ।
स्याह, वि (फा) काल, कृष्ण, असित ।
—दिल, वि (फा) दुष्ट, खल, पाप ।
स्याही, सं स्त्री (फा) मसी, षी सी, मषि षि मि (सब स्त्री), मेला २ कालिमन् (पु), कृष्णता, श्यामता ३ कज्जलभेद ४ कल्क, लांछनम् ।
—चट, —चूस, स पु, मसी शोषक पूमर्द (पत्रम्) ।
—जाना, मु, यौवन अति इ (अ प ■) ।
—लगाना, मु॰ अपवद् परिवद् निंद् (भ्वा प स,), कल्क (ना धा कल्कयति) ।
स्यूत, वि (सं) स्यून, निस्यूत २ स्यूत,

व्यूत, प्रोत, गुम्फित, ग्रथित ३ विद्ध। स पु (म) स्योन, प्रसेव ।
स्रवण, स पु (म न) स्र(स्रा)व, प्रस्राव, २ गर्भ-पात-स्राव ३ मूत्र ४ प्रस्वेद ।
स्रष्टा, स पु (म स्रष्टृ) विश्वसृज्, ब्रह्मन्, चतुर्मुख । वि (म) रचयितृ निर्मातृ।
स्रुवा, सं पु (म स्त्री) स्रुव, स्रुच् (स्त्री), स्रु (स्त्री) (यज्ञपात्रभेद)।
स्रोत, स पु (स न) स्रोतस् (न), प्रवाह, ओघ, धारा, वराक २ नदी ३ देहछिद्राणि (न बहु) ४ वंशपरंपरा।
स्लीपर, स पु (अ स्लिप्पर) पत्तरीका।
स्लु—, स पु (अ) पूर्णकफरोग।
स्लेट, स स्त्री (अ) लेखन शिला, अश्म पाषाण, पट्टिका, *पाषाणी।
स्व, सं पु (सं) आत्मन् २ बंधु, ज्ञाति (पु) ३ धनम्। वि (म) स्वीय, स्वकीय, आत्मीय, स्वक, निज, स्व-,निज-,आत्म-।
—कार्य, स पु (म न) निजकृत्यम्।
—कुटुंब, स पु (म न) निजपरिवार ।
—जन, स पु (स) बंधुवर्ग, बांधवा (बहु)।
—देश, सं पु (स) जन्मभूमि भूमि (स्त्री)।
—देशी, वि (स शीय) निजदेश, स्वदेशिन् निर्मित।
—धर्म, स पु (म) निजकर्तव्य २ सहज गुण।
—राज, सं पु (म राज्य) निजशासनम्।
स्वकीय, वि (स) स्व, निज, आत्मीय, स्वीय।
स्वकीया, स स्त्री (स) नायिकाभेद (म), स्वीया, स्वामिन्येवानुरक्ता।
स्वगत, स पु (म न) आत्मभनो,-गत, अश्राव्यं, नाट्ययोक्तिभेद (सा)।
स्वच्छंद, वि (सं) स्वतंत्र स्वाधीन, स्वायत्त २ नियन्त्रणशून्य, स्वैरिन् निरंकुश, स्व रुचि । क्रि वि (सं न) स्वातन्त्र्येण,स्वच्छन्दत ३ स्वैर, निरंकुश, यथेष्टम्
—चारिणी, स स्त्री (म) वेश्या।
—चारी, वि (स रिन्) स्वेच्छाचारिन्, स्वैर, स्वैरिन्।
स्वच्छंदता, स स्त्री (म) स्वातन्त्र्य, स्वाधीनता, स्वतंत्रता २ स्वैर(रि)ता, निरंकुशता।
स्वच्छ, वि (म) अमल, निर्मल, विमल, मल, हीन रहित २ शुभ्र श्वेत, उज्ज्वल ३ पवित्र, शुचि, वि, शुद्ध ४ स्पष्ट, विशद ५ स्वस्थ, निरामय ६ निष्कपट, ऋजु ७ पारदर्शक।
स्वच्छता, स स्त्री (म) निर्मलता, विमलता २ उज्ज्वलता ३ पवित्रता ४ पारदर्शकता।
स्वतंत्र, वि (म) दे 'स्वच्छंद' वि तथा क्रि वि ।
स्वतंत्रता, स स्त्री (स) दे 'स्वच्छंदता'।
स्वत, अव्य (म) स्वेच्छया, स्वयमेव, स्वेच्छा पूर्वं कामत (सब अव्य)।
—प्रमाण, वि (स) स्वत सिद्ध, स्वयंसिद्ध, प्रमाणान्तरनिरपेक्ष।
स्वत्व, स पु (म न) शक्ति (स्त्री), अधिकार वश २ आधिपत्य, स्वामित्व, प्रभुत्वम्।
स्वप्न, स पु (म) स्वाप, प्रसुप्तस्य ज्ञान २ निद्रा ३ असंभवकल्पना, वृथा मिथ्या वासना, आभास, स्वप्नसृष्टि (स्त्री)।
—देखना, स्वप्न दृश (भ्वा प अ), स्व प्नायते (ना धा)
—दोष, स पु (म) निद्रायां शुक्रपात ।
—में बोलना, क्रि अ उत्स्वप्नायते (ना धा)।
—लेना, मु, असंभवकल्पना कृ, मनसा कल्पय् (प्रे)।
स्वभाव, स पु (स) धर्म, गुण, प्रकृति संसिद्धि (स्त्री) स्वरूप, नि,सर्ग, भाव, २ प्रकृति मनोवृत्ति (स्त्री), शील ३ अभ्यास, नित्यव्यवहार ।
—सिद्ध, वि (म) सहज, प्राकृतिक, स्वाभाविक।
स्वभावत, अव्य (स) प्रकृतया, जन्मत, निसर्गत ।
स्वय, अव्य (स) आत्मना २ स्वत एव, विनाऽऽयास, प्रयत्न विना।
—भू, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ काल ३ कामदेव ४ विष्णु ५ शिव । वि (म) स्वयं, जात भव स्वज, स्वयोनि।
—वर, स पु (सं) स्वयंवरण, स्वेच्छया पतिवरणम्।
—वरा, स स्त्री (म) पतिंवरा, वर्या।
—सिद्ध, वि (म) स्वत सिद्ध २ स्वत, सफल।
—सेवक, स पु (स) स्वेच्छासेवक ।

—सेविका, स पु (स) स्वेच्छमविरा।
स्वर्, स पु (स अव्य) स्वा २ परलोक ३ आकाश ग्राम्।
स्वर, स पु (स) ध्वनि, शब्द नि स्व (स्वा)न, नि नाद घोष क्वन, विरन, वि,र(रा)व, हाद २ षट्जादय सप्त स्वरा (सगीत) ३ उदात्तादिस्वरविश (व्या) ४ अच्, मात्रा (व्या) ५ उच्छ्वस्म।
—भग, सं पु (स) स्वर,क्षय भेद, गल रोगभेद।
—सक्रम, स पु (स) स्वरारोहावरोहौ (सगीत)।
स्वरूप, स पु (स न) निजरूप, आकार, आकृति (स्त्री) २ मूर्ति (स्त्री), चिन्ह ३ प्रकृति (स्त्री), स्वभाव ४ देवादिरि धृत रूप ५ देवादिरूपधारिन्। वि (स) तुल्य, सम २ सुदर, मनोज्ञ ३ पडित, प्राज्ञ। क्रि वि, रूपेण, रीत्या (उ प्रमाण स्वरूप = प्रमाणरूपेण)।
स्वर्ग, स पु (स) स्वर्-देव अमर सुर-ऊर्ध्व लोक, स्वर् (अव्य), नाक त्रिदिव, त्रिदशालय, मन्दर, शुक्रभवन, सुराधार २ ईश्वर ३ सुख ४ सुखद स्थान ५ आकाश ग्राम्।
—काम, वि (सं) स्वग ,लिप्स इच्छुक।
—गमन, सं पु (स न) स्वर्-स्वर्ग-गति (स्त्री)-लाभ, निधन, मरणम्।
—गामी, वि (स -मिन्) स्वर्गगमनेच्छु २ स्व गत, स्वगत, मृत।
—तरु, स पु (स) कल्पवृक्ष।
—धेनु, स स्त्री (सं) कामधेनु।
—नदी, स स्त्री (सं) स्वर्गापगा, मदाकिनी।
—पति, सं पु (स) इन्द्र।
—पुरी, सं स्त्री (स) अमरावती।
—लोक, सं पु (स) दे स्वर्ग' (१)।
—वधू, स स्त्री (स) स्वर्गस्त्री, अप्सरस (स्त्री)।
—वास, सं पु (स) स्वर्गवास २ मरण निधनम्।
—वासी, वि (सं मिन्) दस्वर्गनिवासिन् २ दिवगत, प्रेत, मृत, स्वयात, स्वर्गस्थ।
स्वर्गीय, वि (सं) स्वर्ग्य, दिव्य, दैव २ दे 'स्वर्गवासी' (२)।
स्वर्ग्य, वि (स) दे 'स्वर्गीय' (१, २)।
स्वर्ण, स पु (स न) दे 'सोना' (१)।
स्वर्लोक, स पु (स) दे 'स्वर्ग' (१)।
स्वल्प, वि (स) अल्पल्प, अतिस्तोक।
स्वशुर, स पु (स श्वशुर) दे 'ससुर'।
स्वस्ति, अव्य (सं) कल्याण-मगल भद्र भूयात (अशीस)। स स्त्री (सं) कल्याणं, मगल २ सुखम्।
—वाचन, स पु (स न) मगलमन्त्रपाठ २ धार्मिककृत्यभेद (गणेशपूजनादि)।
स्वस्तिक, स पु (स) मगल्यचिह्नभेद (卐) २ मगल्द्रव्य ३ चतुष्पथ।
स्वस्तिका, स स्त्री, दे 'स्वस्तिक' (१)।
स्वस्त्ययन, स पु (स न) कार्यारम्भे मगलमन्त्रपाठ २ समृद्धिसाधनम् ३ दक्षिणे नीयमानो मगल्यजलकलश। ४ दानप्राप्त्य नतर विप्रस्याशीर्वाद।
स्वस्थ, वि (स) अनामय, निरामय, नीरोग, अरोग, कुशल, कुशलिन्, सुस्थ, आरोग्यवत्, नीरुज्, निर्व्याधि, व्याधि-दोष रहित २ 'सावधान' दे।
—चित्त, वि, शान्तमनस्क।
स्वाग, स पु (सं स्वांग>) (उपहासार्थ) अनु-अनुकरण-कार कृति (स्त्री), विडम्बन २ वेषान्तर, छद्मरूप-कपट-वेष।
—रचना, क्रि स, वेष परिवृत (प्रे), वेषान्तर रच (चु) २ नट् (चु) अभिनी (भ्वा प अ)।
स्वागी, स पु (स स्वाग>) नट, अभिनेतृ, शैलूष, रगाजीव २ छद्म ३ दे बहुरूपिया'।
स्वागत, स पु (सं न) उपचार, सम्मान, सभाजना, सत्कार कृति (स्त्री) क्रिया, प्रत्युद्गमन, प्रत्युद्यान, प्रत्युत्थान, प्रत्युद्गम गति (स्त्री)।
—करना, क्रि स, प्रत्युद्गम् (भ्वा प अ), प्रत्युद्यान (भ्वा प से)।
—समिति, स स्त्री (स) स्वागतकारिणी सभा।
स्वातंत्र्य, स पु (सं न) दे 'स्वतंत्रता'।
स्वाति, स स्त्री (स) स्वाती, पञ्चदश नक्षत्रम्।
स्वाद, सं पुं (स) आस्वाद, रस २ आनद, रसानुभूति (स्त्री) ३ इच्छा ४ माधुर्यम्।

—लेना, क्रि स, आ स्वाद् (भ्वा आ से), रस् (चु) २ ईषत् स्वाद् (भ्वा प से)। स पु, आ स्वादन, रसनम्।

स्वादिष्ट, वि (स स्वादिष्ठ) सरस, सुरस, रुच्य, रुचिकर (–री स्त्री) स्वादु २ मिष्ट।

स्वादीला, वि (स स्वाद >) दे 'स्वादिष्ट'।

स्वादु, वि (स) स्वादिष्ठ २ मधुर, मिष्ट, ३ मनोज्ञ।

स्वादुता, सं स्त्री (सं) सुरसता, स्वादवत्ता २ मधुरता।

स्वाधिपत्य, स पु (स न) निजप्रभुत्वम्।

स्वाधीन, वि (स) दे 'स्वतन्त्र'।

स्वाधीनता, स स्त्री (सं) दे 'स्वतन्त्रता'।

स्वान, स पु (स श्वन्) कुक्कुर, दे 'कुत्ता'।

स्वाध्याय, स पु (स) वेदाध्ययन, धर्मशास्त्रानुशीलन २ अध्ययन, विषयविशेषानुशीलनम्।

स्वाप, स पु (स) निद्रा २ स्वप्न ३ अज्ञानं ४ निस्पन्दता, स्पर्शाज्ञता।

स्वाभाविक, वि (स) स्वभावसिद्ध, सहज, प्राकृतिक, नैसर्गिक, कृत्रिमता-रहित।

स्वामित्व, स पु (स न) स्वामिता, प्रभुता त्व, स्वाम्यम्।

स्वामिनी, सं स्त्री (स) गेहिनी, गृहिणी, गृहपत्नी, कुटुम्बिनी, पुरन्ध्री २ ईशिनी, ईश्वरी, स्वत्ववती, अधिकारिणी ३ श्रीराधा।

स्वामी, स पु (स मिन्) प्रभु, अधि-प-पति भू, ईश्वर, ईशितृ, परिवृढ, नायक, नेतृ, आर्य, पालक २ गृहपति, कुटुम्बिन्, गृहिन् ३ पति, भर्तृ, धव ४ परमेश्वर ४ नृप ५ कार्तिकेय ६ परिव्राजकोपाधि।

स्वाम्य, सं पु (स न) स्वामित्व, प्रभुत्व, आधिपत्य, अधिकार।

स्वायत्त, वि (सं) आत्मवश, निजाधिकारस्थ।

—शासन, स पु (स न) स्थानिकस्वराज्य।

स्वाराज्य, स पु (स न) स्वाधीनशासन २ स्वर्गलोक ३ ब्रह्मणा तादात्म्यम्।

स्वार्थ, सं पु (सं) निजोद्देश्य, आत्मप्रयोजन २ आत्महित, निजलाभ ३ स्वधनम्।

—त्याग, स पु (सं) निजलाभोत्सर्ग।

—त्यागी, वि (स गिन्) निजलाभोत्सर्गिन्।

—परायण, वि (स) स्वार्थ स्वहित-स्वलाभ, पर-परायण निष्ठ।

—परायणता, सं पु (स) स्वार्थ स्वहित स्वलाभ, परता निष्ठा बुद्धि -दृष्टि (दोनों स्त्री)

—साधक, वि (स) दे 'स्वार्थपरायण'।

—साधन, स पु (स न) निजहितनिर्वहणम्।

स्वार्थी, वि (स र्थिन्) दे 'स्वार्थपरायण'।

स्वावमानना, स स्त्री (स) स्वावमाननम्, आत्म भर्त्सना-गर्हा-निन्दा।

स्वावलम्बन, स पु (स न) आत्मनिर्भरता, स्वाश्रय।

स्वावलम्बी, वि (स म्बिन्) आत्मनिष्ठ, आत्माश्रय आत्म श्रित, स्वाश्रित।

स्वास, स पु
स्वासा, स स्त्री } (स श्वास) दे 'साँस'।

स्वास्थ्य, स पु (सं न) आरोग्य, स्वस्थता, कुशल, नीरोगता, अरोगिता।

—कर, वि (स) आरोग्य प्रद-वर्द्धक।

स्वाहा, अव्य (स) हविर्दान, मन्त्र शब्द।

—करना, मु नश् (प्रे), अपव्यय् (चु) २ भस्मसात्कृ।

स्वीकार, सं पु (स) अङ्गीकार २ स्वीकरण, अङ्गीकरण, ग्रहणं आदानं ३ वचन, प्रतिज्ञा।

स्वीकार्य, वि (स) स्वीकरणीय, अङ्गीकार्य।

स्वीकृत, वि (स) आदृत, अङ्गीकृत, प्रतिगृहीत, २ प्रशस्त, अनुमत, मत।

स्वीकृति, स स्त्री (स) सं अनुमति (स्त्री), अनुमोदन २ आदान, स्वीकार, प्रतिग्रह।

स्वीय, वि (स) स्वकीय, निज, आत्मीय।

स्वेच्छा, स स्त्री (स) निजाभिलाष, स्वरुचि (स्त्री) स्वच्छन्द।

—चारी, वि (सं) स्वैर, प्रतिनिविष्ट, निरङ्कुश, स्वच्छंद।

—मृत्यु, स पु (स) भीष्म २ स्वेच्छया मरणम्। वि (स) स्वायत्तनिधनम्।

स्वेद, स पु (स) घर्म, निदाघ, प्रस्वेद, स्वेद घर्म, नर्म उदक २ वाष्प ३ ताप, उष्मन् ४ स्वेदन ५ घर्मकारकमौषधम्।

स्वेदज, वि (सं) घर्मजात (जूँ, लीख आदि)।

स्वैर, वि (स) दे 'स्वच्छन्द'।

स्वोपार्जित, वि (स) आत्म निज स्व-अर्जित-उपार्जित।

ह

ह, देवनागरीवर्णमालायास्त्रयस्त्रिंशो व्यञ्जनवर्णः, हकार ।

हँकवाना, क्रि प्रे, व 'हाँकना' व प्रे रूप ।

हँकाना, क्रि स तथा प्रे, दे 'हाँकना' तथा 'हँकवाना' ।

हँकारना, क्रि स, दे 'पुकारना' २ दे 'ललकारना' ।

हंगामा, स पुं (फा -मह्) कोलाहल, तुमुल २, कलकल ३ समर्द, विप्लव ।

हंगीराँ, स स्त्री (फ) गण्डमाला, गलाङ्कुर ।

हंटर, स पु (अ) कशा छा, द 'कोड़ा' ।

हंडा, स पु (स) धातुमय वृहज्जलभाजनम् ।

हँडिया, स स्त्री (स हण्डिका) हण्डा ।

हंडी, स स्त्री (सं) हण्डिका ।

हंता, स पु (स -न्तृ) घातक, मारक, वध कारिन्,-हन् (समासान्त में) ।

हंस, स पु (सं) मराल, मानसौकस्, ध्व(व)लाङ्ग, क्षीराद, नालाश, चक्राङ्ग, राजहंस, श्वेतगरुत्, कलकण्ठ, सितच्छद पक्ष, धवलपक्ष, मानसालय २ सूर्य ३ पर मात्मन् ४ शुद्धात्मन् ५ परिव्राजकभेद ।

—गति, स स्त्री (स) कलहंसगति ।

—गामिनी, वि स्त्री (सं) कलहंसगामिनी ।

—नादिनी, वि स्त्री (स) मधुरस्वर-प्रिय, भाषिणी, हंसगद्गदा ।

—वाहन, स पु (स) ब्रह्मन् (पु), हंसरथ ।

—वाहनी, स स्त्री (स) सरस्वती ।

हँसना, क्रि अ (स हसनं) प्र वि, हस् (भ्वा प स), हास्य कृ २ (मन्द-मन्द हँसना), स्मि (भ्वा आ अ) ३ (कवा हँसना) अट्टहास कृ ४ उपहास्यं कृ, परिहस ५ मुद् (भ्वा आ स), हृष (दि प स) । क्रि स, अव-उप, हस् । सं पु, हास, हास्य, हसन, हसितम् ।

—खेलना, स पु, विनोद, प्रमोद, आनन्द, परिहास ।

—बोलना, सं पु, हास्यालाप, सुखसम्भाषणं ।

हँसने योग्य, वि, हास्य(स्या)र्ह, हसितव्य, हास्य, हासकर (री स्त्री) हास्यास्पदम् ।

हँसने वाला, सं पु, हासक, हासिन् ।

हँसमुख, वि (हिं हँसना+स मुख>) हास्यमुख(-खा,-खी स्त्री), स्मेरानन(-ना,-नी स्त्री), प्रसन्न प्रफुल्ल-हास्य, वदन (ना, नी स्त्री) । २ नर्मगर्भ, विनोदप्रिय, हास्यशील, विनोदिन् ।

हँसली, स स्त्री (स अंस>) जत्रु (न), अक्षक, ग्रीवास्थि (न) २ ग्रैवेय, कण्ठाभरणभेद ।

हँसाई, स स्त्री (हिं हँसना) हसन, हास २ अवहास, उपहास, लोक, निन्दा अपवाद ।

हँसाना, क्रि स, व 'हँसना' के प्रे रूप ।

हंसिनी, स स्त्री, दे 'हंसी' ।

हँसिया, स पु (स हस >) लवित्र, लवा णक, दात्र ।

हंसी, सं स्त्री (स) वरटा-टी, च(च)क्राङ्गी, हंसिका, व(वा)रला, वराली, मन्दगमना, मृदुगामिनी ।

हँसी, स स्त्री (हिं हँसना) हास, हास्य, हसित, हसन हसिति (स्त्री) २ परिहास, नर्मन् (न), कौतुक, लीला, विनोद ३ उप अव,-हास ४ लोक, अपवाद निन्दा, अपकीर्ति (स्त्री) ।

—खुशी, स स्त्री, आनन्द, मोद ।

—खेल, स पु, विनोद, कौतुक २ सुकर सुसाध्य,-कार्य, साधारणवार्ता ।

—ठट्ठा, स पु, द 'हँसी' (२) ।

—उड़ाना, मु, उप-अव, हस् (भ्वा प स), सव्यङ्ग्य निन्द् (भ्वा प स) ।

—खेल समझना, मु, सुकर-सुसाध्य मन् (दि आ अ) ।

—में उड़ाना, मु, साधारण मत्वा त्यज् (भ्वा आ स) ।

—में खाँसी, मु, विनोदे कलह, परिहास, उपद्रवे परिणत ।

हँसोड़, वि (हिं हँसना) हास्य परिहास-विनोद, प्रिय शील, नर्मगर्भ, विनोदिन, कौतुकिन् ।

—पन, स पु, हास्यशीलता, विनोदप्रियता, नर्मगर्भता ।

हँसौहाँ, वि (हिं हँसना) हासोन्मुख २ परि हासयुक्त ।

हक, वि (अ) सत्य, ऋत, अवितथ, तथ्य,

यथार्थ २ उचित, न्याय्य, धर्म्य । स पु (अ) अधिकार, स्वत्व २ प्रभुत्व, शक्ति (स्त्री) ३ कर्तव्य, धर्म ४ सत्य, ऋत, तथ्य ५ पर मात्मन् ६ देय परिशोध्य ७ ग्राह्य प्राप्यम् ।
—अदा करना, मु कर्तव्य पा(प्रे ,पालयति-ते)।
—दार, स पु (अ + फा) अधिकारिन्, स्वत्ववत् ।
—नाहक, अव्य (अ + फा + अ) बलात्, असभम (दोनों अव्य) २ व्यर्थं, निष्प्रयोजन ।
—मालिकाना, स पु (अ + फा) स्वाम्य धिकार ।
—मौरूसी, स पु (अ) परपरागत पैतृक, अधिकार ।
—शुफा, स पु (अ) प्रतिवेशाधिकार ।
हकबकाना, क्रि अ (अनु हका बका) निर्मोही ह्निस्तब्धी नटी, भू, व्यामुह् (दि प वे)।
हकला, वि (हि हकलाना) अव्यक्त गद्गद, वादिन, स्खलितस्वर ।
हकलाना, क्रि अ (अनु हक) गद्गदवाचा वद् (भ्वा प से), स्खलद्वाक्यं अस्फुटवर्णं भाष् (भ्वा आ से), स्खल (भ्वा प से)। स पु, स्खलन, गद्गद-अस्पष्ट अव्यक्त, भाषणम् ।
हकारत, स स्त्री (अ), क्षुद्रता, तुच्छता, लघुता ।
—की नजर से देखना, मु, अवमन् (दि आ अ), उपेक्ष (भ्वा आ से)।
हकीकत, स स्त्री (अ) तथ्य, तत्त्व, सत्य २ तथ्यवार्ता, सत्यवृत्तान्त ।
—में, मु, तत्त्वत, वस्तुत ।
हकीकी, वि (अ) सत्य, यथार्थ २ निज, आत्मीय, सोदर ३ ईश्वरीय, पारमार्थिक ।
हकीम, स पु (अ) आचार्य, विद्वस् २ वैद्य, चिकित्सक ।
नीम—, स पु, मिथ्या-कु अनुभवशून्य, वैद्य ।
नीम हकीम खतरे जान, लोकोक्ति, इषज्ज्ञान भयकरम्, अल्पबोधो भयावह ।
हकीमी, स स्त्री (अ हकीम) (यावन) चिकित्साशास्त्र २ (यावनी) वैद्यवृत्ति (स्त्री)।
हकीर, वि (अ) तुच्छ, क्षुद्र २ उपेक्ष्य ।
हकूक, स पु (अ, हक का बहु) स्वत्वानि, अधिकारा (दोनों बहु०)।
हकूमत, स स्त्री, दे 'हुकूमत'।

हका बका, वि (अनु हक बक) विस्मयापन्न, आश्चर्यचकित, सभ्रान्त, नटी-आकुली निश्चेष्टी, भूत, निस्तब्ध ।
—होना, क्रि अ, दे, 'हकबकाना'।
हगना, क्रि अ (स हदन) हद् (भ्वा आ अ) पुरीषमल उत्सृज् (तु प अ), उच्चर (भ्वा प से)। स पु, हदन, मल उत्सर्ग, रेक, पुरीषोत्सर्ग ।
हगाना, क्रि प्रे, व 'हगना' के प्रे रूप ।
हचकोला, स पु (अनु हचक) उद्घात, उत्क्षेप उच्छलन, सक्षोभ ।
हज, स पु (अ) मक्कायात्रा, हज ।
हज (-ज्ज), स पु (अ) सुख, आनन्द, हर्ष २ लाभ प्राप्ति (स्त्री)।
हजम, स पु (अ) जठरे पचन, विपरि, पाक, परिणाम (वि, (जठरे) पक्व, परिणत, जीर्ण २ सकपट अपहृत, छलेन आत्मसात्कृत ।
—होना, क्रि अ, दे 'पचना'। मु, कपटाप हृतवस्तुन स्वपार्श्वे स्थिति (स्त्री)।
हजरत, स पु (अ) महात्मन, महानन २ महाशय ! महोदय ! श्रीमन् ! (सबोधन वचन) ३ धूर्त, कितव (व्यग्य)।
हजामत, स स्त्री (अ) केशादीना वपन, मुण्डन क्षौर २ प्रवृद्धा श्मश्रुकेशा (बहु)।
—बनना, क्रि अ, मुण्ड्-वप्-क्षुर् क्षुर् (कर्म)। म, वच् शठ्-विप्रलभ (कर्म)।
—बनाना, क्रि स मुण्ड् (भ्वा प से, चु) क्षुरेण कृ (तु प से) छिद् (रु प अ), क्षुर्-क्षुर् (तु प से)। मु, धन हृ (भ्वा प अ) २ तड् (चु)।
हजार, वि तथा स पु (फा) दे 'सहस्र'। क्रि वि, सहस्र बहु-असख्य-वारम् ।
हजारा, (फा) सहस्रदल (पुष्प) २ धारा यत्र, दे 'फौवारा'।
हजारी, स पु (फा) सहस्रिन्, सहस्रयोधा-ध्यक्ष ।
दस—, स पु, दशसहस्रिन् ।
पच—, स पु, पचसहस्रिन् ।
—बाजारी, स पु, उच्चनीच-विविध साधनाधन, जना ।
हज्जाम, स पु (अ) नापित, दे 'नाई'।
हट, स स्त्री, दे 'हठ'।
हटना, क्रि अ (स घट्टन>) स्थानान्तर या

(अ प अ), सृ (भ्वा प अ) २ चर, दाइ (अ प अ), अपसृ ३ वचनात् विमलाभ्, कर्तव्य त्यज (भ्वा प अ) ४ दूरीभू, नेत्रागोचर (वि) बन् (दि आ स) ४ स्थगित (वि) जन्, व्याक्षिप (कर्म) ५ नश (दि प वे), शम् (दि प म) ६ विचलित (वि) भू, प्रतिज्ञाभंग कृ। स पु तथा भाव, स्थानान्तरगमन, अप ,सरणं हानि (स्त्री), कर्तव्यत्याग ,व्याक्षेप , विलम्ब , शमन, नाश , (मकड़ादि का), विचलन, प्रतिज्ञाभंग ।

हटनेवाला, स पु , स्थानान्तरगामिन्,अपयात्, अपमन्, कर्तव्यविमुख, शमनोन्मुख , प्रतिज्ञा विरोधिन्।

पीछे न हटना, मु , पराङ्मुख (वि) न जन्, सज्ज (वि) स्था (भ्वा प अ)।

हटवाना, क्रि प्रे , व 'हटाना' का प्रे रूप।

हटाना, क्रि स (हिं हटना) स्थानान्तर नी (भ्वा प अ), अप , सृ (प्रे) २ दूरीकृ, अपनी ३ पलाय् (प्रे) ४ प्रतिज्ञाभंग कृ (प्रे)। स पु तथा भाव, स्थानान्तरे नयन, अपसारण, अपनयन इ ।

हटा हुआ, वि , स्थानान्तरगत, अप,-सारित,-गत-सृत, दूरीभूत, कर्तव्यविमुखीभूत, शान्त, नष्ट, विचलित।

हट्ट, स पु (स) आपण , निगम , पण्य भूमि (स्त्री)-वीथिका, क्रयविक्रयस्थान २ पण्यशाला, दे 'दुकान'।

हट्टा-कट्टा, वि (स हृष्ट+अनु) हृष्टपुष्ट, मांसल, दृढांग, प्र-महा,-काय, महास्थूल, काय।

हट्टी, स स्त्री (स) क्षुद्र,-आपण निगम २ पण्यशाला (दे 'हट्ट')।

हठ, स स्त्री पु (स) बलात्कार , रभस २ दुराग्रह , निर्बंध , प्रतिनिवेश ३ दृढ, प्रतिज्ञा-संकल्प ४ अवश्यंभाविता अनिवार्यता।

—करना, क्रि अ., दुराग्रह कृ, प्रतिनिविष्ट (वि) वृत् (भ्वा आ से)।

—धर्मी, स स्त्री (स हठधर्म) हठ , दुराग्रह २ विचारसंकीर्णता दे 'कट्टरपन'। वि दुराग्रहिन्, प्रतिनिविष्ट, निर्बंधपर।

—योग, स पु (स) योगभेद , हठविद्या।

—योगी, स पु (स गिन्) हठयोगाभ्यासिन्।

हठात् , अव्य (स) दुराग्रहेण, सनिर्बंध २ बलात्, सरभस ३ अवश्यम्।

हठी, वि (स हठिन्) दे 'हठीला'।

हठीला, वि (स हठ >) दुराग्रहिन्, प्रतिनिविष्ट, निर्बंधपर २ दृढप्रतिज्ञ, सत्यसंकल्प।

हड़, सं स्त्री (स हरीतकी) अभया, अमृता, पथ्या, श्रेयसी, शिवा, रसायनफला, प्राणदा, देवी, दिव्या।

हड़क, स स्त्री (अनु) उत्कटेच्छा, तीव्राभिलाष ।

हड़काया, वि (देश हड़काना) उन्मत्त, वातुल (प्राय कुत्तों के लिए) २ अत्युत्सुक, अतीच्छुक।

हड़गीला, स पु (हिं हाड़+गिलना ?) *हड्डगिल, खगभेद ।

हड़ताल, स स्त्री (स हट्ट+ताल) *हड्डताल, (विरोधादिप्रकाशनार्थं) संभूय व्यवसाय कर्म,-त्याग ।

—करना, क्रि अ , संभूय व्यवसाय त्यज् (भ्वा प अ), हड्डताल कृ।

हड़प, वि (अनु) निगीर्ण, जठरमित, प्रमित २ अपगतपक्ष।

—करना, मु , दे 'हड़पना'(२)।

हड़पना, क्रि स (अनु हड़प) आस्ये निक्षिप् (तु प अ), निगॄ (तु प से), ग्रस (भ्वा आ से), सत्वर भक्ष (चु) २ कपटेन अपहृ (भ्वा प अ), अन्यायेन आदा (जु आ अ)।

हड़बड़ाना, क्रि अ (अनु हड़+बड़) त्वर् (भ्वा आ से), सम्भ्रम विधा (जु उ अ), आतुर, आकुल (वि) बन् (दि आ स)।

हड़बड़िया, वि (हिं हड़बड़ी) त्वरित-नृत्त-क्षिप्र अनु,-कारिन्, त्वराकुल।

हड़बड़ी, सं स्त्री (अनु) त्वरा, तूर्णि (स्त्री), रभस -स, क्षिप्रता, शीघ्रता, २ संभ्रम , त्वरा, आतुरता-आकुलता।

हड़हड़ाना, क्रि स (अनु हड़+हड़) त्वर् (प्रे), त्वरितं प्रवृत् (प्रे)। क्रि अ , कम्प् वेग (भ्वा आ से) २ ससम्भ्रमं चल् (भ्वा प से)।

हड्डा, स पु (सं हड्डाचिका) वरटा, दे 'भिड़'।

हड्डी, सं स्त्री (सं हड्ड) अस्थि (न) अस्थिकं, कुल्यं कीकस, मेदोभव, मज्जाकर,

विद्ध, खर्पर, अवयवित (प्राय बहु) २ वध, तुरन्म्।

हड्डियाँ रगड़ना या तोड़ना, मु, प्रहृत तड (चु)।

हड्डियाँ निकल आना, मु, अतिकृश-अतिक्षीण अस्थिशेष (वि) जन् (दि आ से)।

हत, वि (स) प्रमापित, निषूदित, नि, हिंसित, निहत, क्षणित, निबर्हित, विशसित, मारित, प्रति,घातित, प्रमथित, आलभित, पिंजित, वधित, व्यापादित, पञ्चत्व परलोक,-गमित-नीत प्रेषित २ ताडित, प्रहृत, आहत, ३ रहित, विहीन (व प्रोहत) ४ नाशित, नष्ट, ध्वस्त, ध्वंसित ५ पीडित, ग्रस्त ६ निकृष्ट, उपयोगानर्ह ■ गुणित (गणित) ८ व्यथित, अर्दित।

—प्रभ, वि (सं) निष्प्रभ, कान्तिहीन।

—बुद्धि, वि (म) मूर्ख, निर्बुद्धि।

—भागी, वि (स भाग्य) हतमद, मन्द, दुर्दैव।

—वीर्य, वि (■) निर्बल, अशक्त।

—हृदय, वि (स) हताश, भग्न, विक्त हृदय न्यमाह।

हतक, स स्त्री (अ हतक = फाड़ना) अपमान, निरादर निरस्कार, अवज्ञा, मान हानि (स्त्री)।

—इज़्ज़ती, स स्त्री (अ हतक+इज़्ज़त>) मानहानि (स्त्री), अवधीरणा।

—करना, क्रि ■ (समुद्धते) अप भव,-मन् (प्रे) अवज्ञा (कृ प अ), तिरस्कृ।

हताश, वि (स) निराश, भग्नाश, अनाश, आशाहीन-रहित, निरपेक्ष।

हताहत, वि (स) मृतक्षत, क्षेत्र-पातित, क्षत मृत, व्रणितप्रेत।

हतोत्साह, वि (स) निरुत्साह, भग्न उत्साह, मनो हत, भग्नोद्यम, विषण्ण, अवसन्न, खिन्न प्रति,-बद्ध हत, स्तम्भितवीर्य।

हत्था, सं पुं } (सं हस्त>) मुष्टि (स्त्री),
हत्थी, म स्त्री } वारंग, दण्ड।

हत्या, स स्त्री (सं) हनन, वध, घात, सूदन, हिंसनं, हिंसा, मारणम्।

—करना, क्रि स., हन् (अ प अ, तथा प्रे घातयति), व्यापद् (प्रे), दे 'मारना'।

हत्यारा, स पु (स हत्याकार॰) घातक, मारक, वधकारिन, हन्तृ, हन, प्राणहर।

हत्यारी, स स्त्री (हिं हत्यारा) घ्राणहरी-हारिणी, वधकारिणी, घातिका २ हत्या,-पाप-अपराध-दोष पातकम्।

हथ, स ■ (स हस्त) कर, पाणि।

—कड़ा, स पु (सं हस्तकाड-ड>) हस्त-लाघव, करकौशल, इन्द्रजाल २ गुप्तचेष्टा, प्रच्छन्न प्रयोग प्रयुक्ति (स्त्री), प्रतारणा, छल-लम्।

—कड़ी, स स्त्री (स. हस्तकटक-क>) हस्त, पाश निगड, करबन्धनी।

—कड़ी लगाना, क्रि स, पाणिपाश्चात् बध (क्र् प अ)-संयम (प्रे)।

—छुट, वि, ताडनशील।

—लेवा, स पु, पाणि-कर,-पीडन, पाणि ग्रहणम्।

—सार, सं स्त्री, गज हस्ति, शाला, दे 'फील खाना'।

हथनाल, सं स्त्री (हिं) हस्तिनलम्, गज नैयशतघ्नी।

हथ(थि)नी, स स्त्री (सं हस्तिनी) करिणी, करेणु-णू (दोनों स्त्री), इभी, मातंगी, गज योषित्, क,रेणुका, व(वा)सा, वशा, वटभरा।

हथिया, स पु (स हस्ता) हस्त, नक्षत्र नक्षत्रम्।

हथियाना, क्रि स (हिं हाथ) बलात् ग्रह् (क्र प से)-धृ (चु)-आदा (जु आ अ) २ चुर् (चु), मुष् (क्र प से) ३ वशे स्वायत्तीकृ।

हथियार, स पु (हिं हथियाना) अस्त्र, शस्त्र, आयुधं, हेति (पु स्त्री), हेतु २ उपकरण, यंत्र, दे 'औज़ार'।

—बंद, वि, सशस्त्र, सायुध, सन्नद्ध, सज्ज।

—बाँधना, मु, शस्त्राणि धृ (चु), सन्नह् (दि प अ), सज्जीभू।

हथेली, स स्त्री (सं हस्ततल) करतल, तल-लं, प्रतल, ताल, प्रपाणि, प्रहस्त, फर्फरीक।

—खुजलाना, मु, वित्तलाभ संभाव्यते ।
—पर सिर रखना, मु, जीवनमोह त्यज् (भ्वा प अ), प्राणान् अवाप् (मु)।
—में आना, मु, स्वाधिकारे आया (अ प अ)।
हथौड़ा, स पु (हि हाथ) महा,घन-विघन ।
हथौड़ी, स स्त्री (हि हथौड़ा) वि,घन, द्रुघण, अयोघन ।
हथ्यार, स पु, दे 'हथियार'।
हद, म स्त्री (अ) सीमा, दे ।
—करना, मु, सीमा-मर्यादां अतिक्रम् (भ्वा प से)-उल्लंघ (भ्वा आ से)।
—से ज्यादा, मु, असीम, नि सीम, अमित, अपरिमित।
हनन, स पु (स न) दे 'हत्या' २ ताडन, प्रहरण ३ गुणनं, गुणाकार, पूरण (गणित)।
हननीय, वि (स) हन्तव्य, वधार्ह, शीर्षच्छेद्य, वध्य ।
हनु, सं स्त्री (सं पु स्त्री) हनू (स्त्री), कपोलद्वयपरमुत्तमांग २-वि(व-नु)शुकम्।
—की जकड़ाहट, सं स्त्री हनुग्रह ।
हनुमान, स पु (सं हनुमत्) मारुति, पवन पुत्र, वायुपुत्र, आंजनेय, कपीन्द्र ।
हप, स पु (अनु) त्वरितनिगरणात्मको ध्वनिविशेष ।
—कर जाना, मु, त्वरं निगृ (तु प से)।
हफ़्ता, सं पु (फ़ा) सप्ताह, दे ।
हबर दबर, क्रि वि (अनु हड बड) शीघ्र, सत्वर, ससंभ्रमम्।
हबशी, स पु (अ) हब्शीय, हब्शदेश वासिन् २ कृष्णांग, कुरूप ।
हब्बा डब्बा, स पु (हिं हाँफ+अनु डब्बा) शिशूनां श्वासरोगभेद, श्वसनक ।
हब्स, स पु (अ) कारावास ।
—बेजा, स पु (अ+फ़ा) अन्यायकारावास ।
हम[1], सर्व (स अहम्) वयम् (बहु)। सं पु, अहंकार ।
हम[2], अव्य (फ़ा) सह, साकं २ सम, तुल्य ।
—असर, सं पु (फ़ा+अ) एक-सम,-कालीन-काल, सह,-जनन् जीवन ।
—जिन्स, सं पु (फ़ा) सजातीय, सवर्णीय ।
—जोली, स पु (फ़ा+हि) सहचर, सखि (पु)।
—दर्द, स पु (फ़ा) समदुःख, समवेदन, सहानुभूति,-मत् युक्त, सानुकंप ।
—दर्दी, स स्त्री, सहानुभूति (स्त्री), अनुकंपा, समवेदना।
—निवाला, स पु (फ़ा) सह, भोक्तृ (पु) भोजक ।
—प्याला, सं पु (फ़ा) सहपायिन् ।
—राह, अव्य (फ़ा) सह, साकम् ।
—राही, स पु (फ़ा) सह,-चारिन्-गामिन्, मित्रम् ।
—वतन, स पु (फ़ा+अ) सम एक,-देशीय, देशभ्रातृ ।
—वार, वि (फ़ा) सम, सम,-तल रेख, सपाट।
—सबक़, सं पु (फ़ा) सहपाठिन् ।
—सर, स पु (फ़ा) सम, गुण-बल पद ।
—सरी, सं स्त्री (फ़ा) समता, समानता ।
—साया, सं पु (फ़ा) प्रति,-वासिन्-वेशिन् वेश ।
हमल, सं पु (अ) गर्भ, दे ।
हमला, सं पु (अ) युद्धयात्रा, यान २ अवस्कंद, आक्रम, आक्रमणं दे ३ प्रहार ४ कूटस्थयम् ।
—आवर, (हमलावर) वि पु, आक्रामक, आक्रमण,-कारिन्-कर्तृ-कार, अवस्कन्दिकृत ।
हमाक़त, म स्त्री (अ) मूढता, अज्ञता, मूर्खता, मूर्खत्व, मौर्ख्यम् ।
हमाम, सं पु (अ हम्माम) स्नानागारम् ।
हमारा, सर्व (हिं हम) अस्माक, अस्मदीय - याश्च (पु स्त्री न)।
हमाहमी, सं स्त्री (हिं हम) स्वार्थ, स्वार्थपरता २ अहमग्रिका, अहमहमिका ।
हमें, सर्व (हि हम) अस्मान्, न २ अस्मभ्यं, न ।
हमेल, स स्त्री (अ हमायल) स्वर्ण मुद्रा,-माला ।
हमेशा, अव्य (फ़ा) सदा, नित्यम् ।
हय, सं पु (सं) अश्व, घोटक (हया स्त्री)।
—ग्रीव, स पु (सं) विष्णो अवतारविशेष २ वेदहारी राक्षसविशेष ।
हया, सं स्त्री (अ) लज्जा, त्रपा ।

हरसिंगार, स पु (स हारश्रृंगार) पारिजात-तरु, प्राजक्त, रागपुष्पी, खरपत्रक ।

हरा, वि (स हरित) हरित, प(पा)लाश २ प्रसन्न, प्रहृष्ट, प्रफुल्ल ३ अभिनव, प्रत्यग्र, ४ आम, अपक्व, अपरिणत ५ (व्रणादि) अविरोपित, अशुष्क । स पु , हरित , पलाश हरिद्‌-,वर्णं ।

—पन, स पु , हरितत्व, पलाशत्व २ अपरिणति (स्त्री), अपक्वता ३ नवता प्रत्यग्रता ।

—बाग, स , आपातरमणीया वार्ता ।

—भरा, मु , सरस, शोपरहित, हरिततरुलताभि आच्छादित (वि) ।

हराना, क्रि स (हि हारना) अभिपरिपरा, भू (भ्वा प से), जि (भ्वा प अ) विपराजि (भ्वा आ अ), दम् (प्रे) २ (थानुं) विफली-मोघी कृ ३ क्लम् श्रम् खिद् आयस (सव प्रे) ।

प्राण—, मु , मृ (प्रे), हन (अ प अ) ।
मन—, मु , मन मेन ह (भ्वा प अ) मुह् (प्रे) ।

हराम, वि (अ) अभक्ष्य, अग्राह्य, अवैध, न्यायधर्मनियमविधिविरुद्ध निषिद्ध,दूषित । स पु , शूकर २ अधम , पाप दोष ३ व्यभिचार , जारकर्मन् (न) ।

—खोर, स पु (अ +फा) व्यभिचारिन्, औपस्थिक २ पाप , पापाचारिन् ।

—कारी, सं स्त्री , पाप, अधर्म २ व्यभिचार , जारकर्मन् (न) ।

—खोर, सं पु (अ +फा) पापाजीविन पापमर्दिन् २ परपिंडाद , पराग्रपुष्ट ३ अलस , उद्योगविमुख ।

—खोरी, सं स्त्री , पाप,आजीव आजीवन २ परान्नभोजनं ३ आलस्य, उद्योगविमुखता ।

—जादा, स पु (अ +फा) जार, जात उत्पन्न, विजात (जारजा स्त्री) २ दुष्ट, खल, पापिन् (गाली) ।

हरामी, वि , दे 'हरामजादा' (१ २) ।

हरारत, स स्त्री (अ) ताप , दाह , उष्मन् २ मंदज्वर्‌ , ज्वर , ज्वरांश ।

हरावल, सं पुं (तु) सेना मुख-अग्र, अग्रानीक, नासीरचरा (बहु) ।

हरास, स पु (फा हिरास) भय त्रास २ आशंका ३ विषाद ४ नैराश्यं, निराशता ।

हरा हुआ, वि , अप,हृत, चोरित, स्तेनित, मुषित, मुष्ट, २ आच्छिन्न, सहसा आक्रम्य गृहीत धृत ३ दूरीकृत, अपमार्जित ४ नाशित ध्वंसित ५ नीत ऊढ ।

हरि, स पु (सं) श्री,-वर धर निवास पति वक्षस् , विष्णु दे २ इन्द्र ३ अश्व ४ कपि ५ सिंह ६ सूर्य ७ चन्द्र ८ मण्डूक ९ सर्प १० अग्नि ११ मयूर १२ श्रीकृष्ण १३ श्रीराम १४ शिव १५ यम । वि (स) (१ २) पिंगल हरित,-वर्ण ।

—कथा, स स्त्री (स) भगवच्चरितवर्णनम् ।

—कीर्तन, स पु (स न) भगवद्गुणगानम् ।

—गीतिका, स स्त्री (स) हरिगीता, छंदोभेद ।

—चन्दन, स पु (सं पु न) तैलपर्णिक, गोशीर्ष (चन्दनभेद) २ स्वर्गस्थवृक्षविशेष ३ पद्मपराग ४ कुंकुम ५ चन्द्रिका ।

—चाप, स पु (स) इन्द्र हरि, धनुस् (न) ।

—जन, स पु (सं) भगवद्भक्त , हरिसेवक ।

—ताल, स पु (स न) दे हरताल' ।

—द्वार, सं पुं (स न) प्रख्याततीर्थविशेष , गंगाद्वारम् ।

—धाम, स पु [स -मन् (न)] विष्णुलोक , वैकुंठ हरि,पदं पुरम् ।

—भक्त, सं पु (दे) 'हरिजन' ।

—भक्ति, स स्त्री (सं) हरि,भजनं प्रेमन् (पु न) सेवनम् ।

—वंश, सं पु (सं) श्रीकृष्णसन्तान २ पुराणग्रंथविशेष ।

—वाहन, स पु (सं) गरुड २ सूर्य ३ इन्द्र ।

हरिण, सं पुं (सं) मृग , कुरंग ।

—कलंक, सं पुं (सं) शशांक चन्द्र ।

—नयना, सं स्त्री , मृग हरिण नयनी नेत्रा नेत्री-अक्षी ।

हरिणी, सं स्त्री (सं) दे 'हिरनी' ।

हरित, वि (सं) हरित, प(पा)लाश, हरित(द्)-वर्ण २ कपिल, पिंग, पिंगल, पिशंग ।

हरिद्रा, सं स्त्री (सं) दे. 'हल्दी' ।

हरिन, स पु (सं हरिण) दे 'हिरन'।
हरियाला, वि (हिं हरा) हरित, हरिद्वर्ण २ शाद्वल।
हरियाली, सं स्त्री (हिं हरा) हरितत्व, विस्तार प्रसार, हरीतिमन् (पुं) २ तरुलता,-समूह विस्तार, शाद, शाद्वलता।
हरिश्चन्द्र, स पु (स) त्रिशङ्कुज, त्रेतायुगे नृपविशेष।
हरि(री)स, स स्त्री (स हलीषा) हल-लाङ्गल, दण्ड।
हरीतकी, स स्त्री (स) दे 'हड़'।
हरीफ, स पु (अ) शत्रु २ प्रति-द्वन्द्विन स्पर्धक।
हरीश, स पु (सं) वानरेन्द्र २ सुग्रीव ३ हनुमद्।
हर्ज, स पुं (अ) विघ्न, अन्तराय २ हानि क्षति (स्त्री)।
हर्त्ता, स पुं (सं हर्तृ) दे 'हरनेवाला'।
हर्फ, स पु, दे 'हरफ'।
हर्म्य, सं पु (सं न) प्रासाद, राजभवन २ विशालभवन, धनिगृहं ३ न(ना)रक।
हर्रा, स पु, दे 'हड़'।
हर्ष, स पु (स) पुलक, रोमाञ्च दे। २ आनंद, प्र,-मोद, आह्लाद, उल्लास।
—विषाद, सं पु (स द्वी द्वि) मोदखेदौ, आनन्दविषादौ।
हर्षित, वि (स) हृष्ट, हर्षित, प्रीत, प्र, मुदित, प्रसन्न, प्रफुल्ल, आनंदित।
हल्, स पु (स) शुद्ध स्वरहीन,-व्यञ्जन, (क्, से ह् तक अक्षर)।
हलन्त, वि, (स) शुद्धव्यंजनान्त (शब्द)। स पु, दे 'हल्'।
हल¹, सं पु (स न) लाङ्गल, हाल, हलि, गोदारण, सीर, सीरक।
—चलाना या जोतना, क्रि स, हल् (भ्वा प से) कृष् (भ्वा प अ, तु उ अ)।
—जीवी, स पु (स-विन्) हालिक, लाङ्गलिन्, कृषाण, कृषिक।
—धर, सं पु (सं) हल, पाणि भृत्, बलदेव।
—मुख, स पु (स न) निरीष म, फाल लम्।
—वाहा, स पु (स ह) हलग्राहिन, परहल चालक।
—वाही, स स्त्री (हि हलवाहा) कृषि (स्त्री), वपनम्।
हल, स पु (अ) विवरण, व्याख्यान, साधन २ निर्णय, समाधान, समाधि ३ गणन, सख्यान ४ द्रावणं, विलयनम्।
—करना, क्रि स, विद् (स्वा उ से), व्याख्या (अ प अ) विशदयति (ना धा), स्पष्टीकृ, उत्तर दा २ विद्रु विली (प्रे), द्रवीकृ।
हलक, स पु (अ) कठ, गल, निगरण।
हलका¹, स पु (अ) वृत्तं, वर्तुल, मडल २ परिधि ३ समूह, निकर ४ ग्रामादि समूह ५ चक्रवलय-यन्त्र।
हलका², [redacted] (स लघुक) लघु, अल्प-लघु स्तोक, भार-तोल, सु-सुख,-वाह्य २ विरल, घनता-रहित ३ गाध ४ अल्प, स्तोक ५ अल्प, मूल्य-अर्घ ६ मंद, सन्न ७ तुच्छ, नीच, क्षुद्र ८ सुकर, सुसाध्य ९ निश्चिंत, कृतकार्य १० सूक्ष्म, तनु ११ निकृष्ट, अपकृष्ट।
—पन, स पु, लघुता, लाघवं, अल्पभारता, सुखवाह्यता २ क्षुद्रत्वं, तुच्छता ३ अव,-मान हेलना, प्रतिष्ठाभाव।
—करना, मु, लघयति (ना धा), लघूकृ २ अवगण् (चु) अवमन् (प्रे), तृणाय मन् (दि आ अ)।
हलचल, (हिं हिलना+चलना) संक्षोभ, मरम, सभ्रम, सकुल, कोलाहल २ उपद्रव, विप्लव, समद ३ कप, स्पंद।
—मचना, क्रि अ, सक्षोभ सजन् (दि आ से)-प्रवृत् (भ्वा आ से)।
हलदिया, स पुं (हिं हलदी) पाण्डु,-रोग आमय, पाण्डुक, कामला।
हलदी, स स्त्री (स हलदी) हरिद्रा, पीतिका, पीता, कांचनी, वर्णवती, निशा, वर,-वर्णिनी, रजनी, भद्रा, मंगला, शोभा।
—उठना या चढ़ना, मु, विवाहाद् प्राक् वर वध्वो तैलहरिद्राभ्यञ्जनम्।
—लगा के बैठना, मु, निरुद्यम एकत्र स्था (भ्वा प अ) २ दर्पवलित (वि) धृष् (भ्वा आ से)।

—लगी न फिटकरी, मु , व्यय विनैव।

हलफ़, स पु (अ) शपथ , दे 'सौगंद'।

—नामा, स पु (अ + फा) शपथपत्रम्।

हलवा, स पु (अ) कटाह सयाव, मोहनभोग ।

—सोहन, स पु, शोभन सयाव-कटाह मोहनभोग ।

हलवाइ(य)न, स स्त्री (हि हलवाई) कांद विकी, मिष्टान्नविक्रेत्री (खाद्विकी, खान्विकी) २ कांदविक मिष्टान्नविक्रेतृ-खाण्डिक ,पत्नी ।

हलवाई, स पु (अ हलवा) खाण्डिक , खार्डविक , कांदविक , मिष्टान्नविक्रेतृ ।

हलाक, वि (अ) हत, मारित ।

—करना, मु , हन् (अ प अ)।

हलाकत, स स्त्री (अ) वध, हत्या मृत्यु २ विनाश ।

हलाल, वि (अ) धर्म्य, न्याय्य, वैध, शास्त्रविहित धर्म, अनुकूल विहित, उचित। स पु (अ) भक्ष्य पशु-जन्तु (इस्लाम)।

—ख़ोर, स पु (अ + फा) धर्म पुण्य-आजीविन् २ शल्पू (पु), समार्जक , दे 'भंगी'।

—ख़ोरी, स स्त्री , धर्म पुण्य-आजीव-आजीवनम्।

—करना, मु , न्यायेन धर्मेण व्यवहृ(भ्वा प अ) २. शनैः शनैः हन् (अ प अ) (इस्लाम)।

—का, मु , शास्त्रानुकूल, वैध, धर्म्य ।

—की कमाई, मु , पुण्यलक्ष्मी , न्यायोपार्जित धनम् ।

—हलाहल, स पु (स न) हल(ला)हल, हाहल, समुद्रमथनजो विषविशेष २ कालकूट, महाविष ३ गरल-ल, विष द ।

हली, स पु (स हलिन्) बलदेव २ कृषाण ।

हलीम, वि (अ) नम्र, विनीत २ शान्त, क्षमान्वित ।

हलीमी, स स्त्री (अ हलीम) नम्रता, विनय २ शान्ति (स्त्री), प्रसाद ।

हलुका, वि , दे 'हलका'।

हल्दी, स स्त्री , दे 'हलदी'।

हल्ला, स पु (अनु) कोलाहल कलकल , तुमुल, कलकोश , विर(रा)व २ आक्रम , अवस्कंद ।

—करना, क्रि, अ कोलाहल कृ, उत्क्रुश् (भ्वा प अ) २ आक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ)।

हवन, स पु (स न) होम , होत्र, यज्ञ दे २ अग्नि [illegible] हवनी होमकुण्डम्।

—करना, क्रि स, हु (जु प अ), यज् (भ्वा उ अ) होमकुण्डे हविः क्षिप् (तु प अ)।

—कुंड, स पु (स न) हवनी-यज्ञहोम कुण्डम्।

हवलदार, स पु (अ हवाल + फा दार) हवाल्दार , सेनाधिकारिभेद ।

हवस, स स्त्री (फा) कामना, लालसा २ तृष्णा, दे ।

हवा, स स्त्री (अ) मरुत्, पवन , वायु दे । २ भूत , प्रेत ३ ख्याति , प्रसिद्धि (स्त्री) ४ विश्वास , प्रत्यय ५ उत्कटेच्छा।

—ख़ोरी, स स्त्री (अ + फा) पर्यटन, भ्रमण, वायुसेवनम्।

—चक्की, स स्त्री (अ + हिं) वायुचक्रा, पवनपेषणी ।

—दार, वि (अ + फा) प्रवात, सुवात, पवनपूर्ण।

—उखड़ना, मु यश प्रत्यय नश् (दि प वे)।

—करना, मु , वीज् (चु)।

—खाना, मु , पर्यट (भ्वा प से), वायु सेव (भ्वा आ [illegible])।

—बँधना, मु , ख्याति कीर्ति नम् (दि आ स)।

—बाँधना, मु , विकत्थ् (भ्वा आ से), आत्मानं श्लाघ (भ्वा आ स)।

—से बातें करना, मु अतिवेगेन धाव् (भ्वा प से)।

—से लड़ना, मु , नित्य कलहोद्यत (वि) युध् (भ्वा आ स)।

—हो जाना, मु , सत्वर पलाय् (भ्वा आ स) २ तिरोभू , विली (क्र्य)।

हवाई, वि (अ हवा) वायव(वी स्त्री), वायव्य-वायवीय (व्या स्त्री) २ नभस्थ, गगन,-गामिन् चारिन् ३ निर्मूल, निराधार । [illegible] स्त्री , वाणविशेष, अग्निक्रीडनकभेद ।

—अड्डा, स पु , विमान,-वायुयान,-स्थान निवेश ।

—क़िला, महल, सं पु, खपुष्प, गगन कुसुमम्।
—चक्की, स स्त्री, दे 'हवाचक्की'।
—जहाज़, स पुं (हिं + अ) वायु-व्योम यानं, विमान न, पवनपोत।
हवाल, सं पु (अ अहवाल) दशा, अवस्था २ परिणाम, गति (स्त्री) ३ वृत्त, समाचार।
हवाला, स पु (अ) उल्लेख, निर्देश, संकेत २ उदाहरण, दृष्टान्त ३ रक्षा रक्षण, अधिकार।
—देना, क्रि स, निर्दिश (तु प अ), उल्लिख (तु प से)।
—करना, मु, दे 'सौंपना'।
हवालात, स पु स्त्री (अ) गुप्ति (स्त्री), निरोध २ गुप्तिगृहम्।
—करना, मु गुप्तिगृहे निरुध (रु प अ)।
हवास, स पु (अ) इन्द्रियाणि हृषीकाणि (न बहु) २ उपलब्धि (स्त्री), संवेदन ३ संज्ञा, चैतन्यं, दे 'होश'।
हवि, स पु [स हविस् (न)] हवनसामग्री, हव्य, सान्नाय्य, हवनीय, होमीयद्रव्यम्।
हवेली, सं स्त्री (अ) हर्म्यं, भवन, धनिगृह २ पत्नी।
हव्य, सं पु (स न) दे 'हवि'।
हशमत, स स्त्री (अ) गौरव, महिमन् २ विभव, ऐश्वर्यम्।
हसद, म पु (अ) ईर्ष्या मत्सर।
हसब, अव्य (अ)—अनुसार, यथा—।
—तौफ़ीक, अव्य (अ) सामर्थ्यानुसार, यथाशक्ति (दोनों अव्य)।
हसरत, सं स्त्री (अ) शोक, आधि, दुःखम्।
हसीन, वि (अ) सुन्दर, सुरूप।
हस्त, स पु (स) कर, पाणि, दे 'हाथ' २ चतुर्विंशत्यङ्गुलिपरिमाणं ३ हस्त लिपि (स्त्री), लेखनशैली ४ नक्षत्रविशेष ५ शुंडा, दे 'सूँड'।
—कार्य, सं पु (स न) करकर्मन् (न) २ हस्तशिल्प, दे 'दस्तकारी'।
—कौशल, स पु (स न) पाणिपाटव, हस्त-लाघव चापल्यम्।
—क्रिया, सं स्त्री (स) दे 'हस्तमैथुन' (१ ?)।
—क्षेप, स पु (स) प्रति-बंधन रोधनं २ परकार्ये, चर्चा प्रतिधान।
—क्षेप करना, क्रि स परकार्येषु व्यापृ (तु आ अ), परकार्याणि चर्च (तु प से) निरूप् (चु)।
—गत, वि (स) प्राप्त, लब्ध, अधिगत, हस्तस्थ।
—तल, सं पुं (स न) करतल, दे 'हथेली'।
—त्राण, स पु (स न) करत्राण दे 'दस्ताना'।
—पृष्ठ, सं पुं (सं न) कर पाणि पृष्ठम्।
—मैथुन, स पु (स न) हस्तेन शुक्रपातन इन्द्रियसञ्चालनम्।
—रेखा, स स्त्री (स) करतल, रेखा रेषा।
—लाघव, सं पु (सं न) हस्त-कौशल चापल्यम्।
—लिखित, वि (स) हस्तेन लिपिबद्ध।
—लिपि, स स्त्री (स) लेखनशैली।
—सूत्र, स पुं (स न) मंगल्य करसूत्र, सूत्र मयं, कङ्कणं-वलयम्।
—हस्ति, सं पुं (सं तिन्) दे 'हाथी'।
हस्तिनी, स स्त्री (स) दे 'हथनी' २ स्त्री भेद (कामशास्त्र)।
हस्ती[1], स पु, दे 'हाथी'।
हस्ती[2], सं स्त्री (फ़ा) सत्ता, अस्तित्वम्।
हस्ते, अव्य (स) द्वारा, द्वारेण।
हहा, स स्त्री (अनु) अट्टहास्य हास हसित, हहाकार, हीही (अव्य), हास्यध्वनि २ दैन्यसूचकध्वनि, अयि (अव्य), हहा कृति (स्त्री) ३ अनुनयातिशय, मप्रणि पात प्रार्थनम्।
—खाना, मु, पादयो पतित्वा अनुनी (भ्वा प अ) प्रार्थ (चु आ से)।
हाँ, अव्य (सं आम्) ओम्, एव, अथ किं २ तथेति, बाढ, साधु (सब अव्य) ३ तथापि ४ दे 'यहाँ'।
—हाँ, अव्य, आमाम्, ओमोम् २ न न, मा मा, न, नहि, नो।
—करना, मु, अंगी स्वी-कृ, अनुज्ञा (क्र उ अ), अनुमन् (दि आ अ)।
—जी हाँ जी करना, मु, चाटुभि प्रमद् (प्रे) उपच्छद (चु) स्तु (अ प अ)।

—में हाँ मिलाना, मु, अविचार्यैव द्रढयति सत्यापयति (ना धा) २ दे 'हाँ जी हाँ जी करना'।

हाँक, स स्त्री (स हुंकार) हुंकृति (स्त्री), अकारणम्, उच्चैराह्वान तारस्वरेण सबोधन २ गर्जनम्, युद्धाह्वान, सिंहनाद क्ष्वेडा, समरार्थमाकारण-णा ३ प्रोत्साहन शब्द ध्वनि ४ रक्षार्थं सहायतार्थं, आह्वान-आकारणम्।

—पुकार, स स्त्री, कोलाहल, उत्क्रोश।

—देना या लगाना, मु, उच्चै आह्वे (प्रे), तारस्वरेण आह्वे (भ्वा प अ), शब्दायते (ना धा)।

हाँकना, क्रि स (हिं हाँक) दे 'हाँक देना' २ सिंहनाद कृ, युद्धाय आह्वे (प्रे) ३ विकत्थ (भ्वा आ से) आत्मान श्लाघ् (भ्वा आ से) ४ नुद्-प्रणुद् (तु प अ, प्रे) प्रेर् (प्रे), चद्-चल (प्रे), नुद् (तु), अज (भ्वा प स) ५ अपस् निष्क्रम् (प्रे) ६ वीज् (चु)। स पु तथा भाव, दे 'हाँक' (१२) ३ विकत्थन, आत्मश्लाघन-घा ४ प्रणोदन, प्रेरण, प्रचोदन, प्रचालन, प्रजन ५ अपसारण निष्कासन ६ वीजनम्।

हाँकनेवाला, स पु, प्रेरक, वाहक, चालक, प्रमोदक, प्रचोदक इ।

हाँडी, स स्त्री (स हण्डी) हण्डिका २ काच, हंडी हण्डिका।

—पकना, मु, उपजाप (कर्म), कूट, रच् (कर्म), उपजाप कृ (कर्म)।

हाँफ(प)ना, क्रि अ (अनु हफ हँफ या स हाफिया>) सरंह श्वस (अ प से), सत्वर प्राण (अ प से)। स पु, कृच्छ्रश्वास, त्वरितप्राणनम्।

हाँसी, स स्त्री दे 'हँसी'।

हा, अव्य (सं) दुःखशोकभयविस्मयक्रोधादि सूचकमव्ययम्।

हाइड्रोजन, स पु (अं) उदजनम्, आर्द्रजनम्।

हाइड्रोफोबिया, स पु (अं) अलर्करोग, आलर्क जल, भय-सत्रास।

हाइफन, सं पु (अं) समासचिह्न ( )। (द राजमेवर)।

हाईकोर्ट, स पु (अ) प्रधानन्यायालय, उच्चाधिकरणम्।

हाई स्कूल, स पु (अ) उच्च विद्यालय।

हाउस, स पु (अ) गृह, गेह इ, अ(आ)गार इ ३ सभा, परिषद् इ नृवश।

हाऊ, स पु (अनु) दे 'हौव'।

हाकिम, स पु (अ) शासक, शासितृ, अधिकारिन् नियोगिन्, आधिकारिक।

हाकिमी, स स्त्री (अ हाकिम) शासन, अधिकार, प्रभुत्व आधिपत्य, दिष्टि (स्त्री), राज्यम्।

हॉकी, स स्त्री (अं) अगलक्रीडाभेद।

हाजत, स स्त्री (अ) आवश्यकता, अपेक्षा २ कामना, लालसा ३ मल-मूत्र, उत्सिसृक्षा ४ गुप्ति (स्त्री), दे 'हवालात' (१)।

हाजमा, सं पु (अ) पचन, विपरि पाक, पक्ति (स्त्री) २ जठर, अग्नि अनल, पाचनशक्ति (स्त्री)।

—बिगड़ना, मु, अग्निमाद्य जन् (दि आ से) भक्ष न पच् (कर्म)।

हाज़िम, वि (अ) पाचक, पावन, अग्नि वर्धक।

हाज़िर, वि (अ) उपस्थित, पुरःस्थित वर्तमान, विद्यमान २ सनद्ध, सज्ज, उद्यत।

—करना, क्रि स उप पुर समुख स्था (प्रे)।

—जवाब, वि (अ) प्रत्युत्पन्नमति, विदग्ध।

—जवाबी, स स्त्री, प्रत्युत्पन्नमतित्व, वैदग्ध्यम्।

—व नाज़िर, वि, प्रत्यक्षदर्शन।

—होना क्रि अ, उपस्था (भ्वा उ अ) उपस्थित (वि) भू।

गैर—, वि, अनुपस्थित, अविद्यमान।

हाज़िरी, स स्त्री (अ) उपस्थिति (स्त्री), विद्यमानता।

—का रजिस्टर, सं प, उपस्थितिपत्रिका।

—लेना, क्रि स उपस्थिति अंक (चु)।

हाज़िरीन, स पु (अ 'हाज़िर' का बहु) उपस्थितजना (बहु०) श्रोतृवर्ग।

—(न) जलसा, सं पु, सभ्या सदस्या (बहु)।

हाजी, स पु (अ) मक्कायात्रिन्, हाजिन् २ कृतमक्कायात्र हज।

हाट, स स्त्री, दे 'हट्ट' (१-२)।

हाटक, सं पु (स न) सुवर्ण, दे 'सोना'।

हाता, स पु, दे 'इहाता'।

हातिम, स पु (अ) अरबदेशीयोऽत्युदार सामन्तविशेष २ मुक्तहस्तमनुष्य ३ निपुण दक्ष मनुष्य।

हाथ, स पु (स हस्त) कर, पाणि, शय पञ्चशाख, भुजादल, शल, शुण्डि २ चतुर्विंशत्यङ्गुलिपरिमाण ३ बार, दे 'बार' ४ कर्मकर ५ दक्ष, मुष्टि (स्त्री), वारण ६ वश, अधिकार।

—**आना**, मु, अधिगम्-उपलभ् (कर्म)।

—**उठाना**, मु, ताड (चु), प्रहृ (भ्वा प अ)।

—**की चालाकी**, मु, हस्तकौशल, दे।

—**की मैल**, मु, तुच्छ क्षुद्र असार-वस्तु (न)।

—**खींचना**, मु, परिहृ-विरम् (भ्वा प अ), वर्ज (चु)।

—**चढ़ना**, मु, दे 'हाथ आना' २ वश आया (अ प अ)।

—**जोड़ना**, मु, हस्तौ समायोज्य अथवा कृताञ्जलिं बद्ध्वा अथवा साञ्जलि प्रार्थ (चु आ से)। —अनुनी (भ्वा प अ) याच (भ्वा आ से)

—**डालना**, मु, दे 'हस्तक्षेप करना'।

—**धोना**, मु, वियुज (कर्म), वञ्चित विरहित विहीन (वि) भू।

—**तंग होना**, मु, दारिद्र्येण निर्धनतया पीड (कर्म)।

—**पर हाथ धरे रहना**, मु, निरुद्योग निष्कर्म स्था (भ्वा प अ)।

—**पसारना**, मु, याच् (भ्वा आ से)।

—**पाँव फूलना** मु, भयेन निस्तब्धीभू, मोहेन पटीभू।

—**पाँव मारना**, मु, प्र यत (भ्वा आ से), उद्युज (रु उ अ)।

—**फेरना**, मु, लल् (चु)।

—**बढ़ाना**, मु, ग्रहीतुं आदातुं यत् (भ्वा आ से)।

—**बाँधना**, मु, दे 'हाथ जोड़ना'।

—**मलना**, मु, अनुशी (अ आ से), पश्चात्ताप कृ २ निराश दुःखित (वि) भू।

—**मारना**, मु, छलेन अपहृ (भ्वा प अ) २ अभिवा ग्रह (भ्वा प अ)।

—**मिलाना**, मु, करौ स्पृश् (तु प अ) २ मल्लयुद्धाय सज्ज (वि) भू।

—**में रखना**, मु, वशे अधिकारे स्था (प्रे)।

—**लगना**, मु, दे 'हाथ आना' २ आरभ् (कर्म)।

—**समेटना**, मु, त्यजन, निवर्त निवृत् (भ्वा आ से) विरम् (भ्वा प अ)।

—**साफ करना**, मु, हन् (अ प अ) २ अन्यायेन हृ (भ्वा प अ)।

—**से जाना**, मु, दे 'हाथ धोना'।

हाथों हाथ, मु, सत्वर, शीघ्र २ कर हस्त, परम्परया।

हाथा, स पु (सं हस्त >) दे 'हत्था' २ कुड्यार्पित मालत्य हस्तचिह्नम्।

—**पाई**, स स्त्री, हस्ताहस्ति (अव्य), समर, कलह।

—**पाई करना**, क्रि अ, हस्ताहस्ति युध् (दि आ से), कलहायते (ना धा)।

—**बाँही**, स स्त्री, दे 'हाथापाई'।

हाथी, स पु (स हस्तिन्) करिन्, दन्तिन्, हस्तपक, द्विप, अनेकप, द्विरद, गज, नाग, कुञ्जर, वारण, इभ, स्तम्बेरम, म(मा)तङ्ग, पद्मिन्, पुष्करिन्, महाङ्ग, शूर्पकर्ण, सिंधुर, मत्त मद, सिन्दूरतिलक, रदनिन्, महाबल, द्रुमारि।

—**खाना**, स पु (हि+फा) गजगृह, हस्तिशाला।

—**दाँत**, स पु (स हस्तिदन्त) गजदन्त।

—**पाँव**, स पु, श्लीपद-द, शिलीपद-द, पाद(दा)द, वाशीर वल्मीक।

—**वान**, स पु आधोरण हस्तिपक, हस्तिक, दे 'महावत'।

—**पर कन्धा या बाँधना**, मु, नुमर्द (वि) भूत (भ्वा आ से)।

हादसा, स पु (अ) दुर्घटना, दे।

हानि, स स्त्री (स) क्षति (स्त्री), अय, व्यय हार, अपाय २ क्षय, नाश, अभाव, ३ न्यासम्यग्या ४ अनिष्ट, अहित, अशुभम्।

—**करना**, क्रि स, हानि कृ, नश् (प्रे), क्षि (प्रे), अपचि (भ्वा उ अ), क्षति जन् (प्रे)।

—**कारक**, वि (स) हानि-कर-कार-कारिन्, अपचयकर, कारिन्, नाशक, अनिष्टोत्पादक।

—होना, क्रि अ, क्षति बन (दि आ से), नश् (दि प से), विमुन् (क्रम), विपरि, हा (कम), वियुक्त हान-रहित (वि) भू।

हाफ़िज़, स पु (अ) रक्षक, त्रातृ २ *कुरानपाठिन्।

हाफ़िज़ा, स पु (अ) स्मृति, दे 'स्मरण शक्ति'।

हामिल, वि (अ) भारवाहक, भारिन् २ नेतृ, प्रापक।

हामिला, स स्त्री (अ) गर्भिणी, गर्भवती, अन्तर्वत्नी, ससत्त्वा।

हामी, स स्त्री (हिं हाँ) अनुमति स्वीकृति (स्त्री), स्वीकार, अनुज्ञा।

—भरना, मु, स्वी-अङ्गी-कृ, अनुज्ञा (क्र उ अ), अनुमन् (दि आ अ)।

हाय, अव्य (स हा) आ, अहह, कष्ट, हन्त (सब अव्य)। स स्त्री, नि-दीर्घ-श्वास, उच्छ्वसित २ कष्ट, पीडा)।

—हाय, अव्य (सं हा हा) आ आ इ। सं स्त्री, शोक २ व्याकुलता।

—पड़ना, [illegible], दुष्कृतपाप फल् (भ्वा प से)।

—मारना, मु, दीर्घ श्वस् (अ प से), (शोकेन) हा हा कृ, निश्वास मुच् (तु प अ)।

हार[1], स स्त्री (स हारि) पराजय, परि परा-अभि, भव २ श्रान्ति, क्लान्ति (स्त्री), आयास ३ हानि-क्षति (स्त्री)।

—जीत, स स्त्री, जयपराजयौ (पु द्वि)।

—खाना, मु, दे 'हारना'।

—देना, मु, दे 'हराना'।

हार[2], स पु (स) कंठ, भूषा आभरण माला, ग्रैव, ग्रैवेयक २ दे 'मोतियों का हार'।

—का मनका, स पु, हार, गुटिका गुलिका अक्ष।

फूलों का—, स पु, माला, माल्यं, स्रज् (स्त्री) आपीड।

मोतियों का—, स पु, मुक्तावली लि (स्त्री), मुक्ता-लता-माला, मौक्तिकसर, हार।

रत्नों का—, स पु मणिमाला, रत्नावली लि (स्त्री)।

सोने का—, स पु, कनकसूत्रम्।

—हार, प्रत्य, दे 'हारा'।

हारना, क्रि अ (सं हारण>) परा, जि (कर्म), अभिपरा परि, भू (कर्म) अभिभूत पराजित (वि) भू २ विफल (वि) नश् (दि आ से) ३ श्रम् क्लम् (दि प से), खिद् (दि आ अ)। क्रि स, हा (जु प अ प्रे हापयति), अप, हृ (प्रे) २ नश्-क्षि (प्रे) ३ त्यज (भ्वा प अ) ४ दा (जु उ अ)। स पु तथा भाव, दे 'हार[1]'।

हारने योग्य, वि, अभिभवनीय, पराजेय।

—वाला, स पु, आसन्नपराजय, पराजित-कल्पप्राय।

हारा हुआ, वि, विपरा, जित, अभिपरा परि, भूत २ हृत, हारित, नष्ट, ३ श्रान्त, क्लान्त, खिन्न ४ अकृतकार्य।

हारमोन, स पु (अ) जीवनरस।

हारमोनियम, स पु (अ) *मधुरध्वनम्।

—हारा, प्रत्य (स -धार>) (प्राय कर्तृवाचक प्रत्ययों, (अक, तृच, तृन् आदि) से अनुवाद किया जाता है। उ देनेहारा=दायक, दातृ ई०)।

हारिल, सं पु (स हरितालक) हरितवर्ण-पीतपाद नीलचञ्चु चटकभेद, हारि(री)त, हारीतक।

हारी, वि (सं हारिन्) अप, हर्तृ हारक, आच्छेदक, बलात् ग्रहीतृ २ वाहक, प्रापक, नायक, हर ३ लुण्टक, मुष्क, मोषक, चौर ४ नाशक, ध्वंसक ५ संमोहक, समाहर्तृ (हर आदि) मनो चित्तो, हर।

हारीत, स [illegible] (स) चौर, लुण्ठक, वितव २ स्मृतिकारविशेष ३ दे 'हारिल'।

हार्ट फेल, स पु (अ) हृत्स्पन्दनविरोध, हृदयावरोध।

हार्दिक, वि (स) हृदय, स्वान्त विषयक, चैत्त(-त्ती स्त्री), चैतसिक(-की स्त्री) मानस (-सी स्त्री), मानसिक(-की स्त्री) २ निर्व्याज्, निष्कपट ३ स्नेहशील, स्निग्ध, स्नेहिन् अनुरागवत्, अनुरागिन्।

हाल[1], स पु (अ) अवस्था, दशा २ परिस्थिति (स्त्री) ३ समाचार, वृत्तान्त ४ विवरणं, इतिवृत्तं ५ चरित्र, कथा ६ समाधि, भावावेश ७ वर्तमानकाल। वि, वर्तमान, विद्यमान, उपस्थित। अव्य, अधुनैव २ शीघ्रं, त्वरितम्।

—का, मु , अभि ,नव, नूतन, अचिर, प्रत्यग्र ।
—बेहाल होना, मु , शुभात् अशुभ, मंगलात् अमंगल, क्रमशो विकारवृद्धि (स्त्री)।
—में, मु , वर्तमाने, आधुनिककाले, इदानींतने काले ।
हाल², म स्त्री (स हलन) कंप , कंपन २ संघट्ट , समाघात ३. लौह चक्रवलयम् ।
हाल³, म पु (अ) सुख ,शालि, वात्रमोह , आस्थानी)।
हालत, म स्त्री (अ) दशा, अवस्था, स्थिति (स्त्री) २ आर्थिकावस्था ३ परिस्थिति (स्त्री)।
हालडूल, स स्त्री (स हलनम्>) कलकल , कोलाहल २ उपद्रव , समर ।
हालाँ कि, अव्य (फा) यद्यपि (अव्य)।
हाला, म स्त्री (स) मद्य, सुरा दे ।
हालाहल, म पु , दे 'हलाहल'।
हाली, अव्य (अ हाल) शीघ्र, सत्वरम् ।
हाव, स पु (स) शृंगारभावजा चेष्टा (लीला, विभ्रम, विलास आदि) आह्वानम् ।
—भाव, म पु (स) पुरुषमनोहारी स्त्रीचेष्टा भेद, विभ्रम , विलास , लीला ।
हावनदस्ता, सं पु (फा) उलूखल मूसल, मुसल हैं-नौ (द्वि)।
हाशिया, म पुं (अ -यह्) प्रान्त , उपान्त , सीमा २ वस्त्रप्रान्त , चीरी रि (स्त्री), दशा।
हास, सं पु (सं) दे 'हँसी' (१ ४)।
—कर, वि (स) हास्यजनक २ अव-उप, हास्य ।
हासिद, वि (अ) ईर्ष्या(ष्या)लु, ईर्ष्यु ।
हासिल, वि (अ) लब्ध, अधिगत, प्राप्त दे ।
हास्य, वि (स) हास,-कर जनक उत्पादक, हास,-योग्य आस्पद २ अव उप, हास्य, अव उप, हासार्ह। सं पु (स न) दे 'हँसी' (१ ४)।
—कर, वि (स) दे 'हास्य' वि (१ २)।
हास्यास्पद, म पु (सं न) हासविषय २ उपहासविषय । वि , दे 'हास्य' (वि १ २)।
हास्योत्पादक, वि (स) दे 'हास्य' (वि १ २)।
हा हा, स पु (अनु) हास(स्य), शब्द ध्वनि , अट्टहास , अनुनय-दैन्य,शब्द ध्वनि ३ संकट, कष्ट, हा हन्त ।
—ही ही, }
—ठी ठी, } स स्त्री , परिहास , विनोद ।
—खाना, मु , सदैन्य आकृ (प्रे)-प्रार्थ (चु आ मे)।
—ही ही करना, मु , हस् (भ्वा प से) २ परिहस , विनोदवाक्यानि उदीर (प्रे)।
हाहाकार, म पु (स) हाहा,-रव शब्द ध्वनि २ आर्ति, क्रोश , आ , क्रन्दन, क्रन्दित, चीत्कार , महत् कोलाहल ।
—करना, क्रि अ , हा हा कृ, हा हा ध्वनिं उत्पद् (प्रे) २ आर्ति, क्रुश् (भ्वा प अ), आ , क्रन्द् (भ्वा प से)।
हिंजीर, स पु (स) गजपद,-बन्धन-शृंखला रज्जु (स्त्री)।
हिंडोल, स पु (स हिंदोल) रागभेद ।
हिंडोला, स पु (स हिंदोल -ला) हिंदोलक , २ दोल-ला लिका प्रेंखा, आन्दोल , हिन्दोल ३ दोला,-गीत गीतिका ।
हिंद, स पु (फा) भारत, भारतवर्ष, आर्यावर्त ।
हिंदवाना, म पु , दे 'तरबूज'।
हिंदवी, म स्त्री (फा) भारतीयभाषा २ हिन्दीभाषा ।
हिंदसा, सं पु (अ) अंक (गणित)।
हिंदी, वि (फा) भारतीय, भारत,-वर्षीय देशीय। स पु, भारत, भारतवासिन्, भारतवर्षवासिन्, भारतीय । स स्त्री उत्तर भारतस्य मुख्यभाषा, हिंदीभाषा ।
हिंदुस्तान, म पु (फा हिंदोस्तान) दे 'हिंद' २ उत्तरभारतस्य मध्यमभाग (दिल्ली से पटने तक)।
हिंदुस्तानी, वि (फा हिंदोस्तानी) दे 'हिंदी' वि । स पु, दे. हिंदी' स पु । म स्त्री, अखिलभारतीयभाषा, *हिन्दुस्थानी ।
हिंदू, स पु (फा) आर्य , वेद-स्मृति पुराण, अनुयायिन्-अनुगामिन्, *हिन्दु ।
—पन, स पु, *हिंदुत्व, आर्यत्वम् ।
हिंदोस्तान, स पु (फा) दे 'हिंदुस्तान'।
हिंसक, वि (सं) घात(तु)क, घातक, हिंस्र, शरारु, हन्तृ हिंसालु, वध-हिंसा,-शील २ मांसभक्षक, क्रव्याद (पशु)।

हिंसनीय, वि (सं) हन्तव्य, व्यापादनीय, मारणीय, वध्य।

हिंसा, सं स्त्री (सं) अप-,कार हानि (स्त्री) निराकरण, पीड़ा बाधा, अर्दन २ वध, हत्या, हनन, हिंसन, घात, मारण, निषूदनम्।

—करना, क्रि स, पीड् (चु), अपकृ व्यथ् (प्रे), अर्द् (भ्वा प से, प्र) २ हन् (अ प अ), हिंस (रु प से) व्यापद् मृ (प्रे), निषूद् (चु)।

हिंसात्मक, वि (सं) पीडा बाधा, आतंक युक्त दायक २ हत्यात्मक, जीवघ्नयुक्त।

हिंसालु, वि (सं) हिंसक, घातक, हिंस्र, वधशील। सं पु (सं) हिंसक, कुक्कुर भषक शुनस अलर्क, मत्तश्वन्।

हिंस्र, वि (सं) दे हिंसक'।

हिकमत, सं स्त्री (अ) तत्त्वज्ञान, दर्शन २ शिल्प, कलाकौशल ३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ४ नीति (स्त्री), नय ५ मित व्यय ६ चिकित्सा, वैद्यकम्।

हिकमती, वि (अ हिकमत) कर्मकुशल, कार्यपटु २ चतुर, विदग्ध ३ मितव्ययिन्।

हिकायत, सं स्त्री (अ) कथा, आख्यानम्।

हिकारत, सं स्त्री (अ) तिरस्कार, अवगणना।

—की नजर से देखना, मु लघयति (ना धा), अवमन् (दि आ अ) अवगण् (चु)।

हिचक, सं स्त्री (हि हिचकना) आवि पर्ण, शंका, संदेह, संशय, विकल्प, निश्चय विनय, अभाव।

हिचकना, क्रि अ (अनु हिच) दोलायते (ना धा), विकल्प् (भ्वा आ से), आ विलप्? (भ्वा आ से), भड़ी (अ आ स) २ दे हिचकी आना'।

हिचकिचाना, क्रि अ, दे 'हिचकना'।

हिचकिचाहट, सं स्त्री, दे 'हिचक'।

हिचकिची, सं स्त्री, दे 'हिचक'।

हिचकी, सं स्त्री (अनु हिच) हि(हे)क्का, हिक्किका, हिध्मा, हिक्विका।

—आना, क्रि अ, हिक्क (भ्वा उ से)।

—लगाना, मु, मरणोन्मुख (वि) भू (भ्वा प से) २ हिक्क्।

हिचर पि(मि)चर, सं स्त्री, दे 'हिचक' २ दे 'टालमटूल'।

हिजड़ा, सं पु, दे 'हीजड़ा'।

हिजरी, सं पु (अ) यवनसंवत् (अव्य) (सन् १५।७।६२२ ई० अर्थात् श्रावण शुक्ल२, संवत् ६७९ वि से चला है)।

हिजाब, सं पु (अ) अवगुंठन २ लज्जा।

हिज्जे, सं पु (अ हिज्जह्) शब्दाक्षरोच्चारणं।

—करना, क्रि स, शब्दाक्षराणि उच्चर् (प्रे)।

हिज्र, सं पु (अ) वियोग, विरह।

हित, वि (सं) लाभ, प्रद-,दायक, उप-,कारिन् योगिन्, हितकर २ अनुकूल, योग्य ३ हितेच्छु छुक, हितैषिन्। सं पु (सं न) लाभ, अर्थ २ मंगल, भद्र ३ अनुकूलता ४ स्वास्थ्य लाभ ५ स्नेह, अनुराग ६ मैत्री, हितेच्छा ७ मित्र ८ संबंध, बंधुता ९ संबंधिन्, बंधु। अव्य, लाभाय, हिताय २ कारणात्, हेतो ३ अर्थे, कृते।

—कर, वि (सं) हित, कर्तृ-कारक-कारिन् २ लाभ,-दायक प्रद, उपयोगिन्, फलावह ३ स्वास्थ्य,-कर प्रद।

—काम, सं पु (सं) हित,-कामना इच्छा। वि (सं) हितैषिन्।

—कारी, वि (सं रिन्) दे 'हितकर'।

—चिंतक, वि (सं) हितेच्छु च्छुक, हितैषिन्।

—चिंतन, सं पु (सं न) हितेच्छा, कल्प विशेषः।

—वादी, वि (सं दिन्) सत्परामर्शिन्।

हिताहित, सं पु (सं न) हानिलाभौ उप कारापकारौ (पु द्वि), इष्टानिष्टे भद्राभद्रे (न द्वि)।

हितू, सं पु (सं हित) मित्र, हितैषिन्, सुहृद् २ संबंधिन्, बंधु।

हितैषी, वि (सं षिन्) हितचिंतक, दे।

हितोपदेश, सं पु (सं) सत्परामर्शदान २ विष्णुशर्मरचितो नीतिग्रंथविशेष।

हिदायत, सं स्त्री (अ) पथप्रदर्शन २ शिक्षा, अनुशिष्टि (स्त्री)।

हिनहिनाना, क्रि अ (अनु हिनहिन) हेष् ह्रेष् (भ्वा आ से)।

हिनहिनाहट, सं स्त्री (हि हिनहिनाना) ह्रेषा, हेषा, ह्(हे)षितम्।

हिर्स, सं स्त्री (अ) लोभ, तृष्णा, लिप्सा ।

हिर्सी, वि (अ हिर्स) लुब्ध, गृध्नु, लोलुप ।

हिलना¹, क्रि अ (स हल्लन) चल्-चर (भ्वा प से), इ या (अ प अ), गम् २ सृ-सृप् (भ्वा प अ) ३ कम्पवेप स्पन्द् (भ्वा आ से) ४ दोलायते (ना धा) प्रेङ्ख् (भ्वा प से) इतस्ततः विम चल् ५ (जले) प्रावश (तु प अ)। स पु तथा भाव, चलन, चरण, अयन, यान, गमन, सरण, सर्पण, कम्प, वेपन, स्पन्दन, चेष्टा, चेष्टित, क्रिया प्रवृत्ति, व्यापार ।

—डोलना, मु, अट् भ्रम् (भ्वा प से) २ श्रम् (दि प से) प्रयत् (भ्वा आ से)।

हिलनेवाला, वि, चर, चल, जगम, चलन गमन, शील, कम्पमान, वेपमान, चेष्टमान, स्पन्दमान ।

हिला हुआ, वि, चलित, सञ्चालित, हत इ ।

हिलना², क्रि अ (हि हिलगना, स अधि लग्न) सुपरिचित-बद्धसख्य रूढसौहृद (वि) जन् (दि आ से)।

—मिलना, क्रि अ परस्पर सस्नेन वृत् (भ्वा आ से) व्यवह अस (दोनों भ्वा प अ)।

हिलमिलकर, मु सौमनस्येन, सौहार्देन २ मि भूय, मिलित्वा ।

हिला मिला, मु, सुपरिचित, गाढसौहृद, बद्ध सख्य ।

हिलाना, क्रि स, दे 'हिलना' (१ २) के प्रे रूप ।

हिलोर रा, स प (स हिल्लोल) उल्लोल, तरग, मा, ऊर्मि (पु स्त्री)।

हिलोरें लेना, मु, तरंगायते (ना धा), तर गित (वि) भू ।

हिलोरना, क्रि स (हि हिलोर) तरंगयति उल्लोलयति (ना धा), इतस्ततः चल् (प्रे)- विधू (भ्वा उ से)।

हिलोल, स पु दे 'हिलोर' ।

हिसाब, सं पु (अ) गणना, सख्यान २ आयव्यय देयादेय-लेखा विवरण ३ गणित, अकविद्या ४ अर्ध-मूल्य, मान प्रमाण ५ नियम, व्यवस्था ६ विचार, मत ७ रीति (स्त्री), विधि ।

—करना या लगाना, क्रि स, गण् (चु), सख्या (अ प अ)।

—किताब, स पु (अ) दे 'हिसाब'(२)।

—चलना, मु, व्यवहार-दानादान वृत् (भ्वा आ से)।

—चुकाना या चुकता करना, मु, ऋण निर् शुध् (प्रे)।

—बन्द करना, मु, व्यवहार त्यज् (भ्वा प अ)।

हिस्टीरिया, स पु (अ) योषापस्मार, वात गर्भाशय उन्माद, हृद्मोह ।

हिस्सा, स पु (अ) वि, भाग, अंश २ बट, उद्धार ३ खण्ड-ड, एकदेश ४ अंग, अवयव ।

—करना, क्रि स, अश् (चु), विभज् (भ्वा उ अ)।

—दार, स पु (अ + फा) अंशिन्, अंश ग्राहिन्, सह, भागिन् ।

—दारी, स स्त्री, सहभागिता, अंशिता ।

हींग, स स्त्री [सं हिंगु (पु न)] र(रा) मठ, बाल्हीक, जतु, अर्न-नाशन, सूपधूपन, उग्रगन्ध रक्षोघ्न, अरण, अगूढगन्धम् ।

हींसना, क्रि अ (स हेषण) दे 'हिनहिनाना' २ दे 'रेंकना' ।

ही, अव्य (स हि) एव, अवश्य, केवल (सब अव्य)।

हीक, स स्त्री (स हिक्का) दे 'हिचकी' दुर्गंध ।

हीजड़ा, सं पु (देश) ष(प)ण्ड, तृतीया प्रकृति, क्लीब, नपुंसक ।

हीन, वि (स) वि रहित, शून्य, वर्जित, वचित, वियुक्त, अ, निर्, नि, (उ धनहीन= अधन इ) २ परि त्यक्त उत्सृष्ट ३ अपकृष्ट, निकृष्ट नीच, अधम ४ क्षुद्र, तुच्छ ५ कुत्सित, निन्द्य, अधम, दुष्ट कु ६ दीन दरिद्र, अकिंचन ७ अल्प, ऊन, न्यून ।

—जाति, वि (स) नीच-वर्ण जाति २ अ पाङ्क्तेय, पतित ।

—यान, स पु (स न) बौद्धसम्प्रदायभेद ।

हीनता, स स्त्री (स) अभाव, राहित्य, त्रुटि (स्त्री), न्यूनता २ क्षुद्रता, तुच्छता ३ निकृष्टता, दुष्टता।

हीमोग्लोबिन, स पु (अ) रक्तकण, रक्तरञ्जकम्।

हीर¹, स पु (स) शिव २ इन्द्रवज्र ३ सर्प ४ हार ५ सिंह ६ हीरक ।

हीर², स पु (हिं हीरा) सार, साराश, अन्तर्भाग, तत्त्व २ वीर्य, शुक्र ३ बल शक्ति (स्त्री)।

हीरक, स पु (स) दे 'हीरा'।

हीरा, स पु (स हीर) हीरक, वज्रज रत्नमुख्य, सूचीमुख, दधीच्यस्थि (न), वराटक ।

—मन, स पु (हिं + स मणि) हेमवर्ण कल्पित शुकभेद, *हीरमणि ।

हीला, स पु (अ हील) व्याज, छद्मन् (न) व्यपदेश, मिष, २ साधन, उपाय ।

—करना, क्रि अ, वि, अपदिश् (तु प, अ) कपट-व्याजं कृ ।

—बाज, वि, कापटिक-छायिक (-की स्त्री)।

—हवाला, स पु, दे 'हीला'।

—निकलना, मु, उपाय जा (कर्म), साधन प्राप् (कर्म)।

हीहो, अव्य (स) हास्यार्थसूचकमव्यय, (हय) हन्त २ (आश्चर्य) अहह।

हु, अव्य (स) ओं, आ, २ साधु, बाढ, अस्तु ।

हुंकार, स पु (स) हुंकृति (स्त्री), हुंकृत भर्त्सनाशब्द २ गर्जनं-ना, निनाद, हुंकृत ३ चीत्कार, उत्क्रोश ।

हुंकारना, क्रि अ (स हुंकार>) निभर्त्स (चु आ अ), तर्ज (चु), अधिक्षिप (तु प अ) २ गर्ज्-गर्द्-निनद् (भ्वा प से) ३ चीत्कृ, उत्क्रुश् (भ्वा प अ)।

हुंडावन, स पु (हिं हुंडा) *विनिमयशुल्कम्।

हुंडी, स स्त्री (?) *विनिमय, धनपत्रं देशपत्रम्।

हुकूमत, स स्त्री (अ) शासन, राज्य २ अधिकार, प्रभुत्वम्।

हुक्का, स पु (अ) *धूमपानयन्त्रम् ।

—पानी, स पु (अ + हिं) सामाजिक व्यवहार ।

—गुडगुडाना, मु, धूमपान कृ ।

—पानी बंद करना, मु, समाजात् बहिष्-अपाङ्क्तीकृ जाते निष्कस् (प्रे)।

हुक्काम, स पु (अ हाकिम का बहु) शासक अधिकारि-वर्ग वृन्दम्।

हुक्म, स पु (अ) आदेश, आज्ञा दे २ अनुमति (स्त्री) ३ प्रभुत्व, अधिकार ४ नियम, विधि, उपदेश (धर्मशास्त्रादि का) ५ क्रीडापत्ररगभेद ।

—नामा, स पु (अ + फा) आज्ञापत्रम्।

—बरदार, स पु (अ + फा) आज्ञा, पालक-अनुसारिन् अनुवर्तिन्-अधीन।

हुक्मी, वि (अ हुक्म) आज्ञा, पालक-अनुवर्तिन् २ अमोघ, सफल, सिद्धिकर ३ लक्ष्य, भेदिन्-वेधिन् ४ विकल्परहित, अवश्य कर्तव्य, अनिवार्य।

हुजूम, स पु (अ) भन, समूह समुदाय-समर्द ओघ ।

हुजूर, स पु (स) सामीप्य, सनिधि २ न्याय आलय सभा ३ (सबोधनशब्द) भगवन् ! श्रीमन् ! (सबोधन एक), भग वन्त ! श्रीमन्त ! (संबोधन बहु)।

हुजूरी, स स्त्री (अ हुजूर>) निकटता, समीपता २ उपस्थिति (स्त्री), विद्यमानता ३ राज-राजकीय-सभा । स पु विशिष्ट, सेवक भृत्य २ राजसभासद्, सभ्य, सचिव ।

हुज्जत, स स्त्री (अ) कुतर्क, व्यर्थयुक्ति (स्त्री) २ विवाद, वाग्युद्धम्।

—करना, क्रि अ, व्यर्थं तर्क् (चु) २ विवद् (भ्वा आ से), वाग्युद्ध कृ ।

हुज्जती, वि (अ हुज्जत) कुतार्किक २ कलह विवाद, प्रिय ।

हुडदंगा, स पु (अनु हुड + हिं दगा) उपद्रव, तुमुल, सक्षोभ ।

—ग्राही, वि (स ग्रहिन्) हृदयहारिन्, मनोमोहक २ रुचिकर, प्रिय।

—वान्, वि (स-वत्) सहृदय, हृदयालु २ भावुक, रसिक।

—विदारक, वि (सं) हृदयवेधिन्, शोकजनक, करुणोत्पादक।

—स्पर्शी, वि (स-र्शिन्) हृदिस्पृक्, प्रभावोत्पादक २ दयोत्पादक, करुणाजनक।

—हारी, वि (स-रिन्) चेतोहर, मनोहारिन्।

हृदयेश्वर, स पु (स) वल्लभ, प्रियतम, प्रेमपात्र २ पति, भर्तृ।

हृदयेश्वरी, स स्त्री (स) हृदयेशा प्राणेशा, कान्ता २ पत्नी, भार्या।

हृद्गत, वि (स) आन्तर, आभ्यन्तर, अभि-अन्तर, हृद्य, अन्तर, -वर्तिन्-गत मानस, चैत्त २ अवगत, ज्ञात, बुद्ध ३ प्रिय, रुचिर।

हृद्य, वि (स) (१२) दे हृद्गत' (१३) २ सुन्दर ३ शान्तिप्रद ४ स्वादु, सुरस।

हृषीक, स पु (स न) इन्द्रिय, दे।

हृषीकेश, स पु (स) विष्णु २ श्रीकृष्ण ३ तीर्थविशेष।

हृष्ट, वि (स) हर्षित, सुप्रसन्न, प्रमुदित, आनंदित, प्रीत, पुष्ट, प्रसन्न।

—पुष्ट, वि (स) दृढ़, अंग-देह नत, पीन, मांसल, बलवत्।

हेगा, स पु (स अभ्यग >) मत्य कोटि (टी)द।

हेंहें, स स्त्री (अनु) मन्दहासध्वनि २ दैन्यसूचकशब्द।

हे, अव्य (स) अग, भो, हहो हहो, अरे, अये, अयि, पाट्, प्याट (सब अव्य)।

हेकड़, वि (हिं हिया+कड़ा) दे हृष्टपुष्ट' २ प्रबल, उग्र ३ उद्दंड, विनीत, धृष्ट।

हेकड़ी, स स्त्री (हिं हेकड़) उग्रता चण्डता, उद्दण्डता २ बल, बलात्कार, रभस् (न), रभस।

हेच, वि (फ़ा) तुच्छ, क्षुद्र २ निस्सार, तत्त्वहीन।

हेठ, क्रि वि (स अधस्थ>) नीचै, अध (दोनों अव्य)।

हेठा, वि (हिं० हेठ) अवर, अधर २ ऊन, हीन ३ तुच्छ, क्षुद्र।

—पन, सं पु, तुच्छता, क्षुद्रता, ऊनता।

हेठी, स स्त्री (हिं हेठा) मानहानि (स्त्री), अवधीरणा, अपमान।

हेड़¹, स पु (स) तिरस्कार, अवज्ञा, अपमान।

—ज, सं पु (स) क्रोध, कोप, रोष।

हेड², स पु (अ) शिरस् (न), शीर्ष, मुण्ड, मस्तकम् २ मुख्य, प्रधान, अध्यक्ष।

—क्वार्टर, स पु (अ) मुख्यालय, मुख्य कार्यालय।

हेडिंग, स स्त्री (अ) शीर्षक, शिरःपंक्ति (स्त्री) नामन् (न), सज्ञा।

हेत, स पु, दे हेतु'(१, २)।

हेतु, स पु (स) प्रयोजन, अभिप्राय, निमित्त, उद्देश २ कारण, बीज, मूल ३ युक्ति-उपपत्ति (स्त्री), प्रमाण ४ अर्थालंकारभेद (सा)।

—वाद, स पु (स) ऊहापोह, तर्क २ कुतर्क, नास्तिकता, नास्तिक्यम्।

—वादी, वि (स दिन्) तार्किक २ नास्तिक।

—विद्या, स स्त्री (स) तर्क-हेतु, शास्त्रम्।

—हेतुमद्भाव, स पु (स) कार्यकारण, भावसंबंध।

हेत्वाभास, स पु (स) असद्-दुष्ट, हेतु।

हेमंत, स पु (स) हैमन, ऊष्मागम, शरदन्त, हिमागम, अग्रहायणपौषमासात्मक ऋतु।

हेम, स पु [सं-मन् (न)] सुवर्ण, दे 'सोना'।

—गिरि, स पुं (स) सुमेरु, हेम-अचल अद्रि।

—चंद्र, सं पु (सं) जैनाचार्यविशेष।

हेय, वि (स) त्याज्य, त्यक्तव्य, उत्सर्जनीय, हातव्य २ निकृष्ट, अपकृष्ट, गर्ह्य, निन्द्य।

हेरना, क्रि स (स आखेट >) अन्विष् (दि प से) गवेष् (भ्वा आ से चु प से) २ दृश (भ्वा प अ) ३ विचर् (प्रे)।

—फेरना क्रि स (अनु+हिं) परिवृत् विपर्यस (प्रे), अन्यथा वि,कृ, विनिमे (भ्वा आ अ)।

हेर फेर, स पु (हिं हेरना+फेरना) परिवर्तनं, परिवृत्ति (स्त्री), विनिमय २ विकार, विक्रिया, विकृति (स्त्री) ३ विपर्यास, क्रमाभाव, अव्यवस्था ४ वक्रोक्ति (स्त्री), वागाडम्बर ५ कपट, छलं ६ अन्तर, भेद।

हेरा-फेरी, स स्त्री, दे 'हेर फेर'।

हेलमेल, स पु (हिं हिलना+मिलना) दृढ-गाढ सौहृद सौहार्द सख्य मैत्री २ संगति (स्त्री), संपर्क ३ परिचय।

हेला[1], स स्त्री (स) अव-अप, मान, अवज्ञा, तिरस्कार २ प्रमाद, उपेक्षा ३ क्रीडा, खेला ४ सुकर-सुसाध्य,-कार्य ५ शृंगारचेष्टा, केलि (स्त्री)-ली ६ नारीणां सुरतलालसा।

हेला[2], स पु दे 'हल्ला'।

हैं[1], अव्य (अनु) (निषेध) मा, मास्म, अलं २ (आश्चर्य) अहो, ही।

—हैं, अव्य (अनु) मा मा, अलं अलं २ ही ही।

हैं[2], क्रि अ (हिं होना) सन्ति विद्यन्ते वर्तन्ते (लट्, बहु)।

हैंडबेग, स पु (अं) (चर्ममयी) करपेटिका २ कर,प्रसेव सपुट।

हैंडल, स पु (अं) मुष्टि (स्त्री), वारंग।

है, क्रि अ, (हिं होना) अस्ति विद्यते-वर्तते (लट्)।

हैकल, स स्त्री (सं ह +गल >) अश्व ग्रैवेयक २ 'हमेल'।

हैज़ा, स पुं (अ-जह्) विषूचिका, दे।

हैट, स पु (अं) गुरंट-आंगल, शिरस्त्राण शीर्षरम्।

हैफ़, अव्य (अ) हा, हन्त, खेद, शोक।

हैबत, स स्त्री (अ) त्रास, भयम्।

—नाक, वि (अ) भीम, भयंकर।

हैरत, सं स्त्री (अ) आश्चर्य, विस्मय।

हैरान, वि (अ) चकित, विस्मित २ वि, आकुल, उद्विग्न।

हैवान, स पु (अ) पशु, चरि, मृग २ जड, मूर्ख, असभ्य।

हैवानियत, स स्त्री (अ) पशुता-त्व २ अशिष्टता, असभ्यता ३ क्रूरता।

हैवानी, वि (अ हैवान) पाशव, पशु-तुल्य सम २ क्रूर, निष्ठुर।

हैसियत, स स्त्री (अ) सामर्थ्य, योग्यता २ आर्थिकावस्था, धनबल ३ धनं, वित्त ४ संमान प्रतिष्ठा ५ मूल्य, अर्घ।

है है, अव्य (स हा हा) हन्त, हा हन्त, कष्ट, दुखम्।

होंठ, स पु (स ओष्ठ) दन्तच्छद-दशन, च्छद दे 'ओंठ'।

—फटना, सं पु, ओष्ठभेद।

—काटना या चबाना, मु, क्रुध (दि प अ), आन्तरक्षोभ प्रकटयति (ना धा)।

—हिलाना, मु, वक्तु उपक्रम् (भ्वा आ अ)।

हो, अव्य (स) 'हे'।

होटल, सं पु (अं) भोजनशाला २ पांथशाला।

होड़, स स्त्री (स होड़ = युद्ध) पण, ग्लह २ प्रति,स्पर्धा, विजिगीषा ३ आग्रह।

—बदना, बाँधना या लगाना, क्रि स, ग्लह् (भ्वा प से, चु), दिव् (दि प से), पण् (भ्वा आ से) २ विजिगीषते (सन्नन्त), स्पर्ध् (भ्वा आ से)।

होड़ाबादी, स स्त्री }
होड़ाहोड़ी, स स्त्री } (हिं होड़+बदना) (हिं होड़) दे 'होड़' (१ २)।

होता, सं पुं (स होतृ) ऋत्विग्भेद, होत्रिन्, होमकर्तृ, यष्टृ।

होत्र, स पु (स न) यज्ञ, याग, मख हवनम् २ यज्ञहवन सामग्री, हविस् (न), हव्यम्।

होत्री, सं पुं (स त्रिन्), होतृ, याजक, यष्टृ, ऋत्विग्भेद होमकर्तृ।

होनहार, वि (हिं होना) भद्रलक्षण, उन्नतिशील, आशाजनक, सिद्धिसूचक २ भाविन्,

भविष्यत्, भवितव्य। स स्त्री, भवितव्यता, नियति (स्त्री), भाग्य, दैव, विधि।

होना, क्रि अ (स भवन) भू, अस (अ प) वृत् (भ्वा आ अ), विद् (दि आ अ), अवस्था (भ्वा आ अ) २ भू, जन् (दि आ से), सम्पद् (दि आ अ), परिणम् (भ्वा प अ) ३ कृ-अनुष्ठा विधा (कम) ४ रच्-निर्मा (कम) ५ घट सङ्घट् (भ्वा आ से), सम्पद् (दि आ अ) आपत् (भ्वा प से) ६ (रोगादिभिः) पीड् (कम) ७ अति गम्, इ (अ प अ), व्यतिक्रम् (भ्वा प से) ८ उत्पद् (दि आ अ), जन् (दि आ से) ९ जीव् (भ्वा प से)। स पु सत्ता भाव सत्ता, अस्तित्व, अव स्थिति (स्त्री), सद्, भाव, वर्तन, विद्यमानता इ।

होने योग्य, भवितव्य, शक्य, सम्भाव्य, सम्भवनीय, सम्पादनीय, साध्य।

होनेवाला, भाविन्, भविष्यत्, भवितव्य, दे 'होने योग्य'।

हुआ हुआ, वि, भूत, वृत्त, जात, सम्पन्न, निष्पन्न, अनुष्ठित, विहित, रचित, निर्मित, उत्पन्न इ।

(जो) हुआ सो हुआ, मु, अतीत विस्मर २ यद्भूतं न तद्भावि।

हो आना, मु, दृष्ट्वा मिलित्वा आगम् (भ्वा प अ)।

होकर या होते हुए, मु, मध्येन, मार्गेण।

हो चुकना या-जाना, मु, सं निष्, पद् (दि आ अ), समाप् (स्वा प अ)।

हो न हो, मु, नि सन्देह, नि संशयम्।

होनी, स स्त्री (हि होना) उत्पत्ति (स्त्री), जन्मन् (न) २ वृत्त, वृत्तान्त ३ दे 'होनहार' स स्त्री ४ सम्भाव्य शक्य-वार्ता।

होम, स पु (स) देवयज्ञ, दे 'हवन'।

होमना, क्रि स, दे 'हवन करना'।

होमियोपैथी, सं स्त्री (अ) समचिकित्सा, चिकित्सापद्धतिविशेष।

होरा, स स्त्री (स, यूनानी से लिया गया) लग्न २ राश्यर्द्ध ३ जन्मपत्रिका ४ जातक, जातकशास्त्र ५ दे 'घंटा' (= ६० मिनट)।

होला¹, स पु (स होलक) तृणाग्निभृष्टा र्द्धपक्वशमीधान्यम्।

होला², स पु (स होली) सिक्खानां होलिकोत्सव।

होली, स स्त्री (स) होलिका, होलाका, २ होलिकादहनार्थस्तृणकाष्ठराशि ३ होलिकागीतम्।

—खेलना, मु, होलिकोत्सवे रम् (भ्वा आ अ), खेल-क्रीड् (भ्वा प से), अन्योन्यं रञ्ज (प्रे)।

होल्डर, स पु (अ) लेखनीदण्ड २ लेखनी।

होश, स पु (फा) सञ्ज्ञा, चैतन्य २ स्मरण, स्मृति (स्त्री) ३ बुद्धि-मति (स्त्री)।

—मन्द, वि (फा) धीबुद्धि-मति,-मत्।

—हवास, स पु (फा + अ) सञ्ज्ञाबुद्धी २ चैतन्यम्।

—उड़ना या जाता रहना, मु, (मायादिभि) निस्तब्धी-जडी भयाकुली, भू।

—करना, मु, सावधान-अवहित (वि) भू।

—ठिकाने होना, मु, मोह भ्रान्ति (स्त्री) नश् (दि प वे) २ चेत स्वास्थ्य आपद् (दि आ अ) ३ गर्वनाश जन् (दि आ से) ४ दण्ड भुक्त्वा अनुतप् (दि आ अ)।

—दंग होना, मु, आश्चर्यस्तब्ध (वि) जन् (दि आ से), चकितचकित (वि) भू।

—दिलाना, मु, स्मृ (प्रे)।

—में आना, मु, प्रकृतिं आपद् (दि आ अ), सञ्ज्ञा लभ् (भ्वा आ अ)।

—सँभालना, मु, प्रौढ प्राप्तवयस्क (वि.) जन् २ सावधानी भू।

होशियार, वि (फा) बुद्धिमत्, चतुर, प्रज्ञ २ निपुण, कुशल ३ सावधान, अवहित ४ धूर्त, मायाविन् ५ पक्वबुद्धि।

होशियारी, स स्त्री (फा) बुद्धि धी,-मत्ता, २ दक्षता, नैपुण्य ३ सावधानता।

होस्टल, सं पु (अ होस्टेल) छात्रावास, छात्रालय।

हौंकना, क्रि अ (स हुंकरण) हुङ्कृ, गर्ज् (भ्वा प से) २ दे 'हाँफ(प)ना'।

हौआ, स पु (अनु हौ) भूत, पिशाच, डाकिनी, शिशुत्रासार्थं काल्पनिक भयमूल्म्। स स्त्री, दे 'हौवा'।

हौका, स पु (अनु हाव) औदरिकता, घस्मरता २ लोभ-तृष्णा,-अतिशय।

हौज़, स पु (अ) कुड, जलाशय, क्षुद्र तडाग २ बृहन्मृद्भांड, दे 'नाद'।

हौदा, स [redacted] (फ़ा हौदह्) परिस्तो(ष्टो)म, प्रवेणी, आस्तरण, कुथ-था-थम्।

हौल, सं पु (अ) भय, सन्त्रास।

—नाक, वि (अ + फ़ा) भयकर, त्रासन।

हौले, क्रि वि (हि हलुआ) शनैः, शनकैः, मद २ मृदु, कोमलम् (सब अव्य)।

हौवा, स स्त्री (अ) आदमपत्नी, *हव्वा, पृथिव्यां प्रथमा नारी मानवजाते जननी च। स पु, दे 'हौआ'।

हौस, स स्त्री दे 'हवस'।

हौसला, स पु (अ) लालसा, उत्कंठा साहस, उत्साह ३ हर्ष, प्रफुल्लता।

—मद, वि (फ़ा) उत्कंठित, अत्यभिलाषिन् २ साहसिन्, उत्साहिन् ३ हृष्ट, प्रफुल्ल।

—निकालना, मु, आकाक्षा-वाञ्छा स्पृहा सपद् (प्रे)-सम्पूर् (प्रे)।

—पस्त होना, मु, हतोत्साह भग्नहृदय (वि) भू।

ह्रद, सं पु (स) अगाधजलाशय, महा तडाग २ तडाक, कासार, सरसी ३ नाद।

ह्रसित, वि (सं) अल्पी-न्यूनी,-कृत-भूत, सक्षिप्त, सकुचित।

ह्रसिमा, स स्त्री (स-मन् [redacted]) ह्रस्वता, अल्पता, क्षुद्रता।

ह्रस्व, वि (स) लघु, क्षुद्र, दभ्र, अल्प, दैर्घ्य आयाम, शून्य २ ऊन, न्यून, हीन ३ खर्व, न्यच् ४ अवनत, नीच ५ क्षुद्र, तुच्छ। स पु (स) वामन २ लघुवर्ण (अ इ उ ऋ)।

ह्रास, स पु (स) अपक्षय, अवनति (स्त्री), क्षय, अधोगति (स्त्री), अपचय, ध्वस, भ्रश।

—होना, क्रि अ, क्षि (कर्म), ह्रस (भ्वा प मे), अपचि (कर्म)।

ह्री, स स्त्री (स) लज्जा, त्रपा, व्रीडा।

ह्लाद, स पु (स) आनद, प्र,-मोद, हर्ष।

ह्विस्की, स स्त्री (अ) आंग्लमद्यभेद।

ह्वेल, स पु (अ) तिमिंगल, तिमि, इल-मत्स्य।



प्रथम परिशिष्ट

संस्कृत-सूक्तियों का हिन्दी-अनुवाद

संस्कृत	हिन्दी
अकालमेघवद् वित्तमकस्मादेति याति च। (कथासरित्सागर)	धन अकाल-मेघ के समान अकस्मात् आता-जाता है।
अक्षोभ्यतैव महतां महत्त्वस्य हि लक्षणम्। (कथा०)	क्षुब्ध न होना ही बड़ों के बड़प्पन का चिह्न है।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति।	बिना चले तो गरुड़ भी पग-भर भी नहीं जा सकता।
अगुणस्य हतं रूपम्।	निर्गुण व्यक्ति का रूप किस काम का!
अङ्कमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किं नाम पौरुषम्?	गोद में सोये हुए की हत्या में कहाँ की वीरता है।
अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।	श्रेष्ठ लोग कही हुई बात को पूरा करते हैं।
अचिन्त्यं हि फलं सूते सद्यः सुकृतपादपः। (कथा०)	पुण्यरूपी वृक्ष शीघ्र ही अचिन्त्य फल देता है।
अजीर्णे भोजनं विषम्।	अपच में भोजन विष-तुल्य होता है।
अज्ञता कस्य नामेह नोपहासाय जायते?	अज्ञान के कारण किसका उपहास नहीं होता?
अतिदानाद् बलिर्बद्धः।	अत्यधिक दान से बलि को बँधना पड़ा।
अतिपरिचयादवज्ञा, संततगमनादनादरो भवति।	बहुत मेल-जोल से अवज्ञा होती है और किसी के यहाँ अधिक जाने से अनादर।
अतिभुक्तिरतीवोक्तिः सद्यः प्राणापहारिणी।	बहुत खाने और बहुत बोलने से तुरन्त मृत्यु हो जाती है।
अतिलोभो न कर्तव्यः।	अत्यधिक लोभ नहीं करना चाहिए।
अति सर्वत्र वर्जयेत्।	सब बातों में 'अति' त्याज्य है।
अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति।	जो आग तृणादि पर नहीं पड़ती, वह स्वयमेव बुझ जाती है।
अधरेष्वमृतं हि योषितां हृदि हालाहलमेव केवलम्।	स्त्रियों के ओठों में तो अमृत रहता है किन्तु हृदय में भयंकर विष।
अधर्मविषवृक्षस्य पच्यते स्वादु किं फलम्? (कथा०)	क्या कभी अधर्मरूपी विषवृक्ष पर सरस फल लग सकते हैं?
अधिकस्याधिकं फलम्।	जितना गुड़ उतना मीठा।
अनध्वा वाजिनां जरा।	सदा बँधे रहनेवाले घोड़े बूढ़े हो जाते हैं।
अनन्यगामिनी पुंसां कीर्तिरेका पतिव्रता।	पुरुषों की स्थायी कीर्ति पतिव्रता नारी के समान होती है।
अनपेक्ष्य गुणागुणौ जनः स्वरुचिं निश्चयतोऽनुधावति। (शिशुपालवधे)	वस्तुतः मनुष्य गुण-दोष की उपेक्षा करके रुचि के अनुसार ही कार्य करता है।
अनवसरे याचितमिति सत्पात्रमपि कुप्यते दाता।	यदि कुअवसर पर माँगा जाए तो दानी मनुष्य सत्पात्र पर भी क्रोध करता है।

अनार्यं परदारव्यवहार । (अभिज्ञानशाकुन्तले)	पराई स्त्रियों से सम्बन्ध रखना आर्योचित नहीं।
अनार्यसंगमाद्वर विरोधोऽपि समं महात्मभि । (किरातार्जुनीये)	अनार्यों (दुष्टों) के साथ मेल जोल की अपेक्षा महात्माओं से बैर अच्छा ।
अनाश्रया न शोभन्ते पण्डिता वनिता लता ।	विद्वान्, स्त्रियाँ और लताएँ आश्रय के बिना शोभा नहीं देतीं ।
अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम् । (अभिज्ञान०)	पराई स्त्रियों की ओर ताकना न चाहिए ।
अनुकूलेऽपि कलत्रे नीच परदारलम्पटो भवति ।	पत्नी के अनुकूल होने पर भी नीच मनुष्य परदाराभिगमन करता है ।
अनुत्सेक खलु विक्रमालङ्कार ।	नम्रता वीरता का भूषण है ।
अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानाम् । (अभिज्ञान०)	वृक्ष स्वयं तो कड़ी धूप सहता है, परन्तु शरणागतों के ताप को छाया से शान्त कर देता है ।
अनुसृत्य सतां वर्त्म यत्स्वल्पमपि तद् बहु ।	सज्जनों के मार्ग पर चलते हुए थोड़ा भी मिले तो बहुत समझिए ।
अनुहुङ्कुरुते घनध्वनिं नहि गोमायुरुतानि केसरी । (शिशु०)	सिंह मेघगर्जन सुनकर तो दहाड़ता है, गीदड़ों की ध्वनि सुनकर नहीं ।
अन्त सारविहीनानामुपदेशो न विद्यते ।	जड़बुद्धि मनुष्य को शिक्षा देना व्यर्थ है ।
अन्यायं कुरुते यदा क्षितिपति कस्तं निरोद्धु क्षम ?	जब राजा ही अन्याय करने लग पड़े तब उसे कौन रोक सकता है ?
अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिताः । (रघुवंशे)	रजोगुण से अभिभूत विद्वान् भी कुमार्गगामी बन जाते हैं ।
अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति ।	कुपथगामी का साथ सगा भाई भी नहीं देता ।
अपायो मस्तकस्थो हि विषयग्रस्तचेतसाम् । (कथा०)	विपत्तियाँ विषयी लोगों के सिर पर मँडराती रहती हैं ।
अपि धन्वन्तरिर्वैद्य किं करोति गतायुषि ।	जब आयु समाप्त हो जाती है तब वैद्य धन्वन्तरि भी कुछ नहीं कर सकता ।
अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियार्थाद्यशोधनानां हि यशो गरीय । (रघु०)	यशस्वी लोग, भोगों की तो बात ही क्या, स्वशरीर से भी यश को श्रेष्ठ समझते हैं ।
अपुत्रस्य गृहं शून्यम् ।	पुत्रहीन व्यक्ति के लिए घर सूना होता है ।
अपेक्षन्ते हि विपद किं पेलवमपेलवम् ! (कथा०)	विपत्तियाँ हृदय की कोमलता या कठोरता नहीं देखा करतीं ।
अप्रकटीकृतशक्ति शक्तोऽपि जनस्तिरस्क्रिया लभते ।	जो बलवान् निज बल को कभी प्रकट नहीं करता वह तिरस्कार का भाजन बनता है ।
अप्राप्यं नाम नेहास्ति धीरस्य व्यवसायिन । (कथा०)	धीर और व्यवसायी व्यक्ति के लिए संसार में कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं ।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ ।	कड़वा परन्तु हितकर वचन कहने और सुनने वाले व्यक्ति दुर्लभ हैं ।
अबला यत्र प्रबला ।	जहाँ स्त्री सबल हो ।
अभद्रं भद्रं वा विधिलिखितमुन्मूलयति क ?	बुरा हो या भला, विधाता के लेख को कौन मिटा सकता है ?
अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु ! (रघु०)	तपाने पर लोहा भी पिघल जाता है, प्राणियों की तो बात ही क्या ?
अभोगस्य हतं धनम् ।	जो भोगता नहीं, उसका धन व्यर्थ है ।

असर्पण· शोणितकाङ्क्षया किं पदा स्पृशन्तं दशति द्विजिह्व· ? (रघु०)	क्या उग्र सर्प पाँव से छूनेवाले व्यक्ति को लहू पीने की इच्छा से काटता है ?
अमृतं क्षीरभोजनम् ।	क्षीर रूपी भोजन अमृत है ।
अमृतं प्रियदर्शनम् ।	प्रिय पदार्थ का दर्शन अमृत है ।
अमृतं राजसंमानम् ।	राजा से प्राप्त सम्मान अमृत है ।
अमृतं शिशिरे वह्नि· ।	जाड़े मे अग्नि अमृत है ।
अम्बुगर्भो हि जीमूतश्चातकैरभिनन्द्यते ।(रघु०)	पपीहे जलपूर्ण बादल की ही प्रशंसा करते हैं ।
अयशोभीरव· किं न कुर्वते बत साधवः ! (कथा०)	अपयश से डरने वाले सज्जन क्या नहीं करते !
अयातपूर्वा परिवादगोचरं सतां हि वाणी गुणमेव भाषते । (किरातार्जुनीय)	सज्जनों की वाणी, निन्दा के मार्ग से अपरिचित होने के कारण, गुणों का ही वर्णन करती है ।
अरुंतुदत्वं महतां ह्यगोचर· । (किरात०)	बड़े लोग किसी का जी नहीं दुखाते ।
अर्थमनर्थं भावय नित्यं, नास्ति ततः सुखलेश सत्यम् ।	सदा ही धन को दुःखरूप समझो, वस्तुत उसमे तनिक भी सुख नहीं ।
अर्थातुराणां न गुरुर्न बंधुः ।	धन के लोभी गुरु और बन्धु तक का ध्यान नहीं करते ।
अर्थो हि कन्या परकीय एव । (अभिज्ञान०)	कन्या पराया ही धन है ।
अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।	अधजल गगरी छलकत जाए ।
अल्पविद्यो महागर्वी ।	थोड़ी विद्या वाला व्यक्ति बहुत ही गर्वीला होता है ।
अल्पश्च कालो बहवश्च विघ्नाः ।	समय थोड़ा है और विघ्न बहुत ।
अल्पीयसोऽप्यामयतुल्यवृत्तेर्महापकाराय रिपोर्विवृद्धिः । (किरात०)	रोग की तरह स्वभाव वाले छोटे से शत्रु की उन्नति से भी भारी अनिष्ट होता है ।
अवस्तुनि कृतक्लेशो मूर्खो यात्यवहास्यताम् । (कथा०)	तुच्छ वस्तु के लिए कष्ट उठाने वाला मूर्ख उपहासास्पद बनता है ।
अविद्याजीवनं शून्यम् ।	अविद्यापूर्ण जीवन सूना है ।
अविनीता रिपुर्भार्या ।	नम्रता-रहित पत्नी शत्रु है ।
अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयंकरः ।	जिसका मन ठिकाने न हो, उसकी कृपा भी भयावनी होती है ।
अशीलस्य हतं कुलम् ।	शीलरहित व्यक्ति की कुलीनता व्यर्थ है ।
अश्नुते [illegible] हि कल्याणं, व्यसने यो न मुह्यति ।	जो विपत्ति में विमूढ नहीं होता वह अवश्य ही कल्याणभागी बनता है ।
अश्रेयसे न वा कस्य विश्वासो दुर्जने जने ?	दुष्ट जन पर विश्वास करने से किसका अनिष्ट नहीं होता ?
असन्तुष्टा द्विजा नष्टा· ।	सन्तोष हीन ब्राह्मण नष्ट हो जाते हैं ।
असन्मैत्री हि दोषाय कूलच्छायेव सेविता । (किरात०)	दुर्जनों की मित्रता कगार की छाया के समान अनर्थकारिणी होती है ।
असारे दग्धसंसारे सारं सारङ्गलोचनाः ।	इस दुःखपूर्ण निस्सार ससार मे साररूप तो केवल मृगनयनियाँ ही हैं ।
असिद्धायां निवर्तन्ते न हि धीराः कृतोद्यमा· । (कथा०)	उद्यमी धीर कार्यसिद्धि से पूर्व नहीं रुकते ।
असिद्धेस्तु हता विद्या ।	सिद्धि के बिना विद्या व्यर्थ है ।

अस्थिरं जीवितं लोके।	जगत् में जीवन अस्थिर है।
अस्थिराः पुत्रदाराश्च।	पुत्र और कलत्र अस्थिर हैं।
अस्थिरे धनयौवने।	धन और यौवन अस्थिर हैं।
अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टम्।	लोकविरुद्ध आचरण सुखदायक नहीं होता।
अहितो देहजो व्याधिः।	शरीर में उत्पन्न रोग शत्रु है।
अहो चित्राकारा नियतिरिव नीतिर्नयविदः।	नीतिज्ञ की नीति नियति के समान विचित्र रूपों वाली होती है।
अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता। (किरात०)	बलवान् से विरोध करने का परिणाम बुरा ही होता है।
अहो दैवाभिशप्तानां प्राप्तोऽप्यर्थः पलायते। (कथा०)	हा! दैव से शापित लोगों के बने हुए काम भी बिगड़ जाते हैं।
अहो रूपम्, अहो ध्वनिः।	वाह! क्या रूप है और क्या स्वर!
आकण्ठजलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया।	गले तक पानी में डूबा हुआ भी कुत्ता जल को जीभ से ही चाटता है।
आचारः प्रथमो धर्मः।	आचार सर्वोत्तम धर्म है।
आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया। (रघु०)	गुरुजनों की आज्ञा का बिना विचारे ही पालन करना चाहिए।
आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।	अपने रक्षार्थ पृथ्वी को भी त्याग दे।
आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव। (रघु०)	मेघों के समान सत्पुरुषों का आदान भी प्रदान के लिए ही होता है।
आपत्काले च कष्टेऽपि नोत्साहस्त्यज्यते बुधैः। (कथा०)	विपत्ति और कष्ट के समय में भी बुद्धिमान् उत्साह नहीं छोड़ते।
आपत्सु धीरान् पुरुषान् स्वयमायान्ति संपदः। (कथा०)	आपत्तियों में धैर्य रखने वालों के पास सम्पत्तियाँ स्वयमेव आती हैं।
आपदि स्फुरति प्रज्ञा यस्य धीरः स एव हि। (कथा०)	जिसकी बुद्धि आपत्ति में चमकती है, वह धीर है।
आपद्यपि सतीवृत्तं किं मुञ्चन्ति कुलस्त्रियः? (कथा०)	क्या कुलीन ललनाएँ आपत्ति में भी सतीत्व का त्याग करती हैं?
आपन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम्। (मेघदूते)	उत्तम जनों का धन दुखियों के दुःख दूर करने पर ही सफल होता है।
आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति। (कथा०)	कार्यारम्भ में होने वाला मंगल, कार्यसिद्धि का सूचक होता है।
आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः।	धन का आगम और व्यय दोनों ही दुःखपूर्ण होते हैं, इस दुःखदायक धन को धिक्कार है।
आरब्धे हि सुदुष्करेऽपि महतां मध्ये विरामः कुतः। (कथा०)	आरम्भ किये हुए अत्यन्त कठिन काम में भी बड़े लोग बीच में नहीं रुकते।
आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। (नैषधीयचरिते)	कुटिलों के साथ सरलता का व्यवहार नीति नहीं है।
आलस्योपहता विद्या।	आलस्य विद्या का विनाशक है।
आवेष्टितो महासर्पैश्चन्दनः किं विषायते?	सर्पों से परिवेष्टित चन्दन क्या विषैला हो जाता है?
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।	आहार और व्यवहार में संकोच छोड़कर सुखी रहे।

आहुः सप्तपदी मैत्री ।	सात पग साथ साथ चलने को मैत्री कहते हैं ।
इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः ।	न इधर के रहे न उधर के रहे ।
इदं च नास्ति न परं [illegible] लभ्यते ।	न यह रहा, न वह मिला ।
इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः ।	अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनकर इन्द्र भी गौरवहीन हो जाता है ।
इन्धनौघधगप्यग्निस्त्विषा नात्येति पूषणम् । (शिशु०)	ईंधन के बहुत बड़े ढेर को जलानेवाली आग भी अपनी ज्योति से सूर्य को मात नहीं कर सकती ।
इष्टं धर्मेण योजयेत् ।	अभिलाषा धर्मानुसारिणी चाहिए ।
इहामुत्र च नारीणां परमा हि गतिः पतिः । (कथा०)	लोक और परलोक में स्त्रियों का परम आश्रय पति ही है ।
ईर्ष्या हि विवेकपरिपन्थिनी । (कथा०)	ईर्ष्या विवेक की शत्रु है ।
ईश्वराणां हि विनोदरसिकं मनः । (किरात०)	धनाढ्य लोग विनोदी होते हैं ।
उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः । (अभिज्ञान०)	मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं ।
उत्साहैकधने हि वीरहृदये नाप्नोति खेदोऽन्तरम् । (कथा०)	वीरों के उत्साहपूर्ण हृदय में खेद के लिये अवकाश कहाँ ?
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।	उदारचरित लोगों के लिये तो सारी भूमि ही कुटुम्ब है ।
उदारस्य तृणं वित्तम् ।	उदार व्यक्ति के लिये धन तृणतुल्य है ।
उदिते तु सहस्रांशौ न खद्योतो न चन्द्रमाः ।	सूर्य के उदय पर न जुगनू की चमक रहती है, न चाँद की ।
उदिते परमानन्दे नाहं न त्वं न वै जगत् ।	ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होने पर मैं, तू और जगत् का ज्ञान नहीं रहता ।
उद्योगः पुरुषलक्षणम् ।	उद्योग ही पुरुष का लक्षण है ।
उन्नतो न सहते तिरस्क्रियाम् ।	उच्च व्यक्ति तिरस्कार नहीं सहता ।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।	मूर्ख लोग उपदेश से प्रकुपित होते हैं, शान्त नहीं ।
उप्तं सुकृतबीजं हि सुक्षेत्रेषु महत्फलम् । (कथा०)	उत्तम पात्रों में बोया हुआ पुण्यरूपी बीज महान् फल देता है ।
उष्णत्वमग्न्यातपसंप्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा प्रकृतिर्जलस्य (रघु०)	जल का स्वाभाविक गुण तो शीतलता है, उसमें गर्मी तो अग्नि या धूप के संसर्ग से आती है ।
उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम् ।	गर्म अङ्गार हाथ को जलाता है, ठण्डा कलुषित करता है ।
ऋणकर्ता पिता शत्रुः ।	ऋण लेनेवाला पिता शत्रु है ।
ऋद्धिश्चित्तविकारिणी ।	ऐश्वर्य चित्त को विकृत कर देता है ।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः । (कुमार०)	गुण समुदाय में अकेला दोष ऐसे छिप जाता है जैसे किरणों में चाँद का कलङ्क ।
क उष्णोदकेन नवमल्लिकां सिञ्चति ! (अभि०)	मोतिये के पौधे को गर्म जल से कौन सींचता है ?
क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् ।	विद्या और धन का संग्रह क्षण-क्षण में कण-कण करके करते रहना चाहिए ।
कण्ठे सुधा वसति वै खलु सज्जनानाम् । (कथा०)	अमृत सज्जनों के कण्ठ में ही रहता है ।
कमलवनभूषा मधुकरः ।	भ्रमर कमल-समूह का अलंकार है ।
कर्तव्यं हि सतां वचः । (कथा०)	सत्पुरुषों के वचनानुसार चलना चाहिए ।
कर्तव्यो महदाश्रयः ।	आश्रय बड़ों का ही लेना चाहिए ।

कर्मणो गहना गतिः।	कर्म की गति गहन है।
कर्मणो ज्ञानमतिरिच्यते।	कर्म से ज्ञान बढ़कर है।
कर्मदोषाद् दरिद्रता।	दरिद्रता कर्म-दोष का फल है।
कर्मानुगो गच्छति जीव एकः।	अकेला जीव कर्मानुसार गति पाता है।
कर्मायत्तं फलं पुंसाम्।	मनुष्य को फल की प्राप्ति कर्मानुसार होती है।
कलासीमा काव्यम्।	कला की सीमा काव्य है।
कवयः किं न पश्यन्ति?	कवि क्या नहीं देखते?
कवले पतिता सद्यो वमयति ननु मक्षिकाऽन्नभोक्तारम्।	ग्रास में गिरी हुई मक्खी भोजनकर्ता को तुरन्त वमन करा देती है।
कष्टं निर्धनिकस्य जीवितमहो दारैरपि त्यज्यते।	हा! निर्धन का जीवन इतना दुःखपूर्ण होता है कि पत्नी भी उसका साथ छोड़ देती है।
कष्टः खलु पराश्रयः।	दूसरे का भरोसा दुःखदायक होता है।
कष्टादपि कष्टतरं परगृहवासः परान्नं च।	पराये घर में निवास और पराये अन्न से निर्वाह सबसे बड़े दुःख हैं।
कस्त्यागः स्वकुटुम्बपोषणविधावर्थव्ययं कुर्वतः?	अपने कुटुम्ब के पालन में ही धन व्यय करने-वाले व्यक्ति का त्याग भी कोई त्याग है!
कस्य नेष्टं हि यौवनम्? (कथा०)	यौवन किसे अच्छा नहीं लगता?
कस्यचित् किमपि नो हरणीयम्।	किसी का भी कुछ भी चुराना नहीं चाहिए।
कस्य नोच्छृङ्खलं बाल्यं गुरुशासनवर्जितम्? (कथा०)	गुरु का शासन न होने से किसका बचपन उच्छृ-ङ्खल नहीं हो जाता?
कस्य सत्सङ्गो न भवेच्छुभः? (कथा०)	सत्सङ्ग किसका भला नहीं करता?
कः कालस्य न गोचरान्तरगतः?	काल के क्षेत्र से बाहर कौन है?
कः परः प्रियवादिनाम्।	मधुरभाषी का कोई शत्रु नहीं होता।
कः पैतामहलोकेऽत्र निखिलैः सम्मानितो वर्तते?	इस ब्राह्मण में सर्वसम्मानित कौन है?
कः प्राज्ञो वाञ्छति स्नेहं वेश्यासु सिकतासु च? (कथा०)	कौन-सा विद्वान् वेश्याओं और रेत से स्नेह (प्रेम, तेल) चाहता है?
कः सूनुर्विनयं विना?	विनय से रहित पुत्र क्या?
काकाः किमपराध्यन्ति हंसैर्जग्धेषु शालिषु? (कथा०)	जब धानों को हंस खा गये तब कौए क्या अपराध करेंगे?
कान्ता रूपवती शत्रुः।	सुरूपा पत्नी शत्रु है।
कामं व्यसनवृक्षस्य मूलं दुर्जनसंगतिः। (कथा०)	बुरी संगत व्यसन रूपी वृक्ष की जड़ है।
कामातुराणां न भयं न लज्जा।	कामपीड़ित व्यक्ति भय और लज्जा से रहित होते हैं।
कामिनश्च कुतो विद्या?	कामी को विद्या कहाँ?
कायः कस्य न वल्लभः?	शरीर किसे प्यारा नहीं होता?
कालस्य कुटिला गतिः।	काल की चाल टेढ़ी होती है।
काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः। (रघु०)	समय पर प्रयुक्त नीतियाँ अवश्य फल लाती हैं।
काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनापि किम्! (कथा०)	समय पर दिया हुआ थोड़ा भी दान असमय पर दिये हुए बड़े दान से अच्छा होता है।

कालेन फलते तीर्थं, सद्यः साधुसमागमः ।	तीर्थ का फल विलम्ब से परन्तु सत्सङ्गति का फल शीघ्र प्राप्त होता है ।
का विद्या कविता विना ?	कविता के बिना विद्या कैसी ?
काश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या ।	केसर की कड़वाहट भी अत्यन्त प्यारी होती है ।
का हंसिनी विना हंसं, कश्च हंसोऽब्जिनीं विना ? (कथा०)	हंसहीन सरसी कैसी और सरसीहीन हंस कैसा ?
किं हि न भवेदीश्वरेच्छया ? (कथा०)	ईश्वर की इच्छा से क्या नहीं हो सकता ?
किं किं करोति न निरर्गलता गता स्त्री ?	निरंकुश नारी क्या-क्या नहीं करती ?
किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च ।	यौवन तथा सम्पत्ति के सुख कुछ ही काल तक लूटे जा सकते हैं ।
कुराजान्तानि राष्ट्राणि ।	बुरे राजाओं से राष्ट्रों का नाश हो जाता है ।
कुरूपता शीलतया विराजते ।	सुन्दर शील से कुरूपता भी खिल उठती है ।
कुरूपी बहुचेष्टिकः ।	कुरूप मनुष्य बहुत चेष्टाएं करता है ।
कुलवधूः का स्वामिभक्तिं विना ?	पतिभक्ति विहीन कुलवधू कैसी ?
कुले कश्चिद्धन्यः प्रभवति नरः श्लाघ्यमहिमा ।	कुल में कोई ही धन्य व्यक्ति यशस्वी प्रभु होता है ।
कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते ।	फटे पुराने वस्त्र भी स्वच्छ रहनेसे खिल उठते हैं ।
कुवाक्यान्तं च सौहृदम् ।	कुवचनों से मित्रता नष्ट हो जाती है ।
कुशिष्यमध्यापयतः कुतो यशः ?	कुशिष्य के अध्यापक को यश कहाँ ?
कृतघ्नानां शिवं कुतः ?	कृतघ्नों का कल्याण कहाँ ?
कृतार्थः स्वामिनं द्वेष्टि ।	पूर्ण-मनोरथ व्यक्ति स्वामी से द्वेष करता है ।
कृपणानुसारि च धनम् ।	धन कृपण के पीछे चलता है ।
कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ?	निर्बल या निर्धन से कौन मित्रता करता है ?
केचिदज्ञानतो नष्टाः ।	कई लोग अज्ञान से नष्ट हो गये ।
केचिन्नष्टाः प्रमादतः ।	कई लोग प्रमाद से नष्ट हो गये ।
केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः किं पुनस्त्रिदशचापलाञ्छितः ? (रघु०)	नया मेघ वैसे भी सुन्दर होता है, परन्तु जब वह इन्द्रधनुष से युक्त हो तब तो बात ही क्या ?
केषां न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेषु ! (मेघ०)	उत्तम जनों के सम्मुख की हुई किनकी प्रार्थना सफल नहीं होती ?
केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय !	कहो तो, यह कविता-कामिनी किन के मन में कौतुक उत्पन्न नहीं करती ?
को जानाति जनो जनार्दनमनोवृत्तिः कदा कीदृशी ?	कौन जानता है कि भगवान् के मन की वृत्ति कब कैसी होती है ?
कोऽतिभारः समर्थानाम् ।	बलवानों के लिए कोई भी भार अधिक नहीं है ।
को धर्मः कृपया विना ?	दया के बिना धर्म कैसा ?
को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ।	संसार में जिसके मुंह में ग्रास डाल दो, वही वश में हो जाता है ।
को नाम राज्ञां प्रियः !	राजाओं का प्यारा कौन होता है ?
कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वितः !	धन पाकर कौन गर्वित नहीं होता ?
कोऽर्थी गतो गौरवम् ?	किस याचक को गौरव प्राप्त हुआ ?
को विदेशः समर्थानाम् ।	समर्थ व्यक्ति के लिये विदेश कौन-सा है ।
को हि मार्गममार्गं वा व्यसनान्धो निरीक्षते ? (कथा०)	कौन व्यसनान्ध मनुष्य सुपथ कुपथ का ध्यान रखता है ?

को हि वित्तं रहस्यं वा स्त्रीणां शक्नोति गूहितुम्। (कथा०)	स्त्रियाँ सम्पत्ति और गोपनीय बात को नहीं छिपा सकतीं।
को हि स्वशिरश्छायां विधेश्चोल्लङ्घयेद् गतिम्? (कथा०)	अपने सिर की परछाईं और विधि की गति का उल्लङ्घन कौन कर सकता है?
क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकारणम्। (कुमारसम्भवे)	धार्मिक कृत्यों का मूल कारण श्रेष्ठ पत्नियाँ होती हैं।
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।	बड़े लोग स्वभाव से कार्य सिद्ध करते हैं, उपकरणों से नहीं।
क्रुद्धे विधौ भजति मित्रममित्रभावम्।	विधाता क्रुद्ध हो तो मित्र भी अमित्र बन जाता है।
क्रोधो मूलमनर्थानाम्।	क्रोध अनर्थों का मूल है।
क्वाश्रयोऽस्ति दुरात्मनाम्?	दुष्टों को आश्रय कहाँ?
क्षणविध्वंसिनि काये का चिन्ता मरणे रणे।	जब शरीर क्षणभङ्गुर है तब रण में मरने में चिन्ता कैसी।
क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। (शिशु०)	कमनीय सौन्दर्य वही है जो अनुक्षण नया-नया होता जाय।
क्षमया किं न सिध्यति?	क्षमा से क्या नहीं सिद्ध होता?
क्षान्तितुल्यं तपो नास्ति।	क्षमा के तुल्य कोई तप नहीं है।
क्षारं पिबति पयोधेर्वर्षत्यम्भोधरो मधुरमम्भः।	मेघ समुद्र का खारा पानी पीता है और मधुर जल बरसाता है।
क्षितितले किं जन्म कीर्तिं विना?	भूमि पर कीर्तिहीन जीवन क्या!
क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।	निर्धन लोग निर्दय बन जाते हैं।
क्षुधातुराणां न रुचिर्न पक्वम्।	भूख से व्याकुल व्यक्ति न स्वाद देखते हैं न पकवान।
ग(घ)टाटोपो भयङ्करः।	घटा का विस्तार-मात्र भी भयङ्कर होता है।
गतस्य शोचनं नास्ति।	बीती बात का शोक व्यर्थ है।
गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः।	लोग अन्धानुकरण करते हैं, तत्त्व की पहचान नहीं करते।
गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः।	सम्पत्तियाँ स्वयं गुणों की लोभी होती हैं।
गुणान् भूषयते रूपम्।	रूप गुणों को अलङ्कृत कर देता है।
गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।	गुणियों में गुण ही पूज्य होते हैं, न तो चिह्न और न आयु।
गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः।	गुणी ही गुण को पहचानता है, निर्गुण नहीं।
गुणहीना बहु जल्पयन्ति।	गुणहीन मनुष्य वाचाल होते हैं।
गुरुतां नयन्ति हि गुणा न संहतिः। (किरात०)	गौरव गुणों से मिलता है, समूह से नहीं।
गृहे या पुण्यनिर्वृत्तिः साऽस्ति नाश्रमान्तरे। (कथा०)	गृहस्थ में जो पुण्य किये जा सकते हैं वे संन्यास में नहीं।
ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।	गाँव की रक्षा के लिये कुल की बलि दे दे।
घटयन्ति योग्येन हि योग्यसङ्गमम् (नैषध०)	योग्य से योग्य का मेल हो जाया करता है।
चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च।	दुःख और सुख (पहिये) चक्र के तुल्य घूमते हैं।
चक्षुःपूतं न्यसेत् पादम्।	देखकर ही पग रखना चाहिए।
चपलौ हि शूराणां रणे जयपराजयौ। (कथा०)	युद्ध में वीरों की जय या पराजय अनिश्चित होती है।

चाण्डालोऽपि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं धनम् ।	अति धनवान् चाण्डाल भी पूज्य है ।
चित्तमेतदमलीकरणीयम् ।	इस चित्त को निर्मल करना चाहिए ।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता ।	सज्जनों के मन, वाणी और कर्म में समानता रहती है ।
चित्रा गतिः कर्मणाम् ।	कर्मों की गति न्यारी ।
चिन्ता जरा मनुष्याणाम् ।	चिन्ता मनुष्यों का बुढ़ापा है ।
चिन्तासमं नास्ति शरीरशोषणम् ।	चिन्ता के समान शरीर को कोई भी नहीं सुखाता ।
चौराणामनृतं बलम् ।	झूठ ही चोरों का बल है ।
चौरे गते वा किमु सावधानम् !	चोर के भाग जाने पर सावधानता से क्या !
छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति ।	दोषों के कारण अनेक विपत्तियाँ आ घेरती हैं ।
जठरं को न बिभर्ति केवलम् !	केवल अपना पेट कौन नहीं भर लेता !
जपतो नास्ति पातकम् !	जप करने वाला पाप मुक्त रहता है ।
जरा रूपं हरति ।	बुढ़ापा सौन्दर्य का नाशक है ।
जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।	बूँद-बूँद करके घड़ा भर जाता है ।
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ।	उत्पन्न व्यक्ति की मृत्यु अटल है ।
जातापत्या पतिं द्वेष्टि ।	सन्तानवती नारी पति से द्वेष करती है ।
जातौ जातौ नवाचाराः ।	प्रत्येक जाति के आचरण अलग-अलग होते हैं ।
जानन्ति पशवो गन्धात् ।	पशु गन्ध से पहचान जाते हैं ।
जामाता दशमो ग्रहः ।	दामाद दसवाँ ग्रह है ।
जारस्त्रीणां पतिः शत्रुः ।	कुल्टा को पति शत्रु प्रतीत होता है ।
जितक्रोधेन सर्वं हि जगदेतद् विजीयते । (कथा०)	क्रोध का विजेता जगद्विजयी होता है ।
जीवन् हि धीरोऽभिमतं किं नाम न यदाप्नुयात् । (कथा०)	धैर्यशाली व्यक्ति जीवित रहे तो प्रत्येक अभीष्ट प्राप्त कर लेता है ।
जीवो जीवस्य जीवनम् ।	प्राणी प्राणी का जीवन है ।
ज्ञानस्याभरणं क्षमा ।	क्षमा ज्ञान का भूषण है ।
ज्येष्ठभ्राता पितुः समः ।	बड़ा भाई पिता के तुल्य है ।
झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः । (नैषध०)	विद्वान् लोग दूसरे के भाव को तुरन्त जान जाते हैं ।
तक्रान्तं खलु भोजनम् ।	भोजन के अन्त में मट्ठे का सेवन करें ।
तपोऽधीनानि श्रेयांसि, ह्युपायोऽन्यो न विद्यते । (कथा०)	सुख-सुविधाएँ तपस्या से ही प्राप्त होती हैं, किसी अन्य उपाय से नहीं ।
तपोऽधीना हि संपदः । (कथा०)	सम्पत्तियाँ तप के अधीन हैं ।
तमस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति ? (अभिज्ञान०)	सूर्य के चमकने पर अन्धकार कैसे प्रकट होगा ?
तस्करस्य कुतो धर्मः !	चोर का धर्म कहाँ !
तस्य तदेव मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम् ।	जिसका मन जिसमें लगा हो, उसे वही प्रिय होता है ।
तिष्ठत्येकां निशां चन्द्रः श्रीमान् संपूर्णमण्डलः ।	१. शोभान्वित पूर्ण चाँद तो एक ही रात रहता है । २. चार दिन की चाँदनी और फिर अँधेरी रात है ।

धनं सर्वप्रयोजनम्।	धन सर्वप्रमुख प्रयोजन है।
धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।	बुद्धिमान मानव परोपकार के लिए धन और जीवन त्याग दे।
धर्मक्षयकरः क्रोधः।	क्रोध धर्म का नाशक है।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्।	धर्म का तत्त्व गुफा में छिपा है।
धर्मः कीर्तिर्द्वयं स्थिरम्।	धर्म और कीर्ति ही दो स्थिर पदार्थ हैं।
धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति।	जिसमें सत्य नहीं, वह धर्म नहीं।
धर्मेण हीना पशुभिः समानाः।	धर्महीन जन पशुतुल्य हैं।
धिक् कलत्रमपुत्रकम्।	अपुत्रा नारी धिक्कार्य है।
धिक् पुत्रमविनीतं च।	अनम्र पुत्र धिक्कार्य है।
धिगाशा सर्वदोषभूः।	सब दोषों की जननी आशा धिक्कार्य है।
धिग्गृहं गृहिणीशून्यम्।	गृहिणीरहित घर धिक्कार्य है।
धिग्जीवितं योद्यमवर्जितस्य।	उद्यमहीन का जीवन धिक्कार्य है।
धिग्जीवितं व्यर्थमनोरथस्य।	विफल मनोरथ मनुष्य का जीवन धिक्कार्य है।
धिग्जीवितं शास्त्रकलोज्झितस्य।	शास्त्र तथा कला से रहित मानव का जीवन धिक्कार्य है।
धूर्ताः क्रीडन्ति बालिशैः। (कथा०)	धूर्त लोग मूर्खों को ही उल्लू बनाते हैं।
ध्रुवं फलाय महते महतां सह संगमः। (कथा०)	बड़ों की संगति का फल बड़ा होता है।
न काचस्य कृते जातु युक्ता मुक्तामणेः क्षतिः। (कथा०)	काँच की प्राप्ति के लिए मोती की हानि उचित नहीं।
न कामसदृशो रिपुः।	काम के समान शत्रु नहीं।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे।	घर में आग लगने पर कुआँ खोदना उचित नहीं।
न खलु स उपरतो यस्य वल्लभो जनः स्मरति।	जिसका स्मरण प्रियजन करते हैं, उसे मरा न समझिए।
न च धर्मो दयापरः।	दया से बड़ा कोई धर्म नहीं।
न चलति खलु वाक्यं सज्जनानां कदाचित्।	सज्जनों की बात कभी झूठी नहीं होती।
न च विद्यासमो बन्धुः।	विद्या के समान बन्धु नहीं।
न च व्याधिसमो रिपुः।	रोग के तुल्य शत्रु नहीं।
न चापत्यसमः स्नेहः।	सन्तति के प्रति प्रेम असदृश है।
न जाने संसारः किममृतमयः किं विषमयः।	न जाने यह जगत् अमृतमय है या विषमय।
न ज्ञानात् परमं चक्षुः।	ज्ञान से बड़ी आँख नहीं।
न तोषात् परमं सुखम्।	सन्तोष से बड़ा सुख नहीं।
न तोषो महतां मृषा। (कथा०)	बड़े लोगों की प्रसन्नता व्यर्थ नहीं होती।
न दरिद्रस्तथा दुःखी लब्धनष्टधनो यथा।	निर्धन उतना दुःखी नहीं होता जितना धन को पाकर खोनेवाला।
न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते। (कुमार०)	धर्मवृद्धों की उमर नहीं देखी जाती।
न धर्मसदृशं मित्रम्।	धर्म के समान मित्र नहीं।
न नश्यति तमो नाम कृतया दीपवार्तया।	दीपक का नाम लेने से अँधेरा नष्ट नहीं होता।
ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरयः। (अभि०)	आँधी में पर्वत कभी नहीं हिलते।
ननु वक्तृविशेषनिःस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः। (किरात०)	गुणग्राही लोग वाक्य का गुण ग्रहण करते हैं, वक्तृविशेष का ध्यान नहीं करते।
न पुत्रात् परमो लाभः।	पुत्र प्राप्ति से बड़ा कोई लाभ नहीं।

न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम् ।	प्राणान्तकारी समय आ जाने पर भी उत्तम मनुष्यों के स्वभाव में विकार नहीं आता।
न भयं चास्ति जाग्रतः ।	जागनेवाले को कोई डर नहीं।
न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम् ।	सज्जन एक ही बात को बार-बार नहीं कहते।
न भार्यायाः परं सुखम् ।	पत्नी से बड़ा कोई सुख नहीं।
न भूतो न भविष्यति ।	न हुआ है न होगा।
न मुक्तेः परमा गतिः ।	मोक्ष से ऊँची कोई स्थिति नहीं।
नये च शौर्ये च वसन्ति सम्पदः ।	सम्पदाएँ नीति और शूरवीरता में रहती हैं।
न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् । (कुमार०)	रत्न किसी को नहीं खोजता, उसी की खोज की जाती है।
नवा वाणी मुखे मुखे ।	प्रत्येक मुख में वाणी पृथक्-पृथक् होती है।
न शरीरं पुनः पुनः ।	शरीर बार बार नहीं मिलता।
न शान्तेः परमं सुखम् ।	शान्ति से बड़ा कोई सुख नहीं।
न शास्त्रं वेदात् परम् ।	वेद से बड़ा कोई शास्त्र नहीं।
न स शक्नोति किं यस्य प्रज्ञा नापदि हीयते ? (कथा०)	जिसकी बुद्धि विपत्ति में भी स्थिर रहती है, वह क्या नहीं कर सकता !
न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः ।	वह सभा ही नहीं जिसमें वृद्ध न हों।
न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग्यादृक् कांस्ये प्रजायते ।	काँसे में जैसी ध्वनि उत्पन्न होती है वैसी सोने में नहीं।
न स्पृशति पल्वलाम्भः पञ्जरशेषोऽपि कुञ्जरः क्वापि ।	हाथी की हड्डियाँ निकल आवें तो भी वह जोहड़ का जल नहीं छूता।
न हठेन व्यवहर्तव्यमात्मनो भूतिमिच्छता । (कथा०)	वृद्धि के इच्छुक मनुष्य को हठपूर्वक व्यवहार नहीं करना चाहिए।
न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति ।	श्रेष्ठ लोग किये हुये उपकार को नहीं भूलते।
न हि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणोल्कया ।	समुद्र का जल तिनकों की मशाल से गर्म नहीं किया जा सकता।
न हि दुष्करमस्तीह किंचिदध्यवसायिनाम् । (कथा०)	अध्यवसायी व्यक्ति के लिये जगत् में कोई भी कार्य दुष्कर नहीं।
न हि नार्यो विनेर्ष्यया ।	स्त्रियाँ ईर्ष्या-रहित नहीं होतीं।
न हि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदाली । (रघु०)	भौंरे पुष्पित आम्रवृक्ष पर पहुँचकर अन्य वृक्ष की इच्छा नहीं करते।
न हि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम् — न हि वन्ध्याऽवबुद्धे दुःखं यथा हि सुतपुत्रिणी ।	बाँझ को वह दुःख नहीं होता जो सुतपुत्रा नारी को।
न हि सत्त्वावसादेन स्वल्पाप्यापद् निस्तीर्यते । (कथा०)	उत्साह के त्याग से तो साधारण आपत्ति पर भी विजय नहीं मिलता।
न हि सर्वविदः सर्वे ।	सब लोग सब कुछ नहीं जानते।
न हि सिंहो गजास्कन्दी भयाद् गिरिगुहाशयः । (रघु०)	हाथियों पर आक्रमण करनेवाला सिंह डर के कारण पर्वत-गुहा में नहीं रहता।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।	सोते हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं नहीं आ घुसते।
नातिपीडयितुं भग्नानिच्छन्ति हि महौजसः । (किरात०)	ओजस्वी जन पराजितों को अत्यधिक पीड़ा नहीं देना चाहते।
नाधर्मश्चिरमृद्धये । (कथा०)	अधर्म चिरकाल तक धन नहीं देता।

नानृतात्पातकं परम्।	झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं।
नारीणां भूषणं पतिः।	पति स्त्रियों का भूषण है।
नार्कतपैर्जलमेति हिमैस्तु दाहम्। (नैषध०)	कमल धूप से नहीं, पाले से झुलसता है।
नाल्पीयान् बहु सुकृतं हिनस्ति दोषः। (किरात०)	थोड़े से दोष से बहुत से पुण्यों का नाश नहीं होता।
नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत्।	दूसरे स्थान को देखे बिना पहले को न छोड़े।
नास्ति कामसमो व्याधिः।	काम के समान कोई रोग नहीं।
नास्ति क्रोधसमो वह्निः।	क्रोध के समान कोई तेज नहीं।
नास्ति चक्षुःसमं तेजः।	नेत्र के समान कोई आग नहीं।
नास्ति आत्मसमं बलम्।	आत्मा के तुल्य कोई बल नहीं।
नास्ति प्राणसमं भयम्।	प्राणभय के तुल्य कोई भय नहीं।
नास्ति बन्धुसमं बलम्।	बन्धु के तुल्य कोई दल नहीं।
नास्ति मेघसमं तोयम्।	मेघ के समान कोई जल नहीं।
नास्ति मोहसमो रिपुः।	मोह के समान कोई शत्रु नहीं।
नास्त्यदेयं महात्मनाम्।	ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसे महात्मा लोग न दे सकें।
नास्त्यहो स्वामिभक्तानां पुत्रे वा प्राणे वा स्पृहा। (कथा०)	अहो! स्वामिभक्तों को न पुत्र का मोह होता है न प्राणों का।
निःसारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान्।	प्रायः निकम्मी वस्तु का आडम्बर बहुत होता है।
निजेऽप्यपत्ये करुणा कठिनप्रकृतेः कुतः? (प्रसन्नराघवे)	कठोर स्वभाववाले व्यक्ति को अपनी सन्तति पर भी दया नहीं आती।
निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते।	वृक्षहीन देश में एरण्ड भी वृक्ष माना जाता है।
निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिकाः।	वेश्याएँ निर्धन पुरुष को छोड़ देती हैं।
निर्धनता सर्वापदामास्पदम्।	दरिद्रता सब दुःखों का कारण है।
निर्धनस्य कुतः सुखम्?	निर्धन को सुख कहाँ?
निर्वाणदीपे किमु तैलदानम्?	दीपक बुझ जाने पर तेल डालने से क्या?
निवसन्ति पराक्रमाश्रया न विषादेन समं समृद्धयः। (किरात०)	समृद्धियाँ पराक्रम के आश्रय पर रहती हैं, विषाद के साथ नहीं।
निवसन्नन्तर्दारुणि लंघ्यो वह्निर्न तु ज्वलितः।	लकड़ी के अन्दर विद्यमान अग्नि पर से कूदा जा सकता है, जलती पर से नहीं।
निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम्।	राग-रहित के लिए घर ही तपोवन है।
निष्प्रज्ञास्त्ववसीदन्ति लोकोपहसिताः सदा। (कथा०)	बुद्धिहीन व्यक्ति दुःख उठाते हैं तथा लोगों के उपहासास्पद बनते हैं।
निसर्गसिद्धो हि नारीणां सपत्नीषु हि मत्सरः। (कथा०)	स्त्रियों की सौतों के प्रति ईर्ष्या स्वाभाविक है।
निःस्पृहस्य तृणं जगत्।	कामनारहित के लिये जगत् तृणतुल्य है।
नीचाश्रयो हि महतामपमानहेतुः।	नीच का आश्रय लेना बड़े लोगों के लिये अपमानजनक होता है।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। (मेघ०)	पहिये के हाल के समान मनुष्य की अवस्था ऊँची-नीची होती रहती है।
नीचैरनीचैरतिनीचनीचैः सर्वैरुपायैः फलमेव साध्यम्।	नीचे, ऊँचे और अत्यन्त नीचे, सभी उपायों से अभीष्ट सिद्धि करनी चाहिए।

नीचो वदति, न कुरुते, वदति न साधु करोत्येव।	नीच मनुष्य कहता है, करता नहीं। सज्जन कहता नहीं, कर देता है।
नैकत्र सर्वो गुणसन्निपातः।	सभी गुण एकत्र नहीं रहते।
न्याय्यां वृत्तिं समाचरेत्।	जीविकोपार्जन न्याय के अनुसार करना चाहिए।
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।	धीर लोग न्याय के मार्ग से तनिक भी विचलित नहीं होते।
पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि। (कथा०)	आकाश में फेंका हुआ कीचड़ फेंकनेवाले के सिर पर ही पड़ता है।
पञ्चभिर्मिलितैः किं यज्जगतीह न साध्यते। (नैषध०)	संसार में ऐसा कौन-सा काम है जिसे पाँच मनुष्य मिलकर नहीं कर सकते?
पठतो नास्ति मूर्खत्वम्।	अध्ययनशील मनुष्य मूर्ख नहीं रहता।
पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते।	गुण सर्वत्र अपना स्थान बना लेते हैं।
पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं, न पुनः पतत्रिणः। (कुमार०)	शिरीष का फूल भ्रमर के कोमल चरण को तो सह लेता है, पक्षी के चरण को नहीं।
पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम्।	कमल-पत्र पर पड़ा हुआ जल मोती की शोभा धारण कर लेता है।
पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्।	साँपों को दूध पिलाने से उनका विष ही बढ़ता है।
पयोगते किं खलु सेतुबंधः?	बाढ़ के उतर जाने पर बाँध बाँधने से क्या लाभ?
परदुःखेनापि दुःखिता विरलाः।	दूसरों के दुःख से दुःखित होनेवाले लोग थोड़े ही हैं।
परबुद्धिर्विनाशाय।	दूसरों के मतानुसार आचरण विनाशकारी होता है।
परभुक्ते हि कमले किमलेर्जायते रतिः? (कथा०)	क्या भँवरा दूसरे से भुक्त कमल से प्रेम करता है?
परमं लाभमरातिभङ्गमाहुः। (किरात०)	शत्रु का नाश सब से बड़ा लाभ कहा जाता है।
परलोकगतस्य को बन्धुः?	दिवंगत व्यक्ति का बन्धु कौन है?
परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम्। (शिशु०)	मानी मनुष्यों का मन दूसरों की उन्नति से ईर्ष्या करता है।
परसदननिविष्टः को लघुत्वं न याति?	दूसरे के घर जाने से किसका गौरव क्षीण नहीं होता?
परहितनिरतानामादरो नात्मकार्ये।	परोपकारपरायण लोग अपने कार्यों की परवाह नहीं करते।
परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः।	बुद्धियाँ वही हैं जो दूसरों के संकेत समझ जाती हैं।
परोपकारजं पुण्यं न स्यात्क्रतुशतैरपि।	परोपकार जन्य पुण्य सैकड़ों यज्ञों के पुण्य से श्रेष्ठ है।
परोपकाराय सतां विभूतयः।	सज्जनों की सम्पत्तियाँ परोपकार के लिए होती हैं।
परोपकारार्थमिदं शरीरम्।	यह शरीर परोपकार के लिए है।
परोपदेशवेलायां शिष्टाः सर्वे भवन्ति वै।	दूसरों को उपदेश देते समय तो सब सभ्य बन जाते हैं।
परोऽपि हितवान् बन्धुः।	हितकारक बेगाना भी बन्धु ही है।
पर्वतानां भयं वज्रात्।	पर्वतों को वज्र से भय होता है।

पाणौ पयसा दग्धे तक्रं फूत्कृत्य पामरः पिबति।	दूध का जला छाछ को फूँक फूँक कर पीता है।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति।	मनुष्य योग्य होने पर धन प्राप्त करता है।
पापप्रभावान्नरकं प्रयाति।	पाप के प्रभाव से नरक को जाता है।
पितृदोषेण मूर्खता।	मूर्खता पिता के दोष से होती है।
पिपासितैः काव्यरसो न पीयते।	प्यासे काव्यरस नहीं पिया करते।
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिराम् उन्मत्तभूतं जगत्।	मोहमयी प्रमाद मदिरा पीकर जगत् उन्मत्त हो गया है।
पुण्यवन्तो हि सन्तानं पश्यन्त्युच्चैः कृतान्वयम्। (कथा०)	वंश को ऊँचा करनेवाली सन्तान पुण्यवानों के घर ही होती है।
पुत्रः शत्रुरपण्डितः।	मूर्ख पुत्र शत्रु है।
पुत्रप्रयोजना दाराः।	पत्नी पुत्र को जन्म देने के लिए ही होती है।
पुत्रहीनं गृहं शून्यम्।	पुत्रहीन घर सूना है।
पुत्रादपि भयं यत्र तत्र सौख्यं हि कीदृशम्?	जहाँ पुत्र से भी भय हो वहाँ सुख कैसा?
पुनर्दरिद्री पुनरेव पापी।	फिर दरिद्री, फिर पापी।
पुनर्धनाढ्यः पुनरेव भोगी।	फिर धनी, फिर भोगी।
पुरुषा अपि बाणा अपि गुणच्युताः कस्य न भयाय?	पुरुष भी और बाण भी गुण (गुण, धनुष की डोरी) से रहित हो जाने पर किसके लिए भयकर नहीं होते?
पूज्यं वाक्यं समृद्धस्य।	धनाढ्य का वाक्य पूज्य होता है।
पूर्वपुण्यतया विद्या।	विद्या पिछले पुण्यों से मिलती है।
प्रच्छन्नमप्यूह्यते हि चेष्टा। (किरात०)	चेष्टा गुप्त बात को भी व्यक्त कर देती है।
प्रजानामपि दीनानां राजैव सदयः पिता।	राजा दीन प्रजाओं का दयालु पिता है।
प्रज्ञाबलं च सर्वेषु मुख्यं कार्येषु साधनम्। (कथा०)	सब कार्यों में बुद्धिबल सबसे बड़ा साधन है।
प्रणामान्तः सतां कोपः।	सज्जनों का क्रोध प्रणाम से समाप्त हो जाता है।
प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः। (रघुवंश०)	पूज्यों की पूजा में उलट फेर कल्याणों का बाधक होता है।
प्राणव्ययाय शूराणां जायते हि रणोत्सवः। (कथा०)	युद्ध का मेला शूरवीरों के प्राणधन के व्ययार्थ होता है।
प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः परा प्रिया। (कथा०)	प्राणियों को अपनी निकृष्ट जन्मभूमि भी अत्यन्त प्यारी लगती है।
प्राणेभ्योऽप्यर्थमात्रा हि कृपणस्य गरीयसी। (कथा०)	कंजूस को थोड़ा-सा भी धन प्राणों से अधिक प्यारा लगता है।
प्राणैरपि हि भृत्यानां स्वामिसंरक्षणं व्रतम्। (कथा०)	प्राण देकर भी स्वामी की रक्षा करना सेवकों का व्रत है।
प्राप्नोतीष्टमविक्लवः। (कथा०)	धीर अभीष्ट को पा लेता है।
प्राप्यते किं यशः शुभ्रमनङ्गीकृत्य साहसम्? (कथा०)	जान जोखिम में डाले बिना कहीं शुभ्र यश प्राप्त हो सकता है?
प्रायः श्वश्रूस्नुषयोर्न दृश्यते सौहृदं लोके।	संसार में प्रायः सास-बहू में सौहार्द नहीं देखा जाता।

प्रायः समानविद्याः परस्परयशःपुरोभागाः।

प्रायः समासन्नविपत्तिकाले
धियोऽपि पुंसां मलिनीभवन्ति।

प्रायः स्त्रियो भवन्तीह निसर्गचपलाः शठाः। (कथा०)

प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात्प्रतिपद्यते हि जनः।

प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः।
(कुमारसम्भवे)

प्रायेण भार्यादौःशील्यं स्नेहान्धो नेक्षते जनः। (कथा०)

प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लताश्च
यः पार्श्वतो भवति तं परिवेष्टयन्ति।

प्रायेण साधुवृत्तानामस्थायिन्यो विपत्तयः।

प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां
पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः। (कुमार०)

प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते।

प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः।

प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति।

प्रासादशिखरस्थोऽपि काकः किं गरुडायते?

प्रियबन्धुविनाशोऽयं शोकाग्निः कं न तापयेत्? (कथा०)

प्रियमांसमृगाधिपोज्झितः किमवद्यः करिकुम्भजो मणिः? (शिशु०)

प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति।

फलं भाग्यानुसारतः।

बद्धाश्रितानुरोधेन किं न कुर्वन्ति साधवः?
(कथा०)

बधिरस्य गानम्।

बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान्।

बन्धुः को नाम दुष्टानाम्!

बन्धुरप्यहितः परः।

बरं मूर्खस्य मौनित्वम्।

बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।

बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा।

बहुरत्ना वसुन्धरा।

बहुवचनमल्पसारं यः कथयति विप्रलापी सः ।	जो अल्प सार को बहुत शब्दों में कहता है वही विप्रलापी है ।
बहुविघ्नास्तु सदा कल्याणसिद्धयः । (कथा०)	कल्याणों की सिद्धि में सदा अनेक विघ्न पड़ते हैं ।
बह्वाश्चर्या हि मेदिनी ।	पृथ्वी आश्चर्यों से पूर्ण है ।
बालानां रोदनं बलम् ।	रोना ही बच्चों का बल है ।
बुद्धयः कुपथगामिन्यो भवन्ति महतामपि ।	बड़ों की बुद्धि भी कुमार्गगामिनी हो जाती है ।
बुद्धिः कर्मानुसारिणी ।	बुद्धि कर्मों के अनुसार होती है ।
बुद्धिरेव सर्वत्र मुख्यं मित्रं न पौरुषम् । (कथा०)	सब स्थानों पर बुद्धि ही मुख्य मित्र है, पुरुषार्थ नहीं ।
बुद्धेः फलमनाग्रहः ।	हठ का न होना ही बुद्धि का फल है ।
बुभुक्षितः किं न करोति पापम् ?	भूखा मनुष्य कौन सा पाप नहीं करता ?
बुभुक्षितेन न प्रतिभाति किंचित् ।	भूखे को कुछ नहीं सूझता ।
बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते ।	भूखे लोग व्याकरण नहीं खाया करते ।
ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् । (नैषध०)	श्रेष्ठ लोग अपनी उपयोगिता वाणी से नहीं, फल से कहते हैं ।
भक्त्या हि तुष्यन्ति महानुभावाः ।	महानुभाव लोग भक्ति (श्रद्धा) से ही प्रसन्न होते हैं ।
भद्रं प्राप्नुयाद्भद्रमभद्रं चाप्यभद्रकृत् । (कथा०)	भले का भला और बुरे का बुरा होता है ।
भये सीमा मृत्युः ।	सबसे बड़ा भय मृत्यु है ।
भर्तृमार्गानुसरणं स्त्रीणां च परमं व्रतम् ।	पति निर्दिष्ट मार्ग पर चलना स्त्रियों का परम व्रत है ।
भवन्ति क्लेशबहुला सर्वस्यापीह सिद्धयः । (कथा०)	संसार में सबके कार्य अनेक कष्ट उठाने पर ही सिद्ध होते हैं ।
भवत्युदयकाले हि सत्कल्याणपरम्परा । (कथा०)	जब अच्छे दिन आते हैं तब सभी काम शुभ होते जाते हैं ।
भवितव्यता बलवती । (अभिज्ञान०)	होनहार बलवती है ।
भवितव्यं भवत्येव कर्मणामीदृशी गतिः ।	कर्मों की गति ऐसी है कि होनी होकर ही रहती है ।
भवेद्यस्य यत्कर्म स तत्कुर्वन् विनश्यति । (कथा०)	१ जिसका काम उसी को साजे, और करे तो डण्डा बाजे ।
	२ जो काम जिसका न हो, उसे करने पर मनुष्य नष्ट हो जाता है ।
भस्मीभूतस्य भूतस्य पुनरागमनं कुतः ? (नैषध०)	भस्मीभूत प्राणी लौटकर कैसे आ सकता है ?
भाग्येनैव हि लभ्यते पुनरसौ सर्वोत्तमः सेवकः ।	सर्वोत्तम सेवक भाग्य से ही प्राप्त होता है ।
भार्यासमं नास्ति शरीरतोषणम् ।	पत्नी के समान शारीरिक सुख देनेवाला कोई नहीं ।
भिक्षुको भिक्षुकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते ।	भिखारी, भिखारी को देखकर कुत्ते के समान गुर्राता है ।
भिन्नरुचिर्हि लोकः ।	लोगों की रुचि भिन्न भिन्न है ।

भीता इव हि धीराणां दूरे यान्ति विपत्तयः ।
(कथा०)
भूयोऽपि सिक्तः पयसा घृतेन
न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ।
भोगो भूषयते धनम् ।
भ्रष्टस्य का वा गतिः ?
मतिरेव बलाद् गरीयसी ।
मदमूढबुद्धिषु विवेकिता कुतः ? (शिशु०)
मद्यपस्य कुतः सत्यम् ? (कथा०)
मधुरविधुरमिश्राः सृष्टयो हा विधातुः ।
(प्रसन्नराघवे)
मनःपूतं समाचरेत् ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।
मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।

मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च
सुखम् ।
मनोरथानामगतिर्न विद्यते । (कुमार०)
मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम् ।
मर्दनं गुणवर्धनम् ।
मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम् ।
महाजनो येन गतः स पन्थाः ।

महान् महत्येव करोति विक्रमम् ।
महीपतीनां विनयो हि भूषणम् ।
मातर्लक्ष्मि, तव प्रसादवशतो दोषा अपि
स्युर्गुणाः ।
माता शत्रुः पिता वैरी ।
मातापितृभ्यां शप्तः सन् न जातु सुखम्
श्नुते । (कथा०)
मातृजङ्घा हि वत्सस्य स्तम्भीभवति बन्धने ।

मात्रा समं नास्ति शरीरपोषणम् ।
माने म्लाने कुतः सुखम् ?
मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता ।

मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ।
मूर्खस्य किं शास्त्रकथाप्रसङ्गैः ?
मूर्खस्य हृदयं शून्यम् ।
मूर्खाणां बोधको रिपुः ।
मूर्खैर्हि सङ्गः कस्यास्ति शर्मणे ? (कथा०)

मूल्य : सर्वत्र तुल्यता ।	मौन के सामने सब समान हैं ।
मेघो गिरिजलधिवर्षी च ।	मेघ पर्वत और सागर दोनों स्थानों पर बरसता है ।
मोहान्धमविवेकं हि श्रीश्चिराय न सेवते । (कथा०)	मोहग्रस्त और विवेकहीन के पास लक्ष्मी अधिक नहीं ठहरती ।
मौनं विधेयं सततं सुधीभिः ।	बुद्धिमानों को निरन्तर चुप रहना चाहिए ।
मौनं सर्वार्थसाधकम् ।	मौन से सब काम सिद्ध होते हैं ।
मौनिनः कलहो नास्ति ।	मौनी का किसी से कलह नहीं होता ।
यतः सत्यं ततो धर्मः ।	जहाँ सत्य है वहाँ धर्म है ।
यतो धर्मस्ततो धनम् ।	जहाँ धर्म है वहाँ धन है ।
यतो रूपं ततः शीलम् ।	जहाँ रूप है वहाँ शील है ।
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ?	यदि यत्न करने पर भी सिद्धि न हो तो इसमें यत्नकर्ता का क्या दोष ?
यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि ।	जहाँ विद्वान् नहीं होता वहाँ अल्पबुद्धि भी श्लाघ्य होता है ।
यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति ।	जहाँ रूप वहाँ गुण भी है ।
यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र ।	जहाँ लक्ष्मी होती है वहाँ नम्रता नहीं ।
यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया ।	जैसा मन वैसी वाणी, जैसी वाणी वैसी क्रिया ।
यथा देशस्तथा भाषा ।	जैसा देश वैसी भाषा ।
यथा बीजं तथाङ्कुरः ।	जैसा बीज वैसा अङ्कुर ।
यथा भूमिस्तथा तोयम् ।	जैसी भूमि वैसा जल ।
यथा राजा तथा प्रजा ।	जैसा राजा वैसी प्रजा ।
यथा वृक्षस्तथा फलम् ।	जैसा वृक्ष वैसा फल ।
यथाशक्त्यतिथेः पूजा धर्मो हि गृहमेधिनाम् । (कथा०)	अतिथि की यथाशक्ति सेवा करना गृहस्थों का धर्म है ।
यदौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम् ।	जैसे स्वादिष्ट और गुणकारी दवा दुर्लभ है ।
यदि वात्यन्तमृदुता न कस्य परिभूतये ? (कथा०)	अत्यधिक कोमलता से किसका निरादर नहीं होता ?
यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् ।	जो जिसे अच्छा लगता है, वही उसके लिये सुन्दर होता है ।
यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः ?	विधाता ने भाग्य में जो लिख दिया है, उसे कौन मिटा सकता है ?
यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नो करणीयं नाचरणीयम् ।	लोकविरुद्ध शुद्ध बात भी न करनी चाहिये ।
यद्वा तद्वा भविष्यति ।	कुछ न कुछ तो होगा ही ।
यशः पुण्यैरवाप्यते ।	यश पुण्यों से ही मिलता है ।
यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः । (रघु०)	यशस्वियों को शत्रु से यश की रक्षा करनी चाहिए ।
यः क्रियावान् स पण्डितः ।	जिसके कर्म अच्छे, वही पण्डित है ।
याचनान्तं हि गौरवम् ।	याचना गौरव को समाप्त कर देती है ।
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा । (मेघ०)	नीच से याचना के सफल होने की अपेक्षा गुणी से उसका विफल होना अच्छा ।

यादृशो य कृतो धात्रा भवेत्तादृश एव स । (कथा०)	विधाता ने जिसे जैसा बना दिया वह वैसा ही होता है।
यादृशास्तन्तव काम तादृशो जायते पट । (कथा०)	जैसे तार होते हैं वैसा कपड़ा बनता है।
यानरत्नं हि तुरग ।	वाहनों में घोड़ा रत्न है।
यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोऽपि सहायताम्। (अनर्घराघवे)	न्यायानुसार चलनेवाले की सहायता पशु पक्षी भी करते हैं।
या यस्य प्रकृति स्वभावजनिता कनापि न त्यज्यते।	जो जिसका सहज स्वभाव है वह छोड़ा नहीं जा सकता।
युक्तियुक्त प्रगृह्णीयाद् बालादपि विचक्षण ।	बुद्धिमान् को बच्चे की भी युक्तियुक्त बात मान लेनी चाहिए।
युद्धस्य वार्ता रम्या स्यात्।	युद्ध के समाचार रोचक होते हैं।
ये तु घ्नन्ति निरर्थक परहित ते के न जानीमहे।	जो दूसरों के कार्यों को व्यर्थ ही नष्ट करते हैं वे किस कोटि के होते हैं हम नहीं जानते।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध पुरुषो भवेत्।	मनुष्य को किसी भी उपाय से प्रसिद्धि प्राप्त करनी चाहिए।
यो यद् वपति बीज हि लभते सोऽपि तत्फलम्। (कथा०)	जैसा बोएगा वैसा काटेगा।
रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि।	पूर्व पुण्य मनुष्य की रक्षा करते हैं।
रत्नदीपस्य हि शिखा वात्ययापि न नश्यति।	रत्नों के दीये को लौ आँधी में भी नहीं बुझती।
रत्नव्ययेन पाषाण को हि रक्षितुमर्हति। (कथा०)	कौन इतना समर्थ है जो पत्थर के रक्षार्थ रत्न व्यय करे।
वनेऽपि दोषा प्रभवन्ति रागिणाम्।	वन में भी दोष रागयुक्तों को दबा लेते हैं।
वर हि मानिनो मृत्यु, न दैन्य स्वजनाग्रत । (कथा०)	प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु अच्छी किन्तु सम्बन्धियों के सामने दीनता बुरी।
वर क्लैब्यं पुंसा न च परकलत्राभिगमनम्।	पुरुषों का नपुंसक होना अच्छा, परस्त्री गमन बुरा।
वर भिक्षाशित्व न च परधनास्वादनसुखम्।	भीख माँग कर खाना अच्छा परन्तु धन में भोग का सुख बुरा।
वर मौनं कार्यं न च वचनमुक्तं यदनृतम्।	झूठ बोलने की अपेक्षा चुप रहना अच्छा
वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणा ।	बुद्धिमान् वर्तमान काल के अनुसार व्यवहार करते हैं।
वस्त्रपूत पिबेज्जलम्।	वस्त्र से छानकर ही जल पीना चाहिए
वस्त्राणामातरो नरा।	पुरुष वस्त्रों का भूखा है।
वामे विधौ न हि फलन्त्यभिवाञ्छितानि।	भाग्य विपरीत हो तो अभीष्ट सिद्ध नहीं होते।
वास प्रधान खलु योग्यताया।	योग्यता से भी परिधान प्रधान होता है।
वासोविहीन विजहाति लक्ष्मी ।	वस्त्रविहीन को लक्ष्मी छोड़ जाती है।
विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीरा। (कुमार०)	विकारक वस्तुओं की विद्यमानता में भी जिन के चित्त विकृत नहीं होते वे ही धीर हैं।
विक्रीते करिणि किमङ्कुशे विवाद ?	हाथी के बेच देने पर अंकुश के बारे में विवाद कैसा?
विचित्ररूपा खलु चित्तवृत्तय । (किरात०)	चित्त की वृत्तियां के रूप विचित्र होते हैं।

विदेशे बन्धुलाभो हि मरावस्थलनिर्झरः। (कथा०)	विदेश में बन्धु मिलना मरुभूमि में अद्भुत सोते के समान है।
विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा।	विद्या के लिये व्याकुल व्यक्तियों को न सुख रुचता है न नींद।
विद्या ददाति विनयम्।	विद्या से नम्रता आती है।
विद्या मित्रं प्रवासेषु।	विदेश में विद्या मित्र है।
विद्यारत्नं सरसकविता।	सरस कविता करना ही उत्तम विद्या है।
विद्या रूपं कुरूपाणाम्।	कुरूप लोगों का रूप विद्या है।
विद्यासमं नास्ति शरीरभूषणम्।	विद्या के समान शरीर का कोई भूषण नहीं।
विद्या सर्वस्य भूषणम्।	विद्या सबका भूषण है।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वम्।	कुलीन विद्वान् अभिमान नहीं करता।
विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।	विद्वान् की सब जगह पूजा होती है।
विनयाद् याति पात्रताम्।	विनय से मनुष्य योग्य बनता है।
विनयो हि मनीषिधनम्। (कथा०)	विनय ही मनीषियों का धन है।
विना मलयमन्यत्र चन्दनं न प्ररोहति।	चन्दन मलय पर्वत के सिवा कहीं नहीं उगता।
विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।	विनाश के समय बुद्धि फिर जाती है।
विना किं गुरूपदेशेन सम्पूर्णाः सिद्धयः कुतः? (कथा०)	गुरु के उपदेश के बिना सम्पूर्ण सिद्धियाँ कहाँ?
विप्रियमप्याकर्ण्य ब्रूते प्रियमेव सर्वदा सुजनः।	कटु वचन भी सुनकर सज्जन सदा प्रिय बात ही कहते हैं।
विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।	मौन मूर्खों का भूषण है।
विमलं कलुषीभवच्च चेतः कथयत्येव हितैषिणं रिपुं वा। (किरात०)	१ दिल दिल का साक्षी है। २ निर्मल या मलिन होता हुआ मन हितैषी या शत्रु को बता देता है।
विरक्तस्य तृणं भार्या।	विरक्त को स्त्री तृण के समान लगती है।
विलासिनी हि सर्वस्य सन्ध्येव क्षणरागिणी। (कथा०)	सन्ध्या के समान सब के साथ वेश्या का राग (प्रेम लगाव) क्षणस्थायी होता है।
वि[illegible] अनुतापं [illegible]यति। (अभिज्ञा०)	अकथित [illegible] बात पश्चात्ताप उत्पन्न करती है।
विश्वासः कुटिलेषु कः? (कथा०)	कपटियों पर क्या विश्वास?
विषं गोष्ठी दरिद्रस्य।	निर्धन की बातचीत विष है।
विषयाक्रम्यमाणा हि तिष्ठन्ति सुपथे कथम्? (कथा०)	विषयासक्त लोग सुमार्ग पर कैसे रह सकते हैं?
विषमेऽपि कस्यापदोऽस्तं गताः?	किन विरले व्यक्ति की आपत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं?
विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्। (कुमार०)	अपने पाले पोसे हुए विषवृक्ष को भी उखाड़ना उचित नहीं।
वीरो हि स्वामित्वमर्हति। (कथा०)	वीर ही स्वामी बनने के योग्य होता है।
वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः।	फलहीन वृक्ष को पक्षी छोड़ जाते हैं।
वृथा दीपो दिवापि च।	दिन में दीपक व्यर्थ है।
वृथा वृष्टिः समुद्रेषु।	समुद्रों में वर्षा व्यर्थ है।
वृद्धस्य तरुणी विषम्।	बूढ़े के लिए युवती विष है।

वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।	जो धर्म की बात नहीं कहते, वे वृद्ध नहीं ।
वृद्धा नारी पतिव्रता ।	वृद्धा स्त्री पतिव्रता होती है ।
वेदाज्ज्ञानन्ति पण्डिताः ।	बुद्धिमान् लोग वेद से ज्ञान पाते हैं ।
वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा ।	वेश्या के समान राजनीति भी अनेक रूप धारण करती है ।
व्याघ्रस्य चोपवासस्य पारणं पशुमारणम् ।	भेड़िए के उपवास की पारणा पशु वध होती है ।
व्याधितस्यौषधं मित्रम् ।	औषध रोग का मित्र है ।
व्रताभिरक्षा हि सतामलङ्क्रिया । (किरात०)	व्रत का पालन सज्जनों का भूषण है ।
शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि ।	शत्रु के भी गुणों का और गुरु के भी दोषों का कथन करना चाहिए ।
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् । (कुमार०)	धर्म का प्रथम साधन शरीर ही है ।
शाम्येत् प्रत्युपकारेण नोपकारेण दुर्जनः । (कुमार०)	दुष्ट जन उपकार से नहीं, अपकार से ही शान्त होता है ।
शास्त्राद् रूढिर्बलीयसी ।	शास्त्रों से रीति बलवती है ।
शीलं परं भूषणम् ।	शील सर्वोत्तम भूषण है ।
शीलं भूषयते कुलम् ।	शील कुल को अलङ्कृत करता है ।
शीलं हि विदुषां धनम् । (कथा०)	शील ही विद्वानों का धन है ।
शुभकृन्न हि सीदति । (कथा०)	शुभ कार्य करने वाला दुःखी नहीं होता ।
शुभस्य शीघ्रम् ।	भला काम शीघ्र ही कर देना चाहिए ।
शुष्केन्धने वह्निरुपैति वृद्धिम् ।	सूखे ईंधन में आग तुरन्त फैल जाती है ।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ।	वीर, कृतज्ञ और दृढ मित्र के पास रहने के लिए लक्ष्मी स्वयं जाती है ।
शूरस्य मरणं तृणम् ।	वीर के लिए मृत्यु तृणवत् है ।
शोभन्ते विद्यया विप्राः ।	ब्राह्मण विद्या से सुशोभित होते हैं ।
श्यालको गृहनाशाय ।	साला घर का नाश कर देता है ।
श्रद्धया न विना दानम् ।	श्रद्धा रहित दान दान नहीं ।
श्रेयसि केन तृप्यते ? (शिशु०)	मङ्गल से कौन तृप्त होता है ?
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रम् ।	शास्त्र कान का भूषण है ।
संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ।	दोष और गुण संगति से होते हैं ।
सकलं शीलेन कुर्याद्वशम् ।	शील से सब को वशीभूत करना चाहिए ।
सकलगुणभूषा च विनयः ।	नम्रता सब गुणों का भूषण है ।
सकलगुणसीमा वितरणम् ।	दान सब गुणों की सीमा है ।
सकलसुखसीमा सुवदना ।	सुमुखी सर्व सुखों की सीमा है ।
स क्षत्रियस्त्राणसहः सतां यः ।	सज्जनों की रक्षा में समर्थ व्यक्ति क्षत्रिय है ।
सङ्कटे हि परीक्ष्यन्ते प्राज्ञाः शूराश्च सङ्गरे । (कथा०)	बुद्धिमानों की परीक्षा सङ्कट में और शूरों की परीक्षा संग्राम में होती है ।
सतां महत्सु सुप्रथयति पौरुषम् । (नैषध०)	सज्जनों का पौरुष बड़ों पर ही प्रकट होता है ।
सतां हि सङ्गः सकलं प्रसूते ।	सत्संगति से सब कुछ प्राप्त होता है ।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः । (अभिज्ञान०)	सन्दिग्ध विषयों में सत्पुरुषों का अन्तःकरण ही प्रमाण होता है ।
स [illegible] निरवधिर्विवेकः सज्जनानां विवेकः ।	सज्जनों के विवेक की सीमा नहीं होती ।
सत्त्वाधीना हि सिद्धयः । (कथा०)	सफलताएँ उत्साह के अधीन हैं ।

सत्पुत्र एव कुलसद्मनि कोऽपि दीपः ।	अच्छा पुत्र ही वंश का विलक्षण दीपक है ।
सत्यपूतां वदेद् वाणीम् ।	सत्य से शोधित वाणी बोलनी चाहिए ।
सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।	सत्य कण्ठ का भूषण है ।
सत्यं न तद् यच्छलमभ्युपैति ।	वह सत्य नहीं जो छल का आश्रय लेता है ।
सत्यमेव जयते ।	सत्य की ही विजय होती है ।
सत्येन धार्यते पृथ्वी ।	पृथ्वी को सत्य ही धारण किये हुए है ।
सदसद्वा न हि विदुः कुस्त्रीवचनमोहिताः । (कथा०)	बुरी नारियों के वचन से मोहित लोग अच्छाई या बुराई नहीं समझते ।
सदो भूषा सूक्तिः ।	सुभाषित सभा का भूषण है ।
सद्भिः कुर्वीत संगतिम् ।	सज्जनों का संग करना चाहिए ।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च ।	झगड़ा और मैत्री सज्जनों से ही करनी चाहिए ।
सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलालिखितमक्षरम् ।	सज्जनों की स्वाभाविक बात भी पत्थर की लकीर होती है ।
स धार्मिको यः परमर्म न स्पृशेत् ।	धार्मिक वही है जो दूसरे का जी नहीं दुखाता ।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते ।	सज्जन परीक्षा के अनन्तर ही कोई बात स्वीकार करते हैं ।
संततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे । (रघु०)	शुद्ध वंश की सन्तान लोक परलोक में सुख दायक होती है ।
संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ।	सन्तोष ही मनुष्य का सर्वोत्तम कोष है ।
संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ।	सन्तोष के समान धन नहीं ।
संधिं कृत्वा तु हन्तव्यः संप्राप्तेऽवसरे पुनः । (कथा०)	सन्धि करके भी अवसर प्राप्त होने पर शत्रु को मार देना चाहिए ।
सभारत्नं विद्वान् ।	विद्वान् सभा का रत्न है ।
समये हि सर्वमुपकारि कृतम् । (शिशु०)	समय पर किया हुआ सब कुछ उपकारक होता है ।
समानशीलव्यसनेषु सख्यम् ।	समान शील तथा व्यसन वालों में मैत्री होती है ।
सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् ।	भरा हुआ घड़ा शब्द नहीं करता ।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते । (भगवद्गीता)	सम्मानित मनुष्य के लिए अपयश मृत्यु से भी बुरा होता है ।
सरित्पतिर्न हि समुपैति रिक्तताम् । (शिशु०)	समुद्र कभी खाली नहीं होता ।
सरित्पूरप्रपूर्णोऽपि क्षारो न मधुरायते ।	नदियों के जलसमूह से भर जाने पर भी समुद्र मीठा नहीं होता ।
सर्वः कालवशेन नश्यति ।	समय पाकर सब नष्ट होते हैं ।
सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम् ।	विपत्ति पड़ने पर भी सब लोग अपनी योग्यतानुसार फल चाहते हैं ।
सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति । (अभिज्ञान०)	सबको अपनी वस्तु सुन्दर दिखाई देती है ।
सर्वः प्रियः खलु भवत्यनुरूपचेष्टः । (शिशु०)	अनुकूल चेष्टाओंवाले सब व्यक्ति प्यारे लगते हैं ।
सर्वं कार्यवशाज्जनोऽभिरमते तत्कस्य को वल्लभः ?	लोग सभी को कार्यवश प्यारे लगते हैं, वैसे कौन किसका प्रिय है ।
सर्वं जीवन्निराप्यते (कथा०)	जीवित मनुष्य सब कुछ पा लेते हैं ।
सर्वं रत्नमुपद्रवेण सहितं निर्दोषमेकं यशः ।	सब रत्नों में कोई न कोई दोष होता है, निर्दोष तो केवल यश है ।

सर्वं शून्यं दरिद्रस्य ।	दरिद्र के लिए सब कुछ सूना है ।
सर्वं सावधि नावधि कुलभुवां प्रेम्णः परं केवलम् ।	सबकी सीमा है परन्तु कुलीन नारियों के प्रेम की सीमा नहीं ।
सर्वनाशाय मातुलः ।	मामा सर्वनाश कर देता है ।
सर्वलोकप्रतिष्ठायां यतन्ते बहवो जनाः ।	बहुत से व्यक्ति लोगों में प्रतिष्ठा पाने के लिए उद्योग करते हैं ।
सर्वाङ्गे दुर्जनो विषम् ।	दुष्टजन के सभी अङ्गों में विष रहता है ।
सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमूलाः ।	सभी उद्योग दुसेरी भर धान के लिए हैं ।
सर्वास्ववस्थासु रमणीयत्वमाकृतिविशेषाणाम् । (अभिज्ञा०)	सुंदर व्यक्ति सभी दशाओं में सुंदर लगते हैं ।
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ।	सभी गुण धन पर आश्रित रहते हैं ।
सलज्जा गणिका नष्टा ।	लज्जाशील वेश्या नष्ट हो जाती है ।
स सुहृद्व्यसने यः स्यात् ।	जो विपत्ति में सहायक है, वही मित्र है ।
सहते विपत्सहस्रं मानी नैवापमानलेशमपि ।	मानी मनुष्य सहस्रों कष्ट सह लेता है, परन्तु तनिक सा भी अपमान नहीं ।
सहसा विदधीत न क्रियाम् अविवेकः परमापदां पदम् ।	कोई भी कार्य एकाएक न करना चाहिए, अविवेक भारी आपत्तियों का कारण है ।
सहस्रेषु च पण्डितः ।	सहस्रों में कोई एक विद्वान् होता है ।
सागरं वर्जयित्वा कुत्र महानद्यवतरति ? (अभिज्ञा०)	बड़ी नदी सागर के सिवा कहाँ आश्रय लेती है ?
साधने हि नियमोऽन्यजनानां योगिनां तु तपसाखिलसिद्धिः । (नैषध०)	साधारण जन साधनों से कार्य सिद्ध करते हैं, योगियों को तप से सब सिद्धियाँ मिलती हैं ।
साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्रायः कलौ दुर्युगे ।	इस कलियुग नाम के बुरे युग में सज्जन दुःख पाते हैं और दुर्जन अधिकार जमाते हैं ।
साधूनां दुर्जनाद् भयम् ।	सज्जनों को दुर्जनों से भय होता है ।
सानुकूले जगन्नाथे विप्रियः सुप्रियो भवेत् ।	भगवान् अनुकूल हो तो विरोधी भी मित्र बन जाते हैं ।
सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयोः कुतः ? (शिशुपालवधे)	प्रकाश और अन्धकार एकत्र कैसे रह सकते हैं ?
सारं गृह्णन्ति पण्डिताः ।	बुद्धिमान् सारग्राही होते हैं ।
सिद्धिर्भूषयते विद्याम् ।	सिद्धि विद्या को अलंकृत करती है ।
सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् ?	यदि सुंदर काव्य रचना आती हो तो राज्य में क्या लाभ है ?
सुकर्मी चानुभूयैव दुःखमप्यश्नुते सुखम् । (कथा०)	सुकर्मी मनुष्य दुःख सहकर भी सुख भोगता है ।
सुखमास्ते निःस्पृहः पुरुषः ।	कामनारहित मनुष्य सुखी रहता है ।
सुखार्थिनः कुतो विद्या ?	सुखैषी को विद्या कहाँ ?
सुतप्तमपि पानीयं शमयत्येव पावकम् ।	पानी भले ही खूब गर्म हो फिर भी अग्नि को शान्त कर ही देता है ।
सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् । (किरात०)	संसार में सुन्दरता सुलभ है, गुण धारण दुर्लभ ।
सुलभो हि द्विषां भङ्गो, दुर्लभा सत्स्ववाच्यता । (किरात०)	शत्रु का नाश करना सरल है, सज्जनों में सराहना दुर्लभ ।

सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्। (शिशु०)	सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल अपनी शोभा को धारण नहीं करता।
सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा? (रघुवंश)	जब सूर्य चमक रहा हो तब रात्रि लोगों की दृष्टि कैसे बंद कर सकती है?
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।	सेवा रूपी धर्म अत्यन्त कठिन है, योगी भी वहाँ तक नहीं पहुँच सकते।
स्तोत्रं कस्य न तुष्टये? (कुमार०)	प्रशंसा से कौन प्रसन्न नहीं होता?
स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः?	स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य को भगवान भी नहीं जानता, मनुष्य भला क्या जानेगा?
स्त्रियो नष्टा ह्यभर्तृका।	पति हीन स्त्रियाँ नष्ट हो जाती हैं।
स्त्रीणां पतिः प्राणा न बान्धवाः। (कथा०)	स्त्रियों का जीवन पति है, बन्धु नहीं।
स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेषः। (कुमार०)	स्त्रियाँ सौन्दर्यवर्द्धक परिधान पहनती हैं।
स्त्री पुंवच्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टम्।	जब स्त्री पुरुषवत् प्रभावशाली हो जाती है तब घर नष्ट हो जाता है।
स्त्रीबुद्धिः प्रलयावहा।	स्त्री की बुद्धि प्रलयकारिणी होती है।
स्त्रीभिः कस्य न खण्डितं भुवि मनः?	भूमि पर स्त्रियों ने किस के हृदय को खण्डित नहीं किया?
स्त्री विनश्यति रूपेण।	स्त्री रूप से नष्ट होती है।
स्त्रीषु वाक्संयमः कुतः? (कथा०)	स्त्रियों में वाणी का संयम कहाँ?
स्नापितोऽपि बहुशो नदीजलैर्गर्दभः किमु हयो भवेत् क्वचित्?	नदी के जल में बहुत बार नहाने पर भी क्या कभी गधा भी घोड़ा बनता है?
स्नुषात्वं पापानां फलमधनगेहेषु सुदृशाम्।	निर्धन घरों की पुत्रवधू बनना सुन्दरियों के पापों का फल है।
स्पृशन्ति न नृशंसानां हृदयं बन्धुबुद्धयः। (नैषध०)	सम्बन्धियों की सीख क्रूर जनों के हृदय को प्रभावित नहीं करती।
स्पृशन्त्यास्तारुण्यं किमिव न हि रम्यं मृगदृशः?	यौवन में प्रविष्ट होती हुई मृगनयनी की कौन-सी बात सुंदर नहीं होती?
स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः।	संसार अपने कर्मों के सूत्र से गूँथा हुआ है।
स्वगृहे पूज्यते मूर्खः।	मूर्ख अपने घर में ही पूजा जाता है।
स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः।	ग्रामपति अपने गाँव में ही पूजा जाता है।
स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा।	अपने देश के गुणी व्यक्ति की भी उपेक्षा की जाती है।
स्वदेशे पूज्यते राजा।	राजा की पूजा अपने ही देश में होती है।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।	अपने धर्म में मरना अच्छा है, पर धर्म भयंकर होता है।
स्वपन्त्यज्ञा हि निश्चेष्टाः, कुतो निद्रा विवेकिनाम्?	अज्ञानी गहरी नींद में सोते हैं, विवेकियों को नींद कहाँ?
स्वपदात्प्रच्यवमानस्य कस्याज्ञां को हि मन्यते? (कथा०)	अपनी पदवी से च्युत हुए की आज्ञा कौन मानता है?
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।	परोपकारियों का यह स्वभाव ही है।
स्वभावतः सर्वमिदं हि सिद्धम्।	यह सब स्वभाव से ही सिद्ध है।

स्वभावस्वच्छानां पतनमपि भाग्य हि भवति।	स्वभावतः पवित्र व्यक्तियों का पतन भी भाग्यात् ही होता है।
स्वयमेव हि वातोऽग्नेः सारथ्यं प्रतिपद्यते। (रघु०)	पवन स्वयमेव अग्नि का सारथि बन जाता है।
स्वसुखं नास्ति साध्वीनां तासां भर्तृसुखं सुखम्। (कथा०)	सत्स्त्रियों का अपना कोई सुख नहीं होता वे पति के सुख को ही अपना सुख समझती हैं।
स्वस्थः को वा न पण्डितः?	कौन स्वस्थ मनुष्य बुद्धिमान् नहीं?
स्वस्थे चित्ते बुद्धयः सम्भवन्ति।	स्वस्थ चित्त में ही सुविचार उत्पन्न होते हैं।
स्वादुभिस्तु विषयैर्हृतस्ततो दुःखमिन्द्रियगणो निवार्यते। (रघु०)	स्वादिष्ट विषयों से आकर्षित इन्द्रियों को उनसे हटाना कठिन है।
स्वाधीना दयिता सुतावधि।	सन्तान से पूर्व ही स्त्री स्वाधीन होती है।
हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः। (अभिज्ञा०)	हंस दूध ले लेता है और उसमें मिले जल को छोड़ देता है।
हं हो पद्मसरः कुत्र कतिपयैर्हंसैर्विना श्रीस्तव?	अरे कमलसर! कुछ हंसों के बिना तुम्हारी शोभा कहाँ?
हतं ज्ञानं क्रियाहीनम्।	क्रिया-रहित ज्ञान व्यर्थ है।
हतं निर्नायकं सैन्यम्।	सेनानी के बिना सेना निकम्मी है।
हतश्चाज्ञानतो नरः।	मनुष्य अज्ञान से मारा जाता है।
हरति मनो मधुरा हि यौवनश्रीः। (किरात०)	यौवन की मधुर शोभा मन को हर लेती है।
हस्तस्य भूषणं दानम्।	दान हाथ का गहना है।
हितः परोऽपि स्वीकार्यो हेयः स्वोऽप्यहितः पुनः। (कथा०)	हितकारक बेगाना भी स्वीकार्य है और अहितकारक अपना भी त्याज्य।
हितप्रयोजनं मित्रम्।	मित्र भलाई के लिए ही होता है।
हितभुक्, मितभुक्, शाकभुक्।	हितकर वस्तु खानेवाला, थोड़ा खानेवाला, साग-सब्जी खानेवाला (स्वस्थ रहता है)।
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। (किरात०)	हितकर तथा मनोहर वचन दुर्लभ है।
हितोपदेशो मूर्खस्य कोपायैव न शान्तये। (कथा०)	हितकारक उपदेश मूर्ख को कुपित करता है, शान्त नहीं।
हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा। (रघुवंश०)	सुवर्ण की खराई-खोटाई अग्नि में ही परखी जाती है।
अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धुः।	संसार में धन ही मनुष्य का बन्धु है।

द्वितीय परिशिष्ट

हिन्दी सूक्तियों के संस्कृत पर्याय

हिन्दी	संस्कृत
अंगूर खट्टे हैं।	१ अलभ्यं हीनमुच्यते। २ दुष्प्राप्या द्राक्षा अम्ला।
अंडा सिखावे बच्चे को तू चीं-चीं मत कर।	१ बालः शिक्षयति वृद्धान्। २ वृद्धानां मन्त्रदो बालः।
अंडे सेवे कोई बच्चे लेवे कोई।	पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये।
अंडे होंगे तो बच्चे बहुतेरे हो जायँगे।	स्थिरे मूले ध्रुवा वृद्धिः।
अन्तःकरण के अनुसार आचरण करे।	मनःपूतं समाचरेत् (मनु०)
अँतड़ी में रूप बुकची में छब्ब।	१ रूपमन्ने छविर्वसने। २ निराहारे कुतो रूपं निर्वसने च कुतश्छविः।
अन्त बुरे का बुरा।	१ दुरितस्य दुःखम्। २ दुष्टस्य कष्टम्।
अन्त भले का भला।	१ भद्रस्य भद्रम्। २ शुभस्य शुभम्।
अन्त मता सो गता।	अन्ते मतिः सा गतिः।
अन्दर से काले बाहर से गोरे।	१ विषकुम्भाः पयोमुखाः। २ अन्तः शाक्ता बहिः शैवाः।
अंधा क्या चाहे? दो आँखें।	इष्टलाभः परं सुखम्।
अंधा क्या जाने बसंत की बहार?	१ गुणागमं तस्य न वेत्ति वायसः। २ लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति? ३ न भेकः कोकनदिनीकिञ्जल्कास्वादकोविदः। (कथासरित्सागर)
अंधा गुरु बहरा चेला, दोनों नरक में ठेलमठेला।	अन्धस्यान्धानुलग्नस्य विनिपातः पदे पदे।
अंधा बाँटे रेवड़ियाँ फिर फिर अपनों ही को।	विवेकरहितः खलु पक्षपाती।
अंधी पीसे कुत्ता खाय।	पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये। (पंचतंत्र)
अंधे के आगे रोवे अपने दीदे खोवे।	१ अरण्यरोदनं व्यर्थं भस्मनि हुतमेव च। २ अरण्यरुदितमिव निष्प्रयोजनम्।
अंधे के हाथ बटेर लगना।	अन्धस्य वर्तकीलाभः।
अंधे को अंधा कहने से बुरा मानता है।	न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
अंधे को अँधेरे में बड़े दूर की सूझी।	बालिशस्य मतिस्फूर्तिः।
अंधे को सब अंधे ही दीखते हैं।	१ पित्तेन दूने रसने सिताऽपि तिक्तायते। २ पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतम्।
अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।	नृपे मूढे नयः कुतः?
अंधों ने गाँव लूटा दौड़ियो रे लँगड़े।	१ अयं बन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः। २ अन्धैर्लुण्ठितो ग्रामः पङ्गो रे धाव सत्वरम्।

अंधों में काना राजा।	१ निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते। २ यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।	उत्पतितोऽपि चणकः शक्तः किं भ्राष्ट्रं भङ्क्तुम्?
अक्ल बड़ी कि भैंस?	१ बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्। (पंचतंत्र) २ मतिरेव बलाद् गरीयसी। ३ प्रज्ञा नाम बलं श्रेष्ठं निष्प्रज्ञस्य बलेन किम्?
अक्लमंद को इशारा, अहमक को फटकारा।	विज्ञाय संज्ञा, मूढाय दण्डः।
अक्लमंद को इशारा ही काफी है।	१ अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः। २ परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः।
अच्छी बात बच्चे की भी मान लेनी चाहिए।	युक्तियुक्तं प्रगृह्णीयाद् बालादपि विचक्षणः।
अच्छी वस्तु स्वयमेव प्रसिद्ध हो जाती है।	न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते।
अच्छी संतान सुख की खान।	१ संततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे। (रघु०) २ सुतमूलं सुमन्नति।
अटका बनिया देय उधार।	परवशैः किं न क्रियते?
अटकेगा सो भटकेगा।	संशयात्मा विनश्यति।
अढ़ाई पाव कागजी चौबारे रसोई।	निस्सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान्।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप्प। अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप्प।	अति सर्वत्र वर्जयेत्।
अदले का बदला।	१ कृते प्रतिकृतिं कुर्यात्। २ भद्रो भद्रे खलः खले। ३ शठे शाठ्यं समाचरेत्।
अधजल गगरी छलकत जाय।	अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
अधिकार बड़ा है न कि बल।	स्थानं प्रधानं न बलं प्रधानम्। (पंचतंत्र)
अधेला न दे, अधेली दे।	१ अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्। (रघुवंश) २ पणमदत्त्वा निष्कं प्रयच्छति।
अनहोनी होती नहीं होनी होनहार।	न यद् भावि न तद् भावि भावि चेन्न तदन्यथा। (हितोपदेश)
अपना अपना गैर गैर।	निजो निज एव परः परश्च।
अपना टेंटर न देखे दूसरों की फुल्ली निहारे।	खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति। आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति॥ (महाभारत)
अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।	१ जठरं को न बिभर्ति केवलम्? २ काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते।
अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष?	१ आत्मीया सदोषा चेत् को लाभः परदूषणे? २ समले सुवर्णे निकषो न निन्द्यः।
अपना वही जो आए काम।	१ स एव बन्धुः सहायो यः। २ परोऽपि हितकरः स्वीयः।
अपना हाथ जगन्नाथ।	स्वातन्त्र्यमिष्टप्रदम्।
अपनी अपनी डफली अपना अपना राग।	स्वार्थसिद्धौ हि ये मग्नास्तेषां साम्मत्यं कुतः?

अपनी इज़्ज़त अपने हाथ।	१ लोके गुरुत्व विपरीतता वा स्वचेष्टितान्येव नरं नयन्ति। २ निजाधीनं स्वगौरवम्।
अपनी करनी पार उतरनी।	कृत्ये स्वकीये खलु सिद्धिलब्धिः।
अपनी ग़रज़ बावली होती है।	१. अर्थार्थी जीवलोकोऽयं श्मशानमपि सेवते। (पंचतंत्र) २. किन्न कुर्वन्ति स्वार्थिनः ?
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।	निजसदननिविष्टः श्वा न सिंहायते किम् ?
अपनी छाछ को कोई खट्टी नहीं कहता।	१. सर्वः स्वत्वात्मीयं कान्तं पश्यति। २ न हि कश्चिन्निजं तक्रमम्लमित्यभिभाषते।
अपनी देह किसे प्यारी नहीं?	(अशेषदोषदुष्टोऽपि) कायः कस्य न वल्लभः ? (पंचतंत्र)
अपनी नाक कटे तो कटे दूसरों का सगुन तो बिगड़े।	आत्मक्षत्याऽपि विघ्नन्ति परकर्माणि दुर्जनाः।
अपनी पगड़ी अपने हाथ।	दे 'अपनी इज्जत अपने हाथ'।
अपनी बुद्धि पराया धन कई गुना दीखता है।	स्वमतिं परधनञ्चैव बृहद्बृहद् हि दृश्यते।
अपने गरीबान में मुँह डाल कर देखना।	विरूपो यावदादर्शे पश्यति नात्मनो मुखम्। मन्यते तावदात्मानमन्येभ्यो रूपवत्तरम्। (महाभारत)
अपने दही को कोई खट्टा नहीं कहता।	दे 'अपनी छाछ को …'
अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ा मारना।	१ दुःखसदनं स्वदोषेण। २.स्वकरेणांगारकर्षणम्।
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू।	इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः।
अपयश से मौत भली।	सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। (गीता)
अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।	१. निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् ? २. गतस्य शोचनं नास्ति। ३. गतं शोचन्त्यपण्डिताः। ४ गते शोको निरर्थकः।
अभी दिल्ली दूर है।	अद्यापि दूरतः सिद्धिः।
अमीर को जान प्यारी, गरीब को जान भारी।	धनाढ्यो रक्षति प्राणान् निर्धनस्त्यक्तुमिच्छति।
अरहर की टट्टी गुजराती ताला।	पाषाणे मृगमदलेपः।
अलखामोशी नीमरज़ा।	मौनं स्वीकारलक्षणम्।
अल्पाहारी सदा सुखी।	अल्पाहारी सदासुखी।
अशरफ़ियाँ लुटीं, कोयलों पर मुहर।	१. निष्कापव्यय, पणरक्षणम्। २. चन्दनदाहः, शमीरक्षा।
असी की आमद चौरासी का ख़र्च।	१. अल्प आयो व्ययो महान्। २. न्यूनायेऽधिकव्ययः।
आँख और कान में चार अंगुल का फ़र्क़ होता है।	श्रवणे दर्शने चैव वर्तते महदन्तरम्।
आँख न दीदा काढ़े कसीदा।	अन्धो वीक्षितुमुद्यत।
आँख से दूर दिल से दूर।	१. दूरता स्नेहनाशिनी। २. नयनदूरं मनोदूरम्।
आँखों के अंधे नाम नयन-सुख।	१ यस्य पार्श्वे धनं नास्ति सोऽपि धनपाल उच्यते। २ वित्तेन हीनो नाम्ना नरेशः।

	३ ज्ञानेन हीनोऽपि सुबोधसंज्ञ ।
	४ गुणैर्विरहितोऽपि गुणाकराख्य ।
आँधी के आम ।	अल्पार्घद्रव्यम् ।
आई को कौन टारे ?	१ अपि धन्वन्तरिर्वैद्य किं करोति गतायुषि ?
	२ मृत्योर्नास्ति भेषजम् ।
आई तो ईद बरात न आई तो जुम्मेरात ।	सघृत भोजन वित्ते, दारिद्र्ये शुष्कमेव च ।
आई थी आग लेने मालिक बन बैठी ।	१ सूचीप्रवेशे मुसलप्रवेश ।
	२ अनलार्थं समायाता सञ्जाता गृहस्वामिनी ।
आई है जान के साथ जायगी जनाज़े के साथ	जीवनसंगिनी रुजा ।
आए की खुशी न गए का गम ।	१ सन्तुष्ट सदासुखी ।
	२ लाभालाभयो सम ।
आग पानी का मेल कैसे हो सकता है ?	१ सामानाधिकरण्य हि तेजस्तिमिरयो कुत ?
	२ जलानलयो सङ्गम कुत ?
आग लगने पर कूआँ नहीं खोदा जाता ।	१ सन्दीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यम कीदृश ? (नीतिशतक)
	२ न कूपखननं युक्त प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।
आग लगा पानी को दौड़े ।	१ अन्तदुष्ट क्षमायुक्त सर्वानर्थकर किल ।
	२ विषकुम्भ पयोमुख ।
आगे कूआँ पीछे खाई ।	इत कूपस्ततस्तटी ।
आगे जगह देखकर पाँव रखा जाता है ।	१ दृष्टिपूत न्यसेत्पादम् । (मनु०)
	२ नासमीक्ष्य पर स्थान पूर्वमायतनं त्यजेत् ।
आगे दौड़ पीछे चौड़ ।	पूर्वाधीनं तु विस्मृत्य असमर्थ प्रत्युत्सुक ।
आगे नाथ न पीछे पगहा, सब से भला कुम्हार का गदहा ।	का चिन्ता बन्धुहीनस्य ?
आज का काम कल पर मत छोड़ो ।	अद्य कार्यं न श्व कुर्यात् ।
आदत सिर के साथ जाती है ।	अभ्यासो हि दुस्त्यज ।
आदि बुरा अंत बुरा ।	१ दुरारम्भो दुरन्त स्यात् ।
	२ दुर्बीजात्सुफलं कुत ?
आधा तीतर आधा बटेर ।	विषमयोगो न युज्यते ।
आधी छोड़ सारी को धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे ।	यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते । ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव [illegible] ॥
आप मरे जग परलै ।	१ आत्मप्रलये जगत्प्रलय ।
	२ आत्मनाशो जगन्नाश ।
आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता ।	१ नात्मप्रयत्न विना सिद्धि ।
	२ यावन्न निधनं तावन्न स्वर्ग ।
आप हारे बहू को मारे ।	निजापराधे भृत्यस्य भर्त्सनम् ।
आ बला, गले लग ।	विपत्ते ! परिष्वजस्व माम् ।
आमों की कमाई नींबू में गँवाई ।	इतो लाभस्तत क्षति ।
आम के आम गुठलियों के दाम ।	एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा ।
आम बोओ आम खाओ ।	यादृशमुप्यते बीजं तादृशं फलमाप्यते ।
आयगा सो जायगा राजा रंक फ़कीर ।	जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ।
आरत काह न करइ कुकर्मू ।	आर्तो नर किं न करोति पापम् ।

आलस्य बुरी बला है।	१ अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति। २ आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
आलिम वह क्या अमल न हो जिसका किताब पर।	यः क्रियावान् स पण्डितः।
आस पास बरसे दिल्ली पड़ी तरसे।	सस्पृहा निर्धना दृष्टा निःस्पृहाणां धनं बहु।
आस्मान पर थूका अपने सिर।	पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि।
आस्मान से गिरा खजूर में अटका।	इतो मुक्तस्ततो बद्धः।
आहारे व्यौहारे लज्जा न कारे।	आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
इक चुप हज़ार सुख।	मौनं सर्वसुखप्रदम्।
इक नागिन अरु पंख लगाई।	दे॰ 'एक तो करेला'
इधर कूआँ उधर खाई।	१ इतोऽन्धकूपस्ततो दन्दशूकः। २ इतः कूपस्ततस्तटी।
इधर बाघ उधर खाई।	इतो व्याघ्रस्ततस्तटी।
इलाज लाख, एक पथ्य।	पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः?
इश्क़ नाज़ुक मिज़ाज है बेहद। अक्ल का बोझ उठा नहीं सकता॥	अनुरागान्धमनसां विचारसहता कुतः। (कथा.)
इस घर का बाबा आदम ही निराला है।	गृहमेतद् विलक्षणम्।
इस हाथ दे उस हाथ ले।	१ इतो देयं ततो ग्राह्यम्। २ त्वरितं फलं कर्मणाम्।
ईंट का जवाब पत्थर से।	१ शठे शाठ्यं समाचरेत्। २ कृते प्रतिकृतिं कुर्यात्। (चाणक्यनीति)
ईश्वर की निगाह सीधी हो तो किसी वस्तु की कमी नहीं रहती।	१ प्रसन्ने हि किमप्राप्यमस्तीह परमेश्वरे। २ विधिर्हि घटयत्यर्थानचिन्त्यानपि सम्मुखः। (कथा)
ईश्वर की निगाह सीधी हो तो कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता।	श्रीकृष्णस्य कृपालवो यदि भवेत् कः कं निहन्तुं क्षमः।
ईश्वर की निगाह सीधी हो तो शत्रु भी मित्र बन जाता है।	सानुकूले जगन्नाथे विप्रियः सुप्रियो भवेत्।
ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया।	दैवी विचित्रा गतिः।
ईश्वर के नियम अटल हैं।	ध्रुवाः परमेशनियमाः।
ईश्वर के रंग (खेल) न्यारे हैं।	१ विधेर्विचित्राणि विचेष्टितानि। २ अहो विधेरचिन्त्यैव गतिरद्भुतकर्मणाम्। (कथा.) ३ अहो नवनवाश्चर्यनिर्माणे रसिको विधिः। (कथा०) ४ दैवी विचित्रा गतिः। ५ मधुरविधुरमिश्राः सृष्टयो हा विधातुः।
ईश्वर के सिवा कोई निर्दोष नहीं।	त्रिभुवनविषये कस्य दोषो न चास्ति।
ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।	रामधाम शरणीकरणीयम्।
ईश्वर से क्या दूर है?	किं हि न भवेदीश्वरेच्छया?
उखली में सिर दिया तो मूसलों का डर क्या?	रणे योद्धुं प्रवृत्तस्य शस्त्राघातात्तु किं भयम्।
उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई?	१ निर्लज्जस्य कुतो भयम्? २ मानहीनमनुष्याणां लोकोऽयं किं करिष्यति?
उदार मनुष्य पात्र का विचार नहीं करते।	मेघो गिरिजलधिवर्षी च।
उधार का खाना फूस का तापना बराबर है?	उद्धारभोजनं तृणतापसेवनम्।

उधार दिया ग्राहक खोया।	उद्धारं केतृलोपकं।
उधार मुहब्बत की कैंची है।	उद्धारं स्नेहनाशकं।
ऊधो मन माने की बात।	तस्य तदेव हि मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम्।
उन्नीस-बीस का तो फ़र्क़ होता ही है।	समयोरप्यल्पमन्तरम्।
उपजहिं एक संग जल माहीं, जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं।	न सोदरास्तुल्यगुणा भवन्ति।
उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।	दोषी पृच्छकमवक्षिपेत्।
उलटे बाँस बरेली को।	गङ्गां हिमाचलं नयति।
ऊँट के मुँह में जीरा।	१ दाशेरस्य मुखे नीरं। २ न स्तोकेन घस्मरतृप्तिः।
ऊँट की चोरी और झुके झुके।	न महान्ति कर्माणि भवन्ति गूढम्।
ऊँची दुकान फीका पकवान।	निस्सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान्।
ऊँट घोड़े बहे जायँ, गधा कहे कितना पानी?	यत्र शूरगतिर्नास्ति कातरः किं करिष्यति?
ऊँट तो कूदे बोरे भी कूदे।	नृत्यति पिनाकपाणौ नृत्यन्त्यन्येऽपि भूतवेतालाः।
ऊँट रे ऊँट तेरी कौन सी कल सीधी?	१ सर्वपापमयो खलः। २ सर्वदोषयुतो नरः।
ऊँटों के विवाह में गधे गवैये।	उष्ट्राणां विवाहे तु गीतं गायन्ति गर्दभाः।
ऊधो का लेना न माधो का देना।	निश्चिन्तो नरः सुखी।
ऊपर से पानी देना नीचे से जड़ काटना।	१ अन्तर्दुष्टः क्षमायुक्तः सर्वानर्थकरः किल। २ प्लावयन्नपि वृक्षाणि नदीवेगो निकृन्तति। ३ अन्तः शत्रुः बहिः सुहृद्।
एक अंडा वह भी गंदा।	काकमांसं शुनोच्छिष्टमस्वल्पञ्च तत्पुनः।
एक अनार सौ बीमार।	एकं कपोतपोतं श्येनाः शतशोऽभिधावन्ति।
एक और एक ग्यारह होते हैं।	१ संहतिः कार्यसाधिका। २ समवायो दुरत्ययः। ३ एकचित्ते द्वयोरेव किमसाध्यं भवेदिति। (कथासरित्सागर)
एक कहो दस सुनो।	गाल्या उत्तरं दश।
एक कान से सुनना दूसरे से निकाल देना?	अवधानरहितं श्रवणं हि व्यर्थम्।
एक के दूने से सौ के सवाए भले।	विक्रयाधिक्ये लाभाधिक्यम्।
एक चुप हज़ार को हराए।	१ मौनं सर्वार्थसाधनम्। २ मौनं विश्वजिद् ध्रुवम्।
एकता में बड़ी शक्ति है।	१ समवायो दुरत्ययः। २ संहतिः कार्यसाधिका।
एक तो करेला कड़ुआ दूसरे नीम चढ़ा।	१ अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः। २ मर्कटस्य सुरापानं ततो वृश्चिकदंशनम्।
एक तो चोरी दूसरे सीनाज़ोरी।	अपराधित्वेऽपि धृष्टता।
एक थैली के चट्टे-बट्टे।	दुष्टे सर्वे समाः।
एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन बलाए जान।	१ प्राघुणिको दिनद्वयम्, यमदूतस्ततः परम्। २ प्राहुणपूजा दिनद्वयम्।
एक नज़ीर न सौ नसीहत।	एकनिदर्शनं शतशासनाद् वरीयो।
एक पंथ दो काज।	१ एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा। (महाभाष्य) २ देहल्यां दीपः।
एक परहेज़, न सौ हकीम।	पथ्यं भिषक्शतनाद् वरम्।
एक पुण्य दूसरे फलियाँ।	१ एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा। २ एकं कृत्यं लोकपरलोकफलदम्।

एक बार मरना फिर मरने से क्या डरना ?	क्षणविध्वंसिनः कायाः का चिन्ता मरणे रणे ।
एक चोटी सौ कुत्ते ।	दे 'एक अनार सौ बीमार' ।
एक मछली सारे जल को गंदा करती है ।	एकेनैव कुपुत्रेण मलिनं जायते कुलम् ।
एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं।	१ नैकस्मिन्नेव कान्तारे सिंहयोर्वसतिः क्वचित् । २ बलवतोर्नैकत्र शासनम् ।
एक हमाम में सब नंगे ।	सर्वे सहधर्मिणः समाः ।
एक हाथ से ताली नहीं बजती ।	१ न ह्येकेन हस्तेन तालिका सम्प्रपद्यते । (पंचतंत्र) २ नैकाकी वरदे हस्तः ।
एक ही लकड़ी से सब को हाँकना ।	योग्यायोग्ययोर्विवेकाभावः ।
एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय ।	एकलक्ष्ये सर्वसिद्धिर्नस्याधिक्येन काचन ।
ऐब करने को भी हुनर चाहिए ।	पापे कौशलापेक्षि ।
ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय ।	कृषिहीनाय वृद्धाय को नाम भोजनं दद्यात् ।
ओछे की प्रीत बालू की भीत ।	अस्थिरं क्षुद्रसौहृदम् ।
ओछे के मुँह लगना अपनी इज्जत खोना ।	क्षुद्रसङ्गतिर्माननाशिनी ।
ओस चाटे प्यास नहीं बुझती ।	१ न स्वल्पकेन शमितस्तृष्णा । २ प्रालेयलेशैर्न तृषाविनाशः ।
और बात खोटी सही दाल रोटी ।	अन्नपानं परित्यज्य सर्वमन्यन्निरर्थकम् ।
कड़वी दवाई का फल मीठा ।	यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
कड़वे बोल न बोल ।	मर्मवाक्यमपि नोच्चारणीयम् ।
कन्या पराया धन होती है ।	अर्थो हि कन्या परकीय एव । (अभिज्ञान०)
करमगति टारे नाहिं टरे ।	१ भवितव्यं भवत्येव कर्मणामीदृशी गतिः । २ भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र । (अभिज्ञान०)
करम प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करहि सो तस फल चाखा ।	स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः । दे 'जैसी करनी वैसी भरनी' ।
करमों की गति न्यारी ।	१ चित्रा गतिः कर्मणाम् । २ गहना कर्मणो गतिः ।
कल की छोड़ो आज की बात करो ।	वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः ।
कह रहीम परकाज हित संपति सँचहि सुजान ।	१ आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव । (रघु) २ आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम् । (रघु) ३ परोपकाराय सतां विभूतयः ।
का कर अद्वितीय जन यद्यपि होय समर्थ ।	असहायः समर्थोऽपि तेजस्वी किं करिष्यति । (पंचतन्त्रम्) सबलोऽप्येकलोऽबलः ।
काल सबको खा जाता है ।	सर्वं कालवशेन नश्यति ।
काला अक्षर भैंस बराबर ।	निरक्षरभट्टाचार्यः ।
काठ की दिल्ली जो बन गई परन्तु ब्याऊँ कौन करेगा ?	सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् ।
कुत्ता कुत्ते का बैरी ।	१ भिक्षुको भिक्षुकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते । २ याचको याचकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते ।
कुत्ते की दुम बारह बरस नली में रखो तो भी टेढ़ी की टेढ़ी ।	श्वपुच्छमिव नीचः कौटिल्यं नैव विजहाति ।

क्या बूढ़ा क्या जवान मौत के लिए सब समान	मृत्योः सर्वत्र तुल्यता ।
खूँटे के बल बछड़ा कूदे ।	अन्यस्माल्लब्धपदो नीचः प्रायेण दुःसहो भवति ।
दरवाजे का गवाह मेंढक ।	अहो रूपमहो ध्वनिः ।
गंगा गए गंगाराम जमुना गए जमुनादास ।	भजन्ति वैतसीं वृत्तिं मानवाः कालवेदिनः ।
ग़रीब को ख़ुदा की मार ।	दैवो दुर्बलघातकः ।
ग़रीब को संसार सूना ।	१ सर्वं शून्यं दरिद्रस्य । २ सर्वशून्या दरिद्रता ।
ग़रीब को सुख कहाँ ?	१. निर्धनस्य कुतः सुखम् ? २ निर्धनता सर्वापदामास्पदम् ।
गुणी गुणों से आदर पाते हैं, आयु तथा लक्षणों से नहीं ।	गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः ।
गुरु बिना ज्ञान नहीं ।	विना हि गुरुदिष्टेन सम्पूर्णं सिद्ध्यति कुतः ?
ग़ुस्सा बड़ा चण्डाल है ।	१. धर्मक्षयकरः क्रोधः । २ क्रोधो मूलमनर्थानाम् ।
गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है ।	अपेक्षन्ते हि विपदः किं पेलवमपेलवम् ?
घर का जोगी जोगड़ा बाहर जोगी सिद्ध ।	स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा ।
घोड़ों का घर कितनी दूर ?	किं दूरं व्यवसायिनाम् ?
चुपड़ी और दो दो ?	यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम् ।
चमड़ी जाय दमड़ी न जाय ।	प्राणेभ्योऽप्यर्थमात्रा हि कृपणस्य गरीयसी । (कथा०)
चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात ।	तिरस्कृतां निशां चन्द्रः श्रीमान् संपूर्णमण्डलः ।
जगत् भेड़चाल है ।	गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः ।
जब बुरे दिन आते हैं बुद्धि मारी जाती है ।	१ विनाशकाले विपरीतबुद्धिः । २ प्रायः समापन्नविपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां मलिना भवन्ति ।
जब भाग्य ही सीधा न हो तो काम कैसे सिद्ध हो ।	१ वक्रे विधौ वद कथं व्यवसायसिद्धिः । २ वामे विधौ न हि फलन्त्यभिवाञ्छितानि ।
जब लग पैसा गाँठ में तब लग ताको यार	अम्बुगर्भो हि जीमूतश्चातकैरभिनन्द्यते । (रघु०)
ज़बाँ शीरीं मुल्क गीरी ।	कः परः प्रियवादिनाम् ?
ज़रूरत के वक्त गधे को भी बाप कहा जाता है ।	महानपि प्रसङ्गेन नीचं सेवितुमिच्छति ।
जहाँ न जाय रवि वहाँ जाय कवि ।	कवयः किं न पश्यन्ति ?
जान किसे प्यारी नहीं ।	प्राणाः कस्य न वल्लभाः ।
जान है तो जहान है ।	आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ।
जिसका काम उसी को साजे, और करे तो डण्डा बाजे ।	अज्ञता कस्य नामेह नोपहासाय जायते । (कथासरित्सागर)
जिसका खाएँ उसी का गीत गाएँ ।	को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ?
जिसकी लाठी उसकी भैंस ।	औचित्यं गणयति को विशेषकामः ।
जिसके घर दाने उसके कमले (मूर्ख) भी स्याने ।	लक्ष्मीर्यस्य गृहे स एव भवति प्राज्ञो जगद्वन्दितः ।
जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा ।	अधिकस्याधिकं फलम् ।
जितने मुँह उतनी बातें ।	नवा वाणी मुखे मुखे ।
जिनको कछू न चाहिए तेई शाहंशाह ।	सुखमास्ते निःस्पृहः पुरुषः ।

जीभ रोगों की जड़ है।	रसमूला हि व्याधयः।
जीवन का क्या भरोसा है?	अस्थिरं जीवितं लोके।
जैसा कारण वैसा कार्य।	१ यथा बीजं तथाङ्कुरः। २ यथा वृक्षस्तथा फलम्। ३ यादृशास्तन्तवः काम तादृशो जायते पटः।
जैसा मुँह वैसी चपेड़।	पात्रानुसारं फलम्।
जैसी करनी वैसी भरनी।	१ भद्रकृत्प्राप्नुयाद् भद्रम्, अभद्रञ्चाप्यभद्रकृत्। (कथा०) २ भद्रमभद्रं वा कृतम् आत्मनि कल्प्यते। (कथा०) ३ यो यद्वपति बीजं हि लभते सोऽपि तत्फलम्। ४ कर्मायत्तं फलं पुंसाम्। दे० 'करम प्रधान '
जैसी संगत वैसी रंगत।	१ संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति। २ प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते।
जैसे को तैसा।	१ शठे शाठ्यं समाचरेत्। २ आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। (नैषध)
जो अपनी सहायता करते हैं ईश्वर भी उनकी सहायता करता है।	दैवमेव हि साहाय्यं कुरुते सत्त्वशालिनाम्।
जो गरजते हैं वे बरसते नहीं।	नीचो वदति न कुरुते वदति न साधुः करोत्येव।
जो तुझ को काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल।	क्षारं पिबति पयोधेर्वर्षत्यम्भोधरो मधुरमम्भः।
जो पैदा हुआ सो मरेगा।	१ कः कालस्य न गोचरान्तरगतः। २ जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः। (गीता) ३ मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम्। ४ उत्पद्यन्ते विलीयन्ते।
जो सुख छज्जू के चौबारे, वह न बलख न बुखारे।	प्राणिनां हि निकृष्टाऽपि जन्मभूमिः परा प्रिया। (कथा०)
जो है जिसको भावता सो ताही के पास।	न हि विचलति मैत्री दूरतोऽपि स्थितानाम्।
ज्ञान से बड़ा कोई सुख नहीं।	नास्ति ज्ञानात्परं सुखम्।
डूबा वंस कबीर का उपजे पूत कमाल।	कुपुत्रेण कुलं नष्टम्।
तृष्णा बूढ़ी नहीं होती।	तृष्णैका तरुणायते।
थोथा चना बाजे घना।	१ अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्। २ गुणैर्विहीना बहु जल्पयन्ति। ३ अल्पज्ञानी महाभिमानी। ४ न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग् यादृक्कांस्ये प्रजायते।
दमड़ी की बुढ़िया टका सिरमुँड़ाई।	१ न काचस्य कृते जातु युक्ता मुक्तामणेः क्षतिः। (कथा०) २ रत्नव्ययेन पाषाणं को हि रक्षितुमर्हति? (कथा०)
दया धर्म का मूल है।	१ धर्मस्य मूलं दया। २ को धर्मः कृपया विना?
दिल दिल का साक्षी होता है।	विमलं कलुषीभवच्च चेतः कथयत्येव हितैषिणं रिपुं वा।
दुधार गाय की लात भली।	काश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या।
दूध का जला छाछ भी फूँक कर पीता है।	पाणौ पयसा दग्धे तक्रं फूत्कृत्य पामरः पिबति।
दूर के ढोल सुहावने।	दूरतः पर्वता रम्याः।
धन जोबन का गरब न कीजै।	१ अस्थिरे धनयौवने। २ किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च।

धर्महीन नर पशू समाना।	धर्मेण हीना पशुभिः समाना।
न इधर के रहे न उधर के रहे।	१ इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्ट। २ इद च नास्ति न पर च लभ्यते। ३ उभयतो भ्रष्ट।
नदी नाव सजोगी मेले।	असंभाव्या अपि नृणा भवन्तीह समागमा। (कथा०)
नहि अस कोउ जग माहीं, प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं।	ऋद्धिश्चित्तविकारिणी।
नहीं यह जन्म बारबार।	भस्मीभूतस्य भूतस्य (देहस्य) पुनरागमनं कुत ?
नहीं शील सम गहना दूजा।	१ शील पर भूषणम्। २ शील हि सर्वस्य नरस्य भूषणम्।
न होने की अपेक्षा थोड़ी अच्छी।	१ बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान्। २ अभावादल्पता वरा।
निरन्तर खर्च से कारूँ का खजाना भी समाप्त हो जाता है।	भक्ष्यमाणो निरदय सुमेरुरपि हीयते।
पर उपदेस कुसल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे।	१ परोपदेशवेलाया शिष्टा सर्वे भवन्ति वै। २ परोपदेशे पाण्डित्य सर्वेषां सुकर नृणाम्। धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मन ॥
पर घर कबहुँ न जाइए जात घटत है जोत।	परसदननिविष्ट को लघुत्वं न याति ?
परहित सरिस धरम नहि भाई।	परोपकारज पुण्य न स्यात् क्रतुशतैरपि।
पराधीन सपने सुख नाहीं।	कष्ट खलु पराश्रय।
परोपकारी लोग स्वार्थ की चिन्ता नहीं करते।	१ परहितनिरतानामादरो नात्मकार्ये। २ परार्थप्रतिपन्ना हि नेक्षन्ते स्वार्थमुत्तमा। (कथा)
पहले तोलो पीछे बोलो।	युक्त न वा युक्तमिदं विचिन्त्य वदेद् विपश्चिन्न हठोऽनुरोधात्।
पाप का भाडा फूट ही जाता है।	नाधर्मश्चिरमृद्धये। (कथा)
पैसा पापियों को पूज्य बना देता है।	चाण्डालोऽपि नर पूज्यो यस्यास्ति विपुल धनम्।
पैसा रहा न पास यार मुख से नहि बोलें।	वृक्ष क्षीणफल त्यजन्ति विहगा।
पैसा हाथ की मैल है।	उदारस्य तृण वित्तम्।
पैसे से दोष भी गुण बन जाते हैं।	मानलक्ष्मि तव प्रसादवशतो दोषा अपि स्युर्गुणा।
प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं।	१ कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वित ? २ यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र।
प्राण जायँ पर धर्म न जाई।	त्यजन्त्युत्तमसत्त्वा हि प्राणानपि न सत्पथम्। (कथा०)
प्राण जायँ पर वचन न जाई।	न चलति खलु वाक्य सज्जनाना कदाचित्।
बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद ?	१ न भेक कोकनदिनीकिञ्जल्कास्वादकोविद। २ किमिष्टमन्न खरसूकराणाम् ?
बड़ों का मार्ग ही ठीक मार्ग है।	महाजनो येन गत स पन्था।
बड़ों की बड़ी बातें।	अहह महतां निस्सीमानश्चरित्रविभूतय।
बड़ों की संगत से बहुत लाभ होता है।	ध्रुव फलाय महती महतां महसंगम। (कथा०)
बढ़ी हुई (आयु) के इलाज हैं घटी हुई के नहीं।	प्रतिकारविधानमायुष सति शेषे हि फलाय कल्पते।
बदनाम जो होंगे तो क्या नाम न होगा ?	येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध पुरुषो भवेत्।
बहुत निबल मिलि बल करैं, करैं जु चाहैं सोय।	बहूनामप्यसाराणां संहति कार्यसाधिका।

बातों से काम नहीं चलता।	न नश्यति तमो नाम कृतया दीपवार्तया।
बाप पर बेटा तुख़म पर घोड़ा।	कार्यं निदानाद्धि गुणानधीते। (नैषध०)
बिन घरनी घर भूत का डेरा।	१ प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति। २ भार्याहीनं गृहस्थस्य शून्यमेव गृहं मतम्। ३ धिग्गृहं गृहिणीशून्यम्।
बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय।	१ सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्। २ सहसा हि कृतं पापं (कार्यं) कस्य मा भूदि पत्तये। (कथा०)
बीती बात का शोक न करना चाहिए।	१ गतस्य शोचनं नास्ति। २ गते शोको निरर्थकः। ३ गतं शोचन्त्यपण्डिताः।
बुरी संगत का बुरा फल।	असन्मैत्री हि दोषाय कूलच्छायेव सेविता। (किरात०)
बूँद-बूँद पड़ने से घड़ा भर जाता है।	जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
भले काम में देर कैसी?	शुभस्य शीघ्रम्।
भलों का संग करना चाहिए।	१ सद्भिः कुर्वीत संगतिम्। २ सद्भिरेव सहासीत।
भाग्य का मारा जहाँ जाता है विपत्ति भी वहीं उसे जा घेरती है।	१ प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रापदां भाजनम्। २ प्रायो गच्छति यत्र दैवहतकस्तत्रैव यान्त्यापदः। (नीति०)
भूख में सब कुछ स्वादु लगता है।	क्षुधातुराणां न रुचिर्न पक्वम्।
भैंस के आगे बीन बजे भैंस खड़ी पगुराय।	१ अन्धस्य दीपः। २ बधिरस्य गीतम्।
मन के हारे हार है मन के जीते जीत।	१ जिते चित्ते जितं जगत्। २ जितचित्तेन सर्वं हि जगदेतद्विजीयते। ३ जितं जगत्केन? मनो हि येन। (शंकराचार्य)
मन चंगा तो कठौती में गंगा।	निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम्।
मनस्वी लोग सुख-दुःख की परवाह नहीं करते।	मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्।
मरता क्या न करता।	१ बुभुक्षितः किं न करोति पापम्? २ क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति। ३ दारिद्र्यदोषेण करोति पापम्।
महात्माओं के मन, वाणी तथा कर्म में समानता होती है।	मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।
माँगन गए सो मर गए।	१ याचनान्तं हि गौरवम्। २ याचनान्मरणं वरम्। ३ वरं हि मानिनो मृत्युर्न दैन्यं स्वजनाग्रतः। (कथा०) ४ कोऽर्थी गतो गौरवम्?
मित्र की पहचान विपद में ही होती है।	१ हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा। (रघु०) २ मित्रस्य निकषो विपत्। ३ स सुहृद् व्यसने यः स्यात्।

मुक्ति तथा बंधन का कारण मन ही है।	मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।
मूरख का बल मौन।	बलं मूर्खस्य मौनित्वम् ।
मूर्ख लोग भेड चाल चलते हैं।	मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः । (कालिदास)
मूर्खों की संगत से कौन सुख पाता है?	मूर्खैर्हि संगः कस्यास्ति शर्मणे? (कथा०)
मेरे मन कछु और है बिधना के कछु और।	को जानाति जनो जनार्दनमनोवृत्तिः कदा कीदृशी?
मोह की फाँसी बड़ी प्रबल है।	नास्ति मोहसमो रिपुः ।
मौत का कोई इलाज नहीं।	अपि धन्वन्तरिर्वैद्यः किं करोति गतायुषि?
योग्य, योग्य के साथ ही फबता है।	चकास्ति योग्येन हि योग्यसंगमः ।
रखिए मेलि कपूर में हींग न होय सुगंध।	किं मर्दितोऽपि कस्तूर्या, लशुनो याति सौरभम्?
राम भए जेहि दाहिने सबै दाहिने ताहि।	१ ग्रावाणोऽप्यार्द्रतां सम्यग् भजन्त्यभिमुखे विधौ। २ ईशेऽनुकूले सर्वेऽनुकूलाः । ३ दोषोऽपि गुणतां याति प्रभोर्भवति चेत्कृपा।
राम राम जपना पराया माल अपना।	अहो विश्वास्य वञ्च्यन्ते धूर्तैरुद्भिरीश्वराः ।
रोग तथा शत्रु को छोटा न समझो।	अल्पीयसोऽप्यामयतुल्यवृत्तेर्महापकाराय रिपोर्विवृद्धिः । (किरात)
लालच बुरी बला है।	नास्ति तृष्णासमो व्याधिः ।
लोकमर्यादा का पालन अवश्य करना चाहिए।	यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नो करणीयं नाचरणीयम्।
लोभ पापों की खान।	१ लोभः पापस्य कारणम्। २ लोभमूलानि पापानि। ३ पापानामाकरो लोभः ।
विद्या पुण्य कर्मों से आती है।	पूर्वपुण्यतया विद्या।
विधाता क्रुद्ध हो तो मित्र भी शत्रु बन जाते हैं।	क्रुद्धे विधौ भजति मित्रममित्रभावम्।
विधि का लिखा मिटाया नहीं जा सकता।	१ अभद्रं भद्रं वा विधिलिखितमुन्मूलयति कः? २ यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः? ३ यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः? ४ लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः? ५ शिरसि लिखितं लङ्घयति कः?
शूरवीर मौत की परवाह नहीं करते।	शूरस्य मरणं तृणम्।
शेर भूखा मर जाता है परन्तु घास नहीं खाता।	१ न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्। २ न स्पृशति पल्वलाम्भः पञ्जरशेषोऽपि कुञ्जरः क्वापि। ३ सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम्।
संगठन में बड़ी शक्ति है।	पञ्चभिर्मिलितैः किं यज्जगतीह न साध्यते। (नैषध)
सत्समागम बड़ा दुर्लभ है।	पुण्यैरेव हि लभ्यते सुकृतिभिः सत्संगतिर्दुर्लभा।
संतों के कारज आप सँवारे।	दैवेनैव हि साध्यन्ते सदर्थाः शुभकर्मणाम्। (कथा)
संतोष सबसे बड़ा धन है।	१ संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत्। २ संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम्। ३ संतोषः परमं धनम्।
संतोष सबसे बड़ा सुख है।	१ न तोषात् परमं सुखम्। २ संतोषः परमं सुखम्।
संसार में धन-सा सम्बन्धी कोई नहीं।	अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धुः ।

सच की ही जीत होती है।	सत्यमेव जयते।
सदाचार सब से बडा धर्म है।	आचारः परमो (प्रथमो) धर्मः।
सबको काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं।	सर्वः कार्यवशाज्जनोऽभिरमते तत्कस्य को वल्लभः ?
सब लोग गुण तो किसी मे नहीं होते।	नैकत्र सर्वो गुणसन्निपातः।
सब सब कुछ नहीं जानते।	१. न हि सर्वविदः सर्वे। २ सर्वे सर्वं न जानन्ति।
साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।	नास्ति सत्यात्परो धर्मः, नानृतात् पातकं परम्।
साँप निकल गया लकीर पीटा करो।	१ चौरे गते वा किमु सावधानम् ? २ पयोगते किं खलु सेतुबन्धः।
सार सार को गहि रहे थोथा देय उड़ाय।	१ सारं गृह्णन्ति पण्डिताः। २ हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्। ३ हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः। (अभिज्ञान)
सारी जाती देखकर आधी लेय बचाय।	१ सर्वनाशे समुत्पन्ने, अर्द्धं त्यजति पण्डितः। २ ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्। ३ त्यजेदेकं कुलस्यार्थे।
सारी रात रोते रहे मरा एक भी नहीं।	परमार्थतस्तु न हि भेतव्यं क्वचित्कृभिः। (कथा.)
सास-बहू में मेल कहाँ ?	प्रायः श्वश्रूस्नुषयोर्न दृश्यते सौहृदं लोके।
सीख न दीजे बानरा जो बए का घर जाय।	१ उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये। २ हितोपदेशो मूर्खस्य कोपायैव न शान्तये। (कथा.) ३ मूर्खाणां बोधको रिपुः।
सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता।	१. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। (नैषध) २ शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः।
सुख-दुःख सब के साथ लगे हुए हैं।	कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा। नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। (मेघ)
सुत बिना सूना गेह।	१ अपुत्रस्य गृहं शून्यम्। २ पुत्रहीनं गृहं शून्यम्।
सूरदास जाको जासों हित सोई ताहि सुहात।	यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम्।
सोने में सुगन्ध।	केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः, किं पुनस्त्रिदशचापलाञ्छितः। (रघु)
स्वभाव नहीं बदलता।	१ यादृशो यः कृतो धात्रा भवेत्तादृश एव सः। २. या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनापि न त्यज्यते। ३. स्नापितोऽपि बहुशो नदीजलैर्गर्दभः किमु हयो भवेत् क्वचित् ?
होनहार फिरती नहीं होवे बिस्से बीस।	१ प्राचीनकर्म बलवन्मुनयो वदन्ति। २ साध्यासाध्यविचारं हि नेक्षते भवितव्यता। (कथा.) ३. हन्त विधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः ? ४ भवितव्यता बलवती। ५ विधिरहो बलवानिति मे मतिः।
हो बिधना प्रतिकूल जबै तब ऊँट चढ़े पर कूकर काटत।	अहो विधौ विपर्यस्ते न विपर्यस्यतीह किम्।

तृतीय परिशिष्ट

अंग्रेजी संस्कृत शब्दावली

A

Academy—१ शिक्षालय २ साहित्य विज्ञान कला परिषद् (स्त्री)।
Accountancy—लेखा सङ्ख्यान,-कर्मन् (न)।
Account—१ लेखा २ विवरणम्।
Accountant—लेखापाल।
Accountant general—महालेखापाल।
Acknowledgment—प्राप्तिपत्रम्।
Act—अधिनियम।
Acting—१ कार्यकारिन् २ अभिनय।
Adhoc committee—तदर्थसमिति (स्त्री)।
Adjournment motion—स्थगनप्रस्ताव
Administration—प्रशासनम्।
Administrator—प्रशासक।
Adult—वयस्क, प्रौढ।
Adult franchise—वयस्कमताधिकार।
Advance—अग्रिमधनम्।
Advocate—अधिवक्तृ (पु)।
Advocate general—महाधिवक्तृ।
Aesthetics—सौन्दर्यशास्त्रम्।
Affidavit—शपथपत्रम्।
Affiliation—सम्बन्धनम्, सम्बद्धीकरणम्।
Agency—अभिकरणा।
Agenda—कार्यसूची।
Agent—अभिकर्तृ (पु)।
Agitation—आन्दोलनम्।
Agreement—१ संविदा २ साम्मत्यम्।
Air conditioned—नियन्त्रितातप।
Air-port—वायुपत्तनम्।
Air tight—*पवन वात, रोधक।
All India Radio—आकाशवाणी।
Allotment officer—आवटनाधिकारिन्।
Alphabetically—वर्णक्रमानुसार, वर्णमालाक्रमेण।
Amenity—सुख-सुविधा।
Anniversary—वार्षिकोत्सव।
Appeal—पुनरावेदनम्, पुनर्न्यायप्रार्थना।
Application—आवेदनपत्रम्।
Appointment—नियुक्ति (स्त्री)।
Archaeologist—पुरातत्त्वज्ञ।
Architect—वास्तुकार।
Aristocracy—अभिजात-कुलीन,-तन्त्रम्।
Assembly—सभा।
Assembly, legislative—विधानसभा।
Assessment officer—करनिर्धारणाधिकारिन्।
Assistant controller/director/secretary—सहायक, नियन्त्रक निदेशक-सचिव।
Assosiate member—सहसदस्य।
Atlas—मानचित्रावली।
Atmosphere—१ वायुमण्डलम् २ वातावरणम्।
Attesting officer—साक्ष्यांकनाधिकारिन्।
Attorney general—महान्यायवादिन्।
Audience—श्रोतृवर्ग।
Audit—लेखापरीक्षा।
Auditor—लेखापरीक्षक।
Authority—१ प्राधिकारिन् २ प्राधिकार।
Autocracy—स्वतन्त्रम्।
Autonomy—स्वायत्तशासनम्, स्वायत्तता।
Aviation—विमाननम्, विमानयात्रा।

B

Balance sheet—तुलनपत्रम्।
Ballot box—मतपेटिका।
Ballot-paper—मतपत्रम्, शलाका।
Bank—अधिकोष।
Banker—अधिकोषिन्।

Basic Education—आधारशिक्षा ।
Bibliography—ग्रन्थसूची ।
Bill—१ विधेयकम् २ प्राप्यकम् ।
Biology—जीवविज्ञानम् ।
Birth control—सन्ततिनिरोध ।
Black-out—वह्निरपकार ।
Blood pressure—रक्तचाप ।
Board—मण्डली ।
Board District—मण्डल ,मण्डली पालिका ।
Board, Municipal—नगर मण्डली-पालिका
Board of Directors—निदेशकमण्डली ।
Body—निकाय ।
bonafied—विश्वस्त, प्रामाणिक, सदाशय ।
Bonafides—विश्वस्तता, सद्भावनता, प्रामाणिकता ।
Bond—बन्धपत्रम् ।
bonus—अधिलाभांश ।
Booking-office—टिकटगृहम् ।
Broad-cast—प्रसारणम् ।
Budget—आयव्ययकम् ।
Bye election—उपनिर्वाचनम् ।
Bye law—उपविधि ।
By post—पत्रविभागेन ।

C

Cabinet—मन्त्रिमण्डलम् ।
Cadet—सैन्यछात्र ।
Calculator—गणक ।
Calendar—तिथिपत्रम, पञ्चागम् ।
Calory—उष्माङ्क ।
Candidate—१ परीक्षार्थी २ अभ्यर्थी ३ पदार्थी ।
Cantonment—कटकवसम् ।
Capital—मूलधनम् ।
Capsule—पुटी ।
Case—काण्डकम् ।
Cash Memo—विक्रयपत्रम्, विक्रयिका ।
Casting vote—निर्णायक मतम् ।
Casuality—हताहत ।
Cell—१ कोशाणु २ कुटी ।
Census—जनगणना ।
Central Investigation Agency—केन्द्रियान्वेषणाभिकरणी ।

Century—१ शती २ शताब्दी ।
Cess—उपकर ।
Chairman—सभापति ।
Chamber of Commerce—वाणिज्यमण्डलम् ।
Chancellor—कुलाधिपति ।
Chancellor, Pro-vice—उपकुलपति ।
Chancellor Vice—कुलपति ।
Charge d' Affairs—कार्यदूत ।
Charge sheet—आरोपपत्रम् ।
Chart—१ रेखापत्रम् २ चित्रफलकम् ।
Charter—अधिकारपत्रम् ।
Chartered Accountant—अधिकारप्रमाणितलेखापाल ।
Cheque—चेकम देयादेश ।
Cheque Bearer—वाहकचेकम् ।
Cheque, Blank—निरकचेकम् ।
Cheque, Crossed—रेखितचेकम् ।
Cheque, Order—आदेशचेकम् ।
Chief Commissioner—मुख्यायुक्त ।
Chief Judge—मुख्यन्यायाधीश ।
Chief Justice—मुख्यन्यायाधिपति ।
Chief Minister—मुख्यमन्त्रिन् (पु) ।
Chief of Air staff—वायुसेनाध्यक्ष ।
Chief of Army staff—स्थलसेनाध्यक्ष ।
Chief of Naval staff—नौसेनाध्यक्ष ।
Chief of Protocal—नयाचारप्रमुख ।
C. I. D.—गुप्तचरविभाग ।
Circular—परिपत्रम् ।
Citizen—नागरिक ।
Citizen ship—नागरिकता ।
Civil—नागरिक, असैनिक ।
Civil Code—व्यवहारसंहिता ।
Civil Court—व्यवहार न्यायालय, व्यवहारालय ।
Civilization—सभ्यता ।
Civil Service—नागरिकसेवा ।
Clause—खण्ड-कम् ।
Clock tower—घण्टा-गृहम् स्तम्भ ।
Code—संहिता ।
Collector—समाहर्तृ, समाहर्क ।
Commerce—वाणिज्यम् ।

Commission—१ आयोग २. वर्तनम् ।
Commissioner—आयुक्त ।
Committee—समिति (स्त्री) ।
Committee, Executive, working—कार्यकारिणी समिति (स्त्री), कार्यसमिति ।
Committee, Select—प्रवरसमिति (स्त्री) ।
Committee, Standing—स्थायिसमिति (स्त्री) ।
Commonwealth—राष्ट्रमण्डलम् ।
Communication—संचार ।
Communique—विज्ञप्तिः (स्त्री.) ।
Communism—साम्यवाद ।
Community Development—सामुदायिक विकास ।
Company—समवाय ।
Compensation—प्रतिकर, क्षतिपूर्ति (स्त्री) ।
Complaint—१ अभियोग. २ परिवाद, परिवेदना ।
Computor—संगणकम् ।
Confederacy—राज्यसंघ ।
Confederation—राज्यमण्डलम् ।
Conference—सम्मेलनम् ।
Constituency—निर्वाचनक्षेत्रम् ।
Constituent Assembly—संविधानसभा ।
Constitution—संविधानम् ।
Consul—वाणिज्यदूत ।
Context—सन्दर्भ, प्रसंग, प्रकरणम् ।
Continent—महाद्वीप-पम् ।
Contingency fund—आकस्मिकतानिधि, सांयोगिकनिधि ।
Contract—संविदा ।
Contribution—अंशदानम् ।
Control—नियन्त्रणम् ।
Controller General—महानियन्त्रक ।
Convassing—उपार्थनम् ।
Convener—संयोजक ।
Convention—१ रूढि (स्त्री) २ संगमनम् ।
Co-operation—सहयोग । सहकारिता ।
Co-operative society—सहकारिसंस्था ।
Co-ordination—समन्वय ।
Copy—१ प्रतिलिपि (स्त्री) २ प्रति (स्त्री) ।
Copyright—प्रकाशनाधिकारः ।
Corporation—निगम ।
Cost—परिव्यय ।
Cottage Industry—कुटीरोद्योग ।
Council—परिषद् (स्त्री) ।
Council, Advisory—परामर्शपरिषद् (स्त्री) ।
Council of Ministers—मन्त्रिपरिषद् (स्त्री) ।
Council of States—राज्यपरिषद् (स्त्री.) ।
Court—न्यायालय ।
Court, Criminal—दण्डन्यायालय ।
Court, District—मण्डलन्यायालयः ।
Court, Federal—संघीयन्यायालय ।
Court, High—उच्चन्यायालय ।
Court, Martial सेनान्यायालय ।
Court of Appeal—पुनर्विचारन्यायालय ।
Court of Wards—प्रतिपाल्काधिकरणम् ।
Court, Revenue—राजस्वन्यायालय ।
Court, Session—सत्रन्यायालय ।
Court, Subordinate-अधीनन्यायालय ।
Court, Supreme—उच्चतमन्यायालय ।
Credential—प्रत्ययपत्रम् ।
Credit—१ प्रत्यय (हिं. साख) २. आकलनम् ।
Criminal Law—दण्डविधि (पु.) ।
Culture—संस्कृति (स्त्री) ।
Currency—चलार्थ, मुद्रा ।
Custodian—अभिरक्षक ।
Custody—अभिरक्षा ।
Custom duty—सीमा-शुल्क शुल्कम् ।

D

Daily diary—दैनिकी ।
Debit—विकलनम् ।
Decentralization—विकेन्द्रीयकरणम् ।
Declaration—घोषणा ।
Decree—आज्ञप्ति (स्त्री.) ।
Deed—विलेख ।
Defence—रक्षा ।
Delegate—प्रतिनिधि ।
Delegation—प्रतिनिधिमण्डलम् ।
Democracy—लोकतन्त्रम् ।

Demonstrator—निदर्शक ।
Deputation—शिष्टमण्डलम् ।
Deputy Commissioner—उपायुक्त ।
Deputy Speaker—उपाध्यक्ष ।
Designer—रूपकार ।
Despatcher—प्रेषक ।
Development Block—विकासखण्डम् ।
Diplomacy—राजनय, कूटनीति (स्त्री) ।
Directorate—निदेशालय ।
Director General—महानिदेशक ।
Director, Managing—प्रबन्धनिदेशक ।
Disposal—व्ययनम् ।
Disqualification—अनर्हता, अयोग्यता ।
District—मण्डलम् ।
District Board—मण्डलमण्डली ।
Dividend—लाभांश ।
Division—प्रभाग ।
Divorce—विवाहविच्छेद, विविच्छेद ।
Document—प्रलेख ।
Draft—१ प्रारूपम् २. धनार्पणादेश ।
Draftsman—प्रारूपकार ।
Drainage—जलनिष्कास ।
Drive—अभियानम् ।
Duplicate Copy—अनुलिपि (स्त्री) ।
Duty—१ शुल्कम्, २ कर्तव्यम् ।
Duty, Custom—सीमाशुल्कम् ।
Duty, Death—मरणशुल्कम् ।
Duty, Estate—सम्पत्तिशुल्कम् ।
Duty, Excise—उत्पादशुल्कम् ।
Duty, Export—निर्यातशुल्कम् ।
Duty, Import—आयातशुल्कम् ।
Duty, Stamp—मुद्राशुल्कम् ।
Duty, Succession—उत्तराधिकारशुल्कम् ।

E

Election—निर्वाचनम् ।
Election, Bye—उपनिर्वाचनम् ।
Election Commission—निर्वाचनायोग ।
Election, Direct—प्रत्यक्षनिर्वाचनम् ।
Election, Indirect—परोक्षनिर्वाचनम् ।
Election, Compaign—निर्वाचनाभियानम् ।
Election, Tribunal—निर्वाचनाधिकरणम् ।
Elector—निर्वाचक ।
Electoral Roll—निर्वाचकसूची ।
Electorate—१ निर्वाचनक्षेत्रम् ।
२ निर्वाचकसमूह ।
Electorate, Joint—संयुक्तनिर्वाचनपद्धति (स्त्री) ।
Electorate, Separate—पृथङ्निर्वाचनपद्धति (स्त्री) ।
Electorate, Separate—पृथङ्निर्वाचनपद्धति (स्त्री) ।
Embassy—राजदूतावास ।
Emergency—आपात ।
Emigration—परावास ।
Emporium—आपण ।
Employment Exchange—नियोजनकार्यालय ।
Enfranchisement—मताधिकारदानम् ।
Enquiry clerk—पृच्छालिपिक ।
Equator—भूमध्यरेखा ।
Establishment Officer—स्थापनाधिकारिन् ।
Estates—सम्पद् (स्त्री) ।
Excise—उत्पादशुल्कम् ।
Executive Engineer—कार्यपालकाभियन्तृ ।
Ex-officio—पदेन ।

F

Family Planning Centre—परिवारनियोजनकेन्द्रम् ।
Federal—संघीय ।
Federation—संघ ।
Fermentation—किण्वनम् ।
Feudalism—सामन्तवाद ।
Finance—वित्तम् ।
Financial—वित्तीय ।
Financial Year—वित्तवर्षम् ।
Fine—अर्थदण्ड ।
Fire Service—अग्निशमनसेवा ।
Flying Squad—उड्डयनदलम् ।
Foreign Exchange—विदेशीयविनिमय ।

Forensic Science—न्यायवैद्यकविज्ञानम् ।
Form—प्रपत्रम् ।
Formula—सूत्रम् ।
Franchise—मताधिकार ।
Freedom of press—मुद्रणस्वातन्त्र्यम् ।
Freedom of speech—भाषणस्वातन्त्र्यम् ।
Function—कृत्यम् ।
Fund—निधि ।

G

Gallery—दीर्घा ।
Gate keeper—द्वारपाल ।
Gate pass—द्वारपत्रम ।
Gazette—राजपत्रम् ।
Gazetteer—राजपत्रित विवरणम् ।
Geologist—भू, विज्ञानिन्-वैज्ञानिक ।
Germ—कीटाणु ।
Glacier—हिमनदी ।
Government—शासनम् ।
Government, Hereditary—पैतृक शासनम् ।
Government, Interim—अन्तरिम शासनम् ।
Government, local self—स्थानीयस्वायत्तशासनम् ।
Government, Parliamentary—संसदीयशासनम् ।
Government, Presidential—राष्ट्रपतीय प्रधानीय, शासनम् ।
Government, self—स्वशासनम् ।
Government, unitary—एकीयशासनम् ।
Governor—१ राज्यपाल २ शासक ।
Grant—अनुदानम् ।
Grant in aid—सहायकानुदानम् ।
Gratuity—उपदानम् ।
Guarantee—प्रत्याभूति (स्त्री.) ।

H

Habeas corpus—बन्दिप्रत्यक्षीकरणम् ।
Handicrafts—हस्तशिल्पम् , हस्तकला ।
Head Quarter—मुख्यालय , प्रधान कार्यालय ।
Hereditary—पैतृक, आनुवंशिक ।
Honorarium—मानदेयम् ।
Horticulturist—उद्यानकृषिविशेषज्ञ ।
Hostess—सत्कारिणी ।
House—१ सदनम् २ गृहम् ।
House of people—लोकसभा ।
Housing Department—आवासविभाग ।

I

Illiteracy—निरक्षरता ।
Immigrant—आवासिन् ।
Improvement Trust—नगरसुधार-मण्डलम् ।
Incharge—प्रभारिन् ।
Indian Administrative Service—भारतीय प्रशासनिकसेवा ।
Indian Council of Agricultural Research—भारतीयकृष्यनुसन्धानपरिषद् (स्त्री) ।
Indian Council of Medical Research—भारतीयचिकित्सानुसन्धानपरिषद् (स्त्री) ।
In due course—यथासमयम् ।
Industry—उद्योग ।
Industry, cottage—कुटीरोद्योग ।
In order of merit—योग्यताक्रमेण ।
Inquiry—परिप्रश्न ।
Inspection—निरीक्षणम् ।
Institute—संस्थानम् ।
Institution—संस्था ।
Insurance—बीमा ।
International—अन्तर्-राष्ट्री(ष्ट्रि)य ।
In toto—पूर्णत , पूर्णतया ।
Investigator—अन्वेषक ।

J

Judge—न्यायाधीश ।
Judge, additional—अपर-अतिरिक्त , न्यायाधीश ।
Judge, extra—अतिरिक्त न्यायाधीश ।
Judiciary—न्यायपालिका ।
Justice—१ न्याय २ न्यायपति , न्यायाधिपति ।
Justice, chief—मुख्य,न्यायपति न्यायाधिपति न्यायाधीश ।

L

Labour Commissioner—श्रमायुक्त ।

Land revenue—भूराजस्वम् ।
Latitude—अक्षांश ।
Law—विधि (पु) ।
Law & order—विधिव्यवस्थे (स्त्री द्वि) ।
Law Commission—विधि आयोग ।
Legation—दूतावास ।
Legislation—विधानम् ।
Legislative assembly—विधानसभा ।
Legislative council—विधानपरिषद् (स्त्री) ।
Legislature—विधानमण्डलम् ।
Letter of Introduction-परिचयपत्रम् ।
Levy—१ आरोपणम् २ उद्ग्रहणम् ।
Liaison officer—सम्पर्काधिकारिन् ।
Licence—अनुज्ञप्ति (स्त्री) ।
Lieutenant governor—उपराज्यपाल ।
Life Insurance Corporation—जीवनबीमानिगम ।
Literacy—साक्षरता ।
Local board—स्थानीयमण्डली ।
Local body—स्थानीयनिकाय ।
Local government—स्थानीयशासनम् ।
Longitude—रेखांश ।

M

Major—वयस्क ।
Majority—१ बहुमतम् २ बहुसंख्या ।
Mandamus—परमादेश ।
Manifesto—आविष्पत्रम् ।
Marketing officer—पणनाधिकारिन् ।
Maternity home—प्रसवशाला ।
Matriarchy—मातृतन्त्रम् ।
Medical Science—आयुर् चिकित्सा, विज्ञानम् ।
Member—सदस्य ।
Memo—ज्ञाप ।
Memorandum—ज्ञापकम्, स्मृतिपत्रम् ।
Meteorological Department—ऋतु विज्ञान विभाग ।
Meteorologist-ऋतु,-विज्ञानिन्-वैज्ञानिक ।
Migration—प्रव्रजनम्, प्रवास ।
Military Engineering Service (M E S) सैनिकयान्त्रिकसेवा ।
Minerelogist-खनिज,-विज्ञानिन्-वैज्ञानिक ।
Minister—मन्त्रिन् ।
Ministry—१ मन्त्रालय २ मन्त्रिमण्डलम् ।
Minor—अवयस्क ।
Minority—१ अल्पसंख्यकवर्ग २ अल्पमतम् ।
Mission—१ उद्देश्यम्, लक्ष्यम् २ प्रचारकमण्डलम् ।
Monopoly—एकाधिकार ।
Motion—प्रस्ताव ।
Motion of no-confidence—अविश्वास प्रस्ताव ।
Multipurpose—बहूद्देशीय ।
Municipal area—नगरक्षेत्रम् ।
Municipal commissioner—नगरपाल, नगरपालिकासदस्य ।
Municipal corporation-नगरनिगम, नगरमहापालिका ।
Municipality—नगरपालिका ।
Museum—संग्रहालय ।

N

Nation—राष्ट्रम् ।
Nationalization—राष्ट्रीयकरणम् ।
Nationality—राष्ट्रीयता ।
National Physical Laboratory—राष्ट्रीयभौतिकप्रयोगशाला ।
Nomination—मनोनयनम् ।
Nominee—मनोनीत ।
Notice—१ सूचना २ सूचनापत्रम् ।
Notification—अधिसूचना ।
Notified area—(अधि-) सूचितक्षेत्रम् ।

O

Oasis—मरूद्यानम् ।
Observatry—वेधशाला ।
Office—१ कार्यालय २ पदम् ।
Officer—अधिकारिन् ।
Officer incharge—प्रभाराधिकारिन् ।
Official Language—राजभाषा ।
Officiating—स्थानापन्न ।
Oligarchy—अल्पतन्त्रम् ।
Ordinance—अध्यादेश ।
Organization—संघटनम् ।

Out door patients Department—बहिरंगरोगविभाग ।

P

Pact—वचनपत्रम् ।
Parliament—संसद् (स्त्री) ।
Parliamentary secretary—संसदीय सचिव ।
Pass—पारणम् ।
Passport—पारपत्रम् ।
Patents—एकस्वम् ।
Patriarchy—पितृतन्त्रम् ।
Patron—संरक्षक ।
Penalty—शास्ति (स्त्री) ।
Pending—१ लम्बित २ लम्बमान ।
Pension—निवृत्तिवेतनम् ।
Personal Assistant—वैयक्तिकसहायक ।
Petition—याचिका ।
Planning Commission—योजनायोग ।
Plebiscite—जनमतसंग्रह ।
Police—आरक्षक ।
Police force—आरक्षकबलम् ।
Police station—आरक्षकस्थानम् ।
Poll—मतदानम् ।
Polling station—मतदानस्थानम् ।
Portfolio—मंविभाग ।
Ports department—पत्तनविभाग ।
Post—१ पदम् २ पत्रम् ।
Post-office—पत्रालय ।
Preference—अधिमानम् ।
Prerogative—परमाधिकार ।
President—१ राष्ट्रपति २ प्रधान ।
Prime Minister—प्रधानमन्त्रिन् ।
Post & Telegraph Depatt —पत्रतार विभाग ।
Private Secretary—निजसचिव ।
Privilege—विशेषाधिकार ।
Privy purse—राजवृत्ति (स्त्री) ।
Procedure—प्रक्रिया ।
Proceedings—१ कार्यावली, कृत्यावली २ कृत्यावलीविवरणम् ।
Proclamation—उद्घोषणा ।
Project—प्रायोजना ।
Promissory note—वचनपत्रम् ।
Proof reader—मुद्रितपत्रशोधक ।
Provident fund—भविष्यनिधि (पु) ।
Provision—१ उपबन्ध २ अन्नसामग्री ।
Provisional—अन्तःकालीन ।
Proxy—प्रतिपत्री ।
Public Health—लोकस्वास्थ्यम् ।
Publicity—प्रचार ।
Public Relations Officer—जनसम्पर्काधिकारिन् ।
Public Service Commission—लोकसेवाऽऽयोग ।
Public Services—लोकसेवा ।
Public Works Department—लोकनिर्माणविभाग ।

Q

Quality Control Officer—कोटिनियन्त्रकाधिकारिन् ।
Quarantine—संगरोध ।
Quorum—गणपूर्ति (स्त्री) ।
Quota—अभ्यंश , नियतांश ।

R

Railway Board—रेलपथमण्डली ।
Receptionist—स्वागतकर ।
Recommendation—अनुशंसा ।
Record—अभिलेख ।
Records keeper—अभिलेखपाल ।
Recruitment—सैन्यप्रवेश ।
Reference—निर्देश ।
Referendum—परिपृच्छा ।
Regent—राजप ।
Regional—क्षेत्रीय ।
Register—पञ्जी ।
Registered—पञ्जीकृत ।
Registrar—पञ्जीकार , कुलसचिव ।
Registration—पञ्जीकरणम् ।
Regulation—विनियम ।
Rehabilitation Ministry—पुनर्वासमन्त्रालय ।
Reminder—अनुस्मारकम् ।
Report—प्रतिवेदनम् ।
Representation—प्रतिनिधानम् ।

Representative—प्रतिनिधि ।
Republic—गणराज्यम् ।
Requisition—अधिग्रहणम् ।
Reservation—रक्षणम्, प्रारक्षणम् ।
Reserved seat—रक्षित प्रारक्षित,-स्थानम् ।
Re irement—निवृत्ति (स्त्री) ।
Returning officer—निर्वाचनाधिकारिन् ।
Revenue—राजस्वम् ।
Review—पुनर्विलोकनम् ।
Revision—पुनरीक्षणम् ।
Rule—नियम ।

S

Safeguard—सुरक्षणम् ।
Sales Tax—विक्रयकर ।
Savings—व्यावृत्ति (स्त्री) ।
Savings bank—• व्यावृत्त्यधिकोष ।
Schedule—अनुसूची ।
Scheduled caste—अनुसूचितजाति (स्त्री) ।
Scheduled Tribe—अनुसूचितजनजाति (स्त्री) ।
Secondary Education Board-माध्यमिकशिक्षामण्डली ।
Secretariate—सचिवालय ।
Section officer—अनुभागाधिकारिन् ।
Secular—धर्मनिरपेक्ष, ऐहिक ।
Security—१ प्रतिभूति (स्त्री) २ सुरक्षा ।
Security council—सुरक्षापरिषद् (स्त्री) ।
Self-determination—आत्मनिर्णय ।
Session—सत्रम् ।
Sitting—उपवेश, •उपविष्टि (स्त्री) ।
Small Scale Industries—लघूद्योगा ।
Socialism—समाजवाद ।
Social Welfare—समाजकल्याणम् ।
Sovereign—प्रभु ।
Sovereign democratic republic—सम्पूर्णप्रभुत्वसम्पन्नलोकतन्त्रात्मकगणराज्यम् ।
Speaker—१ अध्यक्ष (लोकसभादीनाम्) २ वक्तृ (पु) ।
Staff—कर्मचारिवृन्दम् ।
State—१ राज्यम् । २ राष्ट्रम् ।
State, Buffer—अन्तःस्थराष्ट्रम् ।
State, Totalitarian—एकदलराष्ट्रम् ।
State Trading Corporation—राज्यव्यापारनिगम ।
State, Unitary—एकीयराष्ट्रम् ।
State, Welfare—हितकारिराष्ट्रम् ।
Statistician—सांख्यिक ।
Statistics—सांख्यिकी ।
Statute—संविधि (पु) ।
Stenographer—आशुलिपिक ।
Steno-typist—आशुटङ्कक ।
Stock Exchange—श्रेष्ठिचत्वरम् ।
Store keeper—भाण्डारिन् ।
Subcontinent—उपमहाद्वीप पम् ।
Suffrage—मताधिकार ।
Suffrage, Universal—सर्वमताधिकार ।
Summon—आह्वानम् ।
Superintendent—अधीक्षक ।
Supervisor—पर्यवेक्षक ।
Supplies—पूर्त्त, सम्भरणम् ।
Suspension—निलम्बनम् ।
Surcharge—अधिकर ।
Survey—सर्वेक्षणम् ।
Syndicate—अभिषद् (स्त्री) ।

T

Tabulator—तालिक सारणी,-कार ।
Tariff—शुल्कसूची ।
Tax—कर ।
Tax, Direct—प्रत्यक्षकर ।
Tax, Entertainment—प्रमोदकर, मनोरञ्जनकर ।
Tax Indirect—परोक्षकर ।
Tax, Export—निर्यातकर ।
Tax, Income—आयकर ।
Tax, Sales—विक्रयकर ।
Tax, Super—अतिकर ।
Tax, Terminal—सीमाकर ।
Technician—प्रविधिज्ञ ।
Technique—प्रविधि ।
Tele communication—दूरसञ्चार ।
Telegraphist—तारसंकेतक ।
Telephone Exchange—दूरभाषकेन्द्रम् ।
Tenure—पदावधि (पु) कार्यकाल ।

Territory—राज्यक्षेत्रम् ।
Terrorism—आतङ्कवाद ।
Terrorist—आतङ्कवादिन् ।
Theocracy—धर्मतन्त्रम् ।
Theory—सिद्धान्त ।
Through proper channel—विधिवत् ।
Time keeper—समयपाल ।
Toll—पथकर ।
Totalitarianism—एकदलवाद ।
Tourist—पर्यटक ।
Tourist Depatt—पर्यटनविभाग ।
Tracer—अनुरेखक ।
Tractor—कर्षकरथ ।
Trade mark—व्यापारचिह्नम् ।
Trade Union—कार्मिकसंघ ।
Traffic—यातायातम् ।
Training—प्रशिक्षणम् ।
Training, Technical—प्रविधि प्रशिक्षणम् ।
Tramcar—रथ्यायानम् ।
Transfer—१ स्थानान्तरणम् २ हस्तान्तरणम् ।
Transition—सङ्क्रमणम् ।
Transport—परिवहणम् ।
Treaty—सन्धि (पु) ।
Tribe—जनजाति (स्त्री) ।
Tribunal—न्यायाधिकरणम् ।
Tropic of Cancer—कर्करेखा ।
Tropic of Capricorn—मकररेखा ।
Trust—न्यास ।
Trustee—न्यास निक्षेप, धारिन् ।
Tube well—नलकूप ।
Typist—टङ्कक ।

U

Under Secretary—अवरसचिव ।
Union—संघ ।
Union Public Service Commission—संघलोकसेवायोग ।
Unit—एककम् ।
United Nations Organization—संयुक्तराष्ट्रसंघ ।

V

Vacancy—१ रिक्तस्थानम् २ रिक्ति (स्त्री) ३ रिक्तता ।
Verification officer—सत्यापनाधिकारिन् ।
Veto—प्रतिषेध-रोध, अधिकार ।
Vice President—उपराष्ट्रपति ।
Village Industry—ग्रामोद्योग ।
Visas—दृष्टांक ।
Vote—मतम् ।
Vote by ballot—गुप्तमतदानम् ।
Vote of censure—निन्दाप्रस्ताव ।
Voter—मतदातृ (पु) ।
Vote, Single Transfarable—एकसंक्रमणीयमतम् ।

W

Warrant—अधिपत्रम् ।
Will—इच्छापत्रम् ।
Wireless operator—बेतारप्रचालक ।
Works Manager—कर्मशालाप्रबन्धक ।
Writ—आदेशलेख ।

Z

Zonal Council—आंचलिकपरिषद् (स्त्री) ।

चतुर्थ परिशिष्ट

छन्दःपरिचय

छन्द—संस्कृत में रचना प्रायः दो प्रकार की होती है—गद्य और पद्य। छन्द-रहित रचना को गद्य कहते हैं और छन्दोबद्ध रचना को पद्य। जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि के नियमों से युक्त होती है, उसे छन्द कहते हैं। जिन ग्रन्थों में छन्दों के स्वरूप तथा प्रकार आदि का विवेचन रहता है, उन्हें छन्द शास्त्र कहते हैं।

वर्ण या अक्षर—छन्द शास्त्र की दृष्टि से केवल व्यञ्जन (क ख् आदि) अक्षर या वर्ण नहीं कहलाते। अकेला स्वर या व्यञ्जन-सहित स्वर अक्षर कहलाता है। 'आ', 'का' और 'काम्' में छन्द शास्त्र की दृष्टि से एक ही अक्षर है क्योंकि उनमें स्वर तो केवल एक 'आ' ही है। छन्द में अक्षर गिनते समय व्यञ्जनों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

गुरु, लघु—ह्रस्व अक्षरों (अ, इ, उ, ऋ, लृ) को छन्द शास्त्र में लघु कहते हैं और दीर्घ अक्षरों (आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ) को गुरु। इसी प्रकार क, कि आदि लघु अक्षर हैं और का, की आदि गुरु। छन्द शास्त्र में निम्नलिखित को गुरु अक्षर माना गया है—

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

अर्थात् अनुस्वार युक्त, दीर्घ, विसर्गयुक्त और संयुक्त अक्षरों से पूर्व वर्ण गुरु होता है। छन्द के पाद या चरण का अन्तिम अक्षर आवश्यकतानुसार लघु या गुरु माना जा सकता है। सो इस श्लोक के अनुसार 'कंस' में 'क', 'काल' में 'का', 'दुःख' में 'दु' और 'युक्त' में 'यु' गुरु अक्षर हैं। छन्द के चरणों की लम्बाई और गति को ठीक रखने के लिए अक्षरों के गुरु-लघु के भेद को सम्यक् हृदयंगम कर लेना चाहिए। गुरु का चिह्न (ऽ) है और लघु का (।)।

गण—छन्द शास्त्र में तीन-तीन अक्षरों के समूह को गण कहा गया है। उन गणों के नाम, स्वरूप तथा उदाहरणों की निम्नलिखित तालिका से समझ लेना चाहिए—

गण-नाम	संक्षिप्तनाम	लक्षण	संकेत	उदाहरण
१ मगण	म	तीनों अक्षर गुरु	ऽ ऽ ऽ	भाग्याता, विद्यार्थी
२ नगण	न	तीनों अक्षर लघु	। । ।	निगम, सरल
३ भगण	भ	प्रथम अक्षर गुरु	ऽ । ।	भारत, कृत्रिम
४ यगण	य	प्रथम अक्षर लघु	। ऽ ऽ	यशोदा, सुमित्रा
५ जगण	ज	मध्यम अक्षर गुरु	। ऽ ।	जिगीषु, जवान
६ रगण	र	मध्यम अक्षर लघु	ऽ । ऽ	राधिका, राक्षसी
७ सगण	स	अन्तिम अक्षर गुरु	। । ऽ	सविता, कमला
८ तगण	त	अन्तिम अक्षर लघु	ऽ ऽ ।	तारेश, आकाश

गणों का स्वरूप स्मरण रखने के लिए निम्नलिखित श्लोक कण्ठस्थ कर लेना चाहिए—

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो
भादिगुरु, पुनरादिलघुर्यः ।
जो गुरुमध्यगतो, रलमध्य
सोऽन्तगुरु, कथितोऽन्तलघुस्त ॥

अर्थ—मगण में तीनों गुरु, नगण में तीनों लघु, भगण में आदि का अक्षर गुरु, यगण में आदि का लघु, जगण में मध्यम गुरु, रगण में मध्यम लघु, सगण में अन्तिम गुरु और तगण में अन्तिम लघु होता है।

मात्रा—ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं और दीर्घ या गुरु के उच्चारण-काल को दो मात्रा। इसलिए जब छन्दों में मात्राओं की गिनती की जाती है तब लघु की एक और गुरु की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं। छन्द शास्त्र में एक अक्षर की मात्राएँ दो से अधिक नहीं होतीं परन्तु संगीत में स्वर को यथेष्ट मात्राओं तक बढ़ाया जा सकता है। एक ही शब्द में अक्षरों और मात्राओं की संख्या समान भी हो सकती है और भिन्न भिन्न भी। जैसे—'कल' में दो अक्षर हैं और दो ही मात्राएँ, 'काल' में दो अक्षर और तीन मात्राएँ, 'काला' में दो अक्षर और चार मात्राएँ।

गति—छन्दों में अक्षरों या मात्राओं की नियत संख्या से ही काम नहीं चलता, उनमें गति अर्थात् लय या प्रवाह का भी ध्यान रखना पड़ता है। वार्णिक छन्दों में तो प्राय गणों का क्रम प्रवाह को अक्षुण्ण रखता है परन्तु मात्रिक छन्दों में इसकी और विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहती ही है। जैसे—

अज्ञ सुखमाराध्य सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञ ।
ज्ञानलवदुर्विदग्ध ब्रह्मापि नर त न रञ्जयति ॥ (भर्तृहरि)

यदि उपर्युक्त आर्या छन्द को यों पढ़ें—

'आराध्य सुखमज्ञ विशेषज्ञ आराध्यते सुखतरम्' तो कान तुरन्त बता देते हैं कि इसमें आर्या छन्द की गति नहीं रही।

यति—जिन छन्दों में एक-एक चरण में अक्षरों या मात्राओं की संख्या थोड़ी होती है उन्हें पढ़ने में तो कोई कठिनाई नहीं होती परन्तु लम्बे चरणों के पाठ में बीच में रुकना ही पड़ता है। उस विश्राम स्थल को ही यति या विराम कहते हैं। कुशल कवि इस बात का ध्यान रखते हैं कि यति किसी शब्द की समाप्ति पर ही आए परन्तु कभी-कभी वह किसी शब्द के मध्य में भी आ जाती है।

चरण—अधिकतर छन्दों में चार चरण पाद या पंक्तियाँ होती हैं, परन्तु कभी-कभी छन्द न्यूनाधिक चरणों के भी दिखाई देते हैं।

छन्दों के भेद—छन्दों के मुख्य भेद दो हैं—वर्णिक छन्द और मात्रिक छन्द। मात्रिक छन्द को जाति छन्द भी कहा जाता है। वर्णिक छन्दों में वर्णों की संख्या और गणक्रम पर विशेष ध्यान रहता है तथा मात्रिक छन्दों में मात्राओं की संख्या और गति पर। वर्णवृत्तों के चरणों में गुरु लघु-क्रम प्राय समान होता है, परन्तु मात्रिक छन्दों में यह बन्धन नहीं होता। उक्त दोनों भेदों के तीन तीन अवान्तर भेद भी होते हैं—सम छन्द, अर्द्धसम छन्द और विषम छन्द। सम छन्दों के चारों चरणों में वर्णों या मात्राओं की संख्या समान होती है। अर्द्धसम छन्दों में प्रथम

और तृतीय चरणों की तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों की अक्षर या मात्रा-संख्या समान होती है। जो छन्द उक्त दोनों वर्गों में नहीं आते, उन्हें विषम कहते हैं।

नीचे संस्कृत के कुछ प्रसिद्ध छन्दों का परिचय प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार के लिए छन्दःशास्त्र, वृत्तरत्नाकर, छन्दोमञ्जरी आदि ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं।

(क) वर्णवृत्त, समछन्द

प्रति चरण ८ अक्षरवाले छन्द

(१) अनुष्टुप् (अन्य नाम—श्लोक)

लक्षण—श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

अर्थ—इसके प्रत्येक पाद का पाँचवाँ वर्ण लघु होता है और छठा गुरु। सम (द्वितीय तथा चतुर्थ) चरणों का सातवाँ वर्ण लघु होता है और विषम (प्रथम तथा तृतीय) चरणों का सातवाँ वर्ण गुरु। शेष वर्णों के विषय में लघु गुरु की स्वतन्त्रता है।

उदाहरण—यदा यदा हि धर्मस्य; ग्लानिर्भवति भारत।
।ऽऽ ।ऽ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
।ऽऽ ।ऽ।

(२) विद्युन्माला

लक्षण—मो मो गो गो विद्युन्माला।

अर्थ—मगण, मगण और दो गुरु के क्रम से इसके प्रत्येक चरण में ८ वर्ण होते हैं; अर्थात् सब चरणों के सब वर्ण गुरु।

उदाहरण—

म म गु गु
(क) मौनं ध्यानं भूमौ शय्या, गुर्वी तस्याः कामाऽवस्था।
ऽऽ ऽ,ऽ ऽऽ, ऽ ऽ
मेघोत्सङ्गे नृत्तासक्ता, यस्मिन्काले विद्युन्माला॥

(ख) गंगा माता तेरी धारा, काटे कष्ट मेरा सारा।
विद्युन्माला जैसी सोहे, वीचीमाला तेरी मोहे॥ (सुधादेवी)

प्रति चरण १० अक्षरवाले छन्द

(१) रुक्मवती (अन्य नाम—चम्पकमाला)

लक्षण—भ्मौ सगयुक्तौ रुक्मवतीयम्।

अर्थ—रुक्मवती के प्रत्येक पद में भगण, मगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

भ म स गु

(क) भग्नमसत्यैः कायसहस्रैः, मोहमयी गुर्वी तव माया।
ऽ।।,ऽ ऽ ऽ,।।ऽ,ऽ
स्वप्नविलासा योगवियोगा, रुक्मवती हा कस्य कृते श्री.॥

(ख) शान्ति नहीं तो जीवन क्या है, कान्ति नहीं तो यौवन क्या है।
प्रेम नहीं तो आदर क्या है, प्यास नहीं तो सागर क्या है।
(रामनरेश त्रिपा०)

(२) मत्ता

लक्षण—मत्ता ज्ञेया मभसगयुक्ता (विराम ४, ६)।

अर्थ—मत्ता के प्रत्येक चरण में मगण, भगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

म भ स गु

पीत्वा मत्ता मधु मधुपाली, कालिन्दीये तटवनकुञ्जे।
ऽ ऽ ऽ, ऽ।।, ।।ऽ, ऽ
उद्दाम्यन्तीर्व्रजजनरामाः, कामासक्ता मधुजिति चक्रे॥

प्रति चरण ११ अक्षरवाले छन्द

(१) इन्द्रवज्रा

लक्षण—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ ग । (विराम पादान्त में)

अर्थ—इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, जगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

त त ज

(क) गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा,
ऽऽ ।,ऽ ऽ।,।ऽ। ऽऽ
रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ ।
यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थं,
चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः ॥

(ख) मैं जो नया ग्रन्थ विलोकता हूँ,
भाता मुझे सो नव मित्र सा है।
देखूँ उसे मैं नित बार बार,
मानो मिला मित्र मुझे पुराना ॥ (गिरधर शर्मा)

(२) उपेन्द्रवज्रा

लक्षण—उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ । (विराम पादान्त में)

अर्थ—उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और दो गुरु अक्षरों के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

ज त ज

⌒ ⌒ ⌒ गु गु

(क) जितो जगत्येष भवभ्रमस्तै-
।ऽ ।,ऽऽ।, । ऽ ।,ऽऽ
र्गुरूदितं ये गिरिशं स्मरन्ति।
उपास्यमानं कमलासनाद्यै—
रुपेन्द्रवज्रायुधवारिनाथैः ॥

(ख) सदा कि होग कुछ काम कीजै,
परन्तु पूर्वापर सोच लीजै।
बिना विचारे यदि काम होगा,
कभी न अच्छा परिणाम होगा॥ (मैथिलीशरण गुप्त)

(३) उपजाति

लक्षण—जिस छन्द के कुछ चरण इन्द्रवज्रा के हों और कुछ उपेन्द्रवज्रा के, उसे उपजाति कहते हैं। इसके १३ भेद होते हैं।

टि०—समान-संख्यक अक्षर तथा समान यतिवाले अन्य छन्दों के भी इसी प्रकार के मिश्रण का नाम उपजाति ही है। जैसे वंशस्थ और इन्द्रवंशा (१२ १२ अक्षरों के छंद) के मिश्रण से भी उपजाति छन्द बनता है।

उदाहरण—(क) उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं, (इन्द्र.)
क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्। (उपे.)
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च, (इ.)
लक्ष्मीः स्वयं वाञ्छति वासहेतोः॥ (उ.)

(ख) इच्छा न मेरी कुछ भी बनूँ मैं, (इ.)
कुबेर का भी जग में कुबेर। (उ.)
इच्छा मुझे एक यही सदा है, (इ.)
नये नये उत्तम ग्रंथ देखूँ॥ (उ.) (गिरधर शर्मा)

(४) दोधक (अन्य नाम—बन्धु)

लक्षण—दोधकनामनि भत्रयतो गौ। (विराम पाद के अन्त में)

अर्थ—दोधक छन्द के प्रत्येक चरण में तीन भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

भ भ भ

⌐ ⌐ ⌐ गु गु

(क) दोधकमर्थविरोधकमुग्रं
ऽ।।,ऽ।।,ऽ।।,ऽऽ,
धीचपलं युधि कातरचित्तम्।
स्वार्थपरं मतिहीनममात्यं
मुञ्चति यो नृपतिः स सुखी स्यात्॥

(ख) पाकर मानव-देह धरा में,
पाशवप्रवृत्ति तजो जितना है।
पुच्छ विषाण विहीन पशू जो,
होन न चहत प्रेम करो तो ॥ (रामबहोरी शुक्ल)

(५) शालिनी

लक्षण—शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोऽब्धिलोकैः ॥ (४, ७ पर विराम)

अर्थ—शालिनी के प्रत्येक पाद में मगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं। अब्धि (४) और लोक (७) पर विराम होता है।

उदाहरण—

म त त गुरु

(क) अंधो हन्ति ज्ञानवृद्धिं विधत्ते
ऽऽ ऽ, ऽऽ।, ऽऽ ।, ऽऽ,
धर्मं दत्ते काममर्थं च सूते।
मुक्तिं दत्ते सर्वदोपास्यमाना,
पुंसां श्रद्धाशालिनी विष्णुभक्तिः ॥

(ख) कैसी कैसी ठोकरें खा रहा है,
तीखी पीड़ा चित्त में ला रहा है।
तो भी प्यारे! हाल तेरा वही है,
विद्वानों की पद्धती क्या यही है ॥ (छन्दशिक्षा)

(६) रथोद्धता

लक्षण—रान्नराविह रथोद्धता लगौ। (विराम पाद के अन्त में)

अर्थ—रथोद्धता के प्रत्येक चरण में रगण, नगण, रगण और लघु गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

र न र लगु

किं त्वया सुभट! दूरवर्जितं
ऽ ।ऽ, ।।।, ऽ।ऽ, ।ऽ
नात्मनो न सुहृदा प्रियं कृतम्।
यत्पलायनपरायणस्य ते
याति धूलिरधुना रथोद्धता ॥

(७) स्वागता

लक्षण—स्वागतेति रनभाद्गुरुयुग्मम्। (पादान्त में विराम)

अर्थ—स्वागता के प्रत्येक पाद में रगण, नगण, भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

र न भ गु गु

(क) रत्नभद्रविमलैर्गुणतुङ्गै-
S I S, I I I, S I I, S S
र्यदिनाममभिवार्यणसक्तैः ।
स्वागताऽभिमुखनम्रशिरस्कैः
जीव्यते जगति साधुभिरेव ॥

(ख) रानि ! मोगि गहि नाथ कन्हाई,
साथ गोप जन आवत धाई।
स्वागतार्थ मुनि आतुर माना,
धाइ देखि मुद सुन्दर गाना ॥ (भानु कवि)

प्रति चरण १२ अक्षरवाले छन्द

(१) वंशस्थ (नामान्तर—वंशस्थविल तथा वंशस्तनित)

लक्षण—जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ। (पादान्त में विराम)

अर्थ—वंशस्थ के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

ज त ज र

(क) जनस्य तीव्रातपजार्तिवारणा
I S I, S S I, I S I, S I S
जयन्ति सन्तः सततं समुन्नताः।
सितातपत्रप्रतिमा विभान्ति ये
विशालवंशस्थतया गुणोचिताः ॥ (सुवृत्ततिलक)

(ख) स्वरूप होता जिसका न भव्य है,
न वाक्य होते जिसके मनोज्ञ हैं।
अतीव प्यारा बनता सदैव है
मनुष्य सो भी गुण के प्रभाव से ॥ (हरिऔध)

(२) इन्द्रवंशा

लक्षण—स्यादिन्द्रवंशा ततजैरसंयुतैः। (पादान्त में विराम)

अर्थ—इन्द्रवंशा के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

त त ज र

(क) कुर्वीत यो देवगुरुद्विजन्मना-
S S I, S S I, I S I, S I S
मुर्वीपतिः पालनमर्थलिप्सया।
तस्येन्द्रवंशोऽपि गृहीतजन्मनः
सञ्जायते श्रीः प्रतिकूलवर्तिनी ॥

(ख) यों ही बड़ा हेतु हुए बिना कहीं,
होते बड़े लोग कठोर यों नहीं।
वे हेतु भी यों रहते सुगुप्त हैं,
ज्यों मदि अम्भोनिधि में प्रसुप्त हैं॥ (चन्द्रहास)

(३) तोटक

लक्षण—इह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम्। (पादान्त में विराम)

अर्थ—तोटक के प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं।

उदाहरण—

स स स स

(क) त्यज तोटकमर्थनियोगकरं
। । ऽ, । । ऽ, । । ऽ, । । ऽ
प्रमदाऽधिकृतं व्यसनोपहतम्।
उपधाभिरशुद्धमति सचिवं
नरनायक! भीरुकमायुधिकम्॥ (छन्दोवृत्ति)

(ख) अब लौं न कहीं वह देश मिला,
इसका न जिसे उपदेश मिला।
उस गौरव के गुण अग्र हुए,
गुरु के गुरु शिष्य समस्त हुए॥ (नाथूराम शंकर)

(४) द्रुतविलम्बित

लक्षण—द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ। (पादान्त में विराम)

अर्थ—द्रुतविलम्बित के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

न भ भ र

(क) तरणिजापुलिने नवबल्लवी-
। । ।, ऽ । ।, ऽ । ।, ऽ । ऽ
परिषदा सह केलिकुतूहलात्।
द्रुतविलम्बितचारुविहारिणं
हरिमहं हृदयेन सदा वहे॥ (छन्दोमञ्जरी)

(ख) मन! रमा रमणी रमणीयता,
मिल गई यदि ये विधि योग से।
पर जिसे न मिली कविता-सुधा
रसिकता सिकता-सम है उसे॥ (रामचरित उपाध्याय)

(५) मौक्तिकदाम

लक्षण—चतुर्जगणं वद मौक्तिकदाम। (पादान्त में विराम)

अर्थ—मौक्तिकदाम (हिन्दी, मोतियदाम) छंद के प्रत्येक चरण में चार जगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

ज ज ज ज

(क) मया तव किञ्चिदकारि कदापि,
। ऽ ।, । ऽ ।, । ऽ ।, । ऽ ।
विलासिनि ! वाक्यमनुस्मरताऽपि ।
तथापि मनस्तव नाश्वरनाथ,
व्रजामि कुतो भवतीमपहाय ॥ (वाणीभूषण)

(ख) बड़े जन को नहिं माँगन जोग,
कहैं छल साधन मैं लघु लोग।
रमापति विष्णु असंग अनूप,
धर्यो एहि कारण वामन रूप ॥ (देवीप्रसाद पूर्ण)

(६) भुजङ्गप्रयात

लक्षण—भुजंगप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः । (पादान्त में विराम)

अर्थ—भुजंगप्रयात के प्रत्येक चरण में चार यगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

य य य य

(क) धनैर्निष्कुलीना कुलीना भवन्ति,
। ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ
धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति ।
धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके,
धनान्यर्जयध्वम् धनान्यर्जयध्वम् ॥

(ख) अजन्मा न आरंभ तेरा हुआ है,
किसी से नहीं जन्म तेरा हुआ है।
रहेगा सदा अन्त तेरा न होगा,
किसी काल में नाश तेरा न होगा ॥ (नाथूरामशंकर)

(७) स्रग्विणी

लक्षण—रैश्चतुर्भिर्युता स्रग्विणी सम्मता । (पादान्त में यति)

अर्थ—स्रग्विणी के प्रत्येक पाद में चार रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

र र र र

(क) इन्द्रनीलोपलेनेव या निर्मिता
ऽ । ऽ, ऽ । ऽ, ऽ । ऽ, ऽ । ऽ
शातकुम्भद्रवालङ्कृता शोभते ।
नव्यमेघच्छवि पीतवासा हरे-
र्मूर्तिरास्ता जयायोरसि स्रग्विणी ॥

(ख) वे गृही धन्य हैं जो मनोहारिणी,
मिष्टभाषी सुशीला सदाचारिणी।
धर्मशीला सती धीरताधारिणी,
सुन्दरीयुक्त हैं प्रेमशृङ्गारिणी ॥ (रामनरेश त्रिपाठी)

प्रति चरण १३ अक्षरवाले छन्द

(१) प्रहर्षिणी

लक्षण—म्नौ ज्रौ गस्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम्। (विराम ३, १०)

अर्थ—प्रहर्षिणी छन्द के प्रत्येक पाद में मगण, नगण, जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं। तीन और आशा (दिशा १०) पर यति होती है।

उदाहरण—

म न ज र गु

(क) ते रेखाध्वजकुलिशातपत्रचिह्नं,
S SS, I I I, I S I, S I S, S
सम्राजश्चरणयुगं प्रसादलभ्यम्।
प्रस्थानप्रणतिभिरङ्गुलीषु चक्रु
मौलिस्रक्च्युतमकरन्दरेणुगौरम् ॥ (रघुवंश ४।८८)

(ख) मानो जू, रँग रहि प्रेम में तुम्हारे,
प्राणों के, तुमहिं अधार हो हमारे।
मैंसो हो, विचरहु राम के कन्हारे,
भावे जो, शरद प्रहर्षिणी जुन्हारे ॥ (भानुकवि)

(२) रुचिरा (नामान्तर—अतिरुचिरा)

लक्षण—चतुर्ग्रहैरतिरुचिरा जभस्जगाः। (विराम ४, ९ पर)

अर्थ—रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, भगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं। चार और ग्रह (९) पर यति होती है।

उदाहरण—

ज भ स ज गु

कदा मुखं वरतनु कारणादृते,
I S I, S I I, I I S, I S I, S
तदागतं क्षणमपि कोपपात्रताम्।
अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमण्डला,
विभावरी कथय कथं भविष्यति ॥ (मालविकाग्निमित्रम् ४।११)

प्रति चरण १४ अक्षरवाले छन्द

(१) वसन्ततिलका (अन्य नाम—सिंहोन्नता तथा उद्धर्षिणी)

लक्षण—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

अर्थ—वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु के क्रम से १४ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

त भ ज ज गुगु

(क) जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
ऽ ऽ ।, ऽ ।।, । ऽ ।, । ऽ ।, ऽ ऽ
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥ (नीतिशतक)

(ख) रोगी दुखी विपद आपद में पड़े की,
सेवा सदैव करते निज हस्त से थे।
ऐसा निकेत व्रज में न मुझे दिखाया,
कोई जहाँ दुखित हो पर वे न होवें॥ (हरिऔध)

प्रति चरण १५ वर्णवाले छन्द

(१) मालिनी

लक्षण—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः। (विराम ८, ७ पर)

अर्थ—मालिनी के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण और दो यगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं। भोगी (८), लोक (७) पर यति होती है।

उदाहरण—

न न म य य

(क) मनसि वचसि काये, पुण्यपीयूषपूर्णा-
।।।, ।।।, ऽ ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून्, पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः, सन्ति सन्तः कियन्तः॥ (नीतिशतक)

(ख) सहृदय जन के जो, कंठ का हार होता,
मुदित मधुकरी का, जीवनाधार होता।
वह कुसुम रँगीला, धूल में जा पड़ा है,
नियति नियम तेरा, भी बड़ा ही कड़ा है॥ (रूपनारायण पांडेय)

(२) चामर (अन्य नाम—तूणक)

लक्षण—तूणकं समानिका पदद्वयं विनान्तियम्॥ (विराम ८, ७)

अर्थ—तूणक या चामर छंद के प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं। आठवें और पादान्त में यति होती है।

उदाहरण—

र ज र ज र

(क) मा सुवर्णकेतकं निकादि भृङ्गपूरितं,
ऽ ।ऽ, ।ऽ।, ऽ ।ऽ, । ऽ ।, ऽ । ऽ
पंचबाणबाणजालपूर्णहेतितूणकम्।
राधिका वितर्क्य माधवाद्यमासि माधवे,
मोहमेति निर्भरं त्वया विना कलानिधे॥

(ख) मत्त-दन्ति-राज राजि, बाजिराज राजि कै,
हेम हीर मुक्त चीर, चारु साज साजि कै।
बेष बेषवाहिनी, अशेष वस्तु सोधि यो
दाइजो विदेहराज, भाँति भाँति को दियो। (केशवदास)

प्रति चरण १६ वर्णवाले छन्द

पंचचामर

लक्षण—जरौ जरौ ततो जगौ च पंचचामरं वदेत्॥ (८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर विराम)

अर्थ—पंचचामर छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और गुरु के क्रम से १६ वर्ण होते हैं। ८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर यति होनी है।

उदाहरण—

ज र ज र ज गु

(क) सुरद्रुमूलमण्डपे विचित्ररत्ननिर्मिते
| S |, S | S, | S |, S | S, | S |, S
लसद्वितानभूषिते सलीलविभ्रमालसम्।
सुराङ्गनाभयल्लवीकरप्रपंचचामर-
स्फुरत्समीरवीजित सदाच्युतं भजामि तम्॥

(ख) उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से भरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती॥ (मैथिलीशरण गुप्त)

प्रति चरण १७ वर्णवाले छन्द

(१) शिखरिणी

लक्षण—रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी। (६, ११ पर विराम)

अर्थ—जिस छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर हों तथा रस (६) और रुद्र (११) पर यति हो उसे शिखरिणी कहते हैं।

उदाहरण—

य म न स भ ल ग

(क) करे श्लाघ्यस्त्यागः, शिरसि गुरुपादप्रणयिता,
| S S, S S S, | | |, | | S, S | |, | S
मुखे सत्या वाणी, विजयिभुजयोर्वीर्यमतुलम्।
हृदि स्वच्छा वृत्तिः, श्रुतमधिगतं च श्रवणयो-
र्विनाप्यैश्वर्येण, प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम्॥ (भर्तृहरि)

(ख) छटा कैसी प्यारी, प्रकृति तिय के चन्द्रमुख की
नया नीला ओढ़े, वसन चटकीला गगन का।
जरी-सा मा-रूपी, जिस पर सितारे सब जड़े
गले में स्वर्गंगा, अनिल-हिल माला सम पड़ी॥ (सत्यशरण रतूड़ी)

(२) पृथ्वी

लक्षण—जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः। (८, ९ पर विराम)

अर्थ—पृथ्वी छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, सगण, जगण, सगण, यगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं। वसु (८) और ग्रह (९) पर यति होती है।

उदाहरण—

ज स ज स य ल गु

(क) लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
। ऽ ।, । । ऽ, । ऽ ।, । । ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥ (भर्तृहरि)

(ख) अगस्त ऋषिराज जू, बचन एक मेरे सुनौ,
प्रशस्त सब भाँति भूतल सुदेश जी में गुनौ।
सुनीर तरुखंड मंडित समृद्ध शोभा धरैं,
तहाँ हम निवास की, विमल पर्णशाला करैं॥ (रामचन्द्रिका)

(३) हरिणी

लक्षण—नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता। (६, ४, ७ पर विराम)

अर्थ—हरिणी के प्रत्येक चरण में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं। छठे, दसवें और सत्रहवें अक्षर के बाद विराम होता है।

उदाहरण—

न स म र स ल गु

वहति भुवनश्रेणीं शेषः फणाफलकस्थिता,
। । ।, । । ऽ, ऽ ऽ ऽ, ऽ । ऽ, । । ऽ, । ऽ
कमठपतिना मध्येपृष्ठं सदा स च धार्यते।
तमपि कुरुते क्रोडाधीनं पयोधिरनादरा-
दहह महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः॥ (भर्तृहरि)

(४) मन्दाक्रान्ता

लक्षण—मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्। (४, ६, ७ पर विराम)

अर्थ—मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं। अम्बुधि (सागर ४), रस (६) और नग (७) पर यति होती है।

उदाहरण—

म भ न त त गु गु

(क) मौनान्मूकः, प्रवचनपटुर्वाचको जल्पको वा,
ऽ ऽ ऽ, ऽ । ।, । । ।, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ ।, ऽ ऽ
धृष्टः पार्श्वे भवति च वसन्दूरतोऽप्यप्रगल्भः।
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः,
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥ (भर्तृहरि)

(ख) जो लावेगा, नृपति मुझ से, दण्ड दूँगी करोड़ों,
लोटा थाली, सहित तनके, वस्त्र भी बेंच दूँगी।
जो माँगेगा, हृदय वह तो, वार दूँगी उसे भी
बेटा तेरा गमन मथुरा, मैं न आँखों लखूँगी॥ (हरिऔध)

प्रतिचरण १९ वर्णवाले छन्द

(१) शार्दूलविक्रीडित

लक्षण—सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्। (१२, ७ पर विराम)

अर्थ—शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, दो तगण और गुरु के क्रम से १९ वर्ण होते हैं। यति सूर्य (१२) और अश्व (७) पर होती है।

उदाहरण—

म स ज स त त गु

(क) केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला,
SSS,I I S,ISI, IIS,SS I,SS I, S
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्॥ (भर्तृहरि)

(ख) छोटे और बड़े जहाज जल में, देखो वहाँ वे खड़े,
सो भी दृश्य विचित्र किन्तु हमको, वे हानिकारी बड़े।
ले जाते वरवस्तु देशभर की जाने कहाँ की कहाँ,
लाते केवल ऊपरी चटक की, चीजें विदेशी यहाँ॥ (कन्हैयालाल पोद्दार)

प्रति चरण २० वर्णवाले छन्द

(१) गीतिका

लक्षण—सजजा भरौ सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका। (५, ७, ८ पर विराम)

अर्थ—गीतिका छन्द के प्रत्येक चरण में सगण, जगण, जगण, भगण, रगण, सगण और लघु गुरु के क्रम से २० वर्ण होते हैं। पाँचवें, बारहवें और बीसवें अक्षर के बाद यति होती है।

उदाहरण—

स ज ज भ र स लगु

(क) करतालचंचलकंकणस्वनमिश्रणेन मनोरमा,
IIS,ISI,ISI,SII, SIS,IIS,IS
रमणीयवेणुनिनादरंगिमसंगमेन सुखावहा।
बहुलानुरागनिवासरासससमुद्भवा तव राधिके,
विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनचारुचामरगीतिका॥

(ख) भज जीव री ! सुकवी मुनी सुन मो कहा चित लायकै,
नय काम लक्खन जानकी सह राम को नित गायकै।
पद भो शरीरहि राम के वर धाम को लय पावहू,
कर वीन लै अनि दीन है निज गीति कान सुनावहू॥ (भानु कवि)

प्रति चरण २१ वर्णवाले छन्द

(१) स्रग्धरा

लक्षण—म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्। (७, ७, ७ पर विराम)

अर्थ—स्रग्धरा के प्रत्येक पाद में मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण के क्रम से २१ अक्षर होते हैं। सातवें, चौदहवें और इक्कीसवें अक्षर के अन्त में यति होती है।

उदाहरण—

म र भ न य य य

(क) प्राणाघातान्निवृत्तिः, परधनहरणे संयमः, सत्यवाक्यं,
S S S, S I S, S I I, I I I I S S, I S S, I S S
काले शक्त्या प्रदानं, युवतिजनकथा, मूकभावः परेषाम्।
तृष्णास्रोतोविभंगो, गुरुषु च विनयः, सर्वभूतानुकम्पा,
सामान्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः, श्रेयसामेष पन्थाः। (भर्तृहरि)

(ख) नाना फूलों-फलों से, अनुपम जग की, वाटिका है विचित्रा,
भोक्ता हैं स्वेच्छा ही, मधुप शुक तथा कोकिला गानशील।
कीट भी हैं अनेकों, पर धन हरने में सदा अग्रगामी,
कोई है एक माली, सुधि इन सबकी, जो सदा ले रहा है॥ (रामनरेश त्रिपाठी)

(ख) वर्णवृत्त, अर्द्धसम छन्द

(१) वियोगिनी (अन्य नाम—सुन्दरी)

लक्षण—विषमे ससजा गुरुः समे, सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी।

अर्थ—वियोगिनी के विषम (प्रथम, तृतीय) चरणों में दो सगण, जगण और गुरु के क्रम से १०-१० अक्षर और सम (द्वितीय, चतुर्थ) चरणों में सगण, भगण, रगण, लघु और गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर होते हैं। (१०, ११, १०, ११)।

उदाहरण—

स स ज गु

(क) सहसा विदधीत न क्रियाम्,
I I S, I I S, I S I, S
अविवेकः परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं
स भ र लघु
गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः॥ (किरातार्जुनीय २।३०)
I I S, S I I, S I S, I S

(ख) चिर-काल रसाल ही रहा,
जिस भावज्ञ कवीन्द्र का कहा।
जय हो उस कालिदास की,
कविता-केलि-कला-विलास की॥ (छन्दरत्नावली)

(२) हरिणप्लुता

लक्षण—सयुगात् सलघू विषमे गुरुर्युजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता।

अर्थ—हरिणप्लुता छन्द के विषम चरणों मे तीन सगण और लघु-गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर और सम चरणों मे नगण दो भगण और रगण के क्रम से १२-१२ अक्षर होते हैं।

(११, १२, ११, १२)

उदाहरण—

स स स लगु

स्फुटफेनचया हरिणप्लुता,
। । ऽ, । । ऽ, । । ऽ, । ऽ
बलिमनोज्ञतटा तरणे सुता।
कलहंसकुलारवशालिनी,

न भ भ र

विहरतो हरति स्म हरेर्मन ॥ (छन्दोमञ्जरी)
। । ।, ऽ । ।, ऽ । ।, ऽ । ऽ

(३) अपरवक्त्र

लक्षण—अयुजि ननरला गुरुः समे।
तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ ॥

अर्थ—अपरवक्त्र वृत्त के विषम चरणों में दो नगण, एक रगण और लघु-गुरु के क्रम से ११ ११ अक्षर और समचरणों में नगण, दो जगण और रगण के क्रम से १२ १२ अक्षर होते हैं।

(११, १२, ११, १२)

उदाहरण—

न न र लगु

स्फुटसुमधुरवेणुगीतिभि-
। । ।, । । ।, ऽ । ऽ, । ऽ
स्तमपरवक्त्रमवेत्य माधवम्।
मृगयुवतिगणै समं स्थिता

न ज ज र

व्रजवनिता धृतचित्तविभ्रमा ॥ (छन्दोमञ्जरी)
। । ।, । ऽ । , । ऽ । , ऽ । ऽ

(४) पुष्पिताग्रा (नामान्तर औपच्छन्दसिक)

लक्षण—अयुजि नयुगरेफतो यकारो,
युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा।

अर्थ—पुष्पिताग्रा के विषम चरणों में दो नगण, रगण और यगण के क्रम से १२ १२ अक्षर तथा सम चरणों में नगण, दो जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३ १३ अक्षर होते हैं।

(१२, १३, १२, १३)

उदाहरण—

न न र य

(क) अथ मदनवधूरुपप्लवान्त
 ।। ।, ।।।, ऽ।ऽ, ।ऽ ऽ
 व्यसनकृशा परिपालयांबभूव।
 शशिन इव दिवातनस्य लेखा
 भ ज ज र
 गु
 किरणपरिक्षयधूसरा प्रदोषम्॥ (कुमारसम्भव ४।४६)
 ।।।, ।ऽ।, ।ऽ।, ऽ।ऽ, ऽ

(ख) प्रभु सम नहिं अन्य कोइ दाता,
 सुध न जु ध्यावत तीन लोक त्राता।
 सकल असन कामना विहाई,
 हरि नित सेवहु मित्त चित्त लाई॥ (भानुकवि)

(ग) वर्णवृत्त, विषम छन्द

उद्गता

लक्षण—प्रथमे सजौ यदि सलौ च नसजगुरुकाण्यनन्तरम्।
 यद्यथ भनजलगाः स्युरथो सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता॥

अर्थ—उद्गता के प्रथम चरण में सगण, जगण, सगण और लघु के क्रम से १० अक्षर, द्वितीय चरण में नगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १० अक्षर, तृतीय चरण में भगण, नगण, जगण और लघु गुरु के क्रम से ११ अक्षर तथा चतुर्थ चरण में सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १३ अक्षर होते हैं। (१०, १०, ११, १३)

उदाहरण—

 स ज स
 ल
 अथ वासवस्य वचनेन,
 ।। ऽ, ।ऽ।, ।।ऽ, ।
 न स ज
 गु
 रुचिरवदनस्त्रिलोचनम्।
 ।।।, ।।ऽ, ।ऽ, ।ऽ
 भ न ज
 ल गु
 क्लान्तिरहितमभिराधयितुं,
 ऽ । ।, ।।।, ।ऽ।, ।ऽ
 स ज स ज
 गु
 विधिवत्तपांसि विदधे धनंजयः॥ (किरातार्जुनीय १२।१)
 । ।ऽ, ।ऽ।, ।।ऽ, ।ऽ।, ऽ

(घ) मात्रिक वा जाति छन्द

आर्या (विषम छन्द)

लक्षण—यस्याः पादे प्रथमे, द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पञ्चदश सार्या॥

अर्थ—आर्याछन्द के प्रथम और तृतीय चरण में १२-१२ मात्रायें, द्वितीय में १८ तथा चतुर्थ में १५ मात्रायें होती हैं। (१२, १८, १२, १५ मात्रायें)

उदाहरण—

S S I I I I I I I I
(क) सिंह: शिशुरपि निपतति, = १२
I I I I I I S I S I I I S S
मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु। = १८
I I I I S S I I S
प्रकृतिरियं सत्ववता, = १२
I I I I S S I S S S
न खलु वयस्तेजसा हेतु:। = १५

(ख) कवि *निर्धन* भी होकर,
शठ की सेवा कभी न करता है।
रत्नाकर में जाकर,
हंस कभी क्या विचरता है॥ (रामचरित उपाध्याय)



पञ्चम परिशिष्ट

संस्कृत-साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय

अनंगहर्ष—ये चेदिदेश के कल्चुरीवंशीय नृप नरेन्द्रवर्धन के पुत्र थे। वास्तविक नाम मातराज (मातृराज) था। समय अष्टम शतक का उत्तरार्द्ध है। इनकी कृति 'तापस वत्सराज' (नाटक) में उदयन तथा वासवदत्ता की प्रसिद्ध कथा है। 'मायुराजसमो जज्ञे नान्य कल्चुरिः कवि' (राजशेखर)।

अप्पय दीक्षित—इनका जन्म भारद्वाजगोत्रीय रंगराज के गृह में १५५४ ई० में काञ्ची के समीप अडयपलम में हुआ था। ये अनेक वर्षों तक वेल्लोर और विजयनगर की राजसभाओं में सम्मानित रहे। प्रख्यात वैयाकरण भट्टोजीदीक्षित को वेदान्त इन्हीं ने पढ़ाया था। पूर्व तथा उत्तरमीमांसा के ये पारदृश्वा पंडित थे। १६२६ ई० में इन्होंने ग्यारह विद्वान् पुत्रों की उपस्थिति में चिदम्बरम् में स्वयं प्राणविसर्जन किया। काव्य, अलंकार, तर्क, दर्शन आदि अनेक विषयों पर इन्होंने १०४ ग्रंथों की रचना की जिनमें से काव्यकृतियाँ निम्नलिखित हैं—शिवपञ्चाशिका, दशकुमारचरितसंग्रह, पञ्चरत्नस्तव, शिवकर्णामृत, वैराग्यशतक, भक्तामरस्तव, शान्तिस्तव, रामायण-तात्पर्यनिर्णय, वरदस्तव, वरदराजस्तव, आदित्यस्तोत्ररत्न आदि। वसुमतीचित्रसेनविलास (नाटक), चित्रमीमांसा, वृत्तिवार्तिक, कुवलयानन्द (अलंकार) आदि के अतिरिक्त इन्होंने कई ग्रंथों पर टीकाएँ भी रची हैं।

अमरुक—इस कवि का वंश, देश, काल आदि अज्ञात है। आनन्दवर्धन ने 'ध्वन्यालोक' में इन के 'अमरुकशतक' के शृंगारी मुक्तकों की सरसता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। अतः ये नवमी शताब्दी से पूर्व विद्यमान थे। ये शब्द-कवि न थे, रस-कवि थे। हिन्दी के बिहारी, पद्माकर आदि कवियों पर इनके काव्य का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

अश्वघोष—संस्कृत के बौद्ध कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। इनका जन्म साकेत में सम्भवतः ब्राह्मणवंश में सुवर्णाक्षी के गर्भ से हुआ था। परम्परानुसार ये महाराज कनिष्क (७८ ई०) के गुरु तथा आश्रित कवि थे। ये दार्शनिक तथा संगीतज्ञ भी थे। बौद्ध बनने के बाद इन्होंने बौद्धधर्म के प्रचार में भरसक सहयोग दिया। 'सौन्दरानन्द' तथा 'बुद्धचरित' इनके प्रख्यात महाकाव्य हैं। 'सौन्दरानन्द' के १८ सर्ग हैं। उनमें बुद्ध के उपदेश से उनके अनुज नन्द द्वारा पत्नी सुंदरी के परित्याग तथा दीक्षाग्रहण की कथा है। 'बुद्धचरित' के २८ सर्गों में से १७ उपलब्ध हैं और बुद्धचरित विषयक हैं। वैदर्भी रीति में रचित ये महाकाव्य संस्कृत काव्यसाहित्य के अलंकार हैं। अश्वघोष संस्कृत के प्रथम बौद्ध नाटककार हैं। इनके तीन नाटक उपलब्ध हुए हैं। 'शारिपुत्र-प्रकरण' नौ अंकों में है और पूर्ण है। इसमें बुद्ध के उपदेश से शारिपुत्र और मौद्गल्यायन के दीक्षित होने का उल्लेख है। शेष दो नाटक लुप्तनामक और खण्डित हैं। उनमें एक का कथानक 'प्रबोधचन्द्रोदय' के समान रूपकात्मक है और दूसरे का 'मृच्छकटिक' के तुल्य वेश्यानायकप्रणयात्मक।

आर्यशूर—ये बौद्धकवि सम्भवतः पाँचवीं शताब्दी में विद्यमान थे। 'जातकमाला' तथा 'पारमितासमास' इनकी दो प्रख्यात कृतियाँ हैं। इनकी कीर्ति का आधार-स्तम्भ 'जातक-माला' है जिसमें महात्मा बुद्ध के ३४ जन्मों की कथाएँ गद्य पद्यमयी सरस भाषा में वर्णित हैं। दूसरे काव्य में दान, शील, क्षान्ति आदि विषयों पर रचना की गई है। 'जातकमाला', 'पालिजातक' के आधार पर रचित स्वतन्त्र कृति है। इसके पद्यभाग के समान गद्यभाग भी सुश्लिष्ट, सुन्दर तथा सरस

है।' जातकमाला के कुछ अंश का चीनी में अनुवाद ९६० और ११२७ ई० के मध्य में किया गया था।

कल्हण (कल्याण)—इनके पिता चणपक काश्मीरनरेश हर्ष (१०८९–११०१ ई०) के प्रधानमंत्री थे। ये अलकदत्त नामक व्यक्ति के आश्रित थे। इन्होंने राजदरबार से दूर रहकर अपनी प्रख्यात ऐतिहासिक काव्यकृति 'राजतरंगिणी' की रचना सुस्सल के तनुज राजा जयसिंह (११२७–५९ ई०) के शासनकाल में की थी। 'राजतरंगिणी' का निर्मितिकाल ११४८–११५० ई० है। इसमें काश्मीर के राजनीतिक इतिहास, भौगोलिक विवरण, सामाजिक व्यवस्था, साहित्यिक समृद्धि आदि का सविस्तर और रोचक उल्लेख किया गया है। 'राजतरंगिणी' काव्य तथा इतिहास दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण कृति है जिसमें काश्मीर के प्राचीन काल से लेकर बारहवीं शती तक का विश्वसनीय वृत्त प्रस्तुत किया गया है।

कविराज सूरि—जयन्तपुरी के राजा कामदेव (११८२–९७ ई०) के सभापण्डित माधवभट्ट की ही उपाधि कविराज थी। इनकी रचना 'राघवपाण्डवीय' अपने ढंग की अपूर्व कृति है जिसका अनुकरण परवर्ती अनेक कवियों ने किया। इसका प्रत्येक पद्य श्लिष्ट है और रामायण तथा महाभारत दोनों से सम्बन्धित अर्थ व्यक्त करता है। इसी के अनुकरण पर हरदत्त ने 'राघवनैषधीय', चिदम्बर ने 'राघवपाण्डवयादवीय' और विद्यामाधव ने 'पार्वतीरुक्मिणीय' नामक काव्यों की सृष्टि की। इस प्रकार की श्लिष्ट रचनाएँ संस्कृत के अतिरिक्त सभी भाषाओं में अलभ्य हैं और सम्भवतः अलभ्य रहेंगी।

कालिदास—कुछ विद्वान् इन्हें ई० पू० प्रथम शताब्दी में मानते हैं तो कुछ छठी शती ईसवी में। कोई इनकी जन्मभूमि काश्मीर मानता है, कोई बंगाल और कोई उज्जयिनी। बहुमत उज्जयिनी के प्रति विशेष पक्षपात तथा सूक्ष्म भौगोलिक परिचय के आधार पर कालिदास उज्जयिनीवासी प्रतीत होते हैं।

कृतियाँ—ऋतुसंहार, कुमारसम्भव, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, रघुवंश, अभिज्ञान शाकुन्तल, मेघदूत।

'कुमारसम्भव' तथा 'रघुवंश' महाकाव्य हैं। 'कुमारसम्भव' के १७ सर्गों में शिव-पार्वती के विवाह, कार्त्तिकेय की उत्पत्ति तथा तारकासुर के वध की कथा है। 'रघुवंश' के १९ सर्गों में सूर्यवंशी राजाओं का कीर्तिगान है। मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशाकुन्तल—तीनों नाटक हैं। प्रथम में राजा अग्निमित्र और मालविका की, द्वितीय में राजा पुरूरवा और अप्सरा उर्वशी की तथा तृतीय में राजा दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रेमकथा का वर्णन है। 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' संस्कृत गीतिकाव्य की प्राचीनतम कृतियाँ हैं। ऋतुसंहार के १४४ पद्यों में षड्ऋतुओं का सुन्दर वर्णन है तथा उनका प्रेमियों के हृदय पर प्रभाव अंकित किया गया है। 'मेघदूत' के १११ पद्यों में एक निर्वासित विरही यक्ष की मनोव्यथा का हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। कालिदास की सर्वप्रियता का कारण है उनकी प्रसादपूर्ण, लालित्योपेत, परिष्कृत शैली। इन्होंने सभी ग्रन्थ वैदर्भी रीति में लिखे हैं। उपमाओं में ये अपना जोड़ नहीं रखते। भाव, रस, भाषा, शैली, छंद, अलंकार जिस किसी भी दृष्टि से देखें कालिदास उत्कृष्टतम ठहरते हैं।

कुमारदास—सिंहल की जनश्रुति के अनुसार कुमारदास ने वहाँ ५१७–५२६ ई० तक शासन किया था। आधुनिक विद्वान् इन्हें ६५० और ७५० ई० के बीच में मानते हैं। इनके महाकाव्य 'जानकीहरण' के २५ में से १५ सर्ग ही प्राप्त हैं। कथा रामायण की पुरानी ही है परन्तु वर्णन-शैली अभिरूप है। प्रसाद, सुकुमारता, शब्दसौष्ठव तथा नादसौन्दर्य कृति के उल्लेख्य गुण हैं। राजशेखर (९०० ई०) ने इसकी प्रशंसा में यों लिखा है—

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः॥

रघुवंश की विद्यमानता में जानकीहरण करना या तो रावण का काम है या फिर कुमारदास का।

कृष्ण मिश्र—'प्रबोधचन्द्रोदय' नामक रूपक नाटक के रचयिता कृष्ण मिश्र जेजाकभुक्ति के राजा कीर्तिवर्मा के शासनकाल में ११०० ई० के लगभग विद्यमान थे। भास के 'बालचरित' के समान इस नाटक में विवेक, मोह, ज्ञान, विद्या आदि भावों को स्त्री पुरुष पात्रों के रूप में कल्पित किया गया है। इसी कृति के अनुकरण पर यश पाल ने 'मोहपराजय', वेंकटनाथ ने 'सङ्कल्पसूर्योदय' तथा कविकर्णपूर ने 'चैतन्यचन्द्रोदय' की रचना की। हिन्दी कवि केशवदास ने 'विज्ञानगीता' में इसका छन्दोबद्ध अनुवाद किया है। दार्शनिक दृष्टि से कृति महत्त्वपूर्ण है।

क्षेमेन्द्र—सिन्धु के पौत्र तथा प्रकाशेन्द्र के पुत्र क्षेमेन्द्र का जन्म काश्मीर के एक धनाढ्य और उदार परिवार में हुआ था। इन्होंने आचार्य अभिनवगुप्त से साहित्याध्ययन किया था। ये ११वीं शती के मध्य में विराजमान थे। शैवमंडल में रहते हुए भी ये परम वैष्णव थे और इसका कारण था भागवताचार्य सोमपाद की शिक्षा।

इनके बृहदाकार अनेक ग्रंथों में से प्रमुख ये हैं—रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी तथा बृहत्कथा मञ्जरी। ये क्रमशः रामायण, महाभारत और गुणाढ्य की बृहत्कथा के आधार पर रचित स्वतन्त्र काव्यकृतियाँ हैं। 'दशावतारचरित' में विष्णु के दशावतारों का तथा 'बोधिसत्त्वावदान कल्पलता' में जातक कथाओं का सरल सुन्दर वर्णन है। अन्याकार कृतियों में कलाविलास, चतुर्वर्ग संग्रह, चारुचर्या, नीतिकल्पतरु, समयमातृका और सेव्यसेवकोपदेश व्यवहारविषयक सुन्दर काव्यकृतियाँ हैं। इनकी रचनाएँ साहित्यिकता से पूर्ण भी हैं और लोकोपकार की भावना से ओत प्रोत भी।

गोवर्धनाचार्य—ये बंगाल के अन्तिम हिन्दू नरेश लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) की सभा के प्रतिष्ठित कवि थे। 'आर्यासप्तशती' इनकी एकमात्र रचना है जो 'हाल' की 'गाथासप्तशती' के अनुकरण पर रचित है। 'गाथासप्तशती' तो हालकृत संग्रह है परन्तु 'आर्यासप्तशती' केवल आचार्य की रचना है। इसमें संयोग तथा वियोग शृंगार की विविध दशाओं का मार्मिक चित्रण पुष्ट आर्या छन्द में किया गया है। नागरिक ललनाओं की शृङ्गारिक चेष्टाओं तथा ग्रामीण रमणियों की स्वाभाविक उक्तियों का उल्लेख अत्यन्त रमणीय है। हिन्दी के बिहारी आदि शृङ्गारी कवि भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे।

जगन्नाथ (पंडितराज)—आंध्र ब्राह्मण जगन्नाथ काशीनिवासी पेरुभट्ट तथा लक्ष्मीदेवी के पुत्र थे। इन्होंने काव्य और अलंकार का अध्ययन अपने पिता से किया और न्याय, व्याकरण आदि विषयों का ज्ञानेन्द्रभिक्षु, महेशाचार्य, खण्डदेव, शेष वीरेश्वर आदि से। दिल्लीश्वर शाहजहाँ (शासन १६२८-६६ ई०) ने इन्हें दाराशिकोह के शिक्षार्थ दिल्ली में बुलवा लिया था। उसके पश्चात् वृद्धावस्था में इनका स्वर्गवास १६७४ ई० में मथुरा में हुआ। कहते हैं, किसी यवनी के प्रेमजाल में फँसने के कारण इन्हें स्वजातीयों का कोपभाजन भी बनना पड़ा था।

गंगालहरी, सुधालहरी, अमृतलहरी, करुणालहरी और लक्ष्मीलहरी इनके सरस काव्यस्तोत्र हैं। 'जगदाभरण' में दाराशिकोह का, 'आसफविलास' (गद्यकाव्य) में नवाब आसफखाँ का और प्राणाभरण' में कामरूपाधिपति प्राणनारायण का वर्णन है। इनकी अन्य कृतियाँ 'चित्रमीमांसा खंडन', मनोरमाकुचमर्दन' तथा 'भामिनीविलास' हैं। इनकी सर्वोत्तम कृति 'रसगंगाधर' नामक अलंकार शास्त्र है जिसमें इनके प्रकाण्ड पाण्डित्य तथा असमिम काव्यप्रतिभा का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। इन्हें अपने पाण्डित्य और कवित्व पर जो अभिमान था, वह अनुचित न था।

जयदेव—सात अंकों के प्रसिद्ध संस्कृत नाटक 'प्रसन्नराघव' के कर्ता जयदेव का परिचय अभी तिमिराच्छन्न है। सुनते हैं, ये मिथिलावासी थे। ये १४वीं शती से पूर्व हुए हैं। 'प्रसन्नराघव' में रामायणीय कथा सुचारु रीति से चित्रित की गई है। मंजुल पदावली तथा प्रसादोपेत कविता

के कारण नाटक का नाम सार्थक है। 'रामचरितमानस' के कई स्थलों पर इन दार्शनिक और कवि का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

जयदेव—अमर काव्य 'गीतगोविन्द' के रचयिता जयदेव बंगाधिपति लक्ष्मणसेन (११९६ ई०) के सभारत्न थे। बंगाल के केन्दुबिल्व नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था। वे राधा कृष्ण की भक्ति के रस में पूर्णतया डूबे हुए थे और उसी रस से पूर्ण 'गीतगोविन्द' नामक गीतिकाव्य भी है। १२ सर्गों का यह गीतिकाव्य इतना सरस व मधुर है कि कालिदास की कृतियों को भी मात करता है। भाव-सौष्ठव, कल्पनोत्कर्ष और सुललित पदावली के कारण रचना अपने ढंग की एक ही है।

तिरुमलाम्बा (रानी)—राजा अच्युत राय की पत्नी तिरुमलाम्बा ने 'वरदाम्बिकापरिणयचम्पू' की रचना १५२९-४० के बीच में किसी समय की। इसमें अच्युत राय और वरदाम्बिका के प्रेम तथा परिणय का वर्णन है। सम्भव है, रानी ने रूपान्तर से अपनी ही कथा अंकित की हो। कृति से कर्त्री की पुष्ट कल्पना तथा संस्कृत भाषा पर पूर्ण अधिकार का परिचय मिलता है।

त्रिविक्रम भट्ट—शाण्डिल्यगोत्री त्रिविक्रम या सिंहादित्य, नेमादित्य (देवादित्य) के पुत्र थे। राष्ट्रकूट नृपति सुभाष इन्द्र (९१४-९१६ ई०) के सभाकवि थे। 'नलचम्पू' (दमयन्तीकथा) और 'मदालसाचम्पू' इनकी विख्यात कृतियाँ हैं। ये संस्कृत-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ श्लेष-कवि हैं। 'नलचम्पू' में सरस तथा चमत्कारपूर्ण श्लेषों का प्राचुर्य है। इस कृति के कमनीय उद्धरणों को भोजराज तथा विश्वनाथ ने अनेकत्र उद्धृत किया है। नलचम्पू संस्कृत का प्रथम उपलब्ध चम्पू है।

दण्डी—कहा जाता है कि दण्डी का जन्म भारवि की चौथी पीढ़ी में हुआ था। इनकी माता का नाम गौरी तथा पिता का वीरदत्त था। ये सप्तमी शती के उत्तरार्द्ध तथा अष्टमी के पूर्वार्द्ध में विद्यमान थे और काञ्ची के पल्लवनरेशों की सभा में रहते थे।

इनकी तीन रचनाएँ हैं—दशकुमारचरित, काव्यादर्श तथा अवन्तिसुन्दरीकथा (?)। एक किंवदन्ती के अनुसार इन्होंने 'काव्यादर्श' की रचना पल्लवनरेश के पुत्र के शिक्षार्थ की थी। 'दशकुमारचरित' नामक प्रख्यात गद्यकाव्य में दस कुमारों के रोमांचजनक चरित प्रस्तुत किये गये हैं। छल-कपट, मारकाट तथा रत्याभास से परिपूर्ण होने के कारण रचना अत्यन्त सजीव है। पात्रों के चरित्र सुन्दर शैली में हैं तथा हास्य और व्यंग्य से पूर्ण हैं। भाषाशैली के विचार से भी यह रचना रम्य है। भाषा प्रवाहपूर्ण, परिष्कृत तथा मुहावरों से अलंकृत है। जो पदलालित्य दण्डी में है वह अन्यत्र दुर्लभ है। कहा भी है—'दण्डिनः पदलालित्यम्'। कुछ आलोचक वाल्मीकि और व्यास के अनन्तर इन्हें ही तीसरा कवि मानते हैं—

> जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत्।
> कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि॥

दामोदर मिश्र—इनके महानाटक 'हनुमन्नाटक' की रचना ८५० ई० के पूर्व हुई थी। इसमें १४ अंक हैं और कथानक रामायण पर आधृत है। प्रस्तावना और प्राकृत का अभाव, पद्यों की प्रचुरता, गद्य की न्यूनता, पात्रों की बहुलता तथा विदूषक की अविद्यमानता इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं। इसके दो संस्करण हैं—प्रथम दामोदर मिश्र कृत, द्वितीय जिसमें ९ अंक हैं, मधुसूदन-रचित है।

दिङ्नाग—'कुन्दमाला' नाटक के रचयिता दिङ्नाग या धीरनाग (अथवा वीरनाग) पाँचवीं शती के बौद्ध दार्शनिक दिङ्नाग से सर्वथा भिन्न हैं। ये १००० ई० के लगभग हुए हैं। 'कुन्दमाला' की कथा 'उत्तररामचरित' के समान वैदेहीवनवास पर आश्रित है। इस पर उत्तररामचरित का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। यह नाटक 'उत्तररामचरित'-सा सरस तो नहीं परन्तु क्रियाशीलता में उससे बढ़कर है। शैली प्रसादपूर्ण है तथा करुण-रस की व्यंजना अच्छी हुई है।

धोयी—जयदेव ने 'गीतगोविन्द' (१४) में धोयी को 'श्रुतिधर' लिखा है। ये गोवर्धनाचार्य तथा जयदेव के साथ राजा लक्ष्मणसेन (११९६ ई०) की सभा में विद्यमान थे। मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखे हुए इनके 'पवनदूत' में १०४ पद्य हैं। मलयाचल में कुवलयवती नाम्नी गन्धर्वकन्या दिग्विजयी लक्ष्मणसेन पर आसक्त हो गई और उसने उनके विदेश जाने पर पवन द्वारा सन्देश भेजा। 'मेघदूत' का प्रभाव इस कृति पर स्पष्ट दिखाई देता है। काव्य में भावसौष्ठव तथा वाक्यविन्यास मनोरम है।

नारायणपण्डित—ये बंगाल के राजा धवलचन्द्र के आश्रित थे। इन्होंने १४वीं शती से पूर्व 'हितोपदेश' की रचना बहुत सीमा तक 'पंचतंत्र' के आधार पर की। कई श्लोक कामन्दकीय नीतिसार से लिए गए हैं। हितोपदेश में नीतिसम्बन्धी रोचक गद्यपद्यमयी कथाएँ हैं। भाषा सरल एवं सुबोध है।

पद्मगुप्त—ये धारानरेश मुञ्ज तथा उनके पुत्र सिन्धुराज (नवसाहसांक) के सभाकवि थे। इन्होंने 'नवसाहसांकचरित' काव्य की रचना सं० १००५ ई० के आसपास की थी। काव्य का विषय कृति नाम से ही अनुमित हो जाता है। उसमें सिन्धुराज और शशिप्रभा के विवाह आदि का उल्लेख है। ऐतिहासिक तथ्यों की दृष्टि से भी कृति महत्त्वपूर्ण है। कृति में १८ सर्ग तथा १९ प्रकार के छन्द हैं और कुल १५०० पद्य हैं। भाषा व शैली कालिदास से प्रभावित है। काव्य का माधुर्य तथा वर्णनकौशल प्रशस्य है।

बाणभट्ट—बाणभट्ट के पूर्वज अत्यन्त विद्वान् थे और सोननीरवर्ती प्रीतिकूट नगर में रहते थे। बाण का जन्म वात्स्यायनगोत्री चित्रभानु के गृह में हुआ था। कुसंगति में पड़कर बाण पहले तो आवारा घूमते रहे परन्तु सँभलने पर महान् विद्वान् तथा सम्राट् हर्षवर्धन के सभारत्न बन गये। बाण अपनी 'कादम्बरी' को पूर्ण नहीं कर पाये थे कि काल का निमन्त्रण आ पहुँचा। उस अपूर्ण कृति को इनके पुत्र पुलिन या पुलिन्दभट्ट ने पूर्ण किया। कहते हैं बाण का विवाह मयूर कवि की पुत्री से हुआ था और उनकी एकाधिक सन्तान थी। बाण का स्फुरण सातवीं शती में हुआ। उनकी प्रख्यात कृतियाँ ये हैं—

१ 'चण्डीशतक' में देवी भगवती की प्रशंसा है।

२ 'हर्षचरित' के प्रथम दो उच्छ्वासों में कवि का आत्मचरित है और शेष छह में हर्ष का चरित। यह रचना बड़ी ओजस्विनी तथा समासबहुला है। संस्कृत की प्राचीनतम उपलब्ध आख्यायिका यही है।

३ 'कादम्बरी' इनकी उत्कृष्टतम कृति है। दो तिहाई भाग (पूर्वार्द्ध) बाणकृत है और उत्तरार्द्ध पुलिन्दरचित। भाव, भाषा, कल्पना, वर्णन, रस—सभी दृष्टियों से कादम्बरी अनुपम है।

४ 'पार्वतीपरिणय' नाटक में शिवपार्वती के विवाह का वर्णन है, कई लोग इसे किसी अन्य बाण की कृति कहते हैं।

५ 'मुकुटताडितक' नाटक भी इनकी रचना कहा गया है परन्तु अभी तक प्राप्त नहीं हुआ।

किसी ने तो समग्र संसार को ही बाण का जूठा कहा है—'बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्।' गोवर्धनाचार्य ने तो बाण को वाणी का अवतार ही माना है—

जाता शिखण्डिनी प्राग् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि।
प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणी बाणो बभूवेति॥

बिल्हण—अपने ऐतिहासिक महाकाव्य 'विक्रमाङ्कदेवचरित' में बिल्हण ने स्वपरिचय भी प्रस्तुत किया है। बिल्हण ज्येष्ठकलश और नागदेवी के पुत्र तथा इष्टराम और आनन्द के भाई थे। आश्रयदाता की खोज में ये काश्मीर से निकलकर मथुरा, प्रयाग, काशी आदि होते हुए कल्याणनगर के चालुक्यवंशीय विक्रमादित्य षष्ठ (१०७६–११२७) की सभा में जा

पहुँचे। उक्त काव्य में कवि ने निज आश्रयदाता तथा उसके वंश का विस्तृत वर्णन किया है। १८ सर्गों के इस काव्य में माधुर्य एवं प्रसाद की भाषा प्रचुर है तथा वैदर्भी रीति प्रयुक्त की गई है। यह काव्य अनूठी सूक्तियों तथा वीर, शृङ्गार और करुण रस से पूर्ण है।

भट्टनारायण—इनका विशेष वृत्त अभी तक अविदित है। सुनते हैं, ये उन पाँच कनौजिया ब्राह्मणों में से थे जिन्हें वङ्गनरेश 'आदिशूर' ने वङ्ग में वैदिकधर्म प्रचारार्थ बुलाया था। आदिशूर ७१५ ई० में गौडाधिपति के पद पर आसीन हुए थे। इनका नाटक 'वेणीसंहार' ८०० ई० से पूर्व रचा जा चुका था। कवि की उक्त एकमात्र कृति का विषय है महाभारत का युद्ध। रचना में गौडी रीति तथा ओजगुण विशिष्ट रूप से मिलता है। नाटकीय सिद्धान्तों के प्रदर्शनार्थ नाटक अत्यन्तोपयोगी है।

भट्टि या भर्तृस्वामी—'भट्टिकाव्य' (रावणवध) के रचयिता का विशेष वृत्त अज्ञात है। इस महाकाव्य के अन्तिम पद्य से ज्ञात होता है कि वल्भी नरेश श्रीधरसेन की सभा में कवि समादृत था। भट्टि का समय छठी शती का उत्तरार्द्ध तथा सप्तमी का पूर्वार्द्ध है।

उक्त महाकाव्य की रचना सरलता से व्याकरण सिखाने को की गई थी। इसके २२ सर्गों में १६२४ श्लोक हैं। इसके प्रकीर्ण, प्रसन्न, अलङ्कार और तिङन्त नामक चार भागों में व्याकरण तथा अलंकारों का सुन्दर निरूपण हुआ है। राम-कथा के साथ-साथ पाठक को व्याकरण ज्ञान भी पूर्णतया हो जाता है। काव्यत्व की दृष्टि से भी ग्रन्थ उपादेय है। कवि ने इसके उद्देश्य के विषय में स्वयं लिखा है—

दीपतुल्यः प्रबन्धोऽयं शब्दलक्षणचक्षुषाम्।
हस्तादर्श इवान्धानां भवेद् व्याकरणादृते॥

और [illegible] उद्देश्य की पूर्ति में कृति सफल हुई है।

भर्तृहरि—भर्तृहरि का नाम जितना प्रसिद्ध है उतना ही जीवन चरित अज्ञात। कुछ लोग इन्हें महाराज विक्रमादित्य का अग्रज मानते हैं परन्तु अधिकतर विद्वान् इन्हें प्रख्यात वैयाकरण भर्तृहरि से अभिन्न कहते हैं। कुछ लोग इन्हें बौद्ध कहते हैं परन्तु इनकी कृतियाँ इन्हें अद्वैतवादी वैदिकधर्मी घोषित करती हैं। इनका समय सप्तमी शती कहा जाता है।

इनके तीन शतक प्रसिद्ध हैं—नीतिशतक, शृङ्गारशतक और वैराग्यशतक। भर्तृहरि ने जो पर्याप्त सांसारिक अनुभव प्राप्त किया था उसी को स्वकृतियों में अङ्कित कर अक्षय यश प्राप्त किया है। धार्मिक कृतियों में जैसे गीता प्रख्यात है, लौकिक कृतियों में वैसे ही इनकी शतकत्रयी।

भवभूति—इनके नाटकों की प्रस्तावना से विदित होता है कि इनका जन्म विदर्भ (बरार) के पद्मपुर नगर में उदुम्बरवंशी विप्र परिवार में हुआ था। इनका परिवार कृष्णयजुर्वेद का अध्येता तथा सोमयाजी था। ये भट्टगोपाल के पौत्र तथा नीलकण्ठ के पुत्र थे। इनकी जननी का नाम जतुकर्णी था तथा इनका निजी नाम श्रीकण्ठ था। भवभूति इनका प्राप्त प्रदत्त नाम था और ये ज्ञाननिधि के शिष्य थे। इनका जीवन-काल सम्भवतः ६५०-७५० ई० के मध्य में होगा। ये प्रख्यात मीमांसक कुमारिल भट्ट के भी शिष्य थे और दार्शनिक जगत् में भट्ट उम्बेक के नाम से विख्यात थे।

इनके तीन रूपक प्राप्त हुए हैं—महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित। महावीरचरित के छह अङ्कों में श्रीराम का चरित प्रस्तुत किया गया है। नाटक वीररस प्रधान है। मालतीमाधव दस अंकों का विशाल 'प्रकरण' है। इसमें मालती तथा माधव की काल्पनिक प्रेम-कथा को भावपूर्ण ढङ्ग से उपन्यस्त किया गया है। उत्तररामचरित में सीताजीवन का बहुत [illegible] करुणाजनक वर्णन है। सात अंकों की यह रचना भवभूति की सर्वोत्कृष्ट कृति है। इसमें कवि ने राम के विलाप से निर्जीव पत्थरों तक को रुलाया है। कवि ने अपने कल्पना बल से वाल्मीकीय

रामायण के कई प्रसंगों में परिवर्तन कर दिये हैं। इनकी कविता में भाव तथा भाषा का अतुल्य सामञ्जस्य है। भाषा में भावानुकूल परिवर्तन करने में ये विशेष निपुण थे। यों तो सभी रसों की अभिव्यक्ति में ये कुशल थे परन्तु करुणरस की व्यञ्जना में तो विशेष दक्ष थे। नाटककारों में कालिदास के पश्चात् इन्हीं का नाम लिया जाता है।

भारवि—'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार ये दाक्षिणात्य थे और पुलकेशी द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (शासनकाल ६१५ ई०) के सभाकवि थे। कुछ विद्वान् इन्हें त्रवणकोरवासी बताते हैं। इनका समय ६०० ई० के लगभग है।

'किरातार्जुनीय' महाकाव्य ही इनकी एकमात्र प्राप्त कृति है। महाकाव्य के सभी लक्षण इसमें पूर्णतया विद्यमान हैं। इसका कथानक, जो महाभारत के वनपर्व पर आधृत है, इस प्रकार है—द्यूत में पराजित पाण्डव जब द्वैतवन में रह रहे थे तब उनके गुप्तचर ने दुर्योधन के सुव्यवस्थित शासन की स्तुति की। इस पर द्रौपदी और भीमसेन ने युधिष्ठिर को युद्धार्थ उत्तेजित किया परन्तु धर्मपुत्र ने प्रतिज्ञाभंग अनुचित माना। वेदव्यास की प्रेरणा से अर्जुन शिवजी से पाशुपतास्त्र प्राप्त करने को इन्द्रकील पर्वत पर पहुँचे। उनकी उग्र तपस्या को अप्सराएँ भी भग्न न कर सकीं। अन्त में अर्जुन ने किरातवेशी शिव को अपनी शक्ति से प्रसन्न कर पाशुपतास्त्र की प्राप्ति की।

समग्र संस्कृत-वाङ्मय में किरातार्जुनीय-सा ओज पूर्ण काव्य अन्य नहीं है। १८ सर्गों के इस महाकाव्य में प्रधान रस वीर है, अन्य रस गौण। अर्थगौरव अर्थात् थोड़े शब्दों में विशाल और गम्भीर अर्थ को सन्निविष्ट कर देना भारवि की उल्लेख्य विशेषता है जिसके कारण 'भारवेरर्थगौरवम्' उक्ति प्रख्यात हो चुकी है। भारवि का काव्य आपातत: कठिन है परन्तु अर्थ व्यक्त होने पर वैसे ही आनन्ददायक सिद्ध होता है जैसे नारियल की जटा और खोल तोड़ देने पर उसका फल। इन्हीं गुणों के कारण महाकाव्यों का बृहत्त्रयी (किरात, माघ और नैषध) में 'किरातार्जुनीय' का स्थान प्रमुख है।

भास—प्रख्यात नाटककार भास के काल के सम्बन्ध में विद्वानों में ऐकमत्य नहीं है। कुछ इन्हें तीसरी शती ईसवी का बताते हैं तो कुछ ई० पू० दूसरी शती का। इनके तेरह नाटक प्राप्त हुए हैं जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. प्रतिमा नाटक—इसमें राम-वनवास से रावणवध तक की घटनाओं का उल्लेख है। कैकय से लौटते हुए भरत देवकुल में दशरथ की प्रतिमा देखकर उनकी मृत्यु का अनुमान करते हैं। अतएव नाटक को उक्त नाम दिया गया है।

२. अभिषेक नाटक—राम के राज्याभिषेक का वृत्त है।

३. पञ्चरात्र—महाभारत से सम्बन्धित एक कल्पित घटना के आधार पर रचा गया है। दुर्योधन की शर्त के अनुसार द्रोण ने पाण्डवों को पाँच रातों में ढूँढ लिया और दुर्योधन ने उन्हें आधा राज्य दे दिया, यही कथानक-सार है।

४–८ मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कच, कर्णभार, दूतवाक्य, ऊरुभंग के कथानक महाभारत के विशिष्ट प्रसंगों से सम्बन्धित हैं।

९. बालचरित—का सम्बन्ध बालकृष्ण की लीलाओं से है।

१०. दरिद्रचारुदत्त—इसमें निर्धन परन्तु चरित्रवान् चारुदत्त और गुणग्राहिणी वेश्या वसन्तसेना के प्रणय का चित्रण है।

११ अविमारक—में एक प्राचीन आख्यायिका को नाटकीय रूप दिया गया है।

१२ प्रतिज्ञायौगन्धरायण—इसमें मन्त्री यौगन्धरायण की नीति से वत्सराज उदयन के कारामुक्त होने तथा अवन्तिकुमारी वासवदत्ता से उनके विवाह का वर्णन है।

१३ स्वप्नवासवदत्त—इसे 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' का उत्तरार्द्ध कहना उचित है। इसमें उदयन का मगधकुमारी पद्मावती से विवाह और वासवदत्ता से पुनर्मिलन वर्णित है। यही भास की सर्वोत्तम कृति है।

भास सभी रसों की व्यंजना में कुशल हैं। उनके चरित्र चित्रण मनोवैज्ञानिक हैं और संवाद चुस्त तथा संक्षिप्त। सबसे बड़ी बात यह है कि ये नाटक अभिनय के लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं।

भोज—सिंधुल के पुत्र परमार-वंशीय राजा भोज की राजधानी मालवा की धार या धारानगरी थी, जहाँ इन्होंने १०१८–१०६३ ई० तक शासन किया। पिता की मृत्यु के अनन्तर बालक भोज, राज्यलोलुप चाचा मुंज के हाथों कालकवलित होने को थे परन्तु भाग्यवश बच गये। ये बहुत उदार, विद्वान् तथा विद्वानों के आश्रयदाता थे। भोजप्रबन्ध आदि कई ग्रन्थों में इनके गुणों की कथाएँ लिखित हैं।

शृङ्गारमंजरी (आख्यायिका), विद्याविनोद (काव्य), शिवदत्त (स्तोत्र), दिव्यतत्त्वरत्नकलिका (शिवस्तोत्रव्याख्या), सुभाषित, सगीतप्रकाशित, शृङ्गारप्रकाश, रामायणचम्पू और सरस्वतीकण्ठाभरण इनकी कृतियाँ कही जाती हैं।

मंखक—काश्मीरनरेश महाकवि मंखक प्रख्यात आलंकारिक रुय्यक के शिष्य थे और गुरु-शिष्य दोनों ही काश्मीरनरेश राजा जयसिंह (११२९–५० ई०) के सभापंडित थे। स्वर्गीय पिता की आज्ञानुसार ही मंखक ने 'श्रीकण्ठचरित' नामक २५ सर्गों के सुन्दर महाकाव्य की रचना की जिसमें शंकर और त्रिपुर का युद्ध वर्णित है। इनकी शैली कालिदासानुसारिणी है। प्राकृतिक दृश्यों, सरस भावों तथा प्रभावक कल्पनाओं को कोमल पदावली में व्यक्त करने में मंखक विशेष कुशल हैं।

मयूरभट्ट—ये बाणभट्ट के सगे सम्बन्धी थे और वाराणसी के पूर्व में रहते थे। बाण के समान ये भी हर्षवर्द्धन की सभा के कवि थे। इन्होंने अपने कुष्ठ रोग के निवारणार्थ स्रग्धरा वृत्त में 'सूर्यशतक' स्तोत्र का प्रणयन किया जो वस्तुतः प्रौढ और मार्मिक कृति है। ये सूर्यदेव के रथ, अश्व आदि उपकरणों के वर्णन में तथा अनुप्रासमयी भाषा के प्रयोग में विशेष सफल हुए हैं।

माघ—महाकवि माघ के पितामह सुप्रभदेव गुजरात के वर्मलात नामक राजा के मुख्यमंत्री थे और पिता दत्तक सर्वाश्रय विद्वान् तथा वदान्य। माघ का जन्म भीनमाल नगर में हुआ था और ये धारा के भोज से भिन्न किसी अन्य राजा भोज के मित्र थे। सुसम्पन्न कुल में उत्पन्न होने पर भी, कहते हैं इनकी मृत्यु अत्यधिक उदारता के कारण, दरिद्रतावश हुई थी। ये सातवीं शती के उत्तरार्द्ध में विद्यमान थे।

ये अपने एकमात्र उपलब्ध महाकाव्य 'शिशुपाल-वध' के कारण अमर हो गये हैं। बीस सर्गों के इस महाकाव्य में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण के हाथों शिशुपाल के वध का विस्तृत वृत्त वर्णित है। काव्य के अध्ययन से माघ की राजनीतिज्ञता और अलंकारप्रियता का अच्छा परिचय प्राप्त हो जाता है। माघ केवल रससिद्ध कवि ही नहीं, सर्वशास्त्रविद् गम्भीर विद्वान् भी थे। शास्त्रीय सिद्धान्तों का जितना सुन्दर सरस प्रतिपादन शिशुपालवध में उपलब्ध होता है, किसी अन्य काव्य में नहीं। माघ का पांडित्य सर्वतोमुखी है, वेद तथा दर्शन से लेकर राजनीति तक की विशेषज्ञता इनके इस काव्य में दिखाई देती है। नव-नव शब्दों के प्रयोग तथा व्याकरणानुरूप नव-नव शब्दरूपों के व्यवहार के कारण भी माघ विशेष प्रख्यात हैं।

किसी भारतीय आलोचक का मत है—

> उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्।
> दण्डिनः पदलालित्यं, माघे सन्ति त्रयो गुणाः ॥

मुरारि—'अनर्घराघव' नाटक के रचयिता मुरारि मौद्गल्यगोत्री वर्धमानक तथा तन्तुमती के पुत्र थे। ये सम्भवतः माहिष्मती (दक्षिण में स्थित मान्धाता नगरी) के निवासी थे और ८०० ई०

के लगभग वर्तमान थे। 'अनर्घराघव' सात-अंकों का और भवभूति के महावीरचरित से प्रभावित नाटक है। उसमें ताडकावध से लेकर रामराज्याभिषेक तक की घटनाएँ वर्णित हैं। कविता प्रौढ तथा पाण्डित्यपूर्ण है, वर्णन प्रशस्य हैं और शब्दराशि विशाल है। इनकी उपमाओं की मौलिकता देखकर ही कहा गया है—'मुरारेस्तृतीय पन्था'।

रत्नाकर—काश्मीरी महाकवि रत्नाकर, अमृतभानु के पुत्र और काश्मीर-नरेश जयापीड (८०० ई०) की सभा के पण्डित थे। इनके 'हरविजय' महाकाव्य में ५० सर्ग तथा ४३२१ पद्य हैं। आकार के कारण ही नहीं, काव्योचित अन्य गुणों के कारण भी यह महाकाव्य संस्कृतवाङ्मय में विशिष्ट स्थान रखता है। यह महाकाव्य ललित, मधुर, प्रसादोपेत भाषा तथा चित्र, यमक और श्लेष के चमत्कारों से मण्डित है।

इस महाकाव्य में शंकर द्वारा अन्धक असुर के वध का वर्णन है। रत्नाकर ने 'शिशुपालवध' को मात करने के लिए इस काव्य का प्रणयन किया था और उनका प्रयास व्यर्थ नहीं हुआ।

राजशेखर—ये 'महाराष्ट्रचूडामणि' कविवर अकालजलद के प्रपौत्र तथा दुर्दुक और शीलवती के पुत्र थे। ये स्वयं यायावर क्षत्रिय थे और इनकी पत्नी अवन्तिसुन्दरी चौहान, संस्कृत और प्राकृत की प्रकाण्ड विदुषी थीं। राजशेखर महाराष्ट्र, सम्भवतः विदर्भ के रहनेवाले थे और कन्नौज-नरेश महेन्द्रपाल के गुरु थे। अतः इनका काल नवीं शती का उत्तरार्ध तथा दशमी का पूर्वार्द्ध माना जाता है। राजशेखर धुरन्धर विद्वान् थे और अपने को वाल्मीकि तथा भवभूति का अवतार समझते थे। ये भूगोल के बहुत बड़े पण्डित थे परन्तु इनका इस विषय का ग्रन्थ 'भुवनकोश' आज अप्राप्य है। ये संस्कृत, प्राकृत, पैशाची तथा अपभ्रंश के दिग्गज विद्वान् तथा लेखक थे।

इनके चार नाटक उपलब्ध हैं—कर्पूरमञ्जरी, विद्धशालभञ्जिका, बालरामायण और बालभारत अथवा प्रचण्डपाण्डव। कर्पूरमञ्जरी प्राकृत में लिखित एक 'सट्टक' है जिसमें चण्डपाल तथा राजकुमारी कर्पूरमञ्जरी का विवाह चित्रित किया गया है। विद्धशालभञ्जिका चार अंकों की प्रेमाख्यानात्मक नाटिका है। बालरामायण दस अंकों का महानाटक है। बालमहाभारत के दो ही अंक प्राप्त हैं। भाषा-कौशल तथा सुन्दर उक्तियों से युक्त होने पर भी इनके नाटक नाटकीय कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नहीं माने जाते। इनका महाकाव्य 'हरविलास' तो आज उपलब्ध नहीं है परन्तु 'काव्यमीमांसा' इनका अलंकारविषयक प्रौढ ग्रन्थ है।

वत्सराज—कालिंजर-नरेश परमर्दिदेव (११६३-१२०३ ई०) के मन्त्री वत्सराज के छह रूपक उपलब्ध हुए हैं—१ किरातार्जुनीय-व्यायोग, २ कर्पूरचरित, ३. हास्यचूडामणि, ४. रुक्मिणीहरण, ५ त्रिपुरदाह और ६ समुद्रमथन। किरातार्जुनीय-व्यायोग की रचना भारवि के किरातार्जुनीय के आधार पर हुई है। कर्पूरचरित 'भाण' में धूर्तकर्पूर ने स्वरोचक अनुभव वर्णित किये हैं। हास्यचूडामणि एकांकी प्रहसन है। रुक्मिणीहरण चतुरात्मक 'ईहामृग' है। त्रिपुरदाह चतुरंकी 'डिम' जिसमें शिव द्वारा त्रिपुर असुर के पुर के विध्वंस का वर्णन है। समुद्रमथन त्र्यंकी 'समवकार' है जिसमें समुद्रमथन तथा लक्ष्मी-विष्णु के विवाह का चित्रण है। भास के पश्चात् वत्सराज ने ही अनेक प्रकार के रूपकों की रचना की है। इनके लघ्वाकार नाटकों की शैली सरल और सशक्त है। उनमें नाटकीय क्रियाशीलता और रोचकता प्रचुर है।

वाल्मीकि—कहते हैं वाल्मीकि पहले एक दस्यु थे परन्तु सत्संगति से ऋषि बन गये। वे भारत के आदिकवि माने जाते हैं और रामायण आदिकाव्य। श्रद्धालु लोगों का विश्वास है कि रामायण की रचना श्री राम के आविर्भाव से सहस्रों वर्ष पूर्व की जा चुकी थी परन्तु आधुनिक विद्वान् इसे आज से प्राय. ढाई सहस्र वर्ष पूर्व की कृति बताते हैं। अधिकतर विद्वान् इसके उत्तरकाण्ड को पूर्णतः और बालकाण्ड को अंशतः प्रक्षिप्त मानते हैं। रामायण में २४००० श्लोक हैं जिनमें बहुलता अनुष्टुप् छन्द की है। उत्तरी भारत, बंगाल तथा काश्मीर में रामायण के

जो संस्करण प्राप्त होते हैं उनमें पर्याप्त पाठभेद हैं। सच्चा कवि और उत्तम महाकाव्य कैसा होना चाहिए, यह हमें वाल्मीकि रामायण से ही विदित होता है। सामान्य मनुष्य गृहस्थ बनता है परन्तु गार्हस्थ्य को सफल बनाना कितना दुष्कर है, इसे गृहस्थ ही जानते हैं। इसी उच्च उद्देश्य की सिद्धि का मार्ग वाल्मीकि ने दशरथ, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत आदि के दिव्य चरित्रों से प्रशस्त किया है। किसी विद्वान् का यह विचार अत्युक्तियुक्त नहीं है कि संसार भर के साहित्य में सदाचार और काव्यत्व का जितना सुन्दर मिश्रण वाल्मीकि-रामायण में हुआ है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। रामायण करुणरस प्रधान महाकाव्य है। इसमें बाह्य प्रकृति तथा मानवीय प्रकृति का अत्यन्त मनोरम चित्रण हुआ है। यह प्राचीन भारत की सभ्यता का उज्ज्वल दर्पण है। यही कारण है कि इसके उदात्त आदर्शों तथा पवित्र कथा के आधार पर परवर्ती असंख्य कवियों ने अपने काव्य, नाटक, चम्पू आदि की रचना की तथा इस पर तिलक, शृङ्गारतिलक, रामायणकूट, वाल्मीकितात्पर्यतरणि, विवेकतिलक आदि अनेक टीकाएँ लिखकर विद्वानों ने अपने प्रयास को सफल समझा।

विशाखदत्त—इनके पितामह वटेश्वरदत्त अथवा वत्सराज कहीं के सामन्त थे और पिता भास्करदत्त या पृथु ने महाराज-पदवी प्राप्त की थी। विशाखदत्त राजनीति, दर्शन और ज्योतिष के विशेषज्ञ थे। ये वैदिकधर्मावलम्बी थे परन्तु साम्प्रदायिक कट्टरता से रहित थे। इन्होंने अपने प्रख्यात राजनीतिक तथा कूटनीतिक नाटक 'मुद्राराक्षस' की रचना छठी शती ईसवी के उत्तरार्द्ध में की थी। नाटक में चाणक्य का समग्र उद्योग इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए है कि राक्षस को चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधान मन्त्री बना दिया जाय और अन्तत वे उसमें सफल होते हैं। राजनीतिक चालों तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से नाटक विशेष महत्त्वपूर्ण है। विशाखदत्त की दूसरी रचना 'देवीचन्द्रगुप्त' के कुछ ही उद्धरण अन्य कृतियों में प्राप्त हुए हैं। उन्हीं के आधार पर चन्द्रगुप्त के अग्रज रामगुप्त की सत्ता ऐतिहासिकों ने स्वीकृत की है।

विष्णुशर्मा—महिलारोप्य के शासक अमरशक्ति अपने मूर्ख राजकुमारों को चतुर बनाने के लिए योग्य शिक्षक की खोज में थे। इस कार्य को विष्णुशर्मा नामक ब्राह्मण ने पंचतन्त्र की रचना द्वारा छह मास में ही पूर्ण कर दिया। 'पंचतंत्र' का रचना-काल ३०० ई० के लगभग माना जाता है। छठी शती में इसका पहलवी भाषा में अनुवाद भी हो गया था। कदाचित् आरम्भ में इसके बारह भाग थे परन्तु वर्तमान में इसके पाँच भाग हैं—मित्रभेद, मित्र-सम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्ध प्रणाश, अपरीक्षितकारक। इस कथा-ग्रन्थ में कथाएँ गद्य में हैं और शिक्षाप्रद बातें पद्यों में। एक एक मुख्य कथा के अन्तर्गत अनेक गौण कथाएँ दी गई हैं। सदाचार, व्यवहार और नीति के शिक्षार्थ यह कृति अत्यन्त उपयोगी है और यही कारण है कि अनेक विदेशी भाषाओं तक में अनूदित हो चुकी है।

वेंकटाध्वरि—ये मद्रास प्रान्त के श्रीवैष्णव थे। इन्होंने अपने 'विश्वगुणादर्शचम्पू' में मद्रास में अंग्रेजों के दुराचार का भी वर्णन किया है जिससे ये सत्रहवीं शती के मध्य के प्रतीत होते हैं। इनका यशोविस्तारक काव्य तो "लक्ष्मीसहस्र" है जिसको एक सहस्र ललित व भावपूर्ण पद्यों की रचना कहते हैं, इन्होंने एक ही रात में कर दी थी। काव्य में श्लेष तथा अन्यालंकारों की छटा अवलोकनीय है। इस अत्यन्त सरस व उत्प्रेक्षाबहुल रचना से कवि अमर हो गया है।

व्यास—व्यासजी का पूरा नाम कृष्णद्वैपायन व्यास था। ये पराशर और सत्यवती के पुत्र थे। सुनते हैं, रंग से कृष्ण होने के कारण कृष्ण, द्वीप में उत्पन्न होने के कारण द्वैपायन तथा वैदिक मन्त्रों को वर्तमान व्यवस्थित रूप देने के कारण ये व्यास कहलाए। भारतीय परंपरा इन्हें महाभारत, १८ पुराणों तथा ब्रह्मसूत्रों का कर्ता मानती है, परन्तु आधुनिक विद्वान् महाभारत को न एककर्तृक मानते हैं न एककालीन। उनका मत है कि महाभारत के विभिन्न अंशों की रचना अनेक विद्वानों द्वारा समय समय पर होती रही और उसे वर्तमान रूप ३२० ई० पू० तथा ५० ई० के मध्य में किसी समय प्राप्त हुआ।

किया गया है। कृति का प्रेमि प्रेमविषयक अंश भासकृत 'दरिद्रचारुदत्त' से बहुत अधिक प्रभावित है परन्तु राजनीतिक भाग कवि की निजी सम्पदा है। 'मृच्छकटिक' की सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्राकृत भाषा है। जितनी प्राकृत इस नाटक में प्रयुक्त हुई है उतनी अन्य किसी में भी नहीं। नाटक में पात्रों का चरित्र तथा समाज का चित्र सरल शैली में सम्यक् चित्रित किया गया है। नाटक का प्रधान रस शृङ्गार है।

श्रीहर्ष—श्रीहर्ष का जन्म हीर पण्डित और मामल्लदेवी के गृह में हुआ था। हीर पण्डित कान्यकुब्जेश्वर जयचन्द्र के पिता विजयचन्द्र की सभा के प्रधान पण्डित थे परन्तु संयोगवश मैथिल नैयायिक उदयनाचार्य से शास्त्रार्थ में पराजित हो गये थे। मरणासन्न हीर ने पुत्र को कहा—'यदि तुम सुपुत्र हो तो मेरे विजेता को पराजित करना' श्रीहर्ष ने गङ्गातट पर चिन्तामणि मन्त्र का वर्ष भर जप किया और सफलमनोरथ हुए। श्रीहर्ष जयचन्द्र की सभा के रत्न तो थे ही, सम्भवत विजयचन्द्र की सभा को भी सुभूषित करते रहे होंगे, क्योंकि उन्होंने 'विजयप्रशस्ति' उन्हीं के नाम पर रची है। ये रससिद्ध कवि ही न थे, प्रकाण्ड पण्डित भी थे, जैसा कि इनके 'खण्डनखण्डखाद्य' से सिद्ध होता है। इनका सिद्ध योगी होना नैषधकाव्य के अन्त्य श्लोक से सिद्ध होता है—

यः साक्षात् कुरुते समाधिषु परं ब्रह्म प्रमोदार्णवम्।

इनका आविर्भावकाल बारहवीं शती का उत्तरार्द्ध है।

श्रीहर्ष ने अपनी कृतियों का उल्लेख 'नैषध' में इस क्रम से किया है—(१) स्थैर्यविचारण प्रकरण (दर्शन), (२) विजयप्रशस्ति, (३) खण्डनखण्डखाद्य (वेदान्त), (४) गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, (५) अर्णववर्णन, (६) छिन्दप्रशस्ति, (७) शिवशक्तिसिद्धि, (८) नवसाहसाङ्कचरितचम्पू, (९) नैषधीयचरित। सुविख्यात 'नैषधीय चरित' में २२ सर्ग हैं और २८३० श्लोक। इसमें नल-दमयन्ती की कथा का सरस तथा सुविस्तृत वर्णन है। नैषध में वैदग्ध्य तथा पाण्डित्य का अद्भुत मिश्रण है। वक्रोक्ति के प्रयोग में श्रीहर्ष विशेष कुशल हैं। भावपक्ष तथा कलापक्ष दोनों की अभिव्यक्ति नैषधकाव्य में मार्मिक ढंग से की गई है। किसी आलोचक का यह पद्य नैषध के महत्त्व का सच्चा निदर्शक है—

तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः॥

सुबन्धु—अविदित-वृत्त सुबन्धु अपने एकमात्र गद्यकाव्य 'वासवदत्ता' से अक्षय कीर्ति के भागी बने हैं। इस काव्य की कथा का वासवदत्ता की प्राचीन कथा से रत्ती-रत्ती भर का भी सम्बन्ध नहीं है। पूर्ण कथानक कवि के उर्वर मस्तिष्क की कल्पना है। अनुमानतः इसकी रचना सातवीं शती के प्रथम चरण में की गई थी।

अति संक्षेप में कथा यह है कि राजकुमार चिन्तामणि स्वप्न में एक सुन्दर कन्या को देखकर मुग्ध हो जाता है और जगने पर मित्र मकरन्द के साथ उसकी खोज में निकल पड़ता है। उधर कुसुमपुर की राजकुमारी वासवदत्ता भी स्वप्न में एक सुरूप युवक को देखकर स्वयंवर में आये युवकों का विचार त्याग देती है। कई विघ्न-बाधाओं के अनन्तर प्रेमियों का सुखद मिलन हो जाता है। 'वासवदत्ता' एक वर्णनबहुल आख्यायिका है जिसमें उपमा, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास की बहुलता है परन्तु सभंग या अभंग श्लेष तो प्रतिपद पाया जाता है जहाँ कवि की कल्पना प्रशंसनीय है, वहाँ श्लेष की 'अति' तथा तज्जनित दुरूहता अरुचिकर हो गई है।

सोड्ढल—ये गुजरात के लाटप्रदेश के निवासी थे और कोंकणाधीश मुम्मुणिराज (१०६० ई०) के आश्रित थे। इनका 'उदयसुन्दरीकथा' चम्पूकाव्य है जिसमें प्रतिष्ठान नरेश मलयवाहन और नागराज शिखण्डतिलक की पुत्री उदयसुन्दरी के विवाह का वर्णन है। कृति बाण के हर्षचरित

से प्रभावित है और इसमें भाषा का माधुर्य और लालित्य प्रशंसनीय है। लेखक कमनीय कल्पनाएँ करने में कुशल है।

सोमदेव सूरि—ये जैनकवि राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराजदेव के समकालीन थे। ९५८ ई० में रचित इनके 'यशस्तिलकचम्पू' में अवन्ति-नरेश यशोधर की कथा का वर्णन है। रानी की सकपट चालों से राजा की विरक्ति, वध तथा पुनर्जन्म की घटनाओं का रोचक उल्लेख है। जैनधर्म के पालन के महत्त्व को सम्यक् व्यक्त किया गया है। इसमें अनेक अज्ञात ग्रन्थकारों और कृतियों का उल्लेख है, अतएव साहित्य के इतिहास के विचार से भी कृति महत्त्वपूर्ण है।

हरिचन्द्र—जैनकवियों में हरिचन्द्र का नाम विशेष उल्लेख्य है। ये कायस्थ आर्द्रदेव तथा रथ्यादेवी के तनुज थे। सम्भवतः इनका समय ग्यारहवीं शती है। इनके 'धर्मशर्माभ्युदय' नामक महाकाव्य में पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथजी का चरित्र वर्णित है। वैदर्भी रीति में उपनिबद्ध इस काव्य की भाषा अतिसुन्दर और अलंकृत है। जैनसाहित्य में २१ सर्गों के इस महाकाव्य का वही स्थान है जो नैषध और शिशुपालवध का ब्राह्मण साहित्य में।

हर्षवर्धन—ये थानेसर के महाराज प्रभाकरवर्द्धन के द्वितीय पुत्र थे और अग्रज राज्यवर्धन के पश्चात् सिंहासनासीन हुए थे। इन्होंने ६०६–६४८ तक शासन किया था। बाणभट्ट, मयूरभट्ट और दिवाकर इन्हीं के सभापण्डित थे। इनके तीन रूपक मिलते हैं—रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानन्द। प्रथम दो संस्कृत की प्राचीनतम नाटिकाएँ हैं और वत्सराज उदयन की प्रणयकथाओं के आधार पर प्रणीत हैं। नागानन्द का आधार एक बौद्ध कथानक है जिसमें नागों को गरुड़ से बचाने के लिए जीमूतवाहन आत्मसमर्पण कर देता है। इस उच्चादर्श के कारण नागानन्द विद्वत्समाज में विशेष सम्मानित है।

हेमचन्द्र—प्रसिद्ध जैनमुनि हेमचन्द्र का जन्म धुन्धुक में १०८८ ई० में हुआ। इनके पिता का नाम चाचिगश्रेष्ठी और माता का पाहिनी था। इनकी माता ने इन्हें पाँच वर्ष के वय में ही देवेन्द्र सूरि को सौंप दिया और ये विद्याध्ययन में संलग्न हो गये। ये संस्कृत और प्राकृत वाङ्मय के विभिन्न विभागों में ऐसे निष्णात हो गये कि 'कलिकालसर्वज्ञ' कहाने लगे। इनके संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की पङ्क्तिसंख्या साढ़े तीन करोड़ है। ये गुजरात के राजा जयसिंह और कुमारपाल की सभा में रहे थे और इनकी प्रेरणा से जैनधर्म राज्यधर्म बन गया था। इन्होंने अनशन समाधि से ११७३ ई० में प्राणत्याग किया। इनके 'कुमारपालचरित' में २८ सर्ग हैं—पहले २० संस्कृत में और अन्तिम ८ प्राकृत में। 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' और 'स्थविरावली-चरित' में जैन सन्तों की जीवनियाँ हैं। कुछ अन्य कृतियाँ ये हैं—काव्यानुशासन, छन्दोऽनुशासन, देशीनाममाला, अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसंग्रह, निघण्टुशेष, शब्दानुशासन, योगशास्त्र।

तथा 'भेड़चाल' मुहावरे इसी के समानार्थक हैं। उदाहरण—'विरलविरला एव जना नगति स्वविवेकमाचरन्ति प्रायस्तु परम्परैवानुसर्यते।'

६. **अरण्यरोदनन्याय**—उक्त न्याय का अर्थ है निर्जन में रोने की कहावत। ग्राम, नगर आदि में रोनेवाले व्यक्ति से उसका कष्ट पूछा जाता है और उसे नष्ट करने का उद्योग भी किया जाता है। परन्तु सुनसान स्थान में रोना तो सर्वथा व्यर्थ है। इसी प्रकार किसी व्यर्थ कार्य के लिए या किसी क्रूर के समक्ष प्रार्थना के समय पर यह न्याय होता है। यथा—'अरण्यरोदनमेव धनाढ्येभ्यः साहाय्ययाचनं प्रायशो भवति।'

७. **अरुन्धतीप्रदर्शनन्याय**—अरुन्धतीप्रदर्शन न्याय अर्थात् अरुन्धती नक्षत्र दिखाने का न्याय। इसकी व्याख्या स्वामी शंकराचार्य ने इस प्रकार की है—'अरुन्धतीं दिदर्शयिषुस्तत्समीपस्थां स्थूलां तारामनुख्याप्य प्रथममरुन्धतीति ग्राहयित्वा, तां प्रत्याख्याय पश्चादरुन्धतीमेव ग्राहयति।' अर्थात् किसी को अरुन्धती दिखाने का इच्छुक व्यक्ति पहले उसके समीपवर्ती किसी बड़े नक्षत्र को ही अरुन्धती बताता है और उसके बाद वास्तविक अरुन्धती को दिखाता है जिसका प्रकाश मन्द होता है। इस प्रकार जहाँ किसी सूक्ष्म वस्तु के स्पष्टीकरणार्थ पहले किसी स्थूल वस्तु को बताकर निषेध किया जाता है, वहाँ 'अरुन्धतीनक्षत्रन्याय' का प्रयोग होता है। यथा—'अयमेव सूर्यो देव इति पूर्वमुद्दिश्य तत्पश्चाद्—वास्तविको देवस्तदन्तवर्तीति अरुन्धतीप्रदर्शनन्यायेन गुरुः शिष्यं ज्ञापयति।'

८. **अशोकवनिकान्याय**—अशोकवनिकान्याय अर्थात् अशोकनामक वृक्षों की वाटिका का न्याय। रावण ने अपहृत सीता को अशोकवाटिका में रखा था परन्तु यह कहना कठिन है कि अन्यत्र कहीं न रखकर वहीं क्यों रखा? इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य की निष्पत्ति के अनेक समान उपायों में से किसी एक का प्रयोग किया जाए, परन्तु यह न बताया जा सके कि अन्यों को छोड़ उसी को क्यों प्रयुक्त किया गया है, वहाँ 'अशोकवनिकान्याय' व्यवहृत होता है। जैसे—'प्रायो निर्विवेकाः स्वामिनः स्वसेवकान् अशोकवनिकान्यायेन विविधकार्येषु प्रवर्तयन्ति।'

९. **अश्मलोष्टन्याय**—अश्मलोष्टन्याय अर्थात् पत्थर और ढेले का न्याय। जिस प्रकार मिट्टी का ढेला रूई से कठोर होता है और पत्थर से कोमल, उसी प्रकार कोई मनुष्य अपने से छोटों की अपेक्षा तो महान् होता है और बड़ों की अपेक्षा क्षुद्र। उदाहरण—'अस्मिन् संसारे सर्वं सापेक्षमश्मलोष्टवत्, न हि किमपि अत्यन्तमुत्कृष्टमपकृष्टं वा कथयितुं पार्यते।'

१०. **अहिकुण्डलन्याय**—अहिकुण्डलन्याय अर्थात् साँप की कुण्डलाकार स्थिति का न्याय। साँप स्वभावतः कुण्डली मार कर बैठता है, इसके लिए उसे प्रयास नहीं करना पड़ता। इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ के स्वाभाविक धर्म का उल्लेख किया जाता है, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'अहिकुण्डलवत् स्वाभाविकं हि कवेः काव्यं न हि तत्र तस्य महाप्रयासस्यापेक्षा।'

११. **आकाशमुष्टिहननन्याय**—इस न्याय का शब्दार्थ है आकाश को मुक्के से पीटने की कहावत। जैसे आकाश को मुक्कों से पीटना असम्भव है, वैसे ही किसी को असम्भव कार्य करते देख इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा—'आकाशमुष्टिहननमेव तवायमुद्योगो प्रधानमन्त्रिपदप्राप्तये।'

१२. **आम्रसेकपितृतर्पणन्याय**—इस न्याय का अर्थ है, आम सींचने और पितरों के तर्पण करने की कहावत। आशय वही है जो हिन्दी की कहावत 'एक पंथ दो काज' का है। जहाँ एक क्रिया से दो प्रयोजनों की सिद्धि अभीष्ट हो वहाँ इस न्याय का प्रयोग न्याय्य है। यथा—'संसत्सदस्या आम्रसेकपितृतर्पणन्यायेन राष्ट्रसेवामपि कुर्वन्ति, पर्याप्तं वेतनं चापि प्राप्नुवन्ति।'

१३ आशामोदकतृप्तन्याय—इस न्याय का अर्थ है—प्रत्याशित लड्डुओं से तृप्त मनुष्य का दृष्टान्त। लड्डू खाने पर ही प्रसन्नता का प्रकाशन उचित है। जो मनुष्य काल्पनिक लड्डुओं से तृप्ति का अनुभव कर मुदित होता है, वह सयाना नहीं माना जाता। सो वास्तविक और काल्पनिक प्रसन्नता में भेद करना ही समीचीन है। जैसे—को नाम व्यवहारपटुर्मानवो नात्याशामोदकैस्तृप्तो दृश्यते।

१४. इषुकारन्याय—इस न्याय का अर्थ है, बाण बनानेवाले का दृष्टान्त। यह न्याय महाभारत के शान्तिपर्व के १७८वें अध्याय के निम्नलिखित श्लोक पर आधृत है—'इषुकारो नरः कश्चिदिषावासक्तमानसः। समीपेनापि गच्छन्तं राजानं नाववुद्धवान्।' भाव यह कि एक बाणनिर्माता बाण-निर्माण में इतना निमग्न था कि वह पास से जाते हुए राजा को भी न देख सका। इसी प्रकार की एकाग्रचित्तता के लिए यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'विद्यार्थी स्वाध्यायाध्ययन इत्थं निमग्न आसीत् यदिषुकारन्यायेन कक्षायामागतम् याचकमपि न ज्ञातवान्।'

१५ इषुवेगक्षयन्याय—इस न्याय का अर्थ है—बाणवेग के नाश का दृष्टान्त। धनुष से फेंके हुए बाण की गति क्रमशः क्षीण होती जाती है और अन्ततः समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ में उत्पन्नशक्ति आत्मक्रिया आदि का क्रमशः ह्रास और [अन्त में विनाश हो जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है यथा—'इयं सृष्टिरिषुवेगक्षयन्यायेन कालेन स्वयमेव प्रलयमुपैति।'

१६ उत्खातदंष्ट्रोरगन्याय—उक्त न्याय का अर्थ है, निर्दन्त किये हुए सर्प का दृष्टान्त। दाँत उखाड़ देने पर सर्प की भयंकरता नष्ट हो जाती है। इसी प्रकार जहाँ किसी घातक पदार्थ के अनिष्टकर अङ्ग का निवारण कर उसकी घातकता नष्ट कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। यथा—'इन्द्रप्रदत्तशक्त्या घटोत्कचं हत्वा कर्णः पाण्डवेभ्य उत्खातदंष्ट्रोरगवद् निरुपद्रवः सञ्जातः।'

१७. उष्ट्रलगुडन्याय—उक्त न्याय का अर्थ है—ऊँट और लकड़ी का दृष्टान्त। ऊँट पर लकड़ी का भार प्रायः लादा जाता है। आवश्यकता के समय उन्हीं में से एक लकड़ी निकालकर (उष्ट्रपालक) ऊँट को पीट भी देता है। इसी प्रकार जहाँ विरोधी की युक्ति से ही विरोधी की उक्ति का खंडन कर दिया जाये अथवा वैरियों के उपकरण से ही वैरियों का नाश कर दिया जाये वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—'दक्षो गृहस्थ उष्ट्रलगुडन्यायेन चौरदत्तशस्त्रेण चौरं गतासुमकरोत्।'

१८. ऊषरवृष्टिन्याय—इस न्याय का अर्थ है, ऊसर में वर्षा का दृष्टान्त। भूमि उर्वरा हो तो वृष्टि सफल होती है। ऊसर में बरसना न बरसना बराबर है। इसी प्रकार जहाँ कोई कार्य सर्वथा बेकार हो वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'इमा सुधास्यन्दिन्य सूक्तयोऽरसिकेभ्य ऊषरवृष्टिवन्निष्फला।'

१९. एकवृन्तगतफलद्वयन्याय—उक्त न्याय का अर्थ है, एक डंठल पर लगे दो फलों की उक्ति। जैसे एक डंठल पर कभीकभी दो भी फल लग जाते हैं, वैसे ही जब श्लेष आदि के बल से कोई शब्द दो अर्थ देता है या एक क्रिया फलयुग्म की साधिका होती है, तब यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'एकवृन्तगतफलद्वयन्यायेन देवदत्त आह्लादेनमन्दरनयद् भारतीयबालचरणं प्रतिनिधित्वमपि चाकरोत्॥'

२०. कदम्बकोरक(गोलक)न्याय—कदम्बकोरकन्याय अर्थात् कदम्ब की कलियों का न्याय। कहा जाता है कि कदम्ब की सब कलियाँ एक साथ विकसित हो उठती हैं। इसी प्रकार जहाँ

कुछ व्यक्ति एकदम उठ खड़े हों या सब लोग एक साथ ही कार्य में जुट जायँ वहाँ इस न्याय का व्यवहार किया जाता है। यथा—'श्रीकृष्णचन्द्रमवलोक्य कदम्बकोरकन्यायेन प्रहृष्टा बभूवु पाण्डवाः।'

२१. कफोणिगुडन्याय :—उक्त न्याय का शब्दार्थ है कोहनी और गुड़ की कहावत। यदि किसी की कोहनी पर कुछ गुड़ लगा दिया जाय और उसे जिह्वा से चाटने को कहा जाय तो वह अपने उद्योग में कदापि सफल न होने के कारण उपहासास्पद बनेगा। इसी प्रकार इस उक्ति का प्रयोग तरसानेवाली परन्तु अलभ्य वस्तु के विषय में होता है। यथा—'सरोवरे पतितं प्रतिबिम्बं वीक्ष्य कफोणिगुडन्यायेन चन्द्रग्रहणाय प्रयतते शिशुः।'

२२. कम्बलनिर्णेजनन्याय :—अर्थ है—कम्बल स्वच्छ करने का दृष्टान्त। कई बार मनुष्य कम्बल की मिट्टी झाड़ने के लिए उसे अपने पाँव पर झटकते हैं। इस एक क्रिया के दो फल होते हैं। कम्बल भी स्वच्छ हो जाता है और पाँव भी झड़ जाते हैं। इस प्रकार यह न्याय हिन्दी के 'एक पंथ दो काज' का समानार्थक है। उदाहरण—'ह्यः सायमहं भ्रमणार्थं नागच्छम्, प्रदर्शनीक्षेत्र एवाभ्रमम् एवं कम्बलनिर्णेजनन्यायेन भ्रमणमपि जातं, नवज्ञानश्चाप्युपलब्धम्।'

२३. करिबृंहितन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—हाथी की चिंघाड़ का न्याय। प्रश्न होता है, 'चिंघाड़' के साथ 'हाथी' शब्द के प्रयोग की आवश्यकता नहीं क्योंकि 'चिंघाड़' शब्द हाथी की चीख के लिए ही प्रयुक्त होता है। उत्तर यह है कि ऐसे वाक्यों में फालतू प्रतीत होने वाला शब्द विशिष्टता का सूचक होता है। यहाँ 'करि' शब्द मस्त या प्रबल हाथी के लिए व्यवहृत हुआ है। ऐसे ही अवसरों पर जहाँ कोई शब्द व्यर्थ प्रतीत होता हुआ भी विशिष्टतासूचक हो, यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'किं कवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः। परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥ इति। अस्मिन् श्लोके 'कवे' इति पदं करिबृंहितन्यायेन प्रयुक्तम्।'

२४. काकतालीयन्याय :—काकतालीयन्याय अर्थात् कौए और ताड़ के फल की कहावत। एक कौआ ताड़ के वृक्ष पर बैठा ही था कि एकाएक ऊपर की शाखा से उसका भारी फल टूट कर कौए के सिर पर आ लगा जिससे वह मर गया। इस प्रकार की आकस्मिक घटना के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'अपहृतं ममेदं पुस्तकं काकतालीयन्यायेन पुनरधिगतं मयागात्।'

२५. काकदधिघातकन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—दही को बिगाड़ने वाले कौओं का दृष्टान्त। आशय यह है कि जब किसी को कौओं से दही की रक्षा करने के लिए कहा जाता है तब वह रक्षक कुत्तों आदि से भी दही को बचाता ही है। इसलिए जहाँ एक वस्तु अनेक का प्रतिनिधित्व करती है, अर्थात् उपलक्षण होती है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'अश्लीलोऽयं मदनमोहनाख्योपन्यासो नाध्येतव्य इति तातेनोपदिष्टः सुपुत्रोऽन्यानपि कुग्रन्थान्नाधीते काकदधिघातकन्यायेन।'

२६. काकदन्तगवेषणन्याय :—काकदन्तगवेषणन्याय अर्थात् कौए के दाँत की खोज का न्याय। चिड़िया के दूध तथा शश के सींग के समान कौए के दाँत नहीं होते। इसलिए इस न्याय का प्रयोग वहाँ किया जाता है जहाँ कोई किसी नितान्त निरर्थक कार्य के लिए उद्योगशील हो। उदाहरण—'सामान्येषु सार्वजनिकपुस्तकालयेषु पुरातनग्रन्थरत्नानामन्वेषणं तु काकदन्तगवेषणमेव।'

२७. काकाक्षिगोलकन्याय :—काकाक्षिगोलकन्याय अर्थात् कौए की आँख के ढेले का न्याय। जैसे कि कौए के पर्याय 'एकाक्ष', 'एकदृष्टि' आदि संस्कृत शब्द से व्यक्त होता है कि लोगों का यह विश्वास रहा है कि कौआ दो आँखें रखता हुआ भी देखता एक ही आँख से है। तात्पर्य यह है कि उसे जिधर देखना होता है, उधर की आँख में उसकी पुतली चली जाती है। इसी

प्रकार इस न्याय का व्यवहार वहाँ होता है। जहाँ वाक्य के किसी शब्द का अन्वय एक से अधिक तरफ किया जाय अथवा कोई व्यक्ति आवश्यकतानुसार एक से अधिक पक्षों से सम्बन्ध रखे। यथा—'बलिनोर्द्विषतोर्मध्ये वाचात्मानं समर्पयन्। द्वैधीभावेन वर्तेत काकाक्षिवदलक्षितः ॥' (कामन्दकीय नीतिसार ८।२४)

२८. कुल्याप्रणयनन्याय—शब्दार्थ है—कूलनिर्माण का न्याय। किसान लोग अपने खेतों की सिंचाई के लिए ही नदी-नालों से कूल निकालते हैं। परन्तु ध्यान रखने पर उनमें से पानी पी भी लेते हैं। इसी प्रकार जहाँ एक उद्देश्य से किये हुए कार्य से दूसरा कार्य भी सिद्ध कर लिया जाय वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। यथा—'भक्तिभावेन देशसेवार्थं रता नेतारः कदाचित् कुल्याप्रणयनन्यायेन सम्पन्नतस्या अपि जायन्ते।'

२९. कूपमण्डूकन्याय—इस न्याय का अर्थ है कुएँ के मेंढक की कहावत। कुएँ का मेंढक कुएँ में रहता है, इसलिए कुएँ से विस्तृत या विशाल स्थान का अनुमान नहीं कर सकता। इस न्याय का प्रयोग उस अनुभवहीन व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसका पालन-पोषण संकुचित वातावरण में हुआ हो और जो सार्वजनिक जीवन तथा मानव जाति की गतिविधि से अनभिज्ञ हो। यथा—'अद्य खलु देशभक्तोऽपि कूपमण्डूक इव मन्यते युगधर्मस्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इति लक्षणम्।'

३०. कूपयन्त्रघटिकान्याय—कूपयन्त्रघटिकान्याय अर्थात् अरहट की घड़ियों (लोटों) का न्याय। अरहट की माला के साथ बँधे हुए लोटों की दशा समान नहीं होती। जब कुछ लोटे नीचे पानी से भरते हैं, तभी ऊपर के लोटे रिक्त होते हैं। कुछ पूर्ण लोटे एक ओर से ऊपर को आते हैं तो कुछ रिक्त नीचे को जाते हैं। समाज में मनुष्यों के भाग्य की दशा भी इसी प्रकार भिन्न-भिन्न है। इसी अर्थ में इस न्याय का प्रयोग यों होता है—'कूपयन्त्रघटिका इव अन्योऽन्यमनुपतन्ति रायः।'

३१. क्षीरनीरन्याय—इस न्याय का अर्थ है—दूध और पानी का दृष्टान्त। जब दूध और पानी परस्पर मिल जाते हैं तब यह जानना दुष्कर होता है कि उसमें दूध या पानी कितना और कहाँ है। इसी प्रकार जब दो या अधिक पदार्थों में घनिष्ठ सम्बन्ध बताना हो तब दूध-पानी की उपमा दी जाती है। यथा—'क्षीरनीरन्यायेन सज्जनानामेव मिलनेन मैत्री श्रेयस्करी भवति।'

३२. गगनरोमन्थन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, आकाश की जुगाली या पागुर करने का न्याय। यदि कोई पशु भोले आकाश को घास का मैदान मानकर मुँह हिलाता हुआ यह समझने लगे कि घास की जुगाली कर रहा हूँ तो उसका यह उद्योग नितान्त निष्फल होगा। इसी प्रकार के निरर्थक उद्योग के विषय में इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'लोकसेवां विना शासकपदलोभिनो ननु गगनरोमन्थ इव।'

३३. गड्डरिकाप्रवाहन्याय :—इस न्याय का अर्थ है भेड़ियाधसान। यदि भेड़ों के झुंड में से एक भेड़ नदी आदि में गिर जाए तो शेष भेड़ें भी रोके नहीं रुकतीं और नदी में कूद पड़ती हैं। इसी प्रकार जहाँ लोग समझाने पर भी सत्पथ का अनुसरण न करें और अन्धाधुन्ध किसी के पीछे चलने लगें, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'न खलु गड्डरिकाप्रवाहं विचरन्ति पण्डिताः।'

३४. गुडजिह्विकान्याय—उक्त न्याय का अर्थ है, गुड़ को जिह्वा पर लगाने की कहावत। प्रायः बालक कड़वी दवाई प्रसन्नतापूर्वक नहीं पीते। जब उनके हित के लिए उन्हें यह पिलानी अनिवार्य होती है तब बुद्धिमान् मनुष्य पहले उनकी जिह्वा पर गुड़ का लेप कर देते हैं इससे औषध की कड़वाहट ज्ञात या न्यून हो जाती है। इसी प्रकार जब किसी मनुष्य को किसी दुष्कर कार्य में प्रवृत्त करना होता है तब कोई प्रलोभन आदि दे दिया जाता है। ऐसे ही अवसर इस न्याय का

प्रयोगार्थ उपयुक्त होते हैं। जैसे—'न हि लोकाः प्रायशो विना गुडजिह्विका दुष्करकर्मनु प्रवर्तन्ते ।'

३५ घट्टकुटीप्रभातन्याय :—घट्टकुटीप्रभातन्याय अर्थात् चुंगी की चौकी के समीप सवेरा होने का न्याय। चुंगी से बचने के लिए गाड़ीवान आदि रात को उन मार्गों से निकलने का यत्न करते थे जिनमें चुंगी देने से बच जायँ। परंतु कभी कभी दुर्भाग्यवश प्रभात वहाँ हो जाता था जहाँ चुंगी की चौकी समीप होती थी। इस प्रकार उनके किये-कराये पर पानी फिर जाता था। इस कहावत का प्रयोग ऐसे ही अवसरों पर किया जाता है जिन पर परिहार्य वस्तु अवश्य ही समक्ष आ जाती है। यथा—'कानिचिद् वस्तून्येकाप्येव क्रेतुमहं मध्याह्ने आपणमगच्छन्, परन्तु घट्टकुटीन्यायेन मोहनस्तत्र मा विफलमनोरथं व्यदधात् ।'

३६ घुणाक्षरन्याय :—घुणाक्षरन्याय अर्थात् घुन या किसी अन्य कीड़े द्वारा लकड़ी आदि में कोई अक्षर बन जाने का न्याय। घुन आदि कीड़े लकड़ी, पुस्तक के पन्ने आदि को खाते रहते हैं। कभी-कभी उनके खाने से कोई अक्षर-सा बन जाता है, जिसे देख कौतुक होता है। इसी प्रकार दैवयोग से होने वाली बातों के लिए इस न्याय का व्यवहार होता है। पूर्वोक्त अन्धचटक-न्याय का आशय भी इसी प्रकार का है। यथा—प्राचीनहस्तलिखितग्रन्थान्वेषणाय गतेन मया तत्र 'विमाननिर्माणम्' अपि घुणाक्षरन्यायेन विगतम् ।'

३७. चन्दनन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, चन्दन के तेल की उपमा। यदि शरीर के किसी एक भाग पर चन्दन के तेल की बूँद या चन्दन का लेप लगाया जाए तो उसके आह्लादक प्रभाव का समग्र शरीर में अनुभव होता है। इसी प्रकार जहाँ एकत्र स्थित पदार्थ व्यापक प्रभाव डाले वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। यथा—'चन्दनन्यायेन भ्रमति दिग्दिगन्तं युगा-युगाद्ध महात्मना कीर्तिः ।'

३८. चौरापराधान्माण्डव्यनिग्रहन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, चोरों के अपराध पर माण्डव्य को दण्ड देने की कहावत। महाभारत के आदिपर्व में ऋषि अणीमाण्डव्य के मौनव्रत से सम्बन्धित तप की कथा आती है। जब वे तपोमग्न थे तब चोर, चुराई हुई सम्पत्ति के सहित उनके आश्रम में आ छिपे। राज-कर्मचारियों ने चोरों के साथ उन्हें भी पकड़ लिया और लगे सूली पर चढ़ाने। अन्त में मुनिजी छोड़ तो दिये गये परन्तु सूली की अणी के शरीर में रह जाने के कारण अणीमाण्डव्य कहलाने लगे। इसी प्रकार जहाँ 'करे कोई और भरे कोई' का व्यवहार होता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'कदाचित्तु नृपः कुण्ठ्यानदुष्टापराधेन सर्वानेव ग्रामवासिन चौरापराधमाण्डव्यनिग्रहन्यायेन दण्डयति ।'

३९ छत्रिन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है, छातेवालों की कहावत। आशय यह है कि यदि किसी जाते हुए जन समुदाय में अनेक लोगों ने छत्रियाँ तानी हुई हों तो हम उन सबको 'छाते वाले लोग' कह देते हैं चाहे सबके पास छत्रियाँ न भी हों। इसी प्रकार जहाँ कुछ एक के सम्बन्ध में कही-हुई बात सब पर चरितार्थ कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार उचित होता है। जैसे—'पुरा देवा राहु मुरमेव मेनिरे छत्रिन्यायेन ।'

४०. जामातृशुद्धिन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—जमाई कृत पुनरीक्षण की कहावत। मेरुतुंग के 'प्रबन्धचिन्तामणि' में कहानी यों दी गई है कि विक्रमादित्य ने राजकुमारी के लिए वर ढूँढने का काम वररुचि को सौंपा। राजकुमारी ने वररुचि से पढ़ते समय एक दिन उनकी अवज्ञा की थी, इसलिए चतुराई से वररुचि ने एक मूढ को राजा का जामाता बना दिया। वररुचि के उपदेशानुसार जामाता चुप ही रहता था परन्तु राजकुमारी ने परीक्षार्थ एक पुस्तक उसे दोहराने को दी। उसने अक्षरों के ऊपर के बिन्दु और मात्राएँ नखछेदिनी से मिटा डालीं। कुमारी पहचान गई कि यह तो कोई चरवाहा है। तब से मूर्ख से शोधन-कार्य कराने के सम्बन्ध

में यह न्याय चल पड़ा है। यथा—'कैश्चित् अयोग्यजनै कठिन कार्ये आमादच्छुद्धिवदुपहासास्पदमेव भवन्ति।'

४१ तिलतण्डुलन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है—तिल और चावल की उपमा। दूध और पानी भी मिलते हैं तथा तिल और चावल भी। परन्तु प्रथम मेल में दूध पानी का पार्थक्य अज्ञेय होता है, द्वितीय में स्पष्ट। तिल-चावल की तरह जहाँ मेल तो हो परन्तु दोनों पदार्थ पृथक् पृथक् प्रतीत भी होते हों, वहाँ तिलतण्डुलन्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'कथ नाम मौनमेव परिचितानामज्ञतायाः आच्छादनं भवितुमर्हन्ति विदुषां समाजे, तिलतण्डुलयोः स्पष्टं पृथग्दर्शनात्।'

४२ तुलोन्नमनन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—तुला को उठाने की कहावत। आशय यह है कि जब तुला का एक पलड़ा हाथ से उठाया जाता है तब दूसरा स्वयमेव नीचे चला जाता है। इसी प्रकार जहाँ एक क्रिया से दूसरी क्रिया करना भी अभिप्रेत होता है वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। जैसे—'आत्मायितमायान्त इत्यादेशाविचारयत्, तेन हि तुलोन्नयनन्यायेन दुष्टनाशो जायते देवप्रसादश्च।'

४३ तृणभक्षणन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—तिनका खाने का न्याय। भारत में यह रीति रही है कि जब कोई व्यक्ति किसी के सम्मुख दाँतों से तिनका दबा लेता था तब इसका आशय होता था—पराजय की स्वीकृति। ऐसी दशा में वह अवध्य माना जाता है। हिन्दी में यह उक्ति 'दाँतों तले तिनका दबाना' के रूप में प्रचलित है। पराजय की स्वीकृति के अर्थ में इसका प्रयोग यों होता है—'आर्य, पराजिता रिपवः खलु तृणभक्षणन्यायेन निजप्राणानरक्षन्।'

४४ दग्धेन्धनवह्निन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—उस अग्नि का दृष्टान्त जो ईंधन को जलाकर स्वयं भी बुझ गई हो। इसी प्रकार जहाँ कोई वस्तु अपने कार्य को सम्पन्न कर स्वयं भी समाप्त हो जाए, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। 'अश्मकतक्षरेणुन्याय' का आशय भी ऐसा ही है। यथा—'पाण्डवानां कोपः दुर्योधनादीन् विनाश्य दग्धेन्धनवह्निन्यायेन शान्तः।'

४५. देहलीदीपकन्याय :—देहलीदीपकन्याय अर्थात् दहलीज में रखे हुए दीपक का न्याय। कमरे के कोने में रखा हुआ दीपक तो कमरे को ही आलोकित करता है परन्तु दहलीज पर रखा हुआ अन्दर और बाहर दोनों ओर प्रकाश देता है। इसी प्रकार जहाँ कोई शब्द, वाक्यांश या कोई अन्य वस्तु दो तरफ अपना प्रभाव डाल रही हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। उदाहरण—'भवति हि पितुरर्थार्थं अभिनत्व श्रीमनस्याभिध्युपकारकस्य देहलीदीपकन्यायेन।'

४६ धान्यपलालन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—अनाज और भूसे का दृष्टान्त। जिस प्रकार लोग अनाज को ग्रहण कर लेते हैं और भूसे को त्याग देते हैं, उसी प्रकार जहाँ सारसहित वस्तु को लिया तथा निस्सार को छोड़ दिया जाता है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। जैसे—'भाक्तो गुणे सारं निस्सारम् अपास्य फल्गु-धान्य-पलालन्यायेन।'

४७. नष्टाश्वदग्धरथन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—नष्ट घोड़ों और जले रथ की कहावत। कहावत की आधार-कथा इस प्रकार है कि दो यात्री अपने अपने रथों में यात्रा करते हुए रात को एक गाँव में ठहरे। दैवयोग से रात को गाँव में आग लगी जिसमें एक के घोड़े नष्ट हो गये और दूसरे का रथ जल गया। तब एक के घोड़ों को दूसरे के रथ में जोड़ दिया गया और यात्रा जारी रही। इसी प्रकार यह न्याय वहाँ व्यवहृत होता है जहाँ पारस्परिक लाभ के लिए मिल जुलकर काम किया जाए। जैसे—'भवद्गृहमिदं त्विदं नाश्च पुरस्त्व तु गमिते, मन्ये नष्टाश्वदग्धरथन्यायेनैवावां परीक्ष्य गुर्विघ्याव।'

४८ नासिकाग्रेण कर्णमूलकर्षणन्याय —इस न्याय का शब्दार्थ है—नाक की नोक से कान के अधोभाग को खींचने की कहावत। जैसे नाक के अग्रभाग से कान के निचले भाग को खींचना असम्भव है, वैसे ही असम्भव विषयों में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'यो वै विद्यार्थी परिश्रम विनैव विद्वान् भवितुमिच्छति, स ननु नासिकाग्रेण कर्णमूलं कर्षति।'

४९. नृपनापितपुत्रन्याय —नृपनापितपुत्रन्याय अर्थात् राजा और नाई के बेटे की कहावत। कहा जाता है, कि एक राजा ने अपने नाई को राज्य भर में से सुन्दरतम बालक लाने का आदेश दिया। वह नाई सारे देश में बहुत घूमा फिरा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक दिखाई न दिया जैसा कि राजा चाहता था। विवश होकर वह घर लौट आया। उसका अपना पुत्र न सुरूप था न सुलक्षण परन्तु उसे वही सुन्दरतम प्रतीत हुआ। इसलिए वह उसे ही लेकर राजा के समक्ष जा उपस्थित हुआ। पहले तो राजा यह समझकर कि यह मेरा उपहास कर रहा है, क्रुद्ध हुआ; परन्तु कुछ सोचने पर उसे इस मनोवैज्ञानिक तथ्य का बोध हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति आत्मीय पदार्थ को ही सर्वोत्तम समझता है। अतः इस न्याय का प्रयोग उन्हीं अवसरों पर होता है जिनमें कोई व्यक्ति अपनी बुरी वस्तु को भी अच्छी समझता है। जैसे—'अज्ञात्मयदि स्व कुल्वय नृपनापितपुत्रन्यायेन सत्काव्यपदे गणयन्ति।'

५० पङ्कप्रक्षालनन्याय :—पङ्कप्रक्षालनन्याय अर्थात् कीचड़ धोने का न्याय। शरीर पर लगे कीचड़ को सभ्य मनुष्य तुरन्त धो डालता है। परन्तु उससे कहीं अच्छी बात यह है कि कीचड़ लगने ही न दिया जाय। इसी प्रकार परिस्थितियों से पहले ही बचना उत्तम है जिनमें पड़ने के पश्चात् फिर उनके प्रभाव को मिटाने का यत्न किया जाय। जैसे—'पश्चात्त्यागाद्धि वित्तस्य वरं पूर्वमसङ्ग्रहः। प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम्।'

५१ पङ्ग्वन्धन्याय :—इस न्याय का अर्थ है लँगड़े और अंधे की कहावत। न अंधा मार्ग देख सकता है न पंगु पथ पर चल सकता है। परन्तु यदि पंगु अंधे के कंधों पर बैठ जाय तो दोनों निर्विघ्न यात्रा कर सकते हैं। इसी प्रकार जहाँ पारस्परिक स्वार्थ सहयोग किया जाय, वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'सुवक्ताऽपि देवदत्तो न पण्डित, सुपण्डितोऽपि यज्ञदत्तो वक्तृत्वविहीन, तथापि तौ पङ्ग्वन्धन्यायेन संगत्य स्वदेशसेवायां संलग्नौ दृश्येते।'

५२ पिष्टपेषणन्याय :—पिष्टपेषणन्याय अर्थात् पीसी हुई वस्तु को पुनः पीसने का न्याय। गेहूँ, मकई आदि को तो पीसा जाता है परन्तु उनके आटे को पीसना निरर्थक होता है। साथ ही यह पेषण पेषक की मूर्खता का द्योतक माना जाता है। इसी प्रकार के अनावश्यक और अनर्थक कार्यों के सम्बन्ध में उक्त न्याय का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है—'महान् दोष स्वाय यदि मुक्तस्य पुनः पुनर्वर्णनम्, पिष्टपेषणं हि तत्।'

५३ पुष्टलगुडन्याय —इस न्याय का अर्थ है, मोटे डंडे का दृष्टान्त। आशय यह है कि यदि भौंकने वाले कुत्ते की ओर मोटा डंडा फेंका जाय तो वह सबके दूसरे कुत्तों को भी स्वयं कर शान्त कर देगा। इसी प्रकार जहाँ एक क्रिया से एकाधिक कार्यों की सिद्धि हो जाय, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'हीरोशीमानागासाकीनगरयोरणुबमाभ्यां विध्वस्तयोर्महायुद्धं पुष्टलगुडन्यायेन निमिषेण समाप्तिमगात्।'

५४ प्रधानमल्लनिबर्हणन्याय —इस न्याय का अर्थ है, मुख्य शत्रु के विनाश की कहावत। आशय यह है कि जब प्रबलतम वैरी का विनाश कर दिया जाता है तब सामान्य वैरी स्वयमेव वश में हो जाते हैं। इसी प्रकार जब भारी बाधाएँ मिटा दी जाती हैं तब सामान्य विघ्न बाधक नहीं बन सकते। जैसे—'हतयोर्भीष्मद्रोणयोर्निश्चित एवाभूत् पाण्डवानां विजयः प्रधानमल्लनिबर्हणन्यायेन।'

५५. प्रपानकरसन्याय —प्रपानकरसन्याय अर्थात् शर्बत की उपमा। शर्बत बनाने के लिए अनेक द्रव्यों को मिश्रित करना पड़ता है। शर्बत का स्वाद उनमें से किसी एक के भी तुल्य नहीं होता। इसी प्रकार जहाँ अनेक वस्तुओं के संयोग से एक विलक्षण पदार्थ निर्मित हो जाय वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'अभिमन्युः किल प्रपानकरसन्यायेन कृष्णोऽपि पाण्डवानुगुणैस्त्वरचितः।'

५६. फलवत्सहकारन्याय —इस न्याय का अर्थ है—आम के फलित पेड़ का दृष्टान्त। आम का फलवान् वृक्ष फल ही नहीं देता, अपितु यात्रियों को सुगन्ध और छाया भी प्रदान करता है। इसी प्रकार जहाँ कोई क्रिया अभीष्ट फल के अतिरिक्त भी कोई फल दे, वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। यथा—'पुत्रोत्पत्तिरिह नाम प्रसववशिनी मातृवत्सल, प्रशमयितो पितृ नैवर्योर्विकशनिशो च भवति वंशस्य फलवत्सहकारन्यायेन।'

५७. बहुराजदेशन्याय —इस न्याय का शब्दार्थ है—अनेक राजाओं के देश की तरह। जहाँ एकाधिक राजाओं का शासन होता है वहाँ उनकी परस्पर विरोधी आज्ञाओं के कारण प्रजा अति पीड़ित हो उठती है। यथा—'यस्मिन् कुले मातापित्रोर्वैमत्यं विद्यते तत्रापि तु निरन्तरं भवति सन्ततिर्बहुराजकदेशवत्।'

५८. बीजाङ्कुरन्याय —बीजाङ्कुरन्याय अर्थात् बीज और अंकुर का न्याय। इस न्याय का उद्गम बीज और अंकुर के पारस्परिक कारण-कार्यभाव से हुआ है। बीज से अंकुर उत्पन्न होता है अतः बीज कारण है, अंकुर कार्य। परन्तु आगे चलकर उसी अंकुर से बीज भी उत्पन्न होता है, इसलिए अंकुर कारण और बीज कार्य बन जाता है। इस प्रकार जहाँ दो पदार्थ एक दूसरे के कारण और कार्य भी हों वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'स्वास्थ्येन वित्तमधिगम्यते वित्तेन च पुनः स्वास्थ्यं बीजाङ्कुरवत्।'

५९. मण्डूकप्लुतिन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है, मेंढक की छलांग की लोकोक्ति। मेंढक सर्वत्र समग्र मार्ग का स्पर्श करता हुआ नहीं चलता, छलाँगें लगाता जाता है, जिससे मध्यवर्ती स्थान अस्पृष्ट रह जाता है। इसी प्रकार जहाँ कोई नियम सब पर समानरूप से लागू न हो, बीच-बीच में कई वस्तुओं को छोड़ता जाए, अथवा कोई काम बीच-बीच में छोड़कर किया जाए वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। यथा—'अस्माकमध्यापकः पाठ्यपुस्तकं मण्डूकप्लुतिन्यायेन पाठयति न तु यथाक्रमम्।'

६०. मात्स्यन्याय —मत्स्य न्याय अर्थात् मछलियों का दृष्टान्त। प्रायः यह देखा जाता है कि बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को हड़प जाती हैं। इस प्रकार जहाँ बलवान् निर्बल को मारने या सताने लग जाएँ वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी की लोकोक्ति 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' भी इसी आशय को व्यक्त करती है। उदाहरण देखिए—'सुशासनाभावे यदि राष्ट्रे मात्स्यन्यायः प्रवर्तेत, तर्हि किमाश्चर्यम्।'

६१. रथकारन्याय —इस न्याय का अर्थ है—रथकार (रथ बनानेवाले) का दृष्टान्त। शास्त्र में कहा गया है कि रथकार वर्षाऋतु में अग्नि की स्थापना करे। प्रश्न उठता है, रथकार का अर्थ रथ बनाने वाला कोई भी व्यक्ति है या विशेष उपजाति का मनुष्य। जैमिनि ने निर्णय किया है कि केवल जातिविशेष का व्यक्ति ही। इस प्रकार इस न्याय का भाव यह है कि शब्दों का रूढ़ या प्रचलित अर्थ यौगिक अर्थों से बलवान् होता है। यथा—'अत्र तु रथकारन्यायेन कार्यपटुरेव कुशलो मन्यते न पूर्ववत् कुशो कृन्ते कुशानयनदक्ष एव।'

६२. राजपुरप्रवेशन्याय —इस न्याय का शब्दार्थ है—राजधानी में प्रवेश का दृष्टान्त। राजपुर में प्रवेश करने का नियम यह है कि पंक्ति बनाकर पर्याय से प्रविष्ट हुआ जाए। जो उच्छृङ्खल

इस नियम को भंग करता है, उसके पिटने की आशंका रहती है। इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य को नियमानुसार करना अभीष्ट हो, वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। दृष्टान्त लीजिए—'यस्मिन् तु विद्यालये छात्रा राजपुरप्रवेशन्यायेन स्वकक्षा प्रविशन्ति न तत्र कोलाहलो जायते।'

६३ रुमाक्षिप्तकाष्ठन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, नमक की खान और लकड़ी का दृष्टान्त। यह प्रसिद्ध है कि जो वस्तु नमक की खान में फेंकी जाती है, नमक बन जाती है। इसी प्रकार जहाँ कुसंगति के प्रबल प्रभाव से अन्य वस्तु भी वैसी बन जाए, वहाँ इस न्याय का प्रयोग उचित है। यथा—'विनीता अपि जना अधिकारं प्राप्य रुमाक्षिप्तकाष्ठन्यायेन दृप्ता भवन्ति।'

६४ लोहचुंबकन्याय :—लोहचुम्बकन्याय अर्थात् लोहे और चुम्बक का न्याय। यह न्याय उस सम्बन्ध को व्यक्त करता है जिसके कारण दो पदार्थ दूर होते हुए भी, स्वभावतः एक-दूसरे के समीप जाने का उद्योग करते हैं। जैसे—'दूरस्था अपि सज्जना लोहचुम्बकवत् मिथो मिलितुं वाञ्छन्ति।'

६५. बकबन्धनन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, बगुले को पकड़ने का दृष्टान्त। किसी ने बगुला पकड़ने की रीति यह बताई कि जब बगुला बैठा हो तो चुपके से उसके सिर पर मक्खन रख देना चाहिए। जब मक्खन धूप से पिघलकर उसकी आँखों में पड़ेगा तो वह अन्धा हो जायगा और झट पकड़ लिया जायगा। वस्तुतः यह विधि हास्यास्पद है क्योंकि बगुला तभी क्यों न पकड़ लिया जाए जब उसके सिर पर मक्खन रखा जाए। इसी प्रकार जहाँ सहज सरल विधि को छोड़कर किसी हास्यास्पद ढंग को स्वीकृत किया जाता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'बकबन्धनन्यायपरोऽयं पदार्थं यद् गलघण्टिकारोपेण अवगते मार्जारागमे मूषाणा-मात्मरक्षाविचारः।'

६६. वनसिंहन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—वन और सिंह का दृष्टान्त। सिंह न हो तो लोग वन को ही काट डालें और वन न हो तो सिंह को ही मार डालें। ये दोनों वस्तुतः एक दूसरे के रक्षक हैं। इसी प्रकार जहाँ पदार्थ परस्पर रक्षक हों वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'न जातु शिष्यमैत्रकी अन्योऽन्यं द्रुह्यतः वनसिंहवदन्योऽन्याश्रयित्वात्।'

६७ वह्निधूमन्याय :—वह्निधूमन्याय अर्थात् अग्नि और धुएँ के निरन्तर साथ साथ रहने का न्याय। जहाँ धुआँ होता है वहाँ अग्नि होती ही है। इसी प्रकार जहाँ एक पदार्थ का दूसरे से अनिवार्य साहचर्य बताया जाए वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—'यत्र योगेश्वरः कृष्णः यत्र च धनुर्धरः पार्थः, तत्र विजयो वह्निधूमन्यायेन निश्चित एव।'

६८. विषकृमिन्याय :—विषकृमिन्याय अर्थात् विष के कीड़ों का न्याय। साधारण प्राणी तो विष के प्रभाव से मर जाते हैं, परन्तु विष के कीड़े विष में ही उत्पन्न होते हैं, उसी को खाते हैं और फिर भी जीवित रहते हैं। इस न्याय का प्रयोग उन अवसरों पर होता है जिन पर सामान्य प्राणी तो प्राणों से हाथ धो बैठते हैं परन्तु व्यक्तिविशेष सुरक्षित रहते हैं। जैसे—'हरिजनानां कर्म कुर्वन्तः सामान्यास्तु अचिरात् कालकवलिता भवेयुः ते च हरिजनाः पुनः विषकृमिन्यायेन दीर्घजीविनो भवन्ति।'

६९ विषवृक्षन्याय :—विषवृक्षन्याय अर्थात् विषैले पेड़ का न्याय। कालिदास ने 'कुमारसम्भव' में कहा है—'विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसांप्रतम्' अर्थात् यदि विष का वृक्ष भी स्वयं लगाया और पाला पोसा गया हो तो उसे काटना या उखाड़ना उचित नहीं होता। इसी प्रकार जिस व्यक्ति का स्वयं पालन पोषण किया हो, वह बड़ा होने पर अनिष्टकर भी सिद्ध हो, तो भी उसका विध्वंस समीचीन नहीं। यही इस न्याय का आशय है। उदाहरण द्रष्टव्य है—'विषवृक्षन्यायमनुसरता पित्रा कुपुत्रस्याप्यहितं कर्तुं न पार्यते।'

७० वीचितरङ्गन्याय —वीचितरङ्गन्याय अर्थात् तरंग और तरंग का न्याय। नदी, सरोवर, समुद्र आदि में हम देखते हैं कि लहरें क्रमशः एक दूसरी को तब तक आगे-आगे ढकेलती जाती हैं जब तक वे सब तट तक नहीं पहुँचतीं। इसी प्रकार जब कुछ वस्तुएँ या व्यक्ति एक-दूसरे की सहायता से गन्तव्य तक जा पहुँचते हैं तब इस न्याय का निम्नलिखित प्रकार से प्रयोग किया जाता है—'वीचितरङ्गन्यायेन अन्योऽन्योपकारि खलु सकलमिदं जीवितम्।'

७१ वृद्धकुमारीवाक्य(वर)न्याय —वृद्धकुमारीवाक्यन्याय अर्थात् बूढ़ी कन्या के वर का न्याय। पतञ्जलि ने महाभाष्य में लिखा है कि जब इन्द्र ने एक बूढ़ी कन्या को वर माँगने को कहा तब वह बोली—'पुत्रा मे बहुक्षीरघृतमोदनं कांस्यपात्र्यां भुञ्जीरन्' अर्थात् मेरे पुत्र काँसे के पात्रों में प्रचुर दूध और घी से युक्त चावल खावें। अब यदि यह वर प्राप्त हो जाए तो पति, सन्तान, गौ, दूध, घी, सुवर्ण आदि सभी पदार्थ स्वतः एव प्राप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार जहाँ कोई एक ही वस्तु माँगी जाए जिसके साथ अनेक उपयोगी द्रव्यों की प्राप्ति अनिवार्य हो जाए, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'स्वसैन्य रामनिरसनमनस्थलीं शिशुमिच्छामीति वर देव याचमानेनान्धवृद्धेन आत्मनः पुत्रे यौवन लब्धे पत्नी पुत्र पौत्रश्च धनम्।'

७२ व्यालनकुलन्याय —इस न्याय का अर्थ है—साँप और नेवले की कहावत। साँप और नेवले में जन्मजात वैर होता है। वे जहाँ एक-दूसरे को देखते हैं, लड़ पड़ते हैं। उन्हीं की तरह जब दो वस्तुओं में स्वाभाविक वैर हो तब व्यालनकुलन्याय (अहिनकुलन्याय) का व्यवहार होता है। यथा—'अधुना तु रूसनरीश्वरयोर्दाम्पत्यं व्यालनकुलवद् दृश्यते।'

७३ शतपत्रपत्रशतभेदन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है—कमल के सौ पत्तों को छेदने का दृष्टान्त। जब कोई व्यक्ति कमल के सौ कोमल पत्तों को सुई से छेदता है तब ऐसा लगता है कि सब पत्ते एक-साथ ही छिद गये हैं। परन्तु वस्तुतः छिदते एक दूसरे के अनन्तर ही हैं। इसी प्रकार जहाँ क्रमशः होने वाली अनेक क्रियाओं का एक साथ होना कहा जाता है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—'पश्य मृत मुक्ता सा मृगी कन्दिता मूर्च्छिता मृगः च शत-पत्रपत्रशतभेदन्यायेन।'

७४ शलभन्याय —इस न्याय का अर्थ है पतंगे का दृष्टान्त। मूर्ख पतंगा जलते हुए दीपक को देख ऐसा मुग्ध होता है कि प्राणों तक की चिन्ता नहीं करता। इसी प्रकार मूर्ख लोग विषयों से आकृष्ट होकर प्राणों से हाथ धो बैठते हैं। आजकल इसका प्रयोग महात्मा के लिए भी किया जाता है। दोनों का दृष्टान्त एक ही वाक्य में देखें—'विषयेषु शलभायन्ते मूढाः, धनराशौ कामुकाः, राष्ट्रवेदिकायां च राष्ट्रभक्ताः।'

७५ शाखाचन्द्रन्याय —शाखाचन्द्रन्याय अर्थात् वृक्ष की शाखा और चाँद का न्याय। आकाश में चन्द्र तो बहुत दूर होता है परन्तु प्रतिपदा आदि के दिन किसी को दिखाने के लिए प्रायः कहा जाता है—'देखो, वह वृक्ष की शाखा के ऊपर है।' इसी प्रकार जहाँ कोई पदार्थ हो तो बहुत दूरवर्ती पर उसको दिखाने के लिए ऐसे पदार्थ की ओर संकेत किया जाय जो उसके समीप प्रतीत होता हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'शाखाचन्द्रन्यायेन पेरिसनगरमपि रोम-समीपवर्तिनमेव दर्शयति बालानि मानचित्रम्।'

७६ शिरोवेष्टनेन नासिकास्पर्शन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है—बाहु को सिर के पीछे से लाकर नाक को छूने का दृष्टान्त। नाक को सामने से छूना सुकर है, बाहु पीछे से लाकर छूना दुष्कर। जब उद्देश्य केवल नासिकास्पर्श हो तो बाहु को सिर के पीछे से लाकर छूने में कोई लाभ नहीं है। इसी प्रकार जब लोग किसी कार्य को सीधे ढंग से नहीं करते, घुमा-फिराकर व्यर्थ कष्ट

महते था देते हैं। ऐसे ही अवसरों पर उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'को न्यमोऽनेन शिरोवेष्टनेन नासिकास्पर्शेन, प्रकृत स्पष्ट ब्रूहि।'

७७ श्वपुच्छोन्नामनन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—कुत्ते की पूँछ को सीधा करने का दृष्टान्त। कुत्ते की पूँछ अनेक यत्न करने पर भी सीधी नहीं होती, प्रयत्न करने वाले का श्रम व्यर्थ ही सिद्ध होता है। इसी प्रकार जहाँ काम के लिए किया हुआ उद्योग सर्वथा निष्फल रहे, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'श्वपुच्छोन्नामनमेवेदं महत्वात् मानी भवतीदं यदु दुःस्थितोऽपि प्रेम्णा वशीकर्तुमयतत।'

७८ शवोद्वर्तनन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—मृतक को उबटन लगाने का दृष्टान्त। सुगन्धित द्रव्य सजीव शरीर के शोभावर्द्धक हैं, निर्जीव के नहीं। इसी प्रकार जहाँ सर्वथा निष्फल उद्योग किया जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'पक्षिमन्नतिनिर्गमनान्तर दुःस्थितगास्य पुनः भारते सन्धानं शवोद्वर्तनमेव।'

७९ सिंहावलोकनन्याय :—सिंहावलोकनन्याय अर्थात् सिंह के समान देखने का न्याय। चलता हुआ सिंह सामने तो देखता ही है, थोड़ी-थोड़ी देर बाद पीछे भी दृष्टिपात कर लेता है कि कोई भक्ष्य वस्तु पहुँच के भीतर पीछे भी है या नहीं। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति आगे-आगे कार्य करता हुआ पिछले कार्य पर भी कुछ दृष्टिपात करता है, तब सिंहावलोकनन्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'साम्प्रतमपि छात्रैर्पठितमद सिंहावलोकनवज्ज्ञातव्यम्।'

८० सिकतातैलन्याय :—अर्थात् रेत से तेल निकालने की कहावत। जैसे गधे या घोड़े के सिर पर सींग नहीं निकलते वैसे ही रेत से तेल की उत्पत्ति असम्भव है। इसी प्रकार की असम्भव बातों के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तराधनं कदापि सिकतासु तैलमिवासम्भवं प्रतीयते।'

८१ सुन्दोपसुन्दन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—सुन्द और उपसुन्द की घटना। महाभारत के आदिपर्व (अध्याय २०९–२१२) में सुन्दोपसुन्द नाम के दो अजेय असुर भाइयों की कथा आती है। उन्हें नष्ट करने के उद्देश्य से ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को एक अद्वितीय सुन्दरी (तिलोत्तमा) निर्माण करने को कहा। ब्रह्मा ने तिलोत्तमा को उन असुरों के पास कैलास-सोपान पर भेजा। दोनों उसे देख मुग्ध हो गये और उसे अपनी-अपनी ओर खींचने। अन्ततः दोनों क्रुद्ध होकर लड़ पड़े और दोनों ही मर गये। इन्हीं के समान जब दो समान बलवाले पदार्थ एक दूसरे के नाशक हों, तब इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'नवद्युतनीतिकाराष्ट्रे परस्परं युध्यमाने सुन्दोपसुन्दवत् न नश्यतः, शान्तिस्थापनं कल्पितमस्त्येव।'

८२ सूचीकटाहन्याय :—सूचीकटाहन्याय अर्थात् सुई और कड़ाहे का न्याय। किसी लोहार के पास जब एक व्यक्ति कड़ाहा बनवाने आ पहुँचे और दूसरा सुई, तब लोहार पहले सुई बनाता है क्योंकि उसे वह सहज ही अल्प काल में बना लेता है। इसी प्रकार इस न्याय का आशय यह है कि कठिन तथा दीर्घकालसाध्य कार्य पीछे करना चाहिए और सुकर तथा अल्पकालसाध्य कार्य पहले। जैसे—'केनोपायेन विस्तृतं पुस्तकप्रकाशनं सूचना, प्रकृत पठ स्थानिका, सूचीकटाहन्यायेन प्रथम भवन्ति।'

८३ सूत्रबद्धशकुनिन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—सूत से बँधे हुए पक्षी का दृष्टान्त। सूत से बँधा हुआ पक्षी न इधर-उधर स्वच्छन्द उड़ सकता है, न कहीं यथेष्ट विश्राम कर सकता है। जिस पराधीन व्यक्ति की दशा इसके समान हो, उसके विषय में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'दैवेनैवोऽधिगतबन्धः इतस्ततः दशा सूत्रबद्धशकुनेरिवाभूत्।'

८४ सोपानारोहणन्याय —सोपानारोहणन्याय अर्थात् सीढ़ियाँ चढ़ने का दृष्टान्त। जैसे मनुष्य छत पर एकाएक नहीं जा पहुँचता, एक-एक सीढ़ी चढ़कर ही पहुँचता है, वैसे ही ज्ञानादि की प्राप्ति भी क्रमशः ही होती है। ऐसे ही अवसर इस न्याय के प्रयोगार्थ उचित हैं। जैसे—'सोपानारोहणन्यायेनैव भवति विद्योच्चयो विद्यार्थिनां, धनवृद्धिश्च सज्जनानाम्।'

८५ स्थालीपुलाकन्याय :—स्थालीपुलाकन्याय अर्थात् देगचे और पुलाव का न्याय। जब किसी देगचे में चावल पकाये जाते हैं तब पाचक प्रत्येक दाने को निकाल कर नहीं देखता कि वह गल गया है या नहीं। दो चार दाने देखकर ही अनुमान कर लेता है कि सब के सब गल गये या कुछ कसर है। इसी प्रकार जहाँ किसी समुदाय के दो-चार व्यक्तियों से सबके सम्बन्ध में कुछ अनुमान किया जाता है, वहाँ इस न्याय का इस प्रकार व्यवहार किया जाता है—'विद्यालय-निरीक्षकाः स्थालीपुलाकन्यायेनैव विद्यार्थिनां योग्यतां परीक्षन्ते।'

८६. स्थावरजंगमविषन्याय :—अर्थ है—स्थावर और जंगम विष का दृष्टान्त। पौधों और खनिज द्रव्यों के विष स्थावर विष कहलाते हैं तथा प्राणियों के विष जंगम विष। कहते हैं, विष को विष नष्ट करता है, जैसे कि महाभारत की कथा में भीमसेन को दुर्योधन द्वारा दिया हुआ स्थावर विष नदी में साँपों के जंगम विष से दूर हो गया था। इसी प्रकार जहाँ एक वस्तु का प्रतिकार दूसरी से हो जाय, वहाँ यह न्याय प्रयोक्तव्य है। यथा—'वर्तमाने बहूनां रोगाणां चिकित्सा स्थावरजंगमविषन्यायेनैव विधीयते।'

८७ स्थूणानिखननन्याय —स्थूणानिखननन्याय अर्थात् खंबा गाड़ने का न्याय। जैसे भूमि में खंबा गाड़ना हो तो उसे बार-बार हिलाकर गहरा ठोंका जाता है, वैसे ही अपने पक्ष के समर्थन के लिए जब कोई वक्ता, लेखक आदि अनेक युक्तियाँ, दृष्टान्त आदि प्रस्तुत करता है तब यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'स्थूणानिखननन्यायेन समर्थयति प्रवक्ता स्वकीयं पक्षं दृष्टान्तपरम्परया।'

८८ स्वामिभृत्यन्याय :—स्वामिभृत्यन्याय अर्थात् मालिक और नौकर का न्याय। स्वामी और सेवक में पोषक तथा पोष्य या धारक और धार्य का सम्बन्ध होता है। इसी प्रकार का सम्बन्ध जहाँ दो वस्तुओं या व्यक्तियों में दिखाई दे, वहाँ उक्त न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'इह लोके सर्वत्र जनेश्वरयोः व्यवहारः स्वामिभृत्यन्याय इव दृश्यते।'

८९ स्वेदजनिमित्तेन शाटकत्यागन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—पसीने से उत्पन्न कीड़ों के कारण वस्त्र फेंक देने का न्याय। इसी को कहीं पर 'यूकाभिया कन्थात्यागन्याय' भी कहते हैं जिसका हिन्दी रूपान्तर 'जुओं के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती' है। आशय यह है कि सामान्य भयों से भीत होकर भारी हानि सहन करना बुद्धिमत्ता नहीं है। यथा—'परीक्षायां वैफल्यमपि सम्भवतीति मत्वा परीक्षायां छात्रा न सम्मिलिता भवेयुरिति न, स्वेदजनिमित्तेन त्यागन्यायेन।'

९० ह्रदनक्रन्याय :—ह्रदनक्रन्याय का अर्थ है—झील और मगर का दृष्टान्त। इसका आशय 'वनसिंहन्याय' के समान है। विस्तारार्थ वहीं देखिए।

सप्तम परिशिष्ट

प्राचीन भारत का भौगोलिक परिचय

मातृसंस्कृति से अपना सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जहाँ **मातृभाषा** का परिचय आवश्यक है, वहाँ **मातृभूमि** के विषय में भी कुछ न कुछ ज्ञान अपरिहार्य है। इसी ध्येय से प्रस्तुत अनुक्रम भी हम जोड़ रहे हैं।

जिस वृद्ध भारत के विषय में हम सदा गर्व अनुभव करते हैं, उसके तीर्थादि स्थानों के सम्बन्ध में परिचयात्मक संकेत प्राचीन साहित्य में जहाँ तहाँ बिखरे पड़े हैं। संस्कृत-नाटकों के कथा प्रवाह को भी, उनकी पृष्ठभूमि के अभाव में, समझ सकना असम्भव है। हमारी विभिन्न बोलियों, रीति वृत्तियों, कवि-समयोक्तियों के मूलोद्गम भी तो लोक-संस्कृति के यही उर्वर प्रदेश ही थे। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का जितना श्रेय अश्वमेध की परम्परा को अक्षुण्ण रखने वाले हमारे चक्रवर्ती सम्राटों को रहा है, उतना ही श्रेय इस देश के महाकवियों (वाल्मीकि, व्यास) को भी है। मेघदूत का सन्देशहर बादल स्वयं कवि का उदार हृदय है, जिसके मुक्त व्योम में उमड़ने-उड़ने में भारत, मानो एक घोंसले में आबद्ध हो गया है।

हमारे प्राचीन भूगोल को लेकर कोई क्रमबद्ध अनुसन्धान अभी तक नहीं किया गया। श्री नन्दूलाल दे की 'दि जिओग्राफिकल डिक्शनरी ऑव एन्शेण्ट एण्ड मिडीवल इण्डिया' (प्रथम संस्करण १८८९, द्वितीय १९२७) आज स्वयं संशोधन चाहती है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने जिस प्रकार पाणिनिकालीन तथा बाणकालीन भारतवर्ष के सांस्कृतिक रूप को एकसूत्रित करने का यत्न किया है, जिस प्रकार डा० ऑरेलस्टाइन ने काश्मीर के विस्मृत नामों का उद्धार किया था, उसी प्रकार की बृहत्तर भारत की क्रमिक कहानी के लेखक को अभी जन्म लेना है।

प्राचीन भारत के कुछ एक नामों का तुलनात्मक उल्लेख हम कर रहे हैं, इस आशा से कि यदि कोई अज्ञात युवक, एक ही सही, इस 'प्रथम प्रभात' के संस्पर्श से पुलकित होकर अनुसन्धान की इस अछूती दिशा में प्रयत्नशील हो जाए।

अंग—प्राचीन भारत के १६ 'राजनीतिक' जनपदों में एक, जो कभी रोमपाद (रामायण) तथा कर्ण (महाभारत) के शासन में था। आजकल भागलपुर के आसपास का प्रदेश।

अंजनगिरि—पंजाब की 'सुलेमान' पर्वतमाला (वराह०*)।

अगस्त्याश्रम—नासिक, कोल्हापुर (बम्बई), उत्तरप्रदेश, गढ़वाल, सतपुड़ा आदि में ऋषि अगस्त्य के नाम से प्रसिद्ध आश्रम। अगस्त्य ही वे 'चरित्र विजयी' वीर थे, जिन्होंने सर्वप्रथम आर्य-सभ्यता का दक्षिण में प्रवेश सम्भव किया था। लोगों का विश्वास है कि अगस्त्य आज भी ताम्रपर्णी के उद्गम स्रोत (तिनिवेली में) 'अगस्त्यकूट' पर समाधिस्थ हैं।

अचिन्त—मध्यभारत में एलोरा के प्राय ६० मील उत्तरपूर्व की ओर 'अजिण्ठा' ('अजन्ता' उच्चारण अशुद्ध है) नामक गुहासमूह, जहाँ (बौद्धों के) योगाचार्य मत के संस्थापक आर्य असंग का प्रथम 'आश्रम' था। गुहाओं में भव्यचित्रकला का अङ्कन विहार के स्थविर 'अचल' के आदेश पर ५वीं–६ठी शती में सम्पन्न हुआ था।

अचि(जि)रावती—अवध की राप्ती (रेवती) नदी, जिस पर कभी श्रावस्ती नगर बसा हुआ था। २ इरावती (रावी)। (वराह०)

---

* संकेतों के विवरण के लिए ग्रन्थारम्भ में संकेत-सूची देखिए।

अच्छोद—काश्मीर का एक सरोवर (आधु० अच्छावत), जिसके तट पर कभी 'सिद्धाश्रम' अवस्थित था। (कादम्बरी)

अनन्तनाग—जेहलम के दक्षिण तट पर स्थित (काश्मीर की) प्राचीन राजधानी। (आधु० इस्लामाबाद)

अनन्तशयन—त्रावनकोर का पद्मनाभपुर, जहाँ एक मन्दिर में विष्णु की शेषनाग पर प्रसुप्त मुद्रा में अंकित मूर्त्ति सुरक्षित है। (पद्म० उत्तर०)

अनहिल्पत्तन—वल्भी-साम्राज्य के विध्वंस पर 'वनराज' द्वारा गुजरात (उत्तर-बड़ौदा) में (७४६ ई०) प्रतिष्ठापित एक (आधु० अनिहिलवाड़) नगर।

अनुराधपुर—सिंहल (सीलोन) की पुरानी राजधानी, जहाँ महिन्द तथा संघमित्रा द्वारा रोपित बोधिवृक्ष की शाखा से विकसित 'अश्वत्थ' आज भी विद्यमान है। (महावंश)

अनूप—दक्षिण मालव देश, हैहय, माहिष (माहिष्मक)। (हरिवंश०)

अन्तर्वेद—गंगा तथा यमुना के अन्तर्गत दोआब। (भविष्य०)

अपरा—अफगानिस्तान। (ब्रह्माण्ड०)

अपरान्त (क)—कोंकण तथा मालाबार, पश्चिमी घाट। (रघु०, महा०)

अभिसारा (हि)—पेशावर डिविजन में एक जिला, उरशा (आधु० हजारा), जिसे अर्जुन ने (सभापर्व०, पद्म०) अपनी उत्तर दिग्विजय में जीता था।

अमरकण्टक—गोंडवाना में मेकल पर्वतमाला का एक भाग, जो नर्मदा तथा शोण का उद्गमस्थल है, आम्रकूट (?) (पद्म०, स्कन्द०, मेघदूत)।

अमरावती—आन्ध्र में कृष्णा के तट पर, बेजवाड़ा के प्रायः २० मील पश्चिम की ओर स्थित प्रसिद्ध बौद्धस्तूप (का भव्य स्थान) जिसे चतुर्थ शती के अन्त में आन्ध्रों ने निर्मित किया था।

अम्बर—जयपुर (के समीप प्राचीन नगर आमेर)। इसकी मूल प्रतिष्ठा मान्धाता के पुत्र अम्बरीष ने की थी तथा 'वर्तमान' रूपान्तर मानसिंह ने अकबर के दिनों में किया था। (भविष्य०)

अयोध्या—'राम-राज्य का पुनीत धर्मक्षेत्र', अवध। बौद्धयुग में सरयू नदी अयोध्या को उत्तरकोसल तथा दक्षिणकोसल में विभक्त करती थी। अयोध्या [illegible] ध्वस्त तीर्थों का पुनरुद्धार ५वीं शती में किसी गुप्त 'विक्रमादित्य' ने किया था।

अरण्य—सैन्धव, दण्डक, नैमिष, कुरुजांगल, अपरावृत्त, जम्बुमार्ग, पुष्कर, हिमालय तथा अरण्य का नौ तीर्थवनों में परिगणन होता है। (देवी०)

अरुणाचल—नैपाल के पश्चिम में एक पर्वतमाला। २ दक्षिण भारत में सुरक्षित 'अष्टमूर्त्ति' (शिवजी महाराज) की पाँच 'भौतिक' मूर्त्तियों में एक—'अग्नि प्रतिमा' जहाँ प्रतिष्ठित है। (ब्रह्माण्ड०)

अरुणोद—गढ़वाल। (स्कन्द०)

अर्धगंगा—कावेरी। (हरिवंश०)

अर्बुद—(राजपूताना की) सिरोही रियासत में अरवली पर्वतमाला की 'आबू' शाखा, जहाँ से वशिष्ठ ने विश्वामित्र के विरुद्ध युद्ध करने के लिए 'परमार' जैसे वीर को एक 'अग्निकुण्ड' से उत्पन्न किया था। (महाभा०, पद्म०)

अलका—यक्षपति कुबेर की राजधानी, जिसका नामकरण, सम्भवतः, गढ़वाल में बहती अलकनन्दा (अपरनन्दा, वसुधारा) नामक नदी के अनुकरण पर हुआ था। (स्कन्द०)

अवन्ती—मालव राज्य की 'राजधानी' उज्जयिनी (उज्जैन), जिसे ७-८वीं सदी से मालवा कहते आए हैं। कभी यह सम्राट्चक्रवर्ती विक्रमादित्य की 'राजधानी' थी। २ सिप्रा (नदी का एक नाम), जिस पर प्राचीन उज्जैन स्थित था।

अविमुक्त—काशी, वाराणसी (बनारस)। (शिव०, मत्स्य०)।

अश्मक—(दशकुमारचरित में) विदर्भ के अधीन एक राज्य, जो अर्थशास्त्र के टीकाकार भट्टस्वामी के अनुसार, महाराष्ट्र है—और कभी अवन्ती-सामान्य के उत्तर-पश्चिम में था। (कूर्म० हर्ष०, नातक०) वक्षु (अश्मन्वती आमू) की सभ्यता का देश—ऑक्सियाना, 'पाताल'।

अश्मन्वती—वक्षु (आक्सस), इक्षु, यक्षु, आमू दरिया। (रघु०)

असिक्नी—चनाब की एक धारा।

अहिच्छत्र—रोहीलखण्ड में बरेली से २० मील पश्चिम की ओर, आधुनिक रामनगर; अहिक्षेत्र, छत्रवती। (महा०)

आदर्शावली—अरावली पर्वतमाला। (दे० आर्यावर्त)

आनर्त्त—गुजरात (तथा मालवदेश का कुछ अंश), जिसकी राजधानी कभी कुशस्थली (द्वारिका) भी। उत्तर गुजरात की राजधानी का नाम भी कभी आनर्त्तपुर (आनन्दपुर, आधु० बाडनगर) रहा था। (भागवत०)

आन्ध्र—गोदावरी तथा कृष्णा नदियों का 'मध्यदेश', राज० अमरावती। सदियों यहाँ वेङ्गी के पल्लवों तथा कल्याणपुर के चोलों का उत्थान पतन होना रहा। स्वय आन्ध्रों का राजवंश, इतिहास में, सातवाहन अथवा सातकर्णि के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। (गरुड०, अनर्घराघव)

आपगा—(पश्चिमी पंजाब की) रावी के पश्चिम में एक सरिता। २. कुरुक्षेत्र में चितांग नदी की एक सहायिका, जिसे ओघवती तथा 'आपया' भी कहते हैं। (वामन०)

आभीर—नर्मदा के मुहाने के गिर्द, गुजरात का दक्षिणपूर्वीय भाग। (ब्रह्माण्ड०, महाभा०)

आम्रकूट—अमरकण्टक।

आर्जिकीया—व्यास (विपाशा) की एक धारा।

आर्यावर्त्त—(मनु के अनुसार) हिमाद्रि तथा विन्ध्य के मध्य में स्थित देश, उत्तरापथ। पतञ्जलि के समय में आर्यावर्त्त की चार 'पार्वती' मर्यादाएँ थीं—१. उत्तर में हिमालय, २. दक्षिण में पारियात्र, ३ पश्चिम में आदर्शावली, तथा ४ पूर्व में कालकवन। राजशेखर के बाल-रामायण के अनुसार दक्षिणभारत तथा उत्तरभारत की स्वाभाविक विभाजन रेखा है—नर्मदा।

आशापल्ली—अलबेरूनी का येस्सावल अथवा आसावल, आजकल का अहमदाबाद।

इन्द्रपुर—इन्दौर। (स्कन्दगुप्त के अभिलेख, शङ्करविजय)

इन्द्रप्रस्थ—पुरानी दिल्ली, बृहत्स्थल, खाण्डवप्रस्थ (महाभा०)। कहते हैं पुराने किले का निर्माण (कलियुग ६५३ में ?) युधिष्ठिर ने किया था, लोकभाषा में उसे आज भी 'इन्द्रपत' कहते हैं। महाभारतकाल में यह युधिष्ठिर की राजधानी थी, किले का पुनर्निर्माण हुमायूँ का किया बतलाते हैं।

इ (ऐ) रावती—रावी (पंजाब) २ (अवध की) राप्ती (अचिरावती)। (गरुड०)

ऋषिपत्तन—ऋषिपत्तन, सारनाथ।

उदण्ड(न्त)पुर—पटना जिले का 'बिहार' शहर, जो कभी बंगाल के पाल राजाओं की राजधानी था। यहाँ बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर की चन्दनमयी मूर्ति से सुशोभित एक प्रसिद्ध बौद्ध विहार भी है। (दिव्य अवदान)

उग्र—देरा (देवीपु०)। बिहार में महास्थान (पद्म०)।

उच्च—बरण, बुलन्दशहर, जहाँ जनमेजय ने 'नागसत्र' (अर्थात् पुराणों के प्रवचन) का प्रचलन किया था।

उज्जयिनी—प्राचीन मालवदेश (अर्थात् अवन्ती) की राजधानी। तीसरी सदी ई० पू० में बिन्दुसार के शासनकाल में अशोक यहाँ राज्यपाल थे। विक्रमादित्य संवत्प्रवर्तक ने शकों को

(५७ ई० पू०) पराजित कर इसे अपनी राजधानी बनाया था। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (द्वि०) ने सुराष्ट्र-मालव देश के शकों को भारत से निर्वासित कर उज्जैन की प्राचीन परम्पराओं को अन्ततः समाप्त कर दिया। गाथाओं में उदयन की प्रेमलीलाओं का भी इधर से ही सम्बन्ध रहा है। शहर के मध्य में कभी यहाँ कालप्रियनाथ भगवान् का एक मन्दिर था, जहाँ शिव पुराण के प्रसिद्ध १२ ज्योतिर्लिङ्गों में एक की प्रतिष्ठा थी।

उ(ओ)ड्र—उड़ीसा, उत्कल (उत्-कलिंग, अर्थात् कलिंग का उत्तर भाग)। इसकी दक्षिणी सीमा पर जगन्नाथ (पुरी) का प्रख्यात मन्दिर था। पुराणों के युग में उत्कल तथा कलिंग का विभाजन हो चुका था।

उत्तरकुरु—गढ़वाल तथा हूणदेश का उत्तरीय भाग, जो हिमालय के परतर प्रदेशों का एक पुञ्ज था—और जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय में युधिष्ठिर के साम्राज्य का अङ्ग बना लिया था।

उत्तरापथ—काश्मीर तथा काबुल का 'एक राज्य'। २ उत्तर भारत (भारतवर्ष)।

उत्तरमद्र—फारस में 'मद' प्रान्त, जिसमें अवस्ता का 'आयानम वायों' (आर्य अपवर्ग) भी सम्मिलित था।

उत्तरविदेह—नेपाल का दक्षिण भाग, जिसकी राजधानी गन्धवती थी। (स्वयम्भू पुराण)

उत्पलारण्य—कानपुर से १४ मील दूर (आधु० बिठूर), 'वाल्मीकि आश्रम', जहाँ सीता ने प्रवास में लव तथा कुश को जन्म दिया था। यहीं पर, सरस्वती तथा दृषद्वती के 'मध्यदेश' (ब्रह्मावर्त) में ध्रुव के पिता उत्तानपाद ने 'प्रतिष्ठान' की स्थापना की थी।

उदयगिरि—उड़ीसा में भुवनेश्वर के पाँच मील पूर्व एक पर्वत, जिसकी प्रसिद्ध गुहाओं में ई० ५०० पू०—५०० ई० के सहस्र वर्षों में भारतीय कलाकार अपना सर्वस्व उँडेलते रहे।

उदीच्य (भूमि)—सरस्वती के उत्तर पश्चिम का प्रदेश। (अमरकोश)

उरग (पुर)—काश्मीर के पश्चिम में, जेहलम तथा सिन्ध नदियों के बीच का प्रदेश (हजारा), **उरशा, अभिसारा** (मत्स्य०)। २ त्रिचनापल्ली = उरैयुर, जो छठी शती में पाण्ड्यों की राजधानी थी, नागपत्तन (?)। (रघु०) ११वीं शती में चोलों का सम्पूर्ण तमिल देश पर प्रभुत्व जम चुका था। 'पवनदूत' का कवि इसे, ताम्रपर्णी पर प्रतिष्ठित करता हुआ, भुजंगपुर नाम से स्मरण करता है।

उरुबिल्व (वल्)—'गया' के ६ मील दक्षिण में, 'बुद्धगया', जहाँ ६ठी शती ई० पू० में भगवान् बुद्ध ने बोध प्राप्त किया था। यहीं से बोधिवृक्ष की शाखाओं का देश विदेश में प्रतिरोपण हुआ था। आज यहाँ एक महान् विहार भी है, जिसकी स्थापना छठी शती ई० पू० में अमरदेव ने की थी।

ऋक्षपर्वत—विन्ध्य की पूर्व शाखा जो शोण, शुक्तिमती, नर्मदा, महानदी आदि का उद्गम है।

ऋषिपत्तन—(काशी में) इसिपत्तन, सारनाथ। (ललितविस्तर)

ऋष्यमूक—किष्किन्धा में (तुङ्गभद्रा पर) पम्पा का उद्गमस्रोत।

(ऋष्य) शृङ्गगिरि—मैसूर में बेलूर के उत्तर में एक पर्वतशृङ्ग, जहाँ स्वामी शंकराचार्य ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए (चार मठों में, दक्षिण में) 'शृङ्गेरी' का प्रसिद्ध मठ स्थापित किया था। (शंकरविजय)

एल(ा)पुर—एलोरा।

एरण्डपल्ल—खानदेश। (हरिषेणप्रशस्ति)

एरिकिण—एरण।

औदुम्बर—जि० गुरदासपुर।

कण्वाश्रम—सहारनपुर तथा गढ़वाल में ▯ गुजरती मालिनी ('चुका') नदी के किनारे ऋषि कण्व का आश्रम था, जहाँ शकुन्तला का भरण पोषण हुआ था। (कोटद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर)। (शतपथ०)

कनक—नावनकोर। (पद्म०)

कनिष्कपुर—श्रीनगर से दस मील दक्षिण की ओर कनिष्क की बसाई नगरी, जहाँ ७८ ई० में अन्तिम 'बौद्धसंगीति' का अधिवेशन तथा 'शक संवत्' का प्रवर्तन हुआ था।

कन्या(कुमारी)—'केप कौमोरिन' (सु)कुमारी।

कपिलवास्तु—शाक्यों की राजधानी, भगवान् बुद्ध की जन्मभूमि—जो आज फैजाबाद से २५ मील उत्तरपूर्व में, 'भुइला' के नाम से विदित है।

कपिलाश्रम—बंगाल में 'सागरसंगम' तीर्थ, जहाँ महाराज सगर के अश्वमेधीय अश्व का इन्द्र ने अपहरण किया था।

कपिशा—कुभा (काबुल) नदी के नाम पर उसका 'उत्तरप्रदेश' भी 'कपिशा' कहलाने लगा; कभी कपिशा नगरी 'गान्धार' साम्राज्य की राजधानी थी। २ रघुवंश में उड़ीसा की 'स्वर्णरेखा' (नदी) को कवि ने 'कपिशा' (पलाशिनी) कहा है।

कम्बोज—(पूर्वी) अफगानिस्तान। अराग। (राजत०, मार्कण्डेय०) यास्क के अनुसार 'गलचा' भाषा का प्रदेश, जहाँ आज भी (!) √शु (गतो) का क्रियात्मक प्रयोग (मात्र 'शव = प्रेत' नहीं) होता है, और जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय में युधिष्ठिर के साम्राज्य में जीता था। (महा०)

करतोया—रंगपुर, दीनाजपुर, बोगरा में से गुजरती हुई एक तीर्थ नदी सदानीरा, जो कभी बंगाल तथा कामरूप (आसाम) की विभाजक रेखा थी। (स्कन्द०)

कर्णसुवर्ण—(बंगाल में) मुर्शिदाबाद जिले में, रंगामाटी (कानसोना), जो की शशांक की राजधानी थी।

कर्णाट—कुन्तलदेश, राज० कल्याणपुर।

कर्तृपुर—कुमाऊँ, गढ़वाल, अल्मोड़ा, कांगड़ा का पर्वतीय राज्य—जिसे समुद्रगुप्त ने विजित कर गुप्त साम्राज्य का अंग कर लिया था। (हरिषेण०)

कर्नकुण्ड—(हैदराबाद में हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध) गोलकुण्डा, 'सर्वदर्शनसंग्रह'-कार माधवाचार्य की जन्मभूमि।

कलडि(टि)—(केरल में) शंकराचार्य की जन्मभूमि।

कलिंग—'उत्तरी सरकार' का इलाका, जिसको 'युद्धविजय' से खिन्न हुए अशोक में 'धर्मविजय' की प्रेरणा जगी थी। 'कलिंगविजय', भारत ही की नहीं, विश्व भर की आत्मा में एक नवक चेतना स्पर्श का मुहूर्त है। (एच० जी० वेल्स)

कलिंगनगर—(उड़ीसा में) भुवनेश्वर (पुरी)। (दशकुमार०)

कल्याणपुर—(निजाम साम्राज्य में) बीदर के ६ मील पश्चिम में, चालुक्यों (के कुन्तलदेश) की राजधानी।

काञ्ची (पुर)—कांजीवरम्, जो शंकराचार्य द्वारा स्थापित 'विष्णुकाञ्ची' मन्दिर के लिए तथा 'नालन्दा विश्वविद्यालय' के लिए प्रसिद्ध है। अष्टमूर्ति शिव की 'भौतिक' मूर्त्तियों में 'आकाश-तत्त्व' की प्रतीक मूर्त्ति (चिदम्बरम्) इधर दक्षिण में ही क्यों मिलती है? (दे० अरुणाचल)

कान्यकुब्ज—विश्वामित्र की जन्मभूमि (रामायण), तथा (बौद्धयुग) में दक्षिण-पाञ्चालों की राजधानी—कन्नौज। हर्षवर्धन से पूर्व यह कुछ समय तक मौखरियों की राजधानी भी रहा। इसी के ('त्रिकोण' दुर्ग के) दक्षिण पश्चिम में स्थित 'रंग महल' से ही पृथ्वीराज ने संयोगिता का हरण किया था। (भविष्य०)

कामरूप—असम (अहोम, उच्चारण 'आसाम' नहीं) जिसकी राजधानी था—प्राग्ज्योतिष। कुछ विद्वान् प्राग्ज्योतिष का कामाख्या अथवा गोहाटी से एकीकरण करते हैं। (मेघदूत,

कालिका पु०) कुछ हो, 'कामदहन' का भाग का सारा वातावरण (तीर्थों तथा लोकवाङ्मय की साक्षी पर) इधर ही अधिक उचित उतरता है। (मेघदूत)

काम्पिल्य—दक्षिण पंचाल (द्रुपददेश) की राजधानी।

कार्तिकेयपुर—(कुमाऊँ में) वैजनाथ (वैद्यनाथ) तीर्थ। (देवी पु०)

कालीघाट—सती से सम्बद्ध इसी 'पीठ' के आधार पर 'कलकत्ता' का नामकरण हुआ प्रतीत होता है।

काश्यपपुर—उपनिषदों के 'चरैवेति' युग में ऋषि कश्यप द्वारा संस्थापित (उपनिवेशित) नगरों, प्रदेशों का 'सर्वनाम', यथा—काश्मीर, मुलतान।

काश्यपीगंगा—गुजरात की साबरमती (नदी)। (पद्म०)

किम्पुरुष (देश)—नेपाल।

किरात (देश)—नेपाल के सुदूरपूर्व की ओर किरातों की बस्ती—(त्रिपुरा) तिपारा, जहाँ 'त्रिपुरेश्वरी' का तीर्थमन्दिर है। (ब्रह्म०)

किष्किन्धा—तुङ्गभद्रा के दक्षिण तट पर धारवाड़ में आज भी इसे उसी पुराने नाम से लोग जानते हैं। लोकगाथा के अनुसार, यहीं (राक्षस) बाली का ध्वंस हुआ था। अयोध्या से किष्किन्धा तथा किष्किन्धा से लंका—कुल दो सौ मील की दूरी थी। 'लंका'—सिंहल (सीलोन) नहीं है।

कुण्डग्राम—वैशाली का एक और नाम, जो महावीर की जन्मभूमि था और आधुनिक मुजफ्फरपुर (तिरहुत) में अवस्थित था। (जैनसूत्र)

कुण्डिनपुर—विदर्भ की प्राचीन राजधानी, बीदर (?)। (मालतीमाधव)

कुन्तल (देश)—नर्मदा, तुङ्गभद्रा, पश्चिमसागर और गोदावरी से सीमित इस प्राचीन देश ने चालुक्यों तथा मराठों के हाथ कई उत्थान पतन देखे, कई राजधानियाँ (कल्याण, नासिक) बदलीं। (दशकुमार०, तारानाथ)

(कुन्ती) भोज—मालवदेश का एक पुराना नगर, जहाँ पाण्डवों की माता का बाल्यकाल, 'कुन्तीभोज' की छत्रछाया में बीता था।

कुभा (कुहु)—काबुल (नदी)।

कुमारवन—कुमाऊँ, कूर्माचल। (विराटपर्व)

कुम्भघोण—तंजोर जिले में चोलों की राजधानी तथा विद्यापीठ रहा है। (चैतन्यचरित०)

कुरुक्षेत्र—'महाभारतों' का धर्मक्षेत्र भी, युद्धक्षेत्र भी—थानेसर।

कुरुजांगल—हस्तिनापुर के दक्षिण पश्चिम का 'आरण्यक' प्रदेश।

कुलिन्द (देश)—कभी यमुना तथा गंगा के बीच का सारा प्रदेश 'कुलिन्द' कहलाता था, आज गढ़वाल के साथ (कतार) दिल्ली तथा सहारनपुर उसमें शामिल करने होंगे। (ब्रह्म०)

कुलूत—कुल्लू, कभी कुलिन्द का ही एकांश था। (बृहत्संहिता)

कुश(भवन)पुर—अवध में गोमती के तट पर, सुल्तानपुर। इक्ष्वाकुओं की पुरानी राजधानी अयोध्या को छोड़कर, कुश इधर आ बसा था। (रघु०)

कुशाग्रपुर—मगध की प्राचीन राजधानी, राजगृह, गिरिव्रज।

कुशस्थली—द्वारिका। इतिहास में आनर्तों की राजधानी भी रही है। प्रसिद्ध विद्वान् पौध ने इसे (कुशीलवों की "हिस्ट्री आव गुजरात' पर सम्मति देते हुए) श्रीकृष्ण, दयानन्द तथा गांधी की जन्मभूमि होने का श्रेय दिया है।

कुशीनगर—जहाँ भगवान् बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था, गोरखपुर के निकट आधु० 'कसिया' गाँव (विल्सन)।

कुसुमपुर—पाटलिपुत्र (पटना)। (मुद्राराक्षस)

कूर्माचल—कुमाऊँ। कुमारवन।

केकय—व्यास तथा सतलज के बीच का प्रदेश, जिसकी एक राजकुमारी (कैकेयी) की ईर्ष्या से राम को वनवास मिला था।

कोसल—अयोध्या। जब कोसल साम्राज्य को (उत्तर, दक्षिण) दो भागों में विभक्त कर दिया गया, उनकी राजधानियाँ भी क्रमशः कुशावती तथा श्रावस्ती बन गईं। भगवान् बुद्ध के समय में कोसल एक बलशाली साम्राज्य था, कपिलवस्तु तथा बनारस उसके अन्तर्गत थे। किन्तु, ३०० ई० पू० में इसका मगध में समावेश हो गया और इसकी राजधानी भी अब श्रावस्ती न रहकर पाटलिपुत्र हो गई। कहीं-कहीं दक्षिण-कोसल की प्रसिद्धि 'महाकोसल' नाम से भी मिलती है।

कौशाम्बी—इलाहाबाद के प्राय ३० मील पश्चिम की ओर 'कोसम' जो कभी वत्सदेश की राजधानी थी। (बृहत्कथा, भास)

क्रोड (देश)—कुर्ग। (कावेरीमाहात्म्य)

क्रौञ्च (रन्ध्र,-पर्वत)—'तिब्बत तथा भारत' में (कुमाऊँ की घाटी में) प्रवेशद्वार, जिसका 'उद्घाटन' परशुराम ने किया था। कुछ विद्वानों के अनुसार यह 'बर्मा-आसाम' की पूर्वीय पर्वतमाला का द्योतक है। रामायण के अनुसार क्रौञ्चपर्वत कैलास का वह भाग है जहाँ मानसरोवर झील शोभायमान है। तो क्या 'कैलास' शिव पार्वती के इस क्रीडा शैलों का एक सामान्य नाम है और तथैव क्या मानसरोवर का भी ?

खश(स)—किश्तवाड़ तथा वितस्ता के बीच का इलाका, जिस पर कभी खसों का 'साम्राज्य' था। कुछ विद्वानों के अनुसार इन पार्वतीय खसों को परास्त करके ही चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य' बने थे, किन्तु अधिक सम्भव यही है कि शकाधिपति किदार को वक्षु तक खदेड़ कर चन्द्रगुप्त ने खसों का मानमर्दन तो किया ही था, साथ ही गुप्तों की दूर चुकी प्रतिष्ठा का उद्धार करके वे वराह-अवतार भी कहलाये। (देवीचन्द्रगुप्त, हर्षचरित, रघुवंश १३)

गजसाह्वय—हस्तिनापुर। (भागवत०)

गजेन्द्रमोक्ष—गंगा तथा गण्डकी के संगम पर प्रसिद्ध तीर्थ (भागवत०)। शोणपुर।

गन्धमादन—कैलास की दक्षिणी शाखा, जहाँ कभी हनुमान का आवास था—बदरिकाश्रम भी यहीं स्थित है। (कालिका०, विक्रमो०)

गाधिपुर—कान्यकुब्ज (कन्नौज) जिसे विश्वामित्र के पिता ने बसाया था।

गान्धार, गन्धर्वदेश—काबुल नदी के साथ-साथ बसा हुआ कुनार तथा सिन्धु नदियों का 'मध्यदेश', जिसमें कभी पेशावर तथा रावलपिण्डी समाविष्ट होते थे। पुरुषपुर (पेशावर) तथा तक्षशिला इसकी दो राजधानियाँ थीं।

गिरिकर्णिका—(गुजरात में) साबरमती।

गिरिनगर—गिरिनार-जूनागढ़ में एक पर्वतमाला, यहाँ नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथ के प्रसिद्ध जैन मन्दिर हैं। कभी ऋषि दत्तात्रेय का आवास था। अशोक के कुछ शिलालेख यहाँ भी अभिलिखित हुए थे। सुदर्शन झील का तथा उसके उद्धारक रुद्रदामन् का नाम भी इससे सम्बद्ध है। (स्क० द०, बृहत्सं०)

गिरिव्रज—(बिहार में) मगध की प्राचीन राजधानी—राजगृह—'वसु' के द्वारा सस्थापित होने से इसे वसुमती भी कहा जाता है (रामायण)। 'युवचुंग' में इसे कुसुमपुर भी कहते रहे थे। प्रसिद्ध विश्वविद्यालय 'विक्रमशिला (बिहार)' यहीं स्थित था। (महावग्ग)

गृध्रकूट—'गिरिनगर' के दक्षिण की ओर रत्नगिरि शृङ्खला का एक भाग, जहाँ तपोमग्न बुद्ध पर

देवदत्त ने शिला फेंकी थी। यहीं, जीवक वन में, अजातशत्रु तथा उसके प्रधानमन्त्री वर्षकार ने स्वयं भगवान् की सेवा में उपस्थित हो, 'पाटलिपुत्र' की स्थापना-योजना बनाई थी। (चुल्लवग्ग)

गुप्तकाशी—(उड़ीसा में) भुवनेश्वर। (कुमाऊँ में) शोणितपुर (हरिवंश)।

गोकर्ण—(उत्तर गो०) गंगोत्तरी से ८ मील दूर, भगीरथ का 'तपोवन'। (दक्षिण गो०) करवाल में गोंडिया तीर्थ।

गोकुल—कृष्ण के बाल्यकाल की क्रीडाभूमि—व्रज गोकुल मथुरा से ६ मील पर है।

गो(गौ)तमी—गोदावरी। (शिव०)

गोनर्द(न्द)—पंजाब, क्योंकि काश्मीर के राजा गोनर्द ने इसे छीन लिया था। एक 'गोनर्द' अवध में भी है, (गोंडा), जहाँ महाभाष्यकार पतञ्जलि ने जन्म ग्रहण किया था।

गोपव्रज—आधु० गोआ। (विक्रमांकदेवचरित)।

गोपाद्रि—१ रोहतास (पर्वत)। २ काश्मीर में 'तख्ते सुलेमान', जिसे शास्त्रों में 'शङ्कराचार्य' पर्वत भी कहा गया है। ३ ग्वालियर। (राजतरंगिणी)

गोवर्धन—वृन्दावन से १८ मील दूर, वही पर्वत जिसे ('पैथो' ग्राम में) बाल कृष्ण ने अपनी उंगली पर उठा लिया था।

गौड़—(मगध साम्राज्य से मुक्त हुए) बंगाल की प्रसिद्धि (७वीं सदी में) इस नाम से हुई थी। यह अंग देश के दक्षिण में था। (हर्ष०)

गोमती, चर्मण्वती (दे० 'रन्तिपुर')। गोमल।

घर्घरा—घग्गर नदी, जो कुमाऊँ में निकल कर सरयू में आ मिलती है। (पद्म०)

चक्षु—वक्षु (इक्षु) और आमू नामक नदी जो महाभारत, रघुवंश तथा चन्द्र के महरौली अभिलेख के अनुसार 'शाकद्वीप' में बहती थी।

चन्दनगिरि, मलयगिरि—मालाबार घाट। (त्रिकाण्ड०)

चन्द्रना—साबरमती।

चन्द्रभागा—चनाब (चन्द्रिका), जिसकी एक शाखा असिक्नी थी।

चम्पा—श्यामद्वीप (अनाम)। २ अंग तथा मगध के बीच रहनेवाली चम्पा नदी (पद्म०)। ३ चम्ब। रियासत (राजतरंगिणी)। ४ अंग देश की राजधानी (जिसका पुराना नाम 'मालिनी' था)।

चम्पारण्य—(मध्य भारत में) राजिम के पाँच मील उत्तर में, जैनों का एक तीर्थ (जैमिनि भारत)। २ पटना डिवीजन में 'चम्पारन'। (शक्तिसङ्गमतन्त्र)

चरणाद्रि—(मिर्जापुर में) चुनार का प्रसिद्ध अजेय दुर्ग, जिसे बंगाल के पाल राजाओं ने ८-१२वीं सदियों में बनवाया था।

चरित्रपुर—(उड़ीसा में) पुरी का तीर्थ, तीर्थपुरी।

चर्मण्वती—'रन्तिपुर' गोमती नदी।

चिताभूमि—सन्थाल परगना में, वैद्यनाथ अथवा देवघर, जहाँ १२ ज्योतिर्लिंगों में एक (रावण द्वारा स्थापित) है।

चित्रकूट—बुन्देलखण्ड में पयस्विनी मन्दाकिनी के तट पर वह पर्वत-तीर्थ, जहाँ भगवान् रामचन्द्र ने अपने प्रवास की कुछ अवधि बिताई थी।

चिदम्बरम्, चित्तम्बलम्—दक्षिण में शिव की पाँच भौतिक मूर्तियों में 'आकाश-तत्त्व' का प्रतिष्ठा-स्थान। (देवी भाग०)।

चेदि—'काली सिन्धु' तथा तोंस के मध्यगत, बुन्देलखण्ड तथा मध्यप्रान्त का कुछ भाग, जो कभी 'शिशुपाल' की राजधानी था।

चैत्यगिरि—भीलसा से तीन मील उत्तर की ओर, बेसनगर—जहाँ अशोक का ससुराल था। (कपिलवस्तु में लुम्बिनी, सारनाथ में बोधगया, कसिया में मृगदाव, श्रावस्ती में जेतवन, मगध में राजगृह वैशाली, कुशीनगर आदि बौद्धों के ८ तीर्थ 'चैत्य' कहाते हैं।) कुछ विद्वानों ने इसकी स्थिति-समता साँची तथा विदिशा से भी की है (महावंश)

चोल—पिनाकिनी (पेन्नार) तथा कुर्ग नदियों के बीच में कोरोमण्डल घाट जिसकी राजधानी, कावेरी पर अवस्थित, 'उरैयुर' थी।

च्यवन—(बंगाल के शाहाबाद जिले में) च्यवन ऋषि का आश्रम।

जन(क)स्थान—गोदावरी तथा कृष्णा के बीच का प्रदेश (जनकपुर विदेह) तथा औरंगाबाद जो 'पहले' दण्डकारण्य का एक भाग था—दण्डकारण्य में पञ्चवटी (नासिक) भी शामिल थी। (भवभूति)

जमदग्नि—गाज़ीपुर में ('जमानिया' नाम से प्रसिद्ध) ऋषि परशुराम का आश्रम।

जाबालिपुर—जबलपुर। (प्रबन्धचिन्तामणि)

जयपुर—प्राचीन मत्स्यदेश, विराटनगर।

जाह्नवी—गंगा। किन्तु, जह्नु का आश्रम आजकल, सुल्तानगंज (भागलपुर) के सम्मुख गंगा से निकल रही एक चट्टान पर था, ऐसा बताते हैं।

जीर्णनगर—पूना जिले का जुन्नेर—जो क्षत्रप राजा नहपान की राजधानी था।

जूर्णनगर—यवननगर, जूनागढ़।

जेतवन (विहार)—श्रावस्ती से १ मील दक्षिण की ओर 'जोगिनीभरिया' नाम का टीला, जहाँ कभी उपवन के अन्दर श्रावस्ती के श्रेष्ठी दानवीर 'अनाथपिण्डक' सुदत्त ने एक 'विहार' स्थापित किया था। (चुल्लवग्ग)

ज्वालामुखी—काँगड़ा में एक 'पीठ', जहाँ 'सती' की जिह्वा गिरी थी। ज्वालामुखी पर्वत की ऊँचाई ३२८४' है, जहाँ १८८२' पर महेश्वरी की एक 'मूर्ति' स्थापित है।

झाड़खण्ड—छोटा नागपुर, जिसको राजा मधुसिंह की पराजय के अनन्तर अकबर ने १५८५ ई० में मुग़ल-साम्राज्य में मिला लिया था।

टक्क—व्यास तथा सिन्धु के मध्य का प्रदेश, पञ्जाब। (मृच्छकटिक)

तक्षशिला—जिला रावलपिण्डी का एक प्राचीन नगर, जहाँ बौद्धयुग में एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। पाणिनि तक्षशिला-विद्यापीठ में 'आचार्य' थे। 'दिव्यावदान' में अंकित है कि बुद्ध किसी पूर्वजन्म में 'भद्रशिला' के राजा थे, जहाँ एक ब्राह्मण भिक्षु ने उनका सिर काट डाला था। तब से भद्रशिला को लोग 'तक्षशिला' कहने लगे। बौद्धयुग में यहाँ पाणिनि के 'संस्कृत व्याकरण' का अध्यक्ष नियुक्त होना (तथा धनुर्वेद का पाठ्यक्रम में समावेश) हमारी बौद्ध 'पाली' तथा अहिंसा विषयक धारणाओं को एकदम निर्मूल सिद्ध कर देता है।

तपनी—ताप्ती, तापनी। (मेघदूत)

तमसा—(अवध में) टौंस नदी, जिसके तट पर वाल्मीकि का 'आदि' जीवन बना था।

तालवन—कावेरी पर चोल राजाओं की पुरानी राजधानी 'तलकाड'। तीसरी सदी से यहाँ गंगवंश का राज्य रहा था, जिसे ११वीं सदी में चोलों ने तमिल देश से उखाड़ फेंका।

ताम्रपर्णी—(बौद्ध वाङ्मय में) सिंहल द्वीप। २ दक्षिण में अगस्त्यकूट पर्वत से उद्भूत ताम्रपर्णी नदी। (रघुवंश)

ताम्रलिप्ती—प्राचीन सुह्म देश की एक नदी एवं राजधानी, मौर्यकाल से लेकर गुप्तों के पतन तक (एक सहस्र वर्ष !) इसका यथावत् ऐतिहासिक महत्त्व रहा। (महा०, रघु०)

तीरभुक्ति—तिरहुत। (देवीभाग०)

तुंगभद्रा—मैसूर के दक्षिण-पश्चिमी सीमान्त पर कृष्णा की सहायक नदी।

तुण्डीरमण्डल—द्रविड देश का एक भाग, 'तोण्डमण्डल' (कोरोमण्डल ?) जिसकी राजधानी काञ्चीपुर थी। (मल्लिकामारुत)

तुरुष्क—पूर्वी तुर्किस्तान। (राज०)

तुषार—यूनानी लेखकों का 'बक्ट्रिया' तथा अरबी लेखकों का 'तुखारिस्तान', जिसमें बलख तथा बदख्शां शामिल थे।

तृष्णा—तिस्तानदी। इसाल्मलि द्वीप (कालिडिया) में 'टाइग्रिस नदी'।

त्रिककुद्, त्रिविष्टप—(तिब्बत)। २ त्रिकूट (सिंहल में भी ?)। ३ जुनर।

त्रि(क)लिङ्ग—तेलंगाना।

त्रिगर्त—जालन्धर—'रावी-व्यास-सतलज' का 'त्रि-प्राव'।

त्रिपदी(ति)—तिरुपति, वेङ्कटगिरि। रामानुज ने यहाँ विश्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी, 'रस-गंगाधर' के रचयिता पण्डितराज जगन्नाथ की जन्मभूमि।

त्रिपुरा—किरात देश, तिपारा—जो कामरूप के अन्तर्गत था।

त्रिपुरी—जबलपुर से सात मील पश्चिम में, नर्मदा तट पर, 'तिओर' जहाँ महादेव ने त्रिपुरासुर का वध किया था (लिङ्ग०)। २ कलचुरियों की राजधानी—चेदिनगर। ३ शोणितपुर।

त्रिवेणी—(प्रयाग में) गंगा-यमुना-सरस्वती का, तथा पूर्व की ओर गण्डकी देविका-ब्रह्मपुत्र का 'सङ्गमतीर्थ'। (बंगाल में 'मुक्त' त्रिवेणी, इलाहाबाद में 'युक्त'-त्रिवेणी) ?

त्रिशिरपल्ली—'त्रिचनापल्ली', जहाँ रावण का सेनापति रहा करता था।

त्र्यम्बक—नासिक से २० मील पर, प्रसिद्ध गोदावरी-तीर्थ।

दक्षिण-गंगा—गोदावरी अथवा कावेरी अथवा नर्मदा अथवा तुङ्गभद्रा।

दक्षिणगिरि—दशार्ण (कालिदास), जिसकी राजधानी 'वैदिश' थी, भूपाल राज्य।

दक्षिण-मथुरा—मदुरा अथवा मीनाक्षी, पाण्ड्यों की प्राचीन राजधानी।

दक्षिणापथ—दाक्षिणात्य जनपद, अर्थात् 'विन्ध्य के दक्षिण का भारत'।

दण्डकारण्य—विन्ध्य तथा हिमालय के मध्य का 'महाकान्तार' अथवा 'महाराष्ट्र', जो जनस्थान के पश्चिम में था। (भवभूति)

दर्दुर—(मद्रास में) नीलगिरि पर्वतमाला।

दर्भवती—(गुजरात में) दभोइ।

दशपुर—(मालवा में) मन्दसौर (मन्दशपुर) अर्थात् दासौर।

दशार्ण—'पूर्वी मालवा' देश। (दक्षिणगिरि) जिसकी राजधानी (अशोक के समय में) 'चैत्यगिरि' थी।

दार्वाभिसार—जम्मू। (निबन्ध०)

दुर्जयलिङ्ग—दार्जिलिंग।

दुर्वासाश्रम—भागलपुर से २७ मील की दूरी पर; 'कहलगाम' के निकट, 'पाथर घट्टा' पर दुर्वासा ऋषि का आश्रम।

दृषद्वती—अम्बाला और सरहिन्द के मध्य की नदी, घग्घर।

देवगिरि—निजाम राज्य में, दौलताबाद। २ महाराष्ट्र (देवराष्ट्र ?) में। शिवालय। ३. अरावली की एक शाखा। (मेघदूत)

देवपत्तन—प्रभास = सोमनाथ।

देवपुर—मध्यभारत में, महानदी तथा पैरी के संगम पर, राजिम।

देवराष्ट्र, महाराष्ट्र (?)—समुद्रगुप्त की दक्षिण विजय के समय इसका राजा कुबेर था।

नि(नै)रंजना (रा)—फल्गु नदी (अश्वघोष), जिसके तट पर भगवान् बुद्ध को बोध प्राप्त हुआ था।

पञ्चकेदार—गढ़वाल की पर्वतमाला पर केदारनाथ, तुङ्गनाथ, रुद्रनाथ, मध्यमेश्वर, कल्पेश्वर नामक (महादेव के अङ्गों के द्योतक) पाँच शृङ्ग। (बदरीविशाल०)

पञ्चगौड—बङ्गाल के प्राचीन विभाग—पुण्ड्र, राढ, मगध, तीरभुक्ति, वारेन्द्र। (राजन०)

पञ्चग्राम—दे० पाणिप्रस्थ।

पञ्चतीर्थ—हरिद्वार की पश्चिमी भाग में (सप्त, सीता, अमृत, राम, सूर्य) कुण्ड। (स्कन्द०)

पञ्चद्रविड—द्राविड, कर्णाट, गुर्जर, महाराष्ट्र, आन्ध्र—दक्षिण के जिस विभाग का आधार, भूगोल नहीं, ब्राह्मणों का 'अन्तर्जातीय भेद' है।

पञ्चनद—पंजाब। कुरुक्षेत्र में एक तीर्थस्थान। कृष्णा, वेणा, तुङ्ग, भद्रा, कोन (नदियों का) 'दाक्षिणी' पञ्चाल।

पञ्चप्रयाग—भिन्न सङ्गमों पर अवस्थित देव, कर्ण, रुद्र, नन्द तथा विष्णु—'प्रयाग' तीर्थ।

पञ्चबदरी—बदरीनाथ, वृद्धबदरी, भविष्यबदरी, आदिबदरी, पाण्डुकेश्वर आदि।

पञ्चवटी—नासिक्य (नासिक), जहाँ रावण ने सीता का अपहरण किया था। यहीं शूर्पणखा तथा मारीच के काण्ड हुए थे।

पञ्चाल—रोहिलखण्ड, जो पहले गङ्गा की धारा द्वारा दक्षिण तथा उत्तर पञ्चालों में विभक्त था। उत्तर पञ्चाल की राजधानी अहिच्छत्रा थी, दक्षिण (जहाँ की द्रौपदी थी) की काम्पिल्य।

पद्मक्षेत्र—उड़ीसा में, 'कोणार्क' नाम से प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर।

पद्मपुर, पद्मावती—भवभूति की जन्म तथा दीक्षाभूमि, आधु० पद्मपवाया (विजयनगर = विद्यानगर)। (उत्तरचरित)

पम्पा—किष्किन्धा में, तुङ्गभद्रा की एक धारा। यहाँ पर, ऋष्यमूक के चरणों में 'पम्पा' सरोवर भी है।

पयस्विनी—त्रावनकोर में, पापनाशिनी नदी।

परुष्णी—इरावती (पंजाब की रावी) नदी।

पर्णाशा—राजपूताना में, चम्बल की एक धारा, बनास।

पल्लकट—पालघाट दशनपुर।

पलाशिनी—कपिशा, सुवर्णरेखा।

पल्लव—दक्षिण में, कोरोमण्डल से सीमित देश—राज० काञ्ची।

पवमान—पारियात्र की, एवं हिन्दूकुश की, एक पर्वतमाला।

पशुपतिनाथ—(नेपाल) मृगस्थली में, महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर।

पश्चिम सागर—अरब सागर।

(अ?) पह्ल(न)व—प्राचीन पार्थ (फारस) राज्य का 'मद्र' प्रदेश। यहीं की 'पह्लवी' लिपि में जेन्द 'अवस्ता' को सर्वप्रथम लिपिबद्ध किया गया था। पह्लव देश कभी (अरबी?) घोड़ों के लिए भी विख्यात था।

पाटलिपुत्र—पटना, जिसका मूल निर्माण अजातशत्रु (४८० ई० पू०) ने किया था। मगध की प्राचीन राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) का त्याग कर, पाटलिपुत्र को नयी राजधानी उदयाश्व ने बनाया था।

पाठेय्य—बुद्ध-युग में 'पश्चिमी' भारत—जिसमें कुरु, पंचाल, अवन्ती, गान्धार, कम्बोज, शूरसेन आदि सम्मिलित थे। (महावग्ग)

प्राणिप्रस्थ—पानीपत। पाणि, सोन, इन्द्र, तिल, बाग—ये पाँच 'प्रस्थ' (ग्राम) लेकर भी

युधिष्ठिर सन्तुष्ट था, किन्तु दुर्योधन न माना। इन 'पाँच ग्रामों' के नाम महाभारत में तथा वेणीसंहार में कुछ भिन्न हैं।

पाण्ड्य (पाण्ड्य)—दक्षिण के आधु० तिन्नेवेल्ली तथा मदुरा डिवीजन—जो समय-समय पर अपनी राजधानी—उरैपुर>मदुरा>कोल्कई—बदलते रहे। यहाँ के राजा पुरु ने २६ ई० पू० में अपने दूत रोम भेजे थे।

पाताल—(रामायण में) अम्लम्बती (अमू) के उत्तर में और बल्ख के द० पू० अस्मक = 'भोक्सियाना' देश।

पापनाशिनी—पयस्विनी।

पारमद्र—मिस्र। (अर्थशास्त्र)

पारसीक, पारस्य—फ़ारस। (रघु०, विष्णु०)

पारस्कर—सिन्ध में 'थर पारकर'। (पाणिनि)

पारियात्र(पा)त्र—विन्ध्य की पश्चिमी शाखा, जो कभी आर्यावर्त्त की दक्षिणी सीमा थी। (महाभाष्य)

पावनी—(कुरुक्षेत्र में घग्गर = दृषद्वती) घग्गर नदी, जो पंजाब के हिन्दी पंजाबी जनपदों की प्राकृतिक 'नाप' है।

पिनाकिनी—(मद्रास में) नन्दिदुर्ग से उद्गत, 'पेन्नर' नदी।

पिष्टपुर—गोदावरी जि० में, 'पिठापुर'। (हरिषेणप्रशस्ति)

पुण्ड्रवर्धन—पंचगौड़ (बंगाल) में, गंगा तथा हेमाद्रिकूट का 'मध्यदेश'।

पुण्यपत्तन—पुणे, पूना, पुनक।

पुरुषपुर—गान्धार देश की (एक) राजधानी, पेशावर। (विष० सौराज्य)

पुरुषोत्तमक्षेत्र—(बिहार में) पुरी।

पुलिन्द—भारत की पूर्वीय (कामरूप) तथा पश्चिमीय (बुन्देलखण्ड, सागर) सीमाओं पर कभी पुलिन्दों तथा शबरों के घर थे।

पुष्कर—अजमेर से ६ मील दूर, झील 'पोखरा'। महाभारत के समय में यहाँ उत्सवसंकेतों की सात (म्लेच्छ ?) जातियाँ रहा करती थीं।

पुष्करद्वीप—मध्य-एशिया में, 'बैक्ट्रिया'।

पुष्करावती—प्राचीन गान्धार की राजधानी—जिसे भरत ने अपने पुत्र के नाम से बसाया था और जिस (अष्टनगर) पर सिकन्दर का पहला आक्रमण हुआ था।

पुष्करावती नगर—रंगून। (दीपवंश)

पुष्पपुर—कुसुमपुर, पटना।

पूर्वगंगा—नर्मदा।

पृथूदक—करनाल में, सरस्वती नदी पर, 'पेहोवा'—जहाँ प्रसिद्ध 'ब्रह्मयोनितीर्थ' अवस्थित है।

पृष्ठचम्पा—बिहार।

पौरव—जेहलम के पूर्व में, पौरवों का राज्य—जहाँ सिकन्दर पुरु की 'अग्निपरीक्षा' पर चकित रह गया था।

प्रतिष्ठान—उत्पलारण्य (बिठूर), जहाँ के (राजा उत्तानपाद के पुत्र) ध्रुव ने मथुरा में घोर तपस्या की थी। पालिग्रन्थों में गोदावरी के तट पर अश्म(स्स)क (महाराष्ट्र) की (राजधानी) का उल्लेख 'ब्रह्मपुरी' प्रतिष्ठान नाम से हुआ है। इलाहाबाद के सम्मुख गंगा पार झूँसी को आज भी 'प्रतिष्ठानपुर' कहते हैं। जि० गुरदासपुर (औदुम्बर) की राजधानी पठानकोट का भी पुराना नाम 'प्रतिष्ठान (कोट ?)' ही था।

प्रत्यग्रह—अहिच्छत्र ।

प्रभास—काठियावाड (जूनागढ) में सोमनाथ का प्रसिद्ध तीर्थ, प्राचीन नाम देवपत्तन । यहीं भगवान् कृष्ण का प्राणोत्सर्ग हुआ था ।

प्रयाग—प्राचीन कोसल का वह भाग, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठान (झूँसी) थी । इतिहास में पुरूरवा (दुष्यन्त), नहुष, ययाति, पुरु, भरत का सम्पर्क इधर से ही अधिक रहा है, आधुनिक इलाहाबाद ।

प्रवरपुर—प्रवरसेन द्वितीय द्वारा प्रतिष्ठापित (काश्मीर की राजधानी) श्रीनगर ।

प्रस्थल—फिरोजपुर पटियाला सिरसा के अन्तर्गत प्रदेश । (मार्क०)

प्रस्रवण—गोदावरी के तट पर, जनस्थान में गोमायसान (औरंगाबाद) की पहाड़ियाँ, जिन्हें रामायण में माल्यवान् (गिरि) भी कहा गया है ।

प्रह्लादपुरी—मुलतान ।

प्राग्ज्योतिष—प्राचीन 'कामरूप' की राजधानी-कामाख्या, गोहाटी ।

प्राच्य—(सरस्वती के) दक्षिण पूर्व का भारतवर्ष ।

फल्गु—निरंजना नदी-भगवान् बुद्ध के तप अन्त एवं बोध की भूमि । (अश्वमेध)

बंग—'बंगाल', किन्तु दे० पञ्चगौड ।

बदरी—बदरिकाश्रम, बद्रीनाथ । दे० पंचबदरी ।

बालुकेश्वर—(बम्बई के निकट) 'मालाबार हिल' ।

बालोक्ष—बलोचिस्तान । (अवदानकल्पलता)

बिन्दुसर—गंगोत्तरी के दो मील दक्षिण की ओर, 'रुद्र हिमालय' पर प्रसिद्ध सरोवर, जो भगीरथ की तपोभूमि था ।

बेस्सनगर—वैश्यनगर (?) भूपाल में, साँची के निकट, भीलसा से तीन मील पर, वैश्यनगर, जो प्राचीन दशार्ण की राजधानी था । दे० चैत्यगिरि ।

ब्रह्मकुण्ड—ब्रह्मपुत्र का उद्गम स्रोत ।

ब्रह्मदेश—बर्मा ।

ब्रह्मनाल—काशी में, 'मणिकर्णिका' कुण्ड ।

ब्रह्मर्षिदेश—ब्रह्मावर्त तथा यमुना के अन्तर्गत देश—जिसमें कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पञ्चाल तथा शूरसेन समाविष्ट थे । (मनुस्मृ०)

ब्रह्मसर—रामह्रद ।

ब्रह्मावर्त—सरस्वती तथा दृषद्वती का 'मध्यप्रदेश', जो आर्यों का प्रथम 'उपनिवेश' था ।

भद्रा—यारकन्द, तथा यारकन्द की जरफशां नदी ।

भरु (भृगु) कच्छ ?—भड़ोच, जहाँ वामन ने राजा बली का अभिमान भग किया था ।

भारतवर्ष—भरत के नाम से 'भारतवर्ष' कहलाने से पूर्व हमारे देश का नाम 'हिमाह्व' अथवा 'हैमवत' था । अर्थात् मूल अर्थों में भारतवर्ष 'उत्तर भारत' का नाम था । मार्कण्डेय तथा विष्णु पुराण के अनुसार भारतवर्ष की सीमायें थीं—उत्तर में हिमालय, दक्षिण में समुद्र, पश्चिम में यवन तथा पूर्व में किरात । दक्षिणापथ में प्रथम प्रवेश अगस्त्य ने, पश्चात् अशोक के धर्म ने तथा समुद्रगुप्त की बाहुओं ने किया था ।

भार्गव—पश्चिमी आसाम । (ब्रह्माण्ड०)

भास्करक्षेत्र—प्रयाग । (प्रायश्चित्ततत्त्व)

भीम(ा)—विदर्भ (देश एवं नदी) ।

भोज (पाल)—मध्यभारत में, राजा भोज के बनाये (झीलों के) पालों (बाँधों) के नाम पर 'भूपाल' (देश) ।

भोटांग—काश्मीर-कामरूप के अन्तर्गत देश, भूटान, तिब्बत। (तारातन्त्र)।

भ्रातृदर्शन—(अवध में) नन्दिग्राम, भादरसा—जहाँ भरत ने राम के वियोग में १४ वर्ष काटे थे। (अर्चावतार)

मगध—दक्षिण बिहार, जिसकी राजधानी गिरिव्रज थी। अजातशत्रु ने वैशाली के वृज्जियों की उन्नति पर रोक रखने के लिए 'पाटलिग्राम' को नई राजधानी में परिणत कर दिया था। यहीं पर भीम ने जरासन्ध का वध किया था।

मणिकर्णिका—कुल्लू की घाटी में व्यास की एक धारा, जिसके निकट कुण्डों के गरम पानी में सब्जियाँ आग के बिना उबाली जा सकती हैं।

मणितट—(आसाम में) मणिपुर। (मघ०)

मत्स्य—जयपुर का प्राचीन क्षेत्र, जिसमें आधु० अलवर तथा भरतपुर शामिल थे। पाण्डवों का अज्ञातवास इधर ही विराट के महलों में गुजरा था।

मद्र—रावी चनाब का मध्यदेश, जिसकी राजधानी शाकल (स्यालकोट) थी। शल्य तथा अश्वपति (सावित्री का पिता) यहाँ के राजा रहे। 'माद्री' कन्याएँ अपने रूप-लावण्य के लिए प्रसिद्ध थीं।

मधुपुरी—मथुरा (मधुरा)। इसे शत्रुघ्न ने बसाया था। मधु (राक्षस) की नगरी सम्भवत. आजकल की 'महोली' है (जहाँ 'मधुवन' तीर्थ भी है)।

मध्यदेश—हिमगिरि, विन्ध्य, सरस्वती और प्रयाग के अन्तर्गत देश (जिसमें अन्तर्वेद सम्मिलित था), बौद्ध ग्रन्थों का 'मज्झिमदेश'। इसमें कुरु, पंचाल, मत्स्य, यौधेय, कुन्ती, शूरसेन आदि का समावेश होता था। (मनु०)

मध्यराष्ट्र—दक्षिणकोसल, महाकोसल। (अर्थशास्त्र)

मन्दाकिनी—गढ़वाल में, केदारपति से उद्गत, कालीगंगा। (मन्दाग्नि)

मन्दारगिरि—भागलपुर की एक पहाड़ी, जो 'समुद्रमन्थन' में मथन-दण्ड के रूप में प्रयुक्त हुई थी।

मरु(-धन्व,-स्थल)—राजपूताना, मारवाड़।

मरुद्वृधा—मरुवर्दवां, असिक्नी (चनाब की एक धारा, 'आँस') के पश्चिम में।

मयूर—हरिद्वार के निकट, मायापुरी।

मलयागिरि—पश्चिमी घाट का दक्षिण भाग, 'त्रावनकोर हिल्ज़'।

मलयालम्—मलार, मालाबार—जिसके अन्तर्गत कोचीन त्रावनकोर का सारा प्रदेश था। (राजावली)।

मल्लदेश—मालव-देश, मुल्तान।

मल्लराष्ट्र—महाराष्ट्र।

महती, महिता—(मालवा में) माही नदी।

महाकोसल—दक्षिणकोसल।

महाकौशिक—नेपाल में सात 'कौशियों' से निर्मित एक और 'सप्तसिन्धु' देश, जहाँ 'तामोर-अरुण-सुन' की 'त्रिवेणी' भी है।

महाराष्ट्र—कृष्णा-गोदावरी के इस 'मध्यदेश' को पहले 'दक्खिन' भी कहा करते थे, अश्मक भी। अशोक ने यहाँ महाधर्मरक्षित को भेजा था। 'आन्ध्रभृत्य, क्षत्रप, राष्ट्रकूट, चालुक्य—कितने ही राजवंशों के उत्थान पतन के अनन्तर, इतिहास में, मराठों का युग आता है।

महावन—व्रज, गोकुल।

महिष(मण्डल)—अनूपदेश अथवा हैहय राज्य (आधु० मैसूर से कुछ अधिक), राज० माहिष्मती। यहीं शंकर तथा मण्डन मिश्र का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था। ([illegible])

महेन्द्र—उड़ीसा से मदुरा तक व्यापक पर्वतशृङ्खला।

महोत्सव—बुन्देलखण्ड का 'महोबा', जिसके नाम पर कभी-कभी सारे के सारे बुन्देलखण्ड को भी 'महोत्सव' कह देते थे। (प्रबोधचन्द्रोदय)

महोदधि—बंगाल की खाड़ी। (रघु०)

महोदय—कान्यकुब्ज, गाधिपुर।

माणगी—कमरूप में, दक्षिण पूर्व की ओर, हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध एक 'पट्टी'।

मानस—पश्चिमी तिब्बत (हूणदेश) में कैलाश के चरणों में प्रसिद्ध पुण्य स्रोत।

मायापुरा—मयूर। हरिद्वार-कनखल-मायापुरी की त्रिपुरी।

मारकण्ड—समरकन्द।

मारव—मारवाड़, मरुस्थल।

मातिकावत—अलवर (राज्य)।

माल (*)—(विदेह के पूर्व तथा मगध के उत्तर पश्चिम में) एक 'श्यामल' देश।

मालिनी—हस्तिनापुर के निकट की 'मन्दाकिनी', जिस पर कण्व ऋषि का आश्रम था।

माल्यवत्—तुङ्गभद्रा पर प्रस्रवण गिरि।

मित्रवन—मुल्तान।

मिथिला—जनकपुर, विदेह। 'नवद्वीप' विश्वविद्यालय की स्थापना ने मिथिला एवं विक्रमशिला को स्मृतिशेष कर दिया था।

मीनाक्षी—मदुरा।

मुक्तवेणी—इलाहाबाद की 'युक्तवेणी' के विपरीत, हुगली पर त्रिवेणी का 'विश्लिष्ट' सङ्गम।

मुण्डा—छोटा नागपुर में, जि० रांची।

मुद्ग(ल)गिरि—(बिहार में) मुंगेर, जहाँ कभी मुद्गल ऋषि का आश्रम था और जहाँ बुद्ध के महान् शिष्य मौद्गल्यायन ने 'श्रुतविंशकोटि' श्रेष्ठी को धर्म में दीक्षित किया था। (भारतभ्रमण)

मुरला—नर्मदा की एक धारा। नर्मदा। केरल = मालाबार।

मू(मौ)जवत्—काश्मीर में एक पर्वत, जिस पर सोम बहुत था।

मूलस्थान—मालवस्थान (?), मुल्तान। प्रसिद्ध ऐतिहासिक पूर्वे ने नाम-व्युत्पत्ति के आधार पर इसे 'सृष्टि का उद्गम' माना है ! पौराणिक गाथाओं के अनुसार यहीं नृसिंह के द्वारा हिरण्यकशिपु का वध हुआ था, जो, इसका एक नाम प्रह्लादपुरी (अर्थात् 'होली' का मूल-स्थान) भी है। हर्षचरित के अनुसार मालवदेश, रामायण के अनुसार मल्लदेश भी। यूनानियों ने इसी को हिरण्यपुरी (हिरण्यकशिपु की पुरी, होला = हिरण्य = Aura ?) कहा है।

मूषिक—सिन्ध का ऊपर का भाग, राज० 'अलोर'।

मृ(मि)गदाव—सारनाथ, 'धर्मचक्रप्रवर्तन' का 'मूल विहार'।

मृत्तिकावती—पर्णासा (बनास) पर भोजराजाओं का एक देश, मार्त्त = मारवाड़।

मेकल—विन्ध्य का पूर्वांश, अमरकण्टक शृङ्खला, 'मेकलकन्यका' (नर्मदा) का उद्भव।

मेघना (द)—पू० बङ्गाल की एक नदी। आसाम में, 'समुद्रोमुख' ब्रह्मपुत्र।

मेदपाट—मेवाड़।

मेहत्नु—क्रुमु (काबुल) की एक धारा।

मैनाक—'शिवालिक' शृङ्खला।

मोक्षदा—हरिद्वार, मथुरा, काशी, काञ्ची आदि (सात) 'मोक्षदा' पुरी मानी गई हैं।

मौलि—'रोहतास हिल'।

मौलिस्ता(स्था ?)न—मालव, मद्र, मूल-स्थान, मुलतान।

यज्ञपुर—उड़ीसा में वैतरणी नदी पर, **ययातिपुर**—जो छठी-दसवीं सदियों में केसरी राजवंश की राजधानी था।

यव—'जावा' द्वीप, जिसे गुजरात के एक राजकुमार ने सातवीं सदी के आरम्भ में बसाया था। (ब्रह्माण्ड०)

यवननगर, जूर्णनगर—गुजरात का जूनागढ। वक्षु नदी का क्षेत्र, अश्मक 'आसियाना', जहाँ (५वीं सदी ई० में) हूणों की एक उपजाति 'ज्वाँ-ज्वाँ' (यवनी) रहा करती थी। (रघु०)

युक्तवेणी—बंगाल की 'विप्रलब्धा' मुक्तवेणी के विपरीत, **प्रयाग** की 'सम्भोगिनी' त्रि-वेणी।

यौधेय—बहावलपुर का जोहिय वाड़, जो महाभारत तथा गुप्तयुग में यौधेयों का सीमान्त था। बाइबिल में इन्हें 'दुर' तथा १४वीं सदी के यात्रावृत्तों में 'आयुध' कहा गया है।

रत्नद्वीप—सिंहल।

रत्नपुर—बिलासपुर के २५ मील उत्तर, (मयूरध्वज हैहयों की) दक्षिणकोसल की राजधानी।

रथस्था—अवध की राप्ती (रेवती) नदी।

रन्तिपुर—गोमती तट पर 'रिन्ताम्बूर'। **गोमती (चर्मण्वती)** के तट पर रन्तिदेव का दैनिक 'गोमहल साव' (यज्ञ) होता था।

रसा—अवस्ता की 'रन्हा' नदी, अथवा यूनानियों की 'जक्सार्टिस'—जो शकों नागों हूणों का मूल-आवास थी।

रसातल—कैस्पियन सागर के उत्तर की ओर, हूण राज्य, पश्चिमी तातार। हूणों की विभिन्न जातियों के आधार पर रसातल के सात लोक थे—अतल, नितल, वितल, तलातल, महातल, सुतल, पाताल (?)।

राजगृह—मगध की प्राचीन राजधानी, जिसे (गिरिव्रज के उत्तर में) बिम्बिसार ने बसाया था।

राजपुरी—(काश्मीर में) पुंछ के द० पू०, 'राजौरी'।

राढ़—'पंचगौड़' का पश्चिमी प्रदेश।

रामगिरि—कालिदास के यक्ष की तथा रामायण के शम्बूक की तपोभूमि—मध्यभारत में, 'रामटेक' पर्वतशृङ्खला।

रामणीयक—आर्मीनिया। (महा०)

रामदासपुर—अमृतसर—गुरु नानक का, रामदास द्वारा प्रस्तुत, 'शान्ति निकेतन'।

रामह्रद—(कुरुक्षेत्र में) 'ब्रह्मसर' तीर्थ, जो राजा कुरु की तपोभूमि, पुरूरवा उर्वशी की मिलन भूमि तथा वृत्र की मृत्युभूमि था। यहीं 'प्रतिज्ञा'-भंग कर कृष्ण ने भीष्म के विरुद्ध 'सुदर्शन चक्र' उठाया था—चक्रतीर्थ।

रामेश्वरम्—सिंहल तथा भारत के मध्य, सेतुबन्ध।

रावणह्रद—कैलास के निकट, 'अनवतप्त' सरोवर, रावण की तपोभूमि।

रैवती—अचिरावती (राप्ती)।

रेवा—नर्मदा—

रैवत(तक)—जैन सन्त नेमिनाथ की जन्मभूमि, गुजरात का गिरिनार पर्वत।

रोह (हि)—अफगानिस्तान।

रोहितक—बंगाल के शाहाबाद जिले में विन्ध्य की एक शाखा, **रोहिताश्म(श्व)**। पंजाब में 'रोहतक' का संस्थापक रोहिताश्व (हरिश्चन्द्र का पुत्र) नहीं था—अपितु यह नाम ही स्वयं 'वहु-धञक' का पर्याय एवं अपभ्रंश है।

लंका—विन्ध्याचल, जो कि भारत की रीढ़ (तु० पंजाबी में 'लक') है। रावण की 'लङ्का' (गोंडवाना ?) कहीं विन्ध्य शिखर पर थी—जहाँ के गोंड आजकल भी अपने को रावण के वंशज बताते हैं, जहाँ के ओरांव आज भी अपने को वानरों के वंशज बतलाते हैं, जहाँ हर टीले (शृङ्ग) को 'लंका' तथा हर नदी को 'गोदा' कहते हैं। स्वयं रामायण के अनुसार अयोध्या

किष्किन्ध्या-लंका २०० मील का अन्तर था। वराहमिहिर के अनुसार उज्जयिनी और लंका एक ही अक्षांश पर स्थित थीं, पुराणों के अनुसार भी लंका तथा सिंहल दो भिन्न भिन्न द्वीप हैं। सादृश्य का प्रथम 'आरोप', सम्भवत, धर्मकीर्ति में मिलता है, और आज तो 'सेतुबन्ध' आदि कितने ही 'तीर्थों' ने इतिहास की स्पष्टता एवं परम्परा को सर्वथा धूमिल कर दिया है।

ल(न)वपुर—लवकोट, लोभपुर, लौहोर (राजत०), लाहौर।

ला(ना)ट (देश)—दक्षिण गुजरात (माही-ताप्ती का दोआब)।

ली(नी) लाजल (न)—बुद्ध तथा सुजाता की तपोभूमि-पुनर्भवभूमि—निरंजना(रा), फल्गु। (अश्वघोष)

लुम्बि(म्मि)नी—नेपाल की तराई में, 'रुम्मिनदेई'—भगवान् बुद्ध का जन्म तपोवन, जिसका स्थान बौद्धों के ८ चैत्यों में प्रथम है।

लोमशकानन—कुमाऊँ में, गर्ग ऋषि का आश्रम, 'लोभमूना'। (रघु०)

लौहित्य—ब्रह्मपुत्र नदी, जहाँ परशुराम ने मातृहत्या के पाप को धोया था, कालिदास के दिनों में प्राग्ज्योतिष की सीमा।

वक्षु—वक्षु, रक्षु, चक्षु—औक्सस् अर्थात् आमू दरिया।

वश—वत्स (देश)।

वटपद्रपुर—गायकवाड की राजधानी, बड़ोदा।

वत्स—इलाहाबाद के पश्चिम में उदयन का राज्य, राज० कौशाम्बी।

वन—ब्रजमण्डल के १२ वनों—वृन्दा, मधु, कुमुद आदि—का सर्वनाम, वामनपुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र के ७ वनों का।

वरदा—मध्यभारत में 'वर्धा' नदी।

वराहक्षेत्र—काश्मीर में, जेहलम के तट पर, 'बारामूला'।

वर्धमान (कोटि)—काशी तथा प्रयाग का मध्यवर्ती, अस्थिक (ग्राम), जहाँ महावीर ने 'कैवल्य' सिद्धि पाकर प्रथम 'वर्षा' बिताई थी।

वर्ष—वराहपुराण में वर्णित—नील, निषध, श्वेत, हेम, हिमवत, शृङ्गवत—६ पर्वत।

वलभि—वलभि युग में सुराष्ट्र की राजधानी।

वशिष्ठाश्रम—अवध में अर्बुद (आबू) पर्वत पर, तथैव कामरूप में, वशिष्ठ का तपोवन।

वसुधारा—अलकनन्दा।

वाकाटक—हैदराबाद-दक्षिण में, कैम्बिल यवनों का—तथा अनन्तर (वाकाटक) विन्ध्य शक्ति द्वारा संस्थापित गुप्तकालीन—राज्य।

वातापिपुर—बीजापुर में, 'बादामी'—जो छठी सदी में महाराष्ट्र राज पुलकेशी की राजधानी था।

वामनस्थली—जूनागढ के निकट, वनथाली। राजस्थान की 'वनस्थली' (?)।

वाराणसी—'वरणा' तथा 'अस्सी' के संगम पर अवस्थित होने से, काशी का यथार्थ नाम।

वाल्मीकि-आश्रम—कानपुर से १४ मील दूर, बिठूर (उत्पलारण्य)—जहाँ भगवान् राम के यज्ञिय अश्व को लव कुश ने बाँध लिया था।

वाशिष्ठी—गोमती नदी, चर्मण्वती (?)।

वाहीक—व्यास तथा सतलज का दोआब (केकय के उत्तर में), पंजाब।

वाह्लीक—श(ा)कद्वीप, बैक्ट्रिया की राजधानी, बल्ख। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने, शकाधिपति को बल्ख तक खदेड़ कर, मानो वराह-अवतार द्वारा पृथ्वी का उद्धार करते हुए ध्रुवस्वामिनी तथा गुप्तसाम्राज्य की 'लाज रखली' थी। (मेहरौली अभिलेख, मुद्राराक्षस, रघुवंश)

विक्रमपुर—ढाका में, 'बल्लालपुरी'—आदिशूर की तथा सेन राजाओं की राजधानी।

विक्रमशिला—आठवीं सदी के राजा धर्मपाल द्वारा स्थापित बौद्ध विहार, जिसका महत्त्व, आखिर, 'नवद्वीप विद्यापीठ' की स्थापना के अनन्तर ही कुछ घटा था।

विजयनगर—बंगाल के राजशाही डिवीजन में, सेन राजाओं की राजधानी। विद्यानगर।

वितस्ता—वि-तमसा (?), जेहलम (नदी)।

विदिशा—मालवा में बेतवा (वेत्रवती) नदी पर भील्सा, जो प्राचीन दशार्ण की राजधानी थी, विशाला। (मेघ०)

विदेह—दरभंगा में जनकपुरी, तीरभुक्ति (तिरहुत), मिथिला, जनस्थान।

विद्यानगर—तुङ्गभद्रा पर विजयनगर के मध्यम राजाओं की राजधानी, विजयनगर।

विनशन—कुरुक्षेत्र (सरहिन्द, पटियाला) में जहाँ सरस्वती लुप्त हो जाती है, वह तीर्थ।

विनाशिनी—गुजरात में बनास नदी।

विनीतपुर—उड़ीसा में, कटक।

विन्ध्यपाद—नर्मदा आदि का उद्गम, 'सतपुड़ा' पर्वतश्रेणी।

विपाशा—व्यास नदी।

विराटनगर—मत्स्यदेश, जयपुर—पाण्डवों का अज्ञातवासगृह।

विशाला—अवन्ती की राजधानी, उज्जैन (उज्जयिनी)। बौद्ध युग में वैशाली की राजधानी, बसाढ़।

विशाखा (पत्तन)—विजगापट्टम्।

विश्वामित्राश्रम—जहाँ ताड़का का वध हुआ था, बिहार के शाहाबाद जिले में बक्सर, वेदगर्भपुरी।

वीतभयपत्तन—प्राचीन 'वीचिग्राम', अल्लाहाबाद से १२ मील दक्षिण पश्चिम, 'भिठा'—जहाँ कई ऐतिहासिक मुद्राएँ मिली हैं।

वृद्धकाशी—मद्रास का तीर्थ, 'पुदुवेलिंगोपुरम्'।

वेंकटगिरि—मद्रास में, तिरुपति के निकट, 'तिरुमलई' पर्वत।

वेंगी—गोदा-कृष्णा के अन्तर्गत, आन्ध्रों की राजधानी।

वेणी—कृष्णा नदी।

वेत्रवती—बेतवा नदी।

वेदारण्य—तंजोर में, अगस्त्य का तपोवन।

वेदगर्भपुरी—बक्सर, 'जहाँ विश्वामित्र को 'गायत्री' ने आलोकित किया था।'

वेन—मध्यभारतीय गंगा, गोदावरी की एक धारा।

वैकुण्ठ—ताम्रलिप्ती पर एक तीर्थ।

वैतरणी—परशुराम के भगीरथ प्रयत्न से 'अवतारित', उड़ीसा की गंगा—जहाँ कभी ययाति-पुर बसा था।

वैशाली—मगध विदेह के मध्य का प्राचीन साम्राज्य, जो आजकल मुजफ्फरपुर जिले का दक्षिणी भाग ठहरता है। बौद्ध युग में यह वृज्जियों-लिच्छवियों की राजधानी थी।

व्याघ्रसरोवर—बक्सर, विश्वामित्राश्रम।

शंकरतीर्थ—नेपाल में, जहाँ शिव ने 'पार्वती विजय' के लिए तप किया था।

शंकराचार्य—काश्मीर में, 'तख्ते सुलेमान', सन्धिमान गिरि।

शंकास्य—कान्यकुब्ज।

शकस्थान—सीस्तान, शकों का मूल देश जहाँ से वे मध्य-एशिया की ओर बढ़े।

शतद्रु—सतलज।

शम्बूकाश्रम—मध्यभारत में, रामगिरि (रामटेक)। (रामा०)
शर्यणावत्—रामह्रद, ब्रह्मसरोवर।
शाकंभरि—पश्चिमी राजपूताना में, 'साभर'—जहाँ शर्मिष्ठा ने देवयानी को 'देवैरानी' कूप में ढकेल दिया था।
शाकद्वीप—मध्यएशिया में 'शक-भूमि', 'तारतरी'—बोखारा तथा समरकन्द के मध्यगत 'साइथिया' अथवा 'सोग्दियाना'।
शाकल—मद्र देश की राजधानी, स्यालकोट।
शान्ति—साँची। (महा०)
शार्ङ्गनाथ—सारनाथ।
शालातुर—प्राचीन गान्धार में, पाणिनि की जन्मभूमि।
शाल्मली (द्वीप)—काल्दया। मैसोपोटामिया। मीरिया। (ब्रह्माण्ड०)
शाल्व—कुरुक्षेत्र के निकट सत्यवान् के पिता द्युमत्सेन का राज्य, जिसमें जोधपुर, जयपुर, अलवर शामिल थे—मार्तिकावत। शाल्वपुर = सौभनगर (अलवर) उसकी राजधानी थी।
शिवालय—एलोरा।
शिरोवन—प्राचीन चेर (केरल) की राजधानी, तळकळ'।
शुक्तिमती—(उड़ीसा में) सुवर्णरेखा नदी।
शूद्रक—सिन्ध तथा सतलज के मध्यगत देश, राज० उच्च।
शूरसेन—कृष्ण के बाबा के नाम से विख्यात राज्य, राज० मथुरा।
शूर्पारक—सुपारा, सूरत।
शृङ्गगिरि—शृङ्गेरी, दक्षिण में जहाँ वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए शंकराचार्य ने अपने चार मठों में एक स्थापित किया था।
शेषाद्रि—त्रिपदी, तिरुपति, तिरुमलई।
शैवाल—शिवालय, एलोरा। रामटेक। (रामगिरि)
शोण—गोंडवाना में अमरकण्टक से उद्गत नदी, जो मगध की पश्चिमी (प्राकृतिक) सीमा थी।
शोणप्रस्थ—सोनीपत।
शोणितपुर—कुमाऊँ में, केदारगंगा (मन्दाकिनी) के तट पर, एक नगर। आसाम में, आधु० तेजपुर'।
शौरिपुर—नेमिनाथ की जन्मभूमि, मथुरा। मध्यदेश की 'शौरसेनी' हमारी (वर्तमान) 'राष्ट्र भाषा' की जननी थी।
श्रवणाश्रम—अवध में, जहाँ दशरथ ने शिकार करते हुए अन्धे माता-पिता के इकलौते बेटे श्रवण को भूल से मार डाला था।
श्रावस्ती—अवध में, गोंडा जिले में, राप्ती नदी के तट पर, आधु० 'सहेत महेत'। बुद्ध-युग में श्रावस्ती गौरव के शिखर पर थी।
श्रीपथ—जयपुर से ९० मील उत्तर में, 'बिआना'—'श्रीपथपुरी'।
श्रीप(१)द—सिंहल का 'एडम्स पिक'।
श्रीकण्ठ, कुरुजांगल, महाकान्तार—जिसकी राजधानी बिलासपुर थी।
श्रीक्षेत्र—उड़ीसा में, पुरी।
श्रीनगर—काश्मीर की राजधानी, जिसकी स्थापना ५वीं सदी में प्रवरसेन द्वितीय ने की थी।
श्रीरंगपट्टन—(मैसूर में) आधु० 'सेरिंगपटम्'।
श्रीशैल—कृष्णा के दक्षिण में एक तीर्थ पर्वत।
श्रीस्थानक—(बम्बई में) 'थाना', जो कभी उत्तरी कोङ्कण की राजधानी था।
श्रीहट्ट—सिल्हेत। (योगिनी०)

श्लेष्मातक—नेपाल में, पशुपतिनाथ के उत्तर-पूर्व, उत्तर-गोकर्ण।
षष्ठी—बम्बई से १० मील उत्तर की ओर, साल्सेट द्वीप।
संगम (तीर्थ)—रामेश्वरम्।
संध्या—मालवा में, यमुना की धारा, सिन्धु।
सदानीरा—प्राचीन पुण्ड्र की एक नदी, जो 'पार्वतीपरिणय' के समय में शिव के हाथ से छूटे पसीने से जनमी थी—करतोया। गण्डकी। राप्ती।
सपादलक्ष—शाकम्भरि।
सप्तकुलाचल—महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, गन्धमादन, विन्ध्य, पारियात्र।
सप्तगंगा—गंगा, कावेरी, गोदावरी, ताम्रपर्णी, सिन्धु, सरयू, नर्मदा।
सप्तगंडकी—गंडकी के 'सप्तमुख'।
सप्तगोदावरी—गोदावरी के 'सप्तमुख'।
सप्तद्वीप—जम्बु, प्लक्ष, शाल्मली, कुश, क्रौञ्च, शाक, पुष्कर।
सप्तमोक्षदापुरी—दे० मोक्षदा।
सप्तर्षि—महाराष्ट्र में सतारा।
सप्तसागर—जम्बुद्वीप (भारत) की 'समुद्रीय' सीमाएँ—लवण, क्षीर, सुरा, घृत, इक्षु, दधि, स्वादु।
सप्तसिन्धु—पंजाब, प्राचीन भारतवर्ष। (उत्तरापथ)
समतट—बंग अर्थात् पूर्वी बंगाल।
समन्तपंचक—कुरुक्षेत्र।
सरयू—(अवध में) घाघरा नदी।
सरोवर—ब्रह्माण्डपुराण के मानस आदि १२ तीर्थसर, विशे० नारायणसर।
सह्याद्रि—कावेरी के उत्तर में, पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग (मलयाद्रि)। कावेरी का एक नाम सह्याद्रिजा भी है।
साँची—भीलसा के द० पू० में, प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ, शान्ति।
साकेत—अवध, अयोध्या।
सागरसंगम—'गंगामुख' पर कपिलाश्रम, जहाँ सगर के सहस्र पुत्र 'भस्म' हुए थे।
साभ्रमती—साबरमती।
साम्बपुर—मुलतान।
सारस्वत—अजमेर में, पुष्कर सरोवर।
सिंहल—सीलोन। लंका कुछ और थी—'विन्ध्यपाद' में।
सिद्धपुर—कपिल ऋषि की जन्मभूमि, भगीरथ की तपोभूमि—बिन्दुसर।
सिद्धाश्रम—शाहाबाद में, बक्सर—जहाँ विष्णु ने वामनावतार ग्रहण किया था।
सिप्रा—मालवा में, 'क्षिप्रा' नदी—जिस पर उज्जैन बसा था।
सुगन्धा—गोदावरी पर, नासिक।
सुदर्शन—जम्बूद्वीप। काठियावाड की प्रसिद्ध ऐतिहासिक झील, जिसका मौर्यकाल में निर्माण तथा, गुप्तयुग तक, कितनी ही बार 'उद्धार' हुआ था।
सुदाम(1)पुरी—गांधी तथा कृष्ण की 'जन्मभूमि', पोरबन्दर। (कौथ)
सुपारग—शूर्पारक, सूरत।
सुब्रह्मण्य—मद्रास में, कुमारस्वामी (तीर्थ)।

सुभद्रा—इरावती नदी।
(सु)मागधी—पटना की शोण नदी, जिस पर कभी राजगृह बसा हुआ था।
सुमनकूट—श्रीप(ा)द।
सुमेरु—गढ़वाल में, बदरीनाथ के निकट, पंचपर्वत (रुद्र हिमा०)—स्वर्णगिरि अथवा हेमकूट नहीं।
सुरथ (अद्रि)—नर्मदा आदि का स्रोत, अमरकण्टक।
सु(सौ)राष्ट्र—सूर्यपुर, सुपारा (सूरत), काठियावाड़ तथा गुजरात का कुछ अंश।
सुवास्तु—गन्धर्वदेश की नदी, स्वात।
सुवर्णभूमि—ब्रह्मदेश (बर्मा)
सुवर्णगिरि—(मैसूर में) मास्की। अशोक के समय में चार 'राजधानी' स्थान थे—तक्षशिला, उज्जैन, तोसली तथा सुवर्णगिरि।
सुवर्णग्राम—(ढाका में) सोनारगाँव।
सुवर्णरेखा—गिरिनार की पलाशिनी। उड़ीसा की कपिशा।
सुह्म—बंग तथा कलिंग के अन्तर्गत देश, राढ़, दे० पंचगौड़।
सूर्यनगर—श्रीनगर।
सूर्यपुर—सूरत। यहीं शंकराचार्य ने अपनी 'वेदान्त भाष्य' रची थी।
सेतुबन्ध—भारत तथा सिंहल के बीच में, श्रीप(ा)द।
सोम पर्वत—अमरकण्टक।
सोमनगर—शाम्बपुर (अम्बर)।
सौवीर—सिन्धु तथा मद्र का अन्तर्देश (यौधेय ?)।
स्त्रीराज्य—कुमाऊँ अथवा गढ़वाल का पुराना नाम। महाभारत-युग में यहाँ स्त्रियों का अनुशासन होता था—प्रमीला ने इधर ही अर्जुन से लोहा लिया था। (विप० पुरुषपुर)
स्थाने(ण्वी)श्वर—थानेसर (कुरुक्षेत्र), स्थाणुतीर्थ।
स्रुघ्न—तीनसर जिले में, कालसी।
हंसद्वार—क्रौंचद्वार।
हत्याहरण—अवध में, हरदोई से २८ मील उत्तर-पूर्व, एक तीर्थ—जहाँ भगवान् राम ने (रावण की) ब्रह्महत्या का पाप प्रक्षालन किया था।
हरकेल—बंग, दे० 'पंचगौड़'।
हरक्षेत्र—भुवनेश्वर।
हरिवर्ष—उत्तर कुरु, जिसमें तिब्बत का पश्चिमी भाग शामिल था।
हस्तिनापुर—कुरुओं की प्राचीन राजधानी, गजसाह्वय, किन्तु जनमेजय के दो पीढ़ी बाद, नयी राजधानी कौशाम्बी हो गई थी।
हिरण्यपर्वत—मुदग(ल)गिरि, मुंगेर।
हिरण्यवाहु—शोण नदी।
हृषीकेश—बदरीनाथ तथा हरिद्वार के मध्यस्थित प्रसिद्ध तीर्थ, 'ऋषिकेश'।
हेमकूट—कैलास।
हैमवत—भारतवर्ष।
हैमवती—गजन के निकट, सरहिंद से उद्गत ऋषिकुल्या नदी। इरावती। शतद्रु (सतलुज), जो वसिष्ठ के दृष्टिपात से सौ-सौ धाराओं में फूट गई।
हैहय—अनूपदेश अथवा 'माहिष्मती राज्य' अथवा माल्वदेश।
ह्लादिनी—ब्रह्मपुत्र नदी।

सहायक ग्रन्थों की सूची

हिंदी-ग्रन्थ

१ हिन्दी शब्दसागर—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

२ भाषा शब्दकोश—डा० रमाशंकर शुक्ल।

३ हिन्दुस्तानी कोश—श्री रामनरेश त्रिपाठी।

४ प्रामाणिक हिन्दी कोश—श्री रामचन्द्र वर्मा।

५ हिन्दी पर्यायवाची कोश।

६ पारिभाषिक शब्दकोश—श्री मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव।

७ भारत भूमि और उसके निवासी—श्री जयचन्द्र विद्यालंकार।

८ भारत के इतिहास की रूपरेखा— " "

९ इतिहास प्रवेश— " "

१० इतिहास मीमांसा— " "

११ पाणिनिकालीन भारतवर्ष— डा० वासुदेवशरण अग्रवाल।

१२ हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन— " "

१३ भारत ब्राह्मण (बँगला)— घोषाल

१४ केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् की शब्द सूचियाँ।

१५ बृहत् हिन्दी कोश—कालिका प्रसाद।

संस्कृत-ग्रन्थ

१ पद्मचन्द्रकोश।

२ संस्कृत हिन्दी कोश—आप्टे।

३ वाचस्पत्य कोश।

४ शब्दकल्पद्रुम।

५ शब्दार्थचिन्तामणि।

६ अमरसिंह, हेमचन्द्र, केशव, हलायुध आदि कोश।

७ सिद्धान्तकौमुदी।

८ सुभाषितरत्नभांडागार।

९ सुभाषितरत्नाकर।